पृष्ठ ३९५३से ४४५२ (य र ल) शब्द संख्या १२४०५

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी बृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(प्रथम जिल्द)

संपादक

(संपादन, परिवर्द्धन एवं संशोधन कर्ता)

सीताराम लाळस

व्युत्पति आदि द्वारा परिष्कारक

स्व० पं० नित्यानन्द शास्त्री दाधीच

[आशुकवि, कविभूषण, व्याकरण साहित्य, कोशादि तीर्थ
श्री रामचरिताब्धिरत्नम् महाकाव्य आदि के प्रणेता]

कर्ता

सीताराम लाळस

स्व० उदयराज उजळ

प्रकाशक

चौपासनी शिक्षा समिति

जो ध पु र .

नर कांई चिंतवै, करै परमेस्वर कांई
नर तो धारै सहज, करै मुसकल्ल गुसांई
रांवण मन जाणतौ, करूं सीता पटराणी
रांडि मंदोदरि हुई, लंक पुनि हुई विरांणी
कहियौ न हुवौ दसकंध रौ, खांवंद रा अखरां खरां
कवि ओप अग्यांनी नर कहै, नव्वां री तेरा करां

—ओपौ आढौ

अपनी बात

राजस्थानी शब्दकोष के चतुर्थ खण्ड की प्रथम जिल्द सुहृदय पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष है। वर्षों की लगन से जो कार्य सम्पन्न होता है, उसमें व्यवधानों की संख्या भी कम नहीं होती। लेकिन हमारा कर्त्तव्य व्यवधानों से विच-लित होना नहीं है अपितु कार्य की गति को कायम रखने में निहित है। कोष के कार्य को गति देने के लिए समिति की ओर से हर सम्भव प्रयत्न किये जा रहे हैं।

मैं इस उप समिति के पहले की उप समिति के सभी सदस्यों और अध्यक्षों को धन्यवाद देता हूं कि जिनके प्रयासों से यह कार्य यहां तक आगे बढ़ पाया।

मुझे विश्वास है कि कोष के विद्वान सम्पादक श्री सीतारामजी लालस, चौपासनी शिक्षा समिति के उत्साही सदस्यों और राजस्थान सरकार के सहयोग से यह कार्य यथा-समय सम्पन्न हो सकेगा।

प्रहलादसिंह
अध्यक्ष
उप-समिति राजस्थानी शब्द-कोष
व कोषाध्यक्ष, चौपासनी शिक्षा समिति,
जोधपुर।

जोधपुर,
३-१२-१९७३

प्रकाशकीय

चौपासनी शिक्षा समिति की विभिन्न गतिविधियों में राजस्थानी शब्दकोष का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। यह कार्य शिक्षा समिति द्वारा संचालित राजस्थानी शोध संस्थान के अन्तर्गत प्रारम्भ किया गया था परन्तु कालान्तर में इस कार्य के वृहद स्वरूप को देखते हुए इस कार्य के संचालन के लिये शिक्षा समिति ने इस कार्य में विशेष रुचि रखने वाले अपने सदस्यों की एक उप-समिति का गठन किया। तब से शिक्षा-समिति की ओर से यह उप-समिति इस कार्य की देख-भाल करती है।

समय समय पर शिक्षा-समिति की ओर से इस समिति के गठन में परिवर्तन भी किये गये हैं परन्तु समिति के सभी सदस्यों ने यथा शक्ति इस कार्य को आगे बढ़ाने का स्तुत्य प्रयास किया है। हम स्वर्गीय कर्नल श्यामसिंहजी का आभार कभी नहीं भूल सकते जिन्होंने हर प्रकार से इस कार्य को गति देने में अपना असाधारण योग दिया है।

कोष कार्यालय के नियमित संचालन के लिये राजस्थान सरकार द्वारा आवर्तक अनुदान दिया जाता है तथा कोष की छपाई व कागज आदि के लिये राजस्थान सरकार एवं केन्द्रीय सरकार द्वारा अनावर्तक-अनुदान दिया जाता है। अन्य साधनों से भी अर्थ-व्यवस्था की जाती है।

हम राजस्थान सरकार के भूतपूर्व शिक्षा मंत्री श्री चंदनमलजी वैद तथा शिक्षा आयुक्त श्री महेन्द्रसिंहजी के बड़े आभारी हैं कि इस कार्य के महत्व को समझते हुए उन्होंने अपने कार्यकाल में कोष को सरकारी अनुदान दिलवाने में बड़ी उदारता और सहृदयता से अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया। साथ ही कोष के सम्पादक श्री सीताराम लालस को, जो कि अब ६१ वर्ष के हो गये हैं, २ वर्ष तक और सवैतनिक कार्य करने की स्वीकृति देने की जो कृपा की है उससे भी हमारी एक बड़ी कठिनाई हल हो गई है।

कोश के इस चतुर्थ खण्ड की प्रथम जिल्द में य से ल तक के वर्ण छप चुके हैं। आगे इसी खण्ड के ३ भाग और निकलेंगे जिनके सम्पादन का बहुत सा कार्य सम्पन्न हो चुका है और हमें आशा है कि सरकार और विज्ञ पाठकों का सहयोग इसी प्रकार मिलता रहा तो २—३ वर्षों में यह कार्य पूर्ण हो जायगा।

कागज और छपाई की बढ़ती हुई मंहगाई के कारण इस जिल्द का मूल्य हमें रुपये रखना पड़ रहा है।

अन्त में हम पहले की उप-समितियों के सदस्यों और अध्यक्षों तथा उन सभी सज्जनों का आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने इस महत्वपूर्ण कार्य में अपना अमूल्य सहयोग दिया है।

प्रेमसिंह
मंत्री

जोधपुर, ३-१२-१९७३.
उप-समिति राजस्थानी शब्द कोष व चौपासनी, शिक्षा समिति :

॥ श्री ॥

* निवेदन *

-:दूहा सोरठा:-

नारायण भूले नहीं, अपणी माया ईश । रोग पैल ओखद रचें, जगवाळा जगदीश ॥१॥
साच न बूढ़ो होय, साच अमर संसार में। कैतो धोवो काय, ओ सेवट प्रकटे 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरती में साचो धरम । इण सूं पूरै आस सकल मनोरथ सांवरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह ईशर किरपा सू उदय ॥४॥
खत ऊजळा संदेश, उदयराज ऊजल अखै । दीपै वांरा देश, ज्यांरा साहित जगमगै ॥५।

भारत संसद में सन् १९५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्तां री भासावां मानी गई उणां रे सामल राजस्थानी भाषा ने नहीं मानी तो कुदरती तौर सूं राजस्थान में अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रों में शुरू हुवो ।

राजस्थानी रै विरोध में अक्सर आ बात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नहीं हो । ओ घाटो मिटावण सारु म्हैं सीतारामजी लालस ने कयो क्योंकि हूं जाणतो हो के डिंगल रा संग्रह रो उणा ने काफी अनुभव है । श्री सीतारामजी इणा काम सारू तैयार हो गया ने म्हें दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सूं मैनत सूं कोश रो काम शुरु कियो ने इण में खर्च री मदत री जरूरत हुई तो उसा बाबत म्हैं स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहब बार एटला पोकरण ने अरज करी । इणाँ कृपा करने मंजूर करी ने तारीख १-५-५१ सूं रुपीया री मदद देणी चालू कर दीवा । सीतारामजी मथाणिया में लेखक राख ने काम शब्द संग्रह री स्लिप कोपियां लिखावण रो चालू कर दीयो और म्हैं दोनू तारीख १-५-५१ सूं सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कोंम कियो जिण सूं कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपियां में लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सूं श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बंद हो गई, इण सूं सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बंद रेयो ।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनूं री लगन ही । म्हैं करनल श्री स्यामसिंहजी रोडला ने जून सन् १९५६ में कोश में सहायता देवण सारु कागद लिखियो उण रो जबाब उणां तारीख २९-६-५६ रा कागद में म्हने लिखियो के कोश सारु मावार रु० ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूंला । परन्तु उणारा पिता करनल श्री अनोपसिहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे में देरी हुई । उणां रे स्वर्गवास होणे रे बाद में नवम्बर रा अन्त में ने दिसम्बर रा शुरू में जोधपुर में ही जद कर्नल श्री सामसिंहजी कोश री मदत बाबत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी ।

कोश रो काम उणाँ री सहायता सूं सन् १९५७ री जनवरी सूं सीतारामजी जोधपुर में चालू कर दियो क्योंकि जद उणां रो तबादलो जोधपुर में हो गयो हो । जो एक लाख तेरह हजार शब्दों की स्लिप कोपियाँ पेली बणी हुई ही । इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणां अक्षरवार रजिस्टर में लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो । म्हें पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोष करनल श्री सामसिंहजी री रुपीया री सहायता सूं पूरो हुवो ।

इणरे बाद प्रेस कापी बणावण रो काम चालू हुवो । उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया खानपुर वाला श्री झालावाड़ दरबार सूं श्री नीबाँज ठाकुर साहब सूं रुपियां री सहायता लेने करायो ने तरे छपण रो प्रबन्ध राजस्थानी सोध संस्थान चोपासणी जोधपुर सूं हुवो ने तारीख ११-३-५६ ने सीतारामजी ने इण सोध संस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सूं वे इण संस्थान में काम करण लागा ।

इण कोश ने तैयार करावण में व्युत्पति विभाग पूरो करावण में स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मतद ही इण वास्ते बैकूंठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवां हां । तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे

चांद बावड़ी
ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना को है। यह भारी कठिन कार्य का यंत्र श्री उदयराजजी उज्जवल यंत्री (मेंकेनिकल) के बल संचालित हुवा है। मैंने इसे देखा, इन्होंने प्रत्येक शब्द और धातु को जांचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगों को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश विविध भाषाओं के बल पर यह कार्य भार उठाया है। बीच बीच में हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से पूर्ण संतुष्ट होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य की प्रशंसा करेंगे। फकत-नित्यानन्द शास्त्री।

इण तरे ननण विश्वविद्यालय सूं डा० डब्लू० एस० एलन जो संसार री करीब चालीस भाषाओं रो जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनि विज्ञान संबंधी जांच वो शोध रो काम सारु सन् १९५२ में राजस्थान आया हा ने जोधपुर में दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे मिलसिले में म्हारे कने घणा आता उणांने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणां म्हारो उत्साह बधायो उणां री सम्मति नीचे मुजब है:—

Thinity College Cambridge **26 Feb., 1960**

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is new to be published Rajasthani has long pressented a serious gap in the comparative study of the voca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at Last it is filled by the evoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors. I know well the difficulties that have beset the undertaking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no Longer be denied.

Sd. W. S. Allen M. A. P. H. D.
Professor Comprative Philology
In the University of Cambridge.

कोश दोय दातार राजपूत सरदारों री रुपया री मदत सूं शुरु होय ने पूरो बणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफत म्हे ता० २६-६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कविता, रचियौ ने सीतारामजी कने भेजीया वो अठे दिया जावे है इणा में दोनूं सरदारां रो धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रों में तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानो में

कोम मरू बाणरो सुणे बण्यो नह किण सू, लाख शब्दो तणे बडो लेखो गया भूपात, कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा खजना नरेसो देखता, गुया तजमाल ठकरेत गाढा । सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पंथ धन छोड़ लाडा ॥२॥
सेव साहित्य ही रहे संसार में, सुजसफल लगावे घणी सरसे । गिले सुखलाध हितकर चित सभाजां, दिनों दिन कितां सनमान दरसें ॥३॥
पांण मरू बांन है प्रांत रो परंपर, वेण परताप राजस्थान ऊचो । रखी नह पढण में भावखां प्रांत री, निरखतां जाय है प्रांत नीचो ॥४॥
वणई चारणों व्याकरण विधोवित्र, बणेगौ कोश ही लाखसबदो। सीत रो परीश्रम अथग फलियों सिरे, रेटियो 'उदय' मिल सकल सबदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चांपे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कियो । पडता लांच इण समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले कांम सीधो ॥६॥
रोडले स्मामसो सपूतो सिरोमण, कमधज आज अखियाज कीधी । वार विपरीति में हजारों खरचवें, दाद उजल 'उदे' देस दीधी ॥७॥
चारणों दोय मिल व्याकरण कोश रचि, बण्या नह बडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिल कियो सुभ काम जो, महीयो कियो नह बीस मिलियो॥८॥

कवित

सूर्यमल मिशण ने बनाया वंस भास्कर, बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योही उदियापुर रान के कोष बल घर के।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके।
पोकरण भवानीसिंह स्यामसिंह रोडला के कोष हित कोष बने दानी धन घर के।
प्रांत की प्रबल भाषा प्रतिष्ठित परंपरा बिबुधन दीनमाल वीरपद वाला है।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूँ में रखी नहीं होय कोटि जनता को दास गति डाला है।
डूबत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित बिदाजा है।
जीवित उट्टेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके बनेगे जिशाला है।

Compared by
Sd. Bhawar Singh
Sd. लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd. ह० उदयराज उज्वल
Sd Nami chand Jain
Civil Judge. Jodhpur.

संकेत और चिह्न

सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम	सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अं०	अंग्रेजी भाषा	भू०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकर्मक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकर्मक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मराठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	मह० महत्व०	महत्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इब्र०	इब्रानी भाषा	यौ०	यौगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभयलिंग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म वा० रू०	कर्मवाच्य, रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमान काल
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	शक०	शकन्ध्वादि
गु०	गुजराती भाषा	सं०	संस्कृत
गो० र०	गोरादि	सं० उ०	संज्ञा उभयलिंग
ची०	चीनी भाषा	सं० पु०	संज्ञा पुल्लिंग
जा०	जापानी भाषा	सं० स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
डिं०	डिंगळ	स०	सकर्मक
तु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकर्मक रूप
पं०	पंजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्रीलिंग
पु०	पुल्लिंग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुर्त्त०	पुर्त्तगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृष०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	क्व० प्र०	क्वचित प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० खि०	जग्गो खिड़ियौ
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बंधी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखो
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
फ्रां०	फ्रांसीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाओ
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भाव वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण

चिन्ह

चिन्ह का स्वरूप	स्थान		प्रयोजन
*	शब्द के आगे	...	यह शब्द कविता में ही प्रयोग होता है।
'	शब्द के अक्षरों के बीच में सिर पर	...	यह ध्वनी–लोपिक चिन्ह है, जहां 'ह' की ध्वनी लोप होती है वहां आता है।
—	शब्द के नीचे	...	उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
'...'	शब्द के दोनों ओर सिरों पर	...	व्यक्ति वाचक संज्ञा का सूचक (इन वर्डिड कॉमा)

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
अनेक० अनेका०	अनेकार्थी कोष	उदयराम बारहठ
अमरत	अमरत सागर	महा० प्रतापसिंह जयपुर
अ० मा०	अवधांन माळा	उदयरांम बारहठ
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
ऊ० का०	ऊमरकाव्य	ऊमरदांन लाळस
उ० र०	उक्ति रत्नाकर	साधु सुन्दरगणि
एका०	एकाक्षरी नाम माळा	वीरभांण रतनू, उदयरांम बारहठ
ऐ. जै. का०सं०	ऐतिहासिक जैन काव्य सग्रह	संपा. अगरचन्द नाहटा
क० कु० बो०	कविकुळ बोध	उदयरांम बारहठ
कां० दे० प्र०	कान्हड़दे प्रबंध	पद्मनाभ
गी० रां०	गीत रांमायण	अमृतलाल माथुर
गु० रू० बं०	गुण रूपक बंध	केसोदास गाडण
गो० रू०	गोगादे रूपक	पहाड़खां आढौ
डिं० को०	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारीदान, बूंदी
डिं० नां० मा०	डिंगळ नांम माळा	हरराज कवि
ढो० मा०	ढोला मारू	सम्पादकत्रय रामसिंह तँवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी
द० दा०	दयालदास री ख्यात	दयाळदास सिंढायच
द० वि०	दळपत विलास	सम्पादक रावत सारस्वत
देवी०	देवियांण	ईसरदास बारहठ
ध० व० ग्रं०	धर्म वर्द्धन ग्रन्थावलि	संपा० अगरचन्द नाहटा
नां० मा०	नांम माळा	अज्ञात
ना० डिं० को०	नागराज डिंगळ कोश	नागराज पिंगळ
ना० द०	नागदमण	साइयां झूला
नी० प्र०	नीति प्रकाश	सगरांमसिंह मुहणोत
नैणसी०	नैणसी री ख्यात	मुहणोत नैणसी
पं० पं० च०	पंच पंडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प० च० चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कवि लब्धोदय
पा० प्र०	पाबू प्रकाश	मोडजी आसियौ
पिं० प्र०	पिंगळ प्रकाश	हमीरदांन रतनूं
पी० ग्रं०	पीरदांन ग्रन्थावळि	पीरदांन लाळस
पे० रू०	पेमसिंह रूपक	प्रतापदांन गाडण
बां० दा०	बांकीदास ग्रन्थावळि	बांकीदास
बां० दा० ख्या०	बांकीदास री ख्यात	बांकीदास
बी० दे०	बीसलदे रासौ	कवि नाल्ह
भ०मा०	भक्तमाल	ब्रह्मदास
भिक्खु०, भि०द्र०	भिक्खु दृष्टान्त "	भीखणजी "
मा० कां० प्र०	माधवानल कांम कंदला प्रबंध	कवि गणपति

मा० म०-	मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुन्शी देवीप्रसाद
मा० वचनिका-	माताजी री वचनिका	जती जयचन्द
मीरां	मीरां बाई	...
मेघ०	मेघदूत	नारायणसिंह भाटी
मे० म०	मेहाईमहिमा	हिंगलाजदांन कवियौ
र० ज० प्र०	रघुवरजस प्रकास	किसनौ आढौ
र० रू०	रघुनाथ रूपक	मंछारांम
र० वचनिका	रतनसिंह महेसदासोत री वचनिका	जग्गो खिड़ियौ
र० हमीर	रतना हमीर री वारता	महा० मानसिंह जोधपुर
रा० जै० रासौ	राउ जैतसी रौ रासौ	अज्ञात
रा० जै छंद	राउ जैतसी रौ छंद	बीठू सूजौ नगराजोत
रां० रा०	रांमरासौ	माधौदास दधवाड़ियौ
रा० रू०	राज रूपक	वीरभांण रतनू
रा० वं० वि०	राठौड़ वंस री विगत	अज्ञात
रा० सा० सं०	राजस्थानी साहित्य संग्रह	संग्रह, सम्पादन स्वामि नरोत्तमदास
ल० पिं०	लखपत पिंगळ	हमीरदांन रतनू
ला० रा०	लावा रासौ	गोपाळदांन कवियौ
लो० गी०	राजस्थानी लोकगीत	संग्रह सम्पादन
वं० भा०	वंश भास्कर	सूर्यमल मीसण
व० स०	वर्णक समुच्चय	सम्पादक भोगीलाल सांडेसरा
वि० कु०	विनयकुमार कृति कुसुमांजलि	कविवर विनयचंद्र
वि० सिं०	विड़दसिणगार	कविराज करणीदांन कवियौ
वी० मा०	वीरमायण	बहादर ढाढी
वी० स०	वीर सतसई	सूर्यमल मीसण
वी० स० टी०	वीर सतसई री टीका	किसोरदान बारहठ
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणी री	अज्ञात
वेलि टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात
शा० हो०	शालि होत्र	अज्ञात
शि० वं०	शिखर वंशोत्पत्ति	गोपाळदांन कवियौ
शि० सु० रू०	शिवदान सुजस रूपक	लालदांन बारहठ
स० कु०	समय सुन्दर कृति कुसुमांजलि	महाकवि समयसुन्दर
सू० प्र०	सूरज प्रकाश	कविराजा करणीदांन
ह० नां० मा०	हमीर नांम माळा	हमीरदांन रतनू
ह० पु० वां०	श्रीहरीपुरुषजी की वाणी	श्री हरीपुरुषजी
ह० र०	हरिरस	ईसरदास बारहठ
हा० भा०	हालां झालां रा कुंडळिया	" "

———

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(प्रथम जिल्द)

य

य—देवनागरी लिपि का २६ वाँ व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान तालु है तथा जो यत्न भेद के अनुसार घोष, प्राण भेद के अनुसार अल्प-प्राण तथा प्रयत्न भेद के अनुसार ईषत्स्पृष्ट है एवं स्थिति भेद के अनुसार अंतस्थ है।

यंछां—देखो 'इच्छा' (रू. भे.)

उ०—करखि प्रांण केवियां, दसा अमरखि दुरवंछां।
सु रिख बांण सासत्र, जांण सुरं तारिख **यंछां**।

—रा. रू.

यंत—सं. पु. [सं. यन्तृ] १. सारथी, गाड़ीवान। (डिं. को.)
२. परिचालक।

यंता—वि. [सं. यंतृ] चलाने वाला।

उ०—नियंता **यंता** ना चपळ चित चिंता भुन चुके, प्रचेता चेता ना जियत हम प्रेता बन चुके।

—ऊ. का.

यंत्र—सं. पु. [सं. यंत्रम्] १ मशीन, कल।

उ०—गढ कैलास जिम ऊंचउ, गरूई पौलि, सधर कपाट, लोहमय भोगल, विजयहरी तणी पद्धति, **यंत्र** तणी स्रेणी, ढींकली तणी परंपरा; —व स.

२ औजार।

३ अस्त्र, हथियार। (व. स.)

४ वाद्य, बाजा।

उ०—**यंत्र** वजाया साज कर, कारीगर करतार।
पंचों का रस नाद है, दादू बोलणहार।

—दादू वांणी

५ तावीज।

उ०—पाघ ऊपर चौकड़ी तरवारियां री पड़ रही छै। पण अेक अतीत रौ दियोड़ौ **यंत्र** पाघ में रहतौ और महाराजा करणसिंहजी री दीन्ही स्याळियासींगी सदा पाघ रै मांही रहती तिणसूं सरीर री रक्षा रहती।

—पदमसिंह री बात

६ जादू, टोना।

उ०—हिवै ईयां रै देस माहे धांन घणा। वहवारियां रै लाखे ग्यांन हुवौ। केळेकोट, वगे, काछ, पावर रा महाजन एकठा हुवा होइनै एकै वरतीयै नुं कह्यौ, जु "धांन म्हाहरै घणौ। ज्युं करौ, ज्युं धांन रा पईसा हुवै।" ताहरां महाजन मेह बंधायौ। ताहरां **यंत्र** लिखि अर हिरण रै सींग में यंत्र घालीयौ। घालि नै हिरण छोडि दियौ।

—लाखे फूलांणी री बात

यंत्रकार—सं. पु. [सं. यंत्र+कार] यंत्र को संचालन करने वाला, मैकेनिक।

यंत्रणा—सं. स्त्री. [सं.] कष्ट, पीड़ा। (डिं. को.)

यंत्रमात्रका—सं. स्त्री. यौ. [सं. यंत्र+मातृका] ६४ कलाओं में से एक जिसमें यंत्रों का बनाना व उनका व्यवहार करना शामिल है।

यंत्रमुक्त—सं. पु. [सं.] एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

उ०— कोदंड धनुस चडाव्या, कुंत करागि्र कीध, छुरी पासु परसु पट्टिस सक्ति करमुक्त **यंत्रमुक्त** मुक्तामुक्त दुस्फोट तरवारि अग्नि तेल लोहवद्ध लुडि एवं विध आयुध विसेसि ढांचा भरियां, पत्तियुद्ध प्रवर्त्तिउं। —व. स.

यंत्रराज—सं. पु. [सं.] ग्रहों एवं तारों की गति जानने का एक यंत्र।

यंत्रवाद—सं. पु. [सं.] ७२ कलाओं में से एक।

यंत्रवादी—वि. [सं.] यंत्रवाद का ज्ञाता।

उ०—वागधर सुजांण चित्र-जांण धातुनिस्पत्तिजांण ज्योतिसजांण मंत्रवादी **यंत्रवादी** तंत्रवादी धातुवादी अंजनवादी खन्यवादी गजवैद्य।

—व. स.

यंत्रवाहक—[सं.] मशीन चालक।

उ०—राय पंवायण राजा बइठउ छइ, डावइं पखइं मंत्रि, वीर पउंतार दीवटीया वयगरणा **यंत्रवाहक** चमरहारि छडायता मांणिक विन्नांणी सूयार सूडकर मसाहणी मीठाबोला सरसतरुणा इसी सभा अनइ एतला देस तणउ अधिपति।

—व. स.

यंत्रविद्या—सं. स्त्री. [सं.] मशीन या कलों को बनाने या संचालित करने की विद्या।

यंद, यंदर—देखो 'इंद्र' (रू. भे.)

उ०—१ भीमक धमचाळ, केवियां का काळ। अरजुन का बांण, दुरज्यौधन का मांण, रस बिलास का **यंद**, वचनका हरचंद। सुमेर का भार, कूमेर का भंडार। अनेक खांनदांन वाळा धूंकळा उडावै छै, उदैपुर का बाग मैं वारां बजावै छै।

—बगसीराम पुरोहित री बात

उ०—२ चंद **यंद** समंद हमाऊ पंखी दीठ चोजां, कमोदनी गोम मछां लौकीक कवंद।

—क. कु. बो.

यंदरा—१ देखो 'इंदिरा' (रू. भे.)
२ देखो 'इन्द्रांणी' (रू. भे.)

यंदु, यंदू—देखो 'इंदु' (रू. भे.) (अ. मा.)

यंद्र—देखो 'इंद्र' (रू. भे.) (अ. मा., ना. मा.)

उ०—बारधेस जोम गाज गाळिया त्रिकूट-वासी, राजचील जाळिया

तारखी तेज रूस। कुमंखी कुळसां यंद्र ढाळिया गिरंद काळा, वीर 'सिवा' वाळै रिमां राळिया विधूंस।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

यंद्रजीत–'इंद्रजीत' (रू. भे.)

यंद्रपुर, यंद्रपुरी–देखो 'इंद्रपुरी' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—जुध वारंगना वरै 'जोगावत' वेधि घड़ा यंद्रपुर बसियौ। मह चौंडां सळखां रिणमालां, कमधज कुटंब ऊजळौ कियौ।

—गीत हटीसींघ जोगावत रौ

यंद्रांण–देखो 'इंद्र' (रू. भे.)

यंद्रांणी–देखो 'इंद्रांणी' (रू. भे.) (अ. मा.)

यंद्रावरज–देखो 'इंद्रावरज' (रू. भे.)

यंद्रावरध–देखो 'इंद्रावध' (रू. भे.)

यंद्रासण–देखो 'इंद्रासण' (रू. भे.)

उ०—'ऊदलौ' 'जगौ' 'सायब' 'करन' आफळै, **यंद्रासण** लेयण कारण अधाया। वधै लेता जसी भांत सु वधारा, वधै ज्यूं यज खाग कलै वाया।

—उजैण रै झगड़ा रौ गीत

यंद्रिय, यंद्री–देखो 'इंद्रिय' (रू. भे.)

यंनांम–देखो 'इनांम' (रू. भे.) (ए. का.)

यंनांमी–वि. [अ. इनाम+रा. प्र. ई.] इनाम प्राप्त करने वाला।

उ०—आबादांन गांवां में किसांणां नैं वसाया, उदकी भी **यंनांमी** देसवासी चैन पाया।

—शि. वं.

यंबर–देखो 'अंबर' (रू. भे.)

उ०—ग्राह गयंद विढ़वा लगा, वळ वळ दाखै पांण। उदध छौळ **यंबर** लगा, फेर मथै महरांण।

—गज उद्धार

यंम–सं. पु.–१ कपट, छल। (अ. मा.)

२ देखो 'यम' (रू. भे.)

य—सं. पु. [सं. यः] १ गाड़ी, यान, सवारी। २ हवा, वायु। ३ कीर्ति, यश। ४ सम्मेलन। ५ यव, जौ। ६ बिजली, विद्युत। ७ रोक, रुकावट। ८ यमराज। ९ त्याग १०. योग। ११. संयम। १२. प्रकाश, रोशनी। १३. गणेश। १४. ईश्वर। १५. पुरुष। १६. छन्द शास्त्र में यगण का संक्षिप्त रूप। (एका.)

वि.–जाने वाला। (एका.)

क्रि. वि.–पुनः, और। (एका.)

यक—देखो 'एक' (रू.भे.)

उ०—१ चव आद खटकळ दुकळ, गुरु **यक** पाय मत अठवीसयं। हरि गीत मौ जिण अंत लघु सौ रांम गीत मती सयं।

—र.ज.प्र.

उ०—२ धुर चवदह नव फेर धर, अंत गुरू लघु अक्ख। **यक** तुक मिळ मोहरा उभै, सौ दुमिळा कवि सक्ख।

—र.ज.प्र.

यकअंगी–वि. [सं. एकं+अंगी] १ एक अंग वाला।

२ जिसके केवल एक ही पति या पत्नी हो।

यककुंडळ–सं. पु. [सं. एक कुंडलः] शेष नाग। (ह.नां.मा.)

यकता–देखो 'एकता' (रू.भे.)

यकबारगी–देखो 'एक बारगी' (रू.भे.)

यकलंक, यकलिंग–देखो 'एकलिंग' रू.भे.)

उ०—यण प्रकार रांणौ भीम, कीरति को······भोजताळाबिलंद चितकौ समंद, आचार कौ इंद, सरणायां साधार, हिंदुपति पातस्याह **यकलंक** को अवतार, महिमा अपार, यसौ रांणौ भीम।

–बगसीरांम प्रोहितरी बात

यकलास–देखो 'इकळास' (रू.भे.)

यकवीस, यकवीस–देखो 'इक्कीस' (रू. भे.)

उ०—विप्री तेरह लघुव दीजै, लघु **यकवीस** खित्रणी लीजै। सतावीस लघु वैसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई।

—र. ज. प्र.

यकहत्तर–देखो 'इकोतर' (रू. भे.)

उ०—विध **यकहत्तर** छपय बद, सत्तर गुरु लघु वार। अजय जिकौ गुरु घट वधै, बे लघु नांम निहार।

—र. ज. प्र.

यकांवन–देखो 'इक्यावन' (रू. भे.)

उ०—'सेवै' राज सत्रासै **यकांवन** साल पायौ, सत्रासै तरेपन सैर सीकरी नैं वसायौ।

—शि. वं.

यकार–सं. पु. [सं. यः+कार] १ छंद शास्त्र में 'यगण' गण का नाम।

२ य वर्ण का नाम।

यकावन–देखो 'इक्यावन' (रू. भे.)

यकीन–सं. पु. [अ. यकीन] विश्वास, प्रतीति।

उ०—१ दादू गल काटे कलमा भरैं, अया विचारा दीन। पंचों वक्त नमाज गुजारैं, साबित नहीं **यकीन**।

—दादूवांणी

उ०—२ दादू सिदक सबूरी सांच गह, सावित राख **यकीन**। साहिब सौं दिल लाइ रहु, मुरदा ह्वै मिस्कीन।

—दादूवांणी

यक्ष–[सं. यक्षः] देखो 'जक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ तद नौ नाथ चौरासी सिद्ध कह–जे थे दोनूं ही पूरब जनम में **यक्ष** था, सो कुबेर रै खजांनै पर रुखाळो था।

—डाढाला सूर री बात

उ०—२ **यक्ष** राक्षस अरु भूत पिसाचर, यह तो हम नहिं कोई। चारण सिद्ध नाग अरु गंधरव, देव जात नहिं होई।

—सुखरांम जी महाराज

यक्षकरद्दम–सं. पु. [सं. यक्षकर्दमः] कपूर, अगर, कस्तूरी एवं कंकोल को बराबर मिलाने से बना लेप।

उ०—कुंकम तणा छड़ा दीधा, पद्मिनी तणा पगर भरिया छइं, दमणउ कुरबक महमहइ छइ, केतकी तणा समूह, **यक्षकरद्दम** तणा पोतां दीधां छइं, कस्तूरी तणा स्तबक दीधां छइं।

—व. स.

यक्षग्रह–सं. पु. यौ. [सं. यक्ष+ग्रहः] १ पुराणानुसार एक प्रकार का कल्पित ग्रह, जिसकी दशा लगने पर मनुष्य विक्षिप्त हो जाता है। २ प्रेत-बाधा।

यक्षतरु–सं. पु. यौ. [सं. यक्ष+तरु] वट-वृक्ष, बड़ का पेड़।

यक्षधूप–सं. पु. यौ. [सं. यक्ष+धूप] गूगल, लोबान।

यक्षनायक–देखो 'जक्षनायक' (रू. भे.)

यक्षपत, यक्षपति–देखो 'जक्षपति' (रू. भे.)

यक्षपुर, यक्षपुरी–देखो 'जक्षपुरी' (रू. भे.)

यक्षराज–देखो 'जखांराज' (रू. भे.)

यक्षरात्रि–देखो 'जक्षरात' (रू. भे.)

यक्षरूप–सं. पु. [सं.] महादेव।

यक्षलोक–देखो 'जक्षसलोक' (रू. भे.)

यक्षवित, यक्षवित्त–सं. पु. [सं. यक्ष+वित्त] कंजूस, कृपण।

यक्षस्थळ–सं. पु. यौ. [सं. यक्ष+स्थल] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

यक्षाधिप, यक्षाधिपति–देखो 'जक्षाधिप' (रू.भे.)

यक्षावास–सं. पु. यौ. [सं. यक्ष+आवास] वट-वृक्ष।

यक्षिणी–देखो 'जखणी' (रू.भे.)

यक्षी–देखो 'जखि, जखी' (रू.भे.)

यक्षेंद्र–देखो 'जखेंन्द्र' (रू. भे.)

यक्षेस्वर–देखो 'जखेसर' (रू. भे.)

उ०—चक्रवरतिरिद्धिः, चउद रत्न, नव निधांन, सोल सहस्र **यक्षेस्वर**, ३२ सहस्र नरवर, ३६ सहस्र कुलांगना, ३२ सहस्र वारांगना।

—व.स.

यखु—सं. पु. [सं. इषु] तीर, बांण। (अ. मा.)

यखुआस–सं. पु. यौ. [सं. इषु+आस] धनुष। (अ. मा.)

यखूधीयता–सं. पु. यौ.–तरकस। (नां. मा.)

यगण–सं. पु. [सं.] छन्द-शास्त्र में आठ गणों में से एक, जिसमें प्रथम एक लघु एवं बाद में दो गुरु होते हैं।

यगताळीस–देखो 'इकताळीस' (रू.भे.) (डिं. को.)

यग्य—देखो 'जिग' (रू.भे.)

उ०—भाऊ दिली निगमबोध रा घाट ऊपर **यग्य** करायौ, देवी री आग्या हुई–हमै भाऊ पाछौ दिखण नूं परौ जावै, दूजै महीनै आय साह सूं जंग करै तौ भाऊ री फतै हुवै। —बां. दा. ख्या.

यग्यकारी–सं. पु. [सं. यज्ञकारी] यज्ञ करने वाला।

यग्यक्रतु–सं. पु. [सं. यज्ञक्रतुः] विष्णु का नाम

यग्यक्रिया–सं. स्त्री–१ यज्ञ का काम। २ कर्मकांड।

यग्यकोप–सं. पु. [सं. यज्ञकोप] रावण के पक्ष का एक राक्षस, जो राम के द्वारा मारा गया था।

यग्यदत्त सं. पु. [सं. यज्ञदत्त] १ कांपिल्य नगर का एक अग्नि-होत्रि ब्राह्मण, जिसके पुत्र का नाम गुणनिधि था।

२ भगदत्त राजा के पुत्र 'वज्रदत्त' का नामांतर।

३ वसिष्ठकुलोत्पन्न एक ब्राह्मण, जो यज्ञकर्म में निपुण था।

४. एक राजा, जो भविष्य पुराण के अनुसार शतानीक राजा का पुत्र था।

यग्यपति–सं. पु. [सं. यज्ञपति] १ विष्णु भगवान, २ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

यग्यपसु–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+पशु] १ यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु। २ घोड़ा। ३ बकरा।

यग्यपात्र–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+पात्रम्] यज्ञ में काम आने वाले पात्र।

यग्यपाळ–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+पाल] यज्ञ का संरक्षक।

यग्यपुरुष–सं. पु. [सं. यज्ञ+पुरुष] विष्णु।

यग्यबाहु–सं. पु. [सं. यज्ञबाहु] १ अग्नि का एक नाम २ शाल्मलि द्वीप का एक राजा, जो भागवत के अनुसार प्रियव्रत राजा का पुत्र था। इसकी माता का नाम वर्हिष्मती था।

यग्यभाग–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+भाग] १ यज्ञ का वह भाग (अंश) जो देवताओं को दिया जाता है।

२ इन्द्र आदि देवता, जिन्हें उक्त अंश या भाग मिलता है।

यग्यभाजन–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+भाजन] यज्ञ में काम आने वाले पात्र, बर्तन।

यग्यभूमि–सं. स्त्री. यौ. [सं. यज्ञ+भूमि] वह स्थान जहां यज्ञ किया जाय।

यग्यमंडप–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+मंडप] यज्ञ हेतु बनाया जाने वाला मंडप।

यग्यमंडळ–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+मंडल] यज्ञ करने हेतु घेरा गया स्थान।

यग्यमंदिर–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+मंदिरम्] यज्ञशाला।

यग्यमय–सं. पु. [सं. यज्ञमय] विष्णु।

यग्ययूप–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+यूप] बांस या लकड़ी का वह खंभा जिस के यज्ञ में बलि दिए जाने वाले पशु को बांधा जाता है।

यग्यवराह–सं. पु. [सं. यज्ञवराह] वराहरूपधारी श्री विष्णु का नामान्तर।

यग्यवाह–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+वाह] १ यज्ञ करने वाला।

२ कार्तिकेय का एक अनुचर ।
३ अगस्त्य कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।
४ स्कंद का एक सैनिक ।

यग्यवाहन–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+वाहन] १ विष्णु ।
२ ब्राह्मण ।
३ शिव ।
४ यज्ञवाही, याज्ञिक ।

यग्यव्रक्ष–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+वृक्ष] वट–वृक्ष ।

यग्यसत्रु–सं. पु. [सं. यज्ञ+शत्रु] एक राक्षस, जो लंका निवासी खर नामक राक्षस का अनुगामी था ।

यग्यसरण–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+शरण] यज्ञमण्डप ।

यग्यसाळा–देखो 'जिगसाळा' (रू. भे.)

यग्यसास्त्र–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+शास्त्र] वह शास्त्र, जिसमें यज्ञ एवं उसकी क्रिया का विवेचन हो ।

यग्यसील–सं. पु. [सं. यज्ञ+शील] १ वह जो यज्ञ करता हो ।
२ ब्राह्मण ।

यग्यसूकर–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+शूकर] विष्णु ।

यग्यसूत्र–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+सूत्र] जनेऊ, यज्ञोपवीत ।

यग्यसेन–सं. पु. [सं. यज्ञसेनः] १ पांचाल नरेश द्रुपद राजा का नामांतर ।
२ विष्णु ।

यग्यसेनी–देखो 'जग्यासेनी' (रू. भे.)

यग्यस्तंभ–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+स्तंभ] यज्ञ में बलि दिये जाने वाले पशु को बांधने का खंभा ।

यग्यस्थळ–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+स्थल] वह स्थान, जहां यज्ञ होता हो, यज्ञमंडप ।

यग्यहोता–सं. पु. [सं. यज्ञ+होतृ] १ यज्ञ में देवताओं का आह्वान करने वाला ।
२ मनु के एक पुत्र का नाम ।

यग्यहोत्र–सं. पु. [सं. यज्ञहोतृ] १ यज्ञ में देवताओं का आह्वान करने वाला २ उत्तम मनु के पुत्रों में से एक ।

यग्यांग–सं. पु. यौ. [सं. यज्ञ+अंग] १ यज्ञ की सामग्री ।
२ विष्णु ।
३ गूलर ।
४ खदिर ।

यग्यात्मा–सं. पु. [सं. यज्ञात्मा] विष्णु ।

यग्याधिपति–सं. पु. [सं. यज्ञाधिपति] यज्ञ के स्वामी, विष्णु ।

यग्यारमौं–देखो'इगियारमौं' (रू. भे.)

यग्यारि–सं. पु. [सं. यज्ञारि] १ शिव, महादेव ।
२ राक्षस ।

यग्यारेक–देखो 'इगियारे'क' (रू. भे.)

यग्योपवीत–देखो 'जग्योपवीत' (रू. भे.)

यचरज–देखो 'अचरज' (रू. भे.)

यछै–अव्यय–चाहे ।
उ०—जांणायउ राजा थारौऊ हो जांण, दुई का मील्यां छै येक परांण । जे किम **यछै** दूरी था, कूलह की बेड़ी, सीयलै जंजीर ।
—बी. दे.

यजंगम–देखो 'अजंगम' (रू. भे.)

यज–सं. पु. [सं.] १ विजय, जीत । (डिं. को.)
२ वस्त्र विशेष ।
उ०—चलाखा मलाखा देवदूस्य बंधालग कौठालग कलइग कोकची पंचवरण **यज**, दुरंगी यज, मांगलुरी यज, गढगजी सवागजी चुगजी पंटणी पटपाट्ट ।
—व. स.

यजदां–सं. पु.–पारसियों के अनुसार ईश्वर का एक नाम । (मा. म.)

यजन–देखो 'जजण' (रू. भे.)
उ०—भजन, **यजन** कर पिता थांनै पाया, अमर अराध्यां अवनी पै आप आया । —गी. रां.

यजनकरता–सं. पु. [सं. यजनं+कर्ता] यज्ञ करने वाला ।

यजमांन–देखो 'जजमांन' (रू. भे.)

यजमांनलोक–सं. पु. [सं. यजमानलोक] वह लोक जिसमें यज्ञ करने वाले मृत्यूपरांत निवास करते हैं ।

यजमांनी–देखो 'जजमांनता, जजमांनी' (रू. भे.)

यजार–देखो 'इजारबंद' (रू. भे.)
उ०—सुरखी वनि सूथनि भारनकी, लटकी लर स्यांम **यजारन** की । कुरती कचिया मखतूलन की, उर माळ चमेलिय फूलन की ।
—ला. रा.

यजुरवेद–देखो 'जजुबेद, जजुरवेद, (रू. भे.)

यजुरवेदी–देखो 'जजुरबेदी' (रू. भे.)

यजुरवेदीयौ–सं. पु. [सं. यजुरवेदिन्] यजुर्वेद का ज्ञाता ।
उ०—सघला सामक अथरवणी, **यजुरवेदीया** जांण । रघुवेदी मवि रथि चड्या, पंडित पोकारि पुरांण ।
—मा. कां. प्र.

यडग–देखो 'अडिग' (रू. भे.)

यण–देखो 'अण' (रू. भे.)
उ०—तिका **यण** वार अवतार सकती तणा, भाव भकती तणा घणा भूका । फजर ग्रह रांण तप तेज मुख फाबियां, ढाबियां सूळ 'बीकांण' ढूका ।
—मे. म.

यतन, यतन्न–देखो 'जतन' (रू. भे.)

उ०—गादह दाध्यउ दग्ग करि, सासू कहइ वचन्न । करहउ ए कूड़इ मनड, खोड़उ करइ यतन्न ।

—ढो. मा.

यतमांमी—सं. पु. [अ. इहतिमाम+रा. प्र. ई] व्यवस्थापक —नैणसी

यतलाक नवेस—सं. पु. एक राज्याधिकारी —नैणसी

यतवत—क्रि. वि. इधर–उधर ।

उ०—जन हरिदास सतगुरु सवद, अंतरि लागा वांण। हरि हेरत हरि मन हरया, यतवत लहे न जांण ।

—ह. पु. वा.

यति—देखो 'जती' (रू. भे.)

यतिदेवर—सं. पु. [सं] चूहा । (डिं. को.)

यतिधरम—सं. पु. यौ. [सं. यति+धर्म] सन्यास ।

यतिभंग, यतिभ्रष्ट—सं. पु. यौ. [सं. यति+भंग या यति+भ्रष्ट] छंद शास्त्र में वह दोष, जब किसी छंद में यति उचित स्थान पर न होने के कारण लय या प्रवाह बिगड़ जाता है ।

यतिसांतपन—सं. पु.—तीन दिन का एक व्रत जिसमें केवल पंचगव्य और कुश जल पीकर रहना पड़ता है ।

यती—सर्व.—१ इतना ।

२ देखो 'जती' (रू. भे.)

यतीम—सं. पु. [अ.] १ वह बालक जिसके माता–पिता मर गये हों, अनाथ ।

२ ऐसा बड़ा मोती जो सीप में एक ही होता हो ।

३ बहुमूल्य रत्न ।

यतीमखांनौ—सं. पु. [अ. यतीम+फा. खानः] वह स्थान जहां अनाथ बालकों का पालन–पोषण होता है, अनाथालय ।

यतीस्वर—सं. पु. यौ. [सं. यति+ईश्वर] योगीराज, यतिराज, यतीश्वर।

उ०—स्रीयुगप्रधांन यतीस्वरु, देखतां हो हुवै सफलौ दीह । नित विजय हरख वंछित दीयै, धरि भावैं हो गावैं धरमसीह ।

—ध. व. ग्रं.

यतौ—सर्व.—१ इतना ।

उ०—१ जुध 'पाल' हुवौ मन मोद जितौ, अन भूप न आवत व्याव यतौ । वरणी रिव ऊगम सेन विधू, चंद ऊगम सूरजपाल सिधू ।

—पा. प्र.

उ०—२ आद तिको यज अंत में, इधक सु खुलतैं अंक । अकारादि कहिया यता, सम अखरोट असंक ।

—र. रू.

२ जहां ।

यत्न—देखो 'जतन' (रू. भे.)

यत्र—देखो 'जत्र' (रू. भे.)

यत्रतत्र—अव्य. [सं.] १ जहां–तहां, इधर–उधर ।

२ यहां–वहां सभी जगह, अनेक स्थानों पर ।

३ कुछ यहां, कुछ वहां ।

यथा—देखो 'जथा' (रू. भे.)

उ०—कुच मरदन, कप्पइ अधर, लीइ चुरासी लाग । सुहड यथा समरंगणि, भडतां कोइ न भाग ।

—मा. कां. प्र.

यथाक्रम—देखो 'जथाक्रम' (रू. भे.)

यथानियम—देखो 'जथानियम' (रू. भे.)

यथापूरव—अव्य. [सं. यथा+पूर्व] जैसा पहले था वैसा ही । पूर्ववत्, ज्यों का त्यों ।

यथायोग्य—देखो 'जथाजोग' (रू. भे.)

यथाविधि—देखो 'जथाविधि' (रू. भे.)

यथासक्ति, यथासगती—देखो 'जथासकती' (रू. भे.)

यथोचित—अव्य. [सं. यथा+उचित] जैसा उचित हो वैसा । उपयुक्त ।

यदपि—देखो 'जदपि' (रू. भे.)

उ०—मीरां को प्रभु सांची दासी बणाउ । झूठे धंधा रे मेरा फंदा छुडाउ । लूटेहि लेत विवेक का डेरा । बुद्धिबळ यदपि करूं बहुतेरा ।

—मीरां

यदा—देखो 'जद' (रू. भे.)

उ०—एक दिन मरणौ हो राजाजी यदा तदा, छोडो नीं कांम बिसेस । बीजौ तौ तारण जग में को नहीं, तारै जिणजी रौ धरम एक ।

—जयवांणी

यदि—देखो 'जदी' (रू. भे.)

यदु—देखो 'जदु' (रू. भे.)

यदुनंदन—देखो 'जदुनंदण' (रू. भे.)

यदुनाथ—देखो 'जदुनाथ' (रू. भे.)

यदुपति—देखो 'जदुपति' (रू. भे.)

यदूभूप, यदुराज—सं. पु. [सं.]—श्रीकृष्ण ।

यदुवंस—देखो 'जदुवंस' (रू. भे.)

यदुवंसमणि—सं. पु. यौ. [सं. यदु+वंश+मणि] श्री कृष्ण ।

यदुवंसी—देखो 'जदुवंसी' (रू. भे.)

यदुवर, यदुवीर—देखो 'जदुवर, जदुवीर' (रू. भे.)

यद्यपि—देखो 'जदपि' (रू. भे.)

यधक—देखो 'अधिक' (रू. भे.)

यभ—१ देखो 'इभ' (रू. भे.)

उ०—दळ सभ्रत खळ दाह, यभ वाज अणथाह, गह रचण गजगाह, नरनाह रघुनाथ ।

—र. ज. प्र.

यम–सं. पु. [सं. यमं] १ दमन, निग्रह ।
२ नियंत्रण ।
३ आत्म संयम ।
४ चित्त को धर्म में रखने वाले कर्मों का साधन ।
५ योग के आठ अंगों में से प्रथम ।
वि. वि.–योग के आठ अंग निम्न हैंः—
(१ यम, २ नियम, ३ आसन, ४ प्राणायाम, ५ प्रत्याहार, ६ धारणा, ७ ध्यान और ८ समाधि)
६ एक साथ उत्पन्न बच्चों का जोड़ा ।
७ देखो 'जम' (रू. भे.)
क्रि. वि.–१ ऐसे, इस प्रकार ।
उ०—१ सुगत वचन रणजीत **यम** आगम असुर समाज । मनहु जुत्थ मातंग पर, लखि गमन्यौ अगराज ।
—ला. रा.
उ०—२ प्रथम त्रीय मत वा'र पढ, अख पद बियौ अठार । चौथै पनरह मात रच, **यम** गाथा उच्चार ।
—र. ज. प्र.
२ ज्यूं, जैसे ।
उ०—त्यांहां जइ तेह नि विरहि, लगाडूं प्रीतकरि **यम** नारि । गुण असी कल थांमि नहीं, राई धिक तेहनु अवतार ।
—नळाख्यांन

यमक–देखो 'जमक' (रू. भे.)

यमककरिणिक–सं. पु. सेना में व्यूहरचना का प्रबन्धक ।
उ०—सौवरण–करिणिक देवकरिणिक मंडल करिणिक उष्ट्रकरिणिक इष्टिकाकरिणिक घोडककरिणिक **यमककरिणिक** पुरोहितकरिणिक ।
—व. स.

यमघंट–१ देखो 'जमघंट' (रू. भे.)
२ देखो 'जमघटजोग' (रू. भे.)

यमचक्र–देखो 'जमचक्र' (रू. भे.)

यमजातना–देखो 'यमयातना' (रू. भे.)

यमजित–वि. [सं.] मृत्यु को जीतने वाला । मृत्युंजय ।
सं. पु.–शिव, महादेव ।

यमणौ, यमबौ–देखो 'जीमणौ, जीमबौ' (रू. भे.)
उ०—पग न चांपूं पुरुस कोएना, न **यमूं** कुहुनूं छांड्यूं अन्न, वाट जोऊं माह्रा प्रीउडा केरी, राखी तेहनि चरणि मंन । —नळाख्यांन

यमियोड़ौ–देखो 'जीमियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. यमियोड़ी)

यमदंड–देखो 'जमदंड' (रू. भे.)

यमदग्नि–देखो 'जमदग्नि' (रू. भे.)

यमदूत–सं. पु. यौ. [सं. यम+दूत] १ कौआ ।
२ नौ समिधों में से एक ।
३ विश्वामित्र ऋषि का एक पुत्र ।
४ वह घोड़ा जिसके शरीर का रंग श्वेत हो किन्तु चारों पैर श्याम वर्ण के हों (अशुभ) (शा. हो.)
५ वह घोड़ा जिसके होठ परस्पर न मिलते हों (अशुभ) (शा. हो.)
६ देखो 'जमदूत' (रू. भे.)

यमन–सं. स्त्री.–संगीत में एक राग विशेष ।

यमनक्षत्र–देखो 'जमनखतर' (रू. भे.)

यमनाथ, यमनाह–देखो 'जमनाह' (रू. भे.)

यमपद–सं. पु.–शाक विशेष ।
उ०—येठीमधु नइं यावनी, यवपत्रडी यवांनि । यक्षलता योसिम हरी, **यमपद** पांनि पांनि ।
—मा. कां. प्र.

यमपुर, यमपुरी–देखो 'जमपुर' (रू. भे.)

यमभगिनी–देखो 'जमभगनी' (रू. भे.) (डिं. को.)

यमया–देखो 'जमया' (रू. भे.)

यमयातना–सं. स्त्री. यौ. [सं. यम+यातना] पुराणानुसार मृत्यु के बाद यम द्वारा दी जाने वाली यातना या कष्ट ।
रू० भे०–यमजातना ।

यमराज–सं. पु. [सं.] १ एक ग्रन्थकार, जिसने 'भास्करसंहिता' के अन्तर्गत ज्ञानार्णवतंत्र की रचना की थी ।
२ देखो 'जमराज' (रू. भे.)
उ०—**यमराज** उधारे, रांमण मारे, ते हण कंस अमंता है । कह बुद्ध किलंकी ईस ऊसंकी, कळ पूरण सीकंता है ।
—र. ज. प्र.

यमल–सं. पु.–१ वाद्य यन्त्र विशेष ।
उ०—एकि वलबुद्धि आयुवृद्धिकार सीतल सर अप्पायक पांणी आपतां वसा चूरइ, एकि वीणा वेणु अदंग **यमल** संख पटह कंसालप्रमुख अगुणपंचास वादित्रस्वर सांभलावइं मधुर ।
—व. स.
२ देखो 'जमल' (रू. भे.)
उ०—स्रीरांम **यमलां** रूखमणी, दीसंति सकल सरूप । नारद तुंबर गीत गावई, विप्रदांन अघट्ट । मंगळीक अनेक वरत्या, बिरुद बोलई भट्ट ।
—रूकमणी मंगळ

यमलोक–देखो 'जमलोक' (रू. भे.)

यमवारौ–देखो 'जमारौ' (रू. भे.)
उ०—रात हुई सट मासनी, चिंतवे मनरे मांयजी । दुख रा दाधा मांणसा, **यमवारौ** किम जायजी ।
—जयवांणी

यमवाहन–देखो 'जमवाहण' (रू. भे.)
यमहंता–देखो 'जमहंता' (रू. भे.)
यमहर–देखो 'जमहर' (रू. भे.)
उ०—चंदण कमलताल पुण मेल्हइ जाल, चंद्रकांति ज्वलइ, पुष्प सय्या बलइ, हार भावइ अंगार, कदलीहर मानइ **यमहर**, जे जलसीकर ने उद्वेग करइ, जे सीतलोपचार इंग विकारइ, इणि परि प्रज्वलित स्नेहपटल बिरहानल दीपतेइ ।
—व. स.
यमालय–सं. पु. यौ. [सं. यम+आलय] यम के रहने का स्थान, यमपुरी ।
यमि–सं. पु. [सं.] इन्द्रियों को वश में रखने वाला ।
सं. स्त्री.–यमुना नदी । (डिं. को.)
यमुना–देखो 'जमना' (रू. भे.)
यमनोतरी–देखो 'जमनोतरी' (रू. भे.)
यमेस–सं. पु. [सं. यमेश] भरणी नक्षत्र का नामान्तर ।
यम्रत–देखो 'अम्रत' (रू. भे.)
ययाति–सं. पु.–राजा नहुष के पुत्र एवं राजा पुरू के पिता, जिनका विवाह शुक्राचार्य जी की पुत्री से हुआ था ।
वि. वि.–इन्होंने शुक्राचार्य जी से जर्जर अवस्था को प्राप्त होने के अभिशाप के कारण अपने पुत्र पुरु से यौवनावस्था को प्राप्त किया और पुरु को जर्जर अवस्था प्रदान कर १००० वर्ष तक जीवन का सुख भोगा । अन्त में पुरु को पुनः यौवनावस्था लौटाकर उन्हें राज्य-पद दिया एवं स्वयं ने वृद्धावस्था को अंगीकार किया ।
ययावर–देखो 'यायावर' (रू. भे.)
ययी–सं. पु.–१ शिव ।
२ वलि चढ़ाया जाने वाला घोड़ा ।
३ घोड़ा ।
४ मार्ग, रास्ता ।
५ बादल ।
यरंद, यर–देखो 'अरि' (रू. भे.)
उ०—१ खुलत रिख नयण सुण, पंख पळचर खरर । डगमगत **यर** घुसत, भाज परवत उरर ।
—र. ज. प्र.
उ०—२ अरक आकरौ 'मांन' भूपत तपै आजरौ, थटै दळ कळह समांन थातां । पेसकस भरै सुन 'मांन' औवड़ पगां, **यरां** मत करौ अभमांन आतां ।
—चिमनजी आढौ
यरथाट–देखो 'अरिथाट' (रू. भे.)
उ०—चुग नहीं मळे पळचार स-चीता, चखण काज लभै नह चारौ । 'धीरजीयौ' **यरथाट** थकावण, हाल गयौ दळ मेळण हारौ ।
—सुखजी खड़ियौ

यरहर–देखो 'अरिहर' (रू. भे.)
उ०—दूसरा 'माल' संग लियां चुतरंग दळ, **यरहरां** मार सैणां उबारै । रण भड़ां सहल जूभा गहल राठवड़, महल रमतां पड़ै दहल सारै ।
—कल्याणदासजी महड़ू
यरादौ–देखो 'इरादौ' (रू. भे.)
उ०—दाया बैर का तो व्याहि बेटी दूर कीनां, भूथरी का **यरादा** डायजा में छोड दीनां ।
—शि. वं.
यळ–देखो 'इळा' (रू. भे.)
उ०—१ करुणा निधांन कोदंड कर, नित चालण **यळ** रीत नय । रघुकुळ दिनेस जन लाज रख, जग अधार औधेस जय ।
—र. ज. प्र.
उ०—२ चारणां वरण संकट सुणै, लाख वात अंजल न लै । कमध यळ सीस राखण कथां, घणां खळां खपरां घलै ।
—पा. प्र.
यळधीस–सं. पु. [सं. इलाधीश] राजा, नृप (डिं. को.)
यळनाथ–सं. पु. [सं. इलानाथ] राजा, नृप (डिं. को.)
यळप्रभ–सं. पु. [सं. इलाप्रभा] नगर, शहर (अ. मा.)
यलम–देखो 'इलम' (रू. भे.)
उ०—उतन विलायत किलकता कांनपुर आविया, ममोई लंक मदरास मेळा । **यलम** धुर वहण अंगरेज दाटण यळा, भरतपुर ऊपरा हुआ भेळा ।
—कविराजा बांकीदास
यलल्लाह–देखो 'इलल्ला (रू. भे.)
उ०—रहै पीरदोला मदत्ति तिहारी, यलल्लाह के हाथ है जीति हारी ।
—ला. रा.
यळसुवन–सं. पु. [सं. इला+शूनु] पृथ्वीपुत्र मंगल । (अ. मा.)
यळा–सं. स्त्री [सं. इला] १ इन्द्र की राणी इन्द्राणी । (ना. मा.)
२ देखो 'इळा' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—फौजां देख न कीधी फौजां, दोयण किया न खळा डळा । खवां खांच चूड़ै खावंदरै, उणहिज चूड़ै गई यळा ।
—बां. दा.
यळाइन्द–सं. पु. [सं. इला+इंद] राजा, नृप । (डिं. को.)
यलापत, यलापति–सं. पु. [सं. इला+पति] राजा, नृप ।
यवन–सं. पु. [सं.] १ कृष्ण के द्वारा मारे गए 'कालायवन' राजा का नामान्तर ।
२ हैहय राजा का एक साथी, जिसे सगर ने पराजित किया था ।
३ एक लोक समूह, जो गांधार देश के सीमा भाग में स्थित 'अरिआ' एवं 'अर्कोशिया' प्रदेश में रहते थे ।
४ देखो 'जवन' (रू. भे.)

यवमध्य–सं. पु. [सं. यव+मध्य] १ एक प्रकार का चांद्रायण व्रत।
उ०–कनकावलि रत्नावलि मुक्तावलि सिंहविक्रीडित महासिंहाविक्रीडित गुणरत्न संवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोतर सर्वतोभद्र **यवमध्य** चंद्रायण वज्रमध्य चंद्रायण आचाम्ल वरद्धमांन।
—व. स.
२ पांच दिवस में समाप्त होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।
३. एक प्राचीन नाप।

यवरोटिका–सं. स्त्री. [सं. यव+रा. रोटिका] यव की बनी रोटी या चपाती।
उ०—एकं कुभोजनं अन्यत्तु प्रथम कवले मक्षिकापातः, एकुथिता रथा अंतरगता कंसारिका, एका **यवरोटिका** अन्यत्काकभक्षिता च एक पंकुला रथ्या।
—व. स.

यवागू—सं. पु. [सं.] जौ या चावल का वह मांड जो सड़ा कर कुछ खट्टा कर दिया गया हो।

यविनर–सं. पु. [सं.] १ द्रुह्यु कुलोत्पन्न एक सुविख्यात राजा, जो मत्स्य के अनुसार अजमीढ राजा का, एवं भागवत, विष्णु एवं वायु के अनुसार द्विमीढ राजा का पुत्र था।
२ उत्तर पंचाल देश का एक राजा, जो भागवत पुराण के अनुसार भर्म्यस्व राजा का पुत्र था।

यवियस–सं. पु. [सं.] १ एक राजा, जो वायु के अनुसार ऋक्ष राजा का पुत्र था।
२ एक आचार्य, जो वायु के एवं ब्रह्मांड के अनुसार, व्यास की सामशिष्य परंपरा में से हिरण्यनाभ ऋषि का शिष्य था।

यस–सं. पु.–१ भोजन, अन्न।
२ सुतभ देवों में से एक।
३ विकुंठ देवों में से एक।
४ देखो 'जस' (रू. भे.)

यसड़ौ—देखो 'इसड़ौ' (रू. भे.)

यसनांमिक–वि. [सं. यशनामिक] यशस्वी।
उ०—**यसनांमिक** कृत्य ताहरुं, पुरीसादाणी विरुद्द, वामाकुल वडभागीयौ, 'पारसनाथ' मरद्द। जिन सासननौ भूपति, वरद्धमांन जिनभांण, दूसम पंचम आरके, सकल प्रवर्त्ते आंण।
—कवियण

यसब—सं. पु. [अ. यश्ब] एक हरा कठोर पत्थर जो दिल धड़कने की बिमारी के लिए औषध रूप में काम आता है।

यसवंत–यशस्वी।

यसस्कर–सं. पु. [सं. यशस्कर] शिवदेवों में से एक।
वि.–यशस्वी,

यसस्वी–देखो 'जसवांन' (रू. भे.)
उ०—देव अनाथनाथ जगन्नाथ त्रिभुवनस्वामी, विमलवाहन चक्षुस्मंत **यसस्वी**–अभिचंद्र–प्रसेनजित–मरुदेवनइ अन्वयि नामि नरेस्वरकुल–नभस्थल–मयूसमाली।
—व. स.

यसारत–देखो 'इसारौ' (रू. भे.)
उ०—नमे कदम्मां तदि निजर, **यसारत** बरियांम। तदि पाए वैठो मंत्री, सझे तीन सल्लांम।
—सू. प्र.

यसु–सं. पु. [सं. अयस्] लोहा। (अ. मा.)

यसुमति–देखो 'जसुमती' (रू. भे.)

यसूं–वि. [सं. यादृशकम्] जैसा।
उ०—एणी पिरि चींतव (तां) तांहां सरोवरनी तीरि, वरटापति सुंदर तां दीठु कनक **यसूं** सरीर।
—नळाख्यांन

यसोदा–देखो 'जसोदा' (रू. भे.)

यसोदानंदन–देखो 'जसोदानंद' (रू. भे.)

यसोदेवी–सं. स्त्री.–अनुवंशीय सम्राट बृहन्मनस की पत्नी।

यसोधन–सं. पु.–पांडववंसीय दुर्मुख पांचाल नामक राजा का पुत्र।

यसोधर–१ भूतकाल के १८ वें तीर्थंकर का नाम।
२ भविष्यतकाल के १९ वें तीर्थंकर का नाम।
३ देखो 'जसोधर' (रू. भे.)

यसोधरा—देखो 'जसोधरा' (रू. भे.)

यस्टकुटी–सं. स्त्री.–पहाड़। (अ. मा.)

यस्टि–सं. स्त्री–१. लकड़ी का शस्त्र।
उ०—**यस्टि** सपन, पठमु, हल, मुसल, कुलिस, कातर, करपत्र, तरवारि, कुद्दाल, यंत्र, गोफल, डाहिणि, संडासिका, कुहाडी, छिपुस, इति छतीस दंडायुधानि।
—व. स.

यह–सर्व. [सं. इदं] निकट की वस्तु, व्यक्ति अथवा विचार (संज्ञा) के लिए प्रयुक्त शब्द, जो वह का विपरीतार्थक होता है।
रू० भे०–यहु, येह।

यहां–क्रि. वि. [सं. इह] इस स्थान पर।

यहि, यही–सर्व.–निश्चित रूप से यह, यह ही।
रू० भे०–यहु, येई, योई, योही, यौही।

यहीं–क्रि. वि.–इस स्थान पर ही।
रू. भे.–यांही।

यहु–१ देखो 'यही' (रू. भे.)
उ०—क्रोध विरोध भरया सुर केवि रे, निकलंक निरदोस **यहु** नित मेव रे।
—ध. व. ग्रं.
२ देखो 'यह' (रू. भे.)

उ०—दादू सिर करवत वहै, अंग परस नहिं होइ। मांहि कळेजा काटिये, **यहु** व्यथा न जांणे कोई।

—दादूवांणी

यहूद—सं. पु.—देश का नाम, जहां हजरत ईसा पैदा हुए थे।

यहूदी—सं. पु.—१ यहूद देश का निवासी।

२ उक्त देश की एक जाति।

सं. स्त्री.—३ यहूद देश की भाषा।

वि०—यहूद देश का, यहूद देश सम्बन्धी।

यां—सर्व०—१ इन।

उ०—१ जिकण नूं मीणां रा मारण रौ निस्चय जणाइ उणरौ बडौ पुत्र कुंभराज तिणहूं छोटौ कन्हड़ **यां** दोही बंधवां नूं बडी बरात रै साथ बरणनूं बुलाइ मीणां रै मावण जिसड़ौ एक बाडौ जुदौ ही बणायौ। —वं. भा.

उ०—२ विलै इग्यारस वरस भगति ऊपरि प्रभ भीजै। पिप्पळ तुळछी पांन रांम **यां** ऊपरि रीजै। —पी. ग्रं.

२ इन्होंने।

उ०—१ तद राव सेखैजी कहायौ, 'गढ अठै मती घाळज्यौ, परै जांगळू री हद मैं घातौ।" सू **यां** मांनी नहीं। —द. दा.

उ०—२ एतां आद छतीस कुळ, सीस 'अजौ' पत धार। हलचल्ली मेछां धरा, **यां** झल्ली तलवार। —रा. रू.

३ इस।

क्रि. वि.—१ इस प्रकार, इस तरह।

उ०—१ लघु तै दीरघ पुन पुलित, **यां** मात्रा इधकाय। त्यां छोटे न वड किय 'पता', वडै महांन वढाय।

—जैतदांन बारहठ

उ०—२ महाराजा भांमी महळ, नर सुर नागां नूर। कुसळ नहीं कंस केसरै, **यां** दाखै अकरूर। —पी. ग्रं.

२ इससे।

उ०—लग मत्ता चौवीस छंद मत्त लेखजै, सुज **यां** अधिका मत उपछंद विसेखजै। वरण मत सम नहीं असम पद जांणजै, बे छंदां मिळ दंडक मत्त बखांणजै।

—र. ज. प्र.

३ यहां।

उ०—तठै वीरमदेजी रै सांमा जोय पातसाहजी फुरमायौ कै वीरम तुम अब तलक **यां** ई हौ। —द. दा.

रू. भे. यांह

यांन—सं पु. [सं. यानं]—१ सवारी, वाहन।

२ विमान।

३ गति, चाल।

क्रि. वि.—इस प्रकार, इस तरह।

यांनी—देखो 'यांनै' (रू. भे.)

यांनै—अव्य.— मतलब यह है कि, अर्थात।

रू. भे.—यांनी

यांम—देखो 'जांम' (रू. भे.)

यांमल—देखो 'जमल' (रू. भे.)

यांह—१ देखो 'यहां' (रू. भे.)

उ०—ते संतान तणी चिंता करनु राजा **यांह**, दमन नांम रिसि ईछा आवु मंदिर तेणि तांह।

—नळाख्यांन

२ देखो 'यां' (रू. भे.)

उ०—पचीसां नूं ही कूट मारिया, जांनीवासै ऊपर जाय नैं जांनियां नूं कूट मारिया, जांनी सोह मारिया, आबू भाई लूंणौ थौ तठै खबर मेलणी, तितरै एकण **यांह** रै रजपूत कह्यौ—'हूं जाईस' तरै कह्यौ 'तूं क्यूं कर जाईस ? —नैणसी

या—सर्व.—यह

उ०—१ मतवाला हो पोढ़ग्या, सुध-बुध दीन्ही भूल। पर हाथां रा हो गया, **या** हिड़दा में सूल।

—अज्ञात।

उ०—२ **या** कहतां ही पातसाह री सैन सूं वजीर रौ तीर मंकुवांण री छाती रै पार फूटौ।

—वं. भा.

उ०—३ एक अखंडी ब्रह्म की, जा घट झिलमिल जांनि। हरीया उत्तिम साध की, **या** ही रीत पिछांनि।

—अनुभव वांणी

क्रि. वि.—अथवा।

उ०—सरव वंस तारणी, रांम **या** भागीरथी। —रांमरासौ

याक—सं. पु.—हिमालय पहाड़ पर प्रायः तिब्बत में होने वाला एक चौपाया जानवर, जो बोझा ढोने के काम आता है।

याकूत—सं. पु. [अ.] एक प्रकार का लाल रंग का बहुमूल्य पत्थर।

याग—देखो 'जाग' (रू. भे.) (डिं. को.)

यागवलक—देखो 'याग्यवल्क्य' (रू. भे.)

यागि—देखो 'जाग' (रू. भे.)

उ०—जो फल पांमइ तपसी सवे, जे फळ हुइ बांद छोडवै। जे फल पांमइ कीघइ **यागि**, जे फल भेटयां हुइ प्रियागि।

—कां. दे. प्र.

याग्य—सं. पु.—भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

याग्यतुर—सं. पु.—ऋषभ नामक अश्वमेध करने वाले राजा का पैतृक नाम।

याग्यदत्त—सं. पु.—वशिष्ठकुलोत्पन्न याज्ञवल्क्य नामक गोत्रकार का नामान्तर।

याग्यवल्क्य–सं. पु.–१ विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
२ वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
३ एक आचार्य, जो व्यास की ऋक्शिष्य परंपरा में से बाष्कल नामक ऋषि का शिष्य था।
४ एक आचार्य, जिसके आश्रय में विष्णुयशस् नामक ब्राह्मण के घर, कल्कि नामक विष्णु का ग्यारहवां अवतार उत्पन्न होने वाला है।
५ विश्वामित्र के ब्रह्मवादी पुत्रों में से एक।
६ एक प्रसिद्ध ऋषि, जो वैशम्पायन के शिष्य थे।
७ राजा जनक के दरबार में रहने वाले एक ऋषि, जिनकी पत्नियों का नाम मैत्रैयी एवं गार्गी था।
८ योगीश्वर याज्ञवल्क्य के वंशज, एक स्मृतिकार।
याग्यसेनी–सं. पु. [सं.] यज्ञसेन की पुत्री, द्रौपदी।
याग्यिक–सं. पु. [सं.] यज्ञ करने या कराने वाला।
याचक–देखो 'जाचक' (रू. भे.)
याचनी–सं. पु.–अमुक वस्तु मुझे दो–ऐसी याचना करने वाला। (जैन)
याजक–सं. पु. [सं.] १ यज्ञ कराने वाला।
२ राजा का हाथी।
३ मस्त हाथी।
याजन–सं. स्त्री. [सं. याजनं] यज्ञ की क्रिया।
याजि–सं. पु.–यज्ञ करने वाला।
यातना–सं. स्त्री. [सं.] १ अत्यन्त शारीरिक कष्ट या पीड़ा।
२ यम द्वारा पापियों को दिया जाने वाला दण्ड।
यातायात–सं. पु. यौ. [सं. यात+आयात] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया, गमनागमन, आना जाना।
२ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का साधन।
यातुधांन–देखो 'जातुधांन' (रू. भे.)
यात्र, यात्रा–देखो 'जातरा' (रू. भे.)
उ०—१ सिद्ध वड़हि सदाई जी, दीपै सुर दाई। प्रगटी पुण्याई जी, जिण **यात्रा** पाई।
—ध. व. ग्रं.
यात्राळू–वि. [सं. यात्रा+रा. प्र. ळू] यात्री।
उ०—महाराज कोई **यात्राळू** जाइ छै। सीले पौहर हुवौ छै। पछै धूप चढिसी, तिणौ थी नगारौ हुवौ छै। कूच हुसी।
—जैसा सरवहिया री वात
यात्री–देखो 'जातरी' (रू. भे.)
उ०—किता केइ मारग मांहि कलेस, आवै केइ **यात्री** लोक असेस। सरै छै कांम तियां सतमेव, दीयै सुख वंछित रिसभदेव।
—ध. व. ग्रं.

याद–सं. स्त्री. [फा.] १ स्मरण शक्ति, स्मृति।
२ स्मरण करने की क्रिया या भाव।
क्रि. प्र.–करणी, कराणी दिराणी, होणी।
यादगार, यादगारी, यादगीर, यादगीरी–सं. स्त्री. [फा. यादगार] स्मृति चिन्ह, स्मारक।
उ०—इण सराय में आवणै रौ फळ **यादगीर** रै बगैर कुछ बाकी नहीं रहसे।
—नी. प्र.
याददास्त–सं. स्त्री. [फा. याददाश्त] १ स्मरण शक्ति, स्मृति।
२ स्मरण रखने के लिए लिखी हुई कोई बात।
यादबगसी–सं. पु.–राजा का एक विशेष अधिकारी।
यादम–सं. पु. [अ. आदम] आदमी, पुरुष।
उ०—लाज सरम छोडी नै भागा नै कहण लागा, यारौ कोई मुनि **यादम** लड़ै तौ तिण से लड़िये पिण क्या जांणां केते ही जगमालि थे।
—गींदोली री बात
यादव–'देखो' जादव' (रू. भे.)
उ०—भावसिंघ राठौड़ां रौ भांणेज, भगवंतसिंघ नरूकां रौ भांणेज, भारथसिंघ **यादवां** रौ भांणेज।
—बां. दा. ख्या.
यादवकुळ, यादवकुळि–सं. पु. यौ. [सं. यादव+कुल] यादव वंश।
उ०—आदिपुरुस अवतार धुरि, **यादवकुळि** जयवंत। असुरवंस निकंदीउ, ते प्रणमूं स्रीकंत।
—कां. दे. प्र.
यादवपति–देखो 'जादवपत' (रू. भे.)
उ०—**यादवपति** जावे हो प्रभुजी ने वांदवा, नगरी द्वारिका सिणगार। घर घर मांहे हो महोच्छव मंड रह्यौ, हरस सूं जावै नर नार।
—जयवांणी
यादववंश–सं. पु.–यदु राजा का वंश, जिसमें श्री कृष्ण हुए थे।
उ०—राजकुली ३६; सूरयवंस, सोमवंस, **यादववंस**, कदंब, परमार, इक्ष्वाक, चाहुमान, चालुक्य, मोरी, सेलार सैंधव······
—व. स.
याबू–सं. पु. [फा.] छोटे डील-डौल का घोड़ा, टट्टू।
यायावर–सं. पु. [सं.] १ इधर-उधर घूमने वाला।
२ एक स्थान पर टिक कर न रहने वाला जरत्कारु ऋषि।
३ वह ब्राह्मण जिसके घर पर गार्हस्पत्य अग्नि सदा प्रज्वलित रहती हो।
४ यवरी नामक नागकन्या के वंशज, चारण।
रू. भे.–ययावर।
यार–सं. पु. [फा.] १ मित्र, दोस्त।

उ०—औ पतीत पावन प्रभु, इणरौ करौ उचार। इणि रौ नांम कल्यांण छै, औ अरिजण रौ **यार**।

—पी. ग्रं.

२ साथी, मददगार।

३ वह व्यक्ति जिसका किसी स्त्री से अनुचित सम्बन्ध हो, उपपति।

उ०—मालजदा मन मांहिं रांड सूझै दिनरांती, मालजादि मन मांहिं **यार** सूझै अकुळाती।

—ऊ. का.

४ प्रेमी।

उ०—नैंन हमारे **यार** सुं, रहीया उलिझि उलिझि। हरीया न्यारा नां हुवै, सुलझाया न सुलिझि।

—अनुभव वांणी

यारी—सं. स्त्री. [फा.] १ मित्रता, दोस्ती।

उ०—इण परवांणी साह उचारै, सुणतां सितर बहोतर सारै। इण थी जो राखै भड़ **यारी**, हुवै कमंध सुज पंचहजारी।

—रा. रू.

क्रि. प्र.—करणी, होणी।

२ स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध।

याळ—सं. स्त्री. [तु.] घोड़ा, सिंह आदि के गर्दन के बाल। अयाल।

उ०—१ कसंता बिजैमंड कोदंड कंधां, बणावै व्रथा बेर रै जेरबंधां। सटा **याळ** जाळी लटाळी सुहावै, प्रिया नागवाळी लखे दाग पावै।

—वं. भा.

उ०—२ लसै पति पद्धर पिठ्ठ निसंक, कसै कर वग्गनि कंबुर बंक। गुहे कच **यालन** के भरि बत्थ, सितासित पीत क नादिक सत्थ।

—ला. रा.

२ गर्दन।

यालुक—सं पु.—अनन्त, असीम।

यावनी—सं. पु.—करंक शालि नामक ईख, रसाल।

उ०—येठीमधु नई **यावनी**, यवपन्नडी यवांनि। यक्षलता योसिम हरी, यमपद पांनि पांनि।

—मा. कां. प्र.

यास्क—सं. पु. [सं.] १ निरुक्त नामक सुविख्यात ग्रंथ का कर्ता, जो 'शब्दार्थतत्व' का परम ज्ञाता माना जाता है।

यि—सर्व.—ये।

उ०—अग सिखि चमरी वन मांहां नाठां; कमल मीन गयां वारि; इंदु ऊहोलाई **यिनु** गुण गाई खाधी हारि।

—नळाख्यांन

यिऊं—क्रि. वि.—ऐसा, ऐसे।

उ०—नै खापरी रात पोहर १ पाछली थकी आबू निजीक उठै उतरियौ, जांणियौ "हूं तौ कुसळै पड़ियौ, अठै घड़ी १ बैसां" **यिऊं** उतर बैठो; तितरै धरती फाटण लागी, तरै इण जांणियौ औ कासूं हुवै छै।

—नैणसी

यिभ—देखो 'इभ' (रू. भे.)

यिम—देखो 'इम' (रू. भे.)

उ०—नारीमांहां **यिम** एक तूं छि, पुरुस मांहि तेह। विध्या ताइ अमूलक ए रत्न सरज्यां बेहि।

—नळाख्यांन

यिमरत—देखो 'अमरत' (रू. भे.)

उ०—अमरत दध नहै तिय अधर, विधु **यिमरत** न वखांण। के जन अजरांमर करण, जस हर **यिमरत** जांण।

—र. ज. प्र.

यिहां—क्रि. वि.—यहां।

उ०—नैसध नांमि देस मनोहर, वीरसेन वसुधेस। प्रांणीमात्र नहीं को दूखियु, **यिहां** धरमिस्ट नरेस।

—नळाख्यांन

यी—सर्व.—यह।

उ०—**यी** वरखा रित बौळवी, रीती सरद अदुंद। हिम रुत आधी वीच त्यौं, फेर प्रगट्टचौ फंद।

—रा. रू.

युं—देखो 'यूं' (रू. भे.)

उ०—१ जो गांगौ सोभत रौ १ गांम मारै तौ रायमल जोधपुर रा २ गांम मारै। **युं** रहतां थकां इंयारौ वेध चालियौ जाइ।

—नैणसी

उ०—२ तरै राठौड़ प्रिथीराज कूंपावत जैतमाल नै कह्यौ—तु मत रोवै। परमेश्वर कीयौ तौ हूं कूंपा रै पेट रौ जो **युं** चंद्रसेन नुं रोवाडूं।

—राव चंद्रसेन री बात

युंमल—देखो 'जमल' (रू. भे.)

युक्त—१ देखो 'जुकत' (रू. भे.)

२ देखो 'जुगत' (रू. भे.)

युक्ति—सं. स्त्री. [सं.] १ साहित्य में एक अलंकार विशेष, जिसमें कोई अपना रहस्य छिपाने के लिये किसी क्रिया द्वारा अन्य को वंचन करे (ठगे)।

२ देखो 'जुकती' (रू. भे.)

३ देखो 'जुगती' (रू. भे.)

युक्तियुक्त, युक्तियुत–वि· [सं· युक्ति+युक्त] १ युक्ति संगत, ठीक, वाजिब।

उ०—इत्यादि **युक्तियुत** वच उदार, सरकार स्रवन भेजे सु ढार। पय धांन करन पोरस प्रकास, पहुंच्यौ दळ औरंगजेब पास।

—ऊ. का.

युग–देखो 'जुग' (रू. भे.)

उ०—ग्रा वस्त्र याहारि ग्रोढमु ताह्नि थासु रूप प्रकास। वस्त्र **युग** ते आपियां नि सीख दीधी ग्राम।

—नळाख्यांन

युगति–देखो 'जुगती' (रू. भे.)

युगमंधर–देखो 'जुगमंधर' (रू. भे.)

उ०—पूरव विदेह विजय पुखलावती आठमी ठाम, पुंडरीकणी नगरी तिहां स्री सीमंधर स्वाम, वप्र विजय पच्चीसमी विजयापुर नौ नाम, पच्छिम विदेह बीजौ **युगमंधर** की जै प्रणांम।

—ध. व. ग्रं.

युगळ, युगल–देखो 'जुगळ' (रू. भे.)

उ०—इण अवसर स्रीक्रस्णजी, मा ने वंदन काज। आवे प्रणमी चरण **युगल**, बेठा स्री महाराज।

—जयवांणी

युगलियौ–देखो 'जुगलियौ' (रू. भे.)

उ०—त्रिण कोडा कोडि सागर सुखम वीय अरो, देह दो कोस दोई पल्ल आयु धरो। बोर परिमांण आहार बीजै दिनै, **युगलीया** मानवी एह कहिया जिणै।

—ध. व. ग्रं.

युगवर–देखो 'जुगवर' (रू. भे.)

उ०—**युगवर** 'जंबू' जेहवउ, रूपइ 'वइर–कुमार' 'पंच–नदी' साधी जिणई, सुभ लगन सुभ वार।

—ऐ. जै. का.

युगांतक–देखो 'जुगांतक' (रू. भे.)

युगादि–देखो 'जुगादि, जुगादी' (रू. भे.)

युगादिदेव–सं· पु· [सं·] सृष्टि के आरंभ के देवता।

उ०—समीहितारथकारी, सरवातिसयसरवस्वधारी, व्यवहार पर–मारथप्रवृत्तिप्रथमावतार, संसारभयभीतभविकजनरक्षावज्रांकुर, युगादिकृतावतार **स्रीयुगादिदेव**।

—व. स.

युगेस–१ फलित ज्योतिष में गति के अनुसार वृहस्पति के साठ वर्षों के राशिचक्र में पांच–पांच वर्ष के युगों के अधिपति।

२ देखो 'जुगेस' (रू. भे.)

युग्मपद–सं· पु· [सं·] श्रृंगार में एक आसन विशेष।

युतबेध–देखो 'जुतबेध' (रू. भे.)

युतिस्ट–सं· पु·–छप्पय छंद का एक भेद, जिसमें ३८ गुरु, ७६ लघु से ११४ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। इसे अजंगम भी कहते हैं।

युत्थ–देखो 'जुथ' (रू. भे.)

उ०—फतयसिंघ की करि फतह, बहुरे सुभट समाज। मनु गयंदनि **युत्थ** हनि, आये थहि अगराज।

—ला. रा.

युद्ध–देखो 'जुध' (रू. भे.)

युद्धवाद–सं· पु· [सं·] ७२ कलाओं में से एक।

युधिस्ठिर–देखो 'जुधिस्ठर' (रू. भे.)

युरोप–सं· पु· [अं·] पूर्वी गोलार्द्ध में एशिया के पश्चिम में स्थित एक महाद्वीप।

रू० भे०–यूरप, यूरोप, योरोप।

युरोपियन–सं· पु· [अं·] युरोप देश का निवासी।

वि·–युरोप महाद्वीप से सम्बन्धित, युरोप का।

रू० भे०–यूरोपियन, योरोपियन।

युवक–वि· [सं·] १६ से ३५ वर्षों तक की अवस्था वाला जवान।

युवति, युवती–देखो 'जुवति' (रू. भे.)

युवनासव–देखो 'जुवनासव' (रू. भे.)

युवराज, युवराजकुमार–देखो 'जुवराज' (रू. भे.)

उ०—कुंवर रूपवंत सुकुमाल, सिव भद्र नो वरण संभाल। राज चिंता काम–काज, जिण ने पदवी दी **युवराज**।

—जयवांणी

युवरासी–सं· स्त्री·–१ एक तीर्थ का नाम।

उ०—बदरीनाथ केदार गंगोतरि, बैजनाथ कैलासी। पंचवटी पंपापुर रुक्मिणि, देव कपिल **युवरासी**।

—मीरां

युवा–देखो 'जवांन' (रू. भे.)

उ०—गोपाळ भगत्त–निवारण अब्भ, परम अभ्रत्त परम्म सु प्रब्भ। सदा अप्रमाद जोगाणंद सिद्ध, नहीं तूं बाळ **युवा** नहि व्रद्ध।

—ह. र.

युवावरणी–सं· स्त्री·–जवान स्त्री।

उ०—वय बाळ विहाय **युवावरणी**, कटिवद्ध भयौ करनी करनी। विमनां अनुराग विराग वह्यौ, चितव्रत्तिय जोग प्रयोग चह्यौ।

—ऊ. का.

युव्वनास–देखो 'जुवनासव' (रू. भे.)

उ०—सुत **युव्वनास** सेसट स्रवेस, निज हुवौ मांनधाता नरेस। पुरु–कुसीमांन सुतवंस रूप, पुर कुस्समु तणौ संभून भूप।

—सू. प्र.

यूं–क्रि. वि.–१ इस प्रकार, ऐसे।

उ०—१ मंत्र सकत्ती मंत्र सूं, ज्यों तीडी ले जाय। अभंग दुबाह 'दुरंग' यूं, लेगो साह धकाय।

—रा. रू.

उ०—२ घड़ी उगा त्रंबक लागत घाय, चढी चित रीस लेडीपत चाय। सुगो कथ 'पेम' कमंध सधीर, धुरौ खग बोलत यूं रणधीर।

—पे. रू.

उ०—३ यूं करतां दिन ऊगौ। राव मालदेजी री फौज थांणै ऊपर दौड़ी।

—नैणसी

रू० भे०—युं।

यूंही—क्रि. वि.—१ निरर्थक, निरुद्देश्य।

उ०—उनाळा रा चौक में, चौमासा रा मेड़ी में, सियाळा रा ओरिये, पौढावौ म्हांरा जोड़ी रा रतन सियाळौ राजन यूंही गियोजी।

—लो. गी.

रू० भे०—युंही, यूही।

यूथ—देखो 'जूथ' (रू. भे.)

यूथनाथ—देखो 'जूथनाथ' (रू. भे.)

यूथप—देखो 'जूथप' (रू. भे.)

यूथपति—देखो 'जूथपति' (रू. भे.)

यूथपाळ—देखो 'जूथपाळ' (रू. भे.)

यूनांन—सं. पु.—यूरोप का एक देश, जो एशिया के सबसे अधिक पास पड़ता है।

यूनांनी—सं. स्त्री.—यूनान देश की भाषा।

वि.—१ यूनान देश का निवासी।

२ यूनान देश से सम्बन्धित।

यूनाइटेड—वि. [अं.] मिला हुआ, संयुक्त।

यूनाइटेड किंगडम—सं. पु. [अं.] आधुनिक इंगलैण्ड, जिसमें इंगलैण्ड, स्काटलैण्ड एवं आयरलैण्ड शामिल हैं।

यूनाइटेड स्टेट्स—सं. पु. [अं.] संयुक्त राज्य, जिसमें छोटे–छोटे राज्य सम्मिलित हैं।

यूनियन—सं. स्त्री. [अं.] कुछ व्यक्तियों का किसी उद्देश्य से बनाया हुआ संगठन, संघ।

यूनिवरसिटी—सं. स्त्री. [अं.] उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त करने की संस्था, विश्वविद्यालय।

यूनीफारम—सं. स्त्री. [अं.] किसी विशिष्ट समुदाय के लिए निर्धारित पोशाक, वर्दी।

यूरप—देखो 'युरोप' (रू. भे.)

यूराल—सं. पु.—१ एशिया व यूरोप के बीच में स्थित एक पहाड़।

२ उक्त पहाड़ के आस–पास का प्रदेश।

सं. स्त्री.—३ उक्त पहाड़ से निकलने वाली नदी।

यूरोप—देखो 'युरोप' (रू. भे.)

यूरोपियन—देखो 'युरोपियन' (रू. भे.)

यूह—देखो 'जूथ' (रू. भे.)

यूही—देखो 'यूंही' (रू. भे.)

उ०—आळस वाळा राजवी घर रा घर में दारू पी रोटी खाय सूय रैणौ घर रौ कांम परोपकार वीरता देस सेवा आदि आछा कांम न करणा में व्रथा यूही वेस ऊंमर गमावै है।

—वी. स. टी.

ये—सर्व. [यह का ब. व.] समीपस्थ वस्तुओं या प्राणियों के लिए प्रयुक्त शब्द।

येई—देखो 'यही' (रू. भे.)

येऊ—अव्य.—यह भी।

येक—देखो 'एक' (रू. भे.)

उ०—ओडगपुड येक येक पुड असमर, हाते मूंठज हात लिया। कोप खुधार थके तळ काठां, दांणव भांत नबी दळिया।

—महाराणा हम्मीरसिंघ रौ गीत

येकण—देखो 'एकण' (रू. भे.)

येकणि—क्रि. वि.—अकेले में, एकांत में।

उ०—राजा प्रोहित येकणि साथी, वांह लागा पूछइ धनी बात। नयनी रूप में रूवड़ौ, कोट कोसीसा अंत न पार।

—बी. दे.

येकल—देखो 'एकल' (रू. भे.)

येकलौ—देखो 'एकलौ' (रू. भे.)

(स्त्री० येकली)

येटलौ—वि. (स्त्री. येटली) जितना।

उ०—निद्रा वसि छि, सूती त्यजूं, आ वनथी बीजूं वन भजूं। जागी नहि देखि येटलि, कुंडनपुर जसि तेटलि।

—नळाख्यांन

येठीमधु—सं. स्त्री.—मुलैठी।

उ०—येठीमधु नइं यावनी, यवपन्नडीं यवांनि। यक्षलता योसिम हरी यमपद पांनि पांनि।

मा. कां. प्र.

येण—सर्व.—इस।

उ०—अभैदांन जेसांण बीकांण अप्पै, तिका आज जोधांण रै राज तप्पै। आई आवड़ा नांम विख्यात येळा, इंद्रबाई जिका येण बेळा।

—मे. म.

येता—क्रि. वि.—जिस प्रकार, जैसे।

उ०—दादू पड़दा पलक का, येता अंतर होइ। दादू विर ही रांम बिन, क्योंकरि जीवै सोई।

—दादूवांणी

येतौ–सर्व. (स्त्री. येती) इतना ।

उ०—१ वरुण **येतौ** कठा ग्रांणसूं विचारै, चवै इम तरण सूं मूंह चडियौ । करण दरियाव री रीत लख कैलपुर, पुरंदर भरण रौ चीत पडियौ ।

—महारांणा राजसिंहजी रौ गीत

उ०—२ ईडर सांखौधार ऊपरै, ग्रांण वधारे **येती** । नवकोटी मारवाड़ खगां नर, सीहै लीध सहेती ।

—श्री ग्रासथांनजी रौ गीत

येन–क्रि. वि.–१ जिस प्रकार जैसे ।

२ जिससे ।

येलम–देखो 'इलम' (रू. भे.)

उ०—भावनगर को तुरक यक, सब तुरकन सिरनाज । कुसती पटो विनोट क्रत, सब **येलम** उसताज ।

—ला. रा.

येळा–देखो 'इळा' (रू. भे.)

येळापत, येळापति, येळापती–देखो 'इळापत' (रू. भे.)

येह–देखो 'यह' (रू. भे.)

येहड़ौ–सर्व.–(स्त्री. येहड़ी) ऐसा ।

उ०—**येहड़ौ** ज्याग ग्राहड़ा, हुग्रै तुझ घर वीयां न होय । दत देतां ग्रीखम दरसांणी, सीत वदीत हुई सगळोय ।

—जोगीदास कवारियौ

उ०—२ चंदबदनी मुख चोज हंसगति चालवौ, हावभाव गावंत हवोळै हालबौ । तार जरी पोसाख बीच तन तेहड़ी, इंदपुरी उणियार विराजै **येहड़ी** ।

—बगसीरांम प्रोहित री वात

येहां–ग्रव्य.–१ यहां ।

२. ऐसे ।

यै–सर्व.–१ इस ।

उ०—भील ही भगत यारै भला, कैये नां मौजां करै । हमां सत कूकि विरता हुयै, **यै** रै काजि ग्रवतरै ।

—पी. ग्रं.

२ इन ।

यैसें–क्रि. वि.–ऐसा, इस प्रकार ।

उ०—दिन तौ **यैसें** सकुचिवा लागौ जैमे रिणाई को देखें दांम को दैणहार संकुचै ।

—वेलि

यों–क्रि. वि. [सं. एवमेव] १ इस प्रकार, ऐसे ।

उ०—१ **यों** कह्यौ, तरै लाडक पण ग्रारे हुवौ । तरै तोत करनै रावळ नै लाडक चड़मड़िया । रावळ लाडक नूं खांसड़ौ वाह्यौ' ।

—नैणसी

उ०—२ राहु गिळै ज्यों चंद को, गहण गिळै ज्यों सूर । करम गिळै **यों** जीव को, नख सिख लागै पूर ।

—दादूवांणी

२ उसी तरह, वैसे ही ।

उ०—दादू चंबुक देखि कर, लोहा लागै ग्राइ । **यों** मन गुण इंद्री एकमौं, दादू लीजै लाइ ।

—दादूवांणी

सर्व.–इसके ।

उ०—रोम रोम रस पीजिए, एती रसना होइ । दादू प्यासा प्रेम का, **यों** बिन त्रप्त न होइ ।

—दादूवांणी

योंही–क्रि. वि.–१ इसी प्रकार से, ऐसे ही ।

२ देखो 'यूंही' (रू. भे.)

यो–देखो 'यौ' (रू. भे.)

उ०—१ जु राति ग्ररु दिन की संधि संध्या वंदण उठै । ग्ररु ए बाल ग्रवस्था योवन की संधि उठै । तातैं **यो** भाव लियौ ।

—वेलि. टी.

उ०—२ जदी रजपूतांणी घणौ ही रजपूत है समजावै । पण **यो** मांनै नहीं ।

—पंचमार री बात

योई–देखो 'यही' (रू. भे.)

उ०—जनम मरण का कारण **योई**, मूल वासना जांणा । ग्यांन ग्रग्नि कर जाळी वासना, जन्म मरण मिटांणा ।

—श्री सुखरांमजी महाराज

योग–देखो 'जोग' (रू. भे.)

उ०— ग्रोछा बोल न बोलीइं रे, दिल में राखी **योग** । बोल बोल वेऊं हस्यारे, हाथ देई तालि जोग रे ।

—प. च. चौ.

योगकन्या–सं. स्त्री. [सं.] यशोदा के गर्भ से उत्पन्न वह कन्या जो मथुरा लाई गई थी तथा जिसके विषय में यह मान्यता है कि कंस ने उसे मारना चाहा था परन्तु वह उड़ कर ग्रासमान पर चली गई ।

योगज–सं. पु. [सं.] योग साधना की एक ग्रवस्था जिसमें योगी में ग्रलौकिक वस्तुग्रों को प्रत्यक्ष कर दिखाने की शक्ति ग्रा जाती है ।

योगजात्रा–देखो 'योगयात्रा' (रू. भे.)

योगदंड–सं. पु. [सं.] योगी के हाथ में रखा जाने वाला डंडा ।

उ०—करतल कलित **योगदंड**, स्कंधप्रतिष्ठित योगपट्ट प्रसाधित–प्रचंड चंडिकामंत्र, पिसाचसाधन स्वतंत्र, साकिनीनिग्रह साहसिक रसायनप्रयोगरसिक, प्रदरसितवलिपलित, वसीकरणि ग्रमूढ, लक्ष खडी चापडीप्रमुख विद्याकुतूहली ग्र साधक, ग्राकासपातालबंधक ।

—व. स.

योगदरसन–सं. पु. [सं. योगदर्शन] दर्शनकार महर्षि पतंजलि रचित योगसूत्र ।

योगनाथ–सं. पु. [सं.] शिव ।

योगनिद्रा–देखो 'जोगनिंद्रा' (रू. भे.)

योगनिद्राळ–देखो 'जोगनिंद्राळ' (रू. भे.)

योगनी–देखो 'जोगणी' (रू. भे.)

योगनीइग्यारस, योगनीएकादसी–सं. स्त्री. [सं. योगिनिएकादशी] आषाढ़ कृष्ण पक्ष की एकादशी ।

योगपट्ट–सं. पु. यौ. [सं. योग+पट्ट] एक प्राचीन पहनावा, जो पीठ पर से जाकर कमर में बांधा जाता था और जिससे घुटनों तक का अंग ढका रहता था, योगियों का पहनावा ।

उ०—करतल कलित योगदंड, स्कंध प्रतिष्ठित **योगपट्ट**, प्रसाधित प्रचंडचंडिका मंत्र ।

—व. स.

योगपति–सं. पु. यौ. [सं. योग+पति] १ विष्णु ।

२ शिव ।

योगपदक–सं. पु. यौ. [सं. योग+पदक] चार अंगुल चौड़ा एक प्रकार का उत्तरीय वस्त्र जो पूजन आदि के समय पहना जाता है ।

योगपाद–सं. पु. यौ. [सं.] ऐसा कृत्य जिससे अभीष्ट की प्राप्ति हो । (जैन)

योगपारंग–सं. पु. यौ. [सं. योग+पारंग] शिव, महादेव ।

वि.–योग-साधन में प्रवीण ।

योगपीठ–सं. स्त्री. यौ. [सं. योग+पीठः] देवताओं का योगासन ।

योगफळ–सं. पु. यौ. [सं. योग+फल] दो या दो से अधिक राशियों को जोड़ने से प्राप्त होने वाली राशि ।

योगबळ–देखो 'जोगबळ' (रू. भे.)

योगभ्रस्ट–देखो 'जोगभ्रस्ट' (रू. भे.)

योगमाता–देखो 'जोगमाता' (रू. भे.)

योगमाया–देखो 'जोगमाया' (रू. भे.)

उ०—वेदो चारण वेकरै गांम रहै कछ देस मांहे । वेदै रै वडौ द्रव्य । सयणी बेटी । महासक्ति **योगमाया** ।

—सयणी री बात

योगमाल–सं. स्त्री.–वहोत्तर कलाओं में से एक ।

—व. स.

योगमूरतिधर–सं. पु. [सं. योग+मूर्तिधर] शिव. महादेव ।

योगयात्रा–सं. पु. यौ. [सं. योग+यात्रा] यात्रा के लिए उपयुक्त योग (फलित ज्योतिष) ।

रू० भे०–योगजात्रा ।

योगराजगुग्गळ–सं. पु. [सं. योगराज गुग्गलः] गुग्गल प्रधान कई द्रव्यों के योग से बनी हुई बात रोग नाशक एक प्रसिद्ध औषधि विशेष ।

रू० भे०–जोगराजगुगळ, जोगराजगूगळ ।

योगरूढ़, योगरूढ़ि–सं पु. यौ. [सं. योग+रूढ़] दो शब्दों के योग से बना वह शब्द, जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ प्रकट करता है ।

योगरोचना–सं. स्त्री. यौ. [सं. योग+रोचना] इन्द्रजाल करने वालों का एक विशेष प्रकार का लेप जिसको लगाने से आदमी अदृश्य हो जाता है ।

योगवांणी–सं. स्त्री. यौ. [सं. योग+वाणी] योग का उपदेश ।

योगवांन–सं पु. [सं. योगवत्] योगी ।

योगवासिस्ठ–सं. पु. [सं. योगवाशिष्ठ] वशिष्ठ मुनि का बनाया हुआ वेदान्त शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ ।

रू० भे०–जोगवासिसट, जोगवासिस्ट ।

योगवाही–सं. पु. यौ. [सं. योग+वाहिन] भिन्न गुणों की दो या कई औषधियों को एक में मिलाने योग्य करने वाली औषधि या द्रव्य ।

योगव्रत्ति–सं. स्त्री. यौ. [सं. योग+वृत्ति] योग के द्वारा प्राप्त होने वाली चित्त की वृत्ति ।

योगसक्ति, योगसगती–देखो 'जोगसकति' (रू. भे.)

योगसास्तर, योगसास्त्र–सं. पु. यौ. [सं. योग+शास्त्र] पतंजलि ऋषि द्वारा रचित योग–साधना पर एक ग्रन्थ ।

रू० भे०–जोगसास्त्र ।

योगसासतरी, योगसासत्री, योगसास्त्री–सं. पु. यौ. [सं. योग+शास्त्री] योग–शास्त्र का ज्ञाता ।

योगसिद्ध–सं. पु. यौ. [सं. योग+सिद्ध] योग–शास्त्र की सिद्धि प्राप्त कर लेने वाला योगी ।

योगसिद्धि, योगसिधी–सं. स्त्री. यौ. [सं. योग+सिद्धि] योग के द्वारा प्राप्त सिद्धि ।

रू० भे०–जोगसिधी ।

योगसूत्र–सं. पु. यौ. [सं. योग+सूत्र] पतंजलि द्वारा रचित योगशास्त्र के सूत्रों का संग्रह ।

योगांग–सं. पु. यौ. [सं. योग+अंग] योग के आठ अंग–यम, नियम, आसन–प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ।

योगांत–सं. पु. [सं. योग+अन्त] ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह की कक्षा के सातवें भाग का एक अंश ।

योगांतराय–सं. पु. [सं. योग+अन्तराय] आलस्य आदि दस प्रकार की बातें, जो योग में विघ्न डालती हैं ।

रू० भे०–जोगांतराय ।

योगागम–सं. पु. यौ. [सं. योग+आगम] योग–दर्शन ।

रू० भे०–जोगागम ।

योगाचार–सं. पु. यौ. [सं. योग+आचार] १ योग का आचरण, योग–साधन ।

२ वौद्धों का एक सम्प्रदाय, जो महायान की शाखाओं में से एक है, जिसके अनुसार दीखने वाले पदार्थ शून्य हैं।

योगाभ्यास-सं. पु.. यौ. [सं. योग+अभ्यास] योग-शास्त्रानुसार योग का साधन।

रू० भे०-जोगाभास, जोगाभ्यास।

योगाभ्यासी-सं. पु. यौ. [सं. योग+अभ्यासी] योग की साधना करने वाला, योगी।

रू० भे०-जोगाभ्यासी।

योगारूढ़-सं. पु. यौ. [सं. योग+आरूढ़] वह जिसने अपनी चित्त-वृत्तियों का निरोध कर योगाभ्यास शुरू कर दिया हो।

रू० भे०-जोगारूढ़।

योगासन-सं. पु. यौ. [सं. योग+आसन] योग-साधन का एक आसन, योग की मुद्रा या बैठने का ढंग।

रू० भे०-जोगासन।

योगिणी-सं. स्त्री.-देखो 'जोगणी' (रू. भे.)

योगिणीपुर-देखो 'जोगणपुर' (रू. भे.)

उ०—कीयो कूड सुरतांण, सांमि मोरउ ग्रहि बंध्यउ, पदमणि द्यु तु जाउ, काजि करणह समंधउ। भलो न कीयो किरतार, केम गहिलोत बंधीजइ, कीयो मंत्र मंत्रीयां, राय राखवि त्रिय दीजइ। तदिन जीभ खंडवि मरउं, **योगिणिपुर** नवि दीखसउं। पदमिणी नारि इंम उचरइ, अंब कह सरणागति पइठिसिउं।

—प. च. चौ.

योगिनिद्रा-देखो 'जोगनिद्रा' (रू. भे.)

योगिनी-देखौ 'जोगणी' (रू. भे.)

उ०—तव तूठी **योगिनी**, हुई प्रसिद्धि प्रसनी, ब्रह्म रुद्र करि वाच वाच निस्चल करि दीन्ही। जिहां हकारइ मोहि, तोहि साचउ करि जांणइ, आदि अंत उतपत्ति, विपति तौ सहु पीछानइ। आस्थांन आप जोगिन हुइ, विप्र पंथ आश्रम करचउ, आणंद अंग ऊलट घणइ, तव डीली गढ संचरचउ।

—प. च. चौ.

योगिराज-सं. पु. [सं. योगी+राज] योगियों में श्रेष्ठ या बड़ा योगी।

रू० भे०-योगीराज।

योगींद्र-देखो 'जोगिंद्र' (रू. भे.)

योगी-देखो 'जोगी' (रू. भे.)

योगीकुंड-सं. पु. [सं.] हिमालय का एक तीर्थ।

रू० भे०-जोगीकुंड।

योगीनाथ-सं. पु. [सं.] शिव, महादेव।

रू० भे०-जोगीनाथ।

योगीराज-देखो 'योगिराज' (रू. भे.)

योगीस, योगीस्वर-देखो 'जोगीस' (रू. भे.)

उ०—और जिकेइ विरोधी न था त्यांह स्रीनारायण को स्वरूप जांण्यौ। वेद का अरथी थां। त्यांह कह्यौ मूरत वंद वेद आयौ **योगीस्वरां** जांण्यौ जोग तत योही।

—वेलि.

योगीस्वरी-देखो 'योगेस्वरी' (रू. भे.)

योगेंद्र-देखो 'जोगिंद' (रू. भे.)

योगेस, योगेस्वर-देखो 'जोगीस' (रू. भे.)

उ०—१ जैसे **योगेस्वरां** कै माया का पटल दूरि वै छै। तैसौं ही तौ रात्रि दूरि हुई छै। अर प्राणायांम योगेस्वरां का इहै जोति प्रकास हुऔ।

—वेलि

उ०—२ नृपति तु माधव दीठउइ, पीवु माधव-प्रेम। नारि निमेस धरी रही, जगि **योगेस्वर** जेम।

—मा. का. प्र.

योगेस्वरी-सं. स्त्री. [सं. योगेश्वरी] दुर्गा, देवी।

रू० भे०-जोगेसरी, जोगेस्वरी, योगीस्वरी।

योग्य-वि. [सं.] १ उपयुक्त, ठीक।

उ०—सिवांणै गढ सीह लंकौ है, सरापियळ जायगा है, और किलौ कड़तोड़ौ है जिणसूं राजवियां रै रहण **योग्य** नहीं।

—नैणसी

२ लायक, काबिल। ३ प्रवीण, होशियार। ४ विद्या, शील, गुण, शक्ति आदि से संपन्न, श्रेष्ठ। ५ दर्शनीय, सुन्दर। ६ आदरणीय, सम्माननीय। ७ उचित, ठीक, मुनासिब।

रू० भे०-जोग्य।

योग्यता-सं. स्त्री. [सं.] १ योग्य होने की अवस्था या भाव। २ क्षमता, सामर्थ्य। ३ लायकी, काबलियत। ४ विद्वत्ता। ५ गुण, सिफ्त। ६ ठीक या अनुकूल होने का भाव, उपयुक्तता। ७ शक्ति, सामर्थ्य, औकात। ८ बड़प्पन, महत्ता। ९ इज्जत, प्रतिष्ठा।

योजक-वि. [सं.] जोड़ने या मिलाने वाला।

योजन-सं. पु. [सं.] दूरी का एक माप, जो दो कोस, चार कोस, या आठ कोस का होता है।

उ०—भिक्खु अणगार निज नांम मन सुद्ध भणौ, तीन गढ़ छत्र त्रिण राज त्रिभुवन तणौ। वचन गुप्ते वली नांम वाचंयमा, **योजन** वांणि सु गाजै च्यारूं गमा।

—ध. व. ग्रं.

रू० भे०-जोजन।

योजनगंधा-सं. स्त्री. [सं.] १ व्यासमाता सत्यवती का नामान्तर। २ कस्तूरी। ३ सीता।

रू० भे०-जोजनगंधा।

योजना–सं. स्त्री. [सं.] १ किसी कार्य को निष्पन्न करने हेतु प्रस्तावित कार्यक्रम। २ व्यवस्था, आयोजन। ३ प्रस्ताव। ४ प्रयोग, इस्तेमाल।

योतिस–देखो 'ज्योतिस' (रू. भे.)

उ०—दिन थोड़े दिल्ली गयौ, नगर हुऔ जस नांम लाल। **योतिस** जांणै अति घणौ मन।

—प. च. चौ.

योत्राड़णौ, योत्राड़बौ–क्रि. स. [सं. युज्]–जुताना, जुतवाना।

उ०—रामसिंघजी कन्है जाइ अर कहिया। पधारौ ज्यूं म्हारा गाडा **योत्राड़ि** अर म्हां ही नूं साथि ले आवौ।

—द. वि.

योत्राड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.–जुताया हुआ।

(स्त्री. योत्राड़ियोड़ी)

योनि–सं. स्त्री. [सं.] १ स्त्री की जननेन्द्रिय, भग।

२ उद्‌भव स्थान, जिससे कोई वस्तु पैदा हो।

३ खान।

४ देह, शरीर।

५ उक्त के आधार पर प्राणियों के विभाग या वर्ग।

वि. वि. पुराणानुसार ८४ लाख योनियां कही गई हैं—जलचर ९ लाख, मनुष्य ४ लाख, स्थावर २७ लाख, कृमि ११ लाख, पक्षी १० लाख और चौपाये २३ लाख।

६ जन्म।

७ जल, पानी।

८ अंतःकरण।

९ पुराणानुसार कुश द्वीप की एक नदी।

रू० भे०–जूंण, योनी।

योनिकंद–सं. स्त्री. [सं.] योनि में एक प्रकार की गांठ हो जाने का स्त्रियों का रोग, जिसमें रक्त या पीब निकलता रहता है।

योनिजंत्र–देखो 'योनियंत्र' (रू. भे.)

योनिफूल–सं. पु. यौ. [सं. योनि+फूल] योनि के अन्दर की एक ऊभरी हुई गांठ जिसके ऊपर एक छेद होता है जिससे वीर्य गर्भाशय में जाता है।

योनिभ्रंस–सं. पु. [सं. योनिभ्रंश] गर्भाशय का अपने स्थान से कुछ हट जाने का योनि का एक रोग।

योनियंत्र–सं. पु. [सं.] गया, कामाक्षा आदि कुछ विशिष्ट तीर्थ स्थानों में बने हुए संकीर्ण मार्ग जिनमें से निकलने पर मोक्ष–प्राप्ति होना माना जाता है।

रू० भे०–योनिजंत्र।

योनिसंकोचन–सं. पु. यौ. [सं. योनि+संकोचनं] १ योनि को सिकोड़ने की क्रिया।

२ ऐसी औषध जिसके प्रयोग से योनि संकुचित हो जाती है।

योनिसूळ–सं. पु. [सं. योनिशूल] बहुत पीड़ा होने वाला योनि का एक रोग।

योन्यासन–सं. पु. यौ. [सं. योनि+आसन] योग के ८४ आसनों के अन्तर्गत एक आसन विशेष जिसमें उपस्थ को संकुचित करके उन पर बायें पांव की एडी सम्यक प्रकार से स्थापित करके बांई जांघ पर दाहिने पांव को रखा जाता है तथा दोनों हाथों के अंगूठे, तर्जनी और मध्यमा से अनुक्रमवार दोनों तरफ के कान, आंख और नासा पुटों को बंद किया जाता और दृष्टि को भ्रूमध्य रखकर स्थिर होकर बैठा जाता है। इससे इन्द्रियों, प्राण और चित्त का रुंधन होता है।

योरोप–देखो 'युरोप' (रू. भे.)

योरोपियन–देखो 'युरोपियन' (रू. भे.)

योसा–सं. स्त्री. [सं. योषा] युवती, नारी।

योही–देखो 'यही' (रू. भे.)

उ०—**योही** भंवरजी सीकरी रांणी रौ देस, तालर थोड़ा सरवर बौ घणा जी म्हारा राज।

—लो. गी.

यौं–क्रि. वि.–ऐसा, ऐसे, इस प्रकार।

उ०—छभा रूप छवि परख, सरव चख वदन सुरंगे। **यौं** लग्गे रस रूप, अखिर किर कागद अग्गे।

—रा. रू.

यौ–सर्व.–१ यह।

उ०—अब मोहि दरस दिखाव माधवे, **यौ** औसर लाभे नांही। दिन दिन घटतौ जाय माधवे, प्रीति घटै तो जिनि मिळौ।

—ह. पु. वां.

क्रि. वि.–२ ऐसे, इस प्रकार।

उ०—१ इससै 'अभमाल' का प्रताप देखि इंद्र का गरब भजै। नरइंद की कीरति सुणि सुरिइंद्र **यौ** लजै।

—सू. प्र.

उ०—२ आद कंठ चव अक्खिरां, अंत दोय ठहराव। **यौ** सुबंध घट अक्खियां, बिगड़ै कंठ वणाव।

—र. ज. प्र.

रू० भे०–यो।

यौगिक–सं. पु. [सं.] १ वह शब्द जो प्रत्यय एवं प्रकृति से बना हो।

२ अट्ठाईस मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

वि.–१ मिला हुआ, मिश्रित।

२ योग अर्थात् जोड़ से सम्बन्धित।

यौध–देखो 'जोध' (रू. भे.)

उ०—राजा पूछे कुरा तमे रे, तब वलि ते कहे **यौध**। 'कनक–केतू' रा रजपूत छां रे, तमे कीधी बात अलोधोरे।

—जयवांगी

यौबनियौ–देखो 'जोवन' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—चित्त धरज्यौ धरम चाह, **यौबनियौ** ॥ आंकणी ॥ च्यार दिनां री एह चटक छै, नेट नहीं निरवाह।

—ध. व. ग्रं.

यौवंन, यौवरा–देखो 'जोबन' (रू. भे.)

उ०—१ भीम राइं स्रवरो सुरा रे, पुत्री नि पीडा तंन। विहिवा नु समय थयु रे, अबला थई **यौवंन**।

—नळाख्यांन

उ०—२ मु इह तौन वाळक अवस्था माहे सू अै छै। नै **यौवरा** आपै जागै छै।

—वेलि. टी.

यौवन–देखो 'जोवन' (रू. भे.)

उ०—**यौवन** वय आव्यां थकां, कीवी सगाई अभिरांम। 'द्रुप' राजा नी पुत्रिका, 'प्रभावंती' इरा नांम।

—जयवांगी

यौवनी–वि.–यौवनसंपन्न, यौवनयुक्त।

उ०—दादू मन पंगुळ भया, सब गुरा गये बिलाइ। है काया **नवयौवनी**, मन बूढा ह्वै जाइ।

—दादूवांणी

यौही–देखो 'यही' (रू. भे.)

उ०—जोग पंथ पग मति धरै, धरै तो सीस उतारि। हरीदास जन यूं कहै, **यौही** अरथ बिचारि।

—ह. पु. वां.

र

र–सं. पु. [सं.] देवनागरी लिपि की वर्ण माला का सत्ताईसवां व्यंजन, जिसका उच्चारण स्वर और व्यंजन के मध्यवर्ती तथा जीभ के अग्र भाग की मूर्द्धा के साथ कुछ हलकासा स्पर्श कराने से होता है।

रंक–वि. [सं. रंक, रङ्क] १ गरीब, निर्धन।

उ०—१ जग मांही जसवंत रौ, सीधौ हुतौ सुभाव। दिल उज्जळ नहिं वदळतौ, **रंक** मिळौ चाहै राव।

—ऊ. का.

उ०—२ डोकरी कह्यौ–अठै वा वात कोनीं भाया, सगळां नै दूध एक सरीखौ मिळै, चाहै राजा व्है चाहै **रंक**, अर चाहै कोई लखपती सेठ–साहूकार व्है, चाहै कोई तोटायलौ।

—फुलवाडी

उ०—३ ताजदार बैठौ तखत, रज में लोटै **रंक**। गिरणै दुवांनूं हेक गत, निरदय काळ निसंक।

—वां. दा.

उ०—४ रोळै लेरा लंक रा निसंक रा विभाड़ रांम, हाथां भौक **रंक** रा लंक रा देरा हार।

—र. ज. प्र.

२ दरिद्र, कंगाल।

उ०—**रंक** कुकवि दोनूं रहै, कोस हूंत सौ कोस। आयां सुपन अलंकृती, होरां तरणी नह होस।

—वां. दा.

३ भिखारी, फकीर।

उ०—माया पापनि पैस करि, कीया कळेजै घाव। हरीया बौह बळवंत कुं, **रंक** न पहुंचै राव।

—अनुभव वांणी

४ कृपरा, कंजूस।

उ०—खालिक मिळीया धिल खुसी, हरीया होय निहाल। पांनै पड़ीया **रंक** कै, कौडी बदळै लाल।

—अनुभव वांणी

५ क्षुधा पीड़ित, भूखा।

६ नीच।

उ०—तिकै **रंक** चंडासिराज रा कुळ री कन्या किरा रीति लहै।

—वं. भा.

७ आलसी, सुस्त।

८ उदास, सुस्त।

रू० भे०–रंकि, रंकु, रंकू, रांक।

अल्पा. रंकौ

रंकता–सं. स्त्री. [सं. रंक+ता प्र.] १ गरीबी, निर्धनता।

२ कृपरगता, कंजूसी।

३ नीचता।

रंकार–सं. स्त्री.–१ राम नाम का जाप, स्मरण।

उ०—हुए गळतार **रंकार** मुख हैकंपै। तांतवा आह बळ माह तूटा।

—द. दा.

२ उक्त जाप करते समय मुंह से निकलने वाली ध्वनि।

उ०—रसनां नख चख बीच मैं, रोम रोम **रंकार**। जन हरीया सुख ब्रम का, जहां नहीं मंकार।

—अनुभव वांणी

३ राम–नाम।

उ०—सब अछर सहजां पढै, पढि पढि मिटया संनेह। एक सबद **रंकार** हुय, हरीया अगम अछेह।

—अनुभव वांणी

रंकि-देखो 'रंक' (रू. भे.)

उ०—ससि-वयणी को सुंदरी, चाली चित्रा लंकि। चंद्रोदय चक्कवि गणी, रोयणि लागी **रंकि**।

—मा. कां. प्र.

रंकु, रंकू-सं. पु. [सं. रंकु] १ एक प्रकार का हरिण जिसकी पीठ पर सफेद चित्तियां होती हैं।

२ मृग, हरिण। (ह. नां. मा.)

३ देखो 'रंक' (रू. भे.)

उ०—कुंडल सरिसउ लाधउ बालौ, **रंकु** लहइ जिम रयण झमालौ। तिणि दिणि दीठउ सुमिणइ सूरौ, अम्ह घरि आविउ पुन्नह पूरौ।

— सालिभद्र सूरि

रंकौ-देखो 'रंक' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—लोक जठै **रंकौ** नहीं, नंह संकौ परथाट। मोढां जस डंकौ घुरै, पाधर बंकौ, धाट।

—बां. दा.

रंगंगण, रंगंगणि, रंगंगणौ-सं. पु. [सं. रंग+अंगणम्] १ रंगमंच, अभिनय स्थल।

उ०—न्रप आयस लही वर वेस, **रंगंगणि** कीधउ प्रवेस।

—हीराणंद सूरी

२ युद्ध भूमि, रण भूमि।

रंग-सं. पु. [फा., सं.] १ दृश्य पदार्थ का वह गुण जो उसके आकार या रूप से भिन्न होता है और जिसकी अनुभूति आंखों से की जाती है, वर्ण।

वि० वि०-वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि रंग वास्तव में प्रकाश की किरणों में ही होता है और वस्तुओं के भिन्न रासायनिक गुणों के कारण ही हमारी आंखों को उनका अनुभव वस्तुओं में होता है। किसी वस्तु पर पड़ने वाले प्रकाश के तीन भाग होते हैं-पहला वह भाग जो परावर्त्तित हो जाता है, दूसरा जो वर्त्तित हो जाता है तथा तीसरा वह जो उस वस्तु द्वारा सोख लिया जाता है। परन्तु सभी वस्तुओं में ये गुण समान रूप से नहीं होते। कुछ पदार्थ ऐसे होते हैं, जिनमें से प्रकाश परावर्त्तित नहीं होता-या तो वर्त्तित होता है या सोख लिया जाता है। जैसे-शुद्ध जल। ऐसे पदार्थ प्रायः बिना रंग के होते हैं। जिन पदार्थों पर पड़ने वाला सारा प्रकाश परावर्त्तित हो जाता है, वे श्वेत दिखाई पड़ते हैं। जो पदार्थ अपने ऊपर पड़ने वाला सारा प्रकाश सोख लेते हैं, वे काले दिखाई देते हैं।

प्रकाश का विश्लेषण करने पर पाया गया कि उसमें अनेक रंगों की किरनें मिलती हैं, जिनमें ये सात रंग मुख्य हैं-बैंगनी, नीला, श्याम या आसमानी, हरा पीला, नारंगी और लाल। जब ये सातों रंग मिलकर एक हो जाते हैं तब हमें सफेद दिखाई देते हैं और जब इन सातों में से एक भी नहीं रहता, तब हम उसे काला कहते हैं। किन्हीं दो रंगों के सम्मिश्रण से एक तीसरा रंग बन जाता है और कुछ रंग एक दूसरे के परिपूरक भी होते हैं। बाजार में मिलने वाली बुकनियों के नियम प्रकाश के नियमों से भिन्न होते हैं।

२ कुछ विशिष्ट रासायनिक क्रियाओं से बनाया जाने वाला वह पदार्थ जिसे द्रवमान करके किसी वस्तु, (विशेष कर वस्त्र) को रंगा जाता है। (Colour)

उ०—१ चल रंगरेजा में नहिं चाहूं, भल नहि सोभा भंग। अलमित देखिर जळै अंग में, रांड कसुंमल **रंग**।

—ऊ. का.

उ०—२ घसीजै केसर चंदन घोल, रचीजै पूज सदा **रंग** रोल। अवल्ले फूले धूप उखेव, दीयें सुख वंछित रिखभदेव।

—घ. व. ग्रं.

उ०—३ नाई सिसकारी न्हाकतौ बोल्यौ-यूं खांचौ कांई अंदाता। केस कोई चिपक्योड़ा थोड़ाई है। **रंग** देखो तौ भंवरां नै मात करै।

—फुलवाड़ी

३ रूप, स्वरूप।

उ०—रमै तूं रांम जुवा धरि **रंग**, तुंहीज समंद तुंहीज तरंग। अनोअन मांय तुहाळौ अंस, हमें न संताय छतौ थयौ हंस।

—ह. र.

४ शरीर का वर्ण।

उ०—गोचर रूप न **रंग** न रेख, अगोचर अम्रत कूप अलेख। थिरा नभ थावर जंगम थांन, महा पद आपद मांन अमांन।

—ऊ. का.

५ छबि, नूर, सौन्दर्य।

उ०—चढ़तै जोबन **रंग** चुवै, पायल बाजै पाय। चालै सुंदर चौहटै, जांण पटाभर जाय।

—अज्ञात

६ रौनक, शौभा, ठाट।

७ अनुराग, लगाव, इश्क।

उ०—१ जठै किसतूरी पागां रा बध पछांण्या। ऐ तो निडर सा भंवर रसिया मिजमांन जांण्या। जठै पारसी मै बोली, पनां वधाई दीनी, मन चायौ आयौ **रंग** भीनी।

—पनां

उ०—२ माळवगढ राजा सुध्, कुंवरी माळवणीह। ढोलइ तिण वहु प्रीति छइ, अति **रंग** नेह घणीह। —ढो. मा.

उ०—३ हरीया सो दिन वार धिन, श्राय मिळै सतसंग। अब तौ चडै न ऊतरै, लागा हरि का **रंग**।

—अनुभव वांणी

उ०—४ अगा एक राग **रंग** राता, प्रांण गयौ सुण रीझिये। मैंगळ मद मतवाळा अंधा, स्परस स्वाद बंदीजिये।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—५ पोता री परणी प्रिया, राखे तिण सु **रंग**। सील धरै न करै सही, पर स्त्री प्रसंग।

—ध. व. ग्रं.

७ हर्ष, आनन्द, खुशी, प्रसन्नता।

उ०—१ रांम गयै वनवास, साथहि सव रंग ले गये। ले गये (म्हारी) काया को सिंगार, तुळसी की माळा दे गये।

—मीरां

उ०—२ म. म. वाएसि घडीआ घडी, सिद्ध म पूरिसि न्रिग। वांछित पांमीउ वल्लहु, हुं अवधारिसि **रंग**।

—मा. कां. प्र.

उ०—३ औरां का पिवजी घरां ए वसत है, म्हारा वसै परदेस। औरां की तीज सुरंगी होसी, म्हारे घर रहसी **रंग** काचौ।

—लो. गी.

उ०—४ ईब बरखा लागी छै, गोठां जीम **रंग** करौ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—५ **रंग** विण व्याह, वेस विण रांमति, सुंदरि विण ग्रिह वास जिसौ। सुरतांण कहै कलियांण समोभ्रम, त्याग पखै कुळ जलम तिसौ।

— अज्ञात

८ रति क्रीड़ा, संभोग, मैथुन, केलि।

उ०—१ राजा रूप न रीझियै, माथा वडु नहि काय। थे रांण्यां सूं **रंग** करौ, (म्हे) धूड़ धमासां मांय।

—जसमादे ओडणी री वात

उ०—२ लोरां सांवण लूंबियौ, घोरां घण घरराय। मांणीगर **रंग** मांण अब, प्याला भर मद पाय।

—अज्ञात

उ०—३ अकबर रत्ता राग सूं, **रंग** त्रिया रस लद्ध। जो उतपातं प्रगट्टियौ, सो सुणियौ निस अद्ध।

— रा. रू.

उ०—४ मैं म्हांरा वालम खेलस्यां जी कंई **रंग** ढोल्यां रै बीच। बादळी बरसै क्यूं नी ए, बीजली चमकै क्यूं नी ए।

—लो. गी.

उ०—५ राज पिण हकीकत की ही सो म्हे तो जावस्यूं। **रंग** भोग विलास करनै अलोप हुई।

—वीरमदे सोनगरे री वात

९ सुख।

उ०—दादू **रंग** भर खेलूं पीव सौं, तहं बारह मास वसंत। सेवक सदा अनंद है, जुग जुग देखूं कंत।

—दादूबांणी

१० उत्सव।

उ०—राजा मिळ नांम थापीयौ, कवर रीसालू नांम बै। घर घर **रंग** वधावणा, न्रिप घर मंगळ गांन बै।

—रीसालू री बात

११ नृत्य, गायन।

उ०—१ राग छत्तीसे होवती जी, मादल ना धोंकर। नाटक विध वत्तीसना जी, **रंग** विनोद अपार।

—जयवांणी

उ०—२ **रंग** राग विणोद विसातरयं बहुयं। चडि चाडति सुंदर मिंदरयं सहुयं। मिण मांणक कुंदण कंकणमं दिपतं, मोताहळ हार विभूखणयं वणितं।

—गु. रू. बं.

१२ अभिनय।

१३ खेल, तमाशा।

उ०—अस्त्र गुलाब अबीर उडायौ, सस्त्र पिचरका छिब सरसायौ वीर नाद सोइ चंग बजायौ, **रंग** फाग सम जंग रचायौ।

- ऊ. का.

१४ अभिनय का स्थान, रंगमंच।

उ०—वजि अदंग चंग **रंग** उपंग वारंग, अनंग छवि चंग उमंग अंग अंग। न्रितंग रित बह तरंग रंग रंग, रजंग न्रप अंग सुरंग चतुरंग।

— सू. प्र.

१५ सभा स्थान।

१६ वेश्या, गणिका। (अ. मा.)

१७ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।

उ०— **रंग** राग बाग अंगराग सूं न कीजै। पातिसाह महमद साह चिंता मैं छीजै।

—रा. रू.

१८ युवावस्था, यौवन।

१९ मन की मर्जी, मन की मौज।

उ०—१ खत्रवट चलै 'जसौ' खेडेचौ, डिगियौ अहमंद भुजां डहै। **रंग** पारकै न रीझै राजा, राजा रंग आपरै रहै।

—गु. रू. बं.

उ०—२ मांणस कोई खरळ री नांव नहीं लेवै आप आप रै **रंग** रहै।

कुंवरसी सांखला री वारता

२० नशा, मस्ती।

उ०—अपणाया कर एक जकौ बळ जुध सूं आगौ। रेवत-नैणां बिंब-सुरा रै रंग न लागौ।

—मेघ

२१ स्वभाव, प्रकृति।

२२ दशा, हालत, ढंग, अवस्था।

उ०—अठै रह कासूं बफादारी लेयस्यां। हालौ घरां हालां। सौ सूरै इसड़ौ **रंग** खींवै रौ दीठौ, जे सगा सूं विकार पैदा हो बिगाड़ हुवै।

—सूरे खींवै कांधळोत री वात

उ०—२ कुंवरसी कही तीज रै दिन आयसे तौ खरौ पण कीं ठांव आऊं इठै तौ औ **रंग** छै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

२३ चाल-ढाल, गति-विधि।

उ०—मांणस एक खोखर रै गांव मेल्ह खबर मंगाई-जे उहां रै कितरो'क लोक कुण कुण कांम आयौ। कासूं **रंग** विचार छै, सो सारी खबर लेय आवौ। सो मांणस उठै जाय खबर **रंग** देख पाछौ आयौ। —सूरै खींवै कांधळोत री बात

२४ ढंग, आसार, हालात, वातावरण।

उ०—१ करनाळ बजावां जिण बखत सताब आवज्यौ। नहीं तौ देखो जसौ **रंग** वरतज्यौ।

—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ जे **रंग** दीठौ तौ कजियौ करस्यां, नहीं तौ रंग देख बरतस्यां।

—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता

२५ व्यवहार।

उ०—तद मुत्सद्दी **रंग** फोड़ कही-ठाकुरां, पटायत चाकर दरबार रा छौ, आ कासूं कही। अठै तौ बकरी म्हारै भावै हाथी छै।

—अमरसिंह गजसिंहोत री बात

२६ प्रभाव, असर, रौब।

उ०—१ वूढिया ओलौ खावै पण गौमदौ गांव रा आखा कांम पूरा करणा चावै। पण अटकळ जांणै न ढंग, कौरी करड़ावण रौ **रंग**।

—दसदोख

उ०—२ जे जन हरि के रंग रंगै, सौ **रंग** कदे न जाइ। सदा सुरंगै संत जन, रंग में रहे समाइ।

—दादूबांणी

२७ गौरव, प्रतिष्ठा, मान, इज्जत,।

उ०— बांधै तैं वार किता बळिराव, बिगोयी दांणव केता बाव। जीत्यौ तैं वार किता वळ जंग, रहावण तात जनेता **रंग**।

—ह. र.

२८ धन्यवाद, साधुवाद, शाबासी।

उ०—१ **रंग** देऊं वां नरां काछ रा पूरा काठा। **रंग** देऊं वां नरां माछ्ळ देवण हिय माठा।

—ऊ. का.

उ०—२ तद साहजादे ऊपर सूं तरवार भलाई सो लेय गौड़ आय पहुंचौ कहियौ-**रंग** छै, राठौड़ थां विना हिंदुवां री मरजाद सरम कुण राखै। यूं कहि जाय पोहंच्यौ सौ ड्योढी मांहे निसरतै नै बाही सो खंवे आय बाजी

—अमरसिंह गजसिंहोत री वात

उ०—३ कट पड़ियौ ठाकर कनैं, अपछर बरियौ अंग। संग लड़चौ सुरतांण रै, (उण) 'रूपावत' नैं **रंग**।

—अज्ञात

उ०—४ भड़ भड़ै के लड़थड़ै भारथ, अड़ै के अखड़ैत। बड़ बड़ै के हड़हड़ै बीजळ, जड़ै के जरदैत। अड़वड़ै के धड़हड़ै आसत, जुड़ै के कज जैत। विच समर हेकण धड़ै राघव, बडै **रंग** बिरदैत।

—र. ज. प्र.

२९ कृपा, अनुग्रह।

३० जोश, आवेश।

उ०—ताजण लाग्या ताजणा, मरदां कै खटक्या बोल। रजपूतां के **रंग** चढचौ, बै ढुळक्या कायर लोग।

—डूंगजी जंवारजी री छावळी

३१ युद्ध, लड़ाई।

उ०—१ कहियौ हंसि हाडै कंवर, गिणौ न मौ जिम 'गंग'। आज निसा न जड़ां अरर, रूपणौ मोनैं **रंग**।

वं. भा.

उ०—२ दोनूं ही साहिब म्हारी पीठ पाछै खड़ा रहौ ललकारा करौ। चाकरां री **रंग** देखो।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

३२ युद्ध भूमि, रणांगन।

३३ पांनी, जल। (ना. डिं. को.)

३४ चौपड़ के खेल में गोटियों की वह दशा, अवस्था (रंग) जो जीत की प्रतीक मानी जाती है।

३५ तास के पत्तों के चार रंगों में से कोई एक जो काट माना जाता है।

३६ वह घोड़ा, जिसके मुख पर हरिन के से रंग के चकते होते हैं।

(अशुभ)

३७ तरह, भांति, प्रकार।

उ०—१ केहास बिहूं धज **रंग** कन्न। प्रतहाम गौस रिप चहर पन्न।

—सू. प्र.

उ०—२ त्रितंग रित अंग करंग नादंग। रस तरंग बह तरंग रंग रंग।

—सू. प्र.

३८ रांगा नामक धातु।
३९ सुहागा।
४० किसी विशेष अवसर पर अफीम की मनुहार के समय, अद्भुत व विलक्षण या आदर्श के कार्य करने वाले किसी व्यक्ति की प्रशंसा में पढ़ा जाने वाला दोहा, सोरठा, छप्पय इत्यादि।

उ०—१ ईस उमा अरधंग, भर प्यालौ ले भंग रौ। **रंग** हो 'भारथ' **रंग**, उण वेळा दै आपनै। अमलां रा उछरंग, गळियां थळियां चौगणां, **रंग** हो 'भारथ' **रंग**, उण बेळा दै आपनै। गोम्ठि विरादर संग, प्याला मद पावै पिवै। **रंग** हो 'भारथ' **रंग**, उण बेळा दै आपनै।

—ला. रा.

वि० वि०—एक प्रथा के अनुसार मांगलिक अवसरों पर–विशेष कर दीपावली, होली व अक्षय तृतीया इत्यादि पर राज दरबारों, रजवाड़ों या सामंतों (ठाकुरों) के यहां अमल गाला जाता था। उस समय राजा या ठाकुर सर्व प्रथम अपने चारण–कवि को अमल की मनुहार अपने हाथ से करता था। तब वह कवि मनुहार लेने से पूर्व उन व्यक्तियों की प्रशंसा में दोहे या सोरठे कहता कि जिन्होंने समाज हित, मातृ भूमि की रक्षार्थ या किसी आदर्श के लिये अथवा स्वामीभक्ति में अद्भुत रूप से प्राणोत्सर्ग किया हो। जैसे—निमाज के ठाकुर सुरतांणसिंह पर महाराजा मानसिंह का कोप हुआ और महाराजा ने ठाकुर की हवेली पर अपनी सेना भेजकर तोपों से हमला कर दिया। उस समय संयोग वश वहां एक रूपावत शाखा का राठौड़ राजपूत सुरतांणसिंह की हवेली पर आया हुवा था और उसने वहां की दाल खा ली थी। उस दाल के बदले अथवा उसमें खाये हुए नमक का बदला चुकाने के लिये वह रूपावत महाराजा की सेना से लड़ा और अपने प्राणों का उत्सर्ग करते हुए वीर गति को प्राप्त हुआ। इसलिये उपर्युक्त अवसरों पर उस रूपावत की प्रशंसा में दोहे कहे जाते हैं—

कट पड़ियौ ठाकर कनैं, अपछर वरिया अंग।
संग लड़्यौ सुरतांण रै, (उण) 'रूपावत' नै **रंग**।

ऐसे ही अनेकों उदाहरण इतिहास में और भी मिलते हैं।

मुहा०—१ रंग आणौ=किसी वस्त्र या वस्तु पर किसी रंग विशेष का लगना या चढ़ना। नशा आना। जोश आना। क्रोध आना। गति आना।
२ रंग उडणौ=धूप या हवा के कारण किसी वस्त्र या पदार्थ का रंग फीका पड़ना। होस–हवास खो बैठना। कान्ति या आभाहीन होना। फीका पड़ना।
३ रंग जमणौ=वस्त्र या वस्तु पर कोई रंग ठीक बैठना। किसी उत्सव का ठाट जमणा। गति आना।
४ रंग फिरणौ=मन मुटाव होना। अन्तर पड़ना। स्वभाव, प्रवृति या वातावरण बदल जाना।
५ रंग फोड़णौ=झगड़ा करना। क्रोध करना। दुर्व्यवहार करना।
६ रंग में आणौ=मस्ती में आना, प्रसन्न दिखाई देना। जोश या आवेस चढ़ाना, क्रोध करना।
७ रंग रैंणौ=प्रेम या मेल रहना, इज्जत या मान रहना।
८ रंग लागणौ=प्रेम होना, ईश्वर भक्ति में मन का लगना। किसी कार्य की धुन सवार होना।
रू० भे०—रंगि, रंगी।

रंग–आंमास–सं. पु. [सं. रंग+आवास] रंग महल, केलि गृह।
उ०—जेथि **रंगआंमास**, तेथि क्रीडंति कुरंगह। जेथि नृपति बैसता, तेथि उड्डंत विहंगह।

—गु. रू. बं.

रंगकार–सं. पु. [सं. रंगकार] १ चित्रकार।
उ०—**रंगकार** तैलार बिनु, विनु कलार दरवेस। सार बंध 'लावै' असुर, पुर नहिं करत प्रवेस।

—ला. रा.

२ वस्त्र रंगाई आदि का कार्य करने वाली एक जाति या वर्ग।
३ उक्त जाति का व्यक्ति, रंगरेज।

रंगकेळ, रंगकेळि–सं. स्त्री. [सं. रंग+केलि] १ रति क्रीड़ा, मैथुन।
उ०—गुरू गुर है चिरंजीव, जिण जोड़ी का मेळ। हूं तरणी थू तरण पिव, करलै रस **रंगकेळ**।

—अग्यात

२ आनन्द, मौज।

रंगक्षेत्र–सं. पु. [सं.] १ अभिनय स्थल, रंगमंच।
२ युद्ध भूमि, रणक्षेत्र।

रंगड़–देखो 'रंघड़' (रू. भे.)

रंगजणणी, रंगजननि–सं. स्त्री. [सं. रंग+जननी] लाख, लाक्ष।

(डि. को.)

रंगजीव–सं. पु. [सं. रंग+जीवक] चित्रकार।

रंगट–देखो 'रंघड़' (रू. भे.)
उ०—**रंगट** भट फुट भ्रकुट मरकट। कुळट नट वट उलट कटकट।

—सू. प्र.

रंगढंग–सं. पु.—१ हालचाल, आगार, हालात।
२ व्यवहार, बर्ताव।

३ चाल–ढाल, गतिविधि ।
४ सजावट, ठाट ।
उ०—निजर नांखी, भोमी ताकी पग्ग किसनजी कमरै रै **रंगढंग** सूं ढीलौ, लट्टू हुयग्यौ ।

—दसदोख

५ लक्षण–गुण ।

रंगणौ, रंगबौ–क्रि. अ.–१ लीन होना, तल्लीन होना, तन्मय होना, अनुरक्त होना ।
उ०—१ मुनेसर मन, अनंग सुमति । **रंगै** बहु अंग, विखै रंग रति ।

—रांमरासौ

उ०—२ कांई रे स्वरूप कहूं हरि रौ, रूप कहूंगौ स्वरूप कहूंगौ, रांमैया रा रंग मांहि **रंगियौ** रहूंगौ ।

—गी. रां.

उ०—३ जे जन हरि के रंग **रंगै**, सो रंग कदै न जाइ । सदा सुरंगै संत जन, रंग में रहे समाइ ।

—दादूबांणी

२ आसक्त होना, मोहित होना ।
उ०—रहौ सधीरा राजवण, नैण न नांखौ नीर । **रंगै** मत इण रंग में, चंगौ भीजै चीर

—अज्ञात

३ ओत–प्रोत होना ।
उ०—इमड़ा पिता रा प्रताप में जुदौ ही नांम काढण रै काज पराई पुहवी लेण रा वीर रस में **रंगियौ** ।

—वं. भा.

४ रंग से युक्त होना ।
उ०—१ मरै नहीं भक मार, तिके जीवण ने ताता । मारै जूंवां ममळ, रहै **रंगिया** नख राता ।

—ऊ. का.

५ भीगना ।
उ०—ऊभा थकै अनेक स्रोण **रंगाणा** सूर नर ।

—रा. रू.

उ०—२ जुध दुरंग दंत चढिया जिता, खित पाड़े मुगळां खळां । दळ साह डोहि आयौ दुभळ, वेढक **रंगिया** वीजळां ।

—सू. प्र.

क्रि. सं.–६ वस्त्रादि किसी पदार्थ को किसी रंग विशेष या कई रंगों में रंगना, रंग से युक्त करना ।
उ०—१ लोढ़ै, पींजै, कात लपेटे । वणै **रंगै** फाड़ै कई वार ।

—स्वरूपदास

उ०—२ नाहरी इम कहै सुणीजै नाहर, तज बधिया गिरवास उताळ । अण ठांमां नित करै ऊथाळा, भाला नित **रंगै** भूपाळ

—रांमसिंघ हाडा बूंदी रौ गीत

७ अनुकूल करना ।
८ प्रभाव में करना ।
९ प्रेम में फंसाना ।
१० निरर्थक लिखना या किसी के विरुद्ध लिखना ।
रंगणहार, हारौ (हारी), रंगणियौ —वि. ।
रंगिओड़ौ, रंगियोड़ौ, रंग्योड़ौ —भू. का. कृ. ।
रंगीजणौ, रंगीजबौ । —भाव वा./कर्म वा. ।

रंगत–सं. स्त्री. [सं. रंग+त प्रत्य.] १ दशा, हालत, अवस्था, ढंग ।
उ०—१ राजाजी सूं रीस रै पांण तुरत कीं नीं बोलीजियौ तौ वै थूक गिटता रह्या । आंख्यां काढता रह्या । दीवांणजी आ **रंगत** देख वांरी मन री बात समझग्या ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ डर रै कारण लोगां रा मूंडा लुकथुका पड़ग्या । आ **रंगत** देख मासी नै हंसी आयगी ।

—फुलवाड़ी

उ० – ३ पण जे भगवांन मिनख नै आपरी जरूरतां पोखण वास्तै ई कमाई री सुमत देतौ तौ आज दुनियां री **रंगत** ई दूजी व्हैती ।

—फुड़वाड़ी

उ०—४ वखत रै सागै–सागै दुनिया री **रंगत** ई बदळती जावै ।

—वरसगांठ

२ आनन्द, मौज ।
उ०—प्रीत भरीजै नैण बियौ द्रग नीर न आवै । ताप विजोगां ताय संजोगां **रंगत** लावै ।

—मेघ

३ रंग, वर्ण ।
उ०—रंग–बिरंगा चीर, अमोलख भूखण भारी । सुरा करंता पांन ज नैणा **रंगत** न्यारी ।

—मेघ

४ शोभा, छवि ।
उ०—धू दिस रळियां राज अमीणौ धर जां सोवै । तोरण धनक समांण, रूपाळी **रंगत** होवै ।

—मेघ

५ सुर्खी, आभा. कान्ति, झलक ।
६ प्रभाव, छाप ।
७ इच्छित कार्य पूर्ण होने पर मिलने वाला सुख ।
उ०—डागैरी डौकरी मां रै चाव रूंख में पांन–फूल सूं **रंगत** आई ।

—दसदोख

८ संतोष, चैन, शान्ति।

ज्यूं०—इण नै बैठा ने रंगत नीं है।

९ मजलिस, गोष्ठी, महफिल।

उ०—एक नाथ मोनजी री दातारी सूं रीझ'र गांव में आसण ही लगा बैठ्यौ। बस, सुलफै अर भांग री रंगत छिड़गी है।

—दसदोख

१० रंग से युक्त होने की दशा, अवस्था या भाव। (मा. म.)

११ रंगाई का कार्य व इस कार्य का पारिश्रमिक।

रंगथळ—देखो 'रंगस्थळ' (रू. भे.)

उ०—चंगा चीर धारियां धू पर, अखन कुंवारी वाळाइ सुंदर। रमत मात रंगथळ ऊपर, सूधा सिखर अळंग अधधफर।

—मा. वचनिका

रंगना—सं. स्त्री.—१ स्त्री, औरत। (ह. नां. मा.)

२ रमणी, सुंदरी।

रंगनाथ—सं. पु.—१ विष्णु का एक नामान्तर।

उ०—सरव परिगह सहित रंगनाथ जी रै मंदिर पधारिया रंगनाथ जी नूं गंगाजळ चढावण नूं।

—वां. दा. ख्यात

२ एक तीर्थ स्थान।

उ०—दिस पूरब जगन्नाथ, दिखण रंगनाथ विराजै। पछिम द्वारकनाथ, उदध गहरै सद गाजै।

—गजउद्धार

रंगनिवास—सं. पु.—१ रंग महल, क्रीड़ा भवन, केलिगृह। अन्तः पुर।

उ०—गींदोली गुजरात सूं, असपत री धी आंण। राखी रंगनिवास मैं, तैं जगमाल जुआंण।

—बां. दा.

२ रति क्रीड़ा या भोग विलास का स्थल।

रंगपांचम—सं. स्त्री.—चैत्र कृष्ण पंचमी।

रंगपीत—सं. पु. [सं. पीतरंगः] १ बृहस्पति का एक नामान्तर। (अ. मा.)

२ ब्रह्मा।

रंगपुर—सं. पु.—रंग महल, अन्तःपुर।

उ०—मारवाड़ में परण्योड़ौ, रंगपुर में रम्योड़ौ। मितराई न दोस्ती, आपौ न प्यार।

—दसदोख

रंगबिरंग, रंगबिरंगौ—वि. (स्त्री. रंगबिरंगी) विविध रंगों का, अनेक रंगों वाला।

उ०—बतावण आंचळ रंग मजीठ, बंधाणौ छेहड़ै काळौ रंग। खुलै कुण जांणै किण पुळ गांठ, हुवै सह धरती रंगबिरंग।

—सांझ

रंगभवन—सं. पु.—अंतःपुर, रंगमहल।

रंगभीनी—सं. स्त्री.—१ वेश्या, रंडी।

उ०—पांणी सूं पोसाक रौ, धरण्यौ रंग धुपीज। औ रंगभीनी दूसरी, रंगभीनी नूं रीझ।

—बां. दा.

२ प्रेम या रंग में डूबी हुई स्त्री।

उ०—घर आ मिळवै रंगभीनी परी।

—रसीलै राज रौ गीत

वि. स्त्री.—१ अनुराग या रति क्रीड़ा में मग्न।

उ०—अतरा मांहै घड़ी प्रहर रात जातां वीरमदे री बेटी, तका घणी सहेलिआं रै घूमरै, आभा री वीज, रंगभीनी हंसगी, क्रतिआं रै झुंड आय ऊभी रही।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

२ रंग से युक्त, रंगमें भरी हुई, रंगवाली। रंग में भीगी हुई।

उ०—पांणी सूं पोसाक रौ, धरण्यौ रंग धुपीज। औ रंगभीनी दूसरी रंगभीनी नूं रीझ।

—बां. दा.

३ सुंदरी।

रंगभीनौ—वि. (स्त्री. रंगभीनी) १ प्रेम या रति क्रीड़ा में मग्न।

उ०—१ सायबाजी म्हांरै महल पधारौ नैं आज, किरपा करौ सायबा महल पधारौ। रंगभीना रसराज।

—रसीलैराज रौ गीत

उ०—२ सालुड़ौ मंगाद्यौ सांगानैर रौ, अजी रंगभीना राजा जी।

—रसीलैराज रौ गीत

२ प्रेमी, रसिक।

उ०—आवौ आवौ जी रंगभीना म्हारै म्हैल, प्यालौ तौ लियां हाजर खड़ी।

—मीरां

३ रंग से युक्त, रंगवाला।

४ रंग में भीगा हुआ।

रंगभू—देखो 'रंगभूमि'

उ०—इसा रंगभू द्रंग रा अट्ट ऊंचा, मिळावै जिकां [illegible] समूचा। उदै हाट की बंगड़ां दंत ईमा, सुहावै जिगां पार [illegible] ससी सा।

—वं. भा.

रंगभूति—सं. स्त्री.—आश्विन मास की पूर्णिमा की रात्रि।

रंगभूमि, रंगभोमि, रंगभोमी, रंगभौमि, रंगभौमी—सं. स्त्री.—[सं. रंग+भूमि] १ रंगमंच, अभिनय स्थल।

उ०—चऊद राज कीधी रंगभूमि, अनेकि रूपि नचाविउ करमि। नव नव मुहरां नव नव वेस, भमइ अनारिज आरिज देस।

—वस्तिग

२ रंग शाला, नाट्य शाला।

उ० सुरंग **रंगभोमि** में तरंग है न तांनकी। ढमंक ढोलकी न त्यूं घमंक घुग्घरांन की।

—ऊ. का.

३ उत्सव मनाने का स्थान।

४ क्रीड़ा स्थल।

५ युद्ध भूमि, रणक्षेत्र।

६ अखाड़ा।

७ महफिल।

उ०—प्रथ्वी पै **रंगभौमि** हुई। पंखी है इहै मेळगर हुआ। मेळगर इहै जु आखाडा की सब सामग्री ताइफौ।

— वेलि. टी.

रंगमल्ली—सं. स्त्री. [सं.] बीन, वीणा।

रंगमहल, रंगमहलि—सं. पु. [सं. रंग+फा. महल] १ भोग विलास व रति क्रीड़ा करने का भवन, रंगपुर, अन्तः पुर।

उ०—१ सींचौ सींचौ नवल हुसियार राज आवौ **रंगमहल** में। बना क्योंकर आवां थारे रंगमहल में आवै आवै बाबाजी री लाज म्हांनै आवै ताऊजी री लाज राज किस विध आवां थारा महल में।

—लो. गी.

उ०—२ तठा उपरांत करि राजांन सिलांमत **रंगमहल** में प्रेम झड़ लागि नै रही छै। सुरतांत—समय हुवौ छै। महलां री हवा मांणीजै। कांचुआं री कस छूटी। मोतियां री माळ तूटी। जांणै सुख री लंका लूटी। इण भांत सुख—सेजै पौढिया।

—रा. सा. सं.

उ०—३ पिक—वांण जांण वैंणी पनंग, हिरणाखी हंसा—गमणि। **रंगमहल** सिंघ राजांन सुर, रमति राज—पुत्री रमणि।

—गु. रू. बं.

उ०—४ धर करि अमल पदम छत्र धारै। सुंदरि नवलापुरी सिंगारै। **रंगमहलि** दंपति दुति राजै, छक मुसताकि कांम छवि छाजै।

—गु. रू. बं.

२ आमोद—प्रमोद व मनोरंजण करने का स्थान।

रू० भे०—रंगमैं'ल।

रंगमांण—सं. पु.—भोग विलास, रतिक्रीड़ा।

उ०—लालांजी थांहरौ ठाकुर हुतौ सौ अबै नहीं छै। सांखली सूं **रंगमांण** हुआ छै।

— लाली मेवाड़ी री बात

रंगमातौ—वि. (स्त्री. रंगमाती) १ उन्मत, मस्त, प्रसन्न चित्त।

उ०—मद ब्रहती मदा सदा **रंगमाती**। ढाहण दुरंगा दयण धका।

—लाखा फूलाणी रौ गीत।

२ रसिया, रसिक।

रंगमाळ—सं. पु.—बीस मात्रा का एक मात्रिक छंद जिसके अन्त में गुरु होता है।

उ०—बीस मात्र पाये विमल नवां अंति गुरु देव। **रंगमाळ** रूपक रा, इण तक रा उवेव।

—ल. पिं.

रंगमैं'ल—देखो 'रंगमहल' (रू. भे.)

उ०—१ पण खोळा में महकता फूल भरचां ठाकर **रंगमैं'ल** में पधारचा तौ ठकरांणी रौ मूंडौ उतरग्यौ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ **रंगमैं'ल** में पांच सात जणियां बैठी ही। नाई नै पिछांणतां थकां ई वै बारै जावण लागी तद दीवांणजी कह्यौ—अां हां, बारै क्यूं जावौ।

—फुलवाड़ी

रंगरंगीलौ—वि. (स्त्री. रंगरंगीली) १ छैल—छबीला, शौकीन।

२ प्रेमी, रसिक।

उ०—सोभा रा सिणगार, सयणां रा सुख दायक। **रंगरंगीला** केसर रा क्यारा छोगाला छबीला प्रांण प्यारा।

—र. हमीर

रू० भे०—रांगरंगीलौ।

रंगरजवौ—देखो 'रंगरेजौ' (रू. भे.)

उ०—रंगै है किण धण रौ कुण चीर, केहि पथ **रंगरजवौ** नित आय। उगूणी आथूणी दै छोळ, सुखावै आखै अंबर मांय।

—सांझ

रंगरळियात, रंगरळी—सं. स्त्री.—१ रतिक्रीड़ा, संभोग।

उ०—१ जुवती जुव—जन भंवरा—भंवरी, गावत धमाळैं वहार मिळी। बिरछ बेल ज्यौं अब मिळ कैं होयगी, रसीलाराज सैं **रंगरळी**।

— रसीलै राज रौ गीत

उ०—२ आंगळीयां जण री यसी, मूंग तणी फळीयांह। 'म्यारा' 'जसकी' सूं मिळै, कीजौ **रंगरळीयांह**।

—मयारांम दरजी री वात

२ आनन्दोत्सव, हर्ष, खुशी।

उ०—१ घणा भाट, मंगत जणां नै राजी किया। घणी **रंगरळियात** हुई।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ घणी आजी **रंगरळी** सूं राजस कीवी। लोग सगळौ खुस हाल सवोळौ राखियौ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ अलिम पति कूच करायौ रे, वेधौ दिल्ली गढ आयौ रे घरि घरि गूडी ऊछलीयां रे, वहु मंगल धुनी **रंगरलीयां**।

—पं. च. चौ.

३ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन, मौज।

उ०—मुरधर नाह 'मुमेर' मुरद्धर माभळी। जुड़ आया जोधांण रचाई **रंगरळी**।

—किसोरदांन बारहट

४ चैन, आराम, सुख, संतोष।

५ प्रेम, अनुराग।

रू० भे०—रंगरेळ, रंगरेळि, रंगरेलि, रंगरेळी, रंगरोळ, रंगरोल, रंगरोळि, रंगरोलि, रंगरोळी, रंगरोली, रंगिरोल, रंगिरोली, रंगिरौल।

मह०—रंगरोलौ

रंगरस—सं. पु. यौ. [सं.] १ आनन्द, हर्ष।

२ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।

३ रतिक्रीड़ा, भोगविलास।

४ चोसठ जोड़े पान व मेंहदी को पीसकर वर-वधू के हाथ में रखने की क्रिया या प्रथा। (पुष्करणा ब्राह्मण)

रंगरसियौ, रंगरसीयौ—वि. [सं. रंग+रसिक] १ प्रेमी, प्रियतम, रसिक।

उ०—१ ग्रह्या पराक्रम रूप गुण, दिल रा दाईदार। हदफ हेत लै हालियौ, **रंगरसियौ** रिझवार।

—र. हमीर

उ०—२ साकुर कसीया साज, **रंगरसीया** ठाकुर लियां। अलंगां खडीयौ आज, वालमीयौ वाटां वहै।

—पनां

रंगराग—देखो 'रागरंग' (रू. भे.)

उ०—१ जुत **रंगराग** कटाच्छ करै जदि। नरग ममदन कीध खाली तदि।

—सू. प्र.

उ०—२ **रंगराग** अगर केसर अतर, उच्छवि छक आणंद अति। अनपुरां आदि उदियापुरां, परणे कमधज छत्रपती।

—सू. प्र.

उ०—३ अंध कै आगैं दरपण दीखायौ छै। गूंगै के आगैं **रंगराग** करायौ छै। नागर वेल को पांन पसु नैं चवायौ छै।

—बगसीरांम प्रोहित री वात।

उ०—४ हमै मयारांम नै 'जसां' **रंगराग** मांणै छै। जकां नैं इंद्र भी वखांणै छै। रंगराग रौ धोरौ लागौ छै। विरह भोलौ भागौ छै।

—मयारांम दरजी री वात

रंगराज—सं. पु.—ताल के मुख्य साठ भेदों में से एक।

रंगरातौ—वि. [सं. रंग+रत] (स्त्री. रंगराती) १ प्रेम या अनुराग में लीन, प्रेमासक्त।

उ०—१ मारू मैंलां आयी है मांभल रात। अजी कांई लटपटिया पेच रौ। अलबेलिया नैंणां रौ मदमातौ, **रंगरातौ** संग साथ।

—रसौलिराज री गीत

उ०—२ **रंगरातौ** चीत कवट-हर राजा, अवरां हूंत ऊतरियौ। तौ मुख दीठै लाख-तियागी, 'विजा', जगत सहु वीसरियौ।

—ईसरदास बारहठ

२ भोग विलास या रतिक्रीड़ा में संलग्न, विलासी।

उ०—१ जातौ आहेड़ां जठै, तीण करण तातोह। **रंगरातौ** निस दिन रहै, मद जोबन मातौह।

—र. हमीर

उ०—२ बंद तुड़ाय हाथी वहै, सुख **रंगराती** सीच। मदमाती हंस मुख कवौ, बसबौ छाती बीच।

—महादांन महड़ू

३ छैल छबीला, रंगीला, रसिया, प्रेमी, रसिक।

४ जो किसी के प्रभाव में हो। किसी से प्रभावित हो।

उ०—रांणाजी (हो) मैं साधुन **रंगराती**।

—मीरां

रंगरास—सं. पु. [सं. रंग+रास] १ रतिक्रीड़ा, भोग विलास, मैथुन।

उ०—जमला री बेटी सूं अठै बोहत **रंगरास** हुवौ। अठै इण हीज दिन इण रै पेट आसा रही।

—नैणसी

२ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।

३ उत्सव, आनन्द, हर्ष।

४ नृत्य-गायन।

५ खेल-तमाशा।

६ रंग का खेल।

रंगरूट—सं. पु. [अं. रिक्रूट] नया भर्ती होने वाला सिपाही, सैनिक।

रंगरेज—सं. पु. [फा.] (स्त्री. रंगरेजण, रंगरेजणी) १ वस्त्र रंगाई का कार्य करने वाली एक मुसलमान जाति।

(मा. म.)

२ उक्त जाति का व्यक्ति।

उ०—अनें **रंगरेजण** कहै—अरे कायर लंपट लोभी कुड़ा ठाकर होवणा रंगरेजण ही भुर रही है। रे इण साक्षात सती रूपी धण रा कपड़ा रंगता आ सत करणनै पोसाक मंगावसी जद म्हांरां दाळद्र गमाय देसी, सो इणने जीवनै गंद करदी कायर।

—बी. स. टी.

रंगरेजौ—सं. पु. (स्त्री. रंगरेजण) रंगरेज जाति का व्यक्ति।

उ०—चल **रंगरेजा** में नहीं चांहूं, भल नहिं सोभा भंग। अलमित देखिए जळै अंग में, रांड कसूंमल रंग।

—ऊ. का.

रू० भे०—रंगरजवौ।

रंगरेटा—सं. स्त्री.—सिक्ख सम्प्रदाय के अन्तर्गत एक जाति विशेष।

उ०—चंडाळ तेग बहादुर रे साथे कांम आयौ, उण रा सिख **रंगरेटा** कहावे 'रंगरेटा गुरू दा बेटा'।

—बां. दा. ख्यात

रंगरेळ, रंगरेळि, रंगरेलि, रंगरेळी—देखो 'रंगरळी' (रू. भे.)

उ०—१ कपड़ा भीनां कुंमकुमै, अलका अंतर उजेळ। चंद वदन्यां आवै चतुर, रमण जीत **रंगरेलि**।

—पनां

उ०—२ वसीकरण छइ स्युं तुझ पासइ, अथवा मोहन वेलि। साच कहौ ते अंतर खोली, जिम थायइ **रंगरेलि**।

—वि. कु.

उ०—३ साहब स्यांम समाळ, सहेत सहेलियां। रूड़ै नीर सुगंध धरा **रंगरेळियां**।

—बां. दा. ख्यात

उ०—४ महाराज सिलांमत, आपरै तौ पुत्र हुवौ छै, सो **रंगरेळी** हुई छै।

—रीसालू री वारता।

रंगरेलौ—देखो 'रंगीलौ' (रू. भे.)

उ०—मांडूं रंग रंग मांडणा, कंत न राखै कोय। धव **रंगरेला** पग धरै, सदा सावरत सोय।

—रेवतसिंह भाटी

रंगरोळ, रंगरोल, रंगरोळि, रंगरोलि, रंगरोळी, रंगरोली—
देखो 'रंगरळी' (रू. भे.)

उ०—१ ताजां आंणीयां दही, पछै विलंब करवौ नहि। करंबा आंणीया **रंगरोल**, झीरा-लूण बासीयौ घोल दहीवडा वनाविया घोल, नाखयौ राई तणौ झोल।

—व. स.

उ०—२ सांझि रे गाई सांझी रे, म्हारी सांझी हुया **रंगरोल** रे। संघ सहु को हरखियउ, वारु दीधा नवल तंबोल रे।

—स. कु.

उ०—३ अंग इग्यारे मइं थुण्या सहैली हे आज थया **रंगरोल** कि।

—वि. कु.

उ०—४ सुगण जोड़ नितु टेयरी, माता दइ हींचोल। नितु नितु मांनि घूघरी, अेम करी **रंगरोळ**।

—मा. कां. प्र.

उ०—५ त्रसणा-पीडित तारुणी, परिणकर कुंकम-रोळ। निरमळ पांणी-नइं गणइ, रुधिर तणा **रंगरोळ**।

—मां. क्रा. प्र.

रंगरोलौ—१ देखो 'रंगरळी' (मह., रू. भे.)

उ०—भोजन भक्ति किधी उपरले माल, मध्यान्ह काल, केल पत्र छाया इसा मंडप निपाया, निरमल पांणीए पखाली, आगे मेली सोनांनी थाली, कीधा **रंगरोला**, भाजा मेलीया रूपा-सोना ना कचोला।

—व. स.

२ देखो 'रंगीलौ' (रू. भे.)

रंगली—देखो 'रंगीली' (रू. भे.)

उ०—आज्यौ **रंगली** तीजां पांवणा, हंसा समदर जव छोडी जी काई, जब समदर खारी होय।

लो. गी.

रंगवाई—देखो 'रंगाई' (रू. भे.)

रंगवाग—सं. पु. [सं. रंग+फा. बाग] वह उद्यान जहां केवल महिलाएं ही जा सकती हों, जनाना बाग।

उ०—घोड़ौ इसौ तातौ खड़ियौ, दिन ऊगै **रंगवाग** निजर पड़ियौ।

—र. हमीर

रंगविद्याधर—सं. पु.—ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

रंगसाई—सं. स्त्री.—रंग से सुसज्जित करने की क्रिया।

उ०—वरं बेहड़ा वांद सोभा वणाई, वंदै तोरणां **रंगसाई** वधाई। रचै कुंभ सोव्रन्न थंभा अरेहं, वणै आद्रवै वंस सोव्रन्न वेहं।

—सू. प्र.

रंगसाज—सं. पु. [फा.] १ वस्तुओं पर रंगाई या चित्रकारी का कार्य करने वाला व्यक्ति।

२ चित्रकार।

३ रंग बनाने वाला।

रंगसाजी—सं. स्त्री. [फा.] १ रंग साज का कार्य।

२ रंगाई या चित्रकारी।

रंगसाळ, रंगसाळा—सं. स्त्री. [सं. रंग+शाला] १ नाट्य शाला, अभिनय कक्ष, अभिनय स्थल, रंगमंच।

उ०—मांय जनांना में मैंल कराया नै **रंगसाळ** कराई।

—नैणसी

२ वह स्थान जहां महफिल लगती है

उ०—आसोप **रंगसाळ** में नाहरसिंघ राजसिंघोत गळियोड़ा अमल सूं बकडियौ भरायो।

—बां. दा. ख्यात

रंगस्थळ—सं. पु. [सं. रंगस्थल] १ युद्ध स्थल।

उ०—घोड़ नगर के **रंगस्थळ** में जवनन सूं जुद्ध करै विन ही संतांन परलोक पायौ।

—वं. भा.

२ अभिनय स्थल, रंगमंच।

३ क्रीड़ा स्थल, आमोद–प्रमोद गृह।

४ वह स्थान जहां रति क्रीड़ा की जाय।

रू० भे०—रंगथळ।

रंगाई–सं. स्त्री.–१ रंगने का कार्य।

२ उक्त कार्य का पारिश्रमिक।

रू० भे०—रंगवाई।

रंगाउळिय, रंगाउळीय–देखो 'रंगावळी' (रू. भे.)

उ०—छकड़ी जरद् सउं अंगि छाई, रोपियउ टोप सिरि 'जइत राइ'। राइ जइति' पहरि **रंगाउळीय** सज सइ करि हाथळ संकळीय।

—रा. ज. सी.

रंगाणौ, रंगाबौ–क्रि. स. (रंगणौ क्रि. का. प्रे. रू.) १ रंगने का कार्य करवाना, रंगने के लिये प्रेरित करना, रंगाई कराना।

२ किसी रंग में तरबतर या ओतप्रोत कराना, रंग में डुबवाना।

३ किसी में लीन या तल्लीन होने के लिये प्रेरित करना।

४ प्रेम में फंसवाना।

५ प्रभाव में कराना, अनुकूल कराना।

६ व्यर्थ या किसी के विरूद्ध लिखवाना।

रंगाणहार, हारौ (हारी), रंगाणियौ —वि.।

रंगायोड़ौ —भू. का. कृ.

रंगाईजणौ, रंगाईजबौ। कर्म वा.।

रंगावणौ, रंगावबौ। रू. भे.।

रंगाभरण–सं. पु.–ताल के मुख्य साठ भेदों में से एक। (संगीत)

रंगायोड़ौ–भू. का. कृ.–१ रंगने का कार्य करवाया हुआ, रंगने के लिये प्रेरित किया हुआ, रंगाई कराया हुआ. २ किसी रंग में तरबतर या ओतप्रोत कराया हुआ, रंग में डुबाया हुआ. ३ किसी में लीन या तल्लीन होने के लिये प्रेरित किया हुआ. ४ प्रेम में फंसवाया हुआ. ५ प्रभाव में कराया हुआ, अनुकूल कराया हुआ. ६ किसी के विरुद्ध या व्यर्थ लिखवाया हुआ। (स्त्री. रंगायोड़ी)

रंगार–सं. पु.–१ प्रायः मेवाड़ और मालवे में रहने वाली एक राजपूत जाति।

२ रंग देने वाला व्यक्ति

उ०—काती राती हूं थई, माधव केरइ नांमि। रंग नथी **रंगार** परि, ऊकालई कुण कांमि।

—मा. कां. प्र.

रंगाळ, रंगाल–वि.–१ रंग का, रंग सम्बन्धी।

२ रंगीन।

३ रंगीला।

रंगालय–सं. पु. [सं. रंग+आलय] १ नाट्य शाला, रंगमंच, रंग स्थल।

२ युद्ध भूमि, रणक्षेत्र।

रंगाळौ–वि.–१ रंग का, रंग सम्बन्धी।

२ रंग से युक्त, रंगीन।

उ०—मडतै **रंगाळा** मतीरिया जीमण में घणा सुवाद लागै है, ऊपर सूं काकड़िया गटकावण नै ही जी जागै है।

—दसदोख

३ रंगीलौ।

रंगावट–सं. स्त्री.–१ रंगने की क्रिया या भाव।

२ रंगाई।

रंगावणौ, रंगावबौ–देखो 'रंगाणौ, रंगाबौ' (रू. भे.)

रंगावणहार, हारौ (हारी), रंगावणियौ —वि.।

रंगाविओड़ौ, रंगावियोड़ौ, रंगाव्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रंगावीजणौ, रंगावीजबौ। —कर्म वा.।

रंगावळ, रंगावळि, रंगावळी–सं. पु.–१ एक प्रकार का कवच विशेष।

उ०— टोप **रंगावळ** मारकां, भिडजां रज भरियांह। राव पधारै 'पाल' पर, पिंड वज पाखरियांह। —पा. प्र.

२ रान का कवच, उरुत्र।

उ०—१ जिणसाल, जुआंण करंत जरादी, जूसण बाधै जम्मजडा। हद ओप विटोप **रंगावळि** हाथळ, सूमात्रा करि सिद्ध खडा।

—गु. रू. बं.

उ०—२ **रंगावळि** सत्थळ हत्थे हत्थळ भूळरिणाळा धू नोपं। जडिया ले जूसण बंधै कस्सण, मिद्धक जांणै सक्कोपं।

—गु. रू. बं.

उ०—३ करि मिलहि जीणसाला किलकिल, घर टोप **रंगावळि** असुर धक्कि।

—मा. वचनिका

रंगावियोड़ौ–देखो 'रंगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रंगावियोड़ी)

रंगि–देखो 'रंग' (रू. भे.)

उ०—१ मात। आंगंदइं भरी, ऊलट माइ न अंगि। गूंथी सोवित–जीभड़ी, मल्हीउ माधव रंगि।

—मा. कां. प्र.

उ०—२ आभा चित्र रचित मिणि **रंगि** अनि अनि, मणि दीपक करि सूप मणि। मांडि रहे चंद्रया नगौ मिणि, फणा सहसेई सहस–फणि।

—बेलि.

उ०—३ मारवणि मनि **रंगि,** वाटइ तिणि आवी वहइ। कुंझौ एकणि संगि, तालि चरंती दिट्ठियां।

—ढो. मा.

२ देखो 'रंगी' (रू. भे.)

रंगिका—सं. स्त्री.—२८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें १६ व १२ पर यति होती है। इसके अन्य नाम—सार, ललित, नरेन्द्र आदि भी हैं।

रंगिया—सं. स्त्री.—मृत पशु की उतारी हुई खाल को रंगने का कार्य करने वाली एक जाति या वर्ग। जटिया रैंगर। (बीकानेर)

रंगियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ लीन, तल्लीन, तन्मय या अनुरक्त हुवा हुआ. २ आसक्त या मोहित हुवा हुआ. ३ ओत-प्रौत हुवा हुआ. ४ रंग से युक्त हुवा हुआ. ५ भीगा हुआ. ६ किसी रंग विशेष या कई रंगों में रंगा हुआ, रंग से युक्त किया हुआ. ७ अनुकूल किया हुआ. ८ प्रभाव में किया हुआ. ९ प्रेम में फंसाया हुआ।

(स्त्री. रंगियोड़ी)

रंगिरोल, रंगिरोली, रंगिरौल—देखो 'रंगरळी' (रू. भे.)

उ०—चंदन भरी कचोली (भरी) यनि **रंगिरोली,** प्रीसइ रस घोली, हाथि लिउ पांन कुली, पहिरणि पीत पटुली, कांचली कांनी आली, उढणि नवरंग फाली रूपनी चित्रसाली, अहौ सीआलक।

—व. स.

रंगी—सं. स्त्री.—१ शारदा, सरस्वती। (अ. मा.)

२ शतमूली।

३ कैवर्त्ति की लता।

४ २८ वर्णों का एक वर्णिक छन्द विशेष। (पिं. प्र.)

५ निसांणी छंद का एक भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ६ गुरु और ११ लघु वर्ण होते हैं।

वि.—१ हंसमुख, विनोद शील।

२ मनमौजी, मस्त।

३ छैल-छबीला, शौकीन।

४ सुंदर, मनोहर।

उ०—धरम्म बिनां देखो धरनी में, भये किते हक भंगी। धरम प्रताप धरापति धारत, रजधांनी वहु **रंगी।**

—ऊ. का.

रू० भे०—रंगि।

५ देखो 'रंग' (रू. भे.)

रंगीन—वि. [फा.] १ जिस पर कोई रंग चढा हो, रंगा हुआ, रंगदार, रंग से युक्त।

२ चित्रित, शोभित।

३ चमत्कार पूर्ण, अद्भुत।

४ जो स्वभाव से विनोद प्रिय हो और आमोद-प्रमोद रुचि रखता हो। मस्त, मौजी।

५ विलास प्रिय, विलासी।

रंगीली—सं. स्त्री.—१ स्त्री, नारी।

२ प्रेमिका, प्यारी।

उ०—परगह ले बांधी पगां, सेंठी गूघर साथ। हंजा रौ सारौ हुकम, हुऔ **रंगीली** हाथ।

—बां. दा.

वि. स्त्री.—१ हर्ष और आनन्द से युक्त, मस्ती भरी।

उ०—म्हारै आज **रंगीली** रात, मनडा रा म्हरम आइया।

—मीरां

२ रंगों से युक्त, विविध रंगों वाली।

उ०—रे सांवरिया म्हारै आज **रंगीली** गणगौर छै जी।

—मीरां

३ सुन्दर, खूबसूरत।

४ मजेदार, बढ़िया।

उ०—पीं पीं ज्यूं पिक वैण, पींगटी वर्णै **रंगीली**। देव दुकांनां मिळै, मुफत रै मोल चंगीली।

—दसदेव

५ छैल-छबीली, शौकीन।

६ छिनाल, आवारा।

रू० भे०—रंगली।

रंगीलीटोड़ी—सं. स्त्री.—सब शुद्ध स्वरों की सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी। (संगीत)

रंगीलौ—वि. (स्त्री. रंगीली) १ रंग भरा, रंग से युक्त, रंगीन।

२ आकर्षक।

उ०—**रंगीलौ** चंग वाजणूं, म्हांरै वीरै जी मंढायौ चंग वाजणूं। म्हांरौ रेगर मंढ कै लायौ ए, **रंगीलौ** चंग वाजणूं।

—लो. गी.

३ आनन्द व मस्ती भरा, हर्ष व खुशी देने वाला।

उ०—वसंत पंचमी पछै, नीकळै काची केळां, कूंपळ दांतण तणी **रंगीली** रुत री वेळां।

—दसदेव

४ प्रेम व अनुराग से युक्त, प्रिय, प्रेमी।

उ०—आप रंगीला, सेज रंगीली और **रंगीलौ** सारौ साथ छे जी।

—मीरां

५ मौजी, मस्त, विनोदी, रसिक।

६ रंग से भीगा हुआ, रंग से सराबोर।

रू० भे०—रंगरेलौ, ।

रंगोचंगौ-वि.-१ बढ़िया, मजेदार।
२ हर्षोन्मत्त, आनन्दित।
३ मस्त, मौजी।

रंघड़-सं. पु.-१ राजपूत।
उ०—जंगल जाट न छेड़िये, हाटां बीच किराड़। **रंघड़** कदै न छेड़ियै, जद तद करै बिगाड़।
—अग्यात
२ एक राजपूत जाति जो आजकल मुसलमान हो गई है।
वि.-१ सुभट, भट, योद्धा, सैनिक, वीर, बहादुर।
उ०—वखत हरीसिंघ बाहदुर, ठावा द्वै भुज ठौड़। 'पातल' संग जुध प्रगटिया, **रंघड़** बतीस रठौड़।
—जुगतीदांन देथौ
२ अड़ियल, अक्खड़।
रू० भे०-रंगड़, रंगट, रांगड़, रांघड़। अल्पां—रांगड़ौ, रांघड़ौ।

रंच-वि. [सं. न्यंच, प्रा. रांच] १ अत्यल्प, अल्प, थोड़ा, किंचित, तनिक।
उ०—१ किल कंचन कांमनि त्याग करै, धन संच प्रपंच न **रंच** धरै।
—ऊ. का.
उ०—२ वडौ कठरण परण पिता कियौ, कोई **रंच** न कियौ विचार। धनुख चढौ कै मत चढौ, म्हारौ रांम भंवर भरतार।
—गी. रां.
उ०—३ पय कर मीठौ पाक, जो अमरित सींचीजिये। उर कडवाई आक **रंच** न मूकै राजिया।
—किरपारांम
उ०—४ हठ इंद्री निग्रह करै, जोग जप तप ग्यांन। हरीया सहजां सबद का, **रंच** न पावै ध्यांन।
—अनुभव वांणी
२ तुच्छ, न्यून।
सं. स्त्री-१ पार्वती, दुर्गा, देवी। (क. कु. बो.)
रू० भे०-रंचक।

रंचक-देखो 'रंच' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—अगै **रंचक** दोस पै अति दंड न गाया।
—वं. भा.

रंज-सं. पु. [फा०] १ दुख, गम।
२ मृतक का शोक।
३ खेद, अफसोस।
४ चिंता, फिकर।
५ दर्द, पीड़ा, संताप।
६ नाराजगी।
७ विपत्ति, मुसीबत।
८ आघात, चोट।
वि. [सं. रंज, रञ्ज] १ अनुरक्त, आशक्त।
२ लिप्त, संलग्न।
३ रंगा हुआ।
४ प्रसन्न, खुश।
उ०—जाई बेटी जांनकी, रांम जमाई **रंज**। भाग बडाई जनक री, गाई बेद अगंज।
—र. ज. प्र.
रू० भे०-रंजि, रंजी।
५ देखो 'रज' (रू. भे.)

रंजक-सं. पु. [सं.] १ चित्रकार, चितेरा।
२ लाल चंदन।
३ सिन्दूर।
४ एक प्रकार का हरिन। मृग।
उ०—पाछै **रंजक** मुडियांण काळै गोरे अग खरगोस जाणै न पावै। जहां देखे तहां मारि गिरावै।
—सू. प्र.
५ पित्त के अन्तर्गत पेट की एक अग्नि। (सुश्रुत)
[फा.] ६ रंगरेज, रंगसाज।
७ बन्दूक या तोप की प्याली में रखी जाने वाली बारूद की थोड़ी सी मात्रा।
उ०—१ अहि खग म्रिग दम हंस अळूझै, सुणै न सबद गात नह सूझै। दहूं दळां वळि हुवै दिखाई, **रंजक** झळां गोळां रुसनाई।
—सू. प्र.
उ०—२ ईण भांत बात कहतां तौ बार लागै। **रंजक** जागी। कनां तोपखांना री ईक पलीती दागी। हर गोळी छूटी।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
८ अग्नि।
उ०— घड़ा री धणी पण कई बार अकेलो ही लोहां मिळयौ। सोर मैं पण **रंजक**। तिण भांत रजपूती री तीख री लग भग।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
वि.-१ रंगने वाला, रंग चढ़ाने वाला।
२ रंज या उदासी मिटाने वाला।
३ हर्ष या खुशी देने वाला, आनन्द कारक।
४ उत्तेजना या प्रोत्साहन देने वाला।
५ आकर्षित या मोहित करने वाला।

रंजण-सं. पु. [सं. रञ्जनम्, प्रा. रंजण] १ रंगने की क्रिया या भाव।

२ चित्त को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव ।
३ आनन्द, हर्ष ।
४ पित्त ।
५ लाल चंदन की लकड़ी ।
६ मूंज ।
७ सोना, स्वर्ण ।
८ जायफल ।
९ कमीला नामक वृक्ष ।
१० छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें २१ गुरु व ११० लघु कुल १५२ मात्राएं होती हैं । मतान्तर से छप्पय छन्द का बावनवां भेद जिसमें १९ गुरु तथा ११४ लघु कुल १५२ मात्राएं होती हैं ।
—र. ज. प्र.

वि.–१ रंज या उदासी मिटाने वाला, आनन्द व खुशी देने वाला ।

उ०—१ मंत्रीसर घरि आवीउ सयल लोक **रंजण** सुलक्खण । पूरव पुण्य पसाउ लइ त्रिण्णि नारि विलसइ वि अक्खणि ।
—हीराणंद सूरी

उ०—२ दुखियां नैं सुख ना दातार । भय भंजण **रंजण** अवतार ।
—वृ. स्त.

उ०—३ चंदण देह कपूर रस, सीतळ गंग प्रवाह । मन **रंजण** तन उल्हवण, कदै मिळेसी नाह ।
—ढो. मा.

२ पालन–पोषण करने वाला ।

उ०—जगत ठांम जग सांमि, जगत रोपण जग **रंजण** । जग वंदण जग जेठ, जगत भेदण जग भंजण ।
—पीरदांन लाळस

३ शान्ति या संतोष देने वाला ।

उ०—वाद भणी विद्या भणी जी, पर **रंजण** उपदेस । मन संवेग धरचउ नहीं जी, किम संसार तरेस ।
—स. कु.

रू० भे०–रंजन ।

रंजणौ–वि. (स्त्री. रंजणी) १ प्रसन्न या खुश करने वाला, प्रसन्न या खुश होने वाला ।

उ०—१ कोडि वरीसणौ लखधीर वडाकर राजिंद रूपक **रंजणौ** । वैर वराह लिआं दळ बादळ भूप खळां दळ भंजणौ ।
—ल. पिं.

उ०—२ भारांणी दुख भंजणो, गुण **रंजणौ** गहीर । जास खजानै जगत रौ, साहिब कीधौ सीर ।
—बां. दा.

२ रंगने वाला ।
३ आकर्षित करने वाला ।

उ०—गरब सत्रां गंजणां, रमा सुचित **रंजणा** । भुजां सजोर भंजणा, चढाय सिंभ चाप ।
—र. ज. प्र.

४ तृप्त करने वाला, तृप्त होने वाला ।
५ दीप्तिमान करने वाला ।

उ०—भारत भू भरतार, रजव्वट **रंजणौ** । अवतरियौ नर एक गनीमां गंजणौ ।
—किसोरदांन बारहठ ।

रंजणौ, रंजबौ–क्रि. अ. [सं. रंजनम्] १ प्रसन्न होना, खुश होना, हर्षित होना ।

उ०—१ मुखि आखै हरि मंत्र वदन कजि अंत विकस्सै । कियौ ग्रेह परवेस **रंजी** पुरखेस दरस्सै ।
—रा. रू.

उ०—२ लूणीए फसले लाग देखी करी, राख्या आपणइ पासौ जी । रूड़ी रहणी देखी रंजिया, सहु को कहइ साबासौ जी ।
—स. कु.

उ०—३ कल्यांणमल्ल राय **रंजिया** इडर नगर मझार । मा० सहजू उत्सव करइ, वरत्यौ जय जयकार ।
—कवि गुण विजय

२ तृप्त होना, संतुष्ट होना ।

उ०—१ गिळै गूंद सादड़ी सयळ साव्ज मन **रंजै** । कोलर तोडि करंक, गूह गरजी खत भंजै ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ लोक खुस्याल सहू थया रे, **रंज्या** रांणी भूप ।
—श्रीपाल रास

३ मोहित होना, मुग्ध होना, आकर्षित होना, रीझना ।

उ०—१ सिंघल द्वीपे मूकि नें रे, आयस हूअउ अलोप रे । राजा रौ मन **रंजीयौ** रे देख्यौ नगर अनोप रे ।
—प. च. चौ.

उ०—२ जोतां नवरस एणि जुगि सविहूं धुरि सिणगार । रागइ सुर–नर **रंजियइ** अवळा तसु आधार ।
—ढो. मा.

४ शोभायमान होना, शोभित होना ।

उ०—१ चादर हौज फुंहार नीर चलि, अम्रत नदी आय किर ऊझळि । **रंजत** सुजळ केइक अंतरामै, केइक होद भरचा कुमकुम्मै ।
—सू. प्र.

उ०—२ सजै पग छांह सातूं रिख स्यांम, **रंजै** पग छांह जिसा वळरांम। देखै पग मेव करै दुड़इंद, चरच्चै पग्ग निरम्मळ चंद।

—ह. र.

५ उलझना, फंसना।
६ प्रभावित होना, प्रभाव में आना।
७ रंगीजना, रंगमय होना।
८ चमकना, दीप्तिमान होना।
क्रि. स.—९ प्रसन्न करना, खुश करना, आनन्द देना, हर्ष या खुशी देना।
उ०—१ नयणां रौ अंजन सांवरो म्हारै हिवड़ा रौ **रंजणहार**।

—मी. रां.

उ०—२ थे तौ भूखां नी भावठ भंजउ, राजि निज सेवक तणा मन **रंजउ** राजि०।

—वि. कु.

१० तृप्त करना, संतुष्ट करना।
११ आकर्षित करना, मुग्ध या मोहित करना, रीझाना।
१२ चमकाना, दीप्तिमान करना।
१३ प्रभावित करना, प्रभाव में लाना।
१४ रंगना, रंग से युक्त करना, रंग चढ़ाना।
१५ निर्भय करना, निश्चित करना, भय मुक्त करना।
उ०—सर गिरवर तारै पदम अठारै, सेन उतारै जगत सखै। भिड़ रांवरण भंजै गाढिम गंजै, अमरां **रंजै** ब्रहम अखै।

—र. ज. प्र.

रंजण हार, हारौ (हारी), रंजणियौ —वि.।
रंजिओड़ौ, रंजियोड़ौ, रंज्योड़ौ —भू. का. कृ.।
रंजीजणौ, रंजीजबौ। —भाव वा./कर्म वा.।
रंजवणौ, रंजववौ। —रू. भे.।

रंजत—सं. स्त्री. (सं. रंज्) १ तृप्ति, संतोष।
उ०—१ भांणजी कह्यौ—मासी थनै ई राड़ करियां बिना **रंजत** नीं व्है। थारा बेटा पटिया तुड़ाता व्हैला, थूं छेकी जावै जकी बात करै नीं, क्यूं बिरथा आडी-डोढी खसकती फिरै।

—फुलवाड़ी

उ०—२ गांव रै लोगां नै म्हैं जांणूं। एक री इक्कीस नीं मेलै जित्तै आंनै **रंजत** ई नीं व्है।

—फुलवाड़ी

२ हर्ष, खुशी, आनन्द।

रंजन—देखो 'रंजण' (रू. भे.)

रंजवणौ, रंजवबौ—देखो 'रंजणौ, रंजबौ' (रू. भे.)
उ०—कंचणमउ अइ १३ कलसु सिहरि सांणउ **रंजविअउ**। जणु सुतरणि तउ १४ तवइ तिव्वु (व्वु) आयासि सउन्नउ।

—कवि पल्ह

रंजवियोड़ौ—देखो 'रंजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रंजवियोड़ी)

रंजाट—रंगा हुआ, लीन।
उ०—१ इण वेळा रजपूत वे, राजस गुण **रंजाट**। सुमिरण लग्गा वीर सब, वीरां रौ कुळवाट।

—वी. स.

उ०—२ भूप ऊछाहरां साजै महुंडां तरिंदां भेडै। रांमेड़ा गरिंदां छेड़ै नाहरां **रंजाट**।

—राजा रांमसिंघ हाडा रौ गीत

रंजाणौ, रंजाबौ—क्रि. स. ['रंजणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ प्रसन्न करना/कराना, हर्षित करना/कराना, आनन्दित करना/कराना। २ तृप्त करना/कराना, संतुष्ट करना/कराना। ३ मोहित करना/कराना, मुग्ध करना/कराना, आकर्षित करना/कराना, रीझाना। ४ शोभायमान करना/कराना, शोभित करना/कराना, सज्जित कराना। ५ उलझवाना, फंसवाना। ६ प्रभावित कराना, प्रभाव में लाना। ७ चमकाना, दीप्तिमान करना/कराना। ८ रंगमय कराना, रंगाना। ९ भय मुक्त करना/कराना, निर्भर करना/कराना, निश्चित करना/कराना।
रंजाणहार, हारौ (हारी), रंजाणियौ —वि.।
रंजायोड़ौ। —भू. का. कृ.।
रंजाईजणौ, रंजाईजबौ। —कर्म वा.।

रंजायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ प्रसन्न या हर्षित किया हुआ/कराया हुआ. आनन्दित किया हुआ/कराया हुआ. २ तृप्त किया हुआ/कराया हुआ, संतुष्ट किया हुआ/कराया हुआ. ३ मोहित या मुग्ध किया हुआ/कराया हुआ, आकर्षित किया हुआ/कराया हुआ, रीझाया हुआ. ४ शोभित या शोभायमान किया हुआ/कराया हुआ, सज्जित किया हुआ/कराया हुआ. ५ उलझाया हुआ, फंसवाया हुआ. ६ प्रभावित किया हुआ/कराया हुआ, प्रभाव में लाया हुआ। ७ चमकाया हुआ, दीप्तिमान किया हुआ/कराया हुआ. ८ रंग मय कराया हुआ, रंगाया हुआ. ९ भय मुक्त, निर्भय या निश्चित किया हुआ/कराया हुआ।
(स्त्री. रंजायोड़ी)

रंजि—१ देखो 'रज' (रू. भे.)
उ०—जिकां पार जोवतां वार लग्गै वरणंतां, तड़ित मार अवतार अणी गुण धार अनंतां। वेदांणी तन मजि **रंजि** आभीच लगन्नै, घड़ै सधर पुळ सज्जि धूप डंबर वासन्नै।

—रा. रू.

२ देखो 'रंज' (रू. भे.)

रंजित–वि. [सं. रज्ज्] १ रंग से युक्त, रंगीन। २ भीगा हुआ, सना हुआ। ३ रज से भरा हुआ, धूलि धूसित। ४ प्रेम में फंसा हुआ, अनुरक्त। ५ लिप्त, संलग्न।

रंजियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ प्रसन्न, खुश या हर्षित हुवा हुआ. २ तृप्त या संतुष्ट हुवा हुआ. ३ मोहित, मुग्ध या आकर्षित हुवा हुआ, रीझा हुआ. ४ शोभित या शोभायमान हुवा हुआ. ५ उलझा हुआ, फंसा हुआ. ६ प्रभाव में आया हुआ, प्रभावित. ७ रंगमय हुवा हुआ, रंगा हुआ. ८ चमका हुआ, दीप्तिमान हुवा हुआ. ९ प्रसन्न या खुश किया हुआ, आनन्द, हर्ष या खुशी किया हुआ. १० तृप्त या संतुष्ट किया हुआ. ११ आकर्षित, मुग्ध या मोहित किया हुआ, रीझाया हुआ. १२ चमकाया हुआ, दीप्तिमान किया हुआ. १३ प्रभाव में लाया हुआ, प्रभावित किया हुआ. १४ रंग से युक्त किया हुआ, रंग चढ़ाया हुआ, रंगा हुआ. १५ भय मुक्त या निर्भय किया हुआ, निश्चित किया हुआ। (स्त्री. रंजियोड़ी)

रंजिस–सं. स्त्री. [फा. रंजिश] १ किसी प्रकार की चिंता, फिक्र या उदासी।
२ अप्रसन्नता।
३ नाराजगी।
४ मन मुटाव, मनोमालिन्य।
५ शत्रुता।

रंजी–१ देखो 'रज' (रू. भे.)
उ०—१ **रंजी** सिकता स्वेत, वाळुमय धोरा पीळा। चांदै तणै उजास, रुपेली रातां सीळा।
—दसदेव
उ०—२ **रंजी** आसमांण ढंकी चंद यौ छयाळी रहै, दूट ताळी मुनिंद्रा व्है अताळी तमांम।
—सुखदान कवियौ
उ०—३ आखौ नगर पोड़ां री **रंजी** सूं ढकग्यो तौ ई वै माठ नीं झेली।
—फुलवाड़ी
२ देखो 'रंज' (रू. भे.)

रंजीदगी–सं. स्त्री. [फा.] १ रंजिश होने की अवस्था या भाव।
२ चिंता उदासी।
३ दुख, संताप, रंज, गम।
४ वैमनस्य, शत्रुता।

रंजीदौ–वि. [फा. रंजीदः] १ दुखी, संतप्त, गमगीन।
२ नाराज, अप्रसन्न।
३ असंतुष्ट।

रंड–सं. स्त्री. [सं. रंडः] १ बांझ केकोड़ा नामक एक लता, जिसमें फल नहीं लगते।
उ०—भाइ काला नाग तुं, चढै विलोती **रंड**। वारूं वली विद्यारथी, रखै भरांतां भंड।
—मा. कां. प्र.
२ देखो 'रांड' (मह., रू. भे.)
उ०—तिण रै बेटी नांम लीलां। सु बाळ **रंड**।
—देवजी बगड़ावतां री वात
३ देखो 'रंडी' (रू. भे.)

रंडकारौ–सं. पु. [सं. रंडा+रा. कारौ] १ किसी स्त्री के सम्बोधन में प्रयोग किया जाने वाला अपशब्द।
उ०—सो सपूत हुवै मो तौ पिण माता रा यत्न करै अनै कपूत हुवै ते ऊंधा अवळा बोलै। माता नै **रंडकारा** री गाळ बोलै।
—भि. द्र.

रंडनी–१ देखो 'रंडी' (रू. भे.)
उ०—बना विहार तें वहै मना किये नहीं मने। इसा महा अभग्ग नित **रंडनी** जनें।
—ऊ. का.
२ देखो 'रांड' (रू. भे.)

रंडपोखौ–सं. पु. [सं. रंडा+पोषकः] वेश्याओं का पोषण करने वाला, व्यभिचारी। वेश्या गमन करने वाला।
उ०—**रंडपोखां** रा राज में, रुळगी भूखां रैत। सूंकां नित सीरा करै, दंड न चूकां देत।
—ऊ. का.

रंडमाळ, रंडमाळा, रंडमाला–देखो 'रुंडमाळा' (रू. भे.)
उ०—स्मसांन वसनि, अखभ गति, **रंडमाला** भूखण, अनेकि दूखण, इस्या ईस्वर तणी करतां भगति किम पांमीइ मुगति?
—व. स.

रंडवौ–सं. पु. [सं. रंडः] १ वह पुरुष जिसकी स्त्री मर चुकी हो, विधुर।
२ वह पुरुष जिसकी शादी न हो सकी हो, अविवाहित व्यक्ति।
रू० भे०–रंडुओ, रंडुवौ।

रंडा–वि.–१ मूर्ख, अज्ञानी।
उ० – निरगुण थी सरगुण हुआ, क्या जांणै **रंडा**।
— केसोदास गाडण
२ देखो 'रांड' (रू. भे.)
उ०—१ मेलै पग मंडा अग्र अखंडा, **रंडा** प्रिय राचंदा है। पढ दुरस प्रमादी मुरसद मादी, महंत पुरुस माचंदा है।
— ऊ. का.

उ०—२ जलि बलि जा रे जीभडी, जउ न वखांणी नाथि।
रंडा तुं मुखि रहिसि तु, बोलसि बीजां साथि।

—मा. कां. प्र.

३ देखो 'रंडी' (रू. भे.)

रंडातक—वि.—विधवा स्त्री के समान।

उ०—जावक पावक जिम **रंडातक** जीवैं, सातां ठोडां सूं चंडातक सीवैं।

—ऊ. का.

रंडापरण, रंडापरणौ—देखो 'रंडापौ' (रू. भे.)

उ०—सूरां रण में जाय के, लोहा करौ निसंक। ना मुझ चढै **रंडापरणौ**, ना तुझ चढै कळंक।

—अग्यात

रंडापौ—सं. पु.—१ विधवा होने की अवस्था या भाव, वैधव्य, विधवापन।

उ०—१ बापड़ी भोळी-डाळी किन्यावां नै कुड़कै में नांख'र वेगी सी विधवा बरणा देवै। मुवाग री तीं **रंडापै** री चंवरी चाढै।

—दसदोख

उ०—२ यौ सवाग खारौ लगै, जद कायर भरतार। **रंडापौ** लागै भलौ, होय सूर सिरदार।

—वी. स. टी.

२ विधवा का सा जीवन, दुखी जीवन।

उ०—दुख सतियां रौ सुणै न दिलकी, बिलकी फिरै बिचारी रे। धणी जीवतां देखी घरां में, भोगै **रंडापौ** भारी रे।

—ऊ. का.

रू० भे०—रंडापण, रंडापणौ, रंडेपड़ौ रंडेपौ, रांडापौ रांडपौ।

रंडाळ—१ देखो 'रांड' (मह., रू. भे.)

उ०—कुळहीन अंग चरमा वितुंड, बंबील उरद्ध सिर महिख मुंड। **रंडाळ** बाळ बिथुरे असुभ्र, लज्या विहीन सिर रक्त कुंभ।

—ला. रा.

२ देखो 'रढाळ, रढाळौ' (मह., रू. भे.)

रंडाळौ—१ व्यभिचारी।

२ देखो 'रढाळ, रढाळौ' (रू. भे.)

उ०—बसिया मैंणा लोधिया भीला भुरजाळा, भोम विगाड़ू भोमिया आया अरसाळा। पीहर 'पाल' विखायतां घर ठांभण वाळा। जिके विगाड़ू जगत रा, रजपूत **रंडाळा**।

—पा. प्र.

रंडि—देखो 'रंडी' (रू. भे.)

रंडी—सं. स्त्री. [सं. रंडा] १ धन लेकर नाचने गाने व संभोग कराने वाली स्त्री, वेश्या।

२ वह विधवा स्त्री जो व्यभिचार से धन कमा कर जीविका चलाती हो।

३ स्त्रियों की एक गाली।

रू० भे०—रंड, रंडनी, रंडा, रंडि।

४ देखो 'रांड' (रू. भे.)

रंडीजणौ, रंडीजबौ—देखो 'रांडीजणौ, रांडीजबौ' (रू. भे.)

रंडीजियोड़ी—देखो 'रांडीजियोड़ी' (रू. भे.)

रंडीजियोड़ौ—देखो 'रांडीजियोड़ौ' (रू. भे.)

रंडीबाज—वि. [सं. रंडा+फा. बाज] १ वेश्यागामी, व्यभिचारी।

उ०—भूंडा ही करदै भलौ, कदियक आछौ कांम। **रंडीबाजां** राखिया, नांमरदां रा नांम।

—प्रभुदांन आसियौ

रंडीबाजी—सं. स्त्री.—१ 'रंडीबाज' होने की अवस्था या भाव।

२ रंडी या वेश्या के साथ किया जाने वाला संभोग, व्यभिचार।

रंडुओ, रंडुवौ—देखो 'रंडवौ' (रू. भे.)

रंडेपड़ौ—देखो 'रंडापौ' (रू. भे.)

उ०—क्यों भेळीजै त्रिफटगढ, क्यों तूटै दस सीस। तो नै दीन **रंडेपड़ौ**, छोडावण तेतीस।

—मेहौ गोदारो

रंढ—देखो 'रढ' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ सत पराक्रम सूरमां, मन्न म हुआ उदमाद। रोम फ़ुरिगदां **रंढ** त्रियां, हम्मीरां हठ वाद।

—गु. रू. बं.

रंढरांण, रंढरांणौ—देखो 'रढरांण' (रू. भे.)

उ०—१ भूपां रूप 'लाखौ' वंस भांग, राखै रीति मांगौ **रंढरांण**।

—ल. पि.

उ०—२ मलण मांण असुरांण **रंढरांण** बेढीमणा, आंण नारांण दुनियांण आभौ।

—महेस बारहठ

उ०—३ काढै माल किलांणमल, धुणै जोधांणा। तो गण भग्गा रायसिंघ, रोहै **रंढरांणा**।

—द. दा.

रंढाळ, रंढाल, रंढाळौ, रंढालौ—देखो 'रढाळ' (रू. भे.)

उ०—१ हुवा तेणै वंस हुवौ हिंदूकार हरि हंस। राव राजां जांणै रांणा रावळ **रंढाळ**।

—नैणसी

उ०—२ मूळू मंकड़ दौयण मुख, कर लागौ कुंढाळ। बीकमशी वीसूत्रसौं, रतनौ पूंछ **रंढाळ**।

—नैणसी

उ० – ३ रांणौ दांणौ पूरवै, रावल रण **रंढाल** । भारथ में योद्धा भिड़ै, रिणयोद्धा जिम काल ।

— प. च. चौ.

उ०—४ रांणौ हे सखि रांणो है अति **रंढाल** ।

— प. च. चौ.

उ०—५ सकतावत छळि धणी सिघाळा, आया चांपा वंस उजाळा । रिणमलोत रिणताळ **रंढाळा**, भेळा चांपावतां भुजाळा ।

—रा. रू.

उ०—६ सूर कहै गजसिंघ नूं, रखि धीर **रंढाळा** । कळह करौ तदि 'केहरी', आय मंडै आळा ।

—सू. प्र.

उ०—७ तबल वाज गजराज, सकबंध अकबर तणा, रहचिया मीर हालै **रंढाळै** । सतै आफाळिया भला खुरसांण सूं, काछ पंचाळ सोराठ काळै ।

—नैणसी

रंढू–देखो 'रांढू' (रू. भे.)

रंण–देखो 'रण' (रू. भे.)

रंणझरण–देखो 'रणझरण' (रू. भे.)

रंणथंभ–देखो 'रणथंभ' (रू. भे.)

रंत–देखो 'रत्त' (रू. भे.)

रंति–देखो 'रति' (रू. भे.)

रंतिदे, रंतिदेव–सं. पु. [सं. रन्तिदेव] १ एक चन्द्रवंशी राजा, जो बड़ा दानी था और जिसने बहुत से यज्ञ किये थे ।

(पौराणिक)

२ विष्णु का एक नामान्तर ।

रू० भे०–रंतीदे, रंतीदेव ।

रंतिनदी–सं. स्त्री. [सं.] चंबल नदी ।

रंतीदे, रंतीदेव–देखो 'रंतिदेव' (रू. भे.)

उ०—नमजौ चंवल हेत हिये में आदर आंणौ । **रंतिदै** भूकंत जिगन री कीरत जांणौ ।

—मेघ

रंद–देखो 'रंध्र' (रू. भे.)

उ०—पिंड पिसणां रा गुड पड़ै, उड गोल्यां अण चूक । **रंद** जांण बर–दुरंग रा, बांधा थया बंदूक ।

—रेवतसिंह भाटी

रंदणौ, रंदबौ–क्रि. स.–१ लकड़ी को साफ करने के लिये रंदा फेरना, लकड़ी पर रंदा लगाना ।

२ देखो 'रंधणौ, रंधबौ' (रू. भे.)

रंदाई–सं. स्त्री.–१ रंदा लगा कर लकड़ी को साफ करने की क्रिया या भाव ।

२ देखो 'रंधाई' (रू. भे.)

रंदाणौ, रंदाबौ–क्रि. स.–१ रंदा लगा कर लकड़ी को चिकनी व साफ कराना ।

२ देखो 'रंधाणौ, रंधाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तेजाजी ओ लापी **रंदाऊ** बाबा लसपसी, ऊपर लीलोड़ा नारेळ ।

—लो. गी.

उ०—२ नणदल बाई रे लापसड़ी **रंदाय**, हे ओ धण वारी रे हंजा ।

—लो. गी.

रंदायोड़ौ–भू. का. कृ.–१ रंदा लगवाया हुआ ।

२ देखो 'रंधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रंदायोड़ी)

रंदेज, रंदोज–देखो 'रंधीण' (रू. भे.)

रंदौ–सं. पु.–१ बढई का एक उपकरण जिसमे लकड़ी साफ व चिकनी बनाई जाती है ।

२ कमान की डोरी, प्रत्यञ्चा ।

३ ऊंट के पिछले पैर के ऊपर के भाग में होने वाला एक रोग ।

४ उक्त रोग से पीड़ित ऊंट ।

रंध–देखो 'रंध्र' (रू. भे.)

रंधक–सं. पु. [सं.] रसोइया, बावरची ।

वि.–अनिष्ट कारक ।

रंधण, रंधन–सं. पु.–१ रसोई या भोजन बनाने की क्रिया ।

२ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक । (व. स.)

रंधणौ, रंधबौ–क्रि. अ.–खिचड़ी, खीच आदि का पकना ।

रंदणौ, रंदबौ (रू. भे.)

रंधर–देखो 'रंध्र' (रू. भे.)

उ०—कनंक अंग रंग कंति सोभ नाभ सुंदरं । मुनेस मोह रूप भोम, रास जांणि **रंधरं** ।

—सू. प्र.

रंधांण–देखो 'रंधीण' (रू. भे.)

उ०—पीसण खांडण लीपणौ, रांधण **रंधांण** । छै कूटौ छःकायनौ, जयणा करै जांण ।

—ध. व. ग्रं.

रंधाई–सं. स्त्री.–किसी खाद्य पदार्थ को पकाने की क्रिया या भाव ।

—रू. भे. रंदाई

रंधाणौ, रंधाबौ–क्रि. स.–भोजन या कोई खाद्य पदार्थ पकाना, पकवाना ।

उ०—१ मांस **रंधाणा** देगचा वेसवार अपारा। सूला त्यार किया सही, जाजे अ्रत भारा।
—पा. प्र.

उ०—२ तरै जगमालजी नै तेजसी रा रजपूतां री बात याद आई। तरै लापसी, बाकुळा, तिलट, दाळिया, सांकुलियां कराई मण सै-पांच अथवा छः सै मण धांन **रंधायौ**।
—जगमाल मालावत री बात

उ०—३ जीण मेरी बाई ये, उजळा **रंधाद्यूं** ये थांनै चावळचा।
—लो. गी.

रंधाण हार, हारौ (हारी), रंधाणियौ —वि.
रंधायोड़ौ —भू. का. कृ.
रंधाईजणौ, रंधाईजवौ —कर्म वा.
रंदाणौ, रंदावौ, रंधावणौ, रंधाववौ —रू. भे.

रंधायोड़ौ–भू. का. कृ.–पकाया हुआ, पकवाया हुआ।
(स्त्री-रंधायोड़ी)

रंधावणौ, रंधाववौ– देखो 'रंधाणौ, रंधाबौ' (रू. भे.)

उ०—खीर **रंधावै** कारतिक रे,तापस वैठौ जे आय।
—जयवांणी

रंधावियोड़ौ—देखो 'रंधायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रंधावियोड़ी)

रंधियोड़ौ–भू. का. कृ.–पका हुआ, सीजा हुआ।
(स्त्री. रंधियोड़ी)

रंधीण, रंधेज सं. पु.– १ खिचड़ी, लपसी, हलवा आदि पकवान्न।

२ ठण्डी रोटी को छाछ या पानी में पका कर बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

रू० भे०–रंदेज, रंदोज, रंधांण, रांदण, रांधण।

रंध्र–सं. पु. [सं.] १ छिद्र, छेद, सुराख।

उ०—१ केहर रा नख **रंध्र** सूं, गज मोतियां निपात।
सूरत कीरत वेल रा, बीज ववै अवदात। —वां. दा.

उ०—२ बेवे कवांण भूथांण बंध। असमांन छिवत रोसांण अन्ध।
चख मछी **रंध्र** छेदै चकास, उड़ता विहंग वेधै अकास।
—वि. सं.

२ गव्हर, गुफा।

उ०—१ दुखीवंत भू बंदरां **रंध्र** देखै।
पंखी उड्डुता चक्कवा हंस पेखै। —सू. प्र.

३ दीवार का वह छेद जिसमें से तीर या बन्दूक की गोलियां चलाई जाती थी, तीरकश।

४ तरकश, तुणीर।

५ योनि, भग।

६ त्रुटि, कमी, दोष,।

७ दुर्बल या कमजोर स्थल। (लाक्षणिक)

रू० भे०–रंद, रंध, रंधर।

रंब—देखो 'रंभा' (रू.भे.)

उ०—वीर बावन नचै बजै रिख वीणका,
पूर रत जोगणी खफर भर पीण का।
लीयां गण आवीयौ ईस सिर लीण का,
रंब पद ऊपरां भणक घुघरेण का।
—रिवदांन बारहठ

रंबौ–सं पु०–१ लोहे का मोटा छड़, जो वजनी चीज उठाने के काम आता है।

२ लोहे का मोटा डंडा जो दीवार में छेद करने के काम आता है

रू० भे०–रंभौ,

रंभ–सं. पु. [सं. आरम्भ] १ शुरूआत, आरंभ, प्रारम्भ।

उ०—पयदळ नह पार संख्या नह साहण,
कटक पयांणां रंभ कियै।
मात कसी दूजा मंडळीकां, लाखौ लियतौ लंक लिये।
—महारांणा लाखा री गीत

२. युद्ध, समर।

उ०—सुणि जोध वैंण भाखंत संभ, रिणमल्ल मांण आंगियौ **रंभ**। —मा. वचनिका

३ एक प्रकार का वांण, तीर।

४ वांस।

५ जोर का शब्द या आवाज।

६ एक प्रकार का हरिन।

७ महिषासुर का पिता। (पौराणिक)

८ एक राजा जो आयु राजा का पुत्र था, इसकी माता का नाम प्रभा था।

९ एक राजा जो विविंशति राजा का पुत्र था।

१० राम-सेना का एक वानर।

११ रंभ-करभ नामक दो दानवों में से एक।

रू० भे०—रंब।

१२ देखो 'रंभा' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ अति महा सती, किरि लक्ष्मी चालती, सरस्वती बोलती, रूपि पारवती, नवयौवनारंभ कि बीजी **रंभ**।
—व. स.

उ०—२ लांबै सर पांणी भरै, गोरी गात अनूप।
ज्यां आगै पांणी भरै, **रंभ** अलौकिक रूप। —बां. दा.

उ०—३ पत्र मुखारै जोगणी, माळ मुखारै **रंभ**।

थंभ चलेवौ सोम रवि, पेखै व्योम अचंभ । —रा. रू.

उ०—५ नितंबणी जंघ सु करभ निरूपम, रंभ खंभ विपरीत रूप । जुअळि नाळि तसु गरभ जेहवी, वयणौ वाखांणौ विद्रुप ।
—वेलि

उ०—६ लहंत द्रब्ब साख लाख, रंभ खंभ रोपियौ ।
'अजौ' नरिंद जेणवार, इंद्र जेम ओपियौ ।
—सू. प्र.

उ०—७ लहलहती नाचै लता, पवन संगीती पाय ।
पंखाबरदारी करै, रंभ बिचै बणराय । —बां. दा.

उ०—८ रंभ खंभ कुंजर सूंड राजै, जुगळ जंघा जांमली ।
कंज पौहप कुरम चरण कांमा पहिर नूंपर प्रावली ।
—मा. वचनिका

रंभगांण—सं० पु० [सं. रंभा+गायन] अप्सराओं का गायन ।
उ०—तहक नीसांण गिरवांण हरखांण तन,
चितां सरसांण रंभगांण चालै । —र. रू.

रंभा—सं. स्त्री. [सं.] १ इन्द्रलोक की एक अप्सरा, जो नल कूबर की स्त्री थी और अद्वितीय सुंदरी थी । यह कश्यप एवं प्राधा की पुत्री थी ।
उ०—१ सूकेसी उरवसी, छितेची मैना रंभा ।
इंद्रलोक अपछरा, इसी उणहारि असंभा ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ हंसगमणी, साख्यात पदमिणी, आभै री बीज, भादुवै री आकास परी, मोत्यां सरी, सोना री कांब, किरत्यां रौ भूमकौ । इंद्रलोक री अपछरा । रूप री रंभा । चित्रांम री पूतळी ।
—फुलवाड़ी

२ इंद्रलोक की परी, अप्सरा । (नां. मा.)
उ०—१ बाजिंद तांण विमांण भांण तक रहैं अचंभा ।
वीर बडाळां वरण रचैं वरमाळां रंभा ।
—र. रू.

उ०—२ 'अभमाल' आप छळि करि अचड़,
वप विहंडाय रंभा वरूं । —सू. प्र.

३ पार्वती, गौरी ।
उ०—नमौ रूप नद्दा सवद्दा रसीली, नमौ लच्छि रंभा नमौ वौम लीली । नमौ मोहणी कंमळा मूख मूंनी,
नमौ धोम धूतारणी संभ धूनी ।
—मा. वचनिका

४ मयदानव की पत्नी व मंदोदरी की माता ।
५ प्रेमिका ।
उ०—घट मैं देख्या एक अचंभा, आपौ आपी खेलै रंभा ।
घट मैं खूलहा केवळ नांमा, वाचैं राचै आतम रांभा ।
—अनुभव वांणी

६ वेश्या, रंडी ।
७ उत्तर दिशा ।
८ कदली, केला । (डि. को.)
रू०भे०—रंब, रंभ ।

रंभांणौ, रंभाबौ—क्रि. अ. [सं. रवणं] १ गाय का बोलना ।
उ०—धेनूं चरतोड़ी धोरां खड़ धाती, ऊखां झरतोड़ी लोरां झड़ आती । रातीबासै री माती रंभाती, जाया गोपा सै जाती जंभाती ।
—ऊ. का.

२ ममत्व भाव से हुलसकर दौड़ना ।
रंभावणी, रंभाववौ, रांभणौ, रांभवौ —रू. भे.

रंभातर, रंभातरु—सं. पु. [सं. रंभा+तरु] केले का वृक्ष, कदली वृक्ष ।

रंभातीज—सं. स्त्री. [सं. रंभा+तृतीया] जेष्ठ शुक्ला तृतीया ।
वि. वि.—प्रताप जयन्ती भी इसी दिन मनाई जाती है । (बी. वि.)

रंभापत, रंभापति, रंभापती—सं. पु. [सं. रंभा+पति] १ इन्द्र । (अ. मा.)
२ कुबेर पुत्र-नलकूबर ।

रंभाळ—देखो 'रंभा'
उ०—गळमाळ रंभाळ गूंथाळ ग्रहै ।
करमाळ मुंछाळ भूटाळ कहै । —पा. प्र.

रंभावणौ, रंभावबौ—देखो 'रंभाणौ, रंभावौ' (रू. भे.)
उ०—भैंस्यां रिड़कै रिड़गायां रंभावै, प्रांणी तिरखातुर पांणी कुण पावै । —ऊ. का.

रंभोरू—वि. [सं. रंभा+उरुः] कदली-वृक्ष के तने के समान जंघावाली सुन्दरी ।
उ०—सांथरवाड़ैसी बाडै में मोती, आंनन अंभोरू रंभोरू रोती ।
—ऊ. का.

रंभौ—देखो 'रंबौ' (रू.भे.)

रंमतारांम—सं. पु.—वह साधु जो एक स्थान पर टिक कर न रहता हो, रमताजोगी । स्वच्छन्द रहने वाला साधु ।
उ०—रंमतारांम एक रंग रता, माया मोह विखै नहीं मता ।
उतिम साध सु लछन धीरा, सो कहीयै अजरांमर वीरा ।
—अनुभववांणी

रंमाझंमा—देखो 'रिमझिम' (रू. भे.)
उ०—रंमाझंमा, रंमांझंमा, झंमा झंमां रंम ।
ठमकां रमकां झंकां रमकां ठमंक । —र. ज. प्र.

रंयणौ, रंयबौ—देखो 'रहणौ, रहवौ' (रू. भे.)

ररंकार—देखो 'ररंकार' (रू.भे.)

उ०—हरिदास जन यूं कहै, **रंरंकार** मूळ निज नांम।
मूल मंत्र सतगुरू दिया, दुख सुख दौय दूर सराय।
—ह. पु. वां.

र—सं. पु. [सं. रः] १ पावक, अग्नि, आग। (डिं. को.)
२ काम पिपासा, कामाग्नि। (एका.)
३ जलन।
४ गर्मी, ताप, आंच।
५ प्रेम, स्नेह।
६ गति, वेग, चाल, रफ़्तार।
७ सोना, स्वर्ण।
८ रगण का संक्षिप्त रूपान्तर। (पिंगल)
वि०—प्रखर, तीव्र, तेज।

रअ—देखो 'रत' (रू. भे.) (जैन)

रअय्यत—देखो 'रइयत' (रू. भे.)
उ०—जिण मैं आठ हजार सिरकार-रा तावेदार नै दस हजार रअय्यत। —बां. दा. ख्यात

रइं—१ देखो 'रइ' (रू. भे.)
२ देखो– 'रई' (रू. भे.)
३ देखो 'रति' (रू. भे.)

रइंण, रइंणि—देखो 'रयण' (रू. भे.)
उ०—निरखियौ 'भीम' सखे भड़े नारीयण, देवता देवतां तणौ डाडौ।
विसन नर **रइंणि** री वाह सूरति छि करतार लाडौ।
—पी. ग्रं.

रइ—सं. पु.—१ धैर्य, संतोष।
उ०—सेवग त्हारा 'लखा'-समोभ्रम, अधिपति बीजां थया अकूप।
रइ किम करै अवर नदि रावळ, रेवा नदी तणा गजरूप।
—ईसरदास बारहट
२ देखो 'रति' (रू.भे.)
उ०—जन्ह नरिंदह केरी धूय, गंगा नांमि **रइ** सम रूय।
उठइ नरवई सांमुहीय। —सालिभद्र सूरि
३ देखो 'रै' (रू.भे.)
उ०—१ कोइक पूरव भव संबंद्ध सुं रे, आइ मिल्यौ संजोग।
भवितव्यता **रइ** जोग मिलइ इस्या रे, वणियौ एम वियोग।
—प. च. चौ.
उ०—२ सयणा **रइ** मेलइ करी रेलौ, सफल हुवइ अवतार रे सनेही। —वि. कु.
उ०—३ मारू त्रिहुं बरसै बडी, चंपा **रइ** उणिहार।
सा कुंमरी परणाविस्यां, चालउ राजकुंमार।
—ढो. मा.

उ०—४ उत्तर आज सउत्तरउ, सीय पड़ेसी थट्ट।
सोहागिण घर आंगणइ, दोहागिण **रइ** घट्ट।
—ढो. मा.
४ देखो 'रे' (रू. भे.)
५ देखो '**रई**' (रू. भे,)

रइअत—देखो 'रइयत' (रू. भे.)

रइण—देखो 'रयण' (रू. भे.)

रइणाइर—देखो 'रत्नाकर'।
उ०—घणा अस्मि दुरिज्जण घड़िय घाइ, **रइणाइर** बाधउ जोधि राइ। जोधि मेवाड़ काढिय जडांह। भंगवट्ट दीध मोटां भडांह।
—रा. ज. सी.

रइणि—देखो 'रयण' (रू. भे.)
उ०—सा बाळा प्री चिंतवइ, खिणखिण **रयणि** विहाइ। तिण हर हार परठुव्यउ, ज्यूं दीवळउ बुझाइ।
—ढो. मा.

रइन—देखो 'रयण' (रू. भे.)
उ०—द्रग स्यांम बादर देखि दादुर रटत रस भरि **रइन**। वन मौर बोलइ पिच्छ डोलइ, द्विरद खोलइ पुनि नइन।
— वि. कु.

रइबारी—देखो 'रैबारी' (रू. भे.)
उ०—१ थां सूतां म्हे चालिस्यां, एह निचिंती होइ। **रइबारी** ढोलउ कहइ, करहउ आछउ जोइ।
—ढो. मा.
उ०—२ राजडीउ भाथाइत जेउ, नइ केल्हण **रइबारी** बेउ।
राउल भणी गया परि सुणी, बेगइ मांगइ बधांमणी।
—कां. दे. प्र.

रइयत, रइयति—सं. स्त्री. [अ. रईयत] प्रजा, रिआया, जनता।
उ०—आयौ भरथ अवध अभंग, मंडै पावडी उतमंग। **रइयत** कीध अत उछरंग, इम आवास जाय उमंग।
—र. रू.
रू० भे०—रअय्यत, रइअत, रईयत, रायत, रैयत।

रइवल्लह—सं. पु. [सं. रतिवल्लभ] रति पति, कामदेव।
उ०—नंछ सो सिरि थूलि भद्द जो जुगह पहांणो। मलियउ जिणि जगि मल्लसल्ल **रइवल्लह** मांणो।
—जिन पद्म सूरि

रइवास—देखो 'रहवास' (रू. भे.)

उ०—डिडवांणउ पालटि घाइ दाइ। **रइवास** लीध कासिली राइ।

—रा. ज. सी.

रइहीण, रइहीणु–वि. [सं. रति+हीन] जो रति–विहीन हो, कामेच्छा से विरक्त हो।

उ०—वात सुणी पाछउ वलइ जां नवि देखइ गंग। चउवीसं [वासं] रहइ जिमु **रइहीणु** [अणंगु]।

—सालिभद्र सूरि

रई–सं. स्त्री.–१ दही विलोने की मथनी, मंथन–दण्ड। (डिं. को.)

उ०—१ आंगै सुर असुर नाग नेत्रै नहि, राखियौ जई मंदर **रई**। महण मथे मूं लीध महमहण, तुम्हां किणैं सीखव्या तई।

—वेलि

उ०—२ संयौगिणि चीर **रई** कैरव स्री, घर हट ताळ भमर गोघोख। दिणयर ऊगि एतला दीधा, मोखियां बंध बंधियां मोख।

—वेलि

२ भूसी, चौकर।

रू० भे०–रइं, रयी।

३ देखो 'रति' (रू. भे.)

४ देखो 'रइ' (रू. भे.)

रईय–देखो 'रचित' (रू. भे.)

उ०—सोवन ए रासि करेवि बंधव आगलिउ गिणं ए। मितह ए **रईय** मणि चूड राय रहइं मभा रयणमए।

—सालिभद्र सूरि

रईयत–देखो 'रइयत' (रू. भे.)

उ०—इसौ जोर घालियौ कै के जाळोर री मांहै वसिया, के जेसळमेर री मांहै वसिया। **रईयत** सरब गई।

—नैणसी

रईवत–देखो 'रैवत' (रू. भे.)

रईस–सं. पु. [अ.] १ अमीर, धनवान, धनाढ्य।

उ०—नवलजी रै काळजै में लाट ऊपड़ी–मेरी आज आः हालत जींवता ही हुयगी ? कै जंवाई ही वैरी बणग्यौ। ऐः लोग **रईस** अर हूं जूं वा री खायोड़ौ कंगलौ कलीर।

—दसदोख

२ नाजुक, कोमल।

उ०—केई दिनां सूं पड़चा भाव है। **रईस** किरांणौ है, घणा दिना तक रोकणौ वाजिब कोनीं।

—फुलवाड़ी

३ प्रतिष्ठित व्यक्ति।

४ रियासत का स्वामी, भूस्वामी, शासक।

५ अध्यक्ष, प्रधान।

रू० भे०–रहिस, रहीस।

रउ–१ देखो 'रव' (रू. भे.)

उ०—दादुर मोर करइं अति सोर, प्रीयु प्रीयु बोलइ ए बप्पीउ **रउ**। मेहरउ टबकइ बिजुरी झबकइ, कहउ क्यूं करि ठउर रहइ हियरउ।

—स. कु.

२ देखो 'रौ' (रू. भे.)

उ०—त्रीजइ पुहरि उलांघियउ, आडवळा **रउ** घट्ट।

—ढो. मा.

रउताई–देखो 'रावताई' (रू. भे.)

रउद, रउद्द–देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—चांपलउ तुरी दीपक्क चक्ख, नाटारंभि नाचइ खूत नक्ख। खाफरा खड़ग वाहण सखुद्द, रिणि किसन चडिय भांजण **रउद्द**।

—रा. ज. सी.

रउद्ध–१ देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

२ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

रउद्र–१ देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—नीसांण वाजि नरगा नफेरि, **रउद्र** गति डउंडि भरहरी भेरि। मरुआड़ि सेन हालिया मसत्त, साइयर जांणि फाटा सपत्त।

—रा. ज. सी.

२ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—माड़ रड राइ मुहि मूंछ मोड़ि, केल्हणि कटक्क तांणिया कोड़ि। काळइ कलूळि जांगळू काजि, **रउद्रां** दळ तांणिय देवराजि।

—रा. ज. सी.

रउद्रि–१ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—रीसाइ रोड़ि वाजा **रउद्रि**, मेखळा जांणि मेल्ही समुद्रि। मोटा गढ जीपिय हेळ मत्त, छह खंड खिडइ सिरि खेड छत्त।

—रा. ज. सी.

२ देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—गहगहिय थाट बेऊं गरीठ, राठउड़ि **रउद्रि** वाजियउ रीठ। सूरा सधीर वाजइ सरोस, पड़िकाळे ऊडइ जिरह पोस।

—रा. ज. सी.

रएयत, रऐयत–देखो 'रइयत' (रू. भे.)

रग्रोड़ी–देखो 'रमोई' (अल्पा. रू. भे.)

रग्रोड़ौ–देखो 'रसोड़ौ' (रू. भे.)

रकतंबर–सं. पु. [सं. रक्त+ग्रंबर] १ लाल रंग का वस्त्र।

२ गेरूंग्रा वस्त्र धारी संन्यासी या परिव्राजक।

३ सूर्य, रवि।

उ०—सिविता रवि सूर पतंग सही। **रकतंबर** ग्रंबर ज्योत रही।

—पा. प्र.

रू० भे०–रातंबर,

रकत–१ देखो 'रक्त' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—रुंड **रकत** भारिया, मुंड भारिया खडग्गां। कितां ग्रंग निरलंग, भड़े भड़ पग्ग करग्गां।

—रा. रू.

२ देखो 'रग्वत' (रू. भे.)

रकतकंद–सं. पु. [सं. रक्त+कन्दः] १ प्रवाल, मूंगा।

(डि. को.)

२ लाल चंदन।

३ केसर।

रकतबीज–देखो 'रक्तबीज' (रू. भे.)

उ०—दांनव महिख **रकतबीजादिक**, मार लिया महमाई।

—मे. म.

रकतांक, रकतांग–देखो 'रक्तांग' (रू. भे.) (डि. को.)

रकबौ–सं. पु. [ग्र. रकबः] क्षेत्रफल।

रकम–सं. स्त्री. [ग्र. रकम] १ धन, दौलत, सम्पत्ति।

२ गहने, ग्राभूषण।

उ०—दे गजराज तुरंग द्रव, तोरा सपत वसन्न। मुगतमाळ सरपेच नग, **रकमां** सात रतन्न।

—रा. रू.

३ व्यापार में लगाई जाने वाली पूंजी।

उ०—ग्रापरै साथै म्हारै ई कमाई रौ जोग सज जावै तौ कांई भूंडौ। ग्राप सात हजार रिपिया लगाय दौ, बाकी री सगळी **रकम** रौ जिम्मौ म्हारौ।

—फुलवाड़ी

४ रुपया, पैसा।

५ धन की एक निश्चित मात्रा।

६ लगान, राजस्व कर।

उ०—पेमजी वैडो च्योड़ै राज री **रकम** रा ग्रायोड़ा ढाई हजार रिपियां री थैली भरियोड़ी मेल दी, दलाल–देवता रै ग्रागै बगा नांखी ग्रर कैयौ कीं वत्ता ले जावौ सा। —दसदोख

७ ग्रामदनी, ग्राय।

८ छाप, मुहर।

९ लिखावट।

१० चलता–पुर्जा व्यक्ति, धूर्त, पाखण्डी। (नागरिक)

रू० भे०–रक्कम।

मह. रू. भे.–रकमांग।

रकमांग–देखो 'रकम' (मह. रू. भे.)

उ०–जाट भया सिध जस नाथांग, छुट गई तेरै **रकमांग**। सिर परि सांग ग्रौर का धारी, ग्रपना साहिब गयौ बिसारी।

—ग्रनुभववांगी

रकांन–सं. पु.–नियम, प्रथा, लाग, दस्तूर।

रकाब–सं. स्त्री. [फा.] १ ऊंट या घोड़े की जीन का पांवदान, पागड़ा।

उ०–कर डौर उतंग हजूर कियौ। दुरवेसिग्र पाव **रकाब** दियौ।

—रा. रू.

रू० भे०–रकाव, रकेब, रकेबी, रक्केब।

२ देखो 'रकाबी' (रू. भे.)

रकाबदार–सं. पु. [फा.] १ मिठाई बनाने वाला कारीगर, हलवाई।

२ रकाबियों में खाना सजाने वाला, खानसामा।

३ किसी बादशाह या रईस के साथ खाना लेकर चलने वाला नौकर।

४ रकाब पकड़ कर घोड़े पर चढ़ाने वाला सईस।

रकाबी–सं. स्त्री. [फा.] १ तश्तरी, प्लेट।

२ कटोरदान का ढक्कन।

रू० भे०–रकाब, रकेब, रकेबी।

रकार–सं. पु. [सं.] १ 'र' वर्ण का बोधक अक्षर, र।

२ रांम नांम का पूर्वाक्षर।

उ०—मनी मन मांह **रकार** मकार, लगा धक धूंगन की ललकार।

—ऊ. का.

३ छन्द शास्त्र में रगण नामक गण का संक्षिप्त रूप।

पिं. प्र.

रकाव–देखो 'रकाब' (रू. भे.)

उ०—इण भांति तीसरा पोहोर वागां ग्रमल कीधा, ग्रांगां रा गोख छांटि पाघां रा पेच लीधा। घोडां रा उबटा तांगि **रकावां** पाव धारियां।

—पत्तां

रकेब–१ देखो 'रकाब' (रू. भे.)

उ०—सिलह पूर करि सूर, सस्त्र कसि पकड़ै साबळ । पांव **रकेबां** परठि, बहसि चढिया अतुळीबळ ।

—सू. प्र.

२ देखो 'रकाबी' (रू. भे.)

रकेबी–१ देखो 'रकाबी' (रू. भे.)

उ०—ताहरां पहिलौ जांणियौ कोई राज दिसा का रांणीजी दिसा समाचांर आयौ । इम जांणि अर **रकेबी** हाथा नांखि दी ।

—द. वि.

२ देखो 'रकाब' (रू. भे.)

उ०—१ चढियौ मछर चडेह, रोपै रांम **रकेब** है । भोळौ भंग पडेह, सिव नाटा रंभ 'सूर उत' ।

—गु. रू. बं.

उ० –२ के आरव ऊधरा हेक धजराज हरेवी । आरुहतां उत्तंग अंग जुगि लगै **रकेबी** ।

—रा. रू.

रक्कम–देखो 'रकम' (रू. भे.)

उ०—तोरा सपत दकूळ, सपत जवहर वर **रक्कम** ।

—रा. रू.

रक्केब–१ देखो 'रकाब' (रू. भे.)

उ०—चडै सेन चतुरंग गै मद्द कादौ । चडै रांम **रक्केब** दे साहिजादौ ।

—गु. रू. बं.

रक्खण–वि.–रखने वाला ।

उ०—मिळि मंत्री परधांन मैं, विधि दक्खै विच्चार । जळ **रक्खण** गढ जोधपुरं, के रक्खौ जोधार ।

—गु. रू. बं.

२ देखो 'रक्षण' (रू. भे.)

रक्खणौ–देखो 'रखणौ' (रू. भे.)

उ०—सांमरथ भभीखण रंक राखै सरणा, तसां आपण सुदत लंक तेहा रजवट्ट **रक्खणा** ।

—र. ज. प्र.

रक्खणौ, रक्खबौ–१ देखो 'राखणौ, राखबौ' (रू. भे.)

उ०—१ किल्ले **रक्खणहार** नहि, आज 'सलौ' अनभंग । रैनालय' में थट्टियौ, तुज्जि भरोसे जंग ।

—ला. रा.

उ० –२ आयां वरस बहौतरै, सांवण सांवळ पक्ख । आयौ धर मारू 'अजौ,' गुज्जर थांणा **रक्ख** ।

—रा. रू.

उ०—३ पारंभ करण आरंभ में, लियण लंभ सोरंभ–जस । रखपाळ मंडोवर राखिया, भू डंडे **रक्खै** अडस ।

—गु. रू. ब.

उ० –४ कलह तुभंदा पित्र सौ, 'अजमाल' उपंदा । जंदा **रक्खंदा** सजै, राजस रांणंदा । रज्ज डिगंदा **रक्खिया** अंब–नयरंदा, दिलू उमंदा 'अभै' दिहू, तू खाट तिन्हंदा ।

—सू. प्र.

उ०—५ कियौ अभै न्रप कूरमां, पावां लियौ बचाय । प्रभू परीखत **रक्खियौ**, जेम जळंतौ लाय ।

—रा. रू.

२ देखो 'रखणौ, रखबौ' (रू. भे.)

रक्खणहार, हारौ (हारी), रक्खणियौ —वि.

रक्खिओड़ौ, रक्खियोड़ौ, रक्ख्योड़ौ भू. का. कृ.

रक्खीजणौ, रक्खीजबौ —कर्म वा. ।

रक्खपाळ–देखो 'रक्षपाल' (रू. भे.)

उ०—रिणमल्ल धरा छळ **रक्खपाळ** । गडकियउ मांड गोत्र गोवाळ ।

—रा. ज. सी.

रक्खवाळौ–देखो 'रुखाळौ' (रू. भे.)

उ०—हरि गयण रत्थं तांण हत्थं वाधि कत्थं वेगियं । वाजै सचाळौ कुंभवाळौ, **रक्खवाळौ** रैणयं ।

—रा. रू.

रक्खस–देखो 'राक्षस' (रू. भे.)

उ०—खिज्जि कह्यौ रे जनक तुल्य खळ । सजव होहु **रक्खस** न्रप बीसळ ।

—वं. भा.

रक्खसी–सं. स्त्री.–१ एक प्रकार की लिपि ।

उ०—हंस लिवी, भूय लिवी जक्खा तह **रक्खसीह** बोधव्या । उड्डी जवणि तुरक्की कीरी दविडी य सिंधविया ।

—व. स.

२ देखो 'राक्षस' (स्त्री.)

रक्खियोड़ौ–१ देखो 'राखियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'रखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रक्खियोड़ी)

रक्खी–१ देखो 'रखी' (रू. भे.)

उ०—तीनूं जणा सोच अर कळाप करता जावता हा के मारग में एक डोकरियौ थकियौ । धोळी पाग, धोळी ई अंगरखी अर हळदिया धोती । धोळौ ई खत । घांटी डिगै मिगै । बूढौ खंगर । खांधै **रक्खी** टिरै । हाथ में चिटियौ ।

—फुलवाड़ी

२ देखो 'रिसि' (रू. भे.)

रक्त (रक्त)–सं. पु. [सं. रक्तं, रक्तः] १ जीव-जन्तुओं और प्राणियों के शरीर की नाड़ियों में बहने वाला लाल रंग का तरल पदार्थ, खून, लहू, रुधिर, शोणित ।

उ०—देवी राखसं धोम रे **रक्त** रुती, देवी दुरज्जटा विक्कटा जम्मदूती । —देवी.

२ लाल रंग ।

३ केसर ।

४ सिन्दूर ।

५ लाल चंदन ।

६ कुसुंम ।

७ आंवले का पका हुआ फल ।

८ कमल ।

९ पुष्प, फूल (नां. मा.)

१० ताम्र, तांबा ।

११ पतंग नामक वृक्ष की लकड़ी ।

१२ एक प्रकार का बेंत ।

१३ एक मछली विशेष ।

१४ एक जहरीला मेंढक विशेष ।

१५ एक बिच्छु विशेष ।

१६ प्रवाल ।

वि०–[सं. रक्त] १ रंगा हुआ, रंगीन ।

२ लाल रंग का, लाल, सुर्ख ।

३ जिसका रंजन हुआ हो ।

४ अनुरक्त, आशक्त ।

५ प्रिय, प्यारा, माशूक ।

६ सुन्दर, मनोज्ञ, मनोहर ।

७ क्रीड़ा-प्रिय, खिलाड़ी ।

८ शुद्ध, स्वच्छ, स्पष्ट ।

रू० भे०—रकत, रगत, रगतर, रगति, रगत्त, रगत्तर, रगत्रं, रग्त रत्त, रत्र ।

रक्तकंठ–सं. पु. [सं. रक्त–कण्ठिन्] १ कोयल ।

२ बेंगन ।

वि०–मधुर कण्ठ वाला ।

रक्तकमळ–सं. पु. [सं.रक्त+कमलः] लाल रंग का कमल ।

रू. भे. —रगत कमल,

रक्तकास्ठ–सं. पु. [सं. रक्त–काष्ट] १ पतंग की लकड़ी ।

२ लाल चंदन ।

रू. भे. —रगतकास्ठ,

रक्तकुस्ठ–सं. पु. [सं. रक्त–कुष्ठ] एक प्रकार का रोग जिसमें सारे शरीर में जलन होती है । कभी कभी कुष्ठ की भांति शरीर गलने लगता है । विसर्प रोग ।

रू. भे. —रगतकुस्ठ, रगतकोढ ।

रक्तगभ–सं. स्त्री [सं. रक्तगर्भा] मेंहदी ।

रक्तगुल्म–सं.पु. [सं०] एक रोग जिससे गर्भाशय में रक्त की गांठ बंध जाती है ।

रू. भे. —रगतगुल्म

रक्तग्रीव–सं. पु. [सं.] १ कबूतर, २ राक्षस ।

रक्तचंचु–सं. पु. [सं.] तोता, शुक ।

रू० भे०—रगतचंचु, रगतचूंच ।

रक्तचंदन–सं. पु. [सं.] लाल रंग का चंदन । (अमृत)

रू० भे०—रगतचंदन, रतचंदण, रतचंदन ।

रक्तता–सं. स्त्री. [सं.] १ लाल होने की अवस्था या भाव ।

२ लालिमा, ललाई, सुर्खी ।

रक्ततुंड–सं. पु. [सं. रक्त तुंडः] तोता, सुग्गा ।

रू० भे०—रगततुंड

रक्तदंता, रक्तदंत्ता, रक्तदंतिका–सं. स्त्री. [सं. रक्त दंता] शुंभ और निशुंभ को खाने के लिये धारण किये गये दुर्गा के रूप का नाम, चंडिका ।

उ०—दूजै दिन कंवर तौ पहली सुरथपुर जाइ **रक्तदंता** रौ पूजन कीधौ ।

—वं. भा.

रू० भे०—रगतदंता, रगतदंतिका, रगतदंती ।

रक्तधरा–सं. स्त्री. [सं.] रक्त को धारण करने वाली मांस के भीतर की दूसरी कला या झिल्ली । (वैद्यक)

रू० भे०—रगतधरा ।

रक्तनायक–सं. पु.–एक आभूषण विशेष ।

उ०—मध्यनायक कस्गनायक नीलनायक पीतनायक श्वेतनायक **रक्तनायक** व्रतनायक······इति आभरणानि ।

—व. स.

रक्तनैत्र–सं. पु.–१ कोयल, २ चकोर ।

३ कबूतर, ४ सारस पक्षी ।

रू० भे०—रगतनैत्र।

रक्तपक्ष, रक्तपख–सं. पु. [सं रक्त पक्षः] गरुड़।

रू० भे०—रगतपक्ष, रगतपख, रगतपांख ।

रक्तपात–सं. पु. [सं.] १ भयंकर मारकाट की दशा । खूनी झगड़ा ।

२ खून गिरने का रोग या दशा ।

रू० भे०—रगतपात

रक्तपिंड–सं. पु. [सं.] अपने ही रक्त के बनाए हुए धूलि पिंड, जो युद्ध में घायल होकर पड़ा हुआ वीर, अपने पितरों को पिंड दान करने के लिए बनाता है।

रू० भे०—रतपंड, रतपिंड ।

रक्तपित, रक्तपित्त–सं. पु. [सं. रक्तपित्त] १ एक प्रकार का रोग जो पित्त के कुपित होने से होता है। इसमें मुख, नाक, गुदा, योनि आदि इन्द्रियों से खून गिरने लगता है।

उ०—रक्तवात भस्मवात, उस्णवात अग्निवात लोहवात लूतिवात हरखावात आंमवात सोफवात विगंछावात, कफवात साकिनीवात **रक्तपित्त** अम्लपित्त राजिकापित्त ।

—व. स.

रू० भे०—रगतपित, रगतपित्त ।

रक्तपित्ती–सं. पु. [स. रक्तपित्त] रक्तपित्त का रोग ।

रू० भे०—रगतपित्ति, रगतपित्ती ।

रक्तप्रदर–सं. पु. [सं.] स्त्रियों के प्रदर रोग का एक भेद जिससे योनि द्वार से रक्त गिरता है।

रू० भे०—रगतप्रदर ।

रक्तप्रमेह–सं. पु. [सं.] पुरुषों का एक रोग जिसके कारण पुरुष का पेशाब खून के रंग का, बदबूदार व गरम आता है।

रू० भे०—रगतप्रमेह ।

रक्तबीज–सं. पु. [सं.] १ एक असुर जो शुंभ-निशुंभ का सेनापति था।

उ०—मुंड चंड महिसासुर मारे, सुंभ निसुंभ सकल संहारै।
जनमें **वक्तबीज** तन ज्यों ज्यों तैं निरबीज कियै हनि त्यों त्यों।

—मे. म.

वि. वि.–इसके सम्बन्ध में ऐसा कहा जाता है कि इसके रक्त की प्रत्येक बूंद जो धरती पर गिरती थी उससे एक राक्षस की उत्पत्ति होती थी। दुर्गा ने इसके रक्त का शोषण कर इसका विनाश किया।

२ अनार, दाड़िम ।

रू० भे०—रकतबीज, रक्तवीज, रगतबीज, रगतवीज, रतबीज ।

रक्तमंडळ–स. पु. [सं. रक्तमंडल] एक प्रकार का सांप ।

रू० भे०—रगतमंडळ ।

रक्तमोचन–सं. पु. [सं] शरीर से रक्त का मोचन, निवारण

रू० भे०—रगतमोचन निवारण ।

रक्तलोचन–देखो 'रक्तनैत्र' ।

रक्तवरण–सं. पु. [सं. रक्तवर्ण] वीर बहूटी नामक लाल रंग का कीड़ा ।

रू० भे०—रगतवरण

रक्तवात–सं. पु, [सं] एक प्रकार का रोग ।

उ०—अथ रोगा: कास स्वास, ज्वर भगंदर गुल्म वात गल्लवात **रक्तवात** भस्मवात उष्णवात अग्निवात लोहवात

—व. स.

रक्तविंदु–सं. पु. [सं.] १ किसी रत्न में दिखाई देनेवाला एक प्रकार का लाल दाग। (दोष)

२ खून की बूंद ।

रू० भे०—रगतविंदु ।

रक्तवीज–देखो 'रक्तबीज' (रू.भे.)

रक्तव्रस्टि–सं. स्त्री. [सं. रक्तवृष्टि] आसमान से होने वाली लाल रंग के पानी की वर्षा।

रू० भे०—रगतव्रस्टि ।

रक्तस्राव–सं पु. [सं] १ रक्त का बहना, रक्त-पतन ।

२ घोड़ों का एक रोग जिसमें घोड़े की आंखों से रक्त के समान लाल रंग का पानी गिरने लगता है।

रू० भे०—रगतस्राव,

रक्तांग–सं. पु. [सं.] १ केसर ।

२ लाल चंदन ।

३ मंगल ग्रह ।

४ धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग जो जन्मेजय के सर्प सत्र में दग्ध हुआ ।

५ प्रवाल, मूंगा ।

रू० भे०–रकतांक, रकतांग, रगतांग ।

रक्ता–सं. स्त्री. [सं.] १ संगीत में पंचम स्वर की चार श्रुतियों में से दूसरी श्रुति ।

२ गुंजा का पौधा ।

३ लाख ।

रू० भे०–रगता ।

रक्ताकार–सं. पु. [सं.] मूंगा, प्रवाल ।

रू० भे०–रगताकार ।

रक्ताचळ–सं. पु. [सं. रक्ताचल] उदियाचल पर्वत ।

रक्तातिसार–सं. पु. [सं.] एक प्रकार का अतिसार (रोग) जिसमें खून की दस्तें लगती हों।

रू० भे०–रगतातिसार ।

रक्तोत्पळ–सं. पु. [सं. रक्तोत्पल] लाल रंग का कमल ।

रू० भे०–रगतोत्पळ ।

रक्ष, रक्स–सं. पु. [सं. रक्ष] १ बचाव, रक्षा, हिफाजत ।

२ रखवाली, चौकीदारी, चौकसी ।

३ प्रशासन, शासन ।

४ छप्पय छन्द का साठवां भेद जिसमें ११ गुरू और १३० लघु मात्राएं होती हैं । मतान्तर से ११ गुरू एवं १२६ लघु मात्राएं भी मानी जाती हैं । इसका दूसरा नाम मनहर भी है ।

५ देवता ।

उ०—गुह्यक यक्ष **रक्ष** गंधरवह, सिद्ध पिसाच भजत तव सरवह ।

—मे. म.

वि.–१ रक्षा करने वाला, रक्षक ।

२ रखवाला, चौकीदार ।

रू० भे०–रक्ख, रच्छ ।

रक्षक–वि. [सं.] १ रक्षा करने वाला, बचाने वाला ।

उ०—करुणानिधांन करुणामय नित निसकामी । इस आरय्यावरत्त को **रक्षक** अंतरयामी ।

—ऊ. का.

२ पालन–पोषण करने वाला ।

३ चौकसी करने वाला ।

सं. पु.–चौकीदार, पहरेदार ।

रू० भे०–रच्छक, रच्छिक, रछक ।

रक्षण–सं. पु.–१ रक्षा या हिफाजत करने की क्रिया या भाव ।

२ रक्षा, हिफाजत ।

३ सहारा, आसरा ।

४ पालन–पोषण ।

वि.–रक्षा करने वाला, बचाने वाला ।

रू० भे०–रक्खण, रख्यण ।

रक्षणकरता–वि. [सं. रक्षण+कर्तृ] रक्षा करने वाला, रक्षक ।

रक्षपाळ–सं. पु. [सं. रक्षपाल] १ जिसका काम रक्षा करना हो, रक्षक ।

२ चोकीदार ।

रू० भे०–रक्खपाळ, रखपाळ, रछपाळ ।

रक्षफळ–सं. पु. [सं.] बेहड़ा । रू. भे.–रखफळ

रक्षस–देखो 'राक्षस' (रू. भे.)

रक्षा–सं. स्त्री. [सं.] १ वह कार्य या प्रयत्न जिससे आघात, आक्रमण, विनाश, मृत्यु आदि से किसी का बचाव होता हो। बचाव या हिफाजत के लिये किया जाने वाला प्रयास, रक्षण, सुरक्षा ।

उ०—१ जिण रवि सूं **रक्षा** जग जांणै, पौरस अंस वंस प्रगटांणै जग में वंस उग्र गुण जोई, क्रत रवि वंस समौ नह कोई ।

—रा. रू.

उ०—२ असनिकुमार अगनि वन आखौ, देवनाथ महि वांमण दाखौ । समंद प्रजापति आदि सुरेसर, कमंधां धणी तणी **रक्षा** कर ।

—रा. रू.

२ सहारा, आसरा, शरण ।

३ देख–रेख, निगरानी ।

४ गोद ।

५ बच्चों को रोग, भूत–प्रेत, नजर आदि से बचाने के लिये बांधा जाने वाला यन्त्र, सूत्र, ताबीज, कवच ।

६ राखी का बंधन ।

७ भस्म ।

रू० भे०–रच्छया, रच्छचा, रच्छा, रछिया ।

रक्षाप्रदीप–सं. पु. [सं.] भूत प्रेत या अन्य बाधा से रक्षा के लिये जलाया जाने वाला दीपक (तंत्र)

रक्षाबंधन–सं. पु. [सं. रक्षा बंधनम्] १ श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला हिन्दुओं का एक त्यौहार । इस दिन सभी बहनें अपने भाइयों के हाथों में राखी बांधती हैं ।

२ उक्त दिवस को बांधी जाने वाली राखी ।

रक्षाभूसण–सं. पु. [सं. रक्षाभूषणम्] भूत प्रेत आदि से रक्षार्थ बांधा जाने वाला यन्त्र, भूषण ।

रक्षामंगळ–सं. पु. [सं. रक्षामंगलः] एक प्रकार का अनुष्ठान जो भूत–प्रेत, रोगादि के अनिष्ट से बचने के लिये किया जाता है ।

रक्षामण, रक्षामणि, रक्षामिण–सं. स्त्री. [सं. रक्षामणिः] किसी ग्रह के प्रकोप से बचाव के लिये पहनी जाने वाली कोई मणि या रत्न ।

रक्षारांम–देखो 'रांमरक्षा' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्म कवच पंजर विसनु, **रक्षारांम** बचाय । ईस नगौं बळ ऊठिया, अंबर सीस लगाय ।

—रा. रू.

रक्षावत–वि.–रक्षक, सहायक ।

रक्षित–वि.–१ जिसकी रक्षा करली गई हो । जो खतरे से बाहर हो ।

२ पालित, पोषित, प्रति पालित ।

३ रखवाली किया हुआ, संरक्षण में लिया हुआ ।

४ संभाला हुआ, व्यवस्थित किया हुआ ।

५ किसी कार्य विशेष या व्यक्ति विशेष के लिये निश्चित करके

रक्खा हुआ। (Reserved)
६ संचित।
रू० भे०—रखित, रच्छित।

रख—१ देखो 'रिसि' (रू. भे.)
उ०—१ सुज दुरलभ **रखां** बळ सिधां साधकां, जोगीराजां दुलभ जग।
—बां. दा.
उ०—२ जतै एक तौ इंद्रायणी नै अपच (छ) रा बैकुंठ सूं आयनै **रखां** नै जीमाड नै ग्यांन चरचा सुणनै दहुं वखत वैकुंठ जाती।
—मयारांम दरजी री बात
२ देखो 'रिख' (रू. भे.)
उ०—१ सुवन सौन सादूळ, फूल वनचरां विचाळै। जिसो चंद जग वंद, बीज **रख** व्रंद समाळै।
—रा. रू.

रखड़णौ, रखड़बौ—क्रि. अ.—इधर–उधर, मारा–मारा फिरना।

रखड़ी—१ देखो 'राखड़ी' (रू. भे.)
उ०—१ वीरा म्हारै माथा नै महमद लाज्यौ, म्हारी **रखड़ी** बैठ घड़ाज्यौ जी, म्हारै रिमक झिमक भाती आज्यौ।
—लो. गी.
उ०—२ माथा ने मंमद बनड़ी पहरल्यौ ये हां ये बनी, **रखड़ी** की अधिक बहार, वनडी ने भावै डहर को बाजरौ।
—लो. गी.
२ देखो 'राखी' (अल्पा. रू. भे.)

रखण—देखो 'रक्षण' (रू. भे.)

रखणआतप—सं. पु. [सं. आतप रक्षण] सूर्य्य, रवि। (नां. मा.)

रखणी—सं. स्त्री.—१ रखने की क्रिया या भाव।
२ रखने का ढंग।

रखणौ—वि.—१ रक्षा करने वाला।
२ रखने वाला।
रू० भे०—रक्खणौ।

रखणौ, रखबौ—देखो 'राखणौ, राखबौ' (रू. भे.)
उ०—१ रजनी सजनी माहरी, तु रहिजै जुग चियारि। दिणयर दीसंतु **रखै**, नीसत नयणां-वारि।
—मा. कां. प्र.
रखणहार, हारौ (हारी), रखणियौ —वि.।
रखिओड़ौ, रखियोड़ौ, रख्योड़ौ। —भू. का. कृ.।
रखीजणौ, रखीजबौ। कर्म वा.।

रखत—सं. पु. [सं. ऋक्थं] १ धन, द्रव्य। (अ. मा.)
उ०—१ चालुक्य रौ **रखत** रहियौ जिकौ सौ समस्त ही रंका रै कनै लुटवाय लीधौ।
—वं. भा.
उ०—२ सह **रखत** तखत सहेत, लूटै छत्र लिया। दिल्लेस निजर दुझाळ महपति मेलिया।
—सू. प्र.
२ आभूषण, गहना, जेवर।
३ उत्तराधिकार में मिली हुई सम्पत्ति।
४ सामान।
५ स्वर्ण, सोना।
६ मोती। (ना. मा.)
[सं. ऋक्षः] ७ नक्षत्र, तारा।
[सं. रक्षित] ८ रक्षित व्यक्ति।
९ रक्षित भूमि।
[सं. रक्षणं] १० रक्षा।
११ रखवाली।
१२ पालन–पोषण।
१३ परहेज।
उ०—काया **रखत** तपस्या कीजै, दांन वलै धन सारु दीजै।
—ध. व. ग्रं.
रू० भे०—रकत, रिकथ, रखत्त, रखित।

रखतंत—वि.—रक्षा करने वाला, रक्षक।

रखत्त—देखो 'रखत' (रू. भे.)
उ०—प्रवीण कंकिणीस पौच, गज्जरा ज नौग्रही। हिमंकरं **रखत्त** हस्त, भेद जांगि सोभही।
—सू. प्र.

रखपाळ—देखो 'रक्षपाळ' (रू. भे)
उ०—'करन' 'तेजळ' कुळ–कळाधारी नवे कोट। 'हराउत' खागधारी रेणा **रखपाळ**।
—नैणसी

रखफळ—देखो 'रक्षफळ' (रू. भे.) (अ. मा.)

रखभ—देखो 'रिसभ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रखमंडळ—देखो 'रिखमंडळ' (रू०भे०)

रखव—देखो 'रिसभ' (रू. भे.)
उ०—स्वर वाजंत्रूं का भेदि दिखाय सो कैसे खडज **रखव** गंधार मधम पंचम धईवंत निखाख सप्त सुर के अलाप करि कोकिलूं की वांणी सै बोलतै हैं।
—सू. प्र.

रखवाई-सं. स्त्री-१ रखने की क्रिया या भाव।
२ रखने की मजदूरी।
३ देखो 'रखवाळी' (रू. भे.)

रखवाणौ, रखवाबौ-देखो 'रखाणौ, रखाबौ' (रू. भे.)

रखवारू, रखवारौ-वि०-१ रक्षा करने वाला।
२ चौकसी करने वाला, चौकीदारी करने वाला।
उ०-खड्ग बंध नर खड़ा रहै, पौहरै **रखवारू**।
—पा. प्र.

रखवाळ, रखवाल, रखवाळक, रखवालक-देखो 'रुखाळौ' (रू. भे.)
उ०-१ एहवुं आयस लहइ प्रधांन, ऊदलपुरि ऊतारउखांन।
सरिसा एक सहस भाथाळ, राजडीउ मेल्हिउ **रखवाळ**।
—कां. दे. प्र.

उ०-२ एहिवूं अंतरि चीत वीनि वदि न (ल) भूपाल।
मंदिर मांहां मि किम जवाइ द्वारि वहु **रखवाल**।
—नळाख्यांन

उ०-३ सांभलि वाचा मुझ भूपाल,
इणि वणि अछउं अम्हि **रखवाल**। —सालिभद्र सूरि

रखवाळण, रखवालण-१ देखो 'रुखालौ' (रू. भे.)
उ०-इण कारण 'चांदय' हूंत अखौ।
रखवालण ढेंबोय कोट रखौ। —पा. प्र.
२ देखो 'रखवाळी' (रू. भे.)
उ०-**रखवाळण** रा चार भाई अर उणरौ बूढौ बाप धुराधुर दौड़ता आया। बाई तौ जबरौ ऊंधौ कांम करियौ।
—फुलवाड़ी

रखवाळणौ, रखवाळबौ-देखो 'रुखाळणौ, रुखाळबौ' (रू. भे.)
उ०-१ तिण मारी ताड़का जिकण रिख मख **रखवाळै**।
हण सुबाहु मारीच पैज खित्रवट ध्रम पाळै।
—र. ज. प्र.

उ०-२ जो **रखवाळत** जगत मैं झाड़ी जंबक झूळ।
तौ करता त्रिभुवण तणौ, सिरजत नह सादूळ। —वां. दा.
उ०-३ महल कवण **रखवालस्ये** जी, कवण करसी सार।
एकण जाया बाहिरोजी, सूनौ सहू संसार।
—जयवांणी

रखवाळण हार, हारौ (हारी), रखवाळणियौ वि.।
रखवाळिओड़ौ, रखवाळियोड़ौ, रखवाळयोड़ौ —भू. का. कृ.
रखवाळीजणौ, रखवाळीजबौ —कर्म वा.।

रखवाळी-सं. स्त्री.-१ रक्षा, हिफाजत, बचाव।
उ०-१ राज म्हारी **रखवाळी** करण हार हो तौ रक्षा करौ।
—पंचदंडी री वारता

२ निगरानी, चौकसी, चौकीदारी।
उ०-लोही सींच्यौ लीली राखी, म्है मोती निपजाया।
पाक्या जद तक की **रखवाळी** करसां ने संभळाया।
—चेतमांनखौ

३ निरीक्षण, देखरेख।
४ रखवाली करने की मजदूरी।
५ निगरानी का कार्य।
वि० स्त्री०-रक्षा करने वाली, निगरानी करने वाली।
रू० भे०-रखवाळण

रखवाळू, रखवाळू, रखवाळौ-देखो 'रुखाळौ' (रू. भे.)
उ०-१ तहां राजा कहण लाग्यौ अवंति री **रखवाळौ** छै।
राजा रौ **रखवाळौ** छै। —पंचदंडी री वारता

उ०-२ इळ **रखवाळौ** खांन 'उनायत'।
आसतखां अजमेर सिहायत। —रा. रू.

रखस-देखो 'राक्षस' (रू. भे.)

रखांराज-देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)
उ०-खुलै सिद्धां ताळियां रूप रा नचै वीर मेळा।
रचै गांन चाळियां धूप रा **रखांराज**।
—दुरगादत्त बारहट

रखाई-सं स्त्री.-१ रखने की क्रिया या भाव।
२ हिफाजत, रक्षा।
३ निगरानी, चोकसी।
४ उक्त कार्य का पारिश्रमिक।

रखाणौ, रखाबौ-क्रि. स. ('रखणौ या राखणौ' क्रिया का प्रे. रू.)
१ किसी आधार या तल पर किसी वस्तु को रखवाना, धरवाना, टिकवाना। रखने के लिए प्रेरित करना।
२ नष्ट होने या बिगड़ने से बचाव कराना।
३ रक्षा कराना, बचाने के लिए प्रेरित करना।
४ पालन कराना, पोषण कराना।
५ एकत्र, इकट्ठा या संग्रहीत कराना।
६ सुपुर्द कराना।
७ अधिकार में कराना, कब्जे में कराना, अधीन कराना।
८ नियुक्त कराना।
९ रुकवाना।
१० पकड़वाना।
११ चोट कराना।
१२ धारण कराना।
१३ आरोपित कराना, आक्षेप कराना।
१४ लदवाना।

१५ कोई विषय विचारार्थ प्रस्तुत करवाना, सामने रखवाना ।
१६ आवास की दृष्टि से किसी को कहीं ठहरवाना, ठहराने की व्यवस्था कराना ।
१७ गहने या वस्तु गिरवी रखवाना, रहन धरवाना ।
१८ रखवाली, निगरानी या देखरेख कराना ।
१९ सामाजिक या पारिवारिक सम्बन्ध बनवाना ।
२० अवलंबित कराना ।

रखाणहार, हारौ, (हारी), रखाणियौ — वि. ।
रखायोड़ौ —भू. का. कृ.
रखाईजणौ, रखाईजबौ —कर्म वा. ।
रखवाणौ, रखवाबौ, रखावणौ, रखाववौ । —रू. भे. ।

रखायोड़ौ–भू. का. कृ.–१ किसी आधार या तल पर रखवाया हुआ, धरवाया हुआ, टिकवाया हुआ, रखने के लिये प्रेरित किया हुआ. २ नष्ट होने या बिगड़ने से बचाव कराया हुआ. ३ रक्षा कराया हुआ, बचाने के लिये प्रेरित किया हुआ. ४ पालन–पोषण कराया हुआ. ५ एकत्र, इकट्ठा या संग्रहीत कराया हुआ. ६ सुपुर्द कराया हुआ. ७ अधिकार में कराया हुआ, कब्जे में कराया हुआ, अधीन कराया हुआ. ८ नियुक्त कराया हुआ. ९ रुकवाया हुआ. १० पकड़वाया हुआ. ११ चोट कराया हुआ. १२ धारण कराया हुआ. १३ आरोपित कराया हुआ, आक्षेप कराया हुआ. १४ लदवाया हुआ. १५ विचारार्थ प्रस्तुत करवाया हुआ, सामने रखवाया हुआ (विषय). १६ आवास की दृष्टि से ठहरवाया हुआ. १७ गिरवी रखवाया हुआ, रेहन धरवाया हुआ (गहने आदि). १८ रखवाली, निगरानी या देख रेख कराया हुआ. १९ सामाजिक या पारिवारिक सम्बन्ध बनवाया हुआ. २० अवलंबित कराया हुआ ।
(स्त्री. रखायोड़ी)

रखाळ, रखाळू–देखो 'रुखाळी' (रू. भे.)
उ० तिथ **रखाळूअ** 'ढेंब' थयौ घुर ढोल पावू 'अमरांण' गयौ ।
—पा. प्र.

रखावणौ, रखावबौ–देखो 'रखाणौ, रखावौ' (रू. भे.)
रखावणहार, हारौ (हारी), रखावणियौ । —वि. ।
रखाविओड़ौ, रखावियोड़ौ, रखाव्योड़ौ । भू. का. कृ. ।
रखावीजणौ, रखावीजबौ । —कर्म वा. ।

रखावियोड़ौ–देखो 'रखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रखावियोड़ी)

रखि–देखो 'रिसि' (रू. भे.)
उ०—सउं परिवारिहिं सुं दलिहिं हस्तिनागपुरि नगरि आवइं । अन्न दिवसि **रिखि** नारदह नारि कज्जि आदेसु पांमइं ।
—सालिभद्र सूरि

रखित–१ देखो 'रखत' (रू. भे.)
उ०—उठै 'गजण' आवियौ, अभंग दळ लियां अथाहां । राव हुवां जिम **रखित**, पेस न कियौ पतिसाहां ।
—सू. प्र.
२ देखो 'रक्षित' (रू. भे.)

रखियोड़ौ–देखो 'राखियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रखियोड़ी)

रखिस–देखो 'रिखीस' (रू. भे.)

रखी–सं. स्त्री [सं. रक्षी] १ एक प्रकार का थैला जो कंधों पर इस प्रकार लटकाया जाता है कि शरीर के दोनों ओर लटकता रहे । इसके दोनों सिरों पर थैलियां बनी होती हैं ।
रू० भे०–रक्खी ।
२ देखो 'रिसी' (रू. भे.)
उ०—१ तठै हेक **रखी** तापता हुंता । तठै आय पागड़ौ छांड नमसकार कीधौ । रखी सुनमांन दीधौ । तरै आप रुजक पगे मेलिओ ।
—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

रखीकेस–देखो 'रिसिकेस' (रू. भे.)
उ०—मेखला कोस द्वादस प्रमांण, मही जाणै करनी महमाय । रुखवाळी जंगळ धरा राय, केदार द्वारका **रखीकेस** । वळ गंगा गोमती प्रागवेस ।
— रांमदांन लालस ।

रखीराज–देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)

रखीसर, रखीसुर, रखीस्वर–देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)
उ०—१ जोबन की अरणोदै मुख ऊपर प्रकासी छै । सूरज की उदै **रखीसुर** ध्यांन करण लागा छै । जोवन कै उदै ऊर ऊत्तंग जागा छै ।
—बगसीरांम प्रोहित री वात
उ०—२ ऐसौ अंधारौ हुय गयौ छै । जु **रखीस्वर** छै सु संध्यावंदण को समय चूक चूकि जाय । **रिखीसर** पणि गति अर दिन री खबर नहीं पावै छै ।
—वेलि टी.

रखे–अव्य.–१ कदाचित, शायद, संभवतः ।
उ०—जाति–समरण पांमिया रे, बलै भाई दोनुं वांन । उतरता इम चिंतवे रे, **रखे** पड़ नीलौ पांन के ।
—जयवांणी

२ ऐसा न हो।
उ०—करी कूच जाई नइ लेज्यौ मारूग्राडि नूं पासूं। पातिसाह एहवूं मुखि बोलइ, वली **रखे** हुइ हासूं।
—कां. दे. प्र.
३ कभी नहीं।
उ०—सजि व्यापार तुं पुंजी सारू, ग्रटकलि ठांम देइ उधारूं। **रखे** बधारै रिण नै रोग, लखण लीजै ज्युं हसै न लोग।
—ध. व. ग्रं.
४ देखें।
उ०—तठै रिसाळू नै हिरण याद ग्रायौ **रखे** ग्राज छींक हुई छै, हिरण कुसळै ग्रावै तो भलौ।
—रीसाळू री वात
रू० भे०—रखै।

रखेड़ियौ—सं. पु.—१ केवल राख लपेट कर घूमने वाला साधु।
२ ढोंगी साधु।

रखेल, रखेली—सं. स्त्री.—वह स्त्री जो विना विवाह किये पत्नी के रूप में पुरुष के पास रहे, उपपत्नी।

रखेस, रखेसर, रखेसुर, रखेस्वर—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)
उ०—१ तरे मारग में हरद्वार ग्राइ। तठै गोतम **रखेसर** रौ चेलौ तपस्या करै छै।
—रा. वं. वि.
उ०—२ ग्ररणौ ग्राद तीरथ ग्रठै ग्ररण **रखेसुर** रहता। तपस्यां करतां गंगाजी प्रगट हुवा।
—नैणसी
उ०—३ ब्रह्मा कै टीकै तो मारीच १ ग्रात्रेय २ भ्रगु ३ ग्रंगराज ४ पुलहक्रत ५ पुलहस्त ६ वासिस्ट ७ ए सात **रखेस्वर** हुवा।
—रा. वंसावळी
उ०—४ पांणी उत्तर दिस था ग्रावै नै मंडोवर **रखेस्वर** तपस्या कीवी तिण सुं नांम मंडोवर कहीजियौ।
—नैणसी

रखै—देखो 'रखे' (रू. भे.)
उ०—नरक रा भाई निरखि, साते कुविसन मोई। इण हुंती रहिज्यौ ग्रलग, करौ **रखै** संग कोई।
—ध. व. ग्रं.

रखोपौ—सं. पु.—रक्षा का स्थान।
उ०—कोठइ कोठइ करचां **रखोपां**, मोटा गडा चडाव्या। चाहू-ग्रांणि चिहुं पासे भींति भला यंत्र मंडाव्या।
—कां. दे. प्र.

रखौ—सं. पु. [सं. रक्षा] १ परहेज।
२ रक्षा, बचाव।

रख्ख—देखो 'रक्ष' (रू. भे.)

रख्खण—देखो 'रक्षण' (रू. भे.)

रख्खणौ, रख्खबौ—देखो 'राखणौ, राखबौ' (रू. भे.)
उ०—पंथी एक संदेसड़उ, भल मांणस नउ भख्ख। ग्रातम तुझ पासइ ग्रछइ, ग्राळग रूड़ा **रख्ख**।
—ढो. मा.
रख्खणहार, हारौ (हारी), रख्खणियौ —वि.।
रख्खिग्रोड़ौ, रख्खियोड़ौ, रख्ख्योड़ौ। भू. का. कृ.।
रख्खीजणौ, रख्खीजबौ। —कर्म वा.।

रख्खियोड़ौ—देखो 'राखियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रख्खियोड़ी)

रख्यण—देखो 'रक्षण' (रू. भे.)

रख्या—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)
उ०—परिण केसवरायजी री **रख्या** करि समाधिया हीज रहिया। ग्राहल एक लिगार ही नाई।
—द. वि.

रग—सं. स्त्री. [फा.] १ शरीर के ग्रन्दर की नस, रक्त सिरा, नाड़ी, स्नायु।
उ०—१ ह्रदे हुय नांम हली हमगीर। सवी **रग** रोम खुली सुख सीर।
ऊ. का.
उ०—२ जन हरीया सिवरन सहज, रसनां **रग** रग मांहि। रोम रोम ररंकार हुय, ममंकार मुख मांहि।
—ग्रनुभववांणी
मुहा०—१ रग दबणी=ग्रपनी कमजोरी के कारण किसी का सामना न कर सकना, दबना।
२ रग फड़कणी=ग्राने वाली ग्रापत्ति की ग्राशंका होना।
३ रग रग जांणणी=किसी के स्वभाव व प्रकृति से पूर्णतया ग्रवगत होना, भलीभांति जानना।
४ रग रग नाचणी=खुशी में झूमना, किसी ग्रच्छी बात या कार्य से ग्रत्यन्त हर्षित होना।
५ रग रग पिछांणणी=देखो 'रग रग जांणणी'
६ रग रग फड़कणी=ग्रावेश, गुस्सा, उत्तेजना, प्रसन्नता ग्रादि के लक्षण प्रगट होना।
७ रग रग बाढणी=टुकड़े-टुकड़े करना, किसी शस्त्र से शरीर के ग्रंग-प्रत्यंग को काट कर मारना।
८ रग रग में विस घुळणौ=किसी बात, घटना या कार्य से किसी के प्रति मन में प्रतिशोध उत्पन्न होना, क्रोध व घृणा के भाव उग्र रूप से प्रगट होना, मन में ग्लानि पैदा होना।

१० रग रग सीतल होना=तृप्त होना, सुखी होना, आनन्दित होना, मरना, अवसान होना, शान्त होना ।
२ पत्ते की नस ।
३ एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो ओढ़ने के काम आता है ।
४ देखो 'रिगवेद' (डिं. को.)
रू० भे०—रगी, रग्ग ।

रगड़, रगड़क—सं. स्त्री. [सं. घर्षणम्] १ रगड़ने की क्रिया या भाव ।
२ किन्हीं दो वस्तुओं, अंगों या अंग पर किसी वस्तु का होने वाला घर्षण ।
३ उक्त घर्षण से पड़ने वाला निशान, चिन्ह ।
४ उलझन, झगड़ा ।
५ कठोर परिश्रम ।
६ किसी गतिमान वस्तु का, चलते समय किसी से किया जाने वाला स्पर्श ।
उ०—तेज धमकतौ तावड़ौ, चमकै जांणै सांण ।
ले ले **रगड़क** आंवतां, लुआं लेवै प्रांण । —लू
७ घिसाव ।

रगड़कौ—देखो 'रगड़क' (रू. भे.)
उ०—दूजी वेळा वळै परस करण रै मिस आपरा हाथ सूं उण रौ पग अळगौ लेय बोल्या—औ कोई गैं'णौ थोड़ौ ई जकौ थांरा पग में पजावूं मोती जड़ी रिमजोळां में **रगड़कौ** लाग जावैला ।
—फुलवाड़ी

रगड़णौ, रगड़बौ—क्रि. स. [सं. घर्षणम्] १ घर्षण करना, घिसना ।
उ०—१ आपरौ तबलौ ऊजळौ करचौ, कोरां री धार सिलड़ी पर **रगड़ रगड़** सागीड़ी तीखी-तेज काढी ।
—दसदोख
उ०—२ ऊजळी उत्तम रेत, ओकळी सूं ले आवै ।
वेदी जिगां विवाह साज, सुभकार सजावै ।
ग्रह रेणुका राख दांत, निरमळ कर निरखै,
वासण वरतण **रगड़**, ऊजळां थोरां हरखै ।
—दसदेव
२ किन्हीं दो वस्तुओं या अंगों का परस्पर स्पर्श कराना, अंग का किसी वस्तु से स्पर्श कराना ।
३ पीसना, घोटना ।
४ अभ्यास के लिये किसी कार्य का बार बार करना ।
५ परिश्रम करना ।
उ०—राजी हुयां कांम में **रगड़ै**, नराजियां करै नुकमांण ।
छोटकियां मोटोड़ां छोडौ, मिळौ सरीखां चाहौ मांण ।
—चंडीदांन सांदू
६ व्यर्थ तंग करना, परेशान करना ।
७ घसीट में लिखना ।
८ घसीटना ।
९ मसलना
१० संभोग या मैथुन करना ।
रगड़णहार, हारौ (हारी), रगड़णियौ —वि.
रगड़ाड़णौ, रगड़ाड़बौ, रगड़ाणौ, रगड़ाबौ, रगड़ावणौ रगड़ावबौ —प्रे. रू.
रगड़िओड़ौ, रगड़ियोड़ौ, रगड़्योड़ौ भू. का. कृ.
रगड़ीजणौ, रगड़ीजबौ —कर्म वा. ।

रगड़ाणौ, रगड़ाबौ—क्रि. स. [रगड़णौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ घर्षण कराना, घिसवाना ।
२ किन्ही दो वस्तुओं या अंगों का परस्पर स्पर्श करवाना, अंग का किसी वस्तु से स्पर्श करवाना ।
३ पिसवाना, घुटवाना ।
४ अभ्यास के लिये किसी कार्य को बार बार कराना ।
५ परिश्रम कराना ।
६ व्यर्थ तंग करवाना, परेशान करवाना ।
७ घसीट में लिखवाना ।
८ घसीटवाना ।
९ मसलवाना ।
१० संभोग या मैथुन कराना ।
रगड़ाणहार, हारौ (हारी), रगड़ाणियौ —वि.
रगड़ायोड़ौ —भू. का. कृ.
रगड़ाईजणौ, रगड़ाईजबौ —कर्म वा.
रगड़ावणौ, रगड़ावबौ —रू. भे.

रगड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ घर्षण कराया हुआ, घिसवाया हुआ. २ किन्ही वस्तुओं का या अंगों का परस्पर स्पर्श करवाया हुआ, अंग का किसी वस्तु से स्पर्श करवाया हुआ. ३ पिसवाया हुआ, घुटवाया हुआ. ४ किसी कार्य का बार बार अभ्यास कराया हुआ. ५ परिश्रम कराया हुआ. ६ व्यर्थ तंग करवाया हुआ, परेशान करवाया हुआ. ७ घसीट में लिखवाया हुआ. ८ घसीटवाया हुआ. ९. मसलवाया हुआ. १० संभोग या मैथुन के लिए प्रेरित किया हुआ ।
(स्त्री. रगड़ायोड़ी)

रगड़ावणौ, रगड़ावबौ—देखो 'रगड़ाणौ, रगड़ाबौ' (रू. भे.)
रगड़ावणहार, हारौ (हारी), रगड़ावणियौ — वि.
रगड़ाविओड़ौ, रगड़ावियोड़ौ, रगड़ाव्योड़ौ —भू. का. कृ.
रगड़ावीजणौ, रगड़ावीजबौ — कर्म वा.

रगड़ावियोड़ौ—देखो 'रगड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रगड़ावियोड़ी)

रगड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ घर्षण किया हुआ, घिसा हुआ. २ किन्हीं दो वस्तुओं या अंगों का परस्पर स्पर्श किया हुआ, अंग का किसी वस्तु से स्पर्श कराया हुआ. ३ पीसा हुआ घोटा हुआ. ४ किसी कार्य का बार बार अभ्यास किया हुआ. ५ परिश्रम किया हुआ. ६ व्यर्थ में तंग किया हुआ, परेशान किया हुआ. ७ घसीट में लिखा हुआ. ८ घसीटा हुआ. ९ मसला हुआ. १० संभोग या मैथुन किया हुआ।
(स्त्री. रगड़ियोड़ी)

रगड़ी–वि.–रगड़ा या झगड़ा करने वाला, झगड़ालू।

रगड़ौ–सं. पु.–१ झगड़ा, टंटा, फिसाद।

उ०– फूसी कांपती सी बोली–हैं ! म्हैं थांनै कैयौनी, मोटां–घोटाळ रै **रगड़ै** में ना पड़ौ।

—दसदोख

२ उलझन, समस्या, झंझट।

उ०—त्रिपुटी चौपुटी पंचा छः सत नव पनरा जी।
जोग विजोग संजोग भोग सब, माया में **रगड़ा** जी।

—श्री सुखरांमजी महाराज

३ विपत्ति, आपत्ति, संकट।

उ०—त्रिणराज विभौ हळ हांसल विगड़ै, कुवद कमाई जगत कहै।
झगड़ौ लागै जिकां झूंपड़ां, **रगड़ौ** तलबां तणों रहै।

—बां. दा.

४ निरन्तर किया जाने वाला श्रम।
५ रगड़ने की क्रिया या भाव।

रगटळ, रगटाळ–सं. पु.–१ ऊंट का रोग जिसमें उसके पिछले पैर की नस ऊंची चढ़ जाती है इससे उसका पैर बराबर नहीं टिक पाता।
२ उक्त रोग से पीड़ित ऊंट।
३ ऊंटों का एक अवगुण।
४ देखो 'रुगटाळ'

रगण–सं. पु.–१ छंद शास्त्र के आठ गणों में से एक गण या तीन अक्षरों का वह शब्द (समूह) जिसका पहला व अन्तिम वर्ण दीर्घ होता है तथा मध्य का लघु होता है। इसका सांकेतिक रूप ऽ।ऽ ऐसा होता है।
२ गजानन, गणेश। (अ. मां.)

रगणौ, रगबौ–क्रि. स. १ रेंगना, रेंगते हुए चलना।
२ पशु का रंभाना।

रगत–देखो 'रक्त' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ वहता **रगत** देखि खळ वाढै। चंद्रप्रहास ग्रहै धक चाढै।

—सू. प्र.

उ०—२ करैं मुख **रगत** युवगत आलिम धणी, डारि दगु फूंकि थकी गढ चीतोड। रांण सुं पदमणी निढी जिम पाकड़ूं, कवण हिंदू करै हम तणी होड।

—प. च. चौ.

उ० - ३ क्रोध रगत लोचन किया। —रांमरासौ

रगतकमळ–देखो 'रक्तकमळ' (रू. भे.)

रगतकास्ठ–देखो 'रक्तकास्ठ' (रू. भे.)

रगतकुस्ठ, रगतकोढ़–देखो 'रक्तकुस्ठ' (रू. भे.)

रगतगुल्म–देखो 'रक्तगुल्म' (रू. भे.)

रगतचंचु–देखो 'रक्तचंचु' (रू. भे.)

रगतचंदण, रगतचंदन–देखो 'रक्तचंदण' (रू. भे) (अमरत)

उ०—कंठ जनोई पाट की, **रगतचंदन** की पीली किमाड। सीसम सार की पाटली, ऊंचा धरि धरि तोरणवार। —बी. दे.

रगतचूंच–देखो 'रक्तचंचु' (रू. भे.) (अ. मा.)

रगतजीभ–सं. पु. [सं. रक्त जिह्वा] सिंह।

रगततुंड–देखो 'रक्ततुंड' (रू. भे.)

रगतदंता, रगतदंतिका रगतदंती–देखो 'रक्तदंता' (रू. भे.)

रगतधरा–देखो 'रक्तधरा' (रू. भे.)

रगतधातु–सं. पु. [सं. रक्त+धातु] १ लाल रंग का कोई धातु, तांबा।
२ गेरूं

रगतधारा–सं. स्त्री. [सं. रक्त+धारा] रक्त की धारा।

रगतनैत्र–देखो 'रक्तनैत्र' (रू. भे.)

रगत पंछी–देखो 'रगतवंसी' (रू. भे.)

रगतपक्ष, रगतपख, रगतपांख–देखो 'रक्तपक्ष' (रू. भे.)

रगतपात–देखो 'रक्तपात' (रू. भे.)

रगतपित, रगतपित्त–देखो 'रक्तपित्त' (रू. भे.)

रगतपित्ति, रगतपित्ती–देखो 'रक्तपित्ती' (रू. भे.)

रगतप्रदर–देखो 'रक्त प्रदर' (रू. भे.)

रगतप्रमेह–देखो 'रक्तप्रमेह' (रू. भे.)

रगतबंबाळी–सं स्त्री.–दुर्गा का एक नामान्तर।

उ०—रगतबंबाळि निमौ रुद्रराणा, मुं मुं क्रपा करै महराणा।

—पी. ग्रं.

रगतबिंदू–सं. पु. [सं. रक्त+बिंदु] रक्त की बूंद, कतरा।

रगतबीज–देखो 'रक्तबीज' (रू. भे.)

उ०—देवी धूम लोचन्न, हूंकार धोंस्यौ, देवी जाड़बा में **रगतबीज** सोख्यौ।

—देवि.

रगतभव–सं. पु. [सं. रक्तभव] मांस, आमिष। (डिं. को.)

रगतमंडळ–देखो 'रक्तमंडळ' (रू. भे.)

रगतमल–सं. पु. [सं. रक्त+मल्ल] भैरव का एक नाम।

उ०—काळा गोरा कंवर, **रगतमल** लांगौ कळवौ। मांण भद्र हनुमांन, कौइलौ नरसिंघ फळवौ।

—मा. वचनिका

रगतमोचन–देखो 'रक्तमोचन' (रू. भे.)

रगतर–देखो 'रक्त' (रू. भे.)

रगतवंसी–सं. पु.–एक प्रकार का विषैला सर्प।

रू० भे०–रगतपंछी।

रगतवरण–देखो 'रक्तवरण' (रू. भे.)

रगतबिंदु–देखो 'रक्तबिंदु' (रू. भे.)

रगतबीज–देखो 'रक्तबीज' (रू. भे.)

रगतव्रस्टि–देखो 'रक्तव्रस्टि' (रू. भे.)

रगतसंधक, रगतसिंधक–सं. पु. [सं. रक्त+संध्यक] १ फूल, पुष्प। (ह. नां. मा.)

२ लाल कमल।

रगतस्राव–देखो 'रक्तस्राव' (रू. भे.)

रगतांग–१ देखो 'रक्तांग' (रू. भे.)

२ देखो 'रकतांग' (रू. भे.)

रगता–देखो 'रक्ता' (रू. भे.)

रगताकार–देखो 'रक्ताकार' (रू. भे.)

रगतातिथ, रगतातिथी–देखो 'रिक्ता' (रू. भे.)

उ०—खुरपण जीमणौ, वार थावर खरौ। **रगतातिथ** नें मेह अण गाळ रौ।

—रुकमणी हरण

रगतातिसार–देखो 'रक्तातिसार' (रू. भे.)

रगताळ–सं. पु. [सं. रक्त+आलुच्] रक्त प्रवाह, खून की धारा।

उ०—१ काळ लंकाळ करठाळ जड़ियो कमंध, व्है विकराळ **रगताळ** वांई। भाळ छकडाळ चगताळ चूनाळ भिद, ताळ गौ भाळ भर धरण तांई।

—तेजसी खिड़ियौ

रगतासुर–सं. पु. [सं. रक्तासुर] एक असुर।

उ०—**रगतासुर** आगै खद, भेळा होय भुंजाळ। सांमंद्र मांहे सांपरत, नदियां मिळै निराळ।

—मा. वचनिका

रगति–देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—१ कांबिया रंग मौहरा करै, रंग बां भैंसा **रगति**। जदि चाढ़ि मदां ज्वाळामुखी, सझै तांम तोपां सगति।

—सू. प्र.

उ०—२ दवटे बाज जुतै दुजड़ां हथ, गिरा गिरीस पूजिवा गात। केवी **रगति** कमळ तिण कारण, जुगति पतौ मन क्रम दे जात।

—राजसिंघ राठौड़

रगतेस–देखो 'रगतासुर' (रू. भे.)

उ०—छंडीला दीसै छकर, जोगिण रिख खीजाई। भड़ मांझी **रगतेस** भड़ बकतौ ग्रंब संभाई।

—मा. वचनिका

रगतोत्पळ–देखो 'रक्तोत्पळ' (रू. भे.)

रगत्त–देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—१ केसर वूठी द्वारका, दिल्ली वूंद **रगत्त**। थई पुरांणां उग्रता, मिटी कुरांणां वत्त।

—रा. रू.

उ०—२ भयांणख भेख सरां छड़ भार। दुहूं वळ धार **रगत्त** दुसार।

—सू. प्र.

रगत्तर–देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—अपाकर टोप बगत्तर अंग, रंगै नंह चक्र **रगत्तर** रंग।

—मे. म.

रगत्यौ–सं. पु.–१ बलिदान किया हुआ वह बकरा जो प्रसुती गृह में जच्चा के पलंग के नीचे भूमि में गाड दिया जाता है।

उ०—धरा जोउ द्वै जीव धर, समहर मंडौ सोय। अज **रगत्या** रौ है न अज, काट गाड़ दे कोय।

—रेवतसिंह भाटी

२ चौसठ भैरवों में से एक।

रू० भे०–रिगतियौ, रिगत्यौ।

रगत्र–देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—चटच्चट पत्र **रगत्र** चटट्टि। समै अनुसार रमै चवसट्टि।

—मे. म.

रगदण–१ मोटी–ताजी व हृष्ट पुष्ट स्त्री।

२ वेडौल व भद्दे आकार की स्त्री।

उ०—धीजावण बिध चित धरौ, हळवळ मत होवौह। **रगदण** ज्यौं नह राजवणि, जीवित तो जोवोह। —र. हमीर

रगदळ–वि.–कुवड़ा ।

रगदोळणौ, रगदोळबौ–१ वस्त्र या किसी चीज को मिट्टी या कीचड़ में मसलना, लथपथ करना ।
२ रगड़ना, मसलना ।
३ पछाड़ना, झकझोरना ।

रगदोळियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ मिट्टी या कीचड़ में लथपथ किया हुआ. २ रगड़ा हुआ, मसला हुआ. ३ पछाड़ा हुआ, झकझोरा हुआ ।
(स्त्री. रगदोळियोड़ी)

रगबेद, रगवेद–देखो 'रिगवेद' (रू. भे.)

रगी–सं. स्त्री.–१ सरस्वती । (अ. मा.)
२ देखो 'रग' (रू. भे.)

रगुवंसी–देखो 'रघुवंसी' (रू. भे.)
उ०—जात्री मेळै कमळ जोयैवा, जगत जुहारै जुग्रौ जुग्रौ। **रगुवंसीयां** ग्रनै राठोड़ां, हेक वळै ग्रवतार हुग्रौ ।
—दुरसौ ग्राढौ

रग्ग–१ देखो 'रग' (रू. भे.)
२ देखो 'राग' (रू. भे.)

रग्घुवीर–देखो 'रघुवीर' (रू. भे.)
उ०—वळै पाय रैणा तरी **रग्घुवीरं** । मिथल्लेसरै ज्याग ग्राए समीपं ।
—सू. प्र.

रग्त–देखो 'रक्त' (रू. भे.)
उ०—देवी **रग्त** बंबाळ गळमाळ रूंडा ।
—देवि.

रघुंस–सं. पु.–देखो 'रिगवेद' ।
उ०—पढंत जोतकी पुराण, तारकेस के तवै । **रघुंस** सांम जुज्र ग्रग्र च्यार वेद के चवै ।
—सू. प्र.

रघु–सं. पु. [सं.] १ सूर्यवंशी एक प्रसिद्ध राजा जो सम्राट दिलीप (द्वितीय) का पुत्र एवं ग्रज राजा का पिता था ।
उ०—संभ्रम दिलीप **रघु** न्रिप सकाज । '**रघु**' रै सुत ग्रज राजाधिराज ।
—सू. प्र.
२ दशरथ नन्दन श्री रामचन्द्र, राम ।
उ०—१ बिहुं **रघु** लक्खण पुत्र बुलाय । सभै जग विस्वामित्र सहाय ।
—ह. र.
उ०—२ ग्रज सुत दीह सपत में ग्राया । ग्रति **रघु** जांन बणावै ग्राया ।
—रांमरासौ
३ रघु राजा के वंशज ।
४ देखो 'रघुवंस'
रू० भे०–रुघ ।

रघुईस–सं. पु. [सं. रघुईश] श्रीरामचंद्र भगवान ।
रू० भे०—रुघईस

रघुकुळ–सं. पु. [सं. रघु+कुल] रघु राजा का वंश, कुल ।

रघुकुळतिलक–सं. पु.–श्री रामचन्द्र, श्रीराम ।
रू० भे०—रुघकुळ तिलक

रघुचंद–सं. पु. [सं. रघुचंद्र] श्री रामचंद्र भगवान ।
रू० भे०–रुघचंद ।

रघुदेव–सं. पु. [सं. रघुदेव] श्री रामचंद्र भगवान ।
रू० भे०–रुघदेव ।

रघुनंद, रघुनंदण, रघुनंदन–सं. पु. [सं. रघु+नंदन] १ श्री रामचन्द्र, श्रीराम । (ना. मा.)
उ०—थे तौ पूत सपूत हो हो रघुवर जी। ईस्वर थे पिता वचन ल्यौ पाळ, हो **रघुनंदन** जी ।
—गी. रां.
रू० भे०–रुघनंद, रुघनंदण, रुघनंदन, रुघुनंदन ।

रघुनाथ–सं. पु. [सं.] १ श्री रामचन्द्र ।
उ०—भड़ परखण भूपाळ तांम ऊभौ ग्रसि तांणौ। रांमायण **रघुनाथ**, जोध परख कपि जांणौ ।
२–ईश्वर, परमेश्वर
—सू. प्र.
रू० भे०–रुघनाथ, रुघुनाथ ।

रघुनायक–सं. पु. [सं.] श्रीरामचन्द्र ।
उ०—नर च्यार ग्रसी नाचै निकूं, निज हरि ग्रागळ नाचियौ । जाचणौ जिकां रहियौ न जग, ज्यां **रघुनायक** जाचियौ ।
—र. ज. प्र.
रू० भे०–रुघनायक ।

रघुपत, रघुपति–सं. पु. [सं. रघुपति] श्री रामचन्द्र ।
उ०—१ तिलक छाप तुलिछिका माळ धारिया महाबळ । हरवळ लखमण हुवौ 'ग्रभा' **रघुपति** न ग्रागळ ।
—सू. प्र.
रू० भे०–रघूपति, रघूपती, रुघपति, रुघपती ।

रघुभूप–सं. पु.–श्री रामचंद्र भगवान ।
रू० भे०–रुघभूप ।

रघुबर–देखो 'रघुवर' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—भूप **रघुबर** सभ्भत धनु सर।

—र. ज. प्र.

रघुबीर–देखो 'रघुवीर' (रू. भे.) (डिं. को.)

रघुइंद्र–सं. पु. [सं.] श्री रामचंद्र भगवान।

रू० भे०–रुघयंद, रुघयंदि।

रघुरांण–सं. पु. [सं. रघुराज] श्री रामचंद्र भगवान।

रू० भे०–रुघरांण।

रघुरांणी–सं. स्त्री. [सं. रघु, राज्ञी] सीता, जानकी।

रू० भे०–रुघरांणी।

रघुरांम–सं. पु. [सं. रघुराम] श्री रांमचंद्र भगवान।

रू० भे०–रुघरांम।

रघुरज, रघुराइ, रघुराई, रघुराज, रघुराजा, रघुराय, रघुराया–सं पु. [सं. रघु+राज] १ श्री रामचन्द्र।

उ०—१ सभा भूप दसरथ सुत, रूप इसौ **रघुरज**।

—रांमरासौ

उ०—२ राज मौहरि उपति **रघुराई**। भिड़ू जेण विध लखमण भाई।

—सू. प्र.

उ०—३ अस्तुति कर सब देव सिधाया, जग में जय जय धुन छाई। आनंद भयौ भवन सारां में, राज विराज्या **रघुराई**।

—गी. रां.

उ०—४ कळ सत 'कंत' जिण जगणांत। रट **रघुराय**, थिर सुख थाय।

—र. ज. प्र.

उ०—५ राज तणी इच्छा **रघुराया**, । अखिल चराचर जीव उपाया। —ह. र.

२—ईश्वर, परमेश्वर।

३ विष्णु का नामान्तर।

रू० भे०–रुघराई, रुघराउ, रुघराज, रुघराजा।

रघुवंस–सं. पु. [सं. रघुवंश] १ इक्ष्वाकुवंशीय राजा रघु का वंश।

उ०—नमौ **रघुवंस** तणा रवि रांम, विधूंसण लंक बडा बरियांम। —ह. र.

२ श्रीरामचंद्र।

३ ईश्वर, परमेश्वर।

४ कालिदास द्वारा रचित 'रघुवंश' नामक महाकाव्य।

रू० भे०–रुघवंस।

रघुवंस कुमार–सं. पु. यौ. [सं. रघुवंश+कुमार] १ श्री रामचन्द्र।

२ रघु के वंश का कोई राजकुमार।

रघुवंसमणि–सं. पु. [सं. रघुवंशमणि] श्री रामचन्द्र भगवान।

रू० भे०–रुघवंसमणि।

रघुवंसरव, रघुवंसरवि–सं. पु. [सं. रघुवंशरवि] श्री रामचंद्र भगवान।

रू० भे०–रुघवंसरव।

रघुवंसी–सं. पु. [सं. रघुवंशी] १ राजा रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति।

२ श्री रामचन्द्र।

रू० भे०–रगुवंसी, रुघवंसी।

रघुवर–सं. पु. [सं.] १ रघु के वंश में श्रेष्ठ, श्री रामचन्द्र।

उ०—१ नह हुई न होवें है नहीं, सो छब जोड़ समांन की। मिळ वसौ 'मंछ' मन मंदिरां, जो स्री **रघुवर** जांनकी।

—र. रू.

उ०—२ थे तौ पूत सपूत हो हो **रघुवर** जी। थे पिता वचन ल्यो पाळ, हो रघुनंदनजी।

—गी. रां.

उ०—३ लिछमन जती सील ब्रत लेके, सांभ्रत अंग समाई। बरस चतुर दस वन **रघुवर** की, करी कठिन सिवकाई।

—ऊ. का.

२–ईश्वर, परमेश्वर।

३ विष्णु।

रू० भे०–रघुबर, रुघवर।

रघुवीर–सं. पु. [सं.] १ राजा रघु के वंश में वीर व्यक्ति, श्री रामचन्द्र।

२ विष्णु, ईश्वर। (डिं. को.)

३ राम भ्राता लक्ष्मण।

रू० भे०–रग्घुवीर, रघुबीर, रुघबर, रुघवर, रुघबीर, रुघवीर।

रघुवेदी–देखो 'रिगवेदी' (रू. भे.)

उ०—सघला सांमक अथरवणी, यजुरवेदीया जांण। **रघुवेदी** सवि रथि चड्या, पंडित पोकारि पुरांण।

—मा. कां. प्र.

रघूपति, रघूपती–देखो 'रघुपति' (रू. भे.)

उ०—१ सदा नित आनंद नांम सहस्स। **रघूपति** उच्चित अम्रत रस्स।

—ह. र.

उ०—२ वदै मुनेस जेण वार, देखि भूप वीनती। मख्खं सहाय काज मेलि, पुत्र तो **रघूपती**।

—सू. प्र.

रड़–सं. स्त्री.–१ करुण–क्रन्दन।

२ रुदन ।
३ चिल्लाहट ।
४ देखो 'रड़ौ' (मह. रू. भे.)
५ देखो 'रड़ी' (मह. रू. भे.)

रड़क–सं. स्त्री.–१ कंकड़, फूस या कोई कण आंख में गिर जाने से होने वाली पीड़ा ।
२ टक्कर ।
उ०—रिण झणणणणण नाद खुरसांण खागां **रड़क** । बाजि खण णणणण कड़ियाळ बंधां बड़क ।
—महादांन महडू ।
३ हमला ।
४ ध्वनि विशेष, आवाज ।
उ०—रेवंतां बाजीया पोड़ **रड़क** धराधर धूजीय कोम धड़क ।
—गो. रू.
५ कसक ।
६ खरोच ।
७ वैर, बदला, दुश्मनी ।
उ०—गांव भेळौ करतां तीन दिन हुयग्या । भाटां रा फिरतां गोडा टूट ग्या । खुरड़ा घिसग्या । लोगां थरपेड़ा पंचां मागै लड़ भिड़'र आछी **रड़कां** काढी ।
—दसदोख
८ देखो 'रिड़क' (रू. भे.)

रड़कणौ, रड़कबौ–क्रि. अ.–१ आंख में कोई कंकड़, फूस या कण के गिरने से दर्द होना, चुभना, कसकना, खटकना ।
२ मानसिक दृष्टि से कोई बात या घटना मन में बराबर खटकना, मानसिक कष्ट होना ।
उ०—१ जच्चा–रांणी रौ डील तौ साजौ–सूरौ, निरोगौ अर बादळां रै पांणी ज्यूं निरमळ व्हैगौ, पण मन रै किणी खुणा में एक ठौड़ किरकर **रड़कती** ही ।
— फुलवाड़ी
उ०—२ खूंद गधेड़ा खाय, पैलां री वाड़ी पड़ै । आ अण–जुगती आय, **रड़कै** चित में रांजिया ।
—किरपारांम
३ टक्कर होना, टक्कर लगना ।
उ०—१ सो इतरी मार खावतौ हाथी लोप पाधरौ राव रै हाथी कन्है आयौ सौ राव रा हाथी रै पाछलै पग रै इसौ खग लगायौ सो हाड जाय **रड़कियौ** ।
—डाढाळा सूर री वात
४ किसी बात को सुनने या किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को देखने से मन में क्रोध, घृणा आदि विकार पैदा होना । बुरा मालूम होना ।
उ०—१ हाथ री चतर अर सैण्यां इसी है कै आंख में घाली ई को **रड़कै** नीं ।
—वरसगांठ
उ०—२ भेळा मिनखां में सदा सूं हू–हल्लौ हुंतौ आयौ है, पण कैदी तौ आंख में घाल्या नीं **रड़कै** ।
—दसदोख
५ ध्वनि या आवाज होना, बजना ।
६ लुढकना, घुड़कना ।
उ०—आगै चढतां गढ सूं कांकरौ एक **रड़कयौ** नै नाहरी नमक नै आवतां रै माथा नै मूंढौ घातै ज्यूं टोप मूंडा में आयौ ।
—राव रिड़मल री वात
७ परस्पर टकराना ।
८ देखो 'रिड़कणौ, रिड़कबौ' (रू. भे.)
उ०- इतरै में खाडू रै नजीक पहुंचिया सौ भैंसां **रड़कती** सुणी छै ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
रड़कणहार, हारौ (हारी), रड़कणियौ —वि. ।
रड़किओड़ौ, रड़कियोड़ौ, रड़क्योड़ौ —भू. का. कृ. ।
रड़कीजणौ, रड़कीजबौ भाव वा. ।
रड़क्कणौ, रड़क्कबौ । — रू. भे.

रड़कली–सं. स्त्री.–कोई छोटी पहाड़ी ।

रड़कियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ आंख में चुभा हुआ, कसका हुआ, खटका हुआ. २ मानसिक कष्ट हुवा हुआ, मन में खटका हुआ. ३ टक्कर हुवा हुआ, टक्कर लगा हुआ. ४ किसी बात के सुनने या किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को देखने से क्रोध, घृणा आदि विकार पैदा हुवा हुआ. बुरा मालुम हुवा हुआ. ५ परस्पर टकराया हुआ. ६ ध्वनि या आवाज हुवा हुआ, बजा हुआ. ७ लुढका हुआ, घुड़का हुआ ।
८ देखो 'रिड़कियोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. रड़कियोड़ी)

रड़क्कणौ, रड़क्कबौ–१ देखो 'रड़कणौ, रड़कबौ' (रू. भे.)
उ०—१ पत्रांजे खड़क्कै पंगी धड़क्कै कायरां प्रांण ।
बड़क्कै उरेब छड़ां **रड़क्कै** भू सीस ।
—चिमनजी गौ गीत
उ०—२ देखतां ऐहबौ जंग धड़क्कै आगरौ दिल्ली ।
बंबी जैत माग रा **रड़क्कै** बारंबार ।

झड़क्कै खाग रा बाढ़ भड़क्कै कायरां झुंड,
हमल्लां नाग रा माथा **रड़क्कै** हजार।

—सूरजमल मीसण

२ देखो 'रिडकणौ, रिडकबौ' (रू भे.)
रड़क्कणहार, हारौ (हारी), रड़क्कणियौ —वि.।
रड़क्किओड़ौ, रड़क्कियोड़ौ, रड़क्क्योड़ौ —भू. का. कृ.
रड़क्कीजणौ, रड़क्कीजबौ —भाव वा.
(स्त्री. रड़क्कियोड़ी)

रड़ड़ाट—सं. स्त्री. [अनु.] ध्वनि विशेष।

रड़णौ, रड़बौ—क्रि. स. [सं. रद्] १. रुदन करना, रोना।

उ०—चौरंग चूरिया वर सेत 'चांदै', भिड़ै नवलौ भांति।
गोरड़ी काढै गात गोखै, रड़ै गळती राति।

—चांदा वीरमदेवौत मेड़तिया रौ गीत

२ चिल्लाना, क्रन्दन करना।
३ कुचलना, रौंदना।
४ अव्यवस्थित करना, उथल पुथल करना।
५ युद्ध करना।
६ प्रवाहित होना, बहना।
७ घुड़कना, डौलना।
८ दूध का गर्म होना।

रड़णहार, हारौ (हारी), रड़णियौ —वि.
रड़िओड़ौ, रड़ियोड़ौ. रड़चोड़ौ —भू. का. कृ.
रड़ीजणौ, रड़ीजबौ, —भाव वा.
रडणौ, रडबौ, रढणौ, रढवौ —रू. भे.

रड़द, रड़दौ—सं. पु.—अत्यधिक परिश्रम का कार्य।

रड़बड़—सं. स्त्री.—१ लुढ़कने या घुड़कने की क्रिया या भाव।

२ पदार्थों, वस्तुओं आदि की परस्पर टक्कर से उत्पन्न ध्वनि, आवाज।
३ कार्य।
४ टक्कर, भिड़न्त।
५ आवारागर्दी।
६ कुचले जाने की क्रिया या भाव।
रू० भे०—रड़व्बड़, रड़भड़, रड़व्वड़, रडवड, रडव्वड।

रड़बड़णौ, रड़बड़बौ—क्रि. अ. १ किसी चीज का इधर उधर लुढकना, ठोकरें खाना।

उ०—१ उळझ आखड, रुंड **रड़बड़**, पंख झड़पड़ वीर बड़बड़।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ दड़त पड़िसै घणा दड़दड़, रुंड राकस तुंड **रड़बड़**।
खाग खासा वहै खड़खड़, त्रिगड़ां त्रड़त्रड़।

—पी. ग्रं.

२ इधर उधर मारा मारा फिरना, अवारा घूमना, भटकना।

उ०—सगपण करतौ थकौ, तूं **रड़बड़ियौ** संसार रे। एक एक री जून में, तूं उपनौ अनंत वार रे। —जयवांणी

३ ध्वनि होना, आवाज होना।
४ टकराना, भिड़ना।
रड़बड़णहार, हारौ (हारी), रड़बड़णियौ —वि.।
रड़बड़िओड़ौ, रड़बड़ियोड़ौ, रड़बड़चोड़ौ —भू. का. कृ.
रड़बड़ीजणौ, रड़बड़ीजबौ —भाव. वा.
रड़ब्बड़णौ, रड़ब्बड़बौ, रड़भड़णौ, रड़भड़बौ, रड़वड़णौ, रड़वड़बौ
रडवडणौ, **रडवडबौ**। —रू. भे.

रड़बड़ाट—सं. स्त्री.—ध्वनि विशेष।
रू० भे.—रड़भड़ाट

रड़बड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ इधर उधर लुढका हुआ, ठोकरें खाया हुआ. २ इधर उधर फिरा हुआ, अवारा घूमा हुआ. ३ ध्वनि हुवा हुआ, आवाज हुवा हुआ. ४ टकराया हुआ, भिड़ा हुआ।
(स्त्री. रड़बड़ियोड़ी)

रड़बौ—सं. पु.—१ बूढा व बदसूरत ऊंट।
२ मतीरा (हिन्दवानी) का ऐसा फल जो दूषित, विकृत या अनुपयोगी हो।

रड़ब्बड़—देखो 'रड़बड़' (रू. भे.)

रड़ब्बड़णौ, रड़ब्बड़बौ—देखो 'रड़बड़णौ, रड़बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—**रड़ब्बड़** मुंड पड़े चड़ि रुंड।
तिसा विण सुंड वणै गज तुंड। —रा. रू.

रड़ब्बड़ियोड़ौ—देखो 'रड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रड़ब्बड़ियोड़ी)

रड़भड़—देखो 'रड़वड़' (रू. भे.)

रड़भड़णौ, रड़भड़बौ—देखो 'रड़बड़णौ, रड़वड़बौ' (रू. भे.)

उ०—पिंडत-पिंडत अर साधू-साधू, सागै हुवै जद सागीड़ा लड़ै-झगड़ै। पण कैदी भाई जेळ में कदै ही नीं **रड़भड़ै**।

—दसदोख

रड़भड़ाट—देखो 'रड़वड़ाट' (रू. भे.)

रड़भड़ियोड़ौ—देखो 'रड़वड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रड़भड़ियोड़ी)

रड़मलपण, रड़मलपणौ—सं. पु.—वीरता, बहादुरी।

२ रुदन ।
३ चिल्लाहट ।
४ देखो 'रड़ौ' (मह. रू. भे.)
५ देखो 'रड़ी' (मह. रू. भे.)

रड़क–सं. स्त्री.–१ कंकड़, फूस या कोई कण आंख में गिर जाने से होने वाली पीड़ा ।
२ टक्कर ।
उ०—रिण भणणाणण नाद खुरमांण खागां **रड़क** । बाजि खण णाणण कड़ियाळ वंधां वड़क ।
—महादांन महड़ू ।
३ हमला ।
४ ध्वनि विशेष, आवाज ।
उ०—रेवंतां बाजीया पोड़ **रड़क** धराधर धूजीय कोम धड़क ।
—गो. रू.
५ कसक ।
६ खरोंच ।
७ वैर, बदला, दुश्मनी ।
उ०—गांव भेळौ करतां तीन दिन हुयग्या । भाटां रा फिरतां गोडा टूट ग्या । खुरड़ा घिसग्या । लोगां थरपेड़ा पंचां मागै लड़ भिड़'र आछी **रड़कां** काढी ।
—दसदोख
८ देखो 'रिड़क' (रू. भे.)

रड़कणौ, रड़कबौ–क्रि. अ.–१ आंख में कोई कंकड़, फूस या कण के गिरने से दर्द होना, चुभना, कसकना, खटकना ।
२ मानसिक दृष्टि से कोई बात या घटना मन में बराबर खटकना, मानसिक कष्ट होना ।
उ०—१ जच्चा-रांणी रौ डील तौ साजौ-सूरौ, निरोगौ अर बादळां रै पांणी ज्यूं निरमळ व्हैगौ, पण मन रै किणी खुणा में एक ठौड़ किरकर **रड़कती** ही ।
— फुलवाड़ी
उ०—२ खूंद गधेड़ा खाए, पैलां री वाड़ी पड़ै । आ अण-जुगती आय, **रड़कै** चित में रांजिया ।
—किरपारांम
३ टक्कर होना, टक्कर लगना ।
उ०—१ सो इतरी मार खावतौ हाथी लोप पाधरौ राव रै हाथी कन्है आयौ सौ राव रा हाथी रै पाछलै पग रै इसौ खग लगायौ सो हाड जाय **रड़कियौ** ।
—डाढाळा सूर री वात
४ किसी बात को सुनने या किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को देखने से मन में क्रोध, घृणा आदि विकार पैदा होना । बुरा मालूम होना ।
उ०—१ हाथ री चतर अर सैण्यां इसी है कै आंख में घाली ई को **रड़कै** नीं ।
—वरसगांठ
उ०—२ भेळा मिनखां में सदा सूं हू-हल्लौ हुंतौ आयौ है, पण कैदी तौ आंख में घाल्या नीं **रड़कै** ।
—दसदोख
५ ध्वनि या आवाज होना, बजना ।
६ लुढकना, घुड़कना ।
उ०—आगै चढतां गढ सूं कांकरौ एक **रड़क्यौ** नै नाहरी नमक नै आवतां रै माथा नै मूंढौ घातै ज्यूं टोप मुंडा में आयौ ।
—राव रिड़मल री बात
७ परस्पर टकराना ।
८ देखो 'रिड़कणौ, रिड़कबौ' (रू. भे.)
उ०- इतरै में खाडू रै नजीक पहुंचिया सौ भैंसां **रड़कती** सुणी छै ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
रड़कणहार, हारौ (हारी), रड़कणियौ —वि. ।
रड़किओड़ौ, रड़कियोड़ौ, रड़क्योड़ौ — भू. का. कृ. ।
रड़कीजणौ, रड़कीजबौ भाव वा. ।
रड़क्कणौ, रड़क्कबौ । — रू. भे.

रड़कली–सं. स्त्री.–कोई छोटी पहाड़ी ।

रड़कियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ आंख में चुभा हुआ, कसका हुआ, खटका हुआ. २ मानसिक कष्ट हुवा हुआ, मन में खटका हुआ. ३ टक्कर हुवा हुआ, टक्कर लगा हुआ. ४ किसी बात के सुनने या किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को देखने से क्रोध, घृणा आदि विकार पैदा हुवा हुआ, बुरा मालुम हुवा हुआ. ५ परस्पर टकराया हुआ. ६ ध्वनि या आवाज हुवा हुआ, बजा हुआ. ७ लुढका हुआ, घुड़का हुआ ।
८ देखो 'रिड़कियोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. रड़कियोड़ी)

रड़क्कणौ, रड़क्कबौ–१ देखो 'रड़कणौ, रड़कबौ' (रू. भे.)
उ०—१ पत्रांजे खड़क्कै पंगी धड़क्कै कायरां प्रांण ।
बड़क्कै उरेब छड़ां **रड़क्कै** भू सीस ।
—चिमनजी रौ गीत
उ०—२ देखतां ऐहबौ जंग धड़क्कै आगरौ दिल्ली ।
बंबी जैत माग रा **रड़क्कै** बारंबार ।

झड़क्कै खाग रा बाढ़ भड़क्कै कायरां झुंड,
हमल्लां नाग रा माथा **रड़क्कै** हजार।

—सूरजमल मीसण

२ देखो 'रिडकणौ, रिडकबौ' (रू भे.)
रड़क्कणहार, हारौ (हारी), रड़क्कणियौ —वि.।
रड़क्किओड़ौ, रड़क्कियोड़ौ, रड़क्क्योड़ौ —भू. का. कृ.
रड़क्कीजणौ, रड़क्कीजबौ —भाव वा.
(स्त्री. रड़क्कियोड़ी)

रड़ड़ाट–सं. स्त्री. [अनु.] ध्वनि विशेष।

रड़णौ, रड़बौ–क्रि. स. [सं. रुद्] १. रुदन करना, रोना।

उ०—चौरंग चूरिया वर सेत 'चांदै', भिड़ै नवलौ भांति।
गोरड़ी काढै गात गोखैं, रड़ै गळती राति।

—चांदा वीरमदेवौत मेड़तिया रौ गीत

२ चिल्लाना, क्रन्दन करना।
३ कुचलना, रौंदना।
४ अव्यवस्थित करना, उथल पुथल करना।
५ युद्ध करना।
६ प्रवाहित होना, बहना।
७ घुड़कना, डौलना।
८ दूध का गर्म होना।
रड़णहार, हारौ (हारी), रड़णियौ —वि.
रड़िओड़ौ, रड़ियोड़ौ. रड़चोड़ौ —भू. का. कृ.
रड़ीजणौ, रड़ीजबौ, —भाव वा.
रडणौ, रडबौ, रढणौ, रढबौ —रू. भे.

रड़द, रड़दौ–सं. पु.–अत्यधिक परिश्रम का कार्य।

रड़बड़–सं. स्त्री.–१ लुढ़कने या घुड़कने की क्रिया या भाव।
२ पदार्थों, वस्तुओं आदि की परस्पर टक्कर से उत्पन्न ध्वनि, आवाज।
३ कार्य।
४ टक्कर, भिड़न्त।
५ आवारागर्दी।
६ कुचले जाने की क्रिया या भाव।
रू० भे०—रड़ब्बड़, रड़भड़, रड़व्वड़, रडवड, रडव्वड।

रड़बड़णौ, रड़बड़बौ–क्रि. अ. १ किसी चीज का इधर उधर लुढकना, ठोकरें खाना।

उ०—१ उळझ आखड, रुंड **रड़बड़**, पंख झड़पड़ वीर बड़बड़।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ दइत पड़िसै घणा दड़दड़, रुंड राकस तुंड **रड़बड़**।
खाग खासा वहै खड़खड़, त्रिगड़ां त्रड़त्रड़।

—पी. ग्रं.

२ इधर उधर मारा मारा फिरना, अवारा घूमना, भटकना।

उ०—सगपण करतौ थकौ, तूं **रड़बड़ियौ** संसार रे। एक एक री जून में, तूं उपनौ अनंत वार रे। —जयवांणी

३ ध्वनि होना, आवाज होना।
४ टकराना, भिड़ना।
रड़बड़णहार, हारौ (हारी), रड़बड़णियौ —वि.।
रड़बड़िओड़ौ, रड़बड़ियोड़ौ, रड़बड़्योड़ौ —भू. का. कृ.
रड़बड़ीजणौ, रड़बड़ीजबौ —भाव. वा.
रड़ब्बड़णौ, रड़ब्बड़बौ, रड़भड़णौ, रड़भड़बौ, रड़वड़णौ, रड़वड़बौ रडवडणौ, **रडवडबौ**। —रू. भे.

रड़बड़ाट–सं. स्त्री.–ध्वनि विशेष।
रू० भे.—रड़भड़ाट

रड़बड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ इधर उधर लुढका हुआ, ठोकरें खाया हुआ. २ इधर उधर फिरा हुआ, अवारा घूमा हुआ. ३ ध्वनि हुवा हुआ, आवाज हुवा हुआ. ४ टकराया हुआ, भिड़ा हुआ।
(स्त्री. रड़बड़ियोड़ी)

रड़बौ–सं. पु.–१ बूढा व बदसूरत ऊंट।
२ मतीरा (हिन्दवानी) का ऐसा फल जो दूषित, विकृत या अनुपयोगी हो।

रड़ब्बड़–देखो 'रड़बड़' (रू. भे.)

रड़ब्बड़णौ, रड़ब्बड़बौ–देखो 'रड़बड़णौ, रड़बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—**रड़ब्बड़** मुंड पड़े चड़ि रुंड।
तिसा विण सुंड वणै गज तुंड। —रा. रू.

रड़ब्बड़ियोड़ौ–देखो 'रड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रड़ब्बड़ियोड़ी)

रड़भड़–देखो 'रड़बड़' (रू. भे.)

रड़भड़णौ, रड़भड़बौ–देखो 'रड़बड़णौ, रड़बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—पिंडत-पिंडत अर साधू-साधू, सागै हुवै जद सागीड़ा लड़ै-झगड़ै। पण कैदी भाई जेळ में कदै ही नीं **रड़भड़ै**।

—दसदोख

रड़भड़ाट–देखो 'रड़बड़ाट' (रू. भे.)

रड़भड़ियोड़ौ–देखो 'रड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रड़भड़ियोड़ी)

रड़मलपण, रड़मलपणौ–सं. पु.–वीरता, बहादुरी।

रड़माल–देखो 'रिड़माल' (रू. भे.)

रड़वड़णौ, रड़वड़बौ–देखो 'रड़बड़णौ, रड़बड़वौ' (रू. भे.)

उ०—१ सूरज अर चांद जैड़ी ना कुछ चीजां तौ प्रीत री ठोकरां में **रड़वड़ै** । —फुलवाड़ी

उ०—२ विचित्र खंड वप झड़ै, मुंड **रडवड़ै** धरत्ती ।
चडै रुंड बेहड़ां, चंड गह अड़ै दुसत्ती । —रा. रू.

उ०—३ ग्यांन विना ए जीवड़ौ, **रड़वड़ियौ** संसार ।
जो थांरै तिरणौ हुवै, ग्यांन अपूरव धार ।
—जयवांणी

उ०—४ अणभंग आखड़िया आहव अड़िया धूजै रगतासुर धड़हड़िया । रूकां **रड़वड़िया** इन आहुड़िया रिम गाहट जांगी जुड़िया ।
मा. वचनिका

रड़वड़णहार, हारौ (हारी), रड़वड़णियो —वि.
रड़वड़िओड़ौ, रड़वडियोड़ौ, रड़वड़्योड़ौ —भू. का. कृ.
रड़वड़ीजणौ, रड़वड़ीजबौ —भाव वा.

रड़वड़ियोड़ौ–देखो 'रड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रड़वड़ियोड़ी)

रड़व्वड़–देखो 'रड़बड़' (रू. भे.)

रड़ि–देखो 'रड़ी' (रू. भे.)

रड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ रोया हुआ, रुदन किया हुआ. २ क्रन्दन किया हुआ, चिल्लाया हुआ. ३ कुचला हुआ, रौंदा हुआ. ४ उथल पुथल किया हुआ, अव्यवस्थित किया हुआ. ५ युद्ध किया हुआ. ६ प्रवाहित हुवा हुआ, बहा हुआ. ७ घुड़का हुआ, डौला हुआ ।
(स्त्री. रड़ियोड़ी)

रड़ी–सं. स्त्री.–१ टीला, मगरा ।

उ०—१ हरिया चढि ऊंचे **रड़ी**, गावै हरि का गीत ।
विरहन सुं जीवत मिळौ, मूवां मिरतग प्रीत ।
—अनुभववांणी

उ०—२ रूनी **रड़ी** चडेही, जोई दिसि जातां–तणी ।
ऊभी हाथ मळेहि, विलखी हुई वल्लहा ।
—ढो. मा.

२ छोटी पहाड़ी ।

उ०—तठै हसावत जी रौ देहरौ छै । कन्है **रड़ी** माथै 'सोजल' रौ थांन छै । इण तरफ नुं नीमली नाडी धवळी ढढ छै ।
—सोजत रै मंडळ री बात

३ कंकरीली पहाड़ी भूमि ।

उ०—बांभण ईसा रै कहै रावळ जेसळ कपूरदेसर री पाळ कनै **रड़ी** सी थी उण कुंड रा पांणी ऊपर संमत १२१२ रा सांवण वद १२ आदीतवार मूळ नखत्र रावळ जेसळ जेसळमेर री रांग मंडाई । —नैणसी

रू. भे.–रडी, रढि ।

४ देखो 'रड़' अल्पा.–रडकवी, (रू. भे.)

रड़ौ–सं. पु.–१ टीला, मगरा ।

उ०—जद ब्राह्मण नांव इसौ, एक सौ बीस बरस री ऊमर में, तिण जैसळ नूं कह्यौ–म्हारा खेत कनै **रड़ौ** है, जठै स्रीक्रस्ण गदा सूं पांणी प्रगट कर पांडवां नूं पायौ ।
—बां. दा. ख्यात

२ छोटा पहाड़ ।
३ कंकरीला व ऊंचा–नीचा पहाड़ी भूखंड ।
रू० भे०—रडौ ।

रचक–सं. पु. [सं. रचकः] १ धोबी
सं. स्त्री.–२ टक्कर, भिड़त ।

उ०—ठहक डक त्रंबकवां कायरां ठेलवा, क्रोध धक कठीनै नाग काळा । आय रूकां **रचक** लीयै कुण आहाड़ा, वगां रण भचक कुसिआळ वाळा । —गुलजी आढौ

३ चोट, आघात, प्रहार ।
४ लड़ाई, युद्ध ।
वि०—रचना करने वाला, रचने वाला, रचयिता ।

उ०—रथ रूपी पिंजर **रचक** सकळ निग्रंता सांम रौ । श्रौर रौ डर नहीं डर अवस रात दिवस उण रांम रौ ।
—ऊ. का.

रचण–वि०–रचने वाला ।
रू० भे०—रच्चण

रचणब्रजवासी–सं. पु.–ईश्वर, परमात्मा । (नां. मा.)

रचणा–देखो 'रचना' (रू. भे.)

रचणी–सं. स्त्री.–१ रचने की क्रिया या भाव ।
२ रचने का ढंग ।
३ देखो 'रचना' (रू. भे.)

उ०—दुनियां झूठै **रचणी**, साच न पैंडै जाय । सांई झूठ न रचई, हरीया सचि सुहाय ।
—अनुभववांणी

रचणौ–वि. (स्त्री. रचणी) १ बनाने वाला, तैयार करने वाला।
२ निर्माण करने वाला, सृष्टा।
३ उत्पन्न करने वाला, उत्पादक।
४ शृंगार करने वाला, सजाने वाला।
५ स्थापित करने वाला।
६ फैलाने वाला।
७ कुछ करने वाला।
८ लगाने वाला।
९ लेख लिखने वाला।
१० निश्चित करने वाला।
११ एकत्र करने वाला।
रू० भे०–रच्चणौ।

रचणौ, रचबौ–क्रि. स. [सं. रचनं] १ बना कर तैयार करना या बनाना।

उ०—१ वेघ्याइ याह्नि वदन ज **रचिऊं** व्याहारिसार इंदु नूं हरिऊं। तर लीधी तांहां खांग थई छि, मुख मनोहर करिऊं।
—नळाख्यांन

उ०—२ खेडेचा विन खोड, परमेस्वर **रचयौ** पुरुस। जसवंत थारी जोड, नर दूजौ दीसै नहीं।
—ऊ. का.

२ सृजन करना, निर्माण करना।

उ०—१ ईंडौ कनक अछेह देह धरि हरि तिण द्वारे। **रचै** नाभ नीरज्ज, रज्ज अज प्रज गुण सारै।
—रा. रू.

उ०—२ तास चरण सेवक सदा रे, मधुकर पंकज जेम। प्रमुदित चित नी चूंप सुं रे, रास **रच्यौ** मैं एम।
—वि. कु.

३. उत्पादन करना, उत्पन्न करना।

उ०—१ देखे भव दरियाव, **रची** पगां सूं स्त्री रमण। नरां अपूरब नाव, नाविक बिण निरझर नदी।
—वां. दा.

४ शृंगार करना, सजाना।

उ०—लाज वरद सील सुपेद जंघाळ जुगत व्रत। **रचि** अमास नवरंग, करै मधि चित्र देव क्रत।
—रा. रू.

५ स्थापित करना।

उ०—जई रूंखां मारू हुई, छवडउ पड़ियउ तास। तइ हुंती चंदउ कियइ, लइ **रचियउ** आकास।
—ढो. मा.

६ फैलाना।

उ०—१ साह किताके सरवगल, **रचै** फंद दिन रात। मच्छ गळा–गळ मांहि वस, बच जावै हर वात।
—बां. दा.

उ०—२ साची एक ब्रह्म की वाता, दूजी सकळ आंन की जाता। जुग मां बौत **रचै** पाखंडा, एक न जांणै नांव अखंडा।
—अनुभववांणी

७ कुछ करना।

उ०—१ सतरै प्रकार नीं पूजा **रचै** है तिण मांहीं सूं तोने दस बीस रुपया देस्यां।
—भि. द्र.

उ०—२ कळह **रचै** दसकंध, नवग्रह बंध निवारियौ। हुवा धनुख गुण सबद व्है, गतमद जग मदगंध।
—बां. दा.

उ० – ३ रिण **रचिया** मा रोइ, रोए रिण छांडे गया। इण घर तौ आगा–लगै, मरणै मंगळ होइ।
—मा. वचनिका

उ०—४ समर उजैण **रचै** नव–सहसौ। सूर सहस भेदै नव थांन।
—गु. रू. बं.

८ लगाना।

उ०—जेहा जीण जड़ाव, गजगांवा मिस कुंअरगुर। **रचि** सपंख हय राव, दीधा तैं लाखा दुआ।
—बां. दा.

९ लेख लिखना, रचना करना।

उ०— भाखा ब्रज मारू सुर भाखा, भाखा प्राक्रत जांत भर। पायौ **रचण** रूपगां पैंडौ, मेहाही थारी महर।
—वां. दा.

१० निश्चित करना।
११ एकत्र करना।

उ०—इण में मरजी री कांईं बात। मरजी री बात व्हैती तौ पंचायती थापण रौ औ मेळौ क्यूं **रचियौ**।
—फुलवाड़ी

१२ देखौ 'राचणौ, राचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ उण दिन सूं सगळा महल लोगांरी तवज्या करणै लागिया अर कुंवरजी नूं इसा खुस किया जे **रच** रहिया छै।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ पांगी ल्यावै डोरि करि, हाथे भात पचाय। राजस तांमस **रचि** रह्यौ, सातिग नावै दाय।

—अनुभववांणी

रचणहार, हारौ (हारी), रचणियौ —वि.।
रचिग्रोड़ौ, रचियोड़ौ, रच्योड़ौ —भू. का. कृ.।
रचीजणौ, रचीजबौ —कर्म वा.।
रच्चणौ, रच्चबौ। —रू. भे.

रचन—सं. स्त्री.—१ रचने की क्रिया या भाव।
२ रचने का ढंग।

उ०—वचन रचन सुणज्यौ हिवै, ग्रांगी भाव प्रधांनौ रे। देज्यौ दांन इसी परै, जेम लहौ तुमै मांगौ रै।

—वि. कु.

रचना—सं. स्त्री. [सं.] १ रचने या रचना करने की क्रिया या भाव।
२ निर्माण या रचना करने की कला, कौशल।

उ०—दरजी फाड़ दुकूल नूं, सींवै लिए सुधार। इण विध री **रचना** ग्रठै, जांणै जांणणहार।

—बां. दा.

३ लीला, माया।

उ०—**रचना** ईस्वर री ईस्वरता रोचै। संम दम स्रद्धा विण संभव नहिं सोचै।

—ऊ. का.

४ निर्माण, सृजन, सृष्टि, उत्पादन।
५ निर्मित या उत्पादित वस्तु।
६ बनावट, स्वरूप।
७ बनाने का ढंग, प्रकार।
८ सजावट, शृंगार।
९ केश विन्यास।
१० व्यूह, जाल, फ़ंदा।
११ कल्पना।
१२ कोई लेख, काव्य-कृति, ग्रन्थ।
१३ स्थापित करने की क्रिया।
१४ कार्य, काम।

उ०—भळै थैं भोळा-संकर बाजौ, दीन-दुखियां रा दुख मेटण रौ गुमांन करौ! थांरै बैठां ग्रा **रचना** व्है तौ साव खुटगी।

—फुलवाड़ी

१५ विश्वकर्मा की पत्नी का नाम।

रचयिता—वि० [सं. रचयितृ] १ रचने वाला, निर्माण करने वाला २ लिखने वाला, लेखक।

रचांनी—देखो 'रछांनी' (रू. भे.)

उ०—नाई **रचांनी** खोलतौ खोलतौ कैंवण लागौ बापजी, एक बात पैला कै दूं। इलाज कीं दोरौ है।

—फुलवाड़ी

रचाड़णौ, रचाड़बौ—देखो 'रचाणौ, रचाबौ' (रू. भे.)

उ०—केतां गजां पछाड़ै, **रचाड़ै** खेत नरां केतां। ग्रखाड़ै मचाड़ै वीर, विहंडै ग्रपार।

—बुधसिंह सिंढायच

रचाड़णहार, हारौ (हारी), रचाड़णियौ —वि.
रचाड़िग्रोड़ौ, रचाड़ियोड़ौ, रचाड़्यौड़ौ —भू. का कृ.
रचाड़ीजणौ, रचाड़ीजबौ —कर्म वा.

रचाड़ियोड़ौ—देखो 'रचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रचाड़ियोड़ी)

रचाणौ, रचाबौ—क्रि. स. ['रचणौ' क्रिया का प्रे. रू., 'राचणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ बनाकर तैयार करवाना, बनवाना।
२ सृजन कराना, सृष्टि कराना।
३ उत्पादन कराना, उत्पन्न कराना।
४ शृंगार कराना, सजवाना।
५ स्थापित कराना।
६ फैलवाना।
७ करने के लिये प्रेरित करना, करवाना।

उ०—१ बीर नाद सोई चंग बजायौ, रंग फाग मम जंग **रचायौ**।

—ऊ. का.

उ०—२ उकटिया उदियापुर ऊपर, मेवाड़ा मिळिया तिण मौसर। रांण कंवर थी गुंज **रचायौ**। प्रगट करै कांइ देस परायौ।

—रा. रू.

८ लगवाना।
९ लेख लिखवाना।
१० निश्चित कराना।
११ एकत्र कराना।
१२ जमाना,
१३ ग्रायोजन करना। ऊ. का
१४ रंजित करना/कराना।

उ०—बनड़ा महदड़ली दिन चार हाथ **रचाल्यौ**. बनड़ा काजळिया दिन चार नैण घुळाल्यौ। —लो. गी.

१५ ग्रनुरक्त करना/कराना। १६ शोभित करना/कराना।
१७ प्रसन्न करना/कराना। १८ प्रभावित करना/कराना।
रचाणहार, हारौ (हारी), रचाणियौ —वि.

रचायोड़ौ —भू. का. कृ.
रचाईजणौ, रचाईजबौ —कर्म वा.
रचाड़णौ, रचाड़बौ, रचावणौ, रचावबौ —रू. भे.

रचायोड़ौ–भू. का. कृ.–१ बनाकर तैयार करवाया हुआ, बनवाया हुआ. २ सृजन कराया हुआ, सृष्टि कराया हुआ. ३ उत्पादन कराया हुआ, उत्पन्न कराया हुआ. ४ शृंगार कराया हुआ, सजवाया हुआ. ५ स्थापित कराया हुआ. ६ फैलवाया हुआ. ७ कुछ करने के लिये प्रेरित किया हुआ. ८ लगवाया हुआ. ९ लेख लिखवाया हुआ. १० निश्चित कराया हुआ. ११ एकत्र कराया हुआ. १२ जमाया हुआ. १३ आयोजन किया हुआ. १४ रंजित किया हुआ।
(स्त्री. रचायोड़ी)

रचावणौ, रचावबौ–देखो 'रचाणौ, रचाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ आयौ आयौ सांवणिया रौ मास, सुसरोजी बिवाव **रचावियौ** ।

—लो. गी.

उ०२—पण व्याव **रचावै** जैड़ी हीमत तौ किणी री कोनीं।
व्याव रौ बुदबुदौ तौ ऊठतां ई मिटग्यौ ।

—फुलवाड़ी

रचावणहार, हारौ (हारी), रचावणियौ —वि.
रचाविओड़ौ, रचावियोड़ौ, रचाव्योड़ौ भू. का कृ.
रचावीजणौ, रचावीजबौ —कर्म वा.

रचावियोड़ौ–देखो 'रचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रचावियोड़ी)

रचित, रचिय–वि. [सं॰ रचित] १ रचा हुआ, बनाया हुआ।
२ निर्मित, सृजित।
३ उत्पादित।
४ सजाया हुआ, शृंगारा हुआ।
५ लिख कर तैयार किया हुआ।
६ स्थापित।
रू० भे०–रईय।

रचियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ बनाकर तैयार किया हुआ, बनाया हुआ. २ निर्माण किया हुआ, निर्मित, सृजित. ३. उत्पन्न किया हुआ, उत्पादित. ४ शृंगार किया हुआ, सजाया हुआ. ५ स्थापित किया हुआ. ६ फैलाया हुआ. ७ किया हुआ. ८ लगाया हुआ. ९ लिखा हुआ, लिखित. १० निश्चित किया हुआ. ११ एकत्र किया हुआ।
१२ देखो 'राचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रचियोड़ी)

रच्चण–देखो 'रचण' (रू. भे.)

रच्चणौ–देखो 'रचणौ, (रू. भे.)

उ०—धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि। मज्जीठां जिम **रच्चणा**, दई सु सज्जण मेळि।

—अग्यात

रच्चणौ, रच्चबौ–१ देखो 'रचणौ, रचबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'राचणौ, राचबौ' (रू. भे.)

रच्चियोड़ौ–१ देखो 'रचियोड़ो' (रू. भे.)
२ देखो 'राचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रच्चियोड़ी)

रच्छ–देखो 'रक्ष' (रू. भे.)

उ०—पाड़िया जुधां बिपच्छ, रांम पाय मेव **रच्छ** । और मेर रूप अच्छ, लच्छ लच्छ लच्छ।

—र. ज. प्र.

रच्छक–देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

उ०–बळ के अगराज कुळवट के अंकुर। पांणी के **रच्छक**, थळवट के कोहर।

—रा. रू.

रच्छया, रच्छचा–देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—सो थिर राखण काज क भूखण साजिया। जड़िया **रच्छचा** जंत्र मनोज मुनि दिया।

—बां. दा.

रच्छा–देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—म्हारी **रच्छा** कीज्यौ हे मा देसांणा री राय। जग जननी जगदंबा धाबळ वाळी धाय।

—राघवदास भादौ

रच्छिक–देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

उ०—पर छती जगि रिण जीपियौ। दस सहस **रच्छिक** दीपियौ।

—सू. प्र.

रच्छित–देखो 'रक्षित' (रू. भे.)

रच्छी–सं. स्त्री.–धूलि, रज?

उ०—भुकियौ बेळू भड़ आधौ फर आधौ, हाथा ताळी हणि लुकियौ नहिं लाधौ। कच्छीयौ करकर **रच्छी** रुळिजावै, तड़फै मच्छीतळ पच्छी पुळजावै।

—ऊ. का.

रछक–देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

रछपाळ–देखो 'रक्षपाळ' (रू. भे.)

उ०—१ 'ग्रासक्रन' तणौ 'बीठल' तणौं कहै एम। पात **रछपाळ** ग्रहियां खडग पांण।

—बां. दा.

उ०—२ गढ़ **रछपाळ** दूसरा 'गोकळ', पाळण सत्र दिली दळ पूर। रावत तणौ भरोसे रांणौ, सैलां रमैं हिंदवौ सूर।

—संग्रामसिंह चूंडावत रौ गीत

रछस–देखो 'राक्षस' (रू. भे.)

उ०—भरचौ पूर ग्रघ जगत ग्रभावण, ग्रागम ग्रत कीधौ फिर ग्रावण। जवर दूत मेलै समुभावौ, **रछस** ग्रजू समजै तो रावण।

—र. रू.

रछांनी–स. स्त्री.–नाई की वह छोटी पेटी या मंजूषा जिसमें हजामत बनाने के उपकरण रहते हैं।

उ०—देसोतां री खाट, बैठै ग्राय बराबरी. नाई किसब निराट, **रछांनी** सूं राजिया।

—किरपारांम

रछाकरण–सं. स्त्री. १ माता, जननी। (ग्र. मा.)

वि०–रक्षा करने वाला, रक्षक।

रछिक–देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

उ०—'कुंभ' रांण बाळक्क जुगत राजऊ न जांणौ, राव जतन कजि रहै, **रछिक** चीतौड़ घरांणौ।

—सू. प्र.

रछिपाळ–सं. स्त्री. [सं. रक्षा+पालनम्] रक्षा

उ०—कहचौ–सारा ग्रठै ग्राय वसौ, जवनेंद्र ग्रापोरी **रछिपाळ** करसी।

—बां. दा. ख्यात

रछिया–देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—खितपति सुणौ ग्रधिक हरखांणौ, ठीक वात निहचौ ठहरांणौ जपियौ मधि कनिया ले जावौ, करि **रछिया** पय पांन करावौ।

—सू. प्र.

रज–सं. स्त्री. [सं. रजस्] १ धूल, बालूरेत, गर्द।

(ग्र. मा., डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ गाढ़ी गयणांगण **रज** ले गरणाटा। सांवण सूकौ गौ देतौ सरणाटा।

—ऊ. का.

उ०—२ ग्रौरां कुं सकजा गिनै, ग्रापा होय निकज। हरीया हरिजन जांणीयै, जिसी राह की **रज**।

—ग्रनुभववांणी

२ पृथ्वी, भूमि।

३ रात, रात्रि।

उ०—**रज** पळटै दिन ही घटै, सूर पळट्टै छांह। सूरां हंदा बोलिया, वैण पळट्टै नांह।

—राव रिणमल री वात

४ गौरव, प्रतिष्ठा, इज्जत, मर्यादा।

उ०—१ कमधज भुज निमज सकज सु सुपह कज। राखै **रज** रिणतूर रुडै।

—गु. रू. बं.

उ०—२ ग्रापरी राख **रज** सुरग वसियौ 'ग्रनौ'। राज विध भोगवै महाराजा।

—ग्रनोपसिंह रौ गीत

रू० भे०–रंज, रंजि, रंजी, रजि, रजी, रज्ज, रज्जी, रज्जु, रज्जू, रय।

५ कीर्ति, यश।

उ०—लोयण लाज लाज रा लंगर, भारी साज राज रा भाव। सत रा ग्रौटभ **रज** रा सारण, **रज** रा कोट तणौ महाराव।

—ग्राईदांन पाल्हावत

६ चांदी, रजत।

उ०—सुभ सुभड़ मंत्रि कति लोक सब्ब। दुति करति नजर घण **रज** दरब्ब।

—सू. प्र.

सं. पु.–७ जल, पानी।

८ बादल, मेघ।

९ वाष्प, कोहरा।

१० स्तन पाई मादा प्राणियों के योनि द्वार से प्रतिमास निकलने वाला रक्त जो गर्भकाल में बंद रहता है। ग्रार्तव। (ग्रनेका.)

उ०—तरुवर साखा मूळ बिन, **रज** वीरज रहिना। ग्रजर ग्रमर ग्रतीत फळ, सौ दादू गहिता।

—दादूवांणी

११ पुष्परज, मकरंद, पराग। (डिं. को.)

१२ केसर।

१३ धार्मिक क्षेत्र में, प्रकृति के तीन गुणों में से दूसरा गुण, रजोगुण। (सांख्य)

उ०—१ सत **रज** तम रस पंच रहत रस, ता रस सूं मन लागा। यम्रत जरै प्रांण रस पीवै, भरम गया भै भागा।

—ह. पु. बां.

उ०—२ सतगुण अधिक सोई है ग्यांना, **रज** तम दोई अग्यांना। रज तम गुण का वेग प्रचंडा, सत्वगुण ग्यांन नसाया।

—स्री सुखरांम जी महाराज

१४ आकाश, गगन।

१५ धूल का कण, जर्रा।

उ०—१ तौ पण प्रताप मेछां तणौ, अतस दाप बाधौ अकस। राव रांण कांण लेखै न **रज**, एक पांण थंभै अरस।

—रा. रू.

उ०—२ रण कर रज रज हुए, रवि ढंकै **रज** हूंत। रज जेती धर ना दिये, रज रज व्है रजपूत।

—नाथूरांम महियारियौ

१६ अंधकार।

१७ मानसिक अन्धकार, अज्ञान।

१८ मेल।

१९ पाप। (अनेका.)

२० भुवन-लोक।

२१ कांति, आभा, नूर।

उ०—लोयण लागणिया तणिया लजवाळा। कोयण काजळिया रळिया **रज** वाळा।

—ऊ. का.

२२ शौर्य, पराक्रम, वीरता।

उ०—मुख नहं नूर उछाह मन, बळ नहं कंध विसेख। मावड़िया लोयण मही, **रज** हुंदी नहं रेख।

—बां. दा.

२३ रौब, प्रभाव।

२४ क्षत्रित्व, रजपूती। (अनेका.)

उ० – पड़पंच करै न लाज जिकां पिंड, खोटौ लाभ कुलाभ खरौ। **रज** वेचवा न आयौ रांणौ, हाटां बीच 'हमीर' हरौ।

—पृथ्वीराज राठौड़

२५ क्षत्रिय, रजपूत।

उ०—चेतै नह चारण चव्यां, **रज** वौ नह पिण रज्ज। खाय खपै खळ खूंसड़ा, भोम जाय जिण भज्ज।

—रेवतसिंह भाटी।

२६ राज्य, सत्ता।

उ०—१ ताहरां पतिसाह जी हिंदुवां कांनी देखि अर कहियौ जु राठौड़ छै सु तौ **रज** रा धणी छै। राजा छै।

—द. वि.

उ०—२ उमरावां दाखी अरज, कुसळि करण **रज** काज। जगत अछांनी जांणणौ, सो मांनी महाराज।

—रा. रू.

२७ टुकड़ा, खण्ड।

उ०—१ निहसै खळां 'नवल्ल' रौ, अग्गै दळां दुझाल। हिच पड़ियौ **रज रज** हुवै, सांद्रू सूरज माल।

—रा. रू.

२८ वीर्य की बूंद या कतरा।

उ०—तरुवर साखा मूळ बिन, **रज** वीरज रहिता। अजर अमर अतीत फळ, सौ दादू गहिता।

—दादूबांणी

सं. पु.-२९ एक सप्तर्षि, जो वसिष्ठ एवं ऊर्जा के पुत्रों में से एक था।

३० धर नामक वसु का एक पुत्र।

३१ विरज राजा का पुत्र एक राजा।

३२ स्कंद का एक सैनिक।

रू० भे०—रज्ज।

रजक-सं. पु. [सं.] (स्त्री. रजकी) १ वस्त्र धोने वाला धोबी। (डि. को.)

उ०—अरि गज घटा पीठि पछटै इम। जळ सिल तटा **रजक** पछटै जिम।

—सू. प्र.

रू० भे०—रजिक।

२ देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—कुंवर तुहाळौ स्रीकमळ, नित भळहळतौ नूर। देखतड़ां दुख दूर व्है, पाय **रजक** सुख पूर।

—बां. दा.

रजग-देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—काळ रहंदा गाळ **रजग** रोजी जाकी।

—केसोदास गाडण

रजगुण-देखो 'रजोगुण' (रू. भे.)

रजडंबर, रजडंमर-सं. पु. [सं. रजस्+आडंबर] धूल या गर्द का गोटा, गुब्बारा जो आकाश में छाकर अंधकार कर देता है।

उ०—मिळै **रजडंबर** सु ब्रहमंड। झुल्यौ विचवांसुर तिमर झुंड।

—अज्ञात

रजढांणी-सं. स्त्री.-राजधानी।

उ०—ब्रहमंड इकवीस मंड तोरी **रजढांणी** ।
—केसौदास गाडण

रजणी—देखो 'रजनी' (रू. भे.)

रजणीचर–देखो 'रजनीचर' (रू. भे.)

रजणौ, रजबौ–देखो 'राजणौ राजवौ' (रू. भे.)

उ०—१ रांम रजू तौ में रजू, मैं न रजू **रज** रांम ।
हरीया जांमण अर मरण, जांह तांह हरि सुं कांम ।
—अनुभव वांणी

उ०—२ रांम सरखा नरप कोय यळ ना **रजै** ।
छात्रपत रांम सम रांम करणां छजै । —र. ज. प्र.

रजतंत—सं. पु. [सं. राज+तत्व] शूरता, वीरता ।

रजत–सं. स्त्री. [सं. रजतम्] १ चांदी, रूपा । (अ. मा., डिं. को., ह. नां. मां.)

उ० —१ देव पितर इन सूं डरै, रसक तरै किण रीत ।
हेम **रजत** पातर हरै, पातर करै पलीत । —बां. दा.

उ०—२ वणि रतन हौदा वाधि, सोवनी **रजत** असाधि ।
—सू. प्र.

२ स्वर्ण, सोना (अ. मा., डिं. को.)
३ पृथ्वी, भूमी । (नां. मा.)
४ स्वर्ण, कंचन । (अ. मा.)
५ रक्त, रुधिर ।
६ हाथी दांत ।
७ कंठहार ।
८ शाकद्वीप के अस्ताचल का नाम । (पौराणिक)
९ नक्षत्र ।
वि०–१ लाल * (डिं. को.)
२ शुभ्र, श्वेत । * (डिं. को.)
३ चांदी का बना, रूपाहैला ।
४ उज्ज्वल ।
रू० भे०—रजित, रयय ।

रजतकूट–सं. पु. [सं.] मलय पर्वत की एक चोटी ।

रजत-धात, रजतधाता रजतधातु,–सं. पु. [सं. रजत धातु] १ स्वर्ण, सोना । (ह. नां. मा.)
२ चांदी ।

रजताचळ–सं. पु. [सं. रजताचल] १ कैलाश पर्वत । (डिं. को.)
२ अस्ताचल ।

रजतात–सं. पु. [सं. रजतातः] सूर्य, भानु । (क. कु. बो.)

रजताद्रि—सं. पु. [सं.] कैलाश पर्वत ।

रजथांन–देखो 'राजस्थांन' (रू. भे.)

रजधर–देखो 'राजधर' (रू. भे.)

उ०—मिणधर छत्रधर अवर गेल मन,
ताइधर **रजधर** 'सींघ' तण ।
पूंगी दळ पतसाह पैरतां, फेरै कमळ न सहंस फण ।
—महारांणा प्रताप रौ गीत

रजधरम–सं. पु. [सं. राजधर्मः] १ क्षत्रित्व, रजपूती ।

उ०—१ 'आसकन' तणां 'नींबा' हरा वापयण, **रजधरम** सार मुंहडै रहायौ । प्रथी साधार व्रदधार होता पहल, प्रथी साधार व्रद अवै पायौ ।
—दुरगादास राठौड़ रौ गीत

उ०—२ **रजधरम** राखियौ भूप 'रासा' हरै ।
गजधरम राखियौ गरड़ गांमी । —द. दा.
२ वीरत्व, पराक्रम ।
३ राज्यधर्म ।
४ देखो 'रजोधरम' (रू. भे.)

रजधांणी, रजधांन, रजधांनी–देखो 'राजधांनी' (रू. भे.)

उ०—१ पुर चळ चळ मुख अन्न न पांणी ।
रिधी सोध लीधी **रजधांणी** । —रा. रू.

उ०—२ धरम्म बिनां देखो धरणी में भयै किते हक भंगी ।
धरम प्रताप धरापति धारत, **रजधांनी** बहुरंगी । — ऊ. का.

रजधारी–देखो 'रजधर' (रू. भे.)

रजन–सं. स्त्री.–बादल । (अ. मा.)

रजना–सं. स्त्री.–संगीत की एक मूर्च्छना ।

रजनि, रजनी–सं. स्त्री. [सं. रजनी] १ रात्रि, निशा, रात । (अ. मा., डिं. को., नां मा., ह. नां. मा.)

उ०—दादू धरती को अम्बर करै, अम्बर धरती होइ । निस अंधियारी दिन करै, दिन को **रजनी** सोइ ।
—दादूवांणी

२ लाख, लाक्षा ।
३ हल्दी । (अ. मा.)
४ जतुका नामक लता
५ दारू हल्दी ।
६ एक पौराणिक नदी ।
७ हाथी ।
८ गर्द ।

उ०—गुडियंत जूह गडाड ए, सरजीत जांणि पहाड ए। मदगंध मद ऊमंड ए, हय पाई **रजनी** ऊडु ए। —गु. रू. बं.

रू० भे०—रजणी, रजीनी, रयणि, रयणी, रयनि, रयनी।

रजनीकर–सं. पु. [सं.] चन्द्रमा।

रजनीचर–सं. पु. [सं.] १ चन्द्रमा, चांद।

२ राक्षस, असुर।

उ०—देखि देखि दांनव अति दारुन, राजिव नयन भयै रोसारुन। **रजनीचरन** करन निरमूळहि, सारदूळ चढ़ि गहिय त्रिशूळहि। —मे. म.

रू० भे०—रजणीचर,

रजनीति–देखो 'राजनीति' (रू. भे.)

उ०—तिण रीति सु बुद्धि धरम सी तिकौ, धुरा हस्ति ऊंडी धरै। जल वाली पालि बांधै जरु, काज **रजनीति** हि करै। —ध. व. ग्रं.

रजनीपत, रजनीपति, रजनीपती–सं. पु. [सं. रजनी+पति] चन्द्रमा। (डिं. को.)

रजनीमुख–सं. पु. [सं.] सायंकाल, संध्या। (डिं. को.)

रजनीस–सं. पु. [सं. रजनीश] चन्द्रमा।

उ०—तरवर नदियांण सुरसरी सुरतर, सरपां गज ऐरावत सेस। सरां नखत **रजनीस** मांनसर, अवनीसां ओपम अवधेस। —र. रू.

रजपती, रजपत्ती–सं. पु. [रा. रज=भूमि+सं. पति] भूपति, राजा।

उ०—जो रचना जगपत्ती, लोतै आळ भ्रमे त्रयलोकं। सोई सत्यं सद्रढं, रेखा सार अंक **रजपत्ती**। —रा. रू.

रजपाट–देखो 'राजपाट' (रू. भे.)

उ०—हणै गज झूलकई **रजपाट**, झडै रिण दोयण दे खग झाट। —पे. रू.

रजपूत–सं. पु. (स्त्री. रजपूतण) १ सिपाहि, सैनिक।

उ०—इसड़ी बातां सुणि भीमराजजी उठ मुजरौ कर कही बाबाजी साहिब हूं तो आपरौ **रजपूत** छूं। —मारवाड़ रा अमरावां री बात

२ योद्धा, भट, वीर।

उ०—१ एक बुरहांन पठांण वडौ **रजपूत** पेहली राव मालदे रै वास थौ। पछै छांड नै नागौर रा धणी रै वास वसीयौ थौ, सु बुरहांन नै प्रिथीराज जी घणौ सुख थौ। —राव मालदै री वात

उ०—२ रायसिंह साथै वीकौ ईडरियौ नै पठांण हबीब वडा **रजपूत** था सु बाजिया। —नैणसी

३ अनुचर, सेवक।

उ०—ताहरां दलै कह्यौ–वीरमजी आज वाळा दिन थांहरा दिया छै। थें मांहरै गुढै आवस्यो तो म्हे थांरा हीड़ा करस्यां। थांहरा **रजपूत** छां। —नैणसी

४ देखो 'राजपूत' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ रुळचा खुळचा **रजपूत** बिरांमण मिळगा बिटळा। वैस्य मिळ गया विकळ सूद्र कुळ रळगा सिटळा। —ऊ. का.

उ०—२ फेर पाछौ आयनें बोल्यौ–म्हारी मा कह्यौ है **रजपूत** तो लेखै लेवै धणी है। —भि. द्र.

रजपूतण–देखो 'रजपूतांणी' (रू. भे.)

उ०—पण थूं मांनजा भीमा। क्यूं म्हारै हाथ सूं एक **रजपूतण** नै रांड बणावै। —रातवासौ

रजपूतपण, रजपूतपणौ–सं. पु.–क्षत्रित्व, वीरत्व।

उ०—वित धाड़ धकै अनरौ सुहवै। **रजपूतपणौ** तन रौ न रहै। —पा. प्र.

रजपूतवट–सं. पु.–रजपूती का गौरव, क्षत्रित्व, वीरत्व।

उ० – तिसा ही वागां रा वणाव, तिसा ही मूंछां रा मरट, तिसा ही भुजां रा आंमला, तिसा ही पोरस रा गाढ़, तिसा ही कांमवट रा अंग, तिसा ही **रजपूतवट** रा आचार देख नै महाराजा राजेसर अजमे रै थांणै राखैआ छै। —रा. सा. सं.

रजपूतांणी–देखो 'राजपूतांणी' (रू. भे.)

उ०—१ **रजपूतांणी** रुच सींचांणी सिरखी। नैणां जळ भरती सैणां थळ निरखी। —ऊ. का.

उ०—२ जाया **रजपूताणियां**, वीरत दीधी वेह। प्रांण दियै पांणी पुणग, जावा न दियै जेह। —बां. दा.

रजपूताई, रजपूती–देखो 'राजपूती' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ तरै कह्यौ, जैतसी भतीज, तूं **रजपूताई** में सखरौ छै, कळियां वैरां रौ वाहरू छै, तिकौ ग्रौ वैर पहिर।

—जैतसी ऊदावत री बात

उ०—२ हरीया दुबिध्या दूरि करि, पासौ पकड़ौ एक। **रजपूती** जिसकी रहै, छाडि न जावै टेक।

—ग्रनुभववांणी

उ०—३ महिजातां चींचातां महिळा, ऐ दुय मरण तणां ग्रवसांण। राखौ रे किंहिक **रजपूती** मरद हिंदु की मुस्सलमांण।

—बां. दा.

रजबंद, रजबंध–सं. पु. [सं. रजबंध] १ मासिक धर्म रुक जाने की स्थिति।

२ देखो 'रजामंद' (रू. भे.)

उ०—जयचंद हरा तो सिर जपूं **रजबंद** सब दिन रहूं। इण भाकर सूं राजस ग्रगड, सौ सौ कोस दिसा चहूं।

—पा. प्र.

रजबट–देखो 'रजवट' (रू. भे.)

उ०—पन प्रबळ पिसन पिक्खै न पिट्ठ। **रजबट** बटदै रट्ठोर रिट्ठ।

—ऊ. का.

रजबनांमौ–सं. पु. [फा. रजम+नामः] फारसी भाषा में ग्रनूदित महाभारत का ग्रंथ।

उ०—भारत रौ तरजुमौ फारसी में ग्रकबर करायौ, नांम **रजबनांमौ**।

—बां. दा. ख्यात

रजबळी, रजबली–सं. पु.–१ राजा। (डिं. को.)

२ वीर, बहादुर।

रजबौ–सं. पु.–१ साग ग्रादि पकवान में दी जाने वाली खटाई।

उ०—मांस उतार-उतार टुकड़ियां में घातजै छै। मिरच धाणा सूंठ लूण हळदी वेसवार दीजै छै। दही रो **रजबौ** दीजै छै।

—रा. सा. सं.

२ देखो 'रजमौ' (रू. भे.)

रजमंडळ–सं. पु.–धूलि समूह, धूल का गुब्बारा, गर्द के बादल।

उ०—हैमरां हींस नर लसकरां क्रह हुई, वहै सिंधुर कहर समर वेंडा। ग्राहाडा खंड **रजमंडळ** ग्रोछाइयौ, पहाडां ग्रगम सर सुगम पेंडा।

—महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत

रजमी–सं. स्त्री.–एक प्रकार की लाल रंग की मिट्टी।

रजमौ–सं. पु.–१ साहस, पुरुषार्थ, वीरत्व।

उ०—रजब **रजमा** पाइया गुरु दादू दरबार। धरै ग्रधर का सुख लह्या, सनमुख सिरजण हार।

—रजबदास जी महाराज

२ शक्ति, बल।

उ०—क्या कहिए कहणी कहा, **रजमां** रहणी मांहि। सौ साहिब कै हाथि है, दे तौ ग्रचिरज नांहि।

—ह. पु. वां.

३ रजोगुण।

रू० भे०–रजबौ।

रजरोगी–वि.–राज्य प्राप्त करने की इच्छा वाला।

उ०—जोगी कहौ, भव भोगी कहौ, **रजरोगी** कहौ, कौ केसेइ हैं। न्याई कहौ, ग्रौ ग्रन्याई कहौ, कुकसाई कहौ जग जेसेइ हैं।

—ऊ. का.

रजवंती–सं. स्त्री. [सं. ऋतुमती] रजस्वला स्त्री।

रजवड़–१ देखो 'राजवण' (रू. भे.)

उ०—थारे घूंघटिया में सोळै सूरज ऊग्या। म्हारी **रजवड़** घूंघटियौ हीरां जड़चौ।

—लो. गी.

२ देखो 'रजवाड़ौ' (रू. भे.)

रजवट, रजवट्ट–सं. पु.–क्षत्रित्व, रजपूती, वीरत्व। (डिं. को.)

उ०—१ तौ रघुरांम रै रघुरांम, **रजवट** धारियां रघुरांम।

—र. ज. प्र.

उ०—२ ग्रकबर हियै उचाट, रात दिवस लागी रहै। **रजवट** वट समराट, पाटप रांण 'प्रतापसी'।

—दुरसौ ग्राढौ

उ०—३ एकण दिसि रावळ ग्रनम्म, ग्रालिमपति दिसि एक। भभकारै बेहुं सुभट, राखण **रजवट** टेक।

—प. च. चौ.

उ०—४ विचत्रांण कोट जमणां विचै गज भिड़जां कीधां गरा। **रजवट्ट** साभ चडिया रथे, हिच पड़िया 'ऊदा' हरा।

-- रा. रू.

रू० भे०–रजबट, रजवाट, रजव्वट।

रजवण–देखो 'राजवण' (रू. भे.)

उ०—वनड़ी थारै ए घूंघटिए रै कारणै कजळी देसां रा हगती ल्याया म्हारी **रजवण**, घूंघटियौ हीरां जड़्यौ। मारू देसां रा

घुड़ला ल्याया, म्हारी रजवण, वनड़ी हीरां ए जड्चौ मोत्यां ए जड़चौ । थारे घूंघटिए में चांद पवास्यौ म्हारी रजवण ।
—लो. गी.

रजवांण—सं. स्त्री.—राजपूती, क्षत्रित्व ।

रजवाइत—सं. पु.—१ राज्यत्व, राजापन ।
सं. स्त्री.—२ राज्य करने की क्रिया या भाव ।

रजवाड़, रजवाड़ौ—सं. पु.—१ रियासत या राज्य ।

उ०—१ तद संवत १५८८ जेठ बद ३ नै मालदे राव हुवौ । पण वडौ दुस्ट, सू साराई रजवाड़ां सू किसौ कियौ । —द. दा.

उ०—२ मूळी रौ पापा **रजवाड़ां** में रैवणियौ स्यांणौ हाजरियौ, राजनीत सूं रंग्योड़ौ-सुधरचोड़ौ मिनख ! ख्यात अर जात नै जांणौ विड़द अर वडाई वखांणौ । —दसदोख

रू० भे०—रजवाडौ ।

रजवाट—देखो 'रजवट' (रू. भे.)

उ०—'बखत' सुत आउवै भाट खग बजाई,
काट घण दळां **रजवाट** केवै ।
—ठा. सिवनाथसिंह कूंपांवत रौ गीत

रजवाडौ—देखो 'रजवाड़ौ' (रू. भे.)

उ०—रावां सिर-हर राव, राज सिर-हर **रजवाडां** ।
म थरहर हैजमां संक थक, थरहर सीवाडां ।
—पनां

रजवार—देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)

उ०—म्हारै मन वसियो भंवर, उर वसीयौ **रजवार** ।
मो सूगणी रो साहिबौ, नीला को असवार ।
—पनां

रजव्वट—देखो 'रजवट' (रू. भे.)

उ०—भारत भू भरतार, **रजव्वट** रंजणौ ।
अवतरियौ नर एक गनीमां गंजणौ ।
—किसोरदांन बारहठ

रजस्वळा—सं. स्त्री. [सं. रजस्वला] वह स्त्री जिसकी ऋतुमति की अवस्था चल रही हो ।

उ०—१ **रजस्वळा** नारीह, कथा गोप किण सूं कहूं ।
समझौ हरि सारीह, सरम मरम री सांवरा ।
—रांमनाथ कवियौ

उ०—२ लता जु पुहपवती छै । सु ए **रजस्वळा** कही छै ।
तांह सों पवन परस करै छै । इह मतवाळा को अंग छै ।
—वेलि टी.

रू० भे०—रज्जसुळा ।

रजा—सं. स्त्री. [अ.] १ इच्छा, मरजी, मंसा ।

उ०—१ अमरसिंह गजसिंहजी रै बडौ कुंवर । सांचोर रा चहुवांणां रौ दोहितौ । सो गजसिंहजी री **रजा** नहीं ।
—अमरसिंह राठौड़ री बात

उ०—२ स्री दीवांण रै भलां हुवै ज्युं करज्यौ पिण खांनजादां नै लिखीयौ छै । आगै तौ धणीयां री **रजा** ।
—राव रिड़मल री बात

२ कृपा, दया, अनुग्रह ।

उ०—१ ररा मन राखि रजा में रहिए, विन हरि **रजा** वहौत दुख सहिए ।
—ह. पु. वां.

उ०—२ रांम वाळी **रजा** सीस ज्यांरै रहै । कुण त्यांनै हुवा हींणं मांणं कहै ।
—र. ज. प्र.

उ०—३ हम खिजमत कबूल, हम्म फरजन्न तुमारै । हम सिरि ऊपरि **रजा**, हुकम हम कीयौ आरै ।
—गु. रू. बं.

उ०—४ इव करतां घणा वरस बीतिया बाशाह री **रजा** महरबांनी घणी रहै ।
—राठौड़ राजसिंह री वारता

३ आज्ञा, हुक्म ।

उ०—१ ध्यावतां निजर तो सूं धरै, तो निवांण निसचै तिरै । राजाधिराज तोरी **रजा**, ईसर चा सिर ऊपरै ।
—ह. र.

उ०—२ **रजा** तुम्हारी रांम कहौ त्यूं मैं करूं । मन गहि पवन संवाहि अटकि उलटौ धरूं ।
—ह. पु. वां.

उ०—३ रीस करौ भावै रळियावत (यत) गज भावै खर चाढ गुलांम । माहरै सदा ताहरी माधव, **रजा** सजा सिर ऊपर रांम ।
—प्रथीराज राठौड़

४ अनुमति, स्वीकृति, सहमति ।
५ छुट्टी, रुखसत ।
६ खुशी, प्रसन्नता ।
७ आशा, उम्मीद, चाह ।
८ राजा होने का भाव ।

रजाइस–सं. स्त्री.–१ आज्ञा, हुक्म ।
२ राज्यत्व ।
रू० भे०–रजायस ।

रजाई–सं. स्त्री.–१ सर्दी के बचाव के लिये ओढ़ने का लिहाफ या खोला जिसमें रूई भरी हुई होती है ।
उ०—ग्यांन पथरणौं बरियौ गूढां, मेली विद्या **रजाई** मूढां ।
—ऊ. का.
२ राज्य प्रथा । राज्यत्व ।

रजापण, रजापणौ–सं. पु.–१ हर्ष, प्रसन्नता ।
२ सहमति ।
३ देखो 'राजापणौ' (रू. भे.)

रजाबंद–देखो 'रजामंद' (रू. भे.)
उ०—१ बादशाह देख बहुत **रजाबंद** हुवौ ।
—गौड़ गोपाळदास री वारता
उ०—२ इसौ **रजाबंद** हुवौ तींकौ क्यूं बखांण करणै में नहीं आवै ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

रजाबंदी–देखो 'रजामंदी' (रू. भे.)
उ०—बादसाह नूं चाहिये कांम करै तिण में **रजाबंदी** प्रभू री चाहै मन री चाही न करै ।
—नी. प्र.

रजाबंध–देखो 'रजामंद' (रू. भे.)
उ०—भीवैंजी कह्यौ, पठांण रीसांणौ जाय छै, तिकौ इसां नै बांह बेली राखीजै, किण हेक वेळा आडौ आवै, तिण सूं अठै पाछौ ल्याय, गोठ जीमाय नै सीख देम्यां, गाढौ **रजाबंध** करि हंसि हसाय नै सीख द्यां नै सीख करां ।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

रजाबंधी–देखो 'रजामंदी' (रू. भे.)
उ०—सब रै मुंहडे आज भरमल ही भरमल होय रही छै । भली ही **रजाबंधी** सगळां नूं हुई ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

रजामंद–वि. [फा. रिजामंद] १ जो प्रसन्न या खुश हो ।
उ०—सो जलाल सारां नूं रीझ मौज जसा दीठा जिसी दीवी । सारा **रजामंद** हुवा ।
—जलाल बूबना री वात
२ संतुष्ट ।
३ जो किसी कार्य या बात पर सहमत हो, तैयार हो । राजी ।
उ०—तरै बादसाह कहियौ–तुम जलाल रै पास जावौ और छोटी रा नारेळ हमारे ठहरावौ तो हम **रजामंद** हैं ।
—जलाल बूबना री बात
रू० भे०–रजबंद, रजबंध, रजाबंद, रजाबंध ।

रजामंदी–सं. स्त्री. [फा. रिजामंदी] १ 'रजामंद' होने की अवस्था या भाव ।
२ प्रसन्नता, खुशी ।
उ०—ज्ये क्यूं करै सो संसार रा भला व प्रभू री **रजामंदी** नूं करै ।
—नी. प्र.
३ सहमति, अनुमति ।
उ०—तौ बळद, कुत्तौ गोघू अर मिनख री **रजामंदी** सूं ऊमर री औ नवौ जमा खरच व्हैगौ ।
—फुलवाड़ी
४ इच्छा, मर्जी ।
रू० भे०–रजाबंदी, रजाबंधी ।

रजायस–देखो 'रजाइस' (रू. भे.)

रजि–देखो 'रज' (रू. भे.)
उ०—नगा असि नाळ, वजै विकराळ । धरा रजि धोम, वगी उडि वोम ।
—सू. प्र.

रजिक–१ देखो 'रजक' (रू. भे.)
उ०—बंध बंदूकां बंध, धुप छोळां जळधारां । दिगै फूल दारुवां, **रजिक** पाड़िजै अपारां ।
—सू. प्र.
२ देखो 'रिजक' (रू. भे.)

रजित–देखो 'रजत' (रू. भे.)
उ०—वड वड कुळ वरियांम, साख पैंतीस सकाजां । मुता दियण वासतै **रजित** स्रीफळ सभि राजां ।
—सू. प्र.

रजितमई, रजितमय–वि.–१ चांदी का, चांदी सम्बन्धी ।
२ श्वेत ।

रजियोड़ौ–देखो 'राजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रजियोड़ी)

रजिस्टर–सं. पु. [अं.] पंजिका, पुस्तिका ।

रजिस्टरी–सं. स्त्री. [अं.] १ राज्य के नियमानुसार किसी सरकारी

कार्यालय में प्रतिज्ञा-पत्र आदि को किसी पंजिका में दर्ज कराने का कार्य। पंजीयन।
२ डाकखाने में, सामान्य दर से अधिक दाम देकर, पंजीकृत करा कर, भेजा जाने वाला पत्र, पार्सल आदि।
३ किसी जमीन या मकान आदि की खरीद के दस्तावेज।

रजिस्ट्रार-सं. पु. [अं.] किसी विश्व विद्यालय, हाईकोर्ट, वोर्ड आदि के कार्यालय में होने वाला पंजीयक का पद।
२ उक्त पद पर कार्य करने वाला व्यक्ति।
३ कानूनी दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाला अधिकारी।

रजी-देखो 'रज' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१ उडे तुरंग तें **रजी** समग्ग धावती अटे।
छके छकांन छावती छिता, विछावती छटे।
—ऊ. का.

उ०—२ दळ दोऊं दिस आवरे, सूर दमांमां देह।
हरीया रवि छायौ **रजी**, आयां गयां न छेह।
—अनुभव वांणी

उ०—३ कोसिक ज्याग अभंग सिहायक, दांणव घायक दूधरी पाय **रजी** रघुराम परस्सत, आ त्रीय गौतम उधरी।
—र. ज. प्र.

उ०—४ भळहळ बूग सावळ भूल, गुडिली गयण मिळि गोधूल।
ऊपर **रजी** धार अंधार, दौड़े खुरम रा दळकार।
—गु. रू. बं.

रजीडंट-देखो 'रेजीडेंट' (रू. भे.)

रजीदांनी-सं. स्त्री. [सं. रजः+फा. दान+रा. प्र. ई.] स्याहि सुखाने के लिए बारीक रेत रखने का पात्र, जिसके ढक्कन में चलनी की तरह छिद्र होते हैं। बालूदानी।

रजीनी-देखो 'रजनी' (रू. भे.)

रजु-१ देखो 'रज्जु' (रू. भे.)
२ देखो 'रज्जू' (रू. भे.)

रजुआत-सं. स्त्री. [अ. रुजूआत] १ मित्रता, मेल-जोल।
उ०—रावळ माहप रा वागड़ धणी। ऐ सदा चीतोड़ रा रांणा री चाकरी करता पछै सै दिलीरा पातसाहां सु पिण **रजुआत** रखै छै। —नैणसी
२ लगाव, झुकाव।

रजुता-सं. स्त्री.-१ रज्जू होने की अवस्था या भाव।
२ सरलता, सीधापन
३ सहमति।

रजू-१ देखो 'रज्जू' (रू. भे.)
उ०—१ रांम **रजू** तौ में रजू, मैं न रजू रज रांम। हरीया जांमण अर मरण, जांह तांह हरि सूं कांम।
—अनुभव वांणी

उ०—२ दोनुं चितोड नु चालीया। चितोड़ जाइ **रजू** हूवा।
—चौबोली

उ०—३ पीछै भींवराजजी घोड़ा ५० सूं चढ दिल्ली गया। नै पातसाह हमायूं रै पावां लागा। तद पातसाहजी चाकरी मैं **रजू** किया। —द. दा.

उ०—४ पाखती भोमिया था त्यांनू मेल्हिया और मारिया सो लोग सगळा **रजू** हुइ गया। —ठा. जे.

२ देखो 'रज्जु' (रू. भे.)

रजूबाकी-सं. स्त्री.-ऋण का लेखा जोखा करने के बाद ऋण की अवशिष्ट रहने वाली रकम।

रजूनांमौ-स. पु. [अ. रजू+फा. नामः] स्वीकृति-पत्र, सहमति-पत्र।
उ०—सं. १७१६ चैत्र मैं एक दिन आलमगीर कहायौ साहिजांन जी कैद मैं हा त्यांनूं, जो हजरत पातसाही इनायत करण का मेरे तांई **रजूनांमा** लिखदेवौ। —द. दा.
रू० भे०—रज्जुनांमौ।

रजोकुळ-स. पु.-राज्य कुल।

रजोगुण-सं. पु. [सं.] धार्मिक क्षेत्र में, प्रकृति के तीन गुणों में से दूसरा गुण। इसकी अभिव्यक्ति, सात्विक तथा तामसी वृत्ति के बीच की दशा होने पर होती है।
उ०—**रजोगुण** ब्रह्मगुण सातसी, तिकौ ग्यांन पतिसाह गिणी। तांमसी रूप सकर तणौ पति गुणा मा रांम पिणि।
—पी. ग्रं.
रू० भे०-रजगुण।

रजोगुणी-सं. पु.-१ ब्रह्मा। (ना. मां.)
सं. स्त्री.-२ रजोगुण वाली वृत्ति या भावना।
वि.-रजोगुण के भाव वाला।
उ०—अबै इण वखत मैं वे रजपूत **रजोगुणी** राज राग रंग में रंजीयोड़ा बीर है।
—वी. स. टी.

रजोदरसण-सं. पु. [सं. रजो-दर्शन] स्त्रियों की रजस्वला होने की अवस्था या दशा।

रजोधरम-सं. पु. [सं. रजोधर्म] स्त्रियों का मासिक धर्म।
रू० भे०-रजधरम।

रजोमूरती–सं. पु. [सं. रजोमूर्ति] ब्रह्मा।

उ०—तु ही भीळणी भेख संभू भुळावै। **रजोमूरती** लेख तूही रुळावै।

—मे. म.

रज्ज–१ देखो 'रज' (रू. भे.)

उ०—१ सांम तणौ बळ सूरमा, रिमां गिणौ तिल **रज्ज**। ऊथाळै अजमाल छळ, भाळै प्रांण सकज्ज।

—रा. रू.

उ०—२ गज्ज ऊथोळिया **रज्ज** सूं गूडळा। धोम मै पव दीपै फिरै धूधळा।

—गु. रू. बं.

उ०—३ हाळिया एहड़ा घेर वंकी घड़ा। **रज्ज** उड्डै रवी धोमतै धूंधळै।

—सू. प्र.

२ देखो 'राज्य' (रू. भे.)

उ०—ओरंग पतिसाही ग्रही, दहवटि करि दाराह। **रज्ज** पियारा रज्जियां, भाइ दुपियाराह।

—ध. व. ग्रं.

रज्जणौ, रज्जबौ–देखो 'राजणौ राजबौ' (रू. भे.)

उ०—दकूळ पीत लोभयं, सुरूप बीज सोभयं। निखंग पीठ **रज्जयं**, सुचाप पांणि सज्जयं।

—र. ज. प्र.

रज्जसुळा–देखो 'रजस्वळा' (रू. भे.)

रज्जियौ–देखो 'राजवी' (रू. भे.)

उ०—ओरंग पतिसाहि ग्रही, दहवटि करि दाराह। रज्ज पियारा **रज्जियां**, भाइ दुपियाराह।

—ध. व. ग्र.

रज्जी–१ देखो 'रज' (रू. भे.)

२ देखो 'रज्जु' (रू. भे.)

३ देखो 'रज्जू' (रू. भे.)

४ देखो 'राजा' (रू. भे.)

रज्जु–सं. पु. [सं.] १ रस्सी, डोरी, रस्सा।

उ०—**रज्जु** विलंबी नै कुमर, पइसै कूप मझार।

—वि. कु.

२ बागडोर।

३ स्त्रियों के शिर की चोटी।

४ शरीरस्थ रंग विशेष।

५ एक प्रमाण विशेष (जैन)

वि. वि.–जैन मतानुसार ३, ८१, २७, ९७०, इतने मण के वजन को 'एक भार' कहते हैं। ऐसे १००० भार का लोहे का गोला उसे कोई देवता ऊंचे स्थान से नीचे को डाले, वह गोला ६ मास, ६ दिन, ६ पहर और ६ घड़ी में जितना क्षेत्र पार कर, उल्लंघन कर नीचे आवै, उतने क्षेत्र को एक रज्जु प्रमाण जगह कहते हैं।

६ देखो 'रज' (रू. भे.)

७ देखो 'रज्जू' (रू. भे.)

रू० भे०–रजु, रजू, रज्जी।

रज्जुनांमौ–देखो 'रजूनांमौ' (रू. भे.)

रज्जू–वि.–१ प्रसन्न, खुश।

२ सहमत, एकमत।

३ अनुकूल।

४ प्रत्यक्ष, सामने, रूबरू।

रू० भे०–रजु, रजू, रज्जी।

५ देखो 'रज्जु' (रू. भे.)

उ०—१ **रज्जू** में सरप सीप मांही रूपा, अन होता है योई। तमगुण यूं समांन सुसुप्ती, कहने मातर होई।

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ तरु जड़ सरप दराड़ दिस्ट मिटी, सुद्ध **रज्जू** आनम थांणी। जाग्रत स्वप्न सुसुपती तुरीया, च्यारूं ई भरम विलांणी।

—स्री सुखरांमजी महाराज

रटंत–देखो 'रट' (रू. भे.)

रटंती–सं. स्त्री.–माघ कृष्णा चतुर्दशी, जिस दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान करना उत्तम माना जाता है।

रट–सं. स्त्री.–१ ईश्वर या इष्ट के नाम को बार बार उच्चारण करने की क्रिया या भाव, ध्वनि, जप।

उ०—**रट** हरि मुख पति ध्यांन रहायौ। मंजण कर सिणगार मंगायौ।

—रा. रू.

२ किसी शब्द का बार बार किया जाने वाला उच्चारण या उच्चारण करते हुए याद करने का अभ्यास।

रटक–सं. स्त्री.–१ मुकाबला, सामना, भिड़ंत, टक्कर।

उ०—काळींगे ऊपरै करै काडमि कटक। राकसां हुंति रहमांण लीजै **रटक**।

—पी. ग्रं.

२ तीव्र गति से किया जाने वाला आक्रमण, हमला।

३ युद्ध, लड़ाई, झगड़ा।

उ०— साहां तणी धरा सिर साटै, रहतौ खाय लेतौ **रटक** ।
अंत दिन पैलां अनै आपरा, करि साथै लेगौ कटक ।

—राजा केसरीसिंघ शेखावत रौ गीत

क्रि. वि.–४ चाव से ।

उ०—गुठा जीमतां गटक, अंब नहिं भावै वांनै ।
राब रोगतां **रटक**, जरै नह सीरौ ज्यांनै ।

—जुगतीदांन देथौ

रू० भे०—रटक्क, रटाका, रट्टक ।
अल्पा०—रटकौ, रटक्कौ ।

रटकणौ, रटकबौ–क्रि. स.–१ दौड़ना. भागना ।

उ०—धाड़ा पाड़ कर **रटके** धूरत, धन पटकै धरधूंस ।
नटके साधू बनै निराळा, सटके माळा सूंस ।

—ऊ. का.

२ मुकाबला करना, सामना करना, टक्कर लेना ।
३ आक्रमण करना, हमला करना, किसी पर टूट पड़ना ।
४ युद्ध या लड़ाई करना ।
रटकणहार, हारौ (हारी), रटकणियौ —वि.
रटकिओड़ौ, रटकियोड़ौ, रटक्योड़ौ —भू. का. कृ.
रटकीजणौ, रटकीजबौ —कर्म वा.
रटक्कणौ, रटक्कबौ — रू. भे. ।

रटकियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ दौड़ा हुआ, भागा हुआ. २ मुकाबला किया हुआ, सामना किया हुआ, टक्कर लिया हुआ. ३ आक्रमण या हमला किया हुआ, किसी पर टूट कर पड़ा हुआ. ४ युद्ध या लड़ाई किया हुआ ।
(स्त्री० रटकियोड़ी)

रटकौ–देखो 'रटक' (रू. भे.)

रटक्क–देखो 'रटक' (रू. भे.)

उ०—वधि चक्क उचक्कत राह वियै, करि हक्क कटक्क **रटक्क** कियै । —सू. प्र.

रटक्कणौ, रटक्कबौ–देखो 'रटकणौ, रटकबौ' (रू. भे.)

रटक्कियोड़ौ–देखो 'रटकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रटक्कियोड़ी)

रटक्कौ–देखो 'रटक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०–१ रिम न **रटक्कां** राचणा, जंगी जुड़ै न जंग । सिव जोगण भैरूं सगत, बिलखै लख बारंग । —रेवतसिंह भाटी

उ०—२ भटक्कां हजारां बहै, सरीखां बटक्कां भड़ै । **रटक्कां** बटक्कां, रिमां करै गाढै राव ।

—बुधसिंह सिंढायच

रटण, रटणी–सं. स्त्री.–१ रटने की क्रिया या भाव, रट, जाप ।
२ घोषणा ।
३ जिव्हा, जीभ । (अ. मा.)

रटणौ, रटबौ–क्रि. स. [सं. रटनम्] १ इष्ट या ईश्वर के नाम का बार-बार उच्चारण करना, जाप करना, जपना, रटना । भगवत् भजन करना ।

उ०—१ धन वे पुरख बडा पण धारी, खलक सिरोमण सुजस खटै । उमगै दांन ऊधमै आचां, रांम रांम मुख हूंत **रटै** ।

—र. रू.

उ०—२ उदर भरण घर घर अटै, **रटै** नहीं स्रीराम ।
सूंस करै कवडी सटे, ते गुण घटे तमांम । —बां. दा.

उ०–३ अथ ओमकार अक्षर उचार, निस दिवस नांम **रट** रांम रांम । —ऊ. का.

उ०—४ रांम रांम रसना **रटै** सोई जुग में साध ।
हरीया सिवरन सहज का, वाका मता अगाध ।

—अनुभव वांणी

२ किसी शब्द का बार बार उच्चारण करके याद करने का अभ्यास करना ।
३ किसी के गुण गाना, कीर्ति या यशोगान करना ।
४ कहना, बोलना ।

उ०—१ इम सुणि जबाब अवरंग हूं, रावत जसवंत रा **रटै** ।
नह दियां साह खावंद नरिंद, सीस दियां खावंद सटै ।

—सू. प्र.

उ०–२ **रटै** हैक 'पदमौ' 'रतनावत'
दूजौ 'पदम' **रटै** 'दौलावत' । —सू. प्र.

५ विलाप करना, रुदन करना, रोना ।

उ०—१ लागी दळि कळि मळयानिळ लागै, त्रिगुण परसतै खुधा त्रिस । **रटति** पूत मिसि मधुप रूंखराइ, मात स्रवति मधु दूध मिसि । —वेलि.

उ०—२ राजस्थांन **रटै** कविराजा, कीरत दांन कहांणी । गयौ जहांन हूंत गुण ग्राहक, 'मांन' हरौ माडांणी ।

—ऊ. का.

६ जोर से बोलना, चिल्लाना, चीखना ।
७ घोषणा करना ।
८ गर्जना ।
९ भूंकना ।
रटणहार, हारौ (हारी), रटणियौ —वि० ।
रटिओड़ौ, रटियोड़ौ, रटयोड़ौ —भू. का. कृ.

रटीजणौ, रटीजबौ —कर्म वा.
रट्टणौ, रट्टबौ, रठणौ, रठबौ, —रू. भे.

रटांण—सं. स्त्री.—१ अनाज या फलादि की परिपक्वावस्था।
२ रटने की ध्वनि।

रटा—सं. स्त्री.—टक्कर

उ०—रिमां धू उथाळौ चंडी रीम री **रटा** रौ जायौ। भालौ किनां ईस री जटा रौ जायौ भूत।

—सूरजमळ मीसण

वि०—गायक, गाने वाला।

उ०—दंती घटा छटा खग दांमणि, सेलां पटां सिळाव सर।
कवि जस **रटा** थटा गुण केकी, हरिदन छटा अजीत हर।

—महाराजा मांनसिंहजी रौ गीत

रटाका—देखो 'रटक' (रू. भे.)

उ०—ले भड़ां रटाकां पूर अरिंदा ताड़ब्बा लागा,
महावीर खीज में पाड़ब्बा लागा मूंठ।

—सुखदांन कवियौ

रटाणौ, रटाबौ—क्रि. स. ['रटणौ' क्रिया का प्रे. रू.] इष्ट व ईश्वर के नांम का बार बार उच्चारण कराना, जाप कराना, जपाना, रटाना। भगवत भजन कराना।
२ किसी शब्द का बार बार उच्चारण करवा कर याद कराने का अभ्यास कराना।
३ किसी के गुण गाने या यशोगान करने के लिये प्रेरित करना।
४ बोलाना।
५ रुदन या विलाप कराना, रुलाना।
६ घोषणा कराना।
रटाणहार, हारौ (हारी), रटाणियौ —वि.
रटायोड़ौ —भू. का. कृ.
रटाईजणौ, रटाईजबौ —कर्म वा.
रटावणौ, रटावबौ —रू. भे.

रटायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ इष्ट या ईश्वर के नाम का बार बार उच्चारण कराया हुआ, जाप कराया हुआ, रटाया हुआ, भगवत भजन कराया हुआ. २ किसी के गुण या यश गाने के लिये प्रेरित किया हुआ. ३ किसी शब्द का बार बार उच्चारण कराकर याद कराने का अभ्यास कराया हुआ. ४ बोलाया हुआ. ५ रुदन या विलाप कराया हुआ, रुलाया हुआ. ६ घोषणा कराया हुआ।
(स्त्री. रटायोड़ी)

रटावणौ, रटावबौ—देखो 'रटाणौ, रटाबौ' (रू. भे.)
रटावणहार, हारौ (हारी), रटावणियौ —वि.।
रटाविग्रोड़ौ, रटावियोड़ौ, रटाव्योड़ौ —भू. का. कृ.।
रटावीजणौ, रटावीजबौ कर्म वा.।

रटावियोड़ौ—देखो 'रटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रटावियोड़ी)

रटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ इष्ट या ईश्वर के नाम का बार-बार उच्चारण किया हुआ, जाप किया हुआ, जपा हुआ, रटा हुआ, भगवत् भजन किया हुआ. २ याद करने के लिये किसी शब्द का बार-बार उच्चारण किया हुआ. ३ किसी के गुण, यश या कीर्ति का गान किया हुआ. ४ कहा हुआ, बोला हुआ. ५ विलाप या रुदन किया हुआ, रोया हुआ. ६ जोर से बोला हुआ, चीखा हुआ, चिल्लाया हुआ. ७ घोषणा किया हुआ. ८ गर्जा हुआ. ९ भूंका हुआ।
(स्त्री. रटियोड़ी)

रट्टक—देखो 'रटक' (रू. भे.)

उ०—**रट्टक** तीरां की रची, धर अक्कट चित धार। फिर दट कर कीधी फतै, 'लाकहरट' की लार।

—जुगतीदांन देथौ

रट्टणौ, रट्टबौ—देखो 'रटणौ, रटबौ' (रू. भे.)

उ०—रीझ दिया रिड़माल नै, नव कोट ग्रभै नर। राव मुखां इम **रट्टियौ**, कमधज जोड़ै कर।

ठा. जुझारसिंह मेड़तियौ

रट्टियोड़ौ—देखो 'रटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रट्टियोड़ी)

रट्ठ—सं. स्त्री.—१ कड़ाके की सर्दी, तेज सर्दी।
२ देखो 'राष्ट्र' (रू. भे.)

रट्ठवड़, रट्ठवर, रट्ठोड़, रट्ठोर, रट्ठौड़, रट्ठौर—देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

उ०—१ आज विहांणै **रट्ठवड़**, लड़सी लंकाळा।

—सू. प्र.

उ०—२ वंस प्रगट धिन भासकर, रट कुळवट **रट्ठोड़**। भल तो 'पातल' मुच्छ बट, जग उप्रवट जस जोड़।

—जैतदांन बारहठ

उ०—३ रनबंका ध्वज धज धुर रहंत। हैं कौन हम **रट्ठोर** हंत।

—ऊ. का.

रठ–वि.–दृढ़, मजबूत ।

रठठ–सं. स्त्री.–१ भारी बोझ के कारण गाड़ी या शकट से चलते समय निकलने वाली ध्वनि विशेष ।
२ तलवार ।

उ०—'तेजलै' बियै कर **रठठ** भेळै तुरी, धोम पुड़ कठठ काय भटकती वीज ।

—मूळौ वीरांमियौ

रठठणौ, रठठबौ–क्रि. अ.–भारी बोझ के कारण गाड़ी या शकट का चलते समय आवाज करना ।

रठठाणौ, रठठाबौ–क्रि. स.–घींसना, घसीटना ।

उ०—आडीआं डांगरां घातिआं चरू **रठठाविजै** छै । तांह चरवां रा निहाव्या सूं पहाड़े पड़िसादानें रहिआ छै ।

—रा. सा. सं.

रठठायोड़ौ–भू. का. कृ.–घसीटा हुआ, घींसा हुआ ।
(स्त्री. रठठायोड़ी)

रठियोड़ौ–भू. का. कृ.–आवाज किया हुआ ।

रठणौ, रठबौ–देखो 'रटणौ, रटबौ' (रू. भे.)

रठवड़–देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

रठावठ–सं. स्त्री.–मारकाट, मारपीट ।

रठीठ–वि.–दृढ़, मजबूत ।

रठौर–देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

उ०—बाल वय हूमैं जयकार हूवौ **रठौर** रंग । जंग सग दीन्ह अंग नांहि अरसायौ है ।

—साधु सेवादास

रड–देखो 'रढ' (रु. भे.)

रडकवी–देखो 'रड़ी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ताहरां 'वेसवटै' कह्यौ, भाद्रवै री तेरस **रडकवी** कनै चौगांन मुहै आय ऊभौ रहै ।

—मूळवै सांगावत री वात

रडणौ, रडबौ–देखो 'रड़णौ, रड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ खीजइ मूंभइ **रडइ** बाल जिम सयरु संतावइ । कमलिणि कांणणि मण समाधि सा किमइ न पांमइ ।

—सालिभद्र सूरि

उ० –२ अन्नदिणंतरि गिरिसिहरे राजा रमलि करेइ । कुंती करयल अडवडिउ **रडयउ** भीमु रुडेइ ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—३ रोती **रडती** आवजै ।

—धरम पत्र

उ०—४ राय **रडइ** अवनी पडइ, कूटइ त्रूटइ वेणि । अस्त्रुपात इम उल्लरइ, सबळ न खूटइ स्रेणि ।

—मा. कां. प्र.

उ०—५ कापडीआ मांहिं कांमिनी, सो नर सूतउ भालि । कांम–कंदला कही **रडइ**, अवर न बीजी आलि ।

—मा. कां. प्र.

उ०—६ भाद्रवडइ सरोवर भरियां, नीर निरंतर होइ । रिदयां–भींतरि हुं **रडुं**, नीर निवारि न कोइ ।

—मा. कां. प्र.

रडवड–देखो 'रड़वड़' (रू. भे.)

उ०—तडफड साकुर हिंज तुंड । **रडवड** उड गड़ां जिम रुंड ।

—गो. रू.

रडवड़णौ, रडवड़बौ–देखो 'रड़बड़णौ, रड़वड़बौ' (रू. भे.)

उ०—**रडवडता** गलीए मूआ रे, मडा पड्या ठांम ठांम । गलि मांहै थइ गंदगी रे, छै कुण नांखण दांम ।

स. कु.

रडव्वड–देखो 'रड़बड़' (रू. भे.)

उ०—भडीयड भांजि मरग्गड मूंड । **रडव्वड** रैण करंडक रूंड ।

—गु. रू. बं.

रडाळ, रडाळौ–देखो 'रढाळ, रढाळौ' (रू. भे.)

रडियोड़ौ–देखो 'रड़ियोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. रडियोड़ी)

रडी–देखो 'रड़ी' (रू. भे.)

उ०—राजा कह्यौ, **रडी** सांम्ही हुंती तिका वात इये उपर आंण उभौ राख ।

—मूळवै सांगावत री वात

रडौ–देखो 'रड़ौ' (रू. भे.)

उ०—तू छै माघ कीयौह, गोल्हाटी आखै **रडौ** । पेधर डिगीयौ पावडौ, बुडौ दीहाड़ोह ।

—देपाळ धंध री वात

रड्ड–देखो 'रढ' (रू. भे.)

उ०—मारुवाडि का देसमइं, एक न जाई **रड्ड** । कदि ही होइ अवसरणउ, कइ फाकउ कइ तिड्ड ।

—ढो. मा.

रढ–सं. पु.–१ हठ, जिद्द ।

उ०—१ तरै कांनड़दे तो घणूं ही कह्यौ–वे कुण ? म्हें कुण ? पण बैर **रढ** मांड रही ।

—नैणसी

उ०—२ स्त्री बालक पुहोवी धणी रै, ए तिहुं एक सभाव । **रढ** नवि छांडै आपणी रे, भावें तौ घर जाय ।

—प. च. चौ.

२ गर्व, अभिमान ।

उ०—**रढ** मेटण रांमण रढरांण ।

—ह. नां. मा.

३ अहंकार । (अ. मा., ह. नां. मा.)

४ कष्ट, संकट ।

५ बल, शक्ति, पौरुष ।

वि.–१ आन–बान वाला, महान, बड़ा ।

२ वीर, बलवान ।

३ दृढ़, मजबूत ।

रू० भे०–रंढ, रड, रड्ड, रढि, रड्ढ, रढ्ढ़, रढ्ढ ।

रढणौ, रढबौ–देखो 'रड़णौ, रड़बौ' (रू. भे.)

उ०—**रढे** डाढ काढे वढै नाग रीसे, वदन्ने वहे सोळ पंचास वीसे । काळी नागनी जुद्ध मातौ क्रसन्नं, वही जम्मनां पूर सिंदूर वन्ने ।

—नागदमण

उ०—२ सिरै धणी 'आसोप' दुभ्फल भळहळ तप दारण । **रढै** 'कन्ह' रांम रौ, स्यांम कांम रौ सुधारण ।

—सू. प्र.

रढणहार, हारौ (हारी), रढणियौ —वि. ।

रढिओड़ौ, रढियोड़ौ, रढ्योड़ौ —भू. का. कृ. ।

रढीजणौ, रढीजबौ —कर्म वा. ।

रढरांण, रढरांमण, रढरांवण–वि.–१ दृढ़, मजबूत, अडिग ।

उ०—मुड्या नह केक तज्यौ नह मांण । रह्या वे पूरबिया **रढरांण** ।

—लिखमीदांन ऊजळ

२ अपनी आन पर मरने वाला, दृढ़ प्रतिज्ञ ।

उ०—१ 'सुरतौ' 'गजौ' लड़ण जुध सारां, 'हरी' तणां मौहरी हजारां । 'रांमौ' 'करन' तणौ **रढरांमण**, बाधै खगै पगै जिम वांमण ।

—रा. रू.

उ०—२ सुरतांण सूं दीवांण संचित, तांण सर तुड़तांण । दे पांण जमदढ़ पांण दाखव, रांण जिम **रढरांण** ।

—नैणसी

३ बलवान, शक्तिशाली ।

उ०—चूंडराव रिणमल्ल, राउ 'जोधो' **रढरांमण** । 'सूजौ' 'वाघौ' 'गंगेव' 'माल' गढ कोट पलट्टण ।

—गु. रू. बं.

४ हटी, जिद्दी ।

५ वीर, बहादुर ।

उ०—रकेवां पाव दिया **रढरांण** हुवौ असवार सैंधव रढरांण ।

—गो. रू.

६ दुष्ट ।

रू० भे०–रंढरांण, रंढरांणौ, रंढरांमण, रढराव ।

रढराव, रढरावण–देखो 'रढरांमण' (रू. भे.)

उ०—१ जुड़ै **रढराव** बैहुंय जोध ।

—गो. रू.

रढाळ, रढाळौ–वि.–१ हठी, जिद्दी ।

उ०—१ भाटक कोट हुआै जूंभाऊं, रच भाराथ **रढाळौ** । पड़ियां सीस पछै पालटसी । अनढ़ पळोधी आळौ ।

—आवड़दांन लालस

उ०—२ गौड़ मौड़, बंध ठौड़ गराजू, राजू सूरति सिरी **रढाळ** । दुलहणि जोय 'वीढळ' रौ दुलहौ, मन उलही मेळै वरमाळ ।

—कल्यांणदास राव

२ वीर, योद्धा ।

उ०—१ रांम तणौ रिणछोड़ **रढाळां** धांधू वधि वाजणा धाराळां । 'सुंदर' सुत 'सांमंत' सिघाळा, 'रैणायर' 'लखमण' रवताळा ।

—रा. रू.

उ०—२ 'करमसिंघ' कळिमत्थ, रूक 'राइसिंघ' **रढाळा** । वीदा विक्रमाइत 'भीम' भारमल भुजाळा ।

—गु. रू. बं.

३ शक्तिशाली, बलवान ।

उ०—अंगद मेलियौ सद दूत अपंपर, वळ अकळां मजबूत बडाळौ । वप सिणगार धूत खळ बैठौ, रचै सभा अदभूत **रढाळौ** ।

—र. रू.

रू० भे०–रंडाळ, रंडाळौ, रंढाळ, रंढाल, रंढाळौ, रंढालौ, रडाळ, रडाळौ, रढिआळौ, रढीलौ ।

रढि–१ देखो 'रड़ी' (रू. भे.)
२ देखो 'रढ' (रू. भे.)

रढिग्राळौ–देखो 'रढाळौ' (रू. भे.)
उ०—के कांई कांमरण करचू, रे **रढिग्राळा** मित्त । तिणकी सुध भूली गई, चोरी लीधौ चित्त ।
—ढो. मा.

रढियोड़ौ–देखो 'रड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रढियोड़ी)

रढीलौ–देखो 'रढाळौ' (रू. भे.)
उ०—ग्रालिम ग्रडीलौ रे किण ही परि ढीलौ रे। होवै न **रढीलौ** तुरक गयौ गुसे रे ।
—प. च. चौ.

रढु, रढू, रढ्ढ–देखो 'रढ' (रू. भे.)
उ०—देवी **रढ्ढ** रे रूप दसकंध रूठी । देवी सील रे रूप सोमित्र त्रूठी ।
— देवि.

रणंकणौ, रणंकबो–देखो 'रणकणौ, रणकबौ' (रू. भे.)
उ०—१ **रणंकै** तिकां घोर रूड़ी रचाई, ठणंकै किनां झल्लरी ठोर ठाई ।
—वं. भा.

उ०—२ खेलै कळाधार धींग डंडाळां पंखाळां खमै, **रणंकै** भेरी वीरूप सूरा भरै रीस ।
—राव सत्रसाळ रौ गीत

उ०—३ वढै वीर तोपां सनाहां भणंका बजै । ग्रच्छरां **रणंकै** नगां नूपरां एवास ।
—चिमनजी रौ गीत

रणंकियोड़ौ–भू. का. कृ.–ध्वनि हुवा हुग्रा, ध्वनित । झकृत ।
(स्त्री. रणंकियोड़ी)

रणंकौ–सं. पु.–किसी वाद्य या ग्राभूषण की ध्वनि, झणकार ।
उ०—धे धी कट्ट धा धा कट्ट, ताधिमंक ताधिमंक, रमा झमां ठमां ठमां क्रमै एण रीत । **रणंका** झणंका खांति भांति का रसाल सांमां, राइजादौ देखै नाटक संगीत ।
—ल. पिं.

रणंजय–सं. पु.–सूर्यवंशी एक राजा ।
उ०—जिण नृप वहनि सुजाव क्रंतजय। जेण सुजाव नरेस **रणंजय** ।
—सू. प्र.

रणंताळ–देखो 'रणताळ' (रू. भे.)
उ०—राठौड़ रचेवा **रणंताळ**, वांमंग डहै बीजळा झाळ । बांधै कंदील संधै विवांण, कोसीस भुजै दीना कबांण ।
—गु. रू. बं.

रण–सं. पु. [सं. रणम्] १ युद्ध, समर, जंग ।
उ०—१ पास ग्राए की लाज कुळ काज विचारौ । मेरा **रण** मरणा कै जीवणा सुधारौ ।
—रा. रू.
उ०—२ 'पीथल' जयचंद प्रगट मार खाई **रण** मीठी । नवरोजी परनार दिली गळ गई सह दीठी ।
—ऊ. का.
उ०—३ गाहै गजराजां गुड़ां रुहिर मचावै कीच । ज्यांरै नवग्रह पाधरा, जे बंका **रण** बीच ।
—बां. दा.
२ रंग क्षेत्र, समर भूमि, युद्ध का मैदान ।
उ०—सजै फौज कांठळ घरर घणां नीसांण घुर । ग्रनळ धुंग्रा रवण **रण** ऊजाथै ।
—गु. रू. बं.
३ शोर गुल, ग्रावाज, ध्वनि ।
४ वीणा का स्वर ।
५ गति, चाल ।
६ स्वर का ग्रल्पतम ग्रंश ।
७ निर्जन वन ।
उ०—ग्रोपौ ग्राढौ कहै ईसवर, नित राखूं चित थारौ नांम । तूं छती मांय देवण सुख तूं ही, **रणां** तणी वसती तूं रांम ।
—ग्रोपौ ग्राढौ
८ नमक की झील ।
९ वीणा वजाने का गज ।
[सं. ऋणं] १० ऋण, कर्जा ।
रू० भे०—रंण, रणि, रणी, रणु, रणौ, रन, रन्न, रिण, रिणौ ।

रणकंकण–सं. पु.–१ एक प्रकार का बाजा जो राजा की सवारी के ग्रागे बजता था ।
वि० वि०—एक भाले में कुछ छल्ले पिरोये होते थे जिनको हिलाने से छन छन की ग्रावाज होती थी । यह एक राज चिन्ह माना जाता था ।
२ युद्ध के समय धारण किया जाने वाला कंकण नामक ग्राभूषण विशेष ।

रणक–सं. स्त्री.–१ पायल या नूपुर की ग्रावाज, झनकार ।
उ०—१ रंग पायलड़ी **रणक** मिळी झणक मंजीर । चंगा चसमां री चमक, सावन झमक सरीर ।
—ग्रग्यात
उ०—२ पायल री **रणक** रै समचै दीवांणजी रौ रूं रूं ऊभौ व्हैगौ ।
—फुलवाड़ी

२ किसी शस्त्र या वाद्य की आवाज ।

उ०—**रणक** घंट ददराज गाज ज्यूं ही गज गाजत । सिर अंकुस सिरताज, वीज उपमा ज विराजत ।

—सू. प्र.

३. याद, स्मरण ।

रू० भे०—रणांक, रनक ।

रणकणौ, रणकबौ–क्रि. अ.–१ किसी आभूषण या वाद्य की छन-छन आवाज होना, झनकार होना, मधुर ध्वनि होना, बजना ।

उ०—१ नाचत रणकत नेउरी ए, बिहुं आगलि इंद्र अंतेउरी ए । टिगमिग जोवै जग सहुए, रंगहि गुण गावै सुर वहुए ।

—वृ. स्त.

उ०—२ जांझर पग रा झण झणै, त्यूं बिछियां रौ तेज । किंकण **रणकै** कमर री, सिस वदनी री सेज । —अग्यात

२ शस्त्र खनकने की या टकराने की आवाज होना ।

३ रटने की आवाज होना ।

उ०—रमणीं बरहीनां निरख नबीनां, रांम रांम **रणकंदा** है । कंद्रप रा कीटा फवतन फीटा, भंवर गुफा भणकंदा है ।

—ऊ. का.

रणकण हार, हारौ (हारी), रणकणियौ —वि.

रणकिओड़ौ, रणकियोड़ौ, रणक्योड़ौ —भू. का. कृ.

रणकीजणौ, रणकीजबौ, —भाव वा.

रणकणौ, रणकबौ, रणणंकणो, रणणंकबौ, रणणौ, रणबौ, रणवणणौ, रणवणबौ, रनंकणौ, रनंकबौ —रू. भे.

रणकाणौ, रणकाबौ–क्रि. स.–१ किसी वाद्य या आभूषण को बजाना ।

२ शस्त्र से आवाज करना ।

३ रट लगाना ।

रणकाण हार, हारौ (हारी), रणकाणियौ —वि.

रणकायोड़ौ —भू. का. कृ.

रणकाईजणौ, रणकाईजबौ —कर्म वा.

रणकारणौ, रणकारबौ, रणकावणौ, रणकाववौ —रू. भे.

रणकायोड़ौ–भू. का. कृ.–१ बजाया हुआ. (वाद्य या आभूषण) २ आवाज किया हुआ. (शस्त्र) ३ रट लगाया हुआ ।
(स्त्री. रणकायोड़ी)

रणकार–सं. स्त्री. १ आभूषण या वाद्य की झनकार ।

उ०—१ ठमके जांझर **रणकार** साथण देखै । म्हारा घण हेताळू सरदार संगत आछी लागै सा ।

—लो. गी.

उ०—२ जय जय नंदा कहै, लीयै डंडा रस सार । भेर भूगळ साथै, सरणाइ **रणकार** ।

—साहू लाधौ

२ ध्वनि, रट ।

३ गुंजन ।

४ शस्त्र के टकराने की आवाज ।

रू० भे०—रणुंकार ।

रणकारणौ, रणकारबौ–देखो 'रणकाणौ, रणकाबौ' (रू. भे.)

उ०—झालर घंट जठै झणकारत, राव हजार गिरा **रणकारत** । ध्यांन गिनांन प्रभु गुण धारत, स्यांम सदा न्रप कांम सुधारत ।

—अग्यात

रणकारियोड़ौ–देखो 'रणकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रणकारियोड़ी)

रणकारौ–सं. पु.–१ आभूषण या शस्त्र के खनकने की आवाज, झनकार ।

उ०—१ रम झम बिछियां रा बजता **रणकारा** । झम झम जेहरि रा उठता झणकारा ।

—ऊ. का.

उ०—२ रेसमी गाभां रा सरणाटा उडावती । गैंणां रा **रणकारा** पाड़ती । सौरम री भभरोळां बिखेरती ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ घूघरा रा ऐड़ा **रणकारा** सुणण सारू हजार कांन व्है तौ ही थोड़ा । एक एक ततकार माथै इंदरापुरी रौ राज वारै तौ ही थोड़ौ ।

—फुलवाड़ी

उ०—४ नाई कह्यौ–अंदाता, इत्तौ कांई गैंणौ पैरणौ । डील हिलतां ई **रणकारा** उठै ।

—फुलवाड़ी

२ राम नाम की रट या जाप से होने वाली ध्वनि ।

३ नगारे या वाद्य की ध्वनि ।

रणकालौ–वि.–युद्धोन्मत ।

उ०—किसै कांम आवण **रणकालौ,** बांधै माथै मोड़ विलालौ । भुजडंड पकड़ ऊठियौ भालौ, लेवा भचक रूठियौ 'लालौ' ।

—लालसिंह राठौड़ रौ गीत

रणकावणौ, रणकावबौ–देखो 'रणकाणौ, रणकाबौ' (रू. भे.)

उ०—कपट कोट दहवट्ट गमावइ, नित नयवाद घंटा **रणकावइ** जी ।

—वि. कु.

रणकावियोड़ौ–देखो 'रणकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रणकावियोड़ी)

रणकाहल–सं. पु.–युद्ध वाद्य विशेष ।

उ०—सरणाई सरतूर **रणकाहल** नफेरी तबल अनेक भेर तणे निरघोसि करी कटक सोभतू छइ ।

—व. स.

रणकियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ झनकार, आवाज या ध्वनि हुवा हुआ. (आभूषण, वाद्य) २ खनकने या टकराने से आवाज हुवा हुआ. (शस्त्र) ३ रटने की आवाज हुवा हुआ ।
(स्त्री. रणकियोड़ी)

रणकोविद–वि.–युद्ध कला में प्रवीण, रणकुशल ।

रणकौ–देखो 'रणकारौ' (रू. भे.)

उ०—डाळ डाळ बैठा पंछी उण रै वधावा रा गीत गावण मंडिया । वां मीठा गीतां रै **रणकै** बादळ अगाढ़ नींद सूं जागने बैठौ व्हियौ ।

—फुलवाड़ी

रणक्षेत्र–सं. पु. [सं. रणक्षेत्रम्] युद्ध का मैदान, रणभूमि ।
रू० भे०–रणखेत ।

रणखण–सं. पु. [सं. रण+क्षण], युद्ध के समय ।

उ०—खगवाहौ मिळियो खळां, मिळियौ **रणखण** पग्ग ।

—रा. रू.

रणखेत–देखो 'रणक्षेत्र' (रू. भे.)

उ०—नैतबंध बांनैत, मेळ **रणखेत** महंतां । विना दिवाळी वंध, जीण खाली मेमंतां ।

—रा. रू.

रणगळियार–सं. पु.–१ घायल ।

उ०—आढौ **रणगळियार** उठायौ, लागि न्रजांन अप्पपुर लायौ ।

—वं. भा.

वि.–२ रणोन्मत्त ।

उ०—अर च्यारिही भायां समेत माधांणी हाडौ मुकुंदसिंह गोड़ अरजुनसिंघ राठौड़ रत्नसिंह जिसड़ा जोधार काली रा कळस **रणगळियार** होइ हाथियां रै माथै हाथ करता साथियां रै सूरतां रौ सांग लगावता साहजादां रै समीप हालिया ।

—वं. भा.

रणगहल, रणगहिलउ–वि.–रणोन्मत्त, युद्धोन्मत्त ।

उ०—पंप नीरि परथै पवंग, असिराइ साख असहाय अंग । हीरइ सतेजि ऊन्हई हठाळ, **रणगहिलउ** चडियउ राइपाळ ।

—रा. ज. सी.

रणचंगौ–वि.–युद्ध कला में प्रवीण, रण कुशल ।

उ०—मांणीगर दातार में, **रणचंगौ** जस खग्ग । जायौ नह अर जनमसी, जलाल जैसौ नग्ग ।

—जलाल बूबना री बात

रणचरचा–सं. स्त्री.–एक प्रकार की कला । (व. स.)

रणछोड़–सं. पु.–१ परमेश्वर, ईश्वर । (ह. नां. मा.)
२ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर ।

उ०—१ नमौ जदुराज हळद्धर-जोड़ । रैणायर-रूप नमौ **रणछोड़** नमौ सिसुपाळ मनावण संक, जरासंध जीपण सेन उजंक । —ह. र.

उ०—२ दीज्यौ म्हांनै द्वारिका को बास, रूडा **रणछोड़** जी हो ।

—मीरां

वि०—युद्ध से भागने वाला, कायर । रू० भे० रिणछोड़

रणजीत–वि. [सं.] युद्ध में विजयी रहने वाला ।

रणजेब–सं. स्त्री. [सं. रण+फा. जेब] एक प्रकार की तलवार विशेष ।

उ०—उठी 'विलंद' दळ असुर, बंधि मुगरबां जनेबां । पेसकबज खंजरां, जकड़ वणिया **रणजेबां** । सू. प्र.

रणझण, रणझण–सं. स्त्री. [अनु.] ध्वनि विशेष, झनकार ।

उ०—घम घमंत घूघरी, पाय नेउरी **रणझण** । डम डमंत डाकली ताळ ताळी बज्जै तण । —देवि.
रू० भे०—रंणझण,

रणझणकार, रणझणण–सं. स्त्री. [अनु.] मधुर झनकार ।

उ०—१ हार निगोदर बहिरखा, सखी नेउर रणझणकार कि ।

—कां. दे. प्र.

उ०—२ **रणझणण** नाद खुरसांण खागां रड़क, वाज खणखणण कड़ीयाल बंदी बड़क ।

—महादांन महडू

रणझणणौ, रणझणबौ–क्रि. अ.–मधुर ध्वनि होना ।

उ०—मरहट्ठी गादहि किसिउं कुंकुणउं वासइं, मालवी वांछ किसिउं मारुयं भासइ, गोबर कीडउ किसिउं भ्रमर जिम **रणझणइ**

—व. स.

रणझुणौ–वि. जिससे मधुर झनकार निकलती हो ।

रणणंक–देखो 'रणकार'

रणणंकणौ, रणणंकबौ–देखो 'रणकणौ, रणकबौ' (रू. भे.)

उ०—सरणंकै खुरसांण खागधारां खणणंकै। **रणणंकै** रणराग झलम पाखर भणणंकै। —वं. भा.

रणणंकियोड़ौ–देखो 'रणकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रणणंकियोड़ी)

रणण–सं. स्त्री.–देखो 'रणक'

उ०—थेइ थेइ थेइ ठवति पाय, वेणु वीणा करि बजाय। झें झें झंझरिय लाय, **रणण रणण** नेउरी।
सुरियाभ सुर करि प्रणांम, मांगति अव मुक्तिधांम। समयसुंदर सुजस नांम जय जय जय सांमरी। —स. कु.

रणणौ, रणबौ–देखो 'रणकणौ, रणकबौ' (रू. भे.)

रणतभंवर–सं. पु. [सं. रणस्तम्भ-पुर] १ राजस्थान का एक प्रदेश रणथंभोर (ऐतिहासिक)

उ०—साहपुरौ बणहड़ौ ऐ सीसोदिया नूं दिया। टोडौ मालपुरौ ऐ कछवाहां नूं दिया। **रणतभंवर** खालसे राखियौ। कई परगना नरूकां नूं दिया।

गौड़ गोपाळदास री वारता

२ उक्त प्रदेश का गढ या किला।

उ०—गढ़ **रणतभवर** से आवौ विनायक करौ राज नीचीती विड़दडी। —लो. गी.

३ उक्त किले में स्थित गणेशजी की मूर्ति।

४ मांगलिक अवसरों पर उक्त गजानन के नाम पर गाया जाने वाला एक लोक गीत।

रणताळ, रणताळि–सं. पु.–१ युद्ध, संग्राम। (ह. नां. मा.)

उ०—१ बिकट रूप वींदणी, खुरम घड कीध आडंबर। लगन प्रब्ब **रणताळ**, धमळ–मंगळ सिंधू–सुर।

गु. रू. बं.

उ०—२ ऊंनै राव बंसी वंस ऊंनै गोपाळ। दोनां तेग बरछी तोलि कींनू **रणताळ**।

—शि. व.

२ युद्ध स्थल, रण भूमि।

उ०—१ चलै रत खाळ **रणताळ** इंद माचियौ। खेंग किरणांर देखण समर खांचियौ।

—र. रू.

उ०—२ खित पड़ियौ नह पलचरां खाधौ, पावक घट सकियौ नह प्रजाळ। 'वीठल' सुत तणौ तन बढतां, त्रिजड़ां लाग गयौ **रणताळ**। —अरजुण गौड़ रौ गीत

उ०—३ चर सुरति निसाचर सपत चार, परि रूढ़ वयन्नर मसि पहार। आरुहिय असिम वनियउ अकूप, **रणताळि** रयक्खण देस रूप।

—रा. ज. सी.

रू० भे०–रणंताळ, रिणताल अल्पा.—रणताळौ।

रणताळौ–देखो 'रणताळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ० – गड़क्कै जंगाळां नाळां कुंडाळां भणंकै गोण, तोड़वै तेजाळा **रणंताळा** में नत्रीठ।

—रावत सारंगदेव रौ गीत

रणतुर, रणतूर, रणतूरच–सं. पु.–एक समर–वाद्य विशेष।

उ०—१ ढोल तणौं ढमढिमाट, पटह तणौं गुमगुमाटि, **रणतुर** तणे रणरणाटि घोडा तणौं हिसाटि।

—व. स.

उ०—२ निज धांम कांमी कांमिनी वे, लड़इ वेधक वयण सु। **रणतूर** नेउर खड्ग वेणी, धनुख रूपी नयण सुं।

—वि. कु.

उ०—३ बिहुं पखै पाट पाखरचां घोडां, बिंहुं पखै **रणतूरच** काजिवा लागां।

—व. स.

उ०—४ बजवाडउ कोठी सहर बेव, हालिया हुइय आगी ह्रेव। नांमिया समांण सीहनहि, **रणतूर** सहि पाखर रवहि।

—रा. ज. सी.

रणत्कार–सं. पु.–शस्त्र प्रहार की ध्वनि।

उ०—जिकै वासुकि नाग री तरह लगलगाट करती सिलहबंध री कड़ियां नूं कतरती पिंड में पैठतां **रणत्कार** पड़ी।

—वं. भा.

रणथंब, रणथंबोर, रणथंभ, रणथंमोर–सं. पु. [सं. रण+स्तम्भ]
१ राजस्थान का रणथम्भोर प्रदेश व इस प्रदेश का गढ़।

उ०—१ बढियौ मुखेस 'पतौ' वाढाळौ, वंभियौ सुरजन देख वद। गढ़ चित्तौड़ गरव तण गरजै, गाडौ गौ **रणथंब** गढ।

—रावत पत्ता रौ गीत

उ०—२ राउ **रणथंभ** तणाह, जउहर जउहर जेहवा। कीधा भोजा कइ कंवरि, वधता बीस गुणाह।

—अ. वचनिका

२ विजय स्मारक।

वि.–युद्ध को थाम कर रखने वाला योद्धा, **वीर**।

उ०—जीव दियौ जसवंत जद, चमकै लोक अचंभ। थिर पर

राजस्थांन रौ, थंभ गिरचौ **रणथंभ** ।

—ऊ. का.

रू० भे०–रणथंभ, रनथंभ ।

रणथंमण–वि. [सं. रण स्तम्भन] योद्धा, वीर ।

उ०—घट 'पातल' उवजौ घणौं, **रणथंमण** राठौड़ । थे मरियां सूं थाहरी, ठाली रहसी ठोड़ ।

—ऊ. का.

रणथट्ट–सं. पु. [सं. रण स्थात] १ युद्ध की शोभा, युद्ध की स्थिति ।

उ०—कट थट्ट गयौ खग भट्ट कहै । **रणथट्ट** घणा भट पास रहै ।

—पा. प्र.

रणथळ–देखो 'रणस्थल' (रू. भे.)

रणधीर–सं. पु.–१ विष्णु, ईश्वर, परमेश्वर । (डिं. को.)

२ श्री कृष्ण का एक नामान्तर ।

३ योद्धा, वीर ।

वि.–रण में धैर्य रखने वाला ।

रणधीरोत–सं. पु.–राठौड़ों की एक उप शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

रणनंदीतूरच–सं. पु.–एक युद्ध–वाद्य या समर वाद्य विशेष ।

(व. स.)

रणपखर–सं. पु.–एक प्रकार का कवच ।

उ०—किसी किसी पाखर, **रणपखर** जीणपखर गुडि पक्खर ।

—कां. दे. प्र.

रणप्रिय–सं. पु. [सं.] १ बाजपक्षी ।

२ विष्णु ?

रणबंकड़ौ, रणबंकौ, रणबांकुरौ, रणबांकौ–वि. [सं. रणवक्र] १ युद्ध कला में प्रवीण । युद्ध–कुशल ।

२ वीर, योद्धा ।

रू० भे०–रणवंकौ, रनबंकौ ।

रणबुद्ध–वि.–युद्ध में कुशल ।

रणभणु, रणभणू–सं. पु. [अनु.] ध्वनि विशेष ।

उ०—राउल माहिं **रणभणू** राय थयु परिण मंद । ब्राह्मण–ब्रह्मउ सांभरइ, सभा–तणउ ते चंद ।

—मा. कां. प्र.

रणभमर, रणभांमर–वि. [सं. रण भ्रमरः] १ युद्धोन्मत ।

उ०—'माहव' को 'किरतौ' दळ मांहै, वाधै लड़ण जिकौ खग वाहै । 'जैतौ' 'वीक' तणौ जोरावर, 'भाऊ' तणौ सिवौ **रणभांमर** ।

—रा. रू.

२ युद्ध प्रिय ।

रणभूमि, रणभोम–सं. स्त्री. [सं. रणभूमि] लड़ाई का मैदान, युद्ध स्थल ।

उ०—सूर बाहर चढै चारणां सुरहरी, इतै जस जितै गिरनार आबू । बिहुंड खळ खींचियां तणा दळ विभाड़ै, पोढियौ सेज **रणभोम** 'पाबू' । —वां. दा.

रणमंडण–सं. पु. [सं. रणमंडनम्] युद्ध के आभूषण, साज-सज्जा ।

वि०–युद्ध की शोभा बढ़ाने वाला वीर ।

रू० भे०—रणमांडण ।

रणमंडप–सं. पु. [सं. रणमंडपः] १ पृथ्वी भूमि ।

२ युद्ध स्थल, लड़ाई का मैदान ।

रणमंडा–सं. स्त्री.–पृथ्वी, भूमि । (डिं. को.)

रणमत्त–सं. पु. [सं.] हाथी, गज ।

वि०—युद्ध का मतवाला ।

रणमल्ल–सं. पु. [सं] योद्धा, सुभट, वीर ।

रणमांडण–देखो 'रणमंडण' (रू. भे.)

रणमांनी–वि. [सं. रणमानिन्] वीर, बहादुर, पराक्रमी ।

उ०—इण कुळ ही देवट अभिधांनी, मही भुजंग हुवौ रणमांनी । कुळ जिण रा देवड़ा कहाय, दांन समर अनुपम दरसाय ।

—वं. भा.

रणरंक–सं. पु.–हाथी के दोनों दांतों (बाहर दिखने वाले) के बीच का स्थान ।

रणरंग–सं. पु. [सं] १ युद्ध की उमंग या उत्साह ।

२ समर भूमि, युद्धस्थल ।

३ युद्ध, संग्राम ।

रणरणक–सं. पु.–१ कामदेव का एक नाम ।

२ प्रबल इच्छा, पिपासा ।

३ विकलता, घबराहट, त्वरा ।

४ देखो 'रणकार'

रणरणाट, रणरणाटि–सं. स्त्री.–किसी वाद्य की आवाज, ध्वनि, शब्द ।

उ०—ढोल तरणै ढमढिमाट, पटह तरणै गुम गुमाटि, रणतुर तरणै **रणरणाटि** घोडा तरणै हिसाटि।

—ब. स.

रणरसियौ, रणरसु–वि. [सं. रणम्+रसिकः] युद्ध रसिक, पराक्रमी, वीर, योद्धा।

उ०—१ सखी अमीणौ साहिबौ, जम सूं मांडै जंग। ओळै अंग न राखही, **रणरसियौ** दै रंग।

—वां. दा.

उ०—२ तीछे हूंफी ऊठइ करणु, अरजुनु पांमइ मूं करि मरणु। रोसि ऊठइं बेउ झूझेवा, **रणरसु** जोइं देवी देवा।

—सालिभद्र सूरि

रणराग–सं. स्त्री.–सिंधु राग, वीर राग।

उ०—दीनी सांवळां **रणराग** दुहौं। हिक वार पाबू मन मोद हुवौ।

—पा. प्र.

रणरीढ–वि.–युद्ध में तलवार चलाने वाला, योद्धा।

रणरुह, रणरूह, वि.–जिसे युद्ध की उमंग हो, उत्साह हो।

उ०—दिल्ली हूंत दुरूह, अकबर चढ़ियौ एकदम। रांण रसिक **रणरूह**, पलटै केम प्रतापसी।

—दुरसौ आढौ

रणरोहि, रणरोही–सं. स्त्री.–१ निर्जन-वन, शून्य-जंगल, बीहड़ वन।

उ०—गुणी सपत सुर गाय, कियौ किसब मूरख कनै। जांणै रूनौ जाय, **रणरोही** में राजिया।

—किरपारांम

रू० भे० रनरोई, रनरोहि, रनरोही।

रणलक्ष्मी, रणलखमी, रणलिखमी–युद्ध में विजय प्राप्त कराने वाली एक देवी, विजय लक्ष्मी।

रणवंकौ–देखो 'रणबंकौ' (रू. भे.)

उ०—कर वागां नर भूंबिया, तिजड परक्खै ताव। अगसंका आगै इता, **रणवंका** उमराव।

—रा. रू.

रणवट्ट–सं. पु.–१ क्षत्रित्व, वीरत्व।

उ०—रिमराह तियार बंधै **रणवट्टां** 'खेम' समोभ्रमि रोकि खळां। रूकै रिमराह बहादर राजै, भार ग्रहै निय भूग्रबळां।

—गु. रू. बं.

२ युद्ध का मार्ग।

रू० भे०—रणवाट।

रणवरणौ, रणवरणबौ–देखो 'रणकरणौ, रणकबौ' (रू. भे.)

उ०—**रणवरणीया** सवि संख तूर अंबरु आकंपीठ। हय गयवर खुरि खणीय रेणु ऊडीक जगु झंखीउ।

—सालिभद्र सूरि

रणवाइ सं. पु.–युद्ध की चुनौती,।

उ०—दिवस सात जां इण परि जाइं तां अच्चभू को **रणवाइं**। एतइं आविउं कटकु अपारु पंडव धाया लेई हथियार।

—सालिभद्र सूरि

रू० भे०–रणवाद।

रणवाट–देखो 'रणवट्ट' (रू. भे.)

उ०—कहर खग झाटरण वीर दूजा 'कुसळ' खाटगा विरद फौजां गजां खभ। पाट रा थंभ **रणवाट** रा थंभ पण, थाट रा राज रा मिसल रा थंभ।

—सेरसिंह मेड़तिया रौ गीत

रणवाद–देखो 'रणवाइ' (रू. भे.)

रणवादी–वि.–योद्धा, वीर।

रणवास–सं. पु.–१ अन्तःपुर, रनिवास, जनानखाना।

उ०—१ पछै इंद्र मात आसेर वरण पधारचा, दिई जिण नींव अवदात दाढी। करी घण क्रपा **रणवास** पावन करण, चरण रज रांणियां सीस चाढी।

—मे. म.

उ०—२ बूंदी महाराज छत्रसाल जी ने उदैपुर रांणौ अड़सीजी सिकार रमतां चूक कर गोळी चलाई सो मुरछा आय गई, उतरै बूंदी **रणवास** में मौळियौ गयौ तद वारें माता कयौ थें सत मत करौ इण म्हारौ दूध लजायौ।

—वी. स. टी.

२ अन्तःपुर में रहने वाला स्त्री-समुदाय।

उ०—पाती बाची आ तौ सजन समाज। पाती बाची आ तौ गारौ **रणवास**।

--गी. रां.

३ रानी।

उ०—राजा निय **रणवास** हूं, अक्खी एक सू बत्त। अण सोभा खत्री ध्रम, चित्र सोभा पतिव्रत्त।

—गु. रू. बं.

रू० भे०–रणिवास, रनवास, रनिवास।

रणव्रति, रणव्रती–सं. पु.–सैनिक, योद्धा।

रणसिग्गौ, रणसिंघौ, रणसींगौ–सं. पु.–१ युद्ध के समय बजाया जाने वाला एक वाद्य जो सींग का बना होता है।

उ०—१ तुरी करनाळ **रणसींगौ** वाज रह्यौ छै।

—रा. सा. सं.

उ०—२ दया **रणसिंघौ** वाजियौ, जागौ जागौ नरनार। मुगत नगर में चालणौ तुमे वैगा हुयजौ त्यार रै।

—जयवांणी

रणसुणौ, रणसूणौ–वि.–युद्ध में झूंझ कर वीरगति प्राप्त करने वाला।

रणस्तंभ–देखो 'रणथंभ' (रू. भे.)

रणस्थल–सं. पु. [सं.] युद्ध का मैदान, रणक्षेत्र।

रू० भे०–रणथळ।

रणांक–देखो 'रणक' (रू. भे.)

रणांगण, रणांगन–सं. पु. [सं. रण+अंगनं] रणभूमि, रणक्षेत्र।

उ०—ईम अरजन **रणांगण** रूधउं, बांण पंजरि घणउं दळ सूधउं आकुलउ अति सुयोधन हूउ, कउण जीवइ किहां कुण मूउ।

—सालिसूरि

रू० भे०–रिणंगण।

रणि–१ देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—१ चांपां धणी मांडिया चावै, वीठळ खळां सरिस खग वाहि। अड़ियौ 'जसै' मेल्हियौ ऊभौ, पड़ियै **रणि** पायौ पतिसाहि।

—विठळदास चांपावत रौ गीत

उ०—२ रांमा अवतारि वहै **रणि** रावण, किसी सीख करुणाकरण।

—वेलि

२ देखो 'रेण' (रू. भे.)
३ देखो 'रिण' (रू. भे.)
४ देखो 'रिणी' (रू. भे.)

रणियु–देखो 'रिणी' (रू. भे.)

उ०—तेहनि सुत नल नांमि सुंदर, जांणौ मन्मथ यणियु। देव पितर नि मनुस्य तणौ रे, राय टल्यु ते **रणियु**।

—नळाख्यांन

रणिवाउल. रणिवाउलौ–वि. [सं. रणवातुल] युद्धोन्मत।

उ०—पहिली तुरक तणी ऊठवणी, **रणिवाउला** विछूटा। घोडे माटे देई हींदू नी, फोज मांहि जई फूटा।

—कां. दे. प्र.

रणिवास–देखो 'रणवास' (रू. भे.)

रणी–वि.–१ योद्धा, वीर।

२ देखो 'रण' (रू. भे.)
३ देखो 'रेण' (रू. भे.)
४ देखो 'रिणी' (रू. भे.)

रणुंकार–देखो 'रणकार' (रू. भे.)

उ०—**रणुंकार** की धुंन सूं, यूं कर जीव जगीजे ए। स्रवण सुची रुची धारके, सार अनहद को लीजे ए।

—स्री सुखरांमजी महाराज

रणु–देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—करि करवालु जु करीउ करणु समहरि **रणु** माडइ। फारक पायक तुरग, नाग नवि कोइ छंडइ।

—सालिभद्र सूरि

रणेचर–सं. पु. [सं. रणचर] विष्णु।

वि.–१ योद्धा, वीर।

२ मांसाहारी।

रणेत–देखो 'रनेत' (रू. भे.)

रणेस–सं. पु. [सं. रणेश] १ विष्णु।

२ शिव।

वि.—योद्धा, वीर।

रणोई–सं. स्त्री. [सं. रण+रा. रोही=सुनसान] २ युद्धस्थल, रणभूमि।

उ०—रण खेतां में ऊगै नाहीं दूब, कोई **रणोई** तो बोलै आधी रात ने ए मोरी सइयां।

—अग्यात

रू० भे०–रिणोई, रिणोही।

रणौ–देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—गाया म्हैं मांगिया पखै गुण, गढपति गांमां पती गणौ। मोटा खत्री द्रवौ मेवाडा, रांण खत्री वंस तणौ **रणौ**।

—दुरसौ आढौ

रतंग–सं. पु.–रक्त, खून।

उ०—१ रवदां खग बाहतौ रांमावुत, रेण पुड़ भेदियौ **रतंग**। भुजंग सुपेद लाल रंग भेदियौ, भूली तिण आंटै भुयंग।

—चतुरा रांमावत रौ गीत

उ०—खळ कटै सहेता जरद खगां खतंग, खळक घावां **रतंग** दरद खाथै। तठै लड़वा घड़ी खेल रीझव पतंग, मरद सुजड़ी जड़ी मतंग माथै।

—गुलाबसिंह चूंडावत रौ गीत

वि. [सं. रक्त+अंग] रक्तिम, लाल।

रतंनागर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—ए **रतंनागर** पास गोमती, जादव जगत्र नरेस। हरख वदन हुआ हरि जोसी, कीधुं अग्र प्रवेस।

—रुकमणि मंगळ

रतंबर—वि. [सं. रक्ताम्बर] रक्त वर्ण, लाल।

उ०—कख काजळ जळ चलै रार डांसियां **रतंबर**। अंग तणांच आछटैं ओढ न्हांखै सिर अंबर।

—पा. प्र.

रत—सं. पु. [सं. रतम्] १ रति-क्रीड़ा, मैथुन, संभोग।

उ०—१ वीरपाळ साह री वेटी गौरज्या विधवा वरस तेरह री पुसकरजी ऊपर तप करती। नवै वरस च्यार हुआ जद जबरी सुं वीसळदे इण सू **रत** कियौ।

—वां. दा. ख्यात

उ०—२ **रत** ज्यूं दत जाचक रसक, जांचै बे कर जोड़। ननौ भंणै नव नार ज्यूं, मूढ क्रपण मुख मोड़।

—वां. दा.

२ प्रेम, प्रीति, प्यार।

[सं. रति] ३ कामदेव की स्त्री रति।

उ०—रावण ससा दिग्गज रूप दंडकबन रमैं, निरलज सुपनखा तिण नांम नरक अनंग में। सीतानाथ आगळ सार आई विण समै, भाळ सकाति अदभुत नरम सुचि **रत** संभ्रमें।

—र. रू.

४ गुप्तांग।

५ हर्ष, खुशी, आनन्द।

[सं. रात्रि] ६ रात्रि, रात।

उ०—१ सो पीउं छंदि हथड़ै, सरस पत्रीभत। जांगुं ढोलौ जागवी, गळती मझम **रत**।

—ढो. मा.

उ०—२ मंझि समंदां वींट घर, जळ सूं जांमौ पत्त। किणही अवगुण कूंझड़ी, कुरळी मांझिम **रत्त**।

—ढो. मा.

[सं. ऋतु] ७ ऋतु, मौसम।

उ०—१ वाघ सिंघ वितर घणा, भुंइ वीहती चालइ रे। चालइ नइ सालइ वरसा **रत** घणु ए।

—नळदवदंती रास

उ०—२ आवी सब **रत** आंमळी, त्रिया करइ सिणगार। जिका हिया न फाटही, दूर गया भरतार।

—ढो. मा.

[सं. रक्त:] ८ रक्त, खून, रुधिर।

उ०—१ उडै पग हात किरका हुवै अंग रा, बहै **रत** जेम सावण बहाळा। आप आपौ वरी जोयनै आड़ियां, लड़ै रिण भळभला निराताळा।

—र. रू.

उ०—२ ढहै ढींचाळ **रत** खाळ खळकै धरा। जुड़ै धड़पड़ै भड़दड़ जड़ालै।

—नैणसी

उ०—३ भव-नार फिरै **रत** पत्र भरै, जुड़ बाक गिरै काई छाक जरै।

—रा. रू.

उ०—४ कठठी बे घटा करै काळाहणि, समुहै आंमहौ सांमुहौ। जोगिणि आवी आडंग जांणे, बरसै **रत** बेपुड़ी वहै।

—वेलि.

वि. [सं. रत] १ प्रेम में फंसा हुआ, अनुरक्त, आशक्त।

उ०—१ नारी नागिनि एक-सी, बाघिनी बड़ी बलाइ। दादू जे नर **रत** भये, तिनका सरवस खाइ।

—दादू बांणी

उ०—२ लग्गी हांम विलासं, वित्ती अग्यात प्रात मध्यांनं। सायंकाल निसीतं, **रतं** भूप चूंप मदनायं।

—रा. रू.

२ मुग्ध, मोहित।

३ मस्त, मग्न।

उ०—१ महीना बारै होय गया छै, म्यारांमजी मैलां मैं **रत** होय रहा छै।

—मयारांम दरजी री बात

उ०—२ अैसे वन में **रत** थकौ, करतौ केळि किलोळ। निडर थकौ विचरत सदा, संग लिये सब टोळ।

—गज उद्धार

४ लीन, तल्लीन, तन्मय।

उ०—१ रहै **रत** ध्यांन अठयासी रिक्ख, लहै नंहं पार ब्रह्म्मा लक्ख।

—ह. र.

उ०—२ राता तत चिंता रत चिंता **रत**, गिरि कंदरि घरि बिन्है गण। निद्रावस जग एहु महानिसी, जांमिण कांमिण जागरण।

—वेलि

उ०—३ अह मत तज ईसर भज ईसर, करणाकर सधर सुतन दसरथ कौ। यक छिन तन ऊधारण, **रत** कर चित्त **चरण** रघुबर रे।

—र. ज. प्र.

५ प्रसन्न, खुश ।

६ प्रिय ।

उ०—और वस्त रत नहीं मुहि भावै (हो रांणाजी) यह गुरुम्यांन हमारा । —मीरां

७ युक्त ।

उ०—१ संपेख अग नग साखसी, रत रोस मारग राखसी । तिंह नाक पांण विछेद पाडै, बांण इक रघुबीर । —र. रू.

[सं. रक्तम्, रक्तः] ८ लाल ।

उ०—बाबहिया रत पंखिया, बोलह मधुरी वांणि । काइ लवंतउ माठि कर, परदेसी प्रिउ आंणि । —ढो. मा.

रू० भे०—रति, रत्त ।

रतकील, रतकीलर—सं. पु. [सं. रतकीलः] श्वान, कुत्ता । (अ. मा.)

रतखाळ, रतखाळौ—सं. पु. [सं. रक्तः+रा. खाळ] रुधिर का नाला, खून की धारा ।

उ०—१ पड़ै बुरजां धजां ऊपरै पाथरां, सूर जमहर करै पड़ै सारां । पड़ै परनाळ रतखाळ चीखळ पड़ै, बीढि पड़ै गौड़ गढ़ पड़ै वारां । —उदैभांण हरभांण गौड़ रौ गीत

उ०—२ रिळिया रिणताळां कट किरमाळां, सीस भुजाळां सूंडाळा । चालै रतखाळां तेण विचाळां, पंखणियाळा पोखंतू । —भगतमाळ

रतग—सं. स्त्री.—कोयल । (अ. मा.)

रतगुरु—सं. पु. [सं.] पति, खांविंद ।

रतचंदण, रतचंदन—देखो 'रक्तचंदन' (रू. भे.)

उ०—घणा रत डूब.फटा खिळ घाट । पड़ैं रतचंदण जांणि कंपाट । —सू. प्र.

रतजगौ—देखो 'रातीजोगौ' (रू. भे.) (मा. म)

रतडउ—देखो 'रातौ' (अल्पा., रू. भे.)

रतण—देखो 'रत्न' (रू. भे.)

उ० -- दियौ गाजता गयंद, दियै तोखार विवह परि । दियै गांव कोठारि, दियै रतण थाळां भरि । —जगदेव पंवार री बात

रतणाकर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—चरण पखारचां रतणाकर री धारा गोमत जोर । धजा पताका तटतट राजां झालर री झक झोर । —मीरां

रतदांन—देखो 'रतिदांन' (रू. भे.)

उ०—एह समिए एक अगन, सांमी मिळी सुजांन । देह अग रतदांन मोही, विरह संतावत वांन ।

—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

रतद्रग—देखो 'रक्तनेत्र' (अ. मा.)

रतन—सं. पु.—१ सूर्य, रवि । (अ. मा.)

२ चन्द्रमा, शशि । (अ. मा., ना. डिं. को.)

३ उडगन, तारा ।

उ०—रतनां छाई रात । —अग्यात

४ द्दग, नैत्र, आंख । (ना. डिं. को.)

उ०—मौ सजन चालंतड़ां, रोय रोय गमै रतन । पडीया विसरा चौसरा, आंसु मोती व्रन । —ढो. मा.

५ अमृत, सुधा । (अ. मा., ह. नां. मा.)

६ शंख । (अ. मा., ह. नां. मा.)

७ छप्पय छंद का बासठवां भेद जिसमें ९ गुरू व १३४ लघु होते हैं । मतान्तर से १२ गुरु व १२८ लघु भी होते हैं ।

८ एक छंद विशेष जिसमें प्रथम दो जगण, एक सगण, एक नगण तथा अंत लघु-गुरु होते हैं ।

९ डिंगल के वेलिया सांणोर (छोटा सांणोर) छंद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ४ लघु ३० गुरु कुल ६४ मात्राएं होती हैं तथा इसी क्रम से शेष द्वालों में ४ लघु ५८ गुरु कुल ६२ मात्राएं होती हैं । —पिं. प्र.

१० एक मात्रिक छंद विशेष जिसमें १३ मात्राएं व अंत गुरु-लघु होता है । (र. ज. प्र.)

रू० भे०—रतन्न, रतन्नि ।

११ देखो 'रत्न' (रू. भे.)

उ०—१ मुरधर में 'पातल' मरद, इक्को रतन अमोल । लोकां ने तो लादसी, मरियां पाछें मोल । —ऊ. का.

उ०—२ पायौ जी म्हैं तो रांम रतन धन पायौ ।

—मीरां

उ०—३ सूरज खांखळ रतन सल, पोहमी रिण जळ पंक । कायर कटक कळंक इम, कुकवी सभा कळंक । —बां. दा.

उ०—४ भूप जड़ावै मुगट मझ, रोहणगिर उतपत्त । निस दीपग प्रतिनिध रतन, प्रभा अपूरब भत्त । —बां. दा.

उ०—५ कूंभाथळ मोताहळां, भरिया वप गिर भांत । चंद्र वरण गज रतन मैं, बंगड़ बणिया दांत । —बां. दा.

उ०—६ मोर मुकट वनमाळ, माळ तुलसी नव मंजर । रुचि कुंडळ कळ रतन, तिलक मंजुल पीतांबर । —रा. रू.

रतनकर—देखो 'रत्नकर' (रू. भे.) (नां. मा., ह. नां. मा.)

रतनकचोळियौ, रतनकचोळौ—सं. पु.—कटोरा, प्याला ।

उ०—१ पेट गवां की जी लोथ, मिरगानैणी जी राज, सूंडी तौ कहियै **रतनकचोळियां** जी, म्हांरा राज। —लो. गी.

उ०—२ महंदी भीजै भीजै **रतनकचोळै** बीच। पेम रस महंदी राचणी। —लो. गी.

रतनकांबळ, रतनकांबल—देखो 'रत्नकंबळ' (रू. भे.)

उ०—पछि वस्त्र पहिरावइ, देवदूखित वस्त्र, **रतनकांबल**, चीर, सोनइरी पांमरी खीरोदक खासा अधोतरी......। —व. स.

रतनकूट—देखो 'रत्नकूट' (रू. भे.)

रतनगरभ—देखो 'रत्नगरभ' (रू. भे.)

रतनगरभा—देखो 'रत्नगरभा' (रू. भे.)

रतनगिरि, रतनगिरी—देखो 'रत्नगिरि' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

रतनघर—देखो 'रत्नघर' (रू. भे.) (पिं. प्र.)

रतनचंद्र—देखो 'रत्नचंद्र' (रू. भे.)

रतनचौक—स. पु.—एक आभूषण विशेष।

उ०—जड़ाव रा बाजूबंध कांकण **रतनचौक** आरसी बींटी विराज रही छै। वळै चूड़ौ सोनैरी बंगड़ीदार विराजै छै। —रा. मा. सं.

रतनजोत, रतनजोतियौ—सं. स्त्री.— १ एक प्रकार की मणि।

सं. पु.—२ काश्मीर व कुमाऊ की पहाड़ियों में पाया जाने वाला एक क्षुप विशेष।

३ पुनर्नवा नामक क्षुप विशेष।

४ एक प्रकार का पौधा जिसके दूध के लगाने से तलवार का घाव मिट जाता है।

उ०—जांणणिर **रतनजोत** रा, पय रौ प्रथक प्रभाव। गात करै घण घाव वौ, घणा भरै औ घाव। —रेवतसिंह भाटी

रतनपारख—देखो 'रत्न परीक्षा' (रू. भे.)

रतनपारखी, रतनपारखू—देखो 'रत्न परीक्षक' (रू. भे.)

रतनपेच—सं. पु.—शिर में पगड़ी के साथ धारण करने का आभूषण विशेष।

उ०—मोतियां का तुररा **रतनपेचूं** के बीच ऐसा दरसाए। मांनू नवग्रह पास तारा गण आए। —सू. प्र.

रतनभरी—देखो 'रत्नभरिता' (रू. भे.)

उ०—एतइं अतिरथि सारथि आवइ। करण तणुं कुलु राउ जणावइ। मइं गंगा ऊगमतइ दीस लाधी **रतनभरी** मंजुस। —सालिभद्र सूरि

रतनमालती—सं स्त्री. १ एक प्रकार की लता।

२ उक्त लता का फूल। (अ. मा.)

रतनमै—वि. [सं. रत्न—मय] रत्नों से युक्त।

उ०—मुख सिख संधि तिलक **रतनमै** मंडित, गयौ जु हूंतौ पूठि गळि। आयै क्रिसन मांग मग आयौ, भाग कि जांणै भालियळि। —वेलि

रतनरांणौ—सं. पु.—१ ऊमरकोट के सोढा रांणा रतनसिंह की याद में गाया जाने वाला एक लोक गीत।

रतनरासी—देखो 'रत्नरासि' (रू. भे.)

रतनसांन, रतनसांनु—देखो 'रत्नसांनु' (रू. भे.)

रतनसिंहोत—सं. पु.—राठौड़ों की एक उपशाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

रतनांगरभ—देखो 'रत्नगरभा' (रू. भे.) (डिं. को.)

रतनांळिय—सं. पु.—१ एक मांसाहारी पक्षी जिसकी चोंच लाल होती है।

उ०—गिर स्रांग तजै त्रड माग ग्रही। **रतनांलिय** अंबर लाग रही। —पा. प्र.

२ रुधिर—नाली।

रतनाकर, रतनागर, रतनाघर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.) (अ. मा., डिं. नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ वय किसोर ऊतरै, जोर जोबन परगट्टै। अणमायौ अंब मैं, ति किरि **रतनाकर** तट्टै। —रा. रू.

उ०—२ बदळी ए म्हांरौ चांद छिपायौ **रतनागर** गूं नीर जे भरियौ बरसण ने बेरौ ए लगायौ। —लो. गी.

उ०—३ मथै **रतनागर** माहव मन्न। रंभा सु पसाय गृं लीध रतन्न। —मा. वचनिका

उ०—४ करमसीहौ खत्री करम का उजागर। कांम कांम अवसांण मांम का **रतनागर**। —रा. रू.

रतनार—वि.—१ लाल रंग का, लाल।

२ सुर्खी लिए हुए, सुर्ख।

रू० भे०—रतिनार।

सं. पु.—पुरुवंशीय रंतिभार राजा का नामान्तर।

रतनारा, रतनारी—सं. स्त्री.—१ लालिमा, लाली।

२ सुर्खी।

रतनाळ, रतनाळिय, रतनाळी, रतनाळीय, रतनाळौ—वि.—लाल, सुर्ख

उ०—१ जो जो झांवड़ियां जाती जतनाळी। रौ रौ आंखड़ियां राती **रतनाळी**। —ऊ. का.

उ०—२ धन धन देव देव जगंनाथ। अमर काया **रतनाळीय** आंख। —बी. दे.

उ०—३ इण भांति री तूं जी हलका ज्यौं लचकती, **रतनाळा** लोचनां, अणिआळा काजळ सारीजै छै। —रा. सा. सं.

उ०—४ बांहुडीयां **रतनाळीयां**, छकी भूह नैरोह। जरा जरा साथ न बोलही, मारु सुगंध घरोह। —ढो. मा.

रतनावळी—देखो 'रत्नावली' (रू. भे.) (अ. मा.)

रतन्न—१ देखो 'रतन' (रू. भे)

उ०—१ 'वीक' हर राउ सांभळि बचन्न, रीसाइ किया राता **रतन्न**। ऊससिय वोमि लागउ अबीहं, सांभळिए कथिने जइतसीह। —रा. ज. सी.

उ०—२ राता किया **रतन्न**, तै बिछड़ता दिन तिकरा। विछुहा मोती वन्न, वे आंसू सालै अजै। —अग्यात

२ देखो 'रत्न' (रू. भे.)

उ०—१ नमो कंस-केसि-बिधूसरा कन्ह।
रूकम्मरिग-प्रांरा पुरुक्ख **रतन्न**। —ह. र.

उ०—२ अगम अगोचर राखिये, कर कर कोटि जतन्न। दादू छांना क्यों रहै, जिस घट रांम **रतन्न**। —दादूवांणी

उ०—३ जस गाडा भरियौ जुड़ै, जग सो करौ जतन्न। औ आभरणां आभरण, रतनां सिरै **रतन्न**। —बां. दा.

रतन्नगरभा, रतन्नग्रभ्भा—देखो 'रत्नगरभा' (रू. भे.)

उ०—सुवपि सोळ स्रंगार, लाज बत्रीसइ लक्खरा। खम्या धरम धीरज, सील संतोख सतोगुरा। रंभा देवांगना, **रतन्नगरभा** पति रत्ती। गंगा गवरि लिछम्मि, जिसी सीतासतवंती। अखेराज वंस जसराज धू, धू जिम धाररा नह फिरी, 'अमरेस' पुत्र जिरा जमियौ, धन चहुवांरा करोगिरी। —गु. रू. बं.

रतनासबोध—सं. पु.—सागर, समुद्र।

रतन्नि,—१ देखो 'रत्न' (रू. भे.)

उ०—१ वर्णै सांमलौ गात झीरो वसन्ने, तिसी भूखरो जोत मोती **रतन्ने**। —रा. रू.

उ०—२ रमणी घणीं रूपि **रतन्नि**, निरखी एकाएक असंम। पण जाळोर नगर पदमनी, दीठी गउखि जांणि दांमिनीं। —ढो. मा.

२ देखो 'रतन' (रू. भे.)

रतपंड—देखो 'रक्तपिंड' (रू. भे.)

उ०—पिंड विहंड बह भरत **रतपंड**। सिहंड ध्वज मुख वयंड ध्वजसंड। —सू. प्र.

रतपति, रतपती—देखो 'रतिपति' (रू. भे.) (अ. मा.)

रतपरस—सं. पु. [सं. ऋतु-स्पर्श] श्वान, कुत्ता। (अ. मा.)

रतपिंड—देखो 'रक्तपिंड' (रू. भे.)

उ०—वढै वप वीजळ खंडविहंड। पड़ै धर तांम किया **रतपिंड**। —सू. प्र.

रतफळ—सं. पु.—वट वृक्ष। (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

रतबंध—देखो 'रतिबंध' (रू. भे.)

रतबीज—देखो 'रक्तबीज' (रू. भे.)

रतमुंहौ—वि. [सं. रक्त+मुख] १ लाल मुंह वाला।

२ जिसका मुख रक्त से सना हो।

रतमेळ—देखो 'रतिमेळ' (रू. भे.)

रतरस—सं. पु. [सं. रतिरस] श्रृंगार रस। प्रेम रस।

रतराज—देखो 'रितुराज' (रू. भे.)

रतळ—देखो 'रताळू' (रू. भे.)

रतवंती—देखो 'रतिवंती' (रू. भे.)

रतवा—सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की घास जो घोड़ों के लिये अच्छी समझी जाती है।

२ गेहूं की फसल का एक रोग।

३ बालकों का एक रोग, जिसके कारण शरीर पर लाल लाल फुंसियां हो जाती हैं।

रतवाह, रतवाहौ—देखो 'रातीवाहौ' (रू. भे.)

उ०—१ **रतवाह** पाबू पर······। —पा. प्र.

उ०—२ पडसां **रतवाहै** रवदां पर, आवै आप करीजौ ऊपर। —पा. प्र.

रतवील—सं. पु.—श्वान, कुत्ता। (अ. मा.)

रतसांई—सं. पु. [सं. ऋतुस्वामी] कुत्ता, श्वान। (अ. मा.)

रतांजणि, रतांजणी—सं. स्त्री.—वनस्पति विशेष।

उ०—१ रांमोडी नइं रासना रींगिणी रुद्र-जटाय। रांग **रतांजणि** रुमड़ी, रनिवनि रंग धराय। —मा. कां. प्र.

उ०—२ रावण रांग **रतांजणी** रवणी नइं रुद्राख। रुकरुदंती रायसलि, रोहड रोहिणि लाख। —मा. कां. प्र.

रतांनी—वि.—लाल मुंह वाली (भेड़)।

रता—सं. स्त्री.—दक्ष प्रजापति की एक कन्या, जो धर्म ऋषि की पत्नी थी।

वि.–अनुरक्त, आशक्त, रत ।

रताळ, रताळू–सं. पु.–पिंडालू नामक कंद, जिसकी तरकारी बनती है ।

उ०—१ अमरकंद आदू अलां, सूरण रोभ **रताळ** । वच्छ नाग वाकुंभियां, भेडागारी भालि । —मा. कां. प्र.

उ०—२ अजरख जमीकंद **रताळू** का विसतार । अंबु नींबू अंगीर कैरू का आचार । -- सू. प्र.

रू० भे०–रतळू ।

रति–सं. स्त्री. [सं.] १ धर्म ऋषि के पुत्र कामदेव की स्त्री, जो दक्ष प्रजापति की पुत्री थी ।

उ०—१ इक दिस कांन्ह इक दिस राधा । **रति** मनमथ दोऊ लख लाजै । —रसीलैराज रौ गीत

उ०—२ वसुदेव पिता सुत थिया वासुदे, प्रदुमन सुत पित जगत पति । सासू देवकी रांमा सु वहू, रांमा सासू वहू **रति** । —वेलि

उ०—३ दीसती मनोहारिणी इसी की स्वरग आवी उरवसी, सुवरण्ण चंपक गोरी, इसीउ आवी गोरी, राजहंस गति कि दीसती छइ **रति**, वचन विग्यांनवती सरस्वती । —व. स.

२ रति क्रीड़ा, काम क्रीड़ा, संभोग, मैथुन ।

उ०—१ संकुड़ित समसमा संध्या समयै, **रति** वंछति रुखमणि रमणि । पथिक वधू द्रिठि पंख पंखियां, कमळ पत्र सूरिज किरणि । —वेलि

उ०—२ मंदिरंतरि किया खिणंतरि मिळिवा, विचित्रे सखिए समाव्रत । कीधै तिणि वीवाह संसक्रित, करण सु तणु **रति** संसक्रत । —वेलि

उ०—३ संध्या कौ समय हुऔ छै । क्रस्णजी **रति** बांछै छै । —वेलि टी.

३ मैथुन या संभोग की इच्छा, काम वासना ।

उ०—येक तौ तत चिंता सो राता छै । परमेस्वर स्यूं लीन हुआ । अर दूसरा **रति** सौं राता छै । —वेलि टी.

४ प्रीति, प्रेम, अनुराग ।

५ आनन्द, तृप्ति, संतुष्टि ।

६ किसी में रत होने की दशा या भाव, आशक्ति ।

७ कान्ति, दीप्ति, आभा, सुंदरता, छबि, शोभा ।

उ०—कुळ वैदही जनकजा **रति** कोटी अभिरांम ।

—अवधांन माळा

८ सौभाग्य ।

९ गुप्त भेद, रहस्य ।

१०–श्रृंगार रस में स्थाई भाव । (साहित्य)

११ अलकापुरी की एक अप्सरा ।

१२ ऋषभदेव के वंशज, विभुराजा की पत्नी और पृथुषेण की माता ।

१३ सोना, औषधि आदि तोलने का एक तोल विशेष ।

१४ घुघची ।

रू० भे०—रंति, रइं, रइ, रई, रती, रत्ति ।

१५ देखो 'रितु' (रू. भे.)

उ०—१ साहब स्यांम समाळ, सहेत सहेलियां । रूड़ै नीर सुगंध, धरा रंगरेलियां । **रति** अनुकूळ विलास घणां रळियांमणा, भीसग दीसै इंद्र लिवूं हूं भांमणा । —बां. दा.

उ०—२ **रति** छह मेह अणल्हेह दूजौ रयण । तेह राखण जुगां चार तांई । —छत्तरसिंह हाडा रौ गीत

३ धर अंबर धड़हड़ै, छिपां धूमर भर छाए । रज अंबर अरड़ाव जेठ **रति** जिम चढि आए । —सू. प्र.

१६ देखो 'रात' (रू. भे.)

उ०—राजा फूलरि रांणियां, सोहै ईहीं भांति । किरि वेधांणी किरतियां, चंदौ पूनम **रति** । —गु. रू. बं.

१७ देखो 'रत' (रू. भे)

उ०—१ मुनेसर मन अनंग सुमति । रंगै बद अंग विखै रंग **रति** । --रांमरासौ

उ०—२ दीया दे दे पौढती, रहती पीया **रति** । जन हरिया जम आयकै, लेग्यौ आगै घति । —अनुभववांणी

१८ देखो 'रत्ती' (रू. भे.)

रतिक–देखो 'रत्तीक' (रू. भे.)

रतिकर–वि. [सं.] १ आनन्द व सुखप्रद ।

२ कामी, विलासी, विलासप्रिय ।

सं. पु.–कामी व्यक्ति ।

रतिकळह–सं. पु. [सं. रतिकलहम्] रतिक्रीड़ा, संभोग, मैथुन ।

रतिकळा, रतिकला–सं. स्त्री. १ श्रीकृष्ण की एक प्राणसखी ।

२ मैथुन कला ।

रतिकांत–सं. पु. [सं.] रतिपति कामदेव ।

रतिका–सं. स्त्री. [सं.] संगीत के ऋषभ स्वर की एक व अंतिम श्रुति ।

रतिकील–सं. पु. [सं.] कूकर, श्वान । (ह. नां. मा.)

रतिकुहर–सं. पु. [सं.] योनि, भग ।

रतिकेळि–सं. स्त्री.–संभोग, मैथुन ।

रतिक्रिया-सं. स्त्री.-संभोग, मैथुन ।

रतिगुण-सं. पु. [सं.] एक देवगंधर्व जो, कश्यप एवं प्राधा के पुत्रों में से एक था ।

रतिग्रह-सं. पु. [सं. रतिगृह] १ योनि, भग ।
२ केलिगृह ।

रतिताल-सं. पु.-संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक ।

रतिदांन-सं. पु.-संभोग की आकांक्षा वाली स्त्री के साथ किया जाने वाला संभोग, मैथुन ।

उ०-देवरणनै **रतिदांन** जाच जाचूं फिर जाचूं । रीझावरण दिन रात नाच नाचूं फिर नाचूं । —ऊ. का.
रू० भे०—रतदांन

रतिनाग-सं. पु. [सं.] कामशास्त्र के अनुसार सोलह प्रकार के रतिबंधों में से एक ।

रतिनाथ, रतिनायक-सं. पु. [सं] कामदेव । (डि. को.)

रतिनार-सं. पु. [सं.] १ पुरुवंशीय रंतिभार राजा का नामान्तर ।
२ देखो 'रतनार' (रू. भे.)

रतिनाह-सं. पु. [सं. रतिनाथ] रतिपति कामदेव ।

रतिपति, रतिपती-सं. पु. [सं. रतिपति] कामदेव ।

उ०—१ अत परमल पसर पसरिया आंबा, सुक पिक बोलै सुखद सराग । **रतिपति** तांरगै धनुख जठै रुच, बरसांरगै देखरग ज्यूं बाग । —बां. दा.

उ०—२ **रतिपति** रयरिग दिवस संतापति, व्यापति बिरह दुक्ख दियु दियु रे । राजुल कहइ सखि सांमि सुंदर विरगु, कइसइ ठौर रहइ जियु जियु रे । —स. कु.
रू० भे०-रतपति, रतपती, रतीपति, रतीपती ।

रतिपद-सं. पु.-नव अक्षर का एक वृत्त जिसमें आठ लघु और अन्त में एक गुरु होता है । (र. ज. प्र.)

रतिप्रिय-सं. पु. [सं.] कामदेव ।
वि.-कामुक, विलासी ।

रतिप्रिया-वि. स्त्री. [सं.] कामुक (स्त्री), अधिक मैथुन या संभोग कराने वाली ।
सं. स्त्री.-शक्ति की एक मूर्ति (तांत्रिक) ।

रतिप्रीता-सं. स्त्री. [सं.] काम वासना में रत रहने वाली स्त्री, कामुक स्त्री ।

रतिबंध-सं. पु. [सं.] काम शास्त्र के अनुसार, मैथुन का एक ढंग ।

रतिबाह-देखो 'रातीवाहौ' (रू. भे.)

उ०—अर बूडता बचता बीजा चतुरंग नूं चळ-विचळ हुवौ जांरिग **रतिबाह** देर अचांरगक आइ बाढियौ । —वं. भा.

रतिभवन-सं. पु. [सं.] १ योनि, भग ।
२ मैथुन करने का स्थान, कक्ष । केलिगृह ।
रू० भे०-रतिभौन ।

रतिभाव-सं. पु. [सं.] १ श्रृंगार रस का स्थाई भाव (साहित्य) ।
२ प्रेम, प्रीति ।
३ स्त्री पुरुष का परस्पर प्रेम ।

रतिभौन-देखो 'रतिभवन' (रू. भे.)

रतिमंदिर-सं. पु. [सं.] १ योनि, भग ।
२ वह स्थान जहां पर मैथुन या संभोग का कार्य किया जाता है । केलिगृह ।

रतिमित्र-सं. पु. [सं.] काम शास्त्रानुसार मैथुन का एक आसन ।

रतिमेळ-सं. पु.-मैथुन क्रिया ।
रू० भे०-रतमेळ ।

रतिया-देखो 'रात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—पनरां दिनां **रतियां** पख एक पुजाई । —केसोदास गाडरग

रतियाव-सं. पु.-देखो 'रातीवाहौ' (रू. भे.)

रतिरमण-सं. पु. [सं.] १ कामदेव ।

उ०—कुंअर-कमला **रति-रमण**, मयरग महाभड नांम । पंकजि पूजिय पय-कमळ, प्रथम जि करूं प्रणांम । —मा. कां. प्र.
२ रतिक्रीड़ा ।
रू० भे०-रतिरयरग ।

रतिरयण-देखो 'रतिरमरग' (रू. भे.)

उ०—**रतिरयण** सुदि नर नारि रांमति, गाळि प्रमदति गावही । मुख गांन दिन निस स्वांम मंगळ, वैरग चंग वजावही । —रा. रू.

रतिराज, रतिराय-सं. पु.-कामदेव, मदन ।

उ०—१ कर गहि लीधी ढोलिये, सायधरग कंत सकाज । हाथां हाथ मीलावीयौ, रति जांरगै **रतिराज** । —पनां

उ०—२ नवरंग सनेह आरगंद नव, उभळ प्रफूळ उभाळ सूं । **रतिराज** जोड़ नर रज्जिए, महाराज 'अभमाळ' सूं । —सू. प्र.

उ०—३ त्रिरिग वरस माहि निज प्रांरिग साधि सुंधुं मनावी आंरग, पनर वरस पोढउ रांजांन, रूपवंत **रतिराय** समांरग । —ढो. मा.

रतिरास-सं. पु.-रति क्रीड़ा ।

उ०—नहु उंन्हालु सीत रति, नहु पावस प्रकास । जिरिग मंदिरि नवि जांरगीइ, तिहां रमइ **रति-रास** । —मा. कां. प्र.

रतिलील–सं. पु.–संगीत में ताल का एक भेद।

रतिलीला–सं. स्त्री. [सं.] रतिक्रीड़ा।

रतिवंत–वि. (स्त्री. रतिवंती) १ सुन्दर, खूब सूरत, मनोरम।
२ प्रियतम, प्रेमी।
३ रसिक।
४ बलवान, शक्तिशाली।

रतिवंती–वि. स्त्री.–१ प्रेम से युक्त, प्रेममय।

उ०—**रतिवंती** आरति करै, रांम सनेही आव। दादू अवसर अब मिळै, यहु विरहनि का भाव। —दादूवांणी

२ सुन्दरी, रूपसी।
३ प्रियतमा, प्रेमिका।

रू० भे०—रतवंती,

रतिवर–सं. पु. [स.] कामदेव।

रतिवरद्धन–सं. पु. [सं. रतिवर्द्धन] वैद्यक में कई प्रकार की वस्तुओं के योग से बनने वाला एक पुष्टिकारक मोदक।

रतिवल्लभ–सं. पु. [सं.] कामदेव, मदन।

रतिवाउ–देखो 'रातीवाहौ' (रू. भे.)

उ०—पाछ पीलि पापी करइं कूडु दीधउ **रतिवाउ**। निहणीय पंच पंचाल बाल अनु राखसि जाउ। —सालिभद्र सूरि

रतिवास, रतिवासौ रतिवाह रतिवाहौ–देखो 'रातीवाहौ' (रू. भे.)

उ०—१ सायपुरै **रतिवास** जठै डेरा तज भागौ। सफरा तट जुध समैं, लोह हेकौ नह लागौ। वरस निनांगु विचै, सुक्रत ऐकौ नह कीधौ, रांणौ अड़सी छोड, पटौ रतनारौ लीधौ। देवसा कवर मरै दुसट, पदियौ वांदौ पूजियौ। मौकमा कमंध मोटा मिनख, तै जीवर कासूं कियौ। —अरजुनजी बारहट

उ०—२ अर नागपुर री लजा केमास नूं भळाय अगिहलपुर गजनवी रा अनीक में **रतिवाह** देण वणाय हांकियौ ढूवौ। —वं. भा.

उ—३ मेंवासे रा मेर, भरे कोचर में भाभा। **रतिवाहा** द्यै राज, प्राछ करि जायइं प्राभा। —घ. व. ग्रं.

रतिविदग्धा–सं. स्त्री. [सं.] हस्तिनापुर की एक वेश्या।

रतिसरवस्वा–सं. स्त्री. [सं. रतिसर्वस्वा] श्रीकृष्ण की एक प्राण सखी।

रतिसाधन–सं. पु. [सं.] १ पुरुष का शिश्न।
२ मैथुन सम्बंधी साधन।

रतिसास्त्र–सं. पु. [सं. रतिशास्त्र] काम शास्त्र।

रतिसुंदर–सं. पु. [सं.] काम शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रतिबंध।

रती–सं. स्त्री.–१ शक्ति, बल।
२ देखो 'रत्ती' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ हेक **रती** नह हालियौ सोनौ रांवण साथ। लेजावण लोभी करै, आथ साथ असमाथ —बां. दा.

उ०—२ महातम ध्येय **रती** नहिं गम्य। गती निगमागम गेय अगम्य। —ऊ. का.

उ०—३ सत्रु ग्राह ग्रासी, गयौ डूब सारा। **रती** मात हाथी रही सूंड बारा। —भगतमाळ

उ०—४ हरिजन सोनौ सोळवौं, **रती** न कौट समाय। हरीया साकट लोह ज्युं, काटै भरचौई थाय। –अनुभववांणी

३ देखो 'रति' (रू. भे.)

उ०—भूपाळ सिंघ धन भूपती, रिझवार कीरत बड **रती**। अंग लियां पौरस आसती, अवधेस जुध अणसंक। —र. ज. प्र.

४ देखो 'रात' (रू. भे.)

उ० रिम दौड़ियौ दिवस तिण **रतीयां**। मौहर खबर पुगि मेड़तियां। —रा. रू.

रतीक–देखो 'रत्तीक' (रू. भे.)

रतीपति, रतीपती–देखो 'रतिपति' (रू. भे.)

उ०—बिसन्न बिमोह बिसब्ब विग्यांन। **रतीपति** तात प्रकत्त राजांन। —ह. र.

रतीयन, रतीयेक–देखो 'रत्तीक' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया लेख लिलाट का, मेटचा कभी न जाय। या मैं तिल भरि नां वधै, **रतीयन** घाटै थाय। —अनुभव वांणी

उ०—२ कांमी नर कै कांम कौ, हरीया **रतीयेक** सुख। या तैं अधिकौ ऊपजै, मेर प्रवांणौ दुख। —अनुभववांणी

रतीवांन–देखो 'रतिवंत'

उ०—इत्तै ई में तो एक लंबधड़ंग, काळी कांबळ ओढियोड़ी, **रतीवाळी** जींवती जागती मूरती आय धमकी। —वरसगांठ

रतीवाहौ–देखो 'रातीवाहौ' (रू. भे.)

उ०—पछै राठौड़ किलांणदास रायमलोत **रतीवाहौ** मांणस ५० तथा ६० सुं दीयौ। —नैणसी

रतुऔ–सं. पु.–बरसात की मौसम में होने वाला एक पौधा, जिसके पत्ते छोटे व गोल होते हैं तथा फूल पीले होते हैं।

रतोपळ–देखो 'रक्तोत्पळ'।

रतोर–सं. पु.–लाल मुंह का बड़ा चूहा ।

रतौ–देखो 'रातौ' (रू. भे.)

उ०—१ जौंरौ करै फजीतीयां, रोय रोय **रता** नैंग । हरीया हरि विन जीव कौ, मजन नां कोई सैंग । —अनुभववांणी

उ०—२ रंमता रांम एक रंग **रता,** माया मोह विखै नहीं मता । उतिम साध सु लछन थोरा, सो कहीयै अजरांमर वीरा ।

—अनुभववांणी

उ०—३ रांण रौ लीध गुढवाड़, समहर **रतौ** । मालगढ़ वासि जिणि लीध गढ़ मेड़तौ । —सू. प्र.

उ०—४ मरद छतौ आपह मतौ, थप्पै मोटी थाप । रावत वट **रतौ** रहै, वौ रावत परताप ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

रत्त–देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—१ एक असुर ऊबरै, तांम भागौ **रत्त** भरतां । भाग मुख छिब छिबै, नैणा तरवरै तरतां । —मा. वचनिका

उ०—२ गडग्गड जोगणि **रत्त** गिळंत । हडहड नारद रिक्ख हसंत । —गु. रू. बं.

उ०—३ मरदिया जेम जगमल्ल मल्ल । ढण्डोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल । रळतळइ **रत्त** सोखइ सपत्त, सम्भळइ सत्त विसथरइ वत्त । — रा. ज. सी.

उ०—४ घुम्मै खेतरपाळ रे घन **रत्त** घुटक्के । —वं. भा.

२ देखो 'रत' (रू. भे.)

उ०—१ धरि पूठी घर सांमहा, सहू जुवांणा सत्थ । मन **रत्त** मनमत्थ सूं, मन चाहै मनरत्थ । —गु. रू. बं.

उ०—२ रत्ता सांमी धरम सूं, रांमा कांम ही **रत्त** । मन मोटा दिन पद्धरा, भड वका गहमत्त । —गु. रू. बं.

३ देखो 'रात' (रू. भे.)

उ०—मंझि समंदां वींट घर जळ सूं जांमौ, पत्त । किणहीं अवगुण कूंभड़ी, कुरळी मांझिम **रत्त** । —ढो. मा.

४ देखो 'रातौ' (रू. भे.)

रत्तउ–देखो 'रातौ' (रू. भे.)

उ०—अहर रंग **रत्तउ** हुवइ, मुख काजळ मसि-वन्न । जांण्यउ गुंजाहल अछइ, तेण न ढूकउ मन्न । — ढो. मा

रत्तक–सं. पु.–लाल रंग का एक पत्थर विशेष । (ग्वालियर)

रत्तड़ी–देखो 'रात' (अल्पा., रू. भे.)

रत्तड़ौ–देखो 'रातौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ तीखा लोयण कटि करळ, उर **रत्तड़ा** बिबीह । ढोला थांकी मारुई, जांणि विलुधउ सीह । —ढो. मा.

उ०—२ केहर कुंभ विदारियौ, तोड़ दुहत्थां दंत । रुहिर कळाई **रत्तड़ी**, मद तर तै महकंत । —बां. दा.

उ०—३ केहरि मरूं कळाइयां रुहिरज **रत्तड़ियांह** । (स्त्री. रत्तड़ी) —हा. झा.

रत्तडउ–देखो 'रातौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—क्षणु ऐक जि रवि **रत्तडउ**, आथमतइ आकासि । दैवइं दुस्ट करि लिखिउ, तिम माहरि घरवासि ।

—मा. कां. प्र.

रत्तर–देखो 'रक्त'

उ०—पियै भर **रत्तर** पत्तर पूर, बगत्तर टोप उडै खगबूर ।

—पे. रू.

रत्तळ–देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—गयंदां ढळ ऊथळ- पथळ गयंडौथळ, मूळ नहीं सळ दुभळ मुडै । **रत्तळ** भळ खखळ बखळ खळळ रिणरीधळ, जोध रिणमल अपल जुडै । —गु. रू. बं.

रत्ति–१ देखो 'रति' (रू. भे.)

२ देखो 'रत्ती' (रू. भे.)

३ देखो 'रात' (रू. भे.)

रत्ती–सं. स्त्री. [सं. रक्तिका] १ आठ चावल के बराबर या माशे के आठवें अंश के बराबर का एक तोल जो, प्रायः सोना जवाहरात आदि तोलने में काम आता है ।

वि. वि.—मतान्तर से छठा अंश भी माना जाता है ।

२ उक्त मान का बाट ।

३ उक्त मात्रा के बराबर सोना या अन्य पदार्थ ।

४ चिरमी या घूंघची का दाना जो उक्त तौल के बराबर माना जाता है ।

[स. रक्ती]–५ शोभा, छबि, कान्ति ।

उ०—पंगराज प्रमांण प्रगट चढ़ियौ 'अभपत्ती' । सह जांणियौ संसार, राज झाळाहळ **रत्ती** । —सू. प्र.

६ प्रेम, अनुराग ।

उ०—परणिजै त्रिभुवन पत्ती, भगतवछळ एण भत्ती । मेघ किनिया रूपमत्ती, रांम सां **रत्ती** । —पी. ग्रं.

वि०—१ अत्यल्प, तनिक, किंचित, रंचमात्र ।

२ लाल, रक्ताभ ।

उ०—१ यां मुख झूठी आखनैं, पूगौ साह दवार । अरज हुवंतां असपती, कीधी **रत्ती** रार । —रा. रू.

उ०—२ 'जगपत्ती' उग जोस मैं, **रत्ती** आग समांग । वनसपती खळ जाळवा, कर तत्ती केवांग । —रा. रू.

३ अनुरक्त, आशक्त ।

४ लीन ।

५ देखो 'रात' (रू. भे.)

रत्तीक–वि.–रत्तीभर, तनिक, थोड़ा सा ।

रू० भे०—रतिक, रतीक, रतीयेक ।

रत्तौ– देखो 'रातौ' (रू. भे.)

उ०—१ **रत्ता** तो नांम जिकै घग रूप । कदै न पड़ै नर सौ भव कूप । —ह. र.

उ०—२ अकबर **रत्ता** राग सूं. रंग त्रिया रस लद्ध । जो उतपात प्रगट्टियौ, सो सुणियौ निस-अद्ध । —रा. रू.

उ०—३ नकेलां न के घात गोळां नुखत्तां । रसै बाधियै खोलिया कोप **रत्तां** । —रा. रू.

उ०—४ मेवाडौ नीमे मरण, **रत्तौ** रिग गिम्मार । लोह सवाहै भुज्जबळ, छडै मोह संसार । —गु. रू. बं.

रत्थ–देखो 'रथ' (रू. भे.)

उ०—हैकंपै कायरां प्रांग छूटगा वीरांग हांसै । भैचक्कै भूलोक **रत्थां** थंमायौ सु भांग । —बादरदांन दधवाड़ियौ

रत्थ्या–स. पु. [सं] मार्ग ।

उ०—बैरस वैरागी त्यागी तन तावै, बेला तेला विधिं सहजां बग आवै । पत्थ्या पाटग दै भिक्ष्याटग भाजी, **रत्थ्या** करपट लै चरपटवत राजी । —ऊ. का.

रत्थी–देखो 'रथी' (रू. भे.)

रत्थौ–देखो 'रथ' (रू. भे.)

उ०—काळ भैरव रुद्र भद्र काळी, हरखि हसि दीध नारद ताळी । दखग सूं दियौ राठौड़ वत्थां, रवी रहतांग आकास **रत्थां** । —गु. रू. बं.

रत्न–सं. पु. [सं.] १ आभूषगों में जड़ने, कंठाहार बनाने या औषधियों में काम आने वाले, विशिष्ट प्रकार के छोटे व चमकीले खनिज पदार्थ या पत्थर, जो बड़े कीमती होते हैं। हीरे, ज़वाहरात, मोती, मणियां आदि ।

वि. वि.–इनकी संख्या ५, ९ या १४ मानी जाती है ।

२ कोई अमूल्य वस्तु ।

३ कोई सर्व श्रेष्ठ वस्तु ।

उ०—अत्र थो प्रसिद्ध आत्तपत्र मात्र आरय्यन को, छत्र छत्र-धारिन नछत्र सुख साता को । जाता रहा लेके वौ अमोल **रत्न** दाता 'जसू' । पोल में विधाता पायौ मोल मांनधाता को । —ऊ. का.

४ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक । (व. स.)

५ पांच, नौ व चौदह की संख्या । *

वि०–१ जो अमूल्य हो ।

२ जो सर्व श्रेष्ठ हो ।

३ पांच, नौ व चौदह ।

देखो 'रतनत्रय' ।

रू० भे०—रतग, रतन, रतन्न, रतन्नि ।

रत्नकंबळ, रत्नकंबल–सं. पु.–एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—पछइ भला वस्त्र पहिराया ते कुग कुग, देव दुष्य वस्त्र **रत्नकंबल** पांमडी खीरोदक मसज्जर चीगी बुलबुल चसमा अतलस लाहि अटांग खासा सेलां मुलमुल.................. —व. स.

रू० भे०—रतनकांबळ, रतनकांबल ।

रत्नकर–सं. पु. [सं.] कुबेर ।

रू० भे०—रतनकर ।

रत्नकूट–सं. पु. [सं] १ एक पर्वत का नाम । (पौराणिक)

२ एक बोधिसत्व ।

रू० भे०—रतनकूट ।

रत्नकूटा–सं. स्त्री. [सं.] अत्रि ऋषि की पत्नियों में से एक ।

रत्नगरभ–सं. पु. [सं. रत्नगर्भः] समुद्र, सागर ।

रू० भे०—रतनगरभ ।

रत्नगरभा–सं. स्त्री. [सं. रत्नगर्भा] १ पृथ्वी, भूमि ।

२ नर रत्न उत्पन्न करने वाली (स्त्री)

रू० भे०—रतनगरभा, रतनागरभ, रतन्नगरभा, रतन्नग्रब्भा ।

रत्नगिरि–सं. पु. [सं.] बिहार का एक पर्वत । (ऐतिहासिक)

रू० भे०–रतनगिरि, रतनगिरी, रत्नागरि, रत्नागिरि ।

रत्नग्रीव–सं. पु. [सं.] कांचन नगरी का एक राजा, जो विष्णु का परम भक्त था ।

रत्नघर–सं. पु. [सं.] समुद्र, सागर ।

रू० भे०–रत्नघर ।

रत्नचंद्र–सं. पु. [सं.] रत्नों के अधिष्ठाता एक देवता ।

रत्नचूड–सं. पु. [सं.] पाताल लोक का एक राजा ।

रत्नजटित, रत्नजड़ित–वि. [सं. रतनजठित] जिसमें रत्नजड़े हुए हों ।

उ०—रत्नकरंड ऊघाडचौ, **रत्नजटित** छइ हार। आभरण बीजा घरणा, अनोपम छइ सार। —नळदवदंती रास

रत्नजालक, रत्नजालि–सं. पु.–एक प्रकार का आभूषण। (व. स.)

उ०–चंद्रावली सूरयावली नक्षत्रावली स्रोणीसूत्र कांचीकलाप रसना किरीट चूडामणि मुद्रांनंतक दसमुद्रिका अंगुलीयक अंगूथला हेमजालक मणिजालक **रत्नजालक** मांनक। —व. स.

रत्नत्रय–सं. पु.–जैन दर्शनानुसार–सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व सम्यक चरित्र इन तीनों का समूह।

रत्नदांमा–सं. स्त्री. [सं. रत्नदामा] राजा जनक की स्त्री व सीता की माता का नाम।

रत्नदीप–देखो 'रत्नप्रदीप'

रत्नधेनु–सं. स्त्री. [सं. रत्न+धेनु] रत्नों की बनी गाय, जिसके दान का बड़ा माहात्म्य माना है।

रत्ननाभ–सं. पु. [सं.] विष्णु का एक नामान्तर।

रत्ननिधांन–वि. [सं. रत्ननिधानम्] जिसके पास रत्नों की निधि हो।

उ०—किहां मातंग ग्रहांगण किहां ऐरावत, किहां दुरगत विपणि किहां चिंतामणि, किहां दग्ध मरु किहां कल्पतरु, किहां निरद्धन संतान किहां **रत्ननिधांन**, किहां ऊखर किहां कमलसर, किहां मुनि सकल गुणावास। —व. स.

रत्ननिधि–सं. पु. [सं.] १ समुद्र, सागर।
२ सुमेरू पर्वत।
३ विष्णु का एक नामान्तर।

रत्नपरीक्षक–सं. पु. [सं.] रत्नों की परीक्षा करने वाला जौहरी।

रू० भे०–रतनपारखी, रतनपारखू, रत्नपारक्ष, रतनपारखि, रत्नपारखी।

रत्नपरीक्षा–सं. स्त्री. [सं.] १ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक। (व. स.)

२ हीरे, पन्ने, जवाहरात आदि की जांच कला।

रू० भे०–रतनपारख।

रत्नपारक्ष–देखो 'रत्नपरीक्षक' (रू. भे.)

उ०—एक ठांमि बइठा जवहरी, एक जांणे हेम परीक्षा करी। घणा तिहा छइ **रत्नपारक्ष** ग्राहक जोवा बइठा लक्ष। —नळदवदंती रास

रत्नपारखि, रत्नपारखी–देखो 'रत्नपरीक्षक' (रू. भे.)

उ०—तेर पसाइता, चऊद चडियात, पन पउंतार, सोल महां–मसांणी, सतर आडणीय, अढार भूभार, अगुणीस मांणिक्य विनांणी, वीरा **रत्नपारखि**, परिखारि वसु सभाई बइठौ। —व. स.

रत्नप्रदीप–सं. पु. [सं.] १ दीपक के समान प्रकाशित रहने वाला एक कल्पित रत्न विशेष। ऐसा माना जाता है कि पाताल में इसीसे प्रकाश रहता है।
२ रत्न का दीपक।

रत्नप्रभा–सं. स्त्री. [सं.] १ पृथ्वी, भूमि।
२ एक नरक। (जैन)

रत्नबाहु–सं. पु. [सं.] विष्णु का एक नामान्तर।

रत्नभारिता–वि. स्त्री. [सं. रत्न भरिता, प्रा. रयण भरिया] जो रत्नों से भरी हुई हो, परिपूर्ण हो।

रू० भे०–रतनभरी।

रत्नमाळया, रत्नमाळा, रत्नमाळिका–सं. स्त्री. [सं. रत्न+माला]
१ रत्नों का हार रत्नों की माला, मणिमाला।
२ राजा बलि की कन्या का नाम।

रत्नमाळी–सं. पु. [स. रत्नमालिन्] एक प्रकार के देवता (पौराणिक)

रत्नरासि, रत्नरासी–सं. पु. [सं. रत्न राशि] १ रत्नों का ढेर।
२ समुद्र, सागर।

रू० भे०—रतनरासी।

रत्नवसी–सं. स्त्री. [सं] पृथ्वी, भूमि।

रत्नसांनु–सं. पु. [सं. रत्नसानु] सुमेरू पर्वत का नाम।

रू० भे०—रतनसांन, रतनसांनु।

रत्नसागर–सं. पु. [सं.] १ समुद्र में वह स्थान जहां रत्न निकलते हैं।
२ वह समुद्र जिसमें रत्न पाए जाते हों।

रत्नसाळा–सं. स्त्री. [सं रत्नशाला] १ वह स्थान या कक्ष जिसमें रत्न रक्खे जाते हों।
२ वह महल जिसकी दीवारों में रत्न जड़े हों।

रत्नांगद–सं. पु. [सं.] पांड्य देश के वज्रांगद राजा का नामान्तर।

रत्ना–सं. स्त्री. [सं] यादव राजा अक्रूर की पत्नियों में से एक।

रत्नाकर–सं. पु. [सं.] १ समुद्र, सागर।
२ रत्नों की खान।
३ गौतम बुद्ध का एक नामान्तर।
४ वाल्मीकि ऋषि का पुराना नाम। (पौराणिक)
५ एक वैश्य जो एक बैल के द्वारा मारा गया था। (पौराणिक)

रू० भे०—रइणाइर, रतंनागर, रतनाकर, रतनागर, रतनाघर, रयणागर, रयणायर, रयणायरु, रेणाइर, रेणायर, रैणइर, रैणाइर, रैणायर, रैणावर।

रत्नागर, रत्नागिरि–देखो 'रत्नगिरि' (रू. भे.)

उ०—भद्र जाती हस्ती विंध्याचल, राजहंस मांनसरोवरि,

चिंतामणि, रोहणाचलि, रत्न **रत्नागरि** प्रवरत्तइ............

—व. स.

रत्नाचळ-सं. पु. [सं. रत्नाचल] १ बिहार का एक पर्वत (ऐतिहासिक)

२ पहाड़ के रूप में लगाया जाने वाला रत्नों का ढेर, जिसका दान करने का बड़ा माहात्म्य है। (पौराणिक)

रत्नाद्रि-सं. पु. [सं] एक पर्वत विशेष।

रत्नाधिपति-सं. पु. [सं.] १ धनपति कुबेर।

२ रत्न सम्पदा का मालिक।

रत्नाभूसण-सं. पु. [सं रत्नाभूषण] ऐसा आभूषण जिसमें रत्न जड़े हों।

रत्नावळि, रत्नावलि-सं. पु. [सं. रत्नावली] १ एक राजकन्या, जिसे रत्नेश्वर नामक शिवमंदिर में शिव की नृत्योपासना करने के कारण, पाताल लोक का रत्नचूड नामक राजा पति के रूप में प्राप्त हुआ।

२ एक प्रकार का व्रत।

उ०—जोगसिद्ध भद्र, महाभद्र भद्रोत्तर, सरवतो भद्र, **रत्नावलि**, कनकावलि, मुक्तावलि, यवमध्य, वज्रमध्य, चंद्रायण, सूरायण, पक्षोपवास। —व. स.

३ देखो 'रत्नावळी' (रू. भे.)

रत्नावळी, रत्नावली-सं. स्त्री. [सं. रत्नावली] १ मणियों या रत्नों की माला, हार।

उ०—१ हार अरद्ध हार प्रलंब प्रालंब नवसर कटक कंकण केयूर नुपूर करण्ण कुंडल एकावली कनकावली **रत्नावली** वज्रावली पत्रावली चंद्रावली सूरचावली। —व. स.

उ०—२ सुख भरि सूती सुंदरि, पेखि सुपन मधराति। रगत चोल **रत्नावली**, प्रिउ नै कहइ ए बात। — कवि धरम कीरति

२ दीपक राग की पुत्र वधू एक रागिनी। (संगीत)

३ एक अर्थालंकार विशेष।

रू० भे०-रतनावळी, रत्नावलि, रयणावली।

रत्नोत्तमा-सं. स्त्री -एक तान्त्रिक देवी।

रत्याव-देखो 'रातीवाहौ' (डिं. को.)

रत्र-देखो 'रक्त' (रू. भे.)

उ०—१ पत्रां भरि **रत्र** हेकौ हिक पांण, श्रांणै करकंठ कढावत श्रांण। बढावत 'केहरि' केहरि बाग, नखायुध गाजत भाजत नाग।

—मे. म.

उ०—२ 'जसै' पाड़िया खेत भड नेतबंधा जिकै, लगै परमळ सदळ लोह लागै। सबळ पत्र भरै **रत्र** पीन सकै सकति, अलिअळां तणा गुंजार आगै। —गु. रू. बं.

रथंतर-सं. पु. [सं. रथन्तर] १ एक अग्नि जो पांचजन्य नामक अग्नि का पुत्र था।

२ एक साम जो मूर्तिमान स्वरूप में ब्रह्मा की सभा में उपस्थित रहता था।

रथंतरी-सं स्त्री. [सं. रथन्तर्या] १ पुरुवंशीय राजा दुष्यंत की माता।

रथ-सं. पु. [सं.] १ पुराने जमाने की एक प्रकार की सवारी जिसमें दो या चार पहिये होते थे और जिसमें दो से लेकर दस तक घोड़े जोते जाते थे। स्यंदन,। (डिं. नां. मा.)

उ०—२ जेतइ वीर मस्तक पडइं तेतइ कायर पगि पिंडि चडइं, हाथिउ हाथिइं, घोडौ घोडइं, **रथ** रथइं, पायक पायकइं।

—व. स.

२ इसी प्रकार की कोई गाड़ी, बहल।

३ वाहन, सवारी।

उ०—१ हर रथ माठौ होय, सकत **रथ** होय सयांणौ। सितरथ देवै पूठ, घटै उतराध पयांणौ। —चौथ वीठू।

उ०—२ राजा मांनधाता पूछै। कहो गरुड़-पंख तोनुं किसै वासतै रोकियौ छै। गरुड़ पंख कहै छै हुं ठाकुरां रौ **रथ** छूं, मौ ऊपर असवार हुवौ तौ ठाकुरां रौ दरसण करावइ ल्याऊं।

—चौबोली

उ०—३ तुरियंद जिसा **रथ** आपताप। मुरधरा खेत रा बळ अमाप। —सू. प्र.

४ सप्त राज्य लक्ष्मियों में से एक।

उ०—करि तुरंग **रथ** पायक सेन भांडागार, ५. कोस्टागार ६. गढ ७ सप्तांग राज्य लक्ष्मी। —व. स.

५ आत्मा का यान, शरीर।

६ सेना।

७ पैर, पग।

८ क्रीड़ा या विहार का स्थान।

९ कनिष्ठा के मूल के पास होने वाला एक सामुद्रिक चिन्ह।

उ०—मणिवंध तीन मणि जब प्रमांणि। मछ कच्छ कुंभ गज **रथ** मंडांणि। —सू. प्र.

१० किसी चट्टान को काट कर बनाया हुआ शिला मन्दिर।

११ छन्द शास्त्र के अनुसार डगण के द्वितीय भेद का नाम।

रू० भे०-रत्थ, रथु, रथ्थ। अल्पा., रथड़ौ।

मह० =रथौ।

रथकरता-सं. पु. [सं. रथ+कर्त्ता] १ बढ़ई।

२ रथ बनाने वाला कारीगर।

रथकार–सं. पु.–रथ बनाने वाला, बढ़ई।

उ०—वस्त्रकार विभूसणकार पुंतार अस्व शिक्षाकार **रथकार** साव्यकार प्रतीहार छुरीकार छत्रधार वांणहीधर वागधर।

—व. स.

रथकारक–देखो 'रथकार' (रू. भे.)

उ०—मोटौ रिसि बलदेव मुनिसर, प्रतिबोध्या पसु वरग जी। दांन सुपात्र दियौ **रथकारक**, पांम्यउ पांचमउ स्वरगजी।

—स. कु.

रथकारतिक–सं. पु. [सं. कार्त्तिकेय+रथः] मोर, मयूर। (ह. नां. मा.)

रथकुमार–सं. पु.–[सं.] मोर। (नां. मा.)

रथक्रत–सं. पु. [सं. रथक्रृत] एक यक्ष, जो धातृ नामक आदित्य के साथ चैत्र माह में भ्रमण करता है।

रथक्रांत–सं. पु.–संगीत में एक ताल।

रथखांनौ–सं. पु.–वह स्थान या कक्ष जहां रथ रक्खे जाते हैं, रथागार।

रथड़ो–देखो 'रथ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ **रथड़ा** बहल जुपाइया जी, ऊंटा कसिया भार।

—मीरां

उ०—२ राज म्हांनै **रथड़ौ** जुताय दो हौ, हां औ म्हारां भर जोड़ी रा भरतार भंवरजी रथड़ौ जुताय दो हौ। —लो. गी.

रथचरण–सं. पु. [सं.] चक्रवाक पक्षी।

रथचरचा–सं. स्त्री. [सं. रथचर्या] एक प्रकार की विद्या। (व. स.)

रथजातरा, रथजात्रा–देखो 'रथयात्रा' (रू. भे.)

रथध्वज–सं. पु. [सं] विदेह देश के 'कुशध्वज–जनक' राजा के पिता।

रथध्वांन–सं. पु.–वीर नामक अग्नि का नामान्तर।

रथपति–सं. पु. [सं.] रथ का नायक, रथी।

रथप्रभु–सं. पु. [सं.] १ वीर नामक अग्नि का नामान्तर।
२ रथ का मालिक।

रथबाहण–देखो 'रथवाहन' (रू. भे.)

रथमोड़ण–वि.–शत्रु के रथ को पीछा घुमाने वाला।

उ०—अथ कुमार उद्धतस्कंधबंधुर, वज्रमय भुजादंड, बिस्तीरण्ण वक्षः स्थल, रणरसिक, समर भरधुरि धवल, अतुलबल पराक्रम, **रथमोड़ण** परदलण, सूर वीर। —व. स.

रथयात्रा–सं. स्त्री. [सं.] आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को मनाया जाने वाला एक पर्व। इसमें प्रायः जगन्नाथजी, बलरामजी और सुभद्राजी की प्रतिमाओं को रथ पर सवार करा कर सवारी निकालते हैं। इस रथ को लोग स्वयं खींचते हैं।

उ०—तीरथ यात्रा, **रथयात्रा** सट्पंचासतृदिक्कुमारिकास्नांत्र–ध्वजारोपण। —व. स.

वि. वि.–बोद्धों और जैनियों में भी उनके देवताओं की रथ यात्राऐं निकाली जाती हैं।

रू० भे०–रथजातरा, रथजात्रा।

रथराजी–स. स्त्री.–वसुदेव की पत्नियों में से एक।

रथवर–सं. पु. [सं.] एक यादव राजा, जो भीमरथ राजा का पुत्र था।

रथवांन–सं. पु. [सं रथवान्] १ रथ को हांकने वाला, सारथी

उ०—भारत में अरजुन के आगे, आय भयै **रथवांन**। उणने अपने कुळ को देखा, छुट गये तीर कमांन। —मीरां

रथवाह–सं. पु. [सं.] घोड़ा।

रथवाहक–सं. पु. [सं.] रथ को चलाने वाला।

रथवाहन–सं. पु. [सं.] मत्स्य नरेश विराट का एक भाई।

रू० भे०—रथबाहण

रथसप्तमी, रथसातम–सं. स्त्री. [सं. रथ सप्तमी] माघ शुक्ला सप्तमी।

रथसाळ, रथसाळा रथसाला–सं. स्त्री. [सं. रथशाला] वह कक्ष या स्थान जहां रथ रक्खा जाता है, रथागार।

उ०—जिन मंदिर धवल मंदिर राजकुल देवकुल अट्टाल प्रासादमाल लेखसाल पौसधसाल **रथसाला** हस्तिसाल तुरंगसाल व्यायांमसाल टंकसाल............

—व. स.

रथसेन–सं. पु. [सं] पाण्डव पक्ष का एक योद्धा, जिसके रथ के अश्वों का रंग मटर के फूल जैसा था और उनकी रोमावली श्वेदलोहित वर्ण की थी।

रथस्वन–सं. पु. [सं.] एक यक्ष, जो मित्र नामक सूर्य के साथ ज्येष्ठ मास मैं भ्रमण करता है।

रथांग–सं. पु. [सं. रथ+अंग] १ रथ या गाड़ी का कोई भाग, अंग।
२ रथ का चक्का, पहिया।
३ विष्णु का सुदर्शन चक्र।

उ०—धांनखी **रथांग** धार मेर विबुधांन पांणां, किन्नरां अम्मरां नरां धरा ओपवै सुधाव।

—भगतरांम हाडा रौ गीत।

४ चक्रवाक नामक पक्षी। (डिं. को)
५ कुम्हार का चक्र।

रथांगधर–सं. पु. [सं.] विष्णु।

रथांगपांणि–सं. पु. [सं. रथांगपाणि] १ विष्णु ।
२ श्रीकृष्ण ।

रथाक्ष–सं. पु. [सं] स्कन्द का एक सैनिक ।

रथाग्रणी–सं. पु. [सं.] रामचन्द्र के अश्वमेधीय अश्व के संरक्षण में शत्रुघ्न के साथ जाने वाला एक योद्धा ।

रथालि, रथाली–सं. स्त्री. [सं. रथ+आली] रथों की पंक्ति, कतार ।

उ०—तुरंग मातंग **रथालि** पाला, ते पारथ ने वारि हूया पंखाला । बांणावली कोरव नी बि खंड, करइं क्षुरप्रे बलबंड चंड ।
—सालिसूरि

रथि–१ देखो 'रथ' (रू. भे.)

उ०—सघला सांमक अथरवणी, यजुर्वेदीया जांण । रघुवेदी सवि **रथि** चड्या, पंडिता पोकारि पुरांण । —मा. कां. प्र.

२ देखो 'रथी' (रू. भे.)

रथी–सं. पु. [सं. रथिन्] १ रथ पर सवार होकर युद्ध करने वाला योद्धा ।
२ वह रथपति योद्धा जो अकेला हजार योद्धाओं से युद्ध कर सकता हो ।
३ सारथी ।

उ०—जूं सहरी भ्रूह नयण अग जूता, विसहर रासि की अलक वक्र । वाळी किरि वांकिया विराजै, चंद **रथी** ताटंक चक्र ।
—वेलि

४ रथ की सवारी करने वाला ।
५ मृतक के शव को अन्तिम संस्कार के लिये ले जाने हेतु बांस या लकड़ी का बनाया हुआ ढांचा, सीढ़ी, शवयान ।

उ०—हरि हरि उचार नर पुर, हुए हेर वास विखमी हुई । उण वार **रथी** न्रप ऊपड़े, आप सुखासण आरुही । —रा. रू.

६ चिता ।

उ०—सीढ़ी सूं उतारनै **रथी** माथै सुवांणियौ तौई उणरौ मन नीं डिगियौ । —फुलवाड़ी

रू० भे०—रत्थी, रथि ।

७ देखो 'रथ' (रू. भे.)

उ०—सील ब्रत भीसम नें साध्यौ, बरनी व्यास बडाई । चूक क्रस्ण ने **रथी** चक्र को, सील प्रताप संभाई । —ऊ. का.

रथीतर–सं. पु. [सं.] १ मनु वैवस्वत कुलोत्पन्न एक राजा जो नाभाग वंशीय पृषदश्व राजा का पुत्र था । (पौराणिक)
२ बौधायन श्रौत सूत्र में निर्दिष्ट एक आचार्य ।

रथु–देखो 'रथ' (रू. भे.)

उ०—कूइ करीउ गोविंदि देवि **रथु** धरणिहिं खूतउ । मारीउ अरजुनि करणु कूडि रणि अण भूभंतउ ।
—सालिभद्र सूरी

रथ्थ–देखो 'रथ' (रू. भे.)

रद–सं. पु. [सं.] १ दांत, दंत । (अ. मा., डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ साह सुजा गंजै समर, सांमंतां र सलेम । मद बिण पाछौ मेल्हियौ, जिम्हग **रद** बिण जेम । —वं. भा.

उ०—२ आणंद सु जु उदौ उहास हास अति, राजति **रद** रिखपंति रुख । नयण कमोदणि दीप नासिका, मेन केस राकेस मुख । —वेलि.

उ०—३ इक अमर संग मतंग आंनन, मेक गित **रद** मंडितं । प्रम नेत हेत सिंदूर पूरित, पास स्रुति रव पंडितं । —रा. रू.

२ हाथी दांत ।

उ०—सिंधुर गाजै सिद्ध रा, आयौ किर आसाढ । ऐ तकियौ आसाढ नूं **रद** आसाढौ चाढ । —बां. दा.

३ चीर-फाड़ ।
४ खरोंच ।
५ वस्त्र विशेष ।

उ०—**रदां** फरदां मुसवरां चौपसीदां ललचाव । कंदां केळमी कांमणी, वेहद हदां वणाव । —पनां

६ श्वेत । * (डिं. को.)
७ देखो 'रद्द' (रू. भे.)

उ०—१ चाप बैर हर चाप, जाप धक्ख जपिया, उभै रांम जुध कारण, तांम अड़पिया । लछवर धनंख साथ तेज निज हर लिया, **रद** कर मद दुजरांम, अवधपुर आविया ।
—र. ज. प्र.

उ०—२ अटक हीण असपती, पाप छित औसर पायौ । **रद** करवा रज्जियां, दुरद जेहौ मद पायौ । —रा. रू.

उ०—आपा मारि मरै जो कोई, हरि धरगा मैं हटक न होई । आपा मारि मरै जनै सदका, विन आपै मूंवा सौ **रद का** ।
—अनुभववांणी

रदएक–सं. पु. गजानन, गणेश ।

रदकार–सं. स्त्री.–पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक । (व. स.)

रदघर, रदच्छद, रदछद, रदछदन–सं. पु. [सं. रदगृहं, रदच्छद, रदच्छद] ओष्ठ, होठ । (अ. मा., डिं. को., ह. नां. मा.)

रदछदरमण–सं. पु.–पान, ताम्बूल । (अ. मा.)

रददांन–सं. पु.–रति एवं प्रेम के समय दांतों से कसकर दबाना जिससे चिन्ह पड़ जाय ।

रदधर–सं. पु.–ओष्ठ, होठ। (ह. नां. मा.)

रदन–सं. पु., [सं. रदनः] दंतपंक्ति, दंतसमूह, दांत।
(अ. मा., डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—**रदन** छदन वदन सरूप। —रांमरासौ

रदनच्छद, रदनछद, रदनछदन–सं. पु. [सं. रदनः+छदः] ओष्ठ, होठ।

रदनवसन–सं. पु. [सं. रदन+वसनम्] ओष्ठ, होठ। (अ. मा.)

रदनावळी–सं. स्त्री. [सं. रदनावलि] दंतपंक्ति।

उ०—कुंद कली **रदनावळी**, अद्भुत अधर प्रवाल। सोवन देह सुहांमणी, निरमल ससिदळ भाल। —स. कु.

रदनोरी–सं. स्त्री.–१ लक्ष्मी, गृह लक्ष्मी।

उ०—भारी नांणां बिन दांणां बिन भूमै। घर री **रदनोरी** सदनां बिन घूमै। —ऊ. का.

२ सुदन्ती, सुन्दरी।

रदपट–सं. पु. [सं.] ओष्ठ, होठ।

रदबद–सं. पु.–घुल-मिल जाने की अवस्था।

उ०—नापौ दरबार रे सारै लोगां सूं **रदबद** हुवौ। सौ लोग सारौ राजी रहै। —नापै सांखला री वारता

रदबदळ, रदळबदळ–देखो 'रद्दोबदळ' (रू. भे.)

उ०—१ पछै नीबाब जुलफारखां री मारफत पातसाह मोजदीन मुं **रदबदळ** कराइ। रायजी रुघनाथजी नु दीली मेलीया।
—रा. वं. वि.

उ०—२ तद ऊगै कह्यौ, थारा धणी नै छुडावै तौ म्हांसूं **रदळबदळ** करि। —कहवाट सरवहिया री वात

उ०—३ अबु नु मेहमद मुराद कहौ–राजा रा लोग सु थे असनाव छौ। इणां री **रदळबदळ** थे करौ। —नैणसी

रदलोही–सं. पु.–रक्तातिसार।

रदि, रदी–१ हाथी, गज।

२ देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—बाहुक वलतु वांणी वदि, गद गद कंठ दुख अति **रदि**। सती साचवि सील सुजाण, कस्ट पडि करिसी वात
—नळाख्यांन

३ देखो 'रद्दी' (रू. भे.)

रदीफ–सं. पु. [अ.] १ घोड़े पर सवार के पीछे बैठने वाला व्यक्ति।

२ गजल में काफिए के बाद आने वाला शब्द या शब्द-समूह।

स. स्त्री.–३ पीछे चलने वाली स्त्री।

४ पीछे की ओर की सेना।

रदौ–देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ सीत-पती कह, ओघ अघं दह। देह अभै करि, रांम **रदे** धरि। गावत पांमर, झूठ पयंवर, ऊंबर सौ वित कांय गमावत। —र. ज. प्र.

२ देखो 'रद्दी' (रू. भे.)

रदोबदळ–देखो 'रद्दौबदळ' (रू. भे.)

रद्द–वि. [अ.] १ निरस्त, खारिज, रद्द।

उ०—ठाकर आपरी आंट में पट्टौ कर दियौ तौ कांई व्है, बांणियौ आपरी अकल आपै जद चावै तद उणनै **रद्द** कर सकै।
—फुलवाड़ी

२ जिसे निरर्थक मान लिया गया हो, व्यर्थ, अप्रयोज्य।

३ परिवर्तित, बदला हुआ।

४ नापसंद।

५ दूषित।

६ हीन, न्यून।

उ०—हालै दळ हद्द जांणि जळद्द गयण गरद्द मिळि तद्द। फत्तै सिरि हद्द, रैण रहद्द रांवां मद्द थिय **रद्द**।
—गु. रू. बं.

७ पराजित।

उ०—राजा दखिण विराजियौ, गा दखणी हुइ **रद्द**। साह सुपारिस सांभळै, की फत्तै सरहद्द। —गु. रू. ब.

८ देखो 'रद' (रू. भे.)

उ०—उर कोप आंणे अप्रमांणे सिद्ध जांणे **सद्दयं**। ओपै अखाड़ै गै उडाड़ै रूक झाड़ै **रद्दयं** —रा. रू.

९ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

रद्दी–वि. [अ. रदी] १ विकृत, दूषित।

२ बेकार, खराब।

३ जो उपयोगी न हो।

४ निम्नकोटी का, न्यून।

५ निकम्मा।

सं० स्त्री०—पुराने अखबार या फालतू कागजों का ढेर या समूह।

रू० भे०—रदि, रदी।

रद्दीखांनौ–सं. पु. [अ. रदी+फा. खानः] वह स्थान या कक्ष जहां खराब या निकम्मी वस्तुएं पटक दी जाती हैं।

रद्दोबदळ–देखो 'रद्दौबदळ' (रू. भे.)

रद्दौ—सं. पु.–१ कुछ ऊंची उठी हुई किनारों का, पीतल या लोहे का बड़ा थाल, जिसमें मिठाई रक्खी जाती है।

२ दीवार की चुनाई में पत्थर की एक पंक्ति ।

३ मिट्टी की दिवार का चारों ओर से बराबर उठा हुआ भाग ।

रू० भे०—रदौ ।

रद्दौबदळ–सं. स्त्री. [अ.] १ अदल-बदल, हेर-फेर ।

२ किन्हीं दो या अधिक वस्तुओं का परस्पर होने वाला स्थानान्तरण, हस्तान्तरण ।

रू० भे०—रदबदळ, रदोबदळ, रद्दोबदळ ।

रनंकणौ, रनंकबौ–देखो 'रणकणौ, रणकबौ' (रू. भे.)

रनंकियोड़ौ–देखो 'रणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रनंकियोड़ी)

रन–देखो 'रण' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—सीता लखमण साथ, परम ए पदवी पाई। गोह भील गोविंद, रहै **रन** मां रघुराई । —पी. ग्रं.

उ०—प्रज कंपै तारै छिपै **रन** जंपै दिन रात । अंगां आगस केत ज्यों, झड़ लागौ वरसात । —रा. रू.

रनक–सं. पु.–१ लोहा । (अ. मा.)

२ लाश, शव ।

३ देखो 'रणक' (रू. भे.)

रणथंम–देखो 'रणथंभौर' (रू. भे.)

उ०—धायन त्रिहायन लों संतत समर मांडै । राखि **रणथंभ** राज सौंपन समाह्यौ नां । —सूरयमल्ल मिस्रण

रनधीस–सं. पु. [सं. हिरण्याधीश] १ कुबेर । (डिं. को.)

रनबंकौ–देखो 'रणबंकौ' (रू. भे.)

उ०—**रनबंका** ध्वज धज धुर रहंत, है कोन हूस रठौर हंत । —ऊ. का

रनरोई, रनरोहि, रनरोही–देखो 'रणरोही' (रू. भे.)

रनवास, रनवा–देखो 'रणवास' (रू. भे.)

उ०—१ हठ बादसाह नहिं परहिं हत्थ, मरुधराधीस **रनवास** मत्थ । —ऊ. का.

उ०—२ तद औ ढंढोरौ राजा रै **रनवास** हैंतौ नाई तैरी बहू सुणीयौ । —चौबोली

उ०—३ **रनवां** सहित सिकार रमांणौं । नकट सथांन गयौ नांनांणौं —सू. प्र.

रनांरांणी, रनारांणी–सं. स्त्री. १ युद्ध की देवी ।

२ दुर्गा का एक नामान्तर ।

उ०—देवी वैस्णवी महेसी व्रहमांणी, देवी इंद्रांणी चंद्रांणीं **रनांरांणी** । —देवि.

४ निर्जन वन की रक्षा करने वाली एक देवी ।

रनिवास–देखो 'रणवास' (रू. भे.)

रनेत–सं. पु.–भाला ।

रन्न–देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—१ अनियत भिक्षा गोचरी, **रन्न** वन्न काउ सग लेस्युंजी । समभाव सत्रु नइ मित्र सुं, संवेग सुद्ध धरस्युं जी । —स. कु.

उ०—२ पहाड झाड वन्न ए, रहद्द कीध **रन्न** ऐ, उडंति डाब डंबरे, लग (१) सिलीण अंबरे । —गु. रू. बं.

रपचूतांणी–देखो 'राजपूतांणी' (रू. भे.)

उ०—तरै अक्काई कह्यो, जुहार जुहार, पिण ग्रैहणौं तौ उतारे आपि नै जोर **रपचूतांणी** काई हखरी दीसै छै, जांणौं पावाहर रौ हांह तो **रपचूतांणी** अमनै आपिनें थारा हाच ऊपरां जीवतूं नै हथियार वगह्या । —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

रपट–सं. स्त्री.–१ रपटने या फिसलने की क्रिया या भाव ।

२ ऐसा स्थान जहां से पांव रखते ही फिसल जाता हो ।

३ उतार, ढलाव ।

४ देखो 'रपोट' (रू. भे.)

५ देखो 'लपट' (रू. भे.

उ०—सो रंजक री रपट । बाज री झपट ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात ।

रपटक–सं. स्त्री.–ऊंट की एक चाल विशेष ।

उ०—खारच री काठी धरती पर ठाकर रा ऊंठ **रपटक** चाल सूं जाय रह्या हा । ठाकर ई लारै धर मजलां, धर कुचलां में ह्नौ । —रातवासौ

रपटणी–वि. स्त्री.–१ जिस पर से पांव या कोई वस्तु फिसल जाती हो । (स्थान)

उ०—ऊंची नीची राह **रपटणी** पांव नहीं ठहराय । सोच-सोच पग धरूं जतन से, बार बार डिग जाय । —मीरां

२ ढालू, नीची ।

रपटणौ, रपटबौ–क्रि. अ.–१ फिसलना ।

उ०—बनी म्हेला में ओढौ ए सेजा में निरखां धनमपुरी । बना ओढ र निकली जी क चांनणी में **रपट** परी । —लो. गी

२ तीव्र एवं अबाध गति से चलना ।

३ दौड़कर जाना या आना, दौड़ना ।

उ०—पाछौ रौ पाछौ गांव **रपट्ट**, म्हनै केई काम सारणा है । —फुलवाड़ी

४ झपटना, छलांग लगाना ।

उ०—अणगिण भेळा व्हियोड़ा कबूड़ा जिण भांत मिनकी रै **रपटियां** कांनी कांनी उड जावै, उणी भांत थारा बा रै आयां हीया में एकठ व्हियोड़ी सगळी बातां कांनी कांनी बिखरगी।
—फुलवाड़ी

५ घसीटना।

रपटणहार, हारौ (हारी), रपटणियौ —वि.।

रपटिप्रोड़ौ, रपटियोड़ौ, रपट्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रपटीजणौ, रपटीजबौ —भाव. वा.।

रफड़णौ, रफड़बौ —रू. भे.

रपटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ फिसला हुआ. २ तीव्र या अबाधगति से चला हुआ. ३ दौड़ कर गया या आया हुआ, दौड़ा हुआ. ४ झपटा हुआ, छलांग लगाया हुआ. ५ घसीटा हुआ।
(स्त्री. रपटियोड़ी)

रपुर—सं. पु. [सं. हरिपुर] स्वर्ग।

रपोट—सं. स्त्री. [अं. रिपोर्ट] १ सूचना, इत्तला।
२ किसी घटना या वारदात के सम्बन्ध में लिखा जाने वाला प्रतिवेदन, जो किसी सरकारी अधिकारी को प्रस्तुत किया जाता है।

उ०—१ चौधरयां थांणै में **रपोट** कर दी, पंचा मुळजमां रौ परचौ कटा दियौ। —दसदोख

उ०—२ करणै माथै पंचायत वौरड में **रपोट** कराई, वात जोर खायौ। —दसदोख

३ किसी कार्य की प्रगति आदि का विस्तृत-विवरण, कार्य-विवरण। ४ टिप्पणी।

रू० भे०— रपट

रफ—वि. [अं.] १ जिसमें चिकनाई या सफाई न हो, खुरदरा, भौंडा (कागज, वस्त्रादि)
२ जो नमूने के रूप में विचारार्थ तैयार किया गया हो, जिसे अन्तिम रूप न दिया गया हो। (लेख, विवरणादि)
३ जो नाजुक न हो, कोमल न हो।

सं. पु. [अ.] १ मचान, मंच।
२ दरवाजे का बड़ा ताक।
३ सोने-चांदी के आभूषणों की खुदाई को साफ करने का एक लोहे का औजार।

रफड़णौ, रफड़बौ—क्रि. स. [देशज] १ रगड़ना, मलना।

उ०—१ सोढै संग रस रळै, सावणां सुंदर भावै। काया कंचन हुवै, **रफड़** उण सूं जे न्हावै। —दसदेव

उ०—२ भाख फाटी, तारा झड़्या अर कूकड़े बांग मारी। करणी **रफड़ रफड़** मल मल न्हायौ-धोयौ अर मिळणै खातर मन रौ दियौ संजोयौ। —दसदोख

२ देखो 'रपटणौ, रपटबौ' (रू. भे.)

रफड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ रगड़ा हुआ, मला हुआ।
२ देखो 'रपटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रफड़ियोड़ी)

रफतंद—वि.—दूर किया हुआ।

उ०—आसिकां रह कब्ज करदा, दिल वजा **रफतंद**। अल्लह आले नूर दीदम दिल हि दादू बंद। —दादूवांणी

रफता, रफता, रफते-रफते—क्रि. वि. [फा. रफ्तः रफ्तः] १ धीरे-धीरे, शनैः शनैः।
२ क्रमशः।
रू० भे०—रफ्ता, रफ्ता।

रफनाळ—सं. स्त्री.—एक प्रकार की बन्दूक।

उ०—धुब सोर जुजरबा अत सधीर, तद चलै रांमसंगी त तीर। तमचा दुनाळी **रफनाळ** तांम। तद झड़ै कुरावीणा तमांम।
—पे. रू.

रफा—वि. [अ. रफ्‌स्] १ पौंछा हुआ, मिटाया हुआ, साफ किया हुआ।
२ दूर किया हुआ, हटाया हुआ।
३ निवृत्त।
४ शान्त।
५ पूर्ण किया हुआ।
६ दबाया हुआ।

रफादफा—वि. [अ.] १ मिटाया हुआ, साफ किया हुआ।
२ निपटाया हुआ, सम्पूर्ण किया हुआ।
३ तय किया हुआ।
४ शान्त किया हुआ।

रफू—सं. पु. [फा.] १ भागने की क्रिया या भाव।
२ कीमती वस्त्रों में, यदा कदा फटने पर, की जाने वाली एक सिलाई विशेष।
३ उक्त सिलाई करने की क्रिया या भाव।

वि.—चंपत, गायब, अलोप।

रफ्ता, रफ्ता—देखो 'रफते—रफते' (रू. भे.)

रफ्फी—सं. स्त्री.—गर्द, धूलि, रज जो प्रायः हवा में उड़ती रहती है और वस्त्रों, वस्तुओं आदि पर पड़ती रहती है। (शेखावाटी)

रब—सं. पु. [अ.] १ ईश्वर, परमात्मा, खुदा, ब्रह्म।

उ०—१ मूरख कथन न मांनियौ, लसियौ मूंछ लजाइ। तोनूं **रब** न दियौ तखत, दोनूं रखत दिखाइ। —वं. भा.

उ—२ विरहन को वैराग सा, **रब** सा नां कोई रंग। हरख

न सा हासा नहीं, सत सा नां कोई संग। —अनुभववांणी

२ पति।

३ बड़ा भाई।

४ अभिभावक।

५ मालिक, स्वामी।

उ०—दुजळ 'भदू' 'देपाळदे', भाखै आ वांणी, अपणावां धर आंपणी काय देवां पांणी। एकण घर दोय राजवी, **रब** नांह रहांणी। —वी. मा.

रू० भे०—रब्ब।

रबकणौ, रबकबौ—क्रि. अ.—अवारा की भांति व्यर्थ घूमना, भटकना, मारा मारा फिरना।

रबकियोड़ौ—भू. का. कृ.—अवारा की भांति व्यर्थ घूमा हुआ, भटका हुआ, मारा मारा फिरा हुआ।
(स्त्री. रबकियोड़ी)

रबकौ—सं. पु.—१ संकट, कष्ट।

२ अवारा घूमने की क्रिया या भाव।

रबड़—सं. पु. [अं. रबर] १ वट जाति के एक वृक्ष का सूखा हुआ दूध या इस दूध का बना पदार्थ, जिससे खिलौने, वर्तन, ट्यूब-टायर आदि अनेक वस्तुएं वनती हैं। यह नर्म एवं लचीला होता है।

उ०—चौमासै में घेटां री, माईत मरै वेटां री अर गरीबां रै पेटां री सूझ बूझ टिकी नहीं रै सकै। **रबड़** री दड़ी दांई ठोकर मारै जकांरै ही आगै भाज भीर हुवै। —दसदोख

२ उक्त पदार्थ का कोई टुकड़ा या अंश।

रबड़कणौ, रबड़कबौ—क्रि. अ.—भैंस का दौड़ना।

रबड़कौ—सं. पु.—भैंस आदि के दौड़ने की क्रिया या भाव।

रबड़णौ, रबड़बौ—क्रि. स.—१ किसी तरल पदार्थ में कलछी आदि डालकर चारों ओर फिराना।

२ देखो 'रड़बड़णौ, रड़बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—वौ सिरावौ जात रौ वेलदार हौ। जेठ री बळती लाय में बीस पच्चीस कोस गांव गांव **रबड़णा** रै उपरांत ई उण सिरावा सूं फेटौ नीं पड़ियौ। —फुलवाड़ी

रबड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी तरल पदार्थ में कलछी डालकर चारों ओर फिराया हुआ।

२ देखो 'रड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रबड़ियोड़ी)

रबड़ी—सं. स्त्री.—दूध को औटाकर गाढ़ा एवं लच्छेदार बनाते हुए चीनी मिलाकर तैयार किया जाने वाला व्यंजन, बसौंधी।

उ०—काजू किसमिस रा कलेवा, दूध-**रबड़ियां** री दफारी, सेब संतरां री मनवार, पांन-सिपारियां रा पुड़ा,······ —दसदोख

रबद—१ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

२ देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

रबांण, रबांणी—वि. [अ. रब+रा. आंणि] ईश्वर का परमेश्वर का, खुदा का।

उ०—दादू गाफिल छो वतै अन्दर पीरी पसु। तखत **रबांणी** बीच में, पेरै तिन्हीं वसु। —दादूबांणी

रबाब—सं. स्त्री.—१ सारंगी की तरह का एक प्रकार का वाद्य।

उ०—१ नै इण वीण **रबाब** जिकूं बतीसूं जंत्र तयार करनै औ दूहौ गायौ। —नैणसी

उ०—२ अदंग ढोल मंगळी, **रबाब** तार सारली। वजंति वेरि वेरियं, भणंकि भंकि भेरियं। —रा. रू.

उ०—३ आइ नै करहौ बांधि नै ऊपर पधारीया। देखै तौ संदली ऊपर **रबाब** पड़ीयौ छै। —लाखा फूलांणी री बात

२ भय, आतंक, रौब।

३ प्रभाव।

रबाबियौ—सं. पु.—१ रबाब नामक बाजा बजाने वाला व्यक्ति।

२ ढोलियों की एक शाखा जो उक्त बाजे (रबाब) पर गायन करती है।

उ०—मिरासी नांम मरदांनों तेगबहादुर रै साथ मारांणी, जिण रा मिरासी मरदांना पंथ रा सिख **रबाबी** है। —बां. दा. ख्यात

रबारी—देखो 'रैबारी' (रू. भे.)

उ० -१ रहिया **रबारी** जागरी वली वागुरी धाय। गुण गाना गंधरव पारिए, सतूआरी समवाय। —भा. वां. प्र.

उ०—२ जाट वांणीया सीरवी रजपूत बसै। धरती हळवा ३० खेत काठा कंवळा। अरट ढीबड़ा ८। सेंवज चिणा हुवै। तळाव मास ४ पांणी। बाहळौ को नहीं। **रबारी** लुंभा री बसायौ, लुंभड़ावास कहीजै। —नैणसी

रबि—देखो 'रवि' (रू. भे.)

रबिलआलमींनां—सं. पु. [अ. रब्बुल आलमीन] समस्त ब्रह्मांड का स्वामी, ईश्वर।

उ०—अनि चढे तुरां विकटां अगै, **रबिलआलमींनां** रटै। खळ खटै रमण भपटै खगां, असुरायण दळ ऊपटै। —सू. प्र.

रू० भे०—रब्बलआलमीन।

रबी—सं. स्त्री. [अ. रबीअ] १ वसंतऋतु।

२ उक्त ऋतु में तैयार होकर कटने वाली फसल

उ०—साख ऊनाळी फसल **रबी** । —नैणसी

३ देखो 'रवि' (रू. भे.)

उ०—**रबी** ध्रुव चंदह ध्यांन धरेस। आदेस आदेस आदेस आदेस।
— ह. र.

रब्ब—देखो 'रब' (रू. भे.)

उ०—१ गुड़ै हुय बिम्भळ गात गनीम, रटै मुख नब्बिय **रब्ब रहीम**। 'छेल्ली' कर छूटक वार छड़ाळ, भलौ थरकंत पटाझर भाळ। —मे. म.

उ०—२ अल्ला एक करीम, **रब्ब** रहमांण संभारे। कहि खुदाइ खालिक्क, इलम कत्तेब विचारै। —गु. रू. बं.

उ०—३ दादू गाफिल छो वतैं, मंझे **रब्ब** निहार। मंझई पिव पांण जो, मंझई सु विचार। —दादूबांणी

रब्बड़िया—सं. स्त्री.—पंवार वंश की एक शाखा।

रब्बड़ियौ—सं. पु.—पंवार वंश की रब्बड़िया शाखा का व्यक्ति।

रब्बलग्रालमीन—सं. पु.—देखो 'रबिलग्रालमींनां' (रू. भे.)

उ० – खांबिंद चहत खुद खलक खैर, गफ्फूर गैर इंसाफ गैर। वालिक नहि खालिक मुसलमीन, अल्ला हैं **रब्बलग्रालमीन**।
—ऊ. का.

रब्बारौ—देखो 'रैबारी' (रू. भे.)

उ०—**रब्बारा** थप्पले, घग्घ पाकेट भयंकर। नेसां चसळक नयण, झाळ झागूंडां नीझर। —सू. प्र.

रभस—सं. स्त्री. [सं.] शीघ्रता, जल्दी। (ह. नां. मा.)

रभेणक—सं. पु. [सं.] तक्षक कुलोत्पन्न एक नाग जो जनमेजय के सर्प सत्र में मारा गया था।

रमंकौ—सं. पु.—पायल या किसी आभूषण की ध्वनि या शब्द।

उ०—रंमां-झंमां रंमां-झंमां रंमां-झंमां झंमां रंमां। ठमंकां **रमंकां** झंका **रमंकां** ठमंक। —र. ज. प्र.

रम—सं. पु. [सं.] १ हर्ष, आनन्द।

२ कामदेव।

३ पति।

४ प्रेमी, आशिक।

[सं. रिपु] ५ शत्रु, वैरी, रिपु।

रू० भे०—रिम।

वि.—१ सुन्द, मनोहर। (अ. मा.)

२ प्रिय, प्यारा।

३ आनन्ददायक, मनोरंजक।

रमइयौ—देखो 'रांमइयौ' (रू. भे.)

उ०—बालपने की प्रीत **रमइयाजी**, कदे नहीं आयौ थारौ तोल।
—मीरां

रमक—सं. स्त्री.—१ ध्वनि विशेष, झनकार।

२ एक चाल विशेष, जेवर पहन कर चलने की क्रिया विशेष।

उ०—**रमक** बताय गया सांवरे नादांणिया। कवै मिळै रसराज सांवळड़ा। —रसीलेराज रौ गीत

३ लहर, तरंग।

सं. पु.—१ प्रेमी, उपपति।

२ प्रेमपात्र।

रमकड़ौ—देखो 'रमेकड़ौ' (रू. भे.)

उ०—ठीक व्हैतां ई म्हूं उण नैं लेयनै आवूंला। ए देख थारै वास्तै उणौ थेली भर **रमकडा** भेज्या है अर कैवायौ है कै इणां में सूं धापू नै एक ई मत दीजै। —अमरचूनड़ी

रमकियौ—देखो 'रांमतियौ' (रू. भे.)

रमकीलौ—वि. (स्त्री. रमकीली) छैल—छबीला, रसीला, रसिया, चटकीला।

उ०—नसीली रसीली चकीली अंगीली रंगीली बकीली रंकीली **रमकीली** समकीली चटकीली जीव री जड़ी। —र. हमीर

रमजां—सं. स्त्री.—१ छबि, शोभा।

उ०—लगी पिया वे दो नैंणा दी **रमजां**। उन रमजां दे नाल मोही गई सांवरा। —रसीलेराज रौ गीत

२ हंसी मुस्कराहट।

३ मजाक।

रू० भे०—रमझां, रमूंझा।

रमजांन—सं. पु. [अ. रमजान] एक अरबी महीना विशेष। इस महिने में मुसलमांन रोजा रखते हैं।

रमजोळ—देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

रमझम—देखो 'रिमझिम्' (रू. भे.)

उ०—१ डोळा हींडोळा होकर हुचकाती, अणवट ठोकर दे एडी उचकाती। **रमझम** बिछियां रा बजता रणकारा, झमझम जेहरि रा उठता झणकारा। —ऊ. का.

उ०—२ इसा में भरमल पोसाख कर गांहणौ पैहर हांम—कांम—लोचनी आभै री वीज सांवण री तीज पाबासर रौ हंस ज्यूं मल्हकती थकी सुंधै भीनै गात **रमझम** करती आई।
—कुंवरसी सांखला री वारता

रमझमक—देखो 'रिमझिमक' (रू. भे.)

उ०—**रमझमतें** चालें हंसला रै हीयड़ै सालै हो। रीसैं नयण निहालै, पिण घात किसी परि घालै हो। —वि. कु.

रमझां–देखो 'रमजां' (रू. भे.)

रमझोळ–देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

उ०—१ वेघ पवन हूंता वहै, झळंम साज **रमझोळ**। वीर पुत्री लीघां वकट, आवै छोळ अरोळ।

—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ सोळै सिणगार ठवियां थकां फूलां रा चौस पैहरियां थकां टोय अणियाळां काजळ ठांसियां थकां वांका नैणां री झोक नांखती पायल रै ठमकै सुं घूघरै रै घमकै सूं विछियां रै छमकै सूं **रमझोळ** करती अंगूठा मोड़ती नखरा करती बाजारि चालि जाए छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ झीणै गिरिश्रै ऊपरि वाजणी पायल रा घूघरा **रमझोळ** झणकिआ जांणै कळहंस रा बच्चा बकोर करि रहिआ छै।

—रा. सा. स.

उ०—४ सोवन कलस सुहांमणा जी, करी जरी **रमझोल**। सहस दोय सावत करोजी, चित्र रचित चकडोल।

—प. च. चौ.

रमझोळी–सं. पु.–१ हमजोली।

२ देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

रमठ–सं. पु.–एक म्लेच्छ जाति जो मांधातृ के राज्य काल में उसके राज्य में वसती थी।

रमड़णौ, रमड़बौ–देखो 'रमणौ, रमबौ' (रू. भे.)

उ०—डोढ़ा कंधलोटा जूटणनै घुमडै, महिखी महिखी ज्यूं डाबर में **रमड़ै**। —ऊ. का.

रमडोळ–सं. पु.–शत्रुदल, रिपुदल।

उ०—काळरा जुधां घणा बौळ दुजा 'किसन', झेड़ खग बाढ **रमडोळ** झुडा। वीरवर भुजांन भमतौळ पाछौ वळै, चोळ रंग कीयां समसेर 'चूंडा'। —मेगराज आढौ

रमढोळ–वि.–सीधा, सादा।

उ०—रोळ खोळ **रमढोळ** आखां, जीवां हरख हिलोळ है। वोळ करै छोळ धमरोळा फोगां पोळ किलोळ है। —दसदेव

रमण–सं. पु. [सं.] १ हर्ष, आनन्द या आह्लाद देने वाली कोई क्रिया या घटना, क्रीड़ा, आमोद प्रमोद।

२ रतिक्रीड़ा, संभोग, मैथुन।

उ०—१ महल सेज नह **रमण** उमाहै। चौकी खास न खिलवति चाहै। —सू. प्र.

३ कामदेव।

४ पति, स्वामी, प्रीतम। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—ललना रमणी सिरोमणी लिखमी। जास **रमण** जांमी जगत। —ह. नां. मा.

५ हर्ष, आनन्द।

६ विहार, भ्रमण।

७ सूर्य का सारथि अरुण।

८ अण्डकोश।

९ कूल्हा, कमर।

१० एक वसु जो धर नामक वसु का पुत्र था।

११ दो सगण एक छन्द विशेष। (र. ज. प्र.)

१२ प्रथम दो लघु फिर एक गुरु इस प्रकार तीन वर्ण का एक वर्णिक छन्द विशेष। (पि. प्र.)

१३ योद्धा वीर।

उ०—अनि चढै तुरां विकटां अगै, रबिलआलमीनां रटै। खळ खटै **रमण** झपटै खगां, असुरायण दळ ऊपटै। —सू. प्र.

वि.–१ सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ। (ह. नां. मा.)

२ आनन्ददायक।

उ०—कब सिनांन कर धूप कर, अधपत ले एकंत। **रव मंजीर** सुणतां **रमण**, परी उडी नभ पंत। —पा. प्र.

३ रमण करने वाला।

४ रमण करने योग्य।

५ प्रिय, प्यारा।

६ देखो 'रमणी' (रू. भे.)

७ देखो 'रमणौ'

उ०—घण मेळै घमसांण, राखस आहेड़ै **रमण**। चंड मंड बे भ्राता चढ़ै, प्राजळिता निज प्रांण। —मा. वचनिका

रू० भे०–रवन।

रमणक–सं. पु. [सं.] १ जम्बू द्वीप के एक खण्ड या वर्ष का नाम।

२ उक्त खण्ड का राजा।

३ देखो 'रमणीक' (रू. भे.)

रमणि–देखो 'रमणी' (रू. भे.)

उ०—१ अति रीझै इक विरद उचारै, सुख उपजै सुअ सुमति संभारै। राज **रमणि** महाराज रिझावै, अति हित निरख हरख उपजावै। —रा. रू.

उ०—२ नेमजी हो भुगति **रमणि** मोह्या तुमे हो राजि, पिण तिण मां नहिं स्वाद। —वि. कु.

रमणियौ–वि.–१ रमण करने वाला।

२ खेलने वाला।

३ भोग विलास करने वाला।

रमणी–सं. स्त्री. [सं.] १ स्त्री, औरत, नारी।

उ०—१ **रमणी** बरहीनां निरख नवीना, रांम रांम रागकंदा है।

कंद्रप रा कीटा फबत न फीटा, भंवरगुफा भगाकंदा है।
—ऊ. का.

उ०—२ **रमणी** जेह कुरूप स्युं कहीयै तास सरूप हो।
—वि. कु.

२ रमण करने योग्य युवती, सुन्दर स्त्री।

उ०—बोलै केहै जोरि करारि वावली। हरिहां **रमणी** तज हठ चालि दुवाई रावळी। —मा. वचनिका

३ पत्नी, प्रियतमा।

उ०—१ गत गैंवर कटि केहरी, **रमणी** हाटक रंग। कुच गिरवर लोयण कमळ, ऐ हैं कुसळे अंग। —बां. दा.

उ०—२ मनगमणी **रमणी** हुस्युंजी, सेवस्युं ताहरा पाय।
—वि. कु.

४ मुगन्ध बाला।

५ कर्णाटकीय पद्धति की एक रागिनी। (संगीत

६ साधु संन्यासियों द्वारा की जाने वाली यात्रा। भ्रमण।

रू० भे०—रमणि, रवनि, रवनी।

रमणीक, रमणीय—वि. [सं.] १ सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

उ—१ **रमणीक** दीप 'पाबु' रही, सिघ अगमागम सूझसी। थांन नैं पांन तो थापना, 'पाल' प्रथी सह पूजसी। —पा. प्र.

उ० २ अति अथिर चंचल आउखउ, **रमणीक** यौवन रूप। चक्रवर्त्ती सनतकुमार ज्युं, जीव जोई देह सरूपौ रे।
—स. कु.

उ०—३ विंदं फूल सुगंधं, बंधे सारत्ति पांन मादिकं। रत्तं चक्ख सहासं, आमासं पासि **रमणीयं**। —रा. रू.

२ रमण करने योग्य।

उ०—दोयण रमणीय कवेसुर दासा, जब्र समर सुरतर निज जोत अवध भूप दरसै तो वाळां, अवनी मोहै रूप उद्योत।
—र. रू.

सं. स्त्री.—१ स्त्री, सुन्दरी।

२ प्रथम एक लघू वर्ण तदनन्तर तीन गुरु वर्ण, यह क्रम चार बार होने पर बनने वाला एक छन्द विशेष।

उ०—प्रथम लुघू मुर गुर पछै, ठवि चत्र फेरा ठीक। सहस च्यारि त्रिणसौ सतरि, रूप छंद **रमणीक**। —ल. वि.

रमणीयता—सं. स्त्री [सं.] सुन्दरता।

रमणौ—सं. पु.—१ खिलौना।

२ खेल का कोई उपकरण, साधन।

३ शिकार खेलने का मैदान, शिकारगाह।

उ०—१ **रमणै** रमण सिकार, सझै दळ पूर सकाजा। नौबति वाजा निहंसि, रजां ढांकै ग्रहराजा। —सू. प्र.

उ०—२ और ही अनेक राजभांत रा ऊंठ छै। सू साथ रौ घूमरौ कियां थकां **रमणै** सिर आंण खड़ा हुवा है। —रा. मा. सं.

४ जंगल, वन या मैदान जहां पर प्रायः रमण या विचरण करते रहते है।

वि०—खेलने वाला।

रमणौ, रमबौ—क्रि. स. [सं. रमणं] १ कोई खेल खेलना, खेलकूद करना, क्रीड़ा करना, खेलना।

उ०—१ बांधरौ उठै ऊभौ छांनौ रह्यौ छै। रात आधी गयां सोझळ **रमणनु** नीसरी, सु देवीजी री भाखरी गई।
—नैणसी

उ०—२ पगल्यां ने पायल लाय भंवर म्हारे पगल्यां ने पायल लाय, हांजी म्हारा बिछिया रतन जड़ाय, भंवर म्हांनै खेलण दो गणगौर बिलाला म्हांनै **रमण** दो दिन चार। —लो. गी.

२ कोई नाटक या तमासा करना।

उ०—१ तीरथ जात समस्त, सकल साथां मिळ संगा। रास तमासा **रमें**, हुलस नाचै हुड़दंगा। —ऊ. का.

उ०—२ लुगाई री जूंण बिना रखवाळण, कंवरांणी, महारांणी, अर गूजरी री आ रांमत कुण **रमतौ**। —फुलवाड़ी

३ भोग विलास करना, रतिक्रीड़ा, संभोग या मैथुन करना, रमण करना।

उ०—१ ताहरां गंगा नुं भीतर एकै मौहल में राखी। अर गंगा नुं कही, "हूं पातसाह नूं जीपीस, तौ राते तैसुं **रमीस**। ईतरै हूं थारै मोहल मांहे कोई नाईस। —देपाळ धंध री बात

उ०—२ परीणत स्वास उसास प्रभाव, प्रिया प्रिय पास पलोटत पाव। **रमें** रस रास विलास सुरंग, परस्पर प्रीतम प्रीत प्रसंग।
—ऊ. का.

उ०—३ एकतौ देवर म्हांने जी राखल्यौ दूजी है दोरांणी। ऊणणी कहिये भायला तौ कोई चोथा देवर आवजी, देवरिया प्यारा ए जी वौ देवर छिनगारा **रम** रयां पर नारियां।
—लो० गी०

उ०—४ दूजी कीं बस री बात नीं देख दीवांणजी सेजां **रम्योड़ी** लुगायां नै मन ही मन याद करण लागा। कदास याद करचां कीं निवास मिळै। —फुलवाड़ी

उ०—५ पिकाबांण जांण वैणी पनंग, हिरणाखी हंसा-गमणि।

रंग-महल सिंघ साजांन सुर, **रमति** राज-पुत्री रमणि।
—गु. रू. बं.

४ भोग विलास के लिये रह जाना, रहना। मन लग जाने के कारण कहीं ठहरना, निवास करना, टिकना।

५ आनन्द करना, मौज करना।

६ शिकार में जंगली जानवरों को मारना, शिकार खेलना।

उ०—१ एकदा प्रस्तावि राजा प्रिथीराज सिकार नीसरीया। सिकार **रमता रमता** एक दिन सवालख में आइ नीसरीया।
—जांगळू री वात

उ०—२ एक दिन रौ समाजोग छै। रावळ कांनड़दे सिकार चढ़िया छै। सरब रजपूत साथै छै। मालौ पण साथै छै। सिकार **रमी** अर अपूठा वळिया।
—नैणसी

७ आनन्द पूर्वक इधर उधर घूमना, भ्रमण करना, विहार करना।

उ०—असि चढि बिस वनि **रमै** अकेलौ। चौकीदास खवास न चेलौ। जळ वन जंतु **रमंतां** जोवै। हरख उछाह तांम चित होवै।
—सू. प्र.

८ साधु संतों का विचरण करना, चला जाना।

उ०—१ आतम ग्यांन समुद्र अथागी। **रमता** परम हंस वैरागी।
—सू. प्र.

उ०—२ जाहर जुग जोगी है अणभोगी, ओघट घाट **रमंदा** है।
—अनुभववांणी

९ चुपके से कहीं चले जाना, गायब हो जाना, अज्ञात स्थान पर चले जाना। लुप्त हो जाना।

उ०—१ यूं कहि गुर चेलौ **रमिया** नै कह्यौ तूं वात मांनीस नहीं, पण तिण वात रौ ओ सहनांण छै जो थांरौ बाप आज सूं पनरै दिनै मरै तो सोह साच मांनै।
—नैणसी

उ०—२ नगर आइ जोगी **रम** गया रे, मो मन प्रीत न पाइ। मैं भोळी भोळापन कीन्हौ, राख्यौ नहीं बिलमाइ।
—मीरां

१० किसी में या सर्वत्र व्याप्त होना, मौजूद रहना, वर्तमान रहना। समाना।

उ०—१ रौम रोम में **रम** रयौ देख अखंड दईव। —र. ज. प्र.

उ०—२ **रमै** आप तुं आप मां, नमै आपनां आप। आप खवारैं आप नां, साहिब निमो संताप।
—पी. ग्रं.

उ०—३ घट घट मांहै **रम** रही, तूं सकळ मझांही। जंगम थावर जेतळा, तो विण को नांही।
—गज उद्धार

उ०—४ मोहि पिया अबकै मिळौ, पलक न छोडूं वास। रोम रोम में **रमि** रहूं, बिध जिण फूलां वास।
—र. हमीर

११ लीन होना, रंगीजना, लिप्त होना।

१२ अनुरक्त होना, आशक्त होना, मोहित होना।

१३-चारों ओर से लोक प्रिय होना, व्यापक होना।

१४ युद्ध करना, रणक्रीड़ा करना।

उ०—ढळै ढींचाळ तणौ रणढांणि, पड़ै ध्रू रेणु धिखै पीठांण। मरुध्धर मंडण उत्तर मौड़, **रमै** रण मीर अनै राठौड़।
—राउ जैतसी रौ रासौ

रमणहार, हारौ (हारी), रमणियौ —वि.।

रमिओड़ौ, रमियोड़ौ, रम्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रमीजणौ, रमीजबौ —भाव वा.

रम्मणौ, रम्मबौ —रू. भे.।

रमत–देखो 'रांमत' (रू. भे.)

उ०—१ बाळपणौ **रमत** में गमायौ, भर जोबन अहंकारी। बूढापा में माळा लीधी, अब कुण सुणेला थारी।
—अग्यात

उ०—२ इण सासरिये भाई रै साथै पै'लीवार अठै आई तौ म्हनै ओ लखायौ के म्हैं लुकमींचणी री **रमत** रमूं हूं।
—फुलवाड़ी

रमतारांम–वि.–घूमने फिरने वाला, निरन्तर, भ्रमण करते रहने वाला, परिभ्रमण करने वाला।

उ०—भजिए **रमतारांम** एह बड़ घात हैं। हरिहां जनहरिदास हरि परम उदार अपार हमारा तात है।
—ह. पु. वां.

सं. पु.–१ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—१ सहंस कळा सूरज ले ऊगा, अंधै कै ऊगा ज्युं पूगा। भूत प्रेत डाकिन डर नांही, **रमतारांम** हमारै मांही।
—अनुभववांणी

उ०—२ नमौ नमौ **रमतारांम** नारायण निरमिघ, सकळ निरंतरि नरहरि.........
—ह. पु. वां.

उ०—३ बाई ऊदां करै तो पच्छा भक मारौ, मन लाग्यौ **रमतारांम** सूं।
—मीरां

रमतियौ–देखो 'रांमतियौ (रू. भे.)

उ०—१ ऐ रिपिया दूजी ठौड़ धरदौ-वांनै कुण खावै। म्हारा ऐ **रमतिया** गमै घणा।
—फुलवाड़ी

उ०—२ 'मेह मांमौ म्हांनै कांई देसी, दादी?, 'लाडू'। 'भळै?' दूध, दही, **रमतिया** गैणा। 'साचै ई?' 'हां, बेटा।'
—वरसगांठ

रमतू–सं. पु.–एक पक्षी विशेष।

उ०—मीर सिकारूं का हुन्नर नजर होत है। लगतूं **रमतूं** के आतुरी। चरज सींचांणू सो लाग आतुरी।
—सू. प्र.

रमयोड़ौ–देखो 'रमियोड़ौ' (रू. भे.)

रमल–सं. पु. [अ.] १ फलित ज्योतिष में भविष्य फल निकालने की एक विधि या ढंग।

वि. वि.–इसमें एक पासे को फेंक कर उसकी बिंदियों की गणना की जाती है। तदनुसार फल निकाला जाता है।

२ उक्त फल निकालने की विद्या।

रमलि, रमली–सं. स्त्री. [सं. रमणिका, प्रा. रमणिग्रा, अ. रमलिग्रा] क्रीड़ा, खेल, विनोद।

उ०—१ ग्राह मनमाहि नरिंदौ पारधि संभावइ। सइं दलि **रमलि** करंतउ गंगा तडि ग्रावइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ जिसी **रमलि** कीजइ रवाडी तिसी एक भली वाडी, जेह दीठइ ग्राणंद हूग्रा। —व. स.

उ०—३ कांमीय केतिकि परिमलि, **रमलि** करइ बहु भंगि, रमइ रसालि तरुणीय, करणीय नव नव रंगि।
—प्राचीन फागु-संग्रह

२ रतिक्रीड़ा, संभोग, भोग।

उ०—१ कंकण चूडि ग्रनइ ग्राभरण, हारै तेजि तपइ रवि किरण। केतक सरीसी **रमलि** करंत, गौरी गाइ राग बसंत।
—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ दीपइं ए राता कणयर दिणयर किरि ग्रवतार। पारधि पाडल परिमलि **रमलि** करइं मधुकार। —धनदेव गणि

रमांइण–देखो 'रांमायण' (रू. भे.)

उ०—उभै पतिसाह भिडै ग्रण-भंग। **रमांइण** भारथ ए रिण-जंग।
—गु. रू. बं.

रमा–सं. स्त्री. [सं.] १ लक्ष्मी, कमला। (ग्र. मा, ह. नां. मा.)

उ०—लोकमाता सिंधु सुता स्री लिखमी, पदमा पदमालया प्रमा। ग्रवर ग्रहै ग्रस्थिरा इंदिरा, रांमा हरि वल्लभा **रमा**।
—वेलि

२ सीता।

उ०—**रमा** हुतासणि सरणि रहाए। हथि रांमण स्रिय छांह हराए। —सू. प्र.

३ दुर्गा।

उ०—ग्रो३म नमस्ते चंडका चंद्रभाळ री नवीन ग्राभा। छटा मणि माळ री भुजाटां रही छाय। ग्रारोहा लंकाळ री क सत्रां धू भाळ री ग्राग, **रमा** रूप जयौ काछ पंचाळ री राय।
—नवलजी लाळस

४ पत्नी।

५ स्वामिनी।

६ प्रजा।

७ सम्पत्ति, धन

८ चंचलता।

उ०—सभि ग्रंग उतंग व्रहास समा, रवि वाहण रेवंत सोह **रमा**।
—मा. वचनिका

रू० भे०–रमाय।

रमाइण–देखो 'रांमायण' (रू. भे.)

रमाएकादसी–सं. स्त्री.–कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

रमाकंत–सं. पु. [सं. रमाकान्त] १ विष्णु।

उ०—**रमाकंत** री वंक बे भ्रूंह रंजी, लखै कांमसुर सांम री चाप लज्जी, त्रिहूं लोक रा ग्वाळ रै भाळ टीकौ, नरां भूप सोभा लखै रूप नीकौ। —रा. रू.

२ राम।

रमाक, रमाकड़, रमाकड़ौ–वि. [सं. रम्+रा. प्र. ग्राक, ग्राकड़] खेलने में निपुण, खिलाड़ी।

रमाड़णौ, रमाड़बौ–देखो 'रमाणौ, रमावौ' (रू. भे.)

उ०—१ कथां तुं ही कंथ क्रीड़ा तुं ही कांम। **रमाड़** मो पग्ग लाधौ हिव रांम। —ह. र.

उ०—२ गोपीनाथ रा हाथ ग्राया गडुदे, ग्रही गारडी जांण छांव्यौ ग्रडुदे। ग्रही मूंठ वाजीन जेही उपाडै, रमे गारडी जेम काळौ **रमाड़ै**। —नागदमण

रमाड़णहार, हारौ (हारी, रमाड़णियौ —वि.।

रमाड़िग्रोड़ौ, रमाड़ियोड़ौ, रमाड़चोड़ौ —भू. का. कृ.।

रमाड़ीजणौ, रमाड़ीजबौ — कर्म वा.।

रमाड़ियोड़ौ–देखो 'रमायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रमायोड़ी)

रमाचोर–सं. पु. [सं.] रावण। (ग्र. मा.)

रमाज–वि. [ग्र. रम्माज] १ भेद जानने वाला, भेद बताने वाला।

उ०—बाथे ऊंचांणां सुमेर पाथै तेरसा ग्रचूक बांण, रांणवाला राड़ि वेळां वेरसा **रमाज**। रिमंदा ऊबेड़ जाड़ा सेरसा गजां रा गौड़, सांमंतां समांन राखै येरसा समाज।
—महाराज सनमांनसिंघ हाडा रा जोधारां रौ गीत

२ गुप्तचर, भेदिया।

रमाडणौ, रमाडबौ–देखो 'रमाणौ, रमावौ' (रू. भे.)

उ०—गुरि वीनविउ ग्रवसरि राउ सविहुं बेठां करउ पसाउ। तुम्हि मंडावउ नवउ ग्रखाडउ नव नव भंगि पूत्र **रमाडउ**।
—सालिभद्र सूरि

रमाड़ियोड़ौ–देखो 'रमायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रमाड़ियोड़ी)

रमाणौ, रमाबौ–क्रि. स. ["रमणौ" क्रिया का प्रे. रू.] १ कोई खेल खिलाना, खेल में लगाना, खिलाना।

उ०—१ रिमि रूप **रमाया** खळ सहि खाया गेम गमाया गुण गाया। धिणियांणी धाया विलंब न लाया, आराधां नां सुणि आया। —पी. ग्रं.

उ०—२ लेण कंत अच्छरां गैणाग माग आबा लागी। पूरां सूरां बीरां सूं जमाबा लागी प्रीत। ललक्का उछट्टै भैरूं चंडका **रमाबा** लागी, गाबा लागी जोगणी बीरांण मंत्र गीत।

—सुखदांन कवियौ

२ कोई नाटक या तमासा कराना।
३ मौज कराना, आनन्द कराना।
४ भोग विलास, रतिक्रीड़ा, संभोग या मैथुन करने के लिये प्रेरित करना, रमण कराना।

उ०—चाकर कह बतळावज्यौ, छागळ राखूं हाथ। पग दाबूं पोहरौ दिऊं, सेज **रमाऊं** साथ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

५ भोग विलास के लिये रखना, कहीं ठहराना, निवास कराना, टिकाना।
६ शिकार कराना, शिकार खिलवाना।
७ घूमने, भ्रमण करने या विहार करने के लिये प्रेरित कराना।
८ गायब कराना, लुप्त कराना।
९ लीन कराना, लिप्त कराना।
१० अनुकूल करना, अपने अन्दर मिलाना।
११ नव विवाहित वर के साथ उसके सुसराल में सालियों आदि द्वारा मनोविनोद कराना।

वि. वि.–इसमें पहेलियां व कुछ अटपटी बातें पूछी जाती हैं और वर द्वारा समुचित उत्तर न देने पर हंसी ठिठोली की जाती है।
१२ वेष्ठन करना, परिवेष्ठित करना, लेपन करना।

उ०—१ कांनां बिच कुंडळ गळे बिच सेळी अंग भभून **रमाय**। तुम देख्यां बिन कल न पड़त है, ग्रिह अंगणौ न सुहाय।

—मीरां

उ०—२ गोपीचंद भरथरी के लाग्यौ, तन में खाक **रमाणौ** जी।

—मीरां

१३ भुलावा में डालना, फुसलाना।
रमाणहार, हारौ (हारी), रमाणियौ —वि.।
रमायोड़ौ —भू. का. कृ.।
रमाईजणौ, रमाईजबौ —कर्म वा.।
रमाड़णौ, रमाड़बौ, रमाडणौ, रमाडबौ, रमावणौ, रमावबौ —रू. भे.।

रमाद–सं. पु. [स. रमा+द] कुबेर। (नां. मा.)

रमाधव–सं. पु. [सं.] विष्णु।

रमानंद, रमानंदण, रमानंदन–सं. पु. [सं. रमानंद, रमानंदनः] कामदेव। (ह. नां. मा.)

रमानरेस–सं. पु. [सं. रमा+नरेश] विष्णु।

रमानाथ–सं. पु. [सं.] विष्णु।

उ० – नीत पंथ वनै बीड़ा जांणंगी अजोध्यानाथ, हौकवी मांगांगी क्रीड़ जादुनाथ हूस। राजंगी सीसोद नाथ सदा चीत माथ राखै, **रमानाथ** रूप भूप अंगरीख रूस। —हुकमीचंद खिड़ियौ

रमानिवास–सं. पु. [सं. रमा+निवास] विष्णु।

रमापत, रमापति, रमापती–सं. पु. [सं. रमा+पति] विष्णु। (डिं. को.)

उ०—रमइं **रमापति** रांणिय आंणिय आंपणइ पासि। तीणि छलइं नवि छीपइ ए दीपइ ए ग्यांन प्रकासि।

—जयसेखर सूरि

रमाबर–देखो 'रमावर' (रू. भे.) (नां. मा.)

रमाय–देखो 'रमा' (रू. भे.)

उ०—रहै नित सेव **रमाय** सुरेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह. र.

रमायण–देखो 'रांमायण' (रू. भे.)

उ० —आंन दसा सूं जब मन थाका, करम भरम संगि नांगेंगे। रांम **रमायण** का मतिवाळा, आदू प्रीति पिछांणेंगे।

—ह. पु. वां.

रमायोड़ौ–भू. का. कृ.–१ कोई खेल खिलाया हुआ, खेल में लगाया हुआ. २ कोई नाटक या तमासा कराया हुआ. ३ मौज कराया हुआ, आनन्द कराया हुआ. ४ भोग विलास, रतिक्रीड़ा, संभोग, मैथुन करने के लिये प्रेरित किया हुआ, रमण कराया हुआ. ५ भोग विलास के लिये रक्खा हुआ, कहीं ठहराया हुआ, निवास कराया हुआ, टिकाया हुआ. ६ शिकार कराया हुआ, शिकार खिलवाया हुआ. ७ घूमने, भ्रमण करने या विहार करने के लिये प्रेरित किया हुआ. ८ गायब कराया हुआ, लुप्त कराया हुआ. ९ लीन किया हुआ, लिप्त किया हुआ. १० अनुकूल किया हुआ, अपने अन्दर मिलाया हुआ. ११ नव विवाहित वर

को सुसराल में सालियों द्वारा मनोविनोद कराया हुआ. १२ वेष्ठन किया हुआ, परिवेष्ठित किया हुआ, लेपन किया हुआ. १३ भुलाया हुआ, फुसलाया हुआ।

(स्त्री. रमायोड़ी)

रमारम, रमारमण–सं. पु. [सं. रमा+रमण] लक्ष्मीपति, विष्णु।

रमाराव–सं. पु. [सं. रमाराज] विष्णु।

उ०—**रमाराव** रा वंदिया पाव राजा। वजै चाय दूणौ घणौ धाय वाजा। —रा. रू.

रमावणौ, रमावबौ–देखो 'रमाणौ, रमावौ' (रू. भे.)

उ०—१ इंद्र धनुख तणियौ अजब, चातुक धुन मन चाव। बीज न मावै बादळां, रसिया तीज **रमाव**। —वां. दा.

उ०—२ अला वन मां जाइ मुरळी बजावै, राजा रांम नां ओथि राधा **रमावै**। —पी. ग्रं.

रमावर–सं. पु. [सं.] लक्ष्मीपति विष्णु।

रू० भे०–रमाबर।

रमावियोड़ौ–देखो 'रमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रमावियोड़ी)

रमावीज–सं. पु. [स.] लक्ष्मीवीज नामक एक तांत्रिक मंत्र, श्रीं।

रमास्यांम–सं. पु. [सं. रमा+स्वामी] लक्ष्मीपति विष्णु।

रमिझोळ–देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

उ०—असवारी वणी छः गीतां रा **रमिझोळ** लाग रह्या छः। —जगमाल मालावत री वात

रमियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ कोई खेल खेला हुआ, खेलकूद किया हुआ, खेला हुआ. २ कोई नाटक या तमासा किया हुआ. ३ भोग विलास, रतिक्रीड़ा, संभोग या मैथुन किया हुआ, रमण किया हुआ. ४ भोग विलास के लिये रहा हुआ, मन लग जाने के कारण कहीं ठहरा हुआ, निवास किया हुआ, टिका हुआ. ५ आनन्द या मौज किया हुआ. ६ शिकार खेला हुआ. ७ आनन्द पूर्वक इधर उधर घूमा हुआ, भ्रमण किया हुआ, विहार किया हुआ. ८ चुपके से कहीं गया हुआ, गायब हुवा हुआ। लुप्त हुवा हुआ. ९ सर्वत्र व्याप्त हुवा हुआ, मौजूद रहा हुआ, वर्तमान रहा हुआ, समाया हुआ. १० लीन हुवा हुआ, लिप्त हुवा हुआ, रंगा हुआ. ११ अनुरक्त, आशक्त या मोहित हुवा हुआ. १२ चारों ओर लोक प्रिय या व्यापक हुवा हुआ।

(स्त्री. रमियोड़ी)

रमीईयौ–१ देखो 'रांमइयौ' (रू. भे.)

उ०—भली करी तैं आवतै, विरहा मेरै अंग। एक **रमीईयौ** रमि रह्यौ, लगै न दूजा रंग। —अनुभववांणी

२ देखो 'रांम' (अल्पा., रू. भे.)

रमीस–देखो 'रमेस' (रू. भे.)

उ०—**रमीस** अमीस हणौ अघरीस, तवै जस आलम जेण तमांम। महा बळवांन अभंग महीप, रटां जन लाज रखै रघुरांम। —र. ज. प्र.

रमूंजां, रमूंझां–देखो 'रमजां' (रू. भे.)

उ०—अरु कयौ, 'महरवांन, रावळ मोसूं घणी **रमूंझां** कीवी। —द. दा.

रमेकड़ौ–सं. पु. [सं. रम्+प्र. एकड़ौ] १ खिलौना, खेलने का उपकरण।

उ०—मोती जड़्या कांकण वाळौ हाथ धकै करती वा अबूझ री गळाई वोली–म्हारौ हाथ इण में पजायनै बतावौ। औ तौ अणूंतौ मजेदार **रमेकड़ौ** व्है ज्यूं है। —फुलवाड़ी

२ योनि, भग। (बाजारू, ग्रामीण)

रू० भे०—रमकड़ौ

रमेस–सं. पु. [सं. रमेश] विष्णु।

रू० भे०—रमीस, रमैस।

रमेस्वर–सं. पु. [सं. रमेश्वर] विष्णु।

रमैनी–सं. स्त्री.–कबीर के बीजक का एक भाग।

रमैयौ–देखो 'रांमइयौ' (रू. भे.)

उ०—तुम दरसण की आस **रमैया**, कब हरि दरस दिखावै। चरण कंवळ की लगनि लगी नित, बिन दरसण दुख पावै। —मीरां

२ देखो 'रांम' (अल्पा., रू. भे.)

रमैस–देखो 'रमेस' (रू. भे.)

रम्म–देखो 'रम्य' (रू. भे.)

उ०—सो धम्म **रम्म** जो गुण सहिय, दांन सील तव भाव मउ। भो भविय लोय तुम्हि पर करिय, नर भव आलिम नीगमउ। —अभयतिक यति

रम्मणौ, रम्मबौ–देखो 'रमणौ, रमबौ' (रू. भे.)

उ०—धरै इक पाप धरै इक ध्रम्म, करै इक जीव करै इक क्रम्म। सरज्जै आप त्रिधा संसार, हुवौ मझ आप ही **रम्मणहार**। —ह. र.

रम्मणहार, हारौ (हारी), रम्मणियौ —वि.।

रम्मिओड़ौ, रम्मियोड़ौ, रम्म्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रम्मीजणौ, रम्मीजबो —भाव वा.

रम्मत–देखो 'रांमत' (रू. भे.)

रम्माल–वि. [अ.] 'रमळ' विद्या का जानने वाला, ज्योतिषी।

रम्य–वि. [सं.] १ जिसमें मन रमता हो, रमणीय।

२ मनोहर, मनोज्ञ, सुन्दर।

३ प्रिय।

सं. पु. १ वीर्य।

२ चम्पा का पेड़।

३ परवल की जड़।

४ वायु के सात भेदों में से एक।

रू. भे.—रम्म।

रम्या–सं. स्त्री. [सं.] १ मेरु की नौ कन्याओं में से पांचवी कन्या, जो 'रम्यक' राजा की पत्नी थी।

२ धैवत स्वर की तीन श्रुतियों में से अन्तिम श्रुति का नाम। (संगीत)

३ महेन्द्रवारुणी।

४ लक्ष्मणा नामक कंद।

५ गंगा नदी।

६ रात, रात्रि।

रय–सं. पु. [सं.] १ पुरूरवस राजा का पुत्र एक राजा।

२ स्वायंभुव मनवन्तर के वसिष्ठ ऋषि का पुत्र एक प्रजापति।

३ प्रवाह, धारा।

४ गति, वेग, तेजी। (अ. मा.)

५ उत्साह, धुन।

६ संतोष, सब्र।

उ०—हंसा बुगां पटंतरौ, बीछड़ीयां परवांण। बुग छीलरीयां **रय** करै, हरीया हंस बिलखांण। —अनुभव वांणी

७ देखो 'रज' (रू. भे.)

८ देखो 'रव' (रू. भे.)

रयण–सं. पु. [सं. रत्न प्रा. रयण] १ रत्न।

उ०—१ वाडव। संभलि वीनती, सूर देवरावृ साखि। यौवन मइं इम जालविउ, रंक **रयण** जिम राखि। —मा. कां. प्र.

उ०— २ कापड माल असंख, हेम मिण **रयण** विभूखण। परिमळ चंदन अगर, पान कप्पूरह अस्सण। —गु. रू. बं.

२ राजा, नृपति।

उ०—'पातल' पांण कृपांण रौ, **रयण** विलोकै राड़। असणी जाणक इंद्र रौ, पड़ै सीस पाहाड़। —किसोरदांन बारहठ

३—समुद्र।

सं. स्त्री [सं. रजनी] ४ रात, रात्रि, निशा।

उ०—१ रति **रयण** सुदि नर नारि रांमति गाळि प्रमदति गावही मुख गांन दिन निस स्वांम मंगळ बैंण चंग बजावही। —रा. रू.

उ०—२ जिण रुत बहु बादळ झरइ, नदियां नीर बहाय। तिण रुत साहिब वल्लहा, मो किम **रयण** विहाय। —ढो. मा.

५ पृथ्वी, भूमि।

उ०—**रयण** दियण पाताळ न राखै, कनक व्रवण रूधौ कविळास। महि पुड़ि गज दातारज मारै, विसन किसै पुड़ि मांडू वास। —दुरसौ आढौ

६ धूलि, रज।

७ मोतियों से स्वस्तिकादि की की जाने वाली रचना।

रू० भे०—रइंण, रइंणि, रइण, रइणि, रइन, रेण, रैंण।

मह०—रयणौ।

रयणपत, रयणपति–सं पु. [सं. रजनी+पति] १ चन्द्रमा, शशि। (डि. को.)

उ०—गहमत गत असत अवर तत परगत, अग्वत दुजित रत भरथ अत। जगपत हित मुखदुति इण भत जिम, प्रभुत हुवन दिन **रयणपत**। —र. रू.

[रा. रयण=भूमि+सं. पति] २ राजा, नृप।

रयणमइ, रयणमई, रयणमए, रयणमय–वि. [सं. रत्न+मय, प्रा. रयणमई] रत्नों से युक्त।

उ०—सोवन ए रासि करेवि बंधव आगलिउ गिणं ए, मिसइ ए रईय मणिचूड राय रहइं सभा **रयणमए**। राइहिं ए संनि जिणाद नवउ प्रसादु करावीउ ए, कंचण ए मणिमय थंभ **रयणमइ** बिंब भरावीयां ए। —सालिभद्र सूरि

रयणा–सं. स्त्री. [सं. रयः+रा. प्र. णा=गति] १ गति, चाल।

उ०—झालै भार जुझरौ झाले, सीस आपाणै सरब सही। रांणा बडै ऊबरे रांणा, रवि **रयणां** ज्यां बात रही। —अज्जा झाला रौ गीत

२ रचना।

उ०—सयुक्खंध एक दसमइ अंगइ, पणयालीस अज्भयणा। पणयालीस उद्देस वलीपद, सहस संख्यात नी **रयणा**।
—वि. कु.

३ देखो 'रैणा' (रू. भे.)

रयणागर, रयणायर, रयणायरु–देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—१ घर बसियौ घणा नेह, चीत न वसियौ चूंडरा। रेह सगै तौ रेह, **रयणागर** रहतूं थियौ।
—फेफांणंद री वात

उ०—२ रासि रसाउलु चरीउ थुणीजइ, किम **रयणायरु** हीयडं तरीजइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ **रयणायर** पुत्री रमा, डाटी कर दुरभाव। रयणायर ते डूबवै, सूंमा केरी नाव। — बां. दा.

उ०—४ अनंतनाथ रा गुण अगम अनंता, सांभलजौ सहु संता। **रयणायर** में गिणती रयणे, मुनि न कहै मतिमंता।
—ध. व. ग्रं

रयणावळी–देखो 'रत्नावळी' (रू. भे.)

रयणि, रयणी–१ देखो 'रजनी' (रू. भे.)

उ०—१ पांखड़ियां ई किउं नहीं दैव अवाड्ड ज्यांह। चकवीकइ हुइ पंखड़ी, **रयणि** न मेळउ त्यांह। —ढो. मा.

उ०—२ सुणीयै अगजी आजरी, **रयणी** गई रे सबे। अंग फूरक ठीक पीणा, ए सूकनै दुखल सबै।
—रीसाळू री बात

२ देखो 'रैणा' (रू. भे.)

रयणीहत–सं. पु. [सं. रजनी+हत] सूर्य, रवि।

उ०—सिविता रवि सूर पतंग सही, रकतंबर अंबर ज्योत रही। किरणाळ प्रभाकर भांण कहं। **रयणीहत** मित्र सुचित्र रहं। —पा. प्र.

रयणौ–देखो 'रयण' (मह., रू. भे.)

उ०—सद्गुरु आवी समोसस्या, सांभलि नलणि अभ्रयणौ जी। जाति समरण पांमियउ, संजम परम **रयणौ** जी।
—स. कु.

रयत–देखो 'रय्यत' (रू. भे.)

उ०—गरथ लेत गोसेह, रात दिवस रोसै **रयत**। मांय मांय मोसेह, मुनसी खोसै मुरधरा। —ऊ. का.

रयतदोस, रयदोस–सं. पु.–दूषित आहार लेने से बनने वाला दोष।
(जैन)

रयनाक–सं. पु.–समुद्र, सागर

उ०—कवि 'गंग' अकब्बर अक्कभन (अन)। न्रप निपांन सब बस करिय। रांना प्रताप **रयनाक** मभ्फ, छिन डुब्बत छिन अच्छरिय। — कवि गंग

रयनि, रयनी–देखो 'रजनी' (रू. भे.)

रयय–देखो 'रजत' (रू. भे.)

रयबारी–देखो 'रैबारी' (रू. भे.)

उ०—नागरबेली नित चरइ, पांणी पीवइ गंग। ढोला **रयबारी** कहइ, करहउ एक सुचंग। —ढो. मा.

रयवाड़ी–देखो 'रैवाड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ महाराय! **रयवाड़ी** ये रमवांनौ छे लाग। जईये रमवा आज प्रभु, फूल रह्यौ छे बाग। —स्रीपाल रास

उ०—२ स्रेणिक **रयवाड़ी** चढचउ पेखियउ मुनि एकांत। वर रूप कांति मोहियउ, राय पूछई कहउ रे विरतंत।
—स. कु.

रया–सं. स्त्री. [अ. रिआया] प्रजा, जनता।

उ०—१ गरीब **रया** रौ तौ भगवांन माथा सूं ई विस्वास उठग्यौ हौ। चौड़ै बात करण री हीमत तौ किणी री नीं ही पण पीढियां सूं विखा रा तायोड़ा अभ्यागत मन ई मन उण कुचमादी नै ई भगवांन री ठौड़ आपरा हिवड़ा में थरप लियौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ क्यूं मौत री मरजी माथै, जीवण री पड़गी हड़ताळ। हिरणी बोली **रया** करै कांई, रखवाळा रौ पड़ग्यौ काळ।
—चेतमांनखा

रयासत–देखो 'रियासत' (रू. भे.)

रयिस्ठ–सं. पु. [सं. रैस्ठ] १ कुबेर।

[सं. रजस्थ] २ अग्नि, आग।

रयी–देखो 'रई' (रू. भे.) (डिं. को.)

रयोसयौ–वि.–१ शेष, अवशिष्ठ।

२ बचा–खुचा।

रय्यत–सं. स्त्री. [अ. रअय्यत] प्रजा, जनता, रिआया।

उ०—काबिल कलांम कहियत करीम, रहमांन इल्म **रय्यत** रहीम।
—ऊ. का.

रू. भे.—रयत, रैत।

ररंकार–सं. पु. [सं. रकार] राम नाम की ध्वनि, जप, माला।

उ०—१ रट रै **ररंकार** धार मन ईस्वर। तोइ निधि पार उतारण तेम। औ संसार अलप धन 'ओपा', जळ-निधि तणा बुदबुदा जेम। —ओपौ आढौ

उ०—२ अति उतिम सिवरन सहज, नाभ कवळ असथांन। रोम रोम **ररंकार** हुय, भाग वडै का डांन। —अनुभववांणी

रू० भे०—ररंकार।

रर–सं. स्त्री. [प्रा. रड] रटन, रट।

ररणौ, ररबौ–क्रि. स.–१ रटना, जपना।

उ०—रसना पतसीत न कूं **ररियौ**, भव डंड जिकां जम रै भरियौ। रसना पतसीत तणौ ररियौ, भव डंड जिकां जम नां भरियौ। —र. ज. प्र.

२ कहना, कथना।

उ०—**ररै** ससा भायां रसा, वीर पिण न सहवीर। विण माथै दळ बाढणा, धर सांचा रणधीर। —रेवतसिंघ भाटी

३ बोलना।

उ०—न्रप मांन के बंक सुभाव बिलोकत चित्त की व्रति अचंभौ धरै। चतुरानन आंन पढ़ावै विचंच्छन, तो उन जीभ नकार **ररै**। —बां. दा.

ररौ–सं. पु.–१ राम नाम का प्रथम अक्षर।

उ०—१ पोथी पुसतग टीपणौ, विद्या दूरि वहाय। हरीया सवहि छाडिकै, **ररै** ममै चित लाय। —अनुभववांणी

उ०—२ तीकम पाळगर जन देवन रौ सौ। रात दिनां मुख नांम **ररौ** सौ। —र. ज. प्र.

२ 'र' वर्ण या अक्षर।

रळ, रल–सं.पु.–तुच्छ, न्यून।

उ०—१ आसमुद्द धरहि धरणिय इक्केक्कइं कडि चीरि। हाकीउ **रल** जिम काढीइंउ आथमतइं सूरि। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ अन्न दिवसि बंभणु सकुटंब **रल** जिम विलवइ पाडइ बुंब। पूछइ भीमु करी एकंतु आविउं दूखु किसुं अचिंतु। —सालिभद्र सूरि

रळक–सं. स्त्री.–१ फिसलन।

२ लपट।

३ इच्छा।

रळकणौ, रळकबौ–क्रि. अ.–१ फिसलना, रपटना, खिसकना, सरकना।

उ०—१ माता रै मन्दिर चढतां सालूड़ौ **रळक्यौ** ए माय। तेडौ बजाजी रौ बेटौ सालूड़ौ ले आवै ऐ माय। —लो. गी.

उ०—२ खावासजी नै एकाएक विस्वास नीं व्हियौ के उण रै पाखती ऊभी आ कोई लुगाई बोलै है। जे एकर ई कोयलां आ बोली सुणलै तौ बोलणौ भूल जावै। गळा रै मांय बोली रा आखर **रळकता** दीसै। मूंडां में दांतां री ठौड़ जांणै तारा खिवै। —फुलवाड़ी

२ प्रगट होना, निकलना।

उ०—१ वा धणौ ई सबर राखियौ तौ ई उण रै मूंडा सूं माडै ई बोल **रळक** पड़िया —फुलवाड़ी

उ०—२ हिवड़ा में ओट्योड़ौ मन रौ अखूट दरद आखरां रौ रूप धार माडांणी **रळक** पड़्यौ। —फुलवाड़ी

उ०—३ भोळा टाबर री गळाई उणरै मूंडा सूं बोल **रळक** पड़्या—देखूं, म्हारौ पग इण में पजावौ। कैड़ौक फूठरौ लागै। —फुलवाड़ी

३ टपकना, गिरना, ढुलकना।

उ०—१ काली मासी अर भटियांणी रै पगां हाथ लगाय सिधावती वेळा गूंगी अर खवासजी री आंख्यां सूं ठळाक ठळाक आंसू **रळक** पड़्या। —फुलवाड़ी

उ०—२ कागद सांवट नै जबरू ऊंचौ जोयौ तौ काकी री प्याला जैड़ी मोटी-मोटी आंख्यां में पांणौ देख्यौ। टप करतौ एक बळवळतौ आंसू उण रा गाल माथै कर रळक्यौ तौ वौ कागद नांख नै नाठग्यौ। —अमर चूनड़ी

४ गेंद के समान लुढकना। घुड़कना।

५ लटकना, लूंमना।

उ०—१ गोडां **रळकती** काळी भंवर आटी रौ फटकारौ देय ठकरांणी भचकै आडी फिरी। —फुलवाड़ी

उ०—२ खांधां सूं ई हेटै **रळकता** झड़ूला रा काळा-भंवर केस जांणौ काळा रंग रौ नांव उजागर करता व्है। —फुलवाड़ी

उ०—३ बिमळा कमळा सी अमळा बेसां री, कड़ियां **रळकंता** कमळा केसां री। भूखण आभूखण मनसा भरियोड़ी, बेळा मनबंछित केळा करियोड़ी। —ऊ. का.

वि० वि०—यहां 'रळकणौ' का शाब्दिक अर्थ यद्यपि लटकना ही होगा क्योंकि केश मस्तक से होकर कमर की ओर लटक रहे हैं। लेकिन शब्द की भावना को समझने के लिये यहां लटकते बालों में होने वाली हरकत की ओर ध्यान देना आवश्यक है। मस्तक की हरकत के अनुसार बालों का हिलना डुलना स्वाभाविक ही है और बाल हिलने के साथ साथ पीठ, कमर आदि अंगों को स्पर्श करते हैं इससे उनमें एक फिसलन पैदा होती रहती है और हिलने डुलने से बालों में लटकने व फिसलने की दोनों क्रियाएं साथ साथ होती है। अतः यहां 'रळकणौ' का अर्थ लटकना व फिसलना मिश्रित रूप में है। किसी खूंटी के बंधी रस्सी को भी लटकना माना जा सकता है परन्तु वहां 'रळकणौ' का भाव नहीं आ सकता।

६ किसी आधार पर लटक कर झूमना, झूलना, हिलना-डुलना।

उ०—केहरी लंक लग थग कंदल, भळकि पदम नग डग भरै।

ऐ वात पलकि नख मै दियां, **रळकि** हार उर ऊपरै।
—पनां

७ धीरे धीरे बहना।

उ०—सिळगती धरती रौ काळजौ ठाडौ हेम व्हैगौ। बळबळती रेत रै माथै ढाळौढाळ पांणी **रळकण** लागौ।
—फुलवाड़ी

८ प्रस्थान करना, जाना।

उ०—**रळक्या** सेला मारू ढळती सी रात, दिन तौ उगायौ रांणी सोकरी रे देस में जी म्हारा राज। —लो. गी.

९ मिटना, धूमिल होना।

उ०—ग्रळगा ग्रळगा गांवड़ा, करड़ा करड़ा कोस। लूग्रां **रळक्या** राहड़ा, पंथी कुरण नै दोस। —लू

रळकरणहार, हारौ (हारी), रळकरिणयौ —वि.।

रळकिग्रोड़ौ, रळकियोड़ौ, रळक्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रळकीजरणौ, रळकीजबौ —भाव वा.।

रळरणौ, रळवौ —रू. भे.।

रळकाणौ, रळकाबौ—क्रि. स. ['रळकरणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ फिसलाना, रपटाना, खिसकाना, सरकाना।

२ प्रगट करना, निकालना।

उ०—मन रो भेद जीव में राखी जगां जगां **रळकाई** ना।
—गजानन वर्मा (बादळी)

३ गेंद के समान लुढकाना, घुड़काना।

४ टपकाना, गिराना, ढुलकाना।

उ०—भेली-भेली सुन्दर गोरी घोड़े री लगांम। ग्रांसू तौ **रळकाया** कायर मोर ज्यूं, जी म्हांरा राज। —लो. गी.

५ लटकाना।

६ किसी ग्राधार पर लटका कर हिलाना-डुलाना।

७ धीरे-धीरे बहाना।

८ प्रस्थान कराना, जाने के लिये प्रेरित करना।

९ मिटाना, धूमिल करना।

उ०—लूग्रां फिर फिर रोहियां, **रळकाया** सै राह। पथ मेटरा मिस मारिया, पंथी दारुण दाह। —लू

१० ग्रनाज के ढेर में से ग्रच्छा व साफ ग्रनाज पृथक करने के लिये उस पर हल्के हल्के हाथ फिराना। इसी प्रकार से ग्रन्य पदार्थ भी।

उ०—इरण भांत रा मूंग हाथां सूं **रळकायजै** छै। चुरण-वीरण कांकरा काढजै छै। —रा. सा. सं.

११ फैलाना, तानना।

उ०—छापरियौ देख नै तंबूड़ा तांरिणया ए ग्रंबा, डूंगरियै **रळकाई** रेसम डोर। —लो. गी.

रळकारणहार, हारौ (हारी), रळकारिणयौ —वि.।

रळकायोड़ौ —भू. का. कृ.।

रळकाईजरणौ, रळकाईजबौ —कर्म वा.।

रळकावरणौ, रळकावबौ —रू. भे.।

रळकायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ फिसलाया हुग्रा, रपटाया हुग्रा, खिसकाया हुग्रा, सरकाया हुग्रा. २ प्रगट किया हुग्रा, निकाला हुग्रा. ३ गेंद के समान लुढकाया हुग्रा. ४ टपकाया हुग्रा, गिराया हुग्रा, ढुलकाया हुग्रा. ५ लटकाया हुग्रा. ६ किसी ग्राधार पर लटका कर हिलाया हुग्रा. ७ धीरे धीरे बहाया हुग्रा. ८ प्रस्थान कराया हुग्रा, जाने के लिये प्रेरित किया हुग्रा. ९ मिटाया हुग्रा, धूमिल किया हुग्रा. १० हल्के हल्के हाथ फेरा हुग्रा (ग्रनाज ग्रादि पदार्थ) ११ फैलाया हुग्रा, ताना हुग्रा। (स्त्री. रळकायोड़ी)

रळकावणौ, रळकावबौ—देखो 'रळकाणौ, रळकाबौ' (रू. भे.)

रळकावरणहार, हारौ (हारी), रळकावरिणयौ —वि.।

रळकाविग्रोड़ौ, रळकावियोड़ौ, रळकाव्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रळकावीजरणौ, रळकावीजबौ —कर्म वा.।

रळकावियोड़ौ—देखो 'रळकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रळकावियोड़ी)

रळकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ फिसला हुग्रा, रपटा हुग्रा, खिसका हुग्रा, सरका हुग्रा. २ प्रगट हुवा हुग्रा, निकला हुग्रा. ३ टपका हुग्रा, गिरा हुग्रा, ढुलका हुग्रा. ४ गेंद के समान लुढका हुग्रा, घुड़का हुग्रा. ५ लटका हुग्रा, लूंमा हुग्रा. ६ किसी ग्राधार पर लटक कर झूमा हुग्रा, झूला हुग्रा, हिला-डुला हुग्रा. ७ धीरे धीरे वहा हुग्रा. ८ प्रस्थान किया हुग्रा, गया हुग्रा. ९ मिटा हुग्रा, धूमिल हुवा हुग्रा।
(स्त्री. रळकियोड़ी)

रळकौ—सं. पु.—१ कभी-कभी ग्राने वाला शीतल हवा का झोंका।

२ थोड़े समय के लिये होने वाली बरसात की झड़ी।

उ०—छिन एक चालौ परवा भांण, दोय घड़ी जे **रळकौ** दे दे तो, ताली भर जाय ग्रांगरण मांय। —लो. गी.

३ पानी या द्रव पदार्थ का हल्का वहाव, प्रवाह।

४ दूसरी बार सींच कर जाव में पानी देने की एक क्रिया।

५ पतले गोबर का किया जाने वाला लेपन।

रळचळ—सं. पु.—बहाव, प्रवाह।

उ०—वळकै वीजूजळ कुटकै कम्मळ, सूं सर साबळ झळहळ ए। ग्रडडे कांछसळ कुटकै कम्मळ, सोरणी **रळचळ** खळहळ ए।
—गु. रू. बं.

रळणौ, रळबौ–क्रि॰ अ॰–१ मिलना, सम्मिलित होना।

उ॰—१ जे हुडियार हुंता सूअर होइ तौ हिंदू मुसलमांन **रळि** खावौ। जो गाइ होय तो हिंदू मुसलमांन **रळ** खावौ।

—द. वि.

ऊ॰—२ गठ जोड़ौ तौ जुड़चौ पण मन–मेळ जोड़ौ मिळचौ नहीं। मूळी लांबी अर जुवांन। पेमजी ओछौ, गट मींगणियौ बूढौ विरांन। दो–दो दुख सागै **रळग्या**।

—दसदोख

उ॰—३ सिर झुकिया सह साह, सींहासण जिण सांमने। **रळणौ** पंगत राह, फाबै किम तोनै 'फता'। —केसरीसिंह बारहठ

उ॰—४ पण छोटा–मोटा टावर अर जुवांन घणै कोड सूं डागै रै संघ में **रळै** है। —दसदोख

२ मिश्रण होना, मिश्रित होना।

उ॰—घर जांणै हला–हला'र छल्यौ है। घर हाळा तो आटै रे लूण दाई **रळग्या**। —दसदोख

४ घुलना, मिलना, रमना।

उ॰—१ **रळ** रही नैंन में नींद गुमांनीड़ा। तार नसै की मार बोलन की। —रसीलै राज रौ गीत

उ॰—२ नागा नगर गयांह, मन मेळ मिळिया नहीं। मिळिया बिन मिळियाह, जांसूं मन **रळिया** नहीं। —अग्यात

उ॰—३ डागै रौ विसवास जम्यौ अर दायजै–टीकै रौ मोल मांग्यौ न धम्यौ। सगै–सगै रौ **रळग्यौ** जी, मीठा हुया ज्यूं सक्कर घी। —दसदोख

उ॰—४ अब घणी खुस्याली हुई छै। राजा अर साह रंग **रळीया** छै। —वीजड़ वीजोगण री वात

४ समाना, मिलना, विलीन होना।

उ॰—१ ज्यूं जळ बूठौ थळ में **रळियौ**। ऊगी कूंपळ काची। पीळी कीकर पड़ग्यौ करसा, थें धरती ने राची।

—चेत मांनखा

उ॰—२ आछोड़ा ढिग आय, यौं आछा भेळा हुवै। ज्यूं सागर में जाय, **रळै** नदी जळ राजिया। —किरपारांम

उ॰—३ रिण लड़ै पड़ै कणियागरौ, विकट जोध 'दोळौ' वळै। 'सबळ' रौ कांम आयौ 'सुरिंद', रांमजोत भेळौ **रळै**।

—बखतौ खिड़यौ

उ॰—४ सत गुरु सैन दई जव आकै, जोत में जोत **रळी**।

—मीरां

५ शोभित होना।

उ॰—रसिया नैणां **रळ** रह्यौ, काजळ तीखी कोर। किया वटाऊ कारणै, चंदाबदनी चोर। —अग्यात

६ प्रवेश पाना, पेठना, घुसना।

उ॰—१ पब्बै धारां पाए मौत **रळेगौ** अमरांपुरां। उजळै गो गोत बूंदी समरां आथांण। डमरां घुळंता बास मळेगौ अदोत दीहां, चमरां ढुळंतां जोत भळेगौ चहुआंण।

—दुरगादत्त बारहठ

उ॰—२ छेकड़ नै'रांळै गांवां में जाणौ ई पड़चौ। उतरादै चाल–चल्लै में **रळनौ** पड़चौ। —दसदोख

७ फैलना, छितराना।

उ॰—कुंजर क्रीडइ रवि **रलइ**, जात्र न जाइ जेह। [माधव कहइः] सुणि मांनिनी, मिध–विहूणा तेह। —मा. कां. प्र.

८ उछलकर गिरना।

उ॰—धमंधम सेल बभक्कत धाव। रमझ्झम अच्छर झांझर राव। मिळै कर मूंछ गळै बरमाळ, चंडी पत्र रत्र **रळै** दहचाळ।

—मे. म.

९ लीन होना, मग्न होना।

१० पड़ना।

उ॰—चूडी सवि चटकी गई, **रलिउ** मुत्ताहल-हार। आभरणां ऊतरि पडइ, खाट खमई नहीं भार। —मा. कां. प्र.

११ लगना, स्पर्श होना।

उ॰—इण भांति गोल्यां रौ चाळौ करै छै। प्याला भी फिरै छै। जठै अंतर मैं **रळिया** थका जांमां पहरिया छै। मांहोमाहि गुलाब छिड़कीजै छै। —पनां

१२ बरसना, वृष्टि होना।

उ॰—**रळियौ** जळ सुरराज, धर अंबर इक धार सूं। करण अभय ब्रज काज, गिरि मख धारचौ कांन्हड़ा।

—रांमनाथ कवियौ

१३ नष्ट होना, बरबाद होना।

१४ चिरना फटना।

१५ ढलना

उ॰—**रलीया** हे सखी **रलिया** दिन नें रात। रहतां हे सखि रहतां हे दिवस बहूजी। —प. च. चौ. (१४)

१६ देखो 'रळकणौ, रळकबौ' (रू. भे.)

उ॰—मांग जड़चां गज मोतियां, कड़चां **रळंता** केस। ताळी हंस दे तीजणी, चाळी कांमण **वेस**। —अग्यात

रळणहार, हारौ (हारी), रळणियौ वि.।

रळिग्रोड़ौ, रळियोड़ौ, रळचोड़ौ —भू. का. कृ.।

रळीजरणौ, रळीजबौ — भाव वा.

रळतळ—देखो 'रळत्तळ' (रू. भे.)

उ०—खळहळां चलै **रळतळां** खाळ। वीजळां भळां बीमळां व्राळ। गूंछळां गळां गूथळां गट्ठ। सिंघळी कळां सांकळां सट्ठ।

—गु. रू. बं.

रळतळणौ, रळतळबौ—क्रि. अ.–१ फिसलना, रपटना।

उ०—**रळतळइ** रथ नई मगर कुंजर अस्व जेहुवा कछ।

—रुखमरिण मंगळ

२ फैलना।

उ०—१ रुधिर घर **रळतळी** बहु नाचइ कमंध महावळी। ग्राळूझइ ग्रांत्रावळी। —ग्र. वचनिका

उ०—२ रिण ग्रंगरिण तेरिण रुहिर **रळतळिया**। घरणा हाथ हूं पड़े घरणा। ऊंधा पत्र बुदबुद जळ ग्राकृति, तरि चालै जोगिरणी नगा। —वेलि

उ० – ३ कोड भड कचरिया रायमल कोपिये, जुडरण मोटा करै 'कुंभ' जायौ। **रळतळै** रुधर रणभोम रहियौ नहीं, ऊपटै नदी जळ मांह ग्रायौ। —महारांणा रायमल रौ गीत

३ गिरना, पड़ना, धराशायी होना।

उ०—पुळियां घणांघणां गलिपाळै, **रळतळिया** पैलां खळ रोद। ग्रसपति दळां पडंतां ग्रांम्ही, सांम्ही धार चढ्यौ सीसोद।

—केसरिसिंह सीसोदिया रौ गीत

रळतळणहार, हारौ (हारी), रळतळरिणयौ —वि.।

रळतळिग्रोड़ौ, रळतळियोड़ौ, रळतळचोड़ौ भू. का. कृ.।

रळतळीजरणौ, रळतळीजबौ —भाव. वा.।

रळत्तळणौ, रळत्तळबौ —रू भे.।

रळतळियोड़ौ—भू. का. कृ.–१ फिसला हुग्रा, रपटा हुग्रा. २ फैला हुग्रा. ३ प्रवाहित हुवा हुग्रा, बहा हुग्रा. ४ धराशायी हुवा हुग्रा, गिरा हुग्रा, पड़ा हुग्रा।

(स्त्री० रळतळियोड़ी)

रळतळी—देखो 'रळत्तळ' (रु. भे.)

रळत्तळ—सं. स्त्री.–राठौड़ वीर गोगादे की तलवार का नाम। यह तलवार प्रहार के समय झटका लगने पर लम्बी फैल जाती थी।

उ०—ग्रखै कव ग्रोपग दीपत एम, जिका भड़ गोग **रळत्तळ** जेम।

—पे. रू.

क्रि. वि.–तीव्र गति से, वेग से।

रू० भे०—रळतळ, रळतळी, रळथळी।

रळत्तळणौ, रळत्तळबौ—देखो 'रळतळणौ, रळतळबौ' (रू. भे.)

उ०—खगां चढि धार हुए बि बि खण्ड, पड़ै धर हिंदु मळेछ प्रचंड। **रळत्तळि** नीर जिहीं रुहिराळ, खळाहळि जांणि कि भाद्रव खाळ। —वचनिका

रळत्तळणहार, हारौ (हारी), रळत्तळरिणयौ —वि.।

रळत्तळिग्रोड़ौ, रळत्तळियोड़ौ, रळत्तळचोड़ौ —भू. का. कृ.

रळत्तळीजरणौ, रळत्तळीजबौ —भाव. वा.

रळत्तळियोड़ौ—देखो 'रळतळियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. रळत्तळियोड़ी)

रळथळी—देखो 'रळत्तळ' (रू. भे.)

उ०—जोपस वाळी जवारिका जैरण कीध जवाहर, गोगादे ने **रळथळी** दीधी कर मेहर —(मा. म.)

—सबळौ लाळम

रळपट—सं. स्त्री.–१ हंसी, दिल्लगी, मजाक, मखौल।

२ उद्दण्डता, बदमाशी।

वि.–१ उद्दण्ड, बदमाश।

२ व्यर्थ, फालतू।

उ०—पकवांन परूसे **रळपट** रूसे, फरगट सुख फेंकंदा है।

—ऊ. का.

३ ग्रविश्वास पात्र।

४ लम्पट, बद चलन।

५ ग्रावारा।

रू० भे०—रुळपट।

रळमिळ—देखो 'रिळमिळ' (रू. भे.)

उ०—१ ज्यूं पांणी काढै त्यूं देवाळो धोरै धोरै वैवतौ क्यारां क्यारां **रळमिळ** जावै। —फुलवाड़ी

उ०—२ कदे न ल्याया भंवरजी सूतळीजी, हांजी ढोला। कदे बी बुरणी नहीं खाट। कदेय न सूता **रळमिळ** सेज में जी, ग्रो जी पियाजी। ग्रब घर ग्राग्रौ, थांरी प्यारी उडीके महल में जी। — लो. गी.

उ०—३ सूवटां रौ ग्रौ भूलरौ मीठा सुर में धरती री कूख बधावै के म्हारी जच्चा–रांणी नै **रळमिळ** मीठा गीत सुणावै।

—फुलवाड़ी

उ० – ४ हंसी ढब्यां राजाजी कीं बात पूछरणी चावै उरण वगत वळै हंसी ग्राय जावै। बोली हंसी में **रळमिळ** जावै।

रळमिळणौ, रळमिळबौ—क्रि. अ.–१ हिलना–मिलना, मिलना–जुलना।

उ०—चार कूंट की बावड़ी, जी में सीतल नीर। ग्रापां **रळमिल** न्हायस्यां, म्हारी लाल नरणद रा वीर। —लो. गी.

२ फैलना, फैलकर समाना।

उ०—वै सोळा सूरज कीकर खिरिया इण रौ म्यांनौ तौ म्हैं ईं नीं जांणूं, पण वै धरती माथै खिरियां पै'ली पै'ली सगळी दुनियां में बातां बणनै **रळमिळग्या**। —फुलवाड़ी

३ सम्मिलित होना, मिश्रित होना।

उ०—चीकणा गुलाबी डील रौ परस पातां ईं बादळां रौ पांणी मोत्यां ज्यूं जड़ग्यौ। काळा झड़ूला में अणगिण मोती ई मोती **रळमिलग्या**। —फुलवाड़ी

४ घुल-मिल जाना।

रळिमिळणौ, रळिमिळबौ —रू. भे.

रळमिळियोड़ौ-भू. का. कृ.-१ हिला-मिला, मिला-जुला. २ फैला हुआ, फैलकर समाया हुआ. ३ सम्मिलित हुवा हुआ, मिश्रित हुवा हुआ. ४ घुला-मिला हुआ।

(स्त्री. रळमिळियोड़ी)

रळरळ-वि.-सुन्दर, मनोहर।

उ०—रथां जळहळ चित्र **रळरळ**, दुझ्झळ अणवळ प्रबळ पैदळ। अचळ त्रिय वळ महल पुरि यळ, प्रघळ दळ बळ रीझ इक पळ। —र. रू.

रळरळक, रळलळक-सं. स्त्री.-सुन्दरता, चमक, आभा। प्रकाश।

उ०—मुळळळक पोहोप फूल झड़ै, मुखहार लड़ी **रळलळक** हुयौ प्रतपाळक बाळक रोग प्रचाळक, जोगणि चाळक नेच जयौ।

—मा. वचनिका

रळवळणौ, रळवळबौ-देखो 'रळमिळणौ, रळमिळबौ' (रू. भे.)

रळवळियोड़ौ-भू. का. कृ.-देखो 'रळमिळियोड़ौ' (रू. भे.)

रळा-सं. स्त्री.-याद।

उ०—थां छडांणे गया था सो बरस दूजे आफे पाछे आया, थांनै दूजै तीजै बरस **रळा** आवै छै।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

रळाणौ, रळाबौ-क्रि. स. ['रळणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ मिलाना।

उ०—माथै काळा भंवर केसां रौ चीकणौ झड़ूलौ, जांणै अणगिण भंवरा आपरौ काळौ रंग अर चिकणाई आं केसां में **रळाय** नचीता व्हैगा। —फुलवाड़ी

२ मिश्रण करना, एक-मेक करना।

उ०—गूंद रै सागै पूजती बिदांमां न्हाक एकण सांचै ढळिया लाड्ड सांध्या, धांणां रै सागै कायफळ, कमरकस्स, काचा गोळा, काळी मिरचां **रळाय** लाड्ड बांध्या। —फुलवाड़ी

३ आत्म सात करना, समाहित करना, रमाना।

४ लीन करना, मगन करना।

५ घुलाना, घोलना।

उ०—१ बाईजी म्हांरा ओ, आयी हो बाइ सा' काछबिये री जांन, केसर तो **रळायी** जाभा नीर में। —लो. गी.

उ०—२ दो महीनां सूं लिकलिक करूं के म्हारा डील में आतस घणी, पांच सेर कड़कड़ पांणी में **रळाय** नै पीवूं तौ कीं ठंडक वापरै। —फुलवाड़ी

६ शोभित करना।

७ फैलाना, छितरवाना, बिखेरना।

८ प्रवेश करना/कराना, पेठाना, घुसाना।

९ गिराना, पटकना।

१० बरसाना, वृष्टि करना।

११ नष्ट या बरबाद करना।

१२ चीरना, फाड़ना।

१३ रगड़ना।

१४ टपकाना।

रळाणहार, हारौ (हारी), रळाणियौ — वि.।

रळायोड़ौ —भू. का. कृ.।

रळाईजणौ, रळाईजबौ —कर्म वा.।

रळावणौ, रळावबौ —रू. भे.

रळायोड़ौ-भू. का. कृ.-१ मिलाया हुआ. २ मिश्रण किया हुआ, एक-मेक किया हुआ. ३ आत्मसात किया हुआ, समाहित किया हुआ, रमाया हुआ. ४ लीन किया हुआ, मगन किया हुआ. ५ घुलाया हुआ, घोला हुआ. ६ शोभित किया हुआ. ७ फैलाया हुआ, छितराया हुआ, बिखेरा हुआ. ८ प्रवेश कराया हुआ, पेठाया हुआ, घुसाया हुआ. ९ गिराया हुआ, पटका हुआ. १० बरसाया हुआ, वृष्टि किया हुआ. ११ नष्ट या बरबाद किया हुआ. १२ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ. १३ रगड़ा हुआ. १४ टपकाया हुआ।

(स्त्री. रळायोड़ी)

रळावढौ-वि.-मिश्रित।

उ०—लोर में सूती राजी री घणी नराजी सूं नाड़ देख'र मूंढौ मिचकोड़चौ अर उड़दू-फारसी रा अटपटा **रळावढा** उळटा-सुळटा सबदां सूं बात वणा'र बोल्यौ —दसदोख

रळावणौ—देखो 'रळियांमणौ' (रू. भे.)

उ०—सपना में ओ मारूजी मैं'ल जो देख्यौ, मैं'लां रा थंभ **रळावणा** जी। —लो. गी.

(स्त्री. रळावणी)

रळावणौ, रळावबौ—देखो 'रळाणौ, रळाबौ' (रू. भे.)

उ०—काळिंदर ई पाछा दरसण नीं दिया। सेवट हाथ झाटक आंसू **रळावती रळावती** घरै आई। —फुलवाड़ी

रळावणहार, हारौ (हारी), रळावणियौ —वि.

रळाविप्रोड़ौ, रळावियोड़ौ, रळाव्योड़ौ —भू. का. कृ.

रळावीजणौ, रळावीजबौ —कर्म वा.

रळावियोड़ौ–देखो 'रळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रळावियोड़ी)

रळि–देखो 'रळी' (रू. भे.)

उ०—१ जनक हरखै जांनकी राज **रळि** बहरंग। सुरै वरखा पोहप स्रवि, नौवत घुरै निहंग। —रांमरांसौ

उ०—२ रुखमणी मनि **रळि** अंगी ग्रमी ढळी, पदम वाचा प्रति नाथ तूठा। —रुखमणी मंगळ

रलिग्रांमणउ, रलिग्रांमणु, रलिग्रांमणौ–देखो 'रळियांमणौ' (रू. भे.)

उ०—१ रांणपुरइ **रलिग्रांमणउ** रे लाल, स्री आदीसर देव मन मोहचउ रे। —स. कु.

उ०—२ च्यइ दरिसण **रलिग्रांमणु** ग्रांमणु दमणु जाई। जिम मुझ पहुंचइ ग्राखड़ि, ग्राखड़ियां न उसाई। —स. कु.

रळिमळि–देखो 'रिळमिळ' (रू. भे.)

उ०—पीया सु परचौ भयौ, हरीया **रळिमळि** खेल। मेरै सांम सुहाग की, है ग्रजरांमर बेल। —ग्रनुभववांणी

रळिमिळणौ, रळिमिळबौ–देखो 'रळमिलणौ, रळमिलबौ' (रू. भे.)

उ०—खोड़उ हुंतउ डांभिज्यउं, बांध्यउ भूख मरेसि। थे बिहुं सज्जण **रळिमिल्यउ**, हूं बिच दुख्ख सहेसि। —ढो. मा.

रळिमिळियोड़ौ–देखो 'रळमिळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रळिमिळियोड़ी)

रळिय, रलिय–देखो 'रळी' (रू. भे.)

उ०—१ बत्तीस बद्ध नाडय घड, पत्ति पत्ति नच्चइ **रलिय**। इयसिय रिद्धि पिखेवि कर, दसणभद्द मउ गउ (श्य) गलिय। —ग्रभयतिक यति

उ०—२ सहजति निरुवम रूवधरु पंचइ राजकुमार। तहविह मायडिय **रलिय** लगि काराविय सिणगार। —प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—३ **रळियां** जायोड़ा गळियां में रुळिया। —ऊ. का.

रळियांमणौ, रलियांमणौ, रळियावणौ, रलियावणौ–वि. (स्त्री. रळियांमणी, रलियांमणी)

१ सुन्दर, मनोहर, सुहावना।

उ०—१ सैयां सियावर घर आया हे, ग्रवध नगर **रळियांमणौ**, सुख संपत छाया है। —गी. रां.

उ०—२ रूपाळौ **रळियांमणौ** धोळागिर रौ थांन। तर नीझरण झंकर तटै, सिखर मेर समांन। —दुरगादत्त बारहठ

उ०—३ राजग्रही नगरी हो ग्रति **रलियांमणी**। 'गुणसिल' नांमे बागजिणेसर। —जयवांणी

२ ग्रानन्द दायक, उत्साह वर्धक।

उ०—१ रति ग्रनुकूळ विलास घणां **रळियांमणां**। भीखग दीसै इंद्र लिवूं हूं भांमणां। —बां. दा.

उ०—२ संवत सोल ग्रठांणुग्रइ, स्रावण पंचमी ग्रजुवालइ रे। रास भण्यौ **रलियांमणौ** स्री समयसुंदर गुण गाइ रे। —स. कु.

उ०—३ पनां विळकुळी कहै, **ग्रबै** सुख पावणौ। ग्रावतां ग्राज को दिन, **रळियांवणौ**। —पनां

३ मौज व मस्ती देने वाला।

उ०—राज छोड्यउ **रलियांमणौ**, तुम जांण्यउ ग्रथिर संसार। वयरागे मन वालियुं, तुमे लीधउ संयम भार। —स. कु.

४ मोहक, ग्राकर्षक।

उ०—१ मूरति मोहन वेलड़ी, प्रगटी पुण्य पड़ूर। रिखभ तणी **रलियांमणी, प्रणमंता** सुख पूर। —स. कु.

उ०—२ मूरति ग्रति **रलियांमणी,** निरखण चाहैं नैंण। जेह करावै जातरा, साचा ते हिज सैंण। —ध. व. ग्रं.

५ मधुर, प्रिय।

उ०—१ त्रिकनै हो चोक चचर सरव्वच, सांभळि पटहनी घोसणा मंइं प्रगट निवारचौ हो तेह, वचन सुणी **रलियांमणा**। —वि. कु.

उ०—२ ते नटुइ हो करि सोल स्रिंगार कि, गीत गायई **रलियांमणा** —स. कु.

६ सुखी।

उ०—सुख प्रांमियौ सजणां दुक्ख थियौ दुजणां। लोक **रळियांमणौ** लियै भांमणा। —गु. रू. बं.

७ श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—दिन–दिन डोहला पूरतां, बोल्या पूरा मास। सुत्त जायौ **रलियांमणौ,** सहुनी पूगी ग्रास। —वि. कु.

रू० भे०–रळावणौ, रलिग्रांमणउ, रलिग्रांमणु, रलिग्रांमणौ, रळियावणउ, रळियावणिय, रळियावणौ, रळीग्रांमणु, रळीग्रांमणौ, रळीयांमण, रळीयांमणौ, रळीयावणौ।

रळियाइत, रळियात, रळियायत, रळियायित, रळियारत–सं. स्त्री.–
१ ग्रानन्द, खुशी।

उ०—१ उठी ने सांम्ही गई, जोड़ी दोनूं हाथ। विनय सहित वंदना करी, मन में थई **रलियात**। —जयवांणी

उ०—२ रमता रावळिया **रळियारत** रोधै, धुन में धुन लागी पुन में सत सोधै। —ऊ. का.

२ लाड, प्यार।

वि.–१ प्रसन्न, खुश, मुदित।

उ०—१ राव कल्यांणमल अर सरब राजलोक दूलह दुलहणि देखि दूणा **रळियाइत** हुआ। —द. वि.

उ०—२ पांणी सुगम कीयौ कुमर, जेह हतौ दुरलंभ। **रलियाइत** सहु को थया, पीछौ परिघल अंभ। —वि. कु.

उ०—३ कहइ राजिमती **रलियात** थकी, मुझ भाग वडउ महिला मइ सखी। —स. कु.

उ०—४ **रलियाय** राजा थयौ रे, सांभलि तास वचन। कुमरी अध्यापक भणी रे, लाख गमै दीधौ धन। —स्रीपाल रास

उ०—५ राज तम हमसूं मिळै, हमह मिळै सुख–सात। हजरत **रळियायित** हुऔ, हसि पूछी कुसळात। —गु. रू. बं.

२ उत्साहित। आशान्वित।

उ०—समाचार सविस्तर कह्या, पिंगळराय ही गहगह्या। छांना नितु पुहचइ परधांन, **रळियात** थ्या चिति परधांन। —ढो. मा.

३ आशक्त।

उ०—खंजन नेत्र विसाळ गति, नासिका दीपक लोय। ढोलौ **रळियायत** हुवौ, जे धण दीठौ जोय। —ढो. मा.

रू० भे०–रळियावत, रळीआइत, रळीआईत, रळीआईती, रळीआत, रळिआति, रळीयाइत, रळीयाईत, रळीयाईती, रळीयात, रळीयायत, रळीयायित, रळीयावत।

रळियालउ, रळियाळौ, रलियालौ–वि. (स्त्री. रळियाली) १ सुन्दर, मनोहर।

उ०—बांह बिहुं लटकाली, अति ओपै लुंब झुंबाली हो।, रुड़ी नै **रलियाली** हीर्णी करि चंपक डाली हो। —वि. कु.

२ प्रिय, प्यारा।

उ०—दुख महोदधि पाज, भव जल तारण जहाज, आज हो रंगइ रे **रलियालउ** साहिब सेवियइ जी। —वि. कु.

३ प्रसन्न, खुश, आनन्दित।

उ०—रांमत रमता सुर में रता **रळियाळा**। —केसोदास गाडण

सं. पु.–ईश्वर, परमेश्वर।

रलियावणउ, रळियावणिय, रळियावणौ–देखो 'रळियांमणौ' (रू. भे.)

उ०—१ कांन्हउ कुंतिपुत्रसउं रमलि करंतउ रंगे, धण वणगण **रलियावणउ** पहुतउ गिरिवर स्रिंगे। —प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ घर घर में धीणां घणा, घर घर घूमै माट। राग रंग **रळियावणौ**, धरपुड़ मांझळ धाट। —बां. दा.

उ०—३ राज कंवर **रळियावणा**, नयणां रा हे धन जीवण जेह के। —गी. रां.

उ०—४ भांत भांत रा **रळियावणा** रूड़ा पंखेरू रळियां करता हा। —फुलवाड़ी

(स्त्री. रळियावणी)

रळियावत–देखो 'रळियायत' (रू. भे.)

उ०—रीस करौ भावै **रळियावत**, गज भावै खर चाढ गुलांम। माहरै सदा ताहरी माहव, रजा सजा सिर ऊपर रांम। —प्रथ्वीराज राठौड़

रळियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ मिला हुआ. २ सम्मिलित हुवा हुआ. ३ मिश्रण हुवा हुआ. ४ घुला–मिला हुआ, रमा हुआ. ५ समाया हुआ, आत्म सात हुवा हुआ. ६ ऐकमेक हुवा हुआ, ऐक हुवा हुआ. ७ शोभित हुवा हुआ. ८ प्रवेश पाया हुआ, पेठा हुआ, घुसा हुआ. ९ फैला हुआ, छितराया हुआ. १० उछल कर गिरा हुआ. ११ लीन हुवा हुआ, मग्न हुवा हुआ. १२ पड़ा हुआ. १३ बरसा हुआ. १४ नष्ट या बरबाद हुवा हुआ. १५ चिरा हुआ, फटा हुआ। १६ देखो 'रळकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. रळियोड़ी)

रळी, रली–सं. स्त्री. [सं. रति, प्रा. रइ या रयली] १ इच्छा, कामना, चाह।

उ०—१ सुख कज अमीर 'अगजीत' सूं, रस सधीर अप्पण **रळी**। वातां अथाह जाबां वधी, साह नबावां सांभळी। —रा. रू.

उ०—२ चंदन केसर चंपक कली, प्रतिमा पूजी मन नी **रली**। —स. कु.

उ०—३ आपणी **रली** चउसठी देवेंद्र जन्माभिसेक करइं, मेरु परवति मिली सुवरणरूप्य वस्त्रनी व्रस्टि निरंतर करइं,...... —व. स.

२ उत्कंठा।

उ०—१ दादू दरसन की **रळी** हमको बहुत अपार। क्या जांणू कब ही मिळै, मेरा प्रांण अधार। —दादूवांणी

उ०—२ चोली मइ चरणा चीर सखरा, सुंखड़ा सुसवद ए। रली रंग स्युं लइ जसोभद्रा, जांगइ जेठ प्रसाद ए।
—स. कु.

३ उमंग, उत्साह।

उ०—१ सुखदुख पांमै ते सहै हो जी, कौतकियां नो राव। मलपइं मन नी रली तो पिण सुविसेखें वली होजी
—वि. कु.

उ०—२ सुणिज्यइ गाजन नदरण सूर महाबली। सही विचारी वात कोइक रिण री रली। —प. च. चौ.

४ उत्साह या उमंग पूर्वक किया जाने वाला कार्य।

५ आनन्द, खुशी, हर्ष। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ छतीस राग छाजत्ती, निहाव घाव नोबत्ती। भजै विभास भैरवं, रळी कळी कळी रवं। —रा. रू.

उ०—२ कोड़ि वरीस मंत्री स्त्री करमचंद उत्सव करत्त रली। समय सुंदर गुरू के पद पंकज, लीनौ जेम अली। —स. कु.

उ०—३ रळी रंग राग नांना विधि, सुनि, मंडळ के छाजै। पति सूं प्रीति जीति गुण दूजा, वेणु गगन में बाजै।
—ह. पु. वां

उ०—४ कटक थया अगिणत चहुं कोदां, सोच हुवौ मोटौ सीसोदां। सहस त्रीस दळ देख सपांणौ, रळी करै मन जैसिंघ रांणौ
—रा. रू.

उ०—५ धजां तोरणां सोहियं धांम धांमं। रळी रंग वाधाय जै सीत रांमं। —सू. प्र.

उ०—६ आजे रळी वधांमणा, आजे नवला नेह। सखी अम्हीणी गोठ मइं, दूधे वूठा मेह। —ढो. मा.

६ खेल, क्रीड़ा, रास।

उ०—१ रली रलीउ आविउ मांणस माहि, एक दिवस बालापणि जाइं। —वस्तिग

उ०—२ आवौ सहेल्यां रळी करां हे, पर घर गवण निवारि।
—मीरां

उ०—३ पुलिण रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ व्रजनाथ आथ। कांन कवार विहरि गळी व्रज कुंज री, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ। —बां. दा.

७ रतिक्रीड़ा, विलास, भोग।

उ०—१ पदमणि लग-थग पातळी, रळी तणौ छक रूप। साय धण कळी गुलाब सम, उघड मीळी अनूप —पनां

उ०—२ दादा रै साईनी ऊमर वाळी रै साथै रळी पूरण रै आणंद री म्हारै ई मन में रै' जाती। —फुलवाड़ी

उ०—३ थारै राजाजी नै पूछ लेजै के वै व्याव करण सारू त्यार व्है तो म्हनै ई कीं आंट कोनीं। नींतर ठाली रळियां रै भरोसै इण गवाड़ी सांम्ही मूंडौ ई करियौ तौ म्हारै पांडुवां नै ओळखौ ई हौ।
—फुलवाड़ी

उ०—४ दो दिन री अंग रळियां पांच बरसां तांई फोड़ा घालैला।
—फुलवाड़ी

८ मनौरंजन, विनोद, मौज।

९ विहार।

१० ठाट-बाट, वैभव।

रू. भे.—रळि, रळिय, रलिय।

रळीआंमण, रळीआंमणौ—देखो 'रळियांमणौ' (रू. भे.)

उ० —१ सरव गुण जांणनइ वंसि वली भांणनइ, वीर अवतरज्यौ चहूआंणनइ ए। वली **रळीआंमणूं**, अरधासन वीरम तणउं, पांमिस्यूं सोनिगिर नूं बइसणउं ए। —कां. दे. प्र.

उ०—२ वनिता रूपे **रलीआंमणी**। —धरमपत्र

(स्त्री. रळीआंमणी)

रळीआइत, रळीआईत, रळीआईती, रळीआत, रळीआति—देखो 'रळियायत' (रू. भे.)

उ०—१ पहीरांमणी रै अणावौ, तेड़ौ नइं जादव राउ ए। रुखमणीउ **रळीआईत**, उल्हस अंगि न माई रे।
—रुखमणी मंगळ

उ०—२ चाउरि मंडी चतुरनइं, राय थयु **रलीआति**। कइ ब्रह्मा कइ देव गुरु, क्षितिपति मंडइ ख्याति। —मा. कां. प्र.

रळीमण—वि०—प्रसन्न, खुश।

उ०—कांमणीयां तणौ तांणीयै कसणौ, मोहै दूजां तणां मण। 'राजड़' रांण रहै **रळीमण**, कसीयां जरदाळ कसण।
—जोगीदास कबारीयौ

रळीयांमण, रळीयांमणौ, रलीयांमण, रलीयांमणौ—'देखो' 'रळियांमणौ'
(रू. भे.)

उ०—१ फूलै फलै **रलीयांमणा**, देखाड़ै हे कुमरी आरांम। जल ना कुंड सुहांमणा, लेइ नै हे तिहां नांम सुठांम।
—वि. कु.

उ०—२ राजवीयां ने साथि, आव्या हो राजकुमार **रलीयांमणा**। अमरपुरी अवतार, नगर विराजे हो मनुस्य सुहांमणा।
—स्रीपाल रास

(स्त्री. रळीयांमणी)

रळीयाइत, रळीयाईत, रळीयाईती, रळीयात, रळीयायत, रळीयायित रळीयावत—देखो रळियायत' (रू. भे.)

उ०—१ लंका जाळि सीत सुधि लायौ, रळीयाईती कीधी स्री स्यांम। —ह. नां. मा.

उ०—२ पोढउ ए पदबंध गणि, हूड–तणइ मनि हीक। **रलीयायत** थई रीझविसु, राजकुमर रंजीक। —मा. कां. प्र.

उ०—३ राजा **रळीयायत** थउ, दीधउ पंच पसाउ। उचित बली

आपिउं घणउं, चूकइ नहीं कांइ चाउ । —मा. कां. प्र.

उ०—४ बेहू जणा **रलीयायत** थया, घणा भव ना पाप ज गया । घरि तेडी नइ दिइ सन्मांन, स्रद्धा पूरवक दीवूं दांन । —नळदवदंती रास

उ०—५ कंवर चूंडा सुं मालम कीयौ । मंडोवर सुं राठौड़ां नाळेर मेलीया छै । इसौ कंवर चूडौ सांभळ मन **रळीयावत** हुवौ । वधाई कीजै छै । —राव रिणमल री बात

रळीयावणौ–'देखो रळियांमणौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रळीयावणी)

रळीरंग–सं. स्त्री.–खुशी व आनन्द के उत्सव ।

उ०—इसौ कंवर चूंडौ सांभळ मन में रलीयावत हुवौ । वधाई कीजै छै । वाजा वाजै छै । **रळीरंग** होवै छै । —राव रिणमल री बात

रू. भे.—रंगरळी ।

रळौ–वि. (स्त्री. रळी) १ कायर ।

२ अशक्त, कमजोर ।

सं. पु.–१ ऊंट की एक चाल विशेष ।

२ देखो 'रुळौ' (रू. भे.)

रवंद–वि. १ तीव्र, तेज ।

उ०—उत्तर आज स उत्तरउ. पाळउ पड़इ **रवंद** । का वासंदर सेवियइ, कइ तरुणी कइ मंद । —ढो. मा.

२ कोलाहल युक्त ।

रव–सं स्त्री. [सं.] १ आवाज, ध्वनि, स्वर, शब्द । (ह. नां. मा.)

उ०—१ डूंगरिया हरिया हुए भरिया, भरिया ताळ तळायी । दादरिया करिया **रव** दीरघ, भीभरयां भरणायी । —लो. गी.

उ०—२ मिळ आवत लोढ कि बोढ मही । जमना दळ वेळ समुद्र जही । उर माळ भणंभण ऊभरियं, पवंगां तुरियं **रव** पाखरियं । —रा. रू.

उ०—३ छतीस राग छाजती, निहाब घाव नोबती । भजै विभास भैरवं, रळी कळी कळी, **रवं** । —रा. रू.

२ गुंजार, गान, चहचाहट, कलरव ।

उ०—हांजी रांमजी, करे सरोवर सरस, दरस रघुबीर रा जी म्हांरा रांम । हांजी रांमजी, कोयल नै कळहंस, सारी सुक **रव** करे जी म्हांरा रांम । —गी. रां.

३ शोरगुल, कोलाहल ।

उ०—भड़ अनड़ उड **रव** वांणि बहिभड़ । उरड़ अपहड़ दुजड़ औभड़ । —सू. प्र.

४ करुण क्रन्दन, चीख-पुकार ।

उ०—१ दाहा सब होतां दैंसोती, स्वाहा चव समसांणैं । आहा हव हुयग्यौ अरियां उर, हा हा **रव** हिंदवांणैं । —ऊ. का.

उ०—२ भरियौ भादरवौ खाली पड़ भागौ, लगतां आसू में आंसू भड़ लागौ । छपनै घोरारव आरव **रव** छायौ, सूरज ससि मंडळ गरब्बित गहणायौ । —ऊ. का.

५ गर्जना, नाद ।

उ०—१ धनु भंजन रौ **रव** घोर घणौ, विचळायौ है मंड ब्रह्मांड तणौ । —गी. रां.

उ० २ धरती जु प्रथी तै सौ स्यांम जु तर ब्रक्ष । जळधर मेघ गरज **रव** कीया । आपस में मिळ गया छै । लपटाय रह्या छै । —वेलि टी.

६ महीन धूलि, रज, गर्द ।

उ०—१ गडि गडि गोळा नाळि, विज खड़ड़ै किरि अंबर । अगन बांण ऊछळै, धोम धूंहा **रव** डंम्बर । —गु. रू. बं.

उ०—२ देसौत **रवां** धोय हाथ ऊजळा कर विसायतां ऊपर विराजमांन हुवा छै । —रा. सा. सं.

७ कण, जर्रा ।

उ० —व्याकुळत भमंग **रव** बळत धूळी रवण, 'सूर' रौ चढै तिण वार 'गजसाह' । —कल्यांणदास महडू

रू. भे.—रउ, रय ।

८ दो लघु गणण के दूसरे भेद का नाम ।

९ एक छोटा कीड़ा जो पशुओं के शरीर पर चिपक कर रक्त चूसता रहता है ।

१० देखो 'रवि' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ जमना जा गंग मिळी, गंग जा मिळी समंदां । आभा भरिया इंद, साख पूरी **रव** चंदां । —महारांणा राजसिंह रौ गीत

उ०—२ पग हाथ पड़ै नस माथ पखै, लग चाव सुरां **रव** दाव लखै । अंग एक धकै तड़फै असुरां, भिर चीर नरां व्रण सेल सरां । —रा. रू.

रवक–स. स्त्री.–१ वह स्थान या भूमि जहां वर्षा का पानी एकत्र होने के कारण घास अच्छी होती है ।

२ ऐरंड का वृक्ष ।

रवगा–सं. स्त्री. [सं.] नदी । (ह. नां. मा.)

रवजा–देखो 'रविजा' (रू. भे.) (अ. मा.)

रवण–सं. पु. [सं.] १ ऊंट ।

२ कोयल ।

३ फूल ।

४ कांसा नामक धातु ।

५ पीतल ।

६ शब्द, ध्वनि, आवाज, बोली ।

उ०—१ हाऊल हमम हंसा **रवण**, घण दमांम भेरी घुरै ।

गजसिंघ लियण जाळोर गढ, चढियौ हय गय पक्खरै ।

—गु. रू. बं.

७ धूलि, गर्द ।

उ०—गूदळ व्योम ढंकै गरद, रवि लुक्कै धूंग्रां रवण । ग्रालम्म पयांणौ एण पर, कोप तेण झल्लै कवण । —रा. रू.

८ विदूषक ।

वि.–१ शब्द या आवाज करने वाला, शब्दायमान ।

२ चिल्लाने वाला, पुकारने वाला ।

३ उष्ण, गरम, तपा हुआ ।

४ तीक्ष्ण, उग्र ।

५ चंचल, चपल ।

रू० भे०–रवन ।

रवणक–सं. पु. [सं.] ऊंट । (डिं. को.)

रवणरेती–सं. स्त्री.–यमुना के किनारे व गोकुल गांव के आस पास की रेतीली भूमि ।

रवणि–सं. स्त्री.–वनस्पति विशेष ।

उ०—रावण रांग रतांजणी, **रवणी** नइं रुद्राख । रुक रुदंती रायसलि, रोहड़ रोहिणी लाख । —मा. कां. प्र.

रवणौ, रवबौ–क्रि. स.–आवाज, करना, बोलना ।

रवत–देखो 'रावत' (रू. भे.)

रवतांडव–सं. पु. [सं. रवि+तांडव] १ सूर्य का नग्न नृत्य, प्रलय नृत्य ।

उ०—कनकळ दिलीस काज, वे सांवत पखरैत वे । रुळग्यौ देखो राज, **रवतांडव** ज्यूं राजिया । —किरपारांम

२ नृत्य और संगीत, नाच-गान ।

रवतांणी–देखो 'रावतांणी' (रू. भे.)

उ०—एक **रवतांणी** एक खतरांणी नारि । दोनां को त्रंमलराव राखी यक सारि । —शि. व.

रवताई–देखो 'रावताई' (रू. भे.)

रवताळ, रवताळौ–देखो 'रावताळौ' (रू. भे.)

उ०—१ रांण नजदीक जो होत **रवताळ** रिण, पिसण चौ न लागत दाव पूरौ । —अरजुनसिंह चूंडावत रौ गीत

उ०—२ 'रांम' तणौ रिणछोड़ रढाळां, धांधू वधि वाजण धाराळां । 'सुंदर' सुत 'सांमत' सिघाळा, 'रैणायर' 'लखमण' **रवताळा** । —रा. रू.

उ०—३ इळा आभ छावै उडै बघूळा गिरंदां वाळा, दाव घाव करंदां कराळा जोम दीठ । आहेसां छाकियां जड़ै प्रळै काळ वाळा आव, **रवताळा** ऊभा झोक खावै आकारीठ ।

—हुकमीचंद खिड़ियौ ।

रवतेस–देखो 'रावतेस' (रू. भे.)

रवतौ–देखो 'रावत' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ पड़ै वेध कूरम जदे रांण छळ 'पीथळौ,' खळां सर बीज जिम वहै खवतौ । जागरण भड़ा, भड़ छूट गोळां जठै, रूक झड़ डंडैहड़ रमै **रवतौ** । —बसरांम रावळ

उ०—२ सलहपुर सज बजै मंत्र पठी असटी सगत, खीज चत सांमठी बीज खवतौ । यर गढां जठी खग तोल आयौ 'अजन', रुद्र अेकादसी हठी **रवतौ** । —बद्रीदास खिड़ियौ

रवत्ताळ–सं. पु.–१ घोड़ा ।

२ घोड़े की टाप ।

३ योद्धा, वीर ।

उ०—**रवताळा** झोक खावै आकारीठ ।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

रवद–देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ रगतासुर आगै **रवद**, भेळा होय भुंजाळ । सांमंद्र मांहै सांपरत, नदियां मिळै निराळ । —मा. वचनिका

उ०—२ 'लखौ' 'महेस' कहै विध लाखां । **रवद** अवंध बंध जिम राखां । —रा. रू.

उ०—३ आसक्रन तणौं 'बीठळ' तणौं कहै एम, पात रछपाळ ग्रहियां खड़ग पांण । राजरौ थापियौ राज न लहै **रवद**, धणी म्हे थापसां जकौ जोधांण । —बां. दा.

उ०—४ **रवद** 'पिराग' देखि छिब रीधा । डेरा आय गंग तटि-दीधा । —सू. प्र.

रवदांण–देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

रवदाराव–सं. पु.–यवन बादशाह ।

रवदाळ–देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—उजबक परजळियौ अंग अंग । **रवदाळ** कीध चख चोळ रंग ।

—सू. प्र.

रवद्द–देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ रंजै 'रतनागिर' देखि **रवद्द**, निसांण रुड़ै सहि वाजित्र नद्द । —वचनिका

उ०—२ पाछै काळी छेड़ियौ, दिल्ली खूंद **रवद्द** । दुवौ अकब्बर अप्पियौ, हुवौ नगारे सद्द । —रा. रू.

उ०—३ चतुरंग सेन असंख्यां चल्लै, हेमाचळ परबत किरि हल्लै । देम दगग्गै सेन **रवद्दं**, किरि ऊळटिया सात समद्दं ।

—गु. रू. बं.

उ०—४ सकज्जां आसुर संभ निसंभ, **रवद्दां** नाथ वरै त्रिय रंभ ।

—मा. वचनिका

रवद्दि–देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

उ०—बजवाड़उ कोठी सहर बेव, हालिया हुइय आगी हरेव ।

नामिया समांणा सीह नद्दि, रणतूर सद्दि पाखर रवद्दि ।
—रा. ज. जी.

रवद्र— देखो 'रौद्र' (रू. भे.)
उ०—बिन्है दळ आहरता बंगाळ, **रवद्र** रूप हुए रणताळ । इळा पुडि धूज धुबै असमांण, अदब्भुत ऊकळियौ आरांण ।
—गु. रू. बं

२ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

रवन— देखो 'रमण' (रू. भे.)
उ०—राखसा मील भगी **रवन**, सुंदर रिण जीती सखै । डिगीयळ भांजि आवै दुरस, इम भ्रिम संभ आगळि अखै ।
—मा. वचनिका

रवनांमौ—देखो 'रविनांमौ' (रू. भे.)
उ०—अर कुंजर छावै आचरियौ, पिंड मांझी मंडळीकां पाड़ । सरग हुवौ हिंगोळ सुरग हथ, चंद लगै **रवनांमौ** चाढ ।
—मालौ सांदू

रवनि, रवनी—देखो 'रमणी' (रू. भे.)
रवन्नौ—देखो 'रवांनौ' (रू. भे.)
रवमंडळ—देखो 'रविमंडळ' (रू. भे.)
रवमुखी—देखो 'रविमुखी' (रू. भे.)
उ०—डहडहत कुसम पूरत पराग, पल्लव दळ मिळ जेव जाग । **रवमुखी** दावदी पुन पळास, नाफुरमा परगस आस पास ।
—मयारांम दरजी री बात

रवरवौ—सं. पु.—बोल-बाला, दब-दबा, प्रभाव । ज्यूं—अबार गांवां में ताव रौ **रवरवौ** है । लोगां ने ताव आवै ।

रवराया—वि. स्त्री.—पुकारने पर दया करने वाली । दयालु ।
उ०—**रवराया** किहड़ी परि रीजै, कतीआंणी आदेश करीजै । देवौ देवी रिधि सिधि दीजौ, किहि कि अम्हां सिरि मया करीजौ ।
—पी. ग्रं.

रववंसी—देखो 'रविवंसी' (रू. भे.)
उ०—चवतां रांम मुखांण गयौ चव, भव दुख काढै कीध भव । लव लागां किर रांम रसण लव, **रववंसी** इम वहै रव ।
—र. रू.

रवस—देखो 'रहस्य' (रू. भे.)
उ०—मारकंड रिख वांणी **रवस**, कही तेम जैचंद कहै । भगवती भजन मोटी भगति, आखै संतां ऊमहै ।
—मा. वचनिका

रवसुत—देखो 'रविसुत' (रू. भे.) (अ. मा.)

रवां—सं. स्त्री. [फा.] १ प्राण ।
२ वायु, प्राण वायु ।
वि.—१ अभ्यस्त ।
२ प्रवाहित ।
३ तीक्ष्ण, धारदार ।
४ देखो 'रवा' (रू. भे.)

रवांनगी—सं. स्त्री. [फा. रवानगी] प्रस्थान करने की क्रिया या भाव, प्रस्थान ।

रवांना—वि. [फा. रवानः] १ जो चल पड़ा हो, प्रस्थान कर चुका हो ।
२ विदा हुवा हुआ ।
३ भेजा हुआ, प्रेषित ।

रवांनौ—सं. पु. [फा. रवाना] १ कूच, प्रयाण, प्रस्थान ।
२ वह पत्र जिसमें प्रस्थान करने की इजाज़त दी गई हो ।
३ वह कागज जिसमें भेजे जाने वाले माल का ब्यौरा लिखा हो ।
४ किसी वस्तु के साथ भेजी जाने वाली चुंगी आदि की रसीद ।
रू० भे०—रवन्नौ ।

रवा—वि. [फा.] १ उचित, वाजिब ।
उ०—हिमत हक हसाब है, रहमांण **रवा** की ।
—केसौदास गाडण

२ इच्छित, वांछित ।
३ जाहिर, प्रगट ।
४ प्रसिद्ध, मशहूर ।
सं. स्त्री. [फा. रवाई] १ रौनक, शोभा ।
उ०—तखत **रवा** तइयार रहै, नाळकियां हाजरि । बहसि गुरज बरदार, करै अतमांम भयंकरि । —सू. प्र.
२ परम्परा, रूढि, प्रथा ।
३ इच्छा, कांमना, मंसा ।
उ०—तरै अवल हुसैन अरज की रूपीया २,०००००) माहै मेड़तौ इण नुं दीयौ छै, रूपीया ४,०००००) ऊपजतां री ठौड़ छै । पछै पातसाहजी आप राज़सिंघजी नुं फुरमायौ कुं तो खोजा री **रवा** राखौ । —नैणसी
४ दया, कृपा ।
उ० —बाड लियाडै उचत पांच बिध, न्याय कनक कर मिसर नखै । रोरव राह समंद पैली रुख, रांम **रवा** कर रांम रखै ।
—महारांणा हमीरसिंह रौ गीत

रू० भे०—रवां ।

रवाकातर—सं. स्त्री.—स्वर्णकारों के काम में आने वाला लोहे का एक उपकरण या औजार, जिससे सोने चांदी के तार के एक ही नाप के छोटे छोटे टुकड़े काटे जाते हैं ।

रवाकी—वि.—रहने वाला ।
रवाड़ी—देखो 'रैवाड़ी' (रू. भे.)
रवाज—देखो 'रिवाज' (रू. भे.)
रवाडी—देखो 'रैवाड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ सुख भरि वरस बहु वउलीग्रां, करी न सक्यउ प्रासाद **रवाडी** गयि सांभरिउ, मनसिउ धरइ विसाद। —कल्यांरा

उ०—२ बारे दरवाजे लोहमि पोलि, जिसी रमलि कीजइ **रवाडी** तिसी एक भली वाडी······। —व. स.

रवादार–वि.–जिसमें करा, दाने या रवे पड़े हों, दानेदार।

रवायत–देखो 'रिग्रायत' (रू. भे.)

उ०—राजा कह्यौ–जा घास नै कोरड री निचिंताई कीधी तो म्हैं थांसूं निपट घरणी गोर करिस्यां, हासल मांहै **रवायत** करस्यां। —कहवाट सरवहिया री वात

रवाळ–सं. स्त्री.–देखो 'रैवाळ' (रू. भे.)

रवाळी, रवाळौ–सं. पु.–ग्राभूषणों पर खुदाई या नक्काशी करने का एक लोहे का ग्रौजार, कीला।

रवि–सं. पु. [सं.] १ सूर्य, ग्रादित्य। (नां. मा.)

उ०—१ पत्र सुधारै जोगरणी, माळ सुधारै रंभ। थंभ चलेवौ सोम **रवि,** पेखै व्यौम ग्रचंभ। —रा. रू.

उ०—२ सभि ग्रंग उत्तंग व्रहास समा। **रवि** वाहरण रेवंत सोह रमा। —मा. वचनिका

उ०—३ चखाड़ै कूंत चखतां धरणी चापड़ै, रौद घड़ पछाड़ ग्रचळ राखी। जीवतां–सिंभ महाराज वरिणयौ 'जसौ', समर चा करै **रवि** चंद साखी। —गु. रू. बं.

२ ग्रग्नि।

रू० भे०–रबि, रबी, रव, रवी।

३ नायक।

४ जयद्रथ राजा का छोटा भाई।

५ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

६ ठगरा के द्वितीय भेद का नाम (ऽ।ऽ) (र. ज. प्र.)

७ बारह की संख्या। * (डिं. को.)

८ ग्रशोक का वृक्ष।

९ ग्राक।

रविग्रंस–सं. पु. [सं. रवि+ग्रंश] १ सूर्य का ग्रंश।

२ देखो 'रविवंस'

उ०—कमधां गुर ऊसस वैंरा कहैं। **रविग्रंस** ग्रजे धर सीस रहै। —पा. प्र.

रविग्रंसिय, रविग्रंसी–देखो 'रविवंसी'

उ०—कवळ पत लूंटरा बैरा कह्या, **रविग्रंसिय** ग्रोठेम ग्राय रह्या। —पा. प्र.

रविउदै, रविऊगै–सं. पु. [सं. रवि+उदय] सूर्योदय।

उ०—ग्राया **रविऊगै** 'गोइंद' ऊपरि, ताता लोही रातिसिया। ग्रसि छांड रकेबां कूंत ऊपाड़ै, धाराळां काढै धसिया। —गु. रू. बं.

रविकर–सं. पु. [सं] सूर्य की किररा।

रविकांतमणि–सं. पु. [सं.] सूर्यकान्त नामक एक मरिग विशेष।

रविकिरण–सं. स्त्री. [सं.] सूर्य की किररा, प्रकाश।

उ०—गई **रविकिरण** ग्रहै थई गहमह, रहरह कोइ वह रहै रह। सु जु दुज पुरा नीसरे सूतौ, निसा पड़ी चालियौ नह। —वेलि

रविकुळ–सं. पु. [सं.] १ सूर्यकुल।

२ एक क्षत्रियवंश।

रविचंचळ–सं. पु. [सं. रविचंचल] काशी में लोलार्क नामक तीर्थ स्थल।

रविचक्र–सं. पु. [सं.] १ सूर्य मण्डल।

२ सूर्य के रथ का पहिया, चक्र।

३ फलित ज्योतिष के ग्रनुसार मनुष्य–शरीर के ग्राकार का एक चक्र।

४ एक की संख्या। * (डिं. को.)

रविचक्रतळ, रविचक्रतळि–सं. पु. [सं. रविचक्र तलम्] पृथ्वी मंडल, भूमंडल।

उ०—१ साभियै तिपुर संकर जिसौ, वांमरा चंपि पयाळ बळि। गजसिंघ भीम गोडव्वियौ, तिसौ दीठ **रविचक्रतळि**। —गु. रू. बं.

उ०—२ उचरइ विप्र एरिस वयरा, लोग त्रिण्ह जीता तिरी। इसी नहीं **रविचक्रतलि,** मइं नव खंड देख्या फिरी। —प. च. चौ.

रविज–सं. पु. [सं.] १ शनिश्चर।

२ यम।

३ कर्रा।

४ बालि।

५ सुग्रीव।

६ वैवस्वत मनु।

७ ग्रश्विनि कुमार।

रविजकेतु–सं. पु. [सं.] पुच्छल तारा जिसकी उत्पत्ति सूर्य से मानी गई है।

रविजा–सं. स्त्री. [सं.] यमुना नदी। (ग्र. मा.)

रू० भे०–रवजा।

रविजात–सं. स्त्री. [सं.] सूर्य की किररा।

रविजोग–सं. पु. [सं रवियोगः] सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र तक ४/९/६/१०/१३/२० वां नक्षत्र तक बनने वाला योग।

उ०—सिद्ध जोग **रविजोग,** सुद्ध दिनमांन सहू सिसि। दिसा सूळ थयौ पूठि, बळै जोगरिग बांमीं दिसि। —गु. रू. बं.

वि. वि–यह योग सब दोषों का नाश करता है।

रवितनय–सं. पु. [सं.] १ शनिश्चर।
२ यमराज।
३ कर्ण।
४ बालि।
५ सुग्रीव।
६ वैवस्वत मनु।
७ अश्विनिकुमार।
रू० भे०–रवितरण।

रवितनया–सं. स्त्री. [स.] १ यमुना नदी।
२ सूर्य की कन्या।

रवितनुजा–सं स्त्री. [सं.] यमुना नदी।

रवितरणै–देखो 'रवितनय' (रू. भे.)

रविथाव–सं. पु. [फा.] पारसियों के अनुसार, मध्यान्ह का समय, जो १२ बजे से ३ बजे तक माना जाता है और इस समय वे दूसरी बार नमाज पढ़ा करते हैं। (मा. म.)

रविदिन, रविदिवस–सं. पु. [सं.] सप्ताह का प्रथम दिन, रविवार, आदित्यवार।

रविनंद, रविनंदन–सं. पु. [सं. रवि+नंदन] सूर्य का पुत्र।
वि. वि.–देखो 'रवितनय'
उ०—१ ब्रहसपति भवन दसमै वखांणि। जिण हीज भवन **रविनंद** जांणि। —सू. प्र.
उ०—२ वप्पीहउ जं मुहि कहइ तिणि, नांमिइं सहिनांण। **रविनंदन** सहि नांम ह्वइ, कहि संतोस सुजांण। —हीराणंद सूरि

रविनंदिनी–सं. स्त्री. [सं.] सूर्य की पुत्री, यमुना नदी।
वि. वि.–देखो 'रवितनया'

रविनांम, रविनांमौ–सं. पु.–१ ऐश्वर्य, वैभव।
उ०—सुकिया मिळ जूथ अनेक करै सुख। **रविनांम** नरंद सुरचंद तणी रुख। —सू. प्र.
२ प्रताप, शौर्य, कीर्त्ति।
रू० भे०–रवनांमौ।

रविपुत्र, रविपूत–सं पु. [सं. रवि+पुत्र] सूर्य का पुत्र
वि. वि.–देखो 'रवितनय'
उ०—छगां छगां धरि नगां, चढै आसणां महावत। राहरूत **रविपूत**, धूत थापळिया धूरत। —सू. प्र.
रू० भे०—रवीपूत।

रविबंसमनि–सं. पु. [सं. रविवंशमणि] सूर्यवंश का रत्न।
उ०—प्रबल प्रकासै तेज 'मांन' **रविबंसमनि**, ताकी त्रास सिंध से जवन देस धरकै। —बां. दा.

रविमंडळ–सं. पु. [सं] १ सूर्य के चारों ओर दिखाई देने वाला मंडलाकार लाल गोला, रविबिंब।
२ सूर्य की परिधि।
उ०—१ एक गया भगवाट, सांमि छळ मेल्है कुळ छळ। हेक मुगति साजोत, गया भेदे **रविमंडळ**। —गु. रू. बं.
उ०—२ नहीं गया, मांचै मुवा, **रविमंड़ळ** रै राह। जूझ मुवा रण मैं जिके, गत-पंचमी गयाह। --बां. दा.
उ०—३ चहुंवां चकचूरण खूरणोखे चढती, मसलत महिमंडळ नभ मंडळ मढती। रेणू **रविमंडळ** रसमीं रय रोकी। तन मन प्रज कांपत ढांपत त्रयलोकी। —ऊ. का.
रू० भे०—रवमंडळ।

रविमणि–सं. स्त्री [सं.] सूर्यकांत मणि।

रविमुखी सं. पु.–सूर्यमुखी नामक फूल।
रू० भे०–रवमुखी।

रवियोड़ौ–भू. का. कृ.–बोला हुआ, आवाज किया हुआ।
(स्त्री. रवियोड़ी)

रवियौ–सं. पु. [सं. रवि+रा. प्र. यौ.] सत्ताईस नक्षत्रों में से कोई एक या प्रत्येक, जिस पर, मास की कुछ अवधि (प्रायः १ से १३ या १५ दिन तक) सूर्य स्थित रहता है। सूर्य के प्रभाव में रहने वाला नक्षत्र।
वि. वि.—देखो 'नक्षत्र'

रविराई–सं. पु. [सं. रविराज] सूर्य, रवि।

रविवंस–सं. पु. [सं. रविवंश] सूर्य वंश नामक एक क्षत्रिय वंश।
उ०—जग में वंस उग्र गुण जोई। क्रत **रविवंस** समौ नह कोई। —रा. रू.

रविवंसी–वि. [सं. रवि–वंशी] सूर्यवंशी।
रू० भे०–रववंसी।

रविवार, रविवासर–सं. पु. [सं.] प्रत्येक सप्ताह का प्रथम दिन, जो शनिवार के बाद व सोमवार से पहले आता है। (रा. रू.)

रविसंक्रांति, रविसक्रांति–सं. स्त्री. [सं. रवि संक्रांति] सूर्य का एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र पर जाने की अवस्था, सूर्य संक्रमण। (ज्योतिष)

रविस–सं. स्त्री. [फा. रविश] १ गति, चाल।
२ शैली, तर्ज।
३ व्यवहार, बर्ताव।
४ चालचलन, आचरण।

रविसारथी–सं. पु. [सं. रविसारथि] सूर्य रथ का सारथी, अरुण।

रविसुग्रन, रविसुत–सं. पु. [सं. रविसुनु, रविसुत] सूर्य का पुत्र।
वि. वि.–देखो 'रवितनय' (ह. नां. मा.)
रू० भे०–रवसुत, रवीसुत।

रविसुता–सं. स्त्री. [सं. रवि+सुता] सूर्य की पुत्री, यमुना।

उ०—पुलिरण **रविसुता** फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ व्रजनाथ आथ। कांन कवार विहरि गळी व्रज कुंज री, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ। —बां. दा.

रवींद्र—सं. पु. [सं. रवि+इंदु] सूर्य, चन्द्र।

रवी—सं. स्त्री. [देश.] १ गेहूं के आटे को थोड़े से घी में भुनकर उसमें गुड़ का रस डाल कर पकाया हुआ तरल हलुवा या पेय पदार्थ, गुलराब।

२ देखो 'रवि' (रू. भे.)

उ०—१ छिपै मेघ सोभा इसौ भाळ छाजै। **रवी** पंत द्वै कुंडळै क्रांति राजै। —रा. रू.

उ०—२ हालिया एहड़ा घेर वंकी घड़ा। रज्ज उड्डै **रवी** धोमतै धूंधळै। —सू. प्र.

रवीपूत—देखो 'रविपुत्र' (रू. भे.)

रवीसुत—देखो 'रविसुत' (रू. भे.)

रवेची—सं. स्त्री.—चारणकुलोत्पन्न एक देवी।

उ०—दुगरांणी मया तुं दुगाय, **रवेची** तुं ही नागांणराय। धूमड़ै ज्यांन रै तूंज धांम, तैमड़ै तुं ही ज डुंगरैच तांम —रामदांन लालस

रू० भे०—रवैची।

रवेज—देखो 'रिवाज' (रू. भे.)

रवेस—सं. पु. [सं. रवि+ईस] १ सूर्य।

उ०—वांमी दिस 'वखतेस', जुड़ मेड़तिया जींमणी। आभाड़ा साम्हौ 'अभौ', राजा मइण **रवेस**। —रा. रू.

२ देखो 'रहवास' (रू. भे.)

उ०—वैसणी तणी इहडी **रवेस**, पहिरंति रजत ग्रहणा प्रवेस। पीतलि सूद्रणि रै सदा पासि, पंडिते एम कहिग्रौ प्रकासि। —ल. पिं.

रवै—सं. स्त्री.—१ गाय, भैंस आदि मादा पशु की ऋतुमति होने की अवस्था।

२ खेत या भूमि की, जोतने के बाद बोवाई योग्य होने की दशा।

रवौ—सं. पु. [सं. रज, प्रा. रग्र] १ किसी पदार्थ का छोटा कण, दाना, शक्कर आदि का दाना।

२ घुंघुरुओं में डाला जाने वाला छर्रा।

रस—सं. पु. [सं.] १ किसी वस्तु का सार, तत्व, शोरवा, जूस।

उ०—अमलांणौं अर कांदा रौ **रस** घर घर छणण लागौ। कूंजड़ा रा भाग खुलिया पण खुलिया। —फुलवाड़ी

२ खाने की वस्तु का स्वाद, जायका।

३ चस्का, स्वाद, लगाव।

उ०—धूरत दे धोखा बोडा वोखा, चोखा **रस** चाखंदा है। —ऊ. का.

४ आनन्द, हर्ष, खुशी।

उ०—१ घणौ **रस** रहियौ वडा बधावा हुआ। —गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ रीझै सांभळ राग, भीजै **रस** नह भेंचकै। नैड़ौ आवै नाग, पकड़ीजै छाबड़ पड़ै। —बां. दा.

उ०—३ साथ सगळै नै सिरपाव दै, छोटां-मोटां सह नै याद करि विदा किया। बडौ **रस** रह्यौ। —पलकदरियाव री बात

उ०—४ रितु किहि दिवस सरस राति किहि सरस, किहि **रस** संध्या सुकवि कहंति। बे पख सूधति बिहूं मास बे, वसंत ताइ सारिखौ वहंति। —वेलि।

६ प्रेम, अनुराग, प्रीति।

उ०—१ दुरवेस गयौ पतसाह दिमी, उड मूठिय भूठिय बात इसी। सुणतां कमधां दळ मांन सही, **रस** बाध थयौ निस आध रही। —रा. रू.

उ०—२ तरै कह्यौ, भींवाजी, घरे सिधावै, पिण इण जखड़ा रौ खेत दिखावणौ पड़सी। नही तर थांहरै नै माहरै **रस** रहैली नहीं। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

उ०—३ सु रांणा सुरजन रौ वडौ बेटौ मोहिल, तिण सूं सुरजन मया न करै। मांहौमांहि **रस** काइ नहीं। नै मोहिल वडौ रजपूत, सु बाप सौं वणै नहीं। —नैणसी

उ०—४ आप लूणौ जांन कर नै बेटै समधड़ै नूं परणावण नूं हालियौ। भली भांत सूं परणायौ। सगां विहुंवां वडौ **रस** रह्यौ। —पीठवै चारण री बात

७ रति क्रीड़ा, काम-केलि, संभोग।

उ०—१ रमतां जगदीसर तणौ रहसि **रस**, मिथ्या वयण न तासु महै। सरसै रुखमणि तणी सहचरी, कहिया मूं मैं तेम कहै। —वेलि

उ०—२ कुण जांणै रहियौ कठै, **रस** रमतौ इण रात। हारचौ थकियौ आइयौ, कीन्हि कछू न बात। —जलाल बूबना री बात

८ किसी विषय का आनन्द।

९ सुख का अनुभव, सुख।

उ०—१ वरियांम अहमंद बाद, अमल जमावियौ। पिथ भूप जिम अणवार, इळ **रस** आवियौ। —सू. प्र.

उ०—२ नकौ **रस** भागी नकौ रहत न्यारा, नकौ आप हरता न करता व्यौहारा। —अनुभववांणी

१० काम-वासना, कामेच्छा।

११ मौज, मस्ती।

उ०—अबै जलाल साहिब नितका बूबना रै महल जावै। चार

पहर रात रमै खेलै। घणौ घणौ राग रंग **रस** होवै।
—जलाल बूबना री बात

१२ उमंग, जोश, उत्साह, मनोवेग।
१३ यौवन काल में अनुराग का होने वाला संचार।
१४ इन्द्रिय सुख।
१५ मेल-जोल, मेल-मिलाप, ताल-मेल।

उ०—१ मूसा ने मंजार, हित कर बैठा हेकठा। सब जांणें संसार, **रस** नह रहसी राजिया। —किरपाराम

उ०—२ कीधी बहु पहिरावणी, राजवीयां नै रंग। **रस** राख्यौ जस संग्रह्यौ, वाध्यौ प्रेम अभंग। —स्रीपाल रास

उ०—३ तद पातसाहजी राजा वीठळदास रै डेरै उजीर बगसी उजरखां नूं मेलिया। अरु खरच नूं रुपिया लाख दोय दराया अरु लोदी खांनजहां रै गौड़ां रै **रस** रई नहीं। —द. दा.

१६ माधूर्य।
१७ अनुराग, दया आदि कोमल वृत्तियों के वश में रहने की अवस्था या भाव।
१८ इच्छा, भावना, भाव।

उ०—बाजोटा ऊतरि गादी बैठी, राजकुंअरि स्रिंगार **रस**। इतरै एक आली ले आवी, आंनन आगळि आदरस। —वेलि

१९ साहित्य में वह आनन्दात्मक चितवृत्ति या अनुभूति जो विभाव, अनुभाव और संचारी से युक्त किसी स्थाई भाव के व्यंजित होने से पैदा होती है।
२० साहित्य में माने जाने वाले दश रसों में से कोई एक या प्रत्येक।

उ०—१ पत्र अक्खर दळ द्वाळा जस परिमळ, नव **रस** तंतु विधि अहोनिसि। मधुकर रसिक सु भगति मंजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि। — वेलि

उ०—२ अकळ खूमांण यर रजी अवछाइयौ, वाजै **रस** त्रंबागळ प्रबळ वाजा। फौज आगळ गजां बरंग धजां फब, राज पंथ सुरंगां सीस राजा। —गु. रू. बं.

उ०—३ इण पर तहवरखांन अछायौ, विचित्र हुवौ लड़तां **रस** वायौ। सिर हिंदवांण तणौ रीसायौ, औरंग पीठ लगेहीज आयौ।
—रा. रू.

२१ सुन्दरता, मनोज्ञता, मनोहरता।
२२ तौर, तरीका, ढंग।
२३ गुण, विशेषता, महत्व।
२४ शरीरस्थ सप्त धातुओं में से प्रथम धातु।
२५ रक्त, रुधिर।

उ०—कमठ पर भार पड छिलै **रस** कचरकां, मचरकां सेस रा हलै माथा। —र. रू.

२६ प्राणियों के शरीर से निकलने वाला कोई तरल पदार्थ, पसीना आदि।
२७ कोई तरल पदार्थ, जल, पानी।

उ०—धरती रा कण कण में हरख समायग्यौ। पांन पांन में **रस** सांचरग्यौ। —फुलवाड़ी

२८ किसी वनस्पति को कूट-पीट या निचोड़ कर निकाला जाने वाला जलीय अंश।
२९ शराब, मदिरा, आसव।
३० विष, जहर। (अ. मा., ह. नां. मा.)
३१ अमृत।

उ०—१ रांम नांम **रस** वेलड़ी, जन हरीया सींचंत। ऊगै तौ हरि अंस मैं, विळै नहीं जावंत। —अनुभववांणी

उ०—२ मंत्र वंसीकर मांनजै, बांणी **रस** बरसंत। सरसुति बीणा प्रगट सुर, कोयल लाज करंत। —अग्यात

३२ वीर्य।
३३ पारा। (डिं. को.)
३४ गोरस।

उ०—गोरस लीजे नंदलाल, **रस** मांगौ **रस** लीजै। —मीरां

३५ गंध रस।
३६ शिलारस।
३७ हिंगुल।
३८ मोती। (अ. मा.)
३९ कोई खनिज पदार्थ।
४० धातुओं से फूंक कर तैयार किया हुआ भस्म। (वैद्यक)
४१ घी, घृत।

उ०—खप्पर ओ भैरव खप्पर भरावूं लापसी। जे ऊपर ओ भैरव ऊपर **रस** री जी धार। —लो. गी.

४२ वह औषधि जो पारे या किसी धातु के योग से बनी हो।
(वैद्यक)
४३ उत्तम खाद्य पदार्थ।

उ०—धांन पांणी **रस** चोरिया, ते भेटइ सिध क्षेत्रौ जी। सेत्रुंज तलहटी साध नइं, पडिला भइ सुध चितौ जी। —स. कु.

४४ गूदा, मिंगी।
४५ वनस्पती।

उ०—गो खीर स्रवति **रस** धरा उदगिरति, सर पोइणिए थई सुस्री। बळी सरद स्रगलोग वासिए, पितरे ही अत लोक प्री।
—वेलि

४६ वृक्षों के तने या शरीर से निकलने वाला तरल पदार्थ, गूंद आदि।
४७ घोड़े, ऊंट या हाथियों का एक रोग विशेष, जिससे उनके पैरों

से जहरीला पानी निकलने लग जाता है। (शा. हो.)

क्रि. प्र.—उतरणौ।

४८ मिश्री, शक्कर, गुड़ आदि का मीठा पानी।

४९ स्वादिष्ट पदार्थ।

५० चटनी, मसाला।

५१ गुण, तत्व, रूप, विशेषता।

५२ उक्त दृष्टि से कोई वर्ग, विभाग, तरह, भांति।

ज्यूं—एकरस, समरस।

५३ जीत, विजय।

५४ हार, पराजय

उ०—१ राड़ गोळां री दूजे तीजे महीने हुई, फौजां दोनूं बडी जबरी सो रस खावै नहीं।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ वडा अड़पायत रजपूत घणा भाई। धरती सारी में धाक। एकण पासै भाटियां रौ राज। एकण पासै जोइयां रौ राज। एकण पासै सीहवाग, खीचियां रा राज। एकण पासै पाहुवां रौ राज। भटनेर में पातसाही थांणौ। इतरां रै बीच खरळ रहै, राजस करै। सो सारां नूं रस खुवाय राखियौ। तै सूं पड़ौसी सारा संकौ राखे। —कुंवरसी सांखला री वारता

५५ आनन्द स्वरूप ब्रह्म। (उप निषद्)

५६ खेत या भूमि की जुताई के बाद बोवाई के योग्य होने वाली दशा।

५७ फसल की परिपक्वावस्था।

उ०—'पाहड़' हरा अवर कुण पूगै, 'जुगत' हरा हासल री जोड़। रस आई जांणी रजवाड़ां, रजवट री खेती राठौड़।

—लालसिंह राठौड़ रौ गीत

५८ पृथ्वी, धरती। (डिं. को.)

५९ वश, काबू, नियन्त्रण।

उ०—१ सु कुंवर 'जोगो' भोळोसो ठाकुर हुतौ। सु जोगा सूं धरती रस नह आई, नै धरती मांहै मोहिलां रौ दखल हुवण लागौ

—नैणसी

उ०—२ 'जेसै' जीवतां धरती पातसाह रै रस पड़ी नहीं।

—नैणसी

६० कायस्थों की एक प्रथा के अनुसार, मृतक के पीछे बारह दिनों तक सगे सम्बन्धियों को खिलाया जाने वाला भोजन जिसमें लपसी, रोटी तथा चने या आंवले का साग होता है। (मा. म.)

६१ डिंगल का एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक विषम पद में १६ व सम पद में १२ मात्राएं होती हैं।

६२ छंद शास्त्र में एक लघु व एक गुरु का नाम। (र. ज. प्र.)

६३ तीन लघु के ढगण के तृतीय भेद का नाम। (डिं. को.)

६४ रगण या सगण की संज्ञा।

६५ छै की संख्या। * (डिं. को.)

६६ नौ की संख्या। * (डिं. को.)

वि.—१ कामयाब, उपयोगी।

उ०—'बाघ' कन्है सुरजजी री कही घोड़ां री वात थी तीसूं चाहै जिसौ घौड़ौ हुवौ पण 'बाघ' कनै रस हुइ जावतौ।

—ठाकुर जेतसी री वारता

२ अनुकूल, माफिक।

उ०—गधा रै तौ रस बैठौड़ी बांण ही। मज्झ नदी पांणी में बैठौ। —फुलवाड़ी

३ नौ।

४ छै।

क्रि. वि.—१ वश में, कब्जे में, अधीन।

उ०—१ सुण 'सूरसाह' दळबळ सझै, राजा पौरस रूप रा। रस करे धरा गुजरात री, आयौ दक्खण ऊपरा। —सू. प्र.

उ०—२ सेहर रा लोग कहचौ—पातसाह रौ बडौ परताप, नंबाब रौ बडौ भाग, आज 'जगौ' 'रतनौ' मारतां पातसाहजी रै गुजरात खरी रस पड़ी। —नैणसी

२ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त। (ह. नां. मा.)

रू० भे०—रसा, रसि, रस्स।

अल्पा.—रसड़ौ।

रसउगाळ—सं. पु.—वह पशु जिसके मुंह से जुगाली करते समय रस नीचे गिरता हो।

रू० भे०—रस ओगाळ, रसुगाळ, रसूगाळ।

रसउत्तम—सं. पु. [सं. उत्तम+रस] दूध। (डिं. को.)

रसउदभव सं. पु. [सं. रसउद्भव] मोती। (ह. नां. मा.)

रसउल्लाला—सं. पु.—२८ मात्रा का छंद विशेष जिसमें १५ व १३ पर यति होती है।

रसओगाळ—देखो 'रसउगाळ' (रू. भे.)

रसक—सं. पु. [सं.] १ फिटकड़ी।

२ देखो 'रसिक' (रू. भे.)

उ०—१ रत ज्यूं दत जाचक, रसक जाचै बे कर जोड़। ननौ भंणै नव नार ज्यूं, मूढ़ क्रपण मुख मोड़। —बां. दा.

उ०—२ कही आज हूं पनरमैं दिन हरियाळी तीज रौ हंगांम है, जिण में राज जिसा रसक रिझवारां रौ ही कांम है।

—र. हमीर

उ०—३ देव पितर इण सूं डरै रसक तरै किण रीत। हेम रजत पातर हरै, पातर करै पलीत। —बां. दा.

रसकपूर—सं. पु. [सं. रसकर्पूर] शुद्ध पारा, फिटकरी, सेंधानमक व कसीस के योग से बनने वाली एक रसौषधि, जो रक्त विकार,

कुष्ठ, उपदंश आदि रोगों में काम आती है। (अ. मा.)

रसकरम, रसकरम्म–सं. पु. [सं. रसकर्म्म] पारे की सहायता से रसौषधि तैयार करने की एक प्रक्रिया। (वैद्यक)

रसकळ–सं. पु.–नौ मात्रा का एक मात्रिक छन्द जिसके अन्त में गुरु होता है।

रसकस–सं. स्त्री.–१ स्वाभाविक स्थिति।

उ०—उन्हाळा रै तपतै दिनां कांसी रा ठांव में खाटी छाछ कचबचै अर उगटै ज्यूं बादळ रौ मन ऐड़ौ उगटियौ के पाछौ **रसकस** बैठौ ई नीं। —फुलवाड़ी

२ सार-तत्व।

उ०—१ **रसकस** तौ रसिया तें लियौ अब क्यूं झुरै गिंवार। —अग्यात

उ०—२ **रसकस** दिवलौ बळै, धड़ ढोल्या रै हेट। —फुलवाड़ी

३ आनन्द, मौज।

उ०—काची केरी घर पकी, बाग पकी है दाख। पिय **रसकस** दिन चार कौ चाख सकै तौ चाख। —अग्यात

रसकार–सं. पु. [सं. रस+कार] शराब बनाने वाला।

उ०—सास्त्रकार, मैत्रकार सुद्धकार उद्दीसकार ध्रुतिकार रूपकार करणीकार **रसकार** क्षीरकार सस्यकार, वस्त्रकार विभूसणकार पुंतार अस्वसिक्षाकार...... —व. स.

रसकुंड–सं. पु. [सं] अमृत का कुण्ड।

उ०—राजा तपस्वी नूं जगाय **रसकुंड** बतायौ। —सिंघासण बतीसी

रसकुळणी–सं. स्त्री.–घोड़े का एक रोग विशेष जिसके कारण घोड़े के शरीर पर बड़ी ग्रंथी हो और उसमें से खून बहे। (शा. हो.)

रसकूपका, रसकूपिका–सं. स्त्री. [सं. रस कूपिका] योनि, भग।

उ०—जिसड़ी **रसकूपका** जिसड़ी ही नाभ। आ ओपमा सरीखी इण में टोटौ न लाभ। —र. हमीर

रसकेळि, रसकेळी सं. स्त्री [सं. रस+केलि] १ रति-क्रीड़ा, संभोग।

२ दिल्लगी, हंसी-मजाक।

रसकेसर, रसकेसरी–सं. स्त्री. [सं. रस+केसर] १ कपूर।

२ पारा, गन्धक, लौंग आदि के योग से तैयार की जाने वाली एक औषधि। (वैद्यक)

रसग, रसगना रसगिना–सं. स्त्री. [सं. रसज्ञा] जिह्वा, जीभ। (अ. मा., ह. नां. मा.)

रसगाथ, रसगाथा–सं. स्त्री.–रसयुक्त गाथा, रसीली गाथा।

उ०—मो मत प्रमांण कवि मंछ कह, सुंकवि बांण ग्रंथांण सुण। **रसगाथ** गीत पिंगळ रचै, गहर कहूं रघुनाथ गुण। —र. रू.

रसगुलियौ, रसगुल्लौ–सं. पु.–गुलाब जामुन के समान गोल और चासनी में पड़ी एक मिठाई जो दूध की बनती है।

उ०—मिसरी मोतीपाक, भुरट री इतरी खोडी। **रसगुलियां** रै रूप, मधुर है, होडाहोडी। —दसदेव

रसग्य–वि. [सं. रसज्ञ] १ काव्य के रस का ज्ञाता, काव्य मर्मज्ञ।

२ जो रस का ज्ञाता हो, रस का जानने वाला।

३ किसी विषय का पंडित।

४ पारद के योग से रसायनिक दवाइयां बनाने वाला।

सं. पु.–१ समालोचक।

२ रसायनी।

३ कवि।

४ वैद्य।

रसग्यता–सं. स्त्री. [सं. रसज्ञता] १ रसज्ञ होने की अवस्था, भाव।

२ पंडिताई।

रसग्या–सं. स्त्री. [सं. रसज्ञा] १ जीभ, जिव्हा।

२ गंगा।

रसग्रंथ–सं. पु. [सं. रस+ग्रन्थ] १ शृंगार रस का ग्रन्थ या काव्य।

उ०—कुसम तणा सर पांच कर, जग जिण लीधौ जीत। तिण रौ सुमिरण करां, **रस ग्रंथां** री रीत। —र. हमीर

२ वह ग्रंथ जिसमें साहित्यिक रसों का विवेचन किया गया हो।

रसघण–सं. स्त्री. [सं. घनरसा] इन्द्र की माया। (अ. मा.)

रसघन सं. पु. श्रीकृष्णचंद्र।

वि०—१ स्वादिष्ट।

२ रसदार, रसवाला।

रसड़ौ–१ देखो 'रस' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ मारवण तणा ए ओलंबा जाय ढोलाजी ने कहजै रे, थारी मारवण पाकी बोर जिऊं। ढोला **रसड़ौ** चाखण घर आव, करहला धीमा चालौ राज। —लो. गी.

उ०—२ मारवण तणा ए ओलंबा जाय ढोला जी ने कहीजे रे, थारी मारवण पाकी आंबा जियूं। ढोला **रसड़ौ** घोटण घर आव। —लो. गी.

२ देखो 'रसोड़ौ' (रू. भे.)

रसचारी–वि.–रसज्ञ, रसों का ज्ञाता।

उ०—मत सीखै मंत्रवी, राग सीखै **रसचारी**। सीखै ध्रम कुळ सकळ, रीत सीखै छत्रधारी। —सू. प्र.

रसजांणण–सं. स्त्री. [सं. रसज्ञा] १ स्वाद या रस का अनुभव करने वाली इन्द्रिय।

२ जिव्हा। (डिं. को.)

वि.–रसज्ञ।

रसण–सं. पु.–१ सूर्य, भानु। (ना. डिं. को.)

२ देखो 'रसना' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ **रसण** निपाप करिस इम राघव। **भणै** तूझ गुण तारण

दधि भव। —ह. र.

उ०—२ चवतां रांम मुखांण गयौ चव, भव दुख काढै कीध भव। लव लागां फिर रांम **रसण** लव, रववंसी इम वहै रव।

—र. रू.

उ०—३ राखौ आगै **रसण** रै, राघव नांम रसाळ। मुख मांझळ आंणौ मती, गिरां अबक ज्यूं गाळ। —बां. दा.

उ०—४ मग सागर तजि सुद्ध भंमर कुण बेड़ौ घल्लै। अहि कसणा ओटवै कमण **रसण** कर झल्लै। —रा. रू.

रसणांण, रसणा—सं. स्त्री. [सं. रश्मि] १ किरण।

उ०—इसी भांति सांमांन करतां दिन घड़ी एक पाछलौ आय रह्यौ। सूरज **रसणां** मांहे जाय पोतौ।

—जैतसी ऊदावत री बात

२ पृथ्वी।

३ क्षितिज।

४ देखो 'रसना' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ जालम तखत कंचण जांण, पधरा पावड़ी निज पांण। राजा रांम री **रसणांण**, आलम अदल वरती आंण।

—र. रू.

उ०—२ **रसणा** रांम रट रांम रट रांम रट। —र. ज. प्र.

उ०—३ बैरण **रसणा** बस त्रसणां तनताई। आभा आंगण री अंन मांगण आई। —ऊ. का.

उ०—४ आतम ब्रह्म मंडा एक अखंडा, विण **रसणा** गावंदा है।

—अनुभववांणी

रसणि—देखो 'रसना' (रू. भे.)

उ०—उअंकार अनाहत अक्खर, सिद्धि बुद्धि दे सारद गुणेसर। मंडळीकां मोटां कुळि मउड़ां, **रसणि** सुवांणि क्रीति राठउड़ां।

—रा. ज. सी.

रसणौ, रसबौ—क्रि. अ. [सं. रसनं] १ पानी या किसी द्रव पदार्थ का धीरे धीरे बहना, रसना।

२ टपकना, चूना।

३ रसमय होना, रसीजना, रस या स्वाद जमना।

उ०—बंगाळै ए बोर, **रसै** ना मुरधर जेड़ा। खाटा बड़छ निकांम गिटै ना सूर गदेड़ा। —दसदेव

४ वश में होना, काबू में होना।

५ आशक्त होना, अनुरक्त होना।

६ प्रसन्न होना, खुश होना।

क्रि. स.—७ स्वाद लेना, रस लेना, रसास्वादन करना।

८ चीखना, चिल्लाना।

उ०—बंधन देखी ससि म्रग सूकर सोक **रसंत**। पूछइं प्रभु आधोरण तोरण बारि पहूत। —जयशेखर सूरि

९ दहाड़ना, गर्जना।

१० शोरगुल करना, बोलना।

११ ध्वनि करना।

रसणहार, हारौ (हारी), रसणियौ —वि.।

रसिओड़ौ, रसियोड़ौ, रस्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रसीजणौ, रसीजबौ —भाव वा./कर्म वा.।

रसत—सं. पु. [सं. रसित] १ शब्द, ध्वनि, आवाज।

२ निर्घोष, गर्जन।

उ०—बादळ मसत बयंड, **रसत** मादळ घहरावै। इंद्र धनुख आकार, फील झंडा फहरावै। —मे. म.

[देशज] ३ एक प्रकार का सरकारी कर। (मा. प. वि.)

४ देखो 'रसद' (रू. भे.)

उ०—१ बंधियौ अकबर वैर, **रसत** गैर रोकी रिपू। कंद मूळ फळ कैर, पावै रांण 'प्रतापसी'। —दुरसौ आढौ

उ०—२ मगरै 'ऊदा' हरा महाबळ, वीटे खळ लूंबिया चहूंवळ। जवनां वीत चहूं दिस जावै, ऊंठ घटांण **रसत** नह आवै।

—रा. रू.

रसतन्मात्रा—सं. स्त्री. [सं.] सांख्य के अनुसार पांच तन्मात्राओं या महत्तत्वों में से चौथे तत्व—जल की तन्मात्रा।

रसतरंग—सं. पु.—१ एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—त्रतंग रित अंग करंग नादंग। **रसतरंग** बह तरंग रंगरंग।

—सू. प्र.

स. स्त्री.—२ रस की लहर, हिल्लोर।

रसतळ, रसतलि—देखो 'रसातळ' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

रसता—सं. पु.—दुकानों पर लगने वाला टैक्स।

उ०—कमंधां चाळौ मत करौ, करौ इजारौ आय। राजा खांण्यां भोगवौ, **रसता** चौथ सवाय। —रा. रू.

रसतारव—सं. पु.—मेघ गर्जन के समान शब्द।

उ०—गढ जंगम जंग समागम का, जुलमी अतिकाय धका जमका, सुघटा घट घाट घटा सरसै, **रसतारव** डांण पटा वरसै।—मे. म.

रसतौ, रसत्तौ—देखो 'रास्तौ' (रू. भे.)

उ०—१ जमलौ दिल रौ लालची, मन में फिरै दलाल। धणी बसत बेचै नहीं, **रसतौ** पकड़ जमाल। —जमाल

उ०—२ एक चित्त ऊजळा चळै सुभ नीत **रसत्तै**। एक खूंन छळवांन वहै कोळाहल मत्तै। —रा. रू.

रसत्याग—सं. पु. [सं.] स्वादिष्ट पदार्थों को त्याग करने का व्रत। (जैन)

रसद—सं. स्त्री. [अ.] १ कच्चा अनाज जो पकाकर खाने के लिये हो, खाने का अनाज।

२ खाद्य पदार्थ, खाद्य सामग्री ।
३ सैनिकों के प्रवास काल में साथ रहने वाली खाद्य सामग्री ।
४ अंश, हिस्सा, भाग ।
५ वह अंश या भाग जो बंटवारे के अनुसार मिला हो ।
सं. पु.–६ चिकित्सक ।
७ मध्ययुगीन एक गुप्तचर जो किसी को विषादि खिलाता था ।
वि.–१ रसदायक, मजेदार, स्वादिष्ट ।
२ आनन्द दायक, हर्षप्रद ।
रू० भे०–रसत, रस्त ।

रसदायक, रसदायिनी, रसदायी–वि.–१ आनन्ददायक, आनन्ददायी, रमणीय ।
उ०—भासा संस्क्रत प्राक्रत भणंता, मूझ भारती ए मरम । **रसदायिनी** सुंदरी रमतां, सेज अंतरिख भूमि सम । —वेलि
२ रसदार ।
३ स्वादिष्ट ।

रसदार–वि.–१ जिसमें रस हो, रस से परिपूर्ण ।
२ स्वादिष्ट ।
३ रमणीय ।

रसधातु–सं. पु. [सं.] १ पारद, पारा ।
२ शरीरस्थ सप्त धातुओं में से प्रथम धातु ।

रसधेनु–सं. स्त्री. [सं.] गुड़ आदि से बनी वह गाय जो दान की जाय । (पौराणिक)

रसन, रसना–सं. स्त्री. [सं. रशना, रसना] १ जिव्हा, जीभ । (डिं. को., ह. नां. मा.)
उ०—१ नित 'किसन' कवि रट नांम निरभै, **रसन** स्री रघुरांम । —र. ज. प्र.
उ०—२ आप नांम इळ ऊपरां, **रसना** राघव नांम । रूड़ी विधसूं राखियौ, पुरखां जकां प्रणांम । —बां. दा.
उ०—३ देख तमासा सुन्य मैं, नैंन सुरति का खोलि । जनहरीया **रसना** विनां वचन अखंडी बोलि । —अनुभववांणी
२ वाणी, आवाज ।
उ०—उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखत करै । कड़वौ लागै काग, **रसना** रा गुण राजिया । —किरपारांम खिड़ियौ
३ करधनी, मेखला, किंकिणी । (अ. मा.)
उ०—भर स्रोणित पीठि विभाग नयौ, कटिकौ वित लूटि नितंब लयौ । रुचि रूप जराव जरी **रसना**, मुकता हिम नीलम हीर पनां । —ला. रा.
४ चन्द्रहार, आभूषण । (व. स.)
५ कमर बंद, कमर पेटी ।
६ रस्सी, डोरी ।
७ रास, लगाम ।
८ हठयोग के अनुसार पिंगला नाड़ी ।
९ बलगम, कफ । (अमृत)
१० प्रथम गुरु के गगण का नाम । (र. ज. प्र.)
वि.–रक्ताभ, लाल । * (डिं. को.)
रू० भे०–रसण, रसणांण, रसणा, रसणि, रस्सण ।

रसनाग्रह–सं. पु. [सं. रसना+गृह] मुख, मुंह । (अ. मा., ह. नां. मा.)

रसनालट, रसनालट्, रसनालीह्–सं. पु. [सं. रसनालिह्] श्वान, कुत्ता । (ह. नां. मा.)

रसनेन्द्रिय–सं. स्त्री. [सं. रसना+इन्द्रिय] जिव्हा, जीभ ।

रसनोपमा–सं. स्त्री. [सं.] एक प्रकार का उपमा अलंकार जिसमें उपमाओं की शृंखला बंधी होती है ।

रसन्न–देखो 'रसना' (रू. भे.)
उ०—ऊ करसी चित सोच असंन्नह, सास उसास संभार **रसंन्नह** । कीरत स्रीवर भाख 'किसन्नह', राख रिदे रघुराज । —र. ज. प्र.

रसपति–सं. पु. [सं.] १ चन्द्रमा, शशि ।
२ शृंगार रस ।

रसपरपटी–सं. स्त्री. [सं. रसपर्पटी] पारे को शोध कर बनायी जाने वाली एक रसौषधि । (वैद्यक)

रसपरिच्चाअ, रसपरित्याग–सं. पु. [सं. रस परित्याग] एक व्रत जिसमें रस पदार्थों का परित्याग कर दिया जाता है । (जैन)

रसपूर–वि.–१ वीर रस पूर्ण ।
उ०—सभै 'सिवड़ांपति' दारण सूर । पिरोहित 'केहरियौ' **रसपूर** । —सू. प्र.
वि.–२ रस से परि पूर्ण ।

रसपोटळी–देखो 'रसपोटी' (अल्पा., रू. भे.)

रसपोटी–सं. स्त्री.–१ घोड़े का एक रोग विशेष जिसके कारण घोड़े के पिछले पैरों में कठोर ग्रंथियां हो जाती हैं । (शा. हो.)
२ हाथी का एक रोग जिसमें हाथी के शरीर पर पोटली सी हो जाती है ।
अल्पा., रसपोटळी ।

रसबत्ती–सं. पु.–पुराने जमाने की तोप व बन्दूक चलाने का एक पलीता ।

रसबाय–सं. पु.–हाथियों का एक रोग, जिसमें हाथी के पेट में वायु बढ़ जाती है और हाथी बहुत कष्ट पाता है ।

रसभरी–सं. स्त्री. [अं. रैस्पबेरी] १ लाल-पीला एक स्वादिष्ट फल ।
२ उक्त फल का बना पेय पदार्थ ।
३ रस से परिपूर्ण एक मिठाई । वह मिठाई जिसमें रस भरा हुआ हो ।

रसभाव–सं. पु.–हाथियों का एक रोग जिसमें हाथी के पैर में सूजन आ जाती है, आंखें पीली पड़ जाती हैं, रंग पीला पड़ जाता है और वह आराम से सो नहीं सकता।

रसमंडूर–सं. पु. [सं.] गंधक मंडूर व हड़ के योग से बनाई जाने वाली एक रसौषधि।

रसमंत्री–सं. पु.–सलाहकार मंत्री, संधि कराने वाले मंत्री।

उ०—राजरूप कांनूगौ लारां। **रसमंत्री** मिळिया राजा रा।
—रा. रू.

रसम–सं. स्त्री. [अ. रस्म] १ परंपरा, परिपाटी, नियम, प्रथा, रूढ़ि।

उ०—आदू तिंवार में सुगन, ओ देख अमल बिन दोघड़ा। आ **रसम** फसाई अमलियां, तार न सोचै टोघड़ा। —ऊ. का.

२ प्रचलित प्रथा के अनुसार दिया जाने वाला धन, नेग, दस्तूर।

३ कर, लगान।

४ वेतन, तनख्वाह।

५ संस्कार।

६ देखो 'रस्मि' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ वन सघन लसत मनु घन वसाल, संचरै नाहि रवि **रसम** रास। —मयारांम दरजी री बात

उ०—२ दहूं वळां तोप लग्गी दगण, रूप काळ डाचा रुखी। रवि प्रळै काज जांणौ **रसम**, ज्वाळ भाळ ज्वाळा मुखी।
—सू. प्र.

रू० भे०–रसम्म, रस्म, रस्सम।

रसमय–वि.–१ रस से परिपूर्ण, रस युक्त।

उ०—मिळि अंब साख प्रसाख **रसमय** अमिति मंजुर अंजुरे। रसहीन अनि तर सरब रेणा सीत छळ कृति संचरे। —रा रू.

२ मधुर, मीठा।

उ०—कोई कुकवी जीभ सूं, बांछै **रसमय** बांण। कंचण बांछे काढणौ, सो लोहा री खांण। —बां. दा.

सं. पु.–मकरंद। (अ. मा.)

रसमांण–सं. पु. [सं. रश्मि] १ सूर्य का प्रकाश, तेज।

उ०—असौ तेज अप्रमांण 'जोदांण' पत आपरौ, लीक नह रांण सुरतांण लांगै। मगज चसमांण ग्रह पांण आदम कमण, भांण **रसमांण** लग आंण भांगै। —तिलोकसी बारहठ

२ सूर्य की किरण, रश्मि।

रसमाता–सं. स्त्री. [सं.] जिव्हा, जीभ। (डिं. को.)

रसमि, रसमी–देखो 'रस्मि' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—ऊपर सरद सुखद रित आई, सुख धर नै पत उदत सवाई। सरवर अचळ न्रिमळ जळ सोहै, मध पूरत विधु **रसमि** विमोहै।
—रा. रू.

रसमैत्री–सं. स्त्री. [सं.] स्वाद में वृद्धि करने वाले दो विभिन्न रसों का मेल, मिलान।

रसम्म–१ देखो 'रसम' (रू. भे.)

२ देखो 'रस्मि' (रू. भे.)

उ०—१ दंडकाळ करंगा तरेस सी गणेस दंत। सूर प्रळै **रसम्मां** मणेस सुधासार। —र. रू.

उ०—२ रोसाळ मिळै ग्रीखम **रसम्म**। चिता विडाळ नाहर चसम्म। —वि. सं.

रसयौ–सं. पु.–रस से उत्पन्न होने वाला कीड़ा। कीटाणु।

रसरंग–सं. पु.–१ राग-रंग, आनन्द, उत्साह, खुशी।

२ तीन यगण व अंत में लघु मात्रा का एक छंद। (ल. पिं.)

रसरसाटि–सं. स्त्री.–आवाज या ध्वनि विशेष।

उ०—असंख्य साहणि चालते हूंते समुद्र सलिल सलसल्यां, घांट घमघमी, धाघरयाल वाजी, रथीक राउत तणै **रसरसाटि** रोहणगि–रिन्गि रणरण्यां। —व. स.

रसराज–सं. पु. [सं.] १ पारद, पारा।

२ पारै, ताम्र भस्म और गंधक के योग से बनी एक रसौषध। (वैद्यक)

३ रसांजन, रसौत।

४ साहित्य में श्रृंगार रस।

५ रतिफल।

उ०—घुरै सुहांणी गाज मद्रंगा ताळ धमंकै, कळप तणा **रसराज** पियंतां कांम दमंकै। —मेघ

रसरी–सं. स्त्री. [सं. रसना, प्रा. रसणा] डोरी, रस्सी।

रसळ–सं. स्त्री. [देशज] छत पर चूना जमाने से पूर्व मुरड जमाने की क्रिया।

रसलीण, रसलीन–सं. पु.–कवि। (अ. मा.)

वि.–१ रस, प्रेम, आनन्द में लीन रहने वाला, मग्न रहने वाला।

२ कामी, विलासी।

रसलोभी, रसलोलुप्र, रसलोलुप–वि. [सं. रस–लोलुप] रसका लोभी, रसिक, कामी।

उ०—लीयै तसु अंग वास **रसलोभी**, रेवा जळि कृत सौच रति। दखिणांनिळ आवतौ उतर दिसि, सापराध पति जिम सरति।
—वेलि

सं. पु.–भ्रमर, भंवरा।

रसवंछक–वि.–रस का इच्छुक।

उ०—विधि पाठक सुक सारस **रसवंछक**। कोविद खंजरीट गतिकार प्रगल्भ, लाग दाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार।
—वेलि

रसवंत, रसवत–वि. [सं. रसवत्] (स्त्री. रसवंती) १ जिसमें रस हो, रसपूर्ण।

२ स्वादिष्ट, जायकेदार।

३ भीगा हुआ, नम, तर।

४ मनोहर, सुन्दर, मनोज्ञ।

५ भाव पूर्ण।

६ प्रीति पूर्ण, प्रेम मय।

७ प्रेमी, रसिक।

८ रसज्ञ।

९ दिलचस्प, आकर्षक।

रसवतमन–सं. पु. सुन्दर। (अ. मा.)

रसवति, रसवती–सं स्त्री. [सं.] १ रसोई घर, पाकशाला।

उ०—अहमारी **रसवती** बरणवू, परिण कसी एक छि जे **रसवती** माहरइ ससरइ, देवांस पुरखि, ऊपनि मालि, प्रसन्न कालि, वारू मंडप निपाया, पंचवरण्ण पटुलां. —व. स.

२ खाद्य सामग्री, भोजन।

उ०—१ तउ वनि कांमुकि जाइं पंचह पंडव कुणवि सउं। मंत्रह तणइ उपाइ अरजुनु आंणइ **रसवती** य। —सालिभद्र सूरी

उ०—२ अगनि रतन थी सिद्धि हुवै, ते सुणि दीन दयालु मो। नवली नवली **रसवती**, चावल नै वलि दाल मो। —वि. कु.

३ शाक, सब्जी।

उ०—१ नेह विना सी प्रीतड़ी, कंठ विना स्यउ गांन। लूण विना सी **रसवती**, प्रतिमा विण स्यउ ध्यांन। वि. कु.

उ०—२ रावल भगति भोजन तणी रे, सहूग्र कराई सझ। रूड़ी व्यंजन **रसवती** रे, आरोगण आलिम कज्ज रे।

—प. च. चौ.

उ०—३ जिम लवण हीण **रसवती**, व्याकरण रहित सरस्वती, गंधरहित चंदन, घ्रत रहित भोजन, खांड रहित पकवांन, मांन रहित दांन, छंद रहित कवित, तेज रहित रवि, विवेक रहित मनुस्य। —व. स.

४ पृथ्वी, भूमि, धरा। (अ. मा., ह. नां. मा.)

५ रामवेलि नामक लता। (अ. मा.)

६ सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी। (संगीत)

वि.–१ रस भरी, रसपूर्ण।

२ रसीली, रंगीली।

३ रमणी, सुंदरी, प्रिया।

उ०—सजनै ढोलाजी सोले सणगार। **रसवती** मैंलां आयी ऐ मद छकिया थारी बोली प्यारी सा। —लो. गी.

४ स्वादिष्ट, रुचिकर।

उ०—यथा आभरणि सुवण्णरत्न हीरा मुक्ताफलादि सरव संयोगी राजयोग्य आभरण, **रसवती** भोजन सालि दालि घ्रत पक्कवान्नादि।

—व. स.

५ दिलचस्प।

रसवतीकरम–सं. पु. [सं. रसवतीकर्म] १ भोजन या रोटी बनाने की क्रिया।

२. ७२ कलाओं में से एक।

रसवतीग्रह–सं. पु. [सं. रसवतीगृह] १ पाक शाला, रसोई, रसौड़ा।

उ०—मज्जनग्रह विलेपन ग्रह प्रसाधन ग्रह, अलंकार ग्रह, आदर–स ग्रह अंतपुर ग्रह, क्रीड़ाग्रह **रसवतीग्रह** भोजनग्रह आस्थान ग्रह कोस चैत्य प्राय मंदिर परिकरित विसाली प्रणाली चित्रसाली।

—व. स.

रसवत्ता–सं. स्त्री.–१ रसीलापन, स्वाद।

२ मीठास।

३ सुन्दरता।

४ प्रसन्नता।

रसवांन–सं. पु. [सं. रसवान्] किसी विशेष गुण या शक्ति वाला पदार्थ, जिसके कण या अंश का संयोग रसना से होने पर, विशेष आनन्द या स्वाद की अनुभूति होती है।

वि.–रसदार, रसयुक्त, जिसमें रस हो।

रसवाद–सं. पु. [सं.] १ साहित्य में वह मत या सिद्धान्त, जिसके अनुसार काव्य में 'रस' की प्रधानता को माना जाता है।

२ रस की बात, रसिकता की बातें।

३ छेड़ छाड़

४. ७२ कलाओं में से एक।

रसवायौ–वि. (स्त्री. रसवायी) १. उमंग, जोश से युक्त।

उ०—विंढवा प्रथम अणी **रसवाया**, ऐ मछरीक वणी कळ आया। 'चूंडौ' 'मुकन' सुजाव सचेळौ, भूप तणौ छळि 'केहर' भेळौ।

—रा. रू.

२ प्रसन्न, हर्षित।

उ०–गिरध चील गोमायु विरक जंबू **रसवाया**। काक कंक कौ गिणौ आस पळ संभळ आया। —रा. रू.

रसवाळौ–वि. [सं. रस+आत्म] (स्त्री. रसवाळी) १ रस से पूर्ण, रसदार। २ जायकेदार, स्वादिष्ट। ३ दिलचस्प। ४ मधुर।

रू० भे०–रसाउलु, रसाळू, रसाळौ।

रसवास–सं. पु.–ढगण के प्रथम भेद का नाम। (।ऽ) (पिंगल)

रसविरोध–सं. पु. [सं. रसविरोधः] वे विभिन्न रस जिनका मेल उचित नहीं माना जाता है। (सुश्रुत)

रसविलास–सं. पु. [सं. रसविलास] रतिक्रीड़ा, मैथुन।

उ०—रिझवारां रिझवार कमरां सिणगार तीख चोख रौ राखणहार **रसविलास** रौ चाखणहार। —र. हमीर

रसवीर–देखो 'वीररस' (रू. भे.)

रसवेता, रलवेत्ता–वि. [सं.] रस मर्मज्ञ, रसज्ञ।

रसवेलि-सं. स्त्री.-रस की वेल, लता।
उ०—वाही थी गुणवेलड़ी, वाही थी **रसवेलि**। पीणइ पीवी मारवी, चाल्या सूती मेलि। —ढो. मा.
रससंस्कार-सं. पु.-पारे के अट्ठारह प्रकार के संस्कार। (वैद्यक)
रससागर-सं. पु.-१ सात समुद्रों में से एक। (पौराणिक)
२ प्रेम का सागर।
रससात-सं. पु.-दूध, दुग्ध। (अ. मा.)
रससार-सं. पु.-१ शहद, मधु।
२ विष, जहर।
रससिंगार-सं. पु.-शृंगार रस।
वि.-मधुर। * (डिं. को.)
रससिंदूर-सं. पु. [सं] पारे और गंधक के योग से बनने वाला एक रस। (वैद्यक)
रससिंधु-देखो 'रससागर'
उ०—आंखि आंजि सिर गूथत मारी, झूमक गावत अंचळ जोरी। मीरां प्रभु **रससिंधु** झकोरी, नवल हि गिरधर नवल किसोरी। —मीरां
रससिद्धि, रससिद्धी-सं. स्त्री. [सं.] १ रसायन विद्या में कुशलता, निपुणता।
उ०—१ राजा कही-अंबे! **रससिद्धि** देय। देवी तत्काळ किंवाड़ खोल अंतरध्यांन हुई। —सिंघासण बत्तीसी
उ०—२ विक्रम विन त्यागी कहां, जे **रससिद्धी** पाय। कठिण परिस्रम कर सकळ, तपसी दियौ बताय। —सिंघासण बत्तीसी
रससेव-सं. पु.-बलराम का एक नामान्तर। (अ. मा.)
रसांण-क्रि. वि.-१ उचित ढंग पर, उपयुक्त स्थिति में, सही रास्ते पर।
उ०—विण सांवळ वाच बखांण भली विध, कंठ लगाय प्रमांण करी। न भरै जद वात **रसांण** न आवै, साहपणौ किम हांम भरी। —भगतमाळ
२ देखो 'रसायण' (रू. भे.)
रसांणी-सं. स्त्री.-रसायन विद्या।
रसांमणा-सं. स्त्री. [सं. रश्मि] सूर्य की किरण, रश्मि।
उ०—सधर कर भभीखण रवि जस **रसांमणा**। भुजां रघुवर अडर, लीजिये भांमणा। —र. ज. प्र.
रसा-सं. स्त्री. [सं.] १ पृथ्वी, धरती, धरा। (डिं. को., ह. नां. मा.)
उ०—१ राघव रयणायर **रसा**, सेस महेस्वर वैण। सुणै बधायौ गिरिसुता, सो व्हौ मो सुख दैण। —बां. दा.
उ०—२ महा ओस 'दूदा' चले रीस मत्ता। **रसा** काजि 'ऊदा' वडी लाज रत्ता। —रा. रू.
उ०—३ थारी आळस पणा री नींद है सो खोय देसी ने **रसा**। प्रथी सदा कंवारी है सो वीर हुवै जिकोई इण रौ वींद धणी है। —वी. स. टी.
२ दुनियां, जगत, संसार।
उ०—१ **रसा** रूठौ रूठौ अलख इक रूठौ मत रहै। हमारी देखै ना विरुद्ध निज लेखै वठ वहै। —ऊ. का.
उ०—२ दोख निज दीह न दीसै रे, **रसा** अवरां पर रीसै रे। बात निज हाथ बिगाडी रे, आई सोइ पांत अगाड़ी रे। —ऊ. का.
३ जिव्हा, जीभ।
४ रसातल, पाताल।
उ०—अगहन मास क्रतू ग्यौ आखौ, पो' त्रेताजुग वीतौ पाखौ। द्वापुर माघ महीनों दाखौ, **रसा** सिधायौ आ चित राखौ। —ऊ. का.
५ नरक।
[फा. रसाई] ६ वेग, गति।
७ देखो 'रस' (रू. भे.)
रसाइण, रसाइन-देखो 'रसायण' (रू. भे.)
रसाई-सं. स्त्री. [फा.] १ पहूंच, क्षमता। (मा. म.)
२ सुलह, संधि।
रसाउलु-देखो 'रसवाळौ' (रू. भे.)
उ०—रासि **रसाउलु** चरीउ थुणीजइ। किम रयणायरु हीयइं तरीजइ। —सालिभद्र सूरि
रसागर-सं. पु.-एक प्रकार का घोड़ा, जिसका एक **नैत्र** लाल होता है तथा नैत्र में नीले रंग के डोरे होते हैं, साथ ही दूसरा नैत्र काला होता है। (अशुभ) (शा. हो.)
रसाणौ, रसाबौ-क्रि. स. ['रसणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ पानी या किसी द्रव पदार्थ को धीरे धीरे बहाना, रसाना।
२ टपकाना।
३ रसयुक्त करना, स्वादिष्ट बनाना।
४ आशक्त करना, अनुरक्त करना।
५ प्रसन्न करना, खुश करना।
६ वश में करना, अधिकार में करना।
उ०—कमधज पत भूपत 'करन', इम राज **रसाया**। सुभ जिण कंवर अनोपसिंह, छत अवळां छाया। —द. दा.
७ रसास्वादन कराना, चखाना।
८ शोरगुल कराना, बोलाना।
९ ध्वनि कराना।
रसाणहार, हारौ (हारी), रसाणियौ —वि।
रसायोड़ौ —भू. का. कृ.।
रसाईजणौ, रसाईजबौ —कर्म वा.
रसातळ, रसातळि-सं. पु. [सं. रसातल] १ पृथ्वी के नीचे के सप्तलोकों में से छटा लोक। (पौराणिक)
२ पाताल।
उ०—१ दादू भावै तहां छिपाइयौ, साच न छांना होइ। सेस

रसातळ गगन धू, परकट कहिये सोइ। —दादूबांणी

उ०—२ आकास रसातळ दिस असट, पारावार समंद्र पथ। जमजाळ दुसह जायै जहां, आंणौ ग्रह मेरे अरथ। —रा. रू.

३ अधोलोक।

उ०—१ राति रसातळ सात थई, दिवस थयु युग च्यारि। ऊवेखिउ नहू आथमइ, आदित आंखि ज बारि। —मा. कां. प्र.

उ०—२ साधू निरमळ मळ नहीं, रांम रमै सम भाइ। दादू अवगुण काढकर, जीव रसातळ जाइ। —दादूबांणी

उ०—३ आप आपकूं मारि करि, आप आपकूं खाय। आप आपणौ नास करि न्याय रसातळि जाय। —ह. पु. वां.

४ अधोगति, नाश, पतन।

उ०—१ उरध रोम उल्लसै जोम अरि करण रसातळ। भजि त्रिसळी निज भाळ, कळा सोखण सत्र कम्मळ। —रा. रू.

उ०—२ तूं ऊंचा खेंचै तिके, जग ऊंचा हुय जाय। मन खांचौ तूं माढवां, जिके रसातळ जाय। —ऊ. का.

५ पृथ्वी, भूमि, धरती।

उ०—१ हरीया पंखी पंख विन, पड़ै रसातळि आय। ऊडण की सरधा नहीं, जीवत म्रितग थाय। —अनुभववांणी

उ०—२ परबत सुं पथर गिरचौ, परचौ रसातळ आय। हरीया हरि की भगति विन, सोई नीचा जाय। —अनुभववांणी

रू. भे.—रसतळ, रसतळि,

रसादार—वि.—जिसमें रस या शोरवा हो, रसदार।

रसाधार—सं. पु. [स.] १ सूर्य, रवि।

२ शेषनाग।

रसाधी—सं. स्त्री.—भूमि, पृथ्वीमाता ?

उ० चितै होतौ चेतौ गहन नभ देतौ मन गसा। रसाधी क्यों रोती ह. ह. ह. किम होती दुरदसा। ऊ. का.

रसापत, रसापति—सं. पु. [सं. रसा-पति] राजा, नृप। (डिं. को.)

रसाभास—सं. पु. [सं. रस+आभास] १ साहित्य में किसी रचना की वह स्थिति जिसमें किसी रस विशेष का आभास मात्र हो गया हो अर्थात् रस की परिपक्वता नहीं आ पाई हो।

२ मन मुटाव, वैमनस्य।

उ०—नागौर पातसाह अकबर जद मोटा राजा नै राव चंद्रसेणजी एक हुवा, रसाभाव मेटियौ। —बां. दा. ख्यात

रसायक—देखो 'रसायण'

उ०—वईदराज के विसाळ, औखधी उपाइकं। तई रसायणी स्वधातु स्वच्छयं रसायकं। सू. प्र.

रसायण—सं. पु. [सं. रसायन] १ जरा व व्याधि को मिटाने वाली औषध, जो पारे या किसी धातु के योग से बनाई गई हो।

उ०—कोई रसायण औषध खाय कुरूप सूं सुरूप हुवौ। —पंचदंडी री वारता

२ तांबे से सोना बनाने की एक कल्पित विद्या।

उ०—करण रसायण कडछिया, हरि चिरतां हंसियाह। चुगलां ने गणिया चतुर, बनै गिरै बसियाह। —बां. दा.

३ धातुओं की भस्म बनाने की एक विद्या। इससे एक धातु को दूसरी धातु में भी बदला जा सकता है। (वैद्यक)

उ०—भणंत एक व्याकरण, वीर इस्ट के करै। तरक्क नीति सासत्रांणि, एक मुक्ख उच्चरै। मारतं एक सब्ब धात, केळवै रसायणं। अगाध वैद राज राज ओखदी विचारणं। —गु. रू. बं.

४ वह विषय, क्षेत्र या तत्व जिसमें किसी प्रकार के रस या आनन्द की प्राप्ति होती है।

उ०—सरव रसायण में रसी, हर रस समी न काय। टुक तन अंतर मेल्हियां, सब तन कंचन थाय। —ह. र.

५ इच्छित सिद्धि, मनोकामना की पूर्ति।

उ०—वेयावच दस प्रकार नी, करजौ चित्त लगाय। कांइयक रसायण ऊपजै, दुख दालिद्र दूरे जाय। —जयवांणी

६ परिपक्वावस्था।

उ०—गरढ पणौ गुणकार, सार बहु बुद्धि रसायण। विण सैं मल्ल वेसीया, गिणौ तिम चाकर गायन। —ध. व. ग्रं.

७ रस काव्य।

उ०—'नाल्ह' रसायण नर भणइ, राजा रह्यौ उडीसई जाय। बाग-वांणी मौ वर दीयौ, अस्त्री रसायण करूं बरवांण। —बी. दे.

८ मधुर पेय रस।

उ०—१ गूंगे का गुड़ का कहूं, मन जांणत है खाइ। त्यों रांम रसायण पीवतां, सो सुख कह्या न जाय। —दादूवांणी

उ०—२ जन हरिदास दोख तजि दुरभख, रांम रसायण पीवै। बूठै मेह पहम रुति पलटै, परचै लागा जीवै। —ह. पु. वां.

९ उत्तम खाद्य पदार्थ।

१० कटि, कमर।

११ गरुड़ पक्षी।

१२ बहत्तर कलाओं में से एक। (व. स.)

रू० भे०—रसांण, रसाइण, रसाइन, रसायन।

रसायणग्य—वि. [सं. रसायनज्ञ] रसायन क्रिया व विद्या का जानकार।

रू० भे०—रसायनग्य।

रसायणविग्यांन—सं. पु. यौ. [सं. रसायन+विज्ञान] पदार्थों में होने वाले गुणों व तत्वों का विवेचन करने तथा पदार्थों के परस्पर योग से होने वाली प्रतिक्रिया एवं रूपान्तर देखने की विधि या सिद्धान्त।

रू० भे०—रसायनविग्यांन।

रसायणसास्त्र—सं. पु. यौ. [सं. रसायन+शास्त्र] १ वह शास्त्र जिसमें

पदार्थों के गुण, तत्व आदि के विवेचन तथा पदार्थों के परस्पर योग से होने वाली प्रतिक्रियाओं एवं रूपान्तरों को देखने की वैज्ञानिक विधियों का संग्रह हो।

२ वह पुस्तक जिसमें रसायन विज्ञान की विधियों या सिद्धान्तों का संग्रह हो।

रू० भे०–रसायनसास्त्र।

रसायणी–सं. स्त्री. [सं. रसायनी] १ कोई रसायनिक औषधि।

उ०—वईदराज के विसाळ, औखधी उपाइकं। तई **रसायणी** स्वधातु, स्वच्छयं रसायकं। —सू. प्र.

२ उक्त ओषधि बनाने की विधि या विद्या।

३ उक्त विद्या के जानने वाला वैद्य या चिकित्सक।

रू० भे०–रसायनी।

रसायन–देखो 'रसायण' (रू. भे.)

उ०—१ रांम **रसायन** पेम रस, ऐसा और न स्वाद। जन हरीया जै चखीया, विखै न आवै याद। —अनुभववांणी

उ०—२ अंग सकोमळ पेम सरभर, चूंप सभै चतरंग चितारौ। साध सती जत राग **रसायन**, सूर खिम्या कवि दास दतारौ। —अनुभववांणी

उ०—३ **रसायन** प्रयोग रसिक, प्रदरसित वलिपलित, वसीकरणि अमूढ, लक्ष खडी चापडी प्रमुख विद्या कुतूहली अ साधक, आकास पाताल बंधक। —व. स.

रसायनग्य–देखो 'रसायणग्य' (रू. भे.)

रसायनचंदणा, रसायनचंदना–सं. स्त्री.–बहत्तर कलाओं मेंसे एक। (व. स.)

रसायनविग्यांन–देखो 'रसायणविग्यांन' (रू. भे.)

रसायनसास्त्र–देखो 'रसायणसास्त्र' (रू. भे.)

रसायनी–देखो 'रसायणी' (रू. भे.)

रसाळ, रसाल–वि. [सं. रस+आलय] १ रसयुक्त, रसमय।

२ मीठा, मधुर।

उ०—१ ग्वाळ बाळ रचि चारु मंडळ, बाजत बंसी **रसाळ**। —मीरां

उ०—२ दादू रंग भर खेलूं पीव सौं, तहं बाजै वेणु **रसाळ**। अकल पाट पर बैठा स्वांमी, प्रेम पिलावै लाल। —दादूबांणी

उ०—३ घट मांही घड़ियाळ, आठ पौहर लागी रहै। हरीया राग रसाळ, रग रग भीतर होत है। —अनुभववांणी

३ ठंडा, शीतल।

उ०—मुख दीसै विकसौ कमळ, चंदन वचन **रसाळ**। हियडै जांण कि करतरी, धूरत चिन्ह एमाळ। —पंच दंडी री वारता

४ सुन्दर, मनोहर। मोहक।

उ०—१ हंसी परी माधुरी सी चाल, अति अद्‌भुत रूप **रसाल**। मारग मिथ्यात उद्दाल। —वि. कु.

उ०—२ चंद्र-वदन अग-लोयणी जी, चपल लोचनी बाल। हरी लंकी अद्रु भाखणी जी, इंद्राणी सी रूप **रसाल**। —जयवांणी

उ०—३ वाचंती अगम्म वेद नाचंती वजाड़ै वीण। राचंती सुरंग अंग नाचंती **रसाळ**। —मा. वचनिका

उ०—४ राधा रांणी संग लिये, गोपी निकट गुवाळ। ऊपर कीजै ईस्वर, सुंदर स्यांम **रसाळ**। —गज उद्धार

५ प्रिय, प्यारा।

उ०—ससि-वदन अगलोचना रे, हरि लंकी सुविसाल। राजा मांनै अति घणी रे, जीव सूं अधिक **रसाल**। —जयवांणी

६ फलदायक।

उ०—राखौ आगै रसण रै, राघव नांम **रसाळ**। मुख मांझळ आंणौ मती, गिणौ अबक ज्यूं गाळ। —बां. दा.

७ शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल।

८ जोश पूर्ण।

उ०—विसाळ भाल कंधरा, **रसाळ** छत्ति युत्थरे। रहैं पदग्ग रेखतै, सु देखतें अरी डरै। —ऊ. का.

९ रसिक, प्रेमी।

१० आनन्ददायक, दिल चस्प।

उ०—मुझ नाचंतां भरह **रसाल** ए, स्युं जांणइ मूरख ताल। —हीराणंद सूरि

सं. पु.–१ रसमय या रसयुक्त पदार्थ।

२ आम, आम्र। (अ. मा., डिं. को.)

३ सेव आदि फल, फ्रूट।

उ०—अथवा मेह खंच करे रे लाल, ऊपर पड़ जावै काल सुविचारी रे। तो देणौ मोने मोकलौ रे लाल। अटवी मांही **रसाल** सुविचारी रे। —जयवांणी

४ गन्ना।

५ ऋतु विशेष में होने वाला फल।

६ कटहल।

७ कंदुर तृण।

८ बोलसर नामक गन्ध द्रव्य।

९ अमलबेत।

१० हल्दी। (अ. मा.)

११ गेहूं।

१२ वनस्पती विशेष। (सभा)

१३ ज, स, त, य, र, ल और ७, ९. पर यति वाला एक छंद विशेष।

१४ एक वर्णिक छंद विशेष जिसमें चार सगण व अंत में दो लघु होते हैं। (ल. पिं.)

उ०—पाए एकरिए रुप परिए, चवदह सहस चमाळ। सगए च्यारि लघु दोइ सुजि, रूपक नांम **रसाळ**। —ल. पिं.

[अ. इर्सालि, इरसाल] १५ भेंट, सौगात।

उ०—१ राव लाखणसीजी नै पाछा परवानां लिखनै ओठि नै सीख दीधी। रावजी नै **रसाळ** मेली।

—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—२ उठै बखतसिंह जी मेलियौ भागु राइकौ आंबा री रसाळदार **रसाळ** लेय आयौ। —मारवाड़ रा अमरावांरी वारता

१६ कर, महसूल, खिराज।

उ०—१ ताहरां मांडवगढ रै पातसाह मांणस चलाया। आदमीयां सागै एक कोड़ रुपीया घातिया। 'अकल-कैबास', 'मत-कैबास' साथे दीया–वीच कोई पूछै तौ कह्या, मांडव रै पातसाह विलाइत रै पातसाह नुं **रसाळ** मेली छै।

—रिणमल राठौड़ खाबड़ियै री बात

रू० भे०–रसावळ।

रसाळदार, रसालदार–वि.–१ रसदार, रसयुक्त।

उ०—उठै बखतसिंहजी रौ मैलियौ भागु राइकौ आंबां री **रसाळदार** रसाळ लेय आयौ। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

२ देखो 'रिसालदार' (रू. भे.)

रसाळू, रसालू, रसाळौ, रसालौ–देखो 'रसवाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ संवत चौद पंच्यासीइ ए वरचींउ चरी **रसालू** ए।

—हीराणंद सूरी

रसालौ–१ देखो 'रिसालौ' (रू. भे.)

उ०—१ रायांनेर वज्र सौ वणायौ गाढै रावरूपै, आयौ स्रीगोवाळ बेल चाढै वंस आब। हजारां **रसाला** वाढै अखाडै दिखाया हाथ, नबी री कसमां काढै वखांणै नबाब। —बां. दा.

उ०—२ अरु सं० १७३६ मा'राज पदमसिंघ जादम राय दखणी सूं झगड़ौ कर कांम आया तिणरी खबर मा'राज नूं हुई तद उणांरौ **रसालौ** सारौ अवैरचौ। —द. दा.

२ देखो 'रसवाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ जब नटवां की साला रे, गावै गीत **रसाला** रे।

—जयवांणी

उ०—२ निकल गया डाला रे, नहीं फल **रसाला** रे।

—जयवांणी

रसावळ–सं. पु.–१. २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें १३ व ११ मात्रा पर यति होती है। (रूपदीप पिंगल)

२ देखो 'रसाळ' (रू. भे.)

रसास्वादी–वि. [सं. रसास्वादिन्] १ किसी प्रकार के रस का स्वाद लेने वाला।

२ किसी विषय का आनन्द लेने वाला।

३ रसिक, रसिया।

रसि—१ देखो 'रस' (रू. भे.)

उ०—१ अवगति अगम अगम गम कीया, नौग्रह पलटि गगन रस पीया। ता **रसि** मुनिजन रया समाय। ता रसि मनि उलटि न जाय। —ह. पु. वां.

उ०—२ लाधइ सार सुधा रसिका **रसि** ते सिंचंति। अग धरीये अगलोचना लोच ना रंग चूकंति। —जयसेखर सूरि

उ०—३ राति विहांणी एण **रसि**, प्रात हुवौ असवार। मेछ अभंग महाबळी, आरुहि संग अपार। —रा. रू.

२ देखो 'रसी' (रू. भे.)

३ देखो 'रस्सी' (रू. भे.)

रसिक–वि [सं. रसिकः] (स्त्री. रसिका) १ किसी विषय का अच्छा ज्ञाता, मर्मज्ञ, काव्य मर्मज्ञ।

२ गुणग्राही।

३ रस पान करने वाला, रस लेने वाला।

उ०–नव द्वारां का **रसिक** नवेला, अलबत भग इधकाई। देख बिचार द्वार दसवें दिस, बिल्कुल राख बगाई। —ऊ. का.

४ विलास प्रिय, मौजी, मस्त।

५ रस लौलुप, लम्पट।

उ०—बिलळा ग्रंथ बांचै **रसिक** न राचै, छब छाती छोलंदा है। निकमा नर नारी बारंबारी, बळिहारी बोलंदा है। —ऊ. का.

६. भावुक सहृदय।

उ०—प्रथम नेह भीनौ महाक्रोध भीनौ पछै, लाभ चमरी समर झोक लागै। रायकंवरी बरी जेण बागै **रसिक**, बरी घड़ कंवारी तेण बागै। —बां. दा.

७ रसयुक्त, रसमय।

८ स्वादिष्ट, जायकेदार।

९ सुन्दर, मनोहर।

सं. पु. १ प्रेमी व्यक्ति।

२ सारस।

३ घोड़ा, अश्व।

४ हाथी, गज।

५ एक छंद विशेष।

रू० भे०–रसक।

रसिकता–सं. स्त्री. [सं.] १ रसिक होने की अवस्था या भाव।

२ मौज, मस्ती।

३ परिहास, हंसी, आनन्द, हर्ष।

४ सुन्दरता, मनोहरता।

रसिकबिहारी–सं. पु. यौ. [सं.] श्रीकृष्ण का एक नामान्तर।

रसिका–सं. स्त्री.–१ प्रत्येक चरण में ११ लघु मात्रा का एक मात्रिक छंद । (र. ज. प्र.)

२ वह स्त्री जो रास विलास व रमण करने योग्य हो ।

उ०—लाधइ सार सुधा **रसिका** रसि ते सिंचंति । अग धरीये अग लोचना लोच ना रंग चूकंति । —जयसेखर सूरि

३ देखो 'रसिक' (स्त्री.)

रसिकेस्वर–सं. पु. [सं. ऋषिकेश्वर] श्रीकृष्ण ।

रसियापण, **रसियापणौ** सं. पु. [सं. रसिक+त्व] १ रसिक होने की अवस्था या भाव ।

२ रसिकता, शौक, मस्ती, मौज ।

३ विलासिता ।

रसियौ–वि. [सं. रस+रा. प्र. इयौ, सं. रसिक] १ आनन्द या रस लेने वाला, रसिक । २ रसज्ञ, मर्मज्ञ ।

उ०—माया के रस रसिक है, बात कहत हैं दोय । रांम रसायण अजब है, पीवै **रसिया** होय । —ह. पु. बां.

३ जिसको किसी कार्य का विशेष शौक हो, शौकीन ।

उ०—१ मुंह पतलै पूठै मोटा, छछोहा ने कांनै छोटा । सोने री साखत कसीया, राजा हुवै चढतां **रसिया** । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ प्रथी भुगते तरण फतै पर्णा, हूंसनायक पणै मुनंद हंसियौ । 'मांन' हर धाड़ रे धाड़ जौवन मसत, राड़ रै बगत तणौ **रसियौ** । —महाराजा बहादरसिंघ रौ गीत

४ रति क्रीड़ा लोलुप, कामुक, विषयी, वेश्यागामी ।

उ०—१ हंसियौ जग आसक हुवौ, वसियौ खोवण वीत । **रसियौ** नागी रांड सूं, फसियौ होण फजीत । —बां. दा.

उ०—२ सोवै अळगी सायधण, सुपनें ही नह संग । गणिका सूं राखै गुसट, **रसिया** तोनैं रंग । —बां. दा.

५ हास परिहास करने वाला ।

६ मस्त, मौजी । छैल, छबीला ।

७ प्रिय, प्यारा

उ०— तुम ह्यां ही रहौ रांम **रसिया**, थारी सांवरी सुरति (में) मन बसिया । —मीरां

सं. पु.–१ पति, प्रियतम ।

उ०—१ प्यारा थांसूं पलक ही, बांछूं नहीं विजोग । उरबसिया मो आवजौ, **रसिया** थारौ रोग । —बां. दा.

उ०—२ दळबादळ बीच चमकै जी तारा, सांज समै पीव लागै जी प्यारा । कांई रे जबाब करूं **रसिया** । —लो. गी.

२ एक राजस्थानी लोक गीत ।

रू० भे०–रसीयौ,

रसी–सं. स्त्री. १ किसी घाव या फोड़े में पड़ने वाली पीब, मवाद ।

२ देखो 'रस्सी' (रू. भे.)

रू० भे०–रसि ।

रसीद–सं. स्त्री. [फा.] १ रूपये आदि की वसूली या अदायगी के बदले में दी जाने वाली पहुंच, प्राप्ति । प्राप्ति सूचना ।

२ वह पत्र या प्रमाण-पत्र, जिसमें उक्त प्रकार की प्राप्ति लिखकर दी जाती है ।

उ०—इण वास्तै फाटक में आयोड़ा रूळियार ढांढां री रसीद काटण मैं वांनै पूरी दिक्कत रै'वती । —अमरचूनड़ी ।

रसीनौ–सं. पु.–प्रेमी ।

उ०—अवसिरि आयौ यार असीनौ । आज सु दिन भयौ भाग पुरबलै, पायौ परम **रसीनौ** । —अनुभववांणी

रसीयौ–देखो 'रसियौ' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया दिल साबित भया, चितवा निहचळ होय । **रसीया** सोई जांणीयै, निज मन वसीया सोय । —अनुभववांणी

उ०—२ आव्यौ मास वसंत रे **रसीयां** रौ राजा । सुख चै साजा, तरु होइ ताजा । —वि. कु.

उ०—३ अवसर देखी पापी सेठै भूंडी द्रेठै, रांमा धन तौ **रसीया** रे लौ । —वि. कु.

उ०—४ रमतां हे सखि रमतां रूड़ी रीत, **रसीयौ** हे सखी रसियौ पदमणि मन वस्यौ जी । —प. च. चौ.

रसील–वि. [सं. रस+रा. प्र. ईल] रस युक्त, रसदार । मीठा, मधुर ।

उ०—सिवरी कुळ भील कुचील सरीरी, चाखत बोर **रसील** संचै । गहावत ढील करी नह गोविंद, वींच अंगीर मंजार वंचै । —भगतमाळ

रसीलणौ–वि. (स्त्री. रसीलणी) प्रेम या आनन्द में निमग्न रहने वाला । मस्त ।

उ०—झूटे फल लीन्हे रांम, प्रेम की प्रतीत जांण । ऊंच नीच जांने नहिं, रस की **रसीलणी** । —मीरां

रसीलापण, **रसीलापणौ**–सं. पु.–१ रसिक होने की अवस्था या भाव ।

२ रसयुक्त या रसमय होने की अवस्था या भाव ।

३ विलास प्रिय या कामुक होने की अवस्था या भाव ।

रसीलौ–वि. [सं. रस+रा. प्र. ईलौ] (स्त्री. रसीली) १ रसयुक्त, रसमय । २ स्वादिष्ट, जायकेदार ।

३ मधुर ।

उ०—१ सोहागिण रंग रंगीली, तुं प्रेम महारस भीली, सांभलि मुझ बात **रसीली** । —वि. कु.

उ०—२ नमौ रूप नद्दा सबद्दा **रसीली**, नमौ लच्छि रंभा नमौ वौम लीली । —मा. वचनिका

४ दिलचस्प, मजेदार ।

५ आनन्द दायक ।

६ विलास प्रिय, कामुक ।

७ बांका, छबीला ।

८ सुन्दर, मनोहर, कमनीय ।

उ०—१ सील सजीलौ रूप **रसीलौ**, छैल छबीलौ छावै । नील जळज तन छटा निराळी, लख लख कांम लजावै । —गी. रां.

उ०—२ वरतुळ सुछम कपोळ **रसीली** वांम रा । किया तयारी वेह, दरप्पण कांम रा । —बां. दा.

९ नाजुक, कोमल ।

उ०—दस इग्यारें बरसां री सराबोर **रसीली** ऊमर में ई उण रौ मन अघोरी रै उनमांन व्हैगौ । —फुलवाड़ी

१० प्रियतम, प्रेमी, रसिया, रसिक ।

उ०—कथ हरै निज कांमणियां रा अंबर ढीला । भांमण डूबी लाज न छोडे लार **रसीला** । —मेघ

११ रसज्ञ, मर्मज्ञ ।

१२ सार युक्त ।

उ०—हिवड़ां थांरौ जाभौ रे, वैराग छै ताजौ रे । पायौ धरम **रसीलौ** रे, रखे पड़ि जाय ढीलौ रे —जयवांणी

रसुगाळ—देखो 'रसउगाळ' (रू. भे.)

रसूक—सं. पु.—संबंध, व्यवहार ।

उ०—आछचा स्वभाव नै **रसूक** नरमी मन राखणौ सूं छै । —नी. प्र.

रसूगाळ—देखो 'रसउगाळ' (रू. भे.)

रसूल—सं. पु. [अ.] १ ईश्वर का दूत ।

२ ईश्वर का अवतार ।

३ पैगंबर ।

४ ईश्वर ।

उ०—हो मोहि लागी प्रीत **रसूलै**, नांव निमख नहीं भूलै । —अनुभववांणी

रसेंद्र—सं. पु. [सं] पारद, पारा ।

रसेस्वर—सं. पु. [सं. रसेश्वर] १ पारा, पारद ।

२ छः दर्शनों से अलग एक दर्शन का नाम ।

रसोइ—देखो 'रसोई' (रू. भे.)

उ०—१ गणपति गादह चारइ, क्रतांत कोट राखइ, सनीस्चर **रसोइ** चाखइ, मंगल स्रीखंड घसइ । —व. स.

उ०—२ आदित्य **रसोइ** तपइ, चंद्रमा घडी घडी अम्रत झरइ, यम पांणी बहइ, सात समुद्र मांजणउं करावइ । —व. स.

रसोइयौ—सं. पु.—१ भोजन बनाने वाला व्यक्ति, बावर्ची ।

२ पाक शास्त्री । कारीगर ।

उ०—हणै जावण दो । हूं काल **रसोइयै** नै बुलाय'र तै कर लेवूंला । **रसोइयौ** पैलै—श्री लंबर जोयीजै । चावै रुपिया पांच—ई लेवौ । —वरसगांठ

रू० भे०—रसोईयौ ।

रसोई—सं. स्त्री. [सं. रसवती] १ भोजन के रूप में बनने वाली खाद्य सामग्री, भोजन, खाना ।

उ०—१ ठाकर सगळी बातां रौ हुंकारौ भरचौ, गुलाब री मां धूप-दीप करचौ । **रसोई** बणाई, चूरमौ चूरचौ अर भूत देवता री जगां लेजा'र चढायौ । —दसदोख

उ०—२ अठी बाप-बेटा रौ संपाड़ौ सपूरण व्हियौ अर उठी सेठांणी री **रसोई** । गुळ रौ झरझरतौ मंगळीक सीरौ बणायौ । खीर बणाई । मालपूवा काढचा । पापड़-खीच्या तळचा । बाजौव्या ढाळ थाळ पुरसिया । —फुलवाड़ी

उ०—३ संपत रौ नह सोच सोच नह सरधा सोई । स्यांन गई नह सोच, सोच नह ध्यांन **रसोई** । —ऊ. का.

२ वह कक्ष जहां भोजन बनाया जाता है, रसोईघर, पाकशाला ।

उ०—१ बेटौ पांणी पीवण सारू गियौ तौ परिंडौ रीतौ । **रसोई** में गियौ तौ चूल्हा में वासदी री तिणग ई नीं । —फुलवाड़ी

उ०—२ कोई सुणियौ तौ माजना में कित्ती धूड़ घालैला—महाजन री **रसोई** में लोई रा छांटा । थांनै कीकर नींद आवै अर कीकर भूख लागै । —फुलवाड़ी

३ देव मन्दिर, मठ या किसी ब्राह्मण को दी जाने वाली, आटा दाल, घृत आदि भोजन सामग्री ।

उ०—ताहरां बांभण **रसोई** मांगै । द्यौ । ताहरां कहै माता, **रसोई** देसुं । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

रू० भे०—रसोइ, रसोय । अल्पा. रओड़ी, रसोड़ी ।

रसोईखांनौ, रसोईघर—सं. पु.—वह कक्ष या स्थान जहां भोजन पकाया जाता है । पाकशाला ।

रसोईदार—सं. पु. [राज. रसोई+फा. दार]१ भोजन या खाना बनाने के लिये नियुक्त व्यक्ति, बावर्ची ।

उ०—सु कमाल दी नै कमाल दी री बैर इणांनूं छांना राखै । आपरा छोरूवां सूं उपरंत किया राखै छै । इणां रै **रसोईदार** बांभण २ जुदा जुदा राखिया छै । —नैणसी

२ विशेष प्रकार का भोजन बनाने वाला कारीगर, पाक शास्त्री ।

रसोईदारी—सं. स्त्री.—१ व्यवसायिक रूप से भोजन बनाने का कार्य ।

२ बावर्ची के रूप में की जाने वाली नौकरी ।

रसोईबरदार—सं. पु. [राज. रसोई+फा. बरदार] खाना लेजाने वाला व्यक्ति ।

रसोईयौ—देखो 'रसोइयौ' (रू. भे.)

उ०—बार बार रा कारीगर **रसोईया** थमालिया । —दसदोख

रसोड़दार—देखो 'रसोईदार'

उ०—तिण समै **रसोड़दार** अरज कराई रसोड़ौ तयार हुवौ छै । —राव रिणमल री बात

रसोड़ी–देखो 'रसोई' (अल्पा., रू. भे.)

रसोड़ौ–सं. पु. [राज.] १ पका हुआ खाना, भोजन ।

उ०—१ तिण समै रसोड़दार अरज कराई **रसोड़ौ** तयार हुवौ छै ।
—राव रिणमल री वात

उ०—२ मिळतां रांण घरे महाराजा, ऊछव प्रगटै मिटै अकाजा । जिमी वस्त नित अन्नत जोड़ां, राजै नव नव भांत **रसोड़ां** ।
—रा. रू.

२ भोजन सामग्री, खाद्य सामग्री ।

उ०—अर सीस **रसोड़ा** आरंभे, भल कजाक घोड़ां भड़ां । अरि खांत अकब्बर ऊपरै, इसी भांत ऊरव्वड़ां । — रा. रू.

३ पाकशाला, रसोईघर ।

उ०—१ सीकरि का धणी सों भूमि दौलतवांन सैंठा । सो भी सेवसिंघ जी कै **रसोड़ै** आंगि बैठा । —शि. वं.

उ०—२ **रसोड़ै** बैठोड़ा बुजीसा बरजिया, मत जाग्रो जाया लड़ाई री लार ए, अन्नदाता भगड़े जूंजिया । —लो. गी.

रू० भे०–रस्रोड़ौ, रसड़ौ, रसोवड़, रमोवड़ौ, रसौड़ौ, रहोड़ौ, रहौड़ौ ।

रसोत–देखो 'रसौत' (रू. भे.)

रसोन–सं. पु. [सं.] लहसुन ।

उ०—**रसोना** दी गादी विलस नरमादी हित रख्यौ । लख्यौ स्वादौ स्वादी उपक्रत प्रमादी नहिं लख्यौ । —ऊ. का.

रसोपल–सं. पु. [सं.] मोती ।

रसोय–देखो 'रसोई' (रू. भे.)

रसोयीईस–सं. पु. [राज. रसोई+सं. ईश] पाकशाला का अधिकारी, जो पाकशाला के कार्य की देख रेख करता है । रसोई दारोगा ।
(डिं. को.)

रसोली–सं. स्त्री.–१ घोड़ों का एक रोग विशेष, जिसके कारण घोड़े के बगल में या पिछली टांग के टखने पर सूजन आजाती है या ग्रथी हो जाती है ।

२ कान में होने वाली एक फुंसी, फोड़ा ।

३ आंख के ऊपर भोहों के पास गिलटी निकलने का एक रोग ।

४ शरीर के किसी अंग में उठने वाली ग्रंथी ।

उ०—माई मभनइ ऊपनी, एक असंभव व्याधि । रिदयइं **रसोली** बिइ थइ, मन नहीं मोरि साधि । —मा. कां. प्र.

रू० भे०–रसौली ।

रसोवड़, रसोवड़ौ–देखो 'रसोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ एक दिन भरमल नूं कह्यौ, "उठै तौ दूध पावता अठै भूल गया ।" तद अरज कीवी, "जो म्हैं जांणी, हमैं कुंवरजी धरै पधारिया छै । **रसोवड़ै** सूं आवतौ हुमी ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ दूजै पण **रसोवड़ै** खवास कारखाने गंगाजळ वाळा सारा ही सूं हूं मिळूं छूं सो सगळा कहै छै खुस बे खुस री ही कोई खबर नहीं । —नापै सांखले री वारता

उ०—३ तद केसरीसिंह **रसोवड़ौ** करायौ, जीमियौ । इतरै में सहर रौ लोग सोवणी करणे लाग्यौ ।
—राठौड़ अमरसिंह री बात

उ०—४ वने जी री खातर भात हे रंधावां, जीमण रे मिस ग्राय रे राय **रसोवड़े** राय **रसोवड़े** । —लो. गी.

उ०—५ **रसोवड़ां** थाट भोजन रंधै, पण छतीस परकार रै । रात दिन थाट थड़िया रहै, जिकण 'पेम' जोधार रै । —पे. रू.

रसौंत–देखो 'रसौत' (रू. भे.)

रसौ–सं. पु. [सं. रस] १ गुड़, शक्कर या मिश्री का मीठा पानी, रस ।

२ जूस, शोरबा ।

३ देखो 'रस्सौ' (रू. भे.)

रसौड़ौ–देखो 'रसोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—राजा रै **रसौड़े** गया । मोड़ा गया ।
—कल्यांणसिंह वाढेल री वात

रसौत–सं. पु. [सं. रसोद्‌भूत] दारू-हल्दी की जड़ और लकड़ी को औटाकर और उसमें से निकले हुए रस को गाढा करके तैयार की जाने वाली एक प्रसिद्ध औषधि ।

रू० भे०–रसोत ।

रसौली–देखो 'रसोली' (रू. भे.)

रस्त–देखो 'रसद' (रू. भे.)

उ०—मास २ तोपां री वा बंदूकां री राड़ हुयबौ करी । अरु रस्त बंध कर दीनी । तद जगरूपसिंह विहारीदास लखवेरां जोइयां नूं रस्त पौहचावण रौ कहायौ । —द. दा.

रस्तागीर–देखो 'रास्तागीर' (रू. भे.)

उ०—नदी नाळां रे ऊपर पुळ बंधावै तिण सूं **रस्तागीर** सगळा आरांम उठावै सौ घणौ भलौ कांम छै । —नी. प्र.

रस्तौ–देखो 'रास्तौ' (रू. भे.)

उ०—१ अरु लाख दोय पोठिया रेत सूं भराय नें हलौ कियौ सू अठै वडौ भगड़ौ हुवौ । ऊलौ-पैलौ हजारां लोक कांम आयौ । आखर पोठया खाई मैं नाख **रस्तौ** कियौ । द. दा.

उ०—२ **रस्ते** में रस्ता खव्बा खस्ता, हस्ता खूब हिलंदा है । मसकरियां मांडै भड़वा भांडै, गुंडा बांध गछंदा है । —ऊ. का.

रस्म–१ देखो 'रसम' (रू. भे.)

२ देखो 'रस्मि' (रू. भे.) (नां. मा.)

रस्मि–सं. स्त्री. [सं. रश्मि] १ किरण, रश्मि ।

२ आभा, कान्ति, दीप्ति ।

३ प्रकाश ।

४ बागडोर, लगाम।
५ रस्सी, डोरी।
६ अंकुस, चाबुक।
रू० भे०—रसम, रसमि, रसमी, रसम्म, रस्म।

रस्य—वि. [सं.] रसवाला, रसदार।
सं. पु.—१ खून, रक्त।
२ शरीर का मांस।
३ देखो 'रहस्य' (रू. भे.)

रस्स—देखो 'रस' (रू. भे.)
उ०—पियै पग **रस्स** ब्रहम्मा पूत। अम्रत्त सोरंभ घुटै अवधूत।
—ह. र.

रस्सण—देखो 'रसना' (रू. भे)

रस्सम—देखो 'रसम' (रू. भे.)
उ०—जांणै वौ न जायौ जमंदूत जाडे, पुरांणै अढारे कियौ बूम पाडै। **रस्समै** समथ्थै कह्यौ सन्नमख्खे, समंपाद गातां ग्रहे पारसख्खे। —ना. द.

रस्सी—सं. स्त्री. [सं. रसना, प्रा. रसणा] १ सूत, मूंज, सण आदि के रेसों को बट कर बनाई हुई डोरी। रज्जु। गुण।
रू० भे०—रसि।
२ देखो 'रसी' (रू. भे.)

रस्सौ—सं. पु. [सं. रसना, प्रा. रसणा] १ सूत, मूंज, सण आदि के रेसों या तंतुओं का बटा हुआ मोटा डोरा, रस्सा।
२ घोड़ों की एक बिमारी।
३ देखो 'रसौ' (रू. भे.)

रहंचणौ, रहंचबौ—देखो 'रहचणौ, रहचबौ' (रू. भे.)
उ०— करेबा देव तणा कोइ कांम, **रहंचै** मांहि महाजळ रांम। महागिड़ पैस महाजळ मज्झ, किया तैं जुद्ध प्रथम्मी कज्ज।
—ह. र.

रहंचियोड़ौ—देखो 'रहचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रहंचियोड़ी)

रहंतणौ, रहंतबौ—क्रि. स.—संहार करना, मारना।
उ०—वीरम सु देपाळ वढंतौ, अणी चढै नह ऊ वहीयौ। राव राठोड़ां तणौ **रहंते**, राव जोईयां रण रहीयौ। —दूदौ बारहठ

रहंतियोड़ौ—भू. का. कृ.—मरा हुआ, संहार किया हुआ।
(स्त्री. रहंतियोड़ी)

रहंम—देखो 'रहम' (रू. भे.)
उ०—खांना ऊपर खीजियौ, खूंदालम्म **रहंम**। राजा नूं जाळौर रौ, दीनौ साह हुकंम। —गु. रू. बं

रहंमांन—देखो 'रहमांन' (रू. भे.)

रह—सं. पु. [सं. रथ, प्रा. रह] १ रथ।
उ०—ताहरइ नयरि गो हरि वाली, देखि भूमि कटकिइ **रह** वाली। धाउ उत्तर नराधिप आगइ, ताहरूं भलूं रूप सु लागइ।
—सालिभद्र सूरि
२ ऐकान्त।
३ प्रेम, मेल।
४ देखो 'राह' (रू. भे.)
उ०—गई रवि किरण ग्रहै थई गहमह, रह रह कोइ वह रहे **रह**। सुजु द्रुज पुरा नीसरै सूतौ, निसा पड़ी चालियौ नह।
—वेलि

रहकळौ—देखो 'रेंकळौ' (रू. भे.)
उ०—१ तद रावजी ठहर सारा घोडा खोलिया सिलहखांनौ लियौ खरची लीवी। **रहकळां** री गाडी दस एक थी सो लीवी।
— नापै सांखले री वारता
उ०—२ इकां वेहलां **रहकळां** ऊपर बैसांणजै छै।
—रा. सा. सं.
उ०—३ कठठ जूट **रहकळां** जूट नाळियां जंबूरां। रथ वहलां रैवत्त, भार पडतल भरपूरां। —सू. प्र.
उ०—४ भिड़ज जूथ बिजई भाराथै, सहंस अठार **रहकळां** साथै।
—सू. प्र.

रहक्कणौ, रहक्कबौ—क्रि. स.—गाया जाना, गाना।
उ०—केई ढोल कंसाळ, धरा ब्रहमंड धड़क्कै। सुरणायं सालुळं, राग सींधूओ **रहक्कै**। —पी. ग्रं.

रहक्कियोड़ौ—भू. का. कृ.—गाया हुआ।
(स्त्री. रहक्कियोड़ी)

रहड़णौ, रहड़बौ—क्रि. स.—१ लूट—मार करना, लूटना।
२ जीतना, अधिकार में करना।
उ०—आहंचि मीर आगरइ आइ, **रहड़िया** देस वाजा रुड़ाइ। पहिलउ खड़ग्गि चाढिय पठांण, आगरइ बयांनइ फेरि आंण।
—रा. ज. सी.

रहड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ लूट मार किया हुआ, लूटा हुआ. २ अधिकृत किय हुआ, जीता हुआ।
(स्त्री. रहड़ियोड़ी)

रहडू—देखो 'रहड्ड' (रू. भे.)
उ०—सेलां रा धमोड़ा पड़ै छै। सेलां रा फळ सूरां रै मोरै भांजि भांजि रहिआ छै। सूरां रै मोरै भूखा बाग ज्यों असवार नै घोड़ौ आफळि रहिआ छै। सूअरां रौ सिकार मांणीजै छै। एकल ढाहिजै छै। **रहडू** मंगाइजै छै। रहडू घाति घाति नै चलता कीजै छै। —रा. सा. सं.

रहच—देखो 'रहचण' (रू. भे.)
उ०—घाइ घांण उतरै, खांन सुरतांण निघट्टा। राव रांण हुइ

रहच, मीर उमराव अहट्टा। —गु. रू. बं.

रहचक-सं. पु.-युद्ध, लड़ाई।

उ०—तड़ां अन तड़ां सीसोद कीधां तंडळ, **रहचकां** रांण सुरतांण रीधां। सिंधुरां पड़ाउ लियण बंध सेहुरां, देहुरां देहुरां चाढ दीधां।
—उम्मेदसिंह सिसोदिया रौ गीत

रू० भे०—रहच्चक, रहच्क्कक।

रहचट-सं. स्त्री.-तेज दौड़।

रहचण-सं. स्त्री.-१ संहार, नाश।

२ कष्ट, दुख, विपत्ति।

वि.-मारने वाला, संहार करने वाला।

रू० भे०—रहच्चण।

रहचणौ, रहचबौ-क्रि. स.-१ संहार करना, मार काट करना, मारना।

उ०—१ त्रजड मेवाड़ रायजीप 'मालव' तणा, तुरक दळ **रहचिया** रायमल तीर। असर घड तोड ओहाल मुंह ऊतरे, नदी नदियां मिळै रातड़ौ नीर। —महारांणा रायमल्ल रौ गीत

उ०—२ रांवण कूंभ मेघ खर **रहचै**, कथ सौ वेद पुरांण कही। बगसी भूपां भूप बभीखण, सरणागत हित लंक सही।
—र. ज. प्र.

२ पराजित करना, हराना।

उ०—तबल वाज गजराज सकबंध अकबर तणा, **रहचिया** मीर हालै रंढाळै। —नैणसी।

३ वीरगति प्राप्त होना, मरना, झूंझना।

उ०—रिण **रहचिया** म रोय, रोए रिण छाडै गया। इण घर तौ आगा लगै, मरणौ मंगळ होय।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

रहचण हार, हारौ (हारी), रहचणियौ —वि.।

रहचिओड़ौ, रहचियोड़ौ, रहच्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रहचीजणौ, रहचीजबौ —कर्म वा.।

रहंचणौ, रहंचबौ, रहच्चणौ, रहच्चबौ, रहिचणौ, रहिचबौ
—रू. भे.।

रहचाणौ, रहचाबौ-क्रि. स. ['रहचणौ' क्रि. का. प्रे. रू.] १ संहार कराना, मार काट कराना, मरवाना।

२ पराजित कराना, हरवाना।

३ वीर गति प्राप्त कराना।

रहचाणहार, हारौ (हारी), रहचाणियौ —वि.।

रहचायोड़ौ —भू. का. कृ.।

रहचाईजणौ, रहचाईजबौ —कर्म वा.।

रहचावणौ, रहचावबौ —रू. भे.।

रहचायोड़ौ-भू. का. कृ.-१ संहार कराया हुआ, मार काट कराया हुआ, मरवाया हुआ. २ पराजित कराया हुआ, हराया हुआ. ३ वीर गति प्राप्त कराया हुआ।

(स्त्री, रहचायोड़ी)

रहचावणौ, रहचावबौ-देखो 'रहचाणौ, रहचाबौ (रू. भे.)

रहचावणहार, हारौ (हारी), रहचावणियौ —वि.।

रहचाविओड़ौ, रहचावियोड़ौ, रहचाव्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रहचावीजणौ, रहचावीजबौ —कर्म वा.।

रहचावियोड़ौ-देखो 'रहचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रहचावियोड़ी)

रहचियोड़ौ-भू. का. कृ-१ संहार किया हुआ, मारा हुआ. २ पराजित किया हुआ. ३ वीरगति प्राप्त हुवा हुआ।

(स्त्री. रहचियोड़ी)

रहच्चक, रहच्चक्क-देखो 'रहचक' (रू. भे.)

उ०—हजारां गुड़ै बीछुड़ै एक होदां। **रहच्चक्क** मातौ छुटै तक्क रौदां। —रा. रू.

रहच्चण-देखो 'रहचण' (रू. भे.)

रहच्चणौ, रहच्चबौ-देखो 'रहचणौ, रहचबौ (रू. भे.)

उ०—१ मरोड़ै गजां कंध त्रोड़ै मरद्द, **रहच्चै** जिसा सिंघ मुक्की रवद्द। कसीसै गुणां त्रीसटंकी कबांणां, बळी भीम बत्थां कळी पत्थ बांण। —वचनिका

उ०—२ महा दिय मांन करी गुह मीत, तारै सह कीर कुटुंब सहीत। करै कपि मित्र सुग्रीव सुकाज। **रहच्चै** बाळि दियौ कपि राज। —ह. र.

रहच्चणहार, हारौ (हारी), रहच्चणियौ —वि.।

रहच्चिओड़ौ, रहच्चियोड़ौ, रहच्च्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रहच्चीजणौ, रहच्चीजबौ —कर्म वा.।

रहच्चियोड़ौ-देखो 'रहचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रहचियोड़ी)

रहछह-सं. स्त्री. महफिल, गोष्ठी।

उ०—१ गोठ री तयारी कीवी। अमलां री **रह-छह** मंडी छै। भूरौ, मेवती, काळौ, किसनागर, आगराई, मरोडी, मुहरतोलौ लाभै तिण भांत रौ केसरियौ, पोतां घोळियौ, मनुहारां हुवै छै।
—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ सिकार चढती वगत अमलां री **रह-छह** मंडी। मनुहारां माथै मनुहारां होवण ढूकी। —फुलवाड़ी

रहट-देखो 'अरट' (रू. भे.)

उ०—१ भव २ भमते पार न पायौ, मोह **रहट** की माला। पावुं ग्यांनी तो अब पूछुं, कब यह मिटय कसाला। —ध. व. ग्रं.

रहडू, रहडूऔ-सं. पु.-एक प्रकार की गाड़ी जिसमें भार लादा जाता है, शकट।

उ०—१ फौजां आगै आतस चालै छै। जबरजंग नाळि, किलकिला

नालि, जंबूरनाळ, गजनाळ, हथनाळ, सुतरनाळ, कुहकबांण, रांम चंगी कई भांति भांति रा आराबा **रहडूए** घाती आवै छै।
—रा. सा. सं.

उ०—२ बैलों को शिक्षित करने हेतु बनाया गया गाड़ी नुमा छोटा वाहन।

रू० भे०—रहड़ू, रैडू

रहडण—वि.—रोकने वाला, अवरुद्ध करने वाला।

उ०—राव राय रखपाळ, राव **रहडण** रिम राहां। राव कुरूप हराय, राव वैरी पतसाहां। —नैणसी

रहडणौ, रहडबौ—क्रि. स.—१ रोकना, अवरुद्ध करना।

२ नाश करना, तहसनहस करना।

रहण—सं. पु.—घर, गृह, आवास। (अ. मा.)

वि०—१ रहने वाला।

२ देखो 'रहणी' (रू. भे.)

उ०—१ रवाई गढ, पांणी गढ, कटक तणउं गढ, वयरीप्रवेस नहीं, हाथियां तणा ढोवा नहीं, पाखरिया **रहण** नहीं। —व. स.

उ०—२ पाधारिसिउ म रांनि वारण वति पुरि **रहण** करउ। ताय तणइ बहुमांनि हुं आराधिसु तुम्ह पय।
—सालिभद्र सूरि

रहणाक—सं. पु.—गृह, सदन, घर। (ह. नां. मा.)

रहणि—देखो 'रहणी' (रू. भे.)

उ०—दादू **रहणि** कबीर की, कठिन विसय यहु चाल। अधर एक सौ मिळ रहचा, जहां न झंपै काळ। —दादूबांणी

रहणी—सं. स्त्री. [सं. रह्] १ रहने की क्रिया या भाव।

२ रहने का ढंग, तौर-तरीका, चाल-ढाल, रहन-सहन।

उ०—**रहणी** मैं जोगेस्वर वहणी मैं जगदीस। ग्रहणी मैं सिवनेत्र सहणी मैं अहीस। —रा. रू.

३ जीवन निर्वाह, व्यवहार, आचरण।

उ०—लूणीए फसले लाग देखी करी, राख्या आपणइ पासोजी। रूड़ी **रहणी** देखी रंजिया, सहु को कहइ साबासौ जी। —स. कु.

४ किसी विशेष सिद्धान्त या साधना को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप देते हुए किया जाने वाला जीवन निर्वाह। शुद्ध आचरण, मर्यादित जीवन।

उ०—१ कहणी प्रभु रीझै न कछु, **रहणी** रीझै रांम। सुपने की सौ म्होर सूं, कोडी सरे न कांम। —ऊ. का.

उ०—२ कथि कथि कहणी अगम की, **रहणी** रह्या न जाय। हरीया भेद विचार विन, लूण लखण नहीं काय। —अनुभववांणी

उ०—३ उत्क्रस्टी **रहणी** रहइ रिखि रूड़उ रे, साधतउ मुगति नउ पंथ रिखीसर रूड़उ रे। —स. कु.

५ आवास, निवास, ठहराव, विश्राम।

६ निष्ठा, श्रद्धा।

रू० भे०—रहण, रहणि, रहिणि, रहिणी रैंणी।

रहणौ, रहबौ—क्रि. अ. [सं. रह् प्रा. रहइं] १ बिना किसी परिवर्तन के एक ही स्थिति में अवस्थान करना, रहना, एक रस या समरस अवस्था में होना।

उ०—१ भजन करै याकौ बड भागी, भजै नहिं सो महा अभागी। लेवन लगन परम पद लागी। रात दिवस **रहिये** अनुरागी।
—ऊ. का.

उ०—२ जिम भविक **रहइ** सुतीरथ नइ दरसनि दातार **रहइ** सत्याभनइ संगमि......सुसिस्य **रहइं** सद्गुरुनइ सयोगि —व. स.

२ कहीं ठहरना, टिकना, विश्राम करना।

उ०—१ मइं घोड़ा बेच्या घणा, **रहियउ** मास चियारि। राति दिवस ढोलइ कन्हइ, **रहतउ** राज दुवारि। —ढो. मा.

उ०—२ वात सुणी पाछउ वलइ जां नवि देखइ गंग। चउवीसं [वासं] **रहइ** जिमु रइहीणु [अणंगु]। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ कुळ न्यात हीण फीटा कुटळ, जिकै बिगाड़ू जात रा। मम सेंण बात सुणज्यौ, मती **रहण** न दीज्यौ रात रा।—ऊ. का.

३ चलते हुए का रुकना, जाते हुए का ठहरना।

उ०—१ वयणे माळवणी-तणइ, **रहियउ** साल्ह कुमार। प्रेमइ बंध्यउ प्री **रहइ**, जउ प्री चालणहार। —ढो. मा.

उ० २ सासू वहूय न चालइ पाउ, ऊभउ न **रहइ** जूठिलु राउ। माडी बोलइ सांभलि भीम, केती भुइं वयरी नी सीम।
—सालिभद्र सूरि

४ किसी क्रम का चलना बंद होना, रुकना।

उ०—पिड़ जुड़वा भड़ पांच सौ, **रहिया** अडिग अरेस। कमंध सजूझा कांम छळ, दूजा आया देस। —रा. रू.

५ निवास करना, बसना।

उ०—१ आडा डूंगर भुइ घणी सज्जण **रहइ** विदेस। मांगी-तांगी पंखुड़ी, केती वार लहेस। —ढो. मा.

उ०—२ राय बीहंतइ तीणइं अवसरि दीधी तास चपेट। मझि घरि म **रहिसी** रे तूं लंपट पुरु हुंस पूरिउं पेट। —हीराणंद सूरी

उ०—३ घर में समझ्या घर रहौ, वन समझ्या वन मांहि। हरिया घर वन समझिकै, बोलण कु कुछ नाहिं —अनुभववांणी

६ मौजूद होना, वर्त्तमान होना, विद्यमान रहना।

उ०—१ जितै 'जसौ' पह जीवियौ, थिर **रहिया** सुरथांण। आंगळ ही 'अवरंग' सूं, पड़ियौ नह पाखांण। —बां. दा.

उ०—२ पछइ एह लक्ष्मी **रहइ** जउ वलतउ उपकार न कीजइं तउ क्रतघ्न हुईइ...... —व. स.

उ०—३ हउं गाइ वाली कुरुराय जाउं, वहइ जिकौ भूतलि वीरनांमउं। **रहु** सु मूं आगलि लेइ बांण, दाखउं जिसिइं युद्ध तणूं प्रमांण। —सालि सूरि

उ०—४ करणी कीरतवंत री, रैणा अंत रहंत। सब दांनां रौ सेहरौ, कीरत दांन कहंत। —ऊ. का.

७ स्थित होना, स्थापित होना, स्थिर होना। पाबंद होना।

उ०—१ अवलंबि सखी कर पगि पगि ऊभी, **रहती** मद वहती रमणि। लाज लोह लंगरै लगाए, गय जिम आंणी गयगमणि —वेलि

उ०—२ तुझ रणांगणि कारणि कउण हुउ, नृपति तेडी आगलि हूं **रहिउं**। कहिकि द्रोण कि भस्मि कि करण कइ, समरि हौ हिव तेडउं कइ सवइ। —सालि सूरि

८ किसी आधार या सहारे पर अवस्थित रहना, आधारित रहना।

उ०—वार वार वाखांणवै, सर 'प्रताप' संसार। सकौ **रहै** धर आसरै, आ. धर तो आधार। —जैतदांन बारहठ

९ किसी अवस्था या स्थिति विशेष में होना।

उ०—१ सालूरा पांणी विना **रहइ** विलक्खा जेम। ढाढी साहिब सूं कहइ, मो मन तो विण एम। —ढो. मा.

उ०—२ मन तन परमांनंद में, सानंद **रह्यौ** सदीव। सात सुखी संसार में, 'जसवंत' समौ न जीव। —ऊ. का.

उ०—३ या भव जग में यूं **रहौ**, ज्यूं कवळा जळ पास। हरिया जहां मन राखियै, जुरा न जम का पास। —अनुभववांणी

१० सम्पर्क में आना, साथ रहना।

उ०—दासीजादा दे दगा, पास **रहंता** पूर। रीझै खीजै राखणा, दासी जादा दूर। --बां. दा.

११ जीवन यापन करना, जीवित रहना, जीना।

उ०—१ धरीया अवतारूं अंत न पारूं, रहता एक **रहंदा** है। —अनुभववांणी

उ०—२ जहां पहलवां जीभ सूं, केकाउस कहियोह। अंतक केहर अगर औ, रुस्तम नंहं **रहियोह**। —बां. दा.

उ०—३ कोई कौमळ वसत्रे कोइ कंबळि। जण भारियौ **रहंति** जगि। —वेलि

१२ बचना, शेष रहना।

उ०—मोताहळ **रहसी** नहीं, हैवर हीर चमीर। जेहलिया जांतां जुगां, बातां रहसी बीर। —बां. दा.

१३ छूट जाना, रह जाना। पीछे रह जाना।

उ०—२ जन हरीया निरकार कुं, भजि पुंहते भौ पार। से आसै आकार कै, **रहिगै** ऊलै वार। —अनुभववांणी

१४ काम पर लगना, नौकर होना।

ज्यूं—वौ कारखांना में रह गयौ।

१५ चुपचाप समय बिताना, शान्त रहना।

उ०—१ मेछां राह निभाह कज, दिल्ली औरंग साह। ज्यूं सांमंद्र म्रजाद सूं, यूं **रहियौ** खम दाह। —रा. रू.

उ०—२ महि मोरां मंडव करइ, मनमथ अंगि नमाइ। हूं एकलड़ी किम **रहउं**, मेह पधारउ माइ। —ढो. मा.

१६ किसी कार्य में लगा रहना, संलग्न होना।

उ०—१ जुध दिल्ली **रहिया** जुड़ै, 'रैणायर' 'रुघपत्त'। गिर रांणै दळ सज्झिया, 'औरंगसा' असपत्त। —रा. रू.

उ०—२ ज्यूं ए डूंगर संमुहा, त्यूं जइ सज्जण हुंति। चंपावाड़ी भमर ज्यउं, नयण लगाइ **रहंति**। —ढो. मा.

उ०—३ सांवळि कांइ न सिरजियां, अंबर लागि **रहंत**। वाट चलंतां साल्ह प्रिव, ऊपर छांह करंत। —ढो. मा.

१७ होना।

उ०—१ सासू दादी सासुआं, राजी सयल **रहंत**। माजी नूं मीरां कहै, मोटा संत महंत। —बां. दा.

उ०—२ बैरे बेस न भर कियै, मन मे रह्यौ मबीर। हरिया साहिब सा धणी, पारि उतारे तीर। —अनुभववांणी

उ०—३ प्रधांन मनोहर परिसत्, सुभट स्रेणि, विनोदीयांना विनोद, साहस सो [वो] लांना समूह, उचित बोलानी ओलि, कलावंतनी क्रीडा भूमि, कूबडांनी कोडि वांमणाना विनोद, पुण्यवंत **रहइं** प्रमोद, वयरीह विसाद, कवि ना कल्लोल, वादी नउ विवाद, वैदेसिक विलास। —व. स.

उ०—४ सोसइ सइरु महातपि आतपि **रहइ** गंभीर। मोह तणा जग बंधव बंध वछोडइ धीरु। —जयसेखर सूरि

रहणहार, हारौ (हारी), रहणियौ —वि.।

रहिओड़ौ, रहियोड़ौ, रह्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रहीजणौ, रहीजबौ —भाव वा.।

रंयणौ, रंयबौ, रहवणौ, रहवबौ, 'रे'णौ रे'बौ' —रू. भे.

रहत—देखो 'रहित' (रू. भे.)

उ०—१ विस्सा हाथ आवै नहीं, मिस्सा जीव **रहत**। जीव सहित ते योगसा, स्री जिन वांणी तहत। —जयवांणी

उ०—२ हरीया ऐसा को मिळै, चित चौथै विसरांम। ताप त्रिगुण सुं **रहत** है, निज भगतां निहकांम। —अनुभववांणी

रहतिका—सं. स्त्री.—प्रथा, परम्परा, रीति रिवाज, रूढि।

उ०—काहूं के रस **रहतिका**, काहूं के रस कांम। काहूं के रस जोग का, हरिजन के रस रांम। —ह. पु. वां.

रहतौ—वि.—रहने वाला, न मिटने वाला, अमिट, अमर, स्थाई।

उ०—१ **रहता** सोई जांणीयै, रहता सूं मिळ जाय। हरीया रहता रांम विन, काळ घरासै आय। —अनुभववांणी

उ०—२ ऊ नांवज केवळ, वडे महाबळ, रोम रोम उचरंदा है। **रहता** सुं रहता, है निज तता, न्यारा हुय निरखंदा है। —अनुभववांणी

रू० भे०–रहितौ।

रहन, रहनी–देखो 'रहणी' (रू. भे.)

उ०—१ **रहन** अनोखी रीति सहन स्वभाव सीधौ, कहन सुनन कथा यथा तौर तन के। —ऊ. का.

उ०—२ किन जायौ किन घर मैं आयौ, मोल लियौ अर जती कहायौ। कहा भयौ जे जती कहाई। **रहनी** एक रती नहीं राई। —अनुभववांणी

रहम–सं. पु. [अ.] १ अनुग्रह, दया, कृपा।

उ०—विहद हंदी **रहम** देख जमदूत दहलै। —केसोदास गाडण

रहमत, रहमति–सं. स्त्री. [अ. रहमत] दया, करुणा, कृपा, तरस।

उ०—१ पछै बादसाह नूं चाहीजै आसा प्रभू री कृपा री करै और हिम्मत **रहमत** रहीम री छै। —नी. प्र.

उ०—२ धारेला गुर धरम कुं, डारेला दुरमति। टारेला जम चोट कुं, लारेला **रहमति**। —अनुभववांणी

रहमदिल–वि. [अ.] दयावान, कृपा करने वाला। तरस खाने वाला।

रहमदिली–सं. स्त्री. [अ.] १ 'रहमदिल' होने की अवस्था या भाव।

२ दया, करुणा, तरस।

रहमांण, रह्मांन–वि. [अ. रहमान] दयालु, कृपालु, मेहरबांन।

उ०—काबिल कलांम कहियत करीम, **रहमांन** इल्म रय्यत रहीम। —ऊ. का.

सं. पु.–ईश्वर, परमात्मा, खुदा।

उ०—१ हरीया जुग विड नीदीयै, जा कुं भगति न भाय। से रता **रहमांण** सुं, और न आवै दाय। —अनुभववांणी

उ०—२ हरीया हौदै बीच मैं, मुझि मिल्या **रहमांन**। पूरा लिख दिया पटा, खरच न खूटै खांन। —अनुभववांणी

उ०—३ दादू दिल अर वाह का सो अपना ईमांन। सोई साबित राखिये, जहं देखै **रहमांन**। —दादूबांणी

रू० भे०–रहंमांन, रहिमांण।

रहमांण-अंस–पु. [अ. रहमान+सं. अंश] ईश्वर का अंश, भगवान राम का अंश।

उ०—स्री सरसत गणपत नमसकार, दीजियै मुझ वर बुध उदार। अवसांण सिध **रहमांण, अंस** वाखांण करूं न्रप भांणवंस। —वि. सं.

रहरह–अव्य. [अनु.] रुक-रुक कर।

उ०—गई रवि किरण ग्रहै थई गहमह, **रह रह** कोइ वह रहे रह। —वेलि

रहरू–सं. पु.–रक्त, खून।

उ०—**रहरू** मेहौ राचियौ, रंगि धण विण सिर रीस। रखड़ी भळक न भू रखड़ी, खग भळक न खळ सीस। —रेवतसिंह भाटी

रहळ, रहल–सं. स्त्री. [अ.] १ पढ़ते समय पुस्तक रखने का एक आधार जो लकड़ी की दो पट्टियों को क्रोस नुमा (×) जोड़ कर बनाया जाता है।

वि. वि.–इसमें दोनों पट्टियां बीच में से कैंची नुमा जुड़ी होती हैं, जिससे इसको खोला व समेटा जा सकता है।

२ कार्तिक मास में चलने वाली मंद-मंद व ठंडी-ठंडी पवन। ठण्डी हवा का एक हल्का सा झोंका। (नां. डि. को.)

उ०—ठंडी **रहळ** चलाई हे रांम। —लो. गी.

रू० भे०–रहळि, रहळी, रहिळ, रैळ।

रहळि, रहळी–देखो 'रहळ' (रू. भे.)

उ०—अवरंग थाट झाट आछटिया, घड़ लूटिया भेळा धरण। वाळै हेम जिम बाहुडियौ, रूक **रहळि** दे झीक रण। —नाथौ सांदू

रहळू–वि.–खाली, रिक्त।

उ०—घर बसियौ घण नेह, चीत न बसियौ चूंडरा। रेह सगै तौ रेह, रयणायर **रहळू** थयौ। —फैंफांणंद री वात

रहवइ–सं. पु. [सं. रथपति+प्रा. रहवइ] रथ में बैठने वाला, रथ पति।

उ०—चूरइ **रहवइ** नरक रोडि दंतूसलि डारइ। अरजुन पाखव पंड कटकु हणतु कुणु वारइ। —सालिभद्र सूरि

रहवणौ, रहवबौ–देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)

उ०—आ उठै नायण रहै अर हीड़ा करै। रजपूतां तौ मीथौ मिठाई ले जाय देवै। इयै भांत **रहवै**। —चौबोली

रहवर–सं. पु.–१ सोलंकी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

२ उत्तम रथ, सुन्दर रथ।

उ०—हय गय **रहवर** जूजुवाए। लख चौरासी मदिर हुवाए। —वृ. रत.

रहवांण–देखो 'रहावण' (रू. भे.)

रहवाळ–सं. स्त्री. [फा. रहवार] घोड़े की एक चाल विशेष।

रू० भे०–रैवाळ।

रहवास–सं. पु.–१ रहने की क्रिया या भाव, निवास, विश्राम।

२ मकान, घर।

३ रहने का स्थान, निवास स्थान।

उ०—भरमल भहरौ आप री **रहवास** रौ उठै कर राखियौ थौ। —कुंवरसी सांखला री वारता

४ विश्राम करने का स्थान।

उ०—इसी **रहवास** री जायगा देख नै कुंवरसी रौ मन प्रसन्न हुवौ। —कुंवरसी सांखला री वारता

५ निजी महल, कमरा, कक्ष।

उ०—१ ताहरां कुंवर तो अठा सौं ऊठ अर आपरै **रहवास** आयौ पण उदास बहोत हुग्रौ। —नैणसी

उ०—२ तद भरमल री **रहवास** रै एक खिड़की कराई।
—कुंवरसी सांखला री वारता

६ अन्तःपुर, रनिवास।

उ०—१ तठै रांणी देखनै सखी नूं कह्यौ—तुं जाइनै कहि, रांणी **रहवास** रै चहवचै मांहै डूबी। अर रांणी तौ आप री कोटड़ी मांहै छिप रही छै अर सहेली जाय कही, राज, रांणीजी तौ **रहवास** रै चहवचै मांहै डूबा। —बूढी ठग राजा री बात

उ०—२ आदर अ्रत खित ऊठियौ, प्रथम सुता परवार। असवारी रा ऊधरा, अस बाढिया अपार। धड़च कनातां धार सूं, गौ **रहवास** मभार, नूरमली लख ल्हासतै, मौर भली तरवार।
—रा. रू.

रू० भे०—रइवास, रहवासि, रहवासी, रहास, रेवास, रैवास।

रहवासि, रहवासी—सं. पु.—१ रहने वाला, निवासी।

२ देखो 'रहवास' (रू. भे.)

उ०—साह गयौ दरगाह सूं, निज **रहवासि** अनेह। हितकर बोलाया हितू, गौसल अंतर गेह। —रा. रू.

रहस—१ देखो 'रहसि' (रू. भे.)

२ देखो 'रहस्य' (रू. भे.)

उ०—१ गुनी गुन गायौ जस छायौ या जहांन बीच, चार को उधार चाह्यौ **रहस** रचायौ तें। —ऊ. का.

उ०—२ पढवौ वेद पुरांण, सोरौ डण संसार में। बातां तणा बिनांण, **रहस** दुहेलौ राजिया। —किरपारांम

रू० भे०—रहसि, रहस्स, रहस्सि।

रहसणौ, रहसबौ—देखो 'रहचणौ, रहचबौ' (रू. भे.)

उ०—'पेम' 'मोहकम' 'अजन' 'लाल' मोटै परब, 'नवळ' 'ऊदौ' 'जगौ' 'जैत' हरनाथ। 'भोमसी' 'बाहदर' 'कसौरौ' खी······भड़, सांम छळ **रहसीया** नहसीया साथ। —सतीदांन बारहठ

रहसि—पु. [सं. रहस्] १ संभोग, मैथुन, केलिरस्।

उ०—१ रमतां जगदीसर तणौ **रहसि** रस, मिथ्या वयण न तासु महे। सरसै रुखमणि तणी सहचरी, कहिया मूं मैं तेम कहे।
— वेलि

उ०—२ स्रोण भील कम कर्मं, कियै करिमरां चडाए। रचे सेज रिण- भोम, कुसम अरि कमळ बिछाए। नखस तिक्ख सरकूंत, सहै अन-मंध अचग्गळ। पांण पयोहर कठण, मथै मैंगळ कुंभाथळ। विपरीत **रहसि**, वीरारस हि, रण दूभळ हुइ रठ्ठवड। सूतौ संग्रांम करि स्रोण हर, भूप मांण संग्रांम घड़।
—गु. रू. बं.

२ रहस्य, भेद।

रू० भे०—रहस, रहस्सी।

रहसियोड़ौ—देखो 'रहचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रहसियोड़ी)

रहस्य—सं. पु. [सं.] १ गुप्त भेद, गुप्त सूचना।

उ०—प्राणांत पहुमि परिणांम यस्य, रट्ठोर सकळ संबत **रहस्य**। हस्ताक्षर हेरहु हिय हुलास, दुरद्धर दुरुहरु 'दुरग्गदास'।
—ऊ. का.

२ किसी विषय में होने वाला वह सूक्ष्म अर्थ जो सर्व साधारण के समझ में नहीं आता है। गूढार्थ।

उ०—जो आगै चौरासी बंध रूपका के सब भेद नवरस अलंकार संजुगति ऐतौ सब ही सुणवै में आया। पै एक खट-भाखा की जुदी जुदी **रहस्य** तौ कहां कहां किसी किसी कवीसुर पास दरसाई। —सू. प्र.

३ मर्म या भेद की बात, गूढ बात।

४ गोपनीय विषय, गोपनीय सिद्धान्त।

५ ईश्वर एवं सृष्टि से सम्बन्धित गुप्त बातें जो ज्ञान चक्षु एवं साधना से जानी जा सकती है। (अध्यात्मवाद)

६ एक तांत्रिक प्रयोग।

रू० भे०—रवस, रस्य, रहस, रहस्स, रहिस।

रहस्यमंदिर—सं. पु. [सं. रहस्+मंदिर] केलिगृह, रतिक्रीड़ा-गृह, रंग-महल।

उ०—सखीयां आगै जाय केलिग्रह कहतां **रहस्यमंदिर** सयन मंदिर तिहिकौ अंगण मारजण कहतां संवारयौ। —वेलि टी.

रहस्स—१ देखो 'रहस्य' (रू. भे.)

२ देखो 'रहसि' (रू. भे.)

रहस्सी—१ देखो 'रहस्य' (रू. भे.)

२ देखो 'रहसि' (रू. भे.)

रहां—देखो 'रहा' (रू. भे.)

रहांण—सं. पु.—१ गांव या मोहल्ले का वह स्थान जहां पर लोग गपशप करने के लिए एकत्रित होते हैं। अथाई, बैठक।

उ०—हिमैं रतना चीता रौ गांव। विखै **रहांण** सारीखौ।
—नैणसी

रू० भे०—रयांण।

२ देखो 'रहणी' (रू. भे.)

रहा—सं. स्त्री.—कान, श्रवण।

रू० भे०—रहां।

रहाड़णौ, रहाड़बौ—देखो 'रहाणौ, रहाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ऐ दूहा मैं आखिया, रस नीत रौ **रहाड़**। सभा भरी मझ सांभळै, चिड़ै जिको हिज चाड़। —बां. दा.

उ० —२ जे कलभ क्रीडिउ निरमल नरमदा जलि, तेह कूपिका

जलि किम पूजइ भलि, जउ असभ चरिउ हुइ इक्षवाडि, तसु अगि किम पूजइ **रहाडि**, जेहे पीधउ हुइ इक्षुरस, तीहं किम भावइ लीवरस, जीहं हुइं दूध पासि, तीह किम भावइ लीब रस, जीह हुइ दूध पासि, तीह किम भावइ छामि''' ।
—व स

रहाडणहार, हारौ (हारी), रहाडणियौ —वि. ।
रहाड़िओडौ, रहाडियोडौ, रहाडयोडौ —भू का कृ ।
रहाडीजणौ, रहाडीजबौ —कर्म वा ।

रहाडियोड़ौ—देखो 'रहायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रहाडियोडी)

रहाणौ, रहाबौह—क्रि. स. ['रहणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ बिना किसी परिवर्त्तन के एक ही स्थिति मे अवस्थान कराना, एक रस या समरस अवस्था में कराना ।
२ अस्थाई रूप से कही ठहराना, टिकाना, विश्राम कराना ।
उ०—कमध घडा पूरे किलवाणी, पडियौ चाढ मुरद्धर पाणी । इण पर साह उदैपुर आयौ, आजमसा चीत्तौड **रहायौ** । —रा. रू.
३ चलते हुए को रोकना, जाते हुए को ठहराना ।
४ किसी क्रम का चलना बद कराना, करना । रोकाना, रोकना ।
५ निवास कराना, बसाना ।
उ०—गोरीसाह का खूनी हुसेन नागोर आया । मेरे दादे प्रथीराज प्राण ज्या **रहाया** । —रा. रू.
६ मौजूद करना, उपस्थित करना, विद्यमान रखना ।
७ स्थित, स्थापित या स्थिर करना, पाबद करना ।
८ किसी आधार या सहारे पर अवस्थित रखना, आधारित रखना
९ किसी अवस्था या स्थिति विशेष मे करना ।
१० सम्पर्क मे लाना, साथ रखना ।
११ जीवन यापन कराना, जीवित रखना ।
१२ छोड़ देना, रख देना ।
१३ बचाना, शेष रखना ।
१४ काम पर लगाना, नौकर रखाना ।
१५ शात व चुप-चाप रखना ।
१६ किसी कार्य मे लगा रखना, सलग्न या व्यस्त करना ।
१७ अधिकार मे या अधीन रखना ।
उ०—नोपासैर किल्ला छोडि बारै काम आया । किल्लौ सैर दोनूं राव सेखा कै **रहाया** । —शि. व.
१८ रखना ।
उ०—जळबा काज नरूकी जादम, धुर ऊठी पतिवरत तणौ ध्रम । रट हरि मुख पति ध्यान **रहायौ** । मजण कर सिणगार मंगायौ ।
—रा. रू.

रहाणहार, हारौ (हारी), रहाणियौ —वि. ।
रहायोडौ —भू. का. कृ. ।
रहाईजणौ, रहाईजबौ —कर्म वा. ।
रहाडणौ रहाडबौ, रहावणौ, रहावबौ —रू. भे. ।

रहायोड़ौ—भू का कृ.—१ बिना किसी परिवर्तन के एक ही स्थिति मे अवस्थान कराया हुआ, एक-रस या सम-रस अवस्था मे किया हुआ. २ अस्थाई रूप से कही ठहराया हुआ, टिकाया हुआ, विश्राम कराया हुआ. ३ चलते हुए को रोका हुआ, जाते हुए को ठहराया हुआ. ४ किसी क्रम का चलना बद किया हुआ, रोका हुआ. ५ निवास कराया हुआ, बसाया हुआ ६ मौजूद किया हुआ, उपस्थित किया हुआ, विद्यमान रक्खा हुआ. ७ स्थित, स्थापित या स्थिर किया हुआ, पाबंद किया हुआ. ८ किसी आधार या सहारे पर अवस्थित रक्खा हुआ, आधारित रक्खा हुआ. ९ किसी अवस्था या स्थिति विशेष में किया हुआ १० सम्पर्क मे लाया हुआ, साथ रक्खा हुआ. ११ जीवन यापन कराया हुआ, जीवित रक्खा हुआ. १२ छोडा हुआ, रख दिया गया हुवा. १३ बचाया हुआ, शेष रक्खा हुआ. १४ काम पर लगाया हुआ, नौकर रक्खा हुआ. १५ शांत या चुप चाप रक्खा हुआ १६ किसी कार्य में लगा कर रक्खा हुआ, संलग्न या व्यस्त किया हुआ १७ अधिकार में या अधीन रक्खा हुआ. १८ रक्खा हुआ ।
(स्त्री रहायोडी)

रहावण—स. स्त्री—१ रहने की क्रिया या भाव ।
२ रहने का ढंग, तरीका ।
३ सभा, बैठक ।
वि.—१ रहने वाला/वाली, रहने योग्य ।
उ०—कीध तै तिका राव-राण जाणै कमध, **रहावण** वात सिर दुवै राहा । जसा-अखियान ते साहि सूं झूटतां, सार झळि लूटतां पातिसाहा । —जसवतसिंह राठौड़ रौ गीत
२ रखने वाला ।
उ०—गढ जाळ धर राखियौ, भडारी मनरूप । अनमी त्यां नामण डळा, भोमि **रहावण** भूप । —रा. रू.
रू० भे०—रहवाण ।

रहावणौ—वि.—रखने वाला ।
उ०—रीति **रहावणौ** जी, ऊंची आदरी कीरति कवि करै जी । पर भुंइ पस्सरी प्रघट प्राक्रमी जी, खत्रवट वपि खरी वासौ खग वसै जी । —ल. पि.

रहावणौ, रहावबौ—देखो 'रहाणौ, रहाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ ईंदौ इद्र जिही पण आदर । सुर सुर धरम **रहावण** सभर । सारौ दळ भाजा पतसाही । नरां वखांण वाच सिरवाही ।
—रा. रू.

उ०—२ जस गल्ह **रहावण** जे सहल, मइयळ भजै मेहवर। 'गजगल्ल' 'मल्ल' 'गगे' कुळी, रिण दुभल्ल रट्टौड़–हर।
—गु. रू ब.

उ०—३ कायथ कत्थ **रहावणा** सांम कांम समराथ। काया त्यागी केहरी, नह दी माया नाथ।
—रा. रू.

रहावणहार, हारौ (हारी), रहावणियौ —वि.।
रहाविप्रोडौ, रहावियोड़ौ, रहाव्योडौ —भू का. कृ.।
रहावीजणौ, रहावीजबौ —कर्म वा.।

रहावियोड़ौ–देखो 'रहायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री, रहावियोडी)

रहास–देखो 'रहवास' (रू. भे)
उ०—**बागौ पै'रै**, पाघ बाधै, मुद्रा लपेटी राखै, रजपूता नै घोड़ा ऊंट बगसीस करै, नै माहै तो कोइ जायै नही, बारै हीज **रहास** करायनै रह्यौ। —जखडा मुखडा भाटी री बात

रहिचणौ, रहिचबौ–देखो 'रहचणौ, रहचबौ' (रू. भे.)
उ०—रासि जसहि **रहिचीया** पलब बुसट सापडियौ। मधुवन मा माहवा, लाख दैता सूं लडियौ। —पी. ग्र.

रहिचियोड़ौ–देखो 'रहचियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. रहिचियोडी)

रहिणि, रहिणी–देखो 'रहणी' (रू. भे.)
उ०—एकणि **रहिणि** बडी मति आसति, सामा सोह चडावण साख। विरिद उजाळ भाळ भुजाळ धजाबध, भूपति भेद लहै खट-भाख। —ल. पि

रहित–वि. [सं.] १ हीन, विहीन।
उ०—भीखणजी स्वामी बोल्या–तिम ए धोवण उन्हौ पाणी पीवै पिण समकित चरित्र **रहित** तिण सू बणी बणाइ आह्मणी रा साथी है। —भि. द्र.
२ बगैर, विना।
३ अभाव पूर्ण, अपूर्ण।
४ पृथक, अलग, मुक्त।
५ त्यागा हुआ, त्यक्त, छोडा हुआ।
६ निर्जन।
७ अकेला।
रू० भे०–रहत, रहिय।

रहितौ–देखो 'रहतौ' (रू. भे.)

रहिमांण–देखो 'रहमाण' (रू. भे)
उ०—दईवांण सुरताण दीवांण तूं हीज देवा, मांडिया मडांण केई समंद मथाण। कुरवांण **रहिमांण** कुराण पुराण कहै, आपरौ कल्याण दाण उग्रसेन आण। —पी. ग्र.

रहिय–देखो 'रहित' (रू. भे.)
उ०—विरचइ विपिन विच क्षण तक्षण दस वि दसार। नव नव निरमल भूखण दूखण **रहिय** सिंगार।
—जयसेखर सूरि

रहियोड़ौ–भू. का. कृ–१ बिना किसी परिवर्तन के, एक ही स्थिति में अवस्थान किया हुआ, रहा हुआ, एक रस या सम रस अवस्था में हुवा हुआ. २ अस्थाई रूप से कहीं ठहरा हुआ, टिका हुआ, विश्राम किया हुआ. ३ चलने से रुका हुआ, जाने से ठहरा हुआ. ४ बद हुवा हुआ, रुका हुआ। (क्रम) ५ निवास किया हुआ, बसा हुआ. ६ मौजूद हुवा हुआ, वर्तमान हुवा हुआ, विद्यमान रहा हुआ. ७ स्थित, स्थापित या स्थिर हुवा हुआ, पाबद हुवा हुआ. ८ किसी आधार या सहारे पर अवस्थित रहा हुआ, आधारित रहा हुआ. ९ किसी अवस्था या स्थिति विशेष मे हुवा हुआ. १० सम्पर्क मे आया हुआ, साथ रहा हुआ. ११ जीवन यापन किया हुआ, जीवित रहा हुआ, जीया हुआ. १२ बचा हुआ, शेष रहा हुआ. १३ छूटा हुआ, रहा हुआ, पीछे रहा हुआ. १४ काम पर लगा हुआ, नौकर हुवा हुआ. १५ चुपचाप समय बिताया हुआ, शान्त रहा हुआ. १६ किसी कार्य में संलग्न हुवा हुआ. १७ हुवा हुआ।
(स्त्री. रहियोड़ी)

रहिळ–देखो 'रहळ' (रू. भे.)
उ०—हेमत रित लागी। सिसिर रित री रूक **रहिळ** वागी।
—रा. सा. सं.

रहिस–देखो 'रहस्य' (रू. भे.)
उ०—१ जद सुसलौ बोल्यौ–सैंहदी जागां छूटै नही। ज्यूं साची स्रद्धा री **रहिस** बेठी पिण आगला सैंहदा कुगुरु त्यारौ संग छोडै नहीं। —भि. द्र.
उ०—२ गहूं कोदूं पर अमल रंग का चढाव तिस बखत रंग–राज के हौक (बै) रस **रहिस** की बात। अमलूं का चढाव सोभा दरसात। —सू. प्र.

रहीम–स. पु. [अ.] १ ईश्वर का एक नामान्तर, परमात्मा, खुदा।
उ०—एकादसी वरत हिंदवाणौं, रोजा ईद भया तुरकांणौं। करि करि ईद इग्यारसि रोजा, रांम **रहीम** न पाया खोजा।
—अनुभववाणी
२ बादशाह अकबर के दरबार के एक मंसबदार, अब्दुल रहीम खानखाना का कविताई उपनाम।
वि. वि.–ये एक अच्छे कवि थे। साहित्य जगत में आज भी इनका नाम प्रमुख कवियों में गिना जाता है।
वि.–दयालु, कृपालु।
उ०—काबिल कलांम कहियत करीम, रहमांन इल्म रव्यत **रहीम**।
—ऊ. का.

रहीस–देखो 'रईस' (रू. भे.)

उ०—महिमा महीस ते सहीम लो सुनी है मुख। मारू धराधीस की **रहीस** सुन रीसे ना। —ऊ. का.

रहोड़ौ, रहौड़ौ–देखो 'रसोड़ौ' (रू. भे.)

रह्यौ-सह्यौ–वि. [अनु] बचा-खुचा, रहा-सहा, अवशिष्ठ, शेष।

रां–देखो 'रा' (रू. भे.)

उ०—पछिमिसा आव तूं ल्याव पांडव प्रभू, महमहण ताहरा असख मेळा। बाधिया काइ बळिराउ **रा** बेलियां, भूधरा करौ पहिळाद भेळा। —पी. ग्रं.

रांइणि–देखो 'रांयण' (रू. भे.)

उ०—नीला नारिगा, रगइ दीसतां सुरंगा, पाकी नीकोली **राइणि,** प्रीसी मांइणि, दाडिमनी कली, खाता पूजइ रली। —व. स.

रांक–वि. [स. रक] १ कायर, डरपोक, भीरू।

उ०—एक वीर तनु रोम उध्रसइं, एक **रांक** रिण माहि नीसरइ हैय देव कुणि दुरमति दीधी, एउ ओळग अह्मे कांइं लीधी। —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'रक' (रू. भे.)

उ०—१ राजीया केई दीवाण **रांक**, सुर कोडि तीम सुर करै माक। प्रणमति नाग अनेक पीर, साहिबी नमौ सामळ सरीर। —पी. ग्र.

उ०—२ अगनि फूल, सती रौ नाळेर, काली रौ बेहडौ, रुळीआरा रौ जोड़, **रांकां** रौ माळवौ, कुआरी घडा रौ वींद। —रा. सा. स.

रांकड़ौ–देखो 'रक' (अल्पा., रू. भे)

उ०—कळप्या कोडि किनक, लीला ही लाभै नही। मो **रांकडै** रतंन, दियौ दया करी देवजी। —वील्हौजी

रांकमुहा–सं पु–पंवार राजपूत वश की एक शाखा।

रांकावत–स. पु–ऋग्वेदी ब्राह्मणो की एक जाति जो साधु, स्वामि नाम से सबोधित की जाती है।

रांग–स. स्त्री.–१ मकान, महल किले आदि की नीव।

उ०—१ पछै घणौ साथ राखियौ। घणा घोड़ा लिया। गढ घातण री **रांग** रोपाई। भीत हूंण लागी। —नैणसी

उ०—२ तळाव किलाणसागर राणी हाडीजी नाम जसरगदेजी हाडी माहाराज स्री जसवतसिघजी री राणी बूंदी रा राव छतरसालजी री बेटी सं० १७२० रा वैसाख सुद १५ **रांग** माडी नै सं. १७३० रा जेठ सुद प्रतसटा हुई। —मारवाड री ख्यात

२ दरार।

३ बबूल व बेर के वृक्ष की छाल, जो शराब बनाने तथा चमड़ा कमाने के काम आती है।

४ एक वृक्ष विशेष, बेर का वृक्ष।

उ०—१ रावण **रांग** रताजणी, रवणी नइं रुद्राख। रुक रुदंती रायसलि, रोहड़ रोहिणी लाख। —मा. कां. प्र.

उ०—२ रांमोडी नइं रासना, रीगिणि रुद्र-जटाय। **रांग** रतांजणि रमडी, रनि वनि रंग धराय। —मा कां. प्र.

५ देखो 'रांन' (रू. भे.)

उ०—कध कूकड वक मुहा कवळा। उछळंत कुळांछि जिके अवळा। अवलक्ख ऐराकी चखां अंजणी। **रांग** दाबत नाचत मोर रणी। —मा. वचनिका

रांगड़–देखो 'रघड' (रू. भे.)

रांगड़ापण, रांगड़ापणौ–स. पु.–वीरत्व, योद्धापन।

उ०—जागिया ठोर सिंधू गावै जांगड़ा, लड़ण रण खांगड़ा वीर हलकै। भेर तण जठै पीधा अमल भागड़ा, जो मरद **रांगड़ापणौ** झळकै। —माधोसिंह सक्तावत रौ गीत

रांगड़ौ–देखो 'रंघड़' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—साकुरा ऊपड़ी बागां हैकपै आलमां सारी, हणू मार लंक नै दिखाया भारी हाथ। बेढीगारां **रांगड़ां** यू धमारां बातां, नगारा बागता गांम लूटिया निघाथ। —विसनसिंघ राठौड रौ गीत

रांगजड़–सं. स्त्री.–बेर वृक्ष की जड़। (शेखावाटी)

उ०—रळा **रांगजड़** रंग, वणावै दारू देसां। मुळकत मन मतवाळ, कोटड्या हुवै हमेसा। —दसदेव

वि. वि.–यह औषध मे भी काम आती है। (अमरत)

रांगटौ–देखो 'रूगटौ' (रू. भे.)

रांगणवाय–स. स्त्री. [स. रिंग] एक प्रकार का वात रोग जिससे कमर, कूल्हो और टाग मे दर्द होता है, गृध्रसी।

रू० भे०–रीगणबाव, रीघणबाव।

रांगरंगीलौ–देखो 'रंगरंगीलौ' (रू. भे.)

उ०—गुड्डी तेरी **रांगरंगीली** तकली चक्करदार। चोखौ बण्यौ दमड़कौ तेरौ, कूकड़िये रौ लार। —लो. गी.

(स्त्री. रागरंगीली)

रांगलौ–वि.–रगदार, रंगीन।

उ०—चरखौ तो ले ल्यूं भवरजी **रांगलौ** जी, हा जी ढोला। पीढौ लाल गुलाल। —लो. गी.

रांगै–क्रि. वि.–१ सही रास्ते पर।

उ०—म्हें माळै ऊभी आं सगळां नै घणा ई बरजिया। किणी भाव नी मान्या तौ म्हें गोफण रा सटीड़ उडाया। दो असवारा रै ढिगली व्हिया पछै ऐ **रांगै** आया। —फुलवाड़ी

२ वश में, काबू मे, प्रभाव में।

उ०—नानी पोटाय पोटाय, बिलमाय-बिलमाय हार थाकी पण दस बरसा रौ बाळ-हठ **रांगै** नीं आयौ सौ नी आयौ। —फुलवाड़ी

३ सामान्य दशा या अवस्था मे, साधारण स्थिति में।

रांगौ–सं. पु. [स. रग] श्वेत रग की एक अत्यन्त मुलायम धातु जो बहुत चमकीली होती है और जिसकी बर्तनों पर कलई की जाती है।

रांघड़, रांघड़ौ–देखो 'रंघड़' (रू. भे.)

उ०—१ चसळकै दंत चरखी चलाय, खिज रया दिवांना भग खाय। **रांघड़ा** थळी रा जूंग राज, गूंगला जोड रा करय गाज।
—पे. रू.

उ०—२ टाळ्या सिरदारां रा माथा देख्या पछै ई थें चलाय नै बीड़ौ उठायौ। ऐ **रांघड़ां** रा काम तौ राघडा नै ई छाजै।
—फुलवाड़ी

रांचणौ, रांचबौ–क्रि. अ.–१ खड़े खडे तकना, लालायित होना। किसी को एक-टक देखते रहना।

उ०—पग तौ मसांणां लग पूगा अर हाल पातर रै घरै **रांचतौ** फिरै। —फुलवाडी

२ चोरी करने या हड़पने की दृष्टि से ताकना, घात लगाना।

उ०—१ जार तणौ गुण जाय, रात पडै जद **रांचवा**। ठग कोई साधु थाय, माळा ग्रहिया 'मोतिया'। —रायसिह सादू

उ०—२ दूसरा जेम नह **रांचियौ** देख नै, अरस रौ खाचियौ थकौ आयौ। लांघड़ौ कपी ज्यू राम लायौ लडै, लड़ै जिम 'जुहारौ' भ्रात लायौ। —बुधजी आसियौ

उ०—३ दातार है जिण सूं धन नही धन विना मैहल वणै नही सूरवीर पणा सूं धन री कुमी नही जिण सू धाडायत **रांचीया** नै खाणार पीणार जिण सूं धन जमै होवै नही तद ऐवास वणै नहीं। —वी. स. टी.

३ किसी बात का ध्यान देना, ध्यान रखना।

उ०—सह **रांचै** जन सादिया, मत बहुरौ कर मांन। कीड़ी पग नेवर भणक, भणक सुणै भगवान। —र. ज. प्र.

४ देखो 'राचणौ, राचबौ' (रू. भे.)

रांचणहार, हारौ (हारी), रांचणियौ —वि.।

राचिग्रोडौ, राचियोड, रांच्योडौ —भू. का. कृ.।

रांचीजणौ, राचीजबौ —भाव वा.।

रांचियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ खडे खड़े तका हुआ, लालायित हुवा हुआ, किसी को एक टक देखा हुआ. २ चोरी करने या हड़पने की दृष्टि से ताका हुआ, घात लगाया हुआ. ३ किसी बात का ध्यान दिया हुआ, ध्यान रखा हुआ।

४ देखो 'राचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रांचियोडी)

रांझट–सं. स्त्री.–तकरार, विवाद, झंझट।

उ०—'मा'राज! वाराना में जचा'र आठाता किया देवौ हौ।' क्या कैवूं? म्हारी डोकरी गोरमिंटी इयै ऊपर म्हारौ जोर को चालै नी।' डोकरी बोली—नाखै कनी राड रा, क्यूं **रांझट** करै है? —वरसगांठ।

रांझौ–स. पु.–१ समस्या, उलझन।

उ०—पुटियौ तो लिया दिया बैठौ हौ। कैवण लागौ—गेंडौ एक कावळ **रांझौ** पडग्यौ। सात समंदरा पार लोग इण बात रौ लेखौ लेवण सारू भेळा व्हिया के दुनिया मे मिनख घणा है के लुगाया घणी। —फुलवाड़ी

२ व्यवधान, विघ्न, अड़चन, बाधा।

उ०—१ थें निरात सूं सोवौ म्है इण सनमन मे की **रांझौ** नी पटकूंला। इण सगाई में राझौ पटकियां म्हारी सीख मे पैं'ला **रांझौ** पड़ै। —फुलवाडी

उ०—२ थूं डोकरी नै इत्ती डराय दी तौ पछै की **राझौ** ई नी रह्यौ। —फुलवाडी

रांटलौ–देखौ 'रांटौ' (अल्पा., रू. भे.)

रांटौ–वि. (स्त्री. रांटी) १ मुडा हुआ, टेढा।

२ टटा फिसाद करने वाला। (अल्पा. राटलौ)

रांड–सं. स्त्री. [स. रण्डा, रडा] १ वह स्त्री जिसका पति मर गया हो, विधवा स्त्री।

उ०—१ हाथ झटक झिझकार हस, नाथ न लेऊं नामजी। भव भाड इसे भरतार सूं, **रांड** भली श्रौ रामजी। —ऊ. का.

उ०—२ चल रंगरेजा में नहिं चाहूं, भल नहिं सोभा भंग। अलमित देखिर जळै अंग में; **रांड** कसूमल रंग। —ऊ. का.

२ वैश्या, रडी, पतुरिया।

उ०—हसियौ जग आसक हुए, बसियौ खौवण वीत। रसियौ नागी **रांड** सूं, फसियौ होण फजीत। —बा. दा.

३ व्यभिचारिणी स्त्री, कुल्टा नारी।

उ०—जुरती नहि आवन जावन की, फुरती नहिं **रांड** फसावन की। परवाह न पाट पटंबर की, अब चाह सु कंबर अंबर की।
—ऊ. का.

४ स्त्री के लिए एक भद्दी गाली।

उ०—१ 'लाव तमाखू लाव' पाव पुळ चैन न पावै। '**रांड** सूयगी राड' जुलम सब रैन जगावै। —ऊ. का.

उ०—२ जद हिंसा धरमी बोल्या—दया २ स्यूं पुकारौ छौ। दया **रांड** पड़ी उखरली में लोटै। —भि. द्र.

उ०—३ पेट रा जाया ई धाबळां रां गुलांम बणग्या। पछै ऐ लिछमियां क्यूं धारै। **रांडां** रा तन तन मे कीड़ा पड़ै।
—फुलवाड़ी

५ स्त्री जाति के लिये एक भद्दा सम्बोधन।

६ वह गाथा छंद जिसमें 'जगण' का अभाव हो।

उ०—जगण विना सो **रांड** गणीजै। किणी मांझ सौ गाहा न कीजै। —र. ज. प्र.

रू० भे०—रडत्ती, रंडा, रंडी, राडो।

अल्पा. राडोली—मह०—रड, रंडाळ।

रांडणौ, रांडबौ—क्रि. स. [सं. रण्डा] किसी स्त्री के पति को मार कर विधवा बनाना।

उ०—रावण मन जांणियौ करूं सीता पटराणी। **रांडी** मदोदरी लक पुनि हुई बिरांणी। —ग्रोपौ ग्राढौ

रांडापौ—देखो 'रंडापौ' (रू. भे)

रांडावणौ, रांडावबौ—देखो 'रांडणौ, रांडबौ'।

रांडियौ—वि—१ स्त्री-लोलुप।

उ०—दाम री भांम भेली दुकर, भव सारै नै भांडियौ। छिता पर इता गुण छोड दै, राड न छौडै **रांडियौ**। —ऊ का

२ अयोग्य, नामर्द, कायर।

उ०—गोरी री कमाई खासी **रांडिया** रे, हा ए गोरी, कै गाधी कै मणियार। म्है छा बेटा साहूकार रा जी। —लो. गी.

रांडी—देखो 'रांड' (रू. भे.)

उ० १ पाचे पाटे भद्रिउ भीमि भिडी ऊपाडी रीस। नवि मारिउ छइ माडी वयणि जिम नवि दीसइ **रांडी** भयणि। —सालिभद्रसूरि

उ०—२ भांभे आगं हुवा जोतिगी, आ' तौ आई वात वरतगी। रांम भगति विन व्हैगी भाडी, मुवै कुं परणाया **रांडी**। —अनुभववाणी

रांडीरांड—स. स्त्री.—विधवा स्त्री।

उ०—वा धणी रै मरण री सुणावणी, वौ मा रौ रोवणौ, वौ **रांडीरांड** री भेख— —फुलवाडी

रांडीरोणौ, रांडीरोवणौ—सं. पु.—व्यर्थ की टाय-टाय, अनर्गल प्रलाप। अपना रोना हर किसी के सम्मुख रोने की क्रिया या भाव।

उ०—म्है थारौ मरम सुणण सारू आई हूं, पण पैं'ला थोडौ सौ म्हारौ **रांडी-रोवणौ**—रोवूं'ला। —फुलवाडी

रांडूल्यौ—देखो 'रांडोलौ' (रू. भे.)

रांडेपौ—देखो 'रडापौ' (रू. भे.)

उ०—वडि विण वाद न कीजै राणा, अथग न पैसे पाणी। राज गयौ **रांडेपौ** आयौ, भणै मंदोदर राणी। —मेहोजी गोदारौ

रांडोलियौ—देखो 'राडोलौ' (रू. भे.)

रांडोली—देखो 'राड' (अल्पा.; रू. भे.)

उ०—नैणा रा सोगन करै, भै मांनै सुण भूत। रांमत ढूलां री रमै, **रांडोली** रा पूत। —बां दा.

रांडोलौ, रांडोल्यौ—वि.—स्त्रियो केसे स्वभाव वाला, कायर, नामर्द, अयोग्य

उ०—ना नारी नां नाह, अद विचला दीसै अपत। कारज सरे न काय, **रांडोलां** सूं राजिया। —किरपाराम

२ जिसकी स्त्री मर गई हो।

रू० भे०—रांडूल्यौ, रांडोलियौ,

रांढु, रांढू—स. पु.—मोटा, रस्सा।

उ०—१ साखत **रांढु** मूंज कौ, भीनौ करै मरोड़। हरीया गुर विन बहि गया, केता लाख करोड़। —अनुभववांणी

उ०—२ तुरत बंधावी **रांढु** में ए, जेह ना हाथ ने पाय। नगरी मांहे बाहिरे ए, फेरी जे तसु काय। —जयवांणी

उ०—३ तद मूंज ऊंठ दोयरी मगायी नै जाडा जाडा **रांढू** वंटाया अरु बीच मैं हाथ रै आंतरै लकड़ी रा गाता दिया रसा बीच। —द. दा.

उ०—४ पछै रावळ जैतसी जिण भुरजां दिसा धरती नीचे री थी, तिण दिसा **रांढू** नखाय नै लूणकरण करमसी नूं नै इणां री साथ गढ ऊपर चाढियौ। —नैणसी

रू० भे०—रंढू

रांण—स. पु. [सं. राट] १ राजा, नृप। (डि. को., डि. नां. मा.)

उ०—धिखे आरांण मुखै केवांण, खसै खुरसांण मरुधर **रांण** —राउ जैतसी रो रासौ

२ रावण, दशानन।

उ०—१ सामद उलहौ भोम सिर, कै **रांण** प्रगट्टौ राम दळ। —रा. रू.

उ०—२ विचित्रा दिग्रा बिछाइ, भालै हरिण भगवानिए। जाणि कि वाग विधू सिग्रा, **रांण** तणा कपिराइ। —वचनिका

उ०—३ हुई लक में बूंब आया हकारै। मत्री **रांण** रा सात हज्जार मारै। 'अखौ' **रांण** रौ पूत जूटौ अछायौ, धणै क्रूधि तेनूं हणूं'मांन घायौ। —सू. प्र.

३ स्वामी, मालिक।

उ०—१ पाड़, चकारा पाण, हमणौ वित ले हैडियों। रे कछधर री **रांण**, आज कठी गी 'आवड़ा'। —पा. प्र.

उ०—२ सेखावता राण खळा भज खेल। पाछी सबदीध पलट्टण ठेल। सबै नर आखत भोक अभंग। रिपु बहु 'ज्वार' हण्या बिच जंग। —अगयात

४ देखो 'राणौ' (मह., रू. भे.)

उ०—मांझी मोह मराट, 'पातल' **रांण** प्रवाडमल। दुजड़ा किय द्रहवाट, दळ मैगळ दांणव तणा। —सूरायचजी टापरयौ

उ०—२ ओरां ने आसांण, हाकां हरवल हालणौ। किम हालै कुळ-**रांण**, हरबल साहां हांकिया। —केसरीसिंह बारहठ

उ०—३ आलापै रागि गारडू अकबरि, दीयै श्रीस खट कुळि दाउ। **रांण** सेस वसुधा खत्र राखण, रागि न पांतरियौ अहिराउ। —गोरधन बोगसी

रांणकरा, रांणकिया, रांणक्या—सं स्त्री.—सोलंकी वंश की एक शाखा।

रांणखमांण, रांणखुमांण–स. पु. यौ.–छोटे बड़े जलाशय ।

उ०—ढूं ढ्या–ढूं ढ्या **रांण–खमांण** मिरगे विना मिरगी एकलडी । मिरगौ छोड गयौ वनखंड माय, मिरगी ने एकलडी । —लो. गी.

रांणदे–स. स्त्री.–सूर्यदेव की पत्नी ।

उ०—इतरा में भळकते कमळ तेज रौ पुंज निसचर निरदळण कालिंगदैत रौ कळण बौम रौ सिणगार ओटण अधार भाभीजोत कासिब वस रौ उद्योत रांणदे रौ नाह भासकर देवाध बोलिया । —मा. वचनिका

रांणपर–स. पु.–एक प्राचीन नगर विशेष का नाम ।

उ०—जूनुगढ चापानेर मांडवगढ, अणहलपर पाटण, **रांणपर** वीसलनगर वडुदरू······ —व. स.

रांणबांण–वि.–१ निपुण, दक्ष ।

२ चतुर, बुद्धिमान ।

३ दृढ, पक्का ।

४ पूर्ण स्वस्थ ।

रांणवत–देखो 'राणावत' (रू. भे.)

रांणवाळौ–वि महाराणा का, महाराणा से सम्बन्धित, महाराणा के योग्य ।

उ०—१ 'अभा' आदि उमराव **रांणवाळा** मन रक्खै । वरण इंद्र धनवत, इसौ 'अगजीत' निरक्खै । —रा. रू.

उ०—२ 'अमरसी' रीत 'अवरंग' तणी आदरी, चित्रगढ तणी आदू तजी चाल । सांमद्रोहा हुआ **रांणवाळा** सुपह, राण पाराथियौ बियौ रिड़माल । —दुरगादास राठौड़ आसकरणौत रौ गीत

रांणा–सं. स्त्री. [सं. राट]१ भिन्न २ राजवशों का उपटक जो उन राज वशों के शासक के नाम के साथ लिखा या बोला जाता है ।

२ देखो 'राना' (रू. भे)

रांणाई–सं. स्त्री.–१ 'रांण' होने की अवस्था या भाव ।

२ राणा का पद या पदवी ।

उ०—संवत १६१६ रा भाद्रवा वद ३ सीसोदिया सगर उदैसिघोत रौ जनम । पातसाह जहांगीर मया कर अजमेर, नागोर चित्तोड दे **रांणाई** दीवी । —बां. दा. ख्यात

३ राणा पद का गौरव, स्वाभिमान ।

४ राजा होने वाली अवस्था या भाव, राजत्व ।

उ०—पछै मूळराज रावळ हुवौ । रतनसी नूं **रांणाई** रौ विरद । —नैणसी

रांणादे–देखो 'राणादे' (रू. भे.)

रांणापति–स. पु.–राणादेवी का पति, सूर्य भगवान्, सूर्य ।

रांणापण, रांणापणौ–सं. पु.–१ वीरता, बहादुरी ।

२ देखो 'राणाई'

रांणाराव–सं.पु.–१ महाराणा ।

२ श्रेष्ठ पुरुष ।

रांणावत, रांणावत्त–स. पु.–१ महाराणा उदयसिंह के वंश की एक शाखा, सीसोदिया वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—जगमाल उदैसिंघोत रै वस रा **रांणावत** १ कांनावत २ कछ-वाहा सुरतांणोत राजावत ३ राठोड चादावत ४·············· —बा. दा. ख्यात

२ राठौडों की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

रू० भे०–राणावत,

२ देखो 'राणी' (रू. भे)

रांणी–स. स्त्री. [स राज्ञी, प्रा. राणी] १ किसी राजा या राणा की स्त्री, रानी ।

उ०—१ वडै वस ऊपनी वडी **रांणी** भाटियांणी, बोली राजा हूंत जिका पूरै व्रत जाणी । —रा. रू

उ०—२ गिरमीं गिरमीं में गिरवै मुडियोडा, जान्है डैरू ज्यू गोडा जुडियोडा । कुलटा साची व्है ठुकराणी कूडी । पडदै पड़दायत **रांणी** सूं रूडी । —ऊ. का.

२ ताश का वह पत्ता जिस पर स्त्री की तस्वीर हो ।

३ स्वामिनी, मालकिन ।

४ एक प्रकार का वर्षा ऋतु में होने वाला कीट विशेष ।

रू० भे०–राणि ।

रांणीजणियौ, रांणीजायौ–स. पु –१ राणी की कुक्षि से पैदा होने वाला राजपुत्र, राजकुमार ।

२ राजपूत, क्षत्रिय ।

उ०—सुणियौ आगम सत्रु रौ, अरर जड़ै निज ऐण । **रांणीजाया** किम रहै, विरुद धरम कुळ वेण । —वी. स.

रांणीपद, रांणीपदौ–स. पु.–सभी रानियों मे प्रमुख होने का सम्मान या अधिकार । रानी का पद ।

उ०—१ लिखमी रै बेटा दोय हुआ–वाघौ, नरौ । वडा जोरावर हुआ । सातल रै छोरू न हुवौ । ताहरां टीकौ सूजेजी नूं दियौ । **रांणीपदौ** लिखमी नूं दियौ । —नैणसी

उ०—२ रांणी स्री पतापदेजी रै रांणीपदा रौ दसतूर सुं राणी स्री हाडी जी नु **रांणीपदा** रौ बंटौ दियौ । —मारवाड़ री ख्यात

रांणीमंगाभाट–सं. पु.–केवल रानियों की ससुराल में नामावली लिखने की वृत्ति करने वाला भाट ।

रांणेराव–सं. पु.–महाराणा ।

रांणेस–सं. पु.–१ राजाओं मे श्रेष्ठ, महाराजाधिराज ।

२ महाराणा ।

रांणोरांण–स. पु.–सभी प्रमुख व प्रतिष्ठित व्यक्तियों का समूह ।

वि.–समस्त, सब ।

रू० भे०–रांणोढाण ।

रांणौ-स. पु [स. राट्] (स्त्री रांणी) १ राणा पदवी धारी राजवंश का राजा। २ उदयपुर के राजाओं का उपटंक, पदवी, उपाधि।
३ उदयपुर का राजवश।
४ उदयपुर का राजा, महारांणा।
उ०—१ थाटपति मेवाड थाणै रचे, निजरा दीध रांणै। बापहू चवगुणी वाजी, गुमर धरियौ वियै 'गाजी'। —सू. प्र.
उ०—२ परबत पई पछाडिया, मेरो चावग देव। कुंभकरण **राणौ** कियौ, अइयौ 'रयण' अजेव। —बा. दा.
उ०—३ जुध दिल्ली रहिया जुड़ै, 'रैणायर' 'रुघपत्त'। सिर **रांणै दळ** सज्झिया, औरगसाह असपत्त। —रा. रू.
५ राजा, नृप।
उ०—१ पातसा स्री अकबर बरणवू, पणि कस्या एक पातसा स्रीअकबर जंबूद्वीप मांहइ प्रवरत्ततु छइ, अन्य पराय **रांणा**, मोटा मीर मालिक माहाभड खान, खोजा, सरक्षिल साहणा, ते सघला करइ सेवा......। —व. स.
उ०—२ रीझी सुण चद्रावत **रांणी**। साम साथ कज स्रवण सुहांणी। —रा. रू.
उ०—३ तूं हीज राजा रामचंद तूं रांवण **रांणा**।
—केसोदास गाडण
६ रावण, दशानन।
उ०—**रांणै** सतवती हरण मारीच पठाया। —केसोदास गाडण
७ नक्कारची, ढोली। (ढूंढाड, जयपुर)
उ०—**रांणौ** एक जूटौ दोय राज का दरोगा। पारासुर बसी दोय टूक टूक होगा। —शि. व.
रू० भे०-रन्नौ।
मह०-राण।

रांणौरांण-देखो 'राणौरांण' (रू. भे.)
उ०—सिसिपाळ सक्यौ चित्त चमक्यौ, जरासधि नइ जांण। हिवइ मांहरा हाथ जोज्यौ, मिळी **रांणौरांण**। —रुकमणी मगळ

रांती-वि.-अत्यन्त ही क्षीणकाय, मडियल, कृशतन।
उ०—बीस दिनां में थारौ सास तो आंख्या मे आयग्यौ। हाथी व्है जैडौ डील हौ, थाकनै **रांती** व्है ज्यूं व्हैगौ। —फुलवाडी

रांदा-सं. स्त्री.-राठौड वंश की एक उपशाखा।

रांदौ-सं. पु-राठौड वंश की रांदा शाखा का व्यक्ति।

रांधण-सं. स्त्री.-१ पकाने की क्रिया या भाव, पकाने की विधि।
उ०—ते महाजन जीमतां बखांणा करै, फलांणा गांम री **रांधण** देखी। अमकड़ियै सहर नी रांधण देखी। पिण इसी चतुराइ कोइ देखी नही। —भि. द्र
२ देखो 'रंधीण' (रू. भे.)

रांधणछठ-सं. स्त्री. यौ.-भादौ शुक्ल पक्ष की छठ।

रांधणां-सीधणां-सं. पु. यौ.-भोजन-सामग्री, खाद्य पदार्थ। भोजन के रूप तैयार वस्तुएं।
उ०—कुघरणि महा कुहाडि सदा धरइ आटोप, बइठी भरतार दिइ निरोप, डोइला हेठै किकिउ धरइ, मुहि सांम्ही चीवर बरइ। **रांधणां-सीधणां** नितु अणाहर करइ, सकल दिवस सूअर जिम चरइ......। —व. स.

रांधणौ, रांधबौ-क्रि. स. [स. रधनं] १ चावल, खिचड़ी, भोजन, खाना आदि पकाना, पक्वान्न बनाना।
उ०—१ दळिया **रांधै** दळबळिया हळबाणै, बेचण बींदणियां ईंधणिया आणै। लादी भारी नैं ओळावौ लेती, दुरबख बारी नैं बोळावौ देती। —ऊ. का.
उ०—२ जाहरा भगति हुई सु चावळा रै ओसांवण सुं घोड़ा ऊठ पाया, इतरा चावल **रांधा**। —जांगळू री बात
उ०—३ सो एकै दिन देपाळ धाड़ौ लेनै आवतौ हुतौ। सो हरख री आप रै तळाव ऊपर गोठ कीवी। अठै मांस **रांधौ**। चावळ रांधा। अर रोटा हुवै छै। —देपाळ धंध री बात
२ कष्ट देना, तंग करना, यातना देना।
उ०—१ औगुणगारा और, दुखदायी सारी दुनी। चोदू चाकर चोर, **रांधै** छाती राजिया। —किरपाराम
उ०—२ म्हनै देखियौ तौ डोकरी म्हारै माथै उलळगी। किड़कि-ड़ियां चावती बोली—तड़कै तड़कै औ लैणायत रांधण नै बळग्यौ।
—फुलवाड़ी
राधणहार, हारौ (हारी), राधणियौ —वि.।
राधिओड़ौ, राधियोड़ौ, रांध्योड़ौ —भू. का. कृ.।
राधीजणौ, रांधीजबौ —कर्म वा.।

रांधियोड़ौ-भू. का. कृ.-१ पकाया हुआ, पका कर बनाया हुआ.
२ कष्ट दिया हुआ, तंग किया हुआ, यातना दिया हुआ।
(स्त्री. राधियोड़ी)

रांन-सं. स्त्री. [फा. रान] १ जंघा, जांघ।
[सं. आरण्य] २ वन, जगल।
उ०—मोटां रे पिण कस्ट में, जतन नेह राहु जाय। रातें रमणी **रांन** मैं, नाखि गयौ नळराय। —ध. व. ग्र.
३ देखो 'रांण' (रू. भे.)
उ०—यां विचार वैण बोलै, तेज सूं समसेर तोलै। मूछ के रोम व्योम कूं उट्ठै, **रांन** के आए जमरांन से रुट्ठै।
—रा. रू.

रांनळ-सं. स्त्री.-सूर्य की पत्नी।
रू० भे०-रांनिळ, रांनिल्ल

रांनळपति, रांनळपती-स. पु.-सूर्य, भानु, रवि। (अ. मा.)

रांनळवर, रांनळसुवर-स. पु. [राज. रांनळ+सं. वर] सूर्य, भानु
(नां. मा., ह. नां. मा.)

रू० भे०—रांनिल्लवर

रांना—स. स्त्री.—१ सूर्य की पत्नी या स्त्री।

उ०—कूरमी कमधज्ज सू, ओपै वामै अग। रवि **रांना** ससि रोहिणी, सुरपति सचि किर सग। —रा. रू.

२ देखो 'राणा' (रू. भे.)

रांनापत, रांनापति—स. पु.—सूर्य, रवि। (ना. डि. को.)

रांनिल रांनिल्ल—देखो 'रानळ' (रू. भे.)

उ०—ए तूं आगिइ ऊपनुं, आगि जि वरसइ अगि। **रांनिल** किम रंगि रमइ, सूरिज केरइ सगि। —मा कां. प्र.

रांनिल्लवर—देखो 'रांनळवर' (रू. भे.)

उ०—सहिस-किरण सिर सचरइ, सहू सरयासर जेम। **रांनिल्लवर** रुडुं नही, अबला पीडइ एम। —मा. का. प्र.

रांनी—देखो 'रांणी' (रू. भे.)

रांनुड़ौ—स पु.—एक प्रकार का घोडा। (शा. हो.)

रांप—सं. स्त्री.—जलाशय का जल समाप्त होने पर निकलने वाली ऊपरी तह की चिकनी और पतली मिट्टी।

उ०—रबडी जिराडी **रांप**, पचामृत पाणी पालर। मोल मळाई स्याळ, चीकनौ चूंटौ कालर। —दसदेव

रांपड़ौ—सं. पु. [देशज] १ पतले लोह का बना छोटा गडासा, एक कृषि उपकरण। (शेखावाटी)

२ देखो 'रापौ' (अल्पा., रू. भे)

रांपलौ—देखो रांपौ' (अल्पा., रू. भे.)

रांपी—सं. स्त्री. मोचियों का चमड़ा तराशने, काटने और साफ करने का एक औजार जो खुरपी के आकार का होता है।

रांपौ—सं. पु.—वह व्यक्ति जो पैर में वात रोग के कारण कोई कार्य करने में असमर्थ हो।

अल्पा०—रापडौ, रापलौ,

रांफल—स० स्त्री.—१ बहुत से लोगो की भगदड।

२ लडाई, फिसाद।

रांफळणौ, रांफळबौ—देखो 'आफळणौ, आफळबौ'

उ०—भड खाटण प्रभत्त सकोहा सांफळै। लै जरमन परलोक रहच्चै **रांफळै**। —किसोरदांन बारहठ

रांफळियोड़ौ—देखो 'आफळियोड़ौ'

(स्त्री. राफळियोड़ी)

रांभणौ, रांभबौ—देखो 'रंभाणौ, रंभाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मौ गाया मरसीह, सुण पाबु आखै सगत। त्रण दिन री तरसीह। **रांभै** धांधळराव उत। —पां. प्र.

उ०—२ दादी सासू, पोतियां जुंवाई नै देखण नै तरसी अर हाथ री कापती दो आगळचा एक आंख रै एडै-छेडै देय' र रसोई री बारी सं ऊलळी. जाणौ सवाडी गाय लूबारै टोघडियै पर **रांभी** है। —दसदोख

रांभस—स. स्त्री.—एक प्रकार की घास।

रांम—सं. पु. [स. राम] १ ईश्वर, परमात्मा, (ना. मा.)

उ०—१ **रांम** नांम सदा बांणी, **रांम** नांम सदा कथा। **रांम** नाम सदा सब्द, ते सबद, सुक्यारथा। —ह. र

उ०—२ हर राम रु **रांम** गिणौं हर से, जग मे गुरु जेमल मे दरसै। —ऊ. का.

उ०—३ जेसलमेरी जोड, अवर भटियाणी आखै। उर अचेत इण काम, **रांम** त्यां हेत न राखै। —रा. रू.

उ०—४ वडौ तू नान्हौ एकोजि ब्रह्म, पढां जस कासूं कासू प्रम। रीझावां तुझ किसी विधि राम, पूजीजै कीजै केम प्रणाम। —पी. ग्र.

उ०—५ मिदर में जाय हाथ जोडनै वौ ठाकुरजी नै माथौ निवावण लागौ उण पै'ला ई उणरी निजर कळाकद सू भरियोडौ थाळां रै परसाद माथै पड़ी। मूंडा में **रांम** नाव रै बदळै लाळां सळवळण लागी। —फुलवाड़ी

२ ब्रह्म

उ०—**रांम** सकळ मैं रमि रह्या, हाजरि खड़ा हजूर। हृदीया अंध न देखई, चुंह दिस ऊगा सूर। —अनुभववांणी

मुहा०—१ रांमकहणौ=मरना, मृत्यु को प्राप्त होना।

२ रांमजांणौ=जिसे राम ही जानता है, मनुष्य की जानकारी में न हो।

३ रामनिकळणौ=अशक्त या क्षीण होना, श्रीहत होना, मरणासन्न होना। मति भ्रष्ट होना, ईमान समाप्त होना।

४ रांम बोलणौ=कोई अच्छी बात किसी के मुंह से स्वतः प्रगट होना, मरना

५ रांम रांम करणौ=राम नाम से किसी का अभिवादन करना, जैसे-तैसे समय गुजारना।

६ रांमसरण होणौ=ईश्वर की शरण में जाना अर्थात मृत्यु को प्राप्त होना, मरना।

३ विष्णु का एक नामान्तर

४ सूर्य वंशी राजा दशरथ के पुत्र श्र रामचन्द्र जो विष्णु के अवतार माने गये हैं। (अ. मा., नां. मा.)

उ०—१ उणवार तहव्वर जोर इसौ, जुध **रांम** दळा सिर कुंभि जिसौ। —रा. रू.

उ०—२ निमौ रुघनदण **रांम** नरेस। सत्रघण सांच लखमण सेस। —पी. ग्रं.

उ०—३ केसरीसिघ रांमसिंघ सबलसिघ के जाए। **रांम** बांण से अचूक रोद्र छोभ पाए। —रा. रू.

उ०—४ असुर मार तूं आतमा, निमौ तुहारा नांम। मारै तां समपै मुगति, राकस तारै रांम। —पी. ग्र.

५ श्रीकृष्ण के बडे भाई बलराम, का नामान्तर।

६ परशुराम ।
७ श्रीकृष्ण, श्याम ।
८ घोडा ।
९ एक मृग विशेष ।
१० सारतत्व ।
११ ईमान ।
१२ शक्ति, सामर्थ्य ।
१३ योग्यता ।
१४ खुद के लिये प्रयुक्त होने वाला एक सम्बोधन । ज्यूं-म्हारो **राम** तो अठै काळ आयौ ।
१५ वरुण ।
१६ अशोक वृक्ष ।
१७ हरितकी, हरड । (अ. मा.)
१८ एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १७ मात्राएं होती हैं व अंत में यगण होता है ।
१९ देखो 'रामदेव' ।
वि०-१ सुन्दर, मनोहर, अभिराम ।
२ प्रसन्न करने वाला, आनन्द दायक ।
३ श्वेत, सफेद । * (डि. को.)
४ कृष्ण वर्ण, श्याम । * (अ. मा., ह. नां मा.)
अल्पा०-रमीईयौ, रमैयौ, रामइश्रौ, रामडयौ, रामड़ौ, रांमयौ, रामूडौ, रांमौ, ।

रांमग्रंजीर-सं. पु. यौ.-पाकर वृक्ष ।

रांमग्रजवांण-स. पु.-एक पौधा विशेष जिसके फूल एव पत्तों मे अजावाइन की गंध आती है ।

रांमइग्रौ, रांमइयौ-स. पु.-१ रामदेव पीर जो रुणीचा के ठाकुर अजमाल जी के पुत्र थे ।

उ०—**रांमइग्रौ** अजमाल रौ आलमजी रौ यार । साभिळिसै कलि मां सही, पीरिया तणी पुकार । —पी. ग्रं.

रू० भे०-रमइयौ, रमीईयौ, रमैयौ, रामयौ ।

२ देखो 'रांम' (अल्पा., रू. भे.)

रांमकचेड़ी-सं. स्त्री. ईश्वर का न्यायालय ।

उ०—सुख मैं प्रीत सवाय, दुख में मुख टाळा दिवै । जे के कहसी जाय, **रांमकचेड़ी** राजिया । —किरपाराम

रांमकळी-सं. स्त्री.-भैरव राग की स्त्री, एक रागिनी । (सगीत)

रांमकियौ-देखो 'रामतियौ' (रू. भे.)

रांमकी-स. स्त्री.-किसी संत की शिष्या ।

रांमकेळौ-सं. पु-१ एक प्रकार का बढ़िया केला ।
२ आम की एक जाति ।

रांमक्षेत्र-सं. पु.-दक्षिण का एक प्राचीन तीर्थ । (पौराणिक)

रांमखंड-सं. पु-एक प्राचीन तीर्थ का नाम । (पौराणिक)

रांमगंगा-सं. स्त्री-कन्नौज के पास गंगा में मिलने वाली एक नदी ।
उ०—देवीनांम भागीरथी नाम गगा, देवी गंडकी गोगरा **रांमगंगा** । —देवि

रांमगिरि-सं. पु.-१ नागपुर के पास का एक पहाड़ जो आजकल रामटेक कहलाता है ।
२ एक राग विशेष । (संगीत)

रांमगीता-सं. स्त्री.-१ एक मात्रिक छद विशेष । (र. ज. प्र.)
२ वेदान्त का एक छोटा ग्रन्थ

रांमड़ौ-देखो 'रांम' (अल्पा, रू. भे.)

रांमचंग, रांमचंगा, रांमचंगी, रांमचंगीय-सं. स्त्री.-एक प्रकार की बदूक
उ०—१ धवै नाळा भड़ा भड़ी धड़ाधड़ी धूजै धरा । छूटै बांण-गोळी, **रांमचंगियां** छछोह । —रा. रू.
उ०—२ सो जोइयां नूं **रांमचंगी** बाण री खबर न थी सो नेड़ा चालिया आया । —कुंवरसी सांखला री वारता ।
उ०—३ सज **रांमचंगिय** सार, तेइ करत भरत तयार । केई करत पाखर काज, सब टोप बकतर साज । —पे. रू.
उ०—४ जबर जंग नाल्या रां निहा उपड़ि नै रहीआ छै । गज नाल्यां सुतर नाल्यां, जंबूरा नाल्यां, **रांमचंगी** हथनाल्या रा चणणाट वाजै छै । —रा. सा· स.
२ एक प्रकार की तोप ।
उ०—एकै दिन सुजांण साह ढाल दोय असल गेडारी थी, तिकै निजर कीधी । तरै बडी **रांमचंगी** रौ गोळौ बाहि दीठौ, तिकौ चापटौ होय पडियौ, पिण ढाल रै रंग री चिटक उतरी नहीं । —कहवाट सरवहिये री बात

रांमचंद, रांमचंद्र, रांमचंद्रेस-सं. पु. [सं. रामचन्द्र] १ सूर्यवंशीय राजा दशरथ के बड़े पुत्र 'राम' जो एक आदर्श पुत्र, आदर्श पति व आदर्श राजा थे और जिन्होंने एक वचन, एक पत्नी व एक बांण, इन व्रतों का निष्ठापूर्वक आचरण किया ।
उ०—प्रतापि लंकेंद्र, गुरुजन विनय **रांमचंद्र**, साहसि विक्रमादित्य, त्यागलीला करण्ण, वचन प्रतिस्टां युधिस्ठिर —व. स.
२ ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा (नां. मा.)

रांमचरण-सं. पु.-शाहपुरा रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रवर्तक एक साधु जो कृपाराम के शिष्य थे ।

रांमचरित-मांनस-स. पु. [स.] गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित अति प्रसिद्ध एवं अत्यन्त लोक प्रिय धार्मिक ग्रन्थ, जिसमें श्रीराम के जीवन चरित्र का वर्णन है ।

रांमचिड़ी-सं. स्त्री.-मछलियां पकड़ कर खाने वाला एक जल पक्षी ।

रांमजणी-स. स्त्री.-१ हिन्दू वेश्या, रंडी । (मा. म.)
उ०—**रांमजणी** अर कंचणी, पातर देवै पांम । है बाघण बन हेक री, राखै अळगी रांम । —बां. दा.
२ वह स्त्री जिसके पति का पता न हो ।

रू० भे०–रामजनी,

रांमजन–सं. पु.–ईश्वर का भक्त, सत, साधु।

उ०—१ जन हरीया माया सबै, खाया जुग संसार। एक न खाया **रांमजन**, सतगुर कै आधार। —अनुभववांणी

उ०—२ राम कहैं से **रांमजन**, हरीया दूजा भेख। दुनीया सेती दोसती, धरै सत सुं धेख। —अनुभववांणी

रांमजननी–स. स्त्री [सं रामजननी] १ राम की माता कौशल्या। (रामायण)

२ बलराम की माता रोहिणी।

रांमजनी–देखो 'रांमजणी' (रू. भे.)

उ०—छोरि किते पतनी अपनी, मन रामजनी मुख के अभिलाखे। मत्त कित्ते मदिरा मद ह्वै वस नींद कितेक लखै रित भाखै। —फतहकरण ऊजळ

रांमजयती–स. स्त्री. [स. रामजयती] रामनवमी

रांमजांमुन–स. पु.–मझोलै कद का एक प्रकार का जामुन का वृक्ष।

रांमजी–स पु–ईश्वर का एक आदर युक्त सम्बोधन।

उ०—जन हरीया ऊभै धणी, खेत न खंडै कोय। जाह रूखवाळा **रांमजी**, माळ न वंकौ होय। —अनुभववांणी

रांमजी री गाय–स. स्त्री. बीरबहुटी, इंद्रवधू।

रांमजोत, रांमजोती–सं. स्त्री. [सं. रामज्योति] १ ब्रह्म का प्रकाश। ब्रह्म ज्योति।

उ०—लीधा नांम नीठ नीठ अनेक जनमां लगा, अभै धांम पावै ठांम वैकुंट अदोत। दे रीठ संग्रांम खागां घड़ी हेक भांज देही, जोधा मळै रांम रा सनेही **रांमजोत**। —साधा रौ गीत

२ मोक्ष, मुक्ति।

रांमझारौ–सं. पु.–एक बड़ी झारी जिसके एक लबी टूटी लगी होती है

रांमझोळ–देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

रांमटेक, रांमटेकरी–सं. स्त्री.–एक पहाड़ी।

वि० वि०–देखो 'रांमगिरि'

रांमण–देखो 'रावण' (रू. भे.)

उ०—काज अहोणौ ही करै, एह प्रक्रत खळ अंग। **रांमण** पठियौ, रांम दिस, कर सोव्रनौ कुरग। —बा. दा.

रांमणखंड, रांमणखंडौ–देखो 'रांवणखडौ' (रू. भे)

रांमणगढ़–देखो रांवणगढ' (रू. भे.)

रांमणगांजौ–सं. पु–एक प्रकार का भाला या शैल।

उ०—तठां उपरांति करि नै राजांन सिलांमति असवारी वाग ऊपाडि किलकिला ज्यों ऊपाडि ऊपाड़ि हेमरां नाखीजै छै। भूसणां ऊपरै बरछी चमकि नै रही छै। **रांमणगांजा** सेला रा धमोड़ा पड़ि नै रहीआ छै। —रा. सा. सं

रांमणरिप, रांमणरिपु–देखो 'रांवणरिपु' (रू. भे.)

रांमणहत्थौ, रांमणहथियौ, रांमणहथौ–सं. पु. [सं. रवण+हस्तं] एक प्रकार का तार वाद्य विशेष।

रू० भे०–रावणहथौ।

रांमणारि–देखो 'रावणारि' (रू. भे.) (ना. मा.)

रांमणि–देखो 'रावण' (रू. भे.)

रांमणौ, रांमबौ–देखो 'रमणौ, रमबौ' (रू. भे.)

उ०—रति रयण सुदि नर नारि **रांमति** गाळि प्रमुदित गावही। मुख गान, दिन निस स्वाम मंगळ वैण चंग वजावही। —रा. रू.

रांमत–स. स्त्री. [स. रम्यति, प्रा. रम्मति] १ क्रीडा, खेल।

उ०—१ पित मौ बाधौ पाळणौं, **रांमत** रिझवारै। इम रांमण सुणि अंगदह, खळ वायक खारै। —सू प्र.

उ०—२ कूंत आहावतौ ढाहतौ केवियां, त्रजड **रांमत** रमें कमंध त्यारा। 'गजण' रै नांखिया बाज मचती गहण, 'सूर' हर आभरण पूर सारा। —गु रू. बं.

२ मनोविनोद।

३ हसी, मजाक, ठिठोली।

उ०—१ मारवणी जांणियौ औ तो और पंथी छै। मीमां मो सुं **रांमत** करै छै। —ढो. मा.

उ०—२ सु पहली तो आ बात अदावत री हुई थी, तरै तौ सारां ही जांणियौ थौ–ऐ साळा बैहनेइ थकां **रांमत** करै छै। नै आ वात रायसिंघ हालतां कही तरै तौ सारै ही जांणियौ–जु आवात साची हुई। कोई उपाव उपद्रव हुईसी। —नैणसी

उ०—३ दळ करण नू राजपूतां निराठ मन्हा कियौ जे बडा सरदार असी कोई कहै नही छै। कूड़ी सू तौ **रांमत** मसकरी सांची सुं गाळ छै। —भाटी सुंदरदास बीकूपुरी री वारता

४ अभिनय, नाटक।

उ०—१ लुगाई री जूंण बिना रखवाळण कंवरांणी, महारांणी अर गूजरी री आ **रांमत** कुण रमतौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ मां इण **रांमत** सूं तौ म्हारौ जीव साफ फाटग्यौ। थारै आगै म्हारौ बस नीं चालै, नीतर म्हैं तौ कदैई न्हाय छूटती। काई लुगाई रौ जलम फगत इण रांमत सारू ई व्हियौ है। —फुलवाड़ी

उ०—३ आवै जाय अपार, ग्रीधा पळ भरि भरि गळा। किर नटवाळां गोटका, विचरै **रांमत** वार। —रा. रू.

५ तमाशा, खेल।

उ०—१ अर गांव मांहैं रावळिया **रांमत** रमता हुता। सींधळा रौ साथ रमत देखण नूं गयौ हुंतौ। —नैणसी

उ०—२ तुम बैठे **रांमत** लखौ, नह बेवत पर-पीर। मो बाहर कीजै मही, भले भले रघुवीर। —गज उद्धार

६ नौटंकी का खेल ।

७ चौपड़ आदि का खेल, द्यूत क्रीड़ा ।

उ०—**रांमत** चौपड राज री, है धिक वार हजार। धरा सूंपी लूंठा धकै, धरमराज धिरकार। —रामनाथ कवियौ

रू० भे०—रमत, रम्मत, रामति, रामती।

रांमतरुणी—स स्त्री. यौ. [स रामतरुणी] १ श्री रामचन्द्र की पत्नी सीता।

२ सफेद गुलाब, सेवती।

रांमतारक—स. पु. यौ. [स. रामतारक] रामोपासक लोगों द्वारा जपा जाने वाला मत्र, 'रा रामाय नमः'।

रांमति—देखो 'रांमत' (रू. भे.)

उ०—१ लघु लघु सर कर धनक लघु, लघु वय बाळक लार। **रांमति** सरजू तटि रमै, कीला राजकुमार। —सू. प्र.

उ०—२ नल ते **रांमति** नवि त्यजइ, हारइ नळराय रे। पासा पडइ अवला तव, कूबर सविसेखु थाइ। —नळदवदती रास

उ०—३ **रांमति** रमती ढूलीया, कन्या कुवारी थाय। रुतवत पीछै रमरा की, हरीया प्यास मिटाय। —अनुभववांणी

रांमतियौ—स. पु.—१ खेलने का उपकरण या साधन, खिलौना।

२ योनि, भग (बाजारू)

रू० भे०—रमकियौ, रमतियौ, रामकियौ।

रांमती—देखो 'रांमत' (रू. भे.)

रांमतीरथ—सं. पु. [सं. रामतीर्थं] रामगिरि नामक स्थान।

रांमतोरू—सं. स्त्री—भिंडी नामक फली जिसकी सब्जी बनाई जाती है।

रांमदळ—स. पु. [स रामदल] १ श्री रामचन्द्र की वानर-सेना।

२ कोई विशाल सेना जिसका मुकाबला करना कठिन हो।

रांमदवाई—देखो 'रांमदुआई' (रू. भे.)

रांमदवारौ—सं. पु. [स. राम-द्वारा] रामस्नेही सम्प्रदाय के साधुओ के रहने का स्थान, मकान।

रू० भे०—रांमदुवारौ, रामद्वारौ।

रांमदास—सं पु. [सं. रामदास] १ श्री रामचन्द्र का दास, हनुमान।

२ दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो शिवाजी के गुरु थे, समर्थ-गुरु रामदास।

रांमदुआई, रांमदुवाई—सं. स्त्री.—१ श्रीराम की शपथ, ईश्वर की सौगन्ध।

२ राम-नाम की दुहाई।

रू० भे०—रामदवाई, रामदुहाई।

रांमदुवारौ—देखो 'रामदवारौ' (रू भे.)

उ०—लोग हाल तांई नांढ घरा है, वै **रांमदुवारा** अर मिंदर में चोरी सारू हाथ नी घालै। —फुलवाड़ी

रांमदुहाई—देखो 'रामदुआई' (रू. भे.)

रांमदूत—स. पु [सं. रामदूत] हनुमानजी।

उ०—दुबाह अखाड़ाजीत धाडा **रांमदूत**। —र. ज. प्र.

रांमदे—देखो 'रामदेव' (रू. भे.)

उ०—राउत रिणसी **रांमदे** वडिमि धिणोरी वाह। सगळाई सांधा सिरै, नेतळदे रौ नाह। —पी. ग्रं.

रांमदेरौ—देखो 'रामदेवरौ' (रू. भे.)

उ०—कोस १ साथै गया, उठै जाय ऊतरीया, बात विगत करनै श्रीजी रा साथ नै सीख दी। राजा रौ डेरौ **रांमदेरै** हुवौ। —नैणसी

रांमदेव—स. पु.—१ प्रसिद्ध तुंवर वशीय अनंगपाल जी के वशज अजमालजी के सुपुत्र रामदेव, जो सिद्ध पुरुष (पीर) माने गये है।

वि. वि.—इनका जन्म सवत १४६१ में हुआ और संवत १५१६ में ये समाधिस्थ हुए। इनकी समाधि पोकरण (राजस्थान के जोधपुर जिले में) से नौ मील दूर है। इनके अनुयायी प्रायः अनुसूचित जाति के लोग है जो इन्हें ईश्वर का अवतार मानते हैं।

२ उक्त पुरुष को सम्बोधित कर गाया जाने वाला लोक गीत।

३ उक्त पुरुष के अनुयायी लोगों का सम्प्रदाय।

४ श्रीरामचन्द्र।

रू० भे०—रामदे, रांमदे।

रांमदेवरौ, रांमदे'वरौ—सं. पु.—१ रामदेवजी का समाधिस्थान, मन्दिर। देवालय।

२ उक्त नाम का गांव।

रू० भे०—रां देरौ।

रांमदै—देखो 'रांमदेव' (रू. भे)

रांमद्वारौ—देखो 'रांमदवारौ' (रू. भे.)

रांमधरम—सं. पु.—१ ईश्वर को साक्षी बनाने की क्रिया या भाव।

२ अपनी मर्यादा में रहने की अवस्था या भाव।

उ०—चालै कुळ री चाल, **रांमधरम** धारया रहै। दुखियां पर दयाळ, भव क्यूं बिगड़ै भैरिया। —रतलाम नरेस बळवंतसिंह

३ ईमान।

रू० भे०—रांमध्रम।

रांमधांम—सं. पु. [स. राम-धाम] १ वह लोक जहां ईश्वर राम रूप मे नित्य विराजमान रहते हैं, साकेत धाम, अयोध्या।

२ वैकुण्ठ।

रांमध्रम—देखो 'रांमधरम' (रू. भे.)

रांमनम, रांमनमी, रांमनवमी—सं. स्त्री. [सं रामनवमी] चैत्र शुक्ला नवमी की तिथि, जिस दिन श्री रामचन्द्र का जन्म हुआ था। एक पर्व दिन।

रू० भे०—राममांमी, रांमनोमी, रांमनौमी।

रांमनांमी–स. स्त्री.–१ राम नाम छपा हुआ कोई दुपट्टा या चादर जिसको प्राय' विधवा स्त्रियां ओढा करती है।
२ गले मे पहनने का एक स्वर्णहार विशेष जिसे प्रायः विधवाएं पहनती है।
३ सोने चादी के आभूषणो पर रेखाओं की खुदाई करने का कीला। (स्वर्णकार)
४ देखो 'रामनवमी' (रू. भे.)

रांमनोमी, रांमनौमी–देखो 'रांमनवमी' (रू. भे.)

रांमपद–स. पु.–मोक्ष, मुक्ति।
क्रि. प्र.–पाणौ, मिळणौ।

रांमपयोध–स. पु [सं. राम+पयोधि] राम के यश रूपी समुद्र।
उ०—आछौ कीध इसोह, रस ले साहित-सिधु रौ। जग सह पियण जिसोह, रूपक **रांमपयोध** रुच। —उत्तमचद भडारी

रांमपुर–सं. पु.–१ अयोध्या नगरी।
२ स्वर्ग, वैकुण्ठ।

रांमपुरा–स. स्त्री.–एक प्रकार की बन्दूक।

रांमपुरी–स. स्त्री.–१ अयोध्या नगरी।
२ स्वर्गलोक, वैकुण्ठ।
३ एक प्रकार की तलवार।

रांमपुरीकत्ती–स .स्त्री –तलवार के आकार की एक कत्ती विशेष।

रांमप्रिया–स .स्त्री.–श्री सीताजी। (ना. मा.)

रांमफळ–स. पु –सीताफल, सरीफा।
उ०—खरबूजा जग सह जाय रे, सौ असोक अमर सदै। सैमळ सरीस तज आन सुण, दाख **रांमफळ** सेव दे। —र. ज. प्र

रांमफळी–स .स्त्री.–ग्वार की सूखी हुई फळी, जिसे तेल में तलकर मिर्च मसाले लगाकर खाया जाता है।

रांमबांम–सं .स्त्री. [स. राम+वामा] श्रीराम की पत्न श्री सीताजी।

रांमबांस–स. पु.–१ एक प्रकार का बास।
२ केवड़े या केतकी की जाति का एक पौधा।

रांमभक्त–स. पु.–१ श्री राम का उपासक कोई व्यक्ति।
२ हनुमान।

रांमभीच–स. पु.–हनुमान का एक नामान्तर। (ना. मा.)

रांमभोग–स. पु.–१ एक प्रकार का चावल।
२ एक प्रकार का आम।
३ श्री राम को भोग (चढ़ाया) लगाया जाने वाला पदार्थ।

रांममंत्र–स. पु –'रा रामायः नमः' नामक मत्र।

रांममन–स. पु. [सं. राममन] हनुमान। (अ मा)

रांमयौ–सं. पु.–१ काव्य छद का एक भेद विशेष। (पि. प्र)
२ देखो 'राम' (अल्पा., रू. भे.)
३ देखो 'रामइयौ' (रू. भे.)

रांमरक्षा–स. स्त्री. [स. रामरक्षा] विश्वामित्र द्वारा रचित श्री राम का एक स्तोत्र।
रू० भे०–रक्षाराम।

रांमरज–स. स्त्री.–वैष्णव लोगों के तिलक लगाने की एक प्रकार की पीली मिट्टी।

रांमरमी–स स्त्री.–दीपावली व होली के दूसरे दिन परस्पर मिलकर किया जाने वाला अभिवादन, प्रणाम अदि।

रांमरस–स. पु –१ नमक।
उ०—मही मही मिरची पीसी, दियौ **रांमरस** न्हाख। तेलरौ म्हैं छूंकण दीनौ, दीन्ही हाडी चढाय, यौ पंचमेळै रौ साग, देवतडा नै भी नाय मिळै जी राज। —लो गी.
२ राम की भक्ति।
उ०—१ रहौ बीवरे **रांमरस**, अनरथ घणौ अलंत। या हिज है ध्रम आतमा, ऐ तीरथ ऐ तत। —बा. दा.
उ०—२ सतगुर भागी भरमना, निहचै पायौ नाम। हरीया घट मै **रांमरस**, क्या कूंडै सुं काम। —अनुभववाणी
३ राम की भक्ति रूपी अमृत।
उ०—हरीयै पीया **रांमरस**, आठुं पौहर अभग। और किसी कु पावसी, करै हमारा सग। —अनुभववाणी

रामरांम–स. पु.–१ परस्पर मिलने पर इसी शब्द को बोलते हुए किया जाने वाला अभिवादन, दुआसलाम, प्रणाम, नमस्कार। (हिन्दू)
२ रामनाम की माला, जाप।

रांमराज, रांमराज्य–स पु. [सं. राम+राज्य] १ श्री रामचन्द्र का शासन, जिसमे प्रजा को बहुत आराम मिला और सस्कृति का विकास हुआ।
२ ऐसा शासन जिसकी उपमा श्री रामचन्द्र के शासन से की जाती है। सुखदायी शासन।
उ०—वारा हरचद रा बहै, **रांमराज** री रीन। कुसमा छाई कनक रा, पुहमी बंटै प्रवीत। —बा. दा.

रांमलवण–सं. पु –साभंर नमक।

रांमलाल–सं. पु.–एक मारवाडी लोक गीत।

रांमलीला–सं. स्त्री.–१ श्री रामचन्द्र के जीवन-चरित्र पर किया जाने वाला नाटक।
२ एक मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में २० मात्राएं तथा अन्त में एक जगण होता है।

रांमवट–सं. पु –पडिहार वश की एक शाखा।

रांमवाड़ौ–सं. पु.–पश्चिमि भारत का एक तीर्थ स्थान।
उ०—वनं रामचद्र वसै **रांमवाड़ै**। सर पास कोटेसर स्रग चाढै। —सू. प्र.

रांमसंगी-१ देखो 'रांमचगी'

उ०—ध्रुब सोर जुजरबा ग्रत सधीर, तद चलै **रांमसंगी** स-तीर।
—पे. रू.

२ देखो 'रामसखा'

रांमसखा-स. पु [स] सुग्रीव।

रांमसनेह-स. पु [स. रामस्नेह] राम की भक्ति।

उ०—नही थिर देह न गेह न गेह। सही थिर थप्पहु **रांमसनेह**।
—ऊ. का.

रांमसनेही-स. पु. [स. रामस्नेही] १ राजस्थान का एक प्रसिद्ध साधु-सम्प्रदाय, जिसका ग्राविर्भाव श्री हरिरामदासजी महाराज (सीथल) से माना जाता है।

वि वि.-सत साहित्य मे प्रमुख सतो की रचनाग्रो से ऐसा प्रतीत होता है कि यह सम्प्रदाय रामानन्द की वैष्णव परम्परा के ग्रन्तर्गत ग्राता है। (ग्रनुभववांणी भू. पृ. २८) रामावत सम्प्रदाय की शिष्य परम्परा मे श्री जेमलदासजी दिव्य पुरुष हुए, जिन्हो ने सगुणोपासना को निर्गुण की ग्रोर प्रवृत किया ग्रौर 'राम राम' को मूल मत्र स्वीकार किया। इनका यह प्रयास ही इस सम्प्रदाय का बीज माना जाता है। श्री जेमलदास जी के मुख्य शिष्य श्री हरीरामदास जी ने इस सम्प्रदाय की ग्रौपचारिक प्रतीष्ठा की। ग्रतः श्रीहरीरामदास जी द्वारा इस सम्प्रदाय का ग्राविर्भाव सींथल से हुग्रा। सींथल मे रामसनेही सम्प्रदाय का मुख्य पीठ ग्राज भी वर्तमान है। श्रीहरीरामदास जी के मुख्य शिष्य श्री रामदास जी ने इस सम्प्रदाय का ग्रत्यधिक प्रचार-प्रसार किया ग्रौर खेडाप ग्राम मे एक पीठ की स्थापना की जो ग्राज भी वर्तमान है। सींथल एवं खेडापा के ग्रतिरिक्त शाहपुरा व रेण में दो पीठ ग्रौर है, जिनके मूल पुरुष क्रमशः रामचरणजी तथा दरियाव जी महाराज माने जाते है। इस सम्प्रदाय के साधु या ग्रनुयायी का प्रमुख उद्देश्य 'राम नाम' की माला जपना ही होता है।

२ उक्त सम्प्रदाय का ग्रनुयायी साधु।

उ०—सब जुग बिध्या जेवरी, निरबंधन नहीं कोय। जन हरीया निरबंध है, **रांमसनेही** होय। —ग्रनुभववाणी

३ वह व्यक्ति जो उक्त सम्प्रदाय का ग्रनुयायी हो।

वि०-राम से स्नेह रखने वाला।

रांमसरण-सं. पु. [स. रामशरणः] स्वर्गवास, मोक्ष।

वि०-जो ईश्वर की शरण में चला गया हो, स्वर्गवासी हो गया हो।

उ०—१ जाहरां कितरै हेके वरसै दूदौ **रांमसरण** हुवौ, ताहरा भोज बूंदी ग्रायौ। भोज नूं पातसाह धरती दीधी। —नैणसी

उ०—२ पच्चीस बरसां रौ परण्यौ-पाल्यौ मोट्यार काटी बेटौ म्हनै ग्रर बीनणी नै विखा री लाय में दाभण सारू छोडनै **रांमसरण** व्हैगौ। —फुलवाडी

रांमसरी-सं. स्त्री.-एक चिड़िया का नाम।

उ०—ग्रांगणि जळ तिरप उरप ग्रलि पिग्रति, मग्रतचक्र किरि लियत मरू। **रांमसरी** खुमरी लागी रट, धूया माठा चद धरू।
—वेलि

रांमसाख-स. पु.-फल विशेष।

उ०—द्रुम दाड़मी चमका केण दाख। सहतूत सीताफल **रांमसाख**।
—ग्रग्यात

रांमसागर-स. पु.-१ पानी की बडी झारी जिसके लम्बी टूंटी लगी होती है।

२ चौडे मुह व गहरा एक पात्र जिसके ऊपर पकडने का एक हत्था लगा होता है तथा जो दूध, खीर ग्रादि तरल पदार्थ परोसने के काम ग्राता है।

रांमसापीर-देखो 'रांमदेव'

रांमसिला-स. पु. [स रामशिला] गया की एक पहाड़ी (तीर्थ)।

रांमसेतु-स. पु. [सं. राम सेतु] दक्षिण में रामेश्वर तीर्थ के ग्रागे, समुद्र मे पडी हुई चट्टान, जिसे रावण पर चढाई के समय श्रीराम द्वारा बनाया हुग्रा पुल (सेतु) माना जाता है।

रांमांण-देखो 'रामायण' (रू. भे.)

रांमा-स. स्त्री [सं. रामा] १ लक्ष्मी।

उ०—१ लोक माता सिंधुसुता स्री लिखमी, पदमा पदमालया प्रमा। ग्रवर ग्रहे ग्रस्थिरा इदिरा, **रांमा** हरिवल्लभा रमा।
—वेलि

उ०—२ **रांमा** कहिता लक्ष्मीजी तिहिको ग्रवतार। ताकउ नांम रुकमणी। —वेलि टी.

२ रुक्मणी।

३ सीता।

४ राधा।

५ सुन्दर स्त्री।

उ०—रत्ता सांमी धरम सूं **रांमा** कांम ही रत्त। मन मोटा दिन पद्धरा, भड वंका गहमत्त। —गु. रू. बं.

६ प्रेमिका, प्रेयसी।

७ भार्या, पत्नी, स्त्री।

८ सती-साध्वी स्त्री।

९ गायन विद्या में निपुण स्त्री।

१० कार्तिक कृष्णा एकादशी।

११ नदी।

१२ ग्रार्या या गाहा छन्द का १७ वां भेद। इसमें १७ गुरु ग्रौर ३५ लघु वर्ण होते है ग्रौर कुल ५७ मात्राएं होती हैं। (ल. पिं.)

रांमाइण–देखो 'रामायण' (रू. भे.)

उ०—**रांमाइण** ही राम कीयउ जे हूंती कन्हइ। सकति विहूणउ स्याम विढण न होयइ वीस-हथि। —अ. वचनिका

रांमातुळसी–स. स्त्री.–तुलसी का एक भेद, जिसके डठल का रंग सफेदी लिये हुए हरा होता है।

रांमादेवी–स. स्त्री –एक देवी विशेष।

उ०—च्यार कुळदेवी सहाय हुई। समणादेवी सरीर लाबौ कीयौ १ सांमरादेवी सरीर हलवौ कियौ २, **रांमादेवी** सरीर अभग कीनौ —रा. वशावली

रांमानंद–स. पु.–१ एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जो रामावत नामक सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक थे।

२ इनके द्वारा चलाया हुआ सम्प्रदाय।

रांमानंदी–स. पु.–'रामानंद' सम्प्रदाय का अनुयायी।

वि०–रामानन्द का, रामानन्द सम्बन्धी।

रांमानुज–सं. पु. [स राम+अनुज] १ श्रीराम का छोटा भाई लक्ष्मण। (अ. मा., ना. मा.)

२ भरत, शत्रुघ्न।

३ वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने वेदान्तसार, वेदातदीप तथा वेदार्थसंग्रह नामक ग्रन्थो की रचना की थी। इनका स्वर्गवास ११९४ (सवत) में हुआ।

४ उक्त आचार्य द्वारा चलाया हुआ सम्प्रदाय।

रांमानुजी–सं. पु –उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

वि०–रामनुज का, रामानुज सम्बन्धी।

रांमाभ्रत–स. पु.–ईश्वर। (ना. मा.)

रांमायण–सं. स्त्री. [स रामायण] १ वाल्मिकी ऋषि द्वारा रचित एक अति प्रसिद्ध धार्मिक ग्रथ, जिसमे श्रीरामचन्द्र के जीवन-चरित्र का वर्णन है।

उ०—लक जिम वाद अहमंद लियण, लख गोळा, झड लागियौ। वमरीर अभायण जुध विखम, जुध **रांमायण** जागियौ। —सू. प्र.

रू० भे०–रमाइण, रमाइण, रमायण, रामाण, रामाइण।

२ जीवन गाथा।

उ०–म्हारी **रांमायण** री छुट-पुट कडिया थनै बताई, इण सूं म्हारौ जीव हळकौ व्हियौ। —फुलवाड़ी

३ व्यर्थ का प्रवचन। (व्यग)

उ०—बिणियाणी बोली–थे तौ म्हनै पूरी बात ई नीं कैवण दी, बीच मे ईं थारी **रांमायण** बाचणी चलू कर दी। —फुलवाड़ी

रांमायणी–वि. [सं. रामायणी] रामायण का, रामायण सम्बन्धी।

रांमावत–स पु.–१ आचार्य रामानन्द द्वारा चलाया हुआ एक वैष्णव सम्प्रदाय।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

रांमासांमा–स. पु. १ अभिवादन, दुआ सलाम।

उ०—रणछोडै **रांमासांमा** करने चिलम आधी करतां पूछ्यौ–सेठा सिरावण करी तौ थोडौ माखण नै सोगरौ लाय दूं। —रातवासौ

२ दीपावली व होली त्यौहारो के दूसरे दिन परस्पर मिल कर किया जाने वाले वाला अभिवादन, भेंट, प्रणाम आदि (हिन्दू)

उ०—उण मौकै दिवाळी रौ तिवार होवण सूं मा उण नै घणा कोड सू नवा नवा कपडा पैराया। काना मे नगदार लूंग हाथां में सोना री माठिया अर पगा मे झाझरिया घालिया। **रांमासांमा** रै दिन बाळ ओस, काजळ घाल अर लीलाड़ माथै निजर रौ काळौ टीकौ लगाय नै बास ग्वाड़ मे तसळीम करण वास्ते भेजियौ ..... । —अमर चूनडी

रांमूड़ौ–१ देखो 'रांम' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ओ जी ओ, मनै **रांमूड़ा** रौ टेवटियौ घड़ा दे, मोरी माय, लूवर रमबा मैं जास्यू। —लो गी.

रांमेस्वर–सं. पु. [सं. रामेश्वर] दक्षिण भारत में समुद्र तट पर स्थित शिव लिंग (तीर्थ) जो हिन्दुओं के चार प्रमुख तीर्थों मे से एक माना जाता है।

रांमोड़ौ–सं. स्त्री.–वनस्पती विशेष

उ०—**रांमोड़ी** नइ रासना रीगणि रुद्र-जटाय। रांग रताजणि रूमड़ी, रनिवनि रंग धराय। —मा. का. प्र.

रांमौ–१ देखो 'राम' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो रांमदेव

उ०—'गोगौ' मोगौ हुय गोरखा गिरियौ, 'तेजौ' मोळौ पड़ि नेजौ लै तिरियौ। पीरां पतधीरां पैली धर धायौ, उण दिन **रांमौ** डर सांमौ नहिं आयौ। —ऊ. का.

रांमौपीर–देखो 'रामदेव'

उ०—पौढी सूं जोधांपती, प्रात हुवौ असवार। दरसेवा सुभ देहरौ **रांमौपीर** उदार। —रा. रू.

रांयकंवर–१ देखो 'रायकुंवर' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमार' (रू.भे)

रांयकंवरी–१ देखो 'रायकंवरी' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

रांयण, रांयन–स. स्त्री.–१ नीम से बड़े आकार का वृक्ष जिसके पत्ते पीपल के पत्ते से मिलते जुलते होते हैं और फल मीठे तथा लकड़ी मजबूत होती है।

उ०—पाडर पुन **रांयन** तरु तमार, तहा सरु बकायन सरसतार। चदन अगर तोया कुंद चारु, सीताफळ चपक अरु अनारु। —मयाराम दरजी री बात

२ उक्त वृक्ष का फल।

उ०—१ अखरोट चारोली केला **रांयण**, नालेर द्राख आंबानी साख। —व. स.

उ०—२ राजेलां केला, कुंकरणीग्रां केलां, रांयण नीकोल्या, ग्राबा तरणी कातली, प्रीसइ नारि पातली। —व. स.

रू० भे०—राइणि, राइरण, राइणि, राइणी, राईण।

रांवटी—देखो 'रावटी' (रू. भे.)

उ०—ग्रर रामसिघजी नूं एक **रांवटी** करि दी जिम संन्यासिया री मढी हुवै तिम। —द. वि.

रांवण—स. पु. [स रावण.] १ राक्षस राज लकाधिपति दशानन, जो पुलस्त्य ऋषि का पौत्र व विश्रवा का पुत्र था। दशरथ नन्दन श्रीरामचन्द्र ने वानरी सेना के साथ लका पर चढाई करके इसका वध किया। ऐसा माना जाता है कि इसके बीस भुजाए तथा दश मस्तक थे।

उ०—१ राज मोहरि उपति रघुराई, भिड़् जेण विध लखमण भाई। भिड़ि खळ थाट करू जुध भूका, **रांवण** जेम 'विलंद' दळ रूका। —सू. प्र.

उ०—२ ग्रथग ग्रचळ धिन 'जोध' ग्रभिनमा, सावज कुळ पैंतीस सिरै। हरि मेलियौ मथै हीलौहळ, गाजियौ **रांवण** मेर-गिरै। —किसनौ ग्राढौ

वि.—१ दूसरो को रुलाने वाला।

२ रोने, चिल्लाने व रुदन करने वाला।

रू० भे०—रांमण, रामणि, रामिण, रावण, रावणि।

रांवणखंड, रांवणखंडौ—सं. पु. [स. रवन्+खंडित] वह व्यक्ति जिसके मुख का ऊपरी ग्रोष्ठ खंडित हुग्रा हुवा हो।

उ०—१ धमस विडगा ऊधरा, रज छायौ ब्रहमड। सेल्ह चमका धुंध मैं, दीठा **रांवणखंड**। —रा. रू.

उ०—२ **रांवणखंडौ** दोडियौ, वळियौ 'वूसी' मार। भाद्राजण फिर ग्राविग्रौ, घरण थट लियां सवार। —रा रू.

रू० भे०—रामणखंड, रामणखंडौ।

रांवणगढ—स. पु.—रावण के राज्य की राजधानी लका।

रू० भे०—रामणगढ।

रांवणपण, रांवणपणौ—सं. पु.—दुराग्रह, हठ, जिद्द।

उ०—**रांवणपणौ** छोड रढरावण, रजवट तीर रहावण रीत। छोरू हुवै सदा दाखै छै, मुडै कवा दियै मावीत। —कूंपाजी राठौड़ रौ गीत

रांवणरढ—देखो 'रढरांण' (रू. भे.)

उ०—बंबावद रैणगढ रण रचिया **रांवणरढ**। —व. भा.

रांवणरिप, रांवणरिपु—स. पु [स. रावण+रिपु] १ श्री रामचन्द्र।

२ ईश्वर, परमेश्वर (ह. ना. मा.)

रू० भे०—रांमणरिप, रांमणरिपु, रावणरिप, रावणरिपु।

रांवणारि, रांवणारी—स. पु. [स. रावण+ग्ररि] १ रावण को मारने वाले श्रीरामचन्द्र।

उ०—मिथळाविहारी स्रीमुरारी रमां नारी रंजे। पह छत्रधारी मिळ ग्रपारी मारण हारी मडळी, धनु जेगवारी **रांवणारी** जटाधारी भज। —र. ज. प्र.

२ ईश्वर, परमेश्वर।

रू० भे०—रामणारि, रवणारि।

रांसीलौ—वि (स्त्री, रांसीली) १ रस पूर्ण, रासीला।

उ०—थे चावळ हू दाळ हगांमी ढोला रे ऐके ने **रांसीलै**, दोय जीमिया हो राज। थे खाडौ हूं ढाल, हगामी ढोला रे, ऐके ने **रांसीलै** दोय झेलिया हो राज। —लो. गी.

२ रसीक, रसिया।

उ०—होठलड़ा मूमल रा रेसमिये रे तार ज्यूं, हां जी रे, दांतडला उजळ दंती रा दाड़म बीज ज्यूं। म्हांजी हरियाळी मूमल, हालै नी **रांसीलै** रै देस। —

रा—विभ.—१ षष्ठी विभक्ति चिन्ह, के।

उ०—१ रूक हथ पेखियौ, हाथ जसराज **रा**। ठिवतां पांव धीरा दियौ ठाकुरां। —हा. झा.

उ०—२ वडा भगत भगवांन **रा**, रांम रीझां सिर रीजै। —पी. ग्रं.

उ०—३ हाथ नमौ तुं वीस हथि, जुधि जुधि कीधी जैत। गिळिया लोही **रा** गटक, देवी दळिया दैत। —पी. ग्र.

रू० भे०—रां।

२ देखो 'रै' (रू. भे.) (नां. मा.)

३ देखो 'राउ' (रू. भे.)

उ०—१ किसलय निकलता गहगहइ, वेलाकूले **रा** गहगहइ। मूंड लक्ष धान्य नीपजइ, सकल वांछित सुख सपजइ। —नळ दवदती रास

उ०—२ फाडि पटुली फटकडे, वेगि विगामी हृथि। **रा** ग्रंतेउरि तेडिउ, दूहवइ दासी हृथि। —मा. कां. प्र.

रा'—१ देखो 'रास' (रू. भे.)

२ देखो 'रासि' (रू. भे.) (ना. मा.)

३ देखो 'राय' (रू. भे.)

४ देखो 'राह' (रू. भे.)

राग्रठोड़—देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

उ०—**राग्रठोड़** तुमे घर बैठ रह्यौ। वित ग्राज ग्रमीणौयें धाड़ वह्यौ। —पा. प्र.

राग्रा—देखो 'राजा' (रू. भे.)

राइं—देखो 'राइ' (रू. भे.)

उ०—१ **राइं** कागल मोकलिउ, माधव वहिलु ग्रावि। जिम जांणइ तिम तुं करइ, तेणि सदनि सिधावि। —मा. का. प्र.

उ०—२ प्रगट करेवा पुरुखनइ, **राइं** तेडी गोग। कुण ते ?

कुण कारणि दुखी ? सरसिइ किम सयोग । —मा. का. प्र.

राइंदिय, राइंदिव–स. पु. [सं. रात्रिन्दिव] रात–दिन ।

राइ–स. पु. [स. राजा, प्रा. राग्रा, राया] १ राजा नृप ।

उ०—१ आखय ऊमा देवडी, साभळि पिंगळ **राइ** । विरह वियापी मारुई, नहिं राखण कउ दाइ । —ढो. मा.

उ०—२ पाल्हणसी पुहविहि रहचउ, अनि समहया सरगि । तिणि वेळा हीया भरी **राइ राइ** रोवण लग्गि । —अ. वचनिका

उ०—३ वडै चिति कीरति खाटण आकण वार । सिरोमणि **राइ** सहाइ ससार सधार । —ल पि.

उ०—४ आंपणी **राइ** फेराइ आण । समसेर साहि सुरितांण साण । —रा. ज. सी

उ०—५ तूडि–ताण 'अमर' सुरिजना तणी, साम काम बाहण सुजड । राखिया **राइ** राठौडवै, कुमरा पासि इता सुहड ।

—गु. रू ब.

२ छोटा राजा, सरदार, सामत ।

स. स्त्री. [सं. राजि:] ३ कतार, पक्ति ।

उ०—लागि दळि कळि मळयानिल लागै, त्रिगुण परसतै खुधा त्रिस । रटति पूत मिसि मधुप रूंख **राइ**, मात स्रवति मधु दूध मिसि । —वेलि

४ रात्रि, रात ।

उ०—पाछिली रातइ उठइ नइ हो, स्रावक हुयइ सावधान । **राइ** पायछत काउसग करी हो, देव वादइ सुभ ध्यान । —स. कु.

वि.–श्रेष्ठ, उत्तम

रू० भे०–राइ, राई, रायि, रायी ।

राइअंगण, राइआंगण–सं. पु. [सं. राज अगण] राज प्रमाद का आगन, प्रागण ।

उ०—१ सुहडा स्रब अंग चंग दिगवर, **राइअंगण** सोभ ए । मधुकर गुंजार डबरी सामळ, परिमळ वास लोभ ए ।

—गु. रू. बं

उ०—२ कडि लंछण केहरी, जघं जाणै जाळंधर । **राइआंगण** गति क्रमति, हस किरि माण–सरीवर । —गु. रू. बं.

राइकुंअर, राइकुंवर–१ देखो 'रायकंवर' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमार' (रू. भे)

राइकुंअरि, राइकुंवरि–१ देखो 'रायकवरी' (रू. भे)

२ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे)

उ०—कर सूं करि कुंकुंम तिलक, चाढै चावळ भाळ । कुंअर बधावै **राइकुंवरि**, ले सोव्रन मै थाळ । —गु. रू. ब.

राइगण–सं पु.–रात्रिगण, रातदिन का समूह ।

राइड़ियौ–देखो 'रेडियौ' (रू. भे.)

राइजादौ–देखो 'रायजादौ' (रू. भे.)

उ०—१ मछरीका सिर मछरियौ, **राइजादौ** राठौड । वैर पुराण बाळिया, करै नवल्ली दौड । —गु. रू. ब.

उ०—२ **राइजादे** ओपम राठवड, बिहूंवै पक्ख निरंमळा । बळवंत कुमर बिय चाद जिम, कुंवरा–गुर चढती कळा ।

—गु. रू. ब.

उ०—३ इण भांत ऊजळै पतिव्रत री पाळणहार, ऊजळी सखि–आरी टोळी सूं राजहंस **राइजादी** । —रा. सा. स.

(स्त्री. राइजादी)

राइजी–देखो 'रायजी' (रू. भे.)

उ०—बाइसी रीया आय डेरा कीया तरे मसल ठहरी तरे कवरजी स्रीग्रभेसंघजी नुं ने **राइजी** स्री रुगनाथजी नुं साथे दीना । तरै बाइसी पाछी गइ । —रा. व. वि.

राइठौड़–देखो 'राठौड' (रू. भे.)

उ०—ठेलिग्रे प्रधाने **राइठौड़** । मालइ जिम बोलिय वंसि मौड़ ।

—रा. ज. सी.

राइण, राइणि, राइणी–देखो 'रांयण' (रू. भे)

उ०—१ **राइणि** तल पगला नम्या मन मोह्यउ रे, अदबुद आदि जिणंद लाल मन मोह्यउ रे । —स. कु.

उ०—२ सदा फळाणि निबु आणि, **राइणी** महूअडा । कल्हार जबुई तारंग, रग वाग रूअडा । —गु. रू ब.

राइतौ–देखो 'रायतौ' (रू. भे.)

राइफळ–स. स्त्री.–एक घोड़ेदार विलायती बन्दूक ।

रू० भे०–रायफळ ।

राइबेल, राइबेलि–देखो 'रायवेल' (रू भे.)

उ०—१ नितब कटोरा सा । जघा कदळी रौ ग्रभ । पग अंगुळि **राइबेलि** री कळि । —फुलवाड़ी

राइवर–देखो 'रायवर' (रू. भे.)

राइवेलि, राइवेली–देखो 'रायवेल' (रू. भे.)

उ०—पग अंगुली **राइवेळि** री कळी हीरा सा नख. आरीसा ज्यो झाखि रहिआ छै । —रा. सा. सं

राइहर–देखो 'रायहर' (रू. भे.)

उ०—१ व्यामोह वर वीर घर-घर सत देखे घणउ । आयउ **राइहर** आप-रइ समहरि 'अचळ' स-धीर । —अ. वचनिका

उ०—२ बसुदेव कुमार तणौ मुख दीखे, पुणै सुणै जण आय पर औ रुखमणी तणौ वर आयौ, हर म करौ अनि **राइहर** । —वेलि

राई–सं. स्त्री. [सं. राजिका, प्रा. राइआ] १ बहुत छोटी सरसों जिसका दाना काला होता है । इसका स्वाद चरपरा होता है ।

उ०—१ बना पंसारी रे जाइजौ जी बठा से ल्याजौ **राई** री पुडी । बना बागा मे जाजोजी वठा से लाजौ मिरच हरी । —लो. गी

उ०—२ वली सखरा करंबा मांहि घणी **राई,** जीमतां ढील न काई, ऊपरि जीरा लुणुनु प्रतिवास, करणहारी परिण खास ।
—व. स.

उ०—३ नार सभारै जतन निहारै । ऊपर **राई** लूण उतारै ।
—रा. रू.

उ०—४ सांसुवां रूप ग्रर तरह देख घणी राजी हुई । **राई** लूण वारिया । थुथकारा नाखिया । —कुंवरसी सांखला री वारता

मुहा०—१ राई री परबत करणौ=बात का बतगड बनाना, छोटी बात का हुल्लड़ ज्यादा करना ।

२ राई री भाव राते गयौ=उपयुक्त समय निकालने पर ऐसा कहा जाता है । अवसर चूक गया ।

३ राई रत्ती होणौ=अत्यन्य तुच्छ होना ।

२ एक प्रकार का शाक ।

उ०—छ हारां लीबूग्रा, गिरनारी गिरमर, मारुयाडां मुगीयां कयर, परवती **राई** प्रमुख साक पीरीस्या । —व. स.

३ अत्यन्त थोडी मात्रा ।

उ०—कसरां करता में **राई** न काई । कसरां करमा मे भुगतौ रे भाई । —ऊ. का.

४ दामाद को गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

[सं. राधिका] ५ राधा ।

उ०—कान्ह कंवर सौ वीरौ मांगां, **राई** सी भोजाई ।
—लो. गी.

६ देखो 'राइ' (रू. भे.)

उ०—१ **राई** प्रधांन पणइ रह्यौ जाइ । चउरास्या सहू लागइ पाई । —वी. दे.

उ०—२ ग्राव हमारे ग्रांगणै, ग्रह त्रिभुवन **राई** । तूम विन मैं बिलखी फिरू, ग्रब रह्यौ न जाई । —ह. पु. वां.

राईग्रा—देखो 'राजा' (रू. भे.)

उ०—वंस ग्रजुग्राळ प्रति पाळ थे वीठला, रामचद राजि मुर भुवण **राईग्रा** । —पी. ग्र.

राईक—वि०—१ राई के समान लघु, तुच्छ ।

२ राई के बराबर, राई जितना ।

राईका—सं. स्त्री.—राजस्थान की एक जाति जो भेड़, बकरी व ऊंट, पशुग्रो का पालन व इन पशुग्रो का व्यापार करती है । (मा. म.)

राईकौ—स. पु.—उक्त जाति का व्यक्ति ।

उ०—१ इसौ साभळ ने राव लाखणसी कागद लिखनै वीरा **राईका** नै कह्यौ । बोलाई साढ ताती छै तिण चढनै जाळोर जा ।
—वीरमदे सोनगरा री बात

उ०—२ दळ नीकै बळ ऊधरै, **राईकै** महराज । साह वसीठ सलाह कज, कमधा दोठ सकाज । —रा. रू.

राईगूंदी—स स्त्री.—एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल छोटे छोटे और पकने पर पीले रंग के होते है ।

राईण—देखो 'रायण' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रंतर बंदक मेर सिखर गिरी, ग्रतर वारुण मूंसा । एवड़ौ ग्रंतर हारि सिसि पाळई, **राईण** रूंख जवासा ।
—रुकमणी मगळ

उ०—२ प्रीसि नारी पातली, खडबूजां गोटा, नीकोल्यां **राईण,** इसी फलहुलि प्रीसाइ । —व. स.

राईतन—सं. पु. [सं. राजा+तनय] राजवश ।

उ०—१ पछै सोढी नूं पूछण लागौ—रावळ कांनड़ दे रौ वडी ठोड़ रौ नाळेर ग्रायौ छै, सु पाछौ फेरस्या तो **राईतना** माहै बुरा दीसस्या । —नैणसी

उ०—२ तरै कह्यौ—'इणै म्हारी बूढै वारै इजत पाड़ी । मोनूं रोक मांहै कियौ ।' सारै **राईतनै** सुणियौ । —नैणसी

राईतौ—देखो 'रायतौ' (रू. भे.)

उ०—१ छम छमाती भाजी, चमचमाता चीभड़ां सुडहुडेती फली, मिरी भरी खांडिमी, वारु ईडरी, रुडा **राईतां,** सडरी सांगरी
—व. स.

राईबर—देखो 'रायवर' (रू. भे.)

उ०—म्हांवत तू मत जांणै **राईबर** एकलौ ए, साथै छडीदार चोपदार हाकिम हवलदार, साम्या उब्यौ किल्लेदार भाई भतीजा सब परिवार...... —लो. गी.

राईबोर—स. पु.—झड़बेरी के वृक्ष के फल, छोटे बोर ।

राइभोयण—सं. पु.—रात्रि भोजन । (जैन)

राईया—देखो 'राजा'

उ०—रूप ग्ररूप बैकठ तणा **राईया** भांमणां लीया भगतां तणा भाईया । —पी. ग्रं.

राईलूण—सं. पु.—राई व लूण का मिश्रण जो मंगल कामना करने के लिये किसी के ऊपर वारे जाते हैं । (एक प्रथा) ।

राईवर—देखो 'रायवर' (रू. भे.)

उ०—कांकड ग्राया **राईवर** थरहर कंप्या राज । बूझां सिरदार बनी ने कामण कुण करया छै । —लो. गी.

राईवाई—सं. स्त्री.—१ व्यवस्था, इंतजाम ।

उ०—ग्राप साथै जोगी ५७ ऊपड़िया हुता, तिणां री जोग उत्तराय ग्राप ग्राप रा गांव दे घरे मेलिया । झाला ग्राय सोह मिळिया । रायसिंघ ग्रापरी **राईवाई** की । बेटा भगवांनदास नारायणदास कनै राखिया । —नैणसी

सं. पु.—२ वह बैल जो सब प्रकार के कृषि कार्य में प्रशिक्षित कर दिया गया हो ।

वि०—सीधा-सादा, सरल ।

राईसर—सं. पु.—राजेश्वर ।

उ०—बली धन **राईसर** मांडव, जाव कौटुम्बी सत्थवाही रे। ते वीर कने घर छोडने, साधु होय ले छे लाहौ रे। —जयवांणी

राउ–स. पु. [स राजा, प्रा राओ] राजा, नृप।

उ०—१ नितु नितु **राउ** अहेडइ चल्लइ। रोसि चडी राणी इम बुल्लइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ राठउडे उदियउ चउंड **राउ**, वेगडइ साड वीरम वियाउ। —र. ज. सी.

उ०—३ नरवर नळराजा तणउ, ढोलउ कुवर अनूप। राणि **राउ** पिंगळ-तणी, रीझी देखे रूप। —ढो मा.

उ०—४ चूडराव रिणमल्ल, **राउ** 'जोधौ' रढरामण। 'सूजौ' 'वाघौ' 'गगेव' 'माल' गढ कोट पलट्टण। —गु. रू. बं.

रू० भे०—राऊ, राए।

राउत–देखो 'रावत' (रू. भे)

उ०—१ राउता पति **राउत**, पातिसाहा रा नर हैवर कुजर घड़ा पछाडा। चद जसनामौ चाडा। —वचनिका

उ०—२ पडइं बंध चलवलइं चिध सीगिणी गुण साधइं। गडवरि गइंवरु तुरगि तुरगु **राउत** रण रूंधइं। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ तिहां नगर मध्ये किसा लोक वसइ। भणइ राय रांणा। मंडलीक। महाधर। मउडधर। सामंत। सेलुत। वर वीर। **राउत** पायक। डिडिमायन। —सभा

राउतजाई–स. स्त्री.–वीरागना।

राउतवट–देखो 'रावतवट' (रू. भे.)

राउति—देखो 'रावत' (रू. भे.)

उ०—देव तणइ प्रासादि चिहु दिसि **राउति** दीधा हाथ। करी सनांन धरी सिरि तुलसी, सरण करचउ सोमनाथ। —का. दे प्र.

२ देखो 'रावती' (रू. भे.)

राउत्त–देखो 'रावत' (रू. भे.)

उ०—१ चउंड राउ दिय ऊधूल चाउ। **राउत्त** आपहे आप राउ। —रा. ज. सी.

उ०—२ **राउत्तां** गात बबाळ रगत्त। करंमर वाहि किया करवत्त। —गु. रू. ब.

राउर, राउरौ–देखो 'रावळौ' (रू भे.)

राउळ, राउल–१ देखो 'रावळ' (रू भे.)

उ०—१ सौ जाणि **राउळ** मल्लीनाथ पुत्र रै छानै जोया नूं काढी दीधा। — वं. भा.

उ०—२ नळवर गढ मुझ वसिवा ठाउ मागउं **राउळ** हुसु पसाउ। इह आव्यउ जस कीरति सुणी, पिगळ राजा भेटण भणी। —ढो. मा

उ०—३ खान भणइ-कुणि कारणि आव्या, कहउ तुम्हारउं काज। कहइ प्रधान **राउल** आएसइ, कटक जोएस्यूं आज। —कां. दे. प्र.

उ०—४ द्रव्य उपारजिउं कुणहं तणौ स्वासातउ न हुई, कुणहिनौ द्रव्य उपारजिउ चोर हि उपगरइ, कु **राउल** उपगरहि, कु. द्रव्य अग्नि उपद्रवइ...... —व. स

२ देखो 'रावळौ' (रू. भे)

उ०—**राउल** माहि रण भाणूं राय थयु परिण मंद। ब्राह्मण-बड्डउ साभरइ सभा-तणउ ते चद। —मा. कां. प्र.

राउळी, राउली–देखो 'रावळी' (रू. भे.)

उ०—स्वामि! जु सनमुख हुसि, तु ता **राउलि** रानि। वयरी वाकु स्यु करि, आहा ऊमटइ निधानि। —मा. का प्र.

राऊ–देखो 'राउ' (रू. भे.)

उ०—१ पुगळि पिंगळ **राऊ**, नळ राजा नरवरे नयरे। अदिठा दूरिठ्ठा ये, सगाई दईय सजोगे। —ढो. मा.

उ०—२ एक **राऊ** थप्पइण, एक रावा ऊथप्पण। एक राव गढ लियण, एक रावा गढ अप्पण। —गु. रू. ब.

राए–देखो 'राउ' (रू. भे.)

उ० —१ रट्ठौड रूप **राए** दीनौ, सुरतांण नाम दळ थभण। हिंदुवै मुसलमाणौ, विरदावियौ जोध विरदैता। —गु. रू. ब.

उ० -२ केस जरा धौबण करै, धोळा अत ही धोय। अंतक **राए** एंचतां, हात न मैला होय। —बा. दा.

राकस–देखो 'राक्षस' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ निरबीज करू **राकस** निकर, मेटूं फिकर त्रिलोक मिण। धारू बभीख लंका धणी, तो हूं दसरथ राव तण। —र. रू.

उ०—२ नमौ कुंभेण-तणा-भुज-काळ। नमौ कुळ-**राकस** बस-खैगाळ। —ह. र.

(स्त्री. राकसण, राकसणी)

राकसराय–सं. पु. [स. राक्षस+राजा] दशानन, रावण, लंकेश। (डि. को.)

राकसरोळण–सं. पु–राक्षसों का संहार करने वाला, विष्णु, श्रीकृष्ण, श्री रामचन्द्र आदि।

राकसबांणी–स. स्त्री.–छै प्रकार की भाषा में से एक, पिशाची भाषा (नां. मा.)

राकसांभयंकर–स. पु.–१ ईश्वर, भगवान।

२ श्री रामचन्द्र। (ना. मा.)

३ श्रीकृष्ण।

राकसि–देखो 'राक्षसी' (रू. भे.)

राकसिया–स. पु.–चौहान राजपूत वंश की एक शाखा।

राकसियौ–सं. पु.–उक्त शाखा का व्यक्ति।

राकसी, राकस्सी–देखो 'राक्षसी' (रू भे.)

उ०—१ तजै **राकसी** देह व्है दिव्य तासं बधै देवलोक किया जेण तास। —सू. प्र.

उ०—२ हरीया मांस मसांण है, भूत **राकसी** खांण। सोई भखै बिनादमी, वेमुख बडा अजांण। —अनुभववाणी

उ०—३ दळ लका दखणाधि, रूप माया **राकस्सी**। बहुतरी सत्तरि चडे, खान ऊबरा हबस्सी। —गु. रू. बं

राकां, राका–स. स्त्री. [स. राका] १ पूर्णिमा की रात्रि, पूनम की रात।

उ०—१ उदियागर उगियौ, इदु **राकां** अविरचां। रग कुरंग विरहणी, पाव वाधी ग्ररचां। —कील्हजी चारण

उ०—२ तौ केसपास छै सौह राति भई। राका कहता पूरणिमा ताकौ ईस चद्रमा सौई मुख हुग्रौ। —वेलि टी.

उ०—३ सजळ, सलहर, सपत्र, सतप, सुरस्रंग, ससीतळ। प्रात, पुनिम मधु जेठ ग्रखा, विग्रह **राका** मिळ। —र. ज. प्र.

२ पूर्णिमा की तिथि, एक पर्व–दिन।

उ०—१ उच्छब वधै ग्रजोधिया, प्रभु दरसण परमांणि। चंद्र देखि सांमंद्र चढै, जळ **राका** निस जाणि। —सू. प्र.

उ०—२ करि ठाम ठांम वंदण कळस, सरस गाम निज गाम सुख। व्है नजर नरां सामद हरख, **राका** निस सांमंद रुख। —सू. प्र.

३ पूर्णिमा की अधिष्ठात्री देवी।

४ रात्रि, रात।

५ वह युवति जो पहले–पहल रजस्वला हुई हो।

६ खुजली रोग।

७ खर तथा सूर्पनखा की माता।

राकापत, राकापति–सं. पु. [सं. राका+पति] चन्द्रमा। (डि. को.)

उ०—तजि स्यामता जांणि वपि ताजै। **राकापति** निकळक छबि राजै। —सू. प्र.

राकेस, राकेसि–सं. पु. [सं. राकेश] १ पूर्णिमा का चद्रमा।

२ चन्द्रमा। (ग्र. मा., ना. डि. को.)

उ०—१ बैरी बैर न वीसरै, बिना हियै ही बंक। राह ग्रहै **राकेस** नूं, नभ सिर मात्र निसंक। —बां. दा.

उ०—२ ग्रत सीतळ ग्रवदात, संकर मन भावै सदा। बांका साची बात, सुरसरी जळ **राकेस** सम। —बा. दा.

२ श्री कृष्ण। (ग्र. मा.)

राक्षस–सं. पु. [सं.] (स्त्री. राक्षसी) १ एक मानव जाति विशेष जो वैदिक साहित्य में, अत्यन्त क्रूर व मनुष्य देव, पितर ग्रादि की शत्रु मानी गई है।

२ उक्त जाति का व्यक्ति जो दानव, दैत्य, निशाचर, ग्रसुर ग्रादि नामों से सम्बोधित होता है।

३ कोई ग्रति भयकर, क्रूर या दुष्ट प्राणी।

४ ग्राठ प्रकार के विवाहों में से एक विवाह (राक्षस–विवाह) जिसमें कन्या के लिये उभय पक्ष में युद्ध होता है।

५ साठ सवत्सरो मे से उनचासवा सवत्सर।

६ वार व नक्षत्रों सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में से पचीसवा योग। (ज्योतिष)

७ गंधक व पारे के योग से बनने वाला एक रस। (वैद्यक)

८ एक देव जाति।

रू० भे०–रक्खस, रक्सस, रक्षस, रखस, रछस, राकस, राग्वस, राखसु।

राक्षसकेदी–सं. पु.–राक्षसो को कैद करने वाला, इन्द्र। (ना. डि. को.)

राक्षसी–वि.–१ राक्षस का, राक्षस सम्बन्धी।

२ राक्षसों के ग्रनुरूप, ग्रमानुषिक।

सं. स्त्री.–१ राक्षस जाति की स्त्री।

२ कोई क्रूर या दुष्ट प्रकृति की स्त्री।

रू० भे०–रच्छसी, राकसि, राकसी, राकस्सी, राक्षिसी, राग्वसि, राखसी।

राक्षा–सं. स्त्री. [सं. लाक्षा] लाख, लाह, जतु। (डि. को.)

राक्षिसी–देखो 'राक्षसी' (रू. भे.)

उ०—फूंटि फूंबिय महीतलि रोली। काढिवा वसन कीध हीयाली। ग्रंतरालि थई **राक्षिसी** राखी, तीणइ हुई हिव होग्रत चाखी। —सालि सूरि

राखंद, राखंदौ–वि.–रक्षक।

उ०—पुठी वांमै दाहिणै, ग्रागळि ग्रगै बांण। राजा 'गाजी साह' नूं, **राखंदौ** रहमांण। —गु. रू. बं.

राख–स. स्त्री–१ किसी वस्तु या पदार्थ के बिल्कुल जल जाने के बाद ग्रवशिष्ठ रहने वाला तत्व या ग्रंश, भस्म, भस्मि, राख।

उ०—घर हाळा घणौ ही समभावै, पण सिर में गूंग चढायेड़ो, भुंवांळी खातो फिरै! मांनै कद! माथै में **राख** घाल राखी है। —दसदोख

क्रि. प्र.–करणी, होणी।

मुहा०—१ राखउडणी=सब कुछ नष्ट हो जाना। ठाट बाट व रौनक समाप्त हो जाना। प्रतिष्ठा या गौरव समाप्त हो जाना।

२ राख फैंकणी, राख बगाणी=किसी व्यक्ति, कार्य या वस्तु के प्रति घृणा करना, ग्रवहेलना करना।

३ माथै में राख घालणी=वैराग्य लेना, ग्रपने कर्त्तव्य के प्रति उदासीन होना, निर्धन होना।

२ धूल, खाख।

उ०—नव द्वारा रा रसिक नवेला, ग्रलबत भग इधकाई। देख विचार द्वार दसवें दिस, बिलकुल **राख** बगाई। —ऊ. का.

मह०–राखड़ौ, राखूडौ, राखेडौ।

राखउडियौ–वि.–जिसकी इज्जत चली गई हो, निर्लज्ज, बेशर्म, नालायक।

उ०—१ औटाळ, पेट रा जाया ई म्हारै मरण री बाट न्हाळै। पण थारी छाती माथै तौ बदी हाल बीस बरसां ताई मूंग दळैला। **राखउडियां**– नै म्हाई दुरासीस देवू के म्हनै संताई ज्यूं बुढापै थानै ई थारा कुणकिया सतावै। —फुलवाड़ी

उ०—२ बिणियाणी कह्यौ–देखौ **राखउडिया** री सित्या निकळी। फेर भी हड़मानजी रौ पुजारी बाजै। बावरियां री गळाई चरतां इण नै लाज को आइ नी। —फुलवाड़ी

स. पु.–एक देशी गाली।

उ०—अबै म्हनै सगळी बात बतावौ, कठैई **राखउडियौ** पाछौ वेगौ नी बळ जावै। —फुलवाडी

राखडौ–स. पु.–१ शिर का आभूषण विशेष, चूडामणि।

उ०—साजा सोल सिंगार, सोना री **राखडां**। सावळिया सूं प्रीत, औरा सू आखडा। —मीरा

२ देखो 'राख' (मह., रू. भे)

राखड़ी–स. स्त्री. [स. रक्षिका, प्रा. रक्खिआ] १ सुहागिनी स्त्रियों के सिर (मस्तिष्क) पर धारण करने का एक स्वर्णाभूषण। (व. स)

उ०—१ पहिरणि गजवड फालडी ए ओढवि नवरग घाटडी ए। करअलि चूडी खलकती ए सिरि सोवन **राखड़ी** झलकती ए। —हीराणंद सूरि

उ०—२ पटली ब्रह्म-गन्यान, हरी बर **राखड़ी**। पहरि सुवागण नारि, झरोखै आखडी। —मीरां

उ०—३ जीण म्हारी बाई ऐ रतना जडा द्यू थारी **राखड़ी**, हीरां जड़ाद्यूं थारौ हार। —लो. गी.

२ शीशफूल।

३ रक्षा-सूत्र, गडा, तावीज।

उ०—१ भाठा जितरा देव पूज्या, **राखड़ी** मांदळिया ई कराया, गांव रा गुरासा खने इलाज ई करायौ अर जोधपुर जाय'र डाक्टरां री छाती मे रुपिया ई बाळिया पण गरज कांई सजी कोयनी। —रातवासौ

उ०—२ ताहरा कुंवरी कही सिद्ध आगा इसी **राखड़ी** कराई। जे बांधीजै तौ आदमी हुवै। —चौबोली

उ०—३ बार बार मानुस जनम, पामसी नही रे गिंवार। डोरा डडा **राखड़ी**, जत्र तत्र निवार। —जयवांणी

४ खरीफ की फसल के प्रारंभ मे ऊट के गर्दन मे और बैल के के सीगो के चारो ओर बांधा जाने वाला रेशम या सूत के गुच्छोंदार धागा जो मांगलिक माना जाता है।

उ०—कैणा आखड़िया जूड़ा दै काधै। बैंणा बळधा रै **राखड़ियां** बांधै। —ऊ. का.

रू० भे०–रखडी।

५ देखो 'राखी' (रू. भे.)

उ०—बड़लौ आयौ आयौ **राखड़ियां (रौ) तेंहवार**। कुण नै बाधै औ थारे **राखड़ी**। —लो. गी.

राखड़ीडोरौ–सं. पु–१ रक्षा-बधन के दिन बाधा जाने वाला सूत्र, राखी।

२ गडा, तावीज।

राखड़ीपूनम–देखो 'राखीपूनम' (रू. भे)

राखण–वि.–रखने वाला, रक्षा करने वाला।

उ०—'जगड़' राण दीधा जिता, गैवर हैवर गाम। अब पाता देसी इता, न्रप कुण **राखण** नांम। —बा. दा

सं. स्त्री.–रखने की क्रिया या भाव।

राखणभगत–स. पु.–भक्तो की रक्षा करने वाला, ईश्वर। (ना. मा.)

राखणीप्रांण–स. पु.–प्राणों की रक्षा करने वाला कवच, जाली। (डि. को.)

राखणौ–वि –रखने वाला।

उ०—भली **राखणौ** रीति लाखौ भुजाळ। भडा रूप भूपाळ लीला-भुआळ। —ल. पिं.

राखणौ, राखबौ–क्रि. स. [सं. रक्षणं] १ किसी आधार या तल पर किसी वस्तु को ठहराना, टिकाना, रखना, धरना।

२ नष्ट न होने देना, बिगडने न देना, रक्षा करना, बचाना, उबारना।

उ०—१ आयौं दक्खण इळा, खेड इलकार तुरंगम। राजसिंघ **राखियौ** कोट रखवाळ दुरंगम। —गु. रू. ब

उ०—२ असुर बोलियौ कुबोल, पतसाह मुह आगळी, राज विण खत्री धरम कमण **राखै**। —केसोदास गाडण

उ०—३ हरीया क्या पछताईयै, आप और कै काज। **राखणहारा** रांमजी, लोक सकल की लाज। —अनुभववांणी

उ०—४ मेड़तै रूप 'भीमौ' 'किसन', 'चांपै' नाहरखान चव। 'केहरी' पड़ै 'पातावता', **राख** नाम लग चद रव। —रा. रू

उ०—५ किण ही कह्यौ सूत्र में साधू नें जीव **राखणा** कह्या। —भि. द्र.

३ पालन करना, पोषण करना।

४ अपने अधिकार में करना, कब्जे में करना।

उ०—१ राखण हारा **राखि** तूं, आप आपणै हाथि। भी फिरि मन चाले नही, ऊठी और के साथि। —ह. पु. वा.

उ०—२ रामजी री माळा रै वासदी लगाय धणी सूं छानै बचायोड़ी गूंजी हाथ में **राखती** तौ म्हनै ऐ दिन नी देखणा पडता। —फुलवाडी

५ सुपुर्द करना, सौंपना।

६ एकत्र करना, इकठ्ठा करना, संग्रहीत करना, मिलाना ।
७ नियुक्त करना, तैनात करना, काम पर लगाना ।
उ०—हटड़ौ जड दियौ, खेत खड लियौ । ऊंट लीनौ, हाळी राख्यौ ल्हास करी अर खेत बुहायौ । —दसदोख
८ जाने न देना, रोक रखना, ठहराना, रोकना, गतिरोध करना ।
उ०—१ पुडी चडियौ 'जसौ' सीस पतसाहा, सुभट जोत भेजवा सक । रच कदळ त्रिण पौहर राखियौ तरण मडळ नट कुंडळ तक —जगन्नाथ सांदू
उ०—२ धावउ धावउ हे सखी, को दावणि को लाज । साहिब म्हाकउ चालियउ, जइ कउ राखइ आज । —ढो मा.
९ कुछ करने न देना, रोकना, वर्जन करना, मना करना ।
उ०—१ राणी जळती 'ऊदै' राखी । सुख नव कोट किया जग साखी । —रा. रू.
उ०—२ तिहिवारा हूं सघलानि मारत रोती देखी ने नारी । सूं कीजै जो, वीरा माहारा, तमौ ज राखौ वारी । —नळाख्यान
१० आश्रय देना, प्रश्रय देना, सरक्षण देना ।
उ०—१ दामोदर दीजै मती, कायर कांठै वास । सरणै राखै सूर रै, तेथ न व्यापै त्रास । —बा. दा.
उ०—२ हुरमा राखै अतरे, उडदाबैगण दुद । हाजर खिजमत कारणे, मुख नाजर हुसमद । —रा. रू.
उ०—३ तेरै तौ आसान सब, मेरै बौहत जरूर । हरीयै कुं करि आपनौ, राखौ रांम हजूर । —अनुभववाणी
११ आवास की दृष्टि से किसी को कहीं ठहराना, टिकाना, बसाना ।
उ०—१ माधव तुम्हे म चालसिउ, गोरी जंपइ गुज्झ । भलूं कराविसि भुइरूं, माँहि राखिसि तुज्झ । —मा. का. प्र.
उ०—२ कहि तु काळिज-मांहा धरूं, रांखू ह्रदय-मझारि । मूझनि मूकी माधवा, पगलूं रखे पधारि । —मा. का. प्र.
उ०—३ विधि सहित वधावै वाजित्र वावै, भिन भिन अभिन बांणि मुख भाखि । करै भगति राजांन क्रिसन ची, राज रमणि रुखमिणि ग्रह राखि । —वेलि
१२ धारण करना, वहन करना, स्वीकार करना, मानना ।
उ०—लोक लाज कुल की मरजादा, यामें एक न राखूंगी । —मीरां
१३ चोट करना ।
१४ आरोपित करना, मढना, थोपना, लादना ।
१५ रेहन या गिरवी रखना ।
१६ सामने लाना, आगे रखना, प्रस्तुत करना ।
१७ पारिवारिक या सामाजिक सम्बन्ध बनाना, मेल-मुलाकात रखना, सम्पर्क रखना ।
उ०—इणी भांत मिनख रै हाथा लगायोड़ी लाय में लुगाई जै दिन रात सिळगै तौ ई मिनख सूं नातौ तौ उणा नै राखणौ ई पड़ैला । —फुलवाड़ी
१८ रखवाली करना, ध्यान रखना, चौकसी करना ।
उ०—म्हांरै हाटे आप भलांइ उतरचां । म्हांरी थेली राखो । एइ धन चौर ले जावता तो म्हारा च्यार बेटा कुंवारा रहिता । —भि. द्र.
१९ अवलंबित करना, आधारित करना ।
उ०—१ आधी रोटी ऊपरै जे कोई राखै मंन । हरीया हरि का हुय रहै, भूख त्रिखा नही तंन । —अनुभववाणी
२० निभाना, पालन करना ।
उ०—१ रितु गांमी व्है सील राखियौ पुत्रोत्पत्ति फल पाई । पति पतनी दम्पति पिये प्यारी, नवला देह निभाई । —ऊ. का.
उ०—२ ठीक सील इक राखणौ मन करि निज अनुकूल । —वि. कु.
२१ कुछ तैयार कर रखना ।
उ०—१ जाळी मगि चढ़ि चढ़ि पंथी जोवै, भुवणि सुतन मन तसु मिळित । लिखि राखे कागळ नख लेखणि, मसि काजळ आंसू मिळित । —वेलि
उ०—२ सीखावि सखी राखो आखै सुजि, राणी पूछै रुखमणी । आज कहौ तो आप जाइ आवूं, अब जात्र अंबिका तणी । —वेलि
२२ करना ।
ज्यूं—विस्वास राखणौ, भरोसौ राखणौ, गरब राखणौ ।
उ०—१ जिण बखत मेळ पड़सी जरा कोडी रै नह कांमरौ । तन चाख लगी मेटौ तिका राख भरोसौ राम रौ । —ऊ. का.
उ०—२ दादौ सा गुमांनसिंघजी इयां रौ घणौ लाड राखता हा । छोटी ऊमर में ही ब्याह कर दियौ हो । —दसदोख
२३ रखना ।
उ०—१ हां अर नां, दोनूं मोखम मे राख'र उंकारै सूं हुंकारौ भरचौ अर मुछ्यां सूं उठ'र रावळै कांनी मूंछो मोड़चौ । —दसदोख
उ०—२ बीछू बांनर ब्याळ बिस, गंडक गरदभ गोल । ऐ अळगाहिज राखणा औ उपदेस अमोल । —बां. दा.
उ०—३ मनि संकांणी मारुवी, खुणसउ राखइ कंत । हंसतां प्रीसूं बीनवइ, सांभळि प्री विरतंत । —ढो. मा.
राखणहार, हारौ (हारी), राखणियौ —वि. ।
राखियोड़ौ —भू. का. कृ. ।
राखीजणौ, राखीजबौ —कर्म वा. ।
रक्खणौ, रक्खबौ, रखणौ, रखबौ, रख्खणौ, रख्खबौ —रू. भे. ।
राखबुपी-स. पु.-चीता, तेंदुआ । (डिं. कों.)

२ रखने का ढग ।

राखवरण, राखवरणौ–वि.–जिसका रग या वर्ण राख के समान हो, श्याम, काला ।

स. पु.–एक प्रकार का घोड़ा ।

राखस–देखो 'राक्षस' (रू भे.) (ना. मा.)

उ०—१ **राखसां** पथळ राम महल आकास रेग, मचीगा रा सल सामी मांडी युध मल । —पी. ग्र

उ०—२ चलै राजकुमार पिता चौ, सासरण पाय सहल्लै । रांवरण सहत घरणा खळ **राखस** दारुण, दैत दहल्लै । —र. रू.

उ०—३ तद फूलमती बोली रे मानवी तूं अठै कासू आयौ । अठै **राखस** आयौ तौ तनै मारसी । —चौबोली

उ०—४ जावता जावता देखे तो कासूं एक पहाड माहै **राखस**, **राखसणी** रै गोडै माथौ दे सूतो छै । —चौबोली

(स्त्री. राखसणी, राखसी)

राखसपुरि–स. स्त्री. [सं. राक्षस+पुरी] १ राक्षसो का नगर ।

उ०—इद्रु अछइ रहतू पुरराउ, विज्जमालि ते लहुडउ भाउ । चपलु भरणी नइ काढिउ राइ, रोसि चडिउ **राखसपुरि** जाइ ।

—सालिभद्र सूरि

२ लका ।

राखसि, राखसी–देखो 'राक्षसी' (रू भे.)

उ०—१ क्रत्या **राखसि** तरणीय जि सही, भीलि बाली ऊभी रही । मरिण माला नु पाया नीरु, पाचइ हूया प्रकट सरीर ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ सपेख अग नग साख सी, रत रोस मारग **राखसी** । तिह नाक पारण विछेद ताडे, बारण इक रघुबीर । —र. रू.

राखसु–देखो 'राक्षस' (रू. भे.)

उ०—एतइं **राखसु** रोसि जलतु आवइ फुड फेकार करंतु । बेटी बूसट मारइ जाम भीमु भिडेवा ऊठिउ ताम । —सालिभद्र सूरि

राखियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ किसी आधार या तल पर ठहराया हुआ, टिकाया हुआ, रक्खा हुआ, धरा हुआ. २ नष्ट न होने दिया हुआ, बिगडने न दिया हुआ, बचाया हुआ, उबारा हुआ, रक्षित. ३ पालन किया हुआ, पोषग किया हुआ. ४ अधिकार या कब्जे में किया हुआ. ५ सुपुर्द किया हुआ, सौपा हुआ. ६ एकत्र, इकट्ठा या सग्रहीत किया हुआ, मिलाया हुआ. ७ नियुक्त या तैनात किया हुआ, काम पर लगाया हुआ. ८ जाने न दिया हुआ, रोक रक्खा हुआ, ठहराया हुआ, गतिरोध किया हुआ ९ कुछ करने से रोका या मना किया हुआ, वर्जित. १० आश्रय, प्रश्रय या संरक्षरण दिया हुआ ११ आवास की दृष्टि से कही ठहराया या टिकाया हुआ, बसाया हुआ. १२ धारण या वहन किया हुआ, स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. १३ चोट किया हुआ १४ आरोपित किया हुआ, मढा हुआ, थोपा हुआ, लादा हुआ. १५ रेहन या गिरवी रक्खा हुआ. १६ सामने या आगे लाया हुआ, प्रस्तुत किया हुआ. १७ पारिवारिक या सामाजिक सम्बन्ध बनाया हुआ, मेल-मुलाकात रक्खा हुआ, सम्पर्क रक्खा हुआ. १८ रखवाली किया हुआ, ध्यान रक्खा हुआ, चौकसी किया हुआ. १९ अवलबित या आधारित किया हुआ. २० निभाया हुआ, पालन किया हुआ. २१ कुछ तैयार कर रक्खा हुआ. २२ किया हुआ. २३ रक्खा हुआ.

(स्त्री. राखियोडी)

राखी–सं. स्त्री १ श्रावरण शुक्ला पूर्णिमा की तिथि, जिस दिन हिन्दुओ मे, बहने अपने भाइयो के तथा प्रोहित-ब्राह्मरण अपने यजमानों के हाथ की कलाई के मंगल-सूत्र (रक्षा-बधन) बाधते है ।

वि० वि०—हिन्दुओ में यह पर्व दिन माना जाता है और इस दिन बड़ा त्यौहार मनाया जाता है । ब्राह्मरण इस दिन तर्पण करके जनेऊ बदलते है ।

२ उक्त दिन को बाधा जाने वाला मगल-सूत्र, रक्षा-बधन ।

३ गडा-ताबीज,

अल्पा०—रखडी, राखड़ी,

राखीपूनम–स. स्त्री. [स. रक्षापूर्णिमा] श्रावरण शुक्ला पूर्णिमा की तिथि जिस दिन रक्षा बधन का त्यौहार मनाया जाता है ।

रू० भे०—राखडीपूनम,

राखीबंध, राखीबंधण–स. पु. सं.] रक्षाबंधनम्] रक्षा बधन, रक्षा-सूत्र, मगल सूत्र ।

राखीबध भाई, राखी भाई–स. पु.–जिसको राखी बाध कर भाई बना लिया गया हो ।

राखूंडौ, राखेड़ौ–देखो 'राख' (मह., रू. भे.)

राखोड़ियौ, राखोडौ–देखो 'राख' (मह., रू. भे.)

उ०—जेहा केहा ज्याग, हैवर **राखोड़ा** हुवै । ताजी दीजै त्याग, जस लीजै सोई जगन । —बां. दा.

वि०—राख से ओत-प्रोत, राख से लिप्त, लिपटा हुआ 'सन्यासी' फक्कड़ ।

राखौ–सं. पु.–किसी रोग के निवारणार्थ मनुष्य (या किसी जानवर के भी) के शरीर पर लोहै की गर्म सलाका से, लगाया जाने वाला डाम ।

उ०—अठै रांणीजी आगै इयूं कहियौ जु कु वरजी नू खुधा न लागै सु म्हे जाणा छां । एक गाठि छै, गिटक एक रै मान सू भूख लागरण नही देती छै । जाहरां नीबू जवडी हुसी ताहरा दलपतजी रा दुसमरणा नूं दोहरी होसी । परण क्याल तेजसी वडौ बेद छै, आज धनतर छै, तिण कन्हां मूग हेक हेक जवड़ा **राखा** च्यारि दिराडीजै तौ समाधि हुवै । —द. वि.

रागंगी–वि.–गायक, गवैया।

राग–सं. [सं] १ अनुराग, प्रेम, स्नेह, प्यार। (अ. मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ वडौ धन वेस, म खोय मुदेस। चवां चित चेत, पुणौ मत प्रेत। भणा धन भाग रघुब्बर राग। —र. ज. प्र.

उ०—२ अग सकोमळ पेम सर भर, चूप सभै चतरग चितारौ। साध सती जत **राग** रसायन, सूर खिम्या कवि दास दतारौ। —अनुभववाणी

—उ० ३ मुख करि किम कहतइ बणें, जे तुम्ह सेती **राग**। ते मन जाणें तेह नौ, लागौ जिण विधि लाग रे। —प. च चौ.

उ०—४ फल कडुवा **राग** द्वेस ना, आण्यौ मन सुभ ध्यानौ रे। —जयवाणी

२ ममत्व, ममता, मोह।

उ०—१ मुनि जाण्यौ जहर ज दियौ, **राग** द्वेस फल जोयौ रे। भांणेजा ने राज मे दियौ, पुत्र ऊपर **राग** होयौ रे। —जयवाणी

उ०—२ काम न ऊठै कलपना, **राग** न किन सुं दोख। जन हरिया, उंन सत कुं, जीवत कहीयै मोख। —अनुभववाणी

३ लगाव, सम्बन्ध।

उ०—टिपस करै लेवा टका, नहीं मन माहै नेह। **राग** करे इण सुं रखै, गणिका अवगुण गेह। —ध. व. ग्र.

४. आकर्षण।

उ०—ईसान कूण मांहे हुंतौ रे,कास्टक नामे बाग। पान फलै करि सोभतौ रे, दीठां उपजै **राग**। —जयवाणी

५ श्रद्धा, भक्ति, आस्था, विश्वास।

उ०—१ करियइ पूजा अनइ प्रभावना रे, धरियइ सद्गुरू ऊपरि **राग** रे। —वि. कु.

उ०—२ हंस कर मीरा पीय गई है प्रभु प्रसाद पर **राग**। डब्बौ एक राणाजी भेज्यौ, उसमें कारा नाग। —मीरां

६ मैथुन की भावना।

उ०—१ अकबर रत्ता **राग** सूं, रंग त्रिया रस लद्ध। जो उतपात प्रगट्टियौ, सो सुणियौ निस अद्ध। —रा. रू.

उ०—२ आज सखी सपनतर दीठ, **राग** चूरे राजा पल्यगे बईठ। —बी. दे.

७ इच्छा, अभिलाषा, कामना।

उ०—माया तजि ज्याकूं ब्रह्मही दरसे, किया बाळक दाई। राग त्याग अभिमान न कोई, आय सरूप सदाई। —स्री सुखरांमजी महाराज

८ राग रग।

उ०—१ हरीया **राग** न रीझवौ, वेद न विद्या पाठ। काया जासी एकली, साथै खफण काठ। —अनुभववाणी

उ०—२ घट माही घडीयाळ, आठ पौहर लागी रहै। हरीया **राग** रसाळ, रग रग भीतर होत है। —अनुभववांणी

९ मन में होने वाली कोई सुखद अनुभूति।

१० सुन्दरता, खूबसूरती।

११ आभा, छटा, कान्ति, शोभा।

उ०—डाभ-अणी-जल-बिदवौ ए, जैसौ संभा नौ **राग**। सुपन दरसन नी ओपमा ए, सडन पडन ए लाग। —जयवांणी

१२ हर्ष, खुशी, आनन्द।

१३ मनोरंजन।

१४ बातों मे ली जाने वाली चुटकी, व्यंग।

१५ भाव, आशय।

ज्यूं—रोवणा में राग है।

१६ खेद, शोक।

१७ ईर्ष्या, द्वेष, डाह।

१८ क्लेश, पीड़ा।

१९ क्रोध, गुस्सा।

२० ग्रह अंश एवं न्यास स्वरों का वह कलात्मक प्रयोग, जिससे सुनने वाले का मन अनुरंजित हो सके। या ध्वनि की वह विशिष्ट रचना जो स्वर एवं वर्ण विभूषित हो और जो प्राणी के चित्त को रंजित करता हो। (संगीत)

उ०—१ स्वतंत्र नृत्यसाळ में नितंबिनी नचै नहीं। सुहागिनी स्वराग **राग** रागनी रचै नहीं। —ऊ. का.

उ०—२ रीझै सांभळ **राग**, भीजै रस नह भेचकै। नैड़ौ आवै नाग, पकड़ीजै छाबड़ पडै। —बां. दा.

उ०—३ तड़ लाग गयौ सग भाग तणौ, सुध हीण अकब्बर **राग** सुणै। —रा. रू.

२१ छत्तीस राग-रागनियों में से कोई एक। (संगीत)

उ०—१ ताल अस्ट द्वादस तवन, सोळह भेद संगीत। **राग** छत्तीसह रागणी, पंच उकति सुप्रबीत। —सु. प्र.

उ०—२ घट मैं रास रच्यौ नर नारी, आप ही नाचै कौ गति-हारी। पातरि नाचै पांच पचीसुं, गावै अगाभै **राग** छतीसुं। —अनुभववांणी

२२ किसी वाद्य से निकलने वाली तान, धुन, लय। (संगीत)

उ०—१ विन पावां जांह नाचिबौ, विण कर ताळ बजाय। विनां **राग** रीझायबौ, विना कंठ सुर गाय। —अनुभववांणी

उ०—२ दिन आथमियां पछै ई पीजारा रै घरै तांत धूं-धट धूं-धट री **राग** अलापती ही। —फुलवाडी

२३ आवाज, स्वर, शब्द, ध्वनि।

२४ आत्मा का मूर्छा रूपी परिणाम। (जैन)

२५ रंग।

२६ लाल रंग, लाखी रग।

२७ ललाई, लालिमा।

उ०—तुम्हसु लागउ नेहलउ, जाण मजीठउ राग। पट्टकूल फाटै थके, रहे आगा सु लागौ रे। —प. च. चौ.

२८ हाथ का कवच।

उ०—पोरस्स नकुळ पडव प्रमाणि, तण बधै जूसण कसण तांणि। ओपंत राग हाथा अनोप, तुडताण मीस रोपत टोप। —गु. रू. ब.

२९ छोटा हरिण।

उ०—तिके किण भांत रा हिरण छै? काळा वडा बेगड छै, मुहडां रै डार में मेघ हुय रह्या छै मांहे राग छै जिके कूद-उछळै छै। —रा. सा. स.

वि. वि.—कृष्ण हिरण के युवा बच्चे को 'राग' कहा जाता है। इसका रंग जन्म से श्याम नही होता। इसकी श्यामता आयु के साथ साथ बढती रहती है।

३० घोडा। (ना. डि को.)

३१ राजा।

३२ सूर्य।

३३ चन्द्रमा।

३४ पैर मे लगाने का अलता।

३५ एक वर्ण वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे १३ वर्ण होते है।

स. स्त्री.—३६ छै की सख्या। * (डि. को.)

वि.—छै।

रू० भे०—राग।

अल्पा.—रागळी।

रागकर—सं. पु.—एक प्रकार का रत्न। (व. स.)

रागड़—स. पु.—१ भैंसा।

उ०—खडौ लांगडौ बीर वीराधि खेतू। करै रागड़ां छागडां राह केतू। —मे म.

२ बडी उम्र का काला हरिण।

अल्पा०—रागडौ।

रागड़ौ—देखो 'रागड' (अल्पा., रू. भे.)

रागजांगड़ौ—स. पु.—वीर रस पूर्ण राग, सिंधुराग।

उ०—जबर अभग जुध सुभट अंग कड़ां जरद्दां जडै। प्रगट हद राग-जांगड़ौ हाका पडै। —विसनदास बारहठ

रागजोगिया—स. स्त्री.—एक राग विशेष।

रागण, रागणी—स. स्त्री. [सं. रागिणी] १ किसी राग की स्त्री, रागिनी। (सगीत)

वि. वि.—इनकी संख्या ३६ मानी गई है। अर्थात ३६ प्रकार की रागिनियां होती है।

२ कोई राग जिसकी एक निश्चित स्वरावली हो।

३ चतुर स्त्री।

४ मेना की बडी कन्या।

५ जय श्री नामक लक्ष्मी।

६ स्वेच्छाचारिणी, या छिनाल स्त्री।

७ छत्तीस की सख्या। *

वि. १—स्नेह या प्रेम करने वाली, अनुरक्त।

उ०—चित चोखौ चिहुं नारि नो रे, गुणवती कहवाय। प्रिउ ऊपरि अति रागणी, ते कथन न लोपै काय। —वि. कु.

२ छत्तीस।

रू० भे०—रागनि, रागिणी, रागिनी।

रागणौ, रागबौ—क्रि. स.—१ किसी राग या रागिनी को अलापना, साधना, गाना।

२ अनुराग या प्रेम करना।

क्रि. अ.—३ अनुरक्त या आशक्त होना।

४ लीन होना, लिप्त होना।

रागणहार, हारौ (हारी), रागणियौ —वि।

रागिओडौ, रागियोडौ राग्योड़ौ —भू. का. कृ.।

रागीजणौ, रागीजबौ। —कर्म वा./भाव वा.।

रागदोख, रागदोस, रागद्वेस—स. पु. यौ. [स. राग+द्वेष] १ प्रेम व ईर्ष्या आदि मन के विकार, रागद्वेष।

उ०—नकौ रागदोखं, नकौ बध मोखा। नकौ घाटि वाध, नकौ आध ओखा। —अनुभववांणी

२ छल-कपट, पक्ष-पात।

उ०—आतम ध्यानी आगरौ, जारे बीकांनेर। रागदोख गुजरात में, निंदक जेसळमेर। —अग्यात

रागनि—सं. स्त्री.—१ जांघ, जंघा, रान।

उ०—उडै नभ रागनि लग्ग छछोह, मलप्फत पंच बरच्छनि बोह। —ला. रा.

२ देखो 'रागणी' (रू. भे.)

उ०—पुनि पारन पाठ पठावन में, गुणग्यांन न रागनि गावन में। —ऊ. का.

रागबागेस्वरी—सं. स्त्री. यौ [सं. राग+बागेश्वरी] छत्तीस राग रागिनियों में से एक राग विशेष।

रागमाळा—स स्त्री.—१ समान रूप वाली विभिन्न रागों का मिश्रित रूप।

२ रागों के देवमय स्वरूप का काव्यात्मक वर्णन एवं चित्रात्मक अकन।

रागरंग—स पु—१ आनन्द, प्रसन्नता, खुशी।

उ०—१ रागरंग उछरंग रचाणा, बाग राई के बाकी। सोग

अथाग सिधु बिच सारा, त्याग पधारण ताकी । —ऊ. का.

२ आनद व खुशी का उत्सव ।

उ०—तरै असवारी कर काळीय द्रह सिधाया । रागरंग हुवै छै छड़बडा खिलबत रा साथ सु बैठा छै ।

—राव रिणमल री बात

२ आमोद-प्रमोद, खेल, क्रीडा, मनोरंजन । हास-विलास, मौज मस्ती ।

उ०—१ करंत एक दान पुन्नि, जिग्ग होम जप्प ए । करंत एक रागरंग मोहिए सरप्प ए । —गु. रू. बं.

उ०—२ जकै दिन ही कीरो सोनौ उडावै, रागरंग में जा परा'र गमावै है । —दसदोख

उ०—३ हमेसा सुधा मे गरकाब रहै । कलावंत तवायफा, सात चाकर राखिया । रागरंग मे मस्त रहै ।

—जलाल बूबना री बात

३ नृत्य-गायन ।

उ०—१ अनेक पद्मणी अवास, रूप भोमि रच्चए । अनेक रागरंग ओप, न्रतकार नच्चए । —सू. प्र.

उ०—२ वाजत्र वजत विसाळ, रस रागरंग रसाळ । मिळ झूळ सुकिया बाम, क्रत रूप रति जिम काम । —सू. प्र.

४ रतिक्रीड़ा ।

उ०—भरमल कन्है रही सो दोनू ही रागरंग हंसिया खेलिया मन प्रसन्न हुवौ । —कुंवरसी सांखला री वारता

रू० भे०—रंगराग ।

रागरज्जु—स. पु. कामदेव । (डि. को.)

रागरस—सं. पु.—१ हंसी, खुशी, आनन्द ।

२ आमोद-प्रमोद, हास विलास ।

३ नाच-गान ।

रागलता—सं. स्त्री.—कामदेव की स्त्री, रति ।

रागळी—देखो 'राग' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ मद गती तप तेज कम, छूटी रागळियां । पूरा दिन लू पोखिया, प्रगटी वादळिया । —लू.

उ०—२ डकार लेवै ही, सागीड़ी सू सावै ही अर रागळी गुण गुणावती गैलै वगै ही । —दसदोख

रागलौ—वि. (स्त्री. रागली) जिसके मन मे राग हो, राग-द्वेष, मोह करने वाला ।

रागवडाळौ—सं. पु—वीर रस पूर्ण राग, सिधु राग ।

उ०—मारू भड़ चढिआ मछर, करिवा भारथ कत्थ । रागवडाळा वज्जिआ, सकौ सचाळा सत्थ । —वचनिका

रागारळ, रागांरळी—स. स्त्री.-हंसी-खुशी, आमोद-प्रमोद व क्रीड़ा से मिलने वाला रस, तृप्ति ।

उ०—ऊंधा चूंधा कर फेरा उळझावै, बनड़ौ बनडी बर मनडौ मुरझावै । रस में बेरस बस रागांरळ रीसै । दुलहणि दुलहै नै दावानळ दीसै । —ऊ. का.

रागाउर, रागातुर—वि. [स. राग+आतुर] प्रेम, मोह, हास-विलास आदि के लिये व्याकुल, आतुर ।

उ०—साभलि एहवा बचन कुमार, रागातुर हूवौ तिणवार । एहवी छै गुणवंती जेह, मदालसा हुसइं नही तेह । —वि. कु.

रागि—देखो 'रागी' (रू. भे.)

रागिणी, रागिनी—देखो 'रागणी' (रू. भे)

उ०—१ हूं प्रीयुड़ा तुझ रागिणी, तूं का हृदय कठोर । चंद चकोर तणी परि, मान्यउ तूं मन मोर । —स. कु.

उ०—२ राति दिवस तोरी रागिणी, राखु हृदय मझारि रे । सीत तावड हूं सहु सहूं, तूं छइ प्रांण आधार रे । —स. कु.

उ०—३ प्रीतम सूं अति रागिणी रे, रूपवंत अभिरांम ।

—जयवांणी

रागी—वि. [सं. रागिन्] (स्त्री. रागणी, रागिणी) १ राग से युक्त ।

उ०—जाग्यौ जैन चद सागी, सोभागी रागी जैन धरम । वैरागी पुण्याई जागी अधिकै उछाह । —ध. व. ग्रं.

२ मोह-माया में फंसा हुआ ।

उ०—१ दुख सुख का कारण मन जीता, सो जन है वैरागी । कहै सुखराम सुणौ भाई साधां, और सबी है रागी ।

—श्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ सांतिनाथ सोभागी हो लाल, सोलम जिन सागी हो । 'विनयचद्र' रागी हो लाल, जयौ तुं बड भागी हो । —वि. कु.

३ ईर्ष्यालु, द्वेष करने वाला ।

उ०—हरजीमल सेठ रागी थयौ जद मघनाथजी मे उरजोजी साधु मोटौ ओलियौ लइ वांचवा लागौ —भि. द्र.

४ अनुरक्त, आशक्त, मोहित ।

५ विषय वासना में लीन, कामी ।

६ प्रेमी, अनुरागी ।

७ प्रेम पूर्ण, प्रीति पूर्ण ।

८ लाल रंग का, लाल सुर्ख ।

९ रंगा हुआ, रंजित ।

स. पु.—१ अशोक वृक्ष ।

२ मडवा या मकरा नामक कदन्न ।

३ छै मात्रा का छंद ।

४ आभूषणों में गोल चक्रनुमा खुदाई करने का लोहे का एक औजार ।

रू० भे०—रागि ।

रागु—देखो 'राग' (रू. भे.)

उ०—कीजइ अवसरि अवसरि नवरसि रागु वसंत । तरुणी दळ दोलारस सारस भमइ हसत । —जयसेखर सूरि

राघव—स. पु. [स.] १ परमेस्वर, ईस्वर । (ह. ना. मा.)

उ०—१ ते आलेही हर तणा, जे नर नाम लियत । से जमडंडा परहरे, **राघव** सरण रहत । —ह. र.

उ०—२ आप नाम इळ ऊपरा, रसना **राघव** नांम । रूडी विध सूं राखियौ, पुरखा जका प्रणाम । —बा. दा.

उ०—३ निमौ नरसिघ तुहारो नाम, कियौ पहिळाद तणौ सिध कांम । कियौ तैं **राघव** रूप करूर, चत्रभुज दैत हुवौ चकचूर । —पी. ग्र.

२ विष्णु का एक नामान्तर ।

उ०—**राघव** रयणायर रसा, सेस महेस्वर वंण । सुणौ बधायौ गिरि सुता, सो व्हौ मो सुख दैण । —बा. दा.

३ दशरथ नन्दन श्री रामचन्द्र ।

उ०—**१ राघव** उमग हस हम रटैं, खेलूं खगां खतग रौ । रिम हणौ आज पुरू रळी, जुद्ध अखाडौ जग रौ । —र रू

उ०—२ रामचद्र नें सील राख के, कसर न राखी काई । रावन वस खोय के **राघव,** विजय निसान बजाई । —ऊ. का.

उ०—३ बैर मही तोटौ वसै, वसै नफौ नह बक । सिया विरह **राघव** सह्यौ, रावण पलटी लक । —बा. दा.

४ रघु का वंशधर ।

५ अज ।

६ एक वडी जाति की मछली।

रू० भे०—राघवि, राघव्व, राघौ ।

अल्पा.—राघवौ ।

राघवराई—स. पु. [स. राघव+राजा] १ श्री रामचन्द्र ।

२ ईस्वर ।

उ०—सत सिहाई, **राघवराई** वौ हरि गावौ पै उध पावौ । —र. ज. प्र.

राघवानंदी—सं. पु.—वैष्णव सप्रदाय की एक शाखा व इस शाखा का अनुयायी ।

राघवि—देखो 'राघव' (रू. भे.)

राघवेंद्र—सं. पु. [सं. राघव+इन्द्र] रघुवंशियो में इन्द्र, श्री रामचन्द्र ।

राघवेस—स. पु [स. राघव+ईश] श्रीरामचन्द्र ।

उ०—सदा नमत ओधराय, पाय धू सुरेस रे । वदां नरेस आन कुण, जोड़ **राघवेस** रे । —र. ज. प्र.

राघवौ—देखो 'राघव' (अल्पा., रू. भे.)

राघव्व, राघौ—देखो 'राघव' , (रू भे.) (डिं. को.)

उ०—१ समाणौ तूझ महीं घणस्याम, **राघव्व** अम्हीणौ आतम राम । —ह. र.

उ०—२ नगा आकर तणौ रूप हर मणी निज । रूप कुळ दिवाकर तणौ **राघौ** । —र. ज प्र.

उ०—३ कीजै वारणौ छिब काम कौटिक, दीन दुख दाघौ । साभाव सरण-सधार स्रीवर, राज रौ **राघौ** । —र. ज प्र

उ०—४ सही सेस लाखंमणां धारि सोधा । जगदीस **राघौ** सकौ देव जोधा । —सू. प्र.

राड़—स. स्त्री. [सं रारि, प्रा. राडि] १ युद्ध, झगडा, समर । (अ मा.)

उ०—१ तोयधी गिरराज तारै, प्रगट कर कपि सेन पारै । रची लका **राड़** । —र. ज. प्र.

उ०—२ कोतक सो मंडे भाल कपी, थाटां हुय सुण जै **राड़** थपी । थिर थाटा मैं जग **राड़** थपी, करम्यूं निरबीजा भाळ कपी । —र. रू.

उ०—३ धाड़े पुकार पड़ लाखि धाड । रवि उदय अस्त लग पच **राड़** । —रा. रू.

उ०—४ चौधारा लाखीक चाडतौ, किलम पचाहर कीया कर । **राड़** विभाड सोहियौ राजा, अरक्क ज्यूं ई दळ फाड यर । —गु. रू. ब.

२ कळह, गृह-कळह ।

उ०—१ इणरै सागै तीजी लुगाई री गिरै । वा हजारा में टाळकी ही । **राड़** रौ तौ उण नै फगत मिस चाहीजतौ । बाणिया रै तौ नाका दम कर दियौ । —फुलवाडी

उ०—२ रोग अगन अरु **राड़** जाण अलप कीजै जतन । बधिया पछै बिगाड, रोक्यौ रहै न राजिया —किरपारांम

३ तकरार, हुज्जत ।

उ०—१ मासी सै समझती, पण जोर कांई करती । नित जणा जणा सूं **राड़** करचा के खसियां कांई हाथ आवै । —फुलवाड़ी

उ०—२ भाणजी कहचौ—मासी थनै ई **राड़** करियां बिना रंजत नी व्है । थारा बेटा पटिया तुड़ाता व्हैला, थूं छेकी जावै जकी बात करै नी, क्यूं विरथा आडी-डोढी खसती फिरै । —फुलवाडी

४ दिक्कत, समस्या, रगडा ।

उ०—चोरा रै तौ आज नांमी सुगन व्हिया । यूं माल चौडै मिळ जावै तौ काई चाहीजै । सेठांणी **राड़** जैडी ई बात को राखी नी । —फुलवाड़ी

५ दरार ।

उ०—धण घण साच बधाय, नह फूटै पाहड़ निवड़ । जड़ कोमळ भिद जाय, **राड़** पड़ै जद राजिया । —किरपाराम ।

६ शाप, बददुआ ।

रू० भे०—राड़ि, राडी, रार, रारि, रारी

राड़क—सं. पु.—योद्धा, वीर ।

वि०—कळहप्रिय, झगडालू ।

राड़गारौ—देखो 'राड़ीगार' (रू. भे.)

उ०—१ सो जतन तौ घणा ही किया पिण उहा रौ लोग **राड़गारौ** सो भिळ गयौ —मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ पछै हिसार रौ फौजदार चढ आइयौ सौ भागियौ इसा जालम **राड़गारा** बडा मरद राजपूत था।
—ठाकुर जयतसी री वारता

राड़थभ—स पु –योद्धा, वीर।

राड़द्रह—स. स्त्री.–१ राठौड़ों की एक उप-शाखा।

उ०—सू बालौत देवळा (ड़ा) सीधळ, दबि बोड़ा बाळीसा देवळ। **राड़द्रहां** सोढा मछ़रीका, सेव ग्रही भिळि मसळि सरीका।
—रा. रू.

२ देखो 'राड़धरा'

उ०—मिळ दळ प्रबळ **राड़द्रह** मारै। सार असुर साचोर सघारै।
—रा. रू

राड़धड़ा, राड़धरा—सं. स्त्री.–बाड़मेर जिले के एक क्षेत्र विशेष का प्राचीन नाम जो राड़ ऋषि के नाम पर पडा था। (मा. म.)

वि० वि०—इस प्रदेश के घोडे बढिया माने जाते थे।

राड़धरी—वि. स्त्री–राड़द्रह की, राड़द्रह सम्बन्धी।

उ०—रांमाजी री ठकुराणी **राड़धरी** जिण री रावजी नूं कह्यौ रावजी नूं बाहर काढौ। —बां. दा. ख्यात

राड़ांजीत, राड़ाजीत, राड़ाजीतौ—वि. (स्त्री. राडाजीतणी) युद्ध में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, वीर।

उ०—उकथां नमाय कथा संघा रा विरद्दा आदू, तौरा जोमरद्दा बाळा बखेरे तरांह। 'भवानेस' हरा **राड़ांजीत** राण बारा माळी, समंदरा वारपारां तुहाळी सराह। —गोरांदांन आसियौ

राड़ि—देखो 'राड' (रू. भे.)

उ०—१ चिपि नसां माहि चकचूर, हुय, सरधा दूर सिधायगी। खित **राड़ि** समै किय खत्रियां, बाड़ खेत नै खायगी। —ऊ का.

उ०—२ छयल्ल देह छेदती, भ्रूहां कोवंड भेदती। धानंखणी सुं धाडि धाड़ि. रुति मांडै वीर **राड़ि**। —मा. वचनिका

उ०—३ देवि द्रूपदिय **राड़ि** सांभळी, हाथि लेइ हथीयार आविळी भीमु भीरु इम कीचइ कूटइ, तेह आगली न कोई छूटइ।
—सालिसूरि

२ देखो–'राड़ी' (रू. भे.)

राड़िगार, राड़िगारौ—देखो 'राड़ीगारौ' (रू भे.)

उ०—मारै बैरिया अखूटी आव भूपाळां खांडियौ माण, तेग धारै नकौ पाण छाडियौ तमाम। वीर राव छळा जाग ताडियौ दला रै बैर, **राड़िगारै** उखेलौ माडियौ 'जोगीरांम'। —बनजी खिड़ियौ

राड़ी—वि.–१ लड़ाई या झगडा करने वाला, झगड़ालू।

२ जबरदस्त, जोरदार।

३ योद्धा, वीर।

उ०—१ खीचीकुल 'दूदौ' अरि खावण। राडी दुलह हुवौ बळ रांवण। —वं. भा.

उ०—२ इक पड़ै रीठ गोळां अतर, देखि रुठा कमधज **राड़िया**। भूखाळ वधै जिम देखि भख, आया वागा उपाडिया। —सू. प्र.

४ देखो 'राड' (रू भे.) (ह. ना. मा.)

उ०—राव बिन फिरग झेलै कवण **राड़ियां**। (जिण रौ) भमै नवनाड़िया बीच भमरौ। —रावत जोधसिंह कोठारिया रौ गीत

रू० भे०—राडि

राड़ीगार, राड़ीगारौ—१ योद्धा, वीर

उ०—१ **राड़ीगार** चहुआंण जाती राड़ थोब राखी। साखी चद-सूर जेते बाता माह सूर। —रावत जोधसिंह कोठारिया रौ गीत

उ०—२ बळ लकलै कूरमा निबाबां, बोलै बांका तेण जबाबा। कोट धरै सामांन अकारा, गरट किया भड़ **राड़ीगारा**। — रा. रू.

२ कलह प्रिय, झगडालू

रू. भे.—राड़गार, राड़िगार, राडिगारौ

राड़ौ—देखो 'राड' (मह., रू. भे.)

उ०—**राड़ौ** सालूळी अत्थगा बेघ बधै सोबा रायजादां, सतारा उछाजां जूह उमडै सजीत। घोर बेळा प्रथम्मी आंणतां सूत हेक घाटै, आसमांन फाटै थंभ लगायौ 'अजीत'।
—अजीतसिंह चूंडावत रौ गीत

राच—देखो 'राछ' (रू. भे.)

राचणी—वि. स्त्री.–१ जिसका रंग अच्छा व गहरा जमता हो, रंजित होने वाली।

उ०—महंदी वायी-वायी वाळूड़ा री रेत। पेमरस महंदी **राचणी**। महंदी सींची सींची जळ जमना रे नीर, पेमरस महंदी **राचणी**।
—लो. गी.

२ शोभा देने वाली, सुन्दर लगने वाली, खिलने वाली, निखरने वाली।

उ०—पानां रे सरीसी थारी धण **राचणी** ओ राज। राज ढोला राखो नी थांरे मुखड़े रे माय। —लो. गी.

३ अनुरंजित होने वाली।

सं. स्त्री.–मेंहदी।

उ०—हरसा मेरा बाला रै, कुण तो रै गूंथैले बाई रौ सीस। ओदर का रै लोट्या, कुण तो मांडेगौ हाथां **राचणी**। —लो. गी.

राचणौ—वि. (स्त्री. राचणी) रंजित होने वाला, रंजित होकर खिलने वाला, जमने वाला।

उ०—प्रेम विहूंणी प्रीति, जोए मन न ठरै 'जसा'। रस विण पाना रीति, रंग न आवै **राचणौ**। —जसराज

राचणौ, राचबौ—क्रि. अ. [सं. रक्तिति प्रा. रच्चइ] १ किसी रंग

का किसी वस्त्र या वस्तु पर बैठना, जमना, जमकर कर चमकना। २ मेंहदी के रंग से रंजित होना, मेंहदी का रंग खिलना।

उ०—मौराकीन री लैंघौ, गुलाबी चीर अर कसूमल चोळी री सोणौ पैरांन। हाथा रै राच्योड़ी मैंदी हींगळू री टीकी, गज-गज लाबा, बांसवाळी मूं सरगळ बाळ। —दसदोख

३ रंजित होना, रंग जाना।

उ०—रिधि सिधि सबही दासी, जोडै हाथ खडी। इनके रंग राचे नहि कबहूं, आतम जाण जुडी। —स्री सुखरामजी महाराज

४ अनुरक्त होना, आशक्त होना, प्रेम के रंग मे रंगीजना।

उ०—१ रांम राजै रसा रूप रे, नेतबंधी वरण नूपरे। सीत वाळौ पती साच रे, रे मना जेणहू राच रे। —र. ज. प्र.

उ०—२ नर राची म्है ना लखी, तूं कत लख्यौ सुजाण। पढ कुरांण रीतौ रह्यौ, राच्यौ नह रहमाण। —अग्यात

उ०—३ पति वरता सो जाणीयै, हरीया पति सूं हेक। राम विना राचै नही, आवौ जाय अनेक। —अनुभववाणी

उ०—४ रयणाहर रयणे भरयउ, गंभीर सुंदर रीति। राजहसा राचइ नही, मान सरोवर प्रीति। —स. कु.

उ०—५ ध्रताची आगलि नाचसि, मनेका गुण गाई राचसि। रूहूं सुख पांमिस सुंदरी, सुरपति नि भरत्तार ज वरी। —नलाख्यांन

५ लीन होना, मग्न होना, मस्त होना।

उ०—साखी रे भांण नसापत सारै, कीध महाजुध कीत सकाम। साच तकौ कज साधां सारत, राच महीप सु रामण राम —र. ज प्र.

उ०—२ हृदि बैठा हृदि की कहै, वेद पुराना वाचि। हरीया वेहद वावरा, रहया रांम सुं राचि। —अनुभववाणी

उ०—४ स्रीराम चरण चित राचियौ, जन दूजौ हे नहि आवै दाय। —गी. रां.

६ लिप्त होना, उलझना, फसना।

उ०—१ साच झूठ झूठ साच रावतौ रहयौ। रूप कू कुनांव नांव नावतौ रहयौ। —ऊ. का.

उ०—२ मेहल पिलगादिक अथिर छै, सो तो आया आपणै हाथ। आपै भोग माहे राची रह्या, आप समझौ प्रथ्वीनाथ। —जयवाणी

उ०—३ तैं भद्रक परिणाम थी जी, सुविसेखै मन लाय। ऊपरलै आडबरैंजी, राचि रहयौ मुरझाय। —वि. कु.

७ प्रभावान्वित होना, प्रभाव मे आना।

उ०—तरुणी जिण धनवान तजि, तजियौ वेस विभाग। चारुदत द्विज ही चहै, राची गुण अनुराग। —व. भा.

८ शोभित होना, शोभा देना, फबना।

उ०—१ म्हारा जामण जाया भावज रै राचै रे विछिया वाजणा —लो. गी.

उ०—२ मुर मे फोग महेस, रेत भसमी पर राचै। चाद आगिया माथ, जटा लासूड़ा जाचै। —दसदेव

९ प्रसन्न होना, खुश होना।

उ०—१ चारण भट्टा बाभणा, वयण सुणावै सूंब। थे राजी रानमान सूं, दीधै राचै डूंब। —बा. दा.

उ०—२ सुख मे कदै न राचियै, दुख ना रहियै रोय। अजै घणौरा दीहडा, की जाणू की होय। —अग्यात

१० फैलना, छा जाना।

उ०—१ माचै खाग झाटा राचै तंवाई छ खंडा माथै। रवा आटपाटा नदी बहाई रोसाग। —सूरजमल मीसण

राचणहार, हारौ (हारी), राचणियौ —वि.।

राचिओडौ, राचियोडौ, राच्योडौ —भू. का. कृ.।

राचीजणौ, राचीजबौ —भाव वा.।

रातणौ, रातबौ —रू. भे.।

राचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ वस्त्र या वस्तु पर बैठा हुआ, जमा हुआ, जमकर चमका हुआ. (रंग) २ मेंहदी के रंग से रंजित हुवा हुआ, मेंहदी का रंग खिला हुआ. ३ रंजित हुवा हुआ, रंगा गया हुआ. ४ अनुरक्त या आशक्त हुवा हुआ, प्रेम के रंग मे रंगा हुआ. ५ लीन, मग्न या मस्त हुवा हुआ. ६ लिप्त हुवा हुआ, उलझा हुआ, फसा हुआ. ७ प्रभावान्वित हुवा हुआ, प्रभाव में आया हुआ. ८ शोभित हुवा हुआ, फबा हुआ. ९ प्रसन्न या खुश हुवा हुआ. १० व्याप्त हुवा हुआ, फैला हुआ, छाया हुआ।
(स्त्री. राचियोडी)

राचोड़ी—स. स्त्री.—१ बढ़ई के औजार रखने की पेटी।
२ देखो 'रछांनी' (रू. भे.)
रू० भे०—राछोड़ी।

राचोड़ौ—देखो 'राचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. राचोड़ी)

राछ—सं. पु. [स. रक्ष] (रक्षा प्रयोजनं अस्य तद् रक्षम्) १ किसी कारीगर के काम आने वाला औजार, उपकरण या साधन।

उ०—१ खूब्यां माथै पैरण रा गाभा वाळ में डोला, तेजाब में घडया-घाट खोळा हा। आळा में राछ अर मोवी-झरोखा मे भांत-भांत रा न्हाना मोटा सचा मेल्या पड़या है। —दसदोख

उ०—२ अर हरामखोर तेजसी बैंद बेवै एकठा मिळ अर कारी न महूरत पूछि, आप मांहै सिरचद तेजसी मिळी मसलत करी अर डाभ रौ राछ एकै जिनस रौ घड़ायौ। —द. वि.

२ शिश्न।

उ०—सत्रू सूं दिल साफ, सेणा सूं दोखी सदा। बेटा सारू बाप, राछ घस्या क्यों राजिया। —किरपाराम

२ अस्त्र-शस्त्र।

रू० भे०–राच ।

राछांनी–देखो 'रछानी' (रू. भे.)

राछपीछ–स. पु–देखो 'राछापूंजी'

उ०—ढोर-डागर, थोडौ घणौ गेणौ गांठौ **राछ-पीछ** अर दोनूं झूंपडा, जिकानै रणछोडै रातदिन एक करनै बडी मुस्किल सूं बणाया हा, सगळा ई सेठा रा व्हैगा। झूंपड़ा रा बारणा माथै राज रा चेपा लागग्या । —रातवासौ

राछापूंजी–स. स्त्री. यौ.–१ किसी कार्य मे उपयोग किये जाने वाले औजार या उपकरण ।

२ गृहस्थ सम्बन्धी सम्पूर्ण सामान ।

उ०—भूख सूं मिळग्या। **राछा-पूंजी** बेच-बेच'र खाणी पळा'ली । मू घौ ल्यावै अर सू घौ बेचै है उपज अर खरच री लीक नीं खेचै । —दसदोख

(मि. आथापूंजी)

राछोड़ी–१ देखो 'राचोडी' (रू. भे.)

२ देखो 'रछांनी' (रू. भे.)

राजंद, राजद्र–देखो 'राजेंद्र' (रू. भे.)

उ०—१ ऐस रमण सेजा अंतर, रूडौ धण रौ रूप। **राजंद** रौ हित निरखवै, ऐनक छाप अनूप । —पना

उ०—२ नमौ जप तप्प किता जोगिंद, राजा स्रीरांम नमौ **राजंद** । —ह. र.

उ०—३ तुरंगा पाखरा सिलहां साखतां, **राजंद** एहा बोल रहावै । मोहकमियौ मेवासां माथै, ऊगै बिहाणै चोकस आवै ।

—म्होकमसिघ राठौड रौ गीत

उ०—४ अणुहार अखाडौ इंद्र रौ, जोधहू-पुर इंद्रा-पुरी। 'गजसिंघ' इद्र **राजद्र** गति, सरब इद्र सामग्गरी। —गु. रू. ब.

राजंसी–वि. [स. राज्य–वशी] राज वशी, राजा के खानदान का ।

उ०—सुरा पान आमुख सैहैत, करी गोठ तिण ठौड़। रात सरोवर पर रह्यौ, **राजंसी** राठौड़ । —पा. प्र.

राज–स. पु. [स. राज्य] **१** किसी राजा के अधीन रहने वाला देश, जनपद, राज्य ।

उ०—१ सब कूं छाड भज्यौ साहिब कूं गुरु की सरण गई। रांणाजी रौ **राज** त्यागौ सत मुख आइ गई । —मीरां

२ शासन, सत्ता, हुकूमत, राज्य ।

उ०—१ रावळ रामचद सिघ रौ। सिंघ भांनीदास रौ। भानीदास हरराज रौ टीकै बैठौ। मास १० दिन २० **राज** कियौ। पछै **राज** फिरियौ । —नैणसी

उ०—२ अकबर लेख प्रमाणै, तहवर सहत **राज** लोभांणै। भावी चित अचीती, विणसण गा (का) ळ बुद्धि विपरीती ।

—रा. रू.

उ०—३ बजाड़ै केता फेरां बंस, किता तैं फेरां जीत्यौ कंस। राजा उग्रसेण समंपे **राज**, करै जदुवंस तणा सिध काज ।

—ह. र.

उ०—४ मन बुद्धि चित्त अहकार मति, सगरंति तना अेवट सकति। रहमांण तुहारौ अटल **राज**, वीठला हिमै सिणगार बाज । —पी. ग्रं.

उ०—५ सवार-सिझ्या तीनूं भेळा बैठनै लूखी-सूखी खायनै माथै ठाडौ पांणी पीला तौ म्हानै जांणै सुरग रौ **राज** लाधौ ।

—फुलवाड़ी

३ शासन करने वाली सस्था, प्रशासन, सरकार प्रशासन मण्डल ।

उ०—१ **राज** रै आं लखणा सूं तौ सुभट दीसै के अबै अपांरी माया अपानै ई रुखाळणी पड़ैला। भरोसै रह्यां वांरै साथै ई अपानै ई मरणौ पड़ैला । —फुलवाड़ी

उ०—२ पोहरा देवणिया छोटा आदमी पोहरा देवै अर **राज** करण वाला **राज** करै । —फुलवाड़ी

४ कुछ करने की सामर्थ्य या अधिकार ।

५ प्रशासन या शासन करने की अवधि, शासन–काल, राज्य काल ।

उ०—क्रत पूरण वधियौ कळू रीत दवापुर **राज** । वंस हंस अवतंस विध, 'अभैसाह' महाराज । —रा. रू.

६ प्रभाव, प्रभुत्व, नियंत्रण ।

उ०—ओउं सोउं सबद की, सहजां सुणी अवाज। जनहरीया इन ऊपरै, ररंकार का **राज** । —अनुभववांणी

[सं. राज्, राजन्] ७ राजा । (डि. नां. मा.)

उ०—१ **राज** भगीरथ रांम, जुजठळ जरा जण जण जपै। कीधा मोटा कांम, नाम रहै 'जेहळ' नरां । —बां. दा.

उ०—२ द्रूपदी रहइं ओलग कीजइ, तूं कन्हइं हिव दीह गमीजइ। जां न **राज** सह पांडव होइ, गूं इरइ अवर ठांग न कोई । —सालिसूरि

८ पति, प्रियतम ।

उ०—१ ऊंची चढ चढ गोखड़े, ऊंची ऊंची होय। जोऊं मारग **राज** रौ, आवण किण दिन होय । —अग्यात

उ०—२ सिकारां रम रह्यौ म्हारौ **राज**। चंगा वाज राजे असवारा, संग अलबेलौ साज । —रसीलेराज रौ गीत

उ०—३ अंब तजइ नहि कोइलां, सरवर सालूरांह। **राज** हिवइ मा पांतरउ, आ धण थउ अवराह । —ढो. मा.

९ स्वामी, मालिक ।

उ०—था री धण री भेजी अठे आई जी, थांरी धण रा कागद साथ। भंवर, थे बांच लेवौ, म्हांरा **राज** । —लो. गी.

१० राजा या किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिये सम्मान-सूचक सम्बोधन शब्द, श्रीमान ।

उ०—१ तरै दमनी छोकरी बोली, **राज** इसी बात मूंढा माहिं सूं क्यू काढौ छौ । —पचदंडी री वारता

उ०—२ ताहरां पाबूजी कह्यौ-**राज** आप विराजौ । हूं ले आईस । —नैणसी

११ राजा या राज्य से सम्बन्धित व्यक्तियों, विषयों या तत्वों के नाम के पूर्व लगने वाला शब्द

ज्यू —राजवैद, राजकवि, राजमहल, राजहंस ।

१२ धर्मराज ।

१३ कवि ।

१४ तामीर का कार्य करने वाला मिस्त्री, शिल्पी ।

१५ दीपक बुझने की क्रिया, अवस्था या भाव ।

१६ अंधेरा ।

१७ गीत की लय ।

उ०—सुणौओ भवर । म्हानै सपनौ सो आयौ जी राज । सपना री अरथ वतावौ जी **राज** । कहौ ऐ गौरी थानै किण विध आयौ जी **राज** सपना री अरथ वतावौ जी **राज** —लो. गी.

[फा. राज] १८ गुप्त बात, भेद, रहस्य ।

सर्व०—आप, श्रीमान

उ०—१ **राज** तणी इच्छा रघुराया । अखिल चराचर जीव उपाया । —ह. र.

उ०—२ तरै भाटिये सारा कह्यौ—हमैं **राज** कहौ सु करां । —नैणसी

उ०—३ निरधन के धन **राज** हो, निरबळ के बळ **राज** । **राज** बिना हम दीन को, कौन सुधारे काज । —गजउद्धार

वि०—१ प्रिय, प्यारा ।

उ०—तूं छै, ए कुरजा, भायेली, तूं छै धरम री बैण । एक सदेसौ, ए बाई म्हारी, ले उडौ, ए म्हारी **राज**, कुरजा म्हारौ पीव मिळा दे ए । —लो. गी.

२ प्रमुख, मुख्य ।

रू० भे०—राजि, राजु ।

राजअंग—स. पु.—मंत्री । (डिं. ना. मा.)

राजइंद—देखो 'राजेंद्र' (रू. भे.) (डिं. को.)

राजकंवर, राजकवार—१ देखो 'राजकुमारि' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमार'

उ०—१ महाराज तणी चिंता मिटै, विध इण आज विचारिया । सुभ काज वार रहसी सिघर, **राजकंवर** पाधारिया । —रा. रू.

उ०—२ मरण जनम चौ सळ मिटण, सौ सलभ व्है संभार । जम मौ सळ भजै जिसौ, कौसळ **राजकवार** । —र. ज प्र.

(स्त्री. राजकवरी, राजकंवारी)

राजकंवरी, राजकंवारी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

उ०—नेह निज रीझ री बात चित ना धरी, प्रेम गवरी तणौ नाहिं पायौ । **राजकंवरी** जिका चढी चवरी रही, आप भवरी तणी पीठ आयौ । —गिरवरदान सादू

राजकथा—स. स्त्री [स] १ राजाओ का इतिहास, तवारीख ।

२ राजनीतिक चर्चा ।

उ०—रोटी चरखौ राम, अतरौ मुतळब आपरौ । की डोकरिया काम, **राजकथा** सूं राजिया । —किरपाराम

राजकदब—स. पु. [स.] १ कुछ बड़े और स्वादिष्ट फलों वाला एक प्रकार कदंब का वृक्ष ।

२ उक्त वृक्ष का फल

राजकन्या—स. स्त्री [स] राजा की पुत्री, राजकुमारी ।

रू० भे०—रायकन्ना ।

राजकमळा—सं. स्त्री. [स. राज-कमला] राज्य लक्ष्मी ।

उ०—पाळ गजां पांच दोमजा प्रिथमी, जा लग मेर मेखळा । ता लग कमधज्ज राज चिंजी, व्है भुगतै **राजकमळा** । —गु. रू. ब.

राजकर—स. पु [सं.] राजा द्वारा प्रजा से लिया जाने वाला कर, महसूल ।

राजकरता—वि. [सं. राज्यकर्तृ] राज्य करने वाला, राज्य का शासक ।

स पु.—वह व्यक्ति जो किसी राज्य के सिंहासन पर किसी को बैठाने या उतारने की क्षमता रखता हो ।

राजकवार—१ देखो 'राजकुमार' (रू. भे)

२ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

राजकाज—सं. पु. यौ.—राज्य के काम काज, शासन सम्बन्धी कार्य ।

उ०—आसिवाद द्विज रीझ उचारै, **राजकाज** सिध व्हौ राजा रै । —सू. प्र.

राजकार—सं. पु.—राज्य कर्मचारी ।

उ०—मत्रिमहामंत्री ग्रहवाहक स्त्रीकरणिक व्ययकरणि **राजकार** धरमाधिक सौवरण्णककरणि······ —व. स

राजकारिज—स. पु.—राज्य व शासन सम्बन्धी कार्य ।

उ०—देवीसिंघ बाला ही पणा मे राज पायौ । काकै बुद्धसिंघजी **राजकारिजै** नै जमायौ । —शि. व.

राजकिरिया—सं. स्त्री. [सं. राज्य-क्रिया] राजनीति ।

रू० भे०—राजक्रिया

राजकुंअर—१ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

२ देखो 'राजकुमार' (रू भे.)
(स्त्री. राजकुंअरी)

राजकुंअरि, राजकुंअरी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

उ०—१ **राजकुंअरि** देखी नइ हुमी पूछी वात सवे तिरण जसी। इरण परि जांणी सधलउ भेउ दोरउ बाधि पगि वलि लेउ।
—हीराणद सूरि

उ०—२ सग सखी सीळ कुळ वेस समागी, पेखि कळी पदिमरणी परि। राजति **राजकुंअरी** राय-अगरण, उडीयरण वीरज अब हरि।
—वेलि

राजकुंआर—१ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलांमति जिके रायजादी **राजकुंआर** छै त्यांरी खवास्यां देही री आरासि करै छै।
—रा. सा. सं.

२ देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)
(स्त्री राजकुआरी)

राजकुंआरी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

उ०—इरण भात ऊजळै पतिव्रत री पाळरणहार ऊजळी सखिआंरी टोळी सूं राजहंस राइजादी राजकुआरी झरौखै चडी झांखै छै।
—रा. सा. सं.

राजकुंवर, राजकुंवार—१ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)
२ देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)

उ०—१ परभात हुवौ तद नायरण कही **राजकुंवर** जी कठै। ताहरा इयै कही कुंवर तौ रातै मूवौ। सु रातीरात राकस उठाय ले गया।
—चौबोली

उ०—२ मोज महरण मूरत मयरण, लोयरण लाज अपार। जेहल **राजकुंवार** जिम, कुरण अन राजकुंवार।
—बां. दा.

(स्त्री. राजकुंवरी, राजकुंवारी)

राजकुंवरी, राजकुंवारी, राजकुआरि, राजकुआरी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे)

उ०—बाललीला माहे **राजकुआरि** ढूलडिया रमै छइ।
—वेलि टी.

राजकुमार—स. पु. [सं] (स्त्री. राजकुमारी) राजा का पुत्र, राजकुमार।

रू० भे०—रायकवर, राइकुअर, राइकुंवर, राजकंवर, राजकवार, राजकआर, राजकुंअर, राजकुंआर, राजकुंवर, राजकुंवार, राय-कवर, रायकूअर, रायकूयर, रायांकवर।

राजकुमारी—स. स्त्री. [सं.] राजा की पुत्री, राजकुमारी।

रू० भे०—रायकंवरी, राइकुंअरि, राइकुंवरि, राजकंवरी, राज-कंवारी, राजकुंअरि, राजकुंअरी, राजकुंआर, राजकुंआरि, राजकुंवरी, राजकुंवारी, राजकुआरि, राजकुआरी, रायकंवरी, रायकुंवरी।

राजकुळ, राजकुल—सं. पु. [सं. राज्य-कुल] १ राजा का वंश, राजा का कुल, राजवश।

उ०—मास दस माता के उदर रहै महिमा तैं, राजपद पावै या कहावै **राजकुळ** में।
—ऊ. का.

२ राजा का दरबार, न्यायालय।

उ०—जिन मदिर धवल मंदिर **राजकुल** देवकुल अट्टाल प्रासादमाल लेखसाल औसधसाल रथसाल।
—व. स.

रू० भे०—राजकुळि, राजकुळी, राजकुली।

राजकुळि, राजकुळी, राजकुलि, राजकुली—वि.—राजा के वंश का, राजा का वंशज राजवंश का।

स. पु.—१ राजवश।

उ०—तिरण नगरी रै विखै राजा भोज राज्य करै। छतीस **राजकुळी** राजा री सेवा करै।
—चौबोली

२ राजा के परिवार का सदस्य।
३ देखो 'राजकुळ' (रू. भे.)

उ०—१ खट-त्रीस वंस **राजकुळी** सिरोमरिण सूरज वंसी राजांन मारवाडि रा नव कोट री ठकुराई जळाबोळ राज-पदवी भोगवै।
—रा. सा. सं.

उ०—२ क्षरण एक जाइ आयुधसालां, क्षरण एक जाइ वाहरिण, क्षरण एक जाइ **राजकुलि**, क्षरण एक जाई देवकुलि, क्षरण एक जाइ राजवाटिकां, क्षरण एक जाइ वाटिकां, इसी क्रीड़ा करइ।
—व. स.

राजकोलाहल—स. पु'—संगीत मे ताल का एक भेद विशेष।

राजक्रिया—देखो 'राजकिरिया' (रू. भे.)

राजखग—सं. पु. [सं. खगराज] गरुड़।

उ०—हुवै गाज गजराज धजराज ठडहड़ हुवै, भिड़ै कर साज भड़ जिकै भागै। विकट अरिराज अहिराज री बरोबरि, उड़ै पंख **राजखग** डकर आगै। —रावदेवीसिंघ सेखावत रौ गीत

राजग—स. पु' [देशज] राठौड वंश की एक उप शाखा व इस उप शाखा का व्यक्ति।
वि.—राज्यगामी।

राजगत, राजगति, राजगत्ति—सं. स्त्री.—१ राजनीति।

उ०—विराजमांन राजथान कमंधज्ज भूपती। जुगत्ति **राजगत्ति** जारिण, इंद्र अंमरावती।
—गु. रू. बं.

२ राज्य या शासन की गति-विधि।
३ भाग्य की अदृश्य गति।

राजगद्दी—सं. स्त्री. [सं] १ राजसिंहासन।
२ राज्याभिषेक, राज्याधिकार।
रू० भे०—राजगादी, राजगीदी।

राजगहैली–वि.–प्रीत की बावली।

उ०—मिळी ग्रंधेरी रैण सुहेली, मोरा गावै मल्हार। **राजगहैली** रै सग माणी, सरस तीज री रात। —रसीलैराज रौ गीत

राजगादी–देखो 'राजगद्दी' (रू. भे.)

राजगिरि–सं. पु. [स.] मगध देश का एक पर्वत। (ऐतिहासिक)

राजगीदी–देखो 'राजगद्दी' (रू. भे)

उ०—प्रीत री कूख सूं जलमियौ **राजगीदी** रौ हकदार नी व्है ग्रर ब्याव री कूख सूं जलमियौ राज रौ हकदार व्है।

—फुलवाडी

राजगीर, राजगीरी–स. पु.–वह कारीगर जो मकान बनाने का कार्य करता हो। शिल्पी।

राजगुर, राजगुरू–स. पु–१ राज्य पुरोहित।

उ०—जैतारण था कोस ४ ऊगवण माहै, दत्त राव जैतसी ऊदावत रौ ब्रि. वरसघ पीथावत जात **राजगुर** नुं। मोरवी वडी प्रोहत राजा उदीत दोया नुं ऐ खेत दीया। —नैणसी

२ राजा का गुरु।

रू० भे०–रायगुर, रायागुर।

राजग्रह–सं. पु. [स राज+गृह] राज–महल, राजा का महल।

उ०—कछवाहा उच्छव किया, देख वधाईदार। किया वधाया **राजग्रह**, राणी कियौ स्रिगार। —रा. रू.

रू० भे०–रायगिह, रायघर।

राजघ्रनीका–सं. स्त्री.–रामबेलि नामक लता। (ग्र. मा)

राजड़–सं. पु.–१ भाटी वश की एक शाखा जो आजकल मुसलमान हो गई है।

२ लंगा जाति की एक शाखा विशेष। (मा. म.)

राजड़ा–स. स्त्री.–राजबाई नामक एक देवी।

उ०—लंकाळं चड़ं चाल जंघाल लेलं। हली **राजड़ा** ज्यो प्रथीराज हेलैं। —मे. म.

राजचपक, राजचंपौ–स पु. [स. राजचपक] पुन्नाग का पुष्प, एक प्रकार का फूल, सुल्ताना चपा।

राजचील–सं. पु. [स. राज+राज. चील=सर्प] शेषनाग।

उ०—वारधेस जोम गाज गाळिया ग्रकूट वासी। **राजचील** जाळिया तारखी तेज रूस। कुमंखी कुळंसा यंद्र ढालिया गरद काळा, वीर 'सिवा' वाळै रिमां मार लिया वधू स।

—हुकमीचद खिडियौ

राजचूड़ामणि–सं स्त्री. [स.] संगीत के ताल के साठ भेदों में से एक।

राजजांमुन–स. पु–जामुन की एक जाति विशेष।

राजजोग–देखो 'राजयोग' (रू. भे)

राजठोड़–स. स्त्री.–राजधानी।

राजणौ, राजबौ–क्रि. ग्र. [सं. राज्] १ ग्रासीन होना, बैठना।

उ०—ब्रह्मा सिव इद्रादि दे, ग्रांन खरे कर जोर। मिंघासण ग्रासण किये, **राजत** जुगळ किसोर। —गज उद्धार

२ शोभित होना, शोभा देना।

उ०—१ मद सिलल तणां चाटा हियै नीलमणा, **राजिया** रुधर चांटा पदमराग। ग्रडग पग मांड। राधारमणा, नग समौ विलद मग विप गगन मग नाग। —बा दा

उ०—२ **राजति** ग्रति एण पदाति कुंज रथ। हस माळ बधि लास हय। ढालि खजूरि पूठि ढळकावै, गिरिवर सिणगारिया गय।

—वेलि

उ०—३ जगळ बीर सुहावणि **राजै**, फिर सकति री ग्रांण। मढ मैं ग्रापू ग्राप विराजौ, भळहळ ऊगौ भांण।

—राधवदास भादौ

३ सुन्दर लगना।

उ०—१ सग सखी सील कुळ वेस समांणी, पेखि कळी पदिमणी परि। **राजति** राजकुग्ररि राय ग्रगण, उडीयण वीरज ग्रब्र हरि।

—वेलि

४ चमकना।

उ०—१ ग्राणद सु जु उदौ उहास हास ग्रति, **राजति** रद रिखपति रुख। नयण कमोदणि दीप नासिका, मेन केस राकेस मुख।

—वेलि

उ०—२ रूप खडग ग्रदभुत दुति **राजै**। तडित सिळाव धोम। तराजै। —सू. प्र.

५ राज्य करना, शासन करना।

उ०—दक्खिण दिसि देस विदरभति दीपति, पुर दीपति ग्रति कुंदण पुर। **राजति** एक भीखमक राजा, सिरहर ग्रहि नर ग्रसुर सुर। — वेलि

राजणहार, हारौ (हारी), राजणियौ —वि.।

राजिग्रोड़ौ, राजियोड़ौ, राज्योड़ौ —भू. का. कृ.।

राजीजणौ, राजीजबौ —भाव वा।

रजणौ, रजबौ, रज्जणौ, रज्जबौ —रू. भे.।

राजत–देखो 'राजित' (रू. भे.)

राजतरंगिणी–स. स्त्री. [स.] सस्कृत का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रथ, जिसकी रचना काश्मीर निवासी कल्हण के द्वारा की गई, ऐसा माना जाता है।

राजतरुणी–स. स्त्री. [स.] सफेद गुलाब की एक लता जिसके फूल बडे एव श्वेत होते है, बडी सेवती।

राजतिलक, राजतीलक–सं. पु [सं. राजतिलक] १ किसी राज्य के राजसिंहासन पर नए व्यक्ति को राजा बनाने के लिये, ससम्मान बैठाने की प्रक्रिया, राज्याभिषेक।

२ उक्त ग्रवसर पर, नए राजा के मस्तक पर, विधि पूर्वक किया जाने वाला तिलक।

उ०—बीभीछन कु **राजतीलक** दियौ, मुकति माळ पहराई।

—रुखमणि मंगळ

३ उक्त समय मे नए राजा के सम्मान मे मनाया जाने वाला उत्सव।

रू० भे०—राज्यतिलक।

राजतीमुद्रा—स स्त्री.—चादी का सिक्का, रौप्य मुद्रा।

राजतेज—स पु —१ राज्य या सत्ता का जोर, प्रभाव, रौब, शक्ति।

उ०—नकौ **राजतेज** नकौ देसपती। नकौ गढ छाजा नकौ द्वारि हसती।

—अनुभववांणी

२ राजसी पदार्थों या वस्तुग्रो का ठाट बाट, चमक-दमक।

राजथंभ—स. पु. [सं. राज्य+स्तम्भ] १ वह व्यक्ति (मत्री या सामत) जो किसी राज्य की समस्त व्यवस्था का उत्तरदायी हो, राज्य का स्तंभ माना जाने वाला व्यक्ति।

उ०—**राजथंभ** मंत्रियां, राज रच्छिक उमरावा। राजद्वार बहु कुरब, राज जसधर कविरावा।

—सू. प्र.

२ राजा, नृप।

राजथांण, राजथांन—देखो 'राजस्थान' (रू. भे.)

उ०—१ सू ग्राप वडी रेख रा गांम दीठा चावौ तौ हूं सारा जाणू छू, सू गाम चाहौ जिसा हूं वतासूं, पण ग्राप **राजथांन** बांधणी किसी जागा विचारियौ है?

—द. दा.

उ०—२ तरै जोगिये इतरौ कर वतायौ—थारी साहबी **राजथांन** लाखडी करै नै जोगिया रौ ग्रासण धीणोद करै।

—नैणसी

उ०—३ विणजारै रै सदाई हुवै छै, इसौ वहानौ करि चालतौ चालतौ गिरनार री तळहटी पाबासर मांहै **राजथांन** छै, तठै ग्राय पडियौ।

—कहवाट सरवहिये री बात

राजथाट—स. पु.—राजसी-टाट बाट, राज्य वैभव।

राजदंड—सं. पु.—१ राज्य या शासन का दण्ड विधान।

२ राज्य की ग्राज्ञानुसार भरा जाने वाला दण्ड।

३ सजा।

राजदरबार—स पु.—१ किसी राज्य या राजा की वह सभा या बैठक जिसमें राज्य के राजा सहित सभी मत्री एव सामंत उपस्थित होते हैं ग्रौर जिसके द्वारा शासन का सचालन किया जाता है। राजा की सभा।

उ०—१ लाधूरांम **राजदरबार** रौ इतौ वडौ निधडक चौधरी होवतां थकां भी, भूत-पलीत, डोरा-डंडा, देई-देवता ग्रर डाकण-स्यारी नै कदै ही कूड़ा नी बतावै।

—दसदोख

उ०—२ राजाजी फरमायौ के बीज रै चांद री खुसिया मनायां पछै वै **राज-दरदरबार** सूं पाधरा पोहरै चढ-जावै।

—फुलवाड़ी

२ वह स्थान या कक्ष, जहा उक्त सभा बैठती है या जुड़ती है।

३ राजा की ग्रदालत, कचहरी।

राजदवार, राजदुग्रार—देखो 'राजद्वार' (रू. भे.)

उ०—घाली टापर वाग मुखि, झंक्यउ **राजदुग्रारि**। करहइ किया टहूकड़ा, निद्रा जागि नारि।

—ढो. मा.

राजदुलारी—स. स्त्री.—राजा की कन्यां, राजकुमारी।

उ०—दूलह सिर सिर **राजदुलारी**। करै चमर कन्या कोमारी।

—रा. रू.

राजदुवार—देखो 'राजद्वार' (रू. भे.)

उ०—१ वाजा वाजिया जिणवार, दीपै हरख **राजदुवार**।

—रा. रू.

उ०—२ पिंगळ राजा नूं मिल्यउ, सउदागर तिणिवार। **राजदुवार** इ तेड़ियउ, ग्रादर करै ग्रपार।

—ढो. मा.

राजदूत—स. पु. [सं.] १ किसी राजा या राज्य का वह व्यक्ति जो दूसरे देश में ग्रपने राज्य का प्रतिनिधित्व करता हो।

२ वह व्यक्ति जो ग्रपने राजा का कोई विशेष संदेश लेकर किसी ग्रन्य राजा के पास जाता है। राजा का संदेश वाहक।

३ राजाज्ञा प्रसारित करने वाला कर्मचारी।

राजद्रोह—सं. पु. [सं.] १ किसी राज्य की प्रजा या सेना द्वारा, राजा या प्रशासन के विरूद्ध किया जाने वाला विद्रोह, बगावत।

२ ऐसे कार्य जो बगावत की संज्ञा में ग्राते हों ग्रौर जिनसे राज्य का ग्रहित होता हो।

राजद्रोही—वि. [सं. राजद्रोहिन्] १ विद्रोह या बगावत करने वाला, राजद्रोह करने वाला।

२ बागी।

राजद्वार, राजद्वारौ—स. पु. [स. राजद्वारम्] १ राजमहल का दरवाजा।

उ०—१ सुकीर नासिका सरूप, वेस नीत राजियै। सुरू गुरु र भोम सुक्र, **राजद्वार** राजियै।

—सू. प्र.

उ०—२ गज कोटि **राजद्वारौ**, मिंदरउतंग महल ग्रटाला। संगेख धांम वांम, विसक्रमा विभ्रम भवेत।

—गु. रू. बं.

२ राजा का दरबार, राज-दरबार।

३ ग्रदालत, कचहरी, न्यायालय।

रू० भे०—राजदवार, राजदुग्रार, राजदुवार।

राजद्वारिक, राजद्वारी—सं. पु.—राज्यपदाधिकारी विशेष।

उ०—कोस्टाकारिक पारिग्रहिक, प्रतिहार चतुद्वरिक कास्टिक **राजद्वारिक** संधि विग्रहिक भांडपति स्रेस्टि।

—व. स.

राजधणी—सं. पु. [सं. राज+धनिक] १ किसी राज्य का स्वामी, नृप, राजा।

उ०—१ बल पर हरै बना बध बोलै, सनस ग्रसा राखै धरसूत राण तुहाली पोळ रायमल, **राजधणी** सेवै रजपूत।

—महारांणा रायमल रौ गीत

उ०—२ निज स्रवण सुणत फळ उपजै, गुरु वंसावळी अरथ करि।
वोह **राजधणी** गज वाज हुइ, हरत लहै मचकुंद वर।
—रा. वसावली

२ राज्य का अधिपति।

राजधर—सं. पु.—१ राजा, नृप। (डि. को.)
२ भाटी वंश की एक शाखा।
रू० भे०—रजधर, राजोधर, राजौधर रायधर।

राजधरम, राजधरम्म—सं पु. [स. राज—धर्म्म] १ राजा का कर्त्तव्य, धर्म।
२ वह धर्म, जिसे राजा द्वारा 'राजधर्म' घोषित किया गया हो।
३ महाभारत का वह विभाग, जिसमें राजा के कर्त्तव्यों का उल्लेख है।

राजधांनी—स. स्त्री. [स. राज+धानी] किसी देश या राज्य के राजा या शासक के रहने का प्रधान-नगर, वह नगर या स्थान, जहा देश या राज्य के शासन का केन्द्र हो।
रू० भे०—रजधांणी, रजधान, रजधानी, रायहाणी।

राजन—स. पु. [स. राजन्] १ राजा, नृप।

उ०—**राजन** में सुर राज समौ, महा **राजन** में महाराज समेळै।
पाज अपाहिज सरब समाज सु, पुन्न जहाज मिळै भव पैलै।
—ऊ. का

२ पति, प्रियतम।

उ०—१ **राजन** चाल्या चाकरी, काधे धर बदूक। के तौ सागै ले चलौ, के कर डालौ दो टूक। —लो. गी.

उ०—२ ऊनाळा रा बापरै, चौमासा रा मांमा रे, सियाळा रा माने लेइ चाल्यौ म्हांरा जोडी रा। रतन सियाळौ **राजन** यूं ही गियो जी। —लो. गी.

राजनीत, राजनीति—स. स्त्री. [स. राजनीति] १ किसी राजा या शासक द्वारा, राज्य की रक्षा, आंतरिक सुव्यवस्था एव शाति रखने के लिये बनाई गई शासन की पद्धति, विधि, नियम या कानून। इसमें साम, दाम, दण्ड और भेद इन चारों का समावेश किया जाता है।

उ०—१ इळ **राजनीत** जाणै अनेक। वर मत्र-सकति कविता विवेक। —सू प्र.

उ०—२ मूळी रौ पापा रजवाड़ा मे रैवणियौ स्याणौ हाजरियौ **राजनीत** सू रग्योडौ-सुधरचोडौ मिनख। —दसदोख

२ कूटनीति, भेद नीति, गुप्त नीति।
३ वर्तमान के राजनैतिक दलों की दलगत नीति।

उ०—डिपटी सा'बनै थे ही कै' देवता-के सा' ब! लोग म्हारी कूड़ी ही सिकायत करै है। म्है की री ही पालटी मे भाग नीं ल्यूं अर ना कोई **राजनीत** फैलावूं। —दसदोख

४ बहत्तर कलाओ में से एक। (व. स)
रू० भे०—रजनीति।

राजनीतिक—वि. [स] १ राजनीति सम्बन्धी।
२ राजनीति जानने वाला।

राजमील—सं पु [स.] मरकतमणि, पन्ना।

राजन्य—स. पु. [सं.] १ क्षत्रिय।
२ सरदार, सामन्त।

राजपंख, राजपंछ—स. पु. [स. पक्षिराज] गरुड़।

उ०—जय बाखाण **राजपंछ** बाजै, अलख भुयण घण सुणै इम।
रांणा अवर घणा दिन रहसी, जुग जुग पगी चग जिम।
—महारांणा जगतसिंघ रौ गीत

राजपंथ—स. पु. [स. राजपथ] किसी राज्य या नगर का प्रमुख मार्ग, राज मार्ग।
रू० भे०—राजपथ।

राजपट्ट—सं पु.—१ एक वस्त्र विशेष।

उ०—मेघाडबर नेत्रपट्ट धोतपट्ट **राजपट्ट** गजवडि हंसवडि बोरि-आवडी, ऊमावडी। —व. स.

२ देखो 'राजपाट' (रू. भे.)

राजपति—स. पु. [सं.] १ राजा, सम्राट, नृपति।
२ राज्य का अधिपति, शासक।

राजपत्नी—स. स्त्री. [सं.] राजा की पत्नी, रानी, साम्राज्ञी।

राजपत्री—स पु. [स. राजपत्रिन्] पक्षीराज गरुड।

उ०—१ जोमगी भंडीस ज्याग आयौ ज्यू चडीस जायौ, **राजपत्री** आयौ थडीस व्याळ रेस। ओडडीस असीसतौ न्लांगड़ौ कपीस आयौ, कोडंडीस कसीसतौ आयौ गुडाकेस।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—२ पूरा माप आडू गांठ वेग भाटां **राजपत्री**। दूजौ 'गौड़' क्रीत साटां तुराटां देवाळ। —क. कु. बो.

राजपथ—देखो 'राजपथ' (रू. भे.)

राजपद—स. पु [स.] १ राजा का पद, राजा का अधिकार, राजत्व।

उ०—मास दस माता के उदर रहे महिमा तैं, **राजपद** पावै या कहावै राजकुळ में। —ऊ का.

२ कम कीमत का हीरा।

राजपद्धति—सं. स्त्री. [स.] १ शासन प्रणाली, शासन विधि।
२ राजनीति।
३ राजमार्ग, राजपथ।

राजपाट—सं. पु. [सं. राज्य+पट्ट] १ राज्य सिहासन, राजगद्दी।

उ०—मडोवरगढ़ राव चूंडौजी राज करै। तिण रै १४ कवर। तिण मे **राजपाट** टीकायत राव रिणमलजी।
—राव रिणमल री बात

२ राजा के अधिकार, राजत्व ।

उ०—ऊदा बाई मन समझ, जावौ अपणे धाम । **राजपाट** भोगौ तुम्ही, हमें न तासूं कांम । —मीरा

रू० भे०—रजपाट, राजपट्ट ।

राजपात्र—स. पु. [स] एक वर्ग विशेष ।

उ०—कंदाई देसाली कलाली गोली गवाल पसूयाल **राजपात्र** विद्यापात्र विनोदपात्र । —व. स.

राजपाळ, राजपाल—स. पु.—१ एक राजवंश ।

उ०—गोहिल गुहलिपुत्रक धांन्यपाल **राजपाल** अनग निकुंभ दधिकर कालामुह दापिक हूण हरियर डोसमार । —व. स.

२ देखो 'राज्यपाळ' (रू. भे.)

राजपिंड—स. पु.—राजा का दिया हुआ पिंड, आहार ।

उ०—**राजपिंड** सुक्रकार, एहवे न लेवे आहार । मरदन नही करे ए, दातण परिहरे ए । —जयवाणी

राजपुत्र—सं. पु. [सं.] (स्त्री. राजपुत्री) १ राजा का पुत्र, राजकुमार ।

उ०—अथ कुमार, उद्धतस्कंधबधुर, वज्र, मय भुजादंड, विस्तीरण्ण वक्ष' स्थल, रण रसिकु, समर भर धुरि धवल, अतुलबलपराक्रम, रथ मोडण, परदलण, सूर वीर, धीर सौडीर इसउ **राजपुत्र** कुमर । —व. स.

२ राजपूत, क्षत्रिय ।

३ बुध ग्रह ।

रू० भे०—रायपुत्त, रायपुत्र ।

राजपुत्री—स. पु. [सं.] १ राजा की कन्या, राजकुमारी ।

२ क्षत्रिय कन्या ।

रू० भे०—रायपुत्रिय, रायपुत्री ।

राजपुरस—स. पु. [स. राज—पुरुष] १ राजा घराने या राजा के वश का कोई व्यक्ति ।

२ राज्य कर्मचारी ।

३ अमात्य, मंत्री ।

राजपुस्पी—सं. पु. [सं. राजपुष्पी] वन—मल्लिका, जातिपुष्प ।

राजपूत—सं. पु. [सं. राज+पुत्र, प्रा. राजपुत्त] (स्त्री. राजपूतण, राजपूतांणी) १ क्षत्रिय-जाति, क्षत्रिय-वश ।

वि. वि—आर्यो की वर्ण व्यवस्था के अनुसार देश की शासन व्यवस्था क्षत्रियों को सौंपी गई थी । राज्य के शासक को राजा कहा जाता था । राजा के पुत्र एव वशजो को राजपुत्र कहा जाता था । राजपुत्र शब्द का प्रयोग, कोटिल्य अर्थ शास्त्र, कालीदास के नाटक, बाण भट्ट के ग्रथों तथा प्राचीन शिलालेखों मे राज—वशीयो के लिए कहा गया है । राजा के वशज या राजवशीय होने के कारण, कालान्तर में सम्पूर्ण क्षत्रिय जाति का 'राजपुत्र' पर्यायवाची सम्बोधन बन गया । अत: संस्कृत 'पुत्र', प्राकृत पुत्त' से अपभ्रंश या राजस्थानी में 'पूत' शब्द बना और मुसलमानों के शासन काल में क्षत्रियो को 'राजपूत' कहा जाने लगा । यह जाति बडी बहादुर और पराक्रमी रही है । जन्म भूमि की रक्षा तथा कुल गौरव की रक्षा, इस जाति का विशेष गुण रहा है ।

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

३ योद्धा, वीर ।

४ देखो 'रजपूत' (रू. भे.)

रू० भे०—राजपुत्र ।

राजपूतांणी—सं. स्त्री.—राजपूत जाति की स्त्री ।

रू० भे०—रजपूतण, रजपूताणी, रपचूतांणी ।

राजपूतांनौ—स. पु.—भारत के उत्तर पश्चिम का एक प्रान्त जो आज राजस्थान कहलाता है । ब्रिटिश शासन काल में यहां विभिन्न राजाओं की रियासतें थीं ।

राजपूताई, राजपूती—स स्त्री.—१ राजपूत होने की अवस्था या भाव ।

२ राजपूत जाति का गौरव, क्षत्रित्व ।

उ०—तरै उमरावां भेळा होय नैं मसलत कीधी । भांगेज ऊगै **राजपूताई** मांहै धूळ नाखी । —कहवाट सरवहिये री बात

३ शौर्य, पराक्रम, बहादुरी ।

रू० भे०—रजपूताई, रजपूती ।

राजबण, राजबणि—देखो 'राजवण' (रू. भे.)

उ०—रती न जाणै **राजबणि**, दिल मिळिया जे दूर । रहसी डबा कपूर रा, कूंकर नहीं कपूर । —र. हमीर

राजबळ—स. पु.—राज्य, शासन या सत्ता का बल, शासन—शक्ति ।

उ०—'जसराज' मरण 'जोधा' हरा, रूक सओधा **राजबळ** । छित लाज दिली महाराज छळ, इळ पडिया राखे अचळ । —रा. रू.

राजबाई—स. स्त्री.—सम्राट अकबर की समकालीन एक देवी जो उदयराज चारण की पुत्री थी । इसे राजल देवी भी कहते हैं ।

राजबाड़ी—सं. स्त्री. [सं. राज—वाटिका] किसी राजा का उद्यान ।

राजभंडार—सं. पु. [सं. राज—भडार] १ किसी राज्य का खजाना, राजकोश ।

२ वह कक्ष जिसमें खाद्य सामग्री सग्रहीत रहती है ।

राजभक्त—सं. पु.—राजा का स्वामीभक्त अनुचर ।

रू० भे०—राजभगत ।

राजभक्ति—सं. स्त्री.—किसी राजा के प्रति किया जाने वाला प्रेम, भक्ति, श्रद्धा ।

रू० भे०—राजभगती ।

राजभगत—देखो 'राजभक्त' (रू. भे.)

राजभगती—देखो 'राजभक्ति' (रू. भे.)

राजभवन-स. पु. [स] १ राजमहल, राजप्रासाद।
२ जन्म पत्री मे दसवां स्थान।
उ०—निरख छठै रिपु ग्रह ससिनदण, कुळ मातुळ सुख ग्ररी निकंदण। **राजभवन** सुर गुर सुभ राजै, विसब एक छात्र आण विराजै। —रा रू

राजभोग-स. पु. [स] १ देव मन्दिरों या देवालयों में मध्यान्ह के समय भगवान की मूर्ति के आगे चढाया जाने वाला नेवैद्य, जिसमे नाना प्रकार की मिठाइया एवं भोजन सामग्री होती है। बडा भोग।
उ०—**राजभोग** अरोगौ गिरधर, सन्मुख राख्यौ थाळ जी। मीरा दासी चरण उपासी, कीजै वेग निहाल जी। —मीरां
२ देव मूर्ति के आगे चढाया जाने वाला नेवैद्य, प्रसाद।
३ एक प्रकार की मिठाई।
४ राजा द्वारा लिया जाने वाला कृषि उपज का एक निर्धारित अंश
रू० भे०—रायभोग।

राजमंडळ, राजमंडल-सं. पु. [सं. राज-मंडल] किसी राज्य के चारों ओर के राज्यो का समूह।

राजमग-देखो 'राजमारग' (रू भे.)
उ०—सुख **राजमग** जळ सीच, वणि कुसमगर तिण वीच।
प्रति हाट दाम प्रकास, सोरभ फूल सुवास। —रा. रू.

राजमद-स. पु. [स.] शासन या सत्ता के प्रभाव से होने वाला गर्व, अहकार, राज्य का नशा।
उ०—राजाजी नै आपरी प्रीत बिचैई आपरै **राजमद** रौ घणौ गुमांन है। —फुलवाडी

राजमराळ-स. पु. [स. राज-मराल] राजहस।

राजमल-स. पु.—राठौडो की एक उपशाखा।

राजमहल, राजमहलि-सं. पु.—राजा का महल, राज-प्रासाद।
रू० भे०—राजमैंल।

राजमारग, राजमारगि-सं. पु [स राज-मार्ग] राज्य या नगर का मुख्य मार्ग, मुख्य सडक।
उ०—१ अथ नगर, प्रासाद प्रतोली राजकुल देवकुल त्रिक चउक चच्चर **राजमारगि** गंधिकापण...... । —व. स.
उ०—२ मठ विहार प्रपा मंडप त्रिक चतुस्क चत्वर चतुस्पद **राजमारग** गधिकापण······ । —ब. स.
रू० भे०—राजमग।

राजमिंदर-सं. पु. [सं. राज+मन्दिर] १ राजमहल, राजप्रासाद।
उ०—रमै हसै नरिंदरं, मभार **राजमिंदरं** करै उछाह सुक्किया, पचास सात सै प्रिया। —सू. प्र.
२ राजमहलो में बना देवमन्दिर या देवालय।

राजमैंल-देखो 'राजमहल'। (रू. भे)
उ०—१ मिंदर ३ गुलाबसागर ऊपर १ **राजमैंलां** में। १ लाल बाबे रै मिंदर कनै। —मारवाड़ री ख्यात
उ०—२ **राजमैंल** में आधिया रै कारण खख घणौ उडै, इण कारण नगर रै चारूं मेर दस दस कोस ताई राजाजी दोबडी लगावणी चावै। —फुलवाडी

राजम्रिगाक-स. पु. [स. राजमृगाक:] यक्ष्मा रोग मे दिया जाने वाला एक मिश्ररस। (वैद्यक)

राजयोग-स. पु [स.] १ अष्टाग योग, जिसका प्रतिपादन पतजलि ने अपने योगशास्त्र मे किया है। मूल योग।
उ०—नहि कोई करना नही अकरना, नहि कोई म्हारा थारा। साखी एक सकळ मे व्यापक, **राजयोग** विस्तारा।
—अनुभववांणी
२ जन्म कुण्डली मे होने वाला ग्रहों का एक विशेष योग, जिससे व्यक्ति का राजा या राजा तुल्य होना लक्षित होता है। (फलित)
रू० भे०—राजजोग।

राजरथ-स. पु [स.] राजा का रथ।
उ०—वेग लीयै मूंठी वाव। **राजरथ** पखां राव। मैगळां ऊरध मड। खेसै आठ भीत खड। —गु रू. ब.

राजरमणी-सं. स्त्री. [सं] राजरानी।
उ०—१ बिळकुळे **राजरमणी** वदन, निरखे रूप नरचंद रौ। जांणै विकास प्रामै जळज, देखि प्रकास दुंदिद रौ। —रा. रू.
उ०—२ रण-वास **राज रमणी**, सूरज किरण तुल सोभा। फूलीक काम वल्ली, करि मज्झे कांम आराम। —गु. रू बं.

राजरसतौ-देखो 'राजपंथ'

राजरसि-देखो 'राजरिसि' (रू. भे.)
उ०—विग्रह राज राज्यपदस्थापना वसरविक स्वरयस: प्रकास, **राजरसि** परमारहत धरमात्मा······। —व. स.

राजरांणी-स. स्त्री.—१ राजा की रानी, महारानी। २ देवी, दुर्गा।
उ०—थिर थांन थांभां अतीय अचंभा रूप रभा भळकती। भजियै भवांनी जगत जांनी धी **राजरांणी** सरस्वती। —मा. वचनिका

राजराज, राजराजा-सं पु. [सं.] १ कुबेर का एक नामान्तर।
(अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)
२ राजाओं का राजा, राजेश्वर।
३ सम्राट।
४ चन्द्रमा।

राजराजा खाखड़ी-स पु—बच्चों का एक देशी खेल।

राजराजेसर-देखो 'राजराजेस्वर' (रू. भे.)
(स्त्री. राजराजेसरी)

राजराजेसरी-देखो 'राजराजेस्वरी' (रू. भे.)

राजराजेस्वर-सं. पु. (स. राजराजेश्वर) (स्त्री. राजराजेस्वरी) राजाओ मे श्रेष्ठ, सम्राट।

उ०—दाखे वार वार दिल्लेसुर, स्रीमहाराज **राजराजेस्वर**। ग्रौर उमीर सकौ न्रप ग्रावै, जोधां नाथ हूंत मिळ जावै।—रा. रू.

रू० भे०—राजराजेसर ।

राजराजेस्वरी—स. स्त्री. [स. राजराजेश्वरी] महारानी, पटरानी, साम्राज्ञी ।

रू० भे०—राजराजेसरी,

राजरिख, राजरिखि—देखो 'राजरिसि' (रू. भे.)

उ०—राइ दसरथ ग्राए **राजरिख**। —रांमरासौ

राजरिद्धि, राजरिध—स. स्त्री. [सं. राज-ऋद्धि] राज्य की समृद्धि, राज्य का वैभव, राज्य लक्ष्मी ।

उ०—राजरिद्धि सहू समुदाय जीह् चति एक वसइ जिरणनाह ।
—वस्तिग

राजरिसि, राजरिसी—सं पु [सं. राजर्षि] १ वह ऋषि जिसका जन्म राजकुल या क्षत्रिय वश मे हुग्रा हो ।

२ पुरूरवस, जनक, विश्वामित्र, ऋतुपर्ण ।

रू० भे०—राजरसि, राजरिख, राजरिखि, राजस्सी, रायरिख, रायरिसि, रायरिसी।

राजरीत, राजरीति—स. स्त्री १ राज्य या शासन की पद्धति, राजनीति

२ राज्य परिवार की परम्परा ।

३ शासक वर्ग के व्यवहार का ढग ।

राजरोग—स. पु. [स.] १ राज यक्षमा या क्षय रोग ।

२ कोई ग्रसाध्य रोग ।

राजरोगी—वि.—राजरोग से पीडित रोगी ।

राजल—स. स्त्री राजबाई नामक एक देवी ।

रू० भे०—राजुल ।

राजलक्षण—स. पु—बहत्तर कलाग्रो में से एक । (व. स.)

राजलक्ष्मी, राजलछमी—सं. स्त्री. [सं. राजलक्ष्मी] राज्यश्री, राज्य का वैभव ।

रू० भे०—राज्यलक्ष्मी, राज्यलिछमी ।

राजलोक, राजलोग—स. पु [सं. राज-लोक] १ महारानी, रानी, रानी समूह ।

उ०—१ कूंभौ परणियौ। हथळेवौ छोडियौ, ग्रर कूंभ कह्यौ मोनूं विदा द्यौ । ताहरां कह्यौजी—दोय पोहर रहौ, **राजलोक** कहै छै। —नैणसी

उ०—२ चहुवा इम चहुमंत्र उचारै। पट्ट सांभळि निज महल पधारै। बूझै **राजलोक** मुर बीजै। करै ग्ररज मन व्है सुजि कीजै।
—सू. प्र.

उ०—३ **राजलोक** रिख दू ए वीस पड़दायत प्यारी। संग सहेली च्यार ग्रगन सिनान उचारी। —रा. रू.

२ ग्रन्तःपुर, रनिवास ।

उ०—तिसै भींवै गोठ जीम नै ग्रसवार होय पिउसधी नै **राजलोक** में मेली, ग्रापौ परकास्यौ। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

३ परिजन, परिग्रह ।

उ०—१ हिवै राजा ग्रजयपाळ कन्है राजा मानधाता रहै। ग्रजयपाळ मामौ छै, मांग्या रा मुजरा करै । एक दिन राजा ग्रजय पाळ रौ **राजलोक** रांणी रै डेरै एकठौ हुयौ छै। —चौबोली

उ०—२ रावळ मनोहरदास घणी वेढ जीती। संमत १७०९ रा मिगसर मे काळ कियौ। बेटौ को न हुतौ, पछै भाटिया बीजै **राजलोग**, भाटी रामचदसिघोत नू टीकौ दियौ। —नैणसी

राजवंस—स. पु. [स राजवश] राजा का वंश ।

उ०—वदै महल छतीस **राजवंश** कमध नगारा ग्रहळ कियै। दहळ पड़ै ग्रवरा देसोता, थारै सहल सिकार थियै। —रुघौ मुहतौ

राजवट—स. स्त्री.—१ हुकूमत, सत्ता ।

उ०—१ तठा पछै वरिहाहां सूं दावौ मांगण री मन में राखै, सु घणी साथ राखियौ। घणा घोड़ा पायगाह किया। वडी **राजवट** जमती गई। —नैणसी

उ०—२ तठा उपरांति करिनै राजांन सिलांमति तिण राजांन री **राजवट** च्यार ठिकांणै विराजमान दीसै छै। —रा. सा. सं.

२ क्षत्रित्व, वीरत्व ।

उ०—पती म्हारौ एक लौ पूगसी सो मारीजसी पती नें जाण सूं वरजूं तौ सरै नही **राजवट** रजपूती रा गारग उलटा छै।
—वी. स. टी.

३ डिंगल के कुंडलिया छंद का एक भेद विशेष ।

राजवण—सं. स्त्री.—१ राजकुमारी ।

उ०—जो मांगै देवर जसू, जोड़ै हाथाळै, 'रांणल' मांगै **राजवण** भाभी वरमाळै। भवगुण भूलूं नहीं, भ्रमपाज भिचाळै। कहियौ जद किसमीरदे, चढ़ क्रोध वडाळै। —वी. मा.

२ रानी ।

३ पत्नी, स्त्री, प्रियतमा ।

उ०—१ हां ए राजगोरी काची केसर पीग्रो, हे **राजवण** प्यारी काची केसर पीग्रो। हे म्हांरी सदा हे सवागण घर नार, सुंदर गोरी। काची केसर पीग्रौ हो। —लो. गी.

उ०—२ मारूड़ी मिळण घर ग्रायौ हे मारवणी, करो नैं तयारी उठ म्हांरी **राजवण** थारै। भिदली दौ भाळ सवारौ ग्रलबेलड़ी, ग्रणीयाळा नैणां ग्रंजन री ग्रणी। —रसीलै राज रौ गीत

उ०—३ रहौ सधीरा **राजवण**, नैण न नांखो नीर। रगौ मत इण रंग मे, चंगौ भीजै चीर। —ग्रग्यात

उ०—४ रंग री वातां **राजवण** टोळौ मति कर टेक। मन सुद कर म्हासु मया ग्रडवी छोडौ ऐक। —पना

रू० भे०—रजवरण, राजबरण, राजबरिण

राजवनौ—स पु. (स्त्री. राजवनी) १ राजकुमार।

२ प्रिय, प्यारा, प्रियतम

उ०—पनां वरण घर पल्लही, कलि पनां करतार। श्री चित्रांम सौ आपना, **राजवनौ** रिझवार। —पना

राजवरग—स० पु० [सं. राज्य वर्गः] १ शासक समुदाय, शासक वर्ग।

२ राजकुल, राजवंश

३ राज्य या राज दरबार में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करने वाला, दल, समूह या वर्ग विशेष।

वि० वि०—राजस्थान मे अधिकाश राज्यों में ओसवाल जाति के कुछ वशो को राज्य के महत्वपूर्ण पद जैसे, दीवान, बक्षी, फौज-बक्षी, दीवाण, बक्षी, सेनापति आदि मिलते रहे है। जिनको उन्होने बडी योग्यता—दक्षता व उत्तरदायित्व से निभाया है अतः इसी जाति या दल के व्यक्तियो को उच्च पद मिलते रहे। कालान्तर मे इस दल के व्यक्तियो ने राज्य की नौकरी करना एक गौरव की बात समझी थी और इस जाति के ही व्यक्ति प्राय. राज्य मे छोटे और बडे पदो पर कार्य करते रहे है। वश परम्परागत राज्य की नौकरी करने तथा राज्य सत्ता और शासक के निकट रहने के कारण लोग इनको 'राजवरगी' कह कर संबोधन करने लग गये।

४ राज्य वैभव, राज्य सुख।

उ०—राजवरग मनें कुछ नहिं चहियै, रामजी मिळणरी म्हारै मन मे लग रही। —मीरां

राजवरगी—वि० [स० राज्य+वर्गः+रा० प्र० ई] १ शासक समुदाय का, शासक वर्ग का।

२ राजकुल का, राजवंश का।

स० पु०—वह वर्ग या दल विशेष जिसका वंश परम्परागत राज्य की नौकरी करने का ही पेशा रहा है।

वि० वि०—देखो, 'राजवरग'

रू० भे० राजव्रगी।

राजवाटिका—स० स्त्री [स०] राजा का उद्यान।

उ०—क्षण एक जाइ देवकुलि, क्षण एक जाइ **राजवाटिकां** क्षण एक जाइ वाटिका, इसी क्रीड़ा करई। —व. स.

राजवाह—स० पु० [स०] घोडा, अश्व।

राजविद्या—सं० स्त्री० [सं०] राजनीति।

राजविद्रोह—सं० पु० [सं०] राज्य या शासन के विरुद्ध किया जाने वाला विद्रोह, बगावत।

राजविद्रोही—वि० [सं०] राज्य में विद्रोह करने वाला, बागी।

राजविहंग, राजविहंगी—सं० पु०—राजहंस।

राजवी, राजवीय—सं० पु० [स. राज्+रा. प्र. वी] १ राजा, नृपति।

उ०—सांवणिया रै पेलड़े मास रिड़मल घुड़ला मोलवै रे। हां रे म्हारी जोड रौ रे गढां रौ **राजवी** रे रिडमल राव। —लो. गी.

उ०—२ सु जमलौ अहीर खेरडी गाव छै तठै घोड़ौ फूल नू ले आयौ, तरै बैर हेकरण दीठौ तरै जमला नू खबर हुई, कोई **राजवी** छै। घणौ ग्रहणौ पैहरियां घोडा ऊपर बेसुध हुवौ छै। —नैणसी

उ०—३ नळ राजा आदर दियउ, जउ **राजवियां** जोग।
देसवास सवि रावळा, अइ घोडा अइ लोग। —ढो. मा.

उ०—४ देस देसरा **राजवी**, करता झाक-जमाल।
वाची कागद ऊठिया, जान सजी तत्काल। —जयवाणी

२ राजा के वश का या राज घराने का व्यक्ति, राजपुरुष।

उ०—१ राणी जाया **राजव्यां**, सहजाहूं बळिहार।
तूकारौ तारीफियां, बरसौ सोना धार। —बा दा.

उ०—२ सु जगमाल सिकार चिढियौ, तरै घडसी ऊभौ थौ सु जुहार न कियौ। तरै रावळजी नू जगमाल आय कह्यौ—जु गांव माहै आज इसडौ रजपूत आयौ छै, सु कैतौ कोई गिवार छै, कै कोईक **राजवी** रै घर रौ छोरू छै। —नैणसी

३ राजेश्वर, सम्राट।

उ०—१ ताहरी पुत्री नौ ते वर जाणजै जी। महीना नै अतर मिलस्यै तेह हो। समस्त राजा नौ थास्यै **राजवी** जी,तेहनौ प्रताप अखंड अछेह हो। —वि. कु.

उ०—२ हमें कैसी हुसी, बडा बडा **राजवीयां** रै मांही प्रतिस्ठा घटसी। —पंचदंडी री वारता

रू० भे०—राजिव।

राजवेद—सं० पु० [सं. राज-वैद्य] राजा या राज घराने के लिये नियुक्त वैद्य, मुख्य वैद्य, वैद्यराज।

उ०—नी, नी, **राजवेद** नै बुलावै जैडी कांई वात।
थू **राजवेद** सू कम थोड़ौई है। यूं ई जचगी तौ थनै पूछ लियौ। —फुलवाड़ी

राजव्यास—सं० पु० [सं०] राज दरबार का ज्योतिषि।

उ०—पाड़ोसिया रै घर रा किणी मोत्यार नै भेज **राजव्यास** जी नै बुलाया। —फुलवाड़ी

राजव्रगी—देखो, 'राजवरगी' (रू. भे.)

राजसंसद—सं० स्त्री० [सं.]—वह सभा या सस्था जो राज्य के शासन की सम्पूर्ण व्यवस्था करती है। राज-सभा।

राजस—स० स्त्री० [सं.] १ राज्य, हुकूमत, शासन, सत्ता।

उ० – १ विविध धांम पुर ग्रांम बसां है, माली **राजस** पूरब माहै।
सेतरांम सकबंध नरेसर। इळ (ठा) लग **राजस** पूरब अंतर। —रा. रू.

उ०—२ एक बरस रहि आप री **राजस** बांध फेर आप बादसाह री हजूर गयौ। —ठा. जैतसी री वारता

उ०—३ सो एक दिन जंगळ रा गांवा रौ एक रजपूत पल्हू गांव

परणियौ थौ सो सासरै गयौ। उठै खींचियां रा गाव ग्रर **राजस** खरळा री। —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—४ चित समद थानिक 'चौडरे'। कमधज्ज **राजस** इम करै। —सू. प्र

२. राजधानी।

उ०—अग्रज हू तो सेव अभ्यासी, पारकेत सिव तणौ उपासी। इण कजि मूझ नवौ पुर आपौ, सिव सथान मौ **राजस** थापौ। —सू. प्र.

३ शासन-काल, राज्य-काल।

उ०—१ व्रथा कामा माही समयौ **राजस** रौ खोइयौ तिण सूं पादसाही खोई। —नी०प्र०

उ०—२. रही स्वछंद रैत तव **राजस**, सुभ अमद सुखिग्रारी। आणद कद एक दम उठग्यौ, 'तखत' नद अवतारी —ऊ० का०

४. राजसी ठाट-बाट से किया जाने वाला जीवनयापन।

उ०—१ सो इण भात जलाल गहरी मौज आणद सूं रहै। फूला री तिवारा दारू पी'र लाल रहे। दिन रात सारौ साथ मतवाळौ छकियौ रहै। सो इण भात जलाल **राजस** करै। —जलाल बूबना री बात

उ० —२. अड़धू लाग रैया, बब बाजै ही। घर रा लोग **राजस** करै हा। कमाई में सफै ग्रर बरकत ही —दसदोख

उ०—३, वाता कर दिन पोहर चढता भु जाई रावजी कनै जीमै। दरबार रौ कांम कर दोपोहरै भरमल रै जाय पोढै। इण तरै **राजस** सुख करै। —कुंवरसी सांखला री वारता

५. सुख भोग, भोग-विलास।

उ०—सावण आयौ सायबा, बांधौ पाग सुरंग। महल बैठ **राजस** करौ. लीला चरै तुरंग। —अग्यात

६. काम क्रीडा, मैथुन।

उ०—मगळ वारै मंड कर, परणी आणी कंथ। सेजा चढ **राजस** किया, पूरै मन सू कथ। —अग्यात

७ राज्य (क्षेत्र की दृष्टि से)

उ०—नाव तिरै नहं नीर में, निबळा नावड़ियांह। **राजस** नह साबत रहै, मिनखो मावड़ियाह। —बां० दा०

८. राजा, नृप।

उ०—१ प्रण कियां पछै पाछौ नही फिरणौ, **राजस** रौ मोटौ गुण हठ नूं जांणजै। —नी० प्र०

उ०—२. वर मोनूं प्रापत नही सुण सांची दीवांण। **राजस** संगति हू करी तीसू मन पहचांण। —नापै साखले री वारता

६. राजत्व।

१०. राजसभा, राज दरबार।

११. रजोगुण।

उ०—१ महतत्व थकी ग्रहकार नीपनौ। ग्रहंकार त्रिह प्रकारे कहियै। एक सात्विक। बीजौ **राजस**। तीजौ तामस। सात्विक ग्रहकार थी मनु ग्ररु देवता इंद्रियां का अधिष्टाता नीपना। —द० वि०

उ०—२. पाणी ल्यावै डोरि करि, हाथे भात पचाय। **राजस** तॉमस रचि रह्यो, सातिग नावै दाय। —ग्रनुभववाणी

उ०—३. दादू **राजस** कर उत्पत्ति करै, सात्विक कर प्रतिपाल। तामस कर परळै करै, निरगुण कौतिक हार। —दादूबाणी

१२. रजोगुण से उत्पन्न, रजोगुण सम्बन्धी, रजोगुणी।

१३. आवेश।

१४. कोध।

रू० भे०—राजस्स, राजिस्स।

राजसगुण— सं० पु०— रजोगुण।

उ० इण वेळा रजपूत वे, राजसगुण रजाट। सुमिरण लागा वीर सब, वीरां रौ कुळ वाट। —वी. स.

राजसठाट—सं० पु०—राजसी वैभव।

राजसत्ता—स० स्त्री० [सं.] किसी देश की सर्व प्रभुत्व शासन शक्ति, सरकार।

राजसथांन—देखो 'राजस्थांन' (रू. भे•)

उ०—१ थिर ते **राजसथांन** महि इक छत्र भोग सांमथ। एके ग्रांण ग्रखड. खंडण मांण प्रांण नव खडं। —रा० रू०

उ०—२. सूंम मिळै ग्रन सहर में, सहर उजाड़ समांन। जो 'जेहौ' बन में मिळै, बन ही **राजसथांन**। बा. दा.

राजसथांनी—देखो 'राजस्थानी' (रू. भे)

राजसधारी—वि. - पौरूषबान, वीरत्ववाला।

उ०—राव भाट लोगां नूं घणा दान मांन दीन्हा। ग्रढी ही सेधाळ **राजसधारी** सिध्दिवत हुवौ। —कुवरसी साखला री वारता

राजसनगर—स. पु.— राजधानी, राजधानी का नगर।

उ०—'मालौ' **राजसनगर** में 'सोवत' 'जेत' सिवांण। थांन सेड़ 'वीरम' थपै, जग जाहर घण जांण। —वी. मा.

राजसभा—स. स्त्री.—१. राजाग्रों की सभा, राजाग्रों की मजलिस।

उ०—**राणसभा** के भूखण दिल के उदार। बिरदूं के भारै समसेर बहादरूं के समसेरूं के चितारे। —सू. प्र.

२. देखो 'राजदरबार'

उ०—विद्या विलासि सुणी ए वांणि, ततखिणी पहहुउ छबिल सुजांणि। **राजसभा** प्रणमी भूपाळ, लिपि वांची इम भणीय रसाल। —हीराणंद सूरि

३. देखो 'राज्यसभा' (रू भे.)

राजसमद–सं पु.—कांकरोली के पास बना एक बडा तालाब (उदयपुर)।

राजसमाज–स. पु.—१ नृप मण्डली, राजा लोग।

२. शासक-वर्ग।

राजसर—देखो 'राजसमद'

उ०—रचतां इसौ **राजसर** रांणा, लेखौ जग रो कवण लहै।
अस सूरज बहतौ आधतर, बेळा पग माडतौ वहै।
—महाराणा राजसिंघ रौ गीत

राजसरप–सं० पु० [स. राज-सर्प] दो मुह वाला सर्प।

राजसवकौ–वि०—१ राजनीति मे निपुण एवं दक्ष। अच्छा राज-नीतिज्ञ।

२ शासन करने में निपुण, शक्तिशाली।

उ०—सुत क्याऊ मेळखैस रै, कुळ में किरणाळा। **राजसवंका** राठवड, वर वीर वडाळा। —वी. मा.

राजसिंहासन–सं० पु० [सं] राजा के बैठने का सिंहासन, राजगद्दी।

रू० भे०—राजसींघासण, राजासन।

राजसिरी–सं० स्त्री० [सं. राज्य श्री] राज्य लक्ष्मी।

राजसींघासण—देखो, 'राजसिंहासण' (रू. भे)

राजसी–वि०—१ राजाओ के योग्य, राजाओ के समान।

२ राजाओ जैसी शान-शौकत व वैभव वाला।

३ जिसमे रजोगुण की प्रधानता हो, रजोगुणी।

४ रजोगुणी वृत्ति वाला।

रू० भे०—राजस्सी।

राजसीवृत्ती–स० स्त्री०—ऐसी प्रवृत्ति जिसमे रजोगुण की प्रधानता हो, रजोगुणी वृत्ति।

राजसुजगन–सं० पु० [सं. राजसूय. राजसूय यज्ञ] राजसूय यज्ञ।

उ०—**राजसुजगनां** जीत प्रवाडा कायबा रजे, दाखै धाडा दंसू दसा क्रीतरा ददम। एहडा हमीर हेळा-आलमां जेहान आखे, पखा नीर चाडा झोका विजाई 'पदम' —डूगजी गाडण।

राजसुर—देखो 'राजेस्वर' (रू. भे.)

राजसू, राजसूय–स० पु० [स० राज सूय] बड़े बडे राजाओं द्वारा किया जाने वाला एक प्रकार का यज्ञ विशेष। इसके करने से वह राजा चक्रवर्ती पद का अधिकारी होता था।

उ०—१रचियौ जिण जिग **राजसू**, मेछां कर बळ मद। पत कनौज दळ पागळौ, जग जाहर जैचद। —बां. दा.

उ०—२ धरा सुधेनु छूय छूय दूय दूय धू धरै। क्रतू समांन **राजसूय** भूय भूय भू करै। —ऊ. का

राजस्थांन–स० पु०—[स. राजस्थान] १ भारत वर्ष का एक प्रान्त, जो देश के पश्चिमोत्तर भाग मे है और जिसकी राजधानी जयपुर नगर में है।

२ बहुत से राज्यो या रियासतों वाला प्रदेश, राजपूताना।

३ राजधानी।

उ०—१ इतरै गोहिला पिण आलोच कियौ—जो राठोड जोरावर सिराणै आय **राजस्थांन** माडियौ। जो कुं'लवौ-पतौ कीजै तौ टिग सगीजे। —नैणसी

उ०—२ तरै भीवैजी गुर नूं अरज करि कह्यौ, गरूजी, हुकम करौ तौ अठासू कोस तीन ऊपरा म्हारौ **राजस्थांन** रौ पाटण गाव छै नै माता भाई छै, थे कहौ तौ कुटंबजात्रा करि आऊ।
—जखडा मुखडा भाटी री बात

४ राज्य।

रू० भे०—रजथान, राजथाण, राजथान, राजसथान, रायथांन।

राजस्थांनी–वि०—राजस्थान का, राजस्थान सम्बन्धी।

स० पु०—१ राजस्थान प्रदेश का निवासी।

सं० स्त्री०—२ राजस्थान प्रदेश की मरु या डिंगल भाषा।

३ इस प्रदेश की बोली।

राजस्स—देखो 'राजस' (रू भे.)

उ०—मास तीन बावीस दिन, पैताळीस वरस्स।
अमरापुर वसियौ 'अजौ', राजा कर **राजस्स**। —गा रू.

राजस्सी—१ देखो, 'राजसी' (रू. भे)

२ देखो 'राजरिसि' (रू भे)

उ०—राजा सुणि तेडै **राजस्सी**, जोध मत्री समणी जोतस्सी।
थटपति चहू हूंन मत्र थपियौ, जनमती कनिया जुध जपियौ।
—सू. प्र.

राजहंस–सं पु० [स.] १ प्रायः झीलो के किनारे रहने वाला व झुण्ड बना कर उड़ने वाला एक प्रकार का हंस। इसकी चोंच व पैर लाल होते हैं। इसे सोना पक्षी भी कहते हैं।

उ०—१ **राजहंस** पंखी रहे रे लाल, मांन सरोवर मांहि रे सो०।
तिण पंखी नी पांखडी रे लाल, ते देखी पतिसाहि रे सो०।
—प. च. चौ.

उ०—२ कमलां रौ घणौ सांघणौ मेळ है, तठै **राजहंस**, कळहंसा री इधकी केळ है। बतक सरदा धरट हंजा मुरगा पयां भट्टिया तरै है, सारसां रौ टोळ जकै भंगोर करै है। —र० हमीर

२ एक प्रकार की लता जिसके फूल पीले होते है। यह जलाशयो या नदी किनारो पर होती है। यह ठण्डी होती है।

उ०—चुगला जीभ न चालही, पर उपगार प्रसंग। नह नीपजही नील सू, **राजहंस** रौ रंग। —बां. दा.

३ मालव, मनोहर व श्रीराग के मेल से बनने वाला एक संकर राग। (संगीत)

राजांन—देखो 'राजा' (रू. भे.) (ह. नां मा.)

उ०—१ एणी परि बोला मुनि मांभलि तूं **राजांन**।
एक मन प्रसन्न करीनि आपणूं रे। —नळाख्यांन
उ०—२ सउदागर पिंगल मिल्यउ, बहुत दियु सनमांन।
रात-दिवस प्रेमइ मिल्यउ, इम पिंगळ **राजांन**। —ढो. मा.

राजांन-सिलांमति—देखो 'हजूर-सलांमत'

उ०—हमै तठा उपरांति करि नै **राजान-सिलांमति** एकाणि प्रस्ताव महाराजा स्री राजेसर रा परमाण आबूगढ रा मंडावरि आया छै। —रा. सा स.

राजा—स. पु. [स. राजन्] (स्त्री रांणी) १. किसी देश, जनपद या राज्य का अधिपति, स्वामी. मालिक, राजा, नृप। राज्य का प्रधान शासक। (ह. ना. मा.)

उ०—१. रांणा **राजां** रावळा, उर पड़ सोच अथाह।
जग वाकौ 'जसराज' रौ, सुणियौ औरंगसाह। —रा. रू.
उ०—२ **राजा** जुवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामत लघुसामत तलवर तत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति मत्रि महामत्रि ग्रहवाहक········ —व. स.
उ०—३. **राजा** तुझ सभी अन **राजां**, होड कियां नृप त्रिया हसै।
पाणी-हड पहरै दोहु पामा, नासा नार जिहुंइ नकसै।
—सांइयौ झूलौ

२ स्वामी, मालिक।
३ क्षत्रिय।
४ युधिष्ठिर का एक नाम।
५ इन्द्र का एक नाम।
६ चन्द्रमा। (ना. डिं. को.)
७ उल्लू पक्षी।
उ०—भैरव डावी भणीं, दुगड़ियौ मांन दिरीजै।
जै राजा जीमणौ, पोहर हेकण ठैहरीजै। —पा. प्र.
८ यज्ञ।
९ वीर्य, शुक्र।
१० पति, प्रियतम या प्यारे के लिये किया जाने वाला एक सम्बोधन।
११ ताश का वह पत्ता जिस पर राजा का चित्र हो।
१२ अंग्रेजी सरकार द्वारा रईसो व जमीदारों को दी जाने वाली एक उपाधि।
१३ धनवान व समृद्धिशाली व्यक्ति।
१४ राजा की उपपत्नी की सतान (पुरुष) को दिया जाने उपटंक या पदवी। (जयपुर)
वि०—१ उदार, दानी।
२ जिसे राजा तुल्य माना जाता हो, राजा के समान।

उ०—हरीया हौदै ऊपरै, रावत वाई रीठ। मारघौ **राजा** मोह कु, पड्यौ तळफै पीठ। —अनुभववाणी
रू० भे०—रज्जी, राम्रा, राईआ, राजान, राया।
अल्पा०—राजौ, रायौ।

राजाई—सं. स्त्री—१ राजा होने की अवस्था या भाव, राजत्व।
उ०—**राजाई** कहीजै किनां पातसाही थारी राम। —पी. ग्रं.
२ राजा का पद, राजा के अधिकार।
उ०— सायपुरै **राजाई** भारतसिघजी पायी।
—बा. दा. ख्यात
३ शासन, हुकुमत।
उ०— रांजा राइसिंह संवत १६६१ **राजाई** पाई। नारायणदास पातावत रौ दोहीतौ। —नैणसी
रू० भे०—राजोई,

राजाधिकारी—सं० पु० [सं.] १ राज्य का अधिकारी, राजा।
२ न्यायालय में बैठ कर न्याय करने वाला, न्यायाधीश, विचार-पति।

राजाधिराज—सं० पु० [स] १ राजाओं का राजा, सम्राट, राजेश्वर।
उ०—**राजाधिराज** मा'राज रांम। ते ताज सीस आलम तमांम।
—र. ज. प्र.
२ मुगल काल में देशी राजाओं को दिया जाने वाला सम्मान-सूचक पद।

राजापण, राजापणौ—सं० पु० [सं. राजत्व] १ राजा होने की अवस्था या भाव, राजत्व।
२ राजा का पद, राजा के अधिकार।
रू० भे०—रजापण, रजापणौ,

राजापति, राजापती—सं० पु० [सं. राजन्+पति] राजाओं का राजा, सम्राट, राजेश्वर।
उ०—मन-भावै चालै खत्रीवट मारग, वीरत दावै धड़ा वरै। **राजापती** "जसो" महाराजा, कमध सुहावै जकूं करै। —नाथौ सांदू

राजाराज—सं० पु०—१ चन्द्रमा, शशि। (डिं. को.)
२ कुबेर।
३ राजेश्वर, सम्राट।

राजालाबु—सं० पु० [सं.] एक प्रकार का कद्दू।

राजावटी—सं० पु०—जयपुर जिलान्तर्गत एक भू-भाग।

राजावत—स० पु०—कछवाहा वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।
उ०—जगमाल उदैसिंघोत रै वंस रा रांणावत १, कांनावत २, कछवाहा सुरतांणोत **राजावत** ३, राठोड़ चांदावत ४, ऐ च्यार

उमराव साहपुरै। —बा. दा. ख्यात

राजावरत्त—स० पु० [स. राजावर्त्त] एक प्रकार का रत्न जिसे लाजवर्द कहते हैं।

राजावळी—स० स्त्री० [स राजन्+अवली] १ राजवंशावली, किसी राजा के वश की विगत।

२ किसी सभा या दरबार बैठे राजाओ की पक्ति

राजासन—देखो 'राजसिंहासन'

राजिंद, राजिंदर, राजिंदौ, राजिंद्र, राजिंद्रौ—देखो 'राजेन्द्र' (रू. भे)

उ०—१ म्हारी बाईजी रौ काई छै हवाल, **राजिंद** चाले चाकरी —लो.गी.

उ०—२ मिठडा **राजिंद** भिल रह्यौ, इक मांनौ मोरी वात।
महिर करौ मौ ऊपरै, जिम न हुवै उतपात। —वि. कु

उ०—३ गाजि फरसि असपती, भाजि धानख मुदप्फर। मखवाळा मडळि करै सगळा **राजिंदर**। —रा. रू.

उ०—४ सोढा रांणा मनै म्हारै पीहरियै पहुचाय, **राजिंदा** ढोला, ओळूडी तौ आवै म्हारा बाभोसा री। —लो गी

उ०—५ मेद-पाट **राजिंद्र**, देखि सरहद्दा दौड़ौ। गुडवांणै मेल्हियौ, 'भीम' रांणौ चीतौडौ। —गु. रू. ब.

उ०—६ साहण समद सूरौ ईस्वर, अवतार देव **राजिंद्रौ**। —गु. रू. बं.

राजि—१ देखो 'राज' (रू. भे)

उ०—१ ताहरा महाराजाधिराज महाराजा स्री रायसिघजी बीडौ झालियौ। **राजि** विदा हुआ। —द. वि

उ०—२ अभग मछरीक इण भाति सू ऊचरै, मुदौ माहरौ खरौ कांम माथै। वैस हूंता कह्यौ, **राजि** अपछर वरौ, सरम, थे हुवौ इदलोक साथै। —लिखमीदास व्यास

उ०—३ थे तो भूखा नी भावठ भजउ, **राजि** निज सेवक तणा मन रजउ **राजि**। म्हारा मननी आसा पूरौ। **राजि** म्हांरा कठिन करम दल चूरउ। —वि. कु

उ०—४ ताहरां सोढी कहै-**राजि** पधारौ छौ, हुं तो रावळै दरसण विणा अन नही खावती, ताहरा ओढण रौ पीतांबर दीन्हौ, यौ देखिज्यो। —लाखा फूलाणी री बात

देखो 'राजी' (रू. भे.)

राजिउ—सं पु.—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—सारीयी तिलवास गरब्भसूभू **राजिउ** बयराजीउं महिदउरउं तीतआगिउ········ —व. स.

राजिक—वि —[अ. राजिक] पालन-पोषण करने वाला।

उ०—दादू **राजिक** रिजक लीये खडा, देवे हाथो हाथ। पूरक पूरा पास है, सदा हमारे साथ। —दादूबांणी

स. पु.—ईश्वर, परमात्मा।

राजिकापित्त—स. पु. एक प्रकार का रोग।

उ०—आमवात सोफवात विगछावात कफवात साकिनीवात रक्तपित्त अम्लपित्त **राजिकापित्त**······ —व. स.

राजित—वि [स.] सुशोभित, शोभित।

उ०—अधर सुधारस मुरळी **राजित**, उर वैजती माळ। क्षुद्र घटिका कटितट सोभित नूपुर सब्द रसाळ। —मीरा

रू. भे —राजत

राजिम—देखो 'राजा' (रू. भे.)

उ०—आणौ रिख स्रग कहै विप्र एह। मुगता ही दूध **राजिम** मेह। —रामरासौ

राजियउ—देखो 'राजियौ' (रू. भे.)

उ०—एक दिवस सुंदर रूप देखी, राजा चित्त विचारियउ। भोगवु जिम तिम करी भउजाई, राज करइ तिहा **राजियउ** —स. कु.

राजियोड़ौ—भू. का. कृ. १ बैठा हुआ आसीन. २. शोभित हुवा हुआ. ३ सुंदर लगा हुआ. ४ चमका हुआ. ५ राज्य किया हुआ, शासन किया हुआ।
(स्त्री. राजियोड़ी)

राजियौ—सं. पु. [सं. राज्] १ राज्य का स्वामी, राजा।

उ०—१ जीहो मिथिला नगरी रौ **राजियौ** —जयवांणी

उ०—२ तिण समइ युग प्रधांन जगि **राजियौ**। स्री स्रजिन चंद तेजे सवायौ। —स कु.

२ राजा के वंश का, राजा का वशज।

रू. भे.—राजियउ, राजीयौ,।

३. कविवर कृपाराम खिड़िया का अनुचर, जिसको सम्बोधन करते हुए सोरठै रचे गये जो "राजिया के सोरठे" कहे जाते हैं।

राजिल—सं. पु. [सं. राजिल] एक प्रकार का सर्प जो भयकर विषैला होता है। (अमरत)

२ विषरहित और सीधे सर्पों की एक जाति या इस जातिका सर्प।

राजिव—१ देखो 'राजीव' (रू. भे.)

२. देखो 'राजवी' (रू. भे.)

राजींद, राजींद्र—देखो 'राजेद्र' (रू. भे.)

उ०—ऐकरिये ओ मारूजी, करला पाछा जी मोड़,**राजींदा** ढोला, ओळूं घणी आवै म्हारी माय री। —लो. गी.

राजी—वि० [अ.] १ प्रसन्न, खुश, आनन्दित।

उ०—देखो आद अनाद सूं, **राजी** व्है स्रीरांम। संतांरा संसारमें,

किसड़ा सारै कांम। —भगतमाळ

उ०—२ पितारौ हुकम सुरा चौगुरा पाळियौ, बजाया धरा ले खरा बाजा। हुतौ राजी तरै हेक राजा हुतौ, रीसीयौ साहतौ विनै राजा।

—द. दा.

उ०—३ एह् अराख छै आपरा जी, सदा न चलस्यै रे एम। करि मुझ नइ राजी हिवैंजी, जिम बाधइ बहु प्रेम। —वि. कु.

२ महरबांन, कृपालु।

उ०—नाई पीढ़िया नै सुथराई सू दबावतौ बोल्यौ—नी बापजी, श्रौ तौ वैं'म इज म्हारै माथै मत करौ। कांनां सुरी सौ पाछी होठा निकळै ई नी। इरा वास्तै ई तौ राजाजी म्हारै माथै इत्ता राजी है। —फुलवाडी

३ अनुकूल, पक्ष मे।

४ किसी कार्य को करने या बात को मानने के लिये तैयार, प्रस्तुत सहमत, सम्मत।

उ०—१ म्है तौ उरा नाकुछ काम वास्तै नटी जकौ इरा मूंडै तौ पाछौ हुकारौ नीं भरियौ। कावड़िया सू मार मारनै म्हारौ डील लीलौ चम कर दियौ परा म्हैं राजी नी व्ही। —फुलवाडी

उ०—२ वौ नांनी मा रै पाखती आय रिसारौ करतौ व्है ज्यूं बोल्यौ—म्हारै पैं'ला ई उरानै टोगडी बताय दी। परा वा एकली देखरा सारू कीकर राजी व्ही। —फुलवाडी

उ०—३ वा तड़कनै कह्यौ—म्हनै समझावरा नै आया है, पैं'ला थारा हीया माथै हाथ धरनै सोचौ के एकाएक बेटा नै दिसावर भेजरा सारू थें राजो व्हिया तौ व्हिया इज कीकर। —फुलवाडी

५ संतुष्ट।

उ०—१ सुंदरदास भलौ साचौ सिरदार सारी बात माही साव। सयारौ समझरौ। मारासां रौ बैंठराहार सौ लोग सारो जीव टेक खडौ रहै। सगळा राजी।

—भाटी सुंदरदास वीकुपुरी री वारता

उ०—२ 'सोनग' घोकौ सभरै,सुरा जौखौ निज साथ। दाह मिटी राजी थयौ, ओरंगसाह समाथ। —रा. रू.

६ मस्त, मग्न।

उ०—१ बाजी पर साजी चढ बैठै, व्है राजी विन होंस। पडै सवार आप खुद पाजी, दै ताजी सिर दोस। —ऊ. का.

उ०—२ मैं तो राजी भई मेरे मन में, मोहि पिया मिळै इक छिन में —मीरां

७. निरोग स्वस्थ।

स. स्त्री [सं.] १ पक्ति, कतार।

उ०—रचै लार गुंजार रौलंब राजी। भगांरा भंडां रोध श्रोलंब भाजी। —वं. भा.

२ रेखा, लकीर।

रू० भे०-राजि।

राजीखुशी—वि० १ प्रसन्न, खुश, आनन्द मे।

२ चैन से, आराम से।

स० स्त्री० १ प्रसन्नता, खुशी।

२ चैन, आराम, कुशलता।

उ०—साळा बारै आया, राजी-खुशी पूछी अर पागौ पकड'र बैठचा। —दसदोख

राजीड़ौ—स० पु० [सं. राज+रा. प्र. इड़ौ] १ पति, प्रियतम।

उ०—१ उठ म्हारा राजीड़ा दांत चौ, थारे हुई छै धरम की रात, झालर बाजै राजा रांम की। —लो. गी.

उ०—२ पांन सुपारी धरा रे हाथ, जोसीडा ने बूजन राजीड़ा की धरा गई। —लो. गी.

२ राजा, नृप। (अल्पा., रू भे)

राजीनांमौ—स० पु० [फा० राजी नामः] १ किसी विवाद या झगड़े को समाप्त करने के लिये, वादी व प्रतिवादी द्वारा सुलह् करके लिखा जाने वाला सधि-पत्र, सुलह्-नामा।

२ स्वीकृति-पत्र।

राजीपौ—स० पु०—१ हर्ष प्रसन्नता या खुशी होने की अवस्था या भाव।

उ०—तद कही लोग राजीपै मौ कनै ढूकै छै कना वैराजी ढूकै छै। —ठाकुर जेतसी री वारता

राजीबाजी—वि० प्रसन्न, खुश

राजीमति, राजीमती—सं० स्त्री०—एक राजकुमारी, जिसका सम्बंध नेमीनाथ के साथ हुआ था पर शादी न हो सकी।

उ०—कविता कालिदास नी, विघ्नापहारता परस्वनाथ नी, अप्रकपता स्री वीरनी, निरसनता ढंढरा कुमारनी, वाचा धनांनी, सील प्रभाव राजीमती तराउ। —व. रा.

राजीयौ—देखो 'राजियौ' (रू. भे.)

उ०—१ वेढ वडाई राजीयां सूरी दळ सिरागार। सेल धमंका सिर सहै, आवै जब इकतार। —अनुभववांणी

राजीव—सं० पु० [स.] १ नील कमल, कमल। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—छऊं भैन छोटी दहूं ओड़ छाजै। बिचै पाट राजीव माजी बिराजै। —मे. म.

२ हाथी।

३ एक प्रकार का सारस।

४ एक प्रकार का मृग जिसके पीठ पर धारियां होती है।

५ रैया-मछली।

रू० भे०—राजिव।

राजु—देखो 'राज' (रू. भे.)

उ०—**राजु** तुम्हारु पूत्तु तुम्हारउ, अज्जीउ गगे किसु विचारउ ।
—सालिभद्र सूरि

राजीवलोचन–वि०—जिसके नैत्र कमल के समान सुन्दर हो ।

उ०—उपत्ति-खपत्ति-प्रकत्ति-असग, **राजीव-लोचन** जाणै धुब रग ।
—ह. र.

राजुल—१ देखो 'राजल' (रू. भे.)

२ देखो 'राजमति'

राजेंद्र–स० पु० [स. राजेन्द्र] १ राजाओ का राजा, सम्राट, राजेश्वर ।

२ इन्द्र ।

३ पति, प्रियतम ।

४ किसी प्रिय व्यक्ति के लिये आदर युक्त सम्बोधन ।

रू० भे०—राजद, राजद्र, राजइद, राजिंद, राजिंदर, राजिंदौ, राजिंद्र, राजिंद्रौ, राजीद, राजीद्र, राज्यद, राज्यद्र, राज्येंद्रौ ।

राजेस, **राजेसर, राजेस्वर, राजेस्वुर**, **राजेसुर**–स० पु० [स. राजेश्वर]

१ राजाओं का राजा, सम्राट, राजाधिराज, राजेश्वर । (डिं. को.)

उ०—अवद्धेस **राजेस** जानेस आया । विदेहेस साम्हैस आणै वधाया ।
—सू. प्र.

उ०—२ रुघपति हरा जोड **राजेसर**, गयद हरण हरवळ गाढां गुर ।
—रा. रू.

उ०—३ तिण **राजेसर** राजारै महाराणी महामाया पटराणी तिण रा पेट रौ नीपनौ कुंअर गुर पाट पति कुअर स्त्री राजान कुअर पदौ भोगवै ।
—रा. सा. सं.

उ०—४ गुण धारी सुविचारी रे लौ, म्हारा **राजेसर** जी रे लौ ।
—वि कु.

उ०—५ सुखदाता सरणाया, निज संता जानुकी नायक । दस सिर भज दुबाह, राह जग क्रीत **राजेस्वर** ।
—र ज प्र.

२ इन्द्र ।

रू. भे —राजसुर,

राजोई—देखो 'राजाई' (रू. भे.)

उ०—'सोभाग' सुजाव चाढ पुआर उदार सोभा, गोखां हेट लागा महां करीजे अग्राज । सारा छत्र धारचां राजा राण दीधा सुरा, **राजोई** आथाण भूरा क्रोड जुगा राज ।
—राव सवाई केसवदास परमार री गीत

राजोधर—देखो 'राजधर' (रू. भे.)

राजौ—देखो 'राजा' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ बेसण नाहि बुलावणौ, नही वचन रौ साजौ रे । माहरी आया की राखी नही, हूं दीन दुखी को **राजौ** रे । —जयवांणी

उ०—२ एक दिन एकातें आव ए, प्रारथना करइ **राजौ** जी ।
—स कु.

राजौधर—देखो 'राजधर' (रू. भे.)

राज्यं—देखो 'राज्य' (रू. भे)

उ०—समाचारेण विस्वासः, अभ्यासेन विद्या, न्यायेन **राज्यं**, औचित्येन महत्व,औदार्येण प्रभुत्व
—व. स

राज्यंद, राज्यद्र—देखो 'राजेंद्र' (रू. भे.)

उ०—१ ढाढी जे **राज्यंद** मिळइ, यू दाखविया जाइ । जोबण हस्ती मद चढयउ, अकुस लइ घरि आई ।
—ढो. मा.

उ०—२ काळा दळबळ बळ चाढे सक्रोध । जोम्यद्र रूप **राज्यंद्र** जोध ।
—सू प्र.

राज्य–सं० पु० [स.] १ वह देश, राज्य या प्रदेश जो किसी एक राजा के शासन या स्वामित्व मे हो ।

२ शासन, हुकूमत ।

उ०—प्रथम अचळदास खीची गढ गागुरन को धणी । गढ गागुरन **राज्य** करै छै ।
—लाली मेवाडी री बात

३ शासन या हुकूमत के अधिकार ।

रू. भे. —राज्य ।

राज्यकळा–स. स्त्री. [स. राज्य+कला] १ शासन करने की पद्धति, प्रणाली, विधि ।

२ राजनीति ।

राज्यकाळ–स. पु. [सं. राज्यकाल] किसी राजा या शासक के हुकूमत की अवधि, शासन-काल ।

राज्यतिलक—देखो 'राजतिलक' (रू. भे.)

उ०—गोतम गौत्री थापना करि, **राज्यतिलक** करि, रास्टेस्वर राजा नै विदा कियौ ।
—रा. वशावली

राज्यपाळ–सं. पु. [स. राज्यपाल] १ प्रजातन्त्रात्मक या ससदीय प्रणाली के अन्तर्गत, देश के प्रत्येक राज्य या प्रान्त के लिए बनाया हुआ प्रधान शासक का पद । (गवर्नर)

२ उक्त पद पर नियुक्त व्यक्ति, जो राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किया जाता है ।

रू० भे०—राजपाळ ।

राज्यलक्ष्मी, राज्यलिछमी—देखो 'राजलक्ष्मी' (रू. भे.)

राज्यलोभ–सं पु. १ राज्य या सत्ता का लोभ ।

२ कोई बडा लोभ । ३ उच्चाकाक्षा ।

राज्य-व्यवस्था–सं. स्त्री. [सं] शासन करने का ढंग, शासन का विधान, राज्य का नियम ।

राज्यसभा–सं. स्त्री० सं [स] भारतीय संसद का एक सदन, उच्चसदन, अपर हाउस ।—वि. वि.–यह लोक सभा से अतिरिक्त एक सदन है जिसके अधिकांश सदस्य राज्यों की विधान सभाओं

द्वारा चुनकर भेजे जाते है । कुछ सदस्यों का मनोनयन राष्ट्रपति द्वारा किया जाता है । लोक सभा द्वारा पारित किया हुआ बिल इस सभा से भी पारित होना जरूरी है ।

रू० भे०—राजसभा,

राज्याभिसेक—देखो 'राजतिलक'

राज्येंदौ, राज्येंद्रौ—देखो 'राजेंद्र' (अल्पा., रू भे.)

उ०—**राज्येंद्रौ** जोग्येंद्रौ सगौ सांमरथ नेह एकगौ । लेखै सेव सुहित्त आसगौ नइव लेखती । —रा. रू.

राट—स पु १—राजा, नृप । (ह. ना. मा)

उ०—भजि जात प्रजा मय बात भगेळा, पाटण तूअर कंप पुरे । बडगूजर जाट अहीर तजे वळ, दाट लगा पुर **राट** दुरे । —रा रू.

२ प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति ।

३ देश, राष्ट्र, राज्य । (सभा)

उ०—खहर गये व्रत दुज्जडा, सहर करै दहवाट । आथा थांणा 'अजन' रा, लूट विडाणा **राट** । —रा रू.

रू भे.—राट्ठ ।

राटक—स. पु.—१ शस्त्र-प्रहार ।

स. स्त्री.—२ शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।

३ युद्ध के नगाडे की ध्वनि ।

उ०—अबाटक **राटक** सुण असि नाटक, रचता माट्ठ रण राट्ठ जम साट्ठ सा जचता । —किसोरसिंह

राटणी—स स्त्री —वाद्य की आवाज, ध्वनि ।

उ०—**राटणी** तबल्लां सोरा रचायौ सवेरौ राग । पाटणी हिंदवा गोरां मचायौ पीठाण । —दुरगादत्त बारहठ

राटपाट—वि. नष्ट भ्रष्ट ।

उ०—भाडिया सनाह तन तुरग जीण, हुय गया मुगळ दुख दहल हीण । पड़ भाट थाट छल **राटपाट** । दिल्लीस जळै दळ वळै दाट । —रा. रू.

राटी—स. स्त्री—साधारण या सामान्य स्त्री ।

उ०—किहा भीति नइ किहा ग्राटी रे ? किहां रंभा नई किहा **राटी** । अंतर दीसइ एवडु, किहा दूध किहा छासि खाटी रे ।

—नळदवदंती रास

राटेस्वरी—स स्त्री —राठौडो की कुल देवी ।

उ०—चक्रेस्वरी बळैस्थांने **राटेस्वरी** तथा रट । पंखणी सस मात्रेण, नागणेची नमस्तुते । —पा. प्र.

राट्ठ—देखो 'राष्ट्र' (रू. भे)

राठ—स. पु —१ भाटी वश से निकली हुई एक मुसलमान जाति ।

उ०—१ केलण भाटी रा बेटा दोय धीरो १, खुमाण २, मुसलमान हुवा ज्यांरा वस रा राठ । —बा. दा. ख्यात

उ०—२ जग खोसिय कोलिय मीर जता । सिर बध सराहिय **राठ** छता । —पा. प्र.

२ एक प्राचीन राजवंश ।

३ एक प्रकार का मजबूत पौधा ।

राठउड—देखो 'राठौड़' (रू. भे)

उ०—मडळीका मोटा कुळि मउडां, रसणि सुवाणि प्रीति **राठउडां** । —रा. ज. सी.

राठरीठ—स. स्त्री —१ शस्त्र प्रहार ।

उ० खतगै कुराट भाट **राठरीठ** बगै खगै, जगै पाठ प्रेतकाळी अनाठ जुग्राण । सतारा हजार आठ लौहलाठ आया सजै, ['रासा'] रा तीन सै साठ नीमजै आरांण । —पहाड़ख्या आढौ

२ शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।

रू० भे० राठारीठ

राठवड़, राठवड—देखो 'राठौड' (रू. भे.)

उ०—१ निजर परक्खै **राठवड़**, अकबर तेज दिवाद । जांणौ व्योम विमाण, सम, भोम प्रगट्यौ इंद । —रा. रू.

उ०—२ जैवद हुवौ दळ पागळौ, असी लाख साहण सधर । छत्तीस वस राजनकुळी, वडौ वंस **राठवड** धर । —रा. वशावली

राठारीठ—देखो 'राठरीठ' (रू. भे.)

उ०—कैवांण पीछटै सुरस नाह नुवड़ै कड़ा, दैव चाव खड़ा सुर खुलै सीदा दीठ । खडै धाड़ तोड चापौ मारणौ नहीं छौ बीना खून । गैघडा वदारणौ छौ उडै **राठारीठ** ।

—ठा. जैतसिंह आउवे री गीत

राठासण, राठासेण—सं. स्त्री. [स. राष्ट्रश्येना] राठौड़ों की कुलदेवी ।

उ० – बापा नूं रिखीस्वर आग्या दी, ते म्हारी घणी सेवा करी । म्है तौनूं मेवाड़ री राज महादेवजी देवीजी प्रसन्न कर दिरायौ छै । इण ठौड एकलिंग प्रकट हुवा छै । और देवी **राठासण** छै, तिण री तूं घणी सेवा करजै । —नैणसी

राठोड़—देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

उ०—रिण **राठोड़ां** आधिग्रा, भाटी अंग अभग । इळ छळ झल्लै ऊठिया, घल्ले बाथ निहंग । —रा. रू.

राठोड़ी—वि.—देखो 'राठौड़ी' (रू. भे.)

उ०—जला जी मारू, राजां मांयलौ राज भलौ **राठोड़ी** हौ मिरगा-नैणी रा जलाल । —लो. गी.

राठौ—स. पु.—रीढ की हड्डी ।

उ०—तरै मास १० पुरण हुवा । तरै राजा री वासे सुं **राठौ** फाडनै बालक काढीयौ ने पाटौ बांध्यौ । —रा. वं. वि.

राठौड़–स. पु. [स. राष्ट्रवर] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राज-वश, जिनका मूल राज्य दक्षिण मे था और वहा से गुजरात, काठियावाड़, राजपूताना, मालवा, मध्य प्रदेश, गया, बदायू आदि में इनके कई स्वतन्त्र राज्य स्थापित हुए। इस वश की व्युत्पत्ति के विषय में काफी बड़ा मतान्तर है। प्राचीन शिला लेखो एव वशावलियों के आधार पर कुछ विद्वान इन्हे रामचन्द्र के द्वितीय पुत्र कुश के वंशज अर्थात् सूर्यवशी मानते है, परन्तु कुछ विद्वान "रट्ट" यदुवशी से इनकी व्युत्पत्ति मान कर इनको चद्रवशी मानते है। चन्द्रकला नगरी के राजा यवनसुत की रीढ से बालक मानधाता की उत्पत्ति एव उसके वशज राठौड कहलाने की एक प्रतीकात्मक कथा भी सर्व प्रचलित है।

उ०—**राठौड़ां** पण झल्लियौ, नृप 'अगजीत' निमत्त।
सुण तहवर उर छीजियौ, अत खीजियौ दुरत्त। —रा लो

२ उक्त वंश का व्यक्ति।

रू० भे०—रट्ठवड, रट्ठवर, रट्ठोड, रट्ठोर, रट्ठौड, रट्ठौर, रठवड़, रठौर, राअठोड़, राइठौड़, राठउड, राठवड, राठवड, राठोड, राठौर।

राठौड़वै–सं. पु. [सं. राष्ट्रवरपति] राठौड़ वश का राजा।

उ०—सुख जिके इद्र भुगतै सरगि, जिकै सुक्ख स्रव भोगवै।
अवतार वीर राजा इसौ, 'गजपति' **राठौड़वै**। —गु रू. ब.

राठौड़ी–वि.—राठोडो का, राठौडो सवधी।

उ०—बनी ए थारी राठौडी धरती म्हारा चलता घुडला हारचा —रा. ले.

स स्त्री.—१ साफा बाधने का ढंग विशेष।

उ०—रग-रंग री पोसाखा इनायत करै छै, नै माता घोडा उडण ताजी ऊपर भीण करावै छै। **राठौड़ी** बध बधावै छै ऊपर बाला बंदी तुररा सिर पेच बधीजै छै। —पना

२. राठौड़ो की हुकूमत या सत्ता।

मुहा०—राठौडी चलाणी=अपनी इच्छानुसार कार्य करना या करवाना, रोब गालिब करना।

रू. भे. राठोड़ी

राठौर–देखो 'राठौड़' (रू. भे.)

राढ़, राढा–स. स्त्री.—१ जिद्द, हठ।

२ शोभा, छबि। (ना. मा., ह. ना. मा.)

राढामणि, राढामणी–स. स्त्री—काच की मणि।

राढ़ाळी–वि. हठीली, जिद्दिली।

स. स्त्री.—१ लड़ाई, झगडा, युद्ध।

उ०—बाढाळी बहताह, **राढाली** अम्मक रुडै। साढाळी सहताह, डाढाळी ऊपर करै।

—महाराज बखतावरसिह (अलवर)

२ सकट।

रातंक—देखो 'रातग' (रू. भे.)

उ०—छोह छक **रातक** थका छावता, गुमर वगडावता रूपगाढै।
घमोडा तडा अवरी घडा धावता, चमू सगतावता नूर चाढै।

—माधोसिंह सक्तावत रौ गीत

रातंखियौ—देखो 'रातांखियौ' (रू. भे.)

रातंखी–स. स्त्री —१ चील रूपधारी देवी।

उ०—अइयौ सगति अनत, प्रगट किया सारी प्रथी।
मुदराळो मैमत **रातखी** तू हीज रिधू। —मा. वचनिका

२ देखो 'रातग'

रातंग–स. पु.—१ गिद्ध।

उ०—थम जगा बोम बाट जोडतौ **रातंगां** थाट। तोड़तौ मातगा घाट रोड़तौ त्रांबाट। —हुकमीचद खिडियौ

२ चील।

३ लाल चोच वाला मांसाहारी पक्षी।

रातंब, रातंबर—देखो 'रकतंबर' (रू. भे) (ना. डि. को, ना. मा.)

उ०—१ तेरह लोह अंग **रातंबर**, पह आणै अग्र सेत पटाम्बर।
पोहचि तठै सिक्का पौढाणै। इम पण पूर भरथ अग्र आणै। —सू. प्र.

उ०—२ घण भेरी धरहर हुई सिंधु सुर ढूका कुजर कोट ढहै।
गीधणिया गह हुबर छायौ अबर, रथ **रातंबर** तारणि रहै। —गु. रू. बं.

उ०—३ इंद लौक ऐरापति खेध करै खळ गोडवि आणै गेह।
सपतास **रातंबर** साजि असंमर रोहडळ धारेह। —मा. वचनिका

रातंबरी–वि. [सं. रक्त+अंबर] रक्त वर्णकी, लाल।

उ०—रोळसी खळदळा चखा **रातंबरी**।
कळायां मरू त्या जसौ गज केहरी। —हा. झा.

रातंमर—देखो 'रकतंबर' (रू भे)

उ०—यम देवाळय मध्य दीन जुहे दहुं सम्मर।
आलबाल भरि स्रोन भई प्रतिमा **रातंबर**। —ला. रा.

रात—सं. स्त्री. [स. रात्रि] सायंकाल से प्रातः काल तक का समय रात्रि, निशा, रजनी। (डिं. को.)

उ०—१ **रात** दिवस होवै मन राजी, निरख पराई नारी।
पढण पढावण मोसर पायौ, चूक गयौ विभचारी। —ऊ. का.

उ०—२ **रात** ढलनै लागी, जद मा'राजा घम में बड्या। फूसी बिया नै घणा उदास अर मूढौ उतारचां जोया। —दसदोख

रू. भे.—रति, रती रत्त, रत्ति, राति, राती, रातु, रातू।
अल्पा —रतिया, रत्तडी, रातड, रातडली, रातडी, रातडि, रातडी।

रातउ–स. पु.—१ एक वस्त्र विशेष।

उ०—बहूमूलं घूणोलिय मीणीय कालं फूटडउ **रातउं** फूटडउं सूपउती मेघावली मेघडबर पद्मावलि पद्मोत्तर इत्यादि वस्त्रांणि ।
—व स.

२ देखो 'रातौ' (रू. भे.)

उ०—भणइ कोस साचउ कियउ, नवलइ राचइ लोउ ।
मूं मिल्हिवि संजम सिरिहि, जउ **रातउ**, मुणिराउ ।
—जिनपद्म सूरि

रातकडाहउं—स पु.— एक प्रकार का वस्त्र ।

उ० —कणवीर सौवन्नच्छलेउं मनेत्र नीलउं नेत्र **रातकडाहउं** वइं-गणीउ कल्ही गुरूडसन्नाह·········
—व स.

रातड़—स. स्त्री.—१ लालिमा, ललाई ।

उ०—असुभ सुकन अंब रे, दाह दिन दिग **रातड़** दीसै ।
—मा. वचनिका

२ देखो 'रात' (अल्पा., रू. भे.)

रातड़ली—देखो 'रात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कहां **बसियौ** कान्हा **रातड़ली** ।
अरे तेरे मुख बिच आखे मोहे बासडली ।
—मीरां

रातड़ामुखां—वि.—लाल मुह वाली/वाला, रक्त-मुखी ।

उ०—आपणै गात काय अरि कमळ ऊपरा ।
चापडै **रातड़ा मुखां** आमिख चरा ।
—हा. झा.

रातड़ियौ—स. पु —१ एक असुर का नाम ।

उ०—रमते डूंगरराय, अंग बाखळौ उबारे ।
रमतै डूंगरराय, मेक **रातड़ियौ** मारे । —ठा. केसरीसिंह मनाणा

२ गिद्ध ।

३ देखो 'रातौ' (अल्पा., रू. भे.)

रातड़ी देखो 'रात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ **रातड़ी** सवाई हो रामजी बहि गई, पल पल छीजै गात ।
करणां सुणि करणामइ, महलि पधारौ हो नाथ । —ह. पु. वा.

उ०—२ एहौ उजळी **रातड़ी**, किण दुसमण दी बाळ ।
पडी जळूं मैं भवन मे. प्रीतम बिन बेहाल ।
—जलाल बूबना री बात

उ०—३ तारा तौ छाई ढोला **रातड़ी** रे कोई फुलडा तो छाई ढोला सेज ।
—लो. गी.

रातड़ौ—देखो 'रातौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ पाका बिंब मधु समा रे, ओपित विद्रुम जांण रे ।
मामोल्या जिम **रातडा** रे, अधर सुधारस खाण रे ।
—प. च. चौ.

उ०—२ ऊजळी धार पतसाह घड आछटै । मेलियौ **रातड़ौ** नीर 'मांनै' ।
—मानसिंह सक्तावत री गीत

रातजगण—सं. पु —१ कुत्ता, श्वान । (अ. मा.)

२ रात्रि को जगने की क्रिया या भाव ।

रातजागौ—देखो 'रातीजोगौ' (रू. भे.)

रातडि, रातडी—देखो 'रात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ काजळ मांहि काळिमा, रगति **रातडि** जेम । सुणि प्रीऊडा तिम माहरइ, पंजरि पसरिउ प्रेम ।
—मा. कां. प्र.

उ०—२ का रे काली **रातड़ी**, थिर रही थांनक जोय । अम्हनइ तूं आणइ, समइ सिउ संकरनी होय ।
—मा. का. प्र.

रातणौ, रातबौ—देखो 'राचणौ, राचबौ' (रू. भे.)

उ०—पहले हम सब कुछ किया, भरम करम संसार । दादू अनुभव उपजी, **रातै** सिरजन हार ।
—दादूबांणी

रातदिन—सं. पु. [सं रात्रिंदिव, रात्रिदिवा] १ चौबीस घंटोंका समय या समय की अवधि जिसमें, रात-दिन पूरे व्यतीत होते है ।

२ प्रति-दिन, नित्य ।

रातब—देखो 'रातिब' (रू. भे.)

उ०—१ सगळा घोड़ां नूं रातब दिराय ताजा किया ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ नाडी आया नेह भरिया, जठै अलायदी जायगां देख नै अमल पांणी करण नै उतरीया । जठै घोडा नै तौ **रातब** की पीडियां खुवाय नै कायजै कीया ।
—पनां

रातमिण—सं. पु. [सं. रात्रि+मणि] चन्द्रमा ।

रातमुख, रातमुखौ—स. पु. [सं. रक्तमुख] मुसलमान, यवन ।

उ०—धर धुजवी धरा पुड धुवतै, धरट घाय घण घेरविया ।
रातमुखा गोहूं अर रांणौ, आवध धारै ओरविया ।
—महारांणा खेतसिंह रौ गीत

वि.—लाल मुख वाला, रक्तमुखी ।

रातरतन—सं पु. [सं. रात्रि+रतन] चन्द्रमा, शशि । (डिं. को.)

रातरली—देखो 'रात'

उ०—कहा बसियौ कांन्हा **रातरली** । अरे तेरे मुख बिच आवै मोहै वासरली ।
—मीरां

रातरांणी—स.स्त्री. १ एक पौधा विशेष जिसके फूल रात्रि में सुगंध देते हैं ।

उ०—चंपौ, कैवड़ौ, केतकी, मोगरौ, जुई, कंवळ, गुलाब, **रातरांणी** कणेर, गुलमोर·········
—फुलवाडी

२ उक्त पौधे के फूलों का बना इत्र ।

रातराजा—सं. पु.—रात्रि का राजा उल्लू-पक्षी ।

उ०—बिग्रह-बाजा पर वढर, करता जग काजाह । रा जाता राजा

न रहू, रह्या **रातराजाह**। —खेतसिंह

रातरी—देखो 'रात्रि' (रू. भे.)

रातरोळौ—स. पु. रात्रि का आक्रमण, रात्रि का झगडा।

रातळ, रातल—सं. स्त्री.—१ गिद्ध, गिद्धनी।

उ०—१ केत्री भूप रायसिंघ कोपीवै। जुड खागा मुह कीध जुवा। **रातळ** सुरंग हुई भखती रत। हाली भाखर सुरंग हुवा। —द. दा

उ०—२ परि सौक भौक **रातळ** अपार। वजि सौक काळ चक्र विखमवार। —सू. प्र.

२ मादा ऊंट।

रू. भे.—रातल्ल,

रातळौ—वि. १ लाल रग का।

२ क्रुद्ध, क्रोधित।

स. पु.—ऊंट।

रातल्ल—देखो 'रातळ' (रू भे.)

उ०—रुंड मुड **रातल्ल**, पिंड सत खड परक्खै। गूड सार गळ भरै, छडि पळ लोयण भक्खै। —रा. रू.

रातवासी—वि —१ रात्रि विश्राम करने वाला।

२ केवल रात्रि में ही रहने वाला, रात तक ही ठहरने वाला।

स. पु—रात्रि का विश्राम।

उ०—अर दोनू एकै पीजरै मे घातिया। पीछै **रातवासी** भेळा रया। अरु प्रात रै बखत सैहर में वेचण आयौ। —द दा.

रातवासौ, रातवाह, रातवाहौ—देखो 'रातीवासौ (रू. भे) (डि को)

उ०—१ म्हैं कठै आगा छा, याद करिस्यौ जद ही **रातवासै** आप कनै देखस्यौ। —मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ म्हे तौ आछी तरै सूं ओळख लियौ पण अठै कोई सराय है काई, जो **रातवासौ** लेवणौ है। —रातवासौ

उ०—३ धरमसाळ रौ सवार-सिझ्या फूस वाइदौ काढै। मारग चालता बटावू निसक **रातवासौ** लेवता। —फुलवाड़ी

रातविरात—स. पु.—रात्रि का समय।

रातांखियौ—वि. स. पु. (स्त्री रातंखी, रातांखी) आरक्त नेत्रबाला, लाल नेत्र वाला, सिह, शेर।

उ०—तूटियो, प्रधाप वेग, होफरेल **रातांखियो**, सांप पाखियो क धाप डांखियौ संठीर। ताप खाई मैंगळा अळा हूं, अमाप तेज, कुमारां सिंगार आप बुलायौ कंठीर—प्रतापसिंह राठौड रौ गीत

रू. भे.—रातखियौ

रातादेई—वि. सी.—माता के लिए प्रयुक्त होने वाला विशेषण शब्द।

उ०—१ जळ हर जामी बाबौ मांगौ, **रातादेई** माय। कांन्ह कंवर सौ वीरौ मागा, राईसी भोजाई। —लो. गी.

उ०—२ चुडलौ चितरा दे, ए हां ए म्हारी **रातादेई** माय। आइ ए सावणिया री तीज, बाई पहरसी। —लो गी.

रातापात—सं. स्त्री [स. रक्तपत्र] रगशाल नाम पौधा विशेष।

रातिंदौ—देखो 'रातींधौ' (रू. भे.)

उ०—ज्यानै परखिया तीन सौनार रात रा **रातिंदौ** नै दिन रा दीसै ई नी। —फुलवाड़ी

राति—देखो 'रात' (रू. भे.) (ना मा)

उ०—१ **राति** विढियौ इसी भाति नरवै रयण, सम-समी मार देतो सबांही। —किसनौ आढौ

उ०—२ राति दिवस जे जायइं छइ, पाछा नावइ तेहौ जी। खिण खिण त्रूटइं आउखुं, खीण पडइ बलि देहौ जी। —स कु.

देखो 'राती' (रू. भे.)

रातिचर सं. पु [सं. रात्रि+चर] निशाचर, राक्षस।

रातिजागर देखो 'रातीजागर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रातिब—स पु [अ.]१ घोडे, कुत्ते आदि पालतू पशुओं को नियमित खिलाया जाने वाला पौष्टिक खाद्य पदार्थ जो चारे से अतिरिक्त होता है।

उ०—१ ताहरा नरबद जी वैहलिया २ मोल लिया। सौ वैहल जोडने नित फेरै, भूय चाढै **रातिब** दै। —नैणसी

उ०—२ ऊदै रै चढणनू काछिण घोड़ी हुती। तिरैनू **रातिब** अणायौ जवा रौ आटौ अर गुळ दीनौ। —ऊदै उगमणावत री बात

२ पौष्टिक खाद्य पदार्थ की नियमित ली जाने वाली खुराक

३ मास।

रू भे —रातब,

रातिबबंध—स. पु.—पौष्टिक भोजन की प्रतिदिन की खुराक।

उ०—तार रहित मघइ पत्र ताजा। **रातिबबंध** भखै नित राजा। —सू. प्र.

रातिवास, रातिवासौ, रातिवाहि, रातिवाहौ—देखो 'रातीवासौ' (रू. भे.)

उ०—१ यु वात चीत करतां **रातिवास** लीयौ हर दौड़ आय रही तदि दोनु पोढि रह्या। —ढो. मा.

उ०—२ गोधूळक समै परणीया। **रातिवासै** पोढीया। प्रभाते सुखपाळ मैं बैसाण नै गढ जालोर ले आया। —वीरमदे सोनगरै री बात

उ०—३ तद श्री मांताजी री आग्या हुई तूं **रातिवाहौ** देय म्हे थारी मदद छां। —ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—४ हेरा करै डेरा हणौ, **रातिवाहै** राजो रे। मुगल घणा तिहां मारिया, सबल लूटाणा साजौ रे। —प. च. चौ.

उ०—५ रातिवाहि विढिया खान राउ, घण घाइ मेछ मन्नावि घाउ । —रा. ज. सी.

रातींदौ, रातींधौ—सं. पु. [स. रात्रि+अंध] एक प्रकार का नेत्र रोग जिसमे रोगी को सूर्यास्त के वाद दिखना बंद हो जाता है अथवा धूधला दिखाई देता है (अमरत)

रू. भे.—'रातिदौ'

राती—वि. स्त्री —१ लाल ।

उ०—१ **राती** कानी री पोतडिया रूडी । ऊनी लोवडिया वगला मे ऊडी । —ऊ. का.

उ०—२ नाणौ वैसे वीड नहं, उलझै लेखौ ग्रत्थ । **राती** पाघडिया तणा सुलझावण समरत्थ । —बा. दा.

उ०—३ स्त्री स्वभाव लाडणउ, साड त्राडणउ कुमित्र फाडणउ, दुरजन दुस्ट स्वजन सिस्ट आगि ताती, वाहु **राती** । —व. स.

उ०—४ स्यॉम सनेसो कबहु न दीनौ, जांन बूझ गुझ बाती । ऊची चढ चढ पंथ निहारूं, रोय रोय अंखिया **राती** हो । —मीरा

२ रगी हुई, रजित ।

उ०—१ भर यौवन मा माती, पिण जैन धरम री **राती** । न सकै देखि मिथ्याती, जिणै दूर कीया कुरापाती । —वि. कु.

उ०—२ सखी री मे तो गिरधर के रग **राती** । पचरग मेरा चोळा रंगा दे, मै झुरमुट खेलन जाती । —मीरा

३ अनुरक्त, आशक्त ।

उ०—१ मन मोहन सुदरि माती रे, रहै पंथ भरतारै **राती** रे । सखरी पहिरै ते साडी रे, तौ पिण सहु अंगै उघाड़ी रे । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ पीव मिल्या जीऊं खरी रे, नातर तजिहुं देह । दासी मीरा राम **राती**, हरि बिन किसौ सनेह । —मीरा

४ मस्त, मग्न ।

उ०—१ ओलै बैठी एकली, करै सगलाई कामौ रे । **राती** रस भीनी रहै, छोडै नही निज ठामौ रे । —ध. व ग्रं.

उ०—२ नारी मिरगा नयन, रंग रेखा रस **राती** । वदै सुकोमल वयण, महा भर यौवन माती । —वि. कु.

५ क्रुद्ध, क्रोधित ।

रू. भे.—राति,

६ देखो 'रातं' (रू. भे.) उ०—१ भई कस्ठी यांमा, व्यसन मन भांमा स्रुत भरै । महा **राती** मारे अतन तन जारें नहं मरे । —ऊ. का.

उ०—२ **राती** महल पोढ़ण गयौ । ओळगुवा नै हुकम हुवौ । चारि पहर रात झरौखै उलंगिया । परभात लाख एक रौ इनांम हुवौ । —पलक परियाव री बात

रातीचांवी—स. स्त्री.— लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी विशेष ।

रातीचोळ—वि.— लाल सुर्ख ।

उ०—इंदर भगवान परियां रौ नाच जोवण सारू हीरा-मोती जडचा सिघासण माथै बिराज्या हा नसा में धताधत । आंख्या **राती-चोळ** । —फुलवाडी

रातीजगइ, रातीजगौ—देखो 'रातीजोगौ' (रू. भे.)

उ —१ माल पहिरण अवसरि आणी मन उछरंग, घर सारू खरचइ धन बहु भंगि । **रातीजगइ** आपइ ताजा तुरत तंबोल, गीत गान गवावइ पावइ अति रंग रोल । —रा. कु.

उ०—२ जोतकी टीपणै में गिरै-गोचर संभाळै, कोत्तकी धूप खेंवता थका जोत करै । जागण-जम्मारा, अर **रातीजगां** रा सै नेगचार हुवै —दसदोख

रातीजवार—सं. स्त्री.—लाल रंग की जवार । एक अन्न विशेष ।

रातीजागर—सं. पु. [सं रात्रि+जागरः] कुत्ता, श्वान । (अ मा.)

रातीजागौ, रातीजुगौ, रातीजोगौ—सं. पु. [सं. रात्रि+जागरणम्]

१ ईश्वर, देवि-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए, देवालय या उनकी मूर्ति के सम्मुख बैठकर, किया जाने वाला रात्रि- जागरन, जिसमे उनकी स्तुति, प्रार्थनाएं तथा भजन-कीर्त्तन किया जाता है ।

उ०—रूडी विधि कीधा **रातीजुगा**, साहमीवच्छल सारौजी । पटकूलै कीधी पहिरावणी, सहु संघने स्त्रीकारी जी । —ध. व. ग्रं.

२ विवाहादि उत्सवों पर औरतों द्वारा मागलिक गीत गाते हुऐ किया जाने वाला रात्रि-जागरन ।

उ०—१ माल पहरण अवसर आणीमन उछरग, घर सारू खरचे धन वहुभंग । अति उछव कीजै **रातीजोगौ** दिलखोल, गीत गान गवावै पावै अति रंग रोल । —बृ. स्त.

उ०—२ गोरण निस गौरा री रात परणीजण रै वासै घरै जावै वा तौ **रातीजुगा** री नै परणीजण रै दूसरा दिन री रातगौरा री सौ गौरा री रात सुता म्हारै विणारा रौ सभ्रआं लारै चढण नें वाहर रौ ढोल वाजियौ । —वी स. टी.

रू. भे.—रतजगौ, रातजग, रातजगौ ।

रातीबासौ, रातीबाहौ—देखो 'रातीवासौ' (रू. भे.)

उ०—१ **रातीबासै** री माती रंभाती, जाया गोपा सै जाती जंभाती —ऊ. का.

उ०—२ पछै राठौड़ कीलांणदास रायमलोत **रातीबाहो** मांणस ५० तथा ६० सुं दीयौ —नैणसी

रातीभाजी—सं. स्त्री.—मांस ।

रातिवाहु, रातीवाय, रातीवास, रातीवासौ, रातीवाहु, रातीवाहि, रातीवाहौ—सं. पु.—[सं. रात्रि+वस=आच्छादने+घञ=रात्रिवास, सं. रात्रि+वा=आघात, प्रहार] १ रात्रि को किया जाने वाला आक्रमण या हमला ।

उ०—१ दीधी मीम्न पातसाह इ घणी फौज करेज्यौ आपापणी। वचन दीउ जालउरइ राय, कटक न आवइ **रातीवाय** —का दे. प्र.

उ०—२ परबतसिंघ देवडौ मेहाजळोत राव कला री भाई कल्याण दासजी **रातीवासौ** दियौ जद मारागौ। —बा. दा. ख्यात

उ०—३ एक खाति पूरवउ अम्हारी, कटक चिहुं दिसि जोस्यूं। मनजांणिम्यु वरासु वीतु, **रातीवाहु** देम्यू। —कां. दे. प्र

उ०—४ ताहरां रात पोहर १ गई. ताहरां इया ठाकुरा **रातीवाहौ** दियौ। ताहरां हेमै सीमाळोत जाइ पैहली तोडि कनात, भांज थाभौ, अर मुगल नूं घाव कियौ। मारनै माथै री कुलह लीधी। —नैणसी

उ०—५ तद जोधपुर रा विगाड कूंपेजी कीया। घणां गाव मारिया। घणै थाणै भूंबिया। कटका नु **रातीवाह** दीया। —राव मालदेवजी री बात

[सं. रात्रि+वस=निवासनै] २ रात्रि को किया जाने वाला विश्राम, पड़ाव, निवास।

रू. भे.—रतियाव, रतिवाउ, रतिवास, रतिवासौ, रतिवाह, रतिवाहौ,, रातवासौ, रातवाह, रातवाहौ, रातिवास, रातिवासौ, रातिवाहौ, रातीवासौ, रातीवाहौ।

रातु, रातूं—१ देखो 'रातौ' (रू. भे.)

उ०—जेह ना, गुण जेह नइ हुई इ वसइ, ते देखी तेह ना नयण हसइ। जे ऊपरि प्राणी **रातु** घणउ, नाम मेल्हइ कहु किम तेह तणउ —नळदवदती रास

२ देखो 'रात' (रू भे.)

उ०—१ **रातूं** दे रोडा लूला खोडा. दुखियारा दीसदा है। झोळी झडकावै पोळी पावै, टोळी सूं टाळ दा। —ऊ. का.

रातूलौ—वि. (स्त्री: रातूली) रक्तवर्ण, लाल।

उ०—पीलौ तौ ओढ सूरज नी पूज्यौ। **रातूलौ** ओढ जळवा नी पूजी ए माता राणकदे। —लो गी.

रातेंरींगै—वि.—क्रोधित।

उ०—सुळ-सुळ सरु हुई। लोगा कांना फूसी करी वात वीन रै बाप कनै गई। 'फूं फा मांणसियौ गिंधावै'। सगौ **रातेंरींगै** आयग्यौ।

रातोंरात—देखो 'रातोरात' (रू. भे)

उ०—तद सारा अमराव भेळा होय राजा नू काढियौ सो सौ असवारां सू **रातोंरात** देसणोक स्री माताजी रा पावां आइयौ। —मारवाड रा अमरावां री वारता

रातोकोट—स. पु.—जेसलमेर जिलान्तर्गत पोकरण, ग्राम का कोट, किला, गढ।

रातोड़—स. स्त्री.—१ ललाई, लालिमा।

उ०—उण री आख्यां में जोयौ। हाल रीस अर **रातोड़** मिटी नीं ही। आख्यां थोड़ी सूज्योड़ी दीसी। —फुलवाड़ी

२ किसी दर्द या फोडे के स्थान की ललाई।

रातोचंदण—स पु [स रक्त+चदन] लाल चदन।

वि.—रक्तवर्ण लाल। * (डि को.)

रातोदुरंग—देखो 'रातोकोट'

रातोबंब—वि —गहरा लाल, रक्ताभ।

रातोमातौ—वि.—हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा, मोटा ताजा।

रातोरात—क्रि. वि.—रात ही रात मे रात के रहते-रहते।

उ०—१ जठै हणै कोट छै तठै आया। अठै खुडिगै री उनाव हुतो सु अठै आय **रातो-रात** सूता। —नैणसी

उ०—२ ताहरा इयै कही कुवर तौ रातै मूवौ। सु **रातोरात** राकस उटाय ले गया। —चौबोली

रू भे.—रातोंरात, रात्यूंरात,

रातौ—वि. [स रक्त, प्रा रत्त] (स्त्री राती) १ रक्तवर्ण, लाल, सुर्ख।

उ०—१ जळजाळ स्रवति जळ काजळ ऊजळ, पीळा हेक **राता** पहल। आधौ-फरै मेघ ऊधसता, महाराज राजै महल। —वेलि

उ०—२ बीछुड़तां ई सज्जणा, **राता** किया रतन्न। वारा विहु चिहुं नाखिया, आसू मोती-व्रन्न। —ढो. मा.

उ०—३ बाळ-कन्हैया नै अजाण ई थोड़ी घणी रीस आयगी। मूंडो **रातौ** व्हैगौ। —फुलवाडी

२ रगा हुआ, रजित।

उ०—दादू विसय विकार सौं, जब लग मन **राता**। तब लग चित न आवही, त्रिभुवन पति दाता। —दादूबांणी

३ लाल रंग से रगा हुआ।

उ०—अति घणु **राता** हो चीर न पहिरिवा, न करूं कइयै स्नान। वलि न विछाउं हो फूलनी सेजडी, न लहुं केह मान। —वि. कु.

४ आशक्त, अनुरक्त।

उ०—१ अगा एक राग रंग **राता**, प्रांण गयौ सुण रीझिये। —स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ दादू **राता** राम का, पीवै प्रेम अघाइ। मतवाळा दीदार का, मागै मुक्ति बलाइ। —दादूबांणी

५ तल्लीन, मग्न।

उ०—१ मद का माता मद पीयै, सौ मदवा नही जांनि। हरीया **राता** रांम रस, मन मतवाळा मानि। —अनुभववाणी

उ०—२ रांम भजन सूं **राता**, महत भाग जे मांन। ज्या सारीखौ जग मे, उत्तम न जांणौ आन। —र. ज. प्र.

उ०—३ **राता** तत चितारत चितारत, गिरि कंदरि घरि विन्हे गए। निद्रावस जग एहु महानिसि, जामिए कांमिए जागरण। —बेलि

६ उन्मत्त, मदमस्त ।

उ०—१ रातौ भूझ विखम बच रोडै, जबर इसौ कुण जोमंड । मौ ऊभा संकर चौ कोमंड, तांण भीच किण तोडै । —र. रू.

७ प्रसन्न, खुश ।

उ०—तीरथ वरत सब मांड उली, तहां चालै जांहि । झूंठ सूं संसार राता, साच देखै नांहि । —ह पु. वा.

८ उलझा हुआ, फसा हुआ, संलग्न ।

उ०—१ समझि नहिं काइ निज धध रातौ रहैं, एह अग्यान मिथ्यात पंचम कहै । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ परपंच रातौ प्राणियौ, हरि सू नाहि हेत । पर वसि पड्यौ विगूचसी, अब सू चेत अचेत । —ह. पु. वां.

स. पु [सं. रक्त] रक्त, खून

उ०—दुस्ट सहज समुदाय, गुण छोडै अवगुण गहै । जोख चढी कुच जाय, रातौ पीवै राजिया । —अग्यात

रू. भे.— रतौ, रत्त, रत्तउ, रत्तौ, रातउ, रातु, रातू ।

अल्पा.—रतडउ, रत्तड़ौ रत्तडउ, रातडियौ, रातडौ ।

रातौदीह—देखो 'रातदिन' (रू. भे.)

उ०—जैनू जीहा रातौदीहा जी जंपौ । कातौ थे कीनासा हूंता ही कंपौ । —र ज प्र.

रात्य—देखो 'रात्रि' (रू. भे.)

रात्यूं—क्रि. वि.—१ रात मे ।

उ०—१ जलाजी मारू. रात्यूं घण री पेटड़लौ भल दूख्यौ हो मिरगानैणी रा जलाल । —लो. गी.

उ०—२ ठाकर ठाला ठोठ, ठकराणी गिरवर जिसी । करै विभै रा कोट, रात्यूं सूता राजिया —किरपारांम

२ देखो 'रात्रि' (रू. भे)

रात्यूंरात—देखो 'रातोरात' (रू. भे.)

उ०—बापड़ी बूढी डोकरी मोथां सू पकडयोडी घणी रोई अर बेहोस हुयगी । पण धन रा धायोड़ा गधेड कैवै-तेनर आवै अर फरैब करै है । सगळै डाम धाल देवौ अर रात्यूंरात इयै रै घरा नाख आवौ । —दसदोख

रात्रि—सं. स्त्री. [सं] १ संध्या से प्रातः काल तक का समय, निशा, रजनी (डिं. को.)

उ०—विवाहादिक सुख री रात्रि छोटी लखावै अनें समी सांझ मनुख मूंया ते दुख री रात्रि घणी मोटी लखावै । —भि. द्र.

२ रात की अधिष्ठात्री एक देवी ।

३ निराशापूर्ण अवस्था, या स्थिति (लाक्षणिक)

रू. भे.—रात्री ।

रात्रिकार—स. पु. [स.] चन्द्रमा, शशि ।

रात्रिचर—स. पु. [सं] राक्षस, निशाचर ।

उ०—छोडाव्या नर रात्रिचर स्यूं करि नै सबल लड़ाई । सांप्रत पांणी परगट कीधउ, सहु जांणै सुघडाई । —वि कु.

रू भे.—रात्रैचर,

रात्रिज—सं. पु. [स.] तारा, नक्षत्र ।

रात्रिबळ—स. पु. [स रात्रिबल] निशाचर, राक्षस । (डिं को.)

रात्री—देखो 'रात्रि' (रू. भे) (ना. मा.)

उ०—स्वामीजी बोल्या—रात्री में लघु परठता हुस्यौ जद इण री दया किम रहै ? —भि. द्र.

रात्रैचर—देखो 'रात्रिचर' (रू. भे.)

उ०—ते रात्रैचर अति विटल विकल वदन विकराल । विखम वचन बोलतौ, रूठौ जाणि कराल । —वि. कु.

राद—स. पु.—किसी घाव या फोड़े से निकलने वाला गंदा पानी, जो कुछ पीला व गाढा होता है, पीव, मवाद ।

उ०—काली मासी अर भटियाणी रै दुख रौ ई कोई पार नी हौ । राद भरया तीना रा काळजा अग्टपौर कुळता, चभीका मेलता । —फुलवाड़ी

रू. भे.—राध, राधि, राध्य । मह०, रादरडौ, राधड़, राधौ,

रादनी—सं. स्त्री. [सं. ह्लादनी] १ बिजली, विद्युत । (ना. मा., ह. नां. मा.)

२ वज्र ।

रादरड़ौ—स. पु.—देखो 'राद' (मह., रू. भे.)

उ०—आज री बकबकी सारू थारी काळीं मासी नै माफ करज्यै । सित्तर बरसां रौ रादरड़ौ आज थोड़ौ सौ फूटने बारै आयौ । —फुलवाड़ी

रा'वारी—देखो 'राहदारी' (रू. भे.)

उ०— सारा है मुरधर इळ सारी, भूपां अंगरेजां मद भारी । आज 'वभूत' अवतारी, रैणव नोज भरै रा'वारी ।

रावौड़ौ—देखो 'राद' (मह., रू. भे.)

राध—सं. पु. [सं. राधः] १ वैशाख मास का एक नाम । (डिं को.)

२ ज्येष्ठ मास का नाम । (डिं. को.)

३ आम ।

४ देखो 'राद' (रू. भे.)

उ०—वैतरणी लोही राध नी, तिण रौ तीखौ नीर । तिण में डुबावै तेह ने, छिन छिन होय सरीर । —जयवांणी

राधड़—देखो 'राद' (मह., रू. भे.)

राधमास—स. पु.—वैशाख मास । (डिं. को.)

राधा-स. स्त्री. [स.] १ श्रीकृष्ण की एक सुविख्यात प्राण सखी जो वृषभानु गोप की कन्या थी।

उ०—बडा भड माधा **राधा** वद, नमैं पगि लागौ इद नरिंद।
—पी ग्र

वि, वि —पुराणो मे इसे गोलोकवासी श्रीकृष्ण की पत्नी भी माना है।

२ विष्णु की सृष्टि उपकारक पाच शक्तियों मे से एक।

३ अधिरथ सूत की पत्नी, जिसने कर्ण का पालन-पोषण किया था।

उ०—अतिरथि सारथि तहिं वसए राय तरगइ घरि सूत्तु। **राधा** नामिहिं तसु घररिग, करगु भरणूं तसु पुत्तु। —सालिभद्र सूरि

४ बिजली, विद्युत।

५ वैशाख मास की पूर्णिमा।

६ विशाखा नक्षत्र।

७ समृद्धि, सफलता।

८ विष्णुक्राता नामक एक लता।

९ आवला।

१० एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, तगण, मगण और यगण तथा एक गुरु होता है।

रू. भे.—राधाई, राधि, राधिका, राधे।

राधा अस्टमी, राधा आठम-स. स्त्री [सं. राधा+अष्ठमी] भाद्रपद शुक्ला अष्ठमी की तिथि जिस दिन राधा का जन्म होना माना जाता है।

रू. भे.—राधास्टमी।

राधाई—देखो 'राधा' (रू. भे.)

उ०—**राधाई** रुकमण और सतभामा, कुब्जा कांई (थारै) सग पटै। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, तुम सुमरा सू म्हांकौ सकट कटै।
—मीरा

राधाकांत-स पु. [स.] श्री कृष्ण।

राधाकुंड-स पु.—ब्रज में गोवर्धन पर्वत के निकट का एक सरोवर।

राधातनय-सं. पु. [स.] राजा कर्ण। (अ. मा., ह. ना. मा.)

राधारमण-स. पु. [स.] श्री कृष्ण।

उ०—मद सिलल तणा चाटा हियै नीलमणा, राजिया रुधर चाटा पदम राग। अडग पग मांड **राधा-रमण** उडायौ, नग समो विलंद मग विप गगन मग नाग। —बां दा.

राधावर-स पु. [स.] १ श्रीकृष्ण।

उ०—थारी छब प्यारी लागै राज, **राधावर** महाराज। रतन जटित सिर पेच कलगी, केसरिया सब साज। —मीरा

२ श्री विष्णु। (डिं. को.)

राधावलभ, राधावल्लभ—स पु [सं राधा] १ श्रीकृष्ण। (अ मा)

२ श्री विष्णु।

राधावल्लभी-स पु.—१ एक वैष्णवी सम्प्रदाय।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुगामी।

राधावेध, राधावेधु, राधावेधौ, राधावैधी-स पु.—१ अर्जुन।
(अ. मा, ह. ना. मा)

२ बहतर कलाओ मे से एक। (व. स)

३ लक्ष्य पर तीर आदि लगाने की किया या ढग।

उ०—१ **राधा** वेधु सु अरजुनि साधिउ, मनचीतिउ वरु लाडीय लाधउ। जा मेल्हि गलि अरजुन माल, दीसइ पाचह गलि समकाल।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ त्रिभुवन जय पताका लेवी. चलचक्रातरालि **राधावेध** करेवउ, जइव्रत मुद्रा संवेरउ। —व. स.

उ०—३ जिम वैस्वानर मध्य प्रवेस करी न सकइ, जिम **राधावेध** साधि न सकइ, जिम पाणी पोटल बाधी न सकइ, जिम वायनउ को घट भरी न सकीइ। - व. स.

रू. भे.—राहावेहु।

राधास्टमी—१ देखो 'राधाअस्टमी' (रू. भे.)

राधि—१ देखो 'राधा' (रू. रू)

२ देखो 'राद' (रू. भे.)

राधिका-स. स्त्री. [स] १ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १३ और ९ के विश्राम से २२ मात्राए होती हैं।

२ देखो 'राधा' (रू. भे)

उ०—**राधिका** क्रस्ण रास, व्रंदावन ब्रज विलास। गिनका गज अजामेल गीध, पद गाता। —उ. का.

राधेय-सं पु. [स.] १ राजा कर्ण का एक नामान्तर।

उ०—मांगणा निवाजै रीझां, **राधेय** तराजै माझी। क्रोधगी समाजै रूप धनजै क्रपाण। भूडडा आजान वाळौ बिराजै आथाण भूरौ, 'माधवेस' राजै बीजौ गनीमां मथाण। —किसनसिंह बारहट

२ अंगद।

राधौ—देखो 'राद' (मह., रू. भे)

उ०—पंचेंद्रिय काय माय रे फसियौ, उत्क्रस्टौ सात आठ भव वसियौ। पिंड असुच उदारिक लोही **राधौ**। —जयवाणी

राध्य—देखो 'राद' (रू. भे)

राप्ती, राप्तीनदी-स. स्त्री.—एक नदी जो धवलगिरि पर्वत की पश्चिमि ढाल से निकल कर करनाली की ओर होती हुई गोरखपुर जिले मे घाघरा नदी में जाकर मिल जाती है। (वीर विनोद)

राफ-सं. स्त्री.—१ मुह का वह भाग, स्थान या कोना, जहां दोनो होठ

मिलते है। होठों का परस्पर मिलने का संधि स्थान।

उ०—ब्याहरौ नावौ काना पड़ियौ, हाथ सू काच छूट र टुकड़ा हुयग्यौ। दलाल सामौ मूँढौ ढीलौ करचौ, राफां तिड़ाई जद ल्याळ चाल पड़ी। —दसदोख

२ फन।

उ०—नाग मंडळ मेवाड़ निरखतौ, कमधज गुरड फिरै कौवंख। कूँभकरन सिर सकै न काढै, ज्ञा डर राफ महाजद पंख। —बादर सूरौ

उ०—२ किंहि किंहि काली नाग ना, रानि ऊमटइ राफ। वनस्पति प्रज्वलि पडइ, तेह ना मुह नी बाफ। —मा. कां. प्र.

३ यवन, मुसलमान।

उ०—गढ गढ राफ राफ मेटै गह, रेण खत्री ध्रम लाज अरेस। पडर बेस नाद अण पीणग, सेस न आयौ 'पतौ' नरेस। —महाराणा प्रतापसिंह रौ गीत

राफजी—देखौ 'राफसी' (रू. भे)

उ०—चढै सेख चंदवळा, मुगल वर गोळज गोळा। रचै गोळ राफजी, सयद, पाठांण हरोळां। —सू. प्र

राफट-रोळ, राफटरोळियौ, राफटरोळीयौ, राफटरोळो—सं. पु.—गड़बड़ी, अव्यवस्था।

उ०—धरमराज रीस में पग पटकता कैवण लागा—अबै म्हें कांईं कैवूं अर कांईं नी कैवूं। बिना खातै-सुरग-नरक रौ न्याव कीकर करूं। थें तौ सगळौ राफट-रोळियौ कर दियौ - फुलवाडी

राफसी—सं पु.—एक मुसलमान या यवन जाति व इस जाति का व्यक्ति

उ०—रवद स्याम के रूम के, सुनी राफसी सोय। साह हुकम चौड़ै स्रवण, सुण सोचिया रुकोय। —रा. रू.

रू. भे.—राफजी।

राफौ—सं. पु.—१ ऊंटो का एक रोग। इसमें ऊट के किसी पैर के तलवे में सूजन आकर उसमें मवाद पड जाता है।

२ उक्त रोग से पीड़ित ऊट।

राब—सं स्त्री.—१ बाजरी, जवार या मक्की आदि के आटे को छाछ में पका कर बनाया जाने वाला एक पेय पदार्थ।

उ०—१ पहियां राब न पावही, पड़ौ बीज उण पौळ। ऊ फळसौ रहजो अडग, दूधा दहियां छौळ। —बा. दा.

उ०—२ नीत रीत सूमां नहीं सबाब। सूमा घरे सुगाळ, में रंधै रसोड़ै राब। —बां. दा.

२ आंच पर पका कर गाढा किया हुआ गन्ने का रस जो गुड़ से पतला व धीरे से गाढा होता है।

३ रबडी।

४ कोई गाढा पेय पदार्थ।

अल्पा., राबड़ी,

राबड़यौ, राबड़ियौ—सं. पु.—ओटा कर गाढा किया हुआ दूध।

उ०—सौ आछी खासी रोटी करै नै छाळी गाडर रा दूध है। राबड़यौ करै मांहै लोंग मिसरी घालै नै गुवाळ री मां हाथै जीमण मोकळै। —गाम रा धणी री वात

राबड़ियौ-खाटौ—स. पु. कढी नामक पेय शाक।

राबड़ी—देखो 'राब' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ नौ थाळा पीवै राबड़ी, ऐ सोळा रोटी खाय। वौ वर टाळी माता गोरल, म्हें थांने पूजण आय —लो. गी.

उ०—२ बापड़ी महिनौ भर राबड़ी पीवी जद कठैई जाय नै ठीक हुई। पण उण री गोरी चांमड़ी पर द्वारका री छापा रै ज्यू रावळी छापां रंयगी। —रातबासौ

रायंगण, रायंगणि, रायंगणी—देखो 'रायआंगण' (रू. भे.)

उ०—१ सउदागर खवास नूं पूछइ लइ तिण मन्न। दीसइ रायंगण मही, कुंवरी कंचन व्रन्न। —ढो. मा.

उ०—२ चाउडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायंगणि गया। जयवंता यादव वीहल्ल, नर निकुंभ गिरुया गोहिल्ल। —कां. दे. प्र.

उ०—३ हियडइ ताहरइ हे सखी! थण हरनुं थड वंक। अलग धरइ आलिंगता, रायंगणि जिम रंक। —मा. कां. प्र.

उ०—४ रायंगणी रांण कुंभक्रन रूठे, हाथे लहै हिंदुयेराव। कीदी राघव भली कटारी, दांतां सिरसी ऊपर डाव। —हरी सूर बारहठ

राय—स. पु. [स. राजा, प्रा. राआ] १ राजा, नृप। (डिं. को.)

उ०—१ यळ न अनड ऊवहै आंन का, नेणां दीसै सहै नवाय। यौ करतार आवियौ करता, मोटे रौ मेवाडौ राय। —महारांणा लाखा रौ गीत

उ०—२ रीझियौ अहं दसरत्थ राय। अवतार धरू इण ग्रेह आय। —सू. प्र.

उ०—३ आत्मा अस्थांन आतुर, विरह विखहर खाय। मन भया व्याकुळ कब मिळोगै, सकळ व्यापी राय। —ह. पु. बां.

उ०—४ कमलापति कैवल्य अति, चौद भुवननु राय। पणि ग्रेहनई पूजतु, मन्त्र तणा महिमाय। —मा. कां. प्र.

उ०—५ नयणह आगलि गयउ कुरंगु, राय चीति जां हूयउ विरंगु। —सालिभद्र सूरि

२ स्वामि, मालिक।

उ०—ओ३म नमस्ते चंडका चंद्रभाळ री नवीन आभा, छटा मणिमाळ री भुजाटां रही छाय। आरोहा लंकाळ री क सत्रां घू झाळ री आग, रमा रूप जयौ काछ पंचाळ री राय। —नवलजी लाळस

३ धन, द्रव्य।

उ०—सोदौ प्रथिन सुहाय ओ, दुझाळ, आय किम दाय। रूक लेय

घण राय दे, गढ ले कुछ न गमाय। —रैवतसिंह भाटी
४ राजा, महाराजा बड़े शासको द्वारा रईसो, श्रीमानों को दी जाने वाली एक उपाधि।
५ भाटी वश की एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)
६ कायस्थों का एक सम्बोधन या उपाधि।
७ बगाली कायस्थो का एक भेद।
८ दरार।
उ०—चित गयौ चहुं चालि दिस, एक पडी ग्रण राय। हरीया वाड़ी फूल ज्यु, लेग्यौ पौ'रा लुडाय। —ग्रनुभववाणी
[ग्र. राए] ९ सलाह, सम्मति, ग्रभिमत परामर्श।
१० विचार, ख्याल।
रू. भे.—राय,

रायग्रंगण, रायग्रंगणि, रायग्रंगणी, रायग्रांगण—स. पु. [स. राज+ग्रगन, ग्रगण] १ राजमहल का चौक, राजमहल का प्रागण।
उ०—१ तठा उपराति करि ने राजान सिलांमति ग्रनेक राग रग वधाई वाटिजै छै। **रायग्रंगण** घोलहरै गेहणी घणा मगळाचार गीत नाद खभाइची गावै छै। —रा. सा स.
उ०—२ लहि फतै भडाँ निजरा लियै, सभि नौवत नद तिण समै। ऊगतै भाग वाळक 'ग्रभौ' **रायग्रांगण** इण विध रमै। —सू. प्र
उ०—३ **रायग्रांगण** चौपड रमौ, महिला सरब सुदाह। रखमी 'वाकळ' राज रौ, चूडो ग्रमर सदाह। —पा प्र.
उ०—४ ताहरा जियै वहू रौ वारौ हुंतौ, सु मारग रोकि ऊभी। ज्यु हरदाम पाछली रात रौ बाहुडियौ, ताहरा कह्यौ-सासूजी! हरदास बाहुड़ौ छै। मासू पण ऊभी हुती। सु ऊपरा सू हरदास उतरियौ। सु **राय-ग्रांगण** माहै मारग। ताहरां **राय-ग्रांगण** मे हरदास ग्रायौ, ताहरा सेवैरी मा भीतर तेड़ायौ — नैणसी
रू. भे—रायंगण, रायंगणि, रायगणी, रायागण,

रायकवर - १ दुल्हा।
रू भे.—रायकवर, राइकुंग्रर, राइकुवर।
२ देखो राजकुमार' (रू. भे.)
उ०—**रायकुंवर** चढियौ पाडिये, सुपने पतरमे देख्यौ रे। गज जिम जिन धरम छोडने, ग्रौर धरम बिखेखौ रे। —जयवाणी
(स्त्री. रायकवरी)

रायकंवरी-सं. स्त्री.—१ दुल्हिन।
रू. भे.—रांयकवरी, राइकुग्ररि, राइकुवरि
२ देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)
उ०—प्रथम नेह भीनौ महाक्रोध भीनौ पछै, लाभ चमरी समर झोक लागै। **रायकंवरी** बरी जेण बागै रसिक, वरी घड कंवारी तेण बागै। —बा. दा.

रायकन्ना—देखो 'राजकन्या' (रू भे.)

रायकुंवरी—देखो 'राजकुमारी' (रू. भे.)

रायकूंग्रर, रायकूंयर—१ देखो 'राजकुमार' (रू. भे)
उ०—गुरु परिक्खइ गुरु परिक्खइ ग्रन्नदीहमि। दुरयोधन पमुह सवि **रायकूंयर** वण माहि लेविणु। —सालिभद्र सूरि
२ देखो राजकुमारी (रू. भे.)

रायकेळ—स. पु—एक प्रकार का केले का पौधा, केले की एक जाति।
उ०—मेहको ममोलौ, बावनौ वदण, सोळमौ सोनौ, **रायकेळ** को ग्रभ, हस को बच्चौ। —लाली मेवाडी री वात

रायखाती—स पु—राजा का वढई।
उ० - **रायखाती** के ने वेग बुलाय। जच्चा राणी को पिलंग वणावौ, जी राज। —लो. गी

रायगिह—देखो 'राजग्रह' (रू. भे.)

रायगुर—१ देखो 'रायांगुर' (रू. भे.)
उ०—हाथा ग्र वसी हुए बसि हाथा, वाहै ग्रणी खत्री ले वाढ। राघव काढ़ी तणै **रायगुर**, दात विसेख किए जमदाढ। —हरीसूर बारहठ
२ देखो 'राजगुरु' (रू. भे.)

रायघर—देखो 'राजग्रह' (रू. भे.)
उ०—हीदवां छात दोय वात लै हालियौ, वाळ ग्यौ ग्राक जग दुह वानै। हसत हव हीडता देखसौ **रायघर**, कोडियां खजाना सुणौ कानै। —दुरसो ग्राढो

रायचपेली—स. स्त्री. [स. राज+चम्पा+वल्ली] एक प्रसिद्ध लता जिसके पीलापन लिए सफेद रग के छोटे छोटे सुगधदार फूल लगते हैं।
उ०—सोढौ राणौ **रांयचपेली** रौ फूल, मूमल केळू कामठी। महकण लागौ चंपेली रौ फूल, लळकण लागी केळू कामठी। —लो. गी.

रायचपौ—सं पु.—एक वृक्ष विशेष।
उ०—१ मजन ग्राया हे सखी, थांनै कुण कहियाह। **रायचंपा** रा फूल ज्यू महले महमहियाह। —ढो. मा.
उ०—२ रसकस दिवळौ बळै, घड़ ढोल्या रै हेटै। सुगरा नै नुगरौ मारचौ, **रायचंपा** रै हेटै। —फुलवाड़ी

रायचोक, रायचौक—स पु.—राज महल का चौक, राज महल का प्रागण।

रायजण—स. पु.—राजा।
उ० -- सरण **रायजण** चरण बाखाण मन करै सिध, दांन बाखाण कव रसण देवी। कळाधर वदन बाखांण तरणी करै, करै रण करग वाखाण केवी। —हुकमीचद खिडियौ

रायजादी-सं. स्त्री. [सं. राज+फा. जाद, रा. प्र. ई.] १ शाहजादी।

उ०—झुरै म्रग-नयणी झुरै रे, मेह तणी रुत मोरा। जोगण पूठ दिया **रायजादी**, घूमर ऊपर घोरा। —अमरसिंह राठौड़ रौ गीत

२ राजकुमारी।

उ०—तठा उपरांत करिनै राजांन सिलामति उवै चतुरग **रायजादी** त्रितीया रौ झूबिखौ मोतीग्रां री लडी हुवै तिण भांति री ऊजळी गोरगीग्रा —रा सा स.

३ दुल्हिन।

रायजादौ, रायजाधौ-स. पु [स. राज+फा. जाद] (स्त्री रायजादी)

१ राजा का पुत्र, राजकुमार।

उ०—१ कोमडा भणंकै गुणा उडै तीर केबराण, अराबां धड़ूकै किना फाटै आसमाण। जांमळा ऊछळै छडा **रायजादौ** साहिजादा, 'औरंगा' 'मुराद' 'सतौ' तेवड़ै आराण। —राव सत्रसाळ रौ गीत

उ०—२ सौख माणी जसी रमै, रामत ससत्र। जौख माणी असी **रायजाधौ**। —महाराजा बहादरसिंध रौ गीत

२ दुल्हा, वर।

उ०—**रायजादौ** लुळ लुळ पाछौ जोवै, जाणु म्हारी जान में भाखोसा पधारै। —लो. गी.

रू. भे.—'राइजादौ'

रायजी-सं पु.—१ कायस्थों का एक सम्मान सूचक शब्द।

२ देखो 'राय' (रू. भे.)

रू. भे.—राइजी,

रायजीप-सं. पु —राजाओं पर विजय प्राप्त करने वाला, राजाधिराज।

रायडोडी-स. स्त्री —राजमहल का द्वार। ड्योढी।

उ०—**रायडोडी** राजा दनी रे लाल, वली खुरसाणी सेव। दाडिम दाख सोहांमणा रे लाल, खरबूजा स्यु टेव। —प. च चौ.

रायण, रायणि-सं. पु [स. राजादनी, प्रा. रायणी] १ एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

उ०—१ आबा रौ पेड, महुवा रौ पेड, **रायण** रौ पेड़, आमली रौ पेड़, गुजरात मे करसणी थीत गिणौ। - बा. दा. ख्यात

उ०—२ वर विलसइ अलवेसर केसर होठि मुवेस। अध पुगइ ऊत-रायणि **रायणि** फलिय असेस। —जयसेखर सूरि

२ उक्त वृक्ष के फल।

उ०—नीलां नारिंगां, रंगि दीसता सुरंगा, नीकोली **रायण**, ते प्रीसी मन भाइणा, दाडिम नी कुली, खाता पूजै रुली, नि मजा निम्रखोड, द्राख नइ बदाम, केइ कागदी केइ स्याम······ —व. स.

रायतेली-सं. पु.—राजा का तेली।

उ०—**रायतेली** के ने वेग बुलाय, जच्चा राणी की सोड़ भरावौ जी राज। —लो. गी.

रायतौ-सं. पु. [सं. राजिकाक्त, राजीत] दही, छाछ या मठ्ठे में, नमक-मिर्ची जीरा आदि मसाले डाल कर छोंक लगा कर बनाया जाने वाला एक पेय पदार्थ।

उ०—१ सीरौ पुडी **रायतौ**, रोटा चावळ मांस। सूला घी सूं करै सदा, सास एक हि रास। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ आथण चावळ-मूगा री खीचड़ी आध-पाव घी सू मथ-गथ 'र गटकावै अर बड़ी-कढी रा **रायतां** सू रजै है। —दसदोख

रू. भे.—राइतौ, राईतौ,

रायथांन—देखो 'राजस्थांन' (रू. भे.)

उ०—सबळ **रायथांन** उथापण। निरजोर राय सहाय करि थापण। —रा रू.

रायधर—देखो 'राजधर' (रू. भे.) (बां. दा., ख्यात)

रायपसेणिय, रायपसेणियौ, रायपसेणी, रायपसेणीइ, रायसेणीय-स पु.—राजप्रश्नी नामक सूत्र। (जैन)

उ०—१ **रायपसेणिया** बीय उपाग मै, दोइ हज्जार अठहोत्तर मन गमैं। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ **रायपसेणी** सूत्र में, राय प्रदेशी ना भाव। सूरयाव देव मरने हुवौ, धरम तणो परभाव। —जयवांणी

उ०—३ प्रतिमा पूजी सुर सुरिया भइरे, **रायपसेणीइ** अक्षर लाभ-इरे। —ग कु.

रू भे—रायप्पसेणइज्ज।

रायपाळोत-सं पु.- राठौड़ों की एक उप शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

रायपुत्त, रायपुत्र देखो 'राजपुत्र' (रू. भे)

(स्त्री. रायपुत्ती, रायपुत्री)

रायपुत्रिय, रायपुत्री—देखो 'राजपुत्री' (रू. भे.)

उ०—ओप दीप आरती रूप देखै **रायपुत्रिय**। जिसी रामपुर जनक दरसि अभिराम अद्वितिय। —रा. रू.

रायप्पसेणइज्ज—देखो 'रायपसेणी' (रू. भे.)

रायफळ—देखो 'राइफळ' (रू. भे.)

उ०—लोह रै फाटक आगै सिपाही **रायफलां** पिसतोला कांधै उठायां तण्योडा गेड़ा काटै। —दसदोख

रायफूल-सं. पु.—हाथ का आभूषण विशेष।

रायब-सं. स्त्री.—एक नदी जो बांसवाड़ा की मुख्य नदी माही की सहायक नदी मानी जाती है। —(बी. वि.)

रायबर—देखो 'रायवर' (रू. भे.)

उ०—लाडली रौ चीर बधज्यौ, **रायबर** रौ वागो-मोळियौ।

—लोक गीत

रायबहादुर–स. पु.—ब्रिटिश शासन काल में भारत के रईसो या सरकारी अधिकारियो को दी जाने वाली एक उपाधि ।

रायबेल, रायबेली—देखो 'रायवेल' (रू. भे.) (अ. मा.)

रायबोर–स पु.—झडबोर के आकार के छोटे बोर ।

रायभोग—देखो 'राजभोग' (रू भे.)

उ०—**रायभोग** गरडा तणी रे लाल, साठी सख री सालि । देवजीर परुसै भला रे लाल, दिल मानै ते दालि । —प च. चौ.

रायमल, रायमलोत–स पु.—राठौड वश की एक उप शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

रायरांणा—देखो 'रावरांणा' (रू. भे.)

उ०—तेडाविं मोटा **रायरांणा**, रचौ मंडप माळ ।

—रुखमणी मगळ

रायरसोई, रायरसोयी–स. स्त्री.—पाकशाला, रसोई ।

उ०—१ जद म्हैं **रायरसोई** आई चौकौ दियौ सजाय मण भर रा म्हे माडा पोया धडी एक राधी छै दाळ मारूणी घणी कमावणी —लो. गी.

उ० —२ जद म्है जाऊं **रायरसोयी** माजन री सुध आवै । कुण जीमै म्हारी राय रसोई कुण म्हारौ भोजन सरावै —लो. गी.

रायरातीभवौ–स. पु —एक प्रकार का लोक-गीत ।

उ०—थाळकिये मे वाजा, म्हारौ बाप दिली रौ राजा । **रायरातीभवौ**, पटियार राती भवौ —लो. गी

रायरायांन–स स्त्री. [स राज राज] रईसो, सरकारी कर्मचारियों व जमीदारो को मुगलो द्वारा दी जाने वाली एक उपाधि ।

(मुगलकाल)

रायरिख, रायरिसि, रायरिसी—देखो 'राजरिसि' (रू. भे.)

उ॰—राय संतोखै **रायरिख**, प्रोहित सीख प्रमाण । —रामरासौ

रायरौ–स. पु.—गेहू के ढेर मे, एक घास विशेष का होने वाला दाना जो राई के आकार का होता है और गेहू की फसल के साथ ही उग जाता है ।

रायलोम—देखो 'लोमजदराव'

उ०—मेल्है **रायलोम** प्रधान समथ । राजा मित्र कन्है दसरथ ।

—रामरासौ

रायवनौ–सं पु.—१ दुल्हा, वर ।

उ०—दई रे देवता ने नारेळ बधारया, **रायवनौ** परणावस्या ।

—लो गी.

२ राजा ।

रायवर–स. पु. [स. राज-वर] १ बड़ा राजा, महाराजा ।

२ पति, खाविद ।

३ दुल्हा, वर ।

रू. भे.—राइवर, राईबर, राईवर, रायवर ।

रायविभाड़, रायविभाड–वि —राजाओ को पराजित करने वाला ।

(बांकीदास)

रायवेल–सं. स्त्री.—सुगंधित फूलो वाली एक लता विशेष । (अ. मा.)

रू. भे.—राइबेल, राइबेलि, राइवेल, रायबेल, रायबेलि ।

रायवैकुंठ–स. पु. [स. वैकुंठ-राज]वैकुण्ठ का राजा या पति श्री विष्णु ।

रायसालि–स. पु.—वृक्ष विशेष ।

उ०—रावण राग रताजणी, रवणी नइं रूद्राख । रुकरुदंती **रायसलि**, रोहड रोहिणि लाख । —मा. का. प्र.

रायसाहब–स. पु —ब्रिटिश शासन काल मे भारतीय रईसो, जमींदारों व सरकारी कर्मचारियों को दी जाने वाली उपाधि ।

रायसेण–स. पु —एक प्रकार का वृक्ष ।

उ०—खिजूर गूंदी लेसूडौ, केसूला खिरणी मोळसिरी फरवास **रायसेण** महुवा ढाक कुभरा कीकर हूला भुकनै रह्या छै ।

—रा स. सं.

रायहंस—देखो 'राजहस' (रू. भे.)

उ०—स्रावण ऊजल पूनिमइ, स्री जिनवर हरिवस । माता कुक्षि सरोवरइ, अवतरियउ **रायहंस** । —स. कु.

रायहर–सं. पु.—राजा का वंशज, राजा (डि. ना. मा.)

उ०—१ हुआ दल राजथानां. दखत **रायहर**, जठै प्रीछत वसन वहै जांणै । —जवान जी आढौ

उ०—२ अनि **रायहर** घणं ओछडिया, खान जिहा सिर लोह सुख । पांडव घड़ा ऊपरां पडियौ, राव कूरंम किलकिलां रुख ।

—ईसरदास सादू

रायहांणी—देखो 'राजधानी' (रू. भे.)

रायहींदवौ–स पु —हिन्दुस्तान या हिन्दुओ का राजा ।

रायांकवर—देखो 'राजकुमार' (रू. भे.)

रायांगण—देखो 'रायआगण' (रू. भे)

उ०—राजद्वार **रायांगण** जइ नइ, भीतरी भेद जणायौ ।

—रुखमणी मगळ

रायांगुर–स. पु.—राजाओ मे श्रेष्ठ राजा, सम्राट ।

उ०—रोहणियाळ सभै **रायांगुर**, आयै असुर उतारै घाण । अबळा बाळ न धारै आडी, खूदांलम घातै खूमाण ।

—महाराणा सागा रौ गीत

रू. भे. रायगुर

२ देखो 'राजगुरु' (रू. भे.)

रायांतिलक-सं पु.—१ राजाओं के तिलक, श्रेष्ठ-राजा।

उ०—परिया अधक कहां किम 'पातल' **रायांतिलक** हींदवां रांण।
—महाराणा प्रतापसिंह रौ गीत

२ देखो 'राजतिलक'

रायांराव-सं पु.—मुगल काल में भारतीय रईसों व सरकारी कर्मचारियों को दी जाने वाली एक पदवी।

उ०—**रायांराव** साथि 'रुधपत्ति'। भंडारी मतिसागर भत्ती।
—रा. रू

राया-सं. स्त्री.—१ सोलंकी वंश की एक शाखा।

२ देखो 'राजा' (रू. भे.)

रायातन-सं. पु.—राजा, नृप।

रायि, रायी—देखो 'राइ' (रू. भे.)

उ०—एहिवी वारता **रायि** करि छि, एटलि आव्यु मुंनि। ब्रहदस्व तां नाम तेहि (नूं. हरख्यौ) भूपति मनि। —नळाख्यान

रायौ—देखो 'राजा' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—जीव-काया न्यारा कह्या, तब बोल्यौ छे **रायौ** रे। वित्त नर योग्य छै, हूं जाऊ चलायौ रे। —जयवांणी

रारंग, रार, रारि, रारी-सं. स्त्री [सं. राजृ=दीप्तौ=रात्रिका]

१ नेत्र, आंख। अ. मा., ना डि. को.)

उ०—१ बारगा उमगा रगां बिमाणगा सोक बाज, **रारंगा** अभगां भड़ा दमगा रौ सार। पनगां विहगां ढंगा नारगा अभीच पड़ा, सारगां खतंगा अगा मातंगां धू सार। —बद्रीदास खिड़ियौ

उ०—२ नवहत्थौ मत्थौ बडौ, रोस भटक्कै **रार**। श्री कूभाथळ ऊपरा, हाथळ वाहणहार। —बां. दा.

उ०—३ यां मुख झूठी आख नें, पूगौ साह दवार। अरज हुवता असपती, कीधी रत्ती **रार**। —रा. रू.

उ०—४ कहि कै नैंहौ कौ करां, रांम कमळ री **रारि**। करै पुकारा पीर कवि, औ वाराह उधारि। —पी ग्रं.

उ०—५ रोड़ बजि हैवरा आगि धकि **रारियां**, धजर भाला खेवण अभागौ धारियां। —जालमसिंघ मेड़तिया रौ गीत

उ०—६ **रारियां** सुभट तूटै दमंग रीस रा। त्रिलोचण जिसा खूटै नयण तीसरा। —र ज. प्र.

उ०—७ ऊपाड़ै नर वाहणा, आसी सौ ताबूत। **रारी** अन्ना चोळ मुख, साह घखै जमदूत। —नैणसी

२ वृद्ध मादा ऊट।

३ देखो 'राड' (रू. भे)

रा'रीत—देखो 'राहरीत' (रू. भे.)

रारौ-सं. पु.—राजा, नृप। (जैन)

राळ, राल-सं. स्त्री.—१ दक्षिणी भारत में पाया जाने वाला, सदाबहार एक बड़ा वृक्ष।

२ उक्त वृक्ष को चीरने से निकलने वाला रसदार पदार्थ या निर्यास, जो औषधों, मसालों आदि में काम आता है तथा सुगंध के लिये जलाया जाता है।

३ बच्चों या बूढ़ों के मुंह से टपकने वाली लसदार थूक की बूंद।

४ एक रोग विशेष।

उ०—ताप सन्निपात जांणी अतीसार संग्रहांणि, फीहौ विध **राल** पांडु गोला सूल खैण है। हीणा-रोग सास स्वास रुधिर प्रवाह रूप, सीस पीड रोग अरू जेतें रोग नैन है। —ध. व. ग्रं.

५ आवाज, ध्वनि।

६ पशुओं का एक रोग विशेष।

रू. भे.—राळि।

राळक-सं. पु.—वृक्ष, पेड़। (अ. मा.)

रालड—देखो 'राली' (मह., रू. भे.)

उ०—खर ऊखर लु, माकुण मांचा भिरिया, जु भरियां गोदडा, कान मिलि भरियां, **रालडां** फुहडा, पग भरिउ गाडलउ, घरसाला भरिउं घुटण'………… —व. स.

राळणौ, राळबौ, रालणौ, रालबौ-क्रि. स.—१ ओढ़ना, ढकना।

उ०—१ मा मोरी, सूत्या अक भंवर सुजाण। बाईजी रै बीरै मुख पर दुपटौ **राळियौ**। —लो. गी.

उ०—२ रोद्रणी बीदणी छेहड़ां **राळियां**। अधर तंबोल मुख हूंत **राळै**। —दुरसौ आढौ

२ बिछाना, फैलाना, छितराना।

उ०—ठाकार हींगळू ढोल्या माथै फूल **राळता** कैवण लागा—आज तौ थारै भाग रौ बचियौ पण बचियौ। —फुलवाड़ी

३ पहनना, धारण करना।

उ०—किण री गुरुजी में पाग बणाऊ। किण रा जांमा **राळ** रे लोय। साच सत री चेला पाग बणावौ। त्याग रा जांमा रळावौ रे लोय। —श्री हरिरांमजी महाराज

४ ऊपर से गिराना, पटकना, डालना, फैंकना।

उ०—१ राजा इतरी सुण वै चारू रतन बांध, छांन ऊंची कर घर मांहीं **राळ** दीन्हा। —सिंघासन बत्तीसी

उ०—२ मोनें सूंप्यौ कवल जजाल ए। फरसी दीधी हेठी **राल** ए। —जयवांणी

उ०—३ लेवै अवळा लाज, सबळा हुय बैठां सकौ। गरुड़ सभा पर गाज, मुणतां **राळौ** सांवरा। —रांमनाथ कवियौ

५ ढहाना।

उ०—भलौ भाई सेखा राळै बिखेर सारकी भींत । सारा सिरै छावणी मारकी सोज सोज। —गिरवरदान कवियौ

६ चलाना, फेंकना।

उ०—माड्यौ चारण चोसर हदौ ख्याल, राजा की रांणी पासा राळिया जी। —लो. गी.

७ खिलाने या उपभोग कराने की दृष्टि से कोई चीज किसी के आगे डालना, रखना, देना।

उ०—देखै तो एक मडौ नदी माही बहितौ आवै। सो राजा नदी माही उतर ती नू काढ वी की जाघ चीर रतन हाथ लिया। मडौ फ्यावरी नू राळियौ। —सिंघासन बत्तीसी

८ ढुलकाना, टपकाना, बहाना।

उ०—१ वीदणी आसू राळती बोली—तौ अबै म्हारा जीवण मे ई की सार नी। मरचा की सार निगै आवै तौ ध्यान राखजौ। —फुलवाडी

उ०—२ डब डब भर आया नैण हजारी ढोला। आसू तौ राळै हरियै मोर ज्यू जी महारा राज, लीनी पना मारू हिवडै लगाय, हजारी ढोला। आसू तौ पूछ्या जी पेच सू जी म्हारा राज। —लो गी.

९ लगाना, देना।

उ०—दीज्यौ दीज्यौ सासूजी म्हांनै सीख, सहेल्यां हेलौ राळियौ जी म्हारा राज। —लो गी

१० रखना, धरना।

उ०—किण रौ गुरुजी मे सिघासण ढाळू। किण री गादी राळू रे लोय। जरणा जुगत चेला मिघासण ढाळौ। ग्यान री गादी राळौ रे लोय। —श्री हरिरामजी महाराज

राळणहार, हारौ (हारी), राळणियौ—वि०।
राळिओडौ, राळियोड़ौ, राळचोड़ौ—भू०का०कृ०।
राळीजणो, राळीजबौ—कर्म वा०।

राळाबोलौ—स. पु.—१ उपद्रव, उत्पात।

उ०—राळाबोळै रात रा, पहलै बख्त पधार। मिया धड़सी मारिया, बेग्रा आगळ च्यार। —वी मा.

२ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला।

राळि—१ देखो 'राळ' (रू. भे)

राली—स. स्त्री.—बिछाने या ओढने की गुदडी।

उ०—राली नही ओढै गूदडौ नही ओढै। ओ तौ ओढै वारा साळाजी रौ तिलक पछैवड़ौ। —लो. गी

वि०—कायर, डरपोक, अशक्त।

मह.—रालड।

राव—स. पु. [स. राजा प्रा. राया] १ राजा, नृप, अधिपति। (डि. नां. मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ एक राउ थप्पइण, एक रावा ऊथप्पण। एक राव गढ लियण एक रावा गढ अप्पण। एक राव परिभवण, एक रावा पडिगाहण, एक राव जडगमण, एक राऊ सरणै रखण। इक राव रक करि रोळवण, एकौ आलवण थियौ, कमधज अजागि 'गज' केसरी, आगि खाइ इम ऊठियौ। —गु. रू. ब.

उ०—२ ए सारस कहिजइ पसू पंखी केरा राव। उवै बोल्या सर ऊपरइ था कीधी अणुराव। —ढो. मा.

उ०—३ चाळका लीधि चाकै चहोडि, ज्यां दीघ सुता कर बिहुँ जोडि। 'तीडे' इह विध जुध खगा ताव, रजवट पाधौरे पंच राव। —सू. प्र.

२ स्वामी, मालिक।

उ०—भली करजौ रूणेचा रा राव, म्हे तो खड़ माणसिया हां, सिरधा सू हाथ जोडतौ-जौडतौ चौधरी बोल्यौ। —रातवासौ

३ सरदार, सामत।

उ०—नाणौ गुर नांणौ इसट, नांणौ राणौ-राव। नांणा बिन प्यारौ न कौ, साहां जात सुभाव। —बां. दा.

४ राजपूताने के कुछ राजाओं का उपटंक या पद।

उ०—'फरमायौ'—हूं थारी बहन छू। तू म्हारौ भाई छै तूं खातर जमै राखै। हूं तोनू म्होटौ करीस।' सिवा नू राव रौ खिताब देरायौ। —नैणसी

५ रईस, अमीर।

उ०—१ राजी राव रक भूप, नारिही पुरख राजी। झूठ सों विनाई बाजी, खुशी आप खाळ मैं। —अनुभववाणी

उ०—२ राव रक हिंदू रवद, गोलां सगळा गेह। सागै जात सुणां-मियां, छुद्र दिखावै छेह। —बा दा.

उ०—३ हरीया पाटनपुर नगर, राव रंक नही भूप। अलख अभंगी आप है, नारि न पुरखा रूप। —अनुभववाणी

६ बंदीजन, भाट।

[स. राव] ७ शब्द, आवाज, ध्वनि। (अ. मा., ह ना. मा.)

८ चीख, चीतकार।

उ०—एह कारणि न मइ परिण मारिउ, मारतउ अनइं राखिसी वारिउ। तू कन्हइ रही राव करेवा, आज दीह मुझ नाह मरेवा। —सालिसूरी

९ नाद, गर्जना।

१० गूँजार।

११ घोड़े की एक गति विशेष।

१२ छोटे आकार का एक पेड विशेष जिसकी लकडी की छडिया

बनाई जाती है।

अल्पा.—रावौ,

रावउत—सं. पु. [स. राज+पुत्र] राजकुमार, राजा का पुत्र।

उ०—पूरण परवाडौह झरड़ा रौ सू सबद जथौ। सब दिन सवाडौह रहजै धाधळ **रावउत।** —पा. प्र

रावड़, रावड़ियौ—स पु.—धूल के महीन कण जो अनाज मे मिल जाते है।

उ०—वाळी लूआ हिये रमाई, नैण रेत रौ रावडियौ। —चेतमानखौ

रावजादौ—स. पु.—राजकुमार।

उ०—साहजादा समरूप, भोपत सुत चढनी भरण। **रावजादा** री रूप, सारगदे कवरा सिरै। —पा. प्र.

रावट—देखो 'रावत' (रू. भे.)

उ०—साटा थाट दही जेम खागे, रौदा मथै बांकड़ौ **रावट।** —दूदा नगराजोत री गीत

रावटी—स. स्त्री. [स राज-कुटी] १ राजा महाराजाओं का एक खुला व हवादार महल। बारहदरी।

उ०—**रावटी** पुराणी हो गई जे, हांजी कोई टपकण लाग्या जूण। अब घर आवौ गौरी का सायबा जे। —लो. गी.

उ०—२ ऊची सी मेड़ी **रावटी,** बै में माळी को सोवै ए नचीत। म्हारे रग बनडै रा सेवरा। —लो. गी.

२ एक प्रकार का छोटा तबू।

उ०—१ असपका खडी हुई छै। तबू, सामीआणा, सिराइचा, **रावटी,** वाडि समेत करणाटी, गूडर ताणीआ छै। —रा. सा. स.

उ०—२ कपड कोट उज्जळ बह कीजै। वर बगळा **रावटी** वणीजै। —सू. प्र

रू. भे. रावटी।

रावडी—स. स्त्री. [स. राव+डी. प्र.] १ फरियाद, पुकार।

उ०—तुझ ऊपरि मोरी आसडी, किम जाइस मझ रातडी। कहि आगलि करू **रावडी,** चरण कमल की दासडी। —नळदवदंती रास

२ देखो 'राबड़ी' (रू. भे.)

रावण—देखो 'रावण' (रू. भे.)

उ०—१ असुर मारि इदजीत मेघ महि **रावण** मारै। निसचर नीचा नाखि, सत्र इंदतणा संघारै। —पी. ग्र.

उ०—२ करचौ स काम, भज्यौ स राम। कोई ही कांम करा-करां नही करणौ, झट कर ही लेणौ चाहिजै। लारै राख्यौड़ा कांमा खातर मरती विरियां **रावण** ही मोकळौ पिछतावौ करतौ मरचौ। —दसदोख

रावणखंड, रावणखंडौ देखो 'रांवणखड' (रू. भे.)

उ०—१ खान इनायत जोधपुर, बैठौ **रावणखंड**। प्रयुत पमगे पाखरा, जंगै सेन प्रचड। —रा. रू.

उ०—२ मानौ इदौ खेतौ **रावणखडा,** धाधू खेतसी आसायच'''। —रावचंद्रसेण री बात

रावणरिप, रावणरिपु—देखो 'रांवणरिपु' (रू. भे.) (ह नां. मा)

उ०—नाम नाव चढियौ हू जगन्नप। रखै हवै डोलू **रावण-रिप।** —ह. र.

रावणसिर—सं. पु.—दश की सख्या। * (डि को.)

रावणा—स. स्त्री.—एक जाति विशेष जिसके सदस्य राजा-महाराजाओं के यहा सेवा चाकरी किया करते थे।

रावणारि—देखो 'रावणारि' (रू. भे.)

रावणि—स. पु—१ रावण का पुत्र, मेघनाद।

२ देखो 'रावण' (रू. भे.)

रावणौ—स. पु.- रावणा जाति का व्यक्ति।

रावत—सं पु. [स. राज-पुत्र, प्रा. राज-पुत्त] १ राजा, नृप।

२ छोटा राजा।

उ०—साखेता सुहडा सामता, विरदैतां जोधां वळवतां। 'गाजीसाह' सिरै गैमतां, राणी-रांण मिळै **रावतां।** —गु. रू. बं.

३ सामत।

उ०—रहै किमि पासि भौ राखियां **रावतां।** स्यामि रै कामि हणवत जिसा सावता। —हा. झा.

४ योद्धा, वीर, शूरवीर।

उ०—१ दोनो भाई भेळा हुवा। राव जोधेजी कही काधळ तू बडौ **रावत** छै। —नापे साखले री बारता

उ०—२ तिल तिल जुध हुवौ खगां मुख तुटै, चुण न सकै बेहुं करां सचूंप। **रावत** कमळ काज सिव रचियौ, सहंसा अजजुण तणौ सरूप। —महाराम महडू

उ०—३ धिन वे **रावत** धीरपै, भागा रावतियांह। धारा अणियां मैं धसै, चखमुख चोळ कियाह। —बां. दा.

उ०—४ झट खग जबन कवट धड़ झाड़ै। पांच हजार **रावतां** पाडै। —सू. प्र.

५ राजा महाराजाओं द्वारा सामतो को दी जाने वाली एक पदवी।

६ एक व्यवसायिक जाति जिसका मुख्य कार्य दौने-पत्तल बनाना है, बारीदार। (मा. म.)

७ पति, प्रियतम।

उ०—दासी कुण विलमायौ ए, **रावत** नहीं आयौ अब तक बारणै। —लो. गी.

रू. भे.—रवत, राउत, राउति, राउत्त, रावट, रावत्त।

अल्पा.,—रवतौ, रावतियौ।

रावतबट—देखो 'रावतवट' (रू. भे.)

उ०—१ निगम निवाण तणाह, नागद्रहा नर हर ज्युँही। **रावतबट** राणाह, पिड अण खूट प्रतापसी। —सूरायच टापरियौ

उ०—२ सेखावत **रावतबट** साजै, सुतन 'बहादर' समर सगाह। फौजा तणौ मुदी नह फिरियौ, गिरियौ बीच करै गजगाह। —केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

रावतरियां—देखो 'रावत्रिया' (रू. भे.) (मा. म.)

रावतरी—स. स्त्री.—सोने व चादी के आभूषणो मे लगाया जाने वाला जोड।

रावतवस—स पु.—क्षत्रिय वंश।

उ०—वदै पग **रावतवस** विसुद्ध। सेवै पग चारण किन्नर सिद्ध। —ह्. र.

रावतवट—स. पु —१ क्षत्रित्व, वीरत्व।

उ०—चढ़ै रिण जिके पुजै रिण चाचरि, सुजडे पिसणां पाडि सिर। वीटाणा जिके रहै **रावतवट**, माझी परवत मेर गिर। गु. रू. ब.

२ शासन, सत्ता, हुकूमत।

रू भे.—राउतवट, रावतबट।

रावतांणी—स स्त्री.—राजपूत जाति की स्त्री, राजपूतानी।

रू. भे —रवताणी,

रावताई—सं. स्त्री.—'रावत' नामक पदवी।

उ०—तरै मेवाड पाछौ राणा अमरसिंघ नु दीयो। सगर नुं **रावताई** दीवी। पूरब मे जागीरी दीवी। —नैणसी

रू. भे —रउताई, रवताई।

रावताळौ—स. पु. [स. राजपुत्र, प्रा. राअपुत्त, अप.—रावत+आळौ] योद्धा, वीर।

उ०—दीपै भुजाई देव मे कळा, राणौ राणि **रावताळा**। भडा हुवै भाटकळा आठौ पुहर। —गु. रू. ब

रू. भे —रवताळ, रवताळौ, रिवताळ, रिवताळौ।

रावतियां—देखो 'रावत्रियां' (रू. भे.)

रावतियौ—देखो 'रावत' (अल्पा.) (रू. भे.)

उ०—१ काकौ वांरौ कूपंदे भाई भारतमल्ल। घोडौ वारै नव-लखौ **रावतियौ** रिड़मल्ल। —रिडमल्ल खाबड़िया री वात

उ०—२ **रावतिया** पग रोपसी, वतलासी थह वाघ। बौहळा पाटा बाधणा, आछौ होसी आघ। —बा. दा.

रावती— सं. स्त्री —१ रावत होने की अवस्था या भाव।

२ रावत को उपाधि, पदवी।

रू. भे.—राउती,

रावतेस— सं० पु०—१ राजा, नृप, राजाओं में श्रेष्ठ।

२ वीर योद्धा। वीर सरोमणि।

रू० भे०—रवतेस, रावत्तेस,

रावत्त— देखो 'रावत' (रू० भे०)

उ०—१ 'बालौ' भालौ झलिया, रिण कालौ **रावत्त**। जुध वालौ बेली जिहां, 'तेजा' सुजावत। —रा रू.

उ०— के हबसी कन्नडा, केइ पाईक फरीधर। के राजा के राव, केइ **रावत्त** बहादर। —गु रू. बं.

रावत्तेस— देखो 'रावतेस' (रू. भे.)

रावत्रियां— **सं. स्त्री, ब व.**— लोक देवियो का एक समूह।

वि. वि.— इनके सम्बन्ध मे एक ऐतिहासिक कथा पाई जाती है, जो इस प्रकार है— प्रतिहारों के वश मे मंडोवर का अंतिम राजा राणा रूपडा हुआ इससे तुर्कों ने मडोवर छीन लिया तब वह अपने दल-बल सहित जैसलमेर के गाव बारू और चायण में गया। वहा 'बुध' शाखा के भाटियो का शासन था। राणा ने इन भाटियों से अपने लिये रहने की जगह मागी और इसके बदले भाटियो को अपनी बेटिया व्याहने का प्रस्ताव किया। भाटी इस पर सहमत हो गये तब राणा ने १४ लडकियो की सगाई भाटियों से कर दी। जिनमें १ राणा की बेटी ६ उसके भाईयों की तथा ७ लड़किया भील व मेघवालों की थी। अब राणा ने भाटियो से दगा करने के लिये उन्हें बरात लेकर बुलाया और पूरी बरात को एक बाडे मे ठहराया। उस बाड़े में राणा ने पहले से ही बारूद की सुरगे बिछा दी थी। राणा ने विवाह आदि की रस्म पूरी करने के लिये उन लडकियो को भी उस बाड़े में भेज दिया और रात को मौका पाकर सुरगो मे आग लगा कर उन कुंवारी लडकियो सहित भाटियों को जला कर भस्म कर डाला। इन लड़कियो ने मरते समय राणा को शाप दिया कि "तुमने हमको दाग लगाकर धोखे से मारा है। अत. तुम भी ऐसे ही नष्ट हो जाओगे।"

ऐसा माना जाता है कि ये लडकियां देवगति को प्राप्त हुई और कालान्तर में रणेचे गाव के रावतसर तालाब से प्रगट होकर उन्होने लोगो को परचे दिये तथा "रावत्रिया" नाम से प्रसिद्ध हुई। राजपूत व नीच जाति के लोग इनको मानते है।

इनके पुजारी भील होते है गुड़ का मीठा दलिया जिसे "लड़कछ" कहते हैं" तथा बकरा इनका भोग माना जाता है।

रावत्रिया जी के थान मे सात सात खडी मूर्तिया 'ऊजली और "मेली" रावत्रियां की, अलग अलग खुदी हुई होती है। इसका आशय यह है कि जो सात लडकिया उज्जवल जाति की थी वे "ऊजलियां" के नाम से तथा सात जो नीच जाति की थीं वे "मेलड़िया" के नाम से प्रसिद्ध हुई।

ऊजली रावत्रिया जो उज्वल और मेली रावत्रियां नीच-जाति के लोग-लुगाईयो के सिर पर चढकर, खेलती, बोलती और 'बकरती' है ।

उपर्युक्त कथा का इतिहास मे कोई पुष्ट प्रमाण नही पाया जाता । ऐसी दशा में यह कथा जनश्रुति के आधार पर चल पडी है । ऐसा प्रतीत होता है । वास्तव मे 'रावत्रिया पौराणिक लोक देविया ही है, जिनके विषय में विस्तृत विवरण 'मावलिया' मे दिया जा चुका है । देखे 'मावलियां'

रू. भे.—रावतरियां, रावतिया

रावनागा—सं. पु. [स. नाग-राज] शेष नाग ।

उ०—खुलै पोळा भिंत खागा, नमै मस्तक **रावनागां** । महर थंभे गयण मागां, तुरी वागा तांण । —र. रू.

रावमारू—सं. पु.—१ मरु प्रदेश का राजा, अधिपति । राठौड राजा ।

उ०—मोटा पह सहज **रावमारू**, रुद्र दूहत्थौ करै फिर रीभ । अम लोगां ऊपरा न रावै, खूंदाळमा हिळाई खीज । —चतरौ मोतीसर

२ पति, प्रियतम ।

रावराजा—स. पु—१ राजपुताने के कुछ राजाओ की एक उपाधि ।

उ०—**रावराजा** 'र अमीर, करै सेवा जोडे कर । अमल कीध धर इती, सरा तीरा सर सभर । —सू. प्र.

२ जोधपुर के राज्यकुल के उस व्यक्ति की उपाधि जो राजा की उपपत्नि की संतान हो ।

३ उक्त उपाघि धारी व्यक्ति ।

रावरौ—देखो 'रावळौ (रू भे.)

उ०—वाद ओ विवाद को मवाद तें सहचौ । **रावरौ** निनाद ऊट पाट ज्यूं गयौ । —ऊ. का.

रावळ, रावल,—स. पु [सं. लाकुलि] १ राजपुताना के कुछ राजाओं की एक उपाधि ।

वि वि.--रावळ, 'नाथ-सम्प्रदाय' की एक बडी शाखा है। यह शाखा वस्तुतः 'लाकुलीश पाशुपत सम्प्रदाय' की उत्तराधिकारी है। प्राचीन काल में इस प्रदेश (राजस्थान) पर उक्त लाकुलीश सम्प्रदाय का अत्यधिक प्रभाव रहा । कई प्रसिद्ध राजवश इनके अनुयायी हो गये । जिसमें (१)मेवाड़ के राजकुल—इसके अन्तर्गत बप्पा-रावळ प्रसिद्ध राजा हुआ, जिसने यह उपाधि धारण की, जो इस सम्प्रदाय का अनुयायी होने की द्योतक है। (२) आबू के परमार। (३) जालौर के चौहान। (४) लुद्रवा (जैसलमेर) के भाटी—इनमें राजा देवराज को योगी रतननाथ ने राजतिलक करके 'रावळ' उपाधि दी थी। (५) इसी प्रकार मालाणी के मल्लीनाथ ने भी रतननाथ से 'रावळ' उपाधि प्राप्त की थी। इत्यादि । बाद में यह उपाधि परम्परागत हो गई और राजवश के वंशजों तथा कतिपय राजवंशो द्वारा भी यह उपाधि धारण की जाने लगी । अतः मूल रूप मे यह एक साम्प्रदायिक उपाधि है, जो राजवशो के साथ लगाते रहने से कालान्तर में शासक (राजा) के लिये भी एक उपाधि बन गई । (६) कच्छ व जामनगर के जाडेचा भाटियो की उपाधि भी रावळ है ।

२ उक्त उपाधिधारी राजा या शासक ।

उ०—१ जो औ जगतसिंघ रौ बेटौ नै बुधसिघ रौ छोटौ भाई, तिणसू जेसळमेर अखैसिघ पायौ । वडौ परतापीक **रावळ** हुवौ । वरस ४० राज कियौ । —नैणसी

उ०—२ तै सौ लाख समापिया, **रावळ** लालच छड्ड । सासण सीचाणा जिसा, जेथ बुळै जळहड्ड । —बां. दा.

उ०—३ जैत हुथौ 'जैतौ' जाळाहळ, उदियाराम तणौ दळ आगळ । मिणयड छात कलौ दळ माहै, **रावळ** अणी थयौ कुळ राहै । —रा. रू.

उ०—४ कांम घणा स्त्री राम ना, कीधा स्त्री हणमंत रावत । तिमहुं स्त्री **रावळ** तणा, करस्युं कांम अनत रावत । —प. च. चौ.

३ नाथ-सम्प्रदाय की रावळ शाखा व इस शाखा का योगी या साधु ।

उ०—१ बाई म्हारै नैना **रावळ** भेख । व रवामी वहो जटाधारी, अब ही अजन रेख । —मीरां

उ०—२ देव कहै **रावळ** पुछावौ । मोय आवै नही अवर को दावौ । मिळिस्यै जोगी नै सन्यासी, मिळिस्यै तापस तीरथवासी । —जांभो

४ भिक्षा-वृत्ति करने वाले जोगी जो नाद बजा कर, तथा विभिन्न बोलिया बोल कर भिक्षा-वृत्ति करते हैं । (मा. म.)

[सं. राजकुल, प्रा. राअउल] ५ चारणों के याचकों का एक वर्ग या जाति ।

उ०—१ वेस्या सुख भोगै पति वरता व्याधी, इण सूं ईस्वर री ईस्वरता आधी । सावळ सुर साधक सुख सूं नह सोया, सकुनीं सकुनावळ **रावळ** बळ रोया । —ऊ. का.

वि. वि—इस जाति या वर्ग की उत्पत्ति के सम्बन्ध में इतिहास मिलता है । इस जाति के व्यक्ति जूनागढ की चूडासभा यादव शाखा के क्षत्रिय है और महाराज नौधण की संतान हैं। एक बार जूनागढ के नरेश राव माण्डलिक ने चारण जाति की नागबाई, जो देवि का अवतार मानी जाती थी, की पुत्रवधु को कुदृष्टि से देखा । इस पर नागबाई ने क्रुद्ध होकर राव माण्डलिक को पुंमत्वहीन होने का शाप दिया और समूची चूड़ासमा शाखा को राज्यच्युत कर दिया । इस शाप से ग्रसित होने पर मांडलिक ने नागबाई से बहुत क्षमा-याचना व अनुनय-विनय की । तब देवी ने उसको नपुंसत्व से मुक्त कर दिया और कहा कि तेरी संतान चारणों की याचना करेगी और उनको रिझाने के लिये, उनके

सम्मुख गाना-बजाना व खेल तमाशा करेगी। अतः तब से वे चारणों के याचक हुए।

रावळ प्रायः चारणो के अतिरिक्त किसी अन्य के सामने तमाशा नही करते और यदि कारणवश करना पडे तो वहा किसी चारण की उपस्थिति अनिवार्य है।

६ उक्त जाति का व्यक्ति।

७ प्रधान-सरदार।

८ बद्रीनारायण के प्रधान पंडे की उपाधि।

९ मथुरा के निकट एक गाव का नाम जहा राधिका का जन्म हुआ था।

१० एक ब्राह्मण वश।

रू. भे —राउळ, राउल।

रावळइ—देखो 'रावलौ' (रू. भे)

उ०—दासी सरिसा भिरणा हसीउ। सूनइ **रावळइ** तु मती जाई। —बी. दे.

रावळगन—स. पु. [स. राजकुल+गण] १ राज परिवार के लोग,

उ०—ताहरां राठी कह्यौ—औ लडको छत्रधारी राजा हुसी। ताहरां **रावळगन** भेळौ हुवौ। —नैणसी

२ वह मोहल्ला या स्थान जहा राजा या जागीरदार के भाई-बन्धुओ के निवास स्थान हो।

रावळांसा—स. पु. किसी सगे सम्बन्धियों, की स्त्री माता या बेटी के लिये एक आदर युक्त सम्बोधन। (चारण)

रावळा— सर्व.— आपके।

उ०— बले हूं लुळै **रावळा** पाव वदूं। अडी नाव ऊबारवा आव ईंदू'। —मे. म.

रावळाई— सं० स्त्री०—१ रावल होने की अवस्था या भाव। २ रावल की पदवी।

उ०— पातसाह चढ लुद्रवा ऊपर आयौ। रावळ भोजदे बाज कांम आयौ। पातसाह सारौ सहर लूटियौ। रावळ रौ घर भार-जेसल नू दियौ। जेसलमेर माथे टीकौ काढ **रावळाई** दी। —नैणसी

रावळि—देखो 'रावळी' (रू. भे)

उ०— **रावळि** होइकै किनरै जाऊ, तुम हो हिबड़ा रौ साज। मीरा के प्रभु और न कोई, राखौ अब तो लाज। —मीरा

रावळियौ, रावलियौ—१ देखो 'रावळ' (५) (अल्पा., रू. भे.)

उ० –१ अर गांव माहै रावळिया रामत रमता हंता। सीधला रौ साथ रमत देखण गयौ हंतौ अर तै वेळा सुपियारदे नीसरी। —नैणसी

उ०—२ रावळिया रांमत समै, मावड़ियौ ले माग। तो रतना पातर तणौ, सखरौ लावै सांग। —बां. दा.

३ एक साहुकार री हवेली मुंहढै रावलिया तमासौ माड्यौ जद साहुकार वरज्यौ। इण ठाम तमासौ मत करौ। —भि. द्र.

२ देखो 'रावळौ' (अल्पा, रू भे.)

उ०—सुसरौ जी म्हारा घर रा राजा, सासु जी ठुकराणी जी। सुसरौ जी रौ हुकम कोटड्या चालै, सासड रौ रावळिया जी। —लो. गी.

वि.—१ ठाकुर (सामन्त) की, ठाकुर सम्बन्धी।

रू. भे.—रावळि,

रावळै—स. पु —१ मध्यम पुरुष के लिए प्रयुक्त होने वाला आदर सूचक सर्वनाम शब्द।

२ राजा, ठाकुर या जागीरदार।

उ०—डाग नीची गांग्न नै साफो **रावळै** पगा में धर नै ऊभो व्हैगौ। —रातवासौ

३ अन्तःपुर, जनानी ड्योढी

सर्व.—आप, श्रीमान्।

वि.—आपके।

उ०—१ राणी कहै–रावळै गगारि जाति काइ करणी छै नही, रावळै विमाह करणौ छै। —चौबोली

उ०—२ ताहरा राखायत एक दिन लाखैजी नूं पूछियौ–मांमाजी आज ठाकुर री क्रपा कर अर **रावळै** सोह थोक छै अर धरती बरकरार छै। —नैणसी

राज दरबार मे, अन्तःपुर।

रावळोत—सं. पु.—१ भाटी राजपूतो की एक उप शाखा।

२ इस उप शाखा का व्यक्ति।

उ०—**रावळोत** परतापसी, उरजनौत 'अजबेस', जादव जगा जीपवा सगा थया नरेस। —रा. रू.

रावळौ, रावलौ—स. पु. [सं. राजकुल] १ किसी राजा, ठाकुर या जागीरदार का महल, राजमहल। राज गृह।

उ०—सिरदारा रौ पाणी उतरग्यौ। थर थर धूजता, सिसका-रिया भरता नागा-तड़ंग **रावळां** कानी बहीर व्हिया। —फुलवाड़ी

२ राज-दरबार।

उ०—धन कारण बाधव बढ़े, धन तौड़ावै नेह रे। धन रोकावै **रावलै**, धन छिदावै देह रे। —जयवांणी

३ अन्तः पुर, रनिवास।

उ०—१ नूंई ठुकराणीसा **रावळै** पग धरया, आणंद रा झरणा झरया। —दसदोख

उ०–२ टेपरिया सूं ई रंभा पर मार ज्यादा पडी। उण री चीखा ठेट **रावळा** में सुणीजी जद दयाळू ठकुराणी हुकम देय नै उणाने छुडाय दी। –रातवासो

उ०–३ इण बात री सुरबुर बाणियौ सुणी तौ वौ मांय **रावळा** मे सीधौ ठकरांणीसा रै पाखती गियौ। –फुलवाड़ी

वि०– आपका ।

उ०–१ कथन किया सो कवरजी सिर माथे धरस्या । म्हे तो हुक्मी **रावळा** कहस्यौ सौ करस्या । –पना

उ०–२ नळराजा आदर दियउ, जउ राजवियां जोग । देस वास सवि **रावळा**, अइ घोडा अइ लोग । –ढो. मा.

उ०–३ महाराज, पड़सौ लीजो, म्हा मे तकसीर पड़ी, मोडौ आयौ गुन्हौ माफ कीजै । हू **रावळौ** चाकर यू चूक पडी, तकसीर माफ करणी । —पलक दरियाव री बात

उ०–४ ताहरा सोढी कहै, राजि पधारौ छौ, हु तौ **रावळे** दरसण विना अन नही खांवती । ताहरा ओढण रौ पीताबर दीन्हौ । –लाखा फूलाणी री बात

२. ठाकुर साहब, सरकारी ।

उ०–१ **रावळौ** साथ फळौधी आयौ, भा वदि १२ फलोधी था कूच कीयौ । —नैणसी

उ०—२ भाबी उण वगत कोट मे गियौडो हो । **रावळा** घोडा-घोड़िया री काठिया रै टेका-टबका देवण सारू । —फुलवाड़ी

रू. भे.—राउर, राउरौ, रावळइ ।

रावसाहब–सं. पु.—ब्रिटिश शासन काल में रईसों व अमीरों को दी जाने वाली एक उपाधि ।

रावांराव–सं. पु. राजाओं का राजा, सम्राट ।

रावा–स. स्त्री.—गायो के रभाने का शब्द, पुकार ।

उ०—करै साद सापू गई आज करनी कठै, चोर गायां लियां जाय चौडे । केरडा बापडा घरे **रावा** करै, देव रावां तणी मदत्त दौडै । —गोपीनाथ गाडण

रावाई–सं. स्त्री.—१ 'राव' या राजा होने की अवस्था या भाव ।

उ०—२ भीम आ वात सुणी तरै आपरो साथ ले जाय साहबी ली । माल वित रौ धणी हुवौ । **रावाई** रौ टीकौ काढियौ । —नैणसी

२ राव का पद या उपाधि ।

उ०—पछै आप चढनै पूगळ गयौ, तरै रांणगदे री बैर कहचौ-धारेचारौ सासतर करो । तरै राव केल्हण कह्यौ—आज तौ **रावाई** रा सासतर रौ मोहरत छै, सवारै बीजो सासतर करस्या । —नैणसी

३ शासन, हुकूमत । राज्य ।

उ०—राठौड सूरजमल प्रिथीराजोत घणा ही खळवट किया, पिण सोजत **रावाई** पातसाह 'कला' नु दीधी । —रावचंद्रसेण री बात

रावी–स. स्त्री. [स. ऐरावती] पश्चिमी पजाब या पाकिस्तान मे बहने वाली एक नदी ।

रावेटउं–स. पु.—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—पट्टकूल, हीरवडि गजवडि नीलवडि सेवत्रीवडि सोवनवडि जादर पोती पट साउली अगहूल नेत्र **रावेटउं** साभारावउ मटकी फूल पगर कणवीरउ पोतिउं······ —व. स.

देखो 'राव' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—राजा येह राण सुणी अन **रावौ**, 'रतन' कहै भइ अमर रहावौ । गाडधरा मत माल गमावौ, खत्री धरम वाट धन खावौ । —कुपावत रतनसिह

रास– सं. पु.– [सं०] १ वह नृत्य. लीला या क्रीडा जो श्री कृष्ण ने ब्रज की गोपिकाओ के साथ मिल कर किया था ।

उ०—राधिका क्रस्ण **रास** व्रंदावन व्रज विलास । गिनका गज अजामेल, गीध पद गाता । —ऊ. का.

२ गोप लोगों की एक क्रीड़ा, जिसमें वे वृत्ताकार हो कर नाच-गान करते हैं । (प्राचीन)

३ उक्त आशय से ही वृत्ताकार होकर किया जाने वाला नाच-गान ।

उ०—१ विन करताल डफ विन तूरा, पग बिन पातरि नाचे । अखड मडल में **रास** रच्यौ है, जाह मेरा मन राचै—अनुभववाणी

उ०—२ पदिमनी हस्तिनी चित्रणी नारी लीलावती रमई मुरारि सोल सहस वनइ मिली आनन्द, **रास** भासि गाई गोव्यद । —प्राचीन फागु-सग्रह

उ०—३ साता दीप **रास** रमै रातूँ घूघरिया धमकाणी । बीण अदंग बजावै डैरू, गावै अम्रत बाणी । —राघवदास भादौ

४ नृत्य ।

५ खेल, क्रीड़ा, अभिनय ।

उ०—कदळी चील सीप पिक केरी, नृपति प्रजादि आस बहुतेरी । वणी धरा नव उच्छव वारा, प्रतिनिस **रास** विलास अपारा । —रा. रू.

६ हास-विलास ।

७ काव्य ।

६ कोलाहल, शोर गुल ।

१० जोर की ध्वनि या शब्द ।

११ वाणी ।

१२ तेरह मात्राओ का एक ताल । (सगीत)

[स. रसना, रश्मि, प्रा०रस्सी, अप. रस्सि,]—१३ बागडोर, लगाम, बाग ।

उ०—१ घोडा री **रास** फणकारी के घोडौ तौ पाथरौ झूलरा रै मांय वडग्यौ । —फुलवाड़ी

उ०—२ **रासां** फणकारतां ई रथ रा घोडा आगे बधिया । —फुलवाड़ी

१४ बैलो को बांधने की रस्सी ।

उ०—सूतळ नाथा सर नासां सणकारी । फुरणी दूं'धातां **रासां** फणकारी । —ऊ० का०

१५ घोडे की चाल विशेष ।
१६ रस्सी, डोरी ।
१७ जंजीर, शृखला ।
१८ प्रत्यचा, डोर ।
उ०— दसत चाप ग्रह **रास** दसत्तां, महाप्रबळ नदि सुजळ मसत्ता। धरपति गोळ हरोळ तोप धुरि, पूठि पहाड दुरग तारापुरि। —सू.प्र·
१९ तिलों को फटकार कर निकाला जाने वाला भूमा ।
[स· राशि] २० खलिहान मे ग्रनाज का ढेर। २१ बारह की सख्या । *
२२ देखो 'रासि' (रू. भे)
उ० —१ भख पूहचावै भूधरौ, ग्रजगर रै ग्रनय्यास । किम भूलौ संता 'किसन' सभरता सुख **रास** । —र ज प्र.
उ०—२ रसा सुर सूगति मे सुग्य **रास**, दसा मिळगौ गुरु जेमलदास। सदा चित्त चैन हरी पद सेव, दया कर मेन करी गुरुदेव । —ऊ का.
उ०—३ नाच गाय कर निलजता, रच वप भूखरण **रास** । मार निजारा मोहियौ, हर्जै मुधरे हास । —बा दा
रू भे —रा'
ग्रल्पा., 'रासडली'

रासचक्र —देखौ 'रासिचक्र (रू भे.)

रासडली—देखो 'रास' (ग्रल्पा , रू भे)

रासट–सं. पु [सं राष्ट्र] देश, मुल्क, राष्ट्र । (ह ना मा)

रासत–स. स्त्री - रियासत, राज्य ।

रासती–स. स्त्री.—मित्रता, दोस्ती ।

रासतीक–वि०—मित्रता करने वाला ।

रासतौ – देखो 'रास्तौ' (रू भे)

रासथळ–स पु. [सं. रास+स्थल] १ रगशाला, नृत्य शाला ।
२ क्रीडा स्थल ।
उ० – पुलिरण रविसुता फहरावजै पीतपट, ग्रावजै **रासथळ** व्रजनाथ ग्राथ। कान कवार विहरि गळी व्रज कुज री, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ। —बा दा.

रासधारी–स पु —[म रास धारिन्] १ श्रीकृष्ण।
२ श्रीकृष्ण की रासलीला का ग्रभिनय करने वाला व्यक्ति ।

रासन–सं. पु.—१ देश मे खाद्य पदार्थों की मात्रा सीमित होने की दशा मे प्रजा को उचित दामो पर उचित मात्रा में वे पदार्थ उपलब्ध कराने के लिये, सरकार द्वारा की जाने वाली व्यवस्था। वितरण प्रणाली। (इसी प्रकार ग्रन्य पदार्थ भी जो दैनिक उपयोग के हो।)
२ उक्त व्यवस्था के ग्रन्तर्गत, सरकार द्वारा प्रत्येक परिवार को दिया जाने वाला एक प्रपत्र (कार्ड), जिसमें परिवार के सदस्यो की संख्या व नाम लिखे होते है और सामान के वितरण के समय उसमें इन्द्राज किया जाता है।
३ उक्त प्रपत्र के ग्राधार पर समय-समय पर मिलने वाला सामान या सामान की निश्चित मात्रा ।
४ खाने-पीने का सामान, रसद ।

रासना –देखो 'रास्ना' (रू. भे.)
उ०—रामोडी नइ **रासना**, रीगिणी रुद्र-जटाय। राग रताजरिण रुमडी, रनिवनि रग धराय । —मा. का प्र

रासनित्य–स. पु. [स रास-नृत्य] एक प्रकार का नृत्य विशेष।
वि० वि०—देखो 'रास'

रासपूनम, रासपूरणिमा–स. स्त्री. [सं. रासपूर्णिमा] मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा। ऐसा माना जाता है कि श्रीकृष्ण ने इसी दिन रास क्रीडा प्रारभ की थी।

रासब, रासभ–स. पु [स. रासभ] (स्त्री. रासभरणी) गधा, गर्दभ।
रू. भे.—रासव, रासिवि ।

रासभणी–स स्त्री.—गधी, गदही ।

रासभूमि–स. स्त्री· [स.] रासक्रीडा करने का स्थान ।

रासमंडळ–स. पु. [स रास-मण्डल] १ वह स्थान जहा पर श्रीकृष्ण रासक्रीडा किया करते थे ।
२ रासक्रीडा करने वालो का समूह ।
३ रासक्रीडा करने वालों का ग्रभिनय ।
उ०—साथै सहेलिया री टोळी सो **रासमंडळ** रमण रै ग्रौछाह चांदणी री राति री चली जाइ छै। —रा. सा. स.

रासमंडळी–स. स्त्री. —रास क्रीडा करने वालो का समाज, टोली या सघ ।

रासरमण–सं. पु. [स.] १ ईश्वर, परमेश्वर । (ह. नां· मा.)
२ श्रीकृष्ण ।

रासलीला–स. स्त्री. [सं] १ वह नृत्य, ग्रभिनय या क्रीडा जो श्रीकृष्ण ने व्रज की गोपियों के सग में की थी।
२ उक्त के ग्राधार पर किया जाने वाला ग्रभिनय या नाटक।

रासव—देखो 'रासभ' (रू. भे.)
उ०—**रासव** पुरण पलाण कर कोई हसत्त बधावै। —केसौदास गाडण

रासविलास–सं. पु. [सं.] रासक्रीडा ।

रासबिहारी–सं. पु. [सं.] १ श्रीकृष्ण ।
२ ईश्वर, परमेश्वर।

रासायण, रासायन—वि. [स. रासायन] रसायन का या रसायन सम्बन्धी ।

रासायनिक–वि. [सं.] १ रसायन शास्त्र का, रसायन शास्त्र सम्बन्धी।
२ रसायन शास्त्र का ज्ञाता ।

रासि–स. स्त्री. [स. राशि] १ किसी वस्तु का ढेर, समूह, पुंज, राशि। संग्रह।

उ०—सोवन ए **रासि** करेवि बंधव आगलिउ गिरा ए।
- सालिभद्र सूरी

२ कोई ऐसी संख्या जिसके लिये जोड, बाकी, गुणा, भाग किया गया हो। (गणित)

३ किसी का उत्तराधिकारी।

४ क्रान्ति वृत के बारह तारा-समूह जो, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन मकर, कुंभ और मीन कहे जाते है। (ज्योतिष)

उ०—दिन रात सम तुल **रासि**. दिन कर सरकि अनुक्रमि सरवरी। स्त्रिय जीत पति गुण परखि चखि, सुख मकस पखि जिम सुंदरी। —रा. रू.

५ बारह की संख्या। ❋

रू. भे.—रा', रासी।

६ देखो 'रास' (रू. भे)

उ०—१ अस्व चलाव्या मत्र भणी, ते गरुड तणी गति चालि। बाहुक सज्ज थईनि बिठ्ठ, **रासि** भेद सूँ भालि। —नलाख्यान

उ०—२ जू सहरी भ्रूह नयण अग जूता, विसहर **रासि** कि अलक वक्र। वाली किरि वाकिया विराजै, चद रथी ताटक चक्र। —वेलि

रासिचक्र–सं. पु [स. राशि चक्र] १ मेष, वृष आदि राशियो का चक्र या मंडल। (ज्योतिष)

२ ग्रहो के चलने का मार्ग या चक्र।

रू. भे.—**रासचक्र**।

रासिनांम–स. पु. [स. राशि-नामन्] किसी शिशु के जन्म के समय की राशि के अनुसार होने वाला नाम। (फलित ज्योतिष)

रासिप–सं. पु. [स. राशिप] किसी राशि का अधिपति देवता।

रासिबि—देखो 'रासभ' (रू भे) (ह. ना. मा.)

रासिभाग–स. पु. [सं राशिभाग] ज्योतिष मे किसी राशि का भाग या अंश।

रासिभोग–स. पु. [स. राशि-भोग] किसी ग्रह का किसी राशि मे कुछ काल तक रहने की अवस्था। (ज्योतिष)

रासी—देखो 'रासि' (रू. भे)

उ०—दूध मे रांधसी घी मे खासी, करसी ज्यूं हुसी जाणौ उघडगी **रासी**। —दमदोख

रासीक–वि.—साधारण, मामूली।

रासु—देखो 'रासौ' (रू. भे.)

उ०—पुनिम पखमुणिंद सालिभद्र ए सूरिहिं नीमीउ ए। देवचद्र उपरोधि पडव ए **रासु** रसाउलु ए। —सालिभद्र सूरि

रासेस्वरी–स. स्त्री. [स. रासेश्वरी] राधा।

रासौ–स. पु.—१ वह पद्यमय रचना या काव्य जिसमें युद्धो तथा वीरत्वपूर्ण कृत्यो का विस्तृत वर्णन हो।

२ उक्त काव्य की पुस्तक या ग्रथ।

३ युद्ध, लडाई।

उ०—डडकारा डाकणि करै, राक्षस देवइ **रासौ** रे। रुंड तणी माला रचै, ऊमयापति उल्लासौ रे। —प. च. चौ.

४ तकरार, विवाद, झंझट, बखेडा।

५ अव्यवस्था।

उ०—नी दाद-फरियाद अर नी की सुणवाई। दिन बीतै सौ वत्तौ। आधा पीसै नै कुत्ता खावै। जबर रुळियार **रासौ** मचियौ। —फुलवाड़ी

६ उलझन, चक्कर, समस्या।

उ०—१ बाप नै रोवतौ देख नै नैन्यौ ई मा री छाती में मूंडो घाल नै रोवण लाग्यौ। उण नै ठा नी पड़ी के औ काई' **रासौ** है। —रातवासौ

उ०—२ लुगाया री चकचक रौ राग बदळग्यौ। हे मावडी–एक ई उणियार रा दो धणी! कुण साचौ, कुण कूड़ौ! औ काई' **रासौ** औ काई कौतक ? कोई कठीनै न्हाटी, नै कोई कठीनै न्हाटी। —फुलवाड़ी

७ खेल, तमाशा, लीला।

उ०—१ महाराणी रा पग तौ बारणा माथै ई चिपग्या। वा बोली बोली आंख्या फाडती औ **रासौ** देखती री। — फुलवाडी

उ०—२ ठाकरसा की कैवण लागा तौ सेठ ठीमर बणनै कहचौ—आ बात किणी रै सामी चौडै नी करणी चावू। पाचवै कांन ई भणक पडगी तौ **रासौ** बिगड़ जावेला। —फुलवाड़ी

८ ढग।

उ०—१ जे राजा रो मूडौ मौखी री गिणती में आजावै तो दुनिया रौ रासौ ई बिगड़ जावैला। —फुलवाड़ी

उ०—२ भौ रूप कळपिया नीं बादळ बरसैला। नीं बीजळियां पळकेला। नी सूरज ऊगैला अर नीं चाद। कुदरत रौ सगळौ **रासौ** ई परवार जावैला। —फुलवाडी

रू. भे.—रासु।

रास्ट, रास्ट्र–सं. पु [स राष्ट्र] १ राज्य, साम्राज्य।

उ०—ख्वास पासवान कृपापात्र भ्रत्य **रास्ट्र** भर। सुघर सुचाळ सभ्य सबको सुहायौ तूँ। —ऊ का.

२ वह क्षेत्र या भू भाग जिसमे एक सी भौगोलिक स्थिति तथा जिसमे बसने वाले लोगो की भाषा, सरकृति, धर्म, तथा रीति-रिवाज एक से हों। देश, मुल्क, नेशन।

३ देश, मुल्क । (अ. मा.) (सभा)

४ किसी एक ही शासन या शासन विधान के अधीन रहने वाले लोगों का समूह ।

५ देशव्यापी बाधा, उपद्रव, ईति ।

६ पुरुरवा के वंशज काशीराजा का पुत्र एक राजा ।

रू. भे.—रट्ठ ।

रास्ट्रकूट–स पु [सं. राष्ट्रकूट] एक क्षत्रिय राजवंश, राठौड़ ।

उ०—प्रतिहार लब्धक **रास्टकूट** सक करवट कारट पाल चादिल गोहिल······ ·· ·· —व. स.

रास्ट्रपति–स. पु. [सं. राष्ट्रपति] प्रजातन्त्रात्मक या सवैधानिक प्रणाली के अन्तर्गत किसी देश का सर्वोच्च शासक ।

रास्ट्रपाळ–स पु. [स. राष्ट्रपालक] १ राजा ।

२ कंस का एक भाई ।

रास्ट्रभंगी–सं. पु [स. राष्ट्र भंगी] वह घोडा जिसकी पीठ पर भवरी (चक्र) हो ।

रास्ट्रभेद–स. पु. [स राष्ट्र भेद] प्राचीन भारत की एक राजनीति, जिसके द्वारा शत्रु राजा के राज्य मे विद्रोह करवाया जाता है ।

रास्ट्रवासी–स पु. [स. राष्ट्र वासिन्] १ देश का निवासी, देशवासी ।

२ परदेशी ।

रास्ट्र विप्लव–सं. पु [स. राष्ट्र विप्लव] किसी देश मे होने वाला विद्रोह, गदर, बलवा ।

रास्ट्रीय–वि. [सं. राष्ट्रीय] राष्ट्र का, राष्ट्र सम्बन्धी ।

रास्तागीर–सं. पु —रास्ते पर चलने वाला, राहगीर, पथिक ।

रू. भे.—रस्तागीर ।

रास्तौ–स. पु. [फा रास्त:] १ मार्ग, पथ, राह ।

मुहा०—१ रास्तौ करणौ=मार्ग या पथ या मजिल पूरी होना, मजिल तय होना, यात्रा का समय आसानी से पूरा होना ।

२ रास्तौ काटणौ=रास्ता पार करना, मजिल तय करना । यात्रा पूरी करना ।

३ रास्तौ देखणौ=इतजार करना, रास्ते चल पडना ।

४ रास्तौ पकडणौ=रास्ते चलना, कही चले जाना ।

५ रास्तौ बताणौ=जाने के लिये कहना, सही मार्ग बताना, मार्ग दर्शन करना ।

६ रास्तै लाणौ=उचित मार्ग पर चलने का कहना, सुधारना ।

२ परपरा, रीति, प्रथा ।

३ तरकीब, उपाय, तरीका ।

रू. भे.—रसतौ, रसत्तौ, रस्तौ, रासतौ ।

रास्ना–सं. स्त्री. [स] १ गधनाकुली नामक काष्ट औषधि विशेष ।

२ रुद्र की प्रधान पत्नी ।

रू. भे.—रासना ।

राह–स. स्त्री. [फा] १ मार्ग, रास्ता, पथ ।

उ०—१ पछै सोरभ पातसाहजी रा डेरा हुवा । तद **राह** माहे स्नी कंवरजी जाय पातसाहजी रै पावे लागा । —नैणसी

उ०—२ नही गया माचै मुवा, रविमंडळ रै **राह** । जूझ मुवा रण मैं जिके, गतपंचमी गयाह । —बां दा.

२ परंपरा, प्रथा, रीति-रिवाज, कायदा ।

उ०—१ साह व्है असाह, चाह दाह तें सह्यौ । **राह** छोड अहा तू कुराह क्यूं गयौ । —ऊ का.

उ०—२ जदी बै ओर था सु तौ आपके घरां ऊठि गया अरु कुभार—कुभारी लडका तीनू रोते है । जदी राहिब कह्या, रै ये काहा हुवा ? इतनी बार तौ सादी होती थी अरु अबै येह रोणै लगा । सो इनके येह ई **राह** होयगा । मेळ कूं रोतै होयगे ।

—राहब साहब री वात

३ धार्मिक सम्प्रदाय, पथ ।

उ०—१ मेछां **राह** निभाह कज, दिल्ली औरगसाह । ज्यूं सामद्र अजाद सू, यू रहियौ खम दाह । —रा. रू.

उ०—२ फिरग प्रळै जळ फैलियौ, तज दुहूं **राहां** टेक । पान अखै-वड़ 'पदम' रौ, ऊचौ रहियौ एक । —राघोदास सादू

उ०—३ करबा एक **राह** मन कीधौ । लेख प्रमाण धेख व्रत लीधौ । —रा. रू.

४ धर्म, कर्त्तव्य ।

उ०—१ 'जगतसी' 'अमरसी' 'उदैसी' जेहवौ, छातपत केम कुळ **राह** छाडै । राण सीसोदियौ टेक झालै रहै, एक पतसाह सू कथ आडै । —गोविंद बारहठ

उ०—२ 'केहरि' कहियै साभळौ, ऐ खत्रीपण **राह** । बोल न जाए सूरिमा, काया जाइ त जाह । —गु. रू. बं.

५ कार्य, कर्म ।

उ०—आकास में खेती करणी असभव, आकास में खेती करै नें बीज धरती मैं बावणौ उलटौ **राह** छै । —वी. स टी.

६ प्रतीक्षा, इतजार ।

उ०—१ तन का त्यागूं कापडा जी, ऊगते परभात । खडी जोवती **राह** मे जी, सतगुरू पोंछे आय । —मीरां

उ०—२ हूं तौ जोऊं जोऊं रांमजी री **राह** । कद तौ आवेला स्वांमी सावरौ । —मी. रा.

७ आशा, उम्मीद ।

८ प्रयत्न, यत्न, कोशिश ।

९ युक्ति, तरकीब, उपाय ।

१० तरह, भाति, प्रकार ।

उ०—१ 'राजौ' भिडंत सूरिमा **राह** । 'बिसनावत' सीहक सिंधु-राह । —गु रू. बं.

उ०—२ घोर घमंकी पखरां छोनी तळ छाया। रग बिरगे राह के गज गाह लगाया। —व. भा.

११ तौर, तरीका, ढंग।

१२ मस्तक, सिर।

१३ घोड़े की एक चाल विशेष।

रू. भे.—रह, रा', अल्पा.,–राहड़ी, मह., राहडौ,

१४ देखो 'राहु' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ पुर्णं निजूम अरज मत प्राजौ। सनि रवि राह केत दन साजौ। —सू. प्र.

उ०—२ खडौ लागड़ौ बीर वीराधि वेतू। करै रागड़ा छागडा राह केतू। —मे म.

उ०—३ अतर दीसइ एवडू, किहां चद्रमा किहा राह रे, अतर दीसइ एवडू आक छाया वक्ष छाह रे —नळदवदती रास

राहखरच–स पु—किसी यात्रा मे जाते समय मार्ग मे होने वाला व्यय।

राहगीर–स. पु. [फा.] रास्ते चलने वाला पथिक, राही, बटाऊ, मुसाफिर।

राहड़–स. स्त्री.—१ संध्या, शाम।

उ०—पछै प्रोळ राणी ढकाई। पछै राहड़ वेळा ताई माहै तेजसी वांसै हुवौ आयौ। —नैणसी

सं. पु.—२ भाटी वंश की एक शाखा।

राहड़ी–स. स्त्री.—१ रस्सी, डोरी, रज्जु।

उ०—१ दोनू धणियां नै राहड़ियां सू बांध काठा जरू करचा। —फुलवाडी

उ०—२ म्है कोई ढोर-डांगर तौ कोनी जकौ म्हनै राहड़ी थमाय दूजा रै लारै करौ। —फुलवाडी

मह—राहडौ।

२ देखो 'राह' (अल्पा, रू. भे.)

राहड़ोत–स. पु.—'राहड़' शाखा का भाटी राजपूत।

राहड़ो—१ 'राह' (मह., रू. भे)

उ०—अळगा अळगा गावडा, करडा करडा कोस। लूआ रळक्या राहडा, पथी कुण नै दोस। —लू

२ देखो 'राहड़ी' (मह., रू. भे.)

राहचक, राहचकौ, राहचक्र–स. पु.—युद्ध, लड़ाई।

उ०—१ मुहणोत सुंदरदास जैमळोत गांव कबळै सीधळ सीधळा रा आदमी कट पाच सै जणा मारिया, पचीस सती हुई। वडौ राहचक हुवौ। —बा. दा. ख्यात

उ०—२ बाज फोजा गजा बीच लोकां बकी, हूबकै ऊबका कूंत हाकौ हकी। 'जसौ' ने 'कान' जगमाल 'पीथौ' जिके। चोळ होळी हुआ रूक राहचके। —कानसिह सक्तावत रौ गीत

रू. भे.—राहाचरक, राहाचरक्क।

राहजनी–सं. स्त्री: [फा.] राह चलते पथिकों को लूटने की क्रिया या भाव, लूट-खसोट, बटमारी।

राहणो–सं. पु.—परिग्रह, दरबारी।

उ०—१ रांणी वाता सुण कहण लागौ, जो आसी चौकस के नही तद उण रै मान दान रै अहसाण सु इतरौ ओलौ प्रोहित राख गयौ, 'जो कुवरसी जी री वस लगां तौ हर भात आसी।' बाकी सारौ सहर देस राहणौ वरजण में छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ कुंवर रा मोहलां सिखाव दियौ। बीजौ पर कामदारां साहुकारा राज रै राहणै अमरावां ठाकुरा सारां वधाई दी। —कुंवरसी सांखला री वारता

राहणौ, राहबौ–क्रि. स.—१ युद्ध करना, लडाई करना।

२ मारना, सहार करना।

३ उद्दड पशु को ठीक करना।

राहत–स. स्त्री [अ] चैन, आराम, सुख।

राहदार–वि.—राह नामक चाल से चलने वाला। (घोडा)

उ०—१ राणी वडै राहदार घोड़े चढी थकी नरसघ री पण मदाह करै। —राजा नरसिंघ री बात

उ०—२ ऐबिया मझै लागति उदार। दुति तीर वेग के राहदार। —सू. प्र.

स. पु—[फा.] १ चौकीदार, प्रहरी।

२ रास्ते पर आने जाने वाले से कर वसूल करने वाला व्यक्ति।

राहदारी–स. स्त्री—१ चौकीदारी।

२ राह पर आने-जाने वालों से कर वसूल करने की क्रिया।

रू भे.—रादारी।

राहबधी–स स्त्री.—विचार-विमर्श, सलाह-मशविरा।

उ०—पछै जिण जोध पोकार सगळे पडी, भरै नही अरज पतिसाह बीठौ राहबधी हुइ रखै कोई रोकसी, देवै जसवत रौ साथ दीठौ। —अ. व. ग्रं.

राहबारी—देखो 'रैबारी' (रू. भे.)

राहबेधी—देखो 'राहवेधी' (रू भे.)

उ०—१ बीजौ माणस राहबेधी छै। जेगे सू थांनै रात-दिन अचौ होसी। —नापै सांखलै री वारता

उ०—२ महाराजा बखतसिंह बडौ बुद्धिमान राजा थौ। राहबेधी थौ। साम, दाम, दड, भेद चारू बात में निपुण थौ। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

राहरीत, राहरीति–स. स्त्री.—१ परंपरा, प्रथा, रूढी, रिवाज।

२ व्यवहार, आचार।

३ लेन-देन ।

राहरूढ़–वि —१ रास्ता रोकने वाला ।

२ मार्ग मे बाधाए उत्पन्न करने वाला ।

राहरूत–वि.—राहु ग्रह के समान ।

उ०—छगा छगा धरि नगा, चढै ग्रासरा महावत । **राहरूत** रवि पूत, धूत थापलिया धूरत । —सू. प्र.

राहलणौ, राहलबौ–क्रि. स —राह पर लाना, सीधा करना ।

राहलियोड़ौ–भू. का कृ.—राह पर लाया हुग्रा, सीधा किया हुग्रा । (स्त्री राहलियोड़ी)

राहवणौ, राहवबौ–क्रि. स.—राह पर चलना ।

२ रीति, प्रथा या परम्परा के ग्रनुसार चलना, रीति निभाना ।

उ०—सहनक तरा सुजारा, पारीसा 'पातल' तरा । तै **राहविया** रारा, एकरा हूँता ऊदवत । —सूरायच टापरचा

[स. रक्षापयति, प्रा रक्खावइ] ३ रक्षा करना ।

उ०—१ पत राखै पडवा, ग्रब कर माफि उपायें । गजपत पत **राहवै**, ग्रनंत सगपत चढ ग्राए । —जगो खिडियौ

उ०—२ पभरगउ जूठिलु राउ माइ म ग्ररगइ तुहि करउ । निय घरि पाछा जायउ लोकु सहूयइ राहवउ । —सालिभद्र सूरि

राहवियोड़ौ–भू. का कृ —१ राह पर चला हुग्रा. २ रीति, प्रथा या परम्परा के ग्रनुमार चला हुग्रा, रीति निभाया हुग्रा. ३ रक्षा किया हुग्रा । (स्त्री. राहवियोडी)

राहवेधी–वि —१ लुटेरा डाकू ।

२ कूटनीतिज्ञ । दाव पेच जानने वाला ।

उ०—१ राव मालदे **राहवेधी** ठाकुर छै । सु नागौर दौलतीया नु कहाडीयौ—राव, वीरमदे म्हा साथै छै । बडा-बडा रजपूत सारा वीरमदे कनै छै । बीरमदे थाहारौ हाथी लायां रहै छै । थे ही वासे ग्रायै मेडतौ मारौ नै बीरमदे रा मारास चवौ-बचौ सारौ बद कर ले जावौ । —नैरासी

उ०—२ पीछै सांगैजी रौ भाई भारमलजी वडौ **राहवेधी** हुवौ । तिकै रतनसी रा भाई ग्रासकररा नू फोरियौ नै कयौ, "राज थांहरौ है ग्ररु रतनसी तौ रात दिन दारू मे मतवाळौ थकौ गैर महला इज रहै छै । —द. दा.

३ दूरदर्शी

उ०—सु गूढा रा लोग सारी वात सांखला रायसी नू जाय कहै छै । सु रायसी **राहवेधी** छै । रायसी धरती लेरा ऊपर निजर राखै छै । —नैरासी

४ नीति निपुरा, नीतिज्ञ ।

उ०—मूळराज रौ हाल हुकम हुवौ सु मूळराज वडौ **राहवेधी**, छै, बीज काकौ ग्राधौ बलाय रा वंधरा छै । —नैरासी

५ चतुर, प्रवीरा, निपुरा ।

उ०—१ बुरहांन पिरा **राहवेधी** रजपूत थौ । इरा रौ सूल ग्रटकळियौ । —राव मालदे री बात

उ०—२ मेघौ टीकै बैठौ । रारगौ मेघौ हुवौ । वडौ रजपूत, वडौ तरवारियौ, वडौ **राहवेधी**, वडौ जोरावर । —नैरासी

६ बड़ा वीर, बडा योद्धा ।

उ०—सागौ वडवज नीबज वसतौ, वडौ **राहवेधी** रजपूत थौ । —नैरासी

७ राह रोकने वाला ।

रू. भे.—राहबेधी, राहावेधी ।

राहाड–स. पु —झगड़ा, लड़ाई ।

उ०—गाम तौ ऐ भूला ग्राया, दुसमरा रै गावै ग्राया, **राहाड़** हुवौ । —प्रतापमल देवडा री वारता

राहाचरक, राहाचरक्क—देखो राहचक' (रू. भे)

उ०—१ वीर हर तिलक वावाडिया, साइदारा वज्जै कटक । 'गजसिंह' कियौ भिड गज दळा, रिरा सग्राम **राहाचरक** । —गु. रू बं.

उ०—२ चउंडराउ चड़िय मोहिल्ल चीति । **राहाचरक्क** देखाळि रीति । —रा. ज सी

राहाली–वि. स्त्री.—१ युद्ध कराने वाली ।

२ राह या मार्ग धाररा करने वाली ।

राहालौ–वि.—१ राह पर चलने वाला ।

२ रीति या परपरा के ग्रनुमार चलने वाला ।

३ न्याय प्रिय ।

४ चरित्रवान ।

५ "राह" चाल से चलने वाला । (घोड़ा)

राहावेधी—देखो 'राहवेधी' (रू भे.)

उ०—१ पिरा रा. वीरमदे **राहावेधी** हजार बात पातसाह नूं सुरगाई ग्रागलौ मायलौ सहल कर दीखायौ । —नैरासी

उ०—२ रारगौ **राहावेधी** देवीदास हुतौ, तद ही समझ गयौ—बीजौ मारियौ राव रै साथ सीवारगौ लियौ, हिमें राव मोनूं मारसी । —नैरासी

राहावेहु—देखो 'राधावेध' रू. भे.)

उ०—तीरएं परीक्षां गुर तरगी पुगउ एकु जु पत्थु । **राहावेहु** तउ सिखवइ मच्छइ देविरा हत्थु । —सालिभद्र सूरि

राहि, राही–स. पु [फा] राहगीर, पथिक, मुमाफिर, यात्री ।

राहीया—देखो 'राधा'

राहु–सं. पु. [स.] १ नव ग्रेहों में से एक ग्रह जो पुराणानुसार विप्र-

चित्त के वीर्य और सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
उ०—राहु केत रिख ग्रहण, नवै ग्रह साति करै नित। —ह. र.
२ उक्त नाम का दानव जो प्रच्छन्न रूप में अमृत पान करने के बाद राहु व केतु दो ग्रहों के रूप मे परिवर्तित हो गया।
३ ग्रहण।
रू. भे.—राह, राहू।
४ रोहू नामक मछली।

राहुग्रसण, राहुग्रसन—स. पु. [स. राहु- ग्रसनं] १ सूर्य या चन्द्र का राहु के द्वारा ग्रसा जाने की अवस्था या भाव।
२ ग्रहण।

राहुग्रास—सं. पु. [स.] ग्रहण।

राहुदरसण—स पु. [सं. राहु+दर्शन] ग्रहण।

राहुभेदी—सं. पु. [सं. राहु+भेदिन] विष्णु।

राहुरत्न—स. पु. [स] राहु के दोष का शमन करने वाली गोमेद मणि।

राहुल—स. पु [सं.] गौतम बुद्ध का पुत्र।

राहुसूतक—स. पु. [स.] ग्रहण।

राहू—वि.—१ काला। *
२ श्वेत। *
३ देखो 'राहु' (रू. भे)
उ०—ग्रहण-वेलाई गल-समा, पइसी पाणी माहि। रूडी मत्र जपइ रहइ, राहू तणी जिहा छाहि। —मा. का. प्र.

राहूड़ौ—सं. पु.—एक प्रकार का घोडा जिसके होठ छोटे होते है। (अशुभ)

रिंग—सं. स्त्री. [अ.] १ अंगूठी, मुद्रिका।
२ अगूठी या चूडी के अनुसार कोई गोलाकार वस्तु।

रिंछी—सं. स्त्री.—देखो 'रीछी' (रू. भे.)

रिंछ्या—देखो 'रक्षा' (रू. भे)
उ०—म्हारौ बेटौ राजा रै सागै मिनख ई व्हैला। वौ अकरमी अर अन्याइया सू रया री रिंछ्या करैला। खुद परजा रौ धणी नी होय उण रौ चाकर व्हैला। —फुलवाडी

रिंजक—देखो 'रिजालौ' (रू. भे.)
उ०—रिजक प्याला सोरही झाला जगमगै। यारो परलै काळदी, ज्वाळांनळ जगै। —ला. रा.

रिंजाळौ—वि.—देखो 'रिजालो' (रू. भे)
उ०—हिसार रा लोग महा रिंजाळा मो कुड़ी बातां रा फड लगाय पग छुडाय दिया। —मारवाड़ रा अमरावा री वारता

रिंझणौ, रिंझबौ - देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू भे)

रिंझवार, रिंझवारौ—देखो 'रिझवार (रू. भे.)

रिंझाणौ, रिंझाबौ—देखो 'रीझाणौ, रीझाबौ' (रू.भे.)

रिंझायोड़ौ—देखो 'रीझायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रिंझायोड़ी)

रिंझावन—स. स्त्री.—मोहित, मुग्ध या आकर्षित करने की क्रिया या भाव।
उ०—नरतत मोर पपईया बोलै, मदन नरेस रिंझावन वार। —रसीलै राज री गीत

रिंडी—स स्त्री.- वह गाय, जिसके सींग ऊपर न उठकर पीठ की ओर हुए होते है व ललाट चौडा होता है तथा जिसका रग लाल व चितकबरा होता है। रेडी।

रि—स स्त्री. [स.] १ चलने या जाने की क्रिया या भाव।
२ देखो 'रै' (रू. भे.)
उ०—धिगु रि धिगु रि धिग दैव विलासु, पंचह पंडव हुइ वण-वासु। —सालिभद्र सूरि

रिआयत—स. स्त्री. [अ.] १ नियमादि में किसी कारण-वश की जाने वाली शिथिलता, ढील, छूट।
२ किसी कार्य में दी जाने वाली सहूलियत, जिससे कार्य की गुरुता कम हो सके, राहत।
३ अनुग्रह, नर्माई या कोमलता का व्यवहार।
उ०—एक दिन बादसाह उमरावा सूं कही–मै आज तलक रैयत री रिआयत में थौ, आज पछै रिआयत वरतरफ करूं छूं जो गस-लत होय तौ आवौ रैयत नू लूट लेवा, रैयत रै कुछ न रहण देवा। —नी. प्र.
४ पक्षपात।
५ विशेष रूप से किया जाने वाला ख्याल, ध्यान।
६ वस्तु के मूल्य में की जाने वाली कमी या छूट।
रू भे. – रयायत, रियायत।

रिआया—स स्त्री. [अ. रआया] प्रजा, जनता।

रिउ—देखो 'रौ' (रू. भे.)
उ०—दउढ वरस री मारूवी, त्रिहु वरसा रिउ कत। उण रउ जोवन बहि गयउ, तू किउं जोव्रन वंत। —ढो. मा.

रिक—देखो 'रिख' (रू. भे.)

रिकत, रिकतक—देखो 'रिक्त' (रू. भे.)

रिकता—१ देखो 'रिक्तता' (रू. भे.)
उ०—चमकता डागळ गोडा चिक चिकता। जंतू जळ रिकता सिकता में सिकता। —ऊ. का.
२ देखो 'रिक्ता' (रू. भे.)

रिकता तिथ—देखो 'रिक्ता'

रिकथ—देखो 'रिक्थ' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

रिकसा—१ देखो 'रिक्षा' (रू. भे.)

२ देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

रिकसौ—स. पु.—तीन पहियों की साईकिल नुमा गाडी जिसमें पीछे दो आदमियो को बैठाकर एक आदमी चला सकता है।

रिकाब—स पु [अ.] १ सवारी का ऊट।

उ०—बरकदाज १००० अलाहुधा। १२६८३ **रिकाब**, आसांमी १७६। ६५६४ जागीरी सुधा आसांमी। —नैणसी

२ देखो 'रकाब' (रू. भे.)

रिकाबी—देखो 'रकाबी' (रू. भे.)

रिकारौ—'रैंकारौ' (रू. भे.)

उ०—तुकारे **रिकारे** जिकोरे तमासू, आया आज सो माफ कीजै अमासू। —ना. द.

रिक्ख—१ देखो 'रिसि' (रू. भे)

उ०—१ रहै रत ध्यान अठयासी **रिक्ख**। लहै नंह पार ब्रहम्मा लक्ख। —ह. र.

उ०—२ गडग्गड जोगणि रत्त गिळंत। हुडहुड नारद **रिक्ख** हसंत। —गु. रू. बं.

२ देखो 'रिख' (रू. भे.)

रिक्खभ—देखो 'रिसभ' (रू. भे.)

उ०—राव बैंकुठ धनतर **रिक्खभ**, गरुड़ारूढ विसन प्रसणीग्रभ। —ह. र.

रिक्खि—देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—हुडाहुड़ **रिक्खि** हुए हर हार। जयज्जय जोगणि किद्ध जिग्रार। —वचनिका

रिक्त—वि. [सं.] १ खाली किया हुआ, रीता।

२ रहित, विहीन।

उ०—कुंळहीन अंग चरमा वितुंड, बबीळ उरद्ध सिर महिस मुड। रडाळ बाळ बिथुरे असुभ्र, लज्या विहीन सिर **रिक्त** कुंभ। —ला. रा.

३ शून्य।

४ खोखला, थोथा।

५ विभक्त, वियुक्त।

६ मोहताज, गरीब, निर्धन।

स. पु. [स रिक्त] १ खाली या रिक्त स्थान।

२ वन, जगल।

३ आकाश।

रू. भे.—रिकत, रिकतक।

रिक्तता—स. स्त्री. [सं. रिक्त+ता प्र.] १ रिक्त या खाली होने की दशा, अवस्था या भाव।

२ गुजाईश, अवकाश।

३ खोखलापन।

४ शून्यता।

५ गरीबी, निर्धनता।

६ विहीनता की दशा।

रू. भे.—रिकता।

रिक्ता—स. स्त्री. [सं.] चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी की तिथिया, जो शुभ कार्य के लिये वर्जित मानी गई है। (फलित ज्योतिष)

वि. स्त्री.—विहीन।

रू. भे.—रिकता, रिगता।

रिक्तारक—स. पु. [स. रिक्तार्क] चतुर्थी, नवमी, या चतुर्दशी की वह तिथि जो रविवार को पड़ती है।

रिक्थ—सं. स्त्री. [स. ऋक्थम्] १ धन सम्पत्ति।

२ वह सम्पत्ति जो उत्तराधिकार में मिली हो।

३ स्वर्ण, सोना।

५ व्यापार या लेन देन मे लगी हुई पूंजी।

रू. भे.—रिकथ, रिखथ।

रिक्ष—१ देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—रिक्ष तेडौ व्रक्ष आंणौ, सयल भार अढार। प्रथम पीपल साग सीसमइ, आमली अधिकार। —रुकमणी मंगळ

२ देखो 'रिख' (रू. भे.)

रिक्षा—सं. स्त्री. [सं. लिक्षा] १ जूं का अंडा, लीख, लिक्षा।

२ चार या आठ तृसुरेणु के बराबर की एक तौल।

रू. भे.—रिकसा।

३ देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—ग्रहणा सेवन दुइ सिक्षा, सीखी संजम नी **रिक्षा**। —कवि सार

रिक्षास्त्र—स. पु.—एक प्रकार का अस्त्र।

उ०—नागास्त्र गुरुडास्त्र सवरत्तकास्त्र मेघास्त्र प्रलयकालास्त्र **रिक्षास्त्र** आग्नेयास्त्र वारुणास्त्र दानवास्त्र········· —व. स.

रिखंभ—देखो 'रिसभ' (रू. भे.)

उ०—नमौ रुसि तापस-रूप **रिखंभ**। नमौ अवतार उदार असंभ। —ह. र.

रिख—सं. पु [सं. ऋक्ष] १ तारे, नक्षत्र। (अ. मा.)

उ०—१ राहु केत **रिख** अरुण, नवै ग्रह साति करै नित। —ह. र.

—ह र

उ०—२ महि प्रगटि रास विलास मगळ, अमळ रेरा अकास ए। सोभति रिख गरा चद्र सोभा, किरण जगमग कास ए। —रा. रू.

२ सूर्य। (नां मा.)

[स. ऋषि] ३ सात की सख्या।

उ०—आसाढऊ सुद नवमि, गुरा आगे रिख (१७३७) लेख। जिके समतसर जोधपुर, समहर थयौ विसेख। —रा. रू.

रू. भे.—रख, रिक, रिक्ख, रिक्ष, रिख, रिख्ख।

अल्पा.,—रिखडउ, रिखडौ।

४ वन, जंगल। (अ. मा.)

उ०—रिख बद्री अनै अरबद तणा, तप कर कर तन तजियौ। मौकमा कर्मध मोटा मिनख, तैं जीव 'र कासूं कियौ।

—अरजुन जी बारहठ

५ वट वृक्ष। (नां. मा.)

६ रामदेव के उपासक वर्ग का नाम। (मा. म.)

७ रीस, गुस्सा।

उ०—ना रिख करणौ है भलौ, धीर धारिये चित्त। भोळौ टाबर बेसमझ, ग्यान न वीरे चित्त। —सूरे खीवे काधळोत री बात

८ देखो 'रिसि' (रू. भे.) (अ. मा., ना. मा.)

उ०—१ जोडै पारा महिपत जपै, को रिख आग्या कीजै। आग्या एक सुणौ न्रप आगम, सग उभै सुत दीजै। —रा. रू.

उ०—२ पदमरा रिख असमान पहूंती। पखां विनां जिहान पढीजै। —र. ज. प्र.

उ०—३ नै हारीत रिख विमान वैस चालतौ थौ सु बापा नू तेड़िया थौ सु मोड़ैरौ आयौ, सु पछै बापा नू रथ बैसतां बाह झाली, बापा री देह हाथ दस बधी। —नैणसी

उ०—४ हृद ओपमा तेरा रिख हासा। पवन झुलै किर फुलै पळासा। —सू. प्र.

रिखग्रंख—स. पु.—तीन अथवा सात नेत्र।

उ०—लघू मध्य रगरा फळ अतक पत पवन लख, तात अतु जरा तन रगत आतंख। रखेसुर अगारख भेड पुरा रौद्र रस, उजेणी न्रपत कुळ सूद्र रिखग्रंख। —र रू.

रिखग्ग—सं. पु. [स. ऋक्षः] तारा, उडगन।

उ०—झडा करि-माळ रिखग्ग झडंत। पडै भूइ धाउ निहाउ पडत। —गु. रू ब.

रिखडउ, रिखड़ौ—देखो 'रिसि' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ रिखड़उ रमतउ थकउ, चाल्यउ चंचल चित्त रे। उतावलइ आव्यउ अयोध्या, राज लेवा निमित्त रे। —स. कु.

उ०—२ नै मरंद न जोरू लख्या नहीं जावत, मस्तक मुडित कम्र फडा। अचरिज्ज भया मोहि देख नही एहु, कुरा दुकारा देखउ रिखड़ा। —स. कु.

२ देखो 'रिख' (अल्पा., रू भे.)

रिखथ—देखो 'रिक्थ' (रू भे.) (ह. ना. मा.)

रिखदेव—सं. पु.—शिव, महादेव।

उ०—पतित न्हाय व्है पीतपट, दिपै निकट रिखदेव। नचै मुगत नटनार ज्यु, स्रीगंगा तट सेव। —बा. दा.

रू. भे.—रिसिदेव।

रिखधुनि—स. स्त्री [सं. ऋषि + ध्वनि] गंगा नदी। (ह. ना. मा.)

रिखपंति—सं. स्त्री. [स. ऋक्ष+पंक्ति] नक्षत्रों की पंक्ति, कतार।

उ०—आरणद सु जु उदौ उहास हास अति, राजति रद रिखपंति रुख। नयरा कमोदरणी दीप नासिका, मेन केस राकेस मुख।

—वेलि

रिखपत, रिखपति—सं. पु. [सं. ऋषि-पति] ऋषि-श्रेष्ठ, ऋषिराज, मुनिराज।

उ०—पचवटी पहुंता सुणै रिखपत, उमंग सगळा आविया। प्रफुलत पकज जारा खटपद, हिये यू हरखाविया। —रा. रू.

रिखपांचम—देखो 'रिसिपांचम' (रू. भे.)

रिखपूनम—देखो 'रिसिपूरणिमा' (रू. भे)

उ०—सीकर रै धरणी सेखावत देवीसिंध भायां नू साथ ले खाटू कजियौ कियौ रिखपूनम रै दिन। —बा. दा. ख्यात

रिखब—स. पु. [स. ऋष्वः] १ इन्द्र। (ना. डिं. को.)

२ सूर्य। ३ अग्नि।

रू. भे.—रिखव।

४ देखो 'रिसभ' (रू. भे.)

उ०—कूरम मछ रिखब कपिल, खोधी अम्रत खाड। भगतवछल तैं भांजिया, हरणाकुस रा हाड। —पी. ग्रं.

रिखबदेव—देखो 'रिसभदेव' (रू. भे.)

उ०—प्रीतम आसी पांवणौ, उग्यासी आथांरा। सुपनौ आयौ हे सखी, रिखबदेव री आंरा। —पनां

रिखभ—देखो 'रिसभ' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ नाभि सुत नमौ रिखभ नरेस, वरीयांम वाघ नरसिंघ वेस। वाह हो वाह बांमरा बडाळ, दुज रांम नमौ दीनां दयाळ। —पी. ग्रं.

उ०—२ धवला नै माता धरा, बले छोटी सिंगड़ियां जांरा रै लाल। दोनूं बराबर दीसता, तूं एहवा रिखभ आंरा रे।

—जयवांणी

उ०—३ पांचमों रिखब नांम, पूरै सब इच्छा कांम। कांम धेनु कांम कुंभ कीने सब मादि मादि। —वि. कु.

उ० —४ खड़ग रिखभ गधार, मद्दि पचहम निखादह। सरिस कठ सुर-सपत, गीत सगीत अलापह। —गु. रू. ब.

रिखभजिन—देखो 'रिसभजिन' (रू. भे. (स. कु.)

रिखभदेव—देखो 'रिसभदेव' (रू. भे.) (ना. मा.)

उ०—१ पुत्र अगनिध्वज, पुत्र नाभिराजा, मोरादे भारया पुत्र **रिखभदेव**। रिखभदेव भारया—२, सुनदा १, सुमगळा २। —रा. वशावली

उ०—२ सुरासुर सरव करै जसु सेव, दियै सुख वछित **रिखभदेव**। —ध. व. ग्र.

रिखभधुज—स. पु. [सं. ऋषभध्वज] शिव, महादेव।

रिखभांनन—सं. पु. [स. ऋषभान्न] सातवें बिरहमान का नाम।

रिखमंडळ—सं. पु [स. ऋक्ष=मण्डल] १ नक्षत्र मण्डल, तारा मण्डल, आकाश, नभ।

२ तारे, नक्षत्र।

रू. भे.—रखमडळ।

३ देखो 'रिखमडळी' (रू. भे.)

रिखमंडळी—सं. पु. [सं. +ऋषि-मण्डली] १ ऋषि-समूह, मुनि महात्माओं की मण्डली।

२ हंस। (अ मा.)

रू. भे.—रिखमडळ।

रिखमातंग—स पु —मातग ऋषि।

रिखमूक—देखो 'रिस्यमूक' (रू. भे.)

उ०—रघुराजा! रे रघुराजा! **रिखमूक** गिडंद दराजा। —र. रू.

रिखयंद—सं. पु. [स. ऋषि-इन्द्र] ऋषिश्वर, मुनिश्वर।

रिखय—देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—**रिखय** भख कर रखवाळ, तारी रिख धरणी चरण रज हूंता। —र. ज. प्र.

रिखया—सं. पु. [सं. ऋषि] बाभी जाति के वे लोग जो रामदेवजी की अधिक भक्ति रखते हैं। (मा. म.)

रिखरांण, रिखराज—देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)

उ०—१ तहक नीसाणा गिरवाण हरखांन तन, चितां सरसांण रभगाण चाळै। निडर **रिखरांण** गणपाण बीणा नचै, भाण रथतांण घमसांण भाळै। —र. रू.

उ०—२ नमौ नमौ सिध साध, नमौ **रिखराज** मुनिवर। नमौ नमौ पित मात, नमौ स्रव देव पुरदर। —ऊदोजी नैण

रिखराजि—स. स्त्री. [स. ऋक्ष-राजि] तारो की पक्ति।

रिखराय—देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)

उ०—यो वरखा रितु ऊतरी, आवी सरद सुभाय। पित्रेसुर कीजै प्रसन, पोखीजै **रिखराय**। —रा. रू.

रिखव—१ देखो 'रिखब' (रू. भे)

२ देखो 'रिसभ' (रू. भे)

रिखवर—देखो 'रिसिवर' (रू. भे)

उ०—दधि पियण **रिखवर** जाणि अण डर, समर जाळण तिकर सकर। चूर त्रिण तर पसर वनचर, कना मेटण तिमर रवि कर। —रा. रू.

रिखवरणी—देखो 'रिसिवरणी' (रू भे.)

उ०—पै रज **रिखवरणी** गतिपाई, पळ तरणी भीवर तिरवाई। भण सीता रघुवर रघुवर सीता, सीता रघुवर भण भाई। —र. ज. प्र.

रिखव्रत—देखो 'रिसिव्रत' (रू. भे.)

उ०—इम करता रभ कोड इलाजा। **रिखव्रत** चित डिगयौ नहराजा। —सू. प्र.

रिखसपत—देखो 'सप्तरिसि' (रू. भे)

उ०—सपत चिरजी **रिखसपत**, सो भी सचीयारा। —केसौदास गाडण

रिखसर—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे)

उ०—आस्रम चौथे आय, राज तजता राजेसर, बेटा नै जुवराज देर, हो जाता **रिखसर**। —अरजुन जी बारहठ

रिखसात—देखो 'सप्तरिसि' (रू. भे.)

उ०—सपत दीप **रिखसात**, सातइ समदु। नवइ नीय ही हाथ जोड़ै नरिदु। —पी. ग्र.

रिखस्त—सं. पु. [स. ऋषि-अस्थि] वज्र। (ना. मा.)

रिखहेसरु—देखो 'रिसिस्वर' (रू. भे)

उ०—सैत्रुंजै नायक वीनति साभलौ, स्त्री **रिखहेसरु** स्वाम। दीन दयाल तुम्हाने दाखिवुं, अंतर बीतग आम। —ध. व. ग्र.

रिखि—देखो 'रिसि' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ तरै हारीत **रिखि** महादेवजी रौ ध्यांन कीयौ, उग्र स्तुत करी, तिण थी पहाड़ प्रथ्वी फाड नै ज्योतिर्लिंग स्त्री एक लिंगजी प्रगट हुवा। —नैणसी

उ०—२ त्रिजड़ आवाह 'किसनेस' हर 'बिसन' तण, **रिखि** हड़हड़ हसै समर रीधी। —दलपत सादू

उ०—३ वग **रिखी** राजांन सु पावसि बैठा। सुर सूता थिउ मोर सर। चातक रटै बलाहिक चचळ, हरि सिणगारै अंबहर। —वेलि

२ देखो 'रिख' (रू. भे.)

उ०—उच लगन लखि रिखि उरधि, सब कूरा प्राचिय सुरधि। रचि कनक वेह सुरंग, श्रीपति नव खण श्रग। —रा. रू.

रिखियौ–स. पु.—रामदेव जी का भक्त "रिखया" चमार जाति का व्यक्ति।

रिखिराज, रिखिराय—देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)

उ०—१ बोधि लता कापी पापी में तेडाव्यौ **रिखिराज** जी। —श्रीपाल रास

उ० २ साभल चित्त अति हरखित हुवौ रे, रथ पर बैसी आय। मुनि वादि ने वाणी साभले रे, उपदेस दे **रिखिराय**। —जयवाणी

रिखी—देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—१ कोटन **रिखी** सील के कारन, परम मुक्ति जिन पाई। ऊमरदांन अब सील अराधत, पर हर नार पराई। —ऊ. का.

उ०—२ रज पाय परस जिम नार **रिखी**, तज देह सिला छिन माह तरी। —र. ज. प्र.

रिखीग्रस्त—देखो 'रिसिग्रस्त' (रू. भे.)

रिखीकेस, रिखीकेसू—देखो 'रिसीकेस' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ समवाद **रिखीकेस** पाघरौ सभारियौ क, सिवा देण गाथ रौ उचारियौ सरस्स। बीछडेबौ साथ रौ प्रमाद भू विचारियौ, दूजा गोपीनाथ रौ जुहारियौ दरस्स। —साहिबौ सुरताणियौ

उ०—२ बेद में विधाता हरी सत रौ चंदेस वाच, माधवांन छोळ श्रोप **रिखीकेस** नांम। —भगतरांम हाडा रौ गीत

रिखीपचमी, रिखीपांचम—देखो 'रिसिपाचम' (रू. भे.)

रिखीमूक—देखो 'रिस्यमूक' (रू. भे.)

उ०—**रिखीमूक** कर नवरता, पूज सगत जगपाळ। सवळ कूच करवा समै, बाजै तहक त्रमाळ। —र. रू.

रिखीराज, रिखीराय–देखो 'रिसिराज' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ सूरां पूर झाटा माची भ्रकूटा उठावै संभू साची तान लावै रभा रचावै संगीत। **रिखीराज** बावै वीण प्रवीण हरख्खा रतौ गावै सुखा चौसठी अंगूठां रखां गीत। —बद्रीदास खिडियौ

उ०—२ मास खमण नइ पारणइ, पडिलाभ्यउ **रिखीराय**। सालिभद्र सुख भोगवइ, दांन तणइ सुपसाय। —स. कु.

रिखीस, रिखीसर, रिखीसुर, रिखीस्वर—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)

उ०—१ देवीधीस **रिखीस** ईस अजय ते सेव पारायण। पायं कंज 'किसन्न' रक्खि सरणं आणद कारायण। —र. ज. प्र.

उ०—२ एकइ पग ऊभउ रहइउ रिखी रूडउ रे, सूरजि सांमी द्रस्टि **रिखीसर** रूडउ रे। —स. कु.

उ०—३ बापा री **रिखीस्वर** बांह झाली हाथ दस बापा रौ डील बधियौ। —नैणसी

उ०—४ मारग विखै भेळा होय न सक्या नगर माहि पैठा तव दून्यौ भाई एकठा होय पैठा। सजन दुरजन नर नारी नाग **रिखीस्वर** राजा समस्त देखै लागा। —वेलि टी.

रिखू—देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—चार निगमूं की उक्त सपतादि **रिखूं** के गण रिख पतनिया। —र. रू.

रिखेंद्र—देखो 'रिसींद्र' (रू. भे.)

उ०—रिखे तेडै सुसरौ दमरथ। —रा. रा.

रिखेस, रिखेसर. रिखेसुर, रिखेस्वर—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ रटै नृपेस हो **रिखेस**, आप एह उच्चरी। पयंस रांम नीर पेखि पेखि, मीन ज्यां परी। —सू. प्र.

उ० –२ सहस अठ्यासी **रिखेसर**, अणवर ब्रह्मा ईस। मिळिया मेळै साभिरै, सुर कोडै त्रेतीस। —पी. ग्रं

उ०—३ आए सु गुलम **रिखेसुर** अखि। —रा रा.

उ०—४ भयंकर रूप भुजां जुध भार। हणै खळ भूप भणै बळिहार। खणाखण खेटक भेटत खाग '**रिखेस्वर**' बीण झणाझ्झण राग। —मे. म.

रिख्ख—१ देखो 'रिसि' (रू भे.)

उ०—वडा सिध **रिख्ख** भणै जसवास। वांछै तौ श्रोवण सेवा खास। —मा. वचनिका

२ देखो 'रिख' (रू. भे.)

रिख्या—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—१ आसण गूढ करूं पण आसुर, ज्याग विधुंसे जावै। **रिख्या** बाट करै जो राघव, थाट संपूरण थावैं। —र. रू.

उ०—२ पछै देवी ऊपर लाघण पांच दस किया। देवी प्रसन हुई, कह्यौ—तूठी, मांग। तरै कह्यौ—गढ़ करण दीजै गढ़ री राज **रिख्या** करौ। —नैणसी

रिख्यावत–वि. [स. रक्षा+वत्] रक्षा करने वाला।

उ०—महादेवजी तौ **रिख्यावंत** त्यूं खपति पिण सूपी। पाछला जीव वधता देखै तरै आगला जीव खपाय देवै। —रा. वसावळी

रिग—देखो 'रिगवेद' (रू. भे.)

रिगटोळ–सं. स्त्री.—हंसी, मजाक।

उ०—रमता कर **रिगटोळ**, खूंदता मारग हालै। खळा रूंसिया खोद, घाव खाई दे घालै। —दसदेव

रिगणौ, रिगबौ–क्रि. अ.—ललचाना, झींकना।

उ०—घेर सबळ गजराज, केहर पल गजकां करै। सो सठ कर कम-

काज, रिगता ही रह राजिया। —किरपाराम

रिगतणौ, रिगतबौ—रू. भे

रिगतणौ, रिगतबौ—देखो 'रिगणौ, रिगबौ' (रू. भे.)

रिगतभिच्छा–स. स्त्री.—मामूली वस्तुओ के लिए-बार बार भीख मागने की क्रिया या भाव।

रिगता—देखो 'रिक्ता' (रू. भे.)

रिगतियोडौ–भू का. कृ—लालायित हुवा हुआ, भीका हुआ।

(स्त्री रिगतियोडी)

रिगतियौ, रिगतौ–सं पु—देखो 'रगत्यौ' (रू भे.)

रिगदोळणौ, रिगदोळबौ—देखो 'रगदोळणौ, रगदोळबौ' (रू. भे.)

रिगदोळियोडौ—देखो 'रगदोळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री-रिगदोळियोड़ी)

रिगरिगाड़–स. स्त्री.—हिचकिचाहट, झिझक।

रिगल–सं. स्त्री—हंसी, दिल्लगी, मजाक, ठठा।

उ०—तुरत बिगाडै ताह, परगुन स्वाद स्वरूप ने। मित्राई पय माह, **रिगल** खटाई राजिया। —किरपाराम

रिगवेद–स. पु. [स. ऋग्वेद] चार वेदो मे से एक, ऋग्वेद।

रू. भे.—रग, रगबेद, रगवेद, रिग, रुग, रुघवेद, रुघव्व।

रिगवेदी–वि. [स. ऋग्वेदिन्] ऋग्वेद का जानने वाला, ऋग्वेद का ज्ञाता।

रू. भे.—रघुवेदी।

रिगसणौ, रिगसबौ–क्रि. सं. [स. रिंख] १ शरीर या शरीर के अग को घसीटते हुऐ धीरे धीरे चलना, खिसकना, सरकना, रेंगना।

उ०—१ कितराहेका का तिग टूट गया छै। तिकै **रिगसता** थका लफ लफ कोट रै जाय जाय कटारी लगावै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिघ री वात

उ०—२ दिन ५ ऽ ६ गुदरीया ताहरा एक दिन दोपहर री बरिया खीमौ **रिगसतौ रिगसतौ** आयौ। —चौबोली

२ चलायमान होना, गतिमान होना।

उ०—घट में गगा गोमती, ता विच किया सिनान। जन हरीया मन **रिगसीया**, ऊचा घर असमान। —अनुभववाणी

३ खिचना, तनना, तनाव खाना।

उ०—और गांठ खुल जात है, जह लग पूरो हाथ। प्रीत गांठ नैणा घुळी, **रिगस रिगस** अड जाय। —अग्यात

४ घूमना, टहलना।

रिगसणहार, हारौ (हारी), रिगसणियौ—वि०

रिगसिओड़ौ रिगसियौड़ौ, रिगस्यौड़ौ—भू० का० कृ०।

रिगसीजणौ, रिगसीजबौ—कर्म वा०।

रिगसियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ शरीर को घसीटते हुए चला हुआ, सरका हुआ, खिसका, हुआ, रेगा हुआ. २ चलायमान हुवा हुआ, गतिमान हुवा हुआ. ३ खिंचा हुआ, तना हुआ. ४ घूमा हुआ, टहला हुआ।

(स्त्री रिगसियोड़ी)

रिड़–स पु.—१ भैंस के बोलने का शब्द।

उ०—भैस्यां रिडकै **रिड़** गायां रभावै। प्राणी तिरखातुर पाणी कुण पावै। —ऊ. का.

२ ककरीली भूमि।

३ समूह, भीड।

४ युद्ध, टंटा।

रिड़क–स स्त्री.—भैस के बोलने की आवाज।

रू. भे.—रडक।

रिड़कणौ, रिड़कबौ–क्रि. स.—१ भैस का बोलना।

उ०—भैस्या **रिड़कै** रिड गाया रंभावै। प्राणी तिरखातुर पाणी कुण पावै। —ऊ. का.

२ लुढकना, घुडकना।

रडकणौ, रडकबौ—रू. भे.

रिड़कली–सं. स्त्री—छोटी पहाडी।

मह.,—रिडकलौ।

रिड़कलौ—देखो 'रिडकली' (मह., रू. भे)

रिड़णौ, रिड़बौ–क्रि स.—१ नगाडे या ढोल का बजाना।

२ युद्ध करना।

रिड़मल–स. पु. [सं. रण-मल्ल] १ योद्धा, वीर।

२ जोधपुर के संस्थापक राव जोधाजी के पिता का नाम।

उ०—**रिड़मल** ने मरुधर थळवट रौ, राज दियौ बगसाय।

—राघवदास भादौ

३ राव रिड़मल राठौड के वशजों की एक शाखा या उस शाखा का व्यक्ति।

रू. भे.—रड़मल, रडमाल, रिड़मल्ल, रिड़माल।

रिड़मलवट–स. स्त्री—शूरता, बहादुरी।

रिड़मलोत–सं. पु.—राठौड़ राजपूतों की एक उपशाखा व इस उपशाखा का व्यक्ति।

रिड़मल्ल, रिड़माल—देखो 'रिड़मल' (रू. भे.)

उ०—१ है गै रथ पायक हैसल्लां, मिळिया दळ जोधां **रिड़मल्लां**। महि मेड़तै सभाळै मारू, सझि खडिया दिल्ली पुर सारू।—रा. रू.

उ०—२ 'बखत' सुत ग्राऊवै झाट खग बजाई, काट घरा दळां रजवाट केवैं। मुरधरा ढाल मग बिरंग रंग मिटायौ, सुरंग रंग कियौ रिड़मल 'सेवै'। —ठाकुर सिवनाथसिंघ कूंपावत रौ गीत

रिड़ारिड़—स. स्त्री. [अनु.] एक ध्वनि विशेष।

क्रि. वि.—लगातार, क्रमशः।

रू. भे.—रिड़ोरिड।

रिड़ी—देखो 'रडी' (रू. भे.)

रिड़ोरिड़—देखो 'रिड़ारिड (रू. भे.)

रिड़्यौ—क्रि. वि.—अपने आप गिरा हुग्रा।

उ०—वेरी तौ पाडा, ग्रो देवरिया, नारी-मरद को। नारी होय तौ पड़्या रिड़्या फळ खाय। मरद हुवै तौ तोडै फूल गुलाब रौ। —लो. गी.

रिचा—सं. स्त्री. [सं. ऋचा] १ वेद मंत्र जो पद्य मय हो, वेद स्तोत्र।

२ ऋग्वेद की ऋचा।

३ ऋग्वेद।

४ चमक, कान्ति।

५ प्रशंसा।

रिच्छक—देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

उ०—ग्रभ गंजण रिच्छक, सरणागत, सताभव भजण ससार। सद उपमा जितरी तौ साजै, तितरी ही छाजै करतार। —र रू.

रिच्छया, रिच्छा, रिच्छ्या—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—ज्यांरी रिच्छ्या देवता, सेवा पीर प्रधांन। त्या ग्रणचीती सपजै, मुसकळ में ग्रासांन। —रा. रू.

रिछक—देखो 'रक्षक' (रू. भे.)

रिछपाळ—देखो 'रक्षपाळ' (रू. भे.)

उ०—१ देबियां जोत ऊदोत करि दोवडी, लोवडीयाळ हूं सीख लीधी। ताकवा रिजक रिछपाळ सागर तणा, कंवरि भुरजाळ हूं सिद्ध कीधी। —मे. म.

उ०—२ भोजन कारण भेद्य, जळावै साझ सवारै। रोज ग्रह रिछपाळ, वाडती बा' रे लारै। —दसदेव

रिछपाळौ—देखो 'रक्षपाळ' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—बन मे तौ चिड़िया चूंचाई, कव्वा बोल्या कारै। मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सब संतन रिछपाळै। —मीरा

रिछ्या—देखो 'रक्षा' (रू भे.)

उ०—१ साम ही लखै प्रतिव्यम सार, कामळा तब ये रिछ्या कंवार। थित एक रखै मुझ सोक थाय, जाखी करा जोखम कुसळ जाय। —पा. प्र.

उ०—२ प्रभु को ध्यांन धरै रही, पति की रिछ्या काज। तातै करी निवाज कै, दिव्य देह गहराज। —गजउद्धार

रिजक—स पु [अ. रिज्क] १ ग्राजिविका, रोजी, जीवन वृत्ति।

उ०—१ दादू रोजी राम है, राजिक रिजक हमार। दादू उस परसाद सों, पोख्या सब परिवार। —दादूबाणी

उ०—२ म्हारै रिजक री सोगन कालै रौ सपनौ देख्यां पछै तौ म्हामै ग्रर बिरमाजी में कीं लांबौ चोडौ फरक निगै नीं ग्रायौ। —फुलवाडी

२ ग्रामदनी, ग्राय।

उ०—१, धारा घर खंची जळधारा, सोबा रिजक विना हुय सारा। ग्रसुरां मुलक मेघ ग्रोछाणा, थया सचींत सहर पुर थांणा। —रा. रू.

उ०—२ सीखौ दाखौ सास्त्र सहु, ग्रागम ग्यान ग्रछेह। साइ रै हाथै सही, मीच रिजक नै मेह। मीच रिजक नै मेह, एह छै वातां ऊंडी, कासूं झूंटै कह्या, हाथ परमेसर हुडी। —ध व ग्रं.

३ रोटी, भोजन।

उ०—रजपूताणी रहै रिजक बिन, धरम पतीव्रत धारी रे। बिदराणी परदा मे बैठी, किसब कमावै सारी रे। ऊ. का

४ ग्रन्न, ग्रनाज।

५ सेवा-चाकरी या नौकरी मे मिलने वाली जागीर।

उ०—१ तद ठाकर ग्रापरै भायां रजपूता सू सला करी। ग्रर कयौ, "जन्म ग्रण तौ देह रौ सबध छै पण ग्राछै परत पर मरिया नांम रहै"। तद भाया साराई कयौ जो मोटौ परब है तथा घणा राठौड़ा इण नू ईमान वदळ नै पकड़ाया है। सू ग्रापा इण बदळै मरा तौ इसौ परब मिळै नही, तथा ग्रापणै बीकानेर री रिजक तौ नही है पण जोधपुर रा राजा छै ज्यूंई बीकानेर रा धणी छै। —द. दा.

उ०—२ नमसकार सूरा नरा, बिरद नरेस बरम्म। रिजक उजाळै सांम रौ, पाळै सांम धरम्म। —बां. दा.

६ प्रतिष्ठा।

उ०—रजपूत तौ पलक मुजरै वास्तै उमर सारी सोवै। सु ईयै न्हांरै मोहडै कनै भला भला काम कीया छै। ग्रबै कांई कीजै? इण मांहै (कमी) हुमी, रिजक घटसी,। - जैतमाल पुमार री वात

७ धन, द्रव्य।

उ०—ताहरा सेतरामजी केइक दिन ग्रठै रहिनै राजा सूं विदा कीवी छै। राजा वळै दत-दायजौ घणौ रिजक दे ग्रर विदा दीवी। - नैणसी

८ बढिया किस्म का बारूद जो तोप या तोड़ादार बन्दुक के कांन में भरा जाता है।

रू. भे.—रजक, रजग, रजिक रिंजक रिजकि, रिजक्क, रिजग, रिजिक, रुजक।

रिजकणौ, रिजकबौ—क्रि॰ अ.—प्राप्त होना, पैदा होना, लिखा होना।

उ॰—रैयत के जाणसी ? हुं ब्याह जोग थोडौ ही हूं ? हमे ब्याह कर परौ 'र क्यू कीरौ ही भव बिगाडू ? कवर तौ करमडै मे **रिजक्योड़ौ** ही कोनी। —दसदोख

रिजकदांणी, रिजकदांनी–स स्त्री.—बदूक या तोप छोडने का बारूद रखने की डिबिया।

रिजकि—देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ॰—जीव नव खड रा **रिजकि** मागै जुग्रौ। मेह करि गावडै घास मागै। —पी. ग्र.

रिजक्क, रिजग—देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ॰—दिपावत हाथ न लेत उदक्क। रुका बळ लेत पवित्र **रिजक्क**। —सू प्र.

रिजगौ–स. पु—सिंचाई से उत्पन्न किया जाने वाला एक पत्तीदार घास जिसे ज्यादातर घोडों को खिलाया जाता है।

रिजमट—देखो 'रेजिमेंट' (रू. भे.)

उ॰—सैन **रिजमट** असख पलटणां तणे सग। भड तिलग बग किलग तणा भिळिया। —कविराजा बांकीदास

रिजरव–वि [अ रिजर्व] किसी के लिये आरक्षित, रक्षित, सुरक्षित।

रिजरवेसन–स. पु. [अ. रिजर्वेशन] रक्षित या सुरक्षित करने की क्रिया या भाव, आरक्षण।

उ॰—इमी कुटेम मे भीमजी रा ऊठ भाडै करवा रौ मतळब सुरक्षा रौ **रिजरवेसन** करवाणौ है। —रातवासौ

रिजल्ट–स. पु. [अ. रिजल्ट] १ परिणाम, नतीजा।

२ परीक्षा-फल।

रिजवार—देखो 'रिझवार' (रू. भे.)

उ॰—१ नेह नीभावण सैण लख, वैण बंध्याह जिणवार। तन ल्याया मन भेट करि, रीझौ तौ **रिजवार**। —पना

उ॰—२ साथ लीना अै लागणा लोयणा देखि **रिजवार** अड़वडै छै। —पना

रिजाळी–स. स्त्री.—बदमाश औरत, बदचलन औरत।

उ॰—इव ही जे बाहिर होयस्यां तौ सै लोक कुचरडौ करस्यै जे रिजाळी थी सौ किही रै साथै परी गई।

—कुवरसी सांखळा री वारता

रिजाळौ–वि. (स्त्री. रिजाळी) १ बदमाश, नीच।

उ॰—सौ आगे सू दस्तूर इसौ ही जे छै के जसौ माणस हुवै जसी ही सोभत राखै, तिसा सू ही इकळास प्यार राखै। कजिये रौ सरदार होसी सौ कजिये रौ माणस कन्है राखसै। **रिजाळा** लक्षण होसी सौ रिजाळा अड़वा नू कन्है राखसी, बधारसी।

—महाराजा पदमसिंह री बात

२ धूर्त, चालाक।

रू. भे —रिजालौ।

रिजिक—देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ॰—परमेसर थारी पहुच, निमौ निमौ निरवाण। सिहि जीवा ना साहिबा, **रिजिक** दीयै रहमाण। —पी. ग्र.

रिजु, रिजू—१ देखो 'रज्जु' (रू. भे.)

२ देखो 'रज्जू' (रू भे)

उ॰—ग्रजस ग्रस्स घस्स घस्स बिस्स पीवतौ बहचौ। **रिजू** दलील पोलकै की जलील जीवतौ रहचौ। —ऊ का.

रिज्जणौ, रिज्जबौ—देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू. भे.)

उ॰—धरणि धसक्कइ पडइ देवि राजल विहलघल। रोग्रइ **रिज्जइ** वेमु रूवु बहु मन्नइ निप्फलु। —राजसेखर सूरि

रिज्जियोड़ौ—देखो 'रीझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रिज्जियोडी)

रिझकवार, रिझवार–वि.—१ रीझने वाला, मुग्ध होने वाला।

उ॰—१ रिझवारा **रिझवार**, कवरा रौ सिणगार। तीख चोख **रौ** राखणहार, रस विलास रौ चाखण हार। —र. हमीर

उ॰—२ या तन की मैं बीणा बजाऊ, रग रग बाधू तार। समझ बूझ मिळ जाय दुलारौ, जद रीझै **रिझवार**। —मीरा

२ प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला।

उ॰—सूरज हिंदवांण रौ, गाड तोल रौ गिरंदह। रूपक **रौ रिझवार** अनै रूप रौ अनगह। —सू. प्र.

३ मस्त, मतवाला।

उ॰—१ मारुडो छै **रिझवार** म्हारी आली हे। जाय सलाम कहै आलीजा ने कुरनस वार हजार। —लो. गी.

उ॰—२ रगरातौ रळियावणौ, हितरस चाखणहार। उड पदमन हित आवियौ, रसिक भंवर **रिझवार**। —र. हमीर

४ रसिक।

५ उदार चित्त, दातार।

उ॰—१ भूपाळ सिध धन भूपती, **रिझवार** कीरत बड रती। अग लिया पौरस आसती, अवधेस जुध अणसंक। —र. ज. प्र.

६ कृपा या अनुग्रह करने वाला।

उ॰—तौ **रिझवार** जी रिझवार भगवत गावतां रिझवार।

—भगतमाळ

रू भे.—रिंझवार, रिजवार, रींझवार रीजवार, रीझवार।

अल्पा.—रिंझवारौ।

रिझवाणौ, रिझवाबौ— देखो 'रीझाणौ, रीझाबौ' (रू भे)
उ०—जीभ दीधी जिकै क्रीत स्रीबर जपौ। होठ मुसुकाय रिझवाय पातक हरा। हाथ दीधा जिकौ जोड़ आगळ हरी, उदर परसाद चरण-अम्रत आचरा। पाग दीधा जिकै 'किसन' पर-दछ, फिर नाच राघव आगै सफळ कर तन नरा। —र. ज प्र

रिझवारी–सं स्त्री.—१ रिझवार होने की अवस्था या भाव।

रिझाणौ, रिझाबौ—देखो 'रीझाणौ, रीझाबौ' (रू भे.)
उ०—१ ताहरा बीडू कही धन्य ठकुराणी नू जिण कुवरजी नूं इसा **रिझाइया।** —कुंवरसी साखला री वारता
उ०—२ तात को रिझायौ त्योंही आनद आघायौ तू। —ऊ का.
रिझाणहार, हारौ (हारी), रिझाणियौ –वि०
रिझायोड़ौ—भू० का० कृ०
रिझाईजणौ, रिझाइजबौ—कर्म वा.

रिझायोड़ौ—देखो 'रीझायोडौ' (रू. भे) (स्त्री. रिझायोडी)

रिझावणौ, रिझावबौ—देखो 'रीझाणौ, रीझाबौ' (रू भे.)
उ०—१ मात्रा दडक वरणिया, इण विध छद उदार। 'किसन' **रिझावण** जस कियौ, रामचंद रिझवार। —र. ज. प्र.
उ०—२ काती, महीनै दीवाळी आवै बेटा, अर उण रै दो दिन पे'ला आवै धन तेरस। सेठ साहूकार उण दिन सगळोई गैणौ गाठौ'र पैसा-टक्का बारै काढै अर दरवाजा बद कर नै रात रा लिछमी नै **रिझावै।** —रातवासौ
उ०—३ राज रमणि महाराज **रिझावै।** अति हित निरख हरख उपजावै। —रा. रू
रिझावणहार, हारौ (हारी), रिझावणियौ—वि।
रिझाविओड़ौ, रिझावियोड़ौ, रिझाव्योड़ौ– भू का. कृ।
रिझावीजणौ, रिझावीजबौ – कर्म वा
रिझावियोड़ो—देखो 'रीझायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रिझावियोड़ी)

रिट्ठ—देखो 'रीठ' (रू. भे)
उ०—पन प्रबळ पिसन पिक्खैं न पिट्ठ रजबट बटदै रट्ठौर रिट्ठ। —ऊ का.

रिट्ठनेमि–सं. पु.—जैनियो के बावीसवें अरिहन्त, रिप्ट नेमिनाथ।

रिठ, रिठि—१ देखो 'रीठ' (रू. भे)
उ०—अति घण ऊनिमि आवियउ, झाभी रिठि झडवाइ। बग ही भला त बप्पड़ा, धरणि न मुक्कइ पाइ। —ढो. मा.

रिट्ठा–स. स्त्री. धूमप्रभा नामक नर्क। (जैन)

रिट्ठु–सं. पु - कष्ट, दुख।
उ०—मारू, थांकइ देसडइ एक न भाजइ रिट्ठु। ऊचाळउ क अवरसणउ, कइ फाकउ, कइ तिड्ड। —ढो. मा.

रिढ़–स. स्त्री.—भेड़।

रिणगण, रिणंगणि—देखो 'रणागण' (रू भे.)
उ०—१ कुर पडव कळहिया, उभै कुर-खेत **रिणंगण**। हूओ जांम भारत्थ, खपे अड्ढारह खोहण। —गु. रू. ब.
उ०—२ रुंड मुंड रडवडइ **रिणंगणि**, लोही तणा प्रवाह। ऊभै हाथि असुर पोकारइ, पाखळि पाडइ धाह। -- का. दे. प्र.

रिण–स. पु [स. ऋण] १ कर्जा, उधार।
उ०—१ **रिण** राखियौ घणौ राजाने, मिळसां न करै गूझ मन। कर ऊरण 'कूभेण' कळोधर, राण अढारह रायहर। —दुरसौ आढौ
उ०—२ रोग सोक दुख पाप रिण, ऐ मत करो प्रवेस। रहौ **अनीत** अनीत बिण, दाता हुंदै देस। - बा. दा.
२ दुर्ग, किला। ३ जल। ४ भूमि। ५ देव ऋषि और पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला यज्ञ।
६ वेदाध्ययन और सन्तानोत्पत्ति नामक कर्त्तव्य।
रू. भे.—रणि, रणी, रिणउ, रिन।
मह.—रणौ।
२ देखो 'रण' (रू भे) (अ मा.)
उ०—१ रिणमालौत कहै रिण रूधा, अचड तियागी बोल इसौ। जूह विडार किसौ जीवरनौ, केहर रूधा साथ किसौ। —द. दा.
उ०—२ **रिण** नहं भीनी रुधर सू मद सू गोंठ मभार। मूछा मावडिया मुहें, व्रथा कियौ विस्तार। —बां. दा.
उ०—३ यानै पकड निजर मौ आणौ। **रिण** गुण पछै संभाळू राणौ। — रा. रू.

रिण अठेल–वि —युद्ध मे पीछे न हटने वाला वीर, योद्धा।

रिणउ १ देखो 'रिण (रू भे)
उ०—अवसर देखी अधिकउ ओछउ व्याज लीजइ दीजइ, देस देसना अरथ पूछीइ, जीरण्ण रिणउं खांधै पांजरे करी दीजइ, —व. स.
२ देखो 'रण' (रू. भे)

रिणका–स स्त्री – एक ध्वनि विशेष।

रिणकालौ— देखो 'रणकालौ' (रू. भे.)
उ०—'बालौ' भालौ झलियाँ, **रिणकालौ** रावत्त। जुध वाळौ बेली जिहां, 'तेजा' सूजावत्त। —रा. रू.

रिणकाहल—स पु.—युद्ध का वाद्य विशेष ।

उ०—कीधउ कूच पीयाणइ नवइ, आव्या कटक धाण से सवइ । विहु पहुरे **रिणकाहल** देई, कटक तोरकइ विलगा जई । —का. दे. प्र.

रिणखंभ— देखो 'रणथभ' (रू. भे.)

उ०—तू राजा **रिणखंभ** धीर दळ थभ धराधर । नवकोटी सैंधणी, तेरै माथा उज्जागर । — गु. रू. बं.

रिणखेत, रिणखेति, रिणखेत्रि—देखो 'रणक्षेत्र' (रू भे.)

उ०—१ अठै तो **रिणखेत** मे सूवणो पडसी, अरै भोळा धाडवी थनै किण भरमायो है सौ इण घर में लूटण री उमग कर नै आयो अठै सूरवीर रौ घर छै मार नाखैला । —बी स. टी.

उ०—२ ते राजा नरसिधदास सारीखा । बतीस सहस साहण **रिणखेति** मेल्हि चाल्यउ । —अ. वचनिका

उ०—३ सादळ सीह मलिक जे हता, प्रांणइ बदि करचा जीवता । दीठउ इम्यू अम्हारइ नेत्रि, सादी मलिक पडिउ **रिणखेत्रि** ।

—का दे प्र.

रिणखळौ—स पु.—युद्धस्थळ, युद्धभूमि ।

उ० - उपडी वाग 'अरजण' हरौ, सूर धीर सत आगळै । तिण दीह रहे 'डूगर" तणौ, 'राघव' भाटी **रिणखळै** । —गु रू. ब.

रिणगजण—स. पु —घोडा, अश्व । (ना. डि. को)

रिणगहिलौ—देखो 'रणगहिलउ' (रू. भे)

उ०—पडि ऊपडियइ पहिलउ पहिला । गइ गंजण ऊठिय **रिणगहिला** । —रा ज. सी

रिणघोर—स पु.—रण नाद, समर-नाद, ।

उ०—झड ओझड वाहइ **रिणघोर**, जूझइ राणी जाया जोर । लालचद कहै समझे सूर, दोन्यू दल वीरारस पूर ।

—प. च. चौ

रिणछोड़— देखो 'रणछोड' (रू. भे)

उ०—पह चढै जाणि दध छिलै पाज **रिणछोड़** दरस कजि महाराज । —सू. प्र.

रिणछोड़राय—स. पु.—१ श्रीकृष्ण । २ ईश्वर ।

उ०—पीरदास एम दाखै प्रभु, कूडै काल्है काकना । **रिणछोड़राय** हो राघवा, रीझ समापै रांकना । — पी. ग्र.

रिणजग—स. पु — युद्ध ।

उ०— प्रिथग मेक सग्राम, कियौ महिकर आथाणह । बियौ कीध **रिणजग**, दिखण कटकै मेल्हाणह । —गु. रू. बं.

रिणडोहण—वि.—युद्ध का आनद लूटने वाला, योद्धा ।

उ०—सीसौदो 'कल्याण', रहै राबत निभैमण । हरीदास रट्ठवड, रहै 'कचरौ' **रिणडोहण** । —गु. रू. ब.

रिणढांण—स. पु [स. रणस्थान] युद्ध स्थल, रण क्षेत्र ।

उ०—१ आवटियौ एकोहटा, दे दुरहटा मेल्हाण । साभर आयौ आपरा, गा सोधे **रिणढाण** । —गु. रू. ब.

उ०—२ तीन भंडारी नीवडै, मुहतौ पडै सुजाण । फौजदार वरियाम भड, 'रामौ' पड **रिणढांण** । —गु. रू. ब.

रिणतली—देखो 'रळत्तळ' (रू. भे.)

रिणताळ—देखो 'रणताळ' (रू. भे) (अ. मा.)

उ०—१ विकराळ जोम छकिया वहै, देव मनिख अहि नह डरै । **रिणताळ** आळ माटै रवद, काळ चाळ पकडै करै । —सू. प्र.

उ०—२ **रिणताळ** रूक वाजत रीठ, दाणव बरंगळ पडत दीठ । धड धडछ किलब धारा घिरौळ, हुई जैत जैत पहिलू हिंगौळ ।

—मा. वचनिका

रिणताळौ— देखो 'रणताळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—किम खावौ टाळा 'किसन', ते वडि **रिणताळा** । हुवै हुक्म तौ साह रा, रहचां रवदाळा । —सू. प्र.

रिणतूटौ—वि.—युद्ध स्थल मे मरने वाला ।

उ०—**रिणतूटा** सूरा भला, फाटा भला कपास । भागा भला अबोलणा, लागा चदणवास । —अग्यात

रिणतूर—देखो 'रणतूर' (रू. भे.)

उ० —कोट विनै मळ वटे 'कलावत', चौपट कर बीझा चकचूर । अग्राजिया अणखळै ऊपर, तीडाहरै तणा **रिणतूर** । —द. दा.

रिणथंभ, रिणथंभर, रिणथंभोर—देखो 'रणथंब' (रू भे.)

उ०—१ औरंग सुछळ बधव मुह आगळ, थाटा बिच **रिणथंब** थयौ । दरियर कहै अचूंभौ देखौ, कमधज आकारीठ कियौ ।

— सुजांणसिंघ राठौड़ रौ गीत

उ०—२ हुवौ **रिणथंभ** निम साथ विमुहै हुवै, त्रिदिव मनव हूवा तिणि तमासै । सामध्रम दाखि केसव तणै सींधळी, वरै गौ रभ सुरलोक वासै । —गिरधरदास केसोदासोत मेडतिया रौ गीत

उ०—३ आया साह अलावदी, विढ कटकां सू वीर । मांझी **रिणथभर** मुओ, हठ निरवाह हमीर । —बा. दा.

उ०—४ रिणथभोर हमीर राण चहुवाण सैभर का ।

—दुरगादत्त बारहठ

रिणथल—देखो 'रणस्थल' (रू. भे.)

उ०—कटि कमळ खळ, उछळ पड़ि, तडिछ तड लल थहै **रिणथल**

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

रिणधीर—देखो 'रणधीर' (रू. भे.)

उ०—पुर अवध सु हुय निज पगा, मुनि वहै आस्रम मारगां । सग

राम लक्ष्मण कुमर दसरथ, धरम धुज **रिणधीर** । —र. रू.

रिणबध—सं. पु.—योद्धा, भट ।

उ०—पडे सामा से पांच, कमध सोलंखी सो खत । चावडा गुण-ताळीस, रहै **रिणबंध** रिणवट । —रा. व. वि.

रिणभिक्षण—सं. पु. [सं. रण+भक्षण] लोहा । (अ. मा)

रिणभुइ, रिणभूमि, रिणभोम—देखो 'रणभूमि' (रू. भे.)

उ०—१ खग हुए खंडा खड किरि डडीहड, **रिणभुइ** रीहड रत रिडै। वीहारी वडि वडि तूटै धडि धडि, अणिया चडि चडि अम्भ अडै । —गु. रू. व.

उ०—२ हबसी दळ हाकियौ, मार कमधै कळि-मूळै । गया छाड **रिणभूम**, जाणि पखी हुइ ढल्लै । —गु. रू. ब.

उ०—३ स्रोण भील कमकमै, कियै करिमरा चडाए । रचै सेज **रिणभोम**, कुसम अरि कमळ बिछाए । —गु. रू ब.

रिणमंडप—देखो 'रणमंडप' (रू. भे.) (ना. डि. को)

रिणमल—स. स्त्री.—१ देवी. शक्ति ।

उ०—जैत कमध कर जोड़ियां, जीहा एह जपत्त । करनळ **रिणमल** बाचरी पाळ करौ त्रिसकत्त —राव जेतसी

२ राव रणमल्ल के वशजो की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—मारू जोधा **रिणमलां** भलै सम्रोधा भार । जाण हणू धावण मतै, द्रोण उठावण वार । —रा. रू.

३ देखो 'रणमल्ल' (रू. भे.)

रू. भे.—रिणमल्ल, रिणम्मल ।

रिणमलोत—स. पु.—राठौड वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

रिणमल्ल—१ देखो 'रणमल्ल' (रू. भे.)

उ०—सुणि जोध वेण भाखत सभ, **रिणमल्ल** माण आणियै रभ । —मा वचनिका

२ देखो 'रिणमल' (रू. भे.)

रिणमाल—स पु—राठौड रिणमल के वशजों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—ऐ भाटी दळ आगळा, खळ गजण दळ ढाल । मिसल सबोभा मेळ सू, या हूंता **रिणमाल** । —रा. रू.

रिणम्मल—१ देखो 'रणमल्ल' (रू. भे.)

२ देखो रिणमल (रू. भे.)

उ०—वणि जोध **रिणम्मल** आठवळा, करगै बळवत अतत कळा । जुधवार सिरै उमराव जिता, तनुत्राण घणी कज पाण तिता । —रा. रू.

रिणयोद्धा—स. पु. [स.] योद्धा, वीर ।

उ०—खाणौ दाणौ पूरवै, रावळ रण रंढाल । भारथ मे योद्धा भिड़ै, **रिणयोद्धा** जिम काल । —प. च. चौ.

रिणराव—स. पु.—महावीर ।

उ०—'रासौ' 'कलियांण' तणौ रिणराव । घणा जुध बीच करै खग घाव । —सू. प

रिणरिण—सं. स्त्री—दुख भरी आवाज, कराहने का शब्द ।

उ०—हाथां हूकलिया लटकता लोटा, **रिणरिण** रींकता सुपनै में रोटा । —ऊ. का.

रिणरिढळ, रिणरींधळ, रिणरीधळ—वि.—युद्ध से रीझने वाला, युद्धोन्मत, योद्धा ।

उ०—१ आखडै जिकै सदा आवटियळ, **रिणरिढळ** जीपति रिणां । सूरातन जिकै सहस बळ सूरा, पह सादूळा पचाइणा ।

—गु. रू. ब.

उ०—२ राणी मम रोइ 'पिथौ' **रिणरींधळ**, रिण गा छाडि तिकै भड रोइ । घण जूझै रिणमाल तणै घरि, हुवै मरण जिम मगळ होइ ।

—प्रिथीराज राठौड रौ गीत

उ०—३ 'बीकाहरौ' साभळै विवनौ हाथी हियै न बैठो हारि । **रिणरीधळ** रहियौ रिण माहै, मांभी मूवौ माझिगां मारि ।

—आसौ सिढायच

रिणवट, रिणवटि, रिणवट्ट—देखो 'रणवट्ट' (रू. भे.)

उ०—१ पडै सामा से पाच, कमध सोलंखी सो खंत । चावडा गुण-ताळीस, रहे रिणबध **रिणवट** । —रा. व. वि.

उ०—२ साल्हु सोभतु ते समरगणि, लखण सेभटउ बीजउ । **रिणवटि** रहिउ अजेसी माल्हण, माहि मूलिगउ त्रीजउ ।

—का. दे. प्र.

उ०—३ आसकन्न द्रढ मन्न, रतन जेही **रिणवट्टां** । परगट्टां दाखवै, बारहट्टा कुलवट्टा । —रा रू.

रिणवत, रिणवत्त, रिणवत्ता—सं. स्त्री [स रण+वार्ता] युद्ध सम्बन्धी वार्ता ।

उ०—रिणवत्तां रत्ता रहै, 'सकता' 'बीर' सुतन्न । जोड़ै साम्हा ईस तण, रिण जगदीस प्रसन्न । —रा. रू.

रिणवाउलौ—देखो 'रणगहिलउ'

उ०—एक तणा बांधव भरतार, एक तणा फूटरा कुमार । जे जे हता **रिणवाउला**, एक तणा मारचा माउला । —कां. दे. प्र.

रिणवाट—देखो 'रणवट्ट' (रू. भे.)

उ०—पोऐ तिरसूळ पछांटै प्रांण, घुंमाड़ै रोदां दोमफ घाण । दुवाहा जोध जुटै **रिणवाट**, घड़छै धाड़ मचे धर घाट ।

—मा. वचनिका

रिणवास—देखो 'रणावस' (रू. भे.)

उ०—तुम कारण दून रमिरा; सूना राभर का **रिणवास**। सूना चउरा चउखंडी, सूना मदिर मढक विलास। —बी. दे.

रिणसाल-सं. पु. [स. रणशल्य] १ योद्धा, वीर। २ युद्ध, झगडा (अ. मा)

रिणसींग—देखो 'रणसीगौ' (रू. भे.)

उ०—न क्यों कान छेदियै, न क्यो गळि-ताग लगायै। न क्यो नाद नीसारण, न क्यों **रिणसींग** वजायै। —सूरजनदास पूनियौ

रिणसेझ-स. स्त्री.—युद्धभूमि।

उ०—तरै आपरी कुळदेवता सांभरादेवी आराधी। तरै देवी आई तरै अरज कीधी-महाराज तौ **रिणसेझ** पोढ्या छै, राज मोटा छौ, वस री सरम राजनै छै, पाछै पुत्र नही, बसनै राज मिल्या ही गयौ। —रा वंसावली

रिणसोर-स पु.—युद्ध का कोलाहल, युद्ध का शोरगुल।

उ०—आतस घोर गिळियौ अधार। **रिणसोर** जोर हुय रौद्रकार। —गु रू व

रिणसोहौ-वि.—युद्ध का इच्छुक।

उ०—**रिणसोहा** रिणसूरमा वीको सोम वखाणि। नायक पायक भड निवड अरि भजण आराणि। —हा झा

रिणाई-वि. [स ऋण+रा. प्र. आई] १ ऋणदाता, कर्ज देने वाला।

उ०—दिन जेही रिणी **रिणाई** दरसणि, क्रमि क्रमि लागा सकुडिणी। नीठि छुडै आकास पोस निसि, प्रौढा करसणि पंगुरिणि। —वेलि

२ देखो 'रणोई' (रू. भे.)

रिणायर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे)

उ०—पातिमाह राघव, आय ऊभा तटि साइर। करउ मंत्र चेतन्न, कटक लघीइ **रिणायर**। —प च चौ.

रिणि—१ देखो रिणी' (रू. भे)

२ देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—१ वडै कांमि दळ थभ "गजसाह" दळ तोड वदै, छात्रपति कमध ऐ वौल छाजै। रूकि पतिसाह दळ राजते राखियौ, भिडै पतसाह **रिणि** तिहिज भाजै। —खेतसी लाळस

उ०—२ समझण जोग घणा **रिणि** साझण दछि जिगि जिम रिमा घट देस। वरद दियण लियण जस वाचा, भड़ 'सेवौ' राजै भूतेस। —नाथौ बारहठ

रिणिखेत, रिणिखेत्रि—देखो 'रणक्षेत्र' (रू. भे.)

उ०—१ बाथ बाथां पड़ै बाण बांणा बणण, मिलिक मिलिकां मिळै असरां मरण। वाजिया भला **रिणखेत** मा वीरवर, गाजिया रामचद किलग करता गमर। —पी. ग्रं.

उ०—२ अलूखान एकलउ नाठउ, जे हूंतउ सपरांणउ। सादी मलिक ऊंवरउ मोटउ, ते **रिणखेत्रि** मराणउ। —कां. दे. प्र.

रिणिताळ, रिणिताळी—देखो 'रणताल' (रू. भे.)

उ०—त्रिगुण किलग **रिणिताळ** बिन्है इ भिडिसै अतळी बळ। तरुआरै त्रिगडा विलै विढिसै नर विमळ। —पी. ग्र.

रिणिरित—देखो 'रिणीरितु' (रू. भे)

रिणिवट—देखो 'रणवट्ट' (रू. भे)

उ०—खग झपट बे थपट छट खळ खट, विकट अविग्रट विढै **रिणिवट**। —ल. पिं.

रिणी-वि. [सं. ऋणी] १ जिसने कर्ज लिया हो, कर्जदार।

उ०—दिन जेही **रिणी** रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा सकुडिणि। नीठि छडै आकास पोस निसि, प्रौढा करसणि पगुरिणि। —वेलि

२ जिस पर कोई अहसान हो, अहसान मंद।

३ उपकार मानने वाला, कृतज्ञ।

रू. भे.—रणि, रणियु, रणी, रिणि।

४ देखो 'रण' (रू. भे)

रिणीरित, रिणीरितु-सं. स्त्री.—ग्रीष्म ऋतु, जब गर्मी अधिक होती है और जंगल मे घास का पूरा अभाव होता है।

रू. भे.—रिणरित।

रिणोइ, रिणोई, रिणोही—१ देखो 'रणोई' (रू भे.)

उ०—१ तिण समीयै कैइक जोगेसर अकल पथ हींगुळा जंफरस आवै था। तिकै **रिणोइ** देखि बाता करै छै, भाई भाई, रजपूतांणियां धवड़ी रै खरणै रा लोहां घाय पौढिया छै, औ सुर भींवा रै कानै आयो। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

उ०—वीभरै तरै केई मीर वजरै विकर. तणछ खग फरहरै वीर ताळी। कहर धर **रिणोही** वीर हाका करै, अजेही भीमड़ा तीर वाळी। —कुंभकरण सांदू

२ देखो 'रिणाई' (रू. भे.)

रिणौ—१ देखो 'रण' (रू. भे.)

उ०—परगना माहे इतरा **रिणै** लूण खारी हुवै। —नैणसी

२ देखो 'रिण' (रू. भे)

उ०—रोगियौ आप माथै **रिणौ**, रोज दुख सुख नहीं रती। मोहनी देखि धरमसी महा, जाणै तोइ न हुजै जती। —ध. व. ग्र.

रित—१ देखो 'रितु' (रू. भे)

उ०—१ सावण आयौ साहिबा, मोर हुआ महमंत। इण **रित** पीयर मोकळै, कठण हियारौ कत। —अग्यात

उ०—२ दस मास समापित गरभ दीध रित । मन व्याकुळ मधुकर मुणणति । कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपती प्रसवती वसति । —वेलि

उ०—३ रित वसत ग्रीखम तू ही, बरखा रित आई । सरद हेम ससि तू सकळ, खट रित महमाई । —गज उद्धार

२ देखो 'रति' (रू. भे.)

उ०—ढोलौ रूप अनग में, मारू रित अवतार । मिळीया बेहुं रग-महल, कुमरी राजकुमार । —ढो. मा.

३ रति ?

उ०—वजि म्रदंग चग रग उपग वारग । अनग छबि चग उमग अग अग । नूतग रित अंग अग करग नादंग । रस तरंग बह तरग रग रग । —सू. प्र.

रितपरण—देखो 'रितुपरण' (रू. भे.)

रितपति, रितपती—देखो 'रितुपति' (रू भे.) (ह. नां. मा.)

रितपरस—देखो 'रितुपरस' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

रितमांन–सं. पु.—कामदेव । (अ. मा.)

रितरमण—देखो 'रितुरमण' (रू. भे.)

उ०—आवत्त घोर अंधार मैं, सोर घोर माचै सघण । धोम-रिख जाणि धूहर रचै, जोजण-गंधा रितरमण । —गु. रू. ब.

रितराज, रितराव—देखो 'रितुराज' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—सिध मुनिराव सेव इम साधै । इम रितराज समै आराधै । —सू. प्र.

रितवज—देखो 'रित्विज' (रू. भे.)

रितवसंत–सं. स्त्री.—बसंत ऋतु ।

उ०—रित वसंत सोभत अंब तर मजर ओपै । —रा. रू.

रितवियौ–वि.—निर्बल, अशक्त, कमजोर ।

रितवीर–स. पु. [सं. रिक्त-वीर] तरकस । (अ. मा.)

रितसांई–सं. पु. [सं. ऋतु-स्वांमी] श्वान, कूकर । (ह. ना. मा.)

रितहेमंत–सं स्त्री.—हेमंत ऋतु ।

रितावणौ, रितावबौ–क्रि. स —खाली करना, रिक्त करना ।

उ०—उवस वासै वस्या उजाडै, महर करै दोय घरियौ । रीता छाले छल्या रितावै, समद करै छीलरियौ । —जांभो

रिति—१ देखो 'रितु' (रू. भे.)

उ०—१ माह मास व्रतमान, अरक बैठो उतराइणि । सुकळ पख्य रिति सिसिरि, महा सुभ जोग सिरोमणि । —ल. पिं.

उ०—२ संसव जु बाळकपणौ सोई तौ ससिर रिति हुई । सीत रिति सु तौ वतीत हो गयौ । —वेलि टी.

२ देखो 'रीति' (रू. भे.)

उ०—आवउ हो इस रिति हित सइ यदु कुल चद । दयउ मोहि परम आनंद । —वि. कु.

३ देखो 'रति' (रू. भे.)

उ०—निस वसियौ सुख ग्रेह निज, वाधै रमणि विलास । अरज करै मुख औरता, हित रिति गरम हुलास । —रा. रू.

रितिपालटि–सं. पु.—ऋतु परिवर्तन ।

उ०—सूरज कळसि बैठौ सु कुंभि आयौ । रितिपालटि होण लागी । —वेलि. टी.

रितिफळ, रितिफल–स. पु. [स. ऋतु+फलम्] ऋतु के अनुसार होने वाला फल ।

उ० - रितिफल जे जे रूयडा, ते नेवेद्या सार । मरकलीइ माधव करइ, मधुकर-परि आहार । —मा. का. प्र.

रितिराइ, रितिराउ, रितिराज—देखो 'रितुराज' (रू. भे.)

उ०—१ रितिराइ कहतां वसंत तें कै पसाइ करि जन मनुम्य आगि सो सपरस करता था सु तें दुखतें रहता हुआ । —वेलि टी.

उ०—२ हिवइ रितिराउ कहता वसत रिति सरूपियौ जोवन सु आपणा नाना प्रकार गुण गति मति सहित यौ परिगह ले आयौ । —वेलि टी.

उ०—३ तठा उपरांति राजांन सिलामति रितिराज वसंत वैसाख मास रा मगळाचार विमाहरा सुख विलास करतां सरद रित आई छै । —रा. सा. सं.

रिती—देखो 'रीति' (रू. भे.)

रितु–सं. स्त्री. [स. ऋतु] १ ऋतु, मौसम ।

उ०—१ माते गयद घने गरजै घन की रितु मांनौ घटा घहरांनी । 'बक' निसान लगै फहरान पिसाच रुप्रेत उमंग सी आनी । —बां. दा.

उ०—२ गग यमुना चमर ढालइ, छइ रितु पुष्प पुरइं सरस्वती वीणा वाइ, तुवर गीत गाइ, रभा तिलोत्तमा नाचइं, नारद ताल धरइ,······ - व. स.

उ०—३ छ रितु माहि धिन धिन, ए रितु रूडी वसंत । दवदती नू जेणी रतिइ ठरीउं तेहनू चीत । —नळदवदंती रास

उ०—४ छड़ रितु बारै मास गणि आयौ फेर बसंत । सो रितु मूझ बताइ दे, तिय न सुहावै कत । —अग्यात

वि. वि.—प्राकृतिक दशाओं में होने वाले परिवर्त्तनों के अनुसार मौसम की स्थिति भी बदली रहती है । प्रत्येक वर्ष अर्थात् बारह मास में मुख्यतया तीन प्रकार की स्थितिया आती हैं—(१) सर्दी (२) गर्मी तथा (३) वर्षा । भारत-वर्ष में वर्ष भर की मौसम का वर्गीकरण करके इसे छै भागो में विभक्त किया गया है । प्रत्येक भाग की अवधि दो मास की मानी हैं और प्रत्येक भाग को एक "ऋतु" माना है । इस प्रकार वर्ष मे कुल छै ऋतुए होती है, जिनके नाम इस प्रकार हैं—वसत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर ।

२ जलवायु, आबोहवा ।

३ अब्द-प्रवर्त्तक-काल ।

४ उपयुक्त या ठीक समय । निर्धारित समय ।

उ०—ऊनमि आई बद्दळी, ढोलउ आयउ चित्त । यौ बरसइ रितु आपणी, नइण हमारे नित्त । —ढो. मा.

५ रजोदर्शन ।

६ रजोदर्शन के उपरान्त का समय जो गर्भाधान के लिये उपयुक्त काल होता है ।

७ प्रकाश, चमक ।

८ सत्य या उच्च वृत्ति से किया जाने वाला निर्वाह ।

९ छै की सख्या । * (डिं को.)

रू. भे.—रति, रित, रिति, रितू, रुत, रुति, रुत्ति, रुत्ती ।

रितुकाळ—सं. पु. [सं. ऋतु काळ] १ रजस्वला होने का समय । (स्त्री.) २ रजो दर्शन के बाद १६ दिनों का समय जब स्त्री गर्भ धारण करने की स्थिति मे होती है ।

रितुगमन—सं. पु. [सं. ऋतु-गमन] ऋतु काल मे किया जाने वाला संभोग या मैथुन ।

रितुगांमी—वि [स ऋतु-गामिन्] समय या काल के अनुसार स्त्री ससर्ग करने वाला ।

उ०—**रितुगांमी** व्है सील राखियौ, पुत्रोत्पत्ति फळ पाई। पति पतनी दंपति पियै प्यारी, नवला नेह निभाई। —ऊ. का.

रितुचरय्या—स. स्त्री [स. ऋतु-चर्य्या] किसी मौसम के अनुकूल किया जाने वाला आहार-विहार ।

रितुदांन—स. पु. [स. ऋतु दान] १ ऋतुमती स्त्री के साथ सतान की इच्छा से किया जाने वाला संभोग ।

२ गर्भाधान की क्रिया ।

रितुपति—स. पु. [स. ऋतु-पति] वसत ।

उ० - तउ अवतरिउ **रितुपति** तपति सु मन्मथ पूरि । जिम नारीय निरीक्षिण दक्षिण मेल्हइ सूरि । —जयसेखर सूरि

रू. भे.—रितपति, रितपती ।

रितुपरण—स. पु. [स. ऋतु-पर्ण] इक्ष्वाकु वशीय राजा अयुतायु का पुत्र जो द्यूत क्रीड़ा मे अत्यन्त निपुण था । इसने आपाद स्थिति मे नल राजा की सहायता की थी ।

रू. भे.—रितपरण ।

रितुपरस—स. पु.[स. ऋतु-स्पर्श] श्वान, कुत्ता । (अ मा.)

रू. भे.—रतपरस ।

रितुमती—सं. स्त्री. [स. ऋतु-मती] रजस्वला स्त्री, (मादा पशु भी)

उ०—वी समै भूडण **रितुमती** हुई थी सो भूडण नै आसा रही । महीना पूरा हुआ जद चीलहर पाच जाया ।—डाढाळा सूर री वात

रितुराइ, रितुराउ, रितुराज—सं. पु [स. ऋतुराज] वसंत ।

उ०—१ भरिया तरु पुहप वहै छूटा भर । काम बाण ग्रहिया करगि । वळि **रितुराइ** पसाइ बेसन्नर, जण भुरडीतौ रहै जगि । —वेलि

उ०—२ मीठि मनउ अवधि, **रितुराउ** वसंतनउ प्रणाधि, उद्यान वन मांहि आंणिउ, विलासीए वखाणिउ''' —व. स.

उ०—३ सखी अमीणौ साहिबो, वाकम सू भरियोह । रण विकसै **रितुराज** मैं, ज्यू तरवर हरियोह । —बां. दा.

रू भे.—रतराज, रितराज, रितराव, रितिराइ, रितिराउ, रिति-राज, रुतिराई ।

रितुवंती, रितुवती—स. स्त्री. [स. ऋतुमती] रजस्वला ।

रितुसनांन, रितुस्नांन—सं. पु. [सं- ऋतु-स्नांन] रजस्वला होने के चौथे दिन किया जाने वाला स्नान ।

रितू—देखो 'रितु' (रू. भे.)

उ०—हरनाथ 'कान्ह' सोजत जग कर काम आया अडतीस (१७३८) वरखा रितू । —रा. रू.

रितेज—सं. पु. [सं. रिक्-तेज] तारा । —अ. मा.

रित्रपरण – देखो 'रितुपरण' (रू. भे)

उ०—पुत्र तासु **रित्रपरण** बुधि प्रकास । सुत जासु रित्रपरण रै सुदास । —सू. प्र.

रित्विज—सं. पु. [स. ऋत्विज्] यज्ञ में पुरोहित के रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति । यज्ञ करने वाला । ये साधारणतया चार होते हैं और बड़े यज्ञ में ऋत्विजों की सख्या १६ होती है ।

रू. भे.—रितविज ।

रिद—स पु. [सं. ह्रद] १ जलाशय, सरोवर, तालाब ।

उ०—रामांनुज **रिद** गुपत रखावै, सिडियो नीर वास सरसावै । मांहि सिंवाल जाल नहिं मावै, पैसे बिन छांटौ नहिं पावै । —ऊ. का.

२ झील ।

३ ध्वनि, आवाज ।

४ किरण ।

५ देखो 'हिरदौ' (रू. भे)

रिदय—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ ब्रह्मा विसन ईसर सुवर, केसव एक त्रय वध किय । **रिदय** निलाट अरि नाभिहूं, वह्मा विसन महेस थिय । —रा. वसावसी

उ०—२ कोइलि कालि माधवउ, मुझनइं मिलइ जाणि । राखी रीस **रिदय**-महिं, मूढ ! मराविसि बाणि । —मा. कां. प्र.

उ०—३ माई ! मझनइ ऊपनी एक असंभव व्याधि । **रिदयइं** रसोली बिइ थइ, मन नही मोरि साधि । —मा. कां. प्र.

उ०—४ भाद्रवडइ सरोवर भरियां, नीर निरतर होय । **रिदयां**-भीतरि हुं रहुं, नीर निबारि न कोइ । —मा. कां. प्र.

उ०—५ तनु तरणा सरखु हवु, त्रूटइ रखे हिंचोलि । वनिता तुझनइं वागस्यइ, रहि रिदया नी खोलि । —मा. का. प्र.

रिदौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे)

उ०—१ तेज कुमेर रिदौ वरण तारी । भुग्रग तेज उदर वरण भारी । —मा. वचनिका

उ०—२ ऐसे चित रहै चौपरि मै, हालै दाव सुंवारी । यु राखत हरि नांव रिदौ मैं, तौ जुग पारि उतारी । —अनुभववांणी

उ०—३ स्यांम भजै ताम सुखी, दांम भजै और दुखी । सीतपती गाव सदा, राख जिको ध्यान रिदा । —र. ज. प्र

रिद्ध—स पु. [सं. ऋद्ध] १ विष्णु का एक नामान्तर ।

२ देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ जुवारौ घर रिद्ध कस, माकड़ कठै हार । गहला माथै बेवडौ, कुसळ वे केती बार । —पचदंडी री वारता

उ०—२ हुरम कबीला रिद्ध तर, साथै मीर प्रचंड । इण वासै कर चल्लियौ, आसा खड विखड । —रा. रू.

उ०—३ नळ राजा नरवर रहै, आछै रिद्ध अपार । भली अनोपम भामिणी, सुख मांणै संसार । —ढो मा

उ०—४ दरसाण भद्रराय रिद्ध तणौं, अभिमांन कीधौ आप । इंद्र ने पगै लगावियौ, धरम तणौ परताप । —जयवांणी

उ०—५ ताहरा राजा स्याम सुंदर दीठौ, "ऐ भल्यां नहीं । विरक्त हुई नै ऊठि चालीयौ, राज-रिद्ध सब छेडि नै चलीयौ ।
—स्यांमसुदर री वात

रिद्धि—स स्त्री. [सं. ऋद्धि, प्रा. रिद्धि] १ लक्ष्मी देवी ।

२ पार्वती देवी ।

३ कुबेर की पत्नी जो नल कूबर की माता थी ।

४ गणेश की अनुचरी एक देवी ।

५ वरुण की पत्नी ।

६ एक अलौकिक शक्ति ।

७ धन, द्रव्य, सम्पत्ति, निधि, पूजी ।

उ०—१ रिद्धि न मांगू सिद्धि न मांगू, मुक्ति न मांगू बडाई । साधु सगत मागत हूँ देवा, क्रपा कर बगसाई ।
—स्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ एतलौ धन तौ दीसै नही, क्याई थी काढइ छै सही, तेह नै पासे छै काइ सिद्धि, खरचतां खूटै नइं रिद्धि । —वि.कु.

उ०—३ पुत्र कलत्र धण यौवन रिद्धि, देव लोक नी अनती सिद्धि । संसार मांहि छइ सहू सलंभ, जिण सासण एक छइ दुरल्लभ ।
—वस्तिग

८ ऐश्वर्य, वैभव । ९ सफलता । १० वृद्धि, बढोतरी ।

११ पूर्णता ।

१२ एक लता विशेष, जिसका कंद औषध के काम आता है ।

१४ वैद्यक में अष्ट वर्ग के अन्तर्गत एक औषधि ।

१५ आर्या या गाथा छन्द का भेद विशेष जिसमें प्रथम चरण में ६ दीर्घ वर्ण सहित १२ मात्राएं द्वितीय चरण में आठ दीर्घ और दो ह्रस्व सहित १६ मात्राए तृतीय चरण मे ६ दीर्घ वर्ण सहित १२ मात्राएं और चतुर्थ चरण में ७ सात दीर्घ वर्ण एक ह्रस्व सहित १५ मात्राऐं कुल ५७ मात्रा का छद विशेष ।

रू. भे.—रिद्ध, रिद्धी, रिध, रिधि, रिधी, रिधु, रिधू, रीध, रिध्धि, रुद्धि ।

रिद्धिवंत, रिद्धिवती—धन एवं वैभव का स्वामी ।

उ०—वीर कहै सुण गोयमा, भय नही हो पर चक्र नौ कोय । तिहां 'सुमुख' गाथापति, ए हुतौ रिद्धिवतौ सोय । —जयवांणी

रू. भे.—रिधवंत ।

रिद्धिसिद्धि—स स्त्री. [स. ऋद्धि-सिद्धि] १ गणेश की दो पत्नियां, ऋद्धि एवं सिद्धि । ये धन, समृद्धि और सफलता प्राप्त कराने वाली दो देविया मानी जाती है ।

२ सभी प्रकार की समृद्धि, वैभव और धन-दौलत की परिपूर्णता की अवस्था ।

३ द्रव्य, समृद्धि ।

रू. भे.—रिधसिध, रिधिसिधि ।

रिद्धी—देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ मेघ कुंवर जिम महिमा कीधी, ग्याता में प्रसिद्धी जी । माता पिता ए आग्या दीधी, महोच्छव कियौ अति रिद्धी जी ।
—जयवांणी

उ०—२ ध्यांन साथ सिद्धी जैसे ग्यांन साथ रिद्धी गेह, नीती साथ निद्ध नव सेस रघुराई के । —ऊ. का.

रिद्धौ—देखो 'रिद्धी' (मह., रू. भे.)

उ०—ए संसार असार छइ, छोडउ राज नइ रिद्धौ जी । तप संजय तुम्हें आदरउ, सीघ्र लहउ जिम सिद्धौ जी । —स. कु.

रिध—सं. पु.—१ तरह, भाति, प्रकार ।

उ०—सुजड-हथा "चांडराउ" समोभ्रम विधि वीरातन वैर विधि । रोपै जई पवंगि आसरण रिध, रिप तई भजै राज रिधि ।
—गु. रू. ब.

२ घर, मकान ।

३ बड़े भोज में सर्वप्रथम निकाल कर सुरक्षित रक्खा जाने वाला भोजन का अश ।

४ देखो 'रिद्धि' (रू भे.) (नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ दियण बुद्धि रिध सिद्ध, विघन छेदन लंबोदर ।—नारसिंघ

हणमंत, अचळ नह खंडी अम्मर। —गु. रू. ब.

उ०—२ राखै सप जिका धन राखै, बाकी दाखै साच विध। न्याय नीमडै जितै नीमडै, राज चढै ज्या तंणी रिध। —बां. दा.

उ०—३ भ्रिगु पुरोहित रिध तज नीसरयौ। भूपत रे धन लावण रौ काम। —जयवांणी

रिधदाता–वि.—दानी।

उ०—नाकारौ जाणै नही, उभौ जा लग आथ। रिधदाता रेसा-मेयौ, उणत अनै अनाथ। —रेसमीयै री बात

रिधवंत—देखो 'रिद्धिवंत' (रू भे)

उ०—भद्दलपुर माहे वसे जी, 'नग' सेठ रिधवंत। 'सुलसा' तेहने भारिया जी, रूप मे घणी सोहंत। —जयवाणी

रिधसार–वि.—धनवान, अमीर।

रिधसिध—देखो 'रिद्धि सिद्धि' (रू. भे)

उ०—१ समापण बांभण ना रिधसिध, दमोदर दान बड़ौ तै दीध। —पी. ग्र.

उ०—२ सहजा जोग जुगती भी सहजां, सहजा रिधसिध दासी। सहजां गिगन ध्यान धुनि लागी, सहज मिल्या अभिनासी। —अनुभव वांणी

रिधि—देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ जेणि जई नल राजा ज्याच्यु ते बीजी बार नवि मागि। अनेक्य यग्य करी धन खरचू तोहि रिधि न भागि। — नळाख्यान

उ०—२ राजा रिधि छइ आपणइ ईण परि पूरजई मन की आस —बी. दे.

उ०—३ दीपौ बाळकिसन्न तण, पण ऊधरै विश्रास। साथ लियां रिधि साम री, नव ही रिद्ध निवास। —रा. रू.

रिधिसिधि—देखो 'रिद्धिसिद्धि' (रू. भे.)

उ०—रिधिसिधि सब ही दासी, जोड़ै हाथ खडी। इनके रग राचे नहीं कबहूं, आतम जाण जुडी। —स्री सुखरामजी महाराज

रिधी—देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

रिधीसिधी—देखो 'रिद्धि सिद्धि' (रू. भे.)

रिधीसिधीदाता–सं पु.—१ गणेश, गजानन।

स. स्त्री.—२ लक्ष्मी।

रिधु, रिधू–स. पु.—१ निश्चय।

उ०—सहकोय साजत करौं सुभडा विरद भल वरियांम। कुळ जनक कुमरी ब्याह करसी, रिधु बरसी रांम। —र. रू

वि.—अटल, स्थिर।

उ०—१ सार आचार कुळ भार धरिया सुरिंद, सुतण 'सादूल' जगि दीह साजै। रहौजी एतला थोक काइम रिधु, रिधू 'नौळा' तणौ वचन राजै। —नाथौ सांदू

उ०—२ पूठ दुरगै बडा घातिया प्रवाडा, कवेसुर बात जुग च्यार कहसी। राण चीतौड़ रौ राज पायौ रिध बडा राठौड रौ आंक बहसी। —दुरगादास राठौड रौ गीत

२ रिद्धि वाला, धनवान, समृद्धिशाली।

उ०—१रिधू गोत कनवज्ज रहायौ। आप चमू सग दरसण आयौ। प्रसन करै जिण सारग पाणी, एकण छत्र धरा धर आंणी। —रा. रू.

उ०—२ रिधू लाज पाता भदा काजि रूपा, इकां एक वाधू अनूपे अनूपा। —रा. रू.

३ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—'गोयद' 'भगवानौ' 'फतौ', ऐ धाधल्ल उदार। रैणायर प्रोहित रिधू, छाळदास सिकदार। —रा. रू

क्रि वि —१ हमेशा, प्रतिदिन, नित्य।

उ०—जोय दिन बीज बंदै जगत जेण ने, रिधू बदै तनै सुजस रोडै। तितर गुण इधक बाखाणजे ताहरा, जाण जै किसी विध चद जोडै। —र. रू.

२ देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

उ०—अइयौ सगति अनंत, प्रगट किया सारी प्रथी। मुदराळी मैंमत रातखी तू हीज रिधू। —मा. वचनिका

रिध्धि—देखो 'रिद्धि' (रू. भे.)

रिन—देखो 'रण' (रू भे.)

उ०—भारी तुज्ज भरोस। रिन मे थित बाधे रहचा। खीची लीनी खोस सारी मो वाली सुरै। —पा. प्र.

२ देखो 'रिण' (रू. भे.)

रिप—देखो 'रिपु' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ सत्थ न को बळ हत्थ के, नां जीपै छळ मत्त। जै पांमै रिप संग्रहै, तप हूंता छत्रपत्त। —रा. रू.

उ०—२ सुजड हथा 'चांडराउ' समोभ्रम, विधि वीरातन बैर विधि। रौपै जई पवगि आसण रिध, रिप तई भंजै राज रिधि। —गु. रू. बं.

रिपइयौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे)

उ०—गूजर माग्या पांच रिपइया, बी पकड़ाया सात। गूजर कै नै राजी करकै, मींडो ल्याया टाळ। —डूगजी जवारजी री छावळी

रिपनाट–वि.—शत्रु के आगे नही झुकने वाला।

उ०—रिपनाट परमळ हाट रावळ, धरण परघर थाट। पित-पाट-राखण पाटपत, नृप काट हूंत निराट। —नैणसी

रिपपतंग–सं. पु. [पंतग+रिपु] दीपक। (ना. मा.)

रिपबळी–स. पु.—इन्द्र। (ना. डि. को.)

रिपयौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

रिपव—देखो 'रिपु' (रू. भे.)

रिपियौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ०—१ रिपिया हाथ वसू कर परा'र पछै ब्याह री बात कैया।
—दसदोख

उ०—२ इतरौ कहि **रिपिया** पाच छडीदार नै इनांम रा देय विदा कियौ। —पलक दरियाव री वात

रिपु, रिपुग—स. पु. [स. रिपुः] १ शत्रु, वैरी, दुश्मन।

उ०—१ करि सारत अस दब्बि ईख नरपत्ति आडवर। सिर संकर दौडियौ, जांग कोपै **रिपु** सबर। —रा. रू.

उ०—२ सादूळ अमगळ सिह सावज, ग्रीठ केहर मयद **रिपु** गज। बांग बाघ लंकाळ वनरज, दोख गम दाढाळ। —गु. रू. बं.

उ०—३ जरा **रिपु** भेसज के ढिग जाय। महाजन जांमण मरण मिटाय। —ऊ. का.

उ०—४ भूप अनम्मी भाळबा, घण **रिपु** करण सहार। ऐ कूरम इळ पर उभै, जनम्या डूंग जुहार। —डूंगजी जवारजी रौ गीत

उ०—५ **रिपुग** देत्य कस सी, अजेत सुल्लती रहे। विजेत बीर बंस की विनेत घल्लती बहै। —ऊ. का.

२ गुणो की दृष्टि से वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तु के प्रभाव या गुणो को नष्ट करने की क्षमता रखती हो।

३ जन्म कुण्डली में लग्न से छठा स्थान।

रू. भे.—रिप, रिपव।

रिपुता—सं. स्त्री. [सं. रिपु+प्र. ता] १ शत्रु होने की अवस्था या भाव।

२ दुश्मनी, शत्रुता, वैरभाव।

रिपुप्रताप—सं. पु.—शत्रु का प्रताप, प्रभाव, रौब।

वि—गर्म। * (डिं. को.)

रिपू—देखो 'रिपु' (रू. भे.)

उ०—कांम **रिपू** कूं सील सू मारथा, लोभ कूं मारथा त्याग। क्रोध कूं आय संतोख झपेट्या, मोह कू ले वैराग।
—स्री सुखरामजी महाराज

रिप्पियौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

रिबकणौ, रिबकबौ—क्रि. स.—इधर उधर आवारा फिरना, घूमना।

रिबकौ—सं पु.—कष्ट, तकलीफ।

रिबणौ, रिबबौ—क्रि. अ.—१ कष्ट पाना, तकलीफ पाना।

२ व्याकुल होना, त्रस्त होना।

३ तड़फना, छटपटाना।

रिबियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कष्ट पाया हुआ, तकलीफ पाया हुआ. २ व्याकुल हवा हुआ, त्रस्त हुवा हुआ. ३ तड़फा हुआ, छटपटाया हुआ।

(स्त्री. रिबियोड़ी)

रिभु, रिभू—स. पु. [स. ऋभु] देवता। (अ. मा., ह. नां. मा.)

रिभूकी, रिभूखी—स. पु. [स. ऋभुक्षिन] इन्द्र। (अ. मा., ह. नां. मा.)

रिमंद, रिम—सं. पु. [सं. अरिम] शत्रु, दुश्मन, बैरी। (अ. मा.)

उ०—१ बाथे ऊंचांणा सुमेर पाथै तेरसा अचूक बांण। रांणवाळा राडि बेळा बेरसा रमाज। **रिमंदा** ऊबेड़ जाडा सेरसा गजा रा गौड, सामता समांन राखै येरसा समाज।
—सनमांनसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ तीर कबांण तोकि, **रिमां** ऊपर रीसाण। आणां पोस नत्रीठ, पीठ खेटक खग पांण। —मे. म.

रू. भे.—रिमि।

रिमक झिमक—देखो 'रिमझिमक' (रू. भे.)

उ०—म्हारे **रिमकझिमक** भाती आज्यो। वीरा, म्हारे कांना ने पत्ता लाज्यौ। —लो. गी.

रिमजोळ—देखो 'रिमझोळ' (रू. भे.)

उ०—औ कोई गैणौ थोड़ौ ई है जकौ थांरा पग में पजावूं। मोती जड़ी **रिमजोळां** रै रगडकौ लाग जावैला। —फुलवाड़ी

रिमझिम—सं. स्त्री. [अनु.] १ छोटी-छोटी बूंदों में धीरे धीरे होने वाली बरसात, वर्षा की हल्की फुहार।

उ०—मन रो भेद लुकाती, नैणा आंसूड़ा ढळकाती। **रिमझिम** आवै बिरखा बींनणी। —चेतमांनखो

२ पैरों की पायल या नूपुर आदि की ध्वनि।

उ०—**रिमझिम** रिमझिम विछिया वाजै। ठनक ठनक वाजै पायलड़ी। होळी आई ए। —लो. गी.

३ ध्वनि, शब्द, झनकार।

उ०—१ आसी ओ बाईजी। पाल भंवर री जांन कोई, **रिमझिम** करता आसी करला-घोड़ला, ए मोरी सइयां। —लो. गी.

उ०—२ भळहळ छकड़ाळ पाखरां **रिमझिम**, अळवळता असवार उभा। वहुं दळि वीचि बाजिया दमांमां, सांमैं तौ ऊपरै 'सुभा'।
—सुभराज गौड़ रौ गीत

क्रि. वि.—१ छोटी-छोटी बूंदों में, धीरे-धीरे।

उ०—रेवड वाळै रौ अलगोजौ गूंज उठ्यौ। **रिमझिम-रिमझिम** मेवलो बरसै। अतै में ही अचांण चूकौ पून रौ एक लहरौ आयो अर बादळी उड़गी। —कन्हैयालाल सैठियौ

रू. भे.—रंमाझमा, रमझम।

रिमझोळ—स. स्त्री.—१ स्त्रियों के पावों में पहनने की घुंघुरूदार चूड़ी, पायल, नूपुर।

उ०—१ रंग रंग री पोसाकां करि आवै छै। जिके अपछरां का सा

झूल दरसावै छै। धमकता रिमझोळां गोर कनै आइ। —पना

उ०—२ आ रिमझोळां री रिम्मां-झिम्मा रणक सुणीजी। इण रणक सू ऊचौ की नाद नी। —फुलवाड़ी

२ मस्ती में घूमने की क्रिया या भाव।

उ०—किरडा कर रिमझोळ, डोल डाळयां रंग घोळै। ऊंदरिया री ग्रोळ कोळ बिल जडा टटोलै। —दसदेव

रू. भे.—रमजोळ, रमझोळ, रमझोळी, रमिझोळ, रामझोळ, रिमजोळ।

रिमझिमक-सं स्त्री.—पायल, नूपुर या घुघरू आदि की ध्वनि, झनकार, ध्वनि।

रू. भे.—रमझमक, रिमकझिमक, रुमकझुमक।

रिमणी—देखो 'रमणी' (रू भे.)

रिमथाटचूर-वि.—शत्रुदल का संहारक।

उ०—'राजौ' निराट रिमथाटचूर 'सांवळ' सुतन्न ऊजळौ सूर। अभनमौ भोज अणखूट चाइ। घण कोपि आबू घड वरण धाइ। —गु. रू. बं.

रिमपथल्ल-वि.—शत्रुदल को गिराने वाला, पराजित करने वाला।

उ०—"देदौ' भिडत दाठक्क मल्ल। "रांणावत' रूकै रिमपथल्ल। —गु. रू. ब.

रिमराह-सं. पु.—शत्रुओं के लिये राहु रूप। शत्रुओं के लिए काल रूप।

उ०—१ पळ खूटा पतिसाह, कर ग्रावध वाहै किलब। मारहथै मरि मारिऐ, रिण गौदौ रिमराह। —वचनिका

उ०—२ हाथळ खळ पटकै केहरी हठमल, रायसाल दूजौ रिमराह। चौड़ै खेत अखाड़ै अणचळ, बाकड़मल ओखळ खगबाह। —ठाकुर नवलसिंध सेखावत रौ गीत

उ०—३ रिण दूल्हौ रिमराह, इद थपू उथपूं। अकह कहंणी करै, अवस पदमिण तू अपू। —मा. वचनिका

उ०—४ थह कोट ऊथाप धरा थरसलै, रिम रेसा रेसे रिमराह। रायांपाळ वसे रढ-रामण, बाधा दह्‌ विचै वाराह। —राव रायपाळ रौ गीत

रू भे.—रिमाराह, रिमिराह, रिम्मराह।

रिमरेसौ-वि.—शत्रुओं को पराजित करने वाला।

उ०—थह कोट ऊथाप धरा थरसलै, रिमरेसां रेसे रिम-राह। राया-पाळ वसै रढ-रामण, बाधा दहूं विचै बाराह। —राव रायपाळ रौ गीत

रिमहर, रिमहरि, रिमहरी-वि.—शत्रु वंशज, शत्रु।

उ०—ऊझटतौ तुरी ऊनागौ असमरि, समहरि भगत सिवा सिव साज रिमहरि रूहिरि मुंड 'रतना' हर, कुळवट करै इसट वट काज। —महाराजा राजसिंघ राठौड

रिमांराह—देखो 'रिमराह' (रू. भे)

उ०—देवडौ "अचळ" दोमज दुबाह, 'रावत्त' समोभ्रम रिमांराह। "डूगरे" मेर" "परबत" "माळ", अरबद्द अढारै-गिरि उजाळ। —गु. रू. बं.

रिमांसाल-वि.—शत्रुओं के लिये शल्य रूप।

उ०—महाजोर 'बाला' अनै 'जैतमालां', धरणी अग्र बागा खगै जंग ढालां। रिमांसाल 'पाता' 'भदा' ढाल 'रूपा' जुड़ै 'ऊहड़ै' बंकड़ा भार जूपा। —रा. रू.

रिमि—देखो 'रिम' (रू. भे.)

उ०—रिमि रूप रमाया खळ सहि खाया गेम गमाया गुण गाया। धिणीयाणी धाया विलब न लाया आराधा ना सुणि आया। —पी. ग्र.

रिमिझिमि—देखो 'रिमझिम' (रू. भे.)

उ०—रिमिझिमि रिमिझिमि झिझिम कसाल कररि कररि करि घट पट ताल। भरर भरर सिरि भेरिग्र साद पाथडीउ आलवीउ नाद। —हीराणंद सूरि

रिमणौ, रिमबौ—देखो 'रमणौ, रमबौ' (रू. भे.)

उ०—दईव दईता सरिसि धरिणि हेठी दियै, लाछिवर दईत रौ मास झडपै लिऐ समदरै ऊपरा पानि बड़रै सूअै, जोरावर दईत साभळी रिमियौ जुऐ। —पी. ग्रं.

रिमिराह—देखो 'रिमराह' (रू. भे.)

उ०—साध गरीब सुधारिसै, रिमां तणौ रिमिराह। पिंडता पाट पधारिसै, पछिम तणौ पतिसाह। —पी. ग्रं.

रिमुकत, रिमुक्त-सं. पु. [सं. ऋमुक्त] ४९ क्षेत्रपालों में से ८ वां क्षेत्रपाल।

रिमेस-सं. पु.—शत्रुओं का अधिपति।

उ०—दळा खूर खंडतै चापडै धूजै,दसूं देस, पूरै भै रिमेस करै, दरवेस वेस। नूर चिकतेस बधै खीण कै लकेस नूर, धिवेसूर हिंदरा दिनेस कमधेस। —दवारकादास दधवाड़ियौ

रिम्म—देखो 'रिम' (रू. भे.)

उ०—(महा) मौड मुरधर तणा खलां दल मौडता, दौड़ पतिसाह सु करै दावा। रौड़ रमता थकां 'चौंड' रिम्म चूरतां, ठौड ही ठौड़ राठोड़ ठावा। —घे. व. ग्र.

रिम्मराह—देखो 'रिमराह' (रू. भे.)

उ०—रतनसी चईनउ रिम्मराह। साकड़इ सत्रां सांमी सनाह। —रा. ज. सी.

रियांण-सं. पु.—१ सगाई ठहरने पर वधू के पिता द्वारा अफीम गलाकर अपने भाई बंधो व संमंधियो को पिलाने की रस्म। (बाभी)
२ अथाई, बैठक।

रियाई—देखो 'रिहाई' (रू. भे.)

रियाबेल-सं स्त्री.—एक लता विशेष।
उ०—सोनजुह रियाबेल चंबेल चबेली के फुलवाद मोगरै की महक गुलाब फूलू की सुगध जवाद। —सू. प्र.

रियायत—देखो 'रिआयत' (रू. भे.)

रियासत-स. स्त्री. [अ.] १ भारत में ब्रिटिश-शासन के अन्तर्गत देशी राजाओ के राज्य।
२ वह क्षेत्र जो किसी एक राजा के शासन मे हो। राज्य।
रू. भे.—रयासत।

रियासती-वि.—रियासत का, रियासत सम्बन्धी।

रिरायोड़ौ—देखो 'रीरायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. रिरायोड़ी)

रिरावणौ, रिरावबौ—देखो 'रीराणौ, रीराबौ' (रू भे.)
उ०—भुवाळी खावतौ फिरै। घर घर गेड़ा काटै। मिनखां मे **रिरावै**, लीलड़ी काढै। गव्हायांरी गरज करै, वकीलां सू वै'म राखै। —दसदोख

रिरावियोड़ौ—देखो 'रीरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रिरावियोडी)

रिळ-स. पु.—मिलने या एक होने की अवस्था या भाव।

रिलकियौ-सं. पु.—फटे पुराने वस्त्रों (चिथडो) की बनी हुई छोटी गद्दी।

रिळणौ, रिळबौ—देखो 'रळणौ, रळबौ' (रू. भे.)
उ०—१ रांम नाम रग रिळ कांमनि कुसंग किळ, मोडन के संग माजनौ गमातौ। —ऊ. का.
उ०—२ पडै चख नीर रिळै प्रथमीज, भूवा उर भीडव लीन भतीज। —पा. प्र.
रिळणहार, हारौ (हारी), रिळणियौ—वि.।
रिळिओड़ौ, रिळियोड़ौ, रिळ्योड़ौ—भू. का कृ.।
रिळीजणौ, रिळीजबौ—भाव वा.।

रिळमिळ-क्रि. वि.—हिलमिल कर, सम्मिलित रूप में, एक साथ।
उ०—इसड़ौ वधावौ सायबा, मोल मंगायदो जी। देवर-जेठाण्यां **रिळ मिळ** गावस्या जी। —लो. गी.
रू. भे.—रळमिळ, रळिमळि।

रिळमिळणौ, रिळमिळबौ—देखो 'रळमिळणौ, रळमिळबौ (रू. भे.)
उ०—तूटै धर साधौ लगै, सूनै महल चिराग। रूठा राजद रिळमिळै, आइयौ मिंत ऐराक। —फुलवाडी

रिळमिळियोड़ौ—देखो 'रळमिळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रिळमिळियोड़ी)

रिळाणौ, रिळाबौ—देखो 'रळाणौ, रळाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ बैठक करौ तौ सूवा चादणी रिळाऊं रे। प्रेम ही प्रताप सूवा झाझरी बजाऊ रे। —मीरा

रिळायोड़ौ—देखो 'रळायोड़ौ' (रू, भे.)
(स्त्री रिळायोड़ी)

रिळियोड़ौ—देखो 'रळियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. रिळियोड़ी (रू. भे)

रिव—१ देखो 'रवि' (रू. भे.)
उ०—१ कमठ भार कसमस्स, दाढ़ वाराह खडक्कै। मंडळ मेर मेखळा धमस धूळी रिव ढक्कै। —गु. रू. ब.
उ०—२ सबळा सांड निबळ साधारण. ब्रवजै तू सागा बरै बीर। किव रांणा कीधा कैलपुरा, हिंदवांणा रिव बिया हमीर।
—हरिदास चारण
उ०—३ तिवर गया रिव तेज तें, तेज गया निस पात। हरीया ग्यान विचारतें, होय करम का नास। —अनुभववांणी
२ देखो 'रव' (रू. भे.)
उ०—रांक सां कर रिव परी केरी, झूझवातइं मेल्ही फेरी। तीणि बात मनि हउ लाजउं, सैन्य कौरव तणे नवि भाजउं।
—सालि सूरि

रिवताळ, रिवताळौ—देखो 'रावताळौ' (रू. भे.)
उ०—सुणता इम ताणिया धांसाहर, कोटां लग छविया कटक। ऊभा पगां न देसी इजत, **रिवताळौ** लेसी रटक।
—बळवंतसिंह हाडा रौ गीत

रिवमंडळ-देखो 'रविमंडळ' (रू. भे.)
उ०—है-खुर रज ऊछळी रजी लग्गी **रिवमंडळ**। चडी सेस सिर-हत्थ, पुहवि गाहट पग्गा तळ। —गु. रू. बं.

रिवदास—देखो 'रैदास' (रू. भे')
उ०—या सुं दास कबिरा नानग, काळ 'र जाळ कढीजै। या सु जन **रिवदास** उधरिये, मीरा वात वनीजै। —अनुभववांणी

रिववंसी—देखो 'रविवंसी' (रू. भे.)
उ०—रिड़मल पाट जोध **रिववंसी**। इळ रखवाळ थयौ प्रम अंसी।
—रा. रू.

रिवाज-सं. पु. [अ.] प्रथा, रीति, रस्म।
रू. भे.—रवाज, रवेज।

रिवी—देखो 'रवि' (रू. भे)

रिवीसुत—देखो 'रवितनय'

रिसअ—देखो 'रिसि' (रू भे) (जैन)

रिसगारौ–वि.—क्रोधी स्वभाव का।

उ०—खीवौ **रिसगारौ** घणौ, हूं समझाऊं जाय। फिकर करौ ना ठाकुरां, मन मह धीरज लाय। —सूरै खींवै कांधळोत री वात

रिसणौ, रिसबौ–क्रि. अ. [स. रसन] १ द्रव पदार्थ का धीरे धीरे बहना, रसना।

२ टपकना, चूना, झरना।

उ०—१ बेटा नै बतळायौ, की जबाब नी मिल्यौ। ठौड ठौड़ लोई **रिसतौ** हौ। गाभा भीर भीर व्हैगा हा। —फुलवाड़ी

उ०—२ अर यूं दीवांणजी रा होठ सूज्योडा, लोई **रिसै**, बोलतां तकलीफ इज व्हैला, आपरौ हुकम व्है तौ म्हैं अरज कर दूं। —फुलवाड़ी

३ समाना, आत्मसात होना।

उ०—वेकळू रेत रा लाठा धोरा में विरखा रौ पांणी **रिसै** ज्यूं उण राज री रया रै अंतस में सगळा अकरम अन्याव झरै, बुडकौ ई नी ऊठै। —फुलवाडी

रिसणहार, हारौ (हारी), रिसणियौ—वि.।

रिसिओड़ौ, रिसियोड़ौ, रिस्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रिसीजणौ, रिसीजबौ—भाव वा.।

रिसतेदार—देखो 'रिस्तेदार' (रू. भे.)

रिसतौ—देखो 'रिस्तौ (रू. भे.)

रिसपत—देखो 'रिस्वत' (रू. भे.)

उ०—नाम **रिसपत** को मिटायौ है रियासत सौं। साफ इनसाफ होत संत औ असत कौ। —कविराजा मुरारीदांन

रिसपतखोर—देखो 'रिस्वतखोर' (रू. भे.)

रिसपतखोरी—देखो 'रिस्वतखोरी' (रू. भे.)

रिसपतियौ, रिसपती—देखो 'रिस्वती' (रू. भे.)

उ०—भावी वस पडिया दुख भुगतौ, जुजमाना जिण रौ की जोर। सिर साटै लीधी धर सूरा, चाटै **रिसपतिया** नै चोर। —अग्यात

रिसपत्त—देखो 'रिस्वत' (रू. भे.)

उ०—भूप जसवता व्है न चिंता सुख सत्ता लेत। जमा खूब जत्ता **रिसपत्त** का न पत्ता मैं। —जुगतीदांन देथौ

रिसबत—देखो 'रिस्वत' (रू. भे.)

रिसबतखोर—देखो 'रिस्वतखोर' (रू. भे.)

रिसबतखोरी—देखो 'रिस्वतखोरी' (रू. भे.)

रिसभ–स. पु. [सं ऋषभः] १ नाभि तथा मरुदेवी का पुत्र एक राजा जिसको यज नामक इन्द्र ने अपनी कन्या जयन्ती ब्याहि थी।

वि. वि.—जयन्ती से इसके सौ पुत्र हुवे जिनमें भरत सबसे श्रेष्ठ था। इसने अपने राज्य को नौ खण्डो मे विभक्त करके अपने नौ पुत्रों को दे दिया और स्वय ससार से विरक्त हो गया। इसने प्रजा को धर्मानुकूल बनाया और पुत्रो को ब्रह्म विद्या का उपदेश दिया। इसने पश्चिमी भारत मे जैन धर्म का प्रचार किया।

२ विष्णु के २४ अवतारो में एक, जो दक्ष सावर्णि मन्वन्तर मे आयुष्मान व अबुधारा के पुत्र के रूप में हुवा।

३ व्यास के निवृत्ति मार्ग का प्रसार करने के लिये होने वाला शिव का एक अवतार, जो वाराह कल्प के वैवस्वत मनवन्तर के अन्तर्गत हुआ। पराशर, गर्ग, भार्गव, गिरीश इनके शिष्य हुवे।

४ इन्द्र आदित्य का पुत्र।

५ स्वरोचिष मन्वतर के सप्त ऋषियो में से एक।

६ इन्द्र और पोलोमी के तीन पुत्रों में से एक।

७ चन्द्र वश का एक राजा, जो कौरवो के पक्ष में लड़ा था।

८ कुशवश के राजा कुशाग्र का पुत्र जो सत्यहित का पिता था।

९ मेरू पर्वत के पास का एक पर्वत।

१० तारा, नक्षत्र।

११ सप्त स्वरों में से दूसरा स्वर जो बड़ा शुभ माना जाता है। इसके उच्चारण मे नाभि से पवन उठकर तालव्य एवं जिह्वा के अग्रभाग से अवरुद्ध होता है। इसका स्वर स्थान मस्तक है।

१२ पंद्रहवां कल्प, जहां से ऋषभ स्वर की उत्पत्ति हुई।

१३ सांड।

१४ बैल।

१५ राम की सेना का वानर।

[स. ऋष्व] १६ इन्द्र।

१७ अग्नि।

[वि.] उत्तम, श्रेष्ठ।

रू. भे.—रखभ, रखब, रिक्खभ, रिखंभ, रिखब, रिखभ, रिखव, रिसह।

रिसभक–सं. पु. [स. ऋषभक] अष्टवर्गीय औषधियो के अन्तर्गत एक औषधि विशेष। (अमरत)

रिसभजिन–सं. पु.—जैनियों के एक तीर्थंकर।

रू. भे.—रिखभजिन।

रिसभदेव–सं. पु. [स. ऋषभदेव] विष्णु के चौबीस अवतारो में से एक।

वि. वि.—देखो 'रिसभ'

रू. भे.—रिखभदेव, रिखवदेव, रुखभदेव।

रिसभधुज—स. पु. [सं. ऋषभ-ध्वज] शिव, महादेव।

रिसवत—देखो 'रिस्वत' (रू. भे.)

रिसवतखोर—देखो 'रिस्वतखोर' (रू. भे.)

उ०—ऊजड़ खेडा व्हा भेडा व्हा ग्रोरा। राजी साधू व्हा खळ **रिसवतखोरा**। —ऊ. का.

रिसवतखोरी—देखो 'रिस्वतखोरी' (रू भे.)

रिसह—देखो 'रिसभ' (रू. भे)

उ०—कइय ग्राबूय डुगरि जाइसिउ, **रिसह** नेमि तरणा गुरण गाइ-सिउ। —जयसेखर सूरि

रिसहेसर रिसहेसरू—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)

उ०—१ करमे वरस लगे **रिसहेसर**, उदक नया में ग्रन्न। करमें जिननें जोऊं गिमारे, खीला रोंप्या कन्न। —वृ. स्त.

उ०—२ सेत्रुंजे नायक वीनति साभलौ, स्री **रिसहेसरू** स्वाम। दीन दयाल तुम्हारे दाखिवुं, अंतर बीतग ग्राम। —ध. व ग्र

रिसांण, रिसांणौ—वि. [सं. रिष् या रुष्] (स्त्री. रिसांणी) नाराज, नाखुश।

उ०—तौ राणी हंसकर कही जे पहलां ही या बात क्यो न कही। इण बात बदळै भला **रिसांण** रहिया। —नापै साखले री वारता

२ जिसकी क्रोध करने की ग्रादत है, क्रोधी स्वभाव का, रूठने की ग्रादत वाला।

उ०—बांनर ग्रनइ बीधी खाधउ, काणी ग्रनइ **रिसांणी**, साप ग्रनइ पखालउ, कादम ग्रनइं कंटालउ ······ —व. स.

स. पु.—१ गुस्सा करने या रूठने की क्रिया या भाव। मान करने का भाव।

उ०—तद वा टाबर री गळाई मूंडौ मस्कोर **रिसांणौ** करती व्है ज्यूं बोली—थें तौ कैता नी के पग पाछौ निकळै ई कोनी। —फुलवाड़ी

२ क्रोध, गुस्सा, मान।

उ०—नित री मार सू ग्राती ग्राय वा हवेली सू **रिसांणौ** करनै बारै निकळगी पण ग्रबै लुगाई री जात जावै तौ कठै जावै। —फुलवाड़ी

रू. भे.—रीणौ, रींयाणौ, रीसणौ, रीसाणौ, रीसणौ, रूसणौ, रूसाणौ।

रिसाघाती—स. पु.—शत्रु, वैरी। (ह. नां. मा.)

रिसाणौ, रिणाबौ—देखो 'रीसाणौ, रीसाबौ' (रू. भे.)

रिसाण हार, हारौ (हारी), रिसाणियो—वि.

रिसायोड़ौ —भू. का. कृ.

रिसाईजणौ, रिसाईजबौ—भाव वा.

रिसायल—वि.—क्रोधी स्वभाव का, गुस्सैल।

रिसायोड़ौ—देखो 'रीसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रिसायोडी)

रिसालदार—स. पु [ग्र.] १ ग्रश्वारोही सेना के एक दल का नायक

२ उक्त नायक का पद।

रू. भे.—रसालदार।

रिसालौ—स. पु. [ग्र. रिसाल:] १ ग्रश्वारोही सेना।

२ सैनिकों की टुकड़ी।

३ सेना, फौज।

उ०—जगी **रिसाला** हलता प्रळै, सामंद हिलोळां जेहा। छात-रगी हसम्मा, भळता काळ चोट। —राघोदास सादू

४ रावरण राजपूतो के लिये प्रयोग मे ग्राने वाला शब्द।

वि—गुस्सैल, क्रोधी।

उ०—पीयणिया मुख ग्रोस पूछसी रवि कोडाळौ। हाथ न थांमौ मेघ मांनसी रीस **रिसाळौ**। —मेघ

रू. भे.—रसाळ, रसालू, रसालौ।

रिसि—सं. पु. [स. ऋषि, प्रा. रिसि] १ तपस्वी, मुनि, संन्यासी, ऋषि।

उ०—१ सिसमार चक्र ध्रुव विण सु तौ, भजै न कुण **रिसि** गण भ्रमण। ग्रगमै साह ग्रवरग सू, कमधा विण चाळौ कवण। —रा रू.

उ०—२ सउ परिवारिहि सु दलिहि हस्तिनाग पुरि नगरि ग्रावइ। ग्रन्न दिवसि **रिसि** नारदह नारि कज्जि ग्रादेसु पामइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ सरब सिरोमणि होवण सारू, लागा करण लड़ाई। मोक्ष गियोडा **रिसि** मुनियां में, ग्रध विच टाग ग्रड़ाई। —ऊ. का.

वि. वि.—इनकी राजर्षि, महर्षि, देवर्षि, ब्रह्मर्षि ग्रादि श्रेणियां भी है।

२ श्रुति, सत्य ग्रौर तप में पूर्ण निरत रहने वाला मंत्र द्रष्टा, वेद मंत्रों का ग्राचार्य।

३ ग्रनुष्ठानादि कर्म बतलाने वाले सूत्रों का रचयिता।

४ नारद, मुनि।

५ वृहस्पति।

६ एक देव जाति।

७ हरिद्वार के ग्रागे का एक तीर्थ, ऋषिकेश।

८ प्रकाश की किरन।

९ मत्स्य विशेष।

रू. भे.—रक्खी, रख, रखि, रखी, रिक्ख, रिक्खि, रिक्ष, रिख, रिखि, रिखी, रिखूं, रिख्ख, रिसग्र, रिसी, रीख।

ग्रल्पा.,—रिखडउ, रिखड़ौ।

रिसिग्रस्त—स. पु. [स. ऋषि-ग्रस्त] उत्तर ग्रौर वायव्य के मध्य की

दिशा, जिधर सप्तर्षि ग्रस्त होते हैं।
रू. भे —रिखीग्रस्त, रिसीग्रस्त।

रिसिक–स स्त्री. [स. रिषीक] तलवार।

रिसिकेस—देखो 'रिसीकेस' (रू भे.)

रिसिदत्ता–स स्त्री.—एक सती विशेष। (जैन)
उ०—रिसिदत्ता परणी घरि आव्यउ, सुख भोगवइ सुविवेक रे।
—स. कु.

रिसिदेव—देखो 'रिखदेव' (रू. भे)

रिसिपूनम, रिसिपूरणिमा–स. स्त्री.—श्रावण, शुक्ला, पूर्णिमा।
रू. भे.—रिखपूनम।

रिसिप्रतत्य–स. पु —ऋषियो द्वारा बनाये हुए शास्त्र।
उ०—थिरा उथत्थ थत्थ तें वितत्थ थत्थते बहें।
रिसिप्रतत्थ तत्थ के प्रतत्थ तत्थ तें रहें। —ऊ. का.

रिसियोड़ौ–भू का. कृ.—१ धीरे धीरे बहा हुआ, रसा हुआ. २ टपका हुआ, चूवा हुआ. ३ आत्मसात हुवा हुआ, समाया हुआ। (स्त्री. रिसियोड़ी)

रिसिराई, रिसिराज, रिसिराय–स. पु. [सं. ऋषि-राज] नारदादि बड़े-बडे ऋषि।
उ०—दुर बुद्धि की सग से आगे ही बिगड्या, बडा बडा रिसिराई।
मैं जिग्यासु जन हुं तेरा, दुर बुद्धि दूर रखाई।
—स्री सुखरांमजी महाराज
रू. भे.—रखांराय, रखीराज, रिखराण, रिखराज, रिखिराज, रिखिराय, रिखीराज, रिखीराय, रीखाराज।

रिसिवर–स. पु.—ऋषिश्रेष्ठ, श्रेष्ठ ऋषि। रू. भे.—रिखवर।

रिसिवरणी–सं. स्त्री. [सं. ऋषि-वर्णिनी] गौत्तम ऋषि की पत्नी अहल्या।
रू. भे.—रिखवरणी।

रिसिव्रत–सं. पु.—ऋषियो की तपस्या, साधना।
रू. भे.—रिखव्रत।

रिसिसूदन–स. पु.—४६ क्षेत्रपालों में से सातवां क्षेत्रपाल।

रिसींद, रिसींद्र–सं. पु. [स. ऋषि+इन्द्र] ऋषियों में श्रेष्ठ।
रू. भे.—रिखेंद्र।

रिसी—देखो 'रिसि' (रू. भे)
उ०—१ थामें ई थोड़ी घणी तौ अकल व्हैला के जे पुरांणा रिसी मुनि माया री ताड़णा नी करता तौ गिरस्ती मरिया ईं साधू-सन्यासिया नै धन रा दरसण नी करावता। —फुलवाड़ी
उ०—२ अइमत्तउ रिसी जे रम्यउ, जल माहै हो बांधी माटी नी पाल। तिरती मूकी काछली, तइ तारचा हो तेहनइ तत्काल।
—स. कु.

रिसीग्रस्त—देखो 'रिसिग्रस्त' (रू. भे.)

रिसीकुल्या–स. स्त्री. [सं. ऋषिकुल्या] एक पौराणिक नदी का नाम।

रिसीकेस–स. पु. [स. हृषीकेश] १ विष्णु का एक नाम, ईश्वर।
(ना. मा.)
२ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर।
३ एक तीर्थ का नाम।
रू. भे.—रिखीकेस, रखीकेस, रखीकेसर, रिखीकेसू, रीखीकेस।

रिसीपंचमी, रिसीपाचम–स स्त्री. [सं ऋषि+पञ्चमी] भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पचमी। इस दिन स्त्रिया जलाशयो पर जाकर ऋषि और पितृ तर्पण करती हैं और मणी या अन्न का भोजन करती हैं।
रू भे.—रिखपाचम, रिखीपंचमी, रिखीपांचम।

रिसीमूक—देखो 'रिस्यमूक' (रू. भे.)

रिसीस, रिसीसर, रिसीस्वर–स. पु. [स. ऋषीश, ऋषीश्वर] ऋषियो मे श्रेष्ठ, ऋषीश्वर।
उ०—उण कही मैं एक जंगळ में धरमसाळा बणावाइ थी उठै गरमी रै मौसम मे एक रिसीस्वर आय छाया मे बैठ सुख पायौ ठडा होय जळ पी घणा चैन सू प्रभू नूं विनती करी। —नी. प्र.
रू. भे.—रखीस, रखीसर, रखीसुर. रखीस्वर, राखेस, राखेसर, रखेसुर, रखेस्वर, रिखसर, रिखहेसरू, रिखीस, रिखीसर, रिखीसुर, रिखीस्वर, रिखेस, रिखेसर, रिखेसुर, रिखेस्वर, रिसहेसर, रिसहेसरू, रिहेसर, रिहेसरू, रीखीय, रुखेसर।

रिस्क–सं. स्त्री.—१ जोखम, खतरा।
२ जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व, भार।

रिसीस्रंग—देखो 'स्रिंगी रिसि' (रू. भे.)

रिस्ट–सं. पु. [सं. रिष्ट] १ सौभाग्य, समृद्धि, ऐश्वर्य।
२ अनिष्ट, हानि, नाश।
३ दुर्भाग्य, अभाग।
४ पाप।
५ उपद्रव।

रिस्टा, रिस्टि–सं. स्त्री. [स. रिष्टिः] तलवार।

रिस्तेदार–सं. पु. [फा. रिश्तःदार] १ नातेदार, सम्बन्धी।
२ वशज, बधु-बांधव।
रू. भे.—रिसतेदार

रिस्तेदारी–सं. पु [फा. रिश्तः दारी] नाता, रिश्ता, सम्बन्ध।

रिस्तेमंद–सं. पु. [फा. रिश्तेमर्द] सम्बन्धी, नातेदार।

रिस्तौ–सं. पु. [फा. रिश्तः] १ नाता, सम्बन्ध, लगाव ।

२ किसी प्रकार का सम्पर्क ।

रू भे.—रिसतौ ।

रिस्यमूक–स. पु. [सं. ऋष्यमूक] दक्षिण का एक पर्वत जिस पर श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता हुई थी ।

रू. भे.—रिखमूकर, रिखीमूक, रिसीमूक ।

रिस्वत–सं. स्त्री. [फा. रिश्वत] किसी को कर्त्तव्यच्युत करके नियम विरुद्ध कार्य करवा कर, अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये, कार्य-कर्त्ता को अनुचित रूप से दिया जाने वाला धन या सामान, घूस, उत्कोच ।

रू. भे. निसपत, निसबत, निस्पत, निस्बत, रिसपत, रिसपत्त, रिसबत, रिसवत ।

रिस्वतखोर–वि [फा रिश्वतखोर] रिश्वत, घूस या उत्कोच लेने वाला ।

रू. भे.—रिसपत खोर, रिसबतखोर, रिसवतखोर ।

रिस्वतखोरी–स. स्त्री. [फा. रिश्वत खोरी] रिश्वत लेने की क्रिया या भाव । घूसखोरी ।

रू. भे.—रिसपत खोरी, रिसबत खोरी ।

रिस्वतियौ, रिस्वती–वि.—रिश्वत लेने वाला घूस खाने वाला ।

रू. भे.—निसपतियौ, रिसपतियौ, रिसपती ।

रिहणौ, रिहबौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू. भे)

रिहा–वि. [फा. रहा] १ बंधन मुक्त, कैद से छूटा हुआ ।

२ मुक्त ।

रिहाई–सं. स्त्री.—मुक्ति, छुटकारा ।

रू. भे.—रियाई ।

रिहैसर, रिहैसरु, रिहेसरू—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)

उ०—मुझ मन ऊलट अति घणौ रे, सो दिन सफल गिणेस । स्वामी स्री रिहेसरू, जब नयणे निरखेस । —वृ. स्त.

रींकणौ, रींकबौ–क्रि. स.—१ रोना, विलाप करना ।

उ०—१ डाढा ताभाडै केरडिया ढीकै, रोटीपांणी नै टीगरिया रींकै । चित पर घोरारव आकर बरचावै, घर घर नर नायक लायक घबरावै । —ऊ का.

उ०—२ बडिंदै रै बड़िंदै सिरदार रींकण लागौ जणां कह्यौ–हाल काई व्हियौ, अवारू ई डाढै । दो वेळा बळै आवूला, सावचेती करणी व्है उत्ती कर लेजै । —फुलवाड़ी

२ दुखी होना, करुणा करना, रंज करना ।

उ०—रया मांय री माय सीझै । जैं थोड़ा बरस औ इज ढाळौ रह्यौ तौ उण राज रा लोग-बाग मरणां रौ हरख मनावैला अर-जलम माथै रोवैला-रींकैला । —फुलवाडी

३ बडबड़ाना ।

उ०—हाथां हूकलिया लटकता लोटा, रिण रिण रीकता सुपनें में रोटा । —ऊ. का.

रींकणहार, हारौ (हारी), रींकणियौ—वि. ।

रींकिओड़ौ, रींकियोड़ौ, रींक्योड़ौ—भू का. कृ ।

रींकीजणौ, रींकीजबौ—कर्म वा. ।

रींगणौ, रींगबौ - रू भे. ।

रींकाणौ, रीकाबौ–क्रि. स. ['रीकणौ' क्रि का प्रे. रू.] १ रुलाना, विलाप कराना ।

२ दुखी करना, करुणा या रंज कराना ।

रींकाणहार, हारौ (हारी), रींकाणियौ—वि. ।

रींकायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

रींकाईजणौ, रींकाईजबौ—कर्म वा. ।

रींगाणौ, रींगाबौ—रू. भे. ।

रींकायोड़ौ–भू. का. कृ —१ रुलाया हुआ, विलाप कराया हुआ ।

२ दुखी किया हुआ, करुणा या रंज कराया हुआ ।

(स्त्री. रीकायोडी)

रींकियोड़ौ–भू का. कृ. —१ रोया हुआ, विलाप किया हुआ २ दुखी हुवा हुआ, करुणा किया हुआ, रज किया हुआ ।

(स्त्री रीकियोड़ी)

रींखण–स. पु. टिड्डी का छोटा बच्चा ।

रू. भे.—रीखण ।

रींगटियौ, रींगटौ–वि.—कृशकाय, पतला-दुबला ।

रींगणबाव, रींगणवाव—देखो 'रांगणवाय' (रू. भे)

रींगणि, रींगणी–सं. स्त्री.—एक प्रकार की औषधि, भुई रींगणी ।

रू. भे.—रीगिणि, रींगिणी ।

रींगणौ–स. पु. बैंगन, वृताक ।

रू. भे —रीगणौ ।

रींगणौ, रींगबौ—देखो 'रीकणौ, रीकबौ' (रू. भे.)

रींगाणौ, रींगाबौ—देखो 'रीकाणौ, रीकाणौ' (रू. भे.)

रींगायोड़ौ – देखो 'रीकायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीगायोडी)

रींगिणि, रींगिणी—देखो 'रीगणी' (रू. भे.)

उ०—रांमोडी नइ रासना, रींगिणि रुद्र-जटाय । रांग रताजणि रुमडी, रनि वनि रग धराय । —मा. का. प्र.

रींगियोड़ौ—देखो 'रीकियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीगियोड़ी)

रींगो-सं. स्त्री —शिकार किए हुए खरगोश का शिर ।

रींगौ-स पु —द्रव पदार्थ की धारा ।

रींघणवाय, रींघणवाव—देखो 'रांगणवाय' (रू. भे)

रींछ-स. पु. [स. ऋक्ष, प्रा. रिच्छो, रिंछो] (स्त्री. रीछड़ी, रीछी)

१ एक चौपाया जगली जानवर, जिसके समस्त शरीर पर लम्बे-लम्बे वाल होते है। भालू, ऋक्ष ।

उ०—१ सिंघ व्याध्र म्रग रीछ वानरा सुहरा सामरा घोर रे । आहेडी को अत्यज आवि म्लेच्छ भयकर चोर रे । —नलाख्यान

उ०—२ घेरै सिकार माहि ससा, लूंकडी, सीह, रोझ, स्याळ रींछ, अनेक हिरण आदि देअर भेळा हुया छै । —द वि.

२ जाम्बुवान का एक नाम । जामवत ।

उ०—महाराज तणौ कहिजै कस मामो, नरकासुर बेटौ निज नेह । सुसरौ रींछ रुखमयो साळौ, अविगत तणौ गनाइति एह । —पी. ग्र.

वि.—कृष्ण वर्ण, काला । * (डिं को.)

रू भे.—रीछ । अल्पा.—रीछीओ ।

रींछड़ी-स. स्त्री.—१ श्री कृष्ण की एक पत्नी जो जाम्बुवान की पुत्री थी । जाम्बवती ।

उ०—कालिंद्री विदा भद्रा कुअरी, कहि लखमणा क्रिपाळ रे । **रींछड़ी** नाग जीती निमौ, पटरांणौ प्रतिपाळ रे । —पी. ग्र.

२ मादा भालू, मादा रीछ ।

रू. भे.—रीछडी ।

रींछपत, रींछपति-स पु. [सं. ऋक्ष-पति] जाम्बवंत ।

रू. भे.—रीछपत, रीछपति ।

रींछराज-स. पु [सं. ऋक्ष-राज] जाम्बवत ।

रू. भे.—रीछराज ।

रींछी, रींछीट-स. स्त्री.—१ धूऐ का बादल जो वर्षा के दिनो मे कोहरे की तरह ऊचे स्थानो में छा जाता है । कोहरा, धुध ।

उ०—१ रजी धोम सू वीटिआ गज्ज राजै वडै अन्नडे जांणि रींछी विराजै । भयाणंक भैभीत सोभत् भारं, क्रमै जाणि आधी निसा अंधकार । — वचनिका

उ०—२ पिक करै कोहक रींछी चढ़ी पहाड़ा बाजतौ, रहचौ पछम तणौ वाव । पथ सीतळ हुवा हुई लीली पुहव, 'रजा' दीजै 'अजा' मारवाराव । —सबळजी लाळस

२ पशुओ की मस्ती जिसके कारण वे दौड कूद कर प्रसन्न होते हैं ।

३ मस्ती ।

रू. भे.—रिंछी, रीछी ।

रींछी पाखर-सं. पु.—घोडे के गर्दन के बंधा रहने वाला चमडे या कपडे का उपकरण जो रीछ के मुख के आकार का होता है ।

रींज—देखो 'रीझ' (रू. भे)

उ०—राजावा री रींज, सुखदाई सारा सुणी । खावद थारी खीज, जग निहाल करती 'जसा' । — ऊ. का.

रींजणौ, रींजबौ—देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू. भे)

उ०—१ रग राग वाग अगराग सू न रींजै, पातिसाह महमदसाह चिंता मैं छीजै । —रा. रू.

उ०—२ साधा ऊपरि साहिबा, रींजौ राघवड़ा । रेंवत चढ नै रामडा आवै आलमडा । —पी. ग्रं

रींजणहार, हारौ (हारी), **रींजणियौ**—वि ।

रींजिओड़ौ, रींजियोड़ौ, रींज्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

रींजीजणौ, रींजीजबौ—कर्म वा. ।

रींजियोड़ौ—भू का कृ —देखो 'रीझियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री रींजियोडी)

रींझ—देखो 'रीझ' (रू. भे.)

उ०—पीरदास एम दाखै प्रभु, कूडै काल्है कांकना । रिणछोड़ राय हो राघवा, रींझ समायै राकना । —पी. ग्रं.

रींझणौ, रींझबौ—देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू. भे.)

उ०—१ आलीजे री सेजा मे रींझ रहूंली । कहि रे मिजाज करु रसिया । —लो. गी.

उ०—२ जिनजी कुं देखि मेरउ मन रींझइ री । तीन छत्र ऊपर सोहइ, आप इद्र चामर वींझइ री । —स. कु.

उ०—३ आखी रात ल्होड़ी लाडी री चाकरी में गुजारै, आंख्या मा'खर काडै है । पण आ बनडी कद रींझै ? टिरड़ाका करै ठीडा देवे है । —दसदोख

उ०—४ समझ हीरा सरदार, राजी चित क्यो सूं रहै, भूमि तणा भरतार, रींझै गुण सूं राजिया । —किरपाराम

रींझणहार, हारौ (हारी), **रींझणियौ**—वि. ।

रींझिओड़ौ, रींझियोड़ौ, रींझ्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

रींझीजणौ, रींझीजबौ—कर्म वा. ।

रींझवणौ, रींझवबौ—देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू. भे.)

उ०—दीयै किसुं दलदरी, सबल रींझवीयौ सता । सगलौ ही संसार धरै आस धनवता । —ध. व. ग्र.

रींझवार—देखो 'रिझवार' (रू. भे.)

रू०—अर्जा मेरा सावरा नवेला सिरदार, वेपरवांही और चाह भरया महीडा । समझवार रींझवार । —रसीलै राज रौ गीत

रींझवियोड़ौ—देखो 'रीझियोड़ौ' (रू. भे).

(स्त्री. रींझवियोड़ी)

रींझाणौ, रींझाबौ—देखो 'रीझाणौ, रीझाबौ' (रू. भे.)

उ०—घट मै सिवरन एक अटला, मुजरा आतम कीया अपला। रोम रोम ररकार लगाया, एक अरीभन कु **रींझाया**।
—अनुभववांणी

रींझाणहार, हारौ (हारी), रींझाणियौ—वि.।

रींझायोड़ौ—भू. का. कृ.।

रींझाईजणौ, रींझाईजबौ—कर्म वा.।

रीझायोड़ौ—देखो 'रीझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीझायोड़ी)

रींटौ–स. पु.—कच्ची ककड़ी।

रू. भे.—रीटौ।

रींणौ, रींयांणौ, रींसणौ, रींसांणौ—देखो 'रिसाणौ' (रू. भे.)

री–सं. स्त्री. [स.] १ गति, चाल। २ बहाव, प्रवाह। ३ ध्वनि, शब्द। ४ वध, हत्या। (एका)

विभ.—की।

उ०—१ फेरै वग्ग तुरंग री, तोले खग्ग करग्ग। रिण पण ऊमगे लगै, 'रैणायर' गयणग्ग।
—रा. रू.

उ०—२ अभवास टाळै परा जमवाळा प्रास ग्यांन। आपरा पगां री राखै पीरदास आस।
—पी. ग्र.

रीख—देखो 'रिसि' (रू. भे.)

उ०—ऊपड़े बजर गगन दुरसि आभड़ै, भरै घट पाण अराण रै भाय। थाट साहाण समंद लक वाळा थया, रीख जेही पिया बूंदी तणै राय।
—राव सत्रसाळ री गीत

रीखण—देखो 'रींखण' (रू. भे.)

रीखांराज—देखो 'रिसिराज' (रू. भे.)

उ०—सूरां पूर भाटा माची अकूटा उठावै सभू, सांची तांन लावै रभा मचावै संगीत। रीखांराज बावै बीण प्रबीण हरखा रतौ, गावै सूखा चोसटी अगौठी रूखा गीत।
—बदरीदान खिड़ियौ

रीखीकेस—देखो 'रिसीकेस' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

रीखीस—देखो 'रिसीस' (रू. भे)

रीख्या—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

उ०—वाह सुग्रीव रीख्या उठी बंकरी, उठी चोकी विरुपाक्ष आतंक री। समसजै चोट वे तरफ तिरसकरी, रात दिन वजै घड़ियाल जिम लंक री।
—र. रू.

रीगटौ–सं. पु.—युवा हरिण।

उ०—माहै राग छै जिके कूद-उछळै, छै रीगटा हिरण छै, सु रुत आइ हिरणी नै घेचता फिरै छै। सबळौ हिरण निबळै न घेचै छै।
—रा. सा. स.

रीगणौ—देखो 'रींगणौ' (रू. भे)

रीछ—१ देखो 'रीछ' (रू. भे.)

उ०—१ जरख रीछ वङ्गाख, सिवा सत लस्स मलक्का। साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का।
—गु. रू. बं.

उ०—२ एक हस्ति आरुही अखभ अस उष्ट्र विगत्ति। सरभ चील सादूळ रीछ बदर तर रत्ती।
—रा. रू.

रीछड़ी—देखो 'रीछड़ी' (रू. भे.)

उ०—अगै कांइ रीछड़ी आंणी, भगत वछळ वात भांणी। जादिवै री अकलि जाणी, मेघडी माणी।
—पी. ग्र.

रीछपत, रीछपति—देखो 'रीछपति' (रू. भे.)

रीछराज—देखो 'रीछराज' (रू. भे.)

रीछा—देखो 'रक्षा' (रू. भे.)

रीछी—देखो 'रीछी' (रू. भे)

उ०—तठा उपरान्ति करि नै राजांन सिलांमति उस्रां गज राजा आगै गडा चरखी दारू आराबा छूटि नै रहिया छै। जांणै धूंधळै पहाड पाखती रीछी लाग रही छै।
—रा. सा. सं.

रीछीऔ–स. पु—१ एक प्रकार का सिंह।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति बडा सिकारी सिंघळी, सादूळ, पटाळा, केहरी नवहथा, कंठीरीआ, रीछीआ, तेलिआ, तीदूला, लकीरिआ, बघेरिया, चीतरा, भाति भाति, जाति जातिरा, नाहर साकळै जडिआ रहडुए गाडे बैठा, कसता कण-णता, बूबाड़ करता वहै छै।
—रा. सा. सं.

२ देखो 'रीछ' (अल्पा., रू. भे.)

रीजेंट–स. पु. [अ.] १ किसी राजा की अवयस्क अवस्था या अयोग्यता की दशा में राज्य का प्रबन्ध करने वाला प्रबन्धक।

रीजेंसी–सं. स्त्री.—१ रीजेंट का कार्य, शासन।

२ रीजेंट का पद।

रीज—देखो 'रीझ' (रू. भे.)

उ०—१ दात दमकै अहर दुत, जांण वमकै बीज। ज्यारी धुन लागी रहै, रहै तपोधन रीज।
—बा. दा.

उ०—२ सुर दक्खै जै जै सबद, रस अदभुत लख रीज। ईढ करै खग सूं 'अभा', वजर न चकर न वीज।
—रा. रू.

रीजड़ी—देखो 'रीझ' (अल्पा, रू. भे.)

रीजक—देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—रावतां बंदुकां उठाइ, जीकौ बदुकां कौणीक भांत री छै। सात सात बिलद री, अकल बांण इसरी, सो सी तासा सज री करी।

लुकमांन रा हाथ री करी। नेखमा वाज नारंजा। पर लोक ही वरसै, रीजक जागी की ना लागी हीसै। सामी करी कीना काळ री सूत। —पना

रीजणौ, रीजबौ—देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू. भे.)

उ०—१ किसन तूझ ना हिमैं कासू कहीजै। रहै कोप नह कोप रीजै न रीजै। —पी. ग्र.

उ०—२ रीज्या देवै न मौज, चूक्या चट चेतौ करै। जा ठाकर री चोज, रती न आवै राजिया। —किरपाराम

रीजणहार, हारौ (हारी), रीजणियौ—वि.

रीजिओड़ौ, रीजियोड़ौ, रीज्योड़ौ—भू. का. कृ.

रीजीजणौ, रीजीजबौ—भाव वा.

रीजवणौ, रीजवबौ—देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू भे)

उ०—स्री महिपति मान रीजवै गुणस्रज, कवि समराथ इसौ नहि कोय। 'मान' समापै लाख मांगणा, 'जसा' 'गजन' रा, विरदा जोय। —बां. दा.

रीजवार—देखो 'रिझवार' (रू. भे.)

उ०—जिण भात आप नै तौ इडर पोहोचावस्यां। म्हे अठै काम आस्या। रजपूती रा रीजवारां नै जीलै चढावस्या। —पनां

रीजवियोड़ौ—देखो 'रीझियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीजवियोडी)

रीजाणौ, रीजाबौ—देखो 'रीझाणौ, रीझाबौ'।

रीजाणहार, हारौ (हारी), रीजाणियौ—वि।

रीजायोड़ौ—भू. का. कृ।

रीजाईजणौ, रीजाईजबौ—कर्म वा।

रीजायोड़ौ—देखो 'रीझायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीजायोडी)

रीजावणौ, रीजावबौ—देखो 'रीझाणौ, रीझाबौ' (रू. भे.)

उ०—रीजावै कमधां राजा नै, वीदग केहौ उकति विसाल। 'विजा' हरौ सौसहस बरीसै, भूप विरद परिया रा भाळ। —बां. दा.

रीजावियोड़ौ—देखो 'रीझायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीजावियोड़ी)

रीजियोड़ौ—देखो 'रीझियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री रीजियोड़ी)

रीझ—स. स्त्री. [सं. ऋद्धि, प्रा. रिज्झि] १ प्रसन्न, खुश या मुग्ध होने की क्रिया या भाव।

२ प्रसन्नता, खुशी, हर्ष।

उ०—१ बाटे नहिं धन वाणियौ, खाटे धन कर खांत। रीझ करै ताळी दिए, हंसै दिखाळै दात। —बा. दा.

उ०—२ सोग सताप सुख दुख दुनियां भरी, करत अकाज कहि कौण काजा। और की रीझ अणखीज तैं क्या पड़ी, आपणी रीझ का खूब छाजा। —अनुभववाणी

उ०—३ ऐसी विध पडत राज चातुरच कळा प्रवीण त्रिलोकू का प्रबध अनेक विध विमळ बाणी सै उच्चरै जिनूं सै रीझ स्री माहाराज कनक जग्योपवीत चढाया। —सू. प्र.

३ पुरस्कार, इनाम।

उ०—१ साह अवरंग के पास या समै आवै। सो तो मनसब रीझ इनांम मन वछया पावै। —रा. रू.

उ०—२ ऐ अहूंवै मैं वात उचारी। तहि हवि तूझ रीझ इकतारी —सू. प्र.

उ०—३ ईण भात सू एवाळियौ देख नै पाछौ आय नै राजाजी नूं सारा समाचार कहिया—महाराज सिलामत, स्री गोरखनाथ जी तपसांय वीराजीया छै जी। सुण नै राजाजी सवा लाख री रीझ दीवी। —रीसाळू री वारता

४ दान, बख्शीश।

उ०—१ राक सरिस दे रीझ, अखिल काइ खीज करै अति। वडौ विहळ हूं बुरौ, पीर सां रीस किसी पति। —पी. ग्रं.

उ०—२ करै फतै कमधज्ज, करै बह रीझ कवेसां। करि गुण परख सकाज, देस देसा परदेसा। —सू. प्र.

उ०—३ दातारा इक दाय, आथ नहीं जो आप रै। काढै ब्याज कराय, रीझ परी दे राजिया। —किरपाराम

५ उदारता।

उ०—सुकवि निवाजै सोमसी, भूप रीझ जस भाख। पाल दिया परमारवै, साठ गाव सौ लाख। —बां. दा.

६ अनुग्रह, कृपा।

उ०—देस माहि आवता ही ओठी नू सीख देर बिपत्ति रा महाराणव मे मग्न मागळियांणी पुत्र सहित बेस रौ विपर्यास करि कैराऊ ग्राम रा ठाकुर रोहडिया बारहठ आल्हा रै बास जाइ रही अर थोडा दिनां मे बडा विस्वास रै साथ महानस री मालिक होइ चारण री चाकरी मे चित लगाइ चातुराई री रीझ चही। —वं. भा.

रू. भे.—रीज, रीझ, रींज, रीझु।

रीझण—वि.—मोहित या मुग्ध होने वाला।

उ०—पर घर रीझण करहला, नीधरिया धर आव। बीजां एक झबूकडा, बेला एकौ साव। —अग्यांत

रीझणौ—वि.—१ खुश होने वाला, प्रसन्न होने वाला।

उ०—१ भट चारण गुण भणै, तिकां रीझणौ सतीखौ। माया ऊधांमणौ, सघण वरसणौ सरीखौ। सू. प्र.

उ०—२ तुरगा कब्यंदां बांबराड भडां रांम ताखा । निखंगा **रीझणा** धाड़ जानकी नरेस । —र. ज. प्र

२ मोहित होने वाला, मुग्ध होने वाला ।

रीझणौ, रीझबौ—क्रि. अ. [सं. ऋध्, प्रा. रिज्झइ] १ प्रसन्न होना, खुश होना ।

उ०—१ कहणी प्रभु **रीझे** न कछु, रहणी **रीझे** रांम । सुपने की सौ म्होर सूं, कोडी सरे न काम । —ऊ. का

उ०—२ कहियौ सकति जेम दुज कहियौ । अति **रीझै** छत्रपति ऊमहियौ । —सू. प्र

उ०—३ तद पातसाह री हजूर गया । इंयां कनै विद्या हुती सु दिखाई । पातसाह **रीझीयौ** । —नैणसी

२ मोहित होना, मुग्ध होना ।

उ०—१ नरवर नळराजा-तणउ ढोलउ कुवर अनूप । राणि राउ पिंगळ तणी, **रीझी** देखे रूप । —ढो मा.

उ०—२ पौह नूत गान चंद्रका पेखै । दिल **रीझियौ** वाग छिबि देखै । —सू. प्र.

३ मस्त होना, मग्न होना ।

उ०—१ सखी अमीणौ साहिबौ, निरभै काळौ नाग । सिर राखै मिण सामध्रम, **रीझै** सिंधू राग । —बा दा

उ०—२ हरीया राग न **रीझबौ**, वेद न विद्या पाठ । काया जासी एकली, साथै खफण काठ । —अनुभववाणी

४ तुष्टमान होना ।

उ०—१ **रीझ** दिया रिड़माल ने, नव कोट नूंभै नर । राव मुखां इम रट्टियौ, कमधज जोड़ै कर ।

—ठाकुर जूझारसिंह मेड़तियौ

उ०—२ सुणि सुरां अरज बोलै लछीस । आदू मौ सेवग अवधि ईस । **रीझियौ** अह दसरत्थ राय, अवतार धरू इण ग्रेह जाय ।

—सू. प्र.

५ उमंगित होना, उत्साहित होना ।

उ०—जइ कुरूदलि झूझउ सस्त्र नइं स्नानि सूझउ । तउ मनि अति **रीझउं** पाप रेखा न वीझउ । —सालि सूरि

६ प्रेम हर्ष आदि से पुलकित होना ।

उ०—निगरभर तरुवर सघण छाह निसि, पुहपित अति दीप गर पळास' । मौरित अब **रीझ** रोमचित, हरखि विकास कमळ कृत हास । —वेलि.

रीझणहार, हारौ (हारी), रीझणियौ—वि.

रीझिओड़ौ, रीझियोड़ौ, रीझ्योड़ौ—भू. का. कृ.

रीझीजणौ, रीझीजबौ—भाव वा.

रिंझणौ, रिझबौ, रीजणौ, रींजबौ, रीझणौ, रीझबौ, रीझवणौ, रीझवबौ, रीजणौ, रीजबौ, रीजवणौ रीजवबौ, रीझवणौ, रीझवबौ, रीधणौ, रीधबौ । —रू. भे.

रीझळ—वि.—१ प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला ।

२ मोहित या मुग्ध होने वाला ।

३ जानने वाला ।

उ०—मूढ जिकै गुरु मंत्र ज्यूं, चुगली स्रवण सुनंत । राग तान **रीझळ** नही, ढोलौ सीस धुणत । —बा. दा.

४ दातार, दानी ।

रीझवणौ, रीझवबौ—देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ऊडै लोहा बूर झल, सूर न जाय सरक्क । चढै गजा दातूसळा, रण **रीझवै** अरक्क । —बा. दा.

उ०—२ दूहा गूढा गीत स्यु, कवित कथा बहु भांति । **रीझवियौ** रांणौ चतुर, क्रीड़ा केलि करंति । —प च. चौ.

उ०—३ काची कळी न हेळियौ, गुणे न **रिझवियोह** । हेली थारौ करहलौ गहमाती गमियोह । —अग्यात

रीझवार—देखो 'रिझवार' (रू. भे.)

उ०—असे तमासे अनेक भांति भांति पातिसाह की दसतूरी की सिकार । हौसनायका की जीवन श्रीमहाराजा जी की **रीझवार** आतुसू के धमके बाणू की चोट । —सू. प्र.

रीझवारगी—स. स्त्री.—१ रिझवार होने की अवस्था या भाव ।

२ दान करने की प्रवृत्ति, दान करने का स्वभाव ।

रीझवियोड़ौ—देखो 'रीझियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. रीझवियोडी)

रीझविहापत—वि [राज-रीझ+सं. विहापतं=दान] दातार, दानी ।

(अ. मा.)

रीझाणौ, रीझाबौ—क्रि. सं. ['रीझणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ प्रसन्न करना, खुश करना ।

२ मोहित करना, मस्त करना ।

३ मस्त करना, मग्न करना ।

उ०—विन पावां जाह नाचिबौ, विण कर ताळ वजाय । विनां राग **रीझायबौ**, विना कंठ सुर गाय । —अनुभववांणी

४ तुष्टमान होने के लिए प्रेरित करना ।

५ उमगित करना, उत्साहित करना ।

३ पुलकित करना

रीझाणहार, हारौ, (हारी), रीझाणियौ—वि.

रीझायोड़ौ—भू. का. कृ.

रीझाईजणौ, रीझाईजबौ—कर्म वा. ।

रिंझाणौ, रिंझाबौ, रिझवाणौ, रिझवाबौ, रिझवारणौ, रिझवारबौ रिझाणौ, रिझाबौ, रिझावणौ, रिझावबौ, रीजाणौ, रीजाबौ, रीजावणौ, रीजावबौ, रीझावणौ, रीझावबौ ।—रू. भे.

रीझायोड़ौ—भू.का.कृ.—१ प्रसन्न किया हुआ, खुश किया हुआ. २ मोहित

किया हुआ, मुग्ध किया हुआ. ३ मस्त किया हुआ, मग्न किया हुआ, ४ तुष्टमान होने के लिए प्रेरित किया हुआ. ५ उमगित किया हुआ, उत्साहित किया हुआ ६ पुलकायमान किया हुआ।
(स्त्री. रीझायोडी)

रीझाळ, रीझाळू, रीझाळौ—वि.—१ खुश व प्रसन्न होने वाला।
२ मोहित व मुग्ध होने वाला।
३ उदार, दानी।
४ रसिक।

रीझावणौ, रीझावबौ—देखो 'रीझाणौ, रीझाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ देवण ने रतिदान जाच जाचू फिर जाचूं। रीझावण दिन रात नाच नाचू फिर नाचू। —ऊ. का.
उ०—२ वाय पखावज ताळ वजावै, सुर गुण गाय जगत **रीझावै**। —अनुभववाणी
उ०—३ गूगा राग इलाप कर कोई राव **रीझावै**। —केसोदास गाडण
उ०—४ भला परमेस्वर बिना आ गूजरी किण सू प्रीत कर सकै। फगत आपनै **रीझावण** सारू ई इण री जलम व्हियौ। —फुलवाडी
रीझावणहार, हारौ (हारी), रीझावणियौ—वि.।
रीझाविओड़ौ, रीझावियोडौ, रीझाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
रीझावीजणौ, रीझावीजबौ—कर्म वा.।

रीझावियोड़ौ—देखो 'रीझायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. रीझावियोडी)

रीझियोड़ौ, रीझीयोड़ौ—भू. का. कृ.—१ प्रसन्न हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ. २ मोहित या मुग्ध हुवा हुआ ३ मस्त या मग्न हुवा हुआ. ४ तुष्टमान हुवा हुआ. ५ उमगित या उत्साहित हुवा हुआ. ६ पुलकित हुवा हुआ.
(स्त्री. रीझियोडी)

रीझु—देखो 'रीझ' (रू भे)
उ०—वेउ हूफइ वेउ बाकर वाइ राय तणा मनि **रीझु** ऊपाइ। धरणि धसक्कइ गाजइ गयणु, हारिइ जीतइ जय जय वयणु। —सालिभद्र सूरि

रीझौ—वि.—रीझने वाला।

रीटौ—देखो 'रींटौ' (रू. भे.)

रीठ—सं. पु. [स. रिष्ट=प्रा. रिठ] युद्ध, समर। (डिं. को.)
उ०—१ दगै अराब ताम दइवाणा, अगनि चढै धर गिर असमाणा। दुगम **रीठ** गोळां दरसाई, वीरभद्र जिम धटा वणाई। —सू. प्र.
उ०—२ एक घडी धारा झडी, **रीठ** पड़ी रिण वार। दोनू दुयण 'अजीत' रा, समहर थया सधार। —रा रू.
उ०—३ भूंडण ई विकराळ चडी रौ रूप धारचा **रीठ** बजायौ पण वजायौ। —फुलवाड़ी
[सं. रिष्टि:] २ तलवार।
उ०—१ जात सुभाव न जाय, रागड़ के वोदौ हुवै। आरण बाज्यां आय, **रीठ** बजाडै राजिया। —किरपाराम
उ०—२ पिसण पीठ खग जो जडूं, पिसण जडै मौ पीठ। किसूं नफौ कह कामणी, राड बजाया **रीठ**। —बा दा.
उ०—३ हरीया हौदै ऊपरै, रावत वाई **रीठ**। मारचौ राजा मोह कूं, पडचौ तळफै पीठ। —अनुभववाणी
३ शस्त्र।
४ शस्त्र प्रहार, आघात।
उ०—१ गडंक्कै जगाळां नाळा कुडाळां भणंके गोण। तोडवै तेजाळा रणताळां मे नत्रीठ। दळां पेलां वाळां सजै दताळां ढाहते दिये। रावतौ बगाळां माथै करम्माळा **रीठ**। —रावत सारंगदेव रौ गीत
उ०—२ पडै उत्तबंग चढै तन पीठ। रौदाळां भीक किरमल्ल **रीठ**। —मा. वचनिका
उ०—३ गाव नजीक वेढ हुई, सु वडौ लोह रौ **रीठ** पडियौ। अठै उलौ-पै'लौ घणौ साथ कांम आयौ। —नैणसी
५ शस्त्र प्रहार से उत्पन्न ध्वनि। शब्द, आवाज।
उ०—१ हरवळ 'गजबंध' हुवौ, 'अमर' लडियौ उण वारा। खेडेचा दिखणियां, **रीठ** वागौ खग धारा। —सू. प्र.
उ०—२ ताहरा पाबूजी खेत बुहारनै लडाई कीवी। वडौ **रीठ** वाजियौ। ताहरा पाबूजी कांम आया। —नैणसी
उ०—३ सो पोहर एक तक **रीठ** बाजियौ। —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—४ निहसंति जोध नत्रीठि। रिण रूक वायरि **रीठ**। बे निहस सेन निसक, किरि रांम रामण लक। —गु. रू. बं.
६ असह्य शीत, सर्दी।
उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़िसी **रीठ**। दोहागिण-घट सामुहउ, सौहागिण री पीठ। —ढो. मा.
रू. भे.—रिट्ठ, रिठ, रिठि, रीठण।
मह.,—रीठौ।

रीठण—देखो 'रीठ' (रू. भे.)
उ०—फिर दोळा अळगा फिरंग, रण मोळा पड़ राम। ओला नह[ि] ले आउवौ, गोळा **रीठण** गांम। —अग्यात

रीठौ—स. पु.—१ एक बड़ा जंगली वृक्ष।
२ इस वृक्ष का फल जो बेर के बराबर होता है।
३ देखो 'रीठ' (मह., रू. भे.)

उ०—सिधां सावतां सहेतौ आखाडै सोहियौ, राग सिधु बजै खाग रीठौ। समर भूपाळ आदेस करतां सहूं, दळां माहेस माहेस दीठौ।
—महेसदास राठौड रौ गीत

रीढ, रीढक—स. पु. [सं. रीढकः] १ मनुष्य आदि कुछ विशिष्ट प्राणियों के शरीर के पृष्ठ भाग मे गर्दन से कमर तक की सीधी मोटी हड्डी जो पसलियों से जुडी रहती है। मेरूदड।

उ०—इसडौ बचन सुणि विरोध रौ क्रोध बिसारि बिजय सूर री जोड़ायत कर में कटार झालि साहस ढबण रै काज **रीढक** रै समीप आप री पीठ फाडि नैत्र-मूढ मूरच्छित बालक नूं······
—वं. भा.

२ किसी बात या विषय का मूल आधार।

३ नाश, सहार।

४ फूंक और वायु से बजने वाले वाद्यों मे स्वर बनाने वाली वस्तु।

रीढणौ, रीढबौ—क्रि. स.—मर्यादा का उल्लघन करना, अवज्ञा करना।

रीढा—सं. स्त्री.—हठ, जिद्द, दुराग्रह।

उ०—साह्यौ हठ बप्पवस बिरुद बढावन कों। रावन कों **रीढा** दै सिटावन को साह्यौ ना।
—महाकवि सूरधमल्ल

रीढियोड़ौ—भू. का. कृ.—हठ या जिद्द किया हुआ, दुराग्रह किया हुआ। (स्त्री. रीढियोड़ी)

रीणथंबर—देखो 'रणथबोर' (रू. भे.)

उ०—पछै दिन २ अजमेर रह नै साहजहा **रीणथंबर** री पाखती होय आगरै आयौ।
—नैणसी

रीणवास—देखो 'रणवास' (रू. भे.)

उ०—थाप्या साहण वर तुरी। थाप्या मदिर घरि कविलास। थाप्या चौरा चउखडि। थाप्या साभरि का **रीणवास**।
—बी. दे.

रीणायर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—थळ माथै निवांण करि नर कांय लोडै नीर। नाळै खोळै न मिळै, **रीणायर** वीणि हीर।
—वील्होजी

रीणौ—१ देखो 'रण' (अल्पा., रू भे)

उ०—फीणौ करह कहूकीयौ, **रीणौ** मझि कराह। जांणै फूलाणी कांबाटीयौ, ऊमाहीयौ घरांह।
—लाखा फूलाणी री बात

२ देखो 'रिसाणौ' (रू. भे.)

रीत—सं. स्त्री. [स. रीतिः] १ प्रथा, रस्म, रिवाज, परम्परा, रीति।

उ०—१ एक कहै आप रै, कियौ मत स्वारथ कज्जै। एक कहै अगगम, **रीत** अण प्रीत सु रज्जै।
—रा. रू.

उ०—२ पै'ली बैः बिहाल की बात नै डाढी चोखी बतावै, जिका ही पछै बीं बात री माड़ी चुगली करण लाग ज्यावै। दुनिया रौ इसौ धारौ है, इसी **रीत** है। जगती रा झूठा जाळ है, पापा रा लपचेड्ड पपाळ है।
—दसदोख

उ०—३ ससतर सुं नहीं छेदीयै, पावक लगै न सीत। हरीया ऐसी ब्रह्म की, उद बुद कहीयै **रीत**।
—अनुभववाणी

२ तौर, तरीका, ढग, विधि।

उ०—१ साथ 'सवाई' तेडियौ 'जोध' हरै 'जैसाह'। **रीत** विविध मनुहार री, अति उद्धरी अथाह।
—रा. रू.

उ०—२ राज काज **रीत** नीत बूझतौ रह्यौ। वाट आधरे कियार सूझतौ रह्यौ।
—ऊ. का.

३ नियम, कायदा।

उ०—१ आरा माहि थी लापसी ल्याया सौ तौ उणा रा टोळा री **रीत** है पिण नेम में द्रढ रह्यौ। काल कर गयौ पिण काचौ पांणी पीधौ नही।
—भि. द्र.

उ०—२ सिस सेती सतगुर कहै, परापरी की **रीत**। और भरम कु छाडि दे, राम नांम सुं प्रीत।
—अनुभववांणी

४ स्वभाव, आदत, प्रकृति।

उ०—१ राव रक धन और, सूरवीर गुणवांन सठ। जात तणौ नह जोर, **रीत** तणौ गुण राजिया।
—किरपारांम

उ०—२ सूर सती अर साध की, हरीया हेकौ **रीत**। ऊ त्यागै तन साम कजि, हरिजन हरि की प्रीत।
—अनुभववाणी

५ मर्यादा।

उ० – कठण **रीत** रजपूत कुळ, खाग कमाई खाय। और कमाई आदरै गोलौ झगड़ै गाय।
—बां. दा.

६ स्थिति।

उ०—क्रत पूरण वधियौ कळू, **रीत** दवापुर राज। वंस हंस अवतस विध, अभैसाह' महाराज।
—रा. रू.

७ धार्मिक विधान।

उ०—किण सूं जे पैगबर **रीत** रा, बांधण हार छै अर बादसाह उण रा चलावण हार छै सौ हिमायत करण हार उण री **रीत** रौ कहियौ छै।
—नी. प्र.

८ वर पक्ष की ओर से कन्या के पिता को, कन्या का सम्बन्ध करने के उपलक्ष मे दिया जाने वाला, धन, रुपया आदि।

उ०—वर कन्या सनमन समै, तुलतै मानु तराज। वर हळकौ (जद) टीकौ धरत, वर गुरु **रीत** रिवाज।
—उभयराज

रू. भे.—रिति, रिती, रीति, रीती।

रीतभांत—सं. स्त्री.—तौर, तरीका, ढंग, रीति।

रीत रिवाज—स. पु.—रस्मो रिवाज, प्रथा, परम्परा।

उ०—जुग री जाणकारी राखतौ थकौ आपरै गांवड़ै में मांडी **रीत रिवाजां** मिटावण नै नौ जुवांना रौ संगठण करै है।—दसदोख

रीतवणौ, रीतवबौ–क्रि॰ अ — खाली होना, रिक्त होना।

उ॰—भरया सरवर **रीतवै** रीता जळ भारै। —कैसोदास गाडण

रीतवियोड़ौ–भू का. कृ —खाली हुवा हुआ।

(स्त्री रीतवियोडी)

रीतहड़, रीतहर, रीतहरी–स॰ स्त्री.—शकुन शास्त्र के अनुसार ऊध दिशा का नाम। वि. वि.—देखो 'दिसा चक्र'।

उ॰—१ दीखण-दहीया कोहर कुसलवै वरणाऊ चाभु। १ उत्तर नु-घटीयाळी भेळ बीकानेर था। १ **रीतहड़**-बाप कीरखेड री वा सीव पुड़ीयाळ सीरड सीव। —नैणसी

उ॰—२ हासलपुर खुरद सोभत था कोस ६ **रीतहड़** कूंए मा है। जाट खारोळ वसै। —नैणसी

उ॰—३ खुटनी कोस ६ **रीतहर** कूण मां है। जाट पलीवाळ वसै। —नैणसी

उ॰—४ हरसीयाहडी सोभत था कोस ७ **रीतहर** कुण मा है। जाट वाणिया खारोळ वसै। —नैणसी

उ॰—५ गोधेळाव कोस ४ **रीतहरी** कूण माहै। जाट वसै।
—नैणसी

रीति, रीती–स. स्त्री. [स. रीतिः] १ गीत या गायन की लय, तर्ज।

उ॰ - सदा प्रिया सु प्रीति **रीति**, गीत सारणी नही। निसास रोज आननी, उरोज धारणी नही। —ऊ का.

२ सस्कृत साहित्य मे किसी विषय का वर्णन करने मे वर्णों की वह योजना जिसमे ओज, प्रसाद या माधुर्य आता हो। यह चार प्रकार की मानी गई है।

३ राजस्थानी या हिन्दी साहित्य की मध्य युगीन काव्य रचना की प्रणाली या शैली विशेष जो आचार्यो द्वारा निरुपित शास्त्रीय नियमो, लक्षणो आदि पर निर्भर थी। और जिसमें वर्ण मैत्री, अलकार जथा उक्ति, पिगल (छन्द शास्त्र), रस आदि का पूरा ध्यान रखा जाता था। इस प्रकार के ग्रथो के नाम, रीति ग्रन्थ कहलाते थे। जैसे राजस्थानी में रघुनाथ रूपक, रघुवर-जस-प्रकास आदि।

४—देखो 'रीत' (रू. भे)

उ॰—१ रोकी तै कुरीति **रीति** सुरीति को भोंकी साथ, ताकत त्रिलोकी ऐसौ मत अवगाह्यौ तै। —ऊ. का.

उ॰—२ दान देन सिख्यौ आन राखन कौ सीख्यौ दिव्य, सीख्यौ थान ग्यान मांन मुद्ध सीख्यौ तू। साहस सरीर सीख्यौ नीर छीर प्रीति सीख्यौ, सीख्यौ धीर **रीति** वड वीर बुद्धि सीख्यों तू।
—ऊ का.

उ॰—३ **रीती** को लिहाज विपरीत ना लिहाज राख्यौ, राख्यौ मान मान कै न हान वीच राख्यौ तै। —ऊ. का

रीतोड़–स. पु [स. रिक्त] 'भेलवे कुए में चरस खाली होने के बाद बैलो के लौटने का रास्ता।

वि. वि.—देखो 'भेलवौ'।

रीतौ–वि. [स. रिक्त] (स्त्री. रीती) १ रिक्त, खाली।

उ॰—१ वरसि के वन माहि वीता, ग्यान गोविंद रूप गीता। राकसा रा नेस **रीता**, आतम अजीता। —पी. ग्र

उ॰—२ खाटी दाटी रहि गई, कुछी न चाली साथि। जन हरिया नर दीन विन, हाल्यौ **रीतै** हाथि। – अनुभववाणी

उ॰—३ आदि अनादि जीवडौ, भमियौ चऊं गति माय। अरहट घटि का नी परै, भरि आवै **रीतौ** जाय। —जयवाणी

२ अज्ञ, अज्ञानी।

उ॰—नर राची म्है न लखी, तू कत लख्यौ सुजान। पढ कुराण **रीतौ** रह्यौ, राच्यौ नहीं रहमान। —अज्ञात

३ परवश, पराधीन, मोहताज।

उ॰—राम नाम न चेतियौ, आळस करि करि अंग। हरीया सै **रीता** रह्या, सूरा कूकर सग। —अनुभववाणी

४ गरीब, निर्धन, कगाल।

५ हताश, निराश।

उ॰—खळ चीधात विखम सी खोसै, वायक तोपां रह्यौ वणाय। दुरग न दीधौ दस सहमै, पात गयौ **रीतौ** पतसाय।
—महाराणा कूंभा री गीत

६ रहित, विहीन।

रीध—देखो 'रिद्धि' (रू भे)

उ॰—भीवै मन माहै जांण्यौ बावड़ी मांहै किसूं करै छै। या जाण वरडी रा छेकडा माहै जोवै। तठै देखै तौ अस्त्री छै। देख नै माथौ धूंणै छै। नै जाण्यौ परमेस्वर रा घर माहै घणी **रीध** छै, नै आ जो म्हारै बैर होय नै इण रै पेट रौ कोई नग नीपजै तौ हूं पृथ्वी माहै अमर होवूं।
—जखडा मुखड़ा भाटी री बात

रीधणौ, रीधबौ—देखो 'रीझणौ, रीझबौ' (रू. भे)

उ॰—१ स्रम थोड़ै बोह नफौ सापजै, बीसर मती अनोखी बात। रहै प्रसन्न ऐ आयस **रीधै**, छात सिधा नरपतिया छात। —बां. दा.

उ॰—२ मिळिया बंका राठवड़, चित हित दाख वचाव। सुख जाडौ कीधौ सगै, **रीधौ** हाडौ राव। —रा. रू.

उ॰—३ कवि आखर ज्यूं 'करन' तण, मरहट्टी महिळाव। कुच आधा ढकिया निरखि, **रीधौ** चाळक राव। —बां. दा.

उ॰—४ रायधण रात दिन सजनळ सूं नजरा सूं जोवतौ रहै, पण औ जांणै नही आ बैर छै कै माटी छै। इयै रै रूप पर **रीधौ** रहै। —रायधण भाटी री वारता

उ॰—५ रवद पिराग देखि छिब **रीधा**, डेरा आय गंग तटि दीधा।

पहरै जवन सबज पौसाकां, असि चहुंवै चढिया एराकां। —सू. प्र.

उ०—६ नरपति रहियौ जैनगर, परम रिदै धर प्रीत। **रीधौ** भूप विलास रस, कीधौ चैत विनीत। —रा. रू.

उ०—७ निजर नमो नरसघ, कोप दांणव सिर कीधौ। लाधा थारा लखरा, रांम भगतां सिरि **रीधौ** —पी. ग्र.

उ०—८ तवै भू अहल्या गणका तराई, रटा बोर भीलणी तणा खाय **रीधौ**। करां ताड़का मार ऊधार सामी, करा ग्रीध वाळो वळै स्राध कीधौ। —र. ज. प्र.

उ०—९ राजा देखि कतूहळ **रीधौ**, दुगम जांणि चित सोच न कीधौ। धारण वीर ताम इम धरियौ, देखै मूझ भूप न डरियौ। —सू. प्र.

रीधणहार, हारौ (हारी), रीधणियौ—वि.।

रीधिश्रोड़ौ, रीधियोड़ौ, रीध्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रीधीजणौ, रीधीजबौ—भाव वा.।

रीधल—देखो 'रीझल' (रू. भे)

उ०—१ खागला झला ओखला खोव, घायलां मलां घूमलां घोव। **रीधलां** रिला ऊजळां रत्त, गउथलां भड़ां भड खळा गत्त। —गु. रू. बं.

रीम—स. स्त्री—१ बीस दस्ते कागजो की गड्डी।

२ तलवार। (ना. डिं. को)

रीयांणौ—देखो 'रिसांणौ' (रू. भे.)

रीर—स. स्त्री.—१ प्रलाप।

उ०—१ **रीर** करइ हसइ, घसइ ऊध्रसइ अग। क्षणु खीजइ क्षणु मांहि क्षमा क्षणि गहिलुं क्षणु चग —मा. कां. प्र.

उ०—२ तिहार-पछी तै विह्वलइ, सिद्धि न सान सरीर। कामकदला कही कही, रोतु पाडइ **रीर**। —मा. कां प्र.

रीराटौ—सं. पु.—दर्द भरी आवाज, कराहट।

उ०—१ पछै स्वांमी जी पधारचा। धसक सूं ताव चढ आयौ। सांझै दरसण करवा आई। जदे स्वामी जी पूछयौ। काई थयौ? यूं क्यूं बोले है। जद **रीराटा** करती कहै स्वामी जी आप रौ पधारणौ हुवौ नै मोने ताव चड गयौ। —भि. द्र.

रीराड़णौ, रीराड़बौ—देखो 'रीराणौ, रीराबौ' (रू. भे.)

रीराणौ, रीराबौ—क्रि. अ.—१ गिडगिडाना।

उ०—१ जिण तिण रो मुख जोय, निसचै दुख कहणौ नहीं। काढ न दे वित्त कोय, **रीरायां** सूं राजिया। —किरपारांम

२ रुदन करना, रोना।

३ दुःख प्रगट करना।

रीराणहार, हारौ (हारी), रीराणियौ—वि।

रीरायोड़ौ—भू. का. कृ.।

रीराईजणौ, रीराईजबौ—भाव वा.।

रीराडणौ, रीराड़बौ, रीराणौ, रीरावौ, रीरावणौ, रीराववौ रू. भे.।

रीरायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ गिड़गिड़ाया हुआ. २ रुदन किया हुआ. ३ दु:ख वर्णन किया हुआ.

(स्त्री रीरायोड़ी)

रीरावणौ, रीराववौ—देखो 'रीराणौ रीराबौ' (रू. भे)

उ०—१ भावे नहीज भात, लागै विणज विडावणौ। **रीरावै** दिनरात रोट्या बदळै राजिया। —किरपाराम

उ०—२ धरै न संका धीर, **रीरावां** रात्यू दिवस। सबळी मांहि सरीर, वेदन म्हारी वीझरा। —वीझरै अहीर ही वात

रीरावणहार, हारौ (हारी), रीरावणियौ—वि.।

रीराविश्रोड़ौ, रीरावियोड़ौ, रीराव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रीरावीजणौ, रीरावीजबौ—भाव वा.।

रीरावियोड़ौ—देखो 'रीरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीरावियोड़ी)

रीरी—स. पु. [सं रिरि] १ पीतल।

उ०—१ जउ लाधउ जिनधरम निरव्याज तउ अनेरइ धरमि किसिउ काज, जउ लाधी सुवरण्ण तणी कोडि तु **रीरी** पहिरवां हूइ खोडि। —व. स.

उ०—२ किहां **रीरी** किहा वरकणय, किहां दीवउ किहा भांण। सांमिणि मझ तुझ अंतरउ, ए एवडउ प्रमाण। —हीराणंद सूरि

रीरीया—स. स्त्री.—१ गिडगिड़ाना, बिलबिलाना।

उ०—१ बाजबा लागी सुभट तणी कोटकडि, नाचेवा लागा धडकबंध, पडिवा लागा ध्वजचिंध, प्रहार जरजर कुंजर पडइ, सूना सणा तुरगम तडफडइ भारडीता गजेन्द्र आरडइं, **रीरीया** करता राउत हथिआर हारइ। —व. स.

रीळ—स. स्त्री.—सहसा या रह रह कर उठने वाली वह पीड़ा या दर्द जिसके कारण शरीर का भीतरी भाग चीरता हुआ प्रतीत होता है, हूल।

उ०—१ सांधौ सांधौ दबायौ। हाल जच्चा रे पेट में **रीळां** हालती ही। डील चभक चभक करतौ हौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ कै तौ आध घड़ी पै'ली वांरा दांत किटकिट बाजता हा, हाडकां में **रीळां** ऊठती ही। —फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—ऊठणी, चलणी, चालणी, हालणी।

२ शीतल वायु की लहर।

रू. भे.—रीळी।

रील—सं. स्त्री.—१ प्लास्टिक का फीता जिस पर किसी नाटक या खेल के प्रतिछायात्मक चित्र होते हैं और जिसे मशीन पर चढ़ा

कर, पर्दे पर उन चित्रों के प्रतिबिंब देखे जाते हैं।

उ०—१ सपनै री घटना सिनेमे री धुंधळी रील री दायी एक आखियां रै आगै फुरती सूं घूमगी। —वरसगाठ

२ बारीक और पक्के डोरे का गट्ठा।

रीळी—देखो 'रीळ' (रू. भे.)

रीव–सं. स्त्री. [स. रव.] हाहाकार, करुणा क्रंदन।

उ०—१ जोयउ चक्रवर्त्ती आठमउ, संभूम नउ जीव। सातमियइ नरकइ गयउ, करतउ मुख **रीव**। —स. कु.

उ०—२ किरिया करता दोहिली जी आलम आणइ जीव। धरम पखइ धंधइ पड़चौजी नर कइक करस्यइ **रीव**। —स. कु.

२ पीड़ा, कष्ट।

उ०—मोह मद्य सरिखूं कहिउरे घारिउ हीडइ जीव। परवसि थयु ते नवि जाणइ अण नरक रै दोहिली **रीव**। —स. कु.

३ चिल्लाहट।

उ०—**रीव** करइं वलि तरफलौ रे जिय थोडे जळ मीन।

—वि. कु.

मह.,—रीवौ।

रीवणौ, रीवबौ–क्रि. अ.—रोना, रुदन करना।

उ०—१ सबद भलका तन सहै, मना न आंणै संक। रावत सोहि मरि रहै, हरिया **रीवै** रंक। —अनुभववाणी

२ कराहना।

उ०—सबद मारकौ मारियौ, **रीवै** सास उसास। हरिया बाहिर बोलिकै, काढि न सधै वास। —अनुभववाणी

रीवौ—देखो 'रीव' (मह., रू. भे.)

उ०—तउ तुं मूकइ नामूकूं नही, तिण परि नाटकी जीवो जी। परमाहम्मी खिण मूकइ नहीं, तिहा पच्यउते करइ **रीवौ** जी।

—स. कु.

रीस–स स्त्री. [सं. रिष् या रोष्] १ क्रोध, गुस्सा, कोप।

उ०—१ उगा मुख बारह दीत उदार, भिडे तिणवार मुंछार भुंहार। जोए जुध **रीस** चढी वरजागि, उठी भ्रत सीचिय जाणिक आगि। —सू प्र.

उ०—२ काचडगारा ऊपरा, रामतणी हे **रीस**। काचड़गारा कूडचा, बिगडै बिसावीस। —बां. दा.

क्रि. प्र.—आंणी, ऊठणी, करणी, चढणी।

२ डाह, ईर्ष्या।

रू. भे.—रीसौ।

रीसड़ली—देखो 'रीस' (अल्पा., रू. भे.)

रीसट, रीसटाळ, रीसटियौ, रीसटी, रीसट्ठ–वि.—कोप या क्रोध करने वाला, क्रोधी, गुस्सैल।

उ०—१ सूरे जी रै बेटौ वेरसी वरस आठ रौ खीवै रै बेटौ जागर वरस दस रौ सो सयांणौ अर बेरसी रौ सुभाव वादी **रीसट** सो सारा जाणै। —सूरै खीवै कांधलोत री बात

उ०—२ वळि **रीसट** वाणियौ दूत बोलै इम डोलै। —ध. व ग्र.

रीसणौ, रीसबौ–क्रि. अ. [स. रिप् या रुष] १ क्रुध होना, खफा होना।

उ०—लखी तोपां सालुळी, पुळी पलटण्या पटैता। सगीना साबळा, आभ छायौ अखड़ैता। तीर कमाणा तोकि रिमा ऊपर **रीसाणां**। आणां पोस नत्रीठ, पीठ खेटक खग पाणां॥ —मे. म.

क्रि. स.—२ क्रोध करना, कोप करना।

उ०—दोख निज दीह न दीसै रे, रसा अवरा पर **रीसै** रे। बात निज हाथ बिगाडी रे आई सोई पात अगाडी रे॥ —ऊ. का.

रीसवंतौ–वि. [स्त्री. रीसवती] १ क्रुद्ध स्वभाववाला, क्रोधी।

रीसवाड़णौ, रीसवाड़बौ—देखो 'रीसाणौ रीसाबौ' (रू. भे)

उ०—तद रावत रिणधीर नै 'सतौ' एक था। पछै सतै रिणधीर ही नु **रीसवाड़ियौ**। तरै रिणधीर ही मेवाड आयौ।

—राव रिणमल री वात

रीसांणउ, रीसांणौ—देखो 'रिसांणौ'।

उ०—सु किणीक वास्तै **रीसांणौ** हुवौ तरै छाडनै अहमदाबाद रा धणी रै चाकर मूसाखान तिण कनै गियौ। —नैणसी

रीसाणौ, रीसाबौ–क्रि. स.—१ क्रोध करना, कोप करना।

क्रि. अ.—कुपित होना, क्रुद्ध होना।

रीसायोड़ौ–भू. का. कृ.—क्रोध किया हुआ. २ कुपित हुवा हुआ।

(स्त्री. रीसायोड़ी)

रीसाळ, रीसाळू–वि.—क्रोध करने वाला, गुस्सा करने वाला।

२ डाह करने वाला, ईर्ष्या करने वाला।

रीसावणौ, रीसावबौ—देखो 'रीसाणौ, रीसाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सांच कहियां थका स्यांम **रीसावस्यौ**, कहें वा बात साची कहायौ। पड़दळी मांय जे न हुतौ जोधपुर, आप रै कहो किण रीत आयौ। —सवाईसिंह चांपावत रौ गीत

रीसावियोड़ौ—देखो 'रीसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रीसावियोड़ी)

रीसियोड़ौ–भू. का. कृ.—क्रोध किया हुआ, क्रुध।

(स्त्री. रीसियोडी)

रीसोद–वि.—१ क्रोध करने वाला, कोप करने वाला।

उ०—नाराजां आरांण झली बीजळी सिलाब नेजां, दुहूं फौजां उलळी दारणा मळी दीठ। लड़ाका **रीसोद** आडी चौड़े धाड़ै धाख लागी, राड़ी चौडे सीसोदां गनीमा बागी रीठ।

—बद्रीदास खिड़ियौ

रीसौ—देखो 'रीस' (रू. भे)

उ०—क्षमा धरम पहिलौ खरौ, इम भाख्यौ जगदीसौ रै । क्षमा करसो तौ जीतसो, मत राखो कोई **रीसौ** रै । —जयवांणी

रुं—देखो 'रोम' (रू. भे.)

रुंआळी—देखो 'रोमावळी' (रू. भे)

रुंऔ—देखो 'रोम' (रू. भे.)

रुंड-सं. पु. [स. रुण्ड:, रुण्डम्] १ शिर शून्य शरीर, बिना शिर का धड कबध ।

उ०—१ गौड़ राजा अरजुणसिंध बैरिया रा थाट बिरोळि बेडा गजा रै चाचर चंद्रहास चलाइ सैकड़ां सूरां नूं साथी करि महारुद्र री माळा मे आपरा मुंड रौ मेरु चढाइ **रुंड** थकौ भी धारा में तिल तिल पळचरां री पांती पुद्गल राखि इस्टलोक पुगौ । —वं. भा.

उ०—२ संधार मार लैकार सेन, मिळ सार धार अंधार मेन । धड़ मुंड खंड बै **रुंड** धक्क, करमाळ वहे किरि काळ चक्क ।
—गु. रू. बं.

२ ऐसा शरीर जिसके हाथ पांव कट गये हों ।

३ शिर, मस्तक । (अ. मा.)

उ०—पड़ झाट झड़ झड़, काट कौरड़, छूटै लंबछड, ताड तड़तड़ । बांण छुट बड, सौक सडसड़, फूट फिफरड़, कलिज झड़ फड । अतड उधरड, लोक लडथड, उळझ आखड़, **रुंड** रडबड़ । पख झड पड. बीर बड बड, अच्छर अड़वड़, धरा धडहड, इसौ मचि आराण । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

यौ.—रुंडमाळ, रुंडमाळा ।

३ युद्ध के समय बजाया जाने वाला एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

रू. भे.—रूंड, अल्पा.,—रुंडलौ, रूंडलो, मह.—रूंडल ।

रुंडमाळ, रुंडमाळका, रुंडमाळा-सं. स्त्री.—युद्ध में वीरगति प्राप्त वीरों के शिरों की माळा जिसे महादेव अपने गले मे धारण करते हैं ।

उ०—१ पेचां मझि स्रोण वहै अणपार, जटा गग जाणिक धार हजार । बघंबर जेम सिचै विकराळ, मडै गळि माळ जिका **रुंडमाळ** । —सू. प्र.

उ०—२ ताळ कर दियै मिळ भूत वैताळ का, करै किलकार रत न्रपत व्है काळका । मरै जटधार धू कियां **रुंडमाळका**, आन भड जीविया जिकै लै आळका । —जोरजी चापावत रौ गीत

उ०—३ वरंगन कंठ धरै वरमाळ, रुकां उडि सीस चढै **रुंडमाळ** । अपच्छर सूर जोडै हिज आय, जई रथ बैठि वसै सुरगि जाय ।
—सू. प्र.

उ०—४ कपाळी चढयौ वैल पै लैर लग्यौ । चढी सिंघ काळी लखै बैल भग्यौ । गिरिमादिक मेखळी **रुंडमाला**, गिरै अंत ततावळी अग्ग छाळा । —ला. रा.

रू. भे.—रुंडमाळ, रुंडमाळा, रुंडमाळी, रुंडाबळ, रुंडावळी, रूंडमाळ ।

रुंडमाळी-सं पु.—१ रुंडों या शिरों की माळा धारण करने वाला, शिव, महादेव ।

स. स्त्री.—२ महाचंडी, रणचंडी, दुर्गा ।

३ देखो 'रुडमाळा' (रू. भे.)

उ०—चौतरफां सतारेस चमू वरंतेस चाली, पत्र पूर काळी हर्के पाळी रत्र पीध । तपै कान ताळी वज्र सिधां जप्प खुलै ताळी, किल्लकै कपाळी **रुंडमाळी** मेर कीध । —करणीदान कवियौ

रुंडमुंड-वि.—मुडे हुए शिरका, मुंडित ।

रुंडळ—देखो 'रुंड' (मह. रू. भे.)

उ०—झट्टकै झाट ओझडौ झौर, फेरी फुरंत फारक्क फौर । ताडलां दळा डूंगळा ट्रक, **रुंडळा** रुलां सीकळां रूक । —गु. रू. ब.

रुंडहार—देखो 'मुडमाळा' ।

उ०—मैमंता विभाड रथ्थी प्राहां रंगां भाराथ मैं, महाबंकी बार पाव अचल्ला मांडीस । बारुंबार भूतळेस ले **रुंडहार** भार वर्णै, प्रथीनाथ जहं बार झाटकै पाडीस । —भगतरांम हाडा री गीत

रुंडावळ, रुंडावळी—देखो 'रुंडमाळा' (रू. भे.)

उ०—क्रुध भयकर जैत सदा जुध, संग वसू सिंध मौन समप्पै । ज्यूं भस्मी तन व्याळ **रुंडावळ**, हैत हळाहळ कंठ करप्पै ।
—क. कु. बो.

रुंडिका-सं. स्त्री. [सं.] युद्ध भूमि, युद्ध स्थल ।

रुंदणौ, रुंदबौ-क्रि. अ.—१ पैरों तले कुचला जाना ।

२ देखो 'रूंदणौ, रूंदबौ (रू. भे.)

३ देखो 'रुंधणौ, रुंधबौ' (रू. भे.)

रुंदवाणौ, रुंदवाबौ-क्रि. स.—पैरों तले कुचलवाना, रौंदवाना ।

रुंदियोड़ौ—१ देखो 'रूंदियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'रूंधियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुंदियोड़ी)

रुंध—देखो 'रूंध' (रू. भे.)

रुंधणौ, रुंधबौ—देखो 'रूंधणौ, रूंधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ चंदन तापइ ससि जळइ, पवन करइ प्रकास । मेह तणां मग्ग **रुंधिया**, अहो रे आसौ मास । —मा. कां. प्र.

उ०—२ हरि हथिआर हलावतां, मुक त्यह **रुंधि** वट्टि । तै मुझ सीधइ आविजै. नाकि धणा जिवि घट्टि । —मा. का. प्र.

रुंधियोड़ौ—देखो 'रूंधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुंधियोड़ी)

रुंमड़ी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की हरी सब्जी विशेष ।

उ०—रामोडी नइं रासना, रीगणि रुद्र जटाय । राग रसाजणी रुंमड़ी, रनि वनि रग धराय । —मा. का. प्र.

रुंवाळी–देखो 'रोमावली' (रू. भे.)

उ०—१ आज म्हारै मन मायली बात पूरी, रुंवाळी रसीली वणी है । —दसदोख

रुअड़ौ, रुअडौ—देखो 'रूडौ' (रू. भे)

उ०—१ जिन वाणी छै रुअड़ी । —धरम पत्र

उ०—२ राजकुमार अमै रुअडा । —धरम पत्र

(स्त्री रुअड़ी, रुअडी)

रुआब—देखो 'रौब' (रू. भे.)

रुआमाळ–सं पु.—१ रूमाल (रू भे.)

उ०—उर ओर के सास अभ्यास आणै, वडा जूह पूतारिया पीलवांणै । गडा मार बैसारिआ नीठ गज, रुआमाळ फैरै क़रै भाडि रज । —वचनिका

२ देखो 'रोमावळी' (रू. भे.)

रुआमाळी—देखो 'रोमावळी' (रू. भे)

रुइ—१ देखो 'रूचि' (रू. भे.)

२ देखो 'रूई' (रू. भे)

रुइर—देखो 'रूधिर' (रू. भे.)

रुई–स. स्त्री —१ देखो 'रुचि' (रू. भे)

२ देखो 'रूई' (रू भे.)

रुईवार— देखो 'रूईदार' (रू. भे)

रुओड़ी— देखो 'रसोई' (रू भे.)

रुक—देखो 'रूक' (रू. भे.)

उ०—वरंगन कठ धरै वरमाळ, रुकां उडी सीस चढ़ै रुडमाळ । —सू. प्र.

रुकड़—देखो 'रूक' (मह., रू. भे)

रुकणी–सं. स्त्री.—रोक, बधन, रुकावट ।

उ०—अरु अेक दिन दिली मैं मा'राज पदमसिघजी वा जैसीघजी रा कवर रामसीघजी अै दोय सिरदार सैल करण नै गया हा तठै रुकणी मे आय गया । —द. दा

रुकणौ, रुकबौ–क्रि. अ.—१ रास्ता आदि ठीक न मिलने के कारण ठहर जाना, आगे न बढ सकना, अवरुद्ध होना, अटकना ।

२ अपनी इच्छा से ही ठहर जाना, अगाडी न बढना ।

३ किसी कार्य का आगे न चलना, चलते हुए कार्य का बंद हो जाना ।

४ किसी चलते हुए क्रम या सिलसिले का अवरुद्ध होना, बंद होना ।

५ किसी कार्य का बीच मे ही बन्द हो जाना, काम आगे न होना ।

६ मैथुन या सहवास के समय पुरुष का ऐसी अवस्था मे होना कि उसका वीर्यपात न हो ।

रुकणहार, हारौ (हारी), रुकणियौ— वि.

रुकिओड़ौ, रुकियोड़ौ, रुक्योड़ौ—भू का कृ. ।

रुकीजणौ, रुकीजबौ—भाव वा. ।

रुकनावाद–स पु. [फा. रुक्नावाद] १ मुसलमानो का एक तीर्थ स्थान । (बां दा. ख्यात)

२ ईरान मे शीराज के पास बहने वाली नदी ।

रुकमगद—देखो 'रुक्मागद' (रू. भे.)

रुकम–स पु. [स रुक्मन्] १ स्वर्ण, सोना । (अ. मा., ह नां. मा.)

उ०—१ विध विध आभूखण जवाहर, लख बगसै जस सुद्रढ लियौ । सिलासार पलटै अग सुकवि, कमध रुकमकर रुकम कियौ । —मानजी लाळस

उ०—२ जग पुड 'जगा' पाखरां जगम, रिमहर माथै घात रह । रुकमां जोख जोखिया राणा, पडियौ जोखै दिली पह । —महाराणा जगतसिह रौ गीत

[स रुक्मी] २ विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के सब से बडे पुत्र का नाम ।

उ०—पच पुत्र ताइ छठी सुपुत्री, कुअर रुकम कहि विमळ कथ । रुकमबाहु अनै रुकमाळी, रुकमकेस अनै रुकमरथ । —वेलि

रू भे.—रुकमौ, रुकुम, रुकुमी, रुखम ।

अल्पा.—रुकमइयौ, रुकमणियौ, रुकमयौ, रुकमैयौ, रुखमइयौ ।

३ लखपत पिंगळ के अनुसार एक मात्रिक छंद विशेष ।

रुकमइयौ—देखो 'रुकम' (रू. भे.)

उ०—१ रुकमइयौ पेखि तपत आरणि रणि, पेखि रुकमणी जळ प्रसन । तणु लोहार वाम कर निय तणु, माहव किउ सांडसी मन । —वेलि ।

उ०—२ रुकमइयौ सिसपाळ बुलायौ, नहिं मुख देखूं वाकौ । थाका बिडद कू लोग हसेगौ, जिव जावैगौ म्हांकौ । —मीरां

रुकमकर–स. पु यौ. [स. रुक्म+कर] पारस ।

उ०—विध विध आभूखण जवाहर, लख बगसै जस सुद्रढ लियौ । सिलासार पलटै अग सुकवि, कमध रुकमकर रुकम कियौ । —मानजी लाळस

रुकमकारक–सं. पु. [स. रुक्मकारक] सोना, स्वर्ण ।

रुकमकेस–स. पु. [सं. रुक्मकेश] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के पांच पुत्रों में से चतुर्थ पुत्र का नाम ।

उ०—तिहि राजा के पाच पुत्र छठी पुत्री । एक कउ नाम रुकम ।

दूजौ रुकमबाहु । तीजौ रुकमाळी । **चौथौ रुकमकेस** ।
—वेलि टी.

वि. वि.–देखो 'रुकम' (२)

रुकमण—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—१ वहियौ गज वारीह, तू **रुकमण** प्यारी तजै । मदती हरि म्हारीह, धजवंधी धारी नही । —रांमनाथ कवियौ

उ०—२ राधाई **रुकमण** और सतभामा, कुब्जा कांई (थारै) संग पटै । मीरा के प्रभु गिरधरनागर, तुम सुमरां सूं म्हाकौ सकट कटै । —मीरा

रुकमणकंत, रुकमणकंथ–सं. पु यौ. [सं. रुक्मिणीकांत] १ ईश्वर, परमेश्वर । (ह. ना. मा)
२ श्री कृष्ण ।

रुकमणवरण–स. पु. यौ. [सं. रुक्मिणी+वरण] श्री कृष्ण । (अ. मा.)

रुकमणि—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—१ परि असरीखीय मांडइ ए माडइ पाडि सु पासि । जपइ ए रमणि सिरोमणी, **रुकमणि** राणिय रोलि ।
—जयसेखर सूरि

उ०—२ **यौ** सिसपाल चंदेरी कौ राजा, कूडी साखि भरैगौ । मीरा कहै यूं **रुकमणि** कहत है, थाकौ ही बिडद लजैगौ । —मीरा

रुकमणियौ—देखो 'रुकम' (अल्पा. रु. भे.)

उ०– हां ए साजन भीकमजी री धीय **रुकमणिया** री कहिजै बेनडी केसरिया स्रीकसण री नार । —लो. गी.

रुकमणिरमण–सं. पु. यौ. [स. रुक्मिणी रमण] श्री कृष्ण ।

रुकमणिबींद–स. पु. यौ. [सं रुक्मिणी-विंद] श्री कृष्ण ।

रुकमणिहार–सं. पु. यौ [सं. रुक्मिणी+हार] १ विष्णु ।
(डिं. ना. मा.)
२ श्रीकृष्ण ।

रुकमणी–स स्त्री. [स. रुक्मिणी] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा की लक्ष्मी के अंश से उत्पन्न कन्या जो श्रीकृष्ण की पटरानी थी ।

उ०—एक अधकार हिदू तुरक ईखतां, जकी तौ बात ससार जाणी। किसन घरि **रुकमणी** ले गयौ कवारी, 'अमर' रै कळोधर परणि आंणी । —कमौ नाई

रू. भे.—रुकमण, रुकमणि, रुकमिणी, रुकम्मणि, रुकम्मणी, रुक्मणी, रुक्मिणी, रुखमणि, रुखमणी, रुखमनी, रुखम्मणी, रुखिमिणी, रूकमणी, रूक्मणी ।

रुकमबाहु–सं. पु. [स. रुक्मबाहु] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के पांच पुत्रो मे से तृतीय पुत्र का नाम ।

वि. वि.—देखो 'रुकम' (२)

रुकमपुर—स. पु. [सं. रुक्मपुर] पुराणानुसार गरुड़ के निवास करने के नगर का नाम ।

रुकममाळी—सं पु. [सं.रुक्ममालिन्] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के पाचवे पुत्र का नाम ।

वि. वि.—देखो 'रुकम' (२)

रुकमयौ—देखो 'रुकम' (अल्पा., रू. भे.)

रुकमरथ–स. पु. [सं. रुक्मरथ] विदर्भ देशाधिपति भीष्मक राजा के दूसरे पुत्र का नाम ।

वि. वि.—देखो 'रुकम' (२)

रुकमांगद—देखो 'रुक्मागद' (रू. भे.)

रुकमिणी—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

रुकमियौ—देखो 'रुकम' (अल्पा , रू. भे.)

उ०—**रुकमिया** री कहीजै म्हारी जच्चा राणी बहनडी हे केसरिया स्रीकस्णजी री नार । —लो. गी.

रुकमैयौ—देखो 'रुकम' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सकल भवन करता करुणामय, विथा न व्यापै कांई । राजा कहै सुणौ **रुकमैया**, तहा दीजै बाई । —ह. पु. वा.

रुकमौ—देखो 'रुकम' (रू. भे.)

उ०—थानै थानै अे म्हारी रुकमण बहन थांनै कुण लावेगौ । लावै लावै अे म्हारौ **रुकमौ** वीर, माय मिळावेगौ । —लो. गी.

रुकम्मणि—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—नमौ कसकेसि विधूंसण कन्ह । रुकम्मणि प्राण पुरुक्ख रतन्न —ह. र.

रुकरुवंती–स. पु.—एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

उ०—रावण रांग रतांजणी, रवणी नई रुद्राख । **रुकरुवंती** रायसलि, रोहड़ रोहिणि लाख । —मा. कां. प्र.

रुकवाणौ, रुकवाबौ—देखो 'रुकाणौ, रुकाबौ' (रू. भे.)

रुकवायोड़ौ–भू. का. कृ.— देखो 'रुकायोड़ौ, रोकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रुकवायोड़ी)

रुकसत, रुकस्त—देखो 'रुखसत' (रू. भे.)

उ०—१ तीं सू कही तौ काहैं कू राखौ । **रुकसत** देवौ यूं ही क्यूं बुलाया । —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ सो खरची बा करसा रै पहलै पड़ी तद इण **रुकस्त** लीवी ।
—ठा. जैतसी री वारता

रुकाणौ, रुकाबौ–क्रि. स. [रुकणौ क्रि. का. प्रे.] १ रोकने का काम दूसरे द्वारा करवाना ।

२ चलता हुआ काम या सिलसिला बंद करवाना, रुकवाना ।
रुकवाणौ, रुकवाबौ—रू. भे. ।

रुकायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ दूसरे द्वारा रुकवाया हुआ, रोकने का काम दूसरे द्वारा करवाया हुआ. २ चलता हुआ काम या सिलसिला बद करवाया हुआ, रुकवाया हुआ ।
(स्त्री. रुकायोडी)

रुकाव, रुकावट-स. स्त्री.—१ रुकने का कार्य, अवस्था या भाव, अटकाव, अवरोध, रोक ।
उ०—अळगी अळगी भाय रा वासी आप आप री बोली मे थाछट बोलै और सुणणिया थाछट समझै । किणी भात री **रुकावट** आडी नी आवै । —फुलवाडी
२ वह पदार्थ या बात जो रोक के रूप मे हो, बाधा या विघ्न के रूप में होने वाली बात या काम ।
३ मलावरोध, कब्ज ।
४ स्तम्भन ।

रुकियोड़ौ-भू. का. कृ, —१ रास्ता आदि ठीक न मिलने के कारण ठहरा हुआ, आगे न बढा हुआ, अटका हुआ. २ अगाडी न बढा हुआ, ठहरा हुआ (अपनी इच्छा से). ३ चलता हुआ कार्य बन्द हुवा हुआ. ४ चलता हुआ क्रम या सिलसिला अवरुद्ध हुवा हुआ. ५ बीच मे ही बन्द हुवा हुआ, आगे नही बढा हुआ. ६ सभोग या मैथुन के समय स्खलन न हुवा हुआ, रुका हुआ ।
(स्त्री रुकियोडी)

रुकुम, रुकुमी देखो 'रुकम' (रू. भे.)

रुकौ, रुक्कौ-सं पु. [अ. रुक्कअ.] १ छोटा पत्र या चिट्ठी, पुरजा, परचा ।
२ चिट्ठी, पत्र ।
उ०—पछै राव गागैजी कयौ 'जैतसी कूंपै नूं बुलावो ।" तद जैतसी कयौ, "आप **रुकौ** लिखा दीजै' हूं ई कागद मेल सूं । पछै गांगैजी रुकौ लिखियौ । —द. दा.
३ प्रमाण-पत्र, सनद ।
उ०—१ अरु ब्रंदावन वा गिरराज ऊपर मिंदर था सौ ढहाय दीना । तद गोरधन नाथजी नूं गुसांई जी लेय नै आंबेर पधारिया । अठै ई पातसाह जी रा भय सूं रया नही । पीछै अठ्या सू ठाकुरजी नू उदैपुर रै गांव सीहाड पधारिया । तठै राणा राजसिघजी सांमां आय दरसण कियौ । अरु सिहाड़ किताई गांवा सू निजर कीवी वा **रुकौ** लिख दीनौ कै लाख सीसोदियां रा माथा भेंट छै । —द. दा.
उ०—२ रुकौ द्यू तुम हाथ, प्रीत वचन माहि लिखूजी ।.जाइ पड़ै पर हाथ, आलम इम वचनै नही जी । —प. च. चौ.
४ प्रेम पत्र ।
उ०—मालण छाबड़ी देय नै पाछी आई । तद सुखै फिकरवान होय इण नू वतळाई । काम **रुक्कौ** थौ सो गुमायौ । कतौदई फूलां मे गिर पडियौ होइ । जिण हूं कहा ही जाय नें छाबडी जोइ । उठै फूलां मे **रुक्कौ** रतना पायौ । आप बांच चतर नै बचायौ उनमान कियौ मुद्दौ जाण लियौ । हमैं जबाब रौ **रुक्कौ** बणायौ जिण मै दिल रौ सनेह जणायौ ।
साचा पण रहियौ सरस, लेखौ समझ लियौह । आप दियौ जद आप नूं, दिल म्है पहल दियौह । —र. हमीर
५ ऋण या कर्ज लेते समय लिखा जाने वाला ऋणपत्र ।

रुक्ख—१ देखो 'रूख' (रू. भे.)
उ०—यौं सज्जण सुख पुरिया, दूर गया सह दुक्ख । दळ नवपल्लव डहडहै, ज्यौं जळ पाया **रुक्ख** । —रा. रू.
२ देखो 'रुख' (रू भे.)
उ०—१ चोळम्मं **रुक्खं** मुक्ख चख, वयम् रूपं परचड । भारत्थ बत्थ पत्थ भीम, माझी मेरे ब्रहमड । —गु. रू. ब.
उ०—२ राठौड राउ असमान **रुक्ख**, सीचियौ ध्रित किरि सुरा-मुक्ख । —गु. रू. बं.

रुक्मणी—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)
उ०—तमौ निरगुण सगुण नारियण निर्भै नर । वीर सुहिद्रा तणा **रुक्मणी** तणा वर । —पी. ग्र.

रुक्मांगद-स पु. [सं.] एक इक्ष्वाकु वशीय राजा जो ऋतुध्वज राजा का पुत्र था । इसकी पत्नी का नाम विंध्यावली एवं पुत्र का नाम धर्मागद था ।
उ० —**रुक्मांगद** राजा हवउ, गुरुमति ग्यान प्रकास । अबला कहिणं आदरिउ, पुत्र करेवा नास । —मा. का. प्र.
वि. वि.—मोहनी नामक अप्सरा के कहने से यह अपने पुत्र धर्मांगद का शिर काटने के लिए तैयार हो गया । इतने में श्रीविष्णु ने साक्षात् प्रकट होकर इस कृत्य से इसे परावृत कर दिया ।
रू भे.—रुकमंगद, रुकमागद, रुखमांगद ।

रुक्मिणि—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)
उ०—पंचवटी पपापुर **रुक्मिणी**, देव कपिल युवरासी । नैमखार स्रंगीरिख मिसरिख, कासी पाप-बिनासी । —मीरां

रुक्सत—देखो 'रुखसत' (रू. भे.)
उ०—१ महीनै छ री **रुक्सत** दीवी । विदा री हाथी सिरोपाव फेर दियौ । —गोपाळदास गौड री वारता
उ०—२ सगळा सलाम कर **रुक्सत** हुवा । इण तरह महाराज मुजरौ कर विदा हुआ । —महाराजा जयसिह आंमेर रा धणी री वारता

रुख–सं. स्त्री [फा रुख] १ कपोल, गाल।
२ क्रोध, कोप। (अ. मा.)
३ चहरे का भाव, चेष्टा या आशय।
उ०—१ सत्र सारत समधा सब कोई, जडलग वह गई संग जिनोई। मुहकम रुख चख जांरा कमाळी, सिर चलतै केवाण संभाळी।
—रा. रू.
उ०—२ दीवांणजी तौ ई रुख नी मेळचौ। होळै सीक जाडा सुर में कह्यौ–म्है जांण्यौ के राजाजी कोई काम भेज्यौ दीसै।
—फुलवाडी
उ०—३ काका बाबा भ्रात कवि, हूवै दूर रुख हेर। सत महत न सचरै, पातर रै पग फेर। —बा. दा.
४ मनोभाव।
उ०—उण रौ रुख देखण साख दीवांणजी जांण करनै अैड़ी बात करी ही। पण वा तौ साव इज भोळी निकळी। बोली–घरटी फेरण री कोई मेहणी थोडी ई लागै, नवी बीदणी नै ई फेरणी पड़ै। —फुलवाडी
५ इच्छा।
उ०—१ थेट सू भाया थकां जयसिहजी री रुख औरंगजेब सू ही रही। —महाराजा जयसिह आंमेर रा धणी री वारता
उ०—२ चिगता उखेल पखरै चरित, रखै मेळ अमेळ रुख। वध वेव बळै खळ वास ज्यु, दाह जळै उर साह दुख। —रा रू.
६ कृपा दृष्टि, महरबानी।
उ०—१ बडौ कुंअर अमरसिंह। बडौ मोटौ सिरदार मांटीपणै रौ आंक सो ती पर महाराज री रुख नही।
—ठा. राजसिह री वारता
उ०—२ तिका सिर दया रुख होय हरि तौ तणी, किणी दिन न लागै जिकां आतंक। —र. ज प्र.
७ सामने या आगे का भाग।
८ शतरंज की किश्ती या हाथी नामक मोहरा।
९ प्रकार, तरह, भांति।
उ०—१ रीझवाळा नयण महोदधतणी रुख, खीजवाळा नयण बीज रौ खेल। —बखतौ खिडियौ
उ०—२ पड़ उसताज आहणै असपत, दुजड़ै देतौ खळा दुख। केस केस संधियौ केळपुरा, रावळ अंबर तणी रुख।
—महाराणा अमरसिंह रौ गीत
उ०—३ उण ठाम तपै हाडौ अनड़, पुर गढ ले जावद प्रमुख। संताप चितौड़ सिर, रहियौ एकल बाघ रुख। —व. भा.
वि.—समान, सदृश्य, तुल्य।
उ०—१ आणंद सु जु उदौ उहास हास अति, राजति रद रिखपंति रुख। नयण कमोदणि दीप नासिका, मेन, केस राकेस मुख।
—वेलि
उ०—२ मणिया रयण अमोल, रोप अणिया मोती रुख।
—वं. भा.
क्रि. वि.—ओर, तरफ, सामने।
ऊ०—म्है थानै आली वरजिया हे, रघुवर रुख मत जोय। सुख री सीख सुणी नह जद, बैठी तन मन खोय। —गी. रां.
देखो 'रूखो' (रू. भे.)
उ०—अत कोप मुखा चख रोस अड़ै। झळ आग लगी किर दूंग झड़ै। जपतै रसणा रुख वाण जुई, हित बादळ बीज सरोस हुई।
—रा. रू.
रू. भे.—रुक्ख।

रुखभदेव—देखो 'रिसभदेव' (रू. भे.)
उ०—देवतत्व वरणवीइ तउ स्री सरवग्य तणउ, सुख तउ सिद्धि तणउ, करम्मक्षपणा तउ सुक्ल ध्यान तणी, आयुस्थिति स्री रुखभदेव तणी'''। —व. स.

रुखम—देखो 'रुकम' (रू. भे.)
उ०—सामि रै रुखम साला काळा काळा जिकै कांन्ह। संघारै सिंधाळा भाई कस वाळा भेख। —पी. ग्र.

रुखमइयौ रुखमईयौ—देखो 'रुकम' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—चूड़ांमडण चूड़ामणिजी, भीमक घरि अवतार। बधव रुखमईयौ भलौ जी, मत्रीसर मत्रीसार। —रुकमणीमंगळ

रुखमणि– देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

रुखमणिवर–स. पु. यौ. [स. रुक्मिणी+वर] श्री कृष्ण।
उ०—धारीधर गिरधर वहि रुखमणिवर, चत्रभुज नरहर समर चित। —पिं. प्र.

रुखमणी, रुखमनी—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)
उ०—१ ज्यू हेमाचळ कै घरै पारवती, ज्यूं जनक राजा के सीता भीखम कै घरै रुखमणी जनम लीधौ ज्यूं आपके घरै जसां जनमी छै। —मयाराम दरजी री वात
उ०—२ आलिम साह पारवती ओपै, रुखमणी रांणी पासि रहै। मौ गगसाम विराजै आछौ, देखै जिहां रा दळिद्र दहै। —पी. ग्रं.

रुखमांगद—देखो 'रुक्मांगद' (रू. भे.)
उ० – १ सुप्रसन होय सामण सारदा, विमळ सर आखर द्यै वयण। कळिजुग रुखमांगद रख कमधज, राजा वाखांणीसि 'रयण'। —दूदौ विसराळ
उ०—२ भलौ कमाळी भगत, किसन सरिखौ ले कीधौ। रुखमांगद ना राम, दान वैकठ रौ दीधौ। —पी. ग्रं.

रुखमी—देखो 'रुकम' (रू. भे.)
उ०—रुखमी ई रुडां भावीयइं, छोडावियै जौ आजि। कर बध

कापौ ग्रास ग्रापौ, भीम नी बहु लाज । —रुकमणी मगळ

रुखमीणी, रुखमीनी, रुखम्मणी—देखो 'रुकमणी' (रू. भे.)

उ०—१ रानांदे मिळियौ सूरिज भरतार । **रुखमीणी** मिळियौ क्रस्ण ग्राधार । —वी. दे.

उ०—२ ग्रगियारह गुर पायै एकरिण, तवै मालती नाम छद तिरिण। भरिणयौ पिंगळ तेम तू ही भरिण, राखि रिदै भरतारि **रुखम्मणी** । —पि. प्र.

रुखळणौ, रुखळबौ—क्रि. ग्र.—१ रक्षा होना ।

उ०—खेत में ऊभौ ग्रडवौ काई ग्रापरै ग्रापै खेत रुखाळै है ? खेत तौ उरण रै कारण मतै ई रुखळै है । —फुलवाड़ी

२ निगरानी या चौकसी होना ।

रुखळणहार, हारौ (हारी), रुखळणियौ—वि. ।

रुखळिग्रोड़ौ, रुखळियोड़ौ, रुखळचोड़ौ – भू. का. क्र. ।

रुखळीजणौ, रुखळीजबौ—भाव वा. ।

रुखळियोड़ौ—भू. का कृ. १ रक्षा हुवा हुग्रा. २ निगरानी या चौरकसी हुवा हुग्रा।

(स्त्री. रुखळियोड़ी)

रुखवाळ—१ देखो 'रखवाळी' (रू. भे)

२ देखो 'रुखाळौ' (रू. भे.)

उ०—तिण वेळा तारण तरण, गिरधारी गोपाळ। मिळियौ उर भ्रम मेटवा, हिंदू धम **रुखवाळ** । —रा. रू

रुखवाळणौ, रुखवाळबौ– देखो 'रुखाळणौ, रुखाळबौ' (रू. भे)

उ०—वाड करी **रुखवाळनै** वाड़ खेत नै खाय। राजा डडै रैत नै, कूक किसै घर जाय । —ग्रग्यात

रुखवाळणहार, हारौ (हारी), रुखवाळणियौ—वि. ।

रुखवाळिग्रोड़ौ, रुखवाळियोड़ौ, रुखवाळचोड़ौ – भू. का. कृ. ।

रुखवाळीजणौ, रुखवाळीजबौ— कर्म वा. ।

रुखवाळियोडौ—देखो 'रुखाळियौड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुखवाळियोडी)

रुखवाळी—देखो 'रखवाळी' (रू.भे.)

उ०—सारा भेळा हुइ लेय देख्यौ तौ कोट री कुवरजी री सोभा छै, ग्रांपणी **रुखवाळी** होयसी । —सुंदरदास बी कुपुरी भाटी री वारता

रुखवाळौ—देखो 'रुखाळौ' (रू. भे)

रुखसत—सं. स्त्री. [ग्र. रुख्सत] १ विदा होने की क्रिया या भाव ।

२ नौकरी, सेवा ग्रादि से मिलने वाली ग्रल्पकालीन छुट्टी या ग्रवकाश ।

३ ग्रनुमति, परवांनगी ।

—क्रि. प्र.—देंणी, पाणी, मिळणी, लेंणी, होणी ।

रू. भे.—रुकसत, रुक्सत ।

रुखसति, रुखसती—वि. [ग्र. रुख्सत+रा. प्र. ई.] १ जिसे रुखसत या ग्रवकाश मिला हो ।

उ०—ग्रब गणगोरचां ग्रावसा, कीदौ एम करार । दिन उगावियां देस नै, **रुखसति** राजकंवार । —पनां

२ रुखसत सम्बन्धी, रुखसत का ।

स. स्त्री.—१ विदाई, रुखसत ।

२ पितृघर से कन्या का ससुराल में जाने की क्रिया या भाव । (मुसलमान)

३ उक्त विदाई के समय कन्या या दामाद को दिया जाने वाला धन । (मुसलमान)

रुखांनी—सं. स्त्री.—१ बढई का एक ग्रौजार विशेष ।

२ संगतराशो की टांकी ।

रुखाई—स. स्त्री.—१ रुखा होने की क्रिया या भाव, रुखावट, रुखापन ।

उ०—गायन झीन सुरावलि में गहि, ज्यू बधिरादर बीन बजाई । फूल दियौ नकटै कर मे फिर, रीस करी रुख राख **रुखाई** ।

—ऊ. का.

२ व्यवहार ग्रादि की कठोरता या नीरसता ।

रुखानळ—स स्त्री. [सं. रोषानल] क्रोधाग्नि, क्रोधानल ।

रुखापण, रुखापणौ—देखो 'रुखाई'

रुखारुखी—सं. स्त्री.—१ लिहाज ।

उ०—डोकरी कह्यौ—तोई बापडौ थांरा सूं डरै—सकां मरतौ कैवै कोनी । **रुखारुखी** राखै । साची पूछौ तौ ग्रौ मुगट ग्रर हार पाडुवां नै ग्रोपै जैडौ मिनखा नै ग्रोप ई नी सकै । —फुलवाडी

रुखाळणौ, रुखाळबौ—क्रि. स [सं. रक्ष] १ रक्षा करना ।

उ०—१ दो बार तौ घर मैं सातौ लागतौ बचियौ । लोग जीवण वास्तै सौ भात रा कळाप करैला, पण ग्रपा नै ग्रपा रौ घर तौ **रुखाळणौ** ई पडैला । —फुलवाड़ी

उ०—२ नाज उग्यौ जद डागर घेरचा, टीवा बैठ **रुखाळचौ** । टीडी उडज्या ग्रे खेत परायौ । —लो. गी.

२ निगरानी या चौकसी करना या रखना ।

उ०—खेत से ऊभौ ग्रड़वौ काई ग्रापरै ग्रापै खेत **रुखाळै** है खेत तौ उणरै कारण मतै ई रुखळै है । पण तो ई पंछियां नै डरावण वास्तै ग्रडवा रौ ठाणौ जरूरी है । —फुलवाड़ी

उ०—२ गोरी म्हारी ग्रे ! हरियाळी **रुखाळीजे** क्यूं ? यूं म्हारा सायब ! यूं जी यूं । —लो. गी.

रुखाळणहार, हारौ, (हारी), रुखाळणियौ—वि. ।

रुखाळिग्रोड़ौ, रुखाळियोड़ौ, रुखाळचोड़ौ—भू. का. कृ. ।

रुखाळीजणौ, रुखाळीजबौ,—कर्म. वा. ।

रखवाळणौ, रखवाळबौ, रुखवाळणौ, रुखवाळबौ, रूखवाळणौ, रूखवाळबौ—रू. भे. ।

रुखाळियोड़ौ–भू. का. कृ. १ रक्षा किया हुआ. रक्षित. २ निगरानी या चौकसी रखी हुई या की हुई।
(स्त्री. रुखाळियोड़ी)

रुखाळी–वि. [स. रक्षा] १ रक्षा करने वाला, रक्षक।

उ०—भोजन करणौ भूल खोलै, बूढा लारी खड़भडै। हेठै हालौ चालौ भणै, रुळा रुखाळी रड़भडै। —दसदेव

२ देखो 'रखवाळी' (रू. भे.)

उ०—१ भूथरी की रुखाळी काज थांणा नै रखायौ। माथौ काट कोला कौ अमरसरनाथ आयौ। —शि. व

उ०—२ काई करां गीगला री मा कमाई करणी तौ सोरी है पण धन री रुखाळी करणी दोरी है। —फुलवाडी

रुखाळौ–स. पु. [सं. रक्ष] १ रक्षा करने का कार्य या भाव।
२ निगरानी, चौकसी, चौकीदारी।
३ निगरानी का कार्य।
४ रखवाली करने का पारिश्रमिक।
वि. (स्त्री. रुखाळी) १ रक्षा करने वाला, रक्षक।

उ०—सुध हीणा सिरदार, मत हीणा राखै मिनख। अस आधौ असवार, रांम रुखाळौ राजिया। —किरपाराम
२ निगरानी करने वाला, चौकसी करने वाला।

उ०—आडग आवै मावटै री, पडण लागज्या पाळौ। हेमाळा सू होड करण नै, ऊभौ खेत रुखाळौ। —चेतमानखौ

रू. भे.—रखवाळ, रखवाळक, रखवाळण, रखवाळू, रखवाळौ, रखाळु, रखाळू, रखाळौ, रुखवाळ, रुखवाळौ, रुखाळौ।

रुखावट, रुखाहट–स. स्त्री.—रुखाई, रूखापन।

रुखिता–सं. स्त्री. [स. रुषिता] रोष या क्रोध करने वाली नायिका।

रुखमिणी—देखो 'रुकमणी' (रू भे.)

रुखी—देखो 'रुख' (रू. भे.)

रुखीस्वर, रुखेस्वर—देखो 'रिसीस्वर' (रू. भे.)

उ०—अहि अमर रुखेस्वर नर असुर, पहचि तुझ दाखै प्रघळ। हु महिरिवांण माया हिमै, वइण मुझ दीजै विमळ। —पी. ग्रं.

रुखौ–वि. [स्त्री. रुखी] १ बिना, रहित।

उ०—जिण री पोळ आघै थाळ लीधा कंकाळी आई तरै सगतसिंघजी खीची कह्यौ–देखा मांमैजी कासू दियौ। तरै थाळ खोल नै दिखाळ्यौ। तरै सगतसिंह एक आख दिसी रुखौ छै। तरै देखती आंख थी तिका आगुळी घालि नै काढि थाल मा है मैली नै कह्यौ मामाजी होड नही पिण इतरी दुगांणी म्हारी ही ले पधारौ। —जगदेव पंवार री बात

२. देखो 'रूखौ' (रू. भे.)

रुग—सं पु [स रुग्ण] १ बीमार, रोगी।
२ रोग, बीमारी। (डि. को, ह नां. मा)
३ पीडा, दर्द। (अ. मा)
४ तीरो के चलने से या पक्षियो के उडने से होने वाली ध्वनि विशेष।
उ०—श्रींगड़ा भालोडा रा बूम पडिआ छै। सवायै मेह रो जोरि सोक बाजै तिण भाति पंखा री रुग वाजिनै रही छै। —रा. सा. सं.
५ देखो 'रिगवेद' (रू. भे)

रुगड़—देखो 'रुगड' (रू भे.)

उ०—आज काल रा साधडा, ब्याज बुहारण बेस। राज मांय झगड़ै रुगड़, लाज न आवै लेस। —ऊ का.

रुगट–स. स्त्री. खेल मे किया जाने वाला कपट या बेईमानी, रुगटी।

रू. भे.—रुगटी, रोगट, रोगटी।

रुगटाळ–वि. १ खेल मे कपट या बेईमानी करने वाला।
२ धूर्त, चालाक।
३ कपटी।
४ देखो 'रगटाळ' (रू. भे.)

रुगटी—१. देखो 'रुगट' (रू भे)
२ देखो 'रुगटाळ (रू. भे)
३ देखो 'रगटाळ' (रू. भे)

रुगड–वि—१ मूर्ख, नासमझ।

उ०—गह भरियौ गजराज, मह माल्है आपण मतै। कुकरिया बेकाज, रुगड भुंसै क्यू राजिया। —किरपाराम
२ दुष्ट, पतित, नीच।

उ०—न्याय न जाण्यौ नितुर, निलज जाणी नहि नीती। निज नारी व्रतनेम, रुगड आणी नही रीती। —ऊ. का.
रू भे.—रूगड़।

रुगण–वि. [सं. रुग्ण] १ जो रोगग्रस्त हो, रोगी, बीमार।
२ जिसके शरीर में किसी प्रकार का दूषित विकार हो।

रुगणता–स्त्री. [स. रुग्णता] बीमारी, रोग।

रुगदवंसी–स. पु.—एक प्रकार का भयकर विषैला सर्प जिसका फन और पूछ दोनों काले रंग के होते हैं।

रुगनाथ—देखो 'रघुनाथ' (रू. भे.)

उ०—स्री रांमाअवतार में स्री रुगनाथ जी स्री सीताजी लिछमणजी सुग्रीव, वभीसण, हनुमान तथा दूजी सेना साथै लै नै लंका सुं रावण मार नै पुसप-वीमांण वीराजनै अठै स्रीमंडलेस्वरजी री पूजा पाछा पधारता कीवी नै सेना साथै घणी थी तिणसुं भीड़ में दरसण

हुवै नही तरै स्री रुगनाथ जी री स्री महादेव जी री अग्या सु कंकर सब सकर हुवा सु प्रीत रौ इक भाखर में सारा लिंगाकार रा दरसण हुवा, तरै सेन्या सारी नै दरसण हुवा। —नैणसी

रुगं दुगौ—स. पु —काम चलाऊ पदार्थ।

वि.—खिन्नचित्त, उदासीन।

रुघौ-चुघौ—वि.—अवशिष्ट, बचा हुआ।

उ०—मा रै खनै कंई **रुघौ चुघौ** हौ जिकौ दादी रै औसर, बाप रै किरिया-करम अर वदू री जिन्दौई में लेखै लाग चुकौ हौ। —वरसगाठ

रुघ—सं. पु. [स ऋग्वेद] देखो 'रिगवेद'

उ०—**रुघ** सांमवेद वाचत विप्र नखतैत राय जद न्रप्प। दीसंत दुयग पददेव गत्ति, दीवाण बडौ वड देसपत्ति। —गु. रू. ब.

२ देखो 'रघु' (रू. भे)

रुघईस—देखो 'रघुईस' (रू. भे)

रुघकुळतिलक—देखो 'रघुकुळतिलक' (रू. भे.)

रुघुचंद—देखो 'रघुचद' (रू. भे)

रुघदेव—देखो 'रघुदेव' (रू. भे.)

रुघनद, रुघनंदण, रुघनंदन—देखो 'रघुनंदन' (रू. भे.)

उ०—**रुघनंदण** रुघनाथ, निमौ रुघपति नरेसर। रुघराजा रुघराउ, भूतभव भेख विसंभर। —पी ग्र.

रुघनाथ, रुघनाथु—देखो 'रघुनाथ' (रू. भे) (अ. मा, ना. मा.)

उ०—१ लांबी बाहां रावळी, मौ सिर दीजै हाथ। तांतू जळ ताणी जता, राख लियौ **रुघनाथ**। —गज उद्धार

उ०—१ रुघनदण **रुघनाथ**, निमौ रुघपति नरेसर रुघराजा रुघराउ, भूत भव भेख विसंभर। —पी. ग्रं.

रुघनायक—देखो रघुनायक' (रू. भे)

उ०—इम जबाब सुणि असुर, खिजै कमधज खेधायक। अंग दवात उथपियां, नरिद जाणै **रुघनायक**। —सू प्र.

रुघपत, रुघपति रुघपत्ति—देखो 'रघुपति' (रू. भे.)

उ०—रुघनदण रुघनाथ, निमौ **रुघपति** नरेसर। रुघराजा रुघराउ, भूतभव भेख विसभर। —पी. ग्र.

रुघबर—देखो 'रघुवर' (रू. भे.) (अ. मा.)

रुघभूप—देखो 'रघुभूप' (रू. भे.) (अ. मा.)

रुघयंद, रुघयंदि—देखो 'रघुइंद्र (रू. भे.)

रुघरज—देखो 'रघुरज' (रू. भे)

रुघरांण—देखो 'रघुरांण' (रू. भे.)

रुघरांणी—देखो 'रघुराणी' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

रुघरांम—देखो 'रघुरांम' (रू भे.)

उ०—नारसिंघ थारौ नांम फरसराम तिवाजै, देखता द्वारिका धाम सदामै रै दाम। सत्य राम **रुघरांम** लिखमी वामैं सहेत, गोविंद तुहारौ भलै बैकुंठ रौ ग्राम। —पी. ग्र.

रुघराइ, रुघराई, रुघराउ, रुघराज, रुघराजा—देखो 'रघुराज' (रू. भे)

उ०—रुघनदण रुघनाथ, निमौ रुघपति नरेसर। **रुघराजा रुघराउ**, भूतभव भेख विसंभर। —पी. ग्रं.

रुघवंस—देखो 'रघुवस' (रू. भे) (ना. मा)

रुघवसमणि, रुघवंसमणी—देखो 'रघुवसमणि' (रू. भे.) (अ. मा.)

रुघवंसरव, रुघवंसरवि—देखो 'रघुवसरवि' (रू. भे.) (अ. मा.)

रुघवंसी—देखो 'रघुवंसी' (रू. भे.)

उ०—**रुघवंसी** राठौड हर, तेरह साख कमध। विमर सकत्ती वरणवा, बंधै रूपक बंध। —गु. रू बं.

रुघवर—देखो 'रघुवर' (रू. भे.) (ना. मा.)

उ०—राजा राम मनोहर **रुघवरं**, सीता वरं सुंदर। कोसल्या दसरत्थ रावऊं अरं, पत्ती अजोध्या पुर। —पिं प्र.

रुघवीर—देखो 'रघुवीर' (रू भे.) (अ. मा., नां. मा.)

उ०-वड़ौ ठग धूत अहौ **रुघवीर**, सही तू एकलमल सधीर। अड़यौ गुरड़ेस तणा असवार, महा मधु कीटक रामण मार। —पी. ग्र.

रुघवेद—देखो 'रिगवेद' (रू. भे.) (अ. मा.)

रुघुनंदन—देखो 'रघुनदन' (रू. भे.) (ना. मा.)

रुघुनाथ—देखो 'रघुनाथ' (रू. भे.) (ना. मा.)

रुड़, रुड़क—स. स्त्री.—१ नगाड़े की आवाज या ध्वनि।

२ तेज गति से भागने की क्रिया।

३ वीर रस के राग की लय या आलाप।

रुड़कणौ, रुड़कबौ—क्रि. अ.—१ लुढकना।

२ देखो 'रुड़णौ, रुड़बौ' (रू. भे.)

रुड़काणौ, रुड़काबौ—क्रि. स.—१ लुढ़काना।

२ देखो 'रुड़ाणौ, रुड़ाबौ' (रू. भे.)

रुड़कायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ लुढकाया हुआ।

२ देखो 'रुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुड़कायोड़ी)

रुड़कियोड़ौ—भू. का. कृ.—लुढका हुआ।

२ देखो 'रूड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुड़कियोड़ी)

रुड़णौ, रुड़बौ–क्रि. अ.—नगाड़े का बजना ।

ऊ०—१ गढ पलटै गाहटै गिरवर धूपटिया धक धूरण धर । 'रासै' तणा सुजस रा रुड़िया, समियाणौ ऊपर सधर । —द. दा.

उ०—२ जड़क्कै खाग रा बजै ठेलिया कपनी जंगा, मारू धरा रा ले लिया सारा माल । काहुळां रुडंतां जागी हाकै निराताळा काछी, प्रळै काळ वाळी ज्वाळ सवाई 'गोपाळ ।' —बिसनसिंघ राठौड रौ गीत

उ०—३ गुमुडै गरिमादिक ग्यान गुनाढ्य, रुड़ रुड़ त्रबक ध्यांन धनाढ्य । ब्रबै बसुधा बिन व्याज बिचित्र, महाजन पुन्य जनेस्वर मित्र । —ऊ. का.

२ गुडकना, चक्कर काटना, घूमना ।

३ वीररस के राग का आलाप होना, गायन होना ।

उ०—रुड़ै सिंधवौ राग, गुडै हल्ला गज ढल्लां । खळा उथल्ला खाग, वर्ण बगतर बरघल्ला । —ऊ का.

४ रुदन करना, रोना ।

रुड़णहार, हारौ (हारी), रुड़णियौ—वि. ।

रुड़िग्रोड़ौ, रुड़ियोड़ौ, रुड़चोड़ौ—भू. का. कृ. ।

रुड़ीजणौ, रुड़ीजबौ—भाव वा. ।

रुडणौ, रुडबौ, रूडणौ, रूड़बौ, रूडणौ, रूडबौ—रू. भे. ।

रुड़पाणौ, रुड़पाबौ—देखो 'रुड़ाणौ, रुड़ाबौ' (रू. भे.)

उ०—नाडा भरियोडा नैड़ा निजराता, गाडा गुडकाता पैंडा रुड़पाता । लाखै फूलाणीं भीणा सुर लेता, डीवा गाडीणा डब डब धुनि देता । —ऊ. का.

रुड़पायोड़ौ—देखो 'रुडायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुडपायोड़ी)

रुड़वाणौ, रुड़वाबौ–क्रि. स. [रुड़णौ क्रिया का प्रे. रू.] १ 'रुडाणौ' कार्य किसी अन्य से करवाना ।

२ नगारादि किसी अन्य द्वारा बजवाना ।

रुड़ाणौ, रुड़ाबौ–क्रि. स.—१ नगारादि बजाना ।

२ वीर रसपूर्ण राग का आलाप करना ।

३ गुड़ाना, चक्कर कटाना, घुमाना ।

४ रुलाना, रुदन कराना ।

रुड़ाणहार, हारौ (हारी), रुड़ाणियो—वि. ।

रुड़ायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

रुड़ाईजणौ, रुड़ाजईबौ—कर्म वा. ।

रुडकाणौ, रुड़काबौ, रुड़पाणौ, रुडपाबौ रुड़ावणौ, रुड़ावबौ, रुडाणौ, रुडाबौ, रूडावणौ, रूडावबौ—रू. भे. ।

रुड़ायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नगारादि बजाया हुआ. २ वीररसपूर्ण राग अलापा या गाया हुआ. ३ गुड़ाया हुआ, चक्कर कटाया हुआ, घुमाया हुआ ।

(स्त्री. रुड़ायोड़ी)

रुड़ावणौ, रुडावबौ—देखो 'रुड़ाणौ, रुड़ाबौ' (रू. भे.)

उ —धुवा घोर आतसा झळा रौ रुड़ावणौ धूंसा, सेना मुडावणौ खळा डळा रौ साइत । छत्रधारी कना हूँ इळा रौ कोट छोडावणौ, तुडावणौ भूखा बाघ गळा रौ ताइत । —महादान महड़

रुड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नगाडा बजा हुआ. २ गुड़का हुआ, चक्कर काटा हुआ, घूमा हुआ. ४ वीररस के राग का आलाप हुवा हुआ. ४ रुदन किया हुआ, रोया हुआ ।

(स्त्री. रुडियोड़ी)

रुड़ौ—देखो 'रूडौ' (रू. भे.)

उ०—जीव अम्हारु जोखिता ! ते थापणि तुम्ह-पासि । राखै तुं रुड़ी परि, पंजर भमइ प्रवासि । —मा. का. प्र.

(स्त्री. रुड़ी)

रुच–स. पु. [स.] १ वायु के अनुसार सूनीथ राजा के पुत्र का नाम ।

२ अभिलाषा, रुचि ।

उ०—जो रस अगी भूलै जावै, रुच वरणत अनंग रस । प्रक्रत विपजिय जठै पायजै, प्रक्रत रसाळ वन परस । —बां. दा

वि.—सुन्दर, मनोहर । (अ. मा.)

उ०—सतिया म्हासतिया कहतां तन सोहै, मधुरी बांणी मुख प्राणी मनमोहै । रजपूतांणी रुच सीचाणीं सिरखी, नैणा जळ भरती सैणा थळ निरखी । —ऊ. का.

देखो 'रुचि' (रू. भे.)

उ०—मैलो अत अदतार मन, रुच जस तणौ रहै न । तन काळौ कंचुक तणौ, कचुक सेत सहै न । —बां. दा.

रुचक–स. पु [सं. रुचकः] १ पुराणानुसार सुमेरुपर्वत के निकट का पर्वत ।

२ भागवत के अनुसार एक यादव राजा जो उसनस राजा का पुत्र था ।

३ इक्ष्वाकु वंशीय मरुक राजा का नाम ।

४ मणिभद्र एव पुण्यजनी के पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम ।

५ वास्तु विद्या के अनुसार ऐसा भवन जिसके चारों ओर के आलिंद में से पूर्व और पश्चिम का सर्वथा नष्ट हो गया हो तथा उत्तर और दक्षिण के पूर्ण रूप से ज्यो का त्यों हो ।

६ घर, मकान । (अ. मा.)

७ जैनियों के अनुसार हरिवर्ष के एक पर्वत का नाम ।

८ घोडे को पहिनाए जाने वाले आभूषण ।

९ दक्षिण दिशा ।

१० कबूतर ।

[म. रुचकम] ११ कंठ में धारण करने का आभूषण, हार, पुष्प-हार।

वि. [स. रुचक] १ पसन्द आने वाला, प्रसन्नकारक, रोचक।

२ स्वादिष्ट, जायकेदार।

रुचणौ, रुचबौ–क्रि. अ.—१ प्रिय तथा प्यारा लगना, भला लगना।

उ०—कृपणा जस भावै कठै, विधि विमुखा नूं वेद। 'बांका' भोजन नह रुचै, ज्यां रै वप ज्वर खेद। —बा. दा.

२ रुचि के अनुकूल होना।

३ आनन्द मय होना, रुचि युक्त होना।

रुचर—१ देखो 'रुचिर' (रू. भे.) (अ. मा)

२ देखो 'रुचिकर' (रू. भे.) (अ. मा.)

रुचवप, रुचावप–स पु. [स. रुचवपु] रक्त, खून, रुधिर। (अ. मा)

रुचि–सं. पु [सं.] १ एक प्रजापति जो ब्रह्मा के मन से उत्पन्न हुआ था। इसकी पत्नी का नाम आकूति था।

स. स्त्री [स. रुचिः] २ किरण। (अ. मा., नां. मा., ह. ना. मा.)

३ शोभा, सुन्दरता।

४ आभा, प्रकाश, दीप्ति, चमक।

उ०—वपु स्याम सुदर मेघ रुचि, फबि तडित पीत बटंबरं। सुज। बाम चाप निखंग कटि, तट दच्छ कर भ्रांमत सर। —र ज प्र.

५ अभिलाषा, इच्छा, कामना।

उ०—चख चचळ, मन अचळ कमळ चख भुहा अळीअळ। तन ऊजळ पति रत्त, रूप भरता रुचि मझळ। —गु रू. ब.

७ अलकापुरी की एक अप्सरा का नाम।

८ अप्सरा।

९ पसंदगी, अभिरुचि।

उ०—नही मोती माळा नहि न छक हाला सुचि नहीं। नही नारी प्यारी वचन, छिदगारी रुचि नही। —ऊ. का.

वि.—मनोहर, सुन्दर।

उ०—मोर मुकुट वन माळ, माळ तुळसी तव मजर। रुचि कुडळ कल रतन, तिलक मंजुल पिताबर। —रा. रू.

रू. भे.—रुइ, रुई, रुच।

रुचिकर, रुचिकारक, रुचिकारी–वि. [स.] १ अभिरुचि उत्पन्न करने वाला।

२ स्वादिष्ट, जायकेदार।

३ भूख बढ़ाने वाला।

रुचिधांम–स. पु. [स. रुचि+धामन्] सूर्य, भानु। (डि. को.)

रुचिभरता–स. पु. [सं. रुचिभर्तृ] सूर्य, भानु।

रुचियोड़ौ–भू. का. कृ—१ प्रिय तथा प्यारा लगा हुआ. २ रुचि के अनुकूल हुवा हुआ ३ आनन्दमय हुवा हुआ, रुचियुक्त हुवा हुआ। (स्त्री. रुचियोडी)

रुचिसती–स. स्त्री. [सं.] श्री कृष्ण भगवान की नानी तथा महाराज उग्रसेन की रानी का नाम जो वसुदेव की सास थी।

रुचिर–स. पु. [स.] १ श्री कृष्ण के पुत्र सेत्रजित के पुत्र का नाम।

२ कुरुवशीय राधिक राजा का नाम।

३ केसर।

वि.—१ सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ एक रुचिर गणिका उठै, सुभ गुण सील समांन —व. भा.

उ०—२ सोभि जान सिरदार, रूप अणपार विराजै। रतन निकरि किरि, रुचिर भोमि वैरागर भ्राजै। —रा. रू.

२ अच्छा, भला।

३ मीठा, मधुर।

रुचिरा–स. स्त्री.—१ एक प्रकार का वृत जिसके प्रत्येक चरण में जगण, भगण, सगण, जगण और अंत में गुरु होता है।

२ सुप्रिया छद का दूसरा नाम।

३ केसर। (डि. को.)

रुचिरोमा–स. स्त्री. [स.] स्कंद की अनुचरी एक मात्रिका का नाम।

रुज–स. पु. [स रुज्, रुजा] १ रोग, बीमारी। (डि. को.)

२ पीड, वेदना। (अ. मा., ह ना. मा.)

रुजक—देखो 'रिजक' (रू. भे.)

उ०—१ तरै आप कहीजै–आप सखरी कही, म्हैं पण उदम करसा। तरै हेक दीहाड़ै रजपूताणी सूं कहियोज म्हैं हमै परभोम रुजक रै आटै हालां तौ बैठा काहुं करा। तरै हालण लागौ। —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ पछै कलियाणसिंघ सुकन मनवछत लै, काकड जाए उभा रहै घर सुमाचार दीन्हा। पछै रजपूतांणी घणौ हरस सोंक दासी ले, कलेवौ रुजक लै हजूर आई। —कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

रुजगार—देखो 'रोजगार' (रू. भे.)

उ०१ 'रुजगार खोल लै वाला फरीद।' रुजगार अबै किसा रया है माजी! बखत बळगी, सै देवै जिकौ थेई दियौ। —वरसगांठ

उ०—२ घणा मूंघा मोती मत ढळका, रोया रुजगार मिळै कोनी। व्है लखपतिया री राज जठै, भूखा रौ पेट पळै कोनी। —चेतमांनखौ

उ०—३ राज मांहै च्यार मास रौ रुजगार अगाऊ दौ तौ रहूं। —पंचमार री वात

उ०—४ उण देस री बळिहारीं जाऊं जठै माथा मोल विकाय अरथात जिण सिरदार कनै रुजगार ले, सिर देण साटै, सूरवीर रहै है, वौ देस धिन्न है। —वी. स. टी.

रुजा-स. स्त्री. [सं.] रोग बीमारी। (डि को.)

रुजु—देखो 'रज्जू' (रू. भे.)

रुझणी-स. स्त्री.—लंबी चोंच वाली एक प्रकार की छोटी चिड़िया जिसकी छाती सफेद और पीठ काली होती है।

रुझणौ, रुझबौ-क्रि. अ.—अवरुद्ध होना, रुकना।

उ०—रजी अरक्क विद्द ए, पूरणा लग कै चद ए। कुरग सिंघ रुझ ऐ, मरति मज्झि मुज्झ ए। —गु. रू. ब.

रुझियोड़ौ-भू का. कृ. [स्त्री. रुझियोडी] अवरुद्ध हुवा हुआ, रुका हुआ।

रुट-सं. पु [सं रुष्ट] रूठने की क्रिया या भाव, क्रोध, कोप, गुस्सा।

(अ. मा.)

रू. भे.—रुठ।

रुट्ठणौ, रुट्ठबौ—देखो 'रूठणौ, रूठबौ' (रू. भे.)

उ०—या विचार वैण बोलै, तेज सूं समसेर तोलै। मूछ कै रोम व्योम कू उट्ठै, रान के आए जमरांन से रुट्ठै। —रा. रू.

रुट्ठियोड़ौ—देखो 'रूठियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. रुट्ठियोडी)

रुठ—देखो 'रुट' (रू. भे.)

रुठाणौ, रुठाबौ-क्रि. स. [रुठणौ क्रि. का. प्रे .रू] रूठने मे प्रवृत्त करना/कराना, नाराज करना/कराना।

रुठायोड़ौ-भू. का. कृ —कुपित किया हुआ।

(स्त्री. रुठायोड़ी)

रुडणौ, रुडबौ—देखो 'रुड़णौ, रुडबौ' (रू. भे)

उ०—१ पचसद दमांम पूर रुडै डुड रिणतूर। प्रमाणै मेघ पड्डर (पडर), हैरान हुवै। —गु. रू. ब.

उ०—२ कमधज भुज निमज सकज सुसुपह कज, रावं रज रिणतूर रुडै। दम्मामां गरज वहै व्रज दोमज, गज पाताडक भुरज गुडै। —गु. रू. ब.

उ०—३ अन्नदिणंतरि गिरि सिहरै, राजा रमलि करेइ। कुंती करमल अडवडिउ, रडयड भीमु रुडेइ। —सालिभद्र सूरि

रुडाणौ, रुडाबौ, रुडावणौ, रुडावबौ—देखो 'रुडाणौ, रुडाबौ' (रू. भे.)

रुडावियोड़ौ—देखो 'रुडायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुडावियोड़ी)

रुडियोड़ौ—देखो 'रुड़ियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुडियोडी)

रुणंजण—देखो 'रणझण' (रू. भे.)

रुणउणणौ, रुणउणबौ-क्रि. अ —भौंरों का मण्डराना।

उ०—सेवइ जसुपय साध अहै, पकय महूअर रुणउणइ ए। धनु धन जै नरनारि अहै, नित नितु प्रभु गुण गण थुणइए। —ए. जै. का. स.

रुणक-स. स्त्री—१ याद, स्मृति।

२ इच्छा।

६ एक प्रकार की ध्वनि विशेष, झनकार।

रुणकझुणक-स. स्त्री.—नुपूर आदि से उत्पन्न रुनझुन शब्द या ध्वनि।

रुणजुण—१ देखो 'रूणझुण' (रू. भे.)

उ०—रांमजी आप घोड़ै असवार, रुकमण नै रुणजुण बैल जुपाय —लो. गी.

२ देखो 'रणझण' (रू. भे.)

रुणझणणौ, रुणझणबौ-देखो 'रुणझुणणौ, रुणझुणबौ' (रू. भे.)

उ०—कौन बजावै वासुरी, गोपी नाचै ताली छद कै। पाए नेवर रुणझणै, हस हस रामत रमै आणद कै। —जयवांणी

रुणझणियोड़ौ—देखो 'रुणझुणियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. रुणझणियोडी)

रुणझुण—१ देखो 'रणझण' (रू. भे.)

२ देखो 'रूणझुण'. (रू. भे.)

उ०—१ बाईजी कै आयौ रै गाड्लौ, कांई म्हारै रुणझुण वैल रै नीमोळीडा। —लो. गी.

उ०—२ रुणझुण वेल भवरजी ! मैं वण् जी, हां जी ढोला ! वण ज्याऊं सुरही-रा बैल। —लो. गी.

रुणझुणकणौ, रुणझुणकबौ—देखो 'रुणझुणणौ, रुणझुणबौ' (रू. भे.)

उ०—रणका रुणझणकेह, राय आंगण रमियौ नही। तौ पहिरस केम पगेह, वड़ नेवरी वणीरउत।

—वीरमदे सोनगरा री वात

रुणझुणकियोड़ौ—देखो 'रुणझुणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुणझुणकियोड़ी)

रुणझुणणौ, रुणझुणबौ-क्रि. अ.—नुपूर आदि आभूषणों से ध्वनि उत्पन्न होना, ध्वनि होना, रुनझुन की ध्वनि होना।

उ०—१ करयलै कंकण मणि झमकारे, जादर फालीय हुपिरण ए। अहर तबीलीय द्रूपदी बाल, पाए नेउर रुणझुणई ए। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ वाजइ पडह पखावज पूर, ढोल निसांण वाजइ रिणतूर। वीर घटा तिहा **रुणझुणइ**, मेघाडंबर छत्र सिर दीयौ राय।
—बी. दे.

रुणझुणहार, हारौ (हारी), रुणझुणियौ—वि०।

रुणझुणिओड़ौ, रुणझुणियोड़ौ, रुणझुण्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रुणझुणीजणौ, रुणझुणीजबौ—भाव वा.।

रुणझणणौ, रुणझणबौ, रुणझुणकणौ, रुणझुणकबौ—रू भे.।

रुणझुणियोड़ौ—भू. का कृ.—नुपुर आदि आभूषणो से शब्द उत्पन्न हुवा हुआ, रुनझुन का शब्द हुवा हुआ।
(स्त्री. रुणझुणियोडी)

रुणझुणियौ—वि.—रुनझुन की ध्वनि उत्पन्न करने वाला।

स. पु—१ एक राजस्थानी लोक गीत।

२ बच्चो के खेलने का एक खिलौना विशेष।

उ०—ऐ ढोल ढोलंता यू केयौ **रुणझुणियौ** लै। सायब लाल चूडौ पेराय, जाजौ मरवौ लै।
—लो. गी

रुणा—स. स्त्री. [स.] सरस्वती नदी की एक सहायक नदी।

रुणावळी—देखो 'रोमावळी' (रू. भे)

रुणी—स. स्त्री.—घोडो की जाति विशेष।

रुणौ—देखो 'रूणौ' (रू. भे.)

रुत—स. स्त्री.—१ रुई (कपास)।

उ०—**रुत** प्रति चदण कपूर, सभै समसाण सझाई। विविध अमित सुचि वसत, चेहग्नि निमति चलाई।
—रा. रू.

२ देखो 'रितु' (रू. भे.)

उ०—१ म्हैं मगरा मोरिया, काकर चूण करंत। **रुत** आया बोला नहीं, हीया फूट मरत।
—अग्यात

उ० -२ परण चाल्या छा भवरजी, गोरड़ी जी हा जी ढोला, हो गई जोध जवांन। बिलसण की **रुत** चाल्या चाकरी जी, ओ जी म्हारा लाल नणद रा ओ वीर, मत ना सिधावौ पूरब री चाकरी जी।
—लो. गी.

उ०—३ फागुण मासि वसत **रुत**, आयउ जइ न सुणेसि। चाचरिकइ मिस खेलति, होळी झपावेसि।
—ढो· मा.

उ०—४ माहै राग छै, जिकै कूद-ऊछळ छै-रीगटा हिरण छै, सु **रुत** आइ हिरणी नै घेचता फिरै छै। सवळौ हिरण निबळै नै घेचै छै।
—रा. सा. स.

रुतबौ—सं. पु. [अ. रुत्वः] १ वह ऊंची और अच्छी स्थिति जिसमें समाज की ओर से यथेष्ट आदर, प्रतिष्ठा या सत्कार हो।

२ राज्य या शासन की सेवा मे मिलने वाला ऊचा पद।

३ रोब।

उ०—१ थाट अर **रुतबा** सूं पूरी करड़ावण रै सांथै राजदरबार सूं पोहरौ देवण सारु वहीर व्हिया।
—फुलवाड़ी

उ०—२ औ तौ म्हैं राजा रौ दीवाण हूं। जबाब मे की गुमेज अर **रुतबा** रौ पुट हौ।
—फुलवाडी

४ बडाई, महत्ता, श्रेष्ठता।

रुति—देखो 'रितु (रू. भे)

उ०—१ धर करि अमल पदम छत्र धारै, सुदरि नवलापुरी सिंगारै। रगमहलि दंपति दुति राजै, छक मुसताकि काम **रुति** छाजै।
—सू. प्र.

उ०—२ जिण **रुति** बग पावस लियइ, धरणि न मेल्हइ पाइ। तिण **रुति** साहिब वल्लहा, कोइ दिसावर जाइ।
—ढो. मा.

उ०—३ जिण **रुति** बहु पावस झरइ, बाबहियउ बोलंत। तिण **रुति** साहिब वल्लहा, कौ मदिर मेल्हंत।
—ढो· मा.

उ०—४ दुवा मासा मरजाद लग **रुत** एक रहाइ, **रुतियां** दोय हुवदिया, इक काळ वोळाई।
—केसौदास गाडण

रुतिराई—देखो 'रितुराज' (रू. भे.)

रुत्ति, रुत्ती—देखो 'रितु' (रू. भे.)

उ०—सीयाळइ तउ सी पडइ, ऊन्हाळइ लू वाइ। वरसाळइ भुइं चीकणी, चालण **रुत्ति** न काइ।
—ढो. मा.

रुदंती—देखो 'रुद्रवंती' (रू. भे.)

रुदन—सं. पु [स.] १ रोने की क्रिया या भाव।

उ०—वीतां पहर कंवर विग्रहियौ, करि बह **रुदन** हेक अत कहियौ। धरपति सुणि तिल सोच न धारै, विध करि पाण समस्या बारै।
—सू. प्र.

२ रोने से उत्पन्न शब्द या आवाज।

उ०—जनमे नखत करूरां जिणसू, तिण नूं वन नाखै दुख तिण सू। जिण सुणि **रुदन** दया मनि जाणी, आस्रम रिख माया जित आणी।
—सू. प्र.

रुदर—१ देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

२ देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

रुदरांणी—देखो 'रुद्राणी' (रू. भे)

रुदराख, रुधराछ—देखो 'रुद्राक्ष' (रू. भे.)

रुदित—वि. [सं·] १ रोता हुआ।

२ व्याकुल।

३ दुखी।

रुद्द—देखो 'रुद्र' (रू. भे.)

रुद्दवीणा—देखो 'रुद्रवीणा' (रू. भे.)

उ०—सीमडळ रबाब सार, **रुद्दवीणा** झणकार, तंत मझि घोर तार, ग्रांमा त्रिहणौ।
—गु. रू. बं.

रुद्दांणी—देखो 'रुद्रांणी' (रू. भे.)

उ०—सूरज पुत्र करन्न, पेट कुँता उपन्नौ, पवन पूत हणमत, उदर अजनी उपन्नो। ईस पुत्र खट-मुक्ख, पुत्र जनमे **रुद्दांणी**, राघव दसरथ पुत्र, जणी कउसल्या रांणी। —गु. रू ब.

रुद्ध–वि. [सं.] १ जिसकी चाल या गति बंद हो गई हो, बद। २ रुका या रुका हुआ. ३ घिराया या घेरा हुआ. ४ पकड़ा हुआ.

रुद्धणौ, रुद्धबौ—देखो 'रूंधणौ, रूंधबौ' (रू. भे.)

उ०—केवलि वयण जु कूडउ थाइ, जउ नवि आव्या पंडवराय। पूछीउ भीमि कथा प्रबधुवणि जाई बग राखसु रुद्ध। — सालिभद्र सूरि

रुद्धियोड़ौ—देखो 'रूंधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रुद्धियोडी)

रुद्धा–वि. स्त्री.—१ रोकने वाली। २ मिटाने वाली।

उ०—देवी नाम भागीरथी नाम गगा, देवी गंडकी गोगरा रांम गंगा। देवी सरसती जम्मना सरी सिद्धा, देवी त्रिवेली त्रिस्थळी ताप रुद्धा। —देवि

रुद्धि—देखो 'रिद्धि' (रू भे.)

उ०—सवत अढार इग्यार में, प्रतिष्ठा 'लींबडी' मध्य। 'वढवाणी' स्रावक ढुढकी, बुझव्या खरची रुद्धि। —कवियण

रुद्र–स. पु. [स. रुद्रः] १ सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मा की भृकुटी से उत्पन्न एक प्रकार के देवता जो क्रोध रूप माने गये है तथा जिन से भूत, प्रेत, पिशाचादि उत्पन्न कहे जाते है। इनकी सख्या भी ग्यारह मानी गई है परन्तु सर्व प्रथम अथर्ववेद में इनके निम्नलिखित सात नाम ही पाये जाते है। यथा—१ ईशान, २ भव, ३ शर्व, ४ पशुपति ५ उग्र ६ रुद्र और ७ महादेव।

पुराणों में अष्ट रुद्रो की नामावली दी गई है जो शतपथ ब्राह्मण की नामावली से मिलती जुलती है। इन ग्रन्थो के अनुसार ब्रह्मा से जन्म प्राप्त होने पर ये रोदन करते हुए इधर उधर भटकने लगे। तत्पश्चात् इनके द्वारा प्रार्थना करने पर ब्रह्मा ने इन्हें आठ विभिन्न नाम पत्निया एव निवास स्थान आदि प्रदान किये।

प्रमुख पुराणो में से विष्णु, मार्कंडेय, वायु एव स्कंद पुराण अष्टमूर्ति महादेव की नामावली प्राप्त है।

इन पुराणों से प्राप्त रुद्र की पत्नियो, सन्तानों, निवास स्थानो आदि की तालिका निम्न प्रकार है—

रुद्र का नाम	पत्नी	संतान	निवास स्थान
१ रुद्र	सुवर्चला या सती	शनैश्चर	सूर्य
२ भव	उमा (उषा)	शुक्र	जल
३ शर्व (शिव)	विकेशी	मंगल	मही
४ पशु पति	शिवा	मनोजय	वायु
५ भीम	स्वाहा (स्वधा)	स्कद	अग्नि
६ ईशा	दिशा	स्वर्ग	आकाश
७ उग्र	दीक्षा	संतान	यज्ञीय ब्राह्मण
८ महादेव	रोहिणी	बुध	चन्द्र

एकादश रुद्र—महाभारत एव पुराणों में प्राय सर्वत्र रुद्रों की सख्या ग्यारह बताई गई है एव उनकी उत्पत्ति ब्रह्मा की भृकुटी, कही शरीर से होने की कथा बताई गई है। परन्तु इन ग्रथों से प्राप्त एकादश रुद्रों की नामावली एक दूसरे से मेल नही खाती है। इनमे से मुख्य ३ ग्रंथो से प्राप्त नामावलिया इस प्रकार है—

स्कन्द पुराण से–१ भूतेश, २ नीलरुद्र, ३ कपालिन ४ वृषवाहन, ५ त्र्यंबक, ६ महाकाल' ७ भैरव, ८ मृत्युजय, ९ कामेश एवं १० योगेश।

महाभारत—१ मृगव्याध, २ शर्व, ३ निर्ऋति, ४ अजेकपात, ५ अहिर्बुधन्य, ६ पिनाकिन, ७ दहन, ८ ईश्वर, ९ कपालिन १० स्थाणु, ११ भव।

भागवत के अनुसार—१ मन्यु, २ मनु, ३ महिनस् (सोम), ४ महत्, ५ शिव, ६ ऋतध्वज, ७ उग्ररेतस्, ८ भव, ९ काल, १० वामदेव, ११ धृतध्वज।

उपर्युक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य पुराणो मे प्राप्त एकादश रुद्रो के नाम एव पाठ भेद इस प्रकार मिलते है—१ अजैकपात (अज, एकपात, अपात्), २ अहिर्बुधन्य, ३ ईश्वर (सुरेश्वर, विश्वेसर' अपराजित, शास्तृ, त्वष्टृ) ४ कपालिन्, ५ कपर्दिन, ६ त्र्यम्बक (दहन, दमन, उग्र, चड, महातेजस्, विलोहित, हवन), ७ बहुरूप (निदित, निर्ऋति, महेश्वर), ८ पिनाकिन (भीम), ९ मृगव्याध (रैवत, परंतप), १० वृषाकपि (विरुपाक्ष, भग), ११ स्थाणु, (शंभु, रुद्र, जयत, महत, अयोनिज, हर, भव, शर्व, ऋत, सर्वसज्ञ, संध्य एव सर्प)।

२ भगवान शकर का एक रूप जो कामदेव को भस्म करते समय एव दक्ष यक्ष विध्वस करते समय उन्होने धारण किया था।

३ महादेव या शिव का एक नाम। (डि. को.)

४ शनिश्चर। (अ. मा.)

५ घोडे के कर्ण मूल पर होने वाली भौरी (चक्र) जो विजय चिह्न माना जाता है। (शा. हो.)

६ ग्यारह की सख्या या ग्यारह। *

७ वटवृक्ष। (अ. मा.)

वि.—८ भयकर, भयावह।

९ देखो 'रुधिर' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—सक भड चढै सिकार, सफै छला साभर सुग्रर। ध्रवै अमेख **रुद्र** धार, कमधज पीरां की कबर। —गो. रू.

१० देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

रू. भे.—रउद्द, रउद्ध, रउद्र, रउद्रि, रवद, रवद, रवद्द रवद्दि, रवद्र, रुद्द।

मह.—रवदांण, रुद्रौ।

रुद्रग्रातमज—देखो 'रुद्रातमज' (रू. भे.)

रुद्रक – देखो 'रुद्राक्ष' (रू. भे.)

रुद्रकड़ौ—स. पु. यौ. [स रुद्रः+कटकः] महादेव द्वारा भस्मासुर को दिया जाने वाला कड़ा।

उ०—१ जग सारौ जाणै जोधपुरा, चौरंग तणौ वार अणचूक। जुडता लाख दोयणा जाळै **रुद्रकड़ा** सारीखौ रूक। —रुघौ मुहतौ

उ०—२ **रुद्रकड़ा** ज्यूं रूक दै, दुजणां धरम द्रवार। तौ हत्थां तखतेस तण, ब्रिटिन जाय बळिहार। —किशोरदान बारहठ

रुद्रकरण—सं. पु. [सं. रुद्रकर्ण] तीर्थ विशेष का नाम।

उ०—अम्रतकेस्वर अति भलुं, **रुद्रकरण** कणवीर। मधुकेस्वर जिमलिंग तिम, वडवामुख धॅरि धीर। —मा. का. प्र.

रुद्रकळस—सं. पु. यौ. [सं. रुद्रकलशः] ग्रहों आदि की शान्ति के लिए स्थापित किया जाने वाला कलश।

रुद्रकाळी—स स्त्री. [सं. रुद्रकाली] दुर्गा या शक्ति की एक मूर्ति।

रुद्रकोट, रुद्रकोटि—सं. पु—एक प्राचीन तीर्थ जिसमे रुद्रों का निवास माना जाता है।

उ०—सिद्धकरण गोकरण पण, **रुद्रकोट** महाकोट। गुरजेस्वर जिहा गरज्जना, महिमा केरी मोट। —मा. का. प्र.

रुद्रकुंड—सं. पु.—वृज स्थित एक तीर्थ का नाम।

रुद्रगण—सं. पु. [सं.] शिव के पार्षद या गण जिनकी सख्या तीस करोड़ मानी गई है।

रुद्रगरभ—सं. पु [स. रुद्रगर्भ] अग्नि, आग।

रुद्रघरणी—स. पु. [स. रुद्र गृहिनी] पार्वती, ऊमा।

उ०—**रुद्रघरणी** जपै सोभळी रुद्र। आज लगै ते लिया अनेक। जैसिंघ ध्रूय तणौ ध्रू जोता, ऊमर भर मो जुडियौ एक। —गोरधन बोगसौ

रुद्रघांण—स. पु.—सहार, ध्वस।

उ०—तोर जगा तुरंगा 'जसूंत' जोम काढै तूं ही, घावा क्रोध गाढै तू ही रचै **रुद्रघांण**। —हुकमीचद खिडियौ

रुद्रज—स. पु. [स] पारा।

वि.—रुद्र से उत्पन्न।

रुद्रजटा, रुद्रजटाय—सं. स्त्री.—१ रुद्र के शिर के बाल, महादेव के शिर के बाल।

२ एक प्रकार का क्षुप विशेष जिसके पत्ते मयूर शिखा के समान होते है।

उ०—रांमोडी नइ रासना, रीगणि **रुद्रजटाय**। रांग रताजणी, रुमडी, रनिवनि रंग धराय। —मा. का. प्र.

३ सौफ।

४ इसरोल।

रुद्रतनय—स. पु. [स.] १ जैन हरिवंश के अनुसार तीसरे श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ स्वामी कार्तिकेय।

रुद्रताळ—स. पु. [स. रुद्रताल] सोलह मात्राओं का म्रदग का एक ताल विशेष।

रुद्रतेज—सं पु. [सं.] स्वामी कार्तिकेय का एक नाम।

रुद्रथांनक—सं. पु. यौ. [स. रुद्रस्थान] कैलाश पर्वत।

रुद्रपत, रुद्रपति—स. [स. रुद्रपति] १ शिव, महादेव।

२ बादशाह।

रुद्रपत्नी—स. स्त्री. [स.] १ दुर्गा का एक नाम।

रुद्रप्रयाग—सं. पु.—गढवाल जिले के अन्तर्गत एक तीर्थ का नाम।

रुद्रप्रिया—स. स्त्री. [स.] १ पार्वती।

२ हरीत की, हडे।

रुद्रबीसी—देखो 'रुद्रवीसी' (रू. भे.)

रुद्रभू, रुद्रभूमि—सं. स्त्री. यौ. [सं.] श्मशान, मरघट।

रुद्रभैरवी—सं. स्त्री. [सं.] दुर्गा की एक मूर्ति।

रुद्रमाळ—१ देखो 'रुद्रमाळय' (रू. भे.)

२ देखो 'रुद्रमाळा' (रू. भे.)

३ देखो 'रुंडमाळा'

रुद्रमाळका—देखो 'रुद्रमाळा' (रू. भे.)

उ०—तूटो बोम बाट निराताळ सों बिछूटो तारो, केतां छूटो पीरांण आलखा ताकै कूप । कोप रुद्रमाळका विहंगनाथ जूटो किना, रूठो गोरां माथै प्रळै काळ को सो रूप ।
—गिरवरदांन कवियौ

रुद्रमाळय-सं. पु.—एक तीर्थ का नाम ।

उ०—अट्टहास ऊजेणीह मरु जंगळ माहेह । रुद्रमाळय सिद्धत्रय, रामेसर सिरिचंद । —मा. का. प्र.

रू. भे.—रुद्रमाळ ।

रुद्रमाळा-स स्त्री. [सं. रुद्रमालिका, रुद्रमाला] १ शिव के गले मे लिपटे रहने वाला, सर्प, साप ।

२ मुण्डमाळा ।

रू. भे.—रुद्रमाळ, रुद्रमाळका ।

रुद्ररस—देखो 'रौद्ररस' (रू. भे.) (डिं. को.)

रुद्ररांणी—देखो 'रुद्रांणी' (रू. भे.)

रुद्रराय, रुद्रराव-सं. पु. [सं. रुद्रराज] १ महादेव, शिव ।

२ बादशाह ।

रुद्ररोदन-सं. पु [सं.] स्वर्ण, सोना ।

रुद्ररोमा-स. स्त्री.—कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

रुद्रलता-स. स्त्री. [सं.] रुद्रजटा ।

रुद्रलोक-सं. पु. [स.] रुद्र व रुद्रगण के निवास का स्थान ।

रुद्रवंती-सं. स्त्री. [सं.] एक प्रसिद्ध वनौषधि जिसकी गणना दिव्यौषधि वर्ग में की जाती हे ।

रू. भे.—रुदती ।

रुद्रवदन-सं. पु. [स.] १ रुद्र के मुख जिनकी संख्या पांच मानी जाती है ।

२ पांच की संख्या या अंक । *

रुद्रवाचा-स. स्त्री. [सं.] वह वचन जो सदैव सत्य रहता हो, सत्य-वचन ।

उ०—तरै इण देवराज कह्यो-ब्रह्मवाचा, रुद्रवाचा हूं दिन दोय मांय विचारनै मागीस । —नैणसी

रुद्रवीणा-सं. स्त्री.—एक प्रकार की पुराने ढंग की वीणा, नारदवीणा ।

रू. भे.—रुद्रवीणा

रुद्रवीसी-स. स्त्री.—साठ संवत्सरों में से अन्तिम बीस संवत्सरों का समूह जो अमांगळिक और कष्टप्रद कहा गया है, रुद्रविंशति ।

रू. भे.—रुद्रबीसी

रुद्रसावरणी-स. पु. [सं. रुद्रसावर्णि] बारहवें मन्वतर का अधिपति मनु जो भव राजा का पुत्र था ।

रुद्रसुंदरी-स. स्त्री. [सं.] दुर्गा की एक मूर्ति ।

रुद्रांआंणी, रुद्रांणी-स. स्त्री. [स. रुद्राणी] १ रुद्र अर्थात शिव की पत्नी, पार्वती, शिवा । (डिं. को.)

उ०—१ सीता सी रांणी वेद वखांणी, सारंग पांणी साम । मीढ न मघवाणी वळ ब्रह्माणी, नही रुद्रांणी नाम —र. ज. प्र.

उ० —२ लक्ष्मी रुद्रांणी ब्रह्मांणी सुमिरू, सादर सुयस बखाणी ।
—राघवदास भादौ

२ रुद्रजटा नामक लता ।

३ सगीत में एक प्रकार की रागिनी ।

४ ग्यारह वर्षो की कन्या का नाम ।

रू. भे.—रुदराणी, रुद्राणी, रुद्र रांणी ।

रुद्राक्ष, रुद्राख, रुद्राछ-सं. पु. [सं रुद्राक्ष] एक प्रकार का वृक्ष विशेष जिसके फलों के बीजों की जपने तथा कठ में धारण करने की माला बनाई जाती है ।

उ०—१ मध्यान में विराजमान ध्यांन मे धुनी । रुद्राक्ष माळ पांन मे मुद्रा उनमुती । —मे. म.

उ०—२ रावण राग रताजणी, रवणी नइ रुद्राख । रुक रुदंती रायसली, रोहड रोहिणी राख । —मा. का. प्र.

उ०—३ सोम धूप खेव सतवारै, एक मुखी रुद्राछ अधारै । बीजो धूंप खेवि तिण बेलै, मझ दांहिणा-वरत संख मेलै । —सू. प्र.

रू. भे.—रुदराख, रुदराछ ।

रुद्राक्षमाळ, रुद्राक्षमाळा [सं. स्त्री. यौ.] रुद्राक्ष के बीजो की बनी माला विशेष ।

रुद्रायण-स. पु. [सं. रुद्र+रा. प्र. आयण] यवन, मुसलमान ।

उ०—अणी सर साबळ फूटत ऊक, रुद्रायण वाह करै घण रूक । भयांणख भेख सरा छड़ भार, दुहूंवळ धार रगत्त दुसार ।
—सू. प्र.

रुद्रातमज-सं. पु. [सं. रुद्रात्मज] स्वामी कार्तिकेय ।
(नां. मा., ह. ना. मा.)

रू. भे.—रुद्रआतमज ।

रुद्रारि-सं. पु. [म.] कामदेव, मदन ।

रुद्राळ-वि. पु. [सं. रुद्र+आलुच] रुद्र का, रुद्र सम्बन्धी ।

सं. पु.—१ महादेव, शिव ।

२ यवन, मुसलमान ।

३ देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

रुद्राळ, रुद्राळू-वि. [स. रुद्र=भयंकर+रा. प्र. लु] भयंकर, भयावह ।

उ०—अंग आळस मोडतौ, नैण घोळतौ निद्राळ । कर मैहदी रंगिया, रोस भरियौ रुद्राळ। —पा. प्र.

रुद्रावास–स. पु. [स. रुद्र+आवास] शिव के निवास स्थान, काशी, कैलाश, श्मशानादि ।

रुद्री–स. स्त्री. [स.] १ रुद्र सम्बन्धी वेद मंत्रो का लघु संग्रह जिसमें रुद्र देवता के मंत्र अधिक और विशिष्ट रूप से संग्रहित है, (वेद के रुद्रानुवाक या अघमर्षणसूक्त की ग्यारह आवृत्तिया) जिनका पाठ शुभ माना जाता है ।

२ एक प्रकार की वीणा ।

रुद्रौ—देखो 'रुद्र' (मह, रू. भे.)

उ०—सिधांण छभा रुद्रौ, बळि पयाळ स्रग इंद्राणौ । राठोड वीर वसुधा, त्रिभवणौ छभा चतुरह । —गु. रू. बं.

रुधक्क—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

उ०—हव पड लड़क्क हलै, खग झल्ल कडक्क तड़क्क खुलै । भक भक्क रुधक्क खळक भल, दक दक्क बकै जब थक्क दल । —पा. प्र.

रुधर—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

उ०—ठहिया भूखण सरब ठिकांणै, अहि कांकळि पुहपा अहि-नाणै । चोळ रुधर मद पियै सचाळी, विकट करै नाटक विकराळी । —सू. प्र.

रुधराळ—देखो 'रुधिर' (मह, रू. भे.)

रुधिर–सं. पु. [स.] १ प्राणियों, जीवधारियो के शरीर का रक्त, शोणित, खून । (अ. मा; डिं. को)

उ०—१ इम इक निसा अमावस आधी, लाल रुधिर सरिता नृप लाधी । उभै तटां झळ रीठ अराबै, फाटा सीस कमळ बहु फाबै । —सू. प्र.

उ०—२ रुधिर खेत माहै एकठौ हुग्रौ छै । अर ऊपर जु रुधिर की बूंद पड़े छै । त्यांह की जु ऊँची बूंद उछळै छै । सु चोटीयाळी कहावै । इहै चोसठि योगणि हुई । —वेलि टी.

२ रक्तवर्ण ।

वि.—लाल ।

रू. भे.—रुइर, रुद्राळ, रुधक्क, रुहिर, रूहिर, रूहि, रूही ।

मह.—रुधराळ, रुधिराळ, रुहिराळ, रूहराळ ।

रुधिरगुल्म–सं पु. [सं. रुधिरगुल्म] स्त्रियो का एक प्रकार का रोग विशेष जिसमे उनके पेट में एक प्रकार का गोला घूमता रहता है । (इसे राजस्थानी मे छोड भी कहते है)

रुधिरांध–स. पु—एक नरक का नाम ।

रुधिरानन–सं पु. [स. रुधिरानन] मंगलग्रह की वक्रगति विशेष । (ज्योतिष)

रू. भे.—रुहिराण ।

रुधिराळ—देखो 'रुधिर' (मह., रू. भे)

उ०—गजसीस पड़ै धड पडै गात, पडिया फिर पाहड वज्र पात । गिळ धापै पळचर मस गाळ, खळकिया घणा रुधराळ खाळ । —सू. प्र.

रुधिरासन—सं पु' [स. रुधिराशन] १. श्री रामचन्द्र भगवान द्वारा मारा जाने वाला खर राक्षस का एक सेनापति ।

२ राक्षस, असुर ।

३ खटमल, जौक, मच्छरादि ।

रुपइयौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ०—घणौ उच्छव करि मगत जणा री घणी आसीस ले करि, करह, केकांण, सोना, सावट्ट, रुपइया, महुरा घणी दे, चीत्रोड़ि रौ मेध कहाइ । —द. वि

रुपट्टी—देखो 'रुपयौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—इसी म्हारी लांबी सीरख कोनी । थें जांणौ-ई-हौ आगै जाय, र मनै मिळै तौ खाली पंदरै रुपट्टी ही है । —बरसगांठ

रुपणौ, रुपबौ–क्रि अ.—१ किसी कडी या नुकीली चीज का किसी पदार्थ मे धसना, गडना ।

उ०—१ नगर में वड़तां ई चारू कांनी डीगौ परकोटौ देख्यौ, तौ वा रै इचरज रौ पार नी रह्यौ । चारू दिसा सामी भरपूर डीगा दरवाजा । दरवाजा रै भाला रुप्योड़ा किवाड । —फुलवाडी

उ०—२ सो इकौ सिलै ठोय करने आयौ छै । सो रांमदासजी आवता रै बरछी वाही । सो इकौ घोड़ौ फूटनै बरछी जाती थकी धरती में रुपी । —रा. सा. स.

२ जमीन के अन्दर खोदे हुए गड्डे मे गाड़ा जाना ।

ज्यू ; मेळा मे झडो रुपणौ ।

३ किसी पदार्थ का कुछ अंश जमीन के अंदर इस प्रकार जमना या स्थापित होना कि वह पदार्थ वहां स्थिति हो जाय ।

४ खडा होना, टिकना, रुकना, ठहरना ।

उ०—१ माय पधारौ, उठै ई काई रुपग्या । —फुलवाडी

उ०—२ खूटा री गळाई रुप्योड़ा ऊभा रह्या । पछै बाग झाल फुरती सू घोडा माथै बैठा । —फुलवाड़ी

५ सदा एक ही दशा, रूप या स्थिति में होना, निश्चल होना ।

उ०—म्है तौ थांनै निरध आंधा जांणिया । सांमी भांत-भात री मीठाइया सजियोड़ी पडी अर थें पूतळी री गळाई रुप्योड़ा बैठा । आल्या सांमी हाथ वसू मिठाइया पछै थें वांने खावौ क्यूं नी। । —फुलवाड़ी

६ दृढता पूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकना, डटना ।

उ०—१ वरती चवदह वरस, पडै इळ वेध अपारा, विकट लोग वदळियौ, सोच लागौ उर सारां। कांनी कांनी कळह, दाय कपनी उर दीधौ, खोज खजानौ खास, लुट श्रेरणपुर लीधौ। बजराग भाट लागा बहै, धके दिली दिस धाउवै। महाराज खीज लेवा मदत, ग्रायर रुपिया ग्राउवै ॥ —गिरवरदान कवियौ

उ०—२ लार 'मांन' बाहर लियां, भड जग जाहर भूप। ग्रोखा थाहर ऊपरा, रुपियौ नाहर रूप। —महादांन मेहडू

रुपणहार, हारौ (हारी), रुपणियौ—वि.।

रुपिग्रोड़ौ, रुपियोड़ौ, रुप्योड़ौ—भू. का. कृ.।

रुपीजणौ, रुपीजबौ—भाव वा.।

रुपयौ–स पु. [सं रूप्यक] १ चादी का सिक्का विशेष।

ऊ०—घर में रांमजी राजी होवतां थकां ई सेट सेठांणी नै इण बात री बडौ दुख हो के उणा रै कोई संतान ही नी। कोसिस करण में सेठा पाछ को राखी नी। भाटा जितरा देव पूज्या, राखडी मादळिया ई कराया, गाव रा गुरासा खनै इलाज ई करायौ ग्रर जोधपुर जायर डाक्टरा री छाती में रुपया बाळिया पण गरज काइ सजी कोयनी। —रातवासौ

२ पुराने ६४ पैसे तथा नए सौ पैसे का नोट।

३ धन-दौलत।

रू. भे.—रिपइयौ, रिपयौ, रिपियौ, रिप्पियौ, रुपियौ, रूपीयौ, रूपैयौ।

अल्पा.—रुपट्टौं, रूपटियौ।

रुपियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ किसी नुकीली चीज का किसी पदार्थ में धसा या गड़ा हुग्रा. २ जमीन के ग्रदर गड्ढे में गाड़ा हुग्रा. ३ किसी पदार्थ का कुछ ग्रश जमीन मे गडा हुग्रा, स्थितहुवा हुग्रा. ४ खडा हुवा हुग्रा, टिका हुग्रा. ५ दृढतापूर्वक एक स्थान पर डटा हुग्रा.

६ सदा एक ही दशा, रूप या स्थिति मे हुवा हुग्रा, निश्चल हुवा हुग्रा.

(स्त्री. रुपयोड़ी)

रुपियौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ०—दाळद घर दोळौ हुवौ, परणि न ग्रावै पास। रुपिया होवै रोकड़ा, सोरा ग्रावै सास। —ऊ का.

रुपेरण—देखो 'रूपेरण' (रू. भे.)

रुपेलौ–वि. [स्त्री. रुपेली] १ श्वेत प्रकाश युक्त।

उ०—चांदै तणौ उजास, रुपेली रातां सीळा। —दसदेव

२ रुपहला।

रुबाई–सं. स्त्री [ग्र.] १ उर्दू फारसी में एक प्रकार की मुक्तक कविता जिसमे चार मिसरा होते है।

२ एक प्रकार का तराना गाना।

रुमहरी–स. पु.—एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—रुमहरी हुसैनाबाद राति, जिण ग्ररब माय वळि नौख जाति। —सू प्र.

रुमकझुमक—देखो 'रिमझिमक' (रू. भे.)

रुमांचित—देखो 'रोमाचित' (रू. भे.)

रुमा–सं. स्त्री.—सुग्रीव की पत्नी का नाम।

रुमापुर, रुमापुरी–स. स्त्री. साभर नगर का प्राचीन नाम। (व. भा.)

रुमोल - देखो 'रूमाल' (रू. भे.)

रुरुग्रौ–स. पु —एक प्रकार का बड़ा उल्लू।

रुरक—१ देखो 'रुरुक' (रू. भे.)

२ देखो 'रुरु'

३ देखो 'रुरुक'

रुरु–स. पु. [सं. रुरुः] मृग विशेष।

२ कस्तूरी मृग।

३ दुर्गा द्वारा मारा जाने वाला राक्षस विशेष।

४ रामराम शब्द की ध्वनि विशेष।

उ०—१ रुरु बोलन के विसवास रए, गुरु गोलन के हम पास गए। —ऊ. का.

रुरुक–सं. पु.—१ विजयसूर का पुत्र, सूर्यवशी एक राजा का नाम।

उ०—१ सभ्रभ सुदेव न्रप विजयसूर, पुत्र जास रुरुक तप तेज पूर। —सू. प्र.

रू. भे.—रुरक।

रुरुभैरव–स. पु.—दुर्गा की पूजा के समय पूजा जाने वाला भैरव विशेष।

रुरुरियौ–सं. पु.—मारवाड राज्यान्तर्गत चलने वाला सिक्का विशेष। (प्राचीन)

रुळकणौ, रुळकबौ—देखो 'रळकणौ, रळकबौ' (रू. भे)

रुळणौ, रुळबौ, रुलणौ, रुलबौ–क्रि. ग्र. [सं लुलनम्] १ ग्रवस्था स्थिति या हालत का शोचनीय होना, बरबाद होना।

उ०—१ रडपोखा रा राज मे, रुळगी भूखा रेत। सूकां नित सीरा करै, दंड न चूकां देत। —ऊ. का.

उ०—२ कदोई वारी भोळी वातां सुण नै पैलातौ हसियौ पछै कह्यौ काला मिनखा, म्है यूं मिठाई खावूं तौ म्हारौ घर बरबाद नीं व्है जावै। म्है काठौ रुळ नी जावूं। —फुलवाडी

२ ग्रच्छी या ठीक ग्रवस्था से दुरावस्था या बुरी स्थिति को प्राप्त होना, बिगड़ना।

उ०—१ कनकळ दिली सकाज, वे सांवत पखरैतवे। रुळग्यौ देखो

राज, रव-तांडव ज्यू राजिया । —किरपाराम

उ०—२ जिसौ दधि खेवट हीण जिहाज, रुळै तिम पुत्र विहुणौ राज । —रामरासौ

३ मन या विचार का शान्त न रहना, इधर उधर जाना, भटकना।

४ छितरना, फैलना, बिखरना ।

उ०—१ इता मे जोड्या हुय भेळा, कर किचकिची पाछा विरिया, सो आय भिळीया । सो इसौ रीठ वागौ, 'सो न भूतौ न भवसते' दीठा ही बण आवै । घणी तरवारचा रा बाड उछळै छै । घणा सेल आधोसले नीसरै छै । घणा रा फीफर बोल रह्या छै । अत्रा-वळा रुळ रही छै । —कुवरसी साखला री वारता

उ०—रिणगण हेका आत रुळत हसत्त दाता हिक हिडुळंत । लडै हिक लाधै लोह् से लोध, जमद्दढ टेक उठे हिक जोध ।

—ग. रू. ब.

५ इधर उधर होना, तितर बितर होना, बिखरना ।

उ०—१ वाह पदम खळ पदम विहारै, वाह पदम हथ पदम उचारै रिणघण थाळ मूंग जिम रुळिया, पडिया किता किता खळ पुळिया । —सू प्र.

६ धोखे या भ्रम मे पडकर निश्चित तत्त्व पर न पहुचना ।

उ०—१ आलोयण लीधा पखइ जी, रुळै ससार । रुपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुण्यउ अधिकार । —स. कु.

उ०—२ राच रह्या मिथ्या मत माही, ए रुळै जीव चारूं गति माहीं । भूला नें आणै ठामी, सुमरौ स्रीसीमधर स्वामी ।।

—जयवाणी

७ घुसना, प्रविष्ट होना ।

उ०—हाथा जोडी करने चौगिरद दोळा फिर गया । गोळी तीर बाहणै लागिया । जद भूंडण पाचू चीलहर छाती आगै लेय इसा ताव सूं नीसरी सौ का तौ थह माह दीठी थी का फौज मांहौ रुळती ही दीठी सौ पाळा नूं पाल पाधरी । —डाढाळा सूर री वात

८ अनिश्चित आचरणहीन अवांछनीय जीवन होना ।

उ०—वौ घोड़ा री रास फुणकारी । मुळकतौ मुळकतौ भूलरा रै माय घोडौ छोड दियौ । मार कूकारोळौ मच्यौ । एक जणी री पीडी घोडा रा खुर सूं चीथीजगी । पीडी अर काळजौ दोनू चर-बण लागा । सुभाव री आकरी ही । रीस मे दात पीसती बोली—रुळती लायोडी रा डीकरा अंडा नाजोगा नी व्हैला तौ किण रा व्हैला । —फुलवाड़ी

९ निरुद्देश्य इधर-उधर मारा मारा फिरना ।

१० स्थायी आवास या स्थान के अभाव मे कभी कही-कभी कही भटकते फिरना ।

११ इधर उधर पडा होना अथवा उठाई पटका छोडा फेंकी होना ।

१२ युद्ध के बाजे का बजना ।

उ०—१ रुळि काहुल त्रवाळ, तूरहि भेरि नफेरि त्रहि, आरोहै अराकिया, भिलिया पथ भूलाळ । —वचनिका

१३ दुर्दशाग्रस्त होकर इधर उधर भटकना, मारा मारा फिरना ।

उ०—१ माणस मुरधरिया मांणक सम मूंगा कोडी कोडी रा करिया स्रम सूगा । डाढी मूंछाळा डळियां मे डुळिया, रळिया जायोडा गळिया मे रुळिया । —ऊ का.

उ०—२ पदमण पाणी जावत प्रात, रुळंती आवत आधी रात । विल्लखा टाबर जोवै वाट, धिनोधर धाट धिनोधर धाट ।

—रगेरेलौ बीठू

१४ लटक कर बार बार इधर उधर हिलना ।

उ०—१ घणा मीह जामा अतर मैं तिलवाय कीधा तिका रा बध छाती उपरा सू खोल दीधा छै । जिके खुल रया छै । घणा मौति-यां री माळा नै जवाहरा रा जाळ उर ऊपर रुळ रह्या छै ।

—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री बात

१५ देखो 'रळकणौ, रळकबौ' (रू. भे.)

उ०—माग जड़्या गजमोतिया, कड़्या रुळंता केस । ताळी हस दे तीजणी, बाळी कामण वेस । —पना

रूळणौ, रूळबौ —रू. भे.

रुळपट—स. पु.—१ अव्यवस्थित ।

उ०—अेडौ खेभौ तौ राज थपियां पछै ई नी व्हियौ । सगळा पानां मे अेक इज परवानौ लिख्योडौ हौ । —इण रुळपट राज में सोना रौ सूरज ऊगण वाळौ इज है । —फुलवाडी

२ देखो 'रळपट (रू. भे)

रुळयौ—१ देखो 'रूळौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हुवै न बूझणहार, जाणै कुण किमत जठै । बिन ग्राहक व्यौपार, रुळयौ गिणीजै राजिया । —किरपाराम

रुळाई—सं. स्त्री.—१ रीने की क्रिया या भाव ।

२ अव्यवस्था ।

रुळाणौ, रुळाबौ—क्रि. स.—१ अच्छी अवस्था या स्थिति से बुरी स्थिति को प्राप्त कराना, बिगड़ाना ।

उ०—महाराजा अरजी सुणहु, सत्रु सकळ मिळ साथ । दीन्हौ राज रुळाय सब, कीन्हौ मोहि अनाथ । —सिंघासण बत्तीसी

२ स्थिति, हालत, अवस्था, आदि को शोचनीय या बरबाद कराना ।

३ छितराना, फैलाना ।

४ तितर बितर कराना, बिखराना ।

५ घुसाना, प्रविष्ट कराना ।

६ युद्ध का बाजा बजाना ।

७ रुदन कराना, रुलाना ।

रुळायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ अच्छी या ठीक स्थिति से बुरी या खराब स्थिति मे पहुंचाया हुआ। २ छितराया या फैलाया हुआ। ३ तितर-बीतर कराया हुआ, बिखराया हुआ। ४ प्रविष्ट कराया हुआ, घुसाया हुआ। ५ युद्ध का वाद्य बजाया हुआ। ६ रुदन कराया हुआ, रुळाया हुआ।
(स्त्री. रुळायोड़ी)

रुळिग्राउति, रुलिग्राउति—देखो 'रळियाइत' (रू. भे)

उ०—पाप करी जीव नरके जाइं, परमाधरमी **रुळियाउति** व्याई वाट जोग्रता हुग्रा घणा दीह, भलइ तम्हि ग्राव्या माहरा सीह। —बस्तिग

रुळियांमणौ—देखो 'रळियामणौ' (रू. भे.)

उ०—कुल कीरती ग्रागइ घणी, वंस विसुद्ध वखांण। राजहंस **रुळियांमणां**, सोनिगिरा चहूग्रांण। —का दे प्र.
(स्त्री. रुळियामणी)

रुळियाइत—देखो 'रळियाइत' (रू. भे)

उ०—१ झगडउ भागउ गीरिया, ढोलइ पूरी सख्ख। मारु **रुळियाइत** हुई, पांमी प्रीय परख्ख। —ढो. मा.

रुळियार–वि.—१ बदमाश, लुच्चा, लफगा।

उ०—ग्रबै करै तौ हाजरियौ काई करै। उणारा **रुळियार** साथीडा उणनै मोसा मारता—फिट रै नादार! धणिया री मूंछ रौ बाळ बण्योडौ फिरै ग्रर एक भाबणकी ई थारै काबू में नी ग्राई। ढाकणी मे नाक डुबोय मर क्यूं नीं जावै। —रातवासौ

२ जिसके रहने या निवास करने का ठौर ठिकाना न हो।

३ दुष्ट, नीच, पाजी।

४ जो इधर-उधर बिना मतलब घूमता फिरता हो।

५ चरित्रहीन, व्यभिचारी।

६ वह (पशु) जो फसलो को हानि पहुंचाता व उत्पात मचाता फिरता हो।

उ०—वसी रा लोकांरा खेत ऊभा खाईजै। सु लोक वसी रौ भाखरसी ग्रागै नित-प्रत पुकार घालै। ताहरा भाखरसी नू छाजु ग्रोळभा तौ घणा ही दिरावै, पण **रुळियार** घण हुवौ सु रहै नही। —नैणसी

७ जिसका कोई सहारा न हो, ग्राश्रयहीन।

रुळियारगी–सं. स्त्री.—१ बदचलनी, लपटता।

उ०—मन रौ छळ-प्रपच ई उणारौ धरम, निबळापणौ उणारी जात, ग्रोछाई उणारी न्यात, **रुळियारगी** उणारौ कुळ ग्रर फिटोळपणौ उणारी खाप है। —फुलवाडी

२ गडबड़ी, ग्रव्यवस्था।

३ बदमाशी, लुच्चाई।

४ ग्रावारा होने की ग्रवस्था या भाव, ग्रावारगी।

रुळियाररासौ—१ ग्रराजकता।

उ०—दीवाण धौळै दोपार धाडा करै। राजरा ग्रैलकार चौड़ै धाड़ै लूटै। नी दाद-फरियाद ग्रर नी की सुणवाई। दिन बीतै सौ बत्तौ। ग्राधा पीसै नै कुत्ता खावै। जबर **रुळियाररासौ** मचियौ। —फुलवाडी

२ ग्रव्यवस्था।

उ०—कोई कैवै के बापनै भवारा में धात राजगीदी दाबली कोई कैवै के बापनै विस देय मरवाय न्हाकियौ। दोनूं छोटा भाइया नै देस निकाळौ दे दियौ। सगळै राजमें **रुळियाररासौ** मचाय राख्यौ है। —फुलवाड़ी

रुळियारी–सं. स्त्री.—लपटता, बदचलनी, व्यभिचार।

२ ग्रावारापन।

रुळियारौ–सं पु.—गडबडी, ग्रव्यवस्था।

उ०—देखौ ग्राजादी रौ **रुळियारौ** मचियौ। नितोताई बेटौ जायौ, नाडा पैली नाक कटायौ। —फुलवाडी

रुळीग्रामणौ—देखो 'रळियामणौ' (रू. भे.)

उ०—जीणइ वसइ जालउरउ कांन्ह, राजरिद्धि छई इद्र समान। रामपौलि ग्रति **रुळीग्रांमणी**, चिणइ पोलि तलहटी तणी।
—कां. दे. प्र.

(स्त्री. रुळीग्रांमणी)

रुळियोड़ौ–भू का. कृ.—१ बरबाद हुवा हुग्रा। २ ग्रच्छी या ठीक ग्रवस्था से बुरी स्थिति में पहुंचा हुग्रा। ३ इधर उधर भटका हुग्रा. ४ इधर उधर, तितर बितर हुवा हुग्रा। ५ छितरा या बिखरा हुग्रा। ६ घुसा हुग्रा, प्रविष्ट हुवा हुग्रा। ७ भ्रम मे पड़कर इधर उधर भटका हुग्रा, निश्चित तत्व पर न पहुचा हुग्रा. ८ ग्राचरणहीन हुवा हुग्रा. ९ निरुद्देश्य इधर उधर भटका हुग्रा १० स्थायी ग्रावास या स्थान के ग्रभाव में भटका हुग्रा. ११ दुर्दशाग्रस्त होकर फिरा हुग्रा. १२ लटकते हुए हिला हुग्रा. १३ युद्ध का वाद्य बजा हुग्रा.
१४ देखो 'रूळौ' (ग्रल्पा. रू. भे.)

रुळी, रुली—देखो 'रळी' (रू. भे.)

उ०—नीकोली रायण, ग्रोसीमन भाइण दाड़िमनी कुली खाता पूजै रुली। —बू. स.

रळीयायत—देखो 'रळियाइत' (रू. भे)

उ०—खंजण नैण मुणाळ गति, नासा दीपका लोय । ढोलौ **रळीयायत** हुवौ, जब धण दीठी जोय । —ढो. मा.

रळेट—१ आवारा ।

२ व्यभिचारी, चरित्रहीन ।

३ वह जिसका विश्वास न किया जा सके ।

रळौ—वि. [स्त्री. रूळी] १ वह जिसका मालिक या स्वामी न हो, बिना मालिक का ।

२ वह जिसकी कोई निगरानी न रखता हो, बिना निगरानी का ।

३ आबादीहीन, निर्जन ।

४ आवारा ।

५ चरित्रहीन ।

६ व्यर्थ, फिजुल ।

अल्पा;—रुळयौ, रुळियौ, रुळचौ ।

रुळचौ—देखो 'रूळौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ रुळचा खुळया रजपूत, बिरामण मिळगा बिटळा । वैस्य मिळ गया विकळ, सूद्र कूळ रुळगा सिटळा । —ऊ. का.

रुवौ—देखो 'रूणौ'

उ०—वै नू सहनाणी दिखाळूं एक एक दिखाळूं तौ राजा चौपड़ जीपै, तहा रुवा चुकै औ उपाव छै । —पच दंडी री वारता

रुवाब—देखो 'रौब' (रू भे.)

रुसतम—देखो 'रुस्तम' (रू. भे.)

रुसतमी—देखो 'रुस्तमी' (रू. भे.)

रुसनाई—सं. स्त्री. [फा. रोशनाई] १ चमक दमक ।

उ०—दहूँ दळा बळि हुवै दिखाई, रजक भळां गोळा **रुसनाई** । —सू. प्र.

२ प्रकाश, रोशनी ।

उ०—१ जिस बखत स्रीमहाराज सब लोक की **रुसनाई** का मुजरा लेकरि राजमिंदरू पधारै । —सू. प्र.

उ०—२ पीळचोसा अढारदांनीआ री **रुसनाई** लागि रहि छै। तेजपुज आसप आरोगीजै छै । —रा. सा. स.

३ आनंद, हर्ष, खुशी ।

उ०—तठे कुंवर आ वात सुण घणौ खुस्याळ हुवौ । रुपीया पांच ऊपर सू इनाम नाखिया अर साथ सारै नु कहचौ, ठाकुरा तयारी करौ । घोड़ा जीण करावौ ज्यूं चढा । सुअर मार ले आवा । परभात गोठ मे नवी **रुसनाई** आण वपरावा सतावी करौ । भुंय अळगी है । —कुंवरसी साखला री वारता

४ स्याही ।

उ०—रूका कलम रुधर **रुसनायां**, आहव खेत खता कर अेद । ब्याज मांय केता सर वाडै, काटा माय किता दे कैद । —बुधजी आसियौ

रू. भे.—रोसनाई ।

रुसभदेव—देखो 'रिसभदेव' (रू. भे)

रुसा - देखो 'रसा' (रू भे.) (अ. मा.)

रुसाणौ, रुसाबौ—क्रि. अ.—क्रुद्ध होना कुपित होना, नाराज होना ।

उ०—ताहरा हरदास कह्यौ, कुरजपूत । म्है म्हारौ पिंड ही बडायौ । ताहरा हरदास बिना घाव सारा हुवा **रुसायनै** हालियौ । वास छोडियौ । —नैणसी

रुस्ट—वि [सं. रुष्ट] नाराज, अप्रशन्न, कुपित ।

रुस्टता—स. स्त्री. [स रुष्टता] अप्रसन्नता, नाराजगी ।

रुस्टपुस्ट—वि. [स. हृष्पुटष्ता] मोटा ताजा, हृष्ट-पुष्ट ।

रुस्टि—सं. स्त्री. [स रुष्टि] कोप, गुस्सा, क्रोध ।

रुस्तक—सं. पु.—एक प्रकार की मिठाइ विशेष ।

उ०—गुंद वड़ा पाया तणा रे लाल, आबा रायण आण । **रुस्तक** रा दांणा भला रे लाल, गूंदपाक सूख खाण । —प. च. चौ.

रुस्तम—स पु.—१ फारस का एक प्राचीन पहलवान ।

२ कोई बहुत बडा वीर व्यक्ति ।

उ०—देवीदास **रुस्तम** ज्यू जग कर काम आयो । —बा. दा. ख्या.

रुस्तमी—स. स्त्री.—वीरता, बहादुरी ।

रुहपत—स. स्त्री. [स पत्ररुह] पृथ्वी, धरती । (अ मा)

रुहराळ—देखो 'रुधिर' मह., (रू. भे.)

उ०—हिय चाड पछाड़ सराड हुडी, भड़ पाड उडाड चूंहाड भडी । असवार बिना अस जूझ इसी, **रुहराळ** हुइ रणरंग रसी । —पा. प्र.

रुहराळी—सं स्त्री. [सं. रुधिर+आलुच्] रक्त सम्बन्धी, रक्त की ।

उ०—वडी मसीत ईदगावाळी । रत सूवरां तणी **रुहराळी** । —रा. रू.

रुहाड़, रुहाडि—सं. स्त्री.—१ मनोरथ, मनोकामना ।

उ०—१ रे साजन तुझ मन तणी, पहुचसिइ सघळी **रुहाडि** । पणि नवि मोरा मन तणा, जांणौ म्हो रे पेलाडि । —जयवत सूरि

उ०—२ पूगळ ढोलौ पाहुणौ, रहियौ सासरवाड़ि । पनरा दिहाड़ा पदमणी, मांणि मना **रुहाडि** । —ढो. मा.

रू. भे.—रूहाड़ ।

रुहितास—स.—देखो 'रोहितास' (रू. भे.)

रुहिनाळ—सं. पु —रक्त का नाला ।

उ०—पड़ै **रुहिनाळ** तणा परनाळ, खळकत जांणिक गैरुव खाळ । —सू. प्र.

रुहिर—देखो 'रुधिर' (रू. भे)

उ०—१ तड़िछ तड़लल थहे रिण थळ, **रुहिर** रळतळ प्रछड़ पड

अचळ जुवळ अरिणयल जुड़ै करिवा जेत ।
—प्रतापसिघ म्होंकमसिघ री वात

उ०—२ जोगण पहली खाय पळ, करै उतावळ काय । भर खप्पर बाल्है रुहिर, देसी कत धपाय । —वी स.

रुहिरांणण—देखो 'रुधिरानन' (रू. भे.)

रुहिराख—सं. पु. [स. रुधिराख्य] एक प्रकार का रत्न या मणि ।

रुहिराळ—देखो 'रुधिर' (मह., रू. भे)

उ०—१ धरा पुड़ वेधि रगे ग्राहि धोळ, छिलै रुहिराळ तणौ अति छौळ । —सू प्र.

उ०—२ मिलक्किय दीन दहूं जूधपूर, हलक्किय बैठि विमानानि हूर । किलक्किय जुग्गनि सब्द कराळ, खळक्किय भूमि किते रुहि-राळ । —ला. रा.

रुहुला—देखो 'रुहेला' (रू भे.)

उ०—वारु वीरे बरासिइ, रुहुला राज में खोहि । अबळा आप ऊतावळी, महिपति पडिसिय मोहि । —मा. का. प्र.

रुहेलखंड—सं पु. —रुहेला पठानो के बसने का अवध के उत्तर-पश्चिम का एक प्रदेस ।

रुहेला—स. स्त्री—पठानो की एक शाखा ।

रूं—स. पु.—देखो 'रूई' (रू भे)

उ०—कहे स्रीमुखा राण जोधा करारां, हणूं पूंछ रूं प्रत बाधौ हजारां । —सू. प्र.

२ देखो 'रोम' (रू. भे)

उ०—२ पेट भार हिरण्या बहै, रह्यौ न ओटौ कोय ।रूंआंरूंआं नीसरै, लूआं लूआ लोय ॥ —लू

उ०—३ मिनख री मरजादा सू लुगाई री मरजादा मेळ नी खावै । मांनू के मिनखरै कारण लुगाई नै आपरी मरजाका निभा-वण री किणी दिस सू कोई छूट नी है । लुगाई रौ रूं रूं मिनख रै खूंटै पेखड़ीजियोड़ो है —फुलवाडी

मुहा—रूं रूं फाटणौ=अत्यधिक दर्द होना ।

रू रूं कापणौ=भयभीत होना ।

रूं रूं ऊभौ व्हैणौ=रोमाच होना ।

रूं फाटणौ=सहम जाना ।

रूंआळी—स. स्त्री.—कांति, दीप्ति, ओज ।

वि.—१ सुदर, मनोहर ।

उ०—बाहड़िया रूंआळियां धण वकै नयणेह । जण जण साथ न बोल हीं, मारू बहुत गुणेह । —ढो. मा.

रू. भे.—रूंवाळी ।

२ देखो 'रोमावळी' (रू. भे)

रूंआळौ—वि. [सं. रोम+आलुच] (स्त्री. रूंआळी) रोमयुक्त, रोमपूर्ण ।

उ०—१ नस ओछी अर जाडी । भरपूर रूंआळौ डील ।
—विजयदान देथौ

उ०—२ ऊंची नीची सरवरिया री पाळ, जठै ने ऊजळौ रूपौ नीपजै । रूपौ सोहै पाबू धणी रै पाव, रूंआळा पीडौ से रूपौ हद सोहै । —लो. गी.

२ सुंदर, मनोहर, कातिवान ।

रू. भे.—रूंवाळौ

रूंआवळ—देखो 'रोमावली' (रू भे.)

रूंख—स. पु [स. वृक्ष] १ पेड, वृक्ष ।

उ०—१ बौल्यो - नानी-मा म्हनै ई सात गुलगुला तळनै दे । म्हैं ई गुलगुला रौ रूंख उगावूंला । डाला माथै बैठ नित गुलगुला खावूंला । —फुलवाडी

उ०—२ हिवडा भीतर पेस करी, ऊगौ सज्जण रूंख । नित सूखे नित पल्लवै, नित नित नवला दूख । —अग्यात

उ०—३ तांहरा एकै रूंख हेटीही जाजम बिछायनै दौनू सिरदार सूता —नैणसी

रू. भे.—रुक्ख, रूख, रूखी रोंख ।

अल्पा.—रूंखलडो, रूखड़ियौ, रूंखडौ, रूखडौ, रोंखड़ौ ।

मह.—रूखड ।

रूंखड़—स. पु —१ दरियाई नारियल का खप्पर लेकर 'अलख' कह कर भीख मागते वाले एक प्रकार के भिक्षुकों का दल ।

२ देखो 'रूख' (मह, रू. भे.)

रूंखड़ियौ—वि.—१ वृक्षो पर वास करने वाला ।

सं. पु.—१ बदर ।

२ मूर्ख ।

३ देखो 'रूंख' (अल्पा, रू. भे.)

रूखड़लौ—सं. पु —१ देखो 'रूंख' (अल्पा. रू. भे.)

उ० —१ सुगनचिडी सूरज नै पूछ्यौ गिरजां नै कंकाळ । धोरां नै पूछै रूंखड़ला, लासां नै अग्निरी भाळ । —चेतनमांनखा

रूखड़ी—सं. स्त्री —१ जडी-बूटी ।

रूंखड़ौ - देखो 'रूंख' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ तळ पंथी गळ फूल फळ, सिर पंछी न समाय । औ हिज हरियौ रूंखड़ौ, सूकी ठूंठ कहाय । —अग्यात

उ०—२ जे भावित भवतव्यता रे हा, न चलै तात उपाय । जेहवौ वावै रूंखड़ो रे हा, तेहवा हीज फल थाय । —वि. कु.

उ०—३ सरवौ व्हु तौ कान लगा सुण, माटी थनै बुलावै,है । नैण हुवौ तौ देख रूखड़ा, धरती हात हिलावै है । —चेतमानखा

रूंखडो—देखो 'रूंख' (अल्पा. रू. भे)

उ०—ते धन्य ते वनसपती, व्रक्ष तणी धन्य छाया रे । धन्य ए

सघला **रूंखड़ा**, जिहा बइठा नलजी राया रे ।
—नळ-दवयती रास

रूंखराइ, रूंखराई–स. स्त्री. [स. वृक्ष+राजि] १ वृक्षों की कतार। २ वनस्पति।
उ०—१ रटति पूत मिसि मधुप **रूखराइ**, मात स्रवति मधु दूध मिसि।
—वेलि

रूंखां-सिणगार–स. पु. [सं. वृक्ष+श्रृंगार] १ चंदन। (ह. ना. मा.)

रूंखावळी–स. स्त्री. [स. वृक्ष+अवलि] १ वनस्पति।
उ०—१ **रूंखावळिया** पल्लव फूटा। विणा अकुर हुआ धरती नीली दीसै लागी। सु मानौ प्रथमी नीला वस्त्र ऊढ्या छै।
—वेलि

रूंखावाळौ, रूंखाळौ–सं. पु १ [सं. वृक्ष+आलुच] बदर।

रूंखी–स. स्त्री.—देखो 'रूंख' (रू. भे)
उ०—मारगि मोटा डूगरा, नद बाहुला विसेखी। जलचर खेचर भूमिचर, वसुधा रूषी **रूंखी**।
—मा. का. क.

रूंग—देखो 'रूंगतौ' (रू. भे.)
उ०—१ रामत्या रा बळगा **रूंग**, मोटा मोटा दिख्या डूग।
—अज्ञात

रूंगटौ—देखो 'रूगतौ' (रू. भे.)

रूंगटाळी–स. स्त्री —मेड़।

रूंगतौ—१ रोम, रोआ केश।
उ०—१ नाई मिसखरी करता बोल्यौ–वा टाटचा सिरदारा रै माथै अेक ई **रूंगतौ** नी है तौई धोखौ-खायगा। —फुलवाडी
उ०—२ इतरा मे तौ न मालम कीकर ई साकळ निकळगी अर हड़ड़ड़...ड धम्मीड़ करती पट्टी आगणा पर। जे म्हूँ फुरती से आगौ नी सरक जावतो तौ चटणी-चटणी.......। ओ ए मा! **रूंगता** ऊभा व्हैग्या अर उण चौधरी रौ गोडौ काठौ पकड़ लियौ।
—रातवासौ
रू. भे.—रूंग, रूगटौ।

रूंगी–सं. स्त्री —सनक।
उ०—१ सूगी ढिग राग समाज सुरावट, मन **रूंगी** गो काज मरे मूगी हेक गिणै नह मारू, पूंगी राग अवाज परे।
—ठा. गभीरसिंह रौ गीत

रूंगीलौ–स. वि. [स्त्री रूंगीली] १ सनक की आदत या स्वभाव वाला, सनकी।

रूंगू–सं. पु.—अश्रु,बद, आंसू।
उ०—१ वनफळ आपूं व्रक्ष थी, जु तुंहिं भावि। द्रामणी देखी तुभ नि मूंह्नि **रूंगू** आवि।
—नलाख्यान

रूंचौ—वि. [मी रूची] वह जिसके पांव तिरछे पड़ते हो।

रूंभ–स. पु.—१ एक प्रकार का कंटीला वृक्ष जिसका पका फल खाने से बकरी मर जाती है। (अलवर)
अल्पा.,—रूंभट, रूंभड़ौ।

रूंभड़ौ—देखो 'रूंभ' (अल्पा., रू. भे.)

रूंभट—१ भभट, झमेला।
देखो 'रूंभ' (अल्पा, रू. भे.)

रूंठ–स. पु.—लकड।
उ०—१ ले भडा रटाकां पूर अरिंदा ताड़ब्बा लागा, महावीर खीज में पाडब्बा लागा मूठ। वीर वे सताबा जहां दूधारा भाडब्बा लागा, रोजगारा खाती ज्यूं फाड़ब्बा लागा **रूंठ**।
—सुखदान कवियौ

रूंड—१ देखो 'रुंड' (रू भे.)
उ०—१ उर **रूंडन** की माळ विराजै, कर खप्पर विषधारी। सुमरू देवी को धणी जो, विद्यया बुध अपारी।
—रुकमणी मगळ
२ पिंगल के अनुसार एक मात्रिक छद विशेष।

रूंडमाळ—देखो 'रुंडमाळ' (रू. भे)
उ०—१ दीठा नयण त्रिणि मुख पांचइ, कपिल जटा सुविसाल। **रूंडमाळ** दीठी करि तूंबा दीठउ ब्रह्म कपाळ —का दे. प्र.

रूंडळौ—देखो 'रूंड (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ ताडळां दळां डूगळा टूंक, **रूंडळां** रूळ सीकळा रूंक।
—गु. रू. ब.

रूंण—देखो 'रूण' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

रूंणभूण—१ देखो 'रणभुण' (रू. भे.)
उ०—ओढण लालर ऊमदा, रति सचि रै रूप। **रूंणभुण** करती राजवण, आइ पिलग अनूप।
—अरयात

रूंणभूणणौ, रूंणभूणबौ—देखो 'रुणभुणणौ, रुणभुणबौ (रू. भे.)
उ०—नेपुरा नादइ **रूणभूणइं**, बहुविविध प्रतिरव भेख।
—रुकमणी-मगळ

रूंतणौ, रूंतबौ—देखो 'रूदणौ, रूंदबौ' (रू. भे.)

रूंताणौ, रूंताबौ—देखो 'रूंदाणौ, रूंदाबौ' (रू. भे.)

रूंतायोड़ौ–भू. का. कृ.—देखो 'रूदायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रूंतावियोड़ी)

रूंतावणौ, रूंतावबौ—देखो 'रूदाणौ, रूंदाबौ' (रू. भे.)

रूंतावियोड़ौ—देखो 'रूंदायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री रूताड़ियोड़ी)

रूंतियोड़ौ—देखो 'रूंदियोडौ' (रू. भे.)

रूंतोड़–सं. पु.—१ बाल के जड से टूट जाने पर होने वासा फोड़ा।

रूंदणौ, रूंदबौ–क्रि. स.—पैरों तले कुचलना। २ मसलना।

३ अधिकार में करना, कब्जे करना।

४ रोकना।

रूंदणहार, हारौ (हारी), रूंदणियौ—वि.।

रूंदिओड़ौ, रूंदियोड़ौ, रूंदयोड़ौ—भू. का. कृ.।

रूंदीजणौ, रूंदीजबौ—कर्म वा.।

रूंदळणौ, रूंदळबौ—देखो 'रूंदणौ, रूंदबौ' (रू. भे.)

उ०—इतरै सूअर वळै फौज सू भिळियौ सो सारी फौज फरोळतौ **रूंदळतौ** फिरै छै। इसी तरह घणौ कजियौ कर पार हुवौ।
—दाढाळा सूर री वात

रूंदाड़णौ, रूंदाड़बौ—देखो 'रूंदाणौ, रूंदाबौ' (रू. भे.)

रूंदाड़णहार, हारौ (हारी), रूंदाड़णियौ—वि.।

रूंदाड़ियोड़ौ, रूंदाड़िओड़ौ, रूंदाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंदाडीजणौ, रूंदाडीजबौ—कर्म० वा०।

रूंदाणौ, रूंदाबौ—[रूंदणौ क्रि. प्रे रू.] १ पैरो तले कुचलाना।

२ मसलाना।

३ अधिकार या कब्जे कराना।

४ रोकाना।

रूंदाणहार, हारौ (हारी) रूंदाणियौ—वि।

रूंदायोड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंदाईजणौ, रूंदाईजबौ—कर्म वा०।

रूंताणौ, रूंतावौ, रूंदाडणौ, रूंदाडबौ, रूंदावणौं, रूंदावबौ। —रू. भे.

रूंदायोड़ौ—भू. का. कृ—१ पैरों तले कुचलाया हुआ. २ मसलाया हुआ. ३ अधिकार या कब्जा कराया हुआ. ४ रोकाया हुआ. (स्त्री. रूंदायोडी)

रूंदावणौ, रूंदावबौ—देखो 'रूंदाणौ, रूंदाबौ' (रू. भे.)

रूंदावणहार, हारौ (हारी) रूंदावणियौ—वि०।

रूंदाविओड़ौ, रूंदावियोड़ौ, रूंदाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंदावीजणौ, रूंदावीजबौ—कर्म वा०।

रूंधणौ, रूंधबौ—क्रि. स. [सं. अवरुद्धनम्] १ रोकना।

उ०—१ खळ पळ खेचरा बीर नारद खिले, ऊपरा ऊपरी गैढला ऊथलै। चाय गुरु 'अचळ' दादौ तको मचचले, पतसाही कटक **रूंधियौ** 'पातले'। —सक्तावत प्रतापसिंह री गीत

उ०—२ लाख नेस लुटिजै, देस कीजै फुड़ ऊधै। जितौ भूक हुय जाय रूक साहे पथ **रूंधै**। एक मार चूरिया भार परवार न भाळै। करै एक पौकार दिली बाजार विचाळै। —रा रू

२ आच्छादित करना।

उ०—१ मारगि मोटा डूंगरा, नद वाहुळा विसेखी। जलचर खेचर भूमिचर, वसुधा **रूंधी** रूंखी। —मा. कां प्र.

३ विचारो में उलझना, फसना।

उ०—१ माईत तो पाछा आपरै मंसोबा मे **रूंधग्या** अर टावर आपरी अबूझा-प्रीत में तारां रै सागै विचरता विचारता वानै ऊंग आयगी। —फुलवाड़ी

४ घेरना, आवेष्टित करना।

उ०—सूअर सूतौ नीद भर, भूंडण पोहरा देह। ऊठौ नाथ निंदाळवा, धर **रूंधौ** धोडेह। —दाढाळा सूर री वात

उ०—१ जन्म लगइ जेहना धन लीजइ, तेह चाडि संग्रामि। कइ आपणा प्रांण ऊगारचा, **रूंधयउ** मेल्हचउ स्वामि। —का. दे. प्र.

५ रौंदना, मसलना।

उ०—१ दाढाळो तूड सूं घणा नै ई उलाळ उलाळ हेटे थरकाया हाथी गुड़चा असवारा नै **रूंधता** न्हाय छूटा। —फुलवाडी

रूंधणहार, हारौ (हारी) रूंधणियौ—वि०।

रूंधिओड़ौ, रूंधियोड़ौ, रूंध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंधीजणौ, रूंधीजबौ—कर्म वा०।

रूंधाड़णौ, रूंधाड़बौ—देखो 'रूंधाणौ, रूंधाबौ' (रू. भे.)

रूंधाड़णहार, हारौ (हारी) रूंधाड़णियौ—वि०।

रूंधाड़िओड़ौ, रूंधाड़ियोड़ौ, रूंधाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंधाड़ीजणौ, रूंधाड़ीजबौ—कर्म वा०।

रूंधाणौ, रूंधाबौ—क्रि. स. [रूंधणौ क्रि. प्रे. रू.] १ रोकाना।

२ आच्छादित कराना।

३ विचारो मे उलझाना।

४ मसलाना।

रूंधाणहार, हारौ (हारी), रूंधाणियौ—वि.।

रूंधायोड़ौ—भू. का. कृ.।

रूंधाईजणौ, रूंधाईजबौ—कर्म वा.।

रूंधाडणौ, रूंधाडबौ, रूंधावणौ, रूंधावबौ—रू. भे.।

रूंधायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ रोकाया हुआ २ आच्छादित कराया हुआ. ३ विचारों मे उलझाया हुआ. ४ रौदाया या मसलाया हुआ. (स्त्री. रूंधायोडी)

रूंधावणौ, रूंधावबौ—देखो 'रूंधाणौ, रूंधाबौ' (रू. भे.)

रूंधावणहार, हारौ (हारी), रूंधावणियौ—वि०।

रूंधाविओड़ौ, रूंधावियोड़ौ, रूंधाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंधावीजणौ, रूंधावीजबौ—कर्म वा०।

रूंधावियोड़ौ—देखो 'रूंधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रूंधावियोड़ी)

रूंधियोड़ौ—भू. का. कृ—१ रोका हुआ. २ आच्छादित किया हुआ. ३ विचारों में उलझा हुआ. ४ आवेष्टित किया हुआ. ५ मसला हुआ. (स्त्री. रूंधियोड़ी)

रूंन—१ रोने की अवस्था या भाव।

रूंबड़ी—स. स्त्री.—१ शरीर से विकृत खून को बाहर निकालने का

उपकरण।

२ फोडा, फुन्सी।

रूंबरौ-सं. पु—एक विशेष जाति का घोडा।

उ०—१ कनूजदेस ना कुलथा। मध्यदेस ना महूयडा। देवगिरा। देवगिरा देखाऊ। **रूंबरा**। बेबाण। सभ्राणी। पाणीपथा।

—कां. दे. प्र.

रूंम—देखो 'रोम' (रू. भे.)

उ०—गुरु गूग गोला गुरु, गुरु गिडकां री मैल। **रूंम** रूम में यूं रमें ज्यू जरबा मे तेल। —ऊ. का.

रूंस-वि.—सदृश्य, समान।

उ०—रावळ बापा जसौ रायगुर, रीस खीज सुरपतरी **रूंस**। दस सहसा जेहौ नह दूजौ, सकती करै गळा रा सूंम। —बारूजी सोदौ

सं. स्त्री —**१** तरह, प्रकार, भाति।

उ०—टणकारा गैं घट्टा झालरी झणकार टोपा, धारा फूल चौसरा गळां रा जागी घूंस। रुण्ड नच्चै मोती थाळ आरती उतारै रभा, रूद्र गोती गनीमा चरच्चै इसी **रूंस**। —ऊमेदरांम मादू

२ शोभा, छबि, सुदरता।

उ०—१ कल कदमू के लगर भारी कनक की हूंस। जवाहर के जेहर दीपमाला की **रूंस**। —र. रू

उ०—२ **रूंस** सहर री गामडै, आजै बणियौ ओट। हाथाळै हण हाथिया, कीधा पजर कोट। —वी स.

३ इच्छा, चाह।

उ०—२ झपट चमर छत्र छांह न झेलै, खेल वसत गुलाल न खेलै। हित करि बाग **रूंस** नह हालै, चादर हौज फुहार न चालै।

—सू प्र.

४ क्रोध, गुस्सा।

उ०—राजा कियौ न **रूंस**, धन लै ढळिया धाडवी। सांवत मद में सूस, मूंमल सुणवे माळियां। —अग्यात

५ खाद्य पदार्थ।

उ०—सदरि पख्स्या सालणा रे लाल, हिव पकवाने हूंस। खारिक निमजा खोपरा रे लाल, प्रीसतां रूंडौ **रूंस**।

—प. च. चौ.

रूंसणो-सं.—देखो 'रिसांणौ' (रू भे.)

रूंसणो, रूंसबौ—देखो 'रीसणौ, रीसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ धतै दळ मूगळ कीध विधूंन, रुद्रगण दक्ष तणौ जिग **रूंस**।

—सू. प्र.

रूंसणहार, हारौ (हारी), रूंसणियौ—वि०।

रूंसिओड़ौ, रूंसियोड़ौ, रूंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूसीजणौ, रूसीजबौ—भाव० वा०।

रूंसदार-वि.—१ शानदार, सुन्दर ठसकदार।

उ०—१ तद दासी मोजड़ी लेनै मांहे गई। कह्यौ-"बेगम साहिब आप दीनु पातिसाहा के फरजन हौ, तिको निपट सू चूप सूं **रूंसदार** मोजडी पगा पेहरौ हौ।" —वीरमदे सोनगरा री बात

रूंसाड़णौ, रूंसाड़बौ—देखो 'रूंसाणौ, रूंसाबौ' (रू. भे.)

रूंसाड़णहार, हारौ (हारी), रूंसाड़णियौ—वि.।

रूंसाड़िओड़ौ, रूंसाड़ियोड़ौ, रूंसाड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंसाड़ीजणौ, रूंसाड़ीजबौ—भाव० वा०।

रूंसाणौ, रूंसाबौ-क्रि. स.—१ कुपित करना, क्रुध करना।

२ नाराज करना।

रूंसाणहार, हारौ (हारी) रूंसाणियौ—वि०।

रूंसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंसईजणौ, रूंसाईजबौ—कर्म वा०।

रूंसाडणौ, रूंसाडबौ, रूंसावणौ, रूंसावबौ —रू० भे०

रूंसायोड़ौ-भू का. कृ.—१ क्रुध किया हुआ. २ नाराज किया हुआ. (स्त्री. रूंसायौडी)

रूंसावणौ, रूंसावबौ—देखो 'रूंसाणौ, रूंसाबौ' (रू. भे.)

रूंसावणहार, हारौ (हारी) रूंसावणियौ—वि०।

रूंसाविओड़ौ, रूंसोवियोड़ौ, रूंसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रूंसावीजणौ, रूंसावीजबौ—कर्म वा०।

रूंसावियोड़ौ—देखो 'रूंसायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रूंसावियोडी)

रूंसियौ-सं. पु.—१ अनाज के ढ़ेर के चारों तरफ लगाई जाने वाली। खाई।

उ०—१ रमता कर खिटोळ खूदता मारग हालै। खळा **रूंसिया**, खोद, घाव खाई दे घालै। —दसदोख

२ एक प्रकार का घास।

रूंसौ-स. पु.—१ प्रेत।

उ०—१ इम कहनै दोनू हाथ मोहडै ऊपर वळै फेर ने कहीयौ, 'मेह् वूठा तद पांणी पीयौ हतौ। इय सुणनै वरछी **रूंसौ** ऊभी कीवी। —मांडणसी कूपावत री वात

रूंह्—१ देखो 'रूह' (रू. भे.)

उ०—१ सूरत के भयाणख जमराणूं के जोस, जगू के जालम तीरमदाजू के सिरपोस। रूंह् के सुरख चमरूं के मंजार, रोसके झाळाहळ आतस के अगार। —सू. प्र.

रू—१ देखो 'रोम' (रू. भे)

उ०—१ कांगरै थूबरा, मोटै पूठै रा, छोटै पीडांरा, झामरै पूछरा, भुवरियै रू रा, चोळमैं रगरा, लांघियै सिंघ ज्यू लका चढिया थका, भागा गाडा ज्यू बठठाट करता थका, वेस्या स्यूं झाला करता थका, मातै हाथी ज्यू हूंकारा करता थका)

(खीची गंगेव नींबावतरौ दो-पहरौ

२ देखो 'रूई' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरा दीवै ऊपरा आगीयौ बेताल बोलियौ—पहिलै लौहरौ घडीयौ दीवौ। माहि घातियौ तेल। रू री बाट जगाई।

—चौबोली

रूग्रड़उ, रूग्रडउ, रूग्रड़ु, रूग्रड़ौ, रूग्रडौ—देखो 'रूड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ करहा तू मनि रूग्रडउ, बेध्यां करइ बिछोह। ग्रजइ कुग्रारइ बप्पड़ा, नही ज कामिरण मोह। —ढो. मा.

उ०—२ रवि! ताहरू रथ रूग्रडउ, ग्राधउ पाछउ वालि। ग्रेकइ पइडइ ऊथल्यू, तउ हिजि रहिउ तरीयालि। —मा. का. प्र.

उ०—३ मुख पखालेवा गयु प्रीउडउ, ग्रावतु हुसीइ कंत रूग्रडउ। वाट जोइ नारी तिहा, मभ मूंकीनइ नल गयूँ किहा।

—नल-दवदती रास

उ०—४ नाभि विवर ग्रति रूग्रड़ुं, धरण नलीग्रारइ पेटि। उन्नत उर विसाल पण, भल तइ सकइ न भेटि। —मा. कां प्र.

उ०—५ चरइ सेलडी साकर द्राख, ग्रति रूग्रडा तुरंगम लाख। पांणीहारि पोलीग्रा सूग्रार, दासदी कोला सख न पार।

—का. दे प्र.

उ०—६ सदा फलाणि निबु ग्राणी राइणी महूग्रडा कल्हार जबुई नारग रग वाग रूग्रडा। —गु. रू. ब.

उ०—७ एकवीस छत्र चामर ढलइ, छपन कोडि लक्ष्मी वसइ। पातसाह मदाफर टोडरमल्ल, रगि रुपि रूग्रडइ हसइ। —व. स.

८ परिण कसिउ एक छि जे सासू तणु सणगार ? करि कंकरण सोवरणमि चूडी रूपइ रभा ग्रनि रूग्रडी। —व. स.

((स्त्री. रूग्रडी, रूग्रडी)

रूई-सं स्त्री.—१ कपास के डोडे या कोश में से निकलने वाले बारीक रेशो का धुग्रा।

उ०—१ एणी पिरि ते रजनी वीती, थयूं प्रात काल जी नाठा भागा सोधी काढि, रेह्यां रूई छि बाल जी। —नलाख्यांन

रू. भे—रूं रू; रूइ।

रूईदार-वि.—१ रूई के समान।

२ जिसमें रूई भरी गई हो।

रूउ-स. पु.—१ एक सिक्का विशेष।

उ०—१ ग्रतर दीसइ एवडू जवडउ सोनईउ रूंउ रे। ग्रतर दीसइ एवडू जेवडउ बाप नइ फूउ रे। —नल-दवदती

२ गायों का समूह, गोकुण्ड।

उ०—रूउ रूधउ रणागणि मूकइ तेह नामु निसुणी जरण थुकइ गायत्री य छलि जे नरु नासइ वीर माहि सु पडइ पुणि हासई।

—सालि सूरि

रूंक-स. स्त्री.—१ तलवार, कृपाण। (डि.को ह. ना. मा.)

उ०—१ महा जुधउ मत्तं, इसौ ग्रावरत्त रूके उड्डि रीठ गुडे जोध ग्रीठं। —गु. रू. ब.

उ०—२ तोडिचदी तोड़ियौ निहंग चढियौ पडि नाळौ। गढ विकराळौ 'गजरण' रूक बळि लियौ रनाळौ। —सू. प्र.

रू. भे.—रुक।

यौ.—रूकचालक, रूकचाळौ, रूकाभड़ी, रूकाभल, रूकहथ

मह.—रूकड़।

रूकड़—देखो 'रूक' (मह., रू. भे)

उ०—१ रुक रुक तीरा-रूकड़ां, मुख मुख बीरा मोळ। पूंचाळा हेकरण पखै, दळ मे प्रबळ दरोळ। —वी. स.

उ०—२ घणी लाज वीटियौ वाज मेलिया नत्रीठै। दहूँ ग्रोर रूकड़ां, रीठ उडियौ गरीठै। —बगतौ खिड़ियौ

रूकचलाक, रूकचालक—वि. यौ.—१ योद्धा, वीर।

उ०—१ क्रोधार महंता कथा राखबा समदा कड़े, स्रोहथा राम ज्यू मारीच सुबाहु। मारगी कदीम रूकचलाक भारथा मुड़े, दयाळ मारगी तथां ग्राहुड़े दुबाहु। —दादूपथी साधां री गीत

रूकचाळौ—यौ. सं. पु यौ.—१ युद्ध।

उ०—१ रिणमलां के जोड़े जगी महाबाहु भाटी जाके बस पढे रूकचाळैं ही की पाटी। —रा. रू.

रूकभड़ी—सं. स्त्री. यौ.—तलवारों का प्रहार।

उ०—१ तळवाड़ौ थाणौ तटै, सूवै वधव साथ। वीरा था पर वाजसी, रूकभड़ी ग्रध-रात। —वी. मा.

रूकभल—वि. यौ—खड़गधारी, तलवारधारी, योद्धा, वीर।

उ०—ग्राया भड भाटी दौढी ग्राडा रावत दौढा रूकभल।

—गु. रू. ब.

रूकमणी—देखो 'रुकमरणी' (रू. भे.)

उ०—१ देवर रूकमण हसै हरि निभावे ग्रनेको रे। भाइ तूं निभावी न सकै, तिरणसू डरता न परणे एकौ रे। —जयवांणी

रूकरस—सं. पु. यौ.—युद्ध, सग्राम।

उ०—१ रूकरस राठोड गुरड प्रगटौ गैरणाग। —गु. रू. ब.

रूकसग्रोधा—वि. यौ.—१ तलवार धारण करने वालों के वशज, योद्धा।

उ० जसराज मरण 'जोधा' हरा रूकसग्रोधा राजबळ। छित लाज दिली महाराज छळ, इळ पडिया राखे ग्रचळ। —रा. रू.

रूकहत्थ, रूकहत्थौ, रूकहथ, रूकहथौ—वि. यौ. [सं. रूक+हस्त]

२ जिसके हाथ मे तलवार हो, खड्ग धारी।

उ०—१ रूकहथ पेखिसौ हाथ जसराज रा, ठिवतां पांव धीरा दियौ ठाकुरा —हा. भा.

उ०—२ ऊदौ 'केहर' तणौ पड़ै धारा 'मांनावत'। रूकहथौ धनराज बाज पडियौ बीकावत। —रा. रू.

रूक्मणी—देखो 'रुकमरणी' (रू. भे)

उ०—देवी रूक्मणी रूप तूं कांन मोहै। देवी कांन रै रूप तूं गोपि मोहै। —देवि

रूख–स पु —देखो 'रुख' (रू. भे)

उ०—१ तौ नापो कही-थाहरी **रूख** किण बात ऊपर । प्यार हुवे तो आछौ कै ना हुवै तौ आछो । —नापे साखले री वारता

उ०—३ कट पीतपट्ट, सुबधे सुघट्ट गत पचमुखं चले चाप **रूख** । —र ज. प्र.

उ०—३ थेट सू भाया थका जयसिंह जी री **रूख** औरंगजेब सूँ रही । —महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

२ देखो 'रूख' (रू. भे.)

उ०—१ अपणी आरत कारणे वाके पाड परिजै हो । चदन केरा **रूख** ज्यूँ चरणा लिपटीजै । —मीरा

रूखड़ौ —देखो 'रूख' (अल्पा., रू. भे)

उ०—१ तन दुख नीर तड़ाग, रोज विहंगम **रूखड़ौ** । विसन सलीमुख बाग, जरा बरक ऊतर जबल । —बा. दा.

रूखापण, रूखापणो —देखो 'रुखाई'

रूखाळौ—देखो 'रुखाळौ' (रू. भे.)

रूखि, रूखी—देखो 'रिसि' (रू. भे)

रूखौ–वि.—१ जिसमे चिकनाहट या स्निग्धता की कमी हो ।

२ खुरदरा ।

३ जिसमे चिकने पदार्थ न पड़े हो ।

४ जो अप्रिय व नीरस हो ।

५ जिसमें आत्मीयता उदारता आदि गुणों का अभाव हो ।

६ उदासीन, विरक्त ।

रूड़उ, रूड़ौ–वि· [स्त्री रूड़ी] १ सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट ।

उ०—१ तूं स्वामी प्रिथुराज ताहरौ, बळि बीजा को करै विलाग । **रूड़ौ** जिको प्रताप रावळौ, भूडौ जिकौ अमीणौ भाग । —प्रिथीराज राठौड

उ०—२ रामचद्र करसी **रूड़ी** सगळी विध स्रीरंग । भगता-पत भूधरधणी, चाढण रूप सुचग । —हृ. र.

उ०—३ करणीगर **रूड़ा** करै, करतै बिलब न काय । मार उपावै मेदनी, मूहुरत हेकण माय । —ह र

२ बढिया, श्रेष्ठ ।

उ०—१ ताहरा औ लगन ठेलि अर कहाडियौ राजाजी नूं अर राणीजी नूं-कुवर जी कारी अजे **रूड़ा** सासा री नही हुई । —द वि

उ०—२ रूठर कहै अतर नह **रूड़ौ**, तूठ न देऊं तार । पूठ फिराय पीतमी जपै, गाधी ऊठ गिवार । —ऊ का.

३ समर्थ, सक्षम ।

उ०—१ राधौ **रूड़ौ** स्रीसीतांबर स्वामी राजै । भाराथा साखा दैता थौका भाजै । —र. ज. प्र.

४ आकर्षक, मोहक ।

उ०—१ रच्या रांम रा दोय चित्राम **रूड़ा**, चखा-सरब एकौ बियो सरव चूडा । —मे. म.

५ श्रेष्ठ कुल का, कुलीन ।

उ०—१ तरै राव दूदै विचार दीठौ—जु आ डावड़ी पण कवारी छै नै औ पण **रूड़ौ** रजपूत छै । तरै आपरी दीकरी थाऊ भेछळनैं परणाई । —नैणसी

६ योग्य, चतुर, दक्ष ।

उ०—१ ताहरा मोहिल दीठौ काइक और नवी धरती खाटू । तिण ऊपर माणस दोय **रूड़ा** आपरा मेल्हिया । —नैणसी

उ०—२ सुदेवराज लुद्रवौ लेण रा दाव-घाव घडै छै । तरै पैहली तो पवारा सू मास ४ कागळवाई कीवी, काई अबीरी भली वस्तु व्है सु मेलै । तिणा साथै आपरै घर माहै **रूड़ै** रा आदमी मेलै । —नैणसी

७ पावन, पवित्र ।

उ०—१ गढ चित्तौड ना रहा, नही रहणका जोग । बसस्या **रूड़ी** द्वारका, जहा हरि भगता का भोग । —मीरां

८ स्वादिष्ट, रुचिकर ।

उ०—१ खारिक निमजा खोपरारे लाल प्रीसता **रूडी** रूस । —र. ज. प्र.

उ०—२ विधवापणि पहरइ चूडी, राव रसोई राधइ **रूड़ी** । कवि गुण विजय

९ सिद्धिदायक ।

उ०—१ ग्रहण वेळा गळ समा, पइसी पाणी मांही । **रूड़ौ** मत्र जपइ रहइ, राहु तणी जिहा छाहि । —मा. कां. प्र.

१० श्रेयस्कर, उत्कृष्टतर, बहत्तर ।

उ०—१ कुलटा साची व्है ठुकराणी कूडी, पडदै पडदायत राणी सू **रूड़ो** । —ऊ. का.

११ स्वस्थ, तदुरुस्त ।

उ०—१ उठै कवर गजसिंघ जी नू सीतळा नीसरी । कंवर जी रौ डील **रूड़ौ** नही तरै भाटी गोयंददास मोहणदास नूं कंवर जी रै ऊपर वारियौ । —नैणसी

१२ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ रूप **रूड़ौ** गुण बायरौ रोहिड़ा रौ फूल ।

उ०—२ लाकीलो चूडौ घणौ **रूड़ौ** चमके है, देह जाण दामण ही दमके है —र. हमीर

उ०—३ वैणाहार विराजिया, सोव्रन में चूड़ी । कठसरी चपह कळीं, राजै गति **रूड़ी** । —गजउद्धार

उ०—पूरब देस नरेसर भणीई, ईस्वर नउ वरदान । सरिस चढई निन्याणुं, राजा जो **रूड़ी** दीसइ जांन ।

१३ जबरदस्त ।

तिका बारलां नू तौ कठा तक दीजै दाद । पण माहिलारी री रज-

पूती हद सू ज्याद । जिके इण गजब नूं चाहनै पांहुणा करै । जिके पिण इसड़ा ईज होय जिको पांणी री लोट्यो रूडां हीज भरै ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

१४ प्यारा, प्रिय ।

उ०—१ घणा दिनां री प्रीतड़ी, किम मुझ छडी जाय । रूड़ा राजिद परखज्यो, जीवूं ज्या लग काय । —बात रीसालू री

१५ उपयुक्त, उचित ।

उ०—१ ताहरां हींगोळै कहियौ—प्रथीराजजी । आप तरवार बगसी म्हनै, सो द्यौ । ताहरा प्रथीराजजी कह्यौ—रे हिंगोळा रूड़ी वेळा माहे मागी । —नैणसी

१६ अनोखा, अद्भुत, विचित्र ।

उ०—१ एक तो बडी लडाई जीपजै । तब रूड़ौ आणंद होय छै। अर एक रूड़ौ विवाह होय छै। तब रूडी आणंद हुये छै। सु दुन्यौ ही आणंद एक ही दिन भेळा हुआ । —वेलि

क्रि. वि —१ बहादुरी से, वीरता से ।

उ०—१ राजि काटा लिये पधारि उतरिया । उठा हेक दौड़ कराड़िवा सोर मारियौ । ते सोलकी 'वीरो' । रूड़ौ मूयौ । —द. वि.

२ अच्छी तरह से, उचित प्रकार से ।

उ०—१ आप नांम इळ उपरा, रसना राघव नाम । रूड़ी विध सूं राखियौ, पुरखां जिका प्रणाम । —बा. दा.

रू० भे०—रूअड़उ, रूअडउ, रूअड्ढ, रूअडौ, रूअडो, रूयडौ, रूयडौ, रूवडौ, रूवडो ।

रूठणौ, रूठबौ—क्रि. अ.—१ कुपित होना ।

उ०—१ भोम भार झलियौ, खडग झल्लै खुमाणं । किया सेन संघार जांणि रूठै जमरांणं । —गु. रू. बं.

उ०—२ खुरम कहै मन बध वळ, आतुर न हुइ अधीर । काइर हुवां न छुटि है, जब रूठौ जहंगीर । —गु. रू. ब.

२ अप्रशन्न होना ।

रूठणहार, हारौ (हारी) रूठणियौ—वि ।

रूठिओड़ौ, रूठियोड़ौ, रूठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रूठीजणौ, रूठीजबौ—भाव वा० ।

रूठाड़णौ, रूठाड़बौ—देखो 'रूठाणौ, रूठाबौ'

रूठाड़णहार, हारौ (हारी) रूठाड़णियौ—वि० ।

रूठाड़िओड़ौ, रूठाड़ियोड़ौ, रूठाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रूठाड़ीजणौ, रूठाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

रूठाड़ियोड़ौ—देखो 'रूठायोड़ौ' (रू. भे.)

रूठाणौ, रूठाबौ—क्रि. स.—१ कुपित या नाराज करना ।

२ अप्रसन्न करना ।

रूठाणहार, हारौ (हारी) रूठाणियौ—वि० ।

रूठायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

रूठाईजणौ, रूठाईजबौ—कर्म वा० ।

रूठाड़णौ, रूठाड़बौ, रूठावणौ, रूठावबौ—रू० भे० ।

रूठायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कुपित किया हुआ. २ अप्रसन्न किया हुआ.

(स्त्री. रूठायोडी)

रूठावणौ, रूठावबौ—देखो 'रूठाणौ, रूठाबौ' (रू. भे.)

रूठावणहार, हारौ (हारी) रूठावणियौ—वि० ।

रूठाविओड़ौ, रूठावियोड़ौ, रूठाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रूठावीजणौ, रूठावीजणौ—कर्म वा० ।

रूठावियोडौ—देखो 'रूठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रूठावियोड़ी)

रूठियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कुपित हुवा हुआ. २ अप्रसन्न हुवा हुआ ।

रूठोड़ौ—वि. [स्त्री. रूठोड़ी] १ नाराज अप्रसन्न हुवा हुआ. २ क्रोध किया हुआ ।

रूडीयाळ—वि.—१ बजने वाला ।

उ०—१ खाथा सुर खडीयाळ, त्रिमंक रूडीयाल तवलां, चाका अरि चडियाल, हाक भिडीयाल हमलां ।। —पनां

रूडौ—देखो 'रूड़ौ' (रू. भे.)

उ०—एक परदेसी जांण छै रे कांई जेह नो रूडौ रूडो घाट रे । —वि. कु.

(स्त्री. रूडी)

रूढ-यौवना—स. स्त्री. [स. आरूढयौवना] १ पूर्ण यौवन प्राप्त नायिका ।

रूढा—सं. स्त्री. [सं. रूढ+टाप्] १ लक्षणा शब्द शक्ति के दो प्रमुख भेदो में से एक ।

रूढि, रूढी—स. स्त्री. [स. रुढि] १ प्रथा, चाल, परम्परा ।

२ विचार, ३ निश्चय ।

४ सादित्य में प्रयुक्त वह शब्द जो अपने शब्द के रूढ अर्थ का बोध कराता है ।

रूणंभण—देखो 'रणभरण' (रू. भे)

उ०—रूंणभण नेवर हूवर रंभ, उठे हसि नारद होय अचंभ । —सू. प्र.

२ देखो 'रूणभरण' (रू. भे.)

रूण—सं. स्त्री.—१ मूल्य, भाव, कीमत ।

उ०—धन थारी है तूँ ई बोल दे, थेई रूण मुजब कै दो। अरे राभट छोड जट्टू ! बोलै-नी आघड़ौ-ई। चार रुपिया।
—बरसगाठ

२ मनोभाव सूचक चहरा, या मुह की रुख।

रूणभुण–स पु —१ वह रथ जिसके पहियो (चक्को) मे घुघुरू लगे होते है। तथा चलते समय रूणभुण की ध्वनि करता है।

रू. भे —रुणजुण, रुणभुण।

२ देखो 'रणभुण' (रू. भे.)

रूणभुणि—देखो 'रणभण'

उ०—१ मन करि मधुकरि **रूणभुणि** नीभणि रहण सुहाइ। मलयानिल क्षण माहरी थाहरी क्षण इकु वाइ। - जयसेखर सूरि

रूणावळी—देखो 'रोमावली' (रू भे.)

उ०—१ मारु कुच युग कठिन, अति कचण कळस सगार। **रूणावळी** विचमे वणी, खिस न दैत आधार। —ढो मा.

रूणेचौ–सं. पु.—१ प्रसिद्ध सिद्ध पुरुष रामदेव तवर का निवास स्थान।

रूणौ–स पु.—१ ऊचे स्थानो पर चढने के लिए सीढियो के सबसे ऊपर का चौथा पत्थर।

२ शतरंज का एक मोहरा।

रूपंतर–वि. [स. रूप+अतर] १ रूप का बदलना, दूसरे रूप की प्राप्ति, रूपातरण।

उ०—जस देसतर जावही, **रूपंतर** बळ हत। काळतर न कळीजणौ, जेहा तू जाणत। — बा. दा.

२ प्राप्त होने वाला दूसरा रूप।

रूप–स. पु. [सं. रूप] १ सौंदर्य, सुंदरता। (अ. मा.)

उ०—१ ओपै **रूप** घणौ रायअगण, चौकी मुकत कण केसर चंनण तर मजर फळमाला तोरण, सोहै द्वार मेळ भ्रत सज्जण।
—रा. रू

उ०—२ रामचद्र करसी रूडा, सगळी विध स्रीरग। भगतापत भूधर धणी, चाढण **रूप** सुचंग। —ह र.

उ०—३ **रूप** कांम आरंभ रांम विद्या अरजण। —गु. रू ब.

२ पदार्थ विशेष का वह बाह्य गुण या विशेषता (रग आदि से भिन्न) जिससे उसकी बनावट का पता चल जाता है, पिड शरीर आदि की रचना या बनावट।

३ शक्ल, सूरत।

उ०—१ सूंडाळौ लाइक सूरा, रांम सरीखौ **रूप**। ब्रह्म संत गुरु हूत वडौ, ईसरदास अनूप। —पी. ग्रं.

उ०—२ देखीनै तन नउ हो कीधौ पारिखौ, **रूपइ** पणि दिसै है, उत्तम सारिखौ। —वि. कु.

४ प्रकार, भेद, भाति।

५ दृश्य पदार्थ या वस्तु।

६ प्रकृति, स्वभाव, आदत।

७ शोभा। (ना. मा.)

८ विशेष प्रकार की आकृति मे युक्त शरीर।

ज्यूं. बै'रूपियौ।

९ शरीर, देह। (अ मा)

१० कार्य विशेष की निश्चित और व्यवस्थित पद्धति या प्रणाली, ढग प्रकार।

११ आकृति।

उ०—१ हरिणाखी कठ अतरिख हुंती, बिंब रूप प्रगटी बहिरि। कळ मोतिया सुसरि हरि कीरति कठसरी सरसती किरि। —वेळि

१२ रचना।

उ०—१ दीह धणा माभल दुनीं रुळियौ देखे **रूप**। माधव हूमै प्रकास मौ, सिव ताहरौ स्वरूप। —ह. र.

१३ शब्द या वर्ण का स्वरूप या आकार।

१४ वृक्ष। (अ. मा.)

१५ रूपा, रौप्य, चादी।

उ०—१ निवाण श्री भरत नीर, **रूप** कूभ हेंम रा। मैंमत जोवनं मनोज, नेह कत नेम रा। —सू. प्र.

१६ तुल्यता, बराबरी।

१७ दो लघु का नाम। (पिगल)

१८ सादृश्यता, समानता, प्रतिकृति।

उ०—१ प्रथी करण थिर वेद पुराण, करम जिका बळ हीण कुराण। यौ जग मे रवि वस उजागर, प्रगटै **रूप** भूप परमेस्वर।
—रा. रू

१५ आकार।

उ०—गोचर **रूप** न रग न रेख अगोचर अग्रत कूप अलेख।
—ऊ. का.

२१ लक्षण, पहिचान।

उ०—वडै ठोड राठोड आखिआत राखी वडी, जोरवर जोध जमदाढ जमरा। सलावत दिली-पत देखतां सभियो, अयी तिण वार रा **रूप** 'अमरा'। —गु. रू. ब.

वि. — १ सुन्दर, मनोहर।

२ समान, बराबर, तुल्य।

उ०—ससूदित साप समाक्रत सूंड, दतूसळ मूसल **रूप** दुरंड।
—मे. म.

रू. भे.—रूपु, रूय, रूव।

मह.,—रूपाण।

रूपकठीर–सं. पु.—१ नृसिहावतार।

उ०—१ नमौ करुणाकर **रूपकंठीर**, नमौ बर लच्छि तणा रघुबीर। —ह. र.

रूपक-सं. पु. [सं. रूपकम्] १ वह काव्य या ग्रन्थ जिसमें किसी महान योद्धा का चरित्र चित्रण हो।

उ०—१ अथ राजराजेस्वर महाराजाधिराज स्रीछत्रपति प्रिथिपति रघुवससिरताज महाराज स्री स्री स्री स्री स्री अभैसिंघ जी रौ **रूपक** सूरजप्रकास कविया करणीदांन विजैरांमोत रौ कहियौ। —सू प्र.

उ०—२ रुघवसी राठौड़ हर, तेरह साख कमंध। विमर सकत्ती बरणवा, बधे **रूपक** बंध। —गु. रू बं.

२ काव्य, कविता।

उ०—कहै 'द्वारौ' धधवाड, असुर असि धकै चढाऊ। तिसी भाट **रूपकां**, जिसी खग भाट बजाऊ। —सू. प्र.

उ०—२ तिकौ पांवड़ै पांवडै अस्वमेध रौ फळ पावा। चोख तीखरी वाता काम आया पछै **रूपकां** माहै गवावा अरु मुकत जावा ही जावा। —प्रतापसिंघ म्होकमसिघ री वात

३ डिगळ गीत (छद) विशेष जिसकी सख्या ८४ मानी जाती है।

उ०—१ 'रूप' कवित नरहरि छप्पै, सूरजमल के छद। गहरी झमक 'गणेसरी', **रूपक** हुकमीचंद। —अग्यात

उ०—२ मन महराण गभीर मत, गुरआत सुरागुर। चौरासी **रूपक** समझ, खट भाख बहोत्तर। —पाबूदान आसियौ

४ वर्णिक वृत या मात्रिक छद।

उ०—१ पाए एकरिण रूप परिण, चवदह सहस चमाळ। सगण च्यारि लघु दोंइ सुजि, **रूपक** नाम रसाळ —ल. पिं.

उ०—२ पनरह मात्रा जगण पर, एक चरण इहिनाण। चावा **रूपक** चौपइ, भरिण, लखपत्ति कुळ भांण। —ल पि.

५ कीर्ति, यश।

उ०—प्रविता पारब्बती, कना कमळा सावंत्री। जमना गगा जिसी चंद्र-भागा सरसत्ती। 'चद्रभाण' सधू चंद्रा वदनि, चंद्रावत सीसोदणी, **रूपक** चडावण रांमपुरी, इधक रूप इंद्रायणी। —गु. रू. बं

६ प्रशसात्मक कविता।

उ०—१ अट्ठारे तैयासियै, चेत मास नम स्याम। **रूपक** 'बक' वणावियौ, धवळ पचीसी नाम। —बा. दा.

१० दृश्य काव्य, नाटक।

उ०—१ आप सबसै आगूं बीजूंजळ वाहै। दईवकै धणी और तीसरा न जाणै। असै गुण अनेक कवि कहां लग वखांणै। च्यार प्रकार की जुगनि सात **रूपकूं** के विधांन। पच प्रकार की उगति अस्टाविधांन। —सू. प्र.

वि. वि.—साहित्यदर्पण ने रूपक (दृश्य काव्य या नाटक) के दस भेद माने है।

८ किसी रूप की बनाई हुई मूर्ति या प्रतिकृति।

९ चांदी का बना कठ में धारण करने का आभूषण विशेष।

[स. रूप्यकं] १० रूपया नामक सिक्का।

१० चाँदी।

११ साहित्य में एक प्रकार का अर्थालकार जहां उपमावाचक एवं निषेधसूचक शब्दों के बिना ही उपमेय का का वर्णन किया जाता है।

वि० वि० इसके सागरूपक, अभेद रूपक तद्रूपक आदि कई भेद है।

मुहा-रूपक बाधणौ: बढा चढ़ा कर आलंकारिक भाषा में वर्णन करना

१२—एक पौराणिक शिव भक्त राक्षस का नाम, जिसके पुत्र का नाम सपति था। ये दोनों अन्याय्य द्वारा संपति उपार्जन कर, वह शिव उपासना में व्यय करते थे। इस कारण मरण के बाद शिव के मानस पुत्र वीरभद्र ने इन्हें कहा अगले जन्म मे तुम चोर बनोगे, किन्तु शिव भक्ति के कारण तुम्हारा उद्धार होगा।

रू. भे.—रूपकउ, रूपक्क, रूपग।

रूपकउ—देखो 'रूपक' (रू. भे.)

उ०—मारूवणी मुंहवंन्न, आदित्ताहूं उज्जळी। सोइ झांखउ सोवन्न, जो गळि पहिरउ **रूपकउ**। —ढो. मा.

रूपकरण-सं. पु.—१ एक प्रकार का घोड़ा।

रूपाकातिस्योक्ति [सं. रूपकातिश्योक्ति] १ वह अलंकार जिसमें उपमेय के बिना ही केवल उपमान का उपमेय से अभेद बतलाया जाय अर्थात उपमान के कथन द्वारा ही उपमेय का बोध कराया जाता है

रूपकार-स. पु. [स. रूपकार] शिल्पी।

उ०—गीतकार वातकर नृत्यकार पाडकार तुडिकार ध्रुतिकार ......**रूपकार**। —व. स.

रूपकीस-सं. पु. [स कीसरूप] १ हनुमान।

उ०—१ करा जोड़ **रूपकीस**, सांम पाय नांम सीस। बंध चाळ महावीर, कुदियौ किसीस ॥ —र. रू.

रूपक्क—देखो 'रूपक' (रू. भे.)

उ०—२ वीस मात्र पाये विमळ, नवां अंति गुरु टेव। रंगमाळ रूपक्क रा, इण तक्क रा उवेव ॥ —ल. पिं.

रूपकांता-सं. स्त्री—१ सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

रूपग—देखो 'रूपक' (रू. भे.) (अ. मा)

उ०—१ सुकवि 'मान' 'गोकुळ' सुकवि, **रूपग** सुणि बहू रीध। 'गजै' होय सुरतर गहर, दोय भाटां लख दीध। —सू. प्र.

उ०—२ भाखा व्रज मारू सुरभाखा, प्राकृत जांन भर. पायौ रचण **रूपगां** पैडौ, मेहाही थारी महर। —बां. दा.

उ०—३ आखरां समंद थागण अथाह। **रूपगां** चत्र छतीस राग। —त्रि. सं.

उ०—४ **रूपग** जस रघुनाथ, रट समझौ गजगत सोय। —र. ज. प्र.

रूपगजोड़ौ–सं. पु.—१ कवि
उ०—१ प्रभता समद कडा लग पूगी, ओपम भडा अरोडा। जगदाता पोसाक न जोजै, जोजे **रूपगजोड़ां**।
– सिवसिंह मेडतिया रौ गीत

रूपगरविता–स. स्त्री [स. रूपगर्विता] अपने रूप का गर्व या अभिमान रखने वाली नायिका (साहित्य)

रूपग्रह–स. पु [स] नेत्र, नयन, आख (डि. को)

रूपघर–स. धु यौ. [स रूपगृह] १ रूपनिधान, सुंदर। [स. रोप्यगृह] २ खजाना, कोप।

रूपचतुरदसी, रूपचवदस–स. स्त्री. [सं रूपचतुर्दशी] कार्तिक वदी चौदस, नरक-चतुर्दशी।

रूपजीवनी–स स्त्री. [स. रूपजीवनी] जिसकी जीविका का आश्रय केवल रूप (सौदर्य) ही हो, रडी, वेश्या।

रूपटियौ—देखो 'रुपयौ' (अल्पा रू भे)
उ०—वै रै गूंभे मे भेवरियौ लाडू, वै री पगडी में रोकडी **रूपटियौ**। —लो गी.

रूपण–स पु. [सं. रूपणम्] १ आलकारिक वर्णन। २ अन्वेषण, अनुसधान।

रूपणी–वि. स्त्री.—रूप धारण करने वाली। २ रूप की।
उ०—१ दया रूपी दिवलौ करौ, सवेग **रूपणी** वाट। समगत ज्योत उजवाल ले, मिथ्या अधोरौ जाय फाट। —जयवाणी
रू. भे—रूपनी, रुपिणी।

रूपदे–स स्त्री—देखो 'रूपारेल' (रू भे.)
उ०—सुरबी दिसा धूधळी, रयण धूधळी भयकर। चिड़ी **रूपदे** सबद, तरल भुरजाळ सहातर। —पा. प्र.

रूपधर–वि. – रूप धारण करने वाला।
रू. भे.—रूवधर।

रूपनाथ–स पु—पाबू राठौड के गुरु का नाम।
उ०—रूपनाथ गुरु 'पाल' रौ, सुणी यसी म्है ख्यात। —पा. प्र

रूपनिधांन–वि. [सं. रूपनिधानं] १ रूप का भण्डार।
उ०—नमौ करुणाकर **रूपनिधांन**, नमौ स्रव संतत तो सुभियाण। —ह. र.

रूपफौज–स. पु. १ योद्धा, वीर। (डिं. ना. मा)

रूपमांन–वि. [सं. रूपवान] १ सुंदर, खूबसूरत।

रूपमाळा–सं. स्त्री.—१ एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण में १४ और १० के विराम से २४ मात्राये होती है।

रूपमाळा-नीसांणी–सं. स्त्री—१ प्रत्येक चरण में ३२ मात्राये तथा १६ पर यति वाला मात्रिक छंद विशेष।
वि. वि.—इसका दूसरा नाम हसगत भी है।

रूपमाळी–स. स्त्री.—६ गुरु अथवा तीन मगण का वर्णिक छद।

रूपमिण–स. पु. [स. रूपमणि] १ तारा (अ. मा)

रूपराय–स. पु—१ चादी के समान रंग का घोडा।

रूपरासिक–स. पु.—१ वह घोडा जिसका पिछला वाया पैर सफेद हो (शुभ) (शा हो.)

रूपरासी–वि—सुंदर, मनोहर।
उ०—१ पिया समीप **रूपरासि**, दासि आमि पामिय। भरे प्रकास स्त्रीउदोत, दीपि जोति भासिय। —रा. रू.

रूपरेखा, रूपरेह–स. स्त्री [स रूपरेखा] १ किसी कार्य के संबंध मे वह प्रमुख बात जो उसके स्थूल रूप की सूचक होती है तथा उसके सक्षिप्त विवरण का साराश के रूप में होता।
२ वह अकन या रेखाओ द्वारा अकित चित्र जिससे किसी पदार्थ के आकार प्रकार का स्थूल ज्ञान रेखाओ आदि के रूप मे होता है।

रूपल–स. स्त्री—१ देखो 'रुपौ' (रू. भे)
उ०—१ माळ फिरै ज्यू पनड़ी बाजै, फिरै कालियौ डोरौ। ओडू पाणी भरै घडलिया, आगै हालै धोरो। **रूपल** रेत रै। —चेत मानखौ

रूपवंत–वि. [स रूपवत्] (स्त्री. रूपवती) १ सुन्दर, मनोहर, खूबसूरत, रूपवान।
उ०—१ दोनूं ही ऐसा **रूपवंत** सो सारी पृथ्वी मे जोया न लाभै। —कुंवरसी साखला री वारता
उ०—२ नेडइ मढळि काई नारी **रूपवंत** हुय राज कुमारी। —ढो. मा.
२ शरीरधारी।
रू. भे—रूवव।

रूपवती, रूपवंती–वि स्त्री [सं. रूपवती] १ सुदरी, सुंदर।
उ०—१ द्रूपदी बहिन नइ तदि बइठी, सिंघासण वतीसी **रूपवंती** तिण कीचक दीठी। —सालि सूरि
उ०—२ उज्जैण नगर महाराज बीर विक्रमदित्य राज करै। उण रै हुजूर एक कळावत आइयौ। ती के साथ एक परम **रूपवती** स्त्री अर एक पुरुस थौ। —सिंघासण बत्तीसी
रू भे.—रूववइ।

रूपव–स. पु.—१ सगीत मे सात मात्राओ का ताल विशेष।

रूपवन–स. पु.—१ चदन (ना. मा.)

रूपवांन–वि. [स. रूपवत] १ सुंदर मनोहर

रूपसिंहोत–स. पु.—१ राठौड़ वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

रूपस्री–स, स्त्री. [स. रूपश्री] १ सपूर्ण जाति की एक सकर रागिनी

रूपहरी–वि.—१ रूपै की बनी या जिस पर रूपा चढा हुआ हो।
उ०—१ घोड़ा सातसौ अबलख समदा भवर, गगांजळ सजब कुम्मेद

ग्रौर गुलदारी फुलवारी तयार कराया, त्यारै सुनहरी, रूपहरी सागै साखत साज सजाया । —जलाल बूबना री बात

रूपांण—देखो 'रूप' (मह. रू. भे.)

उ०—१ भूल न जाऊं रावळी एही **रूपांण** । —गज उद्धार

रूपा देखो 'रूपावत' (रू. भे.)

रूपाजीवा—सं स्त्री. [स.] १ वेश्या, रंडी । (अ. मा.)

उ०—१ तिण री एक सकार तदि, जामिप वय धन जोर । **रूपाजीवा** रूपरौ, जिण सुणियौ अति सोर । —व. भा.

रूपामाखी—स. स्त्री. [स. रुप्यमाक्षिका] १ एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो प्रायः ग्रौषधियों में भस्म बना कर प्रयोग लिया जाता है । (ग्रमरत)

रूपारास—स. स्त्री.—१ दक्षिण दिशा ग्रौर ग्राग्नेय दिशा के मध्य की दिशा ।

उ०—१ दहबारी जाती सहर था कोस ५ छै । केवड़ा री नाळ सहर सूं कोण **रूपारास** मांहै छै । —नैणसी

उ०—२ बूंदी कोस ६५ तथा ७० उगवण था क्यूं ई डावी **रूपारास** मे । —नैणसी

रूपारेल—स. स्त्री.—१ एक प्रकार की चिड़िया विशेष जिसके यात्रा के समय शकुन लिए जाते है । रू. भे.—रूपदे ।

२ ग्रीष्म ऋतु मे चलने वाली तेज हवा या ग्रांधी के कारण उड़ने वाली गर्द । ३ वातचक्र ।

रूपालहरी—स. स्त्री.—१ स्त्रियों के धारण करने का ग्राभूषण विशेष । (व. स.)

रूपाळ—१ देखो 'रूपाळौ' (मह रू. भे.)

उ०—१ ग्रच्छर घण **रूपाळ** किलोला, कोल करता । माल्है ग्रागळ बन्न, सुभागी चौळ भरता । —मेघ

रूपाळौ—वि. [स. रूपं + ग्रालुच्] (स्त्री. रूपाळी) १ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ **रूपाळौ** रळियामणौ, धोळागिर रौ थान । तर नीभरण भकर तठै, मिखर मेर समांन । —दुरगादत्त बाहरठ

उ०—२ चिळके सोने रा चीलिरिया, बधगी बा **रूपाळी** पाल कूपलौ किणरौ कुळियौ ग्राज, गुदळती घण ग्रसमानी ढाल —साभ

मह. रूपाळ

रूपावत—सं. पु.—राठौड़ वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

रूपिका—स. स्त्री. [स.] श्वेत पुष्प का मदार का पौधा । (ग्रमरत)

रूपिणी—सं. स्त्री. [स रुक्मिणी प्रा. रुप्पिणी] १ श्री कृष्ण की पत्नी रुक्मिणी ।

उ०—१ ग्ररे मधुसूदनु जउ इम भणइ, **रूपिणि** वयणु सुणेहु, ग्ररे नेमिकुमरु, मुहु बंधवु पाणिग्गहणु मनावेहु । —समधुर

उ०—२ पेखवी पहुतउ महि वसतु, ग्रतउर लेई । वहु परि केसवु नेमि सहितु जल केलि करेइ । राणिय **रूपिणि** पमुह, कुसुम ग्राभरण करति, नियवर देवर देह नेह गहिळि मडति । —जयसिंह सूरि

२ देखो 'रूपणी' (रू. भे.)

रूपी—वि. [स.] (स्त्री. रूपणी रूपिणी) १ रूप या ग्राकार प्रकार वाला । २ रूपधारी, सुंदर, मनोहर । ३ तुल्य, समान, सदृश्य ।

रूपीयौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रठै ग्राय वधाईदार ग्रोठी जांगळू मेलीयौ सो जाय पोहतौ । सारा समाचार खीवसी जी नू कह्या, सो सुण सादियांणा वजाया बांमणा नू **रूपीय** दीया, भोजन करायौ । —कुँवरसी सांखला री वारता

रूपु—१ देखो 'रूप' (रू. भे.)

उ०—कुंतादिवि नउ लिविउं **रूपु** देखीउ चित्रांमि । मोहिउ पडु नरिंदु चींति ग्रति लीधउ कांमि । —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'रूपौ' (रू. भे.)

रूपेंद्रिय—स. पु. [स.] नेत्र, नयन, ग्राख ।

रूपेटौ—सं. पु. [सं. रुप्यं + रा. प्र. एटौ] चादी का बना प्याला विशेष ।

उ०—१ बीजू हस बोलतौ, जदै, घणा दिनसूं मिळतौ । कुसळायत पूछतौ, ग्रमल **रूपेटां** गळतौ । —ग्ररजुण जी बारहट

रू. भे.—रूपोटौ

रूपेरण—स. स्त्री.—१ वह तलवार जिसकी मूठ पर चादी की पतली तह चढी हो ।

रूपेस्वर—स. पु [स. रूपेश्वर] १ एक शिव लिंग ।

रूपेस्वरी—स. स्त्री.—१ एक देवी का नाम ।

रूपैयौ—देखो 'रुपयौ' (रू. भे.)

उ०—करतब नह राजी कृपण, राजी **रूपैयांह** । कड़वौ दास कुटबियां, प्रामणडां पइयांह । —बा. दा.

रूपोटौ—देखो 'रूपेटौ' (रू. भे.)

उ०—१ कुवरजी सूरत देख देख थकत हुवै छै । वडारण कन्है खडी पुवन करै छै । इता में कुँवरसी वडारण नुं फुरमायौ जो **रूपोटौ** मे पांणी घाल ल्याव । —कुँवरसी सांखला री वारता

उ०—२ इण भात री भांग काढ तयार कीजै छै । कसूबा नूं होसनायक पवन करै छै । सू **रूपोटां** मे लिया खवास पासेबांण हाजर करै छै । —रा. सा. सं.

रूपौ—सं पु. [सं. रूप्यं] १ चांदी, रजत, रूपा । (ग्र. मा. ना., मा. ह. ना. मा.)

उ०—१ ऊची नीची सरवरिया री पाळ जठै नै ऊजळौ **रूपौ** नींपजै । **रूपौ** सोहे पाबूजी धणी रै पाव, रूंग्राळा पीडा मे रूपौ

हद सोहे । —पाबू रायवळ

उ०—२ वीजो द्रस्टात । कि तार कहतां **रूपौ** हइ । किना इह तारा छै । —वेलि टी.

२ हस ।

३ श्वेत वर्ण का अश्व ।

रू भे.—रूपल ।

४ देखो 'रूप' (रू. भे)

उ०—उग्रसेन-राय कन्याका, रे राजमती बहु **रूपौ** । सील गुणे करो सोभती रे, चतुराई बहु चूंपौ । —जयवांणी

रूबकार—स. पु. [फा] १ अदालत मे उपस्थित होने का आज्ञा पत्र । आदेश-पत्र ।

२ सामने उपस्थित होने की क्रिया या भाव ।

रूबकारी—सं स्त्री. [फा.] १ मुकद्दमे की पेशी या कार्यवाही ।

२ किसी के सामने उपस्थित होने की क्रिया या भाव ।

रूबरू—क्रि. वि. [फा.] १ प्रत्यक्ष, सामने, सम्मुख ।

उ०—१ अरु मालम करवाया पातसाहजी रै **रूबरू** द्वारासाह नू हाजर कियौ । जाणियौ राजी हुसी । —द. दा.

रूम—सं. पु [फा.] १ एक देश का नाम ।

[अ.] २ कमरा, कक्ष । ३ देखो 'रोम' (रू. भे.)

उ०—अवर ही इणरी गुणांरी एक एक बात **रूम रूम** जीभ हुवै नै जपै दिन रात । —र. रू.

रूमा—स. स्त्री —नमक की खान।

रूमाल—स. पु. [फा] हाथ मुह आदि पोछने के काम आने वाला कपडे का चौकोर टुकडा जिसकी किनारे सिली होती है । हाथ में या जेब मे रखा जाता है ।

उ०—१ ढाल खवै ढळकती, मूठ तरवार ग्रहौ कर । कर दूजै **रूमाल** धके काळमी डोर धर । —पा. प्र.

उ०—२ भेली सुँदर गोरी घोड़ै री लगाम, आंसू तौ पुछिया हरि-ये **रूमाल** सू । —लो. गी.

२ पायजामे की मियानी ।

रूमाली—स. स्त्री.—१ एक प्रकार का छोटा रूमाल । २ लंगोट ।

रूमी—स स्त्री.—१ एक प्रकार की छुरी । (जो रोम की बनी होती है ।)

उ०—छुरचा सू छूंणीजै छै सू छुरी किण भांतरी छै । पेसकवज चकचकी **रूमी** विलायती म्याना माहा काढजै छै । —खीची गगेव नीबावत रौ दो-पहरौ

स. पु.—२ घोड़ा (डि. को.)

३ रोम देश का घोड़ा ।

उ०—हुरम्मजि केची मुकराणी खधार हरेवी खुरसांणी । आरब्बी **रूमी** उजबक्का, समहदी सभर कदक्का । —गु. रू. व.

४ रोम देश का निवासी, व्यक्ति ।

उ०—चडे उजबकी रौद्र **रूमी** फिरगी । चडे मुगळ पट्ठाण सैईद संगी । —गु रू. व.

रूमीसूरौ—स. पु.—एक प्रकार की तलवार ।

रूय—देखो 'रूप' (रू. भे)

उ०—जम्ह नरिदह केरी धूय, गगा नामि रइ सम **रूय** ऊठइ नरवइ सामुहीय । —सालिभद्र सूरि

रूयडौ—देखो 'रूडौ' (रू. भे.)

उ०—१ रहणौ **रूयड़ौ** ध्यांन रे । (धरम पत्र)

उ०—२ नेमी परणेवा चालिया, म्हारी सहियर **रूयड़ी** जादव जान हे छप्पन कोडी यादव मिल्या म्हा. अति घणा आदर मान हे । —स कु.

उ०—३ इन्द्रांणी गायइ गीत हे, बाजा वाजइ अति घणा म्हा. **रूयड़ी** सगळी रीत हे । —स. कु.

(स्त्री रूयडी)

रूयडु, रूयडौ—देखो 'रूडौ' (रू. भे.)

उ०—१ नाभि-विवर अति **रूयडु**, उपरि त्रिणि प्रवाह । मुनिवर माघ प्रयाग मांहा, जे नाहिड ते नाहि । —मा. का प्र.

उ०—२ धनवतरि तुझ थि **रूयडौ**, विरूइ टली विकधी । सग था तइ सरजिउ सनि, सुरत करति समाधि । —मा. कां. प्र.

रूळ—स. पु [अ.] १ लकीर खीचने का डडा । २ उक्त डडे के सहारे से कागज पर खीची गई सीधी लकीर या रेखा । ३ कायदा, नियम ४ देखो 'रीळ' (रू. भे.)

रूळणौ, रूळबौ—देखो 'रुळणौ, रुळबौ' (रू. भे)

उ०—लक्ष्मी तणउं भाग्य, अग्नि देवता नौ वांन, रूपिणि उणउं संस्थान, कठ नवसरहार **रूळतइ**, जिम दीठी चित्त माहि पइठी, इसि वाला । —व. स.

रूळदार—वि.—१ जिस पर लकीरे खीची हुई हो ।

रूळियोड़ौ—देखो 'रुळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रूळियोडी)

रूळीयारौ जोड—वि —१ भटकने वाले को आश्रय देने वाला, बिछड़े हुए को मिलाने वाला ।

उ०—लाखा रौ लोडाउ **रूळीयारौ-जोड** राका रौ माळवो अधणि-या रौ धणी । —वीरमदे सोनगरा री बात

रूळौ—स. पु —१ छोटा वातचक्र, बगुला ।

२ कमर व पैरों के विकृत हो जाने से ठीक न चलने वाला व्यक्ति ।

रूव—देखो 'रूप' (रू. भे.)

उ०—जइ पडिहसि 'पास' जिणिंद वसि, नाणवंत निम्मल रयण । न सु धणुहरु बाण न **रूव** नहि न रूय पियु हुइ हइमयण । —कविपल्ह

रूवड़उ, रूवड़ौ, रूवडउ, रूवडौ—देखो 'रूड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ नयनी रूप में **रूवड़ौ** कोट कोसीसा अ्रत न पार । देवर छइ **रूवड़उ** प्रोहित जोवइ पौली पगार । —वी. दे.
उ०—२ कुमरी रूपै **रूवडीये** घर अगरण बैठी । दीठी राजा खेलतिय तिरण चिंता पैठी । —बृ. स्त्र
(स्त्री. रूवडी, रूवडी)

रूवव—१ देखो 'रूपवंत' (रू. भे) (जैन)

रूवधर—१ देखो 'रूपधर' (रू. भे) (जैन)

रूववइ—१ देखो 'रूपवती' (रू. भे.) (जैन)

रूस—स. पु.—१ एशिया के उत्तर मे फैला हुआ देश ।
उ०—मिनखा घणा न मान, मान रहे हेकरण मना । जीतौ जुध जापान, **रूस** तणौ बळ राजिया । —फतैकरण उज्वळ
२ देखो 'रूस' (रू. भे.)

रूसणौ देखो 'रिसाणौ' (रू. भे.)
उ०—१ 'सूप' इत री ज मांगकर, जितौ ज आटे लूग । घडी घड़ी रै **रूसणौ**, तूझ मनासी कूण । —अज्ञात
उ०—२ जोबन गयौ स भलौ हुइ, सिर रौ टळी बलाय । जणै जणै रौ **रूसणौ**, औ दुःख सह्यौ न जाय । अज्ञात
उ०—३ माया री बात सुण्या सेठजी नै निवास मिळयौ । वानै तौ काच में दीसै ज्यू दीखतौ हौ, के लिछमीजी नै दूजी ठौड आवडैला नी । तद अेक दिन सारू औ **रूसणौ** क्यूँ करचौ । —फुलवाडी

रूसणौ रूसबौ—देखो 'रीसणौ रीसबौ, (रू भे.)
उ०—चेली चोळा में मन मोळा में, रोळा मे रुठदा है । पकवान परुसै रळपट **रूसै** फरगट सुख फेंकदा है । —ऊ का.
रूसणहार, हारौ (हारी) रूसणियौ –वि० ।
रूसिओड़ौ रूसियोड़ौ रूस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
रूसीजणौ रूसीजबौ—भाव वा० ।

रूसी—वि.—रूस देश का ।
स. पु.—१ रूस देश का निवासी । (व्यक्ति)
२ रूस देश की भाषा ।

रूह—स. स्त्री [अ.] १ आत्मा ।
उ० - १ जीये तेल तिलन्न मै, जीये गध फूलन्न । जीये माखन क्षीर मे, इये रब्ब **रूहन्न** । —दादूवाणी
उ०—२ इये रब्ब रूहन्न, मे जीये **रूह** रगन्न । जीये जेरौ सूर मे, ठढौ चद्र वसन्न । —दादूवाणी
२ प्राणवायु ।
३ कई बार का खींचा हुआ अरक ।
४ कई बार का बहुत अधिक फूलो से बनाया हुआ इत्र ।
५ एक प्रकार की मच्छी विशेष ।

रूहराळ—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)
उ०—करमाळ फुणाळ मणाळ कळी । **रूहराळ** हुई कर पाल रळी । —पा. प्र.

रूहाड़—देखो 'रुहाड' (रू. भे.)
उ०—१ जे खाविद निराठ आबरू सू राखिया, पेट काठा धपाया मारवाड़ री **रूहाड़** मिट गई, तिणसुँ इण माहेलौ कोई रहे नहीं । —अमरसिंह गजसिहोत री वात

रूहि—१ देखो रुधिर' (रू. भे)

रूहिचाळ—स. पु.—१ एक प्रकार का घोड़ा ।
रू. भे.—रूहीचाळ ।

रूहिर—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

रूही—देखो 'रुधिर' (रू भे)

रूहीचाळ - देखो 'रूहिचाळ' (रू. भे.) (ना. डिं. को)

रेंगणौ, रेंगबौ—देखो 'रेंगणौ, रेंगबौ' (रू. भे.)
रेंगणहार, हारौ (हारी), रेंगणियौ—वि० ।
रेंगिओड़ौ, रेंगियोड़ौ, रेंग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
रेंगीजणौ, रेंगीजबौ—भाव वा० ।

रेंण—देखो 'रयण' (रू. भे.)

रेंणकी—देखो 'रेणकी' (रू. भे)

रेंणु - देखो 'रेणु' (रू भे.)

रें-रें—स. स्त्री.—१ बिना मन के लडके (छोटे बच्चे) का धीरे धीरे रुदन ।
२ बकझक ।

रेंवत—देखो **'रेवंत'** (रू भे.)
उ०—**रेंवत** चढनै रामडा आवै आलमडा । —पी. ग्रं.

रेंवतियां—देखो 'रावत्रिया' (रू. भे.)

रेंवती—देखो **'रेवती'** (रू. भे.)

रेंबहर—वि.—अधीन, मातहत ।
उ०—सेन मेल सिव पुरी, फौज घेर धासोहर । जैत हत्थ कळि मत्थ, साथि भाटी रिण घोयर । कटि इम पड़िगी रै (ण.), धणी अड्डार गिरंदर । लाया पाइ रकेव, कीध मछरीक **रेंहबर** । राठौड कुअर पक्खर रवद, कवण (भ) समवड करै । जमदाढ छोड विज्जै लई, कना राड अरबड्ड रै । —गु. रू. बं.

रे—स. पु.—१ निकृष्ट या नीच कार्य ।
२ सुख ।
३ खेद कष्ट ।
४ नभ ।
५ काग, कौआ । (एका)
अव्य—सम्बोधनात्मक अव्यय, अरे !
उ०—१ **रे** ! सठ पछी जा परौ, पिणघट घाटै ऊठ । कोई नार चलावसी, भर जोबन की मूठ । —अज्ञात
उ०—२ बीजळियां चहुला वहुलि, आभइ आभइ कोडि । कद **रे**

मिळउळी सज्जना, कस कचूकी छोडि । —ढो. मा.

उ०—३ वळि वध समरथि रथ ले बैसारी, स्यामा कर साहै सु-करि । बाहर रे बाहर कोई छै वर । हरि हरिणाखी जाइ हरि ।

—वेलि

रू. भे.—रइ, रि ।

रेकारौ—देखो 'रैकारौ' (रू. भे.)

उ०—१ तगा, तगाई मत करै, बोले मूंह सभाळ । नाहर अर रजपूतनै, **रेकारै** री गाळ । —अज्ञात

उ०—२ कोई स्वभावै **रेकारौ** कहै, चटकी तुरत चढत । क्रोध विरोध बधारू केतला, आवै किम भव अंत । —ध. व. ग्र.

रेख-स स्त्री. [स. रेखा] १ लकीर, रेखा ।

उ०— १ छकी हीरां मदन छकि, वरण बुध सदन वीसेख । चद बदन मुळकण दमक, रदन तडत की **रेख** ।

—बगसीराम प्रोहित री बात

उ०—२ सावण आवण कह गया, करग्या कौल अनेक । गिणता गिणतां घिस गई, आगळिया री **रेख** । —अग्यात

२ मनुष्य की हथेली या पैरो के तलवे मे बने हुए टेढ़े मेढे अथवा सीधे प्राकृतिक चिन्ह जो मनुष्य के भावी जीवन के शुभ और अशुभ फल बताने मे सहायक होते है ।

उ०—अमोल तोल मोल कै प्रचोल चोळ अख के, अडोळ डोल कध रा रसाल छत्ति मुत्थरै, रहै पदग्ग **रेख** तै सु देख तै अरी डरै ।

—ऊ. का.

३ मूल्य, कीमत ।

उ०—तद सत्रुसाळ कही—महाराज माफ करौ, मोनू हुकम दीजै । इतरी सुणत सुवा आप बाग उठाई सौ वेराणी समसेर नाम घोडौ सवारी मे थौ, वडी **रेख** रौ बडौ घोडौ थौ ।

—महाराजा पदमसिंहजी री बात

४ आय, आमदनी ।

उ०—१ सींधल वाघौ वीदा रौ वीदौ सूजा रौ, सूजौ सीहा रौ, सीहौ भांडा रौ गांव कवलां । १,५००) **रेख** । —ब. दा. ख्यात

उ०—२ सीधल सांवलदास मानसीहावत रौ । १०,०००) **रेख** ।

—बा. दा. ख्यात

उ०—३ सवत १७१४ उजेणी री वेढ पूरै लौहै पडियौ पै'ले उपा-डियौ । पछै स्रीजी घणौ आदर कर पटौ रू० ८०००) **रेख** लवेरौ घणा गांवासू । भोपाळ वधारै दी । —नैणसी

५ राजस्थान के जागीरदारों से जागीर की निश्चित आय पर लिया जाने वाला कर विशेष ।

वि० वि०—इस कर का रिवाज सर्व प्रथम अकबर बाद-शाह के समय चला था । इसलिए मारवाड राज्यान्तर्गत यह कर सर्व प्रथम सवाई राजा शूरसिंहजी के समय चला । उन दिनों जागीरदारो को मारवाड नरेशो के साथ, बाद-शाही कार्यों हेतु मारवाड से बाहर युद्धो मे भाग लेना पड़ता था । इसी लिए उनसे 'चाकरी" (सेवा) के अलावा किसी प्रकार का अन्य कर नही लिया जाता था । राजपूत सरदारो को जागीरे देने का मुख्य प्रयोजन यही था कि वे महाराज की तरफ से युद्ध मे भाग लेकर शत्रु को दण्ड देने मे सहायक हो । किन्तु विजयसिंहजी के समय मारवाड का सम्बन्ध मुगल बादशाहत से टूट गया और ठीक इसी समय मरहटो का उपद्रव उठ खड़ा हुआ, उस समय इस नवीन उपद्रव को दबाने हेतु जोधपुर दरबार को रुपयो की आवश्यकता प्रतीत हुई । इस लिए महाराजा श्री विजयसिंहजी ने वि. स. १८१२ मे जागीरदारो पर बाहर युद्धो मे भाग लेने के बदले प्राप्त आमदनी पर प्रति हजार तीन सौ रुपयो के हिसाब से 'मता-लबा' नामक कर लगाया गया । यह कर कई बार लगाया गया मगर इसकी दर डेढ सौ से कम आवश्यकतानुसार घटती बढती रहती थी । और डेढ सौ से कम और पांच सौ से अधिक कभी नही लिया गया था ।

महाराजा भीमसिंहजी के समय कर प्रतिहजार तीन सौ रुपयो के हिसाब से दो बार वसूल किया गया था ।

महाराजा मानसिंहजी के समय जयपुर की चढाई के पश्चात अमीरखा को रुपये देने हेतु प्रतिहजार तीन सौ रुपये के हिसाब से लगाए गये । यही कर '**रेख**' के रूप मे वि. स. १८६४ से राज्य के विशेष खर्च हेतु हर पाचवे वर्ष प्रति हजार दो सौ से तीन सौ रुपये तक जागीरदारी से लेना एक नियम सा बना दिया गया था ।

वि. स. १८९६ मे पोलिटिकल एजेंट की सलाह से प्रति वर्ष प्रतिहजार की जागीर पर अस्सी रुपये रेख स्वरूप लेना निश्चित किया गया । किन्तु एक दो वर्ष बाद जागीरदारो ने देना बन्द कर दिया ।

वि स. १९०१ मे महाराजा तखतसिंहजी के समय मुहता लक्ष्मीचन्द ने '**रेख**' कर वसूल करने का प्रबन्ध किया । किन्तु इसमे सफलता नही हुई । अन्त में वि. स. १९०६ मे पचोली धनरूप ने जो उस समय 'फौजदारी अदालत' का हाकिम था, महाराजा की आज्ञानुसार जागीरदारों से प्रति हजार अस्सी रुपये प्रति वर्ष **रेख** स्वरूप देने का दस्तावेज लिखवा लिया । जिस पर पोकरण, आउवा, आसोप, नीबाज, रीयां और कुचामन के सरदारों ने दस्तखत किये ।

यद्यपि '**रेख**- कर मुत्सद्दियों व खवास पासवानो आदि से भी लिया जाता था मगर उसकी शरह (दर) भिन्न थी ।

६ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान ।

उ०—खीजीया यवन ल्यै जीजीया खूटिवै, खेचलां बीजीया रैत खाखी । प्राण जोधाण रै पाजीया पीजीया, **रेख** 'दुरगदास राठौड' राखी । —ध. व. ग्र.

७ सौन्दर्य अथवा नेत्र हितार्थ नेत्र में बनाई गई काजल की रेखा या लकीर।

उ०—काजळ गिरि धार रेख काजळ करि, कटि मेखला पयोधि कटि। मामोली बिंदुली कुं कू में, प्रथिमी दीध निलाट पटी।
—वेलि

उ०—२ बीजळियां चहळावहळि, आभइ आभइ अेक। कदी मिळूं उण साहिबा, कर काजळ री रेख। —अग्यात

८ आकार, आकृति, सूरत।

उ०—१ निरालब निरलेप, जगत गुरु अंतरजामी। रूप रेख बिण रांम, नाम जिण रौ घणनामी। —मे. म.

उ०—२ गोचर रूप न रंग न रेख, अगोचर अमृत कूप अलेख। थिरा नभ थावर जंगम थान, महा पद आपद मान अमान।
—ऊ. का.

९ सीमा, हद।

उ०—इतरै जाटा रौ राज तौड़ कंवरजी बीकैजी, वा काधळजी वडौ राज बीकानेर रौ बांधियौ। सरव रेख हजार तीन गावा में फेरी। —द. दा.

१० भाग्य, प्रारब्ध।

यौ.—करमरेख।

उ०—जो रचना जगपत्ती, लोतै आळ भ्रमै त्रयलोक सोइ सत्य सद्रढरेखा सार अंक रजपत्ती। —रा. रू.

११ देखो—'रेखा' (रू. भे.)

रू. भे.—रेह, रेहा

रेखग—सं. पु.—शिर, मस्तक।

उ०—"सूर" तणौ सुरसरी तणै सर, मानव विहडिया वजावै मार। रण रेखग मेळा कर रचिया, सिव धर घर सिवपुरी सिणगार
—किसनौ आढौ

रेखड़ी—देखो—'रेख' (अल्पा रू. भे.)

उ०—काळी रे काळी काजळियै री रेखड़ी हां जी रे काळोडी काठळ मे चमके बीजळी। —लो. गी.

रेखतौ—स. पु [फा. रेखत:] एक प्रकार की कविता या छन्द रचना जो खुसरौ द्वारा प्रचलित की गई है।

वि. वि.—इसमे फारसी और भारतीय छन्द शास्त्रो की अनेक बातों (तान, लय आदि) का समिश्रण होता था।

रेखळौ—देखो 'रैकळौ' (रू. भे.)

उ०—१ कमांण रौ आडौ हाथ सूं पकड़, उठाय ऊंची आम्ही सांम्ही फेर देख उहीज बखत रेखळै में मेल्ह दीन्ही।
—ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ लामैं मूडां की रे हकाई तोप दिल्ली रै बादस्या, औछै पला री रे जुजुरबा रेखळा। —लो. गी.

रेखांकन—स. पु. [सं. रेखा+अंकन] चित्र बनाते समय चित्र की रूप-रेखा बनाने हेतु रेखाए अकित करना।

रेखांकित—वि. [स. रेखा+अंकित] १ जो रेखाओं से बना हुआ हो। २ रेखांकन किया हुआ हो।

रेखांस—सं पु. [सं रेखा+अश] १ देशान्तर (भूगोल का)। २ यामोत्तर वृत्त का कोई अश, द्राघिमाश।

रेखा—स. स्त्री. [सं] १ लंबा और पतला बनाया हुआ या आप ही आप बना हुआ चिन्ह, लकीर।

२ किसी ठोस पदार्थ के तल पर बनाया हुआ लकीरनुमा चिन्ह।

३ वह कल्पित लकीर जो प्रारम्भ मे भारतीय ज्योतिषी अक्षास सूचित करने के लिए सुमेरु पर्वत से उज्जयिनी होती हुई लका तक खीची हुई मानते थे।

वि. वि.—देखो 'रेखाभूमि'।

४ गिनती, शुमार।

५ देखो रेख' (रू. भे.)

रू. भे.—रेहा।

रेखागणित—सं. स्त्री. [स.] ज्यामित।

रेखाभूमि—सं. स्त्री.—प्राचीन समय में अक्षांस स्थिर करने के लिए सुमेरु पर्वत से उज्जयिनी होती हुई लका तक गई हुई रेखा के आस पास पडने वाला प्रदेश या भूमि।

रेखी—स. स्त्री.—रामदेवजी के अनन्य भक्त भाभी (रिखिया) जाति की स्त्री।

उ०—बारट झरोखै बैसिसै, काइम हुंदै कोटि। रेखी बैठी राज मां, रांणी करिसै रोट। —पी. ग्र.

रेग—सं. स्त्री. [फा] बालुका, रेत,।

रेगर—सं. पु—१ चमडा रंगने का कार्य करने वाली एक अनुसूचित जाति या इस जाति का व्यक्ति विशेष। (मा म.)

उ०—२ गधि गयो ग्रह रेगर के गल, बंध गयौ ग्रहबंध बिगास्यौ। पीनसकाय के पास कपूर, घस्यौ कवि ऊमर तौ हिय हास्यौ।
—ऊ. का.

उ०—२ रंगीलो चंग बाजणू म्हारै वीरैजी मंढायौ चंग बाजणू। म्हारौ रेगर मडकै लायौ अै, रंगीलौ चंग बाजणू। —लो. गी.

वि वि.—१ देखो—'जटियौ' (२) ये कहीं चंग आदि मढने का कार्य भी करते है। रू. भे. रैगर

रेगिसतांन—देखो—'रेगिस्तान' (रू. भे.)

रेगिसतांनी—देखो—'रेगिस्तांनी' (रू भे.)

रेगिसथांन—देखो—'रेगिस्तान' (रू. भे.)

रेगिसथांनी—देखो - 'रेगिस्तांनी' (रू. भे)

रेगिस्तांन—सं पु. [स. रेगिस्तान] १ मरुस्थल, मरुभूमि, रेगिस्तानी इलाका।

रू. भे. रेगिसतान, रेगिसथांन, रेगिस्थान।

रेगिस्तांनी – वि [फा. रेगिस्तानी] १ रेगिस्तान का, रेगिस्तान से सम्बन्धित । रू. भे. रेगिस्थांनी

रेगिस्थांन—देखो—'रेगिस्तांन' (रू. भे)

रेगिस्थांनी—देखो—'रेगिस्तानी' (रू. भे)

रेड़णौ, रेड़बौ–क्रि स.—१ बहाना, टपकाना।

उ०—इम सिखामण देई करी, राणी कुटुब कबीला केडै रे। वीर वादी पाछा वळया, मोहै आंख्या आसू रेड़ै रे।
—जयवांणी

२ गिराना, डालना, उडेलना।

उ०—ताहरा मालदै दीठौ। सू प्यालौ सयणी मालदै नूं दियौ। ताहरा मालदै प्यालौ लियौ सयणी रै वास्तै। ताहरा मूछै लायौ बीजौ वागै माहै रेड़ियौ। —सयणी री बात

३ भगाना।

उ०—१ छके जोम सू जाय जमराण सा छेडिया, लडे अरि रेडिया खेध लागा। भिडे भाराथ अणपार दळ भाजिया, वीर भागौ नही सारवागा। —र. रू

उ०—२ डाक काळ रूपी डाच उबेडै कटार डढ्ढा, भीमनाद भेड़ै रेड़ै गयदा गभीर। आहेडे तेडै पेड़ै वीर देवीसिंघ वाळा, केडै लाग तुंडी छेडै डाखियौ कठीर। —गीत कवर दौलतसिंघ हाडा रौ

४ नगाडा आदि बाजा बजाना।

उ०—बागै नकीवा अताळी हाक हरोळा जलेब बधै, उरोळा उछाह मडै करोळा अथाह। कौह हाका खेडै लोग रेड़ै बब जोस काथै, सारदूळा रोस माथै छेड़ै रामसाह। —सूरजमल मीसण

५ मवेशी के दल को अगाड़ी हांकना, चलाना।

रेड़णहार, हारौ (हारी), रेड़णियौ—वि०।

रेड़िअोड़ौ, रेड़ियोड़ौ, रेड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

रेड़ीजणौ, रेड़ीजबौ—कर्म० वा०।

रेडणौ रेडबौ—रू० भे०।

ड़ाणौ रेड़ाबौ–प्रे. रू.—१ बहवाना, टपकवाना।

२ भगवाना।

३ गिरवाना, डलवाना, उड़ेलवाना।

४ नगाड़ा आदि बजवाना।

५ मेवेशियो के समूह को अगाड़ी हकवाना, चलवाना।

रेड़ाणहार, हारौ (हारी), रेड़ाणियौ—वि०।

रेड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

रेड़ावीजणौ, रेड़ावीजबौ—कर्म वा०।

रेडाणौ, रेडाबौ, रेड़ावणौ, रेड़ावबौ, रेडावणौ, रेडावबौ—रू० भे०।

ड़ायोड़ौ–भू. का. कृ.—बहाया हुआ, टपकाया हुआ. २ भगाया हुआ. ३ गिरवाया हुआ, डलवाया हुआ. ४ नगाड़ा आदि वाद्य बजावा हुआ. ५ मवेशियों के झुण्ड को हकाया हुआ. (स्त्री. रेड़ायोड़ी)

रेडाणौ, रेडाबौ, रेडावणौ, रेडावबौ—रू. भे.।

रेड़ावणौ, रेड़ावबौ—देखो 'रेड़ाणौ, रेडाबौ' (रू. भे)

रेड़ावणहार, हारौ (हारी), रेड़ावणियौ—वि०।

रेड़ाविअोड़ौ, रेड़ावियोड़ौ, रेवाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रेड़ावीजणौ, रेडावीजबौ—कर्म वा०।

रेड़ावियोड़ौ—देखो 'रेडायोडौ' (रू. भे.) (स्त्री रेडावियोडी)

रेड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बहाया हुआ. टपकाया हुआ. २ गिराया हुआ, डाला हुआ. ३ भगाया हुआ. ४ नगाड़ादि वाद्य बजाया हुआ. हांका हुआ, आगे चलाया हुआ. (मवेशी दल) (स्त्री रेड़ियोडी)

रेड़ियौ—देखो 'रेडियौ' (रू भे.)

रेडूंबौ, रेडूबौ–स. पु.—१ खराब आकृति वाला, विकृत हिंदवानी, मतीरा।

रेवक–वि [स.] १ दस्तावर, दस्त लाने वाला।

२ फेफड़ों को साफ या स्वच्छ करने वाला।

सं पु [स. रेचक] १ 'सास को विधिपूर्वक बाहर निकालने की प्राणायाम की तीसरी क्रिया।

उ०—१ निज आठ जोग अभ्याल अहनिस, सधै सुरधर जुगम रवि सस। करै रेचक पूरक कुंभक, वहै दम सिर ठांम। —र. ज. प्र.

उ०—२ रेचक कतै तांणै कुंभक ठाणै, पूरक आणै फिर पाया। काया नै कस्टै काम न द्रस्टै, सजक चस्टै सील सती। —पा. प्र.

२ जमाल गोटा।

३ विरेचन औषधि विशेष।

४ चचल चित्त को एकाग्र या वश में करने वाला ध्यान।

उ०—नाभि कमल थी पवन निसारचा, रेचक ध्यान चपळ मन मारचा। घट भीतर किया घट आकारा, नाभि पवन कुभक आकारा। —स. कु

रेचन–स. पु. [स. रेचनम्] १ मलस्थली साफ करने की क्रिया या भाव

२ मल, विष्टा।

३ दस्त लाने की औषधि।

४ श्वास बाहर निकालने की किया।

रेच्य–सं. पु. [स.] १ प्राणायाम में बाहर निकालने की वायु।

२ जुलाब।

रेजकी, रेजगारी, रेजगी–स. स्त्री. [फा. रेजगारी, रेजगी] १ रुपये के मूल्य में मिलने वाले छोटे २ सिक्को का समूह।

२ छोटे सिक्के।

३ चांदी, सोना के तार के छोटे २ टुकड़े।

रेजमाल-सं. पु. [फा. रेगमाल] एक प्रकार का काच के बुरादे से लपेटा खुरदरा कागज जो लकडी आदि का खुरदरापन मिटाने में काम आता है।

रेजलौ-सं. पु.—थकान, थकावट।

उ०—तद जलाल बादशाह नूं आरोगण सारू माजूम लायौ और अरज करी, मामूजी, घोड़ा सूं खेद हुवौ छै माजुम अरोगौ जो खेद रौ **रेजलौ** दूर होवै। —जलाल बूबना री बात

रेजीडेंट-सं. पु. [अ.] वह राजकीय अधिकारी जो ब्रिटिश शासनकाल मे देसी राज्यों मे वहा के शासन आदि पर दृष्टि रखने के लिए अमात्य के रूप मे रखा जाता था। वासामात्य।

रू. भे.—रजीडट।

रेजीमेंट-स. स्त्री. [अं.] सेना का एक भाग, रिजमिंट।

रेजौ-सं. पु [फा. रेजः] १ बहुमूल्य कपडे का थान या खंड।

२ हाथ के कते देशी सूत का बना मोटा कपडा

उ०—गुठा जीमता गटक, अब नहिं भावै वानै। राब रोगता रटक जरै नह सीरौ ज्या नै। पुळता नगै पाय, मोल वड बूंट मंगावै। पट **रेजा** पहरता, अतलसा दाय न आवै। अनाथी भाग आया अठै, आतम जाणी आपसी। कमध केई लोह कंचन किया, पारस भूप 'प्रतापसी'। —जुगतीदानजी देथौ

३ सुनारो का लोहे का आयताकार बना सांचा विशेष जिसमे गले हुए सोने य चांदो को डाल कर छड के आकार का बनाते है।

४ वेश्या वृति कराने के उद्देश्य से कुटनी द्वारा पाली पोषी लडकी।

रेट-सं. स्त्री. [अं.] १ भाव, दर।

२ गति, चाल।

३ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—हुवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ......पटणी पटपाट्ट पचवरण छींट नीलवटां कवटा धौत वटा मुहिवटा, नाटी दोटी घटी कठपीठ पाघडी, वीडी **रेट** चूनडी पातलसाडी। —व. स.

रेटणौ, रेटबौ-क्रि. स.—१ धारण करना, पहनना।

उ०—फांली भली ओढणि अग **रेटइ** आवी रही जु तुरणी त्रिभटइ। हू हेलौ देता पडी जि खेटइ, जाणउ विदेसी मुझ कत भेटइ। —प्राचीन फागु-संग्रह

२ मिटाना, रद्द करना।

उ०—लाग बाग **रेट** कीन्ही, लूट काहु की न लीन्ही। भारी बुद्धी भीनी, भूती धन्य जस धारी तूं। —ऊ. का.

३ आज्ञा, नियम प्रथा रीति आदि का पालन न करते हुए विरोध करना।

रेटणहार, हारौ (हारी), रेटणियौ—वि०।

रेटिओड़ौ, रेटियोड़ौ, रेट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रेटीजणौ, रेटीजबौ—कर्म वा०।

रेटाड़णौ, रेटाड़बौ—देखो 'रेटाणौ, रेटाबौ' (रू. भे.)

रेटाणौ, रेटाबौ-प्रे रू—१ धारण कराना, पहनाना।

२ मिटाना, रद्द कराना।

३ आज्ञा, नियम, प्रथा, रीति आदि का अतिक्रमण कराना।

रेटाणहार, हारौ, (हारी), रेटाणियौ – वि०।

रेटायोड़ौ – भू० का० कृ०।

रेटीजणौ, रेटीजबौ – कर्म वा०।

रेटाड़णौ, रेटाड़बौ, रेटावणौ, रेटावबौ – रू० भे०।

रेटावणौ, रेटावबौ—१ देखो 'रेटाणौ, रेटाबौ' (रू. भे.)

रेटावणहार, हारौ (हारी), रेटावणियौ—वि०।

रेटाविओड़ौ, रेटावियोड़ौ, रेटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रेटावीजणौ, रेटावीजबौ—कर्म वा०।

रेटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ धारण किया हुआ. २ मिटाया हुआ, रद्द किया हुआ. ३ उल्लघन या अतिक्रमण किया हुआ. (स्त्री. रेटियोडी)

रेटौ-स. पु.—१ पराजित करने की क्रिया या भाव।

उ०—१ भूल लियां थट जानिया, हथलेवे खेटौ। सावौ अधरत साझियौ भारत मे भेटौ। झांफा भरै कवलियौ, रूका बळ **रेटौ**। —वी. मा.

रेडणौ, रेडबौ देखो 'रेड़णौ, रेड़बौ' (रू भे.)

उ०—१ तद डोकरी बोली—बेटा धणी परौ उजड़तौ देखि चाकर न कहै, सु चाकर काहि रौ ? सु तो हरामखोर। धणी रौ पाणी ईटजे तठै आपरौ लोही **रेडजे**। अर आ बात जिम छै तिम मालम करौ। —वरसे तिलोकसी री वात

रेडाणौ, रेडाबौ—देखो 'रेड़ाणौ, रेडाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद राजा कही, 'मोनूं तौ तिस लागी हुती, सो ऊपर सुं पाणी रा टिबका पडता हुता, सो मै नीचै कटोरो माडियौ हुतौ, सो दुने ही वरीया **रेडायो** तद मैं मारीयौ।

—वात बूढी ठग राजा री

रेढौ-वि—१ ठिगना, छोटे कद का।

२ देखो—रेढौ (रू. भे.)

रेढ-स. स्त्री.—१ जिद, हठ।

उ०—सिरदे दार मदार सिर हक खेड हुवदे। संक न माने औंदरो नह रेढ खसंदे। —पा. प्र.

रेढौ-सं. पु.—१ सूअर का बच्चा।

उ०—भूंडण पूरा लोहा छिक रही छै। बडौ **रेढौ** पाछौ फिरियौ। अेक घडी ताई सारी फौज थाभ राखी। —डाढाळौ सूर

रू. भे.—रेडौ

रेण—देखो—रयण' (रू. भे.) (ह. नां मा)

उ०—१ नरव्वीर **रेण** भई भात केण। सुणि सेख तत्थ कहे ताम।

कथ्थ। —र. ज. प्र.

उ०—२ चित वडपण सुभ चितवण, वजर लीक मम वैण। गाढ स्यामध्रम घरण गह, रहण 'पतौ' दिन रेण। —जैतदान बारहठ

उ०—३ अहल्या पद रेण उधरी, कियौ निरभै कीर। विभीखणकू लक बगसी, साथ राखण सीर। —भगतमाळ

उ०—४ दुनियां वरदायक सेव सिहायक, रेण किसौ न्रप राम सौ जी। —र. ज प्र.

रेणका—देखो 'रेणुका' (डि को)

उ०—१ लगरी राव रूका रटक लेणका, भलो 'अगजीत' ऊमराव भीमेण का, बजाई नारद तणी बैणका रजाइ पलग रस लूंद रग रेणका। —महादान मैहडू

उ०—२ विभाडी रेणका बडौ कीधौ विधन, जमदगिनि तणौ परमेस माडै जिगिन। —पी. ग्र.

रेणकी—देखो 'रैणकी' (रू. भे.)

रेणदार-सं. पु. [फा. रेहनदार] १ वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रक्खी हो।

रेणनामौ-स. पु. [फा.] रेहन की शर्तें लिखा हुआ कागज।

रेणबिल-सं. पु. [फा.] गिरवी, बंधक, रेहन।

रेणव-स. पु. [स. रेणवह] चारणो का एक पर्यायवाची शब्द।

उ०—पडगना रेणवां तणां इम पाळजै, सीर सभाळजै बडा सेवी। साद सापू तणा घणां सभाळिया, दाखजै नाथ ची मदत देवी। —गीत करणीजी रौ

२ कवि, काव्यकार। (अ मा.)

उ०—मत्त सतावन स्रव गाथा मह, कळा तीस पूरबा अरध कह। बीस सात कळ उतर अरध विच, रेणव अेम छद गाथौ रच। —र. ज. प्र

रू. भे.—रेणू।

रेणवा-स. पु.—झाला वश की एक शाखा।

रेणां, रेणा—देखो 'रेणुका' (रू. भे.)

उ०—औ अलाह अणाधाह, नियौ जम रेणां जायौ। देजा सरिसि धर दियण, असख जिगि करवा आयौ। —पी. ग्र.

२ देखो 'रैणा' (रू. भे.)

उ०—१ खत्री बस बार किता तै खेस, रेणा ले दीधी बिप्रा रेस। —ह. र.

उ०—२ मिळि अब साख प्रसाख रसमय, अमिति मजुर अंजुरै। रसहीन अनि तर सरब रेणा, सीत छळ क्रति सचरै। —रा. रू.

रेणादे—देखो 'रांणादे'

उ०—१ धोळौ जी धोळौ कांइ करो सहेल्या ऐ धोळा राणी रेणादे रा दांत। —लो. गी.

रेणाधर-स. पु. [स. रत्नधर] १ समुद्र। (ह ना मा.)

रेणायर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—१ वाम तणै वासतै, राम मथियौ रेणायर। दईता रा तिण दिवस, वहत मन मोहै बायर। —पी. ग्र.

रेणाविखमी-सं स्त्री.—१ सेना, फौज। (अ. मा., ना. मा.)

रेणि, रेणी—देखो 'रेणु' (रू. भे.)

उ०—वाजीय त्रबक गुहिर निसाण दिशय रौ रेणि हि छाइउ ए। पहुतउ जाणीउ पंडु नरिदु द्रुपदु पहुचए सामहो ए। —सालिभद्र सूरी

उ०—२ सभ तेरह धुर फेर दस, जांणौ निस्त्रेणी। रिख नारी तरगी हरी, परसत पग रेणी। —र. ज. प्र.

रेणु-स. पु [सं. रेणुः] १ एक इक्ष्वाकु वशीय राजा, जिसके दूसरे नाम प्रसेनजित, प्रसेन एव सुवेणु भी थे इसकी पुत्री का नाम रेणुका भी था जो परशुराम की माता तथा जमदग्नि ऋषि की पत्नी थी।

स. स्त्री.—२ बालुरेत, धूल, रज।

३ पृथ्वी, भूमि। (डि. को.)

रू भे.—रेणू, रैण।

रेणुका-स. स्त्री. [स.] इक्ष्वाकुवशीय रेणु (प्रसेनजित्) राजा की पुत्री, जमदग्नि महर्षि की पत्नी तथा परशुराम की माता थी।

उ०—देवी रेणुका रूप मे राम जाया। देवी राम रै रूप खत्री खपाया। —देवि.

वि० वि०—कालिका पुराण में इसे विदर्भ राजा प्रसेनजित की कन्या कहा गया है। महाभारत के अनुसार इसका जन्म कमल से हुआ एव इसके पिता तथा भाई का नाम क्रमशः सोमप एवं रेणु था। सोमप राजा के द्वारा इसका पालन-पोषण होने के कारण सभवतः उसे इसका पिता कहा गया होगा। रेणुका पुराण के अनुसार रेणु राजा ने कन्या-कामेष्ठि यज्ञ किया। यज्ञ कुण्ड से इसकी उत्पत्ति हुई थी।

इसका स्वयवर भागीरथी क्षेत्र में हुआ, जहां पर जमदग्नि ऋषि ने इसका वरण किया। इसके पाणिग्रहण के समय इन्द्र ने कामधेनु, कल्पतरु, चिंतामणि एव पारस आदि विभिन्न अमुल्य पदार्थ भेंट किये। एक बार जमदग्नि बाणक्षेपण का कार्य कर रहे थे। उस समय बाण वापिस लाने का कार्य इसे सौंपा गया था। एक दिन बाण लाने में इसे कुछ विलम्ब हो गया जिस कारण क्रुध होकर जमदग्नि ने अपने पुत्र परशुराम को इसका शिर छेदन के लिए कहा। परशुराम ने पिता की आज्ञा अनुसार इसका वध किया एव तत्पश्चात जमदग्नि से आग्रह कर इसे पुनर्जीवित कराया।

मतातर से यही कथा इस प्रकार भी मिलती है। एक बार राजा चित्ररथ को स्त्री के संग क्रीडा करते देख इसके मनमे कुछ विकार उत्पन्न हुआ जिससे क्रुध हो जमदग्नि ने परशुराम द्वारा

इसका वध करवा दिया। तत्पश्चात परशुराम ने जमदग्नि से ही इसे पुनर्जीवित करा दिया।

कहते है कि यह कमल से उत्पन्न अयोनिजा थी। प्रसेनजित इसके पोषक पिता थे। कही कही इसके पिता का नाम रेणु महर्षि भी लिखा मिलता है।

२ पृथ्वी। (डि. को.)

३ बालू, रेत।

४ रज, धूलि।

सं. पु.—५ सह्याद्रि पर्वत का एक तीर्थ स्थान।

रू. भे.—रेणका, रेणां, रेणा, रैणका।

रेणूं, रेणू—१ देखो 'रेणु' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—**रेणूं** रवि मंडळ रसमी रय रोकी। तन मन प्रज कापत ढापत त्रयलोकी। —ऊ. कां.

२ देखो 'रेणव' (रू. भे.)

उ०—असपतिया उतबंग सूं, ऊंचा छतर उतार। रांणे दीधा रेणुग्रां 'सांगौ' जग-साधार। —बा. दा.

रेत—स. स्त्री—१ धूल, रज। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—जाग्या सोई जाणियै, हरिया हरि के हेत। हरि वेमुख सुं जागिया, ता मुख पड़सी रेत। —अनुभववांणी

२ पृथी, भूमि।

उ०—हरिया सामी सतगुरी, माया मांही हेत। क्यूंईक गाडै रेत मे, और वीयाजू देत। —अनुभववांणी

रू. भे.—रेती, रैत, रैति, रैतौ।

अल्पा.—रेतडली।

मह.—रेतरड़ौ, रेतूड़, रेतूडौ, रेतोड़ौ, रेतौ।

३ देखो 'रय्यत' (रू. भे.)

उ०—१ रंड पोखा रा राजमें, रुळगी भूखां रैत। सूकां नित सीरा करै, दंड न चूकां देत॥ —ऊ. का.

४ देखो 'रेतस' (रू. भे.)

५ देखो 'रेती' (रू. भे.)

रेतकुंड—स. पु. [सं. रेत कुंड] १ एक नरक का नाम, रेत कुल्या।

२ कुमायूं के पास का एक तीर्थ स्थान।

रेतड़ली—देखो 'रेत' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—म्हारी आखड़ल्यां रौ तारौ दुलारौ प्यारौ है मुरधर देस सोनै रै डूंगर ज्यूं चमके रेतड़ली रा ढेर। —लो. गी.

रेतणौ, रेतबौ—क्रि. स.—१ रेती नामक औजार से किसी पदार्थ के खुरदरे तल को रगड़ कर काटना।

२ किसी पैनी धार वाली चीज से रगड़ कर किसी चीज को काटना।

क्रि. अ.—३ घोडे का वीर्य पात होना या स्खलन होना।

४ ऊट का कोमल भूमि पर बैठकर रेत से सहलाने से वीर्यपात होना जिससे वह अशक्त हो जाता है।

५ रेत या भूमि पर बैठे बैठे पेशाब करने से ऊंट की मूत्रेन्द्रिय पर शोथ आना, ऊट का मूत्रेन्द्रिय से पीड़ित होना।

रेतणहार, हारौ (हारी), रेतणियौ—वि०।

रेतिओड़ौ, रेतियोड़ौ, रेत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रेतीजणौ, रेतीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

रेतरड़ौ देखो—'रेत' (मह. रू. भे.)

रेतस—स. पु. [स. रेतस्] वीर्य, शुक्र (डि. को.)

रू. भे.—रेत।

रेतियोड़ौ—भू.का कृ.—१ पदार्थ विशेष का रेती नामक औजार से खुरदरापन मिटाया हुआ. २ पैनी धार वाले औजार से रगड़ कर कोई पदार्थ काटा हुआ. ३ स्खलन हुवा हुआ (घोड़ा)। ४ कोमल भूमि पर बैठ कर सहलाने से स्खलन हुवा हुआ (ऊट) ५ रेत या भूमि पर बैठे बैठे पेशाब करने से मुत्रेन्द्रिय रोग से पीड़ित हुवा हुआ। (ऊट)

रेती—सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का दानेदार औजार विशेष जिस से रगड़ कर पदार्थों का तल चिकना किया जाता है।

२ नदी के बीचोबीच टापू की वह जमीन जो जल के प्रवाह के घटने पर या मंद पडने पर ऊपर निकल आती है। नदी का टापू।

उ०—१ नदी माहे पग पैसि अर पोत्यां कियां। नदी माहे पगे पैसि अर रेती पधारिया। ओथि रमण लागा। —द. वि.

रेतीलौ—वि. (स्त्री. रेतीली) १ ऐसा स्थान जहां पर रेत अधिक हो।

२ वह जिसमें बालू या रेत अधिक हो।

रेतूड़, रेतूड़ौ—देखो 'रेत' (मह. रू. भे.)

उ०—ढोला जी करहलौ थांब्यौ रै भेक्यौ रे रेतुड़ै रै मांय। काढचौ डावा पग रौ ताकळौ, काइ पुगो छिन रै माय। —लो.गी.

रेतोड़ौ, रेतौ—देखो—'रेत' (मह. रू. भे.)

उ०—म्हांनी सी एक टोपसी, माहें घाल्यौ सपेतौ। जतन पण कर राखजौ, नही तौ पड़ेला रेतौ। —भि. द्र.

रेपळ—स. स्त्री. १ आवड़ देवी की एक बहिन का नाम।

उ०—महा अदभूत जचै उपमाण. जसोमति पूत नचै फण जांण। गंजै दळ रेपळ लाग गहल्ल, मारै बोहो मीर अमीर मुगल्ल।

रू. भे. रेफली —मे. म.

रेफ—स पु [स. रेफः] १ र अक्षर का वह रूप जो अन्य अक्षर के र पूर्व आने पर उसके ऊपर रहता है।

२ 'र' अक्षर।

३ ध्वनि विशेष।

रेफळी—देखो—'रेपळ' (रू. भे.)

रेबाब—देखो 'रबाब' (रू. भे.)

उ०—साह तौ डेरै थौ अर ए झरोखे नीचे ओलगण लागौ तठे राजा अर राणी पोढीया छै। तद् इहा गावते रेबार री तार तोड़ नाखी। —ठाकुरै साह री वात

रेबारी—देखो 'रैबारी' (रू भे.)

उ०—१ **रेबारी** काबर ने बारी रे, गूजर दरजिया ने बाजारी। कीरतन्या गाम करासी रे, हुऔ कीर कुजरौ घासी। —जयवाणी

(स्त्री. रेबारण)

रेयण—१ देखो 'रयण' (रू. भे)

उ०—अग्रे दळाय पांणी मझि दळां, कादम गहणं। दळ पुडि उडि **रेयण** कौतुहळ कोडि त्रियासा। —गु रू. ब.

२ देखो 'रजनी' (रू भे.)

रेयांण—स. पु—१ मुसलमान।

उ०—१ संभर ससत डडे डिडवाणौ, भटनर पडे भगाणा। राणा तुझ भये **रेयांणा**, थर हरिया सह थाणा

—महाराणा कूभा रौ गीत

२ देखो 'रंयांण' (रू. भे.)

रेर—सं. स्त्री—१ राम शब्द की ध्वनि।

उ०—राम राम रसणा रटे, बासर बेर अवेर। अटक्या पछै न आवसी, राम तणी मुख **रेर**। —ह. र.

रेरुऔ, रेरुवौ—स. पु—बड़ा उल्लू पक्षी।

रेळ—स. पु.—प्रातः काल का गायन, गायन।

उ०—क्रूर उनाळै हुरिया पता, चिडकोल्या चग चग करै। कुरदसिया कुत्ता बिल्ला, चढ **रेळ** रग रळ भग करै। —दसदेव

रेल—स. स्त्री [अ] भाप व डीजल तेल से लोह की पटरी पर चलने वाली गाड़ी, रेलगाडी।

उ०—नहीं तार नहिं टेम है, नहीं बत्ती मे तेल। आ चालै मनरे मतै, मारवाड री **रेल**। —अग्यात

२ बहाव, धारा।

३ ऐसा खेत जिसमे वर्षा के पानी का भराव होता हो और बिना सिंचाई के गेहूँ, चनो की फसल भी होती हो।

उ०—सीवाणा था कोस ६ उत्तर दिसी। कुँभार बसै रैबारी रजपूत, बसै। पाही खर्ड छै। ऊनाळी करै तितरी हुवै **रेल** माहे सेंवज घणा हुवै। —नैणसी

४ वर्षा के पानी का बहाव विशेष जिससे भूमि में पानी समान रूप से फैल जाता है तथा भर जाता है जिससे उस भूमि में बिना सिंचाई के गेहूँ व चनो की फसल होती है।

उ०—१ जैतारण था कोस १। आथण माहे। जाट नै बामण बसै। धरती हळवा ३० खेत काठा मटियाळा। ऊनाली अरट १० ढीबडा २ हुवै। पहली आगैवा वाळी **रेल** आवती। चिणा हुवै। —नैणसी

उ०—२ तळाव मास ४ पाणी। कोहर १ सागरी मीठौ। **रेल** आगेवा वाळी आवै। —नैणसी

उ०—३ **रेल** जैतारण वाळी आथण माहै बहै। असल खालसा रौ गांव पातु गुजर रौ बसायौ। —नैणसी

५ आधिक्य, भरमार।

उ०—कर कठ- खग कठ, कदणरौ, खेलै बाळक खेल। भाभी भाळौ भजसी, रण औ विषणां **रेल**। —रेवतसिंह भाटी

रेलगाडी—देखो 'रेल' (१)

रेलचोळा—स. स्त्री—१ रतिक्रीडा का आनद।

२ सभोग के कारण नवोढा की योनि से रक्त निकलने की क्रिया का भाव।

रेल ठेल—देखो 'रेलपेल'

रेलणौ रेलबौ—क्रि. अ.—१ जल प्रवाह का पृथ्वी पर फैल जाना।

२ भूमि का वर्षा जल के प्रवाह से युक्त होना।

उ०—१ जल वूठा थल **रेलिया**, वसधा नीलै वेस। मागौ सीखा म्यारजी. देखा मुरधर देस। — दरजी मयाराम री बात.

उ०—२ डूंगर पाणी आवै तिण ता खेत ३० **रेलीजै**। सेवज गेहूँ हुवै। —नैणसी

उ० - ३ खेत निपट सखरा भुणीयाणा वाळौ वाहळौ दातल री सीम मे **रेलीजै**। तेठै सेवज गेहू १५० मण तथा २०० री ठीड। —नैणसी

३ जल प्रवाह का गतिमान होना या बहना।

उ०—जिन प्रतिमा निश्चय पणइ, सरस सुधारस **रेलि**। चिंतामणि सुर तरु सभी, अथवा मोहन वेलि। —वि कु.

४ भीगोना।

उ०—१ ढब न देय पग ढसकणी, खित बेकळ खिसकाय। **रेल** रेल निज रगत हुँत, जोधा पग्ग जमाय। —रेवतसिंह भाटी

५ वर्षा का भूमि को जल से भीगोना, तरबतर करना।

उ०—अरहट कूप तमाम, ऊमर लग न हुवे इति। जळहर एकी जाम, **रेलै** सब जग राजिया। —किरपाराम

६ देना, अर्पण करना।

उ०—'गहाणी' 'जला' 'कन' भोज माधव गणा, सुपाता **रेल** द्रब हलाई सलता। भामणा हू लेऊ कहे सह जग भला, चहीला दान रा कीया चलता। —माधोसिंह उदावत रौ गीत

७ तीव्र जलप्रवाह का अपने साथ बहा ले जाना।

८ चलना, बहना।

उ०—आवीया अलजइ घणइ, आलस माहइ गग। **रेलि** आविउ रक घरि, मद-मातउ मातंग। —मा. का. प्र.

९ नष्ट होना, मिट जाना।

उ०—कु० खुट खरड झगडइ, कु० वाट पडइ, कु० भूमि सडइ

कु० रेलिजाइ कु० वाणउत्र खाइ। —व. स.

रेलणहार, हारौ (हारी), रेलणियौ—वि०।

रेलिओड़ौ, रेलियोड़ौ, रेल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रेलीजणौ, रेलीजबौ—कर्म वा०। भाव वा०।

रेलत—स. स्त्री. [अ. रिहलत] मृत्यु।

उ०—१ हमीदा री रेलत नागौर में हुई। सेख हमीदुद्दीन नागोरी री रेलत दिल्ली में हुई। जवन कहै सातूं हमीदा री रेलत नागौर मे हुती तौ नागोर खुरद मक्कौ होय जातौ।

—बा. दा. ख्यात

रेळपेळ, रेलपेल—१ भीडभाड, धकमधक्का।

२ भरमार, अधिकता।

रू. भे.—रेळापेळि।

रेलवे—स. स्त्री.—१ रेल का विभाग, या महकमा।

२ रेल की बिछी हुई पटरिया जिन पर रेल गाडी चलती है।

रेळापेळी—देखो 'रेळपेळ' (रू. भे.)

उ०—पतर पुराऊ थारौ पेम सू, रग री रेळांपेळि —पदम भगत

रेलियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ पृथ्वी पर फैला हुआ जल प्रवाह. २ वर्षा जल के प्रवाह से युक्त हुवा हुआ। ३ जल प्रवाह गतिमान हुवा हुआ. ४ भीगोया हुआ. ५ वर्षा द्वारा तरबतर किया हुआ. ६ दिया हुआ, अर्पण किया हुआ. ७ तीव्र जल प्रवाह का अपने साथ बहाया हुआ. ८ चला हुवा, बहा हुआ. ९ नष्ट हुवा हुआ, मिटा हुआ।

(स्त्री. रेलियोडी)

रेळी—स. स्त्री.—१ शीतल वायु प्रवाह।

२ बारीक धूलि की तह, कण।

उ०—पैंसठ हाथ रौ पछै रेळी रै कारण बेरौ खुदणौ दूभर ह्वैगौ।

— फुलवाड़ी

३ गेहूँ के पौधों की जडो में होने वाला एक प्रकार का रोग।

रेलि—धारा, प्रवाह।

उ०—पसरी अग इग्यार नी सहेली हे मुझ मन मंडप वेलि सीचू नेह रसइ करी सहेली हे अनुभव रसनी रेलि। —वि. कु

रेलौ—स. पु.—१ जल या किसी तरल पदार्थ का बहाव या प्रवाह।

उ०—१ गुरु वाणी सगलउ मोहोयउ, साचा मोहण वेलौ जी। सांभलता सहुनइ सुख सपजइ, जाणि अभी रस रेलौ जी।

—ऐ. जै. का. स.

उ०—२ औरु अकल उपाय, कर आछी भूंडी न कर। जग सह चाल्यौ जाय. रेला की ज्यू राजिया। —किरपाराम

२ तबला बजाने का एक ढग विशेष जिसमे कुछ विशेष प्रकार के मधुर और हलके बोल बजाये जाते हैं।

३ भीड़, जमघट।

रेवत—स. पु.—अश्व के रूप उत्पन्न हुवे हुए एक सूर्य के पुत्र का नाम।

वि० वि०—यह सज्ञा (छाया) नामक सूर्य की पत्नी के उदर से उत्पन्न हुआ। इसके अश्व के रूप मे उत्पन्न होने का कारण था कि सूर्य-पत्नी संज्ञा बड़वा (घोड़ी) का रूप धारण किये हुए थी। यह शनिश्चर का भाई था। इसे गुह्यकों का आधिपत्य मिला। मतान्तर से इसे अश्वो का आधिपत्य मिला था। राजा लोग तोरण प्रान्त मे प्रतिमा या घट में सूर्य पूजा की विधि के अनुसार इसकी पूजा भी करें, ऐसा कालिका पुराण मे लिखा मिलता है।

२ घोडा, अश्व। (डिं. को.)

रू भे —रइवत, रेवत, रेंवत, रैवत।

रेव—सं. स्त्री. [सं. रव] १ दर्दभरी आवाज, चीख।

२ गिड़गिडाने का शब्द।

उ०—रण भाजै कर रेव, जीवण कज केता जिकै। दीधौ सिर जगदेव, महि जस राखण मोतिया। —रायसिंह सादू

३ शर्याति वशीय एक राजा का नाम।

रेवड़—सं. पु.—भेडों व बकरियो का दल या झुण्ड।

उ०—१ जमनाजी के बायै डावै, रेवड़ चरतौ जाय। नजर पडी करण्यै मीणै की, जद यूं बोल्यौ आय। —डूंगजी री छाबली

उ०—२ ग्वाळा रे ग्वाळा भाई, रेवड़ थारौ हळवै हांक। लाड-लिया जंवाई रौ पिचरंग पेचौ खेह भरै। —लो. गी.

अल्पा.,—रेवडियौ।

रेवड़ा—सं. स्त्री.—बडी और मोटी रेवडी।

रेवड़ियौ—देखो 'रेवड़' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हाथ गंगेरण गेडिया भबुता सिध रेवड़ियौ चराबानै जाय बाई रौ वीरौ बाग में। —लो. गी.

रेवड़ी—सं. स्त्री.—पगी हुई चीनी या गुड़ की एक प्रकार की टिकिया जिस पर सफेद तिल चिपकाए जाते हैं।

रेवट—स. पु. [सं. रेवट:] १ दक्षिणावर्त शंख।

२ शूकर, सूअर।

रेवत—सं. पु. [सं] १ शर्याति वंशीय रेव राजा का नाम जो रोहिणी पुत्र बलराम के श्वसुर तथा रेवती के पिता थे।

वि. वि.—ये कुशस्थली (द्वारका) के राजा थे।

२ एक राजा का नाम जो वायु पुराण के अनुसार कपोत रोमन राजा का पुत्र था।

३ एकादश रुद्रों में से एक।

४ देखो 'रेवंत' (रू. भे.)

रेवतचीणी—सं. स्त्री.—एक प्रकार का छोटा क्षुप जिसका कद या जड़ औषध प्रयोग मे लिया जाता है। (अमरत)

रेवति, रेवती—सं. स्त्री. [सं. रेवती] १ रेवत मनु की माता का नाम।

२ राजा रेवत की पुत्री तथा बलरामजी की पत्नी जिससे बलराम के निशठ और उल्मुक नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे ।

वि. वि.—राजा रेवत अपनी पुत्री के लिए सर्व गुण सम्पन्न योग्य वर की खोज मे अपनी पुत्री को साथ लेकर ब्रह्म लोक गये । उस समय वहा पर गीत और नृत्य होने के कारण राजा रेवत को दो एक क्षण वहा रुकना पडा । राजा रेवत का निवेदन सुन कर ब्रह्मा ने कहा कि आपको यहा रहते हुए सत्ताईस चतुर्युग व्यतीत हो गये है । अब द्वापुर युग मे भगवान का अशावतार बलराम द्वारका में रहते है । इस नारीरत्न को उन पुरुष श्रेष्ठ बलरामजी को दीजिये । ब्रह्मा को वदना कर अपनी सुकुमारी पुत्री का पाणिग्रहण बलराम के साथ कर दिया । बलराम की मृत्यु होने पर रेवती भी उनके साथ चिता मे अग्नि प्रवेश कर सती हुई थी।

३ महर्षि भरद्वाज की बहन जो अत्यन्त कुरूप थी और भरद्वाज ने अपने कठ नामक शिष्य को विवाह मे दी थी । यह गोदावरी मे स्नान कर के रूपवती हो गई । जहा पर स्नान करके इसने सौन्दर्य प्राप्त किया था वह स्थान रेवती नामक तीर्थ हो गया

४ अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों के अन्तर्गत अन्तिम नक्षत्र । इसका अधिष्ठाता पूषा नामक सूर्य है ।

५ एक मातृका का नाम ।

६ एक बालग्रह विशेष जो बच्चों को दुख देता है ।

रू. भे.—रेवत्ति

रेवतीभव–सं. पु [स.] शनिश्चर । (डि. को.)

रेवतीरमण, रेवतीरवण–सं. पु' [स. रेवतीरमण] रेवती से रमण करने वाले, श्री बलराम का एक नाम ।

रू भे —रैवतीरमण, रैवतीरवण

रेवर–स. पु.—पवार वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

रेवल–स. पु.—दीवार की सतह की समानता बताने वाला एक लकडी का औजार जिसके बीच मे पारा भरा रहता है ।

रेवांण—देखो—'रेयाण' (रू. भे.)

रेवा–स. स्त्री. [सं.] नर्मदा नदी का एक नाम ।

उ०—लीयै तसु अग वास रस लोभी, **रेवा** जळि कृत सौच रति । दखिणानिळ आवतौ उत्तर दिसि, सापराध पति जिम सरति ।
—वेलि

वि. वि.—इस नदी मे शिव लिगों की उत्पत्ति होती है जिन्हें नर्मदेश्वर कहते है ।

रू. भे.—रैवा

रेवाउत्तन–स. पु.—हाथी, गज । (डि. को.)

रेवाकंकर–स. पु —नर्मदा या रेवा नदी मे से निकलने वाले शिव की मूर्ति की तरह के पत्थर ।

उ०—नर्मदा रौ अेक देस धारा-क्षेत्र है जठै वाणनाथ सिव नीसरै है, **रेवाकंकर** । —बा. दा. ख्यात

रेवाड़ी—देखो—'रैवाड़ी' (रू. भे.)

उ०—अति ऊचा आवाम,पूजइ मइ आस, वसइ जहा पडित हइ स्रेणि मडित,जहा भोगी करइ रेवाडी, इसी विमाल वाडी ।
—सभा.

रेवाड़ीएकादसी—देखो—'रैवाडी एकादसी (रू. भे.)

रेवाड़ौ–सं. पु.—भेडो व बकरियों के रखने का स्थान ।

रेवानद, रेवानदी–स. स्त्री —नर्मदा नदी ।

रू. भे.—रैवाणनद, रैवानद, रैवानदी ।

रेवाळ—१ देखो—'रहवाळ' (रू. भे.)

२ देखो—'रैवाळ' (रू. भे.)

रेवास, रेवासौ—देखो—'रहवास' (रू. भे.)

रेस–स. स्त्री. [सं. रुश या रिप] १ पराजय, हार ।

उ०—मेळ थयौ सैंधै मुहै, 'रैणा' देता **रेस** । अर मिळियौ दिन ऊजळै, क्यो निकळै 'महेस' । —रा रू.

उ०—२ मडियौ जुध मेडतै, रिण अरिया दे **रेस** । तन भडियौ तरवारियां, मुडियौ नही 'महेस' । —महेसदास कूंपावत रौ दूहौ

उ०—३ ज्वार 'डूंग' दीधी जरु, रिपुवा इण विध **रेस** । रैणव औ इचरज रयौ, सुण जुध वात 'महेस' ।
—डूगजी जवारजी रौ दूहौ

२ नाश, सहार ।

उ०—१ तठै रुघनाथ तणौ 'सुरतेस' रिमा खग भाट करै घण **रेस** । —सू. प्र.

उ०—२ अणसख्या मेटै असुराणौ, रावण कुभ आद खळ **रेस** । निडर किया सुर नर नागा नैं, आचा तौ भांमी अवधेस । —र. रू

३ सजा, दण्ड ।

उ०—रूठ असी दे **रेस**, ऊठ महाभड़ ऊठ अब । कूट गहै छै केस, दूठ विकोदर देख रै । —रामनाथ कवियौ

४ दबाकत, दबाव ।

उ०—देस उगाहै **रेस** दै, आवै पेस दरब्ब । मार लियौ खग माल-पुर, आसुर पकड़ कुतुब्ब । —रा. रू.

५ शल्य, कसक ।

उ०—जग विलग्गौ जरमना,इगळ हूंत अचाण । अगरेजा आराधि-या, धूहड दुहु जोधांण । 'धूहड़' दुहु जोधाण, 'सुमेर' सुरेस सौ । सुपह महापित साथ, रिमा उर **रेस** सौ । समहर हरख सवाय, बुलाय बहादरां । ऊभळिया आराण, तरस्सै चढ तरा ।
—किसोरदांन बारहठ

६ क्षति, हानि ।

उ०—'बाध' सुजाव कमध वरदायक, रैणव वरण न देवै **रेस** ।

जामी कमंध कलपतर जेहौ, नांमी नवा समापण नेस ।
—बाघसिंह चादावत रौ गीत

७ भय, आतंक ।

८ जिसके बिना कार्य की उत्पत्ति न हो सके, हेतु, कारण ।

उ०—मेहा बूठां अन बहळ, थळ ताढा जळ रेस । करसण पाका कण खिरा, तद कउ वळण करेस । —ढो मा.

९ निर्धनता, कंगाली, दारिद्रय ।

उ०—'बीरम' हरौ वसू वड दाता, रेणव वरण मिटावण रेस । नवसहसौ अधपत नेठवियौ, दस सहसै वर सेवा देस ।
—राव लूणकरण रौ गीत

१० चाह, इच्छा ।

उ०—१ परिसदा सुण पाछी गई, वलिया क्रस्णलि नरेस । गज कुमार वैरागियौ, लागी धरम नी रेस —जयवांणी

उ०—२ धरम करौ भणि प्राणिया, दे सतगुरु उपदेस । साधु स्रावक व्रत आदरौ, राखौ दया नी रेस । —जयवाणी

११ रहस्य, तात्विक ज्ञान ।

उ०—जीवा चेतौ रे रुल्यौ अनतौ काल, आद अनाद रौ प्राणियौ, जीवा चेतौ रे । जीवा चेतौ रे रह्यौ अग्यानी बाल, समकित रेस म जाणियौ, जीवा चेतौ रे । —जयवांणी

[अं.] १२ जाति ।

१३ घुड़दौड ।

वि —किंचित, जरा ।

क्रि. वि — लिए ।

रू भे.—रेसि,

मह;—रेसौ

रेसकोरस, रेसकोस—सं. पु [अं. रेसकोर्स] १ धावन पथ ।

२ अश्वधावन भूमि, घुड़दौड का मैदान ।

उ० -रात दिवस के रेसकोस में, बाजी लाव बणावै । जाकी पार कोई हूय जावै, बेनिंग पोस्ट बतावै । —ऊ. का.

रेसण—वि.—१ मारने वाला, सहार करने वाला ।

उ० —१ तारण जण दसरथ तण, रेसण देत सरीखा रामण । बहनांमी खाटण विरद, थिर करि लक बभीखण थापण ।
—पिं. प्र

२ पराजित करने वाला, पराजय देने वाला ।

रेसणौ, रेसबौ—क्रि स.—१ पराजित करना, हराना ।

उ०—१ अलीमन सूर रौ वंस कीधौ असत्त, रेस टीपू विजै अंबट रुडिया । लाट जनरल जरनैळ करनेळ लख, जाट रै किलै जमजाळ जुड़िया ।

—कविराजा बांकीदास

उ०—२ विधासइ रेसइ राकस वंस, कीयौ दह कंध कीयौ तै कंस । —पी. ग्रं.

२ मारना, सहार करना ।

उ०—१ फरसिरांम आउध ग्रहियौ फरसु अधिक रेसिया खत्री लागौ अरसु । —पिं. प्र.

उ०—२ कडा जेम सुजडा सजै थडा त्रिवधी कियां, लिया सुर थांण जोधाण लाजा । रेसवा त्रिपुर जैसिंघ ऊपर रचै, रूप महेस बखतेस राजा । —कीरतदान बारहठ

३ मिटाना, नाश करना ।

उ०—किसन किसन कहि किसन, हुस वड पाय हरै सै । किसन किसन कहि किसन, किसन कल्याण करै सै । किसन कहता किसन, देवळै दरसण देसै । किसन किसन क्रिपाळ, राम पातिग नै रेसै ।
—पी. ग्रं.

रेसणहार, हारौ (हारी), रेसणियौ—वि० ।

रेसिओड़ौ, रेसियोड़ौ, रेस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रेसीजणौ, रेसीजबौ - कर्म वा० ।

रेसम—सं. पु. [फा. रेशम] १ एक प्रकार का बारीक, चमकीला, चिकना और मुलायम दृढ़ तंतु या रेशा विशेष जिससे कपड़े बुने जाते है ।

उ०—१ रेसम री जात कवळा केस । गुलाबी नख । —फुलवाड़ी

वि. वि.—यह ततु या रेशा विशेष प्रकार के कीड़ो के कोश पर के रोंओं से तैयार होता है । रेशम के कीडे पल्लू कहे जाते है और कई प्रकार के होते हैं जैसे—विलायती, मदरासी या कनाडी, चीनी, अराकानी आसामी इत्यादि । चीनी, बूलू और बड़े पिल्लू का रेशम अत्युत्तम होता है । ये कीड़े तितली की जाति के होते है । इनके कई काया कल्प होते हैं। अंडा फूट जाने पर ये बड़े पिल्लू के आकार के होते और रेंगते है । इस अवस्था मे ये पत्तिया बहुत खाते है । शहतूत की पत्ती इन को बहुत प्रिय और रुचिकर होती है । इसे वे बड़े चाव से खाते है । ये पिल्लू बढ कर कोश बनाकर उसके भीतर हो जाते हैं । इस समय ये कोया कहलाते हैं । कोश के भीतर ही यह कीड़ा व तंतु निकलता है जिसे रेशम कहते है । कोश के भीतर रहने का समय जब पूरा हो जाता है तब कीडा रेसम को काटता हुआ निकल कर उड़ जाता है परन्तु कीडों को पालने वाले इतने दक्ष होते हैं कि कोयों को गर्म पानी में डाल कर मार डालते हैं और तत्पश्चात ऊपर का रेशम उतार कर ले लेते हैं ।

२ उपर्युक्त रेशम के बने वस्त्र डोरा, रस्सी आदि ।

उ०—१ गाजै घण सुण गावणौ, प्याला भर मद पाव । झूले रेसम रग झड़, झोटा देर झुलाव । —बां. दा.

उ०—२ क्रत सोभत रेसम लूब करै, धुरवा किर फूलिय संझ धरै । —रा. रू.

उ०—३ आसे पासे लालां जड़ाई बिच में रेसम रा फूदा म्हारो गोर बंद लूबाळो । —लो. गी.

पर्याय—कोसय, कोसा, पाट ।

३ तलवार, खडग (ना डि को)

रेसमियो—स पु—१ रोगियो की रुग्णावस्था मे बाजरी के आटे का आच पर पका कर दिया जाने वाला पेय पदार्थ ।

२ एक प्रकार का घोडा विशेष ।

३ शीत कालीन तीक्ष्ण वायु ।

वि—१ रेशम का, रेशम सबधी ।

२ देखो 'रेसम' (अल्पा, रू भे)

उ०—होटडला मूमल रा **रेसमिया** रै तार ज्यूं। हो जी रे दातडला ऊजळ दती रा दाडम बीज ज्यू । —लो गी

रेसमी—वि [फा रेशम+रा प्र ई] १ रेशम का बना हुआ

उ०—धोळा कडप सू काळा कराया अर ओपता **रेसमी** कपडा मिलाया । —दसदोख

२ रेसम के समान चिकना या मुलायम (सूत, डोरा आदि)

उ०—खूबसूरत पसम पीठ सूरत खतम, **रेसमी** गलफ साखत रचीतौ । अग पसम सुलफ आधौ किया ऊठियो, वख कुलफ खूठिया मलफ चीतौ । —महादान महडू

३ कोमल, मुलायम ।

उ०—छोटौ पण तीखौ नाक । छोटी छोटी फुरणिया । अबूझ अर निरमळ नैण । छोटी **रेसमी** मुफाड । छोटा २ हाथ अर छोटा छोटा पगल्या । —फुलवाडी

रेसमीघाट—स पु—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—आगणउ ते तु नील रतन तणउ, ऊपरलइ मालि, मध्यान्ह कालि, केलि पत्रइ छाया, इस्या मडप नीपाया तलइ माड्या पाट, ऊपरि पाथरचा **रेसमी घाट** । —व स

रैसमी भइरव—स पु—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—अतलस, खासु कमसु भइरव, मिरचु भइरव, **रेसमी भइरव** । —व स

रेसवाडौ—स पु [स रिक्ष+हिंसायाम्=रेसवाट] मौसमी बुखार ।

रेसि—देखो 'रेस' (रू भे)

उ०—१ सुणि आगम नगर सऊजम, रुखमिणि क्रसन वधावण **रेसि** । लहरिउ लियै जाणि लहरीरव, राका दिन दरसण राकेस । —वेलि

उ०—२ इळ राइ करन वारउ कि ईंद, गुणियणा ग्रिहै बाधा गईद । ताकुआ **रेसि** सोभाग तत्ति । हिंदवइ राइ दीन्हा हसत्ति । —र ज सी

उ०—३ चादलां करि चाद्रियउ, मोरु वयख सुणी जि । एक देसु माहरु, वालभ **रेसि** कहै जि । —प्राचीन फागु-सग्रह

रेसौ—स पु [फा रेश] १ पौधो की छाल आदि से निकलने वाला महीन ततु या धागा ।

२ वह ततु जिससे शरीर का मास तथा कुछ और [illegible] बनते है ।

३ बुनावट के रूप मे कोई ऐसा तत्व जिसके ततु या सूत पृथक किये जाते हो ।

४ शरीरस्थ नश ।

५ अश ।

उ०—बापजी काई अरज करू, म्हारौ बाप साव इज भोळौ अर अबूझ लोग उणनै अधवावळौ इज समझै उणरौ थोडौ घणौ **रेसो** म्हा मे आग्यौ । —फुलवाडी

६ हिस्सा, भाग ।

उ०—बाता सुण सुण नै लोगा री अकल चकरीजगी । अैडी अकल रौ हजारवौ **रेसौ** ई हाथ आय जावै तौ निहाल व्है जावै । —फुलवाडी

७ सूक्ष्मातिसूक्ष्म अश ।

उ०—बापडा नाकुछ आखरा रौ धसकौ ई काई केवै मासी भाण-जिया रै उण आणद रौ **रेसौ** ई परगट कर सकै । वाणी अर आखरा सूं परै रौ आणद हो वौ । —फुलवाडी

८ लहर, प्रवाह ।

९ देखो 'रेस' (११) (मह रू भे)

उ०—नेम भणी परणायवारै, मागै क्रस्ण नरेसौ । 'उग्रसेण' राय इम कहैरै, एक सुणौ हमारी **रेसौ** । —जयवाणी

रेसियोडौ—भू का कृ—१ पराजित किया हुआ, हराया हुआ २ मारा हुआ, सहार किया हुआ ३ मिटाया हुआ ४ कोप किया हुआ क्रोध किया हुआ ।

(स्त्री रेसियोडी)

रेह—स स्त्री [स रेखा] १ कपट, धोखा ।

उ०—ढाल वखाणी तेरमी, विनयचद्र तजि **रेह** है । ते तिम हिज करि जाणज्यो, मत आणौ सदेह है । —वि कु

२ सन्देह, शक ।

उ०—ते छह भगवई अगमा, किम मन आणइ **रेह** अग्यानी । एक सदय गुण तू करइ, सूत्र बदुल नउ लोप अग्यानी । —वि कु

३ कलक, दाग ।

उ०—कमळ विण नामिया दडवत विन किया, वजाडै प्रथी सिर सुजस वाजा । विरद विण छोडिया कुजस विण बुलाया, **रेह** विण लगाया गयौ राजा । —महाराजा करणसिंह रौ गीत

४ धूलि, कण ।

उ०—खुरिसाण खड्ग ऊडी खुरेह, रवि छायउ अबर रजी **रेह** । चमराळा पाग्रे ऊडि चीध, गूदळइ विक्रख मूझइ गईंध । —रा ज सी

५ परिखा, खाई ।

उ०—चुभै चित नासा मुडै बक्र वाडा, गया सकडै पथ छेकै छ

गाडा । [illegible] जे राचिया रेह कूदै, सजै डाण लबा अगा माण सूदै । —व भा

वि —६ किंचित, लेशमात्र, थोडा ।

उ०—घाट सुरगौ गोरिया, आदू कहवत एह । पदमणिया हमरोट व्है, राख म ससो रेह । —बा दा

७ देखो—'रेख' (रू भे)

उ०—१ कुसल ब्राह्मण दूहु कहइ छइ, निसत्व निरदय निस्रप, धूरत्त माहि रेह । अबला नारी तेहनइ, नलइ दीधु छेह । —नळदवदती रास

उ०—२ ते भणी पुत्र छै ताहराजी, सुलसा रा नही एह । मुनि भासित अखा नही जी, न टलै करमनी रेह । —जयवाणी

उ०—३ बाबहिया निल पखिया, मगरि ज काळी रेह । मति पावस सुणि विरहणी, तळफि तळफि जिउ देह । —ढो मा

उ०—४ घन घटा गरजित छटा तरजित भयै जरजित गेह । टब टबकि टबकत झबकि झबकत, बिचि बिचि बीज की रेह । —वि कु

उ०—५ भूंडण भूडौ नह जणै, ना पिह लोपै रेह । तिण सू ठहर तू, दद मचादै खेह । —डाडाळा सूर री वात

रू भे —रेहा ।

रेहडली-स स्त्री —धूल ।

उ०—फदा मे मोडा रै फसगौ रुळगौ रेहडली । भेक धरता कीदी भूडी, कुबधा केहडली । —ऊ का

रेहण-स पु —कीट, मेल ।

उ०—प्रगट कहै जैमल पतौ, अचळ अचळ कर अग । कायर रेहण कढ गया, दीपै कनक दुरग । —बा दा

रेहणौ, **रेहबौ**-क्रि अ —शोभित होना ।

उ०—लवणि मरसभर कूवडिय, जसु नाहि य रेहइ । मयणराय किर विजयखभ जसु ऊरू सोहइ । —जिनपदम सूरि

रेहणहार, हारौ (हारी), रेहणियौ—वि० ।

रेहिओडौ, रेहियोडौ, रेह्योडौ—भू० का० कृ० ।

रेहीजणौ, रेहीजबौ—भाव वा० ।

रेहळणौ, रेहळबौ-क्रि स —पराजित करना, हराना ।

उ०—१ मेवाडा जोधइ मळिय माण, रेहळिय खेति कूभेण राण सळखहर वळिय सुरिताणसल्ल, मेवाड गाहि ऊग्राहि मल्ल । —रा ज सी

उ०—२ सीधळ सधारै बोल उतारै, मेलै दळ कळि मूळ । खागै खूमाणा रेहळि राणा, निज थाणा नाडूळ । —गु रू ब

उ०—३ धजवड पाण लिया खत्र धोडै, रेहळिया मोहिल राठोडै । मेवासी राव जोधै मिळिया, दोमज भाज मिरी सिर दळिया । —नैणसी

रेहळणहार, हारौ (हारी), रेहळणियौ— वि० ।

रेहळिओडौ, रेहळियोडौ, रेहळयोडौ—भू० का० कृ० ।

रेहळीजणौ, रेहळीजबौ—कर्म वा० ।

रेहळियोडौ—भू का कृ —पराजित किया हुआ, हराया हुआ । (स्त्री रेहळियोडी)

रेहा—१ देखो 'रेखा' (रू भे)

२ देखो 'रेह' (रू भे)

उ०—१ कहिया रेहा कूड नह, बेहा बायक अह । जे जेहा जेहा नही त्यागी केहा तेह । —बा दा

उ०—२ जीहा हरि रेहा लागी ज्याह, त्रिलोक नही भय लोका त्याह । भणै गुण तूझ तणा भगवान, जावै खळि त्याह तणा खैमान । —ह र.

३ देखो—'रेख' (रू भे)

उ०—बेहा लिख खोटा बरण, रेहा हीन रहत । पात अछेहा धन लहै, जेहा धन जहवत । —बा दा

रेहिणी—देखो—'रोहिणी' (रू भे)

उ०—तत्थ मणहारि ववहारि चूडामणि, निवसाए साहु वरु 'रुदपाळौ' । 'धारला' गेहिणी तासु गुण रेहिणी, रमणि गुणि दिप्पए जासु भालौ । —मेरुनदन

रै—देखो—'रे' (रू भे)

उ०—अला पहुवी रै ऊपरा चौक पूरौ, अला चीणमण चीण रा महल चूरौ । अला महा सैतान तोफान मोडै, अला त्रिधारै खडग सा दईत तोडै । —पी ग्र

रैंकणौ, रैंकबौ-क्रि अ —गधे का बोलना ।

रैंकणहार, हारौ (हारी), रैंकणियौ—वि ।

रैंकिओडौ रैंकियोडौ, रैंक्योडौ—भू का कृ ।

रैंकीजणौ, रैंकीजबौ—भाव वा ।

रेंकणौ रेंकबौ—रू भे ।

रैंकियोडौ—भू का कृ —गधे का बोला हुआ, आवाज किया हुआ । (स्त्री रैंकियोडी)

रैंग-स स्त्री —रेंगने की क्रिया या भाव ।

रैंगणौ, रैंगबौ-क्रि अ —१ भूमि के साथ पेट स्पर्श करते हुए खिसकते हुए या सरकते हुए सरीसृप जानवरो का चलना, गमन करना या आगे बढना ।

२ भूमि के साथ पेट सटा कर हाथो पैरो के बल मनुष्यो या बच्चो का चलना या आगे बढना ।

रैंगणहार, हारौ (हारी), रैंगणियौ—वि ।

रैंगिओडौ, रैंगियोडौ, रैंग्योडौ—भू का कृ ।

रैंगीजणौ, रैंगीजबौ—भाव वा ।

रेंगणौ, रेंगबौ—रू भे ।

रैंगियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ भूमि के साथ पेट स्पर्श करते हुए खिसकते या सरकते हुए सरीसृप जानवर का चला हुआ, गमन किया हुआ या आगे बढा हुआ २ भूमि के साथ पेट सटा कर हाथो पैरो के बल मनुष्य या बच्चा चला हुआ या आगे बढा हुआ। (स्त्री. रैंगियोडी)

रैंट—देखो—'अरट' (रू. भे.)

रैंडियौ—देखो—'रैंडौ' (अल्पा; रू भे.)

रैंडी—सं. स्त्री.—अजमेर की तरफ पायी जाने वाली एक प्रकार की नस्ल विशेष की गाय जिसके सीग नीचे की ओर झुके होते हैं।

रैंडौ—स. पु. [स्त्री. रैंडी] वह बैल जिसके सीग नीचे की तरफ झुके हुए होते है।

रैंण—देखो—'रयण' (रू. भे.)

उ०—१ विरह खटूकौ रैंण दिन, हरीया सालै मोहि। का तुझि मिळीया भाजिसी, का मुझि मिळीया तोहि। —अनुभववाणी

उ०—२ माया बादळ विजळी मारै चमक चमक। हरीया हरिजन ऊबरै, राता रैंण समक। —अनुभववाणी

रैंणकी—स पु.—राजस्थानी साहित्य मे एक छद विशेष जिसमे प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राए होती है तथा क्रमश.९,९, ६ और ८ मात्राओ पर यति होती है। छद के चार चरणो मे कुल १२८ मात्राए होती है।

रैंणायर—देखो—'रत्नाकर' (रू. भे)

उ०—सामंद्र हु वुह सुजळ सायर, रैंणसुत जळ नध रैंणायर। सुडलै गोडीरव सायर, महण घण महराण। —महाराजा स्री गजसीधजी रौ गीत

रैंणु—देखो—'रेणु' (रू. भे)

उ०—वासप नैणांसू निकळै मूख बाफां, रैंणू एड़ी पर फाटोडी राफा, धुर धुर धूजता थुडता थाकोड़ा, पीळा पडियोडा पिळिया पाकोडा। —ऊ का.

रैंणौ, रैंबौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू. भे)

उ०—१ सायबा म्हानू थारी लारै लै जावौला वौ, रसराज सग रैंण री आरजू। ऐंस सुहाणीं री दिखावौ लावौ सायबा। —रसीलै राज रौ गीत

उ०—२ घर हाळा भाई बेटा मन्नै सदा कैवता रैंता-बदरीजी जावौ, अडसठ तीरथ न्हावौ। धरम पुन्न करौ, माळा मिणियौ फेरौ —दसदोख

उ०—३ बेटा पोता न्यारा हुया, भाई भतीजां ऊजळा राम रांम करचा। नौकरी छूटी अर गाव गरज टूटी। लोगा री मींट ठंडी नही रैंयी। —दसदोख

रैंदी—स स्त्री—१ खरबूजे की काटी हुई पतली सी फाक।

रैंन—देखो—'रयण' (रू. भे.)

उ०—१ जनहरीया सत सबद मै, सुरिल रैंन दिय पोय। माया कौ डर को नही, रहौ निसंसै होय। —अनुभव वाणी

उ०—२ जिन औ तोकु धन दीया, तिन कै लेखै लाय। माया सपनौ रैंन कौ, हरीया जाय विलाय। —अनुभववाणी

उ०—३ सेझरीया सुन्य सूंदरी, रमै रांम दिन रैंन। उर परमानंद उपजै, अब औरन कौ दुख दैन। —अनुभववाणी

रैंवणौ, रैंवबौ—देखो—'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)

उ०—ठाकर भोपाळ सिंघजी, गाव रा भोगता अर जमीदार है। इया रौ घराणौ वडौ मालदार रैंवतौ आयौ है। —दसदोख

रैंवत—देखो—'रेवंत' (रू. भे.)

उ०—१ इक धारण तौ जिम चित आवै, पूजै भेख जिकौ वर पावै। सुणि न्रप करै प्रणाम सकाजा, रैंवत चढि आए जुधि राजा। —सू. प्र.

उ०—२ सुणि खबर सभै दळबळ सकाज, रैंवत सिणगारै गजां राज। जगमग करि दरगह नग जहूर, पुर करै चित्र औछाड पूर। —सू. प्र.

रैंहट—देखो—'अरट' (रू भे.)

रैं—स. पु. [स.] १ धन, द्रव्य। (नां. मा, ह. ना. मा.)

रू भे.—रा।

२ राजा, न्रप।

३ सुखधर।

४ स्याम रग। (एका.)

५ सतोष, धैर्य।

अव्य०—के।

उ०—१ फतियौ फिरिसै फौज मां, भुडा रै उरि भाहि। डोहा करिसै दीनियौ, मुसै रै धर माहि। —पी. ग्र.

उ०—२ कोई दूथणी रौ जायौ औ न्याव सळटावणियौ लाधौ ई नी। हुचा हुचा पाधरा राजाजी रै गोडै वहीर व्हैगा। —फुलवाड़ी

रू. भे. —रइ, रै

रैक—स. पु [अ] पुस्तके आदि रखने के लिए खाचे का बना हुआ ढाचा।

रैकळियौ—देखो—'रैकळौ' (अल्पा; रू. भे.)

रैकळौ—स पु [स. रेखा गतौ] १ वह छकडा जिस पर बहुत सी बदूकें लगी होती है।

२ एक प्रकार की छोटी गाड़ी जो सवारी के काम आती है। यह प्राय: बैलों द्वारा खीची जाती है और किसी किसी पर मंडप भी बना होता है।

३ एक प्रकार की तोप जो बैलों, या घोडों द्वारा खीची जाती है।

रू भे.—रहकळौ, रेकळौ, रैखळौ। अल्पा—रैकळियौ, रैखळियौ

रैकारौ—स. पु.—(ओछे या नीच वचन) 'अरे' या 'तू' कहकर अशिष्टता

पूर्वक संबोधन करने की क्रिया या भाव।

उ०—१ बांका बिखफळ नीपजै, ज्यौं बिख तर री डाळ यूं दुरजण री जीभड़ी, रैकारौ के गाळ। —बां. दा.

उ०—२ जीकारौ अम्रत ज्यूं ही, भावै जग नूं भाळ। है रैकारौ आक पय, गरळ बराबर गाळ। —बा. दा.

रू. भे.—रिकारौ, रेकारौ

रैकेट—सं. पु. [अं.] १ एक प्रकार का डडा जिसका आगे का भाग या हिस्सा प्रायः वर्त्तुलाकार होता है। यह टैनिस के खेल में गेंद मारने के काम आता है।

२ वैज्ञानिक परिक्षणों हेतु आकाश में बहुत ऊंचाई तक जा सकने वाला आकाश बाण के आकार का एक बहुत बड़ा यन्त्र।

रू. भे.—राकेट

रैखळियौ—देखो—'रैकळौ' (अल्पा., रू. भे.)

रैखळौ—देखो—'रैकळौ' (रू. भे.)

रैगर—देखो—'रेगर' (रू. भे.) (मा. म.)

रैज—स. पु.—वह खेत जिसमें वर्षा के दिनों में वर्षाती पानी भर जाता हो और उसमें रबी की फसल अच्छी होती हो।

उ०—बांणीया रजपूत बामण बसै। रैज रा खेत २० सेंवज, कोहर ८ मीठा। —नैणसी

रैडू—देखो—'रहडू' (रू. भे.)

रैडौ—स. पु.—बडा पत्थर। (शेखावाटी)

रैण—सं. पु. —१ राज्य।

उ०—१ सूर जग्गे सुभ समय, भूम अन जुमै सुभावां। रैण सभाळै राव, मिटै अटकाव बधावा। —रा. रू.

उ०—२ गाहिया पिसण घणा वैर अऊग्राहिया, माल गमियौ छिलै करन हर मौड़। वडौ राव ओपियौ वाळियौ वीकपुर, रैण रुखवाळ कलियांण राठौड़। —नगराज हमीर सूजावत रौ गीत

२ देखो 'रयण' (रू. भे.)

उ०—१ 'सेख' तजौ दळ समर, रैण बंट कहिक रखावौ। तजै विढ कुळ तणौ, मिळौ चित खंत मिटावौ। —सू प्र.

उ०—२ चकवा चाकर चोर, रैण बिछोवा राखिया। अब मिळ जावै और, (तौ) जतनां राखूं जेठवा। —जेठवा

उ०—३ पहिलइ पोहरै रैण कै, दिवला अबर हूल। घण कसतूरी हुइ रही, प्रिव चपा रौ फूल। —ढो. मा.

३ देखो 'रेणु' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ विस्वामित्र रै ज्याग सोभा वधारी, त्रिया रैण पै हूंत गोतम्म तारी। पति स्राप हूं देह पाई पखाणै, जिका दिव्य देहा हुई सब्ब जांणै। —सू. प्र.

उ०—२ रचै लार गुजार रोलब राजी, भगाणा भड़ां रोध औ लब भाजी। अरांनां हसै डूगरा रैण आंटै, छदी जै करां सीकरां गैण छांटै। —वं. भा.

उ०—३ आलम मौरा ओगुणां साहिब तुझ गुणांह। बूंद बिरक्खा रैण कण, थाघ न लब्भौ त्याह। —ह. र.

४ देखो 'रहणी' (रू. भे.)

रैणका—देखो 'रेणुका' (रू. भे.)

उ०—हरी मेल धानख धांनख हाथै, सकौ पांण खेंचै लियौ हेक साथै। मदोमत्त हाथी हुवै हीण मद्दं, जिसौ रैणका पुत्र दीसत जद्दं। —सू. प्र.

रैणपत, रैणपति, रैणपती—देखो 'रयणपति' (रू भे.)

रैणय—सं. पु.—देखो 'रयण' (रू. भे.)

उ०—हरि गयण रत्थं ताण हत्थ वाधि कत्थ वेरियं। वाजै सचाळौ कुंभवाळौ, रक्खवाळौ रैणय। —रा. रू.

२ देखो 'रण' (रू. भे.)

रैणयर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.) (अ. मा.)

रैणा—स. स्त्री.—१ पृथ्वी, भूमि।

उ०—१ वसुधा स्रोण सुरंगी, तुरियां घसळ विरधुरी रैणा। आदू चपळ सहावौ, हुइ रत्ती हुइ अणरतह। —गु. रू. बं.

उ०—२ मतौ गुंझ कीधौ जठै रांण माता, भणै वात बब्भीखणा तेम भ्राता। रैणा लक थारै किसूं तोटि राजा, कपी मीत छाडौ करौ एह काजा। —सू. प्र.

२ रत्न।

उ०—मिळै छत्र छत्रा धसै भीड माचै, रैणा हीर मोती झडै रूप राचै। ओपै जोति नौ लाख हूंता अपारा तिकै जाण साजोत रै भोमि तारा। —सू. प्र.

[स. रज] ३ धूलि, कण, बालू, रेत।

उ०—१ कुटंबां सहेता हुती नांव कीरं, वळै पाय रैणा तरी रघुवीरं। मिथल्लेसरै ज्याग आए समीपं, दुवा भूप आए मिळै सात दीप। —सू. प्र.

उ०—२ वहता तुरां पाय पायाळ वाया, छिळै रज्ज रैणा उडै वोम छाया। चलता इसा मीर तीरं चलावै, पंखी जीवता म्रिग जांणं न पावै। —र. वचनिका

[सं. रजनी] रात, रात्रि।

रैणाइर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे)

उ०—१ इंद्र छभा किर अमर, निडर राठौड निभै नर। पह रैणाइर पसर, धणी नवकोट छिहतर। —गु. रू. बं.

उ०—२ भूमंडळ भैकंपै, जांण रैणाइर फट्टौ। प्रळै काळ कळिपत, प्रथी उतपात प्रगट्टौ। —गु. रू. बं.

रैणादे—देखो 'राणादे' (रू. भे.)

उ०—पीळी पीळी काई करौ भै, पीळी आ चिणां की री दाळ।

पीळौ सूरजजी रौ घोडलौ श्रे, पीळौ बहू रैणादे रौ चीर।
—लो. गी.

रैणापत, रैणापति, रैणापती–सं. पु.—देखो 'रयणपत' (रू भे.)

उ०—**रैणापती** लखमसी राणौ, जगमालम जेसी घण जाण। भगवतसीह भाणगसी अणभंग, प्रथीसिग गरमेर प्रमाण।
—महादांन महडू

रैणायर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—१ गाहट्टे गज दळां, कीध कादम्म सरोवर। नह खूटा जळ नया, जहा सगम **रैणायर**। —गु रू. ब.

उ०—२ नमौ जदुराज हळद्धर-जोड, **रैणायर**-रूप नमौ रणछोड। नमौ सिसुपाळ मनावण सक, जरासध जीपण सेन उजक।
—ह. र.

उ०—३ सबदी लग कोड अजाद रायसिंघ, गहवत **रैणायर** बड गात। ऊपर लहर सवाई अपतै, छिलतै छातरिया अन छात।
—ह दा.

रैणावर—देखो 'रत्नाकर' (रू. भे.)

उ०—कण मुकता धन कोस, भरियौ पण प्रापत बिना। दीजै कासू दोस, **रैणावर** नै राजिया। —किरपाराम

रैणावळि, रैणावळी–स स्त्री. [स. रजनी] रात, रात्रि।

रैणि, रैणिका, रैणी–स. स्त्री. [स. रजनी] रात, रात्रि।

उ०—१ अनत घाट धट मांहि **रैणि** दिन घड़त है, कंचन हिरदा माहि काच लै जड़त है। —ह. पु. वा.

उ०—२ विडगा खड सात्रव आय वगौ, निद्राळु अ नाहर नीद लगौ। दसमी दन जीदय दाव दियौ, अध **रैणि** रौ चांदोई आथमियौ। —पा. प्र.

उ०—३ बिलम न कीजै वीर **रैणिका** जाम है। हरि हा जन हरिदास निरमळ अग अभंग अजब विसराम है। —ह. पु. वां.

उ०—४ पहर चारू सहज वीता, भयौ मूळ गमाय। गयौ वासर **रैणी** आई, नर चल्यौ खोटा खाय। —ह. पु. वां.

रै'णी—देखो 'रहणी' (रू. भे.)

उ०—जितरै श्रै नेडा जाय कहणौ लागिया जौ ठाकुर कठै छै की **रै'णी** राखता था। जै पाछा क्यौ बैठ रहिया सीधा मोहढा बात करा हा न। —सुदरदास भाटी विकूपुरी री बात

रैणीचर–स. पु. [सं. रजनीचर] निशाचर, राक्षस।

वि.—१ रात को भक्षण करने वाला।

२ रात को विचरण करने वाला।

रैणीपत, रैणीपति, रैणीपती—देखो 'रयणपति' (रू. भे.)

उ०—मिळै मुनी महारुद्र, मिळै चद्राणण अच्छर। मिळै पंख आमख, मिळै **रैणीपति** अम्मर। —मा. वचनिका

रै'णौ, रै'बौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सोचै है—जुवान रै लारै सोक वण'र **रै'णौ** चोखौ, कदै ही तौ सोनै रौ सूरज ऊगै। पण बूढै रौ धणी वण'र **रै'णौ** खोटौ जमारौ धुखतौ ही जावै, वळै ही नहीं। —दसदोख

उ०—२ गूद सूठ अर पीपळामोळ जिसा ओखदा मे तौ बोतौ मारचां पडचौ ही **रै'णौ** चाहीजै। —दसदोख

रैत, रैति, रैती—१ देखो 'रय्यत' (रू. भे.)

उ०—१ पह साभर लगि सामंद पाजा, रहसी दास दोय अनि राजा। कुळ पैंतीस सेव सब करसी, भूपति **रैत** जेम दड भरसी। —सू. प्र.

उ०—२ और क्रिया सब **रैत** है, तीरथ वरत समेत। इस नगरी मे रैत वसत है, गुरु दिलासा देत। —स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—३ राजा भयौ **रैति** रैति भई राजा, ऊपरि आसण किया। रीतु पलट्या रस फीका लागै, एकै रसि बसि जीया। —ह. पु वां.

उ०—४ किस पर पररेजह नाम कोय, है असपति इम हां **रैति** होय। अयसै कोई हैं उह अनेक, को गजनी माडव आदि केक।
—सू. प्र.

२ देखो 'रेत' (रू. भे)

उ०—और क्रिया सब **रैत** है, तीरथ वरत समेत। इस नगरी में रैत वसत है, गुरु दिलासा देत। —स्री हरिरामजी महाराज

रैदारी—देखो 'राहदारी' (रू. भे.)

रैदास–स. पु.—रामानन्दजी का चमार जाति का एक शिष्य जो प्रसिद्ध हरि भक्त था।

उ०—कहा लीन सुकदेव, कहां पीपा **रैदास**। दादू साचा क्यो छिपै, सकळ लोक परकास। —दादूबांणी

रू. भे.—रविदास।

रैदासी–सं पु.—रामानन्दजी के शिष्य रैदास द्वारा चलाये गये सम्प्रदाय के अनुयायी।

रैन, रैनि—देखो 'रयण' (रू. भे.)

उ०—दादू विरहनि कुरलै कूज ज्यौं, निस दिन तळफत जाइ। रांम सनेही कारणै, रोवत **रैनि** बिहाइ। —दादूबाणी

रैबारण–स. स्त्री.—रैबारी जाति की स्त्री।

उ०—अबै हळवै चालतौ दीठौ। पछै **रैबारण** ढोलाजी कनै आय नीसरी तद ढोलाजी नै पूछियौ राज कठा सुं पधारिया आगै कठै। पधारस्यौ। —ढो. मा.

रैबारी–स. पु. [स्त्री. रैबारण] भेड़, बकरिया, व ऊट चराने का व्यवसाय करने वाली एक जाति विशेष या उक्त जाति का व्यक्ति।
(मा. म.)

उ०—१ किणै ई **रैबारियां** रै वाडा री सरण लीवी, किणै

ई भीलां रा भूपा संभाल्या तौ कोई रा पग ठेठ खेता री बाजरियां में जावता टिकिया। —रातवासौ

उ०—२ अबै ढोलौ बेदल थका हळवै हळवै चलीया जाय छै ईसै समै रा एक **रैबारी** रैबारण नै लीयां आवै छै। —ढो. मा.

उ०—३ मुलतांन रै मारग रौ धाड़ौ आवै सो रात-दिन असवार ओठी दोडबौ करै। **रैबारियां** रा दो सौ ऊठ इण हीज काम ऊपर लागिया रहै छै। —सूरै खीबै कांधळौत री बात

रू. भे.—रइबारी, रबारी, रयबारी, राहबारी।

अल्पा; —रब्बारौ।

रैंबूद, रैंबूदचौ–वि.—१ भोला डाला, भोला। (ढूंढाड)

२ वह जिसे सूर्योदय और सूर्यास्त का कुछ भी इलम न हो।

रहबूत।

रैं'म—देखो 'रहम' (रू. भे.)

उ० करणी री वाता फाजल वडै **रैं'म** सू सुणी। अजीज दिल सू आपरी कोठडी में जगा दीनी अर धीरज बंधायौ। —दसदोख

रैं'मत—देखो 'रहमत' (रू. भे.)

रैं'म दिल—देखो 'रहमदिल' (रू. भे.)

रैंयत—देखो 'रय्यत' (रू. भे.)

उ०—१ ठाकरां खखारो करतां थका कैयो—हूं सेवरौ बांध'र चाल सू जद लोग हसाई हुसी। **रैयत** कै जाणसी। —दसदोख

उ०—२ इण वास्तै **रैयत** पण अदब न लोप सकसै। —नी. प्र.

उ०—३ दूजी सीयासत खलक छोटा नै **रैयत** रीत री सौ पहली भाति तौ वाचै। —नी. प्र.

रैयांण–स. स्त्री.—वह स्थान जहां पर गाव के लोग बैठ कर एकत्रित होकर गप्प शप्प करते है और अफीम व गोष्ठी भी वहीं करते हैं, बैठक, अथाई।

रू. भे.—रेयाण।

रैय्यत – देखो 'रय्यत' (रू. भे.)

रैळ, रैळी–सं. स्त्री.—ठंडी हवा या शीतल हवा का भौंका।

उ०—१ नणद-भोजाई भीजा, अम्मा, चोड़ै चोघटै जी, इदर राजा अम्मा मोरी, कोपियौ ऐ, ठडी बी चालै **रैळ**। —लो. गी.

उ०—२ चारा मिणतोडी सजनीं चितचावै, तारा गिणतोड़ी रजनीं बितबावै। ओभक अैळी मे आवेस अळूभै, सीळी **रैळी** से चीस-ळियां सूझै। —ऊ. का.

रू. भे.—रैळौ।

रैळौ–सं. पु.—कलक, दोष।

२ देखो 'रैळ' (रू. भे.)

रैंवंत—देखो 'रेवत' (रू. भे.)

उ०—१ 'सूराउत' डाबि छतीस सार, मलपियौ मयंद गति गयद मार। **रैंवंत** वदि राठौड राव, चढ़ियौ परठि पागडै पाव। —गु. रू. बं.

उ०—२ भेलू लोह अनेक भिलाऊं, अरुण होय मुजरा कजि आऊं। **रैंवंत** सहित होय रातबर, करु' सलांम रंगियै किरमर। —सू. प्र.

रैवणौ, रैवबौ—देखो 'रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ एक जतन सत एह, कूकर कुगंध कुमाणसा। छेड न लीजै छेह, **रैवण** दीजै राजिया। —किरपाराम

उ०—२ वौ चोर हमेसांकी न कीं अैड़ी वेळ बाता करतौ ई **रैवतौ**। —फुलवाडी

उ० –३ पीळिया रै रोगी इण चांद री नी तौ पूरौ उजास। फगत अपा रा हुनर रै आडी देवै जैड़ी चांदणी। नी व्हैतौ तौ काई कमी **रैवती**। — फुलवाड़ी

रैवत—१ देखो 'रैंवंत' (रू. भे.)

२ देखो 'रैवतक' (रू. भे')

उ०—संख मुखिइं जिणि पूरिय भूरिय हरि मनि जंपु, टोल टल-बकइ **रैवत** दैवत मनि आकपु। — जयसेखर सूरि

रैवतक–सं. पु. [सं] गिरनार नामक पर्वत जो गुजरात प्रान्त में आधुनिक जूनागढ के पास है। इसी पर्वत पर अर्जुन ने बलराम की बहन सुभद्रा का हरण श्रीकृष्ण की अनुमति से, साधु वेप में, चित्रोत्सव में किया था।

२ प्रियव्रत के पुत्र तथा पाचवें मन्वन्तर के मनु का नाम।

रू. भे.—रैवत।

रैवतीरमण, रैवतीरवण—देखो 'रेवतीरमण' (रू. भे)

उ०—**रैवतीरमण** सुत रोहणी, निराळब निगरब नर। काळ घण पूत बधव किसन, मयण रूप मदमाणगर। —पी. ग्र.

रैवांणनद, रवांणनदी—देखो 'रेवानदी' (रू. भे.)

उ०—माछां महरांण मोरां मेह मिणधरां मळै तर, गयदां **रैवांण-नद पाळै** वड गात्र। पाळै रित-राव रूंखां पावासर हुसा पाळै, पाळणां कल्यांण राव पाळै कवि पात्र। —आसौ बारहठ

रैवा—देखो 'रेवा' (रू. भे.)

उ०—**रैवा** तटि बीभरा, रांन रूपरा गिरंदां। केक मुळावार रा, केक पार रा समुंद्रां। —सू. प्र.

रैवाड़ी–स. स्त्री.—चादी सोने के पत्तरो या भोल के लकड़ी का बना एक पालकीनुमा वाहन जिसमें प्रायः भगवान की सवारी निकला करती है।

रू. भे.—रइवाड़ी, रयवाड़ी, रवाड़ी, रेवाड़ी।

रैवाड़ीएकादसी–सं. स्त्री. [राज. रैवाड़ी+सं. एकादशी] भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी जिस दिन भगवान को सिंहासनारूढ करके वाद्य नगाड़ों के साथ जलाशय पर ले जाया जाता है।

रू. भे.—रेवाड़ी-एकादसी।

रेंवाळ—स. पु.—१ जागीरदार द्वारा खलिहान मे अपना हिस्सा लेने के बाद किसान के लिए छोडे हुए अनाज की राशि।
२ देखो 'रहवाळ' (रू. भे.)

रैवास, रैवासौ—देखो 'रहवास' (रू. भे.)
उ०—फाकौ टागा टिरै, कातरौ तारै काचळ। चर चरिया रौ चाद, फिडकला फबतौ हाचळ। टीडी रौ मुदाम, जतन चिडकोल्या चोळी। लटा सूंट **रैवास**, घास फूसा रौ भोळौ। —दसदेव
उ०—२ मोकळौ माण पांवती, घणौ आदर दिरावती, जद ही तौ बीकाणौ जिसौ वास छोड'र, काळ कोसा कुळ गाव रौ **रैवास** मजूर करयौ हौ। —दसदोख
उ०—३ विण धाधळ खारी बिखम, कोळू रै **रैवास**। गिर री धरती नै गयौ, आणद हुए उदास। —पा. प्र.
उ०—४ सीस्यौ कोट **रैवासौ**, खडेलौ तौ छुडाया। बारा गाव स्यामा नै, बताया सो रहाया। —शि. व.

रैहड़, रैहड़ू, रैहडू—देखो 'रहडू' (रू. भे.)

रैहणौ, रहबौ—रहणौ, रहबौ' (रू. भे.)
उ०—१ भाणजा हुजदारा कह्यौ—जी, थे ठकुराई करौ। पण म्हानू कहौ नाही। साबास, जु उतरियै पटै थानै गाम माहै **रैहण** देवा छां। —नैणसी

रैहळ—सं. स्त्री.—१ शीतल वायु प्रवाह।
२ देखो 'रहळ' (रू. भे.)

रों—स पु—एक प्रकार का घास विशेष।

रोंख—देखो 'रूख' (रू भे.)
उ०—म्हारै देस मे बाग घणा छै अर बागा मे **रोंख** घणा छै। —नी प्र.

रोंखड़ौ—देखो 'रूंख' (अल्पा., रू भे)
उ०—मोटा पुरुसां कही छै सरम धरम रै **रोंखड़ा** री डाळी छै। —नी. प्र.

रो—स पु.—१ उदर, पेट २ बाल, रोमावली. ३ ऋषि, मुनि ४ बिमारी, रुग्णता. ५ त्रसना। (एका)
६ देखो 'रौ' (रू. भे.)
उ०—१ काळिका तु हिज कुंवारी काया, मनछा पारबती महमाई। सावतरी सीता सुर सामणि, साधूडा **रो** हुवै सिहाई। —पी. ग्र
उ०—२ सूपनखा **रो** स्रमण, नाक वाढियौ तिभै नरि। निमौ अकळि रुघनाथ, अनत पचवटी ऊपरि। —पी. ग्र.

रोअणौ, रोअबौ—देखो 'रोवणौ, रोवबौ' (रू भे.)
उ०—**रोअती** रमणि भीमि निवारी, मू दिखाडि पुणि जीणइ तू मारी। काढि लोचन करी अणीयाळा, आणीजै पिसुन अरजनि साळा। —सालिसूरि

रोआवणौ, रोआवबौ—देखो 'रोवाणौ, रोवाबौ' (रू. भे.)
उ०—एक नवि रहइ पुहर नइ घडी, एक आळोटइ आडी पडी। थ्यू विखवाद पान नइ फूलि, एक **रोआवि** मुद्गि मूलि। —का. दे. प्र.

रोआवियोडौ—देखो 'रोवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रोआवियोडी)

रोइणी—देखो 'रोहिणी' (रू. भे.)

रोई—देखो 'रोही' (रू. भे.)
उ०—करड़ै मचकूर चलै कब चौभौ, जात मुरार हजूर जठै। रथवासण भूर रयौ विच **रोई**, तूट थयौ महमूर तठै। —भगतमाळ

रोईड़ौ—देखो 'रोहिडौ' (रू. भे.)

रोईतास—देखो 'रोहितास' (रू भे.)

रोक—स. स्त्री.—१ रुकावट डालने की क्रिया या भाव।
२ रुकावट डालने वाली बात, वस्तु या तत्व।
३ निषेध, मनाही।
४ प्रतिबन्ध।
५ कैद।
उ०—तरै कह्यौ "इणै म्हारी बूढै वारै इजत पाड़ी मोनूं **रोक** माहै कियौ। —नैणसी
६ देखो 'रोकड' (रू भे)
उ०—१ कीधा अजन कमध री, हाथी निजर तुरग। हीर जवाहर **रोक** रिध, भूखण वसण सुरग। —रा. रू.
उ०—२ लाटौ करण कामदार आवौ तरै आटौ, घी, दाणौ लागै सु लेसी। **रोक** लेण कुं न पावै। —नैणसी
उ०—३ तनै **रोक** रुपया देस्यूं, पीळौ ल्यू तेरी माय। तेरी रै बहुवड़ ने देस्यू जाळी की कढवाय। —लो. गी.
रू. भे.—रोकण।

रोकड़—स. स्त्री. [ब. व. रोकडा] १ वह रकम जिसमें से आय-व्यय होता है, नकद रुपया।
उ०—१ दिन दिन लेखण हाथ, म्हारी सुदर गोरी रे। साजड़ली पड़ी रै, **रोकड़** सारता हौ राज। —लो. गी.
उ०—२ तीन लक्ष द्रब **रोकड़ा**, चचळ उच्च पच्चीस। निपट विनै धारी निजर, नृपति निवारी रीस। —रा. रू.
उ०—३ रीछ लै तमाखू, दांम दै **रोकड़ा**। हैकड भूडा लगै, हाथ मे होकड़ा। —ऊ. का.
२ मूल-धन, पूजी।
३ नकद रुपये देकर किया जाने वाला सौदा, व्यवहार, क्रय-विक्रय।
४ नकदी सौदो का लेखा जोखा रखने की बही, रोकड बही।
५ धन, सम्पत्ति।
—रू. भे.—रोक, रोकड़ी, रोकड़ौ।

रोकड़बही–सं. स्त्री.—नकद रुपये के लेन देन का हिसाब लिखने की बही।

रोकड़बाकी–सं. स्त्री.—किसी निश्चित समय पर आय को जोड़ कर और उसमें से व्यय घटाने के उपरान्त हाथ में बची रहने वाली रोकड़ या नकद रुपया।

रोकड़बिक्री–स. स्त्री.—नकद रुपया लेकर की गई बिक्री।

रोकड़भंडार–सं. पु.—राज्य का साधारण खजाना।

रोकड़भंडारी–सं. पु.—खजानची।

रोकड़ियौ–स. पु.—नकद रुपये रखने वाला, खजाची।

उ०—कमठाणै माथै मुनीम-**रोकड़िया** छोडै अर फूलचंदजी आप दिसावर कानी झाकै है। नांमून रा रूंख ओप रैया है

—दसदोख

रोकड़ी—देखो 'रोकड़, (रू. भे.)

उ०—१ पांच सौ रुपया **रोकड़ी**, बीस मरा मिठाई मुत्सद्दियां हाथ डेरै मेल्ही। —गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—२ वैरै गूभै में भेवरियौ लाडू, वैरी पागड़ी में **रोकड़ी** रुपटियौ, होळी आई ए। —लो. गी.

रोकड़ौ (बहु व.–रोकड़ा) देखो 'रोकड' (रू. भे.)

उ०—१ जा बैठैला राजकंवार करौ ना भुवा बाई आरती। आरतियां मे रुपयौ **रोकड़ौ**, ओर मंगाओ बाला चूनडी। —लो. गी.

उ०—२ राज, आ सपना में ई नीं जाणौ कै म्है मूंजी हूँ। बधाई रा पूरा समचार सुणिया पै'ली ई म्हैंनै उण नै सिरो पाव अर इक्कीस रिपिया **रोकड़ा** दिया। —फुलवाड़ी

उ०—३ दाळद घर दोळौ हुवै, परणि न आवै पास। रुपिया होवै **रोकड़ा**, सोरा आवै सास। —ऊ. का.

रोकण—देखो 'रोक' (रू. भे.)

रोकणौ, रोकबौ–क्रि. स.—१ अधिकारतः बलात् या भय से किसी को आगे जाने से रोकना, रुकावट डालना।

उ०—१ तेज में नाहरखा नाहर से हाथू, ओर 'अमरेस' गहै आसमान बाथू। प्राग के जै न्याती **रोकै** नाग की सी नांई, सेल साहेटवाळे त वीटा देत बांई। —रा. रू

उ०—२ समझायो समझै नही, अंधो भयो अगौर। जम **रोकेगौ** द्वार नव, निकसन कु नहीं ठौर। —अनुभववांणी

२ किसी को कोई कार्य या क्रिया न करने देना या किसी के कार्य या क्रिया में बाधा डालना।

उ०—१ मयद थपावै मोतियां, हुंमा लाघणियाह। रहै नहीं जुध **रोकियौ**, औ धारा अणियांह। —बा. दा.

उ०—२ नर नाहर कमधज निडर, है छळ बळ हुंसियार। काम कोई 'पातल' करै, है कुण **रोकणहार**। —ऊ. का.

३ आदेश, प्रार्थना, बल प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग में कोई ऐसी बाधा या रुकावट खड़ी करना कि वह आगे न जा सके।

उ०—बांना बंधां **रोकतौ** सोकतौ गोळां सरांवळी, काळी खवा ओकतौ संभाळी खोग काज। ऊठै धू तोकतौ गैरण 'माधांणी' झोकतौ ऊंडा। आयौ सूधौ कोकतौ काठी नै झालौ आज।

—जसौ आढौ

४ किसी प्रकार के चलते हुए क्रम या प्रथा को आगे न बढने देना, बन्द करवा देना।

उ०—**रोकी** तैं कुरीति रीति, सुरीति को झोकी साथ। ताकत त्रिलोकी एसो, मत अवगाह्यौ तैं। —ऊ. का.

५ किसी आघात या प्रहार को बीच में ही रोकने हेतु किसी बचाव के शस्त्र या उपकरण का प्रयोग करना।

६ किसी प्रकार के नियंत्रण या अधिकार में रखना।

उ०—केई दिना सूं पड़्या भाव है। रईस किरांणी है, घणा दिना तक **रोकणौ** वाजिब कोनी। बेचां तौ बत्ती वात है। —फुलवाड़ी

७ किसी प्रकार से वश में रखना।

८ कैद में रखना या बन्द करना।

उ०—बारूवार अनम्मी कध नेत-बांधा, सांमध्रमी भीच जम्मी रुखाळौ सधीर। झोखणौ छौ गैघड़ां छखंडां सीस जाडै झडै, केसरी न **रोकणौ** छौ बाघळौ। कंठीर। —किरपारांम कवियौ

९ मना करना।

उ० - तेरा कोई नहिं **रोकणहार**, मगन होय मीरां चली। लाज सरम कुळ की मरजादा, सिर से दूर करी। मांन अपमांन दोऊ घर पटकै, निकळी हूं ग्यांन गळी। —मीरां

१० अवरुद्ध करना।

उ०—१ बीछड़तां ही सज्जणा, क्या ही कहण न लध्घ। तिण वेळां कंठ **रोकियउ**, जांणक सिंधी खध्घ। —ढो मा.

उ०—२ नाद बिंद कू उलटि कै, **रोकै** दसवें द्वार। जनहरीया सुख सहज की, इन कुं सुधि न सार। —अनुभववांणी

रोकणहार, हारौ (हारी), रोकणियौ - वि०।

रोकिओड़ौ, रोकियोड़ौ, रोक्योडौ भू० का० कृ०।

रोकीजणौ, रोकीजबौ—कर्म वा०।

रोकाई–स. स्त्री.—रोकने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'बार रोकाई'।

रोकाणौ, रोकाबौ–क्रि. स० [रुकणौ व रोकणौ, क्रिया का. प्रे. रू.]

१ किसी दूसरे के अधिकार, बलात् या भय से किसी को आगे जाने से रुकाना, रुकावट डलाना।

२ किसी अन्य को किसी के कार्य में बाधा डालने हेतु प्रेरित करना।

३ किसी तीसरे पक्ष के आदेश, प्रार्थना, बल प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग मे कोई ऐसी बाधा खड़ी करने को प्रेरित करना

कि वह आगे न जा सके।
४ किसी के द्वारा किसी प्रकार के चलते हुए क्रम या प्रथा को आगे न बढने देना, बन्द करवा देना।
५ किसी को किसी प्रकार से नियत्रण या अधिकार मे रखने को प्रेरित करना।
६ किसी प्रकार से वश मे रखने को प्रेरित करना।
७ कैद में बन्द कराना।
८ मना कराना।
९ अवरुद्ध कराना।
रोकाणहार, हारौ (हारी), रोकाणियौ – वि०।
रोकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
रोकाईजणौ, रोकाईजबौ—कर्म वा०।
रोकावणौ, रोकावबौ—रू० भे०।

रोकायत—वि०—१ रोकने वाला, रुकावट डालने वाला।
उ०—सीसवद् भुजा तोकायता साबळा, रखा **रोकायतां** अरक रीझ। राळिया भडज धक नयण रोखायता, बीच झोकायता 'रयण' बीज। —रामकरण महड़ू
२ कैद मे बन्द करने वाला।

रोकायोड़ौ—भू० का० कृ० –१ किसी दूसरे के अधिकार, बलात् या भय से किसी को आगे जाने से रुकाया हुआ, रुकावट डलाया हुआ. २ किसी अन्य को किसी के कार्य मे बाधा डालने हेतु प्रेरित किया हुआ. ३ किसी तीसरे पक्ष के आदेश, प्रार्थना, बल प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग मे कोई ऐसी बाधा खडी करने को प्रेरित किया हुआ होना कि वह आगे न जा सके ४ किसी के द्वारा किसी प्रकार के चलते हुए क्रम या प्रथा को आगे न बढने दिया हुआ, बन्द कराया हुआ. ५ किसी को किसी प्रकार से नियत्रण या अधिकार मे रखने को प्रेरित किया हुआ ६ किसी प्रकार से वश मे रखने को प्रेरित किया हुआ. ७ कैद मे बन्द कराया हुआ. ८ मना कराया हुआ ९ अवरुद्ध कराया हुआ।
(स्त्री. रोकायोड़ी)

रोकावणौ, रोकावबौ—देखो 'रोकाणौ, रोकाबौ' (रू. भे.)
रोकावणहार, हारौ (हारी), रोकावणियौ—वि०।
रोकाविओड़ौ, रोकावियोड़ौ, रोकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
रोकावीजणौ, रोकावीजबौ—कर्म वा०।

रोकावियोड़ौ—देखो 'रोकायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. रोकावियोड़ी)

रोकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ अधिकारत: बलात या भय से किसी को आगे जाने से रोका हुआ, रुकावट डाला हुआ २ किसी को कोई कार्य या क्रिया न करने दिया हुआ या किसी के कार्य या क्रिया मे बाधा डाला हुआ. ३ आदेश, प्रार्थना, बल प्रयोग आदि के द्वारा किसी के मार्ग मे कोई ऐसी बाधा या रुकावट खड़ी कराया हुआ होना कि वह आगे न जा सके ४ किसी प्रकार के चलते हुए क्रम या प्रथा को आगे न बढने दिया हुआ, बन्द किया हुआ. ५ किसी आघात या प्रहार को बीच मे ही रोकने हेतु किसी बचाव के शस्त्र या उपकरण का प्रयोग किया हुआ. ६ किसी प्रकार के नियत्रण या अधिकार मे रखा हुआ ७ किसी प्रकार से वश मे रखा हुआ. ८ कैद मे रखा या बन्द किया हुआ. ९ मना किया हुआ. १० अवरुद्ध किया हुआ।
(स्त्री. रोकियोडी)

रोखंगी—वि. [स रोप+अंग+ई] १ जोश वाला, जोशीला, उत्साही।
उ०—धानमाळी पछाडा हुकमा चाडा सीस धणी, **रोखंगी** ऊपाडा द्रोण भुजा राह् दृत। बैरिया ऊबेड जाड़ा धखी माह् बाबराडा, दुबाह् अखाडाजीत धाडा रामदूत। —र. ज. प्र.
२ क्रोध करने वाला, रोश वाला, क्रोधीला।
उ०—अध्रियामणा थाट रौ गुलालौ रहै लोण आळौ, उरां सालो केकां फतै खाट रौ अधूत। **रोखंगी** जलालौ सत्रा थाट रौ बखेर राळै, प्रथीनाथ वाळौ भालौ जज्जाट रौ पूत।
—राजा बख्तसिंघ रौ गीत
रू. भे.—रोसगी।

रोख—देखो 'रोस' (रू भे) (अ. मा.)
उ०—१ उरवसि सची बाह गळि आएँ, जिया **रोख** पाथर सम जांणै। इम करता रभ कोड इलाजा, रिख व्रत चित डिगियौ नह राजा। —सू. प्र.
उ०—२ बहु धड़ मीन रुधिर उछटै बुडि, अगनि रूप किलकिला पडै उडि। मास पहाड वहै जिण माहै, अगनि **रोख** तिण पर अणथाहै। —सू. प्र.

रोखांनळ—देखो 'रोसानळ' (रू. भे.)

रोखाणौ, रोखाबौ—क्रि. अ.—कुपित होना, क्रोधित होना।
उ० – जकै उणहीज वेळा नवी नवी रीझा मोजा पावै। जको म्होकमसिंघ सारो सराजाम आणनै दीठो। सो औ तौ सदाई **रोखातौ** नै निरकुरतौ दीठौ। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
रोखाणहार, हारौ (हारी), रोखाणियौ—वि०।
रोखायोड़ौ—भू० का० कृ०।
रोखाईजणौ, रोखाईजबौ—भाव वा०।

रोखायत—वि. [सं. रोष+रा. प्र. आयत] क्रोध करने वाला, कुपित होने वाला।
उ०—सीस वद् भुजा तोकायता साबळा, रखा रोकायतां अरक रीझ। राळिया भड़ज धक नयण **रोखायतां**, बीच झोकायता 'रंयण' बीजा। —रांमकरण महड़ू

रोखि, रोखी–वि. [सं. रोषिन्] १ क्रोधालु, क्रोधी।
२ ईर्ष्या करने वाला, ईर्ष्यालु।

रोग–स. पु. [सं. रोगः] १ बीमारी।
उ०—१ **रोग** सोक दुख पाप रिए, श्रै मत करौ प्रवेस। रहौ श्रनीत श्रनीत बिए, दाता हुदै देस। —बां. दा.
उ०—२ समापत भोग न **रोग** न सोग, जपंत निकेवळ केवळ जोग। प्रत्यागम भौ लिव भक्ति प्रदीप, समागम सो सिव सक्ति समीप। —ऊ. का.
२ पीड़ा, कष्ट। (ह. नां. मा.)
३ कलंक, दाग।
उ०—परणूं धी पतसाह री, रजवट लागै **रोग**। वर श्रपछर वीरम कहै, जांणौ सुरपुर जोग। —बा. दा.
४ व्यसन, श्रादत, स्वभाव।
उ०—सरूपोत म्हे थानैं सावळ श्रोळखिया कोनी। म्हनैं खुद नें ई बाता रौ **रोग** की घणौ इज है। खासौ श्रबेळौ कर दियौ। —फुलवाड़ी
५ भेद-भाव।
उ०—'जसवत' केतौ जाचनै, ले जावौ सब लोग। उत्तम मद्धम श्रधम रौ, राख्यौ एक न **रोग**। —ऊ. का.
६ सात प्रकार के चौघडियो में तीसरा। (श्रशुभ)
वि. वि.—देखो 'चौघड़ियौ'
रू. भे.—रोगण

रोगकारक–वि. [सं.] बीमारी उत्पन्न करने वाला।

रोगग्रस्त–वि. [सं.] बीमारी या रोग से पीड़ित, बीमार।

रोगचाळौ–सं पु.—रोग का उपद्रव, बीमारी, महामारी।
उ०—गड़ा पड़ बीगड़ै नही हरगिज गहूं, चड़ापड़ न श्रावै **रोग-चाळौ** न फैलै धड़ाधड लाय महमदनगर, भड़ाभड़ भवांनी बोल भाळौ। —खेतसी बारहठ

रोगण–सं. स्त्री.—१ रोग-ग्रस्त स्त्री।
२ देखो 'रोग' (रू. भे.)
उ०—श्रंग **रोगण** मेटि ढकै पर श्रोगण, क्रीति श्रमोघण रीति कियौ। प्रतपाळक बाळक रोग प्रजाळक, जोगणि चाळकनेच जयौ। —किरपाराम
३ देखो 'रोगन' (रू. भे.)

रोगन–सं. पु. [श्र. रोगन] १ चिकनाई, स्निग्ध पदार्थ, तेल, घी।
२ घी।
उ०—१ क्रपणा री मतवाळ की, करसण खारच खेत। नीर विलीणौ है नही, दत श्रन **रोगन** हेत। —बा. दा.
उ०—२ मिसटाण मसाला मोकळा, श्राटा **रोगन** ऊधडा। उदार चित कुमेर रा, कर भंडार खुला खुला रूड़ा। —बखतौ खिड़ियौ
उ०—३ परूसवारै को ऊरड़ ठांम ठांम सै लगी। चंडी भोग श्रनाजूं के गंजूं पर **रोगनूं** की छोळ वगी। —सू. प्र
३ लकड़ी या लोहे की वस्तुश्रों पर चमक लाने हेतु लगाया जाने वाला स्पिरिट, चमड़े, रूमीमस्तगी श्रादि के योग से बनने वाला एक प्रकार का घोल, वारनिश, पॉलिश।
४ मिट्टी के बरतनों श्रादि पर चढाने का लाख श्रादि से बना हुश्रा मसाला।
५ तेल।
६ बादाम का तेल।
रू. भे.—रोगण, रोगांन।

रोगनदार–वि.—[फा.] जिस पर रोगन किया हुश्रा हो।

रोगनासक–वि. [सं. रोगनाशक] रोग का नाश करने वाला, व्याधि को दूर करने वाला।

रोगनिदांन–सं. पु. [सं. रोगनिदान] किसी बीमारी के लक्षण श्रौर उत्पत्ति के कारण श्रादि की पहचान।

रोगनिवारक–वि.—बीमारी को उत्पन्न नही होने देने वाला।
उ०—नमौ हरि श्राप धनंतर होय, नमौ सब **रोगनिवारक** कोय। नमौ भ्रम-देह बिसभर धार, नमौ धर व्यापिय सोय मुरार। —ह. र.

रोगनी–वि.—जिस पर रोगन चढा हुश्रा हो।
उ०—घड़ पड़ै सभि घमसाण, प्रजळंत मुगळ पठांण। **रोगनी** खभ चितरांम, विकराळ भ्फाळ विरांम। —सू. प्र.

रोगलौ—देखो 'रोगी' (श्रल्पा. रू. भे.)
(स्त्री. रोगली)

रोगवाळ–वि.—रोगीला, रोगी, बीमार। (डिं. को.)

रोगहर, रोगहारी–वि.—रोग को मिटाने वाला। (डिं. को.)
स. पु.—१ वैद्य, चिकित्सक।
उ०—लायौ जाय **रोगहर** लांगौ, पिलग सहतौ सुण प्रबळ। देखै जाग रीछ कपि दोळा, दुसह राभ्फोला रांमदळ। —र रू
२ एक प्रकार का रत्न विशेष।
उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैडूरय सूरयकात नील महानील इद्रलील सयकर विभकर ज्वरहर **रोगहर** सूलहर विसहर हरिन्मणि चूनडी·········। —व. स.

रोगांन—देखो 'रोगन' (रू. भे)
उ०—भांति भांति के पकवान भांति भांति कै श्रनाज। **रोगांन** मसालै सै सूलूं की सीक वणावै। श्रनेक भांति के साग तिस का पार न पावै। —सू. प्र.

रोगांनी–वि. [श्र.] स्नेहयुक्त, घी या तेल में बना हुश्रा पदार्थ।
उ०—भांति भांति का मसाला **रोगांनी** रोसनी केसरिया चक्खी भांति भांति की मिठाई। —सू. प्र.

रोगातुर–वि.—रोग से आतुर. बीमारी से पीडित।

रोगित–वि.—रोगी, बीमार। (डि को.)

रोगिय—देखो 'रोगी' (रू. भे)

रोगियौ—देखो 'रोगी' (अल्पा., रू. भे)

उ०—**रोगियौ** आप माथै रिणौ, रोज दुख सुख नही रती। मोहनी देखि धरमसी महा, जाणै तोइन हुजै जती। —ध व. ग्र.

रोगिल—देखो 'रोगी' (रू. भे)

उ०—कुमरि मगावी मीनति करी, दीन्ही ऊमादै कुअरी। झाली अजी न मानी वात, **रोगिल** देस गड गुजरात। —ढो मा.

रोगी–वि [स. रोगिन्] रोग से पीडित, व्याधिग्रस्त, बीमार। (डि. को.)

उ०—१ जुगति विना जोगी मूवा, **रोगी** ओखद खाय। नाव ओखदी बाहिरौ, जीवन कैसे थाय। —अनुभववाणी

उ०—वैद मूवा **रोगी** मूवा मूँवा जुग जेहान। हरीया हरिजन ना मूँवा, हिरदै हरि का ध्यान। —अनुभववाणी

उ०—३ पीळिया रै **रोगी** इण चाद रौ नी तौ पूरौ उजास। फगत अपारा हुनर रै आडी देवै जैडी चादणी। नी व्हैतौ तौ काई कमी रैवती। —फुलवाडी

रू भे.—रोगिय।

अल्पा,—रोगलौ, रोगियौ, रोगिल, रोगीयौ, रोगीलौ।

रोगीयौ—देखो 'रोगी' (रू. भे.)

उ०—१ एक ओखदी बाहिरौ, विरह विथा नही जाय। जन हरीया जुग **रोगीया**, अनत ओखदी खाय। —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया सब जुग **रोगीया**, आखद खाय न एक। एकै ओखद बाहिरौ, मरि मरि जाहि अनेक। —अनुभववाणी

रोगीलौ—देखो 'रोगी' (रू. भे)

उ०—रहिया रोगीलाह, बोहळी विथा वियापिया। वेदनि वीचरियाह, तू दारू मिळियौ देवजी। —वील्हौजी

(स्त्री. रोगीली)

रोड़–सं. पु.—१ नगारा, नक्कारा।

स स्त्री.—२ कैद, बन्दीखाना।

[अं.] ३ सडक, रास्ता, राजपथ।

वि.—रोकने वाला, बाधा उपस्थित करने वाला।

देखो 'रोडौ' (मह; रू. भे.)

रू. भे.—रोड।

रोड़क–स. पु—धावा, हमला।

उ०—तद जांणीजै घाव जबरौ, नही तौ मोहनसिंह इसा लोहा नू छोड कई'क तखत री पूठ कान्ही खडा था त्यां साम्ही **रोड़क** कीन्ही। —महाराजा पदमसिहजी री वात

रोड़णौ–वि [स्त्री. रोडणी] १ रोकने वाला, अवरुद्ध करने वाला।

२ बजाने वाला।

उ०—हगू जिसा किकरा पधारै, कै वकरा हल्ला। जूधा जीत अनकरा, **रोड़णा** जोधार। —र. ज. प्र.

रोड़णौ, रोड़बौ–क्रि. स.—१ नगाड़ा, ढोल, आदि बजाना।

उ०—१ नमौ तूझ आतम मकति दुरंग अनड़ा नडण, रिमां दै झाट त्रबाट **रोड़ै**। हौड करता जिकै लडण हाथू कियौ, जिकै हाजर खडा हाथ जौडै। —दुरगादास आसकरणोत राठौड रौ गीत

उ०—२ **रोडै** बंबीला अराबा सोर घमावै जागियौ रोस, सेस धूनमावै केडै लागियौ सजाट। भूप ऊछाहरां साजै महुंडां तरिदां भेडै, रामेड गरिंदां छेडै नाहरा रंजाट। —महाराव राजा रांमसिघ हाडा रौ गीत

उ०—३ एक सहस मुखि त्रिण अधारै, बचिया जवन भूप भड वारै। रण करि फतै त्रवक डंड **रोड़ै** जोए कुवर सीस धड जोडै। —सू. प्र.

२ रोकना, अवरुद्ध करना।

उ०—मन तौ उणरौ हवा रै आगै उडतौ, उजास रै भेळौ पलकतौ, चादणी साथै झोला खावतौ अर बादळां रै माथै हीडतौ, पण काया उणरी गवाड़ी री कार रै माय **रोड़योड़ी** ही। —फुलवाड़ी

३ घेरना, आवेष्टित करना।

उ०—१ एको लाखा आगमैं, सीह कहीजै सोय। सूरां जेथी **रोड़ियै**, कळ हळ तेथी होय। —हा. झा.

उ०—२ कुरुदळ अति मोडउ बाणनी कोडि छोडउं, रणि नरवइ **रोड़उं** एह नू मान मोडउ। —सालिसूरि

४ बोलना, कहना।

उ०—रातौ झूझ विखम बच रोडै, जबर इसौ कुण जोमंड, मौ ऊभा सकर चौ कोमड, ताण भीच किण तोडै। —र. रू.

रोड़णहार, हारौ (हारी), रोड़णियौ—वि०।

रोड़िओड़ौ, रोड़ियोड़ौ, रोड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रोड़ीजणौ, रोडीजबौ—कर्म वा०।

रोड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ ध्वनि उत्पन्न किया हुआ, बजाया हुआ. २ रोका हुघा, अवरुद्ध किया हुआ. ३ घेरा हुआ, आवेष्टित किया हुआ ४ बोला हुआ, कहा हुआ।

(स्त्री रोडियोड़ी)

रोड़ी–सं स्त्री.—१ जहा, गोबर, फूस, पखाना आदि डालते है।

उ०—मुख ओडी रै माहिली, पर काचड़ा पुरीख। पटकै **रोड़ी** स्रवण पर, से चडाळ सरीख। —बा. दा.

२ नगाड़े या दुदुंभि की ध्वनि।

उ०—गडडै गयंद करता गोडि, रुडता दमांमां हुय **रोडि** । द्रम्मी वाज घोडा दौड़ि, पत्थर पथां भाजै पौड़ि । —गु. रू. बं.

३ एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—१ जोडी हूंदा घोर जम, **रोड़ी** हूंदा राव । हूं पचहारी हूलसी, वारी बालम आव । —वी. स.

उ०—२ चडै बेल वरियाम, सुजळ तै आगळ चंचळ । गरजि नाद गंभीर, **रोड़ि** रिणतूर त्रंबागळ । —गु. रू. बं.

उ०—३ अबंक नीसांण **रोड़ि** तूरारव, भेरी गुहीर सद्द ए । वरधू नफेर डोह सहनाई, जांणक मेघं नद्द ए । —गु. रू. बं.

रोड़ौ–सं. पु.—१ पत्थर या ईंट का बडा ढेला ।

उ०—काळी घणी कुरूप, कसतूरी कांटा तुलै । सक्कर घणी सुरूप, **रोड़ां** तुलै राजिया । —किरपारांम

२ विघन, बाधा, संकट ।

३ देखो 'रूड़ौ' (रू. भे.)

उ०—मतौ धारि पूरब्ब बन्नीत मेलै, पचीसेक **रीड़ै** कपी साथ पेलै । रमा वेस सातै बली उत्तराध, बिनै कोडी यक्कीस जै थाट बाध । —सू. प्र.

रू. भे.—रोड़ौ, **रौढौ** ।

मह.–रू. भे.—रोड़ ।

रोड़ौ-भोड़ौ–सं. पु.—युद्ध, लडाई, झगड़ा, कलह ।

उ०—ताहरां सिखरी तमकि अर घोड़ै असवार हुवौ । ताहरा भोटिंग हाथी हूय आडौ आय फिरियौ । सबळा **रोड़ा-भोड़ा** हुआ । —नैणसी

रोचक—वि. [सं.] १ रुचिकारक, रुचने वाला, अच्छा लगने वाला, प्रिय ।

२ मनोरंजन करने वाला, मनोरजक ।

रोचकता–सं. स्त्री.—रुचिकर या मनोरम होने की अवस्था या भाव, मनोहरता ।

रोचणौ, **रोचबौ**–क्रि. अ.—शोभायमान होना, फबना ।

उ०—परतख पग जळती पेखै नह पाई, डूगर बळती नै देखै दुखदाई । रचना ईस्वर री ईस्वरता **रोचै**, समदम स्रद्धा बिण संभव नहि सोचै । —ऊ. का.

रोचणहार, हारौ (हारी), **रोचणियौ**—वि० ।

रोचिओड़ौ, रोचियोड़ौ, रोच्योड़ौ भू० का० कृ० ।

रोचीजणौ, रोचीजबौ—भाव वा० ।

रोचन–वि.—[स.] १ शोभाप्रद, दीप्तिमान, मनोहर, प्रिय ।

२ पाकस्थली सम्बन्धी ।

स. पु. [सं. रोचनं, रोचनः] ३ कामदेव के पांच बांणो मे से एक ।

४ गोरोचन ।

५ घोडे की गर्दन के बालों का भूड़ा ।

स्त्री. सं.—६ सुन्दरी, स्त्री ।

रोचना–स. स्त्री.—१ गोरोचन ।

२ वसुदेव की एक पत्नी का नाम, जो राजा देवक की कन्या थी, इसके हेम एव हेमागद नामक दो पुत्र हुए थे ।

३ विदर्भराज रुक्मिन् की पौत्री, जो कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध की पत्नी थी । इसका विवाह भोजकटपुर में संम्पन्न हुआ था ।

४ एक लाल कमल ।

५ सुंदरी, स्त्री ।

रोचमांन–वि. [स. रोचमान] १ चमकता हुआ, चमकीला ।

२ मनोहर, सुन्दर, प्रिय ।

स. स्त्री—१ घोड़े की गरदन पर की एक भंवरी । (शा. हो)

स पु.—२ एक राजा, जो अश्वग्रीव नामक असुर के अंश से उत्पन्न हुआ था ।

३ राजद्वय, जो भारतीय युद्ध मे द्रोण के द्वारा मारा गया था ।

रोचि, रोची–स. स्त्री. [स. रोचिस्] १ दीप्ती, कान्ति, आभा ।

२ चारों ओर फैली हुई शोभा ।

३ किरण, रश्मि ।

उ०—पखै जारज न को अनेरा पतगरै, करै सोभाग आतम सकत कोड । हरै विकटोरिया रवी **रोची** हुवौ, रजै तण खूंद बळ रूप राठौड । —किसोरदांन बारहठ

रोज–सं. पु. [स. रुदन] १ रुदन, रोना-पीटना ।

उ०—अबूझ वना रौ उणियारौ देखूं तौ म्हारै सळीका ऊठै । घोड़ी माथै टेल नै पाछौ आय दाता रौ पूछै तौ म्हनै मतै ई **रोज** आय जावै । —फुलवाड़ी

२ शोक, कष्ट ।

उ०—१ तन दुख नीर तड़ाग, **रोज** विहंगम रूखड़ौ । विसन सलीमुख बाग, जरा बरक ऊतर जबल । —बा. दा.

उ०—२ महिमत देता मोज, घर बंठां घोड़ा घणा । रोव्या केरौ **रोज**, निजरा देख्यौ नोपला । —अग्यात

[फा. रोज] ३ दिन, दिवस ।

उ०—१ तद कोटवाळ कह्यौ, "औ हिरण तुमारा नहीं है, औ तो हमारै यहा वौहत **रोज** सै है, जो तुम कहते हौ तीन **रोज** हुवा है सो झूठे हो ।" —द. दा.

उ०—२ कमरणैत कही, "मैं ऐसा यलम देवुंगा, सो इनका तीर हाथी माय न अटकैगा ।" सौ अबै रोजी तीर बावै है सो दोय च्यार **रोज** हुआ । अरु या कबांण समाई । —राहब साहब री बात

अव्य०—४ प्रतिदिन, हमेशा ।

उ०—१ आलिंगी निज हरदयसरोज, घणू घणु प्रेमं रोज । समा-दिसति भूपति कल्याण, कुसल अत्र वरत्तइ सुविहाण । —वि कु.

उ०—२ जनहरीया जहा जाईयै, पखापखी नही काय । मूवा सोग न सादरौ, रोज न रोवै आय । —अनुभववाणी

५ देखो 'रोफ' (रू. भे.)

रू. भे.—रोजि, रोजी ।

रोजगार–स. पु.—१ कार्य, धन्धा, पेशा ।

उ०—वरसौ, तिलोकसी, दूदो, रायपाल रावळ जेसल कन्है रहै । इण नू सवणीपणौ रौ **रोजगार** जिसडो सवण हुवै, तिसडौ आय मालम करै । । —तिलोकसी भाटी री वात

२ जीवोकोपार्जन करने के लिये किया गया कार्य, व्यापार ।

३ वाणिज्य, व्यापार, व्यवसाय ।

४ वेतन, तनख्वाह ।

उ०—१ हमैं गाव सैसराम रौ पठांण सलेमसा नैं बैटो सेरखा अै दिल्ली मै पातसाहजीरी चाकरी घोड़ा हजार एक सूं करता हा पण वगसी सू वणै नहीं । सू **रोजगार** मिळै नही वरस दस हुवा अस्वाब बेच खाधौ । —द दा.

उ०—२ ताहरां रिणधीर पण कटक कियौ । **रोजगार** सारां नू चुकायौ । रजपूतां सारा ही कह्यौ—'थाहरै साथ छा । —नैणसी

उ०—३ ताहरा राजा पडवौ फेरियौ—जो चोर म्हारै मुजरै आवै तौ चोरी री तकसीर माफ करूं, सिरकार रौ **रोजगार** कर देवू । —राजा भोज अर खाफरै चोर री वात

५ दिन भर किये गये परिश्रम का पारिश्रमिक, मजदूरी ।

६ देखो 'रोजी' (रू. भे)

उ०—तिण सूं पुण्य रै ठिकाणै कर उण रा मिनख पूजा प्रभू री नू राखै, तिण रा **रोजगार** री भली भाति खबर लेय । —नी. प्र.

रोजगारी–स. पु. [फा. रोजगारी] १ व्यापारी, सौदागर ।

२ देखो 'रोजगार' (रू. भे.)

उ०—दूजै पाठसाळा स्थापित कर पडित तालबेइल्म **रोजगारी** बैठांणै तिकै धरम सास्त्र जे खलक नूं भणावै तिण रौ पुण्य उण नू होय । —नी. प्र.

रोजगारौ–स. पु—रोजगार पर कार्य करने वाला व्यक्ति ।

उ०—लै भडा रटाका पूर अरिंदा ताडब्बा लागा, महाबीर खीज मे पाड़ब्वा लागा मूंठ । वीर बेसताबा जहां दुवारा भाडब्बा लागा, **रोजगारा** खाती ज्यू फाडब्बा लागा रूठ । —सुखदान कवियौ

रोजनांमचौ, रोजनांमौ–स. पु. [फा. रोजनामचः] १ प्रतिदिन के कार्य का विवरण लिखने की पुस्तक ।

उ०—बता, म्हारै इण दूख रौ **रोजनांमचौ** दुनिया री सगळी बहिया मे किणी जुग पूरौ व्है सकै काई । बेटी ! म्हारी ऊमर पाया बिना इण दुख रौ मरम थारै हीयै परस नी करैला । —फुलवाडी

२ प्रतिदिन के आय-व्यय का विवरण लिखने की पुस्तक ।

रोजमेळ–स. पु—१ हमेशा के नकद लेन देन का विवरण रखने की बही ।

२ दैनिक हिसाब का मिलान ।

रोजांना–क्रि. वि. [फा. रोजानः] नित्य, प्रतिदिन, हमेशा ।

रोजाईद–स स्त्री. [फा. रोज + अ ईद] मुसलमानों की रोजो के ऐन बाद आने वाली ईद, ईदुल फितर ।

रोजायत–स. पु.—मुसलमान । (डिं को.)

उ०—**रोजायतां** तणै नव रोजै, जेथ मुसाणा जणै जण । हीदू नाथ दिली चै हाटै, 'पतौ' न खरचै खत्रीपण । —प्रथवीराज राठौड

वि.—रोजा रखने वाला ।

रोजि—१ देखो 'रोज' (रू. भे.)

उ०—आसथांन सदघटा आसता, ससत परखद समिति समाजि । समिजा गोठि छभा सुजि सोहै, **रोजि** हुवै चरचा ब्रजराज । —ह. नां. मा.

२ देखो 'रोजी' (रू. भे.)

रोजिना—देखो 'रोजीना' (रू. भे.)

रोजी–स. स्त्री. [फा.] १ नित्य का भोजन, जीवन निर्वाह का अवलम्ब ।

उ०—सिपाही अरज कीवी जै म्है सिपाही छां **रोजी** रै पगां चाकरी रौ इरादौ राखा छा । —दूळची जोइयै री वारता

२ जीविका ।

३ तनख्वाह ।

उ०—तद दीवान नौ मुहरौ कराय दियौ व रुपया बीस हजार दिवाय **रोजी** चढी थी सो चूकती दिराई । —दूळची जोइयै री वारता

४ प्रारब्ध, भाग्य ।

उ०—दादू **रोजी** राम है, राजिक रिजक हमार । दादू उस परसाद सौ, पोम्या सब परिवार । —दादूबांणी

५ देखो —'रोज' (रू. भे.)

उ०—कमरणैत कही, "मै ऐसा यलम देवुंगा, सो इनका तीर हाथी माय न अटकैगा ।" सो अबै **रोजी** तीर बावै है । सो दोय-च्यार रोज हुवा । अरु या कबाण समाई । —राहब-साहब री वात

रू. भे.—रोजि

रोजीदार–स. पु. [फा.] १ वह व्यक्ति जिसे रोजाना खर्च हेतु कुछ रुपया मिलता हो ।

२ वह व्यक्ति जो किसी रोजी (नौकरी) में लगा हो, नौकरीदार।

रोजीनदार-स. पु.—दैनिक मजदूरी लेकर कार्य करने वाला, मजदूर।

उ०—पछै रिपिया डेढसौ रोज खरच रौ रुक्कौ मेलियौ, सो नाकारौ मेल्हियौ, कही—म्है तौ **रोजीनदार** नही, म्है तौ कजियै रा धणी छा, बाबेजी रा दरसण करणौ नू ही आया छां।

— सूरे खीवें काधळौत री वात

रोजीना-वि.—नित्य का, रोज का।

उ०—तद राजा बो'त मेहरबांन हुय, गांव अेक पटै दियौ, रुपिया पाच ५) **रोजीना** कर दिया।

—राजा भोज अर खापरै चोर री वात

क्रि वि.—नित्य, प्रतिदिन, सदैव।

उ०—१ आप **रोजीना** कहता हा म्हारा कंत नें अै तौ बधे है सो आज इण जुद्ध में देख लेरावौ आप रौ देवर इतरा बधिया जिण रौ प्रताप हाथीया रा दांत उखेलै है। —वी. स. टी.

उ०—२ यौ लिखिया **रोजीना** आवै, सरब दिली री विगत सुणावै। वाधी हर मुहकम री वाधै, सैदा द्वार फिरै हित साधै।

—रा. रू.

उ०—३ करणसिंघजी औरंगाबाद विराजै है। उठै करणपुर मैं स्री करनीजी रौ मिदर करायौ। सू अजेस आरोगण रौ **रोजीना** छै। —द. दा.

उ०—४ **रोजीना** आपस में वेढां हुवै, सु सारा डीलां कट निवड़ि-या। मोहिलां री ठकुराई निबळी पड़ी। —नैणसी

रू. भे.—रोजिना, रोजीनौ

रोजीनौ—देखो 'रोजीना' (रू. भे.)

उ०—और महा पुरुखां रै रहणै नू ठोर बणावै उवै उठै आरांम सू रहै उणारै खांणै पीणै अर पहरणै रौ **रोजीना** करै तौ पुण्य पहोंचै। —नी. प्र.

रोजीबिगाड़-सं. पु.—जीविका निर्वाह के लगे हुए साधन को छोड़ने वाला, निकम्मा, निखट्टू।

रोजु—देखो—'रोजौ' (रू. भे.)

उ०—जे नितु **रोजु** करइ, नितह निम्माज गूंजारइ। पच वखत समधरइ, धणी जै एक सभारइ। —व. स.

रोजेदार-स. पु [फा. रोजे+दार] रोजा रखने वाला. मुसलमान। (मा म.)

रोजौ-सं. पु.—१ व्रत. उपवास।

उ०—संध्योपासन तजि बांग साज, निस दिवस वुजू **रोजा** निवाज। सामरत्थ सिंह हम नहि स्रगाळ, गौ मास नांम पै देत गाळि।

—ऊ. का.

२ मुसलमानो द्वारा रमजान के महीने में रखा जाने वाला ३० दिन का व्रत, उपवास जिसके अंतिम दिन चन्द्रदर्शन होने पर ईद होती है।

उ०—१ **रोजा** तीस दिनु का राखै, सारै पंच निवाजा। मन अपना कुं मारै नाही, मारै मुरगी ताजा। —अनुभववांणी

उ०—२ पाच बखत करि बंदगी, **रोजा** राखौ तीस जी। देव दसुध छूटै नहीं सही विसौवा वीस।

—दीन सुदरदी

३ देखो 'रौजौ' (रू. भे.)

उ०—पीर वहावुलहक रौ **रोजौ** मुलतांन रा किला में। पीर साह कुल आलम रौ ही रोजौ मुल्तांन रा किला मे है।

· बा दा ख्यात

रू. भे.—रोजु।

रोझ-स. स्त्री. [स्त्री. रोझड़ी] १ नर नील गाय।

उ०—१ सूअर संबर ससा सीआळ फिरइं आहेडी तीह ना काल। हरिण **रोझ** जइ दीठउं किमइ, आगलि मरण ति पांमइं तिमइ।

—वस्तिग

उ०—२ दस दस्स कोस मुकाम डेरा, खुरम खेल सिकार ए। संघरै नाहर **रोझ** साबर, अरस पंख उतार ए। —गु. रू. बं.

उ०—३ गरदां घर अंबर गूंधाळियौ, धमळागिर डूंगर धूघुळियौ। कटका विच मीर सिकार करै, म्रिघ नाहर संबर **रोझ** मरै।

—गु. रू. बं.

२ नील गाय के मिलते जुलते रंग का एक घोड़ा विशेष।

रू. भे.—रोज, रोझौ।

अल्पा.,—रोझड़ौ।

रोझड़ौ—देखो 'रोझ' (अल्पा;—रू. भे.)

उ०—१ काळवा कुही करड़ी कियाह, हांसला हरेवी नइ हलाह। **रोझड़ा** महुड़ा पीत रंग, तोरकी केवि ताजी तुरंग। —रा. ज. सी.

उ०—२ बड़ वेग उड्डत मध गरुड बेत, कागडा केक भोहा कमेत। **रोझड़ा** केक भसमय रग, तांमडा केयक नुकरा तुरग — पे. रू.

(स्त्री रोझड़ी)

रोझौ—देखो 'रोझ' (रू. भे.)

उ० – **रोझौ** निला गंगाजळ, हंसला नैण काजळ। अंम सेराहा अऊब, खैंग रोहला हाबूब। —गु. रू. बं.

रोट-सं. पु.—१ मोटी रोटी, बड़ी रोटी।

उ०—१ भोगवै कूं जून, खून गूंन तें भरचौ। कांम चून को **रोट**, न लूंन कौ करचौ। —ऊ. का.

उ०—२ बारट झरोखै बैसिसै, काइम हंदै कोटि। 'रेखी' बैठी राज मां, राणी करिसै **रोट**। —पी. ग्रं.

उ० – ३ खाय **रोट** जद टांस होयग्या, दीमा पलंग ढळाय। कुरड़

कुरड़ हुक्को ठळळावै, गूदडा दिया पकड़ाय । मारुणी धणा कमावणी । —लो. गी

२ प्रत्येक मगलवार व शनिश्चरवार के दिन हनुमानजी को चढाई जाने वाली बड़ी व मोटी रोटी ।

रू. भे.—रोटौ, रोठ ।

रोटकौ—देखो 'रोटौ' (अल्पा रू. भे.)

रोटड़ी—देखो 'रोटी' (अल्पा. रू. भे.)

रोटाक–वि —१ ज्यादा भोजन करने वाला ।

२ दूसरो के घर जाकर भोजन करने वाला ।

रोटी–स स्त्री.—१ चकले पर गेहूं, जौ आदि के आटे को बेल कर बनाई हुई चपाती जो आच पर सेक कर भोजन के रूप मे खाई जाती है।

उ०—जद हाळीडा घर नै आया, दीना थाळ लगाय । सेर-सेर दूधड़लौ घाल्यौ, दो-दो **रोव्यां** माय । मारुणी, धणी कमावणी । —लो. गी.

२ उक्त खाद्य पदार्थ के सिवा, चावल, दाल, तरकारी आदि के साथ एक समय प्रायः एक साथ बनाई जाने वाली कुछ विशिष्ट चीजें, रसोई ।

उ०—दोय रुपिया रा गेहुं मेल्या अधेली ना मूंग अनै एक रुपया रौ घी मेल्यौ । कह्यौ महाजन आवै जिणा नै पइसा लेइ **रोटियां** कर घालवौ कर । —भि. द्र.

३ भोजन, खाना ।

उ०—१ हरीया हक पिछाणीयै, अनहक सुं क्या कांम । जो कुछि सहजा देत है, रिजक **रोटीयां** रांम । —अनुभववाणी

उ०—२ जेठ सुदी ४ सनीवार मु:नैणसी दिन घड़ी ४ चढता पोकरण चालीयौ कोसै ४ गांव लोहवै पोकरण रै गाव **रोटी** खाधी । —नैणसी

क्रि. प्र.—करणी, खाणी, जीमणी, पकाणी, सेकणी ।

४ उक्त प्रकार की चीजे खाने हेतु किसी के यहा से मिलने वाला निमत्रण ।

क्रि. प्र.—दैणी, कैणी ।

५ सपत्ति, धन दौलत ।

उ०—जग में दीठौ जोय, हेक प्रगट विवहार में । और न मोटौ कोय, **रोटी** मोटी राजिया । —किरपाराम

अल्पा,—रोटडी ।

रोटीराव, रोटेराव–वि.—१ मेहमानों की अच्छी खातिर करने वाला, आतिथ्य सत्कार करने वाला ।

उ०—१ पण भीमजी रै बडेरा री कमांण दूजी तरै री ही । वै **रोटीराव** अर तरवार रा धणी हा । पीढियां लग उणा रै घरै आयोडौ मेहमाण भूखौ को गयौ नी । —रातवासौ

उ०—२ सोनगरौ अखैराज रिणधीरोत वडौ रजपूत । पाली पटै बालीसा सीधलां सू वडा-वडा काम जीतिया वडौ दातार, वडौ जुंझार, **रोटेराव** वडी चडा री खाटणहार । सवत् १६०० री वेढ काम आयौ । —राव मालदेव री बात

२ वैभव सम्पन्न, धनाढ्य ।

रोटौ–स. पु.—१ मावे के पेडे के आकार का अगारों पर सेका हुआ गेहूं का गोळ रोटा, बाटा ।

उ०—१ रूकां भात गोळिया **रोटां**, सुजडा घीरत सोहिता सार । सारा सरा साबळा सूळा, अण-रुचता पुरसिया अणपार । —सादै सेखावत री गीत

उ०—२ सो एकै दिन देपाळ धाडौ लेनै आवतौ । सो हरख री आप रै तळाव ऊपर गोठ कीवी । अठ मास राधौ । चावळ राधा । अर **रोटा** हुवै छै । —देपाळ धंघ री बात

वि. वि.—यह प्राय: दाल के साथ खाया जाता है । इसका चूरमा भी बनता है।

२ तुरन्त की ब्याही हुइ गाय, भैस या बकरी का दूध जो गरम करने पर जम जाता है ।

३ रहट के चक्र के बीच वाले लकडी के स्तम्भ के नीचे रक्खा जाने वाले लोहे का उपकरण ।

वि.—टेढा ।

देखो—'रोट' (रू. भे.)

मह.—रोठ ।

अल्पा.,—रोटकौ ।

रोठ—१ देखो—'रोट' (रू भे.)

२ देखो —'रोटौ' (मह., रू. भे.)

रोड–स. पु.—१ बोये हुए अनाज के अंकुरित होने पर तेज वर्षा के होने से अनाज के पौधे का विकृत होना ।

२ छोटा घोडा ।

वि.—१ दोगला, वर्णसकर ।

२ मूर्ख ।

उ०—तन अखत **रोड** डोलै तिकै, उर अतर सूं आफळै । इम पिमण घूंट पेछू उमग, होका दीठा हाफळै । —ऊ. का.

३ देखो 'रोढ' (रू. भे.)

रू. भे —रोढ ।

अल्पा.—रोडियौ ।

रोडणौ, रोडबौ—देखो 'रोडणौ. रोडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरा राजा नरसंघ रै साथ सीघळ, सोळंखी, हाडा,

भाखरसी, राव सरब नगारौ रोडता कोट मांहै आया ।
—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ तरुनिकर मोडतउ, वल्लिगहन त्रोडतउ, पाखांण रोडतउ, सुंडादंडि आच्छोडतउ, गिरिनदी विलोडतउ, महाभद्र डोहतउ,··· ············
—व स.

रोडणहार, हारौ (हारी), रोडणियौ—वि० ।
रोडिओड़ौ, रोडियोड़ौ, रोड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
रोडीजणौ, रोडीजबौ—कर्म वा० ।

रोडियोड़ौ—देखो—'रोडियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. रोडियोडी)

रोडियौ—देखो—'रोड' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—पिगळै ताखड़ा कवा हुंता प्रगट, भीक पुठापरै पडै जाभी । मठा नर वस रहुंता डरै मोढिया, रोडिया मार सू रहै राजी ।
—पीरदान आढौ

रोडौ—वि.—१ छोटे कद का, ठिंगना ।
रू. भे.—रोढौ
२ देखो—'रोड़ौ' (रू भे.)
उ०—कडीउ जांणइ रोडां, सोनी जाणइ सोनाकडां, कदोई जांणई वारुवड़ा हंस जाणइ क्षीर,मत्स्य जाणइ नीर, मुख जांणइ मीठा द्रस्टि जांणइ दीठा ।
—व. स.

रोढ—देखो—'रोड' (रू. भे.)
उ०—१ असली री औलाद, खून करचा न करै खता । बाहै वादोवाद, रोढ दुलाता राजिया ।
—किरपारांम
उ०—२ बाकरखां रोढ घोडै चढियौ बहै छै ।
—ठाकुर जैतसी री वारता

रोढणौ, रोढबौ—क्रि. स.—१ काटना ।
२ नष्ट करना, नाश करना ।
उ०—हरि तणै साथि कै रीछ वानर हुआ, भगत महिति रिखि इदजीत वाली भूआ । बाधिओ ममद घर असुर री बाढियौ, रांमचद आवि राकस घणौ रोढिऔ ।
—पी. ग्रं.

रोढणहार, हारौ (हारी), रोढणियौ—वि. ।
रोढिओड़ौ, रोढियोड़ौ, रोढचोडौ—भू. का. कृ. ।
रोढीजणौ, रोढीजबौ—कर्म. वा. ।

रोढियोड़ौ—भू. का कृ —१ काटा हुआ. २ नाश या नष्ट किया हुआ । (स्त्री. रोढियोड़ी)

रोढौ—१ देखो—'रोड़ौ' (रू. भे)
उ०—हिव राजा आप आइ-नै तळाव ऊपर बेठौ चेजौ करै । इतरै ज.जसमादे रोढा आणि नाखै ।
—जसमा ओडणी री वात

२ देखो—'रोड' (अल्पा; रू. भे.)

रोण—स. स्त्री. [स. रवण] ध्वनि, आवाज ।
उ०—गरज्जै दमामा गज थाट गुडिया, रिण तुर मैं भेर नीसांण रुडिया । असमान सू सीस लागा अभंगा, हुए पक्खरा रोण हाहूलि तुरगा ।
—गु. रू. बं.

रोणकियौ, रोणकौ—देखो—'रोवणकौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रोणकी)

रोणौ—देखो—,रोवणौ' (रू. भे.)

रोणौ, रोबौ—देखो—'रोवणौ, रोवबौ' (रू. भे.)
उ०—१ रिण रचियां मा रोइ, रोऐ रिण छांडै गया । इण धर तौ आगा लगै, मरणै मंगळ होइ ।
—मा. वचनिका
उ०—२ पछै बेटी नी तौ मां नै हुकम फरमावण री कीं बात करी अर नीं उणरी छाती में मूडौ घालनै रोई ।
—फुलवाड़ी
उ० ३ भूख न लागइ भाव सिउ, तरस न दीठा तोय । वारी न रहइ विधि किसी, आखि रही रहि रोय ।
—मा. का॰ प्र.

रोतासळौ—स. पु.—मोतियों से जड़ा हुआ 'छत्र' ।
उ०—लखीजै असी भांति आकाश लागौ, भवानी खड़ा पाण लीधां अभागौ । हमेसां रहै सत्रू रौ सीस हाथै, मुखै रत्र रोतासळौ छत्र माथै ।
—मे. म.

रोवंगी—वि.—१ जबरदस्त, भयंकर ।
२ क्रोधपूर्ण, क्रोधयुक्त ।

रोद—देखो 'रौद्र' (रू. भे.) (डिं को.)
उ०—१ समोभ्रम 'गोकळ' 'पातल' साह, बिभाड़त रोद खड़ा हुलवाह । महाभड़ सूर 'फतावत' 'मांन', तेगां झट रोद । हणै मसतान ।
—सू. प्र.
उ०—२ पुळियां घणां घणां गळि पाळै, रळतळिया पैलां खळ रोद । असपति दळां पडता आंम्ही, सांम्ही धार वढ्यौ सीसोद ।
—रावत केसरीसिंघ सीसोदिया रौ गीत
उ०—३ कूंणौ 'उगर' तठै अत कौड़ै, उदियासिंघ जेही पिण ओड़ै । रोदां कटक अटकिया राहै, 'सावळ' सूत जूटौ पतसाहै ।
—रा. रू.
उ०—४ रग भीम उतंग सुढाळै, रोदां मारूत मूकै मांण । मदमूक महाबळ प्रंम परघ्घळ, बारामास वसांण ।
—मा. वचनिका

रोदकार—देखो—'रौद्रकार' (रू. भे.)
उ०—रोदकार अरडाव, पडै गोळा अणपारा । व्है असि गज भड होंम, धोम मिळि घटा अंधारां ।
—सू. प्र.

रोदन—सं. पु. [सं. रोदनम्] १ रोने की क्रिया या भाव, रुदन, क्रन्दन, विलाप ।
उ०—विकथा चार कीधी वलि, सेव्या पंच प्रमाद । इस्ट वियोग

पड्या किया, **रोदन** बिखवाद। —स कु.

२ आसू।

रोदपत, रोदपति—देखो—'रौद्रपत' (रू. भे.)

उ०—सुरज कलग न तौ पत समहर, पहव ऊजास करै खडपाड। रणां **रोदपत** पत-रानौ रुकै, राजा सरस न मडै राड। —चावडदान बारहठ

२ देखो—'रुद्रपत' (रू. भे)

रोदराव—देखो—'रौद्रराव' (रू. भे)

उ०—रेवत चढिया **रौदराव**, वज जत्रक भेरी। माग न लाधै भाण रथ, रज डबर घेरी। —लूणकरण कवियौ

रोदसी—वि. [स.] स्वर्ग और पृथ्वी का।

रोदाळ—देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—१ पाळा बाधिया बडाळा भडां त्रमाळा घुरता चौडै, गैध-टाळां काळी घडा मेळिया गरीठ। अभगा औरगवाळा दिली वाळा वेध आटै, **रोदाळां** लकाळा बागौ किरम्माळा रीठ। —साहिजादां री वेढ रौ गीत

उ०—२ मछराळ रंढाळ रोसाळ मनै, विकराळ वडाळ जौ काळ-वनै। ढैचाळ भुजाळ **रोदाळ** ढहै, सत वीसाए सूर सधीर सहै। —पा. प्र.

रोद्र—देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—१ 'अखाहर' वाहत खाग उनग, जुडै जिम भारथ दारुण जग। वळौवळ लूबत **रोद्र** अजाग, भिडै सुजि सूर हुवै दुय भाग। —सू. प्र.

उ०—२ जगरांम विजावत काज जुद्ध, **रोद्र** सू खडौ आदर विरुद्ध। 'सामळ' खळ भजरण महा सूर, आरभ कुभ सुत खित अङूर। —रा. रू

उ०—३ केसरीसिंघ रामसिघ सबळसिंघ के जाए, राम बाण से अचूक **रोद्र** छोभ पाए। भावसिंघ सबळ का माडण सवाई, औछाह सी लागै जाकू साह की लड़ाई। —रा. रू.

रोद्रणी, रोद्रांणी—स. स्त्री.—१ यवन सेना, मुसलमानो की सेना।

उ०—मडै नव तेरही नवै ग्रह माडिया, ब्राह्मण फिरै नारद बिचाळै। **रोद्रणी** बीदणी छोहडा राळिया, रुधर तबोळ मुख हूंत राळै। —दुरसौ आढौ

२ मुसलमान की स्त्री, यवन स्त्री।

३ असुर सेना।

४ देखो—'रुद्राणी' (रू. भे.)

रोद्रांयणि, रोद्रांयणी, रोद्रायणि, रोद्रायणी—सं. स्त्री.—१ मुसलमानों की सेना, यवन सेना।

२ मुसलमान की स्त्री, यवन स्त्री।

३ असुर सेना।

उ०—घरि कौप करग्गा ग्रेह धजवड रूप रचि **रोद्रांयणी**। जळ त्रिमळ करै मजरण, चरग्गा चीर धीर चद्रायणी। —मा. वचनिका

४ देखो 'रुद्रांणी' (रू. भे.)

रोध—स. स्त्री. [स. रोध.] १ रोक, रुकावट।

उ०—१—टळै ढील लागां घणा फील टल्ला, हुठै नीठि पाइक्क हल्ला हमल्ला। तिका अग्ग हेरब कै छैल तूटै, छकायां सुरा **रोध** रै खेल छूटै। —वं. भा.

उ०—२ दूसरै बुरै न रहौ, **रोध** तै दियौ। आपनै बुरै पै अहौ, क्रोध ना कियौ। —ऊ. का.

२ अड़चन अटकाव।

उ०—सोध सोध गुण सारसौं, **रोध** बोध बुध रास। मुगधां करण प्रबोधमति, कवि कुळ बोध प्रकास। —क. कु. बो.

[सं. पु.] ३ आवेश, जोश।

४ क्रोध, गुस्सा।

[सं. रोधस्] ५ किनारा, तट। (अ. मा.)

उ०—निज सिर दै नागारजण, कियौ समर कर क्रोध। पाटण पत भाजै पडै, रेवा सागर **रोध**। —बां. दा.

६ जलाशयो या नदियों का बाध।

रोधक—वि.—रुकावट पैदा करने वाला, रोकने वाला।

रोधणौ, रोधबौ—क्रि. स.—१ रुकावट पैदा करना, रोकना।

२ कैद करना, बन्दी बनाना।

उ०—पति अलवर करि कोप, रामनाथ कवि **रोधियौ**। पग अगद ज्यू रोप, छत्रधर पता छुडावियौ। —अंबादान रतनू

रोधणहार, हारौ (हारी), रोधणियौ—वि०।

रोधिओड़ौ, रोधियोड़ौ, रोध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रोधीजणौ, रोधीजबौ—कर्म वा०।

रोधांण—सं पु—सहार, नाश।

उ०—ज्वाला वाळै नेत मीन केत ज्यूं पचातां जयौ, रूकां हूंर रचातां दळां विखम्मी **रोधांण**। राहां दहूं बीच एक अनम्मी 'बीजैस' राजा, जांणियौं जिहांन जम्मी ठांमतां जोधांण। —हुकमीचंद खिडियौ

रोधियोडौ—भू. का. कृ.—१ रुकावट पैदा किया हुआ, अवरुद्ध किया हुआ. २ कैद किया हुआ, बन्दी बनाया हुआ।

(स्त्री. रोधियोडी)

रोप—स. पु. [सं.] बांण, तीर। (डि नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ मणियां रयण अमोल, रोप अणिया मोती रुख । सोहत धणिया सीप, मिळै असिवर फणिया मुख । —व भा.

उ०—२ तिका हित हेत दगी नंह तोप, रही वजि रीठ बिहूं बळ रोप । जिका सणणकि भणंकिय जेह, सुवा भड भुम्मि हुवा धड सेह । —मे. म.

२ छिद्र, विवर ।

सं. स्त्री.—३ प्याज, मिरच आदि के पौधे विशेष को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगाने की क्रिया या भाव ।

४ उक्त उद्देश्य से उखाडे गये पौधे ।

५ स्थिर रहने की क्रिया या भाव ।

रोपण—सं. पु. [स. रोप] १ तीर, बाण । (अ. मा., ह ना. मा)

[स. रोपणं] २ रोपने की क्रिया या भाव ।

उ०—जगत ठाम जग सामि, **रोपण** जग रजण । जग वदण जग जेठ, जगत भेदण जग भंजण । —पी. ग्रं.

३ घाव पुरने की या घाव भरने की क्रिया । (अमरत)

४ घाव पुरने हेतु लगाई जाने वाली दवा ।

वि.—रोपने वाला ।

रोपणी— स. स्त्री.—१ फाल्गुन मास की स्मृति या होलिका सकेत के निमित्त माघ मास की पूर्णिमा को जगल से काट कर लाया हुआ वह शमी वृक्ष जो गाव के मुख्य द्वार पर खड़ा किया जाता है ।

उ०—अरध ऊरध बिच रूपी **रोपणी** पाचुई गेहर रमो री । तीन गुणारौ फागुण कीजै, वसत पचीस करो री । —स्री हरिरामजी महाराज

वि. वि.—कई गावों में यह गाव के चौहटे पर कही मुख्य द्वार पर, कही होली जलाने के स्थान पर खड़ी की जाती है ।

२ रोपने का कार्य ।

रोपणौ रोपबौ—क्रि. स.—१ स्थिर करना, पांव जमाना ।

उ०—१ रावतिया पग **रोपसी** बतळामी थह वाघ । बौहळा पाटा बाधणां, आछौ होसी आघ । —बा. दा.

उ०—२ पर गढ लेणा **रोप** पग, अरि सिर देणा तोड । धरा हूंत नहिं धापणौ, खूंदालमा न खोड़ । —बां. दा.

उ०—३ जितै करै हट पाहुणौ, इतै करै हट एह । पग थिर **रोपै** पाहुणौ, एह हुए असनेह । —बा. दा.

उ०—४ पातसाह री खूनी आगै भी म्होबतखा देवगढ़ हीज सरणै रहियौ । दूजा राजा राणा राव सो तौ पातसाहा सू कोई न **रोपै** पाव । - प्रतापसिघ म्होंकमसिध री बात

२ ठानना, निश्चय करना ।

उ०—१ **रोपी** अकबर राड़, कोट भड़ै नंह कागरै । पटकै हाथळ सीह पण, बादळ न्है नह बिगाड । —बा. दा.

उ०—२ इतरी कह मोहकमसिंह नु थथोपियौ । पण औ तौ कोपियौ सौ कोपियौ । मुहडै अण-माप रौ रोस व्यापियौ । मन माहि भीलडै नु मारण रौ दाव **रोपियौ** ।
—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री वात

उ०—३ एक तौ नगारौ धणिया रातैनाडै बाजै औ, दूजोडौ नगारौ घणिया ठेट बाजै औ क झगडौ **रोपियौ** । वा वा झगडौ **रोपियौ**, गौरा रा माथा कवरा लीधौ औ क झगडौ **रोपियौ** । —लो. गी.

३ किसी कडी या नुकीली चीज को किसी पदार्थ मे धसाना या गडाना ।

उ०—१ बार अध्रियावणी वीर किलकै बकै, धीठ कठठै धड दीठ धोळै । सार साचा तणौ निजड हरनाथ सुत, **रोपियौ** पटा-झर सीस रौळै । —विजैदान सादू

उ०—२ औपम नयण धिखतां आरण, दाखै सूर 'विहारी' दारण । हाथिया तणा जगी हवदा में, **रोपूं** सेल घडा रवदा में । —सू. प्र.

४ किसी पदार्थ का कुछ अश या भाग जमीन के अन्दर इस प्रकार जमाना या स्थापित करना कि वह पदार्थ वहा स्थित हो जाय ।

उ०—हरीया चौरी चहु दिसा, सत व्रत **रोप्या** थभ । हरि हथ-ळेवौ हरख सू, किरत कमाई कभ । —अनुभववाणी

५ खडा करना, टिकाना, रोकना, ठहराना ।

६ दृढता पूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकाना, डटाना ।

७ बीज रखना, बोना ।

८ पौधा जमीन मे गाडना, किसी पौधे को एक स्थान से उखाडकर दूसरे स्थान मे जमाना, स्थापित करना ।

उ०—उपसम तरुवर **रोपइं**, लोपइं मनसंदेह । मुक्ति तणउ पथ दाखिय, राखिय त्रिभुवन रेह । —जयसेखर सूरि

९ सम्बन्ध स्थापित करना ।

उ०—लोपै हींदू लाज, सगपण **रोपै** तुरक सू । आरज कुळ री आज, पूजी राण प्रतापसी । —दुरसौ आढौ

१० धारण करना, पहनना ।

उ०—पोरस्स नकुळ पडव प्रमाणि, तब बधै जूसण कसण ताणि । ओपत राग हाथा अनोप, तुडताण सीस **रोपंत** टोप । —गु. रू. ब.

११ मकान, भवन आदि की नींव लगाना ।

रोपणहार, हारौ (हारी), रोपणियौ—वि० ।

रोपिओड़ौ, रोपियोड़ौ, रोप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

रोपीजणौ, रोपीजबौ—कर्म वा० ।

रोपाणौ, रोपाबौ—क्रि. स. [रुपणौ व रोपणौ क्रिया का प्रे. रू] १ स्थिर करवाना, पाव जमवाना ।

२ निश्चय करवाना ।

३ किसी कडी या नुकीली चीज को किसी पदार्थ में धसवाना, गडवाना ।

४ किसी पदार्थ का कुछ अंश या भाग जमीन मे इस प्रकार जमवाना या स्थापित करवाना कि वह पदार्थ वहा पर स्थित हो जाय ।

५ खडा करवाना, टिकवाना, रुकवाना, ठहराना ।

६ दृढतापूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकवाना, डटवाना ।

७ बीज रखवाना, बुवाना ।

८ किसी पौधे को एक स्थान से उखडवा कर दूसरे स्थान पर जमवाना, स्थापित करवाना, पौधा जमीन मे गडवाना ।

९ रखवाना ।

१० धारण करवाना, पहनवाना ।

११ मकान, भवन आदि की नीव दिलवाना ।

उ०—पछै घणौ साथ राखियौ । घणा घोडा लिया । गढ धातण री राग **रोपाई** । भीत हूण लागी, सु उठै खेड़ा देवत,सु भीत दीहा री करै तिसडी रात री पाड नाखै वाज आयौ । —नैणसी

१२ सम्बध स्थापित करवाना ।

रोपाणहार, हारौ (हारी), रोपाणियौ—वि ।
रोपायोडौ—भू का. कृ. ।
रोपाईजणौ, रोपाईजबौ— कर्म वा. ।
रोपाड़णौ, रोपाड़बौ, रोपावणौ, रोपावबौ । (रू भे.)

रोपाडणौ, रोपाड़बौ-देखो—'रोपाणौ, रोपाबौ' (रू. भे)

रोपाड़णहार, हारौ (हारी), रोपाड़णियौ—वि. ।
रोपाड़िओड़ौ, रोपाड़ियोड़ौ, रोपाड़्योड़ौ—भू का कृ. ।
रोपाड़ीजणौ, रोपाड़ीजबौ—कर्म वा. ।

रोपाड़ियोड़ौ—देखो 'रोपायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री रोपाड़ियोड़ी)

रोपायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ स्थिर करवाया हुआ, पांव जमवाया हुआ. २ निश्चय करवाया हुआ. ३ किसी पदार्थ का कुछ अंश या भाग जमीन मे इस प्रकार जमवाया या स्थापित करवाया हुआ होना कि वह पदार्थ वहा पर स्थित हो गया हो. ४ किसी कडी या नुकीली चीज को किसी पदार्थ में धंसवाया हुआ, गडवाया हुआ. ५ खड़ा करवाया हुआ, टिकवाया हुआ, रुकवाया हुआ, ठहराया हुआ. ६ दृढतापूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकवाया हुआ, डटवाया हुआ. ७ बीज रखवाया हुआ, बुवाया हुआ. ८ किसी पौधे को एक स्थान से उखड़वा कर दूसरे स्थान पर जमवाया हुआ, स्थापित करवाया हुआ, पौधा जमीन में गडवाया हुआ. ९ रखवाया हुआ. १० धारण करवाया हुआ पहनाया हुआ. ११ मकान भवन आदि की नीव दिलवाया हुआ. १२ सम्बध स्थापित करवाया हुआ.
(स्त्री. रोपायोड़ी)

रोपावणौ, रोपावबौ-देखो—,रोपाणौ, रोपाबौ (रू. भे.)

रोपावणहार, हारौ (हारी), रोपावणियौ—वि. ।
रोपाविओड़ौ, रोपावियोड़ौ, रोपाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।
रोपावीजणौ, रोपावीजबौ—कर्म वा. ।

रोपावियोड़ौ-देखो—'रोपायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. रोपावियोडी)

रोपियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ स्थिर किया हुआ, पाव जमाया हुआ. २ ठाना या निश्चय किया हुआ. ३ किसी कडी या नुकीली चीज को किसी पदार्थ में धसाया हुआ, गडाया हुआ. ४ किसी पदार्थ का कुछ अंश या भाग जमीन के अन्दर इस प्रकार जमाया या स्थापित किया हुआ होना कि वह पदार्थ वहां स्थित रहे । ५ खड़ा किया हुआ, टिकाया हुआ, रोका हुआ, ठहराया हुआ. ६ दृढता पूर्वक मुकाबला करने हेतु एक स्थान पर टिकाया हुआ,डटाया हुआ. ७ बीज रखा हुआ, बोया हुआ. ८ किसी पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान में जमाया हुआ, स्थापित किया हुआ. ९ रखा हुआ. १० धारण किया हुआ. पहना हुआ, ११ मकान, भवन आदि की नीव लगाया हुआ. १२ सम्बन्ध स्थापित किया हुआ ।
(स्त्री. रोपियोड़ी)

रोब–स. पु. [फा.] १ आतंक दाब ।

२ प्रताप, तेज ।

३ धाक, डर ।

रू. भे.—रौब ।

रोबणौ, रोबबौ—देखो 'रोवणौ, रोवबौ' (रू. भे.)

उ०—स्वात को सुसांति, साति सोवण करचौं । धोवनूं न कीन ताहि, **रोबबूं** परयौ । —ऊ. कां.

रोबणहार, हारौ (हारी), रोबणियौ—वि० ।
रोबिओड़ौ, रोबियोड़ो, रोब्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
रोबीजणौ, रोबीजबौ—कर्म वा० ।

रोबदार–वि [अ+फा.] जिसकी धाक है । जिसका चहरा तेज है ।

रू. भे.—रौबदार ।

रोबियोड़ौ-देखो—'रोवियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री रोबियोड़ी)

रोबीलौ-वि.—१ जिसका रोब हो।

२ जिसकी धाक हो।

३ जिसका चेहरा रोबदार हो।

रू. भे.—'रौबीलौ'

(स्त्री. रोबीली)

रोबौ, रोभौ-स. पु.—१ आपत्ति, कष्ट, तकलीफ।

उ०—१ पहली कियां उपाय, दव दुसमण ग्रामय दटै। प्रचड हुवा बस वाय, **रोभा** घातै राजिया। —किरपाराम

उ०—२ धण खोभा लै गाळवा, पिसण **रोभा** पाड। जै सोभा जोधो लियै, घर थोभा बण धाड। —रेवतसिंह भाटी

उ०—३ बेरा बैरागर सागर सम सोभा, रीती गागर लै नागर तिय **रोभा**। धावै द्रगधारा दारा मुख धोवै, जीवन संजीवन जीवन घन जोवै। —ऊ. का.

रोमंच-देखो—'रोमांच' (रू. भे.)

उ०—**रोमंच** ग्रंग धोम रूप, ब्रह्म तेज में वणे। जटा स छमटा जडागि, ग्राग नेत्र ऊफणे। —सू. प्र.

रोमंचणौ, रोमंचबौ-क्रि. ग्र.—१ रोमाचित होना।

उ०—१ एतला देख ग्रचिरज हुवै, रोमंचै सुर नर सवै। सुप्रसाद कीध जै सिंघ तै, टगमग चाहै चक्खवै। —लक्ष्म भाट

उ०—२ जिनवर भत्ति समुल्लसिय, **रोमंचिय** निय ग्रंग। नांना विधि करि वरणवुं, ग्रांणी मनि उछरंग। —स. कु.

रोमंचणहार, हारौ (हारी), रोमंचणियौ—वि.।

रोमंचिग्रोड़ौ, रोमंचियोड़ौ, रोमंच्योड़ौ—भू. का कृ.।

रोमंचीजणौ, रोमंचीजबौ—भाव वा.।

रोमंचियोड़ौ-भू. का. कृ.—रोमांचित हुवा हुग्रा।

(स्त्री. रोमचियोड़ी)

रोम- सं. पु. [स. रोमन्] १ शरीर पर के महीन बाल, रोग्रां।

(ग्र. मा.)

उ०—१ छत्रपति हूँत सहस गुण छाजै, वीरभद्र गण तठै विराजै। **रोम** जटा ऊभा विकराळा काळा **रोम रोम** ग्रहि काळा। —सू. प्र.

उ०—२ सो मूरख ससार, कपट जिणां ग्रागळ करै। हरि सह जाणणहार, **रोम रोम** री राजिया। —किरपाराम

उ०—३ काय निपाप करिस इम केसव, दडवत करै तूझ दयता-दव। **रोम रोम** तौ नाम रहाविस, इम करतौ हरि-चरण ग्राविस। —ह. र.

उ०—४ **रोम रोम ग्रांमय** रहै, पग पग सकट पूर। दुनियां सू नजदीक दख, दुनियां सं सख दूर। —बा दा

रू. भे.—रु ं, रुग्र, रुग्रौ, रुंम, रु, रू ं रू, रूम।

२ छेद, छिद्र।

३ शरीर के बालों के छिद्र जिनमें से बाल निकलते रहते हैं।

उ०—बध्यौ बळ घी गल कंज विकास, प्रभा परिपूरण प्रेम प्रकास। हरदै हुय नाम हली हमगीर, सवी रग **रोम** खुली मुख सीर। —ऊ का.

उ०—२ ग्रखड एक ररंकार की, **रोम रोम** धुनि होय। जनहरी-या जा तन लगी, ता तन जाणै सोय। —ग्रनुभववांणी

४ जल, पाणी।

५ रूम देश।

उ०—'''पक्करण चुकरण कुडक्क तोसल सिंहल दमिल ग्रज्जल विल्लल पारस खस लउस हारो समोस-हिम **रोम** मरुग......। —व. स.

६ रूम देश मे उत्पन्न घोड़ा।

७ घोड़ा।

उ०—चढै उमेद सु ग्रोपम चद, दिपै दळ ग्रोरन तारन ग्रंद। ग्रभगिय **रोम** हुवौ ग्रसवार, दिपै चहूवाण सुकान उदार। —सि. सु. रू.

रू. भे.—रूमी

८ हरड़, हरै, हरीतकी। (ह. ना. मा.)

९ एक द्वीप का नाम। (सभा)

रोमकंद, रोमकंदी-स. पु.—प्रत्येक चरण मे ८ सगण का डिंगल (राजस्थानी) का एक छंद विशेष जिसमें क्रमशः ६, ६, ८ ग्रौर ६ वर्णों पर यति होती हैं ग्रौर ग्रन्तिम चरण के दूसरे छद के चतुर्थ चरण में पुनरावृत्ति होती है। एक पूरे छन्द मे ३२ सगण होते हैं।

रोमक-सं. पु.—१ नमक जो सांभर झील के पानी से उत्पन्न हुग्रा हो।

२ रोम देश या उक्त देश का निवासी।

३ ज्योतिष सिद्धान्त का एक भेद।

रोमकूप-स. पु. [सं. रोमन् + कूपः] शरीर की चमडी पर के वे छिद्र जिन में से बाल निकले हुए होते है।

रोमकेसर-सं. पु. [स. रोमन् + केशर या केसरं] चवर, चामर।

रोमगुच्छ-सं. पु. —चवर, चामर।

रोमचरमा-सं. पु.— वह बर्तन जो ऊंट के चमड़े का बना हुग्रा होता है।

उ०—सर्वंगि सीस मूंडित बिहाल, मग लोपि जात बामांग व्याल धृत पात्र **रोमचरमा** निहार, क्रम हीन रजक द्विज हेमकार। —ला. रा.

रोमछर-सं. पु—१ मूर्ति।

२ शारीरिक कान्ति, शोभा।

उ०—पिलाण री साजत ऊची दीठी । तरै छानै छै विडा माहै दीठी बाडजी रै बर री सबी दीसै छै । नाक री डांडी, आख्या, निलाड डील **रोमछर** देखि सही कवरजी ही छै ।

—जगदेव पवार री बात

रोमणकाच–स. पु.—एक प्रकार का आईना विशेष ।

उ०—राजा सु प्रतीहारि निवेदित मारग हूंतउ आस्थान मडपि प्रवेस करइ, ता आगइ किसिउ अरथ देखइ, **रोमणकाच** ढालिउ, बहुल बहुल कुकुम तणाउ छडउ दीधउ,······ । —व. स

रोमत–स. पु—लालायित होने की क्रिया या भाव

रोमनकैथलिक–स. पु.—ईसाईयो का एक सम्प्रदाय तथा इस सम्प्रदाय का व्यक्ति ।

रोमपट– स पु यौ—ऊन से बना हुआ कपडा, ऊनी कपडा ।

रोमबद्ध–वि यौ.—रोओं से बुना या बंधा हुआ ।

स पु.—१ ऊन की बनी हुई कोई चीज ।

२ ऊनी कपडा ।

रोमभूमि–स. स्त्री. यौ [सं. रोमन् +भूमिः] चमड़ा, चर्म ।

रोमराइ, रोमराजी–स. स्त्री. यौ. [स. रोमन् +राजिः या राजी]

१ रोमो की पक्ति, रोमावलि ।

उ०—१ कचन मे सोपान सुपेखित, **रोमराइ** उलसाई । आगै एक भुवन अति सुंदर, वसुधा जांणि हसाई । —वि कु.

उ०—२ कवीसर कहै जिका सुण लैणी, पिण कठै त्रिवळी नै कठै त्रिवेणी जोइजै है । —र हमीर

रोमलता–स. स्त्री. [स रोमन् +लताः] रोमो की पक्ति, रोमावली ।

रोमांच–स. पु. [रोमन् +आञ्च] आनन्द, आश्चर्य या भय आदि के कारण शरीर के रोओ का उभर जाना या खडे हो जाना ।

उ०—नेण थमौ बिसराम नीचगिर परबत माथै । घण पुहुपा **रोमांच** मिलता कदमा साथै । गधै खोह, सुगध विलासण कामणि-या रै, मद छक जोबन पूर जतावै गण पुरखा रै । —मेघ

क्रि. प्र.—होणौ

रू. भे.—रोमच

रोमांचित–वि. [स रोमन् +अञ्चित] जिसके आनन्द. आश्चर्य या भय आदि के करण शरीर के रोगटे खड़े हो गये हों, हर्षित, पुलकित ।

उ०—आणद लखण **रोमांचित** आसू, वाचक गदगद कठ न वर्ण । कागळ करि दीधौ करुणाकरि, तिणि तिणि हीज ब्राह्मण तर्ण । —वेलि

रू. भे.—रुमांचित

रोमांत–स. पु. [स. रोमन् +अन्त] हथेली की पीठ के बाल ।

रोमांतिका–स. स्त्री. [स.] प्रायः बच्चों को होने वाला एक प्रकार का रोग विशेष जो कि चेचक रोग की तरह का होता है ।

(अमरत)

रोमाळी, रोमावळ, रोमावळि, रोमावळी–स. स्त्री [सं. रोमन्+आली, आवलि, आवली] १ रोओं की पक्ति या कतार । (अ. मा, डिं को, ह ना मा.)

२ पेट के बीचों बीच नाभि से ऊपर की ओर गई हुई रोओं की पक्ति, रोमराजी ।

उ०—सुच्छम **रोमावळि** सुखद, बरणी उकति बिचार । सांप्रति रस सिणगार री, बेल कियौ बिसतार । —बां. दा.

३ शरीर के बाल ।

उ०—१ बसै तू **रोमाळी** कवन, थळ खाली तुज बिना । लखां से चोंचाळी कल कि, बळ साळी अज किनां । —ऊ. का.

उ०—२ **रोमावळी** डील री उभरी निजर आवण लागी ।

—कुंवरसी साखला री वारता

वि.—२ सुदर, रूपमयी ।

उ०—पीडळिया **रोमाळियां** हो जी, बै री जाघ देवळ केरो थांम । हे गवरल, रुडौ है नजारौ तीखौ है नैणा रौ । —लो. गी.

रू भे.—रुंआळी, रुवाळी, रुआमाळ, रूआमाळी, रुंआळी, रुंआवळ, रुंआवळी, रुवाळी, रूणावळी

रोमि–देखो—'रोम' (रू. भे)

रोयड़ौ–देखो—'रोहिड़ौ' (रू. भे)

रोयण–देखो—'रोहिणी' (रू. भे.)

उ०—मिगसर वाव न वजियौ, **रोयण** तपी न जेठ । कंथा म बाधै झूपडौ, रहसा बडला हैठ । —अज्ञात

रोयणी–देखो—'रोहिणी' (रू. भे.)

रोयणीपत, रोयणीपति, रोयणीपती—देखो 'रोहिणीपति' (रू. भे.)

रोयतास—देखो 'रोहितास' (रू. भे.)

रोर–स पु.—१ कगाली, निर्धनता ।

उ०—१ सिर जोर खग दत सजण, पह **रोर** आमय पंजण । भड जुध असता भंजण, रघुराज सता **रंजण** । —र. ज. प्र.

उ०—२ कवी कीत दाखै जिता **रोर** कापै, अनेका कुमेरां जिता माल आपै । अपै डायजै भूप अन्नेक अत्थ, राजा ओपि पंथ चडै दासरत्थ । —सू. प्र.

उ०—३ रज रीति रहै वस वाट वहै अरि थाट दहै अविआट इसौ । अथ लाख अपै कवि **रोर** कपै, जगि नांम थपै क्रन भोज जिसौ । —ल. पिं.

२ दुःख, कष्ट ।

उ०—खळक तारण तरण खळां खंडण खतम, **रोर** जण विहंडण

सुखद सरसै। सियावर तूझ सौ तुही दाखै सकौ, दूसरौ समौबड न कौ दरसै। —र. रू.

३ काला, श्यामवर्ण। * (डिं. को.)

४ तरल हलुवा।

उ०—ग्रोगण मेटणहार, ग्रमोलख ग्रोखद इण में। गूंद घणौ गुण-कार, ग्रव्यय सक्ति है जिण मे। छिण मै पीड़ छटाय, हाड टूटोडा सांधै। बूढौ बाळक वणै, रोर जच्चा नै राधै। —दसदेव

[स. रवण] ५ कोलाहल, शोरगुल।

६ कोतुहल।

७ देखो—'रोड' (रू भे.)

रू. भे.—रोरि।

रोरप्रचार-सं. पु.—दुःख, कष्ट। * (डिं. को.)

रोरव-सं. पु.—१ कंगाली, निर्धनता, दारिद्रय, निध।

उ०—कवियण सनातन जांण नव करै, दोर **रोरव** तणौ हरै रहणौ। गयौ किण दिन ग्रहळ प्रथी घण गाजणौ, किसन रा पोतरा तणौ कहणौ। —कविराजा बांकीदासजी

२ देखो 'रौरव' रू. भे.।

रोरहर-सं. पु.—राजा, नृप। (डिं. को.)

रोरहरणाळ-वि.—१ दुःखों को मेटने वाला।

२ दातार, उदारमना।

उ०—'वीर' तणौ नर वीर वड, तरण रूप तेजाळ। 'चद' प्रवाड़ा जग चवौ, हुवौ **रोरहरणाळ**। —किसनजी दधवाडियौ

रोरांकुर-स. पु.—कष्ट, दुख।

उ०—बळदां गाडां सळ पाडां पर बोरा। छोटा डोरातर **रोरांकुर** छोरा। करणा दरसावै केटा वरकड़िया। जूती फाटोड़ी बाधी जेवड़िया। —ऊ. का.

रोरि—१ देखो 'रोर' (रू. भे.)

उ०—भगवती ग्रावौ भाई, मूझ मदत स्रीमहमाई। नित पढै प्रहस मे नांम, त्यां **रोरि** भंजि विराम —मा. वचनिका

२ देखो 'रोळी' (रू. भे.)

रोरी—देखो 'रोळी' (रू. भे.)

उ०—वीणा डफ महुयरि वस वजाय ए, **रोरी** करी मुख पंचम राग। तरुणी तरुण विरहि जण दुतरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग। —वेलि

उ०—२ ग्रबीर गुलाल उडावत **रोरी**, डफ दुदभी वाजत थोडी थोड़ी —मीरां

रोलंब-सं. पु. [सं. रोलम्ब] १ भौंरा, भ्रमर। (ग्र. मा; ना. मा. ह. ना. मा.)

उ०—१ रचै लार गुंजार **रोलंब** राजी, भगाणां भडा रोध ग्रो लब भाजी। —व. भा.

उ०—२ हर समरौ होसी हरी, जीते जम रौ जंग। कर उदिम **रोलंब** करै, भमरौ कीटी भ्रंग। —र. ज. प्र.

रोळ, रोल-स. स्त्री.—१ ध्वनि, ग्रावाज।

उ०—१ धुरजाळ खडत सैभर धणीह, तिम वजत **रोळ** घूघर तणीह। —पा. प्र.

उ०—२ त्या पातरै वडौ छत्र पडियौ, बोटण गढा ग्रथग जळ-बोळ। नेवर **रोळ** किया ग्रगनैणी, राणै कियौ न पाखर **रोळ**। —राणा माडण रौ गीत

२ स्त्रियो के पैरों मे धारण करने का छोटे घुंघरुदार एक ग्राभू-षण विशेष।

३ दल, समूह।

उ०—१ पार विहुणा पखिया, राजहंस ना रोळ। उचा नीचा उडता, झाझा करइ झकोळ। —मा. का प्र.

४ उबटन, लेप।

उ०—ग्रागळि भेटिइ उरवसी, घसी सु चंदन घोळ। को सज्जन कोडे करई, कुंकुम केरा **रोळ**। —मा. कां. प्र.

५ युद्ध।

उ०—रूका **रोळ** दरोळ दळ, भमण लगौ भूगोळ। चौळ नजर 'पातल, चढै. हाहुल सिंध हिलोळ। —किसोरदांन बारहठ

६ चारो ग्रोर उपद्रव व फसल को हानि पहुंचाने वाला पशु, हरहाया।

७ चिल्लाहट, शोरगुल।

८ भय, ग्रातंक, डर।

९ उपद्रव, उत्पात।

वि.—१ ग्रावारा फिरने वाला।

उ०—**रोळ** व्है डफोळ डावांडोल में रह्यो। मांगणौ ग्रमोल गोळ मोळ में रह्यो। —ऊ. का.

२ बदचलन, चरित्रहीन।

४ उत्पाती, उपद्रवी

उ०—१ **रोळ** बिगाडे राज नूं, मोळ बिगाड़ै माल। सनै सनै सर-दार री, चुगल बिगाडै चाल। —बां. दा.

५ देखो—'रौळ' (रू. भे.)

उ०—बोखो ग्राय ग्रभागै बैठै, रस पागै प्रिय **रोळ**। मूरख रै लागै तन मिरचा, त्यागै तुरत तमोळ। —ऊ. का.

रोळगिदोळ-सं. स्त्री —१ बने बनाए कार्य या पदार्थ को नष्ट करने या मिटाने की क्रिया या भाव।

उ०—चाद किरण मिळ पवन सूं, टीवा करी किलोळ। पीळँबादळ खोजळँ, लूंग्रा रोळगिदोळ। —लू

रोलड़-स. पु.—१ उर्वरा शक्ति बढाने हेतु कुछ समय बिना जुताई बुवाई के खेत को छोड़ने की क्रिया।

२ उक्त प्रकार से परती छोडी हुई जमीन या खेत। इजराग्र

रोळण, रोळणौ–वि [स्त्री. रौळणी] १ विध्वस करने वाला, संहार करने वाला, मारने वाला।

उ०—१ नमौ पहु सायर बांधण पाज नमौ रिपु-रावण-**रोळण** राज। —ह. र.

उ०—२ रहच खळा दळ **रोळणा** वीर उभै वरियांम। 'किचमर' 'पातल' रै करा, लदन तणी लगाम। —किसोरदान बारहठ

रोळणौ, रोळबौ, रोलणौ, रोलबौ–क्रि. स.—१ बजाना, ध्वनि युक्त करना।

उ०—रमझम पाखर **रोळती**, घम घम पौडा घम्म। घम घम पाबू धीरपै, खम खम घोडी खम्म। —पा प्र.

२ प्रहार करना।

उ०—१ तिलगा तणा घण सिरतोड, रूक धणा सिर **रोळँ**। केता पाड़ पौढियौ कमधज, बाका थाट विरोळँ। —बुधजी ग्रासियौ

३ गमा देना, मिटाना, नाश करना।

उ०—जीत दळ सझि हुले राजा, वाजता रिणजीत वाजा। राव 'ईंदौ' माण **रोळे** भीम गयंदां हूत भेळे —सू. प्र.

४ मारना, सहार करना।

उ०—१ खरा हेमरां भडा 'पीथल' चढे खेडिया, दुरस गत घेरियां फिरै दोळँ। रूकडां पाण ऊफडांखिया रोळिया, धोळिया धकाया दीह धोळँ। —दलौ मोतीसर

उ०—२ **रौळंत** रिमा धड रामचद। 'सग्राम' सुत्त सूरत कंद। —गु रू ब

उ०—३ 'जैतमाल' ग्रण पाल बीद मेवाड तणी धड़। सिवियाणौ सोभति 'भाण' **रोळियां** भडा घड। —गु. रू. ब.

५ फ़ेकना।

उ०—ग्रारण के संग पार होय जावै है। फूटे घड़ ग्राफळते है ज्वाळानळ ज्या जळते है। रूई के पहल ज्यो स्रगू पर चढाइ **रोळँ**। छूटे हस पड़े जाणँ मजीठ बोळँ। —सू. प्र.

६ गिराना, डालना।

उ०—झूटि झूबिय महितलि **रोली**, काढिव वसन कीध हीयाली। ग्रंतरालि थई राक्षिसि राखी, तीणइ हुई हिव होग्रत चाखी। —सालिसूरि

७ बिखेरना।

उ०—हार त्रोडती, वलय मोडती, ग्राभरण भाजती, वस्त्र गाजती, किंकणी कलापु छोडती, माथउ फोडती वक्षस्थल ताडती, कूंतल कलाप **रोलती** सकज्जल वाष्प जलि कचुक सीचती। —व. स.

८ ग्राच्छादित करना, ढकना।

उ०—धूलि नइं तिमिर ग्रबर **रोलिउ**, सूरय बिंब मसि महि कि बोलउ। ग्रस्ववार फिरतां न सूझइ, ए रणागणि किसी परि झूझइ। —मालि सूरि

क्रि. ग्र—९ भयभीत होना, कंपायमान होना।

उ०—तेज प्रभूता नमौ गुमानसिंह तणा, रोस घणा छ खड खूरसाण **रोळँ**, जावता चढे दादा जियां रचण जुध, ग्राविया वचण वे तूझ ग्रोळँ। —महाराजा मांनसिंह रौ गीत

१० लुढकना, ढुलकना।

उ०—धूलि मिलीय झलमलीय सयल दिसि दिणयरु छाईउ गयणौ दुरहि द्रम द्रमीय सुरवरि जसु गाईउ पाडइ चिंध कवध बध धर मडलि **रोलइ** वाणि विनांणि किवांणि केवि ग्ररीमण घधोलइ। —सालिभद्र सूरि

११ पतन होना, गिरना।

उ०—दैवु न गिणई दैवु पुण्य नइ पापु सतापु सुयणह करई पुण्य-हीन जिम राय **रोलइ** —सालिभद्र सूरि

१२ तलवार, भाला ग्रादि शस्त्र को हाथ मे पकड़ कर घुमाना।

उ०—ठेल्हतौ गजा है-थाट लागा ग्रटळ, रीठ वागा खगा दुवै राहा। जोध 'जसराज' पूणौ भलौ जूजबौ, सेल **रोळँ** दुहूं पातिसाहा। —गु. रू बं.

रोळणहार, हारौ (हारी), रोळणियौ—वि.।

रोळिग्रोड़ौ, रोळियोड़ौ, रोळयोड़ौ—भू का. कृ.।

रोळीजणौ, रोळीजबौ—कर्म, भाव वा।

रोळवणौ, रोळवबौ, रौळणौ, रौळबो, रौळवणौ, रौळवबौ— रू. भे.

रोळदट, रोळदट्ट–सं. स्त्री.—१ ग्रव्यवस्था।

उ०—करै न संका कोय, गांव-धणी संभड गिणँ। रेत बराबर होय, **रोळदट्ट** मे राजिया। —किरपाराम

२ गफलत, व्यर्थ।

उ०—जगां मे ग्रढंगौ छौ छटा मे पाराथ जेहो, माथै राव लीधौ **रोळदट्टां** में मथोग। छत्री बळ तेस खळा थटां मे हकालणौ छौ, जिको सेज सट्टा मे न भाजणौ छौ जोग। —रामकरण मेहडू

३ ग्रसावधानी।

४ खेल, तमाशा, हसी मजाक।

रोलर–स पु.—१ सडक पर ककर व मिट्टी दबाकर सड़क को समतल करने वाला बेलन जो खींचा या इजन लगाकर चलाया जाता है।

३ छापे की मशीन मे वह बेलन जिससे अक्षरों पर स्याही लगती है।

रोळरिगटोळ, रोळ-रिगटोळी—१ मखौल, हसी मजाक।

उ०—सारी दिन घड़े, गप्पां नाखै अर सागै-सागै आया-गया री **रोळ-रिगटोळी** तथा खि-खि ही करता नी सकै। —दसदोख

रोळवणौ, रोळवबौ—देखो—'रोळणौ रोळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ घड धडण नाचइ, वदन वाचइ, पडइ खंडोखंड। हरि कोप कीधू जइत लीधू **रोळव्यां** रुणखड। —रुकमणी मगळ

उ०—२ जमद्दढ खाग कसै जमराण, पळभख सावळ **रोळवि** पाण। छटै असि ताम चढ़ै छक छोह, विधी तह ढाल वचावण लोह। —सू. प्र.

रोळा, रोला—स. पु.—१ स्त्रियो के धारण करने का आभूषण विशेष। (व. स.)

रोळागार, रोळागारौ—वि.—१ कलह प्रिय, झगडालू।

रोळाटौ—स. पु.—१ हुल्लड, शोरगुल।

उ०—सहर में **रोळाटौ**। हिंदू मुसलमाना रौ दगौ कानी कानी। अल्लाहो अकबर कै'र मुसलमाना एक हिन्दू री दुकान मे लाय लगादी। —वरसगांठ

रोळारोळ, रोळारोळि—स. स्त्री.—१ भय, आतंक या किसी प्रकार की घबराहट, आदि के कारण भीड़ या जनसमूह में होने वाली हलचल, खलबली।

उ०—पहर हेक लग पोळ जड़ी रही जोधाण री। गढ में **रोळारोळ** भली मचाई भीमडा। —भीमजी रौ दुहौ

रोळि, रोळी, रोलि, रोली—सं. स्त्री.—१ गेहूं की फसल को लगने वाला एक रोग विशेष जिससे गेहूं की 'नाल' में लाल बुकनी जैसा चूर्ण निकलता है।

उ०—कदै तो ठाकर लाटौ लाटचौ, कदै लाटग्यौ वो'रौ। कदै तौ बैरी दावौ पड़ग्यौ, कदे आयगी **रोळी**। —चेतमानखां

२ विघ्न, बाधा।

उ०—राज करम में पड़गी **रोळी**, मनूं मरम मरजादा मोळी। झड़ी सरम फुला री झोळी, हुयगी परम धरम की होळी। —ऊ. का

उ०—२ पालटी वैसि रहियौ बैसि, घण घणा मीत छूटा घरा। घातती **रोळि** आई घरै, जीव लेण गोली जुरा। —सुरजनजी

३ भ्रम, सभ्रम।

उ०—जपइ ए रमणि सिरोमणि रुकमणि राणीय **रोलि**। रहि रहि बहिनि ऊतावली पावलि माहि म ढोलि। —जयशेखर सूरि

४ हल्दी और चूने के योग से बना एक प्रकार का चूर्ण जो पवित्र माना जाता है।

रू. भे.—रोरि, रोरी।

रोळौ, रोलौ—सं. पु.—१ एक छंद विशेष जिसके चारों चरणो में ११+१३ यति से २४-२४ मात्राएं होती है।

२ हरियंद पिगल' के अनुसार एक गीत विशेष।

३ देखो—'रौळौ' (रू. भे.)

उ०—१ कूआ सामा आवता, डरै न अब **रोळा**। खेलथा मे टूटया पड़ै, काळा दिन धोळा। —लू

उ०—२ पमंग अफाळि सुज्ज पसाव, **रोळो** मझि मेलियौ मारवै राव। —सू. प्र.

उ०—३ जीवणी मिसल **रोळौ** कर सवार ढाई हजार मेडतिया रा मारवाड रै लोगां पर आया।—मारवाड़ रा अमरावा री वारता

रोवण—वि.—१ रोने वाला, रुआंसा।

स पु—१ रुदन, रोना।

रोवणधन—वि.—१ कायर, डरपोक।

रोवणकाळौ, रोवणकियौ, रोवणकौ—वि.—१ रूआंसा, रोने जैसा।

उ०—राजाजी तौ बोबाडौ करनै डोकरी रा पग झाल लिया। **रोवणकाळा** होय केवण लागा—थारी मीडकी गाय हूं, आ पांडवां सूं पिंड छुडावौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ जीवरौ उकराळियौडौ वौ उण खुणां में छोटौ-मोटौ खंघेडौ खोद न्हाकियौ। सेवट **रोवणकाळौ** होय बापजी नै कह्यौ-अठै तौ रिपिया है ई कोनी। —फुलवाडी

२ रोने वाला, रुदन करने वाला।

३ जो शीघ्र रो देता हो।

रू. भे. रोणकौ

रोवणौ—वि.—१ रोनेवाला, रूआंसा।

सं पु—१ रोने की क्रिया या भाव, रुदन, रोना।

उ०—भोला की हठ ठाकुरा, **रोळा** हेकन राह। गेह रहीजै **रोवणौ**, देह सहीजै दाह। —वी. स.

२ दु.ख, कष्ट, तकलीफ।

उ०—'बाबौ' म्हारै सामी देखने थोडौ मुळकियौ। पछै दो अेक खेंखारा करनै कैवण लागौ आ छळगारी माया इणी भात छळिया करै। उणरै झीणा छळ रौ पतौ पड़ जावै तौ पछै **रोवणौ** ई किण बात रौ। —फुलवाडी

रोवणौ, रोवबौ—क्रि. अ. [स. रोदनम्-प्रा. रोअन] १ कष्ट से पीडित व्यक्ति का ऐसी स्थिति मे होना कि उसके नेत्रों से आंसू बहने लग जाय। रुदन करना।

उ०—१ वा विधवा सोनारी मूडा सू कैयनै तौ कीं नी दरसायौ ठळाक-ठळाक **रोवती रोवती** सगळौ सोनौ अेकट करनै भतीजां रै

सामी कोपरियां री ढिगली रै उनमांन खिडक दियौ । —फुलवाडी

उ०—२ भूवा री अेक खोटी आदत ही के वा मरियोडा धणी री याद आवता ई **रोवती** घणी । उणरा नांम नै भूरती । —फुलवाडी

२ वक्षस्थल पर मुष्ठिका प्रहार करते हुए रोना, विलाप करना ।

३ किसी प्रकार के कष्ट, क्षति, हानि के लिए दु.खी होना ।

उ०—माजी रोवै माय, बापजी रोवै बारै । भाई रोवै भला, सुणे नही किणरै सारै । बद बद कडवा बेण, सेण **रोवै** सिर खावै । दुसमण ताली देत, हसै जीवै हरखावै । जिण अमल कियौ देखौ जुलम, कामण **रोवै** कामनै । गाव गिणै नही गेले नै, ज्यू गेलौ गिणै न गाम नै । —ऊ. का.

४ किसी बात पर कुढ, चिढ कर इस प्रकार की शक्ल बनाना कि मानो बच्चे की तरह बैठ कर रोता हो ।

रोवणहार, हारौ (हारी), रोवाणियौ—वि. ।

रोविओड़ो, रोवियोड़ो, रोव्योड़ो—भू. का कृ ।

रोवीजणौ, रोवीजबौ—भाव वा. ।

रोअणौ, रोअबौ, रोणौ, रोबौ—रू. भे. ।

रोवाकूकौ – जोर २ से रोना, फूट २ कर रोना ।

उ०—गोपाळ जोर-सूं हेलौ मारियौ–'काकाजी' डैण आखिया खोली अर पाछी सदा री वास्तै मीच ली । घर मे **रोवाकूकौ** मचग्यौ । —बरसगाठ

रोवाड़णौ, रोवाड़बौ—देखो 'रोवाणौ रोवाबौ' (रू. भे)

उ०—तरै राठौड प्रिथीराज कूपावत जैतमाल जैसावत नू कह्यौ-तू मत **रोवै** । परमेस्वर कियौ तौ हूँ कूपा रै पेट रौ जो चद्रसेन नू **रोवाड़ू** । —राव चद्रसेण री बात

रोवाड़णहार, हारौ, (हारी), रोवाड़णियौ—वि. ।

रोवाड़िओड़ौ, रोवाड़ियोड़ौ, रोवाड़्योडौ—भू० का० कृ० ।

रोवाड़ीजणौ, रोवाड़ीजबौ—कर्म वा. ।

रोवाड़ियोड़ो–देखो—'रोवायोडौ, (रू. भे)

(स्त्री. रोवाडियोड़ी)

रोवाणौ, रोवाबौ—१ ऐसा काम या कार्य करना जिससे कोई रोने लग जाय ।

२ दूसरे को रोने में प्रवृत करना, रुलाना ।

रोवाणहार, हारौ (हारी), रोवाणियौ—वि० ।

रोवायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

रोवाईजणौ, रोवाईजबौ—कर्म वा० ।

रोआणौ, रोआबौ, रोवाड़णौ, रोवाड़बौ—रू० भे० ।

रोंस–सं. पु —१ वैभव, ऐश्वर्य ।

उ०—भांमणि रा सुकुमार भुज, साहब गळै सुहाय । जाण नाळ जळजात रा, कांम पताका काय । कांम पताका काय, उदै जै अकड़ा । राजस तजि चित **रोंस** क सोक्या सकडा । —बां. दा.

२ सुख, आराम ।

३ देखो 'रौस' (रू. भे.)

रोसग—देखो 'रोस' (रू. भे.)

उ०—१ सझि थाट चढिया सूर, **रोसंग** अग गरूर । अकबर बहादर आय, जुध कीध धोम जगाय । —सू प्र.

उ०—२ 'सांवत' रौ सुरताण, ताम बहसै खग तोलै । रग लाल **रोसग**, बोळ लोयण करि बोलै । —सू प्र.

रोसंगी—देखो 'रोखंगी' (रू. भे)

रोस–सं पु. [स. रोष] १ कोप, क्रोध, गुस्सा । (अ. मा.)

उ०—१ कर प्रगट दोस खंडण करू, धीठ **रोस** मत धारज्यौ । आज रौ बखत भूंडौ अमल, बडपण राज विचारज्यौ । —ऊ. का.

उ०—२ कर सिलाम त्रय वार, ताम आलम्म महातप । ओप जोस असमाण, वधे फिर **रोस** महावप । —रा. रू

२ क्रोध जोश आदि से होने वाली नेत्र की ललाई, उबाल, उफान ।

उ०—१ नवहत्थौ मत्थौ बडौ, **रोस** भटक्कै रार । औ कूभाथळ ऊपरा, हाथळ बाहणहार । —बा. दा.

उ०—२ अत कोप मुखा, चख **रोस** चडै । झळ आग लगी, किर दूग झडै । —रा. रू.

उ०—३ अपनी कबांन आलमसा हाथ दीनी, डाढी नोस हाथ दीनौ रार **रोस** भीनी । —रा. रू.

३ कुढन, डाह, इर्ष्या ।

४ वैर, शत्रुता, दुश्मनी ।

५ जोश, आवेग ।

उ०—रावता **रोस** वाहत रूक, इक इक्क घाव दोय दोय टूक । —गु. रू. ब.

६ फोडा फुन्सी आदि का जोश में आना, पीडा का बढना ।

७ खुशी, हर्ष ।

उ०—१ बसता हरिया बाग बिच, होती **रोस** हजार । वसिया ऊ हीज वाकला, माढू आय मजार । —बा दा.

८ मकान के भीतर की ओर दीवार में चारों ओर अथवा द्वार पर लगने वाला वह लबा चौडा मोटा पत्थर जिसके नीचे तोडी भी लगी रहती है ।

वि. वि.—बालकोनी प्राय· इसी को कहते है ।

९ प्रकाश, रोशनी ।

उ०—रात पडचो जद आतरौ, भूल्यौ सारा दोस । पीळोपण मुख रौ, गयौ सूरज सागी **रोस** । —लू

रू. भे.—रोख—अल्पा., रोसौ
महू. रू. भे.—'रोसाण'

रोसणौ—देखो 'रिसाणौ (रू. भे.)

उ०—१ हमैं सारण सारा **रोसणौ** भंजावण नू भेळा हुवा । नै पांतिया नाख गोठ जीमिया पीछै मलकी खनै आदमी मैलियौ ।
—द. दा.

उ०—२ तद ऊमादै कह्यौ रावजी भरमल रै वास पधारौ मैं सू कोई काम नही । इहा आप, मांहे रावजी ऊमादै **रोसणौ** हुवौ ।
—ऊमादे भटियांणी री वात

उ०—३ सेणा सेती **रोसणौ**, असैणा सुं गूझ। साम संनेही ना कीया, औरां रह्या अळूझ ।
—हरिरांमदास महाराज

रोसणौ, रोसबौ—१ तंग करना, कष्ट देना ।

उ०—गरथ लेत गोसैह, रात दिवस **रोसै** रयत । मांय माय मोसैह, मुनसी खोसै मुरधरा ।
—ऊ. का.

उ०—२ रेण लई विण कुटंब **रोसियां**, हुवौ सीहायत तेण हर । सत नह 'रहचिया' समहर, 'काळै' हरै भारथ कर ।
—सिंढायच किसनौ

२ बाधना, कसना ।
३ कोप करना, क्रोध करना ।
४ मारना, काटना ।

रोसधर—वि. [स. रुष+धर] १ कोप करने वाला, रोस करने वाला ।

सं. पु.—२ इन्द्र (डि. को.)
२ वह मकान जिसमें 'रोस' लगे हुए हों ।

रोसन—वि. [फा. रोशन] १ जलता हुआ, प्रदीप्त ।

३ वह (भवनादि) जिसमें खूब चहल-पहल आनंद मंगल हो ।
४ यशवान, कीर्तिवान ।
५ प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर ।
६ प्रकट, जाहिर, विदित ।
रू. भे.—रौसन ।

रोसनचौकी—सं. स्त्री. [फा. रोशनचौकी] १ सहनाई नामक वाद्य समूह ।
२ नफीरी नामक वाद्य ।

रोसनदांन—स. पु. [फा. रोशनदान] १ कक्ष (कमरा) की ऊपर की दीवार में बना हुआ छोटा खुला स्थान जिसमे से प्रकाश और पवन आता हो ।

रोसनाई—देखो 'रुसनाई' (रू. भे.)

उ०—१ इतरा मे **रोसनाई** री बखत महाराज जयसिंघ जी पधारया । —महाराज जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

उ०—२ इतरा में **रोसनाइ** हुई, बडारण उठ मुजरौ कियौ ।
—कुवरसी साखला री वारता

रोसनी—स. स्त्री. [फा. रोशनी] १ उजाला, प्रकाश ।

२ मांगलिक अवसरों पर बहुत से दीपक जला कर किया जाने वाला प्रकाश ।
३ चिराग, दीपक ।
४ एक प्रकार के शहतूत ।
उ०—कमला रेसमी नारगी पैबदू का हूँनर अदभूत । **रोसनी** हमरानी सुरखानी सहतूत । —सू. प्र.
५ देखो—'रौसनी' (रू भे.)

रोसांण देखो—'रोस' (महू. रू. भे.)

उ०—बे बे कवांण भूथांण बंध, असमान छिबत **रोसांण** अंध । चख मछी रध्र छेदे चकास, उडता विहंग वेधे अकास । —वि. स.

रोसाग—वि. [स. रोष+अग्नि] १ जोशीला, ओजस्वी ।

उ०—माचै खाग झाटां राचै तवाई छ-खंडां माथै, रत्रा आट-पाटा नदी वहाई **रोसाग** । पाथ थाटां जंग रूपी कुंवांणा नवाई पाणा, सन्नाटा बेढियौ थाटा सवाई 'सोभाग' । —सूरजमल्ल मिश्रण

रोसाजळ—वि —पूर्ण आवेग युक्त, जोशपूर्ण ।

उ०—मुणै वैण खग तोल, सेस उठ्यौ **रोसाजळ** । करमाणंद परधान, आय दाढी हाथोगळ । ऊसस कर आछटै, वीर पायकौ बकारै । साथ लिया सांवला, पाल गूजवै पधारै । —पा. प्र.

रोसानळ—सं पु. [सं. रोष+अनल] १ ऐसा विकट या भयंकर क्रोध जो अग्नि की तरह नष्ट कर देता हो । क्रोधाग्नि ।

रोसारी—वि. [स. रोष+अरि] १ शत्रु दल पर कोप करने वाला । क्रोध वाला ।
उ०—मो दळ सिंघ समांन, रवद भाजण **रोसारी** । अहुर 'अमर' आवियौ, जाण तन पक्खरधारी । —रा. रू.
२ जोशीला, वीर ।

उ०—देख मुगळ अबदल्ल, फौज अणचल्ल अफारी । हांक कांम पूरबा, 'रांम' वळियौ **रोसारी** । —रा. रू.

रोसाळ, रोसाळौ—१ क्रोध वाला, क्रोधी ।

उ०—तुडताण पाण कांमा तजंत, जै राम राम जीहा जपंत । **रोसाळ** हुआ विकराळ रीस, पडिया लग वाहै दांत पीस ।
—गु. रू. बं.

२ तेजस्वी, पराक्रमी ।

उ०—२ चखचोळ भाळ विकराळ चूंच, कळ चाल प्रगट दाढाळ कूंच । **रोसाळ** मिळै ग्रीखम रसम्म, चिता विडाळ नाहर चसम्म ।
—वि. सं.

उ०—२ कुरवंसी कर चाळौ, रच रोसांलां, भीठ वडाळां भोपाळा। रिळिया रिणताळा, कट किरमाळा, सीस भुजाळा सूडाळा।
—भगतमाळ

रोसावणौ, रोसावबौ—क्रि. स. [रोसाणौ क्रि. का. प्रे रू.] १ मरवाना, कटवाना।

उ०—वकरिया रोसावै कूकडा कटावै अर दारूडी-मारूडी तौ उडती ही रैवै है। —दसदोख

२ बधवाना, कसवाना।

३ क्रोध करवाना।

रोसावणहार, हारौ (हारी), रोसावणियौ—वि०।

रोसाविग्रोड़ौ, रोसावियोड़ौ, रोसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

रोसावीजणौ, रोसावीजबौ—कर्म वा०।

रोसिया—स. स्त्री —चौहान वश की एक उपशाखा।

रोसियौ—स. पु —चौहान वश की रोसिया शाखा का व्यक्ति।

रोसीलौ, रोसेल, रोसैल—वि. (स्त्री. रोसीली, रोसेली) १ जोशवाला, जोशीला।

२ निर्भय निर्भीक, निडर।

उ०—१ जानकी नायक जग मे, रोसेल वीरत रग मे। बिरदैत जस रथ धमळ बंका, निमौ दसरथनद। —र. ज. प्र.

२ क्रोधीला, क्रोधी।

उ०—सुख हित स्याळ समाज, हिंदू अकवर बम हुवा। रोसीलौ मृगराज, पजै न राण प्रतापसी। —दुरसौ आढौ

३ तेजस्वी, पराक्रमी।

रोसौ—१ देखो 'रोस' (रू. भे)

उ०—१ मे मारै हाथे कियो, केहो कीजे सोसो रे। दोस जिकौ मुझ वचन नो, कीजै किणसु रोसो रे। —प. च चौ.

उ०—२ सखी री आयौ महीनो अब पोसो रग रमै सहु तजि रोसो। दीनौ मुझ जादव दोसो, सबलौ तिण कारण सोसो हो लाल। —ध. व. ग्रं.

रोह—सं. पु.—१ रास्ता, मार्ग।

[सं. रोध] २ रोक, रुकावट।

उ०—१ जाणीय दुर्योधनि बाहु ग्राह्या, रहइ किमइ ते तुरिया न साह्या। किरी रह्या राउत रोह माडी, जाइ जिसिइ अरजन ढेठि छांडि। —सालिसूरि

उ०—२ खुरसांण लक पती खहण, खेध वेध वूहा खडग। पतिसाह दळा पाधर हुग्रौ, राड रोह मुर मास लग। —गु. रू. बं.

रोहज—स. स्त्री —१ नैत्र, नयन। (डिं. को.)

रोहड़—देखो 'रोहिडौ' (मह., रू भे)

उ०—रावण राग रतांजणी, खणी नइ रुद्राख। रूक रुदती रायसली, रोहड़ रोहिणि लाख। —मा. का. प्र.

रोहण—स. पु. [सं रोहणः] १ वीर्य, शुक्र।

२ देखो 'रोहणगिरी'

उ०—१ खिसता निज खाण थी, रयण कहै साभलि रोहण। अठै अम्हे उपना, महिर थारी मन मोहण। —ध. व. ग्र.

उ०—२ धारा धरस्य धारा संख्या, भूतले रेणुका कण ना समुद्रे नीर बिंदु सख्या, रोहणे रत्न सख्या न। —व स.

३ देखो 'रोहिणी' (रू. भे)

उ०—१ रोहण तपै न मिरगला वाजै, आदरा अणचिंत्या गाजै। —अग्यात

उ०—२ रोहण वाजै मिरगला तप्पै, राजा झूझै परजा खप्पै। —अग्यात

उ०—३ अदीतवार घटी ३३/१० रोहण नक्षत्र २६/१६ रात्र गत घटी ५/० समयौ माराज स्री अनुपसिघजी चद्रावत रुखमागदे जी रा दोहिता माजी रौ नाम कमळादे। —द. दा.

रोहणगिर, रोहणगिरि—सं. पु. [स रोहण+गिरि] एक पर्वत का नाम जहा पररत्न माणिक्य आदि प्राप्त होते हो।

उ०—असख्य साहणि चालते हूंते समु द्रसलिल सलसल्या, घाट घमघमी धाघर्याल वाजी, रथीक राउत तणे रसरसाटि रोहणगिरि रणरण्या। —व. स.

उ०—२ भूप जडावै मुकट मझ, रोहणगिर उतपत्त। निस दीपक प्रतिनिधि रतन, प्रभा अपूरब भत्त। —बां. दा.

रोहणचल—१ देखो 'रोहणगिरि' (रू. भे.)

रोहणदे—स. स्त्री [स. रोहणदेवी] १ चन्द्रमा की पत्नी रोहिणी।

उ०—१ वाड़ी वाड़ी भवरो भिणकै रै सुरंगलौ, चद्रमाजी री पाग बिराजै रै सुरेगलौ सुरंगलो। रोहणदे घिर घिर निरखै रै सुरेगलौ सुरेगलौ। —लो. गी.

उ०—२ राणी रोहणदे हींडण बैठ्या धरती न झेलै भार। चंद्रमाजी श्रै ललकारौ दियौ, ग्रो हिंडौ गयौ गिगनार। —लो. गी.

रोहणद्रुम—स. पुं. [स. रोहणः+द्रुमः] १ चंदन (डिं. को,)

रू भे.—रोहिणीद्रुम

रोहणधव—स. पु. [स रोहिणधव] १ चद्रमा, चाद। (अ. मा., ह. ना. मा)

रोहणप—सं पु [स. रोहणप] १ चदन।

रोहणाचळ—देखो 'रोहणगिरि'

उ०—१ हा सोभाग्यभवन सस्नेहमन, हा प्रियसर्वजन, हा परोप-

कार वत्सल गुणरत्न **रोहणाचल**, हा जगद्भूसण गतदूसण।
—व. स.

उ०—२ जिसउ नवा कल्पवृक्षनउ पोउ हुइ, **रोहणाचल नी** भूमि जिसउ रत्ननउ अंकुरउ हुइ। —व. स.

रोहणि—देखो 'रोहिणी' (रू. भे.)

उ०—निसिपति नारी मोहनगारी, **रोहणि** नइ रग रातौ। प्रभू करणी परणि तजि तरुणि, अदभुत गुण करि मातौ। —वि. कु.

रोहणियाल—वि.—शत्रुदल को रोकने वाला।

उ०—**रोहणियाल** सभै रायांगुर, घाये असुर उतारै घाण। अबळा बाल न धारै आडी, खूदाळम धातै खुमाण।
—रांणा सांगा रौ गीत

रोहणी—देखो 'रोहिणी' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना मा.)

रोहणीजोग—देखो 'रोहणीयोग' (रू. भे.)

रोहणीवर—देखो 'रोहिणीवर' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

रोहणीसिद्धयोग—देखो 'रोहिणीयोग'।

उ०—आलमगीर रौ जन्म स. १६७५ मिगसर बद १ इस्ट १८/३० **रोहणीसिद्धयोग।** —द. दा

रोहणेय—देखो 'रोहिणेय' (रू. भे) (अ. मा, ह. ना मा.)

रोहणौ, रोहबौ—क्रि. स.—१ रोकना अवरुद्ध करना।

उ०—२ **रोहे** 'पातल' रांण, जा तसलीम न आदरै। हिंदू मुस्सलमांण, एक नही ता दोय है। —सूरायचजी टापरियौ

२ मारना, संहार करना।

उ०—१ कळू माझ हेम पंथ डोहिता सुभद्रा काळी, निहाळी सोहिता नेत्र जाळी खळां नाम। असुराण **रोहिता** दोहिता देवी 'वेद' वाळी, नोहिता अभेद वाळी डाढाळी नमाम।
—नवलजी लाळस

उ०—२ महाराज आजांनभुज रांम रघुवंसमरा, राड़ ग्नि जूथ अवनाड **रोहै**, गढां गह गंजणा। वार निरधार आधार आधार आलम वणै, भिड़ै दळ भंजणा। — र ज. प्र.

३ घेरना, आवेष्टित करना।

उ०—'सोमा' हर तिलक सींचतौ साबळ, करतौ खग द्रीना कर। रिण **रोहियौ** घणौ राठोडै' चीबौ एकलवाड़ चर। —दुरसौ आढौ

रोहणहार, हारौ (हारी), **रोहणियौ**—वि०।

रोहिओड़ौ, रोहियोड़ौ -भू० का० कृ०।

रोहीजणौ, रोहीजबौ—कर्म वा०।

रोहतास—देखो 'रोहितास' (रू. भे) (अ. मा., ह. ना. मा.)

रोहर—देखो 'रुधिर' (रू. भे.)

उ०—१ प्रेम सीस न प्रामे पळ नह पखण, **रोहर** न धर पर रड़ियौ। ईसरदास तणौ वप आहब, आमख खग धारा अड़ियौ।
—ईसरदास राठौड रौ गीत

रोहराळ—देखो 'रुधिर' (मह. रू. भे.)

उ०—झाळ बबाळ 'ईसर' तणी झळहळै, अळवळै वळै दीजै उथाळा। खाळ **रोहराळ** गाळा बिचै खळहळै, भळहळै गराळा वीच भाला। —उम्मेदसिह राठौड रौ गीत

रोहलौ—स. पु.—रग विशेष का घोडा।

उ०—रोझौ नीलौ गगाजळ हसला नैण काजळ। अस सेराहा अऊब खेग **रोहला** हाबूब। —गु. रू. बं.

रोहवाल—स. पु.—एक प्रकार का घोडा।

उ०—तेज सुरग गव्हरा कारातोरा खुरसाणा भयणा हयाणा **रोहवाल** रूढमाल तोरका मदकोरा पीलूआ भाडिजा उराहा सेराहा केकाण। —व. स.

रोहि—स. पु. [सं. रोहिः] १ मृग विशेष।

२ वृक्ष।

३ बीज।

४ देखो 'रोही' (रू. भे.)

रोहिड़ौ—स. पु.—१ एक वृक्ष विशेष।

उ०—अरक आउल तिणासिरा, सिम **रोहिड़ो** रोहिण। इद्रोख अबरस आसिद्रो, अरम्यज वकाईण। —रुकमणी मंगळ

रू. भे.—रोईड़ौ, रोयडौ, रोहीड़ौ

मह.—रोहड।

रोहिण—स पु.—१ एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

२ देखो 'रोहिणी' (रू. भे.)

रोहिणगिर—देखो 'रोहणगिरि' (रू. भे)

रोहिणी—सं. स्त्री. [स.] १ गौ, गाय (अ. मा., ह. ना. मा)

२ बिजली, विद्युत।

३ त्वचा की छठी परत। (अमरत)

४ वसुदेव की धर्मपत्नी जो बलदेव की माता थी।

५ चन्द्रमा की पत्नी, जो दक्ष प्रजापति की कन्या थी।

उ०—कूरमी कमधज सू ओपै वांमै अग। रवि रांना ससि **रोहिणी**, सुरपति सचि किर संग। —रा. रू.

६ कृष्ण की पत्नियो मे से एक।

७ हिरण्यकशिपु की पत्नी।

८ जैनो की एक देवी।

९ ऐसी कन्या जो हाल ही मे रजस्वला होने वाली हो (स्मृति)

१० धैवत स्वर की तीन श्रुतियो में से तीसरी श्रुति।

११ पाच तारो से मिलकर बना रथ की आकृति का सत्ताईस

नक्षत्रों मे चौथा नक्षत्र (अ. मा)

१२ एक प्रकार का भयकर सक्रामक रोग जिसमे ज्वर के साथ गले मे पीडा होती है। (अमरत)

रू. भे.—रोइणी, रोयण, रोयणी, रोहण, रोहणि, रोहणी, रोहिण, रोहिणि।

रोहिणी-आठम—स. स्त्री. [स. रोहिणी अष्ठमी] भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्ठमी जिस दिन चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र मे होता है।

रोहिणीजोग—देखो 'रोहिणीयोग' (रू. भे.)

रोहिणीतप—स. पु—एक प्रकार का व्रत विशेष। (जैन) व. स.

रोहिणीद्रुम—देखो 'रोहणद्रुम' (रू. भे.) (ना. मा, ह. ना. मा.)

रोहिणीपत, रोहिणीपति, रोहिणीपती—स. पु. [सं. रोहिणीपति]

१ चद्रमा।

२ बलराम के पिता वसुदेव.

रू. भे.—रोयणीपत, रोयणीपति, रोयणीपती।

रोहिणीबर—देखो 'रोहिणीवर' (रू. भे)

रोहिणीयोग—सं पु. [स.] आषाढ के कृष्ण पक्ष मे रोहिणी का चन्द्रमा के साथ होने वाला योग।

रू. भे.—रोहिणीजोग

रोहिणीरमण—स. पु. यौ, [स. रोहिणीरमण] १ चद्रमा, २ साड, ३ वसुदेव।

रोहिणीवर—स. पु.—१ चद्रमा।

२ साड।

३ वसुदेव।

रू. भे.—रोहिणीबर।

रोहिणीवलभ, रोहिणीवल्लभ—सं. पु. [स. रोहिणी वल्लभ] चंद्रमा

रोहिणेय—स. पु. [सं. रौहिणेय] १ रोहिनी का पुत्र बलराम।

रू भे.—रोहणेय।

रोहित—वि. [स. रोहितम्] लाल रग का।

स पु. [स. रोहितः] १ एक प्रकार का मृग।

२ एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

३ मछली विशेष।

४ लाल रग।

५ लोमडी।

६ देखो 'रोहितास'

रोहितबाह, रोहितवाह—स पु [स. रोहित+वाह=अश्व] १ अग्नि, आग। (डिं. को.)

रोहितास—स पु [स. रोहिताश्व] १ अग्नि, आग। (ना. मा; ह. नां. मा.)

२ वसुदेव का रोहिणी से उत्पन्न पुत्र।

३ सत्यवादी हरिश्चचद्र के पुत्र का नाम।

उ०—सतव्रत सुत हरिचद सत जिहाज, **रोहितास** चद सुत महाराज। **रोहितास** तणौ ह्नित चचुराय, तप सुत सुदेव तप भाण ताय। —सू. प्र.

रू. भे.—रोईतास, रोयतास, रुहितास, रोहितास, रोहीतास।

रोहिनी—देखो रोहिणी' (रू. भे.)

रोहिलौ—सं. पु.—एक प्रकार का वाद्य।

उ०—डफ खजरी दुतार, विखम **रोहिला** वजावै। पसतौ अरबी पाड, गजल कड़खा बह गावै। किवळा सिजदा करै, किलम उच्चरै कुरांणी। जाणि प्रेत जागिया, महारिण काळ मसाणी। —सू. प्र.

रोहिस—स. पु. [सं. रोहिष] १ एक प्रकार मृग विशेष।

२ एक प्रकार की मछली।

३ एक प्रकार का घास जिसकी जड़ सुगंधित होती है।

रोही—वि [स. रोहिन्] (स्त्री. रोहिणी) १ ऊपर चढने वाला, ऊपर की ओर जाने वाला।

स. पु—१ एक प्रकार का हिरन, मृग।

२ रोहिडा नामक वृक्ष।

३ रोहू नामक मछली।

४ रीढ की हड्डी।

उ०—'सगतीसिंह' तरवार वाही सो प्रेमसिंह घोड़े फेरते रै लागी घोडे रै खोगीर बढकर **रोही** री हाडी बैठ गयी जिण सूं घोडो भुस हुय गयौ। —मारवाड़ रा अमरावा री वारता

५ वन, जगळ।

उ०—गुण औगुण जिण गाव, सुणै न कोइ सांभळै। उण नगरी विच नाव, **रोही** आच्छी राजिया। —किरपाराम

उ०—२ इतरा में **रोही** मांही एक थोरी सिकार रै पगा हिरणी मुहडा आगै लिया आवै। —रामदत्त साह री वारता

रोहीड़ौ - देखो 'रोहिडौ' (रू. भे)

रोहीतास—देखो 'रोहितास' (रू. भे.)

रोहीस—देखो 'रोहिस' (अमरत)

रोहौ—स. पु—१ घेरा, आक्रमण।

२ क्रोध, गुस्सा।

३ वैमनस्य।

४ युद्ध।

वि.—रोकने वाला, थांमने वाला।

उ०—साह दळा सामहा, राह तोरिया भिडज्जा। दळ **रोहा** साळुळै, करै ढोहा कमधज्जा। बिना खग्ग भेरिया, वहैं कुण मग्ग

विचाळै । जागी हक्कां जाण, लाय लागी ऊनाळै । —रा. रू.

रौंभ—देखो 'रूंभ' (रू. भे.)

रौंभट-सं. पु.—१ युद्ध, लड़ाई ।

उ०—१ राम थट भट भट भपट रौंभट, पछट वज्रघट कुघट, ऊपट । रंगट भट फुट भ्रकुट मरकट, कुळट नटवट उछट कटकट ।

—सू. प्र.

उ०—२ रोस उपट्टा **रौंभटां**, बहो थटां बथारै । कोडि असुर भपटा करै, अगद एकारै । —सू. प्र.

रू. भे.—राभट ।

रौंव—देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—१ 'आसउत' तणी आकाय देखै अकळ, साहजहा सुतन पटकै घणौ सीस । रीस सुज हुती मन 'नीब' हर ऊपरां, **रौंवां** सीस काढवी रीस । —सबळो सादू

उ०—२ जठै 'गजसाह' 'करन्न' सुजाव,विभाड़त मेछ खगां वनराव । जुड़ै खग भाट 'अनावत' 'जैत' बहादर रौव हणै बिरदैत ।

—सू. प्र.

रौंवग—देखो 'रौद्र' (रू भे.)

रौंवणौ, रौंवबौ—देखो 'रूंदणौ, रूंदबौ' (रू. भे.)

रौंवाळ—देखो 'रौद्र' (मह., रू. भे.)

उ०—आराबां उछळ आतस भाळ मंडै किर भाद्रव मेह मंभाळ । पड़ै उतबग चढै तन पीठ, **रौंदाळां** भीक किरमल्ल रीठ ।

—मा. वचनिका

रौंदियोड़ौ—देखो 'रूंदियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रौंदियोड़ी' (रू. भे.)

रौंधणौ, रौंधबौ—देखो 'रूंदणौ, रूंदबौ' (रू. भे.)

उ०—खिलखिलै खेचरा बीर नारद खिलै, ऊपरां ऊपरी गैढला ऊथळै । चाय उर अचळ दादौ तिकौ किम चळै, पातिसाही कटक **रौंधिया** पातळै । —परतापसिंघ सगतावत रौ गीत

रौंधियोड़ौ-देखो—'रूंदियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. रौंधियोड़ी)

रौंस-स. पु.—१ रहस्य, गुप्त तत्व ।

उ०—१ अनातम क्या जांणसी, राम भजन की **रौंस** । अलू कुं रिव आखियां, हरीया देखण सौस । —अनुभववांणी

उ०—२ राम महाराज की **रौंस** जाणै नही, हौस करि पथर पूजत पाजी । अगम अग्याध कु साध सूरा लहै, पंथ पूरा गहै गहै मरद गाजी । —अनुभववांणी

२ केलि, क्रीड़ा ।

उ०—१ सब ही काजळ सारिया, करि करि मन की हौस । मिळी पियारी पीव सुं, हरीया न्यारी **रौंस** । —अनुभववाणी

उ०—२ सुनि वातां सखियन खिनै, करत कुंवारी हौस । हरीया पीव बिन परसियां, होय नियारी **रौंस** । —अनुभववाणी

३ समानता, बराबरी ।

उ०—दुस्मन दूर है, सब दुनियां मे हुक्म मजूर है । मगरुरा की मगरुरी दफै करते हैं, छत्रधारी की सी रौंस धरते है । बडे बडे छत्रपति गढपति देसोत डंडौत करते हैं । —उपाध्याय रामविजय

४ देखो—'रोस' (रू. भे.)

रौ-स. पु.—षष्टी विभक्ति का चिन्ह ।

उ०—१ जवनाण दळै वीजूभळै, देख भलै कुळ देस **रौ** । इद्र-भाण खगै वढ ऊजळै, मिळै जोत मुकनेस रौ । —रा. रू.

उ०—२ सखी अमीणा कथ **रौ**, अग ढीलौ आचंत । कड़ी ठहक्कै बगतरां, नडी नड़ी नाचत । —हा. भा.

रू. भे.—रउ, रिउ ।

रौगन—देखो 'रोगन' (रू. भे.)

रौगनी—देखो 'रोगनी' (रू भे.)

रौड़-सं. पु—१ युद्ध, लड़ाई ।

उ०—(महा) मौड मुरधर तणा खळां दळ मौडता, दौड़ पतिसाह सु करै दावा । **रौड़** रमता थका चौड रिम्म चूरतां, ठौड ही ठौड राठौड ठावा । —ध. व. ग्रं.

२ देखो 'रोड' (रू. भे.)

रू. भे.—रोर ।

रौड़ौ-स. पु.—१ भैंस ।

२ मादा, ऊट ।

३ देखो 'रोड़ौ' (रू. भे.)

रौजौ-सं. पु. [अ. रौज़] १ उद्यान, बाग ।

२ हरा भरा मैदान ।

३ वह इमारत जो किसी पीर, सरदार या बादशाह की कब्र के ऊपर बनी हुई हो ।

रू. भे.—रोजौ

रौभट—१ देखो 'रौंभट' (रू भे)

२ देखो 'राभट' (रू. भे.)

रौणौ-स. पु. [स आरण्य] वन, रन, जंगल ।

उ०—मिटै चोर मारग जोर प्रगटै व्यापारां, वधि वसती रन वनै वेळ वरती ऊदारां । वडै क्रोध विसतार रौंछ सांबर घर **रौणा**, जठै सिंघ सहता तठै गरजंत बिलौणा । —रा. रू.

रौव—देखो 'रौद्र' (रू. भे.)

उ०—१ हजारा गुडै वीछुडै एक होदा, रहचक्क मातौ छुटै तक्क **रौदां**। सिपाया सिरै सार वाजै सचाळौ, वधै दामणी सौ अणी भूप वाळौ। —रा. रू.

उ०—२ सूर रौ कुरब्ब साह,भाति भांति कीध भाव। देखता स राह दोड, **रौद** खांन भूप राव। —सू. प्र.

उ०—३ अौनाड रगत असुरांणा अोट, कौकद **रौद** चालत कोट। धूमरा नैण ऊठंत धाड़, प्राभ्रंत दैत सेना पहाड़। —मा. वचनिका

उ०—४ पोए तिरसूळ पछाटै प्राण, घुमाडै **रौदां** दौमझ घाण। दुबाह जोध जुटै रिणवाट, धडच्छै धाड मर्चै घर घाट। —मा. वचनिका

रौदघड़, रौदघड़ा–स. स्त्री.—मुसलमानो की सेना, यवन सेना।

उ०—१ चखाडै कूंत चखता धणी चापडै, **रौदघड़** पछाड़ अचळ राखी। जीवता सिभ महाराज वणियौ 'जसौ', समर चा करै रवि चद साखी। —महाराजा जसवतसिह जी रौ गीत

उ०—२ गाजा वाजा अर गेंद गडां, जुडै न 'चादौ' **रौदघड़ां**। जै जुडसी 'चादौ' रौदघडा, गाज न वाज न गेंद गड़ा। – चादा वीरमदेवोत राठौड रौ गीत

रौदाळ—देखो 'रौद्र' (मह., रू. भे.)

उ०—१ ढाहंतौ काळा ढेचाळा, **रौदाळां** पौचाळौ राजा। वडा व्रद वीका वाळा वहै दूजौ वीक। —वीठू दूदौ

उ०—२ रवताळ **रौदाळ** रोसाळ महारिण, क्राळ खडाळ अाताळ करै। झिलमाळ कंधाळ कराळ पड़ै झडि, घू मझि माळ जटाळ धरै। —सू. प्र.

रौद्र–वि [सं.] १ रुद्र से सबधित, रुद्र सबधी, रुद्र का, रुद्र की तरह।

२ अत्यन्त उग्र, प्रचण्ड भीषण या विकट।

उ० – हुय **रौद्र** हक्क ग्रेह लक्क जै किलक्क जोगणी. वंका गरज्जै खड़ग वज्जै सक्ति रज्जै सक्कणी। —रा रू.

स. पु- [स. रौद्रम्] १ क्रोध, गुस्सा, रोष।

२ भयकरता, भीषणता।

३ यमराज।

[सं. रोद्र:] ४ किसी प्रकार का अत्याचार अन्याय अपमान अादि का व्यवहार देखकर उसका प्रतिकार करने या रोकने के लिए मन मे क्रोध से उत्पन्न होने वाला भाव विशेष, रौद्ररस (साहित्य)

उ०—जुड़ै भूप जग, रसै **रौद्र** रंग सयद्दांण सूरं, किलम्म करूरं। —सू. प्र.

५ गर्मी, तेजी।

६ असुर, राक्षस।

७ जगली जाति का मनुष्य, म्लेच्छ।

८ यवन, मुसलमान।

उ०—लेखा पाखै लूटिया, घोडा ऊठ दरब्ब। **रौद्र** प्रचार सघारिया, सारै मार सरब्ब। —रा. रू.

रू. भे.—रउद, रउद्द, रउद्ध, रउद्र, रवद, रवद, रवद्द, रवद्दि, रवद्र, रुद्र, रोद, रोद्र, रौद।

मह—रवदाण, रवदाळ, रोदाळ, रौदाळ, रौदाळ, रौद्रव, रौद्राण, रौद्राइण, रौद्रायण।

रौद्रकार–सं. स्त्री. [स. रौद्रकार] १ भयकर अावाज या ध्वनि।

रू. भे.—रोदकार।

रौद्रकेतु–सं. पु.[स]अाकाश के पूर्व दक्षिण में शूल के अग्र भाग के समान कपासी, रुक्ष (रूखा) अौर ताम्रवर्ण किरणो से युक्त एक केतु। (ज्योतिष)

रौद्रपत, रौद्रपति–सं. पु.—बादशाह।

रू. भे.—रोदपत, रोदपति।

रौद्रराव–स. पु.—बादशाह।

रू. भे.—रोदराव।

रौद्रव—देखो 'रौद्र' (मह., रू. भे.)

उ०—१ खगा झट वाहत **रौद्रव** खूर। सझै जुध 'भारथ' संभ्रम 'सूर'। —सू. प्र.

उ०—२ **रौद्रव** दुख सुख विधन सुणै रिख। खडित सेव कीध हेकणि पख। —सू. प्र.

उ०—३ अरडाव घोर अधार **रौद्रव** रूपरा। रवि ताम ग्रीखम रूप, भड़ सह ऊपरा। —सू. प्र.

रौद्र-सम्प्रदाय–स. पु.—रुद्र को मानने वाला सम्प्रदाय विशेष।

रौद्रांण—देखो 'रौद्र' (मह, रू. भे.)

उ०—**रौद्रांण** भचक भाला सरीठ, धारक्क बहै गज बाज धीठ। —सू. प्र.

रौद्राइण, रौद्रायण, रौद्राळ–सं पु.—१ बादशाह।

उ०—१ धूवा रव दव धोम खेहारव डबर खरा। क्रमतै **रौद्राइण** कियौ, व्योम बिचाळै व्योम। —वचनिका

उ०—२ रचि फोजा **रौद्राळ**, हैवर नर वहति हसति माडण इद्र झड़ मांडियौ, वादळ किर वरसाळ। —वचनिका

२ देखो 'रौद्र' (मह., रू. भे.)

रौद्री–सं. स्त्री. [सं.] १ शिव की पत्नी पार्वती।

२ सगीत मे गाधार स्वर की दो श्रुतियों में से पहली श्रुति।

रौनक–स. स्त्री. [अ. रौनक़] १ सुंदर वर्ण, अाकृति या रूप।

२ चमक दमक के कारण होने वाली शोभा या सुंदरता।

३ प्रसन्न-मुख लोगों की चहल पहल ।

रौब—देखो 'रोब' (रू. भे.)

रौबदार—देखो 'रोबदार' (रू. भे.)

रौबीलौ—देखो 'रोबीलौ' (रू. भे.)

रौर-सं. स्त्री.—१ मादा ऊट, ऊंटनी ।

२ देखो 'रोर' (रू. भे)

उ०—अजा दहण गज दहण किया अत, उरंग तुरंग नर दहण उधोर । आतम दहण किया अधपतियै, रांणा जही न दहिया **रौर** । —राणा जगतसिह रौ गीत

रौरव-सं. पु. [सं. रौरवः] इक्कीस प्रकार के नरकों में से एक नरक का नाम ।

वि. [सं. रौरव] भयकर, भयावह ।

रू. भे.—रोरव ।

रौळ-सं. स्त्री.—१ हसी, मजाक, दिल्लगी ।

उ०—लपसी लपकावै तपसी तावै, आपा सींच उठदा है । चेली चोळा में मन मोळा में, **रौळां** मे रूठदा है । —ऊ का.

२ देखो 'रौळौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ पिड़ चूर दिली घर साहजहापुर चीत लगै हर प्रात चडै । इळ मूळ जडा नारनौळ उखेडे, पौळि दिली दुख **रौळ** पड़ै ।
—रा. रू.

उ०—२ छणहणिया छौळा गोमे गोळा दुरगावीर हुआ दौळा चौपट मुख चौळां भाजै भोला रवदा सबळा माचै **रौळां** ।
—मा. वचनिका

३ देखो 'रोळ' (रू. भे.)

उ०—धमस पाखरां **रौळ** गैणांग धुजै धरा, नड़ै गजथाट पहाड़ नमिया । गुरड़ 'अनरध' तणी झड़प लागी गढा,गढपती नाग दह-वाट गमिया । —राजा अनिरुद्धसिंघ रौ गीत

रौळि, रौळी-सं. स्त्री.—देखो 'रौळौ' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—जाणि रै जाणि जुग मांहि जन सूरिवा । दोय दळ बीचमें **रौळि** घालै । —अनुभववाणी

रौळणौ, रौळबौ-क्रि स.—१ हजम करना, पचाना ।

उ०—इक भाटी आबखी, पियै दुब्बार सराबा । भैसां आधा भखै, बोट नुकळ मै कबाबां । डंड सहत करि दुरत, रवद काचा पळ **रौळै** । मण बारह मुदगरा, अणां जेही ऊ तोलै । भोळै परत्र जम भूपरै, पिंड जांणै अहि पांखिया । विण सुरसबंध भक्खी विखम, अध कंध उपडाखिया । —सू. प्र.

२ घोड़े की पीठ को खुरहरे से साफ करना ।

उ०—१ डाच लगाणा डहै, इसा पंडवां अपारा । **रौळै** पसम खुरहरां, मळै हाथळां अपारा । अंग काढै आरसी, पोत भरळकै पसम्मा । दरियाई कस दीध, राळ लूबै रेसम्मां । झाकत्ति किला-वृत्ती सभै, तग रेसम जुग तांणिया । ऊकड़ा भीड़ उडणा इसा, उभै कड़ा कसि आणिया । —सू. प्र.

३ मिश्रण करना ।

४ अनाज के ढेर पर हाथ फेरते हुए बढिया अनाज को पृथक करना ।

५ आलोडित करना, सानना ।

६ देखो 'रोळणौ, रोळबौ' (रू. भे)

उ०—सेना प्रसण **रौळतौ** सेलां, नीर रुधर जू छुटि नळ । बटका समर हुवौ चंद बीजौ, गहली वाळा कळस कळ ।
—भींवसिघ हाडा रौ गीत

रौळणहार, हारौ (हारी), रौळणियौ - वि० ।

रौळिओड़ौ रौळियोड़ौ, रौळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

रौळीजणौ, रौळीजबौ—कर्म वा० ।

रोळणौ, रोळबौ, रौळवणौ, रौळवबौ—रू० भे० ।

रौळवणौ, रोळवबौ—देखो 'रौळणौ, रौळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तोलै कर त्रिसूळ, रगतासुर रिण **रौळवै** । असगां जड़ उनमूळ, आधग माई बीसहथ । —मा. वचनिका

उ०—२ भिड़ै मुख मूछ अणी भुंवहार, धरै हथ **रौळवियौ** चव-धार । वणै मुख चौळ छिवै ब्रहमंड, 'पतै' अस हाकळियौ परचड ।
—सू. प्र.

रौळौ-सं. पु.—१ युद्ध, झगड़ा, समर ।

उ०—१ तारां तेजसी कयौ 'औ तौ खाटरौ है, नै करमचद डीघौ है । तद सांगैजी कयौ,' जी इणनूं खाटरौ मत देखौ । म्हा भेळा घणा **रौळा** किया है, सू आदमी वडौ मरदांनौ है । —द. दा.

उ०—२ पछै गढ री पाज लडाई हुई, जठै जबदळखा जी सीलार-खांन जी ताजुजी केसरखांन जी नंदा ताज काम आया । और ही साथ काम आया तथा घायल हुवा । नै राजसी मुंतौ जाळोर रा **रौळा** में काम आयौ । —नैणसी

ऊ०—३ ऊपर वीस सहस आखाड़ै, पाच सहंसहूं बाग उपाड़ै । जुटै वागि रावत न्रप जौळा, **रौळा** हेक माहि दो रौळा ।
—सू. प्र.

२ विद्रोह ।

उ०—घोड़ा रोवै घास नै टाबरिया रोवै दांणा नै । बुरजा मे ठुकरांण्या रोवै, जामण जाया नै क **रौळौ** वापरियौ, वा' वा' रौळौ वापरियौ, देस मे अंग्रेज आयौ रै, क **रौळौ** वापरियौ । —लो. गी

३ उपद्रव, उत्पात, बखेड़ा ।

उ०—अेक डावडी बोली—अंदाता, आपरै राज रौ अेक

आदमी म्हारी बग्घी लूटली । चार हाजंरिया अर दो डावड़ियां नै राहडिया सू बाध आपरै साथै लेयग्यौ । आथूणा दरवाजा सूं पाच कोस आतरै ओ रौळौ व्हियौ । सगळौ गैणौ गाठौ, रोकडा रिपिया अर मोहरा गी जकौ सवाय मे । —फुलवाडी

४ पिगल प्रकाश के अनुसार प्रथम यगण, तगण फिर रगण और अत मे मगण सहित एक गुरु वर्ण छद विशेष ।

५ शोर गुल, हल्ला ।

उ०—१ राता जागण रौ जगळ मे रौळौ, ढांणी ढांणी मे फिरतौ ढिढोळौ । पाबू हरबू रा सुणता परवाडा, धुणता नर माथा चुणता धर घाडा । —ऊ का.

उ०—२ कूआ सामा आवता,डरै न अब रौळां । खेळचां मे ढ्ट्या पडै, काळा दिन धोळा । —लू

६ देखो 'रोळौ' (रू. भे.)

रौस—स स्त्री.—भाति, प्रकार, तरह ।

उ०—जोख एम जोधाण, रीझ मडै महाराजा । वागा गोठ वणाव, सभै उच्छाह सकाजा । रचै रौस रौसरी, कळा बहतरि अधिकारा । रमै कमध राजिंद्र, रौस रौसरी सिकारां । जेठी कुरग मदभर जुटै, होय इनामा हुन्नरा । क्रीडा विलास विधविध करै, 'अभौ' इद आडंबरा । —सू. प्र.

२ देखो 'रोस' (रू. भे.)

उ०—बराळां धौम चख रौस चाळा बिढण, तखत ढीली तणौ सामळै तेम । 'जसावत' तणा खग तेज मांहे जळै, जबन खळ कीट आतस भबक्कै जेम । —महाराजा अजीतसिंघ राठौड रौ गीत

रौसन—देखो 'रोसन' (रू. भे.)

रौसनदांन—देखो 'रोसनदान' (रू. भे)

रौसनाई—देखो 'रुसनाई' (रू. भे.)

उ०—कायमखा सैद सेख बोलै अलीहार । तीन पौहरू का आफताफ राठौड़ूं पर रौसनाई ठहरावै । चौथे पहर की रौसनाई सब आलम पर आवै । —सू. प्र.

रौसनी—स. स्त्री.—१ सफेद रग की मिठाई विशेष ।

उ०—भांति भाति का मसाला रोगांनी रौसनीं केसरिया चक्खी भाति भाति की मिठाई । मेवै की पुलाव अनेक आई । —सू. प्र.

२ देखो 'रोसनी' (रू. भे.)

रौसाळ—देखो 'रोसाळ' (रू. भे.)

उ०—चखा चौळ रौसाळ भाळा झपट चापडै क्रोधतां आगरा दिली क जळै । —महाराजा अजीतसिह रौ गीत

ल

ल—नागरी वर्ण माला का अट्ठाईसवा वर्ण जिसका उच्चारण दत स्थान है । इसके उच्चारण मे सवार, नाद और घोष प्रयत्न लगते है । यह पार्श्विक, घोष, वर्त्स्य, अल्पप्राण है ।

ल—स. पु.—१ लोक २ वचन ३ सुख । (एका.)

लक—सं. स्त्री —१ कटि, कमर । (अ. मा)

उ०— दाढी रग उजळ भाळ सिंदूर, प्याला मतवाळ नसौ भरपूर । लोई सिर फाबत धावळ लंक, चमू पर सावळ सूळ चमक । —मे. म.

उ०—२ डीमू लक मराळि गय, पिक-सर एही वांणि । ढोला ऐही मारुई, जेहा हभ निवाणि । —ढो० मा०

उ०—३ दाढ गरद्दा भारिया, अंग जरद्दा दूण । रूप मरद्दा मीर सब, लंक करद्दा तूण । —रा. रू.

सं पु.—२ ढ़ेर, राशि, समुह ।

३ कलह, झगडा, लडाई ।

क्रि प्र.—लगणौ, लगाणौ, लागणौ ।

वि.—१ पतली, कृश (कटि)

उ०— गति गयद, जध केळिग्रभ, केहरि जिम कटि लंक हरि डसण विद्रम अधर, मारू-भ्रकुटि मयक । —ढो मा

उ०—२ कडि लंक चित्रा जत्र जाण्यौ, जंघ कदळी थभ । पींडी तिसु सोहई, जांणै कंनक महाबळि रंग । —रुकमणी मगळ

३ बहुत, अधिक, अत्यधिक ।

४ देखो 'लका' (रू भे.) (डिं. को)

उ०—१ दाखे ईसरदासियौ, कटक केण न कोय । रांम हि राम रटतडां, लक विभीसण जोय । —ह० र०

उ०—२ एक वार मेल्हौ अगद, महि लंक मझारै । दई हुकम अंगद दियौ, वप ताम वधारै । —सू० प्र०

उ०—३ ऊधमता कोठार अखूटत, नीर समद जू न कू नमै ।'करण' हरा लंक हुतौ प्रभाकर हेमाळै आवियो हमै । —जोगीदास कवारियौ

रू. भे.—लकी, लक्क, लक्कि, लांक ।

लंकक—वि —लका का या लका सम्बन्धी ।

लंक-टंकटा—स. स्त्री —१ सुकेस नामक राक्षस की माता जो कि विद्युत-केस की पुत्री थी ।

२ सध्या की कन्या का नाम ।

लकणी—स. स्त्री. [सं. लंकिनी] एक राक्षसी जिसे हनुमान जी ने लंका प्रवेश के समय मुष्ठिका प्रहार से गिरा दिया था ।

रू. भे.—लंकिणी

लंकदाह—स. पु. [सं. लंका दाहिन्] लका को जलाने वाला हनुमान । (अ मा.)

लंकदीप—देखो 'लका' ।

लंकनाथ–देखो—'लकानाथ' (रू. भे.)

लंकनायक–देखो—'लकानायक' (रू. भे.)

लंकप–स. पु. [सं. लंकप:] १ रावण ।

उ०—परै बहु ठोर बमीलनि बब, नचै मनु **लंकप** काळ कुटब । निवालनि धप्पिय लेत डकार, किते सद तोपनि फट्टि पहार ।
—ला० रा०

२ विभीषण ।

लंकपत, लकपति, लंकपती–देखो—'लकापति' (रू. भे) (डिं. को.)

उ०—१ जस जीवण अपजस मरण, कर देखो सब कोय । कहा **लंकपत** ले गयो, कहा करण गयो खोय ।
—अज्ञात

उ०—२ जोधाजोध **लंकपत** जेहा, ए नवकोट तणा छळ एहा ।
—रा० रू०

उ०—३ मेले सेन्या दैतां मारण, पांणी ऊपर बाधै पाज । कीधौ खेरू सीता कारण, रांणी **लंकपती** चौ राजं ।
—पिं० प्र०

लंकपुरी— देखो लका' ।

उ०—**लंकपुरी** ये सोधै सियारै, एतौ सुक्षम रूप सुजाण, हनुमत हालै रे ।
—गी० रा०

लंकलियण—देखो 'लकालियण' (रू. भे.)

लंकवरीस—देखो 'लंकावरीस' (रू. भे.)

उ०—सेस हिमालय स्रंग सुरगय हय नय पय दरस । रुद्र सिलोचय रंग, जय जय **लंकवरीस** जस ।
—बा० दा०

लंका–स. स्त्री.—१ भारत के दक्षिण का एक द्वीप जहा रामायण के अनुसार रावण राज्य करता था ।

उ०—अधिप डंडे अजमेर नूं, चढियो संभर सीस । सिर **लंका** किर सांमथण, रांम बिचारी रीस ।
—रा. रू.

पर्याय—कुनणापुर, पुरटपुरी ।

मुहा.—१ लका नै मूंदडी दिखाणी=समृद्ध व्यक्ति के समक्ष तुच्छ वस्तु पर गर्व करना ।

२ लंका में दाळिद्री होणौ=अच्छी जगह पर, उच्चकुल मे या भाग्यशालियों मे बुरा अथवा हतभाग्य होना ।

२ लका के ओर की दिशा, दक्षिण दिशा ।

३ भारत का दक्षिणावृत देश।

४ वेश्या ।

रू. भे.—लंक, लंक्क, लंक्कि ।

लंकाऊ–वि. [स. लंका+रा. प्र. ऊ] लंका की ओर की दिशा का ।

क्रि. वि.—दक्षिण दिशा की ओर ।

लंकाव—देखो 'लकाध' (रू. भे.)

लंकावती–स. पु. यौ. [सं. लंका+दत्त+रा. प्र. ई.] लंका का दान करने वाला, श्री रामचन्द्र । (अ. मा., नां. मा.)

लंकावहण–सं. पु.—१ ईश्वर, परमेश्वर । (नां. मा.)

२ भगवान श्रीरामचन्द्र ।

३ देखो 'लंकादाही' (रू. भे.)

लंकादाह, लंकादाही–सं. पु.—श्रीहनुमान । (अ. मा.)

रू. भे.—लंकादहण

लंकादीप—देखो 'लंका'

लकादु, लंकादू—देखो 'लकाधू' (रू. भे.)

लंकाध–स. पु. [सं. लका+ध्रुव] लका के ओर की दिशा, दक्षिण दिशा।

रू. भे.—लकाद

लकाधु, लंकाधू–स. पु. [सं लका+ध्रुव] १ दक्षिणि ध्रुव ।

वि.—१ दक्षिण दिशा का, दक्षिण दिशा सम्बन्धी ।

क्रि. वि.—१ दक्षिण दिशा की ओर ।

रू भे —लंकादु, लंकादू ।

लंकानाथ–स. पु. यौ. [सं.] १ रावण ।

२ विभीषण ।

रू. भे.—लंकनाथ, लकानाह ।

लंकानायक–सं. पु. [सं] १ रावण ।

२ विभीषण ।

रू. भे.—लकनायक ।

लंकानगरी—देखो 'लका' ।

उ०—अथ रावण, **लंकानगरी** राजधांनि, चित्रकूटगढ, अनेक अक्षौहिणी दळ...... ।
—व. स.

लंकानाह—देखो लंकानाथ' (रू. भे.)

लंकापत, लंकापति, लंकापती–सं. पु. [सं. लंकापति] १ लंका का स्वामी लका का राजा, रावण (अ. मा, डि. को.)

उ०—१ **लंकापति** रावण धणी, सात समद बिच बस्ती फेर ।
—बी. दे.

उ०—२ गरब कियौ **लंकापति रावण**, टूक टूक कर डारा ।
—मीरां

रू. भे.—लंकपत, लंकपति, लकपती ।

लंकापुरी – देखो 'लंका'

उ०—अमरावती समांन, अलकापुरी प्रतिस्परद्धमांन, **लंकापुरी** सरवागीण कुबेर ग्रांम निवास नै कहै वाक, जिहा समुंद्र जगतीय यान प्राकार सागर प्रमाण खादिकावलयावतार, अमरनगरी प्रकार सहोदर निखकर इसिउ नगर ।
—व. स.

लकापुरीलुँटाक–वि. [सं. लकापुरी + लुटाक] लकापुरी को लूटने वाला।

लंकाबरीस—देखो लंकावरीस' [रू. भे]

लंकारि, लंकारी–स. पु. [स. लका+अरि] श्री रामचन्द्र।

लंका-रौ-तोरणियौ – देखो 'तोरण' (७)

लकाळ–स. पु. [स. लका+आलुच्] १ श्री रामचन्द्र।

उ०—लकाळ सेवग तूझ लागौ, भ्रात लिछमण खळा भागौ। पती कुळ स्वारथी पागौ, करण असह निकंद। —र. ज प्र.

२ रावण।

उ०—१ तरवार खण खण तूट तण, पण मत्र भण भण रसण पण, गहवगां जण जण अगणागण, मुर भवण कपण लगण मण लकाळ धूजिय लंक। —र. रू.

उ०—२ पण पाळ ब्रह्मा आप चौ पण, असुरा गाळ। इम उलट कमळा कदम आयौ, पुरी लंक प्रजाळ। तो लंकाळ जी लंकाळ कप डर घहलियौ लंकाळ। —र. रू.

३ विभीषण।

४ सिह, शेर।

उ०—१ ओ३म नमस्ते चंडका चद्रभाळ री नवीन आभा, छटा मणि भाळरी भुजाटा रही छाय। आरोहा लकाळ री क सत्रा धू झाळ री आग, रमा रूप जयौ काछ-पचाळ री राय। —नवळजी लाळस

उ०—२ पळासण अग भखै भर पेट, भेळा उतमग सदा सिव भेट। 'लाला' कर थापलि कध लंकाळ, 'फुलां' सिंघ सग भरावत फाळ। —रा. रू.

उ०—३ सबळै भूखै सीह ज्यूं, चढिया मुहि चुगलाळ। गिलमां ऊमर गिळ गयौ, ज्या अग आळ लकाळ। —र. रू.

५ राजा।

६ अगस्त्य तारा।

[स. लंक] ७ ललाट, भाल।

उ०—भुज विसाळ लंकाळ, वरण झाळाहळ सुंदर। भरि मातै भाद्रवै, जांणि ऊगौ भासकर। —गु. रू. बं.

८ राक्षस।

उ०—सेना ऊतरे समंद पार पदम्मे अठारह सहस, बहस्से निसांण किना गाजियौ बाराण। बेद बाण दूण लाख डडाळा लंकाळ बजे, असुरा सुराह माह माचियौ आराण। —जोरावरसिंघ

वि.—१ वीर, योद्धा।

उ०—१ रणखेती रजपूत री बीर न भूलै बाळ। बारह बरसा बापरौ, लहै बैर लंकाळ। —वी. स.

उ०—२ इगताळै रा जेठसुद, तीज हुवौ रिणताळ। जूटा भाटी जग में, कमंधां छळ लंकाळ। —रा. रू.

२ भयकर, भयानक, भीषण।

उ०—जिके इंदु फ (पु) ण, इद कद तां गळै निकासे। जुध प्रवीण रढराण, पांण त्या दूरि पियासे। जिके छत्र मज गत्त, जत्र त्या हुये अलग्गा। जिके काळ लकाळ लुळे लुळ पाये लग्गा। पूरब पछिम उत्तर दखिण, कीती रेणा खळभले। अखैराज अरक ओहो-सियो, हुय नरद हालोहले। —नैणसी

३ जबरदस्त, जोरावर।

४ लका का, लका संम्बन्धी।

५ दक्षिण दिशा का, दक्षिण दिशा सम्बन्धी।

मह.—लंकाळौ, लकालौ।

लंकालियण–स. पु. – १ परमेश्वर। (ह. ना. मा)

२ रामचन्द्र।

रू. भे.—'लकलियण'

लंकावरीस–वि. [सं. लंका+रा. वरीस] लका का दान करने वाला, लंका प्रदान करने वाला।

स. पु—श्री रामचन्द्र भगवान। (ह. ना. मा.)

रू. भे.—लकवरीस, लंकाबरीस

लंकाळौ, लंकालौ–सं. पु—देखो 'लकाळ' (मह. रू. भे.)

उ०—'बीक' हर सीह मार करतौ वसू, अभंग अर-व्रंद तौ सीस आया। लाग गयणाग भुज तोल खग लकाळा, जाग हो जाग कलियाण जाया। —पदमा सादू

उ०—२ बाळकिसन पति छळ बाहाळौ, 'लाल' जोड़ द्रळ ढाळ लकाळौ। सामि सनाह जिसा विच साथा, हरकिसनोत महाबळ हाथा। —रा. रू.

लंकिणी—देखो 'लकणी' (रू. भे.)

लंकियौ–स. पु—एक तारा विशेष।

लंकी–वि.—१ सिह के समान कृश कमर वाली, पतली कमर वाली।

उ०—१ कुच पाकी नारंगिया, सुपारी सा कठोर। पान सरीखो पेट। केसर लकी। नाभी मडळ गुलाब रौ फूल। —फुलवाड़ी

उ०—२ नख सूं ले चोटी लगं, तन छबि माँह तरून। लुळ मिळ केहर लकियां, लांबै नीर भरत। —बा. दा.

सं. पु.—१ कबूतर।

उ०—बरचि दीप बेवड़ा, कळी केवड़ा कनोती। लंकी भभर अलोल बजरमणि मोल बिचोती। —मे. म.

२ एक विशेष प्रकार का कबूतर।

उ०—१ ओछ पड़छ रवि अंग, चंमर भमर सुर चंम्मर। केकी ग्रीव कसस्सि, तिकर **लंकी** कब्बूतर। —सू. प्र.

उ०—२ तिके किराहेक भातरी कबाण छै। असल सीगण, सेर-जवान खाचता बड़बडाट करै, कायर देख भागै, अढार टांकरै चिलै लागै, लकी कबूतर री गरदन ज्यू बाकी। तिके बाहु में घालीजै छै। —जैतसी ऊदावत री बात

३ सिंह।

४ वीर, योद्धा।

५ एक प्रकार का ताम्बूल।

६ देखो 'लंक' (रू. भे.)

उ०—१ भीण **लंकी** महा दीसइ ए नारि, सरस कंठ सोहायणउ। —बी. दे

उ०—२ आभा भळपट अंग क चंदे चीरियां। दरियाई धुज देह, हरै मग हीरिया। लटकण भोला लेह, क बेसर वंकिया। भरिया भूषण भार, लचक्कत **लंकियां**। —र. हमीर

लंकीली-वि. स्त्री.—१ सुन्दर कमर वाली।

उ०—अथ कंबरी रै पत्री सिधश्री लग्न री लड़ी, जीव री जड़ी, सजीली फबीली लजीली, छबीली, रमकीली, **लंकीली**, कमकीली बकीली लटकीली चकीली चटकीली बतीस लछणी। —र. हमीर

लंकेंद्र-स. पु. [स. लका+इन्द्र] १ रावण।

उ०—राजा प्रतापि **लंकेंद्र**, सत्य वाचा हरिस्चंद्र, साहसिक विक्रमादित्य। —व. स.

२ विभीषण।

लंकेस, लंकेसर, लंकेसरि, लंकेसरी लंकेसुर, लकेसुरि, लकेसुरी, लंकेस्वर, लंकेस्वरी-सं. पु. [सं. लंका+ईश, लंका+ईश्वर] १ रावण। —नां. मा.

उ०—१ सुर तजौ चित वरतौ असोक, **लकेस** हणूं सुख करा लोक। —सू प्र.

उ०—२ बकै वयण **लंकेस** बिभीसण, म्है तौ भुजबळ मिंता। बांणी ब्रिथा हुवै रे बीरा, चित अधकाणी चिंता —र. रू.

उ०—३ **लंकेसर** लंक गयौ वा लेय। —रामरासौ

उ०—४ **लकेसुरि** जीता त्रैवैलोक —रामरासौ

२ विभीषण।

उ०—उवै वार वभीखणौ चालि आयौ, लखै ते हणूमांन पावां लगायौ। प्रणांमेस वैभाखणां भूप येनूं, जपै आव **लंकेस** स्रीराम जेनू। —सू. प्र.

३ अगस्त्य नामक तारा।

लंक्क, लंक्कि—१ देखो 'लंक' (रू. भे.)

उ०—ऊमर दीठी मारूई डींभू जेहि **लंक्कि**। जांणे हर सिरि फूलडा, डाकै चढी डहक्कि। —ढो. मा.

२ देखो 'लंका' (रू. भे.)

लंख—बड़े बास पर खेल करने वाली नट जाति।

उ०— भड (ट्ट) भोजिग बहु भट्ट नट्ट बोलइ बिरुदाळी। **लंख** मंख खेलंति खग्ग, कर देता ताळी। —विजयसिंह सूरि

लंग-स. पु.—१ देखो 'लिंग' (रू. भे.)

उ०—न रूप रेख लेख भेख तेख तौ निरंजणं। न रंग अंग लग भंग संग ढंग संजणं। —र. ज. प्र.

२ देखो 'लांग' (रू भे.)

लंगड़—देखो 'लंगड़ौ' (मह., रू. भे.)

लंगड़ाणौ, लंगड़ाबौ-क्रि. वि.—दोनों अथवा चारो पैरों का बराबर न जमना। कुछ लचका कर या लंगडा कर चलना।

लगड़ावणहार, हारौ (हारी), लंगडावणियौ—वि.।

लंगड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लंगड़ाईजणौ, लंगडाईजबौ—भाव वा.।

लगड़ी-वि.—१ शक्तिशाली, बली।

स. पु.—२ एक प्रकार का छंद।

३ हनुमान।

स. स्त्री.—४ घोड़े की एक चाल विशेष।

उ०—दुड़की, कदम, खोळ गर नाच री **लंगड़ी** चाला धुराधुर में जांणै जित्तौ पारंगत व्हैगौ। घोड़ो तो बादळ री मंसा परवाणै हुकम बजावतौ। —फुलवाड़ी

५ देखो 'लंगरी' (रू. भे.)

लंगड़ौ, लंगडौ-सं. पु.—१ एक प्रकार का आम।

वि. [फा. लंग] (स्त्री. लंगड़ी) २ जिसका एक पांव क्षत हो गया हो, काम न करता हो।

३ पैर में विकार या कष्ट के कारण जो ठीक से न चल पाता हो।

४ कोई एक आधार विकार युक्त या नष्ट होने से जो भली प्रकार अथवा सीधा खड़ा न रह पाता हो।

५ क्षतिग्रस्त होने या टूटने के कारण जो पैर टेढा हो गया हो, मुड गया हो।

रू. भे.—लागड़ौ, लांगौ, लांघड़ौ, लाघौ।

मह.—लंगड।

लंगर-वि.—१ बहुत अधिक।

उ०—थेट्ठ छोड बवा थोक, मह अघ दीध हासळ मोक। सातूं ईतरौ नह सोक, **लगर** सुखी सगळा लोक। —र. रू.

२ भारी, वजनदार।

३ दुष्ट, निर्लज्ज, ढीठ ।

उ०—**लंगर** लोग लोभ सौ लागै, बोले सदा उन्ही की भीर । जोर जुल्म बीच बटपारे, आदि अंत उनही सौ सीर । —दादूवाणी

४ नटखट, शरारती ।

स. पु.—१ साकल, शृंखला ।

उ०—१ आसत सगत ऊधरा आर्चा, जस जालम अखमाल जिसौ । लोह दोयण ताछै लोह **लंगर**, औ 'लालौ' लोहार यसौ ।

—लालसिंह राठौड रौ गीत

२ हाथी के चारो पैरो मे बाधी जाने वाली साकल ।

उ०—१ डग बेडिया दुलट्टु, लगा चहुंवा पग **लगर** । आकासी सारसी, करै आग्राज भयंकर । —सू प्र.

उ०—२ सुजस घटा बीर पुड सादा, **लंगर** रठीठां क्रपण लग । सत्र भज थटा निवाजण सकव्या, जोस ऊपटा गयद जग ।

—उदौतसिंह सीसोदिया रौ गीत

उ०—३ अवलंबि सखी कर पगि पगि ऊभी, रहती मद वहती रमणी । लाज लोह **लंगरे** लगाए, गय जिम आणी गय गमणी ।

—वेलि.

३ बंधन ।

उ०—१ कवसळ सुता राजकवार, ऋत जन काज रा । दरसे चखा दत खग दोय **लंगर** लाज रा । —र. ज. प्र.

उ०—२ **लंगर** लज्जा रा तरभगर लाडा, गोरख माया रा गाहिड़ रा गाडा । —ऊ. का.

४ पैरो मे धारण किया जाने वाला सोना या चाँदी का आभूषण विशेष ।

५ जहाज और नाव आदि को ठहराने के लिए लोहे का बना हुआ बहुत बड़ा काटा जिसे समुद्र या बडी नदी मे जहाज पर से गिराकर जहाज को पानी पर स्थिर रखा जाता है ।

उ०—नेहा समद बीच नाव लगी है, बाल न लगत बही जात अकेली । लाज को **लंगर** छूट गयौ है, बही जात बिना दाम की चेरी । —मीरा

६ लोहे की बनी वह बजनदार शृंखला जिसे अपराधी के पैरो मे इसलिए बाधते है कि वह भाग न जाए ।

७ वह मोटा रस्सा जो जहाजो पर काम में लाया जाता है ।

८ पक्की सिलाई से पूर्व दूर दूर पर डाले जाने वाले कच्चे टाके, कच्ची सिलाई ।

९ कतार, पंक्ति ।

उ०—परस लसकर धरर थरर कायर पिंजर, लहर आतस **लगर** डमर लागौ । जोरवर दोयणा भणूं जबर दोहूं, वेध जण बजर खग अजर गत गजर बागौ । —पहाडखा आढौ

१० समूह, झुंड ।

उ०—नह भूलौ बात सुमत्रा नंदण, छोह अनाहक छेले । वे सिय सोध हिमैं भड आवैं, **लंगर** फोजा ले ले । —र. रू.

११ फौज, सेना ।

उ०—१ माथा हालै सेस मह, पडै भार अणपार । कूच करै आया कठठ, **लंगर** लीधा लार । लार **लगर** लियौ पदम दस आठ कप । तोय धर कूल बप जोस ताजा । —र. रू.

उ०—२ 'राणौ' 'वाणौ' राड रा, भुज झाले भर भार । काळी निस आया कठठ, **लंगर** लीधा लार । —वी. मा

१२ वीर, यौद्धा ।

उ०—अरि अळियौ जड हूंत उपाडै, साकुर धोरी हांक सरै । ल्हास करै फौजां वड़ **लंगर**, कीध नीनाण समर करै ।

—लालसिंह राठौड रौ गीत

१३ भोजन ।

१४ गरीबो, या याचकों आदि को बाटा जाने वाला भोजन ।

उ०—दरबार सूं गरीब गुरबौ नू खैरायत **लंगर** बंटणै लागियौ ।

—कुंवरसी साखला री वारता

१५ भोजनालय, भोजनशाला ।

१६ मंदिर मे लटकाया या किसी पशु के गळे मे बाधे जाने वाले घंटे के अन्दर बीच मे लटकने वाला धातु का गुटका, लोलक ।

वि. वि.—इस गुटके का निचला शिरा मोटा होता है और ऊपरी शिरे मे छेद होता है । यह घटे के अन्दर बीचो बीच लटकता रहता है और घटे के हिलने के साथ ही हिलकर घटे के अन्दर वाले भाग से टकराता है जिससे ध्वनि उत्पन्न होती है ।

लंगरखांनौ—स. पु. [फा. लंगरखाना] १ दीनों व दरिद्रों को भोजन बांटने का स्थान ।

उ०—**लंगरखाना** धेग है, दळ पार न पाई । 'माल' बियौ बळराव है, जैचद सवाई । —वी. मा.

लंगरगाह—स पु—१ समुद्र या बड़ी नदी के किनारे का वह स्थान जहा पर लगर गिराकर जहाज ठहराये जाते है ।

लंगरलार—वि:—पक्तिबद्ध, पक्तियुक्त ।

क्रि वि.—क्रमश, लगातार ।

लंगराई—सं. स्त्री.—१ शैतान, ढीठ या दुष्ट होने की अवस्था, क्रिया या भाव, शैतानी, शरारत, ढिठाई, दुष्टता ।

उ०—१ औगुण बहुत सील नहि सांची, बहौत करी **लंगराई** । सौ-करणि सकळ घेरती थाकी, (पीव) परकट सेज बुलाई ।

—ह. पु. वां.

लंगरी—वि.—१ योद्धा, वीर ।

उ०—१ **लंगरी** रिम सेन लाडौ, गुमर धारक लाज गाडौ । इळ

झडै कूंभेण ग्राडौ, भूझ जाडौ भूझ जाडौ। —र. रू.

उ०—२ लंगरी खगाटा पाण 'डूंग' ने छुडाय लायौ, सोभा तिहुं थांना साख पायौ सूर चन्द। पायौ फतै 'ज्वार' नाम रहायौ छंवतौ प्रभा, बापौ ग्रासमांन लागौ ग्रायौ नेतबंध। —डूंगजी रौ गीत

२ सेनापति।

यौ.—लगरीराव।

३ देखो 'लगडी'।

लंगरीराव—योद्धा, वीर।

उ०—**लंगरीराव** रूकां रटक लेणका, भलौ 'ग्रगजीत' 'उमराव' भीमेण का। —महादान मेहड़

लंगळ—देखो 'लागळ' (रू भे.)

लंगस—देखो 'लगस' (रू. भे.)

उ०—लंगस ऊपटा फौज गज थटां भुजळग लहर, सूरतन ठहर जळ गहर साजा। प्रथीपत 'ग्रभौ' ग्रायौ उलट छत्रपती, रौद 'सरविलद' पर समद राजा। —महाराजा ग्रभयसिंह रौ गीत

उ०—२ लोहरी लहरि नभ गहर परसै लंगस, वार चक्रधार तिण बार दीधा। बिलंबौ बार समराथ जळ दळ बिगरि, 'कूभ' सुत जेमि सुत 'नाथ' कीधा। —राव सत्रसाल रौ गीत

उ०—३ तुरत ग्रेक खरचै रतन, लंगस तोड लड़ंग। ग्रभग भूप उवांबरां, वड गज बाज विडंग।

—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेळ री बात

लंगा—सं. पु—एक मुसलमान गायक जाति।

लंगार—सं. स्त्री.—पंक्ति, कतार।

लंगी—स. स्त्री. [फा. लग] कुश्ती का एक दाव जिससे टांग लगड़ी करके प्रतिद्वन्द्वी को टाग ग्रडाकर गिराया जाता है।

लंगूर—स. पु. [स. लांगूलिन्] (स्त्री. लगूरी) १ साधारण बंदर से कुछ बड़ा काले मुँह व लंबी दुम वाला बदर।

उ०—बड़ला माथै ग्रेक ग्रचपळा लंगूर रौ वासौ। ग्रठी नै घाचण नै फेर ग्रायी नै उठीनै वो उणरौ कोथळियौ उचकाय लीनौ।

— फुलवाड़ी

२ चपल चंचल बालकों के लिए प्रयोग मे लाया जाने वाला शब्द।

उ०—मा, घणौ लडाय, थूं इण लंगूर नै इतार देवैला। बिना मापा रौ नेह ग्रर लाड पछै फोड़ा घालैला। छोरौ दिन-दिन परबारै। —फुलवाड़ी

३ देखो 'लांगूळी' (रू. भे.) (डिं. को.)

रू. भे.—लंगुल, लगूल

ग्रल्पा —लगूरियौ

लंगूरियौ—देखो 'लगूर' (ग्रल्पा, रू. भे.)

लंगूरी—सं. स्त्री. [सं. लघन] १ उछल उछल कर चलने वाली घोडे की एक चाल।

२ चुराए हुए पशुग्रों को ढूंढ लाने पर उसको दिया जाने वाला ईनाम।

वि.—३ लगूर का, लगूर सम्बन्धी।

लंगूल—१ देखो 'लागुळ' (रू. भे.) (डिं. को.)

२ देखो 'लागूळी' (रू. भे.) (ग्र मा., ना. मा.)

लंगोचा—स पु.—१ कीमे से भर कर तली हुई जानवर की ग्रांत, कुलमा, गुलाम।

लंगोट—सं. स्त्री. [स. लिंग+पट या रा. ग्रोट] १ प्राय: लम्बी पट्टी के ग्राकार का ग्रथवा तिकोना सिला एक वस्त्र विशेष जो केवल उपस्थ ढकने के लिए कमर में बाधा जाता है।

उ०—तन लाल गुलाल प्रवाल तरै, भल भोग नितंब नितब भरे। कसिया तन घोट लंगोट कसी, बिसियारस ग्रंतर बीच बसी।

—ऊ का.

मुहा० लंगोटी रौ ढीलौ=वह व्यक्ति जो ग्रवसर ग्राने पर स्त्री गमन करने में न संकुचाता हो।

लंगोट रौ सांचौ=कभी भी पर-स्त्री गमन न करने वाला व्यक्ति।

ग्रल्पा,—लगोटी।

मह.—लगोटौ।

लंगोटबंद, लंगोटबंध—वि.—सदैव के लिए जिसने स्त्री गमन, या परस्त्री के साथ संभोग न करने के लिए प्रण कर रखा हो।

उ०—लंगोटबंध बाला सहूं, लाल चिळ्यौ मुदराळ वणि। ग्रोभिके वीर सहूँ जागिया, भगवती नीपाइ भणि। —मां. वचनिका

लंगोटियौयार—सं. पु. यौ.—बचपन का मित्र।

लंगोटी—सं. स्त्री.—१ वह छोटा लगोट जो प्राय: बच्चों के उपस्थ एवं गुदा ढकने हेतु कमर में बाधा जाता है।

मुहा लगोटी में मस्त=जिस के पास कुछ भी न हो फिर भी सदैव प्रसन्न रहने वाला।

२ काछनी, कोपीन।

लंगोटौ,—देखो 'लगोट' (मह., रू. भे.)

उ०—१ सिन्यांसी नागा ग्रवधूता, भगवा बसतर ग्रग बभूता। जटा लंगोटा ससतर धारी, ग्राप न मारै ग्रौरां मारी। —ग्रनुभववांणी

उ०—२ लाल लंगोटौ तिलक सिंदूर को, बैठा बजरंग ग्रासण ढाळ। —लो. गी

लंगोर—स. पु.—योद्धा, बहादुर।

उ०—घोड़ा बांधै घूमरां, तोड़ा दए टकोर। नाळां लिए कळाइयां, लड़वा कज लंगोर। —पा. प्र.

लंगोलार—वि.—१ क्रमश:।

२ पंक्तिबद्ध।

लंगौ—१ लगा जाति का व्यक्ति।

२ देखो 'लागौ'

उ०—बदै 'अंगदेस' हुवा जोध वका। लंगा झोकरै झोक प्राजांळ लका। —सू प्र.

लंघक–वि. [सं. लंघ] १ लांघने वाला, उल्लंघन करने वाला।

२ नियम तोडने वाला।

लंघण—देखो 'लांघण' (रू. भे)

उ०—१ सुण ढोला करहउ कहइ, मो मनि मोटी आस। कइरा कूपळ नवि चरू, लंघण पडइ पचास। —ढो. मा

उ०—२ हुसा बिडद बिचार लै, चुगै तो मोती चुग्ग। नित रा करणा लंघणा, जीणौ कितैक जुग्ग। —अज्ञात

लंघणियौ—देखो 'लांघणियौ' (रू. भे.)

लंघणीक—देखो 'लांघणीक' (रू. भे)

उ०—मण, सरद, चकित, निस, रतिपतिहि, लंघणीक मदहू चलत। मिथळेस कुवरि, सीता सुतन, कवि एती ओपम कहत। —र. ज. प्र.

लंघणौ, लंघबौ—देखो 'लांघणौ, लांघबौ' (रू भे.)

उ०—१ भिल्लै नरिंद खटतीस जात, जोगिंद्र जाण ठिल्लै जमात। लंघी अजाद दध लहर लेत, खागीबंध चढिया बीर खेत। —वि. सं.

उ०—२ कुंभा धउ नइ पखड़ी, थाकउ विनउ वहेसि। सायर लंघी प्री मिळउ, प्री मिळि पाछी देसि। —ढो. मा.

उ०—३ वेधौ दुद न वीसरै, 'चंद' तणौ हरनाथ। पथ अलग्गौ लंघतां, लारा लग्गौ साथ। —रा. रू.

उ०—४ हणमत पखै वानर अवर, कवण कुदि लंघै महण। —गु. रू. ब.

उ०—५ छोडा छोड करता छोळा, नामै सीस नरेस नू। लघै रात अणंद अलेखै, सो सुख नही सूरेस नू। —र. रू.

लंघणहार, हारौ (हारी), लंघणियौ—वि.।

लंघिओड़ौ, लंघियोड़ौ, लंघ्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लंघीजणौ, लंघीजबौ—कर्म वा.।

लंघन—देखो 'लांघण' (रू. भे.)

लंघाड़णौ, लंघाड़बौ—देखो 'लंघाणौ, लंघाबौ' (रू. भे.)

लंघाड़ियोड़ौ—देखो 'लंघायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लंघाडियोडी)

लंघाणियौ—देखो 'लांघणियौ' (रू. भे.)

उ०—केहरी मरण जोहरी चौ कटेडे, बिछूटियां लगर लंघाणियौ बाघ। खाग थारी गयौ साहिजादां खड़ै, खान-जादा गयौ बाहतो खाग। —लालसिंह सोळकी रौ गीत

लंघाणौ, लंघाबौ–क्रि. स. [लंघणौ या लांघणौ क्रिया का प्रे. रू.] लांघने का काम किसी से करवाना।

लंघाणहार, हारौ (हारी), लंघाणियौ—वि०।

लंघायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लंघाईजणौ, लंघाईजबौ—कर्म वा०

वि वि.—देखो लांघणौ, लांघबौ'

लंघाडणौ, लंघाडबौ, लंघावणौ, लंघावबौ (रू. भे.)

लंघावणौ, लंघावबौ—देखो 'लंघाणौ, लंघाबौ' (रू. भे.)

उ०—गाडर पूछ विलंब कर कोई पार लंघावै। —केसौदास गाडण

लंघावणहार, हारौ (हारी), लंघावणियौ—वि.।

लंघाविओड़ौ, लंघावियोड़ौ, लंघाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लंघावीजणौ, लंघावीजबौ—कर्म वा।

लंघावियोड़ौ—देखो 'लंघायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लंघावियोडी)

लंघौ–वि. [सं. लंघन] भूखा।

उ०—कडीया लंघा केहरी, गज राज चलारा। नितंबां दीजै ओपमा, वीणार वेंहारा। —मयारांम दरजी री बात

लंचणौ, लंचबौ—देखो 'ललचणौ, ललचबौ' (रू भे.)

उ०—रसै माधुरै पी जभीरी बिजोरा, झुकै साख फूलां फला भारी झोरा। सनी सी मधू दाख अनार सेवा, दियौ आणि लंचै सुधा जाणि देवा। —रा. रू.

लंचणहार, हारौ (हारी), लंचणियौ—वि.।

लंचिओड़ौ, लंचियोड़ौ, लंच्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लंचीजणौ, लंचीजबौ—भाव वा.।

लंच्छण, लांच्छन, लांछन—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—न्यात मिली जीमण, कीधौ, मिल पास कुमर नामज दीधौ। नागतणौ लंछण जाणी, स्रीपास भजौ पुरुसा दानी। —जयवाणी

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

३ देखो 'लांछन' (रू. भे)

उ०—१ साल्ह कुंअर मूडउ कहइ, माळवणी मुख जोइ। प्राण तजेसी पदमणी, लंछण देस्यइ लोइ। —ढो. मा.

उ०—२ रिसह लंछणि धोरिउ उल्लसइ सु भवपंकि पड्या जन तारिसिइ। —जयसेखर सूरि

लंछन—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ खड़ग लंछन तप तेज अखडित, अरिहंत तीन भुवन अव-

तंस । समय सुंदर कहे मेरो मन लिनौ, जिन चरणे जिम मानस हस । —स. कु.

उ०—२ सीस मानता देवाधिपती, ससिहर एहवुं जाणी । विनय चद्र प्रभू चरणां लागौ, लांछन नउ मिस आंणी । —वि. कु

२ देखो 'लाछन' (रू. भे.)

३ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लांछौ—स्वभाव ।

उ० –पण पुलस हाळा आपरे लांछा सारू बूढै भायलै नवलजी रा पग पकड लेसी तथा भूल सिकार जासी । —दसदोख

लांजा–स स्त्री.—१ लक्ष्मी ।

उ०—ग्रोजी बेटा थारै काहे की गुमराई जी स्यामसुंदर थारै **लांजा** सी लुगाईजी । —लो. गी.

२ धन, दौलत ।

उ०—पदमणि पूंगळ री ऊगळ गळ आगै, **लांजा** हंजादै गजा ग्रह लागै । महितळ मगजाई भेले थळ भेली, लेली महिमा मत महिला दळ लेली । —ऊ. का.

३ सीता ।

४ वेश्या ।

५ व्यभिचारिणी, कुटिनी, कुलटा ।

लांजौ, लांभौ–वि. [स्त्री. लंजा, लंजी, लभा, लंभी] १ सुन्दर ।

उ०—उदियापुर **लांजा** सहर, मांणस घण मोलाह । दे झाला पांणी भरै, आईयौ पिछौलाह । —महादांन मेहडू

२ सुकुमार ।

३ शौकीन, अलबेला ।

उ०—बेवते ओठी नै हेलौ मारियौ ए, **लांजा** ओठी ए लौ, धड़इयौ उखणावतौ जाव, बाला जी ओ । —लो. गी.

४ रसिक, रसिया ।

उ०—तठा उपरांति करि नै भोगिग्रा भमर **लांजा** छयल । हुसनाक जुवांन निजर बाज बाजार मांहै ऊभा जोहा खाय छै ।

—राजांन राउत री बात बणाव

रू. भे. –लाजौ

५ लपट ।

सं. पु—६ हस ।

लांठ–वि—१ दुष्ट, कृतघ्न ।

उ०—निनाद बंध अध के दुकध ओटतै । नदें महांन **लांठ** संठ के कुकंठ घोटतै मदें । —ऊ का.

२ मूर्ख, उजड्ड ।

लांठई–स स्त्री.—लठ होने की अवस्था या भाव, लठपनन ।

लांड–सं. पु. [स. लड़ि उत्क्षेपणे=उछालना ऊपर फेकना] पुरुषेंद्रिय, शिश्न ।

रू. भे.—लवंड लांड ।

लांडण—देखो 'लंदन' (रू. भे.)

लांडी–सं. स्त्री.—कुलटा, दुश्चरित्रा स्त्री ।

लं डूरौ–वि. [स्त्री. लं डूरी] १ बिना पूछ का, जिसकी पूछ कटी हुई हो ।

२ अग भंग ।

लं त – देखो 'लता' (रू. भे)

लंतग–स. पु.—देवलोक (जैन)

लं दन, लं धन–सं स्त्री—१ इग्लैंड की राजधानी का शहर ।

उ०—त्या हदी तरवार पगा पतसाहरै । लं दन धराई लाय निखळ नर नाहरै । —किसोरदांन बारहठ

उ० –२ प्रतापीक जग चावौ 'पातल', दुनियां में ज्यूं सूर दिपै । लं धन धणी जाण वै ल्याकत, जन जस लेवण खड़ौ तपै ।

—जुगतीदान देथा ।

रू में. –ल डण

लं प–स पु.—१ खनिज तैल, मिट्टी का तेल ।

२ देखो 'लैंप' (रू. भे.)

३ देखो 'लांप' (रू. भे.)

लंपक–सं. पु.—१ लामघम देश जो काबुल नदी के उत्तरी तट पर है ।

रू. भे.—'लंबक'

लंपट–वि. [सं.] १ व्यभिचारी, विषयी, कामुक ।

उ०—**लंपट** खळ लुच्चा बीजू बुच्चा, दुच्चा पण टोकादा है । चाकर रा चाकर ठाकर ठाकर, बाकर बण बोकंदा है । —ऊ. का.

२ ऐयाशी ।

३ लालची ।

४ अनुरक्त, लीन ।

उ०—विसै सुख लेण सारू दारू दीधौ, पण इसौ सूरवीर सौ उण समै वैर हीज याद कियां पण विसय में **लंपट** न हुऔ ।

—वी. स. टी.

५ उपपति, यार ।

रू. भे.—लंपटी ।

लंपटता–सं. स्त्री.—१ लंपट होने का भाव या अवस्था ।

२ कुकर्म, व्यभिचार ।

लंपटी—देखो 'लंपट' (रू. भे.)

उ०—१ माठा करतब **लंपटी**, अति घणा । तें तौ लक्षण कहीजै नीचौ रे । —जयवाणी

लंपाक–पु. सं. [सं.] लपट, दुराचारी।

२ पुराणो मे वर्णित उत्तर पश्चिमी भारतवर्ष का मुरड नामक देश।

लंपो–स. स्त्री.—१ गोटा किनारी की एक किस्म जो ओढने के लगाई जाती है।

लंपौ—देखो 'लांपौ' (रू. भे.)

लंफणौ, लंफबौ–क्रि. अ. [स लफ] कूदना, छलाग लगाना।

उ०—वेग सुरगम् अति विहद, प्राक्रम तन भरपूर। गढ सफील झप्यौ गिगन, **लंफ्यौ** जाण लंगूर। —बगसीराम पुरोहित री बात

लंफणहार, हारौ (हारी), लफणियो—वि.।

लफिओड़ौ, लफियोड़ौ, लफ्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लंफीजणौ, लफीजबौ—भाव वा.।

लंफियोड़ौ—कूदा हुआ, छलाग लगाया हुआ।

(स्त्री. लफियोडी)

लंब–सं. पु. [सं] १ कृष्ण द्वारा मारा जाने वाला एक राक्षस, प्रलबासुर।

२ खर नामक देत्य का भाई एक असुर।

३ एक प्राचीन मुनि।

४ शुद्ध राग का एक भेद।

५ ग्रहो की एक प्रकार की गति (ज्योतिष)।

६ वह रेखा जो किसी रेखा पर खडी और सीधी गिरती हो।

७ दूरी, फासला।

उ०—किला मे **लंब** घणी पडती तिणसू गोपाळ पौळ रै उरली तरफ नै चोकेळाव रै परली तरफ भैरूंपौळ नै बुरज और फेर नवी कराई। —मारवाड री ख्यात

रू. भे.—लबक।

लंबउ—देखो 'लांबौ' (रू भे)

उ०—छोटी वीख न आपड़ा, लाबी लाज मरेह। सयण वटाउ वाळ रे, **लबऊ** साद करेह। —ढो. मा.

लंब-कचुक–सं. स्त्री. [सं] प्रायः विधवा स्त्रियों के पहनने की अंगिया।

लंबक–स. पु.—फलित ज्योतिष के योग जिनकी सख्या १५ है।

देखो 'लब' १, २, (रू. भे.)

उ०—ताड वृक्ष अमूल्या कान्हउ, सिकटा सुर सधारचा। नड कूवड नई भमण कराव्या, खड खड **लंबक** मारचा। —रुक्मणी मगळ

देखो 'लपक' (रू. भे)

रू भे—लंबुक।

लंबकन्न, लंबकरण–वि. [सं लंब+कर्ण] १ लम्बे कानो वाला, जिसके कान लम्बे हो।

२ मूर्ख।

उ०—विवक्कि वक्र ह्वै अवक्र चन्न चेठतै बहै। बिवन्न **लंबकन्न** के दुकन्न ऐठते बहै। —ऊ. का.

स. पु—१ गधा (डि. को)

२ बिलाव, ३ हाथी, ४ बकरा, ५ खरगोश, ६ राक्षस।

लबकराड़ियौ–वि. [स. लब+रा. कराडी=गरदन] लबी गर्दन वाला।

उ०—करहा **लंबकराड़िआ**, बे बे अगुळ कन्न। रातिज चीन्ही वेलडी, तिण लाखीणा पन्न। —ढो. मा.

सं. पु.—ऊंट।

लंबग्रीव–सं. पु. [सं.] ऊंट।

उ०—बाणा भरिया **लंबग्रीवा** वणै, सीसांण सोरांण अपार सुणै। —विनय-रासौ

वि.—लंबी गर्दन वाला।

लंबड़ाणौ, लंबड़ाबौ–क्रि. स.—उद्दण्ड गाय, भैंस आदि पशुओं को खेत में चरने हेतु लम्बे रस्से से बांधना या बांध कर छोड़ देना।

लबड़ाणहार, हारौ (हारी), लंबड़ाणियौ—वि०।

लंबड़ायौड़ौ—भू० का० कृ०।

लंबडाईजणौ, लंबड़ाईजबौ—कर्म वा०।

लंबराणौ, लंबराबौ, **लंबेडणौ, लंबेड़बौ, लांबेडणौ, लांबेड़बौ** —रू. भे.

लंबड़ायोड़ौ–भू. का कृ—उद्दण्ड गाय, भैंस आदि पशुओं को खेत में चरने हेतु लंबे रस्से से बाधा या बाधकर छोड़ा हुआ।

(स्त्री. लंबडायोडी)

लंबछड़—देखो 'लामछड़' (रू. भे)

उ०—छुटै **लंबछड़** ताड तड तड। बाण छुट बड़ **सौक सड़ सड**। —प्रतापसिघ म्होकमसिंघ री वात

लंबजीभी–वि. [स. लब+जिह्वा] १ जिसकी जीभ लंबी हो।

२ वाचाल, बातुनी।

लंबत—देखो 'लबित' (रू. भे.)

उ०—चमर धार परवार, करी आमर परिक्रमा। भुज **लंबत** डडोत, वयण व्रत पेख ब्रह्ममा। —रा. रू.

लंबतड़ग, लंबधड़ंग–वि.—ताड के समान लम्बा, बहुत लम्बा।

उ०—१ बलिराजा पूरा जिग किया, तब इद्र हेत हरि आया। पाव पताळि सीस असमानां, **लंबतड़ग** कहाया। —ह. पु. वां.

उ०—२ इत्तै ई मे तौ अेक **लंबधड़ंग** काळी कांबळ ओढियोड़ी रति-वाळी जीवती जागती मूरती आय धमकी। —बरसगांठ

रू. भे.—**लबौ-तड़ंग, लांबौ-तड़ंग**।

लंबपयोधरा–सं. स्त्री.—कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

लंबमांण–वि. [स. लंबमान] दूर तक फैलाया गया हुआ ।

लंबर—देखो 'नबर' (रू. भे.)

लंबरदार—देखो 'नंबरदार' (रू. भे.)

लंबराणौ, लंबराबौ—देखो 'लबडाणौ, लंबडाबौ' (रू. भे.)

लंबराणहार, हारौ (हारी), लंबराणियौ—वि० ।

लंबरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लंबराईजणौ, लबराईजबौ—कर्म वा० ।

लंबहत, लबहथ, लंबहात, लंबहाथ—देखो 'लाबाहाथ' (रू. भे.)

लबहोठी–वि.— जिसके होठ लबे हो ।

लंबाई–सं. स्त्री.—१ लंबा होने की अवस्था या भाव, लम्बापन ।

२ किसी वस्तु का सबसे लंबा आयाम या पक्ष ।

लंबाणौ, लंबाबौ–क्रि. स.—१ लम्बा करना ।

२ द्रुत करना ।

लंबाणहार, हारौ (हारी), लंबाणियौ—वि० ।

लंबायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लंबाईजणौ, लंबाईजबौ—कर्म वा० ।

लंबायत–वि. [सं.] १ लंबायमान ।

उ०—अर आगै देवराज रौ रचियौ आठ हाथ उछ्रित, आठ हाथ **लंबायत**, बतीस पूतळी सहित चन्द्रकांत मणिमय एक सिघासण कोई प्रासाद री पीठ-भू खोदता कढियौ तिकौ ही आप रै भद्रासण बणायौ । —व. भा.

२ लम्बा ।

लंबाहात, लंबाहाथ—देखो 'लांबाहाथ' (रू. भे.)

लंबिका–स. स्त्री. [सं.] गले के अंदर की घंटी, कोआ ।

लंबित–भू. का. कृ. [सं.] १ लंबा किया हुआ. २ निश्चय किया हुआ. ३ विचार स्थिगित किया हुआ. ४ लटकता हुआ. ५ झूलता हुआ. ६ लंब के रूप में आया हुआ. ७ आधारित, आश्रित, टिका हुआ ।

स. पु.—मांस, गोश्त ।

रू. भे.—'लबत'

लंबी—देखो 'लाबी' (रू. भे.)

लंबीकांचळी—देखो 'लांबीकाचळी' (रू. भे.)

लंबी बांयांरी—देखो 'लांबी बांयांरी' (रू. भे.)

लंबुक–वि.—देखो 'लंबक' (रू. भे.)

लंबू, लंबौ—देखो लाबौ' (रू. भे.)

उ०—यौ मन भवण वसै तन बबी' गवन करै कब छोटिय **लंबी** । —अनुभववाणी

(स्त्री लंबी)

लंबेड़णौ, लंबेड़बौ – देखो 'लबड़ाणौ, लंबडाबौ' (रू भे.)

लंबेड़णहार, हारौ (हारी), लंबेड़णियौ—वि० ।

लंबेड़िओड़ौ, लबेड़ियोड़ौ, लंबेड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लंबेड़ीजणौ, लंबेड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लंबेडियोड़ौ –देखो 'लबडायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लबेड़ियोड़ी)

लंबौड़ौ—देखो 'लाबौ' (अल्पा,. रू. भे.)

लंबोतड़ंग, लंबोतडग देखो 'लबतड़ग' (रू. भे.)

लंबोदर–सं. पु. [सं. लंब + उदर] १ जिसका पेट बड़ा हो ।

२ भोजन भट्ट ।

३ गजानन, गणेश । (अ. मा., डिं· को., ह. ना. मा.)

उ०—गढ जोधाण 'अभौ' गजपत्ती, गुण गाऊ दूजौ मदपत्ती । **लंबोदर** सारद हित लीजै, दास जांण मोहि वाणी दीजै । —रा. रू.

रू. भे.—'लंबोवर'

अल्पा.,—लबोदरौ ।

लंबोदरौ—देखो 'लबोदर' (अल्पा., रू. भे.)

लंबोवर– देखो 'लबोदर' (रू. भे.)

उ०—सिंभू गवरि सुतन वारण डसण मेक **लंबोवर** । —रांमरासौ

लंबौ—देखो 'लांबौ' (रू. भे.)

उ०—गोरी पीडी पर ऊघड़ता गोडा । **लंबी** बीखां दै लेतोड़ी लोडा । —ऊ. का.

(स्त्री. लंबी)

लंबौस्ट–स. पु. [सं. लंबोष्ठ] १ ऊंट ।

२.४९ क्षेत्रपालों में से ४४ वा क्षेत्रपाल ।

लंभ–सं. पु [स. लंभस] १ धन, दौलत ।

उ०—१ पारंभकरण आरंभ में, लियण **लंभ** सोरंभ जस । रखपाळ मंडोवर राखिया, भू डंडे रखवै अडस । —गु. रू. बं.

उ०—२ **लंभ** बगासिजै कोडी लाख, भेदगर खट भाख । —गु. रू. बं.

लंहगौ—देखो 'लहंगौ' (रू. भे.)

ल–सं. पु. [सं.] १ इन्द्र, २ चिन्ह, ३ पैर । (एका.)

४ छंद शास्त्र में लघु मात्रा का संकेत ।

सं. स्त्री—५ पृथ्वी । (एका.)

लइयौ–सं पु.—देखो 'लेखक' (अल्पा , रू भे.) (जैन)

लई–स. स्त्री —१ लक्ष्मी।

२ एक पौधा विशेष।

उ०—जिकौ थे किसा नही जाणौ हौ, फोग है जिती धरती थारी है, अर साजी वा लई है, जिती धरती म्हारी है। —द. दा.

३ देखो 'लेई' (रू. भे.)

लउडौ —देखो 'लकडौ' (रू. भे)

उ०—एक तउ माल हूलउ पडण पडिवउ । अनेरउं वली ऊपरि माथइ लउडा नउ घाउ। - षष्टी शतक

लउवौ—देखो 'लावौ' (रू. भे)

उ०—तीतर लउवा वाटवड, वैदाणी बुगलाह। लखै पखीवण उड रह्या, वा-वा जी वा-वाह। —गजउद्धार

लउस–स. पु.—देश विशेष। (व. स.)

लक–सं पु —१ पसलियो और कटि के मध्य का भाग।

उ०—झामरै पूंछ रा, भुवरियैरूं रा, चोळमें रग रा, लांघियै सीह ज्यू लकां चढिया थका, भागा गाडा ज्यू बठठाठ करता थका,...। —खीची गंगेव नीबावत रौ दोपारौ

लकड़—देखो 'लकडौ' (मह , रू. भे.)

उ०—पीछै सं १५९४ चैत वद २ नै स्रीकरनी जी आपरै हाथसू गुभारौ कियौ, बिना तगारी । नै जाळारा लकड़ दिया ऊपर। —द. दा.

२ देखो 'लकडी'

उ०—जाय जगत मे धम जगावै, आप धम की गम न पावै। भेदी बिना भरम का भंडा, हाथ लोह लकड़ का डडा। —अनुभववांणी

लकड़की—देखो 'लकड़ी' (अल्पा., रू भे)

लकडी–सं स्त्री. [स. लगुट' या लगुड'] १ पेड, झाडी आदि की छाल के नीचे का वह ठोस भाग जो जलाने, ईमारत या इमारती सामान बनानेमे प्रयुक्त होता है, काष्ठ।

उ०—१ तठा उपरायत हिरण खुलै छै सू जाणै धोबी रै घर कपडा मोकळा किया छै। मास उतार-उतार टुकडिया में घातजै छै। मिरच धाणा मूंठ हळदी बेसवार दीजै छै। दहीरौ रजबौ दीजै छै। लकड़ी री कठौती मे सुदबक राखजै छै। —खीची गंगेव नीबावत रौ दोपहरौ

उ०—२ जड खिण काटी लकड़ी तौ ईत कूपळ काढि। हरिया फेर न पागरै, इसी बाढणी बाढि। —अनुभववाणी

२ पेड़ झाडी आदि के तनो एव शाखाओ का वह ठोस भाग जो चुल्है आदि मे जलाने हेतु काम मे आता है, इंधन।

उ० वडाई भरीजग्यौ। बाप मरग्यौ लकड़यां रा भारिया ढोवतौ ढोवतौ, तीरथ कर्‌यौ न वरत। —दसदोख

मुहा.—१ लकडी दैणौ—शव को चिता पर रख कर जलाना। या जलती चिता पर लकडी डालना।

२ लकडी होणौ—सूख कर लकडी जैसा कठोर होना। शरीर कृश या क्षीण होना।

३ कुछ विशिष्ट पेडो की वह लम्बी एव पतली शाखा जो आत्म-रक्षार्थ या वृद्धावस्था मे सहायतार्थ रखी जाती है।

मुहा.—लकडी चलाणौ—आत्मरक्षार्थ लकडी को कलात्मक ढंग से चारो ओर घुमाना।

२ लकड़ी चलणौ या चालणौ=किन्ही दो पक्षो मे लकडी द्वारा लडाई प्रारभ हो जाना।

रू. भे —लक्कडी, लाकडी।

मह. - लकड, लकडौ, लक्कड।

अल्पा., लकडकी

लकड़ीकार–स. पु.—सुथार, बढई।

लकड़ौ–स. पु.—१ लकड़ी का मोटा लट्ठा, लक्कड़।

उ०—जद स्वामीजी बोल्या—लकड़ा नै पाणी मे न्हाख्या ऊचौ आवै तौ कुण ही ल्यावै नही पिण हलकापणा रा योग सू तिरै। —भि द्र.

२ देखो 'लकडी' (मह., रू भे)

उ०—तिण रूपियां री जायगा लेय नै लकड़ा री खटकड़ कीधी। भि द्र.

मुहा.—१ लकडौ करणौ=किसी कार्य के सम्पादनार्थ किसी को बार बार तंग करना।

२ लकडौ फसणौ=विघ्न या बाधा पडना।

३ लकड़ौ फसाणौ=विघ्न या बाधा डालना।

रू. भे.—लउडौ, लाकड़ौ, लाकडौ।

मह.,—लकड, लक्कड, लाकड, लाकड।

अल्पा., —लाकडियौ, लाकडियौ।

लकमांन—देखो 'लुकमान' (रू. भे.)

लकलक–स. पु.—१ सापो, कुत्तो मनुष्यो की बार-बार व शीघ्रता से जीभ हिलाने की क्रिया।

२ बक-झक करने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—लिकलिक।

लकलकणौ, लकलकबौ–क्रि. अ.—तलवार आदि तेज धार वाले हथियारो का अति तीव्र गति से ऊपर-नीचे, दायें-बाये चमकते हुवे चलना।

लकलकणहार, हारौ (हारी), लकलकणियौ—वि०।

लकलकिओड़ौ, लकलकियोड़ौ, लकलक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लकलकीजणौ, लकलकीजबौ—भाव वा० ।

लकलक्कणौ, लकलक्कबौ—रू० भे० ।

लकलकियोड़ौ–भू. का. कृ.—तलवार आदि तेज धार वाले हथियारों का अति तीव्र गति से ऊपर-नीचे, दाये-बाये चमकते हुवे चला हुआ ।

(स्त्री. लकलकियोड़ी)

लकलक्कणौ, लकलक्कबौ—देखो 'लकलकणौ, लकलकबौ' (रू भे.)

उ०—लकलक्कै बरछी लगत छळिछाय छछक्कै । —वं. भा.

लकलक्कणहार, हारौ (हारी), लकलक्कणियौ—वि० ।

लकलक्किओड़ौ, लकलक्कियोड़ौ, लकलक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लकलक्कीजणौ, लकलक्कीजबौ—भाव वा० ।

लकलक्कियोड़ौ—देखो 'लकलकियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री: लकलक्कियोड़ी)

लकवौ–स. पु. [अ. लकवा] एक प्रकार का वात रोग जिसमें रोगी का मुह टेढ़ा हो जाता है, अर्दित ।

उ०—सूळी देवै सहज, देयदै फांसी देखौ । मिरघी **लकवै** माहि, उभय अंतर अवरेखौ । —ऊ. का.

लकार–स. पु. [सं] १ सस्कृत व्याकरण के काल, जो दस माने गये है ।

२ ल वर्ण या अक्षर के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द ।

लकारी–स. पु.—मुसलमानों में सैय्यद वंश की एक शाखा ।

उ०—सिंध में **लकारी** सइयदांरी मांनता विसेस है ।

—बा. दा. ख्यात

लकीर–सं. स्त्री. [स. रेखा] १ लम्बाई के आकार में बनाया हुआ कोई चिन्ह या आकृति ।

ज्यू—कागद माथै **लकीर** खींचणी ।

२ पंक्ति, कतार ।

ज्यूं —गिलासा री एक लकीर ।

३ लम्बे समय से चली आ रही परम्परा, प्रणाली, प्रथा या रीति ।

मुहा.—१ लकीर कूटणी या पीटणी=एक ही बात को बार-बार दोहराना, बकझक करना, रूढिवादी होना ।

२ लकीर रौ फकीर होणौ=रूढियों का अंधानुकरण करना ।

लकीरिओ, लकीरियौ–स. पु.—एक प्रकार का सिंह की जाति का हिंसक जानवर जिसके शरीर पर रेखाएं होती है ।

उ० तठा उपरात करि नै राजांन सिलामति बडा सिकारी सिंघळी, सादूळ, पटाला, केहरी नवहथा, कठीरीआ, रीछीआ, तेलिआं, तीदूला, **लकीरिआ** बघेरिआ, चीतरा, भाति भांति रा जाति जाति रा, नाहर सांकळे जड़िआ रहडुआ गाडे, बैठा, कसता कणणाता, बूंबाड करता वहै छै । —रा. सा. सं.

लकुट–सं पु. [सं. लकुटः] लकडी ।

उ०—कमळ मुगट गाढौ करै पीतपट बाधकट, आत बळ हाथ दे **लकुट** भाळी । कुमळियापीड सिर विकट आगाज कर, कडछियौ कान नटराज काळी । —बां. दा.

लकूंदर–स पु —१ बन्दर ।

२ बन्दूक की कळ (औजार) विशेष जिसकी छोर से बन्दुक छूटती है ।

३ लुच्चा, लफंगा, बदमाश ।

उ०—खाणानै पीण आघा खिसक, लागा लपक **लक्कूंदरा** । इम अमल तमाखू है उभै, एकण बिल रा ऊंदूरा । —ऊ. का.

लकोणौ, लकोबौ—देखो 'लुकाणौ, लुकाबौ' (रू. भे.)

उ० १ रापत सूं रैया अर चौड़े नीं आया । आपरा धन नै **लको**'र खायौ अर मेवैरा रूख वाज्या । —दसदोख

लकोणहार, हारौ (हारी), लकोणियौ—वि० ।

लकोयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लकोईजणौ, लकोईजबौ—कर्म वा० ।

लकोयोड़ौ—देखो 'लुकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लकोयोड़ी)

लकोवणौ, लकोवबौ—देखो 'लुकाणौ, लुकाबौ' (रू. भे.)

उ०—घोळा खोसै काच कचूटी हरदम हाथां ही में राखै । देखणियां सूं सकतौ **लकोवै** है, पण ठोडी रै चिगदा घालतौ ही जावै है ।

—दसदोख

लकोवणहार, हारौ (हारी), लकोवणियौ—वि० ।

लकोविओड़ौ, लकोवियोड़ौ, लकोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लकोवीजणौ, लकोवीजबौ—कर्म वा० ।

लकोवियोड़ौ—देखो 'लुकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लकोवियोडी)

लक्क–स. स्त्री.—१ ललकार, हाक ।

उ०—हुय रौद्र हक्क ग्रेह **लक्क** जै किलक्क जोगणी । वंका गरज्जै खडग वज्जे सक्ति रज्जै सक्कणी । —रा. रू.

लक्कड़–वि.—मूर्ख ।

उ०—पावरी कैवै है—बेटै नै **लक्कड़** रौ मक्कड़ कर लियौ है, कैरा फूटा है, जिकौ इयै नै बेटी देवै । —बरसगाठ

२ देखो 'लकडी' (मह; रू. भे.)

३ देखो 'लकडौ' (मह , रू. भे.)

उ०—**लक्कड़** मे दीधौ, हुवौ घररौ धोरी रै । घास फूस छाणा देईनै, फूंक दियौ जिम होळी रै । —जयवांणी

लक्कड़ी—देखो 'लकडी' (रू. भे.)

उ०—म्हेंनै ढोलौ भूंबिया, लूंगै-**लक्कड़ियेह** । म्हानै पिउजी मारिया

चपारै कळियेह । —ढो. मा.

उ०—ल्ये हाथ **लक्कड़ी** लाळ मुख पड़े अलेखै । लिचपचती कडि लाक, लाज मन माहि न लेखै । —ध व ग्र.

लक्ख—देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ रहै रतध्यान अठयासी रिक्ख, लहै नह पार ब्रहम्मा **लक्ख** । सदा जस नब्ब कहे मुख सेस, आदेस आदेस आदेस आदेस । —ह. र.

उ०—२ बिसन्न निपाय किती एक बार, ब्रहम्मा हाथ दियौ बोपार । आपाणी इच्छा आप अलक्ख, लिया अवतार चौरासी **लक्ख** । —ह र

लक्खण—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—सुलतांन पठाई, दूरां आई, मलफती ज्यूं पाव धरै । तेरा पाचूं **लक्खण**, सरब सुलक्खण, सैनांणी ज्यूं याद करै । —लो. गी.

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—बिहू रघु **लक्खण** पुत्र बुलाय, सफै जग विस्वामित्र सहाय । जनंक तणी वळि जोयौ ज्याग, भागै धनु कट्टण सीय विसाग । —ह. र.

लक्खणिण—स. पु.—लक्षणों का ज्ञाता ।

उ०—विसम छंद **लक्खणिण** सत्थ अत्थत्थ विसालह । जिणवल्लह गुरुभत्तिवतु, पयडउ कालिकालह । —ऐ. जै. का. स.

लक्खणौ, लक्खबौ —देखो 'लखणौ, लखबौ' (रू भे)

उ०—रटत जेम सुर रोर, मीर धण घोर परक्खै । सरवर जळ पूरियै, भेख हरखै सुख **लक्खै** । —रा रू

लक्खणहार, हारौ (हारी), लक्खणिओ—वि० ।

लक्खिओड़ौ, लक्खियोड़ौ, लक्ख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लक्खीजणौ, लक्खीजबौ—कर्म वा० ।

लक्खारौ—देखो 'लखारो' (रू. भे.) (डिं. को.)

लक्खि—१ देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

उ०—ओकइ वन्नि वसंतडा, ओ वड अंतर काइ । सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर **लक्खि** विकाइ । —अ. वचनिका

२ देखो 'लखी' (रू. भे.)

लक्खियोड़ौ—देखो 'लख्योड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लक्खियोड़ी)

लक्खी—देखो 'लखी' (रू. भे.)

उ०—१चढयौ मीर काळू हय बे बिरच्चै, मनौ मेक मूगा थतं थाळ नच्चै । चढयौ पीरखांन यतै बाज **लक्खी**, जिनोके रहे पीर चोबीस पक्खी । —ला. रा.

उ०—२ आगै मिळ गयौ **लक्खी** बिणजारौ लै कितरै निम्धन भाज्यौ रे जाय । —लो. गी.

लक्खीबाळदियौ – देखो 'लक्खीबिणजारौ'

लक्खीबिणजारौ [स. लक्ष+वाणिज्यकर] 'विणजारा' जाति का वह व्यक्ति जिसके पास व्यवसाय करने के लिए एक लाख बैल हो ।

वि. वि.—बिणजारा जिसको बाळदिया भी कहते हैं प्राचीन काल मे यातायात के साधनो के अभाव के कारण ये लोग बैलो की पीठ पर सामान, माल, असबाब लाद कर प्रायः सुदूर प्रातो मे बिक्री के लिए जाते थे । इस प्रकार जिस बिणजारे के पास कम से कम एक लाख बैल होते थे उसे लक्खी बिणजारा कहते थे ।

रू. भे.—लखीबिणजारौ

लक्ष–वि. [स. लक्ष] सौ हजार, लाख ।

उ०—तीन **लक्ष** द्रब रोकडा, चवळ उच्च पचीस । निपट विनै धारी निजर, नृपति निवारी रीस । —रा. रू.

स. पु.—लाख की सख्या ।

रू. भे.—लक्ख, लक्खि, लख, लख्ख, लच्छ, लछ, लाख ।

३ देखो 'देखो लक्ष्य' (रू. भे.)

लक्षक–सं. पु. [स] सबध या प्रयोजन से अपना अर्थ सूचित करने वाला शब्द ।

उ०—१ छद अलंकृत छांह छुवै नही, बाह गहै नहिं पुस्तक वांचै । **लक्षक** लक्ष्य कहां अविद्याकथ. वाच्यरु वाचक नाच न नाचै । —ऊ. का.

उ० –२ केई जिकै रसक जाण ज्यौ नायिका भेद जणाय दीजै है, तिण मैं रस री सागै सूरत ही बणाय दीजै है, सुकिया, परकिया सामान्यादि भेद प्रभेद **लक्षक** वखाणिजै है, तिणा मे धुनि, व्यंजना, लक्षणा, अलकार, भाव, अनुभाव, संचारी, सथायी पिण बचन भास जाणीजै है । —र. हमीर

वि.—१ देखने या दिखाने वाला दर्शक ।

२ जता देने वाला, चेताने वाला ।

लक्षण–सं पु. [सं.] १ किसी पदार्थ या वस्तु का वह गुण या विशेषता जिससे वह पहचाना जाय ।

२ किसी व्यक्ति या प्राणी का वह गुण या विशेषता जो अन्य मे न हो ।

३ किसी रोग के सूचक शरीर में दिखाई देने वाले चिह्न ।

ज्यू—निकाळा रा एहीज लक्षण व्है ।

४ सामुद्रिक विद्या के अनुसार शरीर के किसी अंग पर दृष्टिगत शुभ या अशुभ चिह्न ।

५ चाल-चलन, कर्म ।

६ स्वभाव, आदत ।

उ०—ताहरा थारा साथी कहिसी, हालौ तयार। पिण तूं हूं कहूं तेनूं साथै ल्याए। जिको ईयै लक्षणे हुवै, तीयै नूं ल्याए।
—कावळै जोईयौ नै तीडी खरळ री बात

७ पुरुष के शरीर के अगो के शुभ चिन्ह या संकेत जो ३२ माने गए है—

पाच अंग दीर्घ—दोनो नेत्र, दाढ़ी, जानु और नासिका।

पाच अग सूक्ष्म—त्वचा, केश, दांत, अंगुलियां और अंगुलियो की गुदें।

तीन अंग ह्रस्व—ग्रीवा, जंघा, मूत्रेन्द्रिय।

तीन अंग गभीर—स्वर, अन्त करण और नाभ।

छः स्थान ऊंचे—वक्षस्थल, उदर, मुख, ललाट, कंधा और हाथ।

सात स्थान लाल—दोनों हाथ, दोनों आखों के कोने, तालु, जिव्हा अधर और नख।

तीन स्थान विस्तीर्ण—ललाट, कटि और वक्षस्थल।

८ बुद्धी, अक्ल।

९ चमत्कार, करामात।

१० साहित्य में शब्दों, पदों, वाक्यो आदि की ऐसी परिभाषा या व्याख्या जिससे उसकी वास्तविक स्थिति का स्वरूप प्रकट होता है।

उ०—केई जिकै रसक जाण ज्यौ नायिका भेद जणाय दीजै है, तिण मे रस री सागै मूरत ही बणाय दीजै है, सुकिया, परकिया सामांन्यादि भेद प्रभेद लक्षण लक्षक बखाणीजै है, तिण में धुनि, व्यजना, लक्षणा अलकार भाव, अनुभाव सचारी, सथायी पिण वचनाभास जाणीजै है। —र. हमीर

११ बत्तीस की सख्या। *

१२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

रू. भे.—लंच्छण, लंच्छन, लछण, लंछन, लक्खण, लखण, लखन, लखयण, लखिण, लख्खण, लच्छ, लच्छण, लच्छन, लछ, लछण, लछन।

लक्षणवंत, लक्षणवतौ—वि. [स. लक्षणवंत] १ शुभ गुणो से युक्त।

२ बुद्धिमान, चतुर।

रू. भे.—लखणवत, लखणवतौ

लक्षणहीन—स. पु. [सं.] १ वह जिसमें लक्षण न हो।

रू. भे.—लछणहीन

लक्षणा—सं. स्त्री—काव्य में शब्द की तीन शक्तियों में वह दूसरी शक्ति जिसमें मुख्य अर्थ के बाधित होने पर रुढि अथवा प्रयोजन के कारण उसका साधारण से भिन्न और वास्तविक अर्थ प्रकट होता है। यह दो प्रकार की होती है—निरुढ और प्रयोजनवती।

उ०—कई जिकै रसक जाण ज्यौ नायिका भेद जणाय दीजै हैं, तिण में रस री सागै मूरतही बणाय दीजै है, सुकिया, परकिया सामांन्यादि भेद प्रभेद लक्षण लक्षक बखाणीजै है, तिणां मे धुनि, व्यजना, लक्षणा, अलंकार, भाव, अनुभाव, सचारी, सथायी पिण वचनाभास जाणीजै है। —र. हमीर

लक्षणौ—वि. [सं. लक्षणी] १ लक्षणो से युक्त, लक्षणों वाला।

उ०-१ राजान कुंअर बत्तीस लक्षणौ छै। तिकै कहै छै।
—रा. सा. सं.

उ०—२ भूपत क्यू चिता करौ, वरसा होवै नाहि। बत्तीस लक्षणौ पुरुस बळि, हौ तौ वरसा होय। —सिंघासण बत्तीसी

२ समझदार।

रू. भे.—लखणौ, लख्खणौ, लच्छणौ।

लक्षवरीस—लाख रुपयों का पुरस्कार देने वाला।

रू. भे.—लखबरीस, लखवरीस, लाखबरीस' लाखवरीस।

लक्षिता—स. स्त्री.—वह परकीया नायिका जिसका गुप्त पर-पुरुस प्रेम अभिव्यक्ति द्वारा प्रकट हो जाय।

लक्षेसरी, लक्षेस्वरी—सं. पु. [सं. लक्ष+ईश्वर+रा. प्र. ई] लाख रुपयो का मालिक, लखपति।

उ०—१ काम कदला न कीजीइ, कूडी माया कोडि। लक्षेसरी लहि लोटिउ, तु आपण नइ खोडि। —मा. का. प्र.

उ०—२ जे लिइ कैलास परवत सिउ वाद, इसा सरवग्य देव तणा प्रासाद। करइ उद्धारा, लक्षेस्वरी कोटिध्वज तणा आवास।
—रा सा. सं.

रू. भे—लखेसरी, लखेस्वरी, लाखेसरी।

लक्ष्मण—सं. पु. [सं. लक्ष्मणः] १ रघुवंशी राजा दशरथ की रानी सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो राम व भरत से छोटा था।
(अ मा.)

पर्या.—अनंत बाळजती रघुवंसमणि, रांमानुज रधबीर, सुतदसरथ, सुमंत्रसुत, सोमित्री, सेस।

२ दुर्योधन का एक पुत्र जिसकी श्रेणी कौरव सेना में 'रथसत्तम' थी।

३ अंगिरसकुलोत्पन्न एक मंत्रकार।

४ श्री करणीदेवी के एक पुत्र का नाम।

५ सारस।

६ नाग।

वि.—भाग्यवान।

रू. भे.—लंछण, लक्खण, लक्षण, लखण, लखण्ण, लखन, लखमण, लखम्मण, लखिण, लखिणउ, लखिन, लख्खण, लचछ, लच्छण, लच्छन, लच्छमण, लछ, लछण, लछन, लछमण, लछमन,

लछम्मन, लछिमन, लाखरण, लाखमरण, लिखमरण, लिछमरण, लिछमन।

लक्ष्मणा–स. स्त्री. [स] १ एक प्रकार का पौधा विशेष जो पर्वतो पर कही २ उत्पन्न होता है।

वि. वि.—इसके पत्ते चौडे होते है। उन पर लाल लाल चदन के समान बूंदे सी होती है। इसका कद औषधियो के काम मे लिया जाता है।

२ भद्र देश के राजा की कन्या जो कृष्ण की पत्नी थी।

३ एक अप्सरा जो कश्यप मुनी की कन्या थी।

४ दुष्यन्त राजा की प्रथम पत्नी जिसे लाखो सामान्तर भी प्राप्त था।

लक्ष्मी–सं. स्त्री. [सं.] १ भगवान विष्णु की पत्नी जो धन-सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती है। (डिं. को)

पर्याय.—आ, इंदरा, ई, कमळा, चपळा, छीरोदधजा, नारायणी, पदमा, प्रभा, भा, भुजायत, मा, रमा, रामा, लोकमाता, विसन-प्रिया, वेळावळधी, सुखदा, स्यामा, स्त्री हरि-वाम।

वि. वि.—लक्ष्मी चार प्रकार की मानी गई है।

(१) राज्य लक्ष्मी (२) गृह लक्ष्मी (३) विजय लक्ष्मी (४) भोग्य लक्ष्मी।

२ धन-सम्पत्ति, दौलत।

३ सीता का नाम।

४ दुर्गा देवी का एक नाम।

५ रुक्मणी का एक नाम।

६ शोभा, सौन्दर्य।

७ भाग्यशाली स्त्री जो धन-धान्य बढाती है।

८ ग्रहस्वामिनी के लिए प्रयुक्त आदर सूचक शब्द या सम्बोधन।

९ हल्दी।

१० वीर पत्नी।

११ समी वृक्ष।

१२ भस्मी, राख।

१३ मिट्टी, धूल।

१४ सफेद तुलसी।

१५ ऋद्धि नामक औषधि।

१६ वृद्धि नामक औषधि।

१७ आर्या (गाथा) छन्द का एक भेद विशेष जिसमे २७ दीर्घ और तीन ह्रस्व वर्ण सहित कुल तीस वर्ण होते है।

१८ एक प्रकार का वर्णव्रत जिसके प्रत्येक चरण मे दो रगण एक गुरु और एक लघु वर्ण होता है।

रू. भे.—लखमी, लखम्मी, लखिमी, लख्खमी, लच्छ लच्छमी, लच्छि, लच्छी, लछ, लछमी, लछवि, लछवी, लछि, लछी, लाच्छ, लाच्छी, लाछ, लाछि, लाछी लिखमी, लिच्छमी लिछमी, लिछम्मी, लीछम्मि लीछम्मी।।

लक्ष्मीकंत, लक्ष्मीकांत–स. पु. यौ. [स. लक्ष्मी+कात] १ विष्णु भगवान्।

रू भे.—लखमीकंत, लखमीकात, लछमीकत, लछमीकात, लिछमी-कंत, लिछमीकात, लिछम्मीकत लिछम्मीकात।

लक्ष्मीकारी–स. पु. यौ. [स. लक्ष्मी+कारिन्] धन-सम्पत्ति प्रदान करने वाला।

लक्ष्मीटोडी–स. स्त्री.—सगीत मे कोमल स्वरो वाली एक प्रकार की सकर रागिनी।

लक्ष्मीतात–सं. स्त्री. [लक्ष्मी+तात] समुद्र।

रू. भे.—लखमीतात

लक्ष्मीताळ–स. स्त्री. [स. लक्ष्मीताल] १ सगीत मे १८ मात्राओ का एक ताल।

२ श्री ताल नामक एक वृक्ष।

लक्ष्मीधर–स पु. यौ. [सं. लक्ष्मी+धर] १ विष्णु, नारायण।

२ स्रग्विणी छंद का दूसरा नाम।

वि.—धनाढ्य, धनवान।

रू भे—लछमीधर।

लक्ष्मीनाथ–स. पु. [सं. लक्ष्मी+नाथ] विष्णु।

रू. भे.—लखमीनाथ, लच्छिनाथ, लछीनाथ, लिखमीनाथ, लिख-मीनाह, लिच्छमीनाथ लिच्छमीनाह, लिछमीनाथ, लिछमीनाहि

लक्ष्मीनारायण–स पु. यौ. [स लक्ष्मी+नारायण] १ लक्ष्मी और नारायण की युगल मूर्ति।

२ बहुत काले रंग के एक प्रकार के शालिग्राम जिनके एक ओर चार चक्र बने होते हैं, लक्ष्मीजनार्दन।

रू. भे. –लिखमीनारायण, लिछमीनारायण

लक्ष्मीनिधि–स. पु—राजा जनक का एक पुत्र। (रामायण)

लक्ष्मीनिवास–स. पु.—१ वह घोडा जिसका शरीर लाल हो, किन्तु दाहिना कान सफेद हो (शुभ)

२ विष्णु, नारायण।

रू. भे.—लच्छिनिवास

लक्ष्मीनृसिंह–स. पु. [स. लक्ष्मीनृसिंह] एक प्रकार के विष्णु जिन पर दो चक्र और एक वनमाला बनी होती है।

लक्ष्मीपति–स. पु. यौ. [स लक्ष्मी+पति] १ विष्णु, नारायण।

२ श्रीकृष्ण।

३ राजा ।

४ सुपारी का पेड ।

५ लवंग का वृक्ष ।

वि.—धनवान, अमीर ।

रू. भे.—लखमीपत, लखमीपति, लखमीपती, लछमीपत, लछमीपति, लछमीपती, लिच्छमीपति, लिछमीपती ।

लक्ष्मीपुत्र–स. पु. यौ. [स. लक्ष्मी+पुत्र] १ कामदेव, अनग ।

२ घोडा, अश्व ।

वि.—धनवान, अमीर ।

लक्ष्मीभरतार–सं. पु यौ. [सं. लक्ष्मी+भर्तृ] विष्णु ।

रू. भे.—लच्छिभरतार, लच्छिभ्रतार, लछिभरतार, लछीभरतार, लिखमीभरतार ।

लक्ष्मीरमण–सं. पु. यौ [सं. लक्ष्मी+रमण] विष्णु, नारायण ।

रू. भे.—लखमीरमण ।

लक्ष्मीवंत, लक्ष्मीवत्–सं.पु.यौ. [सं. लक्ष्मी+वत्] १ विष्णु, नारायण ।

२ धनी व्यक्ति, अमीर ।

३ अश्वत्थ या पीपल का पेड ।

४ कटहल का पेड ।

रू. भे.—लिखमीवंत, लिखमीवत ।

लक्ष्मीवर–स. पु. यौ [स. लक्ष्मी+वर] १ विष्णु का नामान्तर ।

२ कृष्ण का एक नाम ।

३ परमेश्वर, ईश्वर ।

रू. भे.—लखमीबर, लखमीवर, लच्छिवर, लछबर, लछवर, लछमीवर, लछिबर, लछीवर, लाछवर, लाछिबर, लाछिवर, लाछीबर, लाछीवर, लिखमीबर, लिखमीवर, लिखिमीबर, लिखिमीवर, लिच्छमीवर, लिछमीबर, लिछमीवर ।

लक्ष्मीवान–सं. पु. [सं. लक्ष्मीवत] १ विष्णु २ श्रीकृष्ण ।

वि.—१ धनवान, धनाढ्य २ सुंदर, मनोहर ।

रू. भे.—लछीवान ।

लक्ष्मीवल्लभ–सं. पु. यौ. [स. लक्ष्मी+वल्लभ] विष्णु, नारायण ।

लक्ष्मीस–सं. पु. यौ. [स. लक्ष्मी+ईश] १ विष्णु, नारायण ।

२ सीतापति रामचन्द्र ।

३ धनाढ्य व्यक्ति, अमीर ।

रू. भे.—लखमीस, लछमीस, लछीस, लिछमीस ।

लक्ष्मीसहज–वि. [स. लक्ष्मी+सहज] १ समुद्र मंथन के समय लक्ष्मी के साथ उत्पन्न होने वाला रत्न ।

सं. पु.—१ चन्द्रमा ।

२ कपूर ।

३ इन्द्र का घोडा ।

४ शंख ।

लक्ष्य–सं. पु. [स. लक्ष्य] १ निशान ।

ज्यूं—चिड़ी नै लक्ष्य साधने तीर चलायौ ।

२ उद्देश्य ।

३ प्राचीन काल में अस्त्रों आदि का एक प्रकार का संहार ।

४ शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा निकलने वाला अर्थ ।

रू. भे —लक्ष, लखु, लख्य, लच्य, लछ

लक्ष्यता–सं. स्त्री.—लक्ष्य होने का भाव या धर्म, लक्ष्यत्व ।

लक्ष्यभेद, लक्ष्यवेध–स. पु. यौ. [सं. लक्ष्य+भेदन, लक्ष्य+वेधन्] तेजी से उडते या चलते हुए पक्षी या जीव पर निशाना लगाने की क्रिया ।

लक्ष्यारथ–सं. पु. [सं. लक्ष्यार्थ] शब्द की लक्षणा शक्ति से निकलने वाला अर्थ ।

लख—देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

उ०—मिळ अंग बगत्तर पक्खर मै, सज सार खड़ा लख इक्क समै ।
—रा रू.

२ देखो 'लाखपसाव'

उ०—१ प्रथम लाख समपियौ, कवी संकर बारठ कर । लखपति बारठ लाख, दीध दूजौ करि डबर । तीजौ लख तिणवार, 'अजा' भादा कर अप्पै । भण ताराचंद भाट, भोज लख चवथ समप्पै ।
—सू. प्र.

लखचौरासी–सं. पु. [स, लक्ष+चौरासी] १ पुराणों के अनुसार माने जाने वाली ८४ लाख योनियां ।

उ०—१ हरीया दाता रांम है, लखचौरासी मांहि । ग्वावण कु जन मुख दिया, सो क्युं देसी नांहि । —अनुभववांणी

वि. वि —देखो 'योनि'

लखण–स. पु.—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ लखण बतीसै मारूवी, निधि चन्द्रमा निलाट । काया कूंकूं जेहवी, कटि कैहर सै घाट । —ढो. मा.

उ०—पछै तौ म्हनै इण बैराग अर थारा आ ठाकुरजी में कीं लखण दीखिया नीं । —फुलवाड़ी

उ०—३ पखवाड़ौ बित्यां चौधरण साथै तीन दिनां रौ भातौ बांधण लागी तौ चौधरी मुळकनै कियौ-बावळी आ कांई गैलाई करै। हाल तांई धणी रा लखण सावळ ओळखिया कोनीं दीसै ।
—फुलवाड़ी

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्ष्मण'

उ०—तायक लखण पयपै तेथी । वायक रोस विरुता, है नर वीर जनक मुखहूता । जप न राघव जेथी ।। —र. ज. प्र

लखणवत, लखणवतौ—१ देखो 'लक्षणवत' (रू. भे.)

उ०—१ काया सोहइ कचण वरणी, सोहइ हाथै सखर समरणी । लखणवंतौ मोहण वैली, हस हरावई गजगेति गैली । —श्री जिनराज सूरि

लखणौ—१ देखो 'लक्षणौ' (रू भे)

उ० - बावळा राजाजी इत्तौ मूडै लगाय लियौ कै किण नै ई नी धारै । छोटा-मोटा रौ कायदौ ई नी राखै । खास गिंडक लखणौ । —फुलवाडी

लखणौ, लखबौ–क्रि. अ [स लक्ष्] १ दिखना ।

उ०—गिरि जाणि चरण लहि लखत गोम, बद्दळ डळ दरसै छाडि व्योम । —रा रू.

२ मालुम हौना, प्रतीत होना ।

क्रि. स —३ देखना ।

उ०—१ सता ताड वेधै प्रभू हेक साथै, हिचौळै सतां जोजना दुह हाथै । लखै राम रा पाण रौ चाप लीधौ, कळह बाळि हूता न सुग्रीव कीधौ । —सू प्र.

उ० - २ मिरजौ आयौ मेड़तै, मारे गाव महेव । 'सबळौ' भूखै सिह ज्यूं, असुरा लखै अवेव । —रा. रू.

४ समझना, जानना, ताडना ।

उ०—१ सतगुरु सब्द बडा कुरसांणी, जिण तिण लख्या न जावै। जो लखसी कोइ सत सूरमा, नूर मे नूर समावै । —स्त्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ पढै अपढै सारखा, जो न आतम लख । सिल कोरी मादी 'अखा', दोनूं ही डूबण पख । —अखौ

उ०—३ धर स्यांमा सरिस स्यामतर जळधर, वेधूवे गळि वाहां घाति । भ्रमि तिणि सध्या वदन भूला, रिखिय न लखै सकै दिन राति । —वेळी

५ आभास होना, अनुमान होना ।

६ देखो 'लिखणौ, लिखबौ' (रू. भे.)

उ०—१ इण भांत स्त्री-पुरुस रौ हाल आपही लखस्यौ । —पर्ना

लखणहार, हारौ (हारी), लखणियौ—वि० ।

लखिओडौ, लखियोड़ौ, लख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लखीजणौ, लखीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।

लक्खणौ, लक्खबौ—रू० भे०

लखण्ण - देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे)

उ०—नमौ अवअत्त भगत्त अछेह, नमौ सतरुघ्न-भरत सनेह । नमौ धक-पख-सहोवर-धज्ज, गुणादि-प्रतीत लखण्ण-अग्रज्ज । —ह. र.

२ देखो 'लक्षण' (रू भे.)

लखन—१ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—राम लखन अरु भरत सत्रुहन, अगवाणी हनुमान । मीरां के प्रभू राम सियावर, तुम हो कृपा निधान । —मीरां

२ देखो 'लक्षण' (रू भे.)

लखपत, लखपति, लखपती, लखपत्ती, लखप्पति, लक्खपत्ति–स. पु. [स. लक्ष+पति] (स्त्री. लखपतण, लखपतणी) १ कुबेर ।

२ वह व्यक्ति जिसके पास लाख रुपये हो ।

उ०—१ अगरवालां रै घर सूं तौ एक दो आदमी इक्यातरै आवै-जावै है । बडौ कडूंबौ, लखपती आदमी कटरोल, कचेड़ी सफाखाना अर सभा-सोसाइटी रा काम पडता ही रेवै । —दसदोख

उ०—२ उड गया रेसमी गदरा वे, राली रै रज नहीं लागी । आ फिरै कामेंतण लडाभूम, लखपतणी मरगी लडथडती । —चेत मानखौ

३ लाखा 'फूलाणी' के नाम से गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

रू भे.—लाखपत, लाखपति, लाखपती, लाखपत्ति, लाखपत्ती

लखबरीस—देखो 'लक्षवरीस' (रू. भे.)

लखमण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—राज मौहरि उपति रघुराई, भिड जेण विध लखमण भाई । भिडि खळ थाट करू जुध भूकां, रांवण जेम 'विलंद' दळ रूका । —सू. प्र.

लखमणा—देखो 'लक्ष्मणा' (रू. भे.)

लखमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू भे.) (डि. को)

उ०—प्रभू विराजै परमपद, तहा आपणौ धांम । लखमीवर लखमी सहित, सारे सता काम । —गजउद्धार

लखमीकंत, लखमीकात—देखो 'लक्ष्मीकात' (रू. भे.)

उ०—समरथ सगलइ ही कामइ रे, तास भ्रात डूंगरसी नांमइ रे । भागचद वडउ भागवंत रे, मन मोटइ लखमीकांत । —प. च. चौ.

लखमीतात—देखो 'लक्ष्मीतात' (रू. भे) (डि. को.)

लखमीनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—तहां विराजत है सदा, लखमी लखमीनाथ । पलक अेक बिछुरै नही, रहै निरंतर साथ । —गजउद्धार

लखमीनारायण—देखो 'लक्ष्मीनारायण' (रू. भे.)

लखमीपत, लखमीपति, लखमीपती—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

लक्ष्मीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—बोहो लोह भूप सुभडां बकसि, त्रीहाथै खग साहियौ । करि क्रोध मधु माथै किना, **लखमीबर** नदक लियौ । —मे. म.

लखमीरमण—देखो 'लक्ष्मीरमण' (रू. भे)

लखमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—प्रभू विराजै परमपद, तहां आपणौ धांम । **लखमीवर** लखमी सहित, सारे सता कांम । —गजउद्धार

लखमीस—देखो 'लक्ष्मीस' (रू. भे)

लखमोलौ–वि. [सं. लक्ष+मूल्य] (स्त्री. लखमोली) १ लाख रुपये के मोल का ।

उ०—तिण मांय डोर रेसम तणी, कव चांका सजुत कियौ । अठपौर आप रटवा अलक, **लखमोली** माळा लियौ ।

—रमण प्रकास

लखम्मण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—वाळण सीत लियां दळ वांनर, पाज समद परठिण पाथर । रेसण खेसण दांणव रांमण, लेख धणी मन वीर **लखम्मण** ।

—पि. प्र.

लखम्मी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—दामोदर तूझ दसै द्रगपाळ किताइक पार न जांणै काळ । उमा तो पार अगम्म, अलेख, **लखम्मी** तूझ न जाणै लेख ।

—ह. र.

लखवरीस—देखो 'लक्षवरीस' (रू भे.)

उ०—पोरस सपूर कीधा परम, **लखवरीस** दुनियां लभौ । अंबखास बिच 'अजमाल' रौ, इसै रूप आयौ 'अभौ' । —बखतौ खिड़ियौ

लखवांन–सं पु.—सूर्य, भानु । (डिं. को.)

लखाई–सं स्त्री.—दिखने या जताने की क्रिया या भाव ।

लखाउ–सं. पु [स. लक्ष] लक्षण, पहचान ।

लखाड़णौ, लखाड़बौ—देखो 'लखाणौ, लखाबौ' (रू. भे.)

लखाड़णहार, हारौ (हारी), **लखाड़णियौ**—वि० ।

लखाड़िग्रोड़ौ, लखाड़ियोड़ौ, लखाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लखाड़ीजणौ, लखाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लखाड़ियोड़ौ—देखो 'लखायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लखाड़ियोडी)

लखाणौ, लखाबौ–क्रि. स.—१ दिखाना ।

उ०—गुरुजी गोविंद **लखाया ए**, लखिया ताय भक्या निज अनुभव । परकट गाया ए । —स्त्री सुखरामजी महाराज

२ समझाना, बतलाना ।

उ०--अलख **लखाया** दिय दिरट, सतगुरु समझाई ।

—केसवदास गाडण

३ पता लगाना, मालूम कराना, प्रतीत कराना ।

४ आभास कराना, अनुमान कराना ।

५ नर ऊँट का मादा ऊँट से संगम करवाना ।

क्रि. अ.—१ आभास होना, प्रतीत होना ।

उ०—१ दीवाण जी नै **लखायौ** के रगां मांयली लोई अबै ठस्यौ, अबै ठस्यौ —फुलवाडी

उ०—२ घडी १ हुई ज्यूं पेट माहे भार **लखायौ** । —चौवोली

लखाणहार, हारौ (हारी), **लखाणियौ**—वि० ।

लखायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लखाईजणौ, लखाईजबौ—कर्म वा० ।

लखाड़णौ, लखाड़बौ, लखावणौ, लखावनौ—रू. भे. ।

लखायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ दिखाया हुआ. समझाया या बतलाया हुआ. ३ पता लगाया हुआ, मालूम कराया हुआ, प्रतीत कराया हुआ. ४ आभास या अनुगान कराया हुआ. ५ नर ऊँट का मादा ऊंट से सभोग कराया हुआ. ६ आभास हुवा हुआ ।

(स्त्री, लखायोड़ी)

लखारस–सं. पु.—वस्त्र विशेष ।

उ०—**लखारस** में लखगुणी, भाति बोत दिसंत । सुणि किता कामण कहे, सो माणै रित वसंत । —व. स.

रू. भे.—'लाखारस'

लखारा–सं' स्त्री. [सं. लाक्षा+कारित] लाख की चूड़िया बनाने व बेचने का व्यवसाय करने वाली एक जाति विशेष ।

उ०—ए तो सोदागर संचारा रे खारोल **लखारा** कचारा ।

—जयवांणी

लखारौ–सं. पु.—लखारा जाति का व्यक्ति ।

उ० लेसौ पीपळ लाख, लाख **लखारा** लावसी । तांबौ देण तलाक, नटियौ सुंदर नैणसी । —सुंदर, नैणसी

रू. भे.—'लक्खारौ'

लखाव–सं. स्त्री.—जानकारी ।

उ०—**१** ऊजळा वणाव किया ऊजळी चादरां मिळि गई छै। सू आगली सखिग्रा नूं जावती लखै नही छै । **लखाव** नही पड़तौ छै । रा. सा. सं.

उ०—२ आज हूं जाय, देखि ठीक करि आऊं, जितरै **लखाव** मता करौ । —पलक दरियाव री बात

उ०—३ तद पड़दौ छोड दियौ । भरमळ आगियां हुय भीतर गई । सो चकमै री घुघी माहै दोनूं बराबर हालै, सो **लखाव** कही नु न

पडियौ । भीतर जाय भुहरै रौ मुहडौ खोल भीतर वाडियौ ।
—कँवरसी साखला री वारता

लखावट—देखो 'लिखावट' (रू भे)

उ०—चला सदै 'अगजीत' ग्रहीयौ जकौ, **लखावट** आगळा जका लारै । सरासन खेवजै टला हमला सकौ, थटै भुज सबाई 'गुला' थारै । —जसजी आढौ

लखावणौ, लखावबौ—देखो 'लखाणौ लखाबौ' (रू. भे)

उ०—ठकराणी सारू ऊजळा दिन तौ काळी अधारी राता ज्यू बणग्या अर काळी राता उणनै सूरज सू सवाई उजळी **लखावण** लागी । —फुलवाडी

उ०—२ बाळ-कन्हैया थोड़ौ घणोई ओपरौ **लखावतौ** के मासी नै वेळा-विसेक रौ वै'म व्हैतौ तौ सात वेळा अवारनै लूण मिरच करती । —फुलवाडी

लखावणहार, हारौ (हारी), **लखावणियौ**—वि० ।

लखाविग्रोड़ौ, लखावियोड़ौ, लखाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लखावीजणौ, लखावीजबौ—कर्म वा० ।

लखावियोड़ौ—१ देखो 'लखायोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लिखायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लखावियोड़ी)

लखिण, लखिणउ—१ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—राघव पास पिनाक रै, आए **लखिणउ** निज । —रामरासौ

२ देखो 'लक्षण' (रू. भे)

लखित–स. पु.—पुरुष की ७२ कलाओ मे से प्रथम । (व. स.)

लखिन—देखो 'लक्ष्मण' (रू भे)

उ०—सत्रघन **लखिन** भ्रात स दोय । —रामरासौ

लखिमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे)

उ०—सुर 'नर नाग तीन्यो लोक जाकी सेवा करै सौई इह वासदेव क्रसणजी । जा रुखमणी छै सु **लिखमी** । तूं अह सगाई वरजियौ । वेली. टी.

लखियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ दिखा हुआ. २ देखा हुआ. ३ समझा हुआ, जाना हुआ, ताड़ा हुआ भापा हुआ. ४ पता लगा हुआ, मालुम हुवा हुआ, प्रतीत हुवा हुआ. ५ आभास हुवा हुआ, अनुमान हुवा हुआ. ६ सावधान, हुवा हुआ, सचेत हुवा हुआ.

७ देखो 'लिखियोडी' (रू. भे)

(स्त्री. 'लखियोड़ी')

लखी–सं. पु.—१ एक खास प्रकार के रग का घोडा ।

उ०—मोती सुरग कमेत, **लखी** अवलख फुलवारी । रग जडाव हमरग, हरी सुनहरी हजारी । —सू प्र.

२ दीवार चुनने का पेशा करने वाली एक मुसलमान जाति विशेष । (डीडवाना)

३ उक्त जाति का व्यक्ति ।

४ देखो 'लक्खीविणजारौ'

वि.—१ लाख के समान रग वाला ।

रू भे.—लक्खि, लक्खी, लाखी ।

लखीणौ—देखो 'लाखीणौ' (रू. भे)

उ०—ऊरि चोडौ कडि पातलो, माहीलै कोयै जीमणी अखी । काळौ तिल भमर जिसौ, सीस तिलक उगतई-विहाण । पाय **लखीणी** मोचणी, मूछ करिवाण छै डावइ हाथी । —वी. दे,

उ०—२ उलिगाणा दिन लेखे ई मत लाई, दिन दिन एक **लखीणौ** जाई । जाई जोवन धन मसलै ई हाथ, जोवन नवि मिणइ दिन न राति । —वी. दे.

(स्त्री. लखीणी)

लखीबाळदियौ, लखीविणजारौ—देखो 'लक्खीविणजारौ' (रू. भे.)

उ०—तो भीखणजी ने किंम काढा, हाकम द्रस्टांत दियौ विजयसीघजी रौ राज है मोती बाळदियौ । तिणरै लाख बळद तिणसूं **लखीबाळदियौ** बाजतौ । तै लूण लेवा मारवाड़ में आवतौ । —भि. द्र.

लखु—देखो 'लक्ष्य' (रू. भे.)

उ०—सारीगु मिल्हि करि तालरूख सिरि **लखु** देविणु तीणं परीक्षां गुर तणी पुगउ एकू जु पत्थु राहावेहु तउ सिखवइ मच्छइ देविणु हत्थु । —सालिभद्र सूरि

लखेर–स पु.—१ चौरासी प्रकार के चौहटों में से एक प्रकार का चौहटा विशेष । (सभा)

२ देखो 'लाखेर' (रू. भे.)

लखेसरी, लखेस्वरी—देखो 'लक्षेसरी' (रू भे.)

उ०—१ आऊवा मै उत्तमोजी इराणी बोल्यो भीखणजी थे देवरा निसेधौ छौ । पिण आगै तो बडा-बडा **लखेसरी** कोडेसरी त्या देवल कराया । —भि. द्र.

उ०—२ सु भलौ राज जाणि नै । द्रव्य उखेळियौ छै । बारै काठि माडयौ छै । ए जु चपा फुल्या छै । सु ए **लखेस्वरी** छै । त्यांरै लाख उपरि दीवा बळै छै । —वेलि टी.

लक्ख—देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

उ०—खंजर नेत विसाल गय, चाही लागइ चक्ख । एकण साटइ मारुवी, देह एराकी **लक्ख** । —ढो. मा.

लक्खण—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—चिण तेज अरक जिप छक जहूर, सुंदर प्रवीण दातार सूर। छत्रपती 'अभौ' छत्र कुळ छतीस, बहत्तर कला **लक्खण** बतीस। —वि. स.

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लक्खमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—देवी सप्तमी अस्टमी नोम नूजा, देवी चोथ चौदस्स पूनम्म पूजा। देवी सरसती **लक्खमी** महाकाळी, देवी कन्न विस्णु ब्रह्म्मा कमाळी। —देवि.

लख्य—१ कपट, छल (ह. नां मा.)

वि.—२ देखो 'लक्ष्य' (रू. भे.)

लख्यण—देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ कागळ हाथि लेता ही महा आणद उपज्यौ। रोमांचित होण लागौ। आख्यां आंसूं आवण लागा। कंठ कै विखै गदगद् वांणि हुइ ए अति ही हरस का **लख्यण** छै। —वेलि टी.

उ०—२ सट भाख **लख्यण** देख दख्यण राज रख्यण रीति इळि। नाम अंमर गाढ गंमर जोध संमर जीत गढ। कोट गंजण माण मंजण थूरि भंजण थाट, पर दूख पल्लण भूल झल्लण वंस चल्लण वाट। —ल. पिं.

लख्यणौ—देखो 'लक्षणौ' (रू. भे.)

उ०—लखधीर बडा गुण **लख्यणौ**, पह पात्र कुपात्र परिखणौ। कुळ ओपम कोट करम रौ, धरिओ अवतार धरम रौ। —ल. पिं.

लग-स. स्त्री.—१ लगे हुए होने की अवस्था या भाव।

२ लग्न, लाग।

३ प्रेम, अनुराग।

४ किसी मकान के ऊपरी भाग का ऐसा स्थान जहां से कूद कर दूसरे मकान मे जा सके।

५ मकान की दीवार की ऊचाई।

६ एक लोहे का औजार विशेष, जो जमीन में जुड़े हुए दो पत्थरों को अलग करने में काम आता है।

७ फर्श व छत के बीच की ऊचाई।

अव्य.—१ तक, पर्यंत।

उ०—गोढवाड़ घर गाहटै, पहला पाली मार। लूटी मही अजमेर **लग**, फूटी देस पुकार। —रा. रू.

उ०—२ अर आप जिसा राजकुमार रौ इण तरह अठा **लग** आवणौ अरथ विहूंणौ खटावै नहीं। —वं. भा.

२ वास्ते, लिए।

३ निकट, पास।

४ साथ, सह।

रू. भे.—लगइ, लगत, लगा, लगि, लगी, लगै, लग्ग, लग्गा, लागि।

लगइ-अव्य.—१ के कारण, से।

उ०—१ अनइ जे धरमवंत नई धरि लक्ष्मी हुइ तेह **लगइ** अनेक तीरथयात्रा प्रासाद संघभक्ति दानादिक अनेक पुण्य करी मरी परलोकि सुगतिइं जाइं। —षष्टी शतक

उ०—२ त्रिजच माहि विरहउ विचारि, हस्ति तुरंगम राय बारि। अग्यांन कस्ट **लगइ** जीव जाइ, चिहु लाखै देवलोकह् माहि। —वस्तिक

२ से, द्वारा।

उ०—१ तिणि अवसरि बोलाविउ पंडित, "कहउन कांई काज"। विनय **लगइ** बोलइ धन सागर, "निसुणउ पडितराज"। —हीराणंद सूरि

उ०—२ द्रव्य **लगइ** कहि किसिउं न कोई, द्रव्यिइं वसि थाइ सहू कोइ। द्रव्य तणउ ए महिमा जांणि, जांणपाणु एह नुं म वखाणि। —हीराणंद सूरि

३ लगातार।

४ देखो 'लग' (रू. भे.)

उ०—१ खटमास **लगइ** तप कियउ अखंडित, श्री अमन्नी मेलनां निघात। सिव सिव सिव हिज कहत सक्त, वदइ न कांई बीजी बात। —महादेव पारवती री वेलि

लगड़-सं. पु.—१ गधों पर पानी लादने का लकड़ी का बना ढाँचा।

देखो 'लगड' (रू. भे.)

उ०—१ नगारै इक डंकौ बागो छै, मीर सिकारा नै हुकम हुवौ छै। बाज, जुररा, कुही, बहरी, सिकरा, **लगड़**, चिपक तुरमती साथ लीजै छै। —रा. सा. सं.

रू. भे. लगड्ड।

लगड़फोड़ौ रौ-वि.—१ माँ से कुकर्म करने वाला।

लगटौ—देखो 'लगतौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लगटी)

लगड—एक प्रकार का पक्षी विशेष जो पक्षियों का शिकार करने मे सहायता करता है।

उ०—१ बोवड़ां ऊपर चिपक छुटै छै। बुरजां ऊपर **लगड** छुटै छै। कुलगा ऊपर कुही छुटै छै। इण भात देसौत राजेसर सिकार खेलै छै। —रा. सा. स.

उ०—२ सीचाणु समली वली, फूकारी फणि जाणि। **लगड** लेई मेलि करि, माधव मुझ नइ आणि। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'लगडौ' (मह्., रू. भे.)

रू. भे.—लगड, लगड्ड, लगतू, लगतू

लगड़ू-सं पु —१ देखो 'लगड' (रू भे.)

२ देखो 'लगड' (रू. भे.)

३ देखो 'लगडौ' (रू भे.)

लगडौ-स. पु. [स. लकुट] १ पुरुषेन्द्रिय, शिश्न।

रू. भे —लगडू

मह., लगड

मुहा.—लगडा री फौडी रौ=पुश्चली माता का पुत्र, रडी का बेटा।

लगण-स. पु.—छतीस प्रकार के अस्त्र-शस्त्रो मे से एक।

उ०—सेलह त्रिसूल साठो धकोवली वसहडि कडि लगण। भूकत चहुलि सूलो चटक, दडायुध छत्रीस रण। —रा मा. सं.

लगणौ, लगबौ-क्रि. अ.—देखो "लागणौ, लागबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भरियौ भादरवौ खाली पड भागौ। लगतां आसू मे आसू झड लागौ। छपनै घोरारव आरव रव छायौ। सूरज ससिमंडळ गरब्बित गणणायौ। —ऊ का.

उ०—२ अम्ह विसटाळै आवियौ, लगि ज्या हिज लारै। कटक सुणि अंगद कहै, पित तूझ प्रकारै। —सू. प्र.

उ०—३ लोग महाजिन बूझियौ जी ओ, कूण्याजी रा कुळबहू जाय, चुडलौ तो ढक चद्रावळी, थारै। नजर लगैगी गोरी बांह, राजीडा। —लो गी.

उ०—४ उण वेळा बळ अग्गळा, दळ राठौड दुबाह। मेघ थया सीसौदिया, लगी लाय अणथाह। —रा रू.

उ०—५ फेरे वग्ग तुरग री, तोले खग्ग करग्ग। रिणपण उमगे लगै, रैणायर' गयरग्ग। —रा. रू.

उ०—६ चरण कमळ की लगन लगी नित, बिन दरसण दुख पावै। मीरां कू प्रभू दरसण दीज्यौ, आनद वरण्यूं न जावै। —मीरा

उ०—७ बन बैठौ भला चढौ गिरबदरी, धरा भेख के धारौ। चित नह लग्यौ रांमरै चरणा, नह जब लग निसतारौ —र रू

लगणहार, हारौ (हारी), लगणियौ—वि०।

लगिओडौ, लगियोड़ौ, लग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लगीजणौ, लगीजबौ—भाव वा०।

लगत—देखो 'लग' (रू. भे)

उ०—पछै सावतसिघ रा बेटा राव वलूजी रै साचोर रही, सु हेटै ख्यात मे विगत आवसी। नै समत १६६५ लगत राज रैया तिण री विगत हेटै उतारी छै। —नैणसी

लगतर—देखो 'लिगतर' (रू. भे.)

लगतूं, लगतू—देखो 'लगड' (रू भे)

उ०—मीर सिकारू का हुन्नर नजर होता है। लगतूं रमतू के आतुरी। चरज सीचाण सो लाग आतुरी। —सू प्र.

लगतौ-वि (स्त्री लगती) १ लगा हुआ, सलग्न।

उ०—१ कोट माहे पाणी कोई नही। कोट साकडौ सो छै। तिण मे लाब तळाब कोट लगतौ हीज छै। —सोजत रै मडळ री बात

उ०—२ खीवे सू घणी मनुहार कीवी पण उवौ गादी ऊपर नही बैठयौ। गादी सू ही लगतौ म्होडा आगे बैठियौ। —सूरे खीवै काधळोत री बात

२ निकट, पास।

उ०—सोझत था कोस ८ मगरे लगतौ, नाबरा था कोस १ आगे। हुल जिण री वडी ठकुराई हुई। —नैणसी

३ पीछे लगा हुआ।

उ०—वीजै दिन लगती ही फौज आई। पछै बेउ फौजा री अणी मिळी।

४ निरतर, लगातार।

उ०—१ पण सौदौ नी पट्यौ तौ वौ तीन दिन लगतौ ई उठै ढबग्यौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ म्है तौ हजार बरसा तांई लगती ई रोवूं तौ ई किणी नै म्हारै दुख रौ मरम नी समझा सकूं। —फुलवाडी

५ साथ ही साथ।

उ०—१ सू गजसिंघजी तौ आगैई इण सू विराजी हुता। अरू लगतौ अमरसिघजी सू काम वण आयौ। —राजा सीकरणसिंघजी

उ०—२ विवाह बडा हरस सूं हुवौ। माधवसिंघजी दायजौ सखरौ दियौ। लगता ही पछै झिलाय रै ठाकुर कुसळसिंघ री पोती नूं ब्याही। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

लगथग-सं. स्त्री.—१ लचक, लचकनि।

उ०—१ पदमणि लगथग पातळी, रळी तणी छक रूप। सायधण कळी गुलाब सम, ऊघड मिळी अनूप। पनां

उ०—२ केहर लंक लगथग कदळ, झळकि पदम नग डग भरै। औ वात पळकि नख मैदिया, रळकि हार उर ऊपरै। —पनां

लगथगणौ,लगथगबौ-क्रि. अ.—१ किसी लम्बी कोमल चीज पर वजन या दबाव के परिणामस्वरूप मध्य भाग से झुकना या मुड़ जाना, लचकना।

२ चलते समय कमर का थोडा झुकना, लचकना या मुड़ना जो सौदर्यसूचक माना जाता है।

उ०—१ हरखै रतना हालवी, लगथगती करि लाज। कीधा साज उछाहरा, कस तोड़ण रै काज। —र. हमीर

उ०—२ मुहडै आगै मालकी, कहती खमकारां। धरा वरा आवै ढोलियै **लगथगथी** लारां। मद-चकीया म्यांरांमजी, तुम होय तैयारां। —मयारांम दरजी री बात

उ०—३ आळस आंख्या ऊपरै, करती बळ कटियाह। **लगथगती** करती लजां, अलका ऊछटियांह। —र. हमीर

लगथगणहार, हारौ (हारी), लगथगणियौ—वि.।

लगथगिओड़ौ, लगथगियोड़ौ, लगथग्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लगथगीजणौ, लगथगीजबौ—भाव वा.।

लगथगियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ दबाव या वजन के कारण झुका या मुड़ा हुआ (कोमल पदार्थ). २ चलते समय नाजुकता वश कमर झुकाया हुआ (स्त्री. लगथगियोड़ी)

लगन—स. पु.—१ लगने की क्रिया या भाव।

२ मन को एकाग्र चित्त करके ध्यान लगाने की अवस्था या भाव। एकाग्रचित से ध्यान लगाने की अवस्था या भाव, धुन, लौ।

उ०—१ सुख सागर की सेन बताई, मेरा अंतर जांरा रया। **लगन** मगन सतगुरु कर दीना, वेगम देस गया। —हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ बिक्या जी हरि प्यारीजी रै हाथ बिक्या। क्रपा करी जी म्हैं सोही सिरधारा, सोभा देख छक्या। जा दिन तै मेरी **लगन** लगी है, और न द्वार तक्या। —मीरां

३ प्रेम प्यार, प्रीति।

उ०—१ ऐसी **लगन** लगाय कहां तू जासी। तुम देख्यां बिन कळ न पड़त है, तलफ तलफ जिय जासी। —मीरा

उ०—२ छोड दै कनैया चीर हमारौ, कोर जरी की कांना मेरी छूटै। मीरां के प्रभू गिरधर नागर, लागी **लगन** काना नहिं छूटै। —मीरां

उ०—३ अंगरी **लगन** लागणी जांणी। यां री लगन लागां पछै तौ न छूटसी तिकै तार बांध्या सूं कदे न तूटसी। —र. हमीर

४ चाह, इच्छा।

उ०—१ चरण कमळ की **लगन** लगी नित, बिन दरसण दुख पावै। मीरा कूं प्रभू दरसण दीज्यौ, आनद वरण्यूं न जावै। —मीरा

उ०—२ रात दिवस हाजर रहै, रस में आ रुडीह। लख जावै दिल री **लगन**, चातुर चतरूडीह। —र. हमीर

४ देखो 'लग्न' (रू. भे.)

उ०—सुभ दिन सुभ मुहरत सुभ वार सुभ **लगन** सुभ वेळा मांहि आंणि पाट सिंघासण विराजमांन किया छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ त्रिणि दीह **लगन** वेळा आड़ा तै, घणूं किसूं कहिजै आधात। पूजा मिसि आविसि पुरखोतम, अंबिकाळय नयर आरात। —वेलि.

उ०—३ इतरै कंवर रै विवाह सारू चित्रगढ रा राव 'लखपत' री कंवरी 'चित्रलेखा' तरणौ टीकौ **लगन** आयौ। —र. हमीर

रू. भे.—लगनि, लगन्य, लग्गन, लिगन, लिगन्न

लगन पत्रिका, लगन पत्री—देखो 'लग्नपत्र' (रू. भे.)

लगनयार—सं. पु.—१ श्रीमाली ब्राह्मणों में विवाह का रिवाज जिसमें विवाह से ८-१० दिन पहले वर-पक्ष के यहाँ एक भोज होता है। इस के अनुसार वधु के भाई-बहनों को प्रथम (पहले) भोजन खिला कर तत्पश्चात अन्य सम्बन्धियों को खिलाया जाता है। इस रश्म की विशेषता यह है कि इस दिन चावल व सब्जी अधिक-में बनवाई जाती है। (मा. म.)

नोट—यह रश्म केवल शहरों तक ही सीमित है।

लगनि, लगन्य—देखो 'लगन' (रू. भे.)

उ०—**लगनि** लगी हरी नांव सुं, हरिया अंतर माहि। मन बाहरली मिट गई, तन की सुधि बुधि नांहि। —अनुभववाणी

लगभग—अव्य.—समय, संख्या मान आदि की अनुमानित अवधि या मात्रा का बहुत कुछ निश्चित भाव प्रकट करने वाला अव्यय शब्द।

लगर—वि.—स्फूर्ति वाला, फुरतीला, चंचल।

लगरौ—वि.—फटा हुआ वस्त्र।

लगरचौ—सं. पु.—एक झाड़ी विशेष, जो ईंधन के रूप में काम आती है।

रू. भे.—लिगरचौ

२ देखो 'लिगरू' (अल्पा; रू. भे.)

लगलगाट—सं. स्त्री.—लपलपाहट।

उ०—जिकै वासुकि नाग री तरह **लगलगाट** करती सिळह बंध री कडियां नूं कतरती पिंड में बैठतां रणत्कार पड़ी। —वं. भा.

लगलगी—सं. स्त्री.—किसी के विरुद्ध उत्तेजित करने या भड़काने की क्रिया।

क्रि. प्र.—करणी

रू. भे.—लगेलगे, लिगेलिगे।

लगवाड़—सं. स्त्री [स. लग्न+बाढ (वृद्धि)] पुरुष या स्त्री का किसी अन्य स्त्री या पुरुष से अनुचित संबंध।

२ पति के अतिरिक्त स्त्री का दूसरे व्यक्ति से अनुचित संबंध।

३ सौंध।

लगवाड़णौ, लगवाड़बौ—देखो 'लगवाणौ, लगवाबौ' (रू. भे.)

लगवाड़णहार, हारौ (हारी), लगवाड़णियौ—वि.।

लगवाड़िओड़ौ, लगवाड़ियोड़ौ, लगवाड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लगवाड़ीजणौ, लगवाड़ीजबौ—कर्म वा.।

लगवाड़ियोड़ौ—देखो 'लगवायोडौ' (रू भे)
(स्त्री लगवाडियोडी)

लगवाणौ, लगवाबौ– कि स. [लगणौ या लगाणौ क्रि का. प्रे. रू.]
१ स्पर्श कराना, छुवाना।
२ मिलवाना, जुडवाना, सटवाना।
ज्यू.—किंवाड रै कूटौ लगवाणौ, घर मे बिजळी लगवाणी।
३ खर्च करवाना, व्यतीत करवाना।
४ नियोजित करवाना।
५ अनुभव करवाना, अनुभूति कराना।
६ आरम्भ करवाना, शुरू कराना।
७ फैलवाना, पसरवाना, बिखरवाना।
८ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु मे इस प्रकार लाकर मिलवाना कि वह उपभोग योग्य बन जाय।
९ किसी तरल पदार्थ का लेप करवाना।
१० इकट्ठे करवाना, सम्मिलित करवाना।
११ आघात करवाना, चोट पहुंचवाना।
१२ पेड- पौधे आदि का आरोपण करवाना।
१३ जन समूह को इकठ्ठा होने मे प्रवृत्त करवाना।
१४ प्रभाव या असर करवाना।
१५ किसी बात या विषय मे किसी व्यक्ति पर आरोप करवाना।
१६ प्रज्वलित करवाना।
१७ किसी कार्य में प्रवृत करवाना।
१८ किसी अनिष्ठ या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध करवाना।
१९ किसी आवरण या निरोध के द्वारा किसी विभाग या प्रकोष्ठ को छिपवाना या बद कराना।
२० किसी पदार्थ या वस्तु का सुनियोजित एव नियमित रूप से प्रस्तुत करवाना।
२१ धारदार या तीक्ष्ण चीज की नोक या धार शरीर मे चुभवाना या गढवाना।
२२ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत करवाना।
२३ घटित करवाना।
२४ गणित के क्षेत्र मे कोई क्रिया ठीक और पूरी तरह करवाना।
२५ आर्थिक क्षेत्र मे किसी दातव्य राशि का निश्चित करवाना।
२६ अनुगमन करवाना।
२७ पीछे लगवाना।
२८ अन्तर्गत करवाना।
२९ प्रभावित कराना।
३० अन्तिम अवस्था मे पहुँचवाना।
३१ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु पर जड़वाना, टकवाना, सटवाना, बैठवाना।
३२ आश्रित करवाना।
३३ आदी करवाना।
३४ अभ्यस्त करवाना।
३५ किसी रूप मे सम्मिलित करवाना।
३६ किसी बात या काम को घटित करवाना।
३७ लाक्षणिक रूप मे किसी मुख्यत. धार्मिक क्षेत्र मे कोई अनिष्ठ बात या कार्य किसी के अनिवार्य रूप से करवाना, पटकाना।
३८ किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता, सिद्धी या स्थापना करवाना।
३९ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक करवाना।
४० किसी को बदनाम करवाना।
४१ अकित करवाना।
४२ अनुसरण करवाना।
४३ क्रमानुसार लगवाना।
४४ मैथुन या सभोग करवाना।
४५ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध करवाना।

लगवाणहार, हारौ (हारी), लगवाणियौ—वि.।

लगवायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लगवाईजणौ, लगवाईजबौ—कर्म वा.।

लगवाड़णौ, लगवाड़बौ, लगवावणौ, लगवावबौ—रू. भे.।

लगवायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ स्पर्श कराया हुआ, छुवाया हुआ, सम्पर्क कराया हुआ. २ मिलवाया हुआ, जुड़वाया हुआ, सटवाया हुआ. ३ खर्च करवाया हुआ, व्यतीत करवाया हुआ, ४ नियोजित करवाया हुआ. ५ अनुभव करवाया हुआ, अनुभूति करवाया हुआ. ६ फ़ैलवाया हुआ, बिखरवाया हुआ. ७ किसी वस्तु का दूसरी में इस प्रकार मिलवाया हुआ कि वह उपयोग लायक बन गई हो। ८ किसी तरल पदार्थ का लेप करवाया हुआ. ९ शामिल या सम्मिलित करवाया हुआ. १० आघात करवाया हुआ, चोट पहुचाया हुआ. ११ आरम्भ या शुरू करवाया हुआ. १२ वृक्षारोपण करवाया हुआ. १३ जनसमुह को इकट्टा होने मे प्रवृत करवाया हुआ. १४ प्रभाव या असर करवाया हुआ. १५ किसी बात या विषय मे किसी व्यक्ति पर आरोप या प्रयोग करवाया हुआ. १६ प्रज्वलित करवाया हुआ. १७ किसी कार्य मे प्रवृत करवाया हुआ. १८ किसी अनिष्ट या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध करवाया हुआ. १९ किसी आवरण या निरोध

के द्वारा किसी विभाग या प्रकोष्ठ को छिपवाया हुआ, बद करवाया हुआ. २० किसी वस्तु या पदार्थ को समुचित या नियमित रूप से प्रस्तुत करवाया हुआ. २१ धारदार या तीक्ष्ण चीज की नोक या धार को शरीर में गड़वाया हुआ, चुभवाया हुआ. २२ मानसिक स्थिति को किसी ओर प्रवृत्त करवाया हुआ. २३ घटित करवाया हुआ. २४ गणित के क्षेत्र में किसी क्रिया का ठीक और पूरी तरह करवाया हुआ. २५ आर्थिक क्षेत्र में किसी दातव्य राशि का निश्चित करवाया हुआ. २६ अनुगमन करवाया हुआ. २७ पिछे लगवाया हुआ. २८ अन्तगर्त करवाया हुआ. २९ प्रभावित करवाया हुआ. ३० अंतिम अवस्था में पहुंचाया हुआ. ३१ किसी वस्तु का दूसरी पर जडवाया हुआ, टंकवाया हुआ, सटवाया हुआ, बिठाया हुआ. ३२ आश्रित करवाया हुआ. ३३ आदी करवाया हुआ. ३४ अभ्यस्त करवाया हुआ. ३५ किसी रूप में सम्मिलित करवाया हुआ. ३६ किसी बात या काम को घटित करवाया हुआ. ३७ लाक्षणिक रूप में किसी मुख्यतः धार्मिक क्षेत्र में कोई अनिष्ठ बात या कार्य किसी के अनिवार्य रूप से करवाया हुआ. ३८ किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता, सिद्धी या स्थापना करवाई हुई । ३९ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित करवाया हुआ. ४० किसी को बदनाम करवाया हुआ. ४१ अंकित करवाया हुआ. ४२ अनुसरण करवाया हुआ. ४३ क्रमानुसार लगवाया हुआ. ४४ मैथुन या संभोग करवाया हुआ. ४५ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध करवाया हुआ ।

(स्त्री. लगवायोडी)

लगवाळ—सं. पु.—१ द्वार के अतिरिक्त अन्दर जाने का मार्ग, ऊपरी मार्ग।

२ किसी स्त्री का पर पुरुष या किसी पुरुष का किसी पर स्त्री अनुचित संबंध होने की क्रिया या भाव ।

वि.—१ लगा हुआ ।

२ विलासी, कामुक ।

३ पीछा करने वाला ।

४ सहारा देने वाला, सहायक ।

लगवावणौ, लगवावबौ—देखो 'लगवाणौ, लगवाबौ' (रू. भे.)

लगवावणहार, हारौ (हारी), लगवावणियौ—वि. ।

लगवाविओड़ौ, लगवावियोड़ौ, लगवाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लगवावीजणौ, लगवावीजबौ—कर्म वा. ।

लगवावियोड़ौ—देखो 'लगवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लगवावियोडी)

लगस—सं. पु.—१ बादल-समूह ।

उ०—१ बरन बरन रा बादळा, **लगस** चढी ले लाव । थित करती जळमय थळां, मत वह वेगी आव । —पा. प्र.

उ०—२ नाग जौ छछोहा जांणै बादलां रा **लगस** पवन जोर सूं चालीआ जाग्रै छै । इण भात सू गजराज मुहडा आगै ही ढुलै छै । डोहां करता हमला खाता वहै छै । —रा. सा. सं.

२ समूह, दल ।

उ०—१ लूटवा वधै फौजा **लगस**, धमस तुरा भाजै धरा । मिळ चली प्रजा भगेळ मग, लग दिली लग आगरा । —रा. रू.

उ०—२ हुतौ सयद हुसैन, अब गढ मझि अजरायल । लोक विदा करि **लगस**, तिकौ काढै खळ तायल । —सू. प्र.

उ०—३ ऐसें विमरीर दळूं सें विकट गिर झिगर घेरै । फौजूं के **लगस** चौतरफ क्रू फेरै । —सू. प्र.

३ फौज, सेना, दल ।

उ०—लखा दखणाद रा **लगसै** आया लडण, पयोनिध अगस मुनि जेम पीजै । सां'म थागळ कहै राख उगती समीं, दुआ 'काधळ' जमी खंवौ दीजै । —'अरजुनसिंह चूंडावत रौ गीत

४ अधिकता, प्रचुरता ।

५ एक साथ, साथ-साथ ।

६ कतार, पंक्तिबद्ध ।

वि.—लम्बायमान ।

रू. भे.—लंगस, लगस्स

लगस्स—देखो 'लगस' (रू. भे)

उ०—लोहां झट बाढत रौद **लगस्स**, 'बहादर' पीथलऊत बगस्स । 'राघावत' आणंदसिघ दुबाह, विभाड़त मुग्गळ बीजळ बाह । —सू. प्र.

लगा—अव्य.—देखो 'लग' (१) (रू. भे.)

उ०—१ अंगजितमल्ल हुतउ, वदित्र द तणइ जयजयाकारि चालइ, जांणांइ किरि ब्राह्मांड फूटइ लगउ, नक्षत्र त्रूटी भुइं पडइं **लगा** गिरि सिखर खडहडइ लगा । —व. स.

लगांण—देखो 'लगांम' (रू. भे.)

उ०—१ दै उवर टकर ढाहै दुरंग, तदि दुहूं दळां इसड़ा तुरंग । अति लौण लोह पतिध्रमी आंण, लहि ठांम ठांम चाढै **लगांण** । —सू. प्र.

उ०—२ लगी न रहै तिल हेक **लगांण**, जरद्द मरद्द कटै जंगमाण । सदा सिव ताम लिये खळ सीस, स्रूणी स्रपी चड देत असीस । —सू. प्र.

२ देखो 'लगान' (रू. भे.)

लगांन–स. पु —१ किसानो द्वारा जमीदार या सरकार को दिया जाने वाला कर, भू-राजस्व ।

रू. भे.—लगाण, लग्गाण ।

लगाम–स. स्त्री.[फा.] १ तागा बग्गी आदि में जोते जाने वाले अथवा सवारी किये जाने वाले घोड़े के मुह मे लगाया जाने वाला वह लोह का बना उपकरण विशेष जो घोडे को रोकने व इधर उधर मोडने मे सहायक होता है. रास, वाग ।

उ०—१ नी जणा म्हारै गिरै सू के जावै । ठाकर घोडी री **लगांम** थामी । गुलाब री मां आई सामी । —दसदोख

उ०—२ काह पयपौ केवियां, धव बिन सुनौ धांम । आऊं पीळी ऊपरां, लेउं हाथ **लगांम** । —मुंकनदान खिडियौ

२ रोकना, थामना ।

वि. वि.—एक प्रकार की रस्म जिसके अनुसार बरात चढते समय दुल्हे की बहन दुल्हे के घोडे की लगाम पकड कर रोकती है ।

३ कोई ऐसी बात या चीज जो किसी को नियंत्रण मे रखती हो ।

उ०—रहच खळा दळ रोळणा, वीर उभै वरियाम । किचनर पातल रै करा, लदन तणी **लगांम** । —किसोरदान बारहठ

मुहा०—लगांम लगाणी=बोलना बद करना ।

रू. भे.—लगाण, लगांमी, लग्गाण ।

लगांमी—देखो 'लगांम' (रू. भे.)

उ०—चौकडै चित धारि चौकस, **लगांमी** लिव लाय । प्रेम की सिर पहरि पाखर, अगम दिस कू ध्याय । —अनुभववांणी

लगांवण–स पु.—१ लगाने की क्रिया या भाव ।

२ वह खाद्य-पदार्थ, जिससे रोटी लगा कर खाई जाय ।

उ०—तरै किलांणदासजी फेर अरज कीवी के म्हारै घर मे तो **लगांवण** रौ तेह है नही नै भाभाजी काकाजी दाम देवै नही । —नैणसी

रू. भे.—लगावण

लगा–क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त ।

उ०—असा राण 'राजेस' कमठाण कीधा अकळ, कोड़ जुग **लगा** नह जाय कळिया । ' पाळ जोय हेमरा गरब गळीया पहल, टाळ जोय सयद रा गरब टळिया । —जोगीदास कवारियौ

लगाड़णौ, लगाड़बौ—देखो 'लगाणौ, लगाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ साल्ह चलतइ परठिया, आगण वीखड़ियाह । सो मइ हियइ **लगाड़ियां**, भरि भरि मूठड़ियाह । —ढो. मा.

उ०—२ जिकै वेद सूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अगनि **लगाड़ि** होम करै छै । घणौ गौघ्रत नै कपूर री आहुति दीजै छै । —रा. सा. सं.

लगाड़णहार, हारौ (हारी), लगाड़णियौ—वि. ।

लगाड़िओड़ौ, लगाड़ियोड़ौ, लगाड़्योड़ौ—भू. का कृ. ।

लगाड़ीजणौ, लगाड़ीजबौ—कर्म वा. ।

लगाड़ियोड़ौ–भू का. कृ.—देखो 'लगायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लगाडियोडी)

लगाणौ, लगाबौ–क्रि. स.—१ स्पर्श करना, छूना, सम्पर्क में करना ।

उ०—१ अहरै अहर **लगाइ**, तनै तन मेळिया । (परिहा) जाणि क गाधी हाट, जुवानै भेळिया । —ढो. मा.

उ०—देस्यां म्हारै बीरै नै बुलाय, लेसी थानै हिवड़ै **लगाय** । इस विध भुगतौ ए भोजाइ म्हारी जाडेनै । —लो. गी.

२ मिलाना, जोडना, सटाना ।

उ०—१ अवलंबि सखी कर पगि पगि ऊभी, रहती मद वहती रमणि । लाज लोह लंगरै **लगाए**, गय जिम आणी गयगमणि । —वेलि

उ०—२ अर पचास ही घोडा नूं सूना छोडि तिकारै हानें भाला **लगाइ** जनक रै आगै प्रणाम पूरवक माथौ नमायौ । —वं. भा.

३ शामिल करना, सम्मिलित करना ।

४ किसी तरल पदार्थ का लेप करना, मलना ।

उ०—१ इण भांतरौ अगरजौ रूपैरा रूपोटां माहै घात आण हाजर कीजै छै । अगरजौ **लगाइजै** छै । —रा. सा. स.

उ०—२ मोतीपुडै री सीपरा प्याला मे घात हाजर कीजै छै । सूधौ बगला **लगाइजै** छै । —रा. सा. स.

५ चिपकाना, लिपटाना ।

उ०—फोफलिया रूपैरा लागा छै । फळा ऊपर बनात रा मुखमल रा चकारा **लगायजै** छै —रा. सा. स.

६ पहुचाना ।

७ खर्च कराना, व्यय कराना ।

८ किसी वस्तु को दूसरी में इस प्रकार मिलाना कि वह उपयोग में लाने योग्य बन जाय ।

९ मालूम या प्रतीत कराना, अनुभव कराना ।

१० आघात करना या चोट, पहुचाना ।

उ०—मारू मन चिंता धरइ, करहइ कंब **लगाइ** । करहउ उथ्थउ उतामळउ, साल्ह अचभै थाइ । —ढो. मा.

११ किसी वस्तु के शरीर से स्पर्श कराकर जलन या खाज उत्पन्न करना ।

ज्यू —मिरचा लगाणी, पाव लगाणी ।

१२ नियोजित करना ।

१३ (१) प्रस्फुटित करना, अकुरित करना ।

१३ (२) उगाना ।

उ०—१ आसतखांन मन धोखौ आयौ, लोभ बिना दुख **वाग**

लगायौ । असुरा तरा उकत उपजाई, वाता लालच तणी वताई ।
—रा. रू.

उ०—२ सोनजी दो पीपळ भळै **लगा** दिया अर बिग्रारा गट्टा ही पक्का चिणा दिया । —वसदोख

१४ प्रतीत करना ।

१५ बहुत से जनसमुदाय को एकत्रित करना।

१६ प्रभाव या असर करना ।

१७ किसी बात या विषय में किसी व्यक्ति को आरोपित करना ।

१८ प्रज्वलित करना ।

उ०—आगि **लगाई** जळ बुझै, सो फिर सीतळ थाय । हरीया यातै अधिक है, अह न मेट्या जाय । —अनुभववाणी

१९ किसी अनिष्ठ या कष्ट दायक बात का किसी से सम्बन्ध करना या सम्पर्क मे लाना ।

२० किसी वस्तु या पदार्थ को नियमित एव यथोचित रूप में प्रस्तुत करना ।

उ०—भड़ोछी बाफतै री घणी कलाबूत रेसम रै कारचोभी रै कांम री, गुजरात रै कारीगररी कीवी छै। तकिया **लगाइजै** छै।
—रा. सा. सं.

२१ किसी कार्य में प्रवृत करना ।

२२ आरम्भ या शुरू करना।

२३ किसी आवरण या निरोध के द्वारा किसी विभाग या प्रकोष्ठ को छिपाना या बंद करना ।

२४ फैलाना या पसारना, बिखेरना ।

२५ धारदार या नुकीली चीज की नोक या धार को शरीर में गड़ाना या चुभाना ।

२६ किसी के साथ ऐसा व्यवहार करना जिससे वह कुढे या चिढे ।

२७ किसी वस्तु को अन्य के संसर्ग में लाकर उसका उचित प्रभाव या फल दिखाना ।

२८ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत करना ।

उ०—ज्यूं ए डूंगर संमुहा, ज्यू जइ सज्जण हुंति । चंपावाड़ी भमर ज्यऊं, नयण **लगाई** रहती । —ढो. मा.

२९ करना, (पहुंचाना) ।

उ०—मेरा बेडा **लगाय** दीज्यो पार, प्रभुजी अरज करूं छूं । या भव में मैं बहु दुख, संसा सोग गिमार । —मीरा

३० जुड़ाना, जोडना ।

उ०—२ जैमल के घर जनम लियो है, रांणा नै परणाई । सांचा सनेही म्हारै रांम संतजन, जासू प्रीति **लगाई** । —मीरां

३१ अनुगमन करना ।

३२ अन्तर्गत करना ।

३३ आश्रित करना ।

३४ आदी करना, अभ्यस्त करना ।

३५ किसी बात या काम को घटित करना ।

३६ लाक्षणिक रूप में किसी मुख्यत: धार्मिक क्षेत्र में कोई अनिष्ट बात या कर्म, कार्य, किसी के अनिवार्य रूप से जिम्मे पडना ।

३७ किमी प्रकार की सिद्धी या स्थापना करना ।

३८ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक करना ।

३९ आर्थिक क्षेत्र में किसी दातव्य राशि को निश्चित करना या हिस्से में करना ।

४० गणित के क्षेत्र में किसी क्रिया को ठीक और पूर्ण करना ।

४१ क्रमानुसार पारी लगाना, नम्बर में रखना ।

४२ मूल्यांकन करना ।

४३ अकित या चिन्हित करना ।

४४ स्त्री के साथ प्रसंग, मैथुन या संभोग करना ।

४५ पीछा करना ।

उ०—इसा सुवरा रा मोरा ऊपरां राजाना घोड़ा **लगाया** छै ।
—रा. सा. स.

४६ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध स्थापित कराना ।

लगाणहार, हारौ (हारी), लगाणियौ—वि. ।

लगायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

लगाईजणौ, लगाईजबौ – कर्म वा. ।

लगाड़णौ, लगाड़बौ, लगावणौ, लगावबौ, लग्गाड़णौ, लग्गाड़बौ, लग्गाणौ, लग्गाबौ, लग्गावणौ, लग्गावबौ,—रू. भे. ।

लगाय, लगायत—अव्य.—१ लगाकर, से ।

उ०—१ गोपाळ-पोळ सू **लगाय** फतै-पोळ सुदो कोट नै फतैपोळ खास माराज जाळोर सूं पधारिया तदै स. १७७४ में करायौ ।
—नैणसी

उ०—२ दीवाण फतैखाजी रै समंत १७३८ रा आसोज सु **लगायत** समत १७४० रा माहा सुद १५ सुदी रयो । —नैणसी

लगायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ स्पर्श किया हुआ, सम्पर्क में लाया हुआ. २ मिलाया हुआ, जोड़ा हुआ, सटाया हुआ. ३ शामिल किया हुआ, सम्मिलित किया हुआ. ४ चिपकाया हुआ, लिपटाया हुआ. ५ खर्च किया हुआ, व्यय किया हुआ. ६ नियोजित किया हुआ. ७ (१) अंकुरित किया हुआ, प्रस्फुटित किया हुआ ७ (२) उगाया हुआ । ८ अनुभव किया हुआ, अनुभुति किया हुआ. ९ प्रतीत किया हुआ. १० प्रवृत किया हुआ. ११ आरम्भ व शुरू किया हुआ. १२ फैलाया हुआ, पसारा हुआ, बिखेरा हुआ. १३ किसी वस्तु को दूसरी में इस प्रकार मिलाया हुआ कि जिससे वह उपयोग लायक बन गई हो । १४ किसी तरल पदार्थ का लेप

किया हुआ. १५ आघात किया हुआ, चोट पहुचाया हुआ. १६ किसी वस्तु के शरीर से स्पर्श करके जलन या खाज उत्पन्न किया हुआ. १७ अधिक ताप से खाद्य पदार्थ को तली मे जमाया या चिपकाया हुआ १८ वृक्षारोपण किया हुआ. १९ जनसमुदाय को इकट्ठा किया हुआ २० प्रभाव या असर किया हुआ. २१ अनुगमन किया हुआ २२ प्रज्वलित किया हुआ. २३ किसी कार्य मे प्रवृत किया हुआ. २४ किसी बात या विषय मे किसी व्यक्ति पर आरोप या प्रयोग किया हुआ. २५ किसी अनिष्ट या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध कराया हुआ या सम्पर्क में लाया हुआ. २६ किसी आवरण या निरोध द्वारा किसी विभाग या प्रकोष्ट को छिपाया हुआ या बन्द किया हुआ २७ पीछे किया हुआ. २८ अन्तर्गत किया हुआ. २९ आश्रित किया हुआ ३० आदी किया हुआ, अभ्यस्त किया हुआ. ३१ किसी वस्तु या पदार्थ को नियमित एव यथोचित रूप मे प्रस्तुत किया हुआ ३२ धारदार या नुकीली चीज की नौक या धार शरीर मे चुभाया हुआ, गडाया हुआ. ३३ किसी से इस प्रकार व्यवहार कराया हुआ कि जिससे वह कुढे या चिढे. ३४ मानसिक स्थिति को किसी ओर प्रवृत किया हुआ. ३५ किया हुआ. (पहुँचाया हुआ) ३६ मूल्याकन किया हुआ. ३७ गणित के क्षेत्र मे किसी क्रिया का ठीक और पूरी तरह उतरा हुआ. ३८ आर्थिक क्षेत्र में किसी दातव्य राशि को निश्चित किया हुआ, हिस्से मे दिया हुआ. ३९ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए आवश्यक किया हुआ. ४० अकित या चिन्हित किया हुआ. ४१ खाद्य पदार्थों के सम्बन्ध मे तेज आच (आग) के फलस्वरूप पकाये जाने वाले पदार्थ का बर्तन के पैदें तले जमाया या चिपकाया हुआ. ४२ अनुसरण किया हुआ. ४३ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध किया हुआ. ४४ स्त्री के साथ मैथुन या सभोग किया हुआ ।

(स्त्री लगायोडी)

लगार–वि.—किंचित, थोडा, लेशमात्र ।

उ०—१ आदि ग्रन्थ रै स्रीअक्षर, सुकवि कहै बुधि सार । तठै अगण दूखण तिता, लगै न हेक **लगार** । —सू प्र.

उ०—२ रत्ता तौ नांम जिकै रहमाण, जिका नह व्यापै आवा-जांण । भणै गुण तोरा लच्छि-भ्रतार, लगै नह त्यां तन पाप **लगार** । —ह. र.

रू. भे.—लिगार, लिगारइ, लिगारि, लिगारी, लिगारै लिगीक, लिगीयर

लगालगी–स. स्त्री·—क्रमबद्धता ।

लगाव, लगावट–स. पु.—१ लगे हुए होने की अवस्था या भाव ।

२ किले, गढ आदि की दीवार का वह स्थान जहां से विपक्षी आसानी से प्रवेश कर सकें ।

उ०—पहर एक गोली बही पण बाहरला जाणेउ था सो उवे **लगाव** री जायगा जांणै था सो वी ठाव सूं बड गया । —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

३ सबध ।

उ०—लुगाया री खाप तौ अेक पण प्रीत री खापा न्यारी । वौ तौ नेह अर **लगाव** ई दुजी भात रौ है । बादळ रा मन मे दपटियोडौ विरखा रौ नेह फुफकार नै फण ऊंचौ करचौ । —फुलवाडी

४ दिलचस्पी, शौक ।

५ पक्षपात ।

रू. भे.—लग्गाव ।

लगावण—देखो 'लगावण' (रू भे.)

लगावणी–सं स्त्री.—लडाने भिडाने की क्रिया या भाव ।

उ०—ज्यू आचार तो सुद्ध पालणी आवै नही तिण सूं आचार नी न्याय स्रद्धा री चरचा छोडने लोका सू **लगावणी** वाता करै । —भिक्खु

लगावणौ, लगावबौ—देखो 'लगाणौ लगाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारी बाईजी ने बेंग बुलावौ, म्हारै साळ साथीडा **लगावै** । मैं धाय चतुरभुज थारी, थारी खेलण की बळिहारी । —लो. गी.

उ०—२ दाणवा तणा फाटिगा डाचा, वाचा नह ऊपड़ै विचार । अणभंग 'सिवौ' खाग ऊपाडै, हालियौ लक **लगावणहार** । —जोगीदासचारण

उ०—३ ऊधी चाकी फिरावता, लारली गळी ल्यावता अर व्याह-सावा मे अळगी राखता । कोड-कुसळ रै कामां में हाथ **लगावणौ** ही माडौ मानता । —दसदोख

उ०—४ हमै 'ब्याह कर परौ' र क्यू कींरौ ही भव बिगाडूं । कवर तौ करमड़ै मे रिजकयोडा ही कोनी । नी तौ हूं बूढौ हू क ? ठुकरा-ण्यारी कमी है ? कोरै कांम रौ क्यूं छिम्मौ **लगावां** । —दसदोख

उ०—५ ठंडा होणै रौ थोडौ-घणौ ही भौ नी है बेटी ने घडी-घड़ी संभाळै, मूंढौ ढकै है । कान **लगावै**, मोडै कानी तकै है । —दसदोख

उ०—६ चौधरी रा सिखायोडा लोग छेलकी चेलकी **लगावणै** जुट ग्या । —दसदोख

उ०—७ आपरा खरच ले जावौ । चारण रै खरच मतां **लगावौ** । चारण रा हीडा करता जाज्यो । —जैसे सरवहिये री वात

लगावणहार, हारौ (हारी), लगावणियौ—वि० ।

लगाविओडौ, लगावियोड़ौ, लगाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लगावीजणौ, लगावीजबौ—कर्म वा ।

लगावियोड़ौ—देखो 'लगायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लगावियोड़ी)

लगावू—वि. लगाने वाला।

उ०—पण सोनजी श्रौरा सुनारां दाई नहीं। सफा सूधौ माणस दिल रौ दरियाव अर खरच रौ पूरौ **लगावू**। —दसदोख

लगि—देखो 'लग' (रू.भे.)

उ०—ढाढी एक सदेसडउ, ढोलइ **लगि** लइ जाय। जोबण फट्टि तळावडी, पाळि न बधउ काइ। —ढो. मा.

उ०—२ हाकलि ग्रसि हुरवळी, श्रणी दळ 'विलद' उडाऊ। खग भ्काट खेलतौ, जगि हुवदां **लगि** जाऊ। —सू. प्र.

लगियोड़ौ—देखो 'लागियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लगियोड़ी)

लगी-सं. स्त्री.—१ कलह, लड़ाई।

२ लड़ाई के लिए उकसाने की क्रिया।

क्रि. प्र.—लगाणी

रू. भे.—लग्गी

३ देखो 'लग' (रू. भे.)

उ०—साठ लाख वरसा **लगी** पाली सगली आयोजी। सप्तमी वदि आसाड़ नी, सिद्ध थया जिनरायोजी। —स. कु.

लगुता—देखो 'लघुता' (रू. भे.)

लगुड-सं. पु. [सं. लगुडः] १ छड़ी, लकड़ी, लाठी (व. स.)

लगुळ—देखो 'लागुळ' (रू. भे.) (डिं. को.)

लगुवेस—देखो 'लघुवेस, (रू. भे.)

लगू—देखो 'लग्गू' (रू. भे.)

लगेलगे-क्रि. वि.—१ किसी को पीछे लगाने के लिए कहे जाने वाले उत्तेजनात्मक शब्द।

उ०—सिकारी ऊभौ थकियौ **लगे लगे** कर कर गडकड़ौ पहुंच गादड़े नूं फाड़ नाखै ज्यूं महाराज खड़ां थका **लगेलगे** कीज्यौ, आफे लडसे। —मारवाड़ रा अमरावा री वारता

२ कुत्ते को उकसाने की क्रिया।

उ०—सिकारी ऊभौ थकियौ **लगेलगे** कह कर गडकड़ौ पहुँच गादडे नूं फाड़ नांखै। —मारवाड़ रा अमरावा री वारता

क्रि. प्र.—करणौ।

देखो 'लगलगी' (रू. भे.)

लगै—देखो 'लग' (रू. भे.)

उ०—१ पर भोम लई समदां **लगै**, राठौड़ां साका रहै। गळहत्थ वंस गोहिला तणौ वैड खड्ग गहि संग्रहै। —गु. रू. बं.

उ०—२ भड तुरंग वीणार, चडै माभी गज केसर। फौज **लगै** फुलियै, दीध परराठा पस्सर। —गु. रू. ब.

उ०—३ दस जोयण **लगै** जियै री देही, ग्रनवतां जोवता विस्तार। इउं हिज वार तणा ऊपरइ, इसडा ग्रख वाधिया उधार॥ —महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ जिण गजसिंघ पाट सिव जामळ, बैठौ जसवतसिंघ महाबळ। वारौ न्रपत जिवै वरतायौ, सुरा धरम तहा **लगै** सवायौ। —रा. रू.

लगैटगै—देखो 'लगभग'

उ०—१ तीस घाट सौ बरसा रै **लगैटगै** पुगी हूं, म्हनै तौ सुख नांव इण अमूंभ्कणी रौ ई आयौ। —फुलवाड़ी

२ निकट, पास।

लगोबग-क्रि. वि—१ बराबर।

उ०—गांव रै काज दीवांण राखी गुसट, **लगोबग** ग्राय निज कांन लागा। चाटगा हजारां साल चोतीसरी, नीरखलै धान री वळै नागा। —उमरदांन लाळस

२ देखो 'लगभग'

लगोलग, लगोलगि-क्रि. वि.—१ लगातार, निरन्तर।

उ०—१ दीवांणजी मिसखरी करता बोल्या--म्हनै की इनांम देवौ तौ **लगोलग** तीन दिना ताई रात नी ढळण दूं। —फुलवाडी

उ०—२ बरस बी च्यारि न मेह बरखि, पड़ै घर काळ **लगोलगि** पखि। —रांमरासौ

लगौ-वि (स्त्री. लगी) संलग्न, लगा हुआ।

उ०—पंथ **लगौ** मुरधर पाय, तज दिली छळ तै ताय। सुण बात कमंध सुग्यांन, बळ मूछ धर बळवान। —रा. रू.

लग्ग—देखो 'लग' (रू भे)

उ०—१ प्रवाहै खडग्ग भ्कडै हत्थ पग्ग, लहै जांण आरा धरं काठ **लग्गं**। मुडै साळळै साळळै पै मुडक्कै, भ्कड़ा ग्रोभ्कडा सांड ज्यौ माड भ्कुक्कै। —रा. रू.

उ०—२ चोथौ गाल देनै पाछौ लडैए, उलटी धका धूमां करै ए। बलै इसड़ी चलावै रग्ग ए, खांचै दरबारां **लग्ग** ए। —जयवांणी

लग्गणौ, लग्गबौ—देखो 'लागणौ, लागबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दहुं वळा तोप **लग्गी** दगण, रूप काळ डाचा रुखी। रवि प्रळै काज जाणै रसम, ज्वाळ भ्काळ ज्वाळामुखी। —सू. प्र.

उ०—२ उमराव चाव **लग्गौ** दरस, रूप निहारै निजर भर। ग्रनमेख द्रस्टि पेखत छवि, मीन चंद्र प्रतिबिंब पर। —रा. रू.

उ०—३ जोधौ 'मांन' 'कल्यांण' तण, गौ तन धारां **लग्ग**। भड सौ पड़िया भाण रा, ग्रन ऊपड़िया वग्ग। —रा. रू.

उ०—४ भाटी 'रांम' मुकन्न' तरा, इरा दिस लग्गौ आय। पाळ पुळी पैंठी पूरै, दी डोहळी जळाय। —रा रू.

उ०—५ रिरामलोत रिरा वज्जियौ, 'सुंदर' 'हरि' सुजाव। सहसा ले पडियौ समर, घट सो लग्गा घाव। —रा. रू.

उ०—६ सौ तुरग सारखा, भड़ा अराभग समेळा। मीट पडी मेळिया, घडी नह लग्गी वेळा। —रा. रू.

उ०—७ मुहकम लग्गी मैंडतै, ज्या दरियर पर पेख। आपडियौ घर लूटता, बाहर गौहर सेख। —रा. रू.

उ०—८ वेधौ दूद न वीसरै 'चद' तरगौ हरनाथ। पथ अळगौ लांगता, लारा लग्गौ साथ। —रा. रू.

उ०—९ जारा भळक्की जांमगी, पैले दग्गी नाळ। हाडै दुरजरा-सल्ल रै, तन लग्गी तिरा काळ। —रा. रू.

उ०—१० अम्हा मन अचरिज भयउ, सखिया आखइ एम। तइ अराविट्ठा सज्जरा, किउ कर लग्गा पेम। —ढो मा.

उ०—११ जिम जिम सज्जरा संभरइ, तिम तिम लग्गइ तीर। पंख हुवइ तौ जाइ मिळि, मना बधाडा धीर। —ढो. मा.

उ०—१२ जिरिा देसै सज्जरा वसइ, तिरिा दिसि वज्जउ वाउ। उआं लगौ मो लग्गसी, ऊ ही लाखपसाउ। —ढो मा.

उ०—१३ संदेसै ही घर भरयउ, कइ अंगरिा कइ वार। अवमि ज लग्गा दीहडा, सेई गिराइ गँवार। —ढो. मा.

उ०—१४ रह रह सुदरि माठ करि, हळफळ लग्गी काइ। डांभ दिरावइ करहलउ, सेकंता मरि जाइ। —ढो. मा.

उ०—१५ अंगि अभोखरा अच्छियउ, तन सोवन सगळाइ। मारू-अबा-मउर जिम, कर लग्गइ कुमळाइ। —ढो मा

उ० —१६ अहर अभोखरा ढकियउ, सो नयरगे रग लाय। मारू पक्का अब ज्यू, भरइ ज लग्गे वाय। —ढो. मा.

उ०—१७ सुहिरगा हू तइ दाहवी, तोनइ दहियउ अग्गि। सव जोयरा साजरा वसइ, सूती थी गळि लग्गि। —ढो. मा.

उ०—१८ दुज्जोहरा घर घग्गरिा सामि, सिक्ख रडतीय मग्गइ। धम्मुपुत्त वयरोरा पुरा, इद पुत्तु तिरिा मग्गि लग्गइ।
—पं. प. च

उ०—१९ किलमांरा हलै सुरतांरा कोप, उलटै समंद सम दूद ओप। कमधजां अग ऊतग कस्स, रिरा लग्गा जग्गा वीर रस्स।
—रा. रू

उ०—२० उर निस्वास प्रमुक्कै, भग्गौ ज्यास चीत साभ्रंमं। यौ विंता उद्वेगौ, लग्गी अग्ग वंस घासारा। —रा. रू.

लग्गणहार, हारौ (हारी), लग्गणियौ—वि.।

लग्गिओड़ौ, लग्गियोडौ, लग्ग्योड़ौ—भू. का. कृ०।

लग्गीजणौ, लग्गीजबौ—भाव वा.।

लग्गन—१ देखो 'लगन' (रू. भे)

उ०—सुहडा करि जुहार सब्बाही, राज महेल राज घू-आही। राजा पधारै रळियांही, मुख हसतै राव लग्गन माही।
—गु रू. ब.

२ देखो 'लग्न' (रू. भे.)

लग्गांण—१ देखो 'लगाम' (रू. भे.)

२ देखो 'लगान' (रू. भे)

लग्गाड़णौ, लग्गाड़बौ—देखो 'लगाणौ, लगाबौ' (रू. भे.)

लग्गाड़णहार, हारौ (हारी), लग्गाड़णियौ—वि.।

लग्गाड़िओड़ौ, लग्गाड़ियोड़ौ, लग्गाड़्योड़ौ—भू. का. कृ.

लग्गाड़ीजणौ, लग्गड़ीजबौ—कर्म वा.।

लग्गाडियोडौ—देखो 'लगायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लग्गाडियोड़ी)

लग्गाणौ, लग्गाबौ—देखो 'लगाणौ, लगाबौ' (रू. भे.)

उ०—जग लोक वांरा सीखै जवन, पढै ब्रह्म मुख पारसी। हित देव सेव आधा हुआ, काई लग्गा आरसी। —रा. रू.

लग्गाणहार, हारौ (हारी), लग्गाणियौ—वि०।

लग्गायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लग्गाईजणौ, लग्गाईजबौ—कर्म वा०।

लग्गायोडौ—देखो 'लगायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लग्गायोडी)

लग्गाव—देखो 'लगाव' (रू. भे.)

लग्गावणौ, लग्गावबौ—देखो 'लगाणौ, लगाबौ' (रू. भे.)

लग्गावणहार, हारौ (हारी), लग्गावणियौ—वि०।

लग्गाविओड़ौ, लग्गावियोडौ, लग्गाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लग्गावीजणौ, लग्गावीजबौ—कर्म वा०।

लग्गावियोड़ौ—देखो 'लगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री· लग्गावियोड़ी)

लग्गी—देखो 'लगी' (रू. भे.)

लग्गू-वि—१ लगने वाला।

२ लगा हुआ, सलग्न।

३ लीन, अनुरक्त।

क्रि. वि.—४ लगातार, निरंतर।

रू. भे.—लगू

लग्न-स पु. [स. लग्नम्] १ दिन का उतना अश जितने मे किसी एक राशि का उदय रहता है। (ज्योतिष)

२ मांगलिक कार्य करने का शुभ मुहूर्त।

उ०—१ सोढ़ी स्वीकार करि गोळवाळ री दो ही दुहिता नूं साथ लेर राजकुमार दैवीसिंह ऊमरथूंणी आइ पिताहूं-प्रच्छन्न आपरी प्राणप्रिया छोटी कुमरांणी गोडी मदनावती नूं बुलाइ अनेक उचित बाडा बणाइ आपरा अमात्य नूं बबावदै बरणदूत देर उपयमरै उचित उपहार एकठौ कराइ लग्न पूछियौ। जठै नाम करि देल्है द्विज गणकराज दाधीच व्यास इण रीति कहियौ। —व. भा.

उ०—२ पजूनै निबै घणौ आदर सनमान देनै बीजै दिन चढीया सो लग्न रै दिन जालोर आया। —वीरमदे सोनगरा री बात

३ वह समय जब सूर्य किसी राशि में प्रवेश करता है।

रू. भे.—लगन, लिगन, लिगन्न।

लग्नकुंडळी—सं. स्त्री. [सं. लग्न+कुंडली] किसी के जन्म के समय ग्रहों की राशियों की स्थिति जानने का चक्र या कुंडली, जन्म-कुंडली।

लग्नदंड—सं. पु.[सं.] संगीत में वादन के समय स्वर के मुख्य अंश को अलग न होने देकर उनका सुंदरता से संयोग करने की क्रिया।

लग्नदिन—सं. पु. [सं. लग्नं+दिनं] विवाह के लिए निश्चित दिन।

लग्न-पत्र—सं. पु. यौ. [सं.] वह पत्र जिसमें वैवाहिक कृत्यों का ब्यौरे-वार विवरण हो।

रू. भे.—लगनपत्रिका, लगनपत्री, लग्नपत्रिका।

लग्नपत्रिका—सं. स्त्री.—देखो 'लग्नपत्र' (रू. भे.)

लग्नायु—सं. स्त्री. यौ. [सं. लग्न+आयु] फलित ज्योतिष में लग्न-कुंडली के अनुसार स्थिर होने वाली आयु।

लग्नेस—सं. पु. यौ. [सं. लग्न+ईश] वह ग्रह जो लग्न का स्वामी हो।

लग्नोदय—सं. पु. यौ [सं. लग्न+उदय] किसी लग्न के उदय होने का समय।

लघमा—देखो 'लघिमा' (रू. भे.)

लघिमा—सं. स्त्री. [सं. लघिमन्] १ आठ सिद्धियों में से चौथी सिद्धि, जिसके प्राप्त होने पर मनुष्य बहुत छोटा एवं हल्का रूप धारण कर सकता है। (डिं. को, ह. ना. मा.)

२ हल्कापन लघुता।

उ०—लक-तणी लघिमा घणी, तउ नीपायु सीह। तुब नितंब समां घरी, रुद्र कहि निसि-दीह। —मा. का. प्र.

रू. भे.—लघमा, लघुमा।

लघु—वि.—किसी की तुलना में छोटा।

उ०—इक कहत गिरवर एह, दरसंत सब लघु देह। सब वरण वांण सरीर, इम कहत दुरत अधीर। —रा. रू.

२ तुच्छ, भिन्न।

उ०—सिव संभव सिव रूप सुरेसुर, सिव गुण दियण प्रणंभ कथ सुर। अति लघु तिकौ सरण तक आवे... ...। —सू. प्र.

३ हल्का।

४ तनिक, थोड़ा।

५ दुबला, पतला, कमजोर।

क्रि. वि.—शीघ्र, सत्वर।

सं पु. [सं लघुः] १ समय का एक परिमाण, जिसमें १५ क्षण होते हैं।

२ ज्योतिष में हस्त, अश्विनी और पुष्य, इन तीन नक्षत्रों के समूह का नाम।

३ तीन प्रकार के प्राणायाम में से बारह मात्राओं का प्राणायाम।

४ व्याकरण में एक ही मात्रा वाला स्वर, ह्रस्व स्वर।

५ छोटा भाई। (ह. ना. मा.)

रू भे.—लहु, लहू, लाड़ौ, लुघ, लुघवि, लुघु, लोअड़ौ, लोडौ, लोहड़ौ, लोहड़ौ, लौड़ौ, लौडौ, लौहडौ, लौहडौ, लवड़ौ, लहरौ, लहुंडौ, लहुअडउ, लहुओ, लहुडिओ, लहुडौ, लहुडउ, लहुडु, लहुडौ, लहोडौ, लोड़ियौ, ल्होड्यौ।

लघुअंक—सं. पु. [सं. लघु+अंक] वह वर्ण जिसमें एक ही मात्रा हो, एक मात्रिक।

उ०—किवलौ पिच्छू कहै, लहू लघुअंक लहावै। गिणै छंद बस गुरु कवी, लघु चार कहावै। —र. रू.

लघुअसण—सं पु.—गरुड। (ना डिं. को)

लघुकंकोळ—सं. पु. [सं. लघु+कंकोल] साधारण कंकोल से छोटा एक प्रकार का कंकोल।

लघुगण—सं. पु.—अश्विनी, पुष्य एवं हस्त, तीनों नक्षत्रों का समूह।

लघुचंदन—सं. पु.— अगर नामक सुगंधित लकड़ी।

लघुचितविलास—सं. पु.—डिंगल (मरुभाषा) का एक गीत छंद विशेष।

लघुचित्त—वि. [सं. लघु+चित्त] दुर्बल या चंचल मन वाला।

लघुचूड़क—सं. पु.—वस्त्र विशेष।

उ०—लघुचूड़क मुक्तचुडक सुवरणचूडक मोतीसरी करंगीं कंकणी पादवेष्टक पोलरकत्रिक चतुसरक नवसरक अस्तादसरक इति आभ-रणानि। —व. स.

लघुतमसमापवरत—देखो 'लघुत्तमसमापवरत्य' (रू. भे.)

लघुता, लघुताई—सं. स्त्री.—१ छोटापन।

उ०—१ सुत 'धाधळ' केसर वाग सही, जग जेठ मणधर नाग जेही। लघुता दुख दोवड़ियाळ लखै, धिक रोस मुराड़ियै आंख धिखै। —पा. प्र.

२ तुच्छता, निम्नता।

उ०—१ नहि जागत नहिं सुता, नहिं वै जीवत नहिं वै मरता। नहि दीरध नहिं **लघुता**, चेतन ब्रह्म आप लखिता।
—श्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ जैसे काठ की पुतळी को कारीगर करै। फिर कारीगर को पुतळी चित्रणौं चाहै। तेसै परमेस्वर करत्तामकरत्ता मुनै उपायौ। अर हौं परमेस्वर कौ गुण कह्यौ चाहूं। ग्र थकरत्ता इह आपणी **लघुता** करै छै। —वेलि

३ हल्कापन, नीचता।

४ दुर्बलता, कमजोरी।

रू भे.—लगुता।

लघुतुपक—स स्त्री [सं. लघु+तुपुक] एक प्रकार की छोटी बदूक, तमंचा।

लघुत्तमसमापवरत्य—स. पु [सं. लघुतमसमापवर्त्य] वह छोटी से छोटी सख्या जो दो या अधिक सख्या से पूरी २ विभाजित हो जाय।

रू. भे.— लघुतमसमापवरत।

लघुत्व—स. पु. [स] १ छोटापन, लघुता।

२ हल्कापन।

३ तुच्छता।

लघुदती—सं. पु.—प्रथम लघु से पांच मात्रा का नाम।

वि.—छोटे दात वाला।

लघुनजर—सं. पु. यौ. [स. लघु+फा. नजर] हाथी। (ना डिं. को.)

रू भे लघुनिजर।

लघुनाळीक—स. पु.—छप्पय छद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम चार चरण १८, १८ वर्णो के और अतिम दो चरण २२, २२ वर्णों के होते हैं।

उ० अखर अठारह चरण चव, बे चरणा बावीस। कवित **लघुनाळीक** कही, बरणत सरब कवीस। —र. ज. प्र.

लघुनिजर—देखो 'लघुनजर' (रू भे.)

लघुनीत—सं. पु.—पेशाब, मूत्र। (जैन)

लघुपंचक, लघुपचमूळ—स. पु.—शालीपर्णी पिठवन कटाई (छोटी) कटेहरी (बडी) और गोखरू इन पाचों की जडो का समूह या समिश्रण। (वैद्यक)

लघुपण—सं. पु.—छोटापन, लघुता।

उ०—पढै कवियण बयण बडपण, ओप गिण सम करण। अरि जण स्रवण कुवयण तजै समभण दियण **लघुपण** दाव।
—रा. रू

लघुपाक—स पु. यौ [स. लघु+पाक] १ सहज ही पक जाने वाला, खाद्य पदार्थ।

लघुबंधव—स पु. यौ. [स. लघु+बधव] उम्र मे छोटे रिश्तेदार या भाई।

लघुभोजराज—सं पु—श्रीवस्तुपाल के २४ विरुदो में पाचवा विरुद। (व स.)

लघुमति—स. पु यौ. [स लघु+मति] छोटी बुद्धिवाला, मूर्ख।

लघुमांण—सं. पु.—लघु।

उ०—मिळै चवथी पचमी, जिका अत गुरू जाण। अनुप्रास की आठ तुक, मिळै अत **लघुमांण**। —र. ज प्र.

लघुमांन—स पु—नायक को किसी दूसरी स्त्री से बातचीत आदि करते देखकर नायिका के मन मे होने वाला रोष।

लघुमा—देखो 'लघिमा' (रू. भे.) (अ. मा, डिं. को., ह. ना. मा.)

लघुवय—स. स्त्री. यौ. [सं. लघु+वय] छोटी उम्र।

रू. भे.—लहुवय

लघुवयस, लघुवेस—सं. पु [सं. लघु+वयस्] १ छोटी उम्र वाला।

उ०—**लघुवेसां** देवौ' दलौ', सुत जसकरण सकज्ज। आप भळावण 'खेम' लै, नेम लियौ धर कज्ज। —रा. रू.

२ बालक। (ह ना. मा.)

रू. भे.—लगुवेस

लघुसका—स. स्त्री. [स. लघु+शंका] मूत्रोत्सर्ग, पेशाब करना।

उ०—पतिसाहजी हुकम कियौ पेसरूखांन नू तूं जाइ अर उस रेती माहै आबखान रौ तबू खाचि। ओथि पातिसाहजी **लघुसंका** की।
—द. वि.

क्रि. प्र—करणी. लागणी।

लघुसांमंत—सं. पु. [म. लघु+सामत] छोटा राजा।

उ०—राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामत **लघु-सामंत** तलवर तत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति मत्रि महामत्रि ग्रहवाहक। **—व. स.**

लघुहस्त—स पु [स.] शिघ्रातिशिघ्र बाण चलाने वाला व्यक्ति।

२ छोटे हाथ वाला।

लड़ग—वि.—१ लम्बा।

२ लम्बायमान।

स. पु.—१ घोड़ा, अश्व।

उ०—घरि बइठा ही आविस्यइ, लाखै लियां **लड़ग**। तिणिमइ लेस्या टाळिमा, वाकड़ मुहा विडग। —ढो. मा.

२ कतार, पंक्ति।

उ०—१ पडै जागिया अखमी रौळ विखंमी नीहाव पडै, रैण घोम लागी वौम रुके पख राह। तेडे रथ गिरभां रा रभा रा **लड़ंग** तूटै, साहा बेह सीस जूटै बळाबध साह। —राव सत्रसाळ रौ गीत

उ०—२ **लड़ंग** लाख तुंग तंग, सग जुग हल्लयै। चढै कि वेळ आकुळै, समुद्र मेळ चल्लयै। —रा. रू.

३ फौजो की टुकडिया, दल।

उ०—हम फरतै तोप का गोळा ज्यूं आए। जिन्हूं पर ठांमठांम सेती फौजं के **लड़ंग** धाग। —सू प्र.

४ फैलाव, विस्तार।

उ०—लखि फौज तुग **लड़ंग** ऊबंध किर दधि अग। वाणि सुरथ पायक व्रंद जग जाण दळ जयचंद —रा. रू.

५ झुड, समूह।

उ०—छछवा मदरा छाकिया, स्हौ आछा सिरदार। विडंगा चढिया वीरवळ, **लड़ंगां** आया लार। —पनां

रू. भे.—लडंग।

लड़ंत–सं. स्त्री—लडाई, भिड़ंत, मुकाबला।

लड़–सं. स्त्री—१ एक दूसरी से लगकर लम्बाकार में व्यवस्थित रूप से गुंथी हुई वस्तुओं का समुह, मामा।

उ०—१ उमड घटा घन देखिकै, चढी अटा पर बाळ। मोतिन **लड़** मुख में लई, कारण कोण जमाल। —जमाल

उ०—२ हींडा बादळी हिंडाय, बिजळी चंवर ढुळाय। लागै बिरखा री झड़, जांणौ मोतीड़ां री **लड़**। —चेतमांनखी

२ पंक्ति में लगे हुए फूलों का छड़ी के आकार का गुच्छा।

३ रेखा, पंक्ति, कतार।

उ०—धुरवा धरणी लग लौढा लै धावै, जीमण जीमण नै मोडा जिम धावै। मोरा अनुमोदित लोरा **लड़** लागी, नीझर नव नीरद भमता भव भाजी। —ऊ का.

४ रस्सी।

उ०—पीठ पर बैणी उचटती निजर आवै है, केल रै पांन जाणै नागण लफलफा जावै है। उचकती अलकावली में मुख इण भात सोभा देवै है, मानू नाग **लड़ां** रै हींडै चढ़ झोटा लेवै है। —र. हमीर

५ युद्ध, लड़ाई। (डिं. को.)

६ सगीत वाद्यों पर गत के एक ही टुकड़े को बार-बार बजाने की क्रिया।

रू. भे.—लड़ी

लड़कपण, लड़कपणौ–सं. पु.—१ बाल्यावस्था।

२ लड़कों का सा आचरण, चंचलता।

क्रि. प्र.—करणौ, दिखाणौ

लड़कबुद्धि–सं. स्त्री—बालकों जैसी बुद्धि।

लड़काई–स. स्त्री—लडकपन, नादानी।

लड़कौ–सं. पु. [स्त्री. लड़की] १ छोटी अवस्था का बालक।

२ पुत्र, बेटा (डिं. को.)

लड़क्कणौ, लडक्कबौ–क्रि. अ.—परस्पर टकराना, भिड़ना।

उ०—मही चौ धड़क्कै तठै **लड़क्कै** सेस रा माथा, खडक्कै हुडक्कै काळी कड़क्कै खांणास। झड़क्कै कटारां पेस रुड़क्कै मूंडडा जठै, बडक्के क्रंगळा कड़ा जडक्कै बाणास। — गीत बादरसिघ मेडतिया रौ

लड़खड़णौ, खड़खड़बौ—देखो 'लड़खडाणौ, लडखडाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ म्हैं तौ ईणनुं अठै बरियौ पण ईणरी कटारी तौ कोट नुं जाय जाय बहै छै। ईण भांत पड़ता लडता **लड़खड़ता** नीसरणिया लगाय नै चढै छै। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—२ सरप की जीभ ज्यूं परै अणी भलका करै। कै लडै कै **लड़खड़ै**, थवया उलटा पड़ै। —ह. पु. वां.

उ०—३ उड गया रेसमी गदरा वे राली नै रज नहीं लागी। आ फिरे कांमेतण लडाझूम, लखपतणी मरगी **लड़खड़ती**। —चेतमानखा

लड़खड़ाड़णौ, लड़खड़ाड़बौ—देखो लडखड़ाणौ, लड़खड़ाबौ' (रू. भे.)

लड़खड़ाड़ियोड़ौ – देखो 'लडखड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लड़खड़ाड़ियोडी)

लड़खड़ाणौ, लड़खड़ाबौ–क्रि. अ.– १ डगमगाना, डिगना।

उ०—नाटक गीत तमासौ देखण, तुरत हुय्क सूं जाई रे। धरम कथा साधां रै दरसन, जाता पग **लड़खड़ाई** रे। —जयवांणी

२ कापना, धूजना, थर्राना।

क्रि. स.—३ भय दिखाना।

उ०—इतरा में वेरसी आय लोगा नू **लड़खड़ाया** सो माणस काप रहिया छै। —सूरे खींवे कांधलोत री बात

लड़खड़ाणहार, हारौ (हारी), लड़खड़ाणियौ—वि०।

लड़खड़ायोड़ौ - भू० का० कृ०।

लड़खड़ाईजणौ, लड़खड़ाईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

लड़खड़णौ, लड़खड़बौ, लड़खड़ाड़णौ, लड़खड़ाड़बौ, लड़खड़ावणौ, लड़खड़ावबौ, लुड़खुड़ाणौ, लुड़खुड़ाबौ—रू० भे०।

लड़खड़ायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ डगमगाया हुआ, डिगा हुआ. २ कापा हुआ, धूजा हुआ, थर्राया हुआ. ३ भय दिखलाया हुआ, रोब गालिब किया हुआ.

(स्त्री. लड़खड़ायोड़ी)

लड़खड़ावणौ, लड़खड़ावबौ—देखो 'लड़खड़ाणौ, लड़खड़ाबौ' (रू. भे.)

लड़खड़ावणहार, हारौ (हारी), लड़खड़ावणियौ—वि०।

लड़खड़ाविओड़ौ, लड़खड़ावियोड़ौ, लड़खड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०

लड़खड़ावीजणौ, लड़खड़ावीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

लड़खड़ावियोड़ौ—देखो 'लडखडायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लडखड़ावियोड़ी)

लड़ड़–क्रि. वि. (अनु.) लगातार, निरन्तर।

उ०—घोडा री असवारी अर दूध रै पाण वौ तौ **लड़ड़-लड़ड** बधतौ ई गियो। —फुलवाड़ी

रू. भे —लरड

लड़झड़णौ, लड़झड़बौ–क्रि. अ —बकझक करना, वडवडाना।

उ०—इम **लड़झड़ती** बाहुडी, पूठी उर पिछनाय। छळ करतौ छूंनौ गयद, जाणै बिन नूं जाय। —र हमीर

लड़झड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—बकझक किया हुआ, वडबड़ाया हुआ।

(स्त्री. लडझडियोडी)

लड़णौ, लड़बौ–क्रि. स. [स. रणम्] १ शस्त्रास्त्रो द्वारा युद्ध करना, लडना।

उ०—१ पिड सार धार सिलहा अपार, वाजंत अत विण वार वार जुध **लड़ै** भिडै नह खडै जग, सिर पडै झड़ै कर पाव सग। —रा. रू.

उ०—२ करण प्रताप सुणै दळ कीधा, **लड़वा** कटक सामुहा लीधा। असि सहस विकटा असवारा, वाग उपाडि **लड़ै** जिण वारा। —सू प्र.

उ०—३ उडै पग हात किरका हुवै अग रा, वहै रत जेम सावण वहाळा। आप आपौ वरी जोय नै आडिया, लड़ै रिण भला भला निराताळा। —र. रू.

२ शारीरिक, आर्थिक, बौद्धिक बल प्रयोग से विपक्षी को परास्त करने या नीचा दिखाने की क्रिया करना।

३ बहस करना, हुज्जत करना।

४ ईर्ष्या-भाव से कलह करना, झगडना।

उ०—पिडत-पिंडत अर साधु-साधु, साणै हुवै जद सागीड़ा **लड़ै-झगड़ै**। —दसदोख

५ टकराना, भिडना।

उ०—कैर **लड़ै** बिन पानड़ा, रोकै लूआं रोस। सुण सुसाता जोर-सू, भूले हिरण होस। —लू

६ विषैले जन्तुओ का डक मारना।

उ०—१ पनग **लड़ौ** कीडा पडौ, सड़ौ झड़ौ दुख सग। जग चुगला री जीभड़ी, वायस भखौ विहग। —बा. दा.

उ०—२ नाथूरामजी रै खटमल **लड़ियौ**, बांकी लूठी के दाफड पड़ियौ। रे खटमल सोबा दै बादस्याई दरोगा सोयबा दै। —लो. गी.

७ कुपित या नाराज होना।

उ०—होय बिरंगी नार, डगरा बिच है वयू खडी। काई थारौ पीहर दूर, कांई धरा सासू लडी। —लो. गी.

८ ऐसी स्थिति मे होना जिसमे किसी कार्य के सम्पादन मैं पूर्ण परिश्रम लग गया हो।

ज्यूं—काम रै माय दिमाग लडणौ।

९ ऐसी स्थिति मे पहुचना, जिसमे किसी प्रकार की अनुकूलता या समर्थन सिद्ध होता हो।

लड़णहार, हारौ (हारी), **लड़णियौ**—वि.।

लडिओड़ौ, लड़ियोड़ौ, लडचोड़ौ—भू. का. कृ.।

लड़ीजणौ, लड़ीजबौ—भाव वा.।

लडणौ, लडबौ—रू भे.।

लड़त्थड़णौ, लड़त्थड़बौ—देखो 'लड़थडणौ, लडथड़बौ' (रू. भे.)

लड़त्थड़णहार, हारौ (हारी), **लड़त्थड़णियौ**—वि०।

लड़त्थड़िओड़ौ, लड़त्थड़ियोड़ौ, लड़त्थड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

लड़त्थड़ीजणौ, लड़त्थड़ीजबौ,—भाव वा०।

लड़त्थड़ियोड़ौ—देखो 'लड़थडचोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लड़त्थड़ियोड़ी)

लड़थड़णौ, लड़थड़बौ—देखो 'लडथड़ाणौ, लडथड़ाबौ' (रू. भे)

उ०—१ भाख बिन अराबा आगि माथै झड़ै, **लड़थड़ै** अड़ै गैणानि लागौ। झपेटा भाग किलमा करै झोबरै, नाग जिम रांम रौ खाग नागौ। —भीमसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ हाथ डाडौ झालियौ जी, चालतौ **लडथड़ै** देह। दात स्रैणी खोळी पडीजी, आपद पड़ियौ नेह। —जयवाणी

उ०—३ कीधा तिमको कहइ नही, जीभ **लड़थड़** झूठ। काटौ भागौ आगुळी, खोभीजइ अंगूठ। —स. कु.

उ०—४ झड़ अनड उड रव बाणि बहिझड, उरड अपहड दुझड ओझड। कर डमर गड बरड़ कर धड, लुडत तड़फड जुटत लडथड़। —सू. प्र.

लड़थड़णहार, हारौ (हारी), **लड़थड़णियौ**—वि.।

लडथडिओड़ौ, लडथडियोडौ, लड़थडचोड़ौ—भू. का. कृ.।

लड़थड़ीजणौ, लड़थड़ीजबौ—भाव वा.।

लड़थड़ाडणौ, लड़थड़ाडबौ—देखो 'लडथड़ाणौ लडथड़ाबौ' (रू. भे.)

लड़थड़ाड़ियोड़ौ—देखो 'लडथडायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लड़थड़ाड़ियोडी)

लडथड़ाणौ, लड़थडाबौ–क्रि. अ.—१ डिगमिगाना।

२ भय आदि के कारण जीभ का कांपना।

लड़थड़ाणहार, हारौ (हारी), **लड़थड़ाणियौ**—वि.।

लड़थड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लड़थड़ाईजणौ, लड़थड़ाईजबौ—भाव वा. ।

लड़त्थड़णौ, लडत्थड़बौ, लड़थड़णौ, लड़थड़बौ, लड़थडाडणौ, लडथड़ाड़बौ, लडथड़णौ, लडथड़बौ, लड़थड़ावणौ, लडथड़ावबौ —रू. भे. ।

लड़थड़ायोड़ौ–भू का. कृ.—१ डिगमिगाया हुआ. २ भय आदि के कारण जीभ का कांपा हुआ ।

(स्त्री. लड़थड़ायोडी)

लड़थड़ावणौ, लड़थडावबौ—देखो 'लडथड़ाणौ, लड़थडाबौ' (रू. भे.)

लड़थड़ावणहार, हारौ (हारी), लड़थड़ावणियौ—वि० ।

लड़थड़ाविश्रोड़ौ, लड़थड़ावियोड़ौ, लड़थड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०

लड़थड़ावीजणौ, लड़थड़ावीजबौ—भाव वा० ।

लड़थड़ावियोड़ौ—देखो 'लडथडायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लडथड़ावियोड़ी)

लड़थट—देखो 'लडथट' (रू. भे.)

लड़दादौ–सं. पु.—प्रपितामह का पिता ।

लडवौ, लड़धौ–वि. (स्त्री. लड़दी, लड़धी) १ हृष्ट पुष्ट, युवा ।

२ मस्ताना, मुफ्तखोर ।

उ०—बापडी भम्र्-नै तौ टुकड़ा-रा ई सांसा अर अठीनै अै लड़धा भाग-बूटी छाणै अर माल उडावै । —बरसगाठ

लड़पोतौ–स. पु. (स्त्री. लडपोती) पौत्र का लडका ।

लड़मूरत—गले का आभूषण विशेष ।

लड़लूंब, लडलूंम, लडलूमौ—देखो 'लडालूंब' (रू. भे.)

उ०—फब कानन मोनी मुगाट फबै, लड़लूंब बनौ चित चाव लुबै । कमधेस अच्छा अस त्यार किया, लखमोल अमोलक साथ लिया । —बख्तावर मोतीसर

लड़ांलूंब, लड़ांझूंम—देखो 'लड़ालूंब' (रू. भे.)

लड़ाई–सं. स्त्री.—१ लड़ने की क्रिया या भाव ।

२ शस्त्रों से (शत्रु को पराजित करने हेतु) रण-क्षेत्र मे किया जाने वाला सघर्ष, सग्राम, युद्ध।

उ०—१ कर धूंकळ धर कज्ज, सकत दाखवै सवाई । मघ मरिणयड़ राडद्रहि, करै छेहली लड़ाई । —रा. रू.

उ०—२ घणा असुर भांजै गागाणी, माड़ेचौ चढियौ 'मुकनाणी' लाखां सू बंधडै लडाई, सार प्रथम साभिया सिपाई । —रा. रू.

३ जन-साधारण में एक दूसरे के साथ मारपीट करने का प्रयत्न ।

क्रि. प्र.—करणी, लड़णी ।

४ शारीरिक, आर्थिक व बौद्धिक बल मे एक दूसरे को दबाने या नीचा दिखाने का प्रयत्न ।

५ एक-दूसरे के बीच वाद-विवाद या गाली-गलोच होने की अवस्था ।

६ वैमनस्य, शत्रुता, अनबन ।

७ प्रतिस्पर्धा, ।

८ टक्कर, भिडत ।

यौ. लडाई-खोर

रू. भे.—लड़ाई

लड़ाईखोर, लड़ाईखोरौ–वि.—१ लड़ाई करने वाला ।

२ कलह-प्रिय ।

लड़ाक, लड़ाकी, लड़ाकू, लड़ाकौ–वि.—१ लड़ाई करने वाला, योद्धा वीर ।

उ०—१ गाज नगारा चिमक खग, बरसत बाजत डाक । घटा नहीं आ कांम री, आवै फौज लड़ाक । —अज्ञात

उ०—२ चठ्ठा करत खप्पराक चंडी, राग बज अयराक । रिणछाक चढ रिव साक राघव, लखण सहित लड़ाक । —र. ज. प्र.

उ०—३ खांगीबंध खळ गयंद खुराकी, नाकी नह मेल्ही नहराळ । सीह लड़ाकी लडण सलूभौ, डाकी ठह उभौ डाढाळ , —महादांन मेहड़

२ कुश्ती लडने वाला, मल्ल-योद्धा ।

लड़ाड़णौ, लड़ाड़बौ - देखो 'लडाणौ लड़ाबौ' (रू. भे)

लड़ाडणहार, हारौ (हारी), लड़ाड़णियौ—वि. ।

लड़ाड़िश्रोडौ, लड़ाड़ियोड़ौ—भू. का कृ. ।

लड़ाडीजणौ, लड़ाडीजबौ—कर्म वा. ।

लड़ाड़ियोडौ—देखो 'लडायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. लड़ाड़ियोड़ी)

लड़ाझूंब, लड़ाझूंम, लडझूम—देखो 'लड़ालूंब' (रू. भे.)

उ०—१ आबूवाळा ई समारोह में पूरा-सूरा कपड़ा अर वै भी घाघरा, ओढणी, कुड़ती, कांचळी, इत्याद पैर कर और पूरा गैणा गाठां सू लडाझूम लुगाया री सुंदरता री परख व्है । —हरावळ

उ०—२ उड गया रेसमी गदरा वे, राली रै रंज नहीं लागी । आ फिरै कामेतण लड़ाझूम, लखपतणी मरगी लडथडती ।

—चेतमांनखी

उ०—३ वींदणी अपूठी होय मूंडौ उघाड़ बैठगी । ऊंचौ जोयौ । पतळी पतळी लीली-चेर लड़ाझूम सांगरिया ई सांगरिया । देखता ईं कोयां में ठाडोळाई वापरगी । —फुलवाडी

लड़ाणौ, लड़ाबौ–कि.स. (लड़णौ क्रिया का प्रे. रू.)—१ शस्त्रो द्वारा युद्ध में प्रवृत करना, लडाना ।

२ शारीरिक, बौद्धिक एवं आर्थिक बल प्रयोग से शत्रु को परास्त करने या नीचा दिखाने हेतु प्रवृत्त करना ।
३ बहस या हुज्जत करना ।
४ ईर्ष्या-भाव से कलह कराना, झगडाना ।
५ विषैले जन्तुओं से डंक मराना ।
६ टकराना, भिडाना ।
७ कुपित या नाराज कराना ।
८ किसी कार्य के सम्पादन हेतु विकटतम परिस्थितियों का सामना करना, पूर्ण परिश्रम कराना ।

उ०—धरम अर पुन्न रा कामा वास्तै केइ कळाप करणा पडै। अणूंती अकल **लड़ाणी** पडै । — फुलवाडी

९ किसी प्रकार की अनुकूलता या समर्थन प्राप्त करने हेतु किसी प्रकार का इशारा या संकेत करना।

ज्यूं.—आख लडाणी ।

१० अपना कोई अंग दूसरे के सामने लाकर बराबरी कराना ।
११ मुकाबला कराना, प्रतिस्पर्धा कराना ।

लड़ाणहार, हारौ (हारी), लडाणियौ—वि ।
लड़ायोड़ा—भू. का. कृ. ।
लड़ाईजणौं, लड़ाईजबौ—कर्म. वा. ।
लड़ाड़णौ, लड़ाड़बौ, लड़ावणौ, लडावबौ, लड़ाणौ, लडाबौ—रू. भे. ।

लड़ायोड़ौ—भू. का. कृ —शस्त्रास्त्रों द्वारा युद्ध मे प्रवृत्त कराया हुआ, लडाया हुआ. २ शारीरिक बौद्धिक एव आर्थिक बल-प्रयोग से विपक्षी को परास्त करने या नीचा दिखाने हेतु प्रवृत्त कराया हुआ. ३ बहस या हुज्जत कराया हुआ. ४ इर्ष्या भाव से कलह कराया हुआ, झगडाया हुआ. ५ टकराया हुआ, भिडाया हुआ । ६ कुपित या नाराज कराया हुआ. ७ विषैले जन्तुओ से डक मरवाया हुआ. ८ किसी कार्य के सम्पादन हेतु विकटतम परिस्थितियों का सामना कराया हुआ, पूर्ण परिश्रम कराया हुआ. ९ किसी प्रकार की अनुकूलता या समर्थन प्राप्त करने हेतु कोई संकेत किया हुआ. १० अपना कोई अंग दूसरे के सामने लाकर बराबरी कराया हुआ ११ मुकाबला कराया हुआ, प्रतिस्पर्धा कराया हुआ ।
(स्त्री लडायोडी)

लड़ालंब—देखो 'लडालूंब' (रू. भे.)

उ०—तठां उपरात करि ने राजान् कुमारी जान घणै आडंबर सू हाथी घोडा वहील सुखासण रथ पायकरा वणाव किया बचेल जानियारै साथ लिया घणौं मोती जडाव जरकसी सू **लड़ालंब** हुआ छै । —रा. सा. सं

लड़ालूंब, लड़ालूंम, लड़ालूंव—वि.—१ आभूषणों से सुसज्जित ।

उ०—१ सबै अंग उत्तग सालोत साखी, **लड़ालूंब** कीधौ थकौ आण लाखी, । "हरौ" होइ आरुढ ते वार हल्लै, चढै पीठ ऊंचास के इद चल्लै । —हरी पिंगळ प्रबंध

उ०—२ लाख वरीसै भोज तू, कवित्त नवा कहणाह । **लड़ालूंब** वणियौ विहद, गढपत जस गहणाह । —बां. दा.

२ फल-फूलो से आच्छादित, युक्त ।

उ०—**लड़ालूंम** डाल्यां लमूंटै जाणै झवरख झूटणा । ओयण मे लसकर लुगाया, खाणा चुगणा चूंटणा । —दसदेव

रू. भे.—लडलूब, लडलूम, लडलूंमौ, लड़ालूब. लडाझूम' लडाझूंब, लडाझूम, लडाझूम, लडालूम, लडालूंब ।

लडावणौ, लड़ावबौ—देखो 'लड़ाणौ, लडाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वा उणनै बिलमावण सारू, राजी करण सारू आखी रात अर आखै दिन अकल **लड़ावती** पण की तोजी बैठी नी । — फुलवाडी

उ०—उण रा घर मे तौ नितरी दांताकसी अर पाडौसिया रै ग्रेडौ बाणिया रै ऊभी आडी नी माई । वौ दोना नै **लड़ावण** री अटकळ विचारण लागौ । —फुलवाड़ी

उ०—३ सुखासण पालखी चोडाळ रथ पाइक बणि नै रहीया छै । कटकारा खूर पडि नै रहीआ छै । हाथी **लड़ावीजे** छै । — रा. सा. स.

लड़ावणहार, हारौ (हारी), लड़ावणियौ—वि० ।
लडाविओड़ौ, लड़ावियोड़ौ, लडाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लड़ावीजणौ, लड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

लड़ावियोड़ौ—देखो 'लडायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री लडावियोडी)

लड़ियंग—सं, स्त्री.—पक्ति, समुह ।

उ०—३ पुण प्राजळं अगनि पूरै पवन, **लड़ियंग** धाइ धूवर लोचन । देवी हूकार कियै भसम दैत, जालिम संघार जुध जैत जैत । —मा वचनिका

लड़ियाल—देखो' लडीयाल' (रू. भे.)

लड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शस्त्रास्त्रो द्वारा युद्ध किया हुआ, लड़ा हुआ. २ शारीरिक, आर्थिक एवं बौद्धिक बल प्रयोग से विपक्षी को परास्त करने या नीचा दिखाने का प्रयत्न किया हुआ. ३ बहस या हुज्जत किया हुआ. ४ इर्ष्या भाव से झगड़ा या कलह किया हुआ. ५ टकराया हुआ, भिड़ा हुआ. ६ विषैले जन्तुओ द्वारा डंक मारा हुआ. ७ कुपित हुवा हुआ, नाराज हुवा हुआ. ८ ऐसी परिस्थिति में हुवा हुआ जिसमे किसी कार्य के सम्पादन में पूर्ण परिश्रम लग गया हो ।
(स्त्री. लड़ियोड़ी)

लड़ियौ–सं. पु.—१ 'खींप' या 'सिणिया' नामक पौधे की बनी हुई रस्सी।

२ भेड का बच्चा।

लड़ी–सं. स्त्री.—बेल, लता।

उ०—भूठी भूठ न बोलियै, सांची बात कहंत। **लड़ी** पडी जै खेत में, ढाडा ढोर चरंत। —जलाल बूबना री बात

२ भेड।

३ देखो 'लड़' (रू. भे.)

लड़ीयाल–वि.—वीर, योद्धा, लड़ाकू।

उ०—ग्रनमी कद फौजा ग्राफळतौ, कावळतौ दळ तौ कूरम। यळ **लड़ीयाळ** 'मांन' 'ग्रपणाई', जै खल दा भीड़ीयाळ जम।

—चांवडदानजी धधवाड़ियौ

रू. भे.—लडियाळ, लडीयाळ।

लड़ेत–वि.—योद्धा, वीर, लड़ाकू।

उ०—सिलहेत ढहै इम वहै सार, ऊधडै कड़ी बगतर ग्रपार। सामंत **लड़ेत** खडै संग्रांम, रिण गहण गयौ ग्रस तोर रांम।

—रा रू.

लड़ोकड़–वि. स्त्री—कलह-प्रिय, लडाई करने या कराने वाला।

लड़ोकड़ौ–पु. (स्त्री. लड़ोकड़ी) कलह-प्रिय, भगड़ालू, लडाई करने वाला।

उ०—बडोड़ै बीरेजी री गवरां दै **लड़ोकड़ी** नार राय सांभतड़ी री लेवेली म्हारै भाभै जी सू मोरचौ। —लो. गी

रू. भे.—लडोकडौ।

लच—देखो 'लचक' (रू. भे.)

लचक–सं. स्त्री.—१ लचकने की क्रिया या भाव।

उ०—इळ धुकि **लचक** सीस ग्रहि वाळा, चंद कटक खड़िया कळवाळा। जगत छत्रदिस दिखै जबाबां, सभौ विमाह कि समर सताबां

—सू. प्र.

२ किसी वस्तु के दबती या भुकती रहने का गुण।

३ ग्रंग में भटका पड़ने से होने वाला दर्द या रोग।

क्रि. प्र.—ग्राणी, खाणी।

रू. भे.—लच, लचक्क

लचकणि–स. स्त्री—लचक या लचीलापन।

लचकणौ–वि. (स्त्री. लचकणी) लचकने या भुकने वाला।

लचकणौ, लचकबौ–क्रि. ग्र.—१ किसी लम्बे या कोमल पदार्थ के मध्य भाग का अधिक बोभ के कारण भुकना या मुड़ना।

उ०—ग्राभा भल पट ग्रगक चदै चीरियां, दरियाई धुज देह धरै डग धीरियां। लटकण भोला लेहक बेसर बंकिया, भरिया भूखण भार क **लचकै** लकिया। —र. हमीर

२ दबना, नीचे भुकना।

उ०—इंद्र ने चंद्र नागेंद्र चित चमकीया, धडहडयौ सेस नें धरा धूजै। **लचकि** किचकिच करै पीठ कूरम तणी हलहलै मेरु दिगदंत कूजै। —पं च. चौ.

३ स्त्रियो का चलते समय कोमलतावश कमर का थोडा भुकना जो सौन्दर्य सूचक होता है।

उ०—वाळि वाळि नै गांठ दीजै। इण भांतरी तूंजी हलका ज्यौ **लचकती** रतनाळा लोचना ग्रणिग्राळा काजळ सारीजै छै।

—रा सा. स.

४ गति सील या स्थित पदार्थ या व्यक्ति का किसी दूसरी दिशा की ग्रोर उन्मुख या प्रवृत्त होना, मुड़ना।

उ०—मचकै हिंड मचोळता, **लचकै** भीणौ लंक। तन दमकै दांमणिहिं तिहि, मुखड़ौ जांण मयंक। —र. हमीर

५ किसी लचीले पदार्थ का वायु के संसर्ग से हिलना, लहलहाना।

उ०—गोरै कंचन गात पर, ग्रगिया रंग ग्रनार। लेंगौ सोहै **लचकतौ** लहरयौ लफादार। —ग्रग्यात

लचकणहार, हारौ (हारी), **लचकणियौ**—वि.।

लचकिग्रोड़ौ, लचकियोड़ौ, लचक्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लचकीजणौ, लचकीजबौ—भाव वा.।

लचक्कणौ, लचक्कबौ, लचणौ, लचबौ—रू. भे.।

लचकांणौ–वि.—(स्त्री. लचकांणी) लज्जित, शर्मिन्दा।

उ०—१ तूं भीखणजी री निंदा करै है। जद ग्रौर बायां बोली: भीखण जी छै ए हीज। तीवा रै **लचकांणी** पडणै घर में न्हास गई। —भि. द्र.

उ०—२ वारै ढबताई डोकरी राजाजी रै सांम्ही देखनै कैवण लागी - मन रा साच नै लुकावणौ, खुद भूठ बोलणौ ग्रर भूठा चाकर राखणा म्हांरी जांण में राजाजी री ग्रा खास इदकाई है। राजाजी **लचकांणा** होय ग्राख्यां नीची करली। —फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—पड़णौ।

रू. भे.—लछकांणौ, लजकांणौ, लजखाणौ।

लचकाड़णौ, लचकाड़बौ—देखो 'लचकाणौ, लचकाबौ' (रू. भे.)

लचकाड़णहार, हारौ (हारी), **लचकाड़णियौ**—वि०।

लचकाड़िग्रोड़ा, लचकाड़ियोड़ौ, लचकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ।

लचकाड़ीजणौ, लचकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लचकाड़ियोड़ौ—देखो 'लचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लचकाड़ियोड़ी)

लचकाणौ, लचकाबौ–क्रि. स.—१ चलते समय स्त्रियों का नखरे से कमर को भुकाना।

उ०—कर मुख दे **लचकाय** कट, भमक चलै सुर भीण। मावड़ियौ महिला तणी, मारै रोज मलीण। —बा. दां.

२ किसी लम्बे या कोमल पदार्थ के मध्य भाग का अधिक वजन के कारण झुकाना।

३ दबाना या नीचे झुकाना।

लचकाणहार, हारौ (हारी), लचकाणियौ—वि.।

लचकायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लचकाईजणौ, लचकाईजबौ—कर्म वा.।

लचकाड़णौ, लचकाड़बौ, लचकावणौ, लचकावबौ, लचखांणौ लचखाबौ, लचाड़णौ, लचाड़बौ, लचाणौ, लचाबौ, लचावणौ लचावबौ—रू. भे.।

लचकार-सं. स्त्री.—लचकने की क्रिया या भाव, झुकाव, लचन।

उ०—बलोचणी ज्यूं लचकार करती थकी, इण भातरी कमाणा उणहीज दरखतारी साखां सू नांगळजै छै। —रा. सा सं.

लचकावणौ, लचकावबौ—देखो 'लचकाणौ, लचकाबौ' (रू. भे.)

लचकावणहार, हारौ (हारी), लचकावणियौ—वि.।

लचकाविओड़ौ, लचकावियोड़ौ, लचकाव्योड़ौ—भू का. कृ.।

लचकावीजणौ, लचकावीजबौ—कर्म वा.।

लचकावियोडौ—देखो 'लचकायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लचकावियोडी)

लचकियोड़ौ-भू. का. कृ (स्त्री. लचकियोड़ी) १ किसी लम्बे या कोमल पदार्थ का मध्य भाग अधिक बोझ के कारण झुका या मुड़ा हुआ. २ दबा हुआ या नीचे झुका हुआ. ३ स्त्रियो का चलते समय कोमलता वश कमर का थोडा झुका हुआ होना जो सौन्दर्य-सूचक होता है. ४ गतिशील या स्थित पदार्थ या व्यक्ति का किसी दूसरी दिशा की ओर उन्मुख या प्रवृत्त हुवा हुआ, मुडा हुआ. ५ किसी लचीले पदार्थ का वायु के ससर्ग से हिला हुआ, लहलहाया हुआ।

लचकीलौ-वि. [स्त्री. लचकीली] जो सहज ही मे लचक या दब जाता हो, लचकदार।

लचकौ-स. पु.—१ लचकने की क्रिया या भाव।

उ०—डाढाळौ ग्रेक हाथी रै मुरचै री साध मे खग री खळकाई जकौ मुरचै रौ खालडौ ग्रर मास चीरनै हाड जाय रड़कियौ। हाथी लचकौ खाय घमीड करतौ धरत्या ग्राय पड़्यौ। — फुलवाडी

२ लचकने के कारण होने वाली चोट या मोच।

३ लौदा।

उ०—१ उठौ म्हारा मारू बना करोनी कलेवौ, फीणां तौ बाटया बनड़ा लूंजी रौ लचकौ इसड़ौ कलेवौ थारा माताजी करावै। —लो. गी.

उ०—२ बेटा-बेटी तौ लारै होणा ही हा, पण भंवरी तो सगळां सू लाडरौ लचकौ, गुणां रौ गाडौ सी पळती रैयी। —दसदोख

लचक्क—देखो 'लचक' (रू भे)

उ०—घणा रग मैं घुमडी ग्रठी उमडी मेहरी घटा, धरै रीत उलट्टी नेह री करै धक। सो तचक्के हार कुच्चा उपट्टै देहरी सोभा, लचक्कां मचक्कौ भीणी केहरी मौ लक। —र. हमीर

लचक्कणौ, लचक्कबौ—देखो 'लचकणौ, लचकबौ, (रू. भे)

उ०—हय हिंदुनि हक्किय वीर किलक्किय सोर भभक्किय ग्रोर दहू। सिर मेस लचक्किय भूमि भचक्किय, कोल मचक्किय दंत कहूं। —ला. रा.

लचक्कणहार, हारौ (हारी), लचक्कणियौ—वि.।

लचक्किओड़ौ, लचक्कियोड़ौ, लचक्क्योड़ौ—भू. का. कृ।

लचक्कीजणौ, लचक्कीजबौ—भाव वा.।

लचक्कियोडौ—देखो 'लचकियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. लचक्कियोडी)

लचखांणौ—देखो 'लचकाणौ (रू. भे.)

उ०—जद ग्रोर साध स्वांमीजी कानी देखनै हंसवा लागा। पछै साधां कह्यो पूजनै पग सरकायौ। जद लचखांणा पड़्या ग्रनै पगां ग्राय लागा। —भि. द्र.

(स्त्री. लचखांणी)

लचणौ, लचबौ—देखो 'लचकणौ, लचकबौ, (रू. भे)

उ० —१ लचै नाग रा सीस गज टला तोपां लगै, हचै नह ग्ररी छक देख हवता। सचै मन पाथ रुगनाथ रा सीगळी, रचै कण सर ग्रसा जुध रवता। —मेघराज ग्राढौ

उ०—२ घूंमाळौ गाघरौ पहरीजै है, लहरियौ ग्रोढियां जिण मैं तन मन लहरीजै है। लक जिका लचै है, तिण हूं कटि मेखला रचै है। —र. हमीर

लचपच-वि.—१ तरबतर।

२ पिलपिला।

रू भे.—लिचपिच।

लचपचौ-वि.—अधिक द्रव्य पदार्थ वाला खाद्य पदार्थ।

लचपच्च-क्रि. वि.—लपकती हुई, लपलपाती हुई।

उ०—वाही राण प्रतापसी वरछी लचपच्चांह। जाणक नागण नीसरी, मुंह भरियौ बच्चाह। —ग्रग्यात

रू. भे.—लचलचौ, लसपस, लिचपिचौ

लचरकौ-सं. पु.—हिलने, डोलने या झुलने की क्रिया या भाव।

उ०—जिणांरी किलगियां जिके लचरका लेतीसी, तिके जांणौ पाछला नू झाला देतीसी। —र. हमीर

लचलचौ-वि.—१ लचकने वाला, लचीला।

२ देखो 'लचपचौ' (रू. भे.)

लचाकेदार–वि.—बढिया, उम्दा ।

लचाड़णौ, लचाड़बौ—देखो 'लचकाणौ, लचकाबौ' (रू. भे.)

लचाड़ियोड़ौ—देखो 'लचकायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लचाडियोडी)

लचाणौ, लचाबौ—देखो 'लचकाणौ, लचकाबौ' (रू. भे.)

लचाणहार, हारौ (हारी). **लचाणियौ** —वि० ।

लचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लचाईजणौ, लचाईजबौ—कर्म वा० ।

लचायोड़ौ - देखो 'लचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लचायोडी)

लचावणौ. लचावबौ—देखो 'लचकाणौ, लचकाबौ' (रू भे)

उ०—तीजणियां हींडा मचावै है, लंक **लचावै** है। बीज रौ सिळाव, नै मेह रौ मिळाव । मही फुहारां बरस रही है, तीजण्यां ही इण भात दरस रही है । —र. हमीर

लचावणहार, हारौ (हारी), **लचावणियौ**—वि० ।

लचाविग्रोड़ौ, लचावियोडौ, लचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लचावीजणौ, लचावीजबौ—कर्म वा० ।

लचावियोड़ौ—देखो 'लचकायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लचावियोड़ी)

लचोळौ–स. पु.—लचकने की क्रिया या भाव, लचक ।

उ०—लोभाणी नवोढ नेह नसा रा कचोळा लेती, भासै ग्रंग ग्रचोळ सचोळा लेती भाव । करा मक्रकेत रै **लचोळा** लेती तूंजी कना, नक्र रै मचौळा सूं हृचोळा लेती नाव । —र. हमीर

लच्चर–क्रि. वि.—दीपक के बुझने की क्रिया या अवस्था ।

उ०—तेल जळै तौ जळती है बाती, दिवरा झलमल सीय राम । जल गया तेल रु बुझ गई बाती, लच्चर **लच्चर** होय रांम । —मीरां

लच्छ—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

३ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

४ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

५ देखो 'लक्ष्य' (रू. भे.)

लच्छण—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ **बरणी** उपमा सार, बिचारि विचच्छणां । लियां सही अवतार, बतीसा **लच्छणा** । —बां. दा.

उ०—२ ग्रै भांबियांरा **लच्छण** है, ईसर री गवर व्है ज्यूं बण-ठण 'र मटका करती फिरै है । —रातवासौ

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू भे.)

लच्छणौ—देखो 'लक्षणौ' (रू. भे.)

उ०—स्वस्ति स्री 'चद्रगढ' सुभ स्थांन ग्रनेक ग्रोपमा लाइक ब्राज-मान प्यारी सजीली फबीली छबीली नसीली रसीली चकीली ककीली ग्रगीली रगीली बंकीली रंकीली रमकीली ममकीली चट-कीली जीव री जड़ी लगन री लडी बत्तीस **लच्छणी** चौसठ कला विचच्छिणी केलरस क्यारी प्रीतम प्राणप्यारी जोगि सरदै री ताजीम । —र. हमीर

(स्त्री. लच्छणी)

लच्छन—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लच्छमण–वि.—१ धनवान, ग्रमीर (डिं. को)

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लच्छमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लच्छि - देखो 'लच्छी' (रू.भे.)

उ०—१ ग्रसरणसरण ग्रभंग, ब्रह्म मुरारी सवंगह । सकर पवन सकत्ति, ग्रवनि धम **लच्छि** ग्रनंगह । —ह. र.

उ०—२ वडै रूप वाही जकै **लच्छि** बीजी, त्रियह लोक माही न को नार तीजी । सुणौ वात मारीच थांनं सिधाण, उभै दैत मामौ सु भाणेज ग्राए । —सू. प्र.

२ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लच्छिनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

लच्छिनिवास—देखो 'लक्ष्मीनिवास' (रू. भे)

लच्छिभरतार, लच्छिभ्रतार - देखो 'लक्ष्मीभरतार' (रू. भे.)

उ०—रत्ता तौ नाम जिकै रहमांन, जिकै नंह थायै ग्रावाजांण। भणै गुण तोरा **लच्छिभ्रतार**, लगै नहं त्या तन पाप लगार । —ह. र.

लच्छिवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—मुख मंद हास आणंदमय, ग्राराधित ग्रहि नर ग्रमर । दंडव्रत तूझ मारण दयत, वारण तारण **लच्छिवर** । —सू. प्र.

लच्छी—१ सूत, रेशम, ऊन आदि की लिपटी हुई गुच्छी ।

उ०—१ पेट ज **लच्छी** पाट की, नितंब नारियल जाण । मदना-कुस की जायगा, त्रिवली सीप समांण । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ ग्रधरां रा ख़रूंट परसै है, दिल री मोह चौड़ै दरसै है । प्रीतम रा लपेटा री पाट **लच्छी** बार बार माथै धरै है, नै चूंमन

करै है। छाती हौ चिपावै है, खिण खिण मैं देखै है न खिण मैं छिपावै है। —र. हमीर

रू. भे.—लच्छि, लछी

२ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ ले लच्छी मरहट्टरी, गूजर खड अधीस। आय महालच्छी चरण, सीग नमायौ सीस। —बां दा.

उ०—२ लच्छी रिद्धी बुद्धी, सज्जा विद्या खम्या। लहदेवी गौरी धात्री कवि स चूरण छाया। —र ज. प्र.

लच्छीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे)

लच्छीवाळापूत—सं. पु —घोडा, अश्व (डिं. को)

लच्छेदार—वि,—१ गुच्छोवाला।

२ रुचिकर, मजेदार।

लच्छौ—देखो 'लछौ' (रू. भे.)

उ०—अबे जलाल बूबना सूं सीख कीवी। तरै झरोखा सू रेंमस रा लच्छां सू उतरियौ। —जलाल बूबना री बात

लछ—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे)

२ देखो 'लक्ष्मी' (रू भे.)

उ०—१ हुवै आव दुरबार घर बार घुमै हसत, च्यार परकार लछ मळै चाहै। जग दीयौ भला करतार चारण जनम, मान माहाराज री वार माहै। —सगराम सादू

उ०—२ सिध बुध तिय लछ लाभ सुत, गवरी पुत्र गणेस। महारूप मगळ करण, समरै सुर नर सेस। —गजउद्धार

३ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.) (अ. मा.)

४ देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

५ देखो 'लक्ष्य' (रू. भे.)

लछकाणौ—देखो 'लचकाणौ' (रू. भे)

—उ०—सेठौ कीधौ सायधण, म्यारौ मैंहला माय। लछकाणौ पडियौ 'लधौ' कारी लगी न काय। —मयाराम दरजी री बात

(स्त्री. लछकाणी)

लछण—१ देखो 'लक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ वाक्य दोस प्रतिकूल वरण वद, प्रगट वरण जिण रस प्रतकूळ। सुध लछण मति अरुच हुऐ सुण, मति विरुध रस व्रतहत मूळ। —बां. दा.

उ०—२ पतिव्रता नेह अपार, सभि सोळ सरस सिंगार। बह कळा लछण बत्तीस, सभि आभरण खट तीस। —सू. प्र.

२ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लछणहीन—देखो 'लक्षणहीन' (रू. भे.)

उ०—जियां ही सँग जात्यां में सुनार लछणहीण अर बेविसवासी गिण्यौ जावै है। —दसदोख

लछन—१ देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

२ देखो 'लक्षण' (रू भे.)

लछबर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—१ बड़ा भाग ज्यारी बिसू, लछबर चरणा लाग। पाव राम गुण प्रीतसू, आठ पहर अनुराग। —र. ज. प्र.

लछमण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.) (अ. मा., ना. मा.)

उ०—१ तदि नृप पग वदि मुनि तणा, क्रोधज छिमा कराय। साथ दिया लछमण सहित, रछ्या कज रघुराय। —सू प्र.

उ०—२ अधपत वाळौ अस, पड़ियौ अपछर पेट मे। तद लछमण अवतस, रतन कवर पावू रह्यौ। —पा. प्र.

लछमणझूलौ—स. पु.—हृषिकेश के आगे बद्रीनारायण के मार्ग मे आने वाला एक पुल, जो तीर्थ स्थान माना जाता है।

लछमणसाही—सं. पु —बाँसवाडा राज्य का सिक्का विशेष।

लछमन—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे)

लछमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे)

उ०—गढ से तौ मीराबाई ऊतरचाजी, हाथ मगद कौ थाळ। औरा के तौ अनगन लछमी आप फिरौ कगाल। —मीरां

लछमीकत, लछमीकांत—देखो 'लक्ष्मीकांत' (रू. भे)

उ०—सेस आरबळ कोय न जाणौं, जाकौ आदि न अत। महा प्रळै व्है जात हि सज्या, पौढै लछमीकंता। —रुकमणि मगळ

लछमीधर—देखो 'लक्ष्मीधर' (रू. भे)

लछमीपत, लछमीपति, लछमीपती—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

उ० लछमीपत रै कर बसै पाच अक परवाण। पहलौ आखर छोडकर, दीजै चतर सुजाण। —अज्ञात

लछमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—लछमीवर बाहर करो, ढील न कीजै जाण। आवौ एक उसास मे, तुम्हैं भगत की आण। —गजउद्धार

लछमीवाळ—स. पु. यौ. [स. लक्ष्मी+सं आलुच] धनवान, अमीर। (डिं. को)

लछमीस—देखो 'लक्ष्मीस' (रू. भे)

लछम्मण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लछवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—लछवर धनंख साथ तेज निज हर लिया। रद कर मद दुजरांम अवधपुर आविया। —र. ज. प्र.

लछवि, लछवी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लछि—देखो 'लक्ष्मी' (रू भे.)

देखो 'लछी' (रू. भे.)

लछिपति—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

उ०—'जगरूप' सधू जगनाथ-कुळ, पदमणि किरि सूरज प्रभा। बनीतौ कुलीण कुरम बडी, परम लछिपती वल्लभा। —गु. रू. बं.

लछिबर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लछिभरतार—देखो 'लक्ष्मीभरतार' (रू. भे.)

उ०—करतार **लछिभरतार** कान्हउ केसव, जगदिस जैत जुरार ओपम जादवं। महाराण बाघण रांण मारण रांमणं, निरकारि ध्याइ अनाथ नाथ निरंजण। —पि. प्र.

लछिमन—देखो 'लक्ष्मण' (रू भे.)

उ०—घट ही मे गगा घट ही में जमना, घट घट है अविनासी। घट ही में पुसकर औ लोधेस्वर, **लछिमन** कुँवर बिलासी। —मीरा

लछी—१ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ **लछी** रा चहन घण बीज वाळी लपट। क्रोध ममता नता सूढ तज रै कपट। —र. ज. प्र.

उ०—२ **लछी** रूप सीता प्रभू रांम लीला, कवीपुत्र दाखै नहीं जेण कीला। अगै बालमीकां जिसा गाय आया, गुणा तास सपेखि न्रदोख गाया। —सू. प्र.

२ देखो 'लच्छी' (रू. भे.)

लछीधर—सं. पु.—१ बारह अक्षर का वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे ४ रगण होते हैं।

२ देखो 'लक्ष्मीधर' (रू. भे.)

लछीनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—महाराज औधेस आधार संता, वार खारी रखै लाज वेखौ। हरी काज पै आसरा दीह हेकै, **लछीनाथ** दी सेवगा लक लेखौ। —र. ज. प्र.

लछीबर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—बेल तू जिकां बेली **लछीबर**, हुऔ अधिराज घर जिकां हाणी। निरखता 'मान' नंद तुझ क्रामत नखत, न्रप जगतपत न्रपत गत हेक जाणी —जादूराम जी आढौ

लछीभरतार—देखो 'लक्ष्मीभरतार' (रू. भे.)

लछीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—नमो रघुनाथ, सधीर सनाथ। गणां गजगाह, दसांनन दाह। भभीखण आय, सु आस्रय पाय। अवो जिण रक, **लछीवर** लंक। —र. ज. प्र.

लछीवांन—देखो 'लक्ष्मीवांन' (रू. भे.)

उ०—तरै आप पागड़ौ छाडियौ। ईग्रांनू बौहत **लछीवांन** देख नै भ्रमिऔ। तरै सारा ही आय मिळिया। —कल्याणसिंघ वाढेल री बात

लछीस—देखो 'लक्ष्मीस' (रू. भे.)

उ०—सुणि सुरा अरज बोलै **लछीस**, आदू यौ सेवग अवधि ईस। रीझियौ अहं दसरत्थ राय, अवतार धरू इण ग्रेह आय। —सू. प्र.

२ श्रीरामचन्द्र।

उ०—वेढक फरसधर विकराळ बक त्रबंक सा, सुज जिण कीधा रांम नरेस सुधसणकसा। लहरे हेक दीधी **लछीस** थांनक लकसा। सुज पय नमै अविरळ सीस सुरप असक सा। —र. ज. प्र.

३ धनवान व्यक्ति।

लछौ—स. पु.—१ रंगीन रेसम की डोरियों का गुथा हुआ मोटा रस्सा विशेष।

उ०—सठ सनेहु जीरण वसन, जतन करता जाय। सजन प्रीत रेसम **लछा**, घुळत घुळत घुळ जाय। —अग्यात

२ किसी उबाले हुए या पकाए खाद्य पदार्थ के बारीक रेशे।

३ चांदी के तार का बना स्त्री के पैर का आभूषण।

४ हाथ में एक साथ एक जैसी पहने जाने वाली चूड़ियों का समूह।

५ हाथी की गर्दन के चारों ओर शोभा के लिए बांधा जाने वाला रंगीन रस्सा विशेष।

लज—देखो 'लज्जा' (रू. भे.)

उ० १ बतीम लखण चौसठ कळा, आबेरी उत्तम सहज। कूरंम संपेखै मुख कमळ, सरद इन्द्र पार्वत **लज**। —गु. रू. बं.

उ०—२ मचे वेढ विकराळ जरमन इंगल मारका, पडै खग धारका पीठ प्राभी। पजावण फारका पीठ नदण 'पतौ', सारका गढा **लज** धीठ साभी। —किशोरदान बारहठ

लजकांणौ, लजखांणौ—देखो लचकांणौ' (रू. भे.)

उ०—१ सू हमै जाण अजांण होवै है, सहेलियां हौं चालै लागी तिरछी निजर कंवर हमीर नू जोवै है। सू हमै चमक चबदंत हुय **लजकांणी** पडगइ, जांणौ अंगमाहीज वडगई। —र. हमीर

उ०—२ मोवन **लजखांणौ** हो र बोलियौ-काका ! मनै कूड़ ऊपर चडाळी घणी चढै 'कूडै-रौ काळौ मूंडौ' र लीला पग। —वरसगांठ

(स्त्री लजकाणी, लजखाणी)

लजणी—स स्त्री.—लाजाळू का पौधा।

लजणौ, लजबौ—देखो 'लाजणौ' लाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ घरा सार धजे, लोह होळी **लजै**। ताप वीर तजै, ईस रस ऊपजै। —रा. रू.

उ०—२ यौ सिसपाल चंदेरी कौ राजा, कूडी साख भरैगौ। मीरां कहै यूं रुकमणि कहत है, थांकौ ही बिड़द **लजैगौ**। —मीरा

लजणहार, हारौ (हारी), लजणियौ—वि० ।
लजिग्रोड़ौ, लजियोड़ौ, लज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लजीजणौ, लजीजबौ—भाव वा० ।

लजदार—स, पु.—१ जिसमे कुछ लज्जा हो, शर्मिला ।

उ०—धडच घाडायता भोग मगण घनौ, कळह सवळा खळा हूंत राखण कनौ । बनी **लजदार** घर सथर प्रतपौ बनौ, पतव्रता नार भरतार रसीयौ पनौ । —महादांन महडू

लजरख—वि. [सं. लज+रख] इज्जत या लज्जा रखने वाला ।
(अ. मा.)

स. पु.—वस्त्र ।

लजराह—स. पु यौ. [सं, लज्+राह] लज्जा का मार्ग ।

उ०—सू मजेज खगि सभि जेज जुधि काज न रक्खी । सूर सगाह सिपाह ताहि **लजराह** सु दक्खी । रा. रू

लजवाळौ—वि०—(स्त्री. लजवाळी) लज्जा वाला, लज्जाशील ।

लजाड़णौ, लजाड़बौ—देखो 'लजाणौ, लजाबौ' (रू. भे)

लजाड़णहार, हारौ (हारी), लजाड़णियौ—वि० ।
लजाड़िग्रोडौ , लजाड़ियोड़ौ, लजाड़चोड़ौ—भू का कृ. ।
लजाड़ीजणौ, लजाड़ीजबौ—कर्म वा ।

लजाड़ियोड़ौ—देखो 'लजायौड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लजाड़ियोड़ी)

लजाणौ—वि० (स्त्री लजाणी) लज्जित करने वाला ।

उ०—१ सहणी सबरी हू सखी, दो उर उल्टी दाह । दूध **लजाणौ** पूत सम, बलय **लजाणौ** नाह —वी. स.

रू भे —लजावणौ ।

लजाणौ, लजाबौ—क्रि. स.—१ लज्जित करना, शर्मिदा करना ।

उ०—१ आ हाथां लेय बापड़ा खीलां नै ई लजाया ।
—फुलवाडी

उ०—२ पछै मोतीरामजी चौधरी कह्यो—उठो परहौ म्हानै **लजावो** । —भिक्खु

लजाणहार, हारौ (हारी), लजाणियौ—वि. ।
लजायोड़ौ—भू. का. कृ ।
लजाईजणौ, लजाईजबौ—कर्म वा. ।
लजाड़णौ, लजाड़बौ, लजावणौ, लजावबौ लज्जाड़णौ, लज्जाड़बौ, लज्जाणौ, लज्जाबौ लज्जावणौ, लज्जावबौ—रू. भे.

लजाथंभ—वि. यौ. [स. लज्जा+स्तम्भ] इज्जत, लज्जा का रखवाला, रक्षक ।

उ०—'जसौ' हालियो आगरा हूत ज्यारां, लिया साहरा उबरा सब्ब लारां । कमंधा वडा कूरमां साथ कीधा, **लजाथंभ** सीसोदियां लाथि लीवां । —र. वचनिका

लजाधुर वि. [स लज्जा+धुर] लज्जावांन, शर्मिला ।

लजायोड़ौ—भू. का. कृ.—लज्जित किया हुआ, शर्मिदा किया हुआ ।
(स्त्री लजायोडी)

लजाळु, लजाळू—वि. [स. लज्जाळु:] लज्जा वाला, लज्जाशील, शर्मिला ।

उ०—इतरी फिकर क्यूं करै छै । थारी किसी क अबार तो मोकळी फिरै छै । तूं तो छै जनम की ही **लजाळू** । —पनां

स. पु.—एक प्रकार का पौधा विशेष जिसके पत्ते छौंकर या खैर के समान होते हैं, फूल गुलाबी मिश्रित नीले रंग के होते है और जड़ लाल होती है । इसे छूने से यह सिकुड़ जाती है और फिर फैल जाती है । यह काटेदार और बिना काटेदार दो तरह की होती है । इसे छुईमुई भी कहते है ।

उ०—सारी हेक सरीसिया, तोलै हैक तुलैह । पात लजाळू री परी, लागा हाथ लुळैह । —र. हमीर

रू भे. लज्जाळु, लज्जाळू, लाजलज्जाळू लाजाळू ।

लजाळूपण, लजाळूपणौ—स. पु—लज्जा रखने का भाव, लज्जा शर्म ।

उ०—हमै इतरै लिखमीदास आयौ । सू रतना घणी उणमणी रहै । पिण **लजाळूपणां** मैं पडदो वहै । —र. हमीर

लजावत—देखो 'लज्जावत' (रू. भे.)
(स्त्री लजावती)

लजावंती—वि स्त्री—१ लज्जाशील, शर्मीली ।

२ देखो 'लजाळू'

रू. भे.—लाजवती, लाजवती

रू. भे.—लाजवत

लजावण, लजावणौ—देखो 'लजाणौ' (रू भे.)

लजावणौ, लजावबौ—१ देखो 'लजाणौ, लजाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हातां री सुकमारता जाणै कमळ नाळ । जिका हालती लजावै हस री गत नूं । र. हमीर

उ०—२ हइ रे जीव निळज्ज तूं निकस्यू जात न तोहि । प्रिय विछुडत निकस्यऊ नही, रह्यउ **लजावण** मोहि ।
—ढो. मा.

२ देखो 'लाजणौ, लाजबौ' (रू. भे.)

लजावणहार, हारौ (हारी), लजावणियौ—वि ।
लजाविग्रोडौ, लजावियोड़ौ, लजाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।
लजावीजणौ, लजावीजबौ—कर्म वा. ।

लजावियोड़ौ—देखो 'लजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लजावियोड़ी)

लजियोड़ौ—देखो 'लाजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लजियोड़ी)

लजीज–वि. [अ.] बढ़िया स्वाद वाला, स्वादिष्ट।

लजीलौ–वि.— (स्त्री. लजीली) १ लज्जावाला, शर्मिला।

उ०—१ रंग **लजीलां** लोयणां, वाह छिबि गुंघट ओट। रुकै न झीणा चीर मैं, चखू तिरछी चोट। —पना

उ०—२ स्वास्ति स्री 'चंद्रगढ' सुभ स्थान अनेक ओपमा लाइक व्राजमान प्यारी सजीली **लजीली** फवीली छबीली नसीली रसीली चकीली ककीली अंगीली रंगीली बंकीली······।— र. हमीर

लज्ज—देखो 'लाज' (रू. भे.)

ऊ०—१ किणि गळि घालूं घूघरा, किणि मुख वाहू **लज्ज**। कवण भलेरउ करहलउ, मूंध मिळावइ अज्ज। —ढो. मा.

उ०—२ सकती बांधै वीटूळी, ढीली मेल्हे **लज्ज**। सरढी पेट न लेटियउ, मूंध न मेळउ अज्ज। —ढो. मा.

उ०—३ चंदहरा बिय चंद सम, दुंद वधारण कज्ज। वाधे दिन दिन साम छळ, आराधै कुळ **लज्ज**। —रा. रू.

उ०—४ चुतरौ फतमल बोलिया, सकतीपुरा सकज्ज। **लज्ज** न धारै सांम छळ, त्या रजवट्ट न लज्ज। —रा. रू.

लज्जणौ, लज्जबौ—देखो 'लाजणौ, लाजबौ' (रू. भे.)

उ०—भीम कहै भूलू नहीं, खेलैबौ खत्र-घोड। मो भग्गै सीसोद हर, गढ **लज्जै** चीतोड। —गु. रू. बं.

लज्जत–सं. स्त्री. [अ] १ खाने-पीने की वस्तुओं का स्वाद, जायका।
२ आनन्द।

लज्जतदार–वि. [अ. लज्जत+फा. दार] १ जिसमे लज्जत हो, लज्जत वाला, जायकेदार।
२ आनन्ददायक।

लज्जा—१ चोबीस गुरु ६ लघु का एक मात्रिक छन्द (गाथा)
२ देखो 'लाज' (रू. भे.)

उ०—१ बाह चंदन सुगम सेव्यइ, भाव संचारिक वधइ। तेत्रीस ध्रति मति स्मरण **लज्जा**, सोक निद्रादिक सधइ। —वि. कु.

उ०—२ अर अलपधन भुजग नायक रै समान **लज्जा** पाय प्रामार रौ समुह नाक रूप विदेश मैं थियौ जूवौ। —वं भा.

पर्याय—व्रीडा, त्रपा, सकुचण, संकोच।

लज्जाड़णौ, लज्जाड़बौ—देखो 'लजाणौ, लजाबौ' (रू. भे.)

लज्जाड़ियोड़ौ—देखो 'लजायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लज्जाड़ियोडी)

लज्जाणौ, लज्जाबौ—१ देखो 'लजाणौ, लजाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लाजणौ, लाजबौ' (रू. भे.)

लज्जाणहार, हारौ (हारी), लज्जाणियौ—वि०।

लज्जायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लज्जाईजणौ, लज्जाईजबौ—कर्म वा०।

लज्जायोड़ौ—देखो 'लजायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लज्जायोड़ी)

लज्जाप्रद–वि. [सं.] जिससे लज्जा उत्पन्न हो, लज्जाजनक।

लज्जाळु, लज्जाळू—देखो 'लजाळू' (रू. भे.)

लज्जावंत–वि. [स. लज्जा+वत्] (स्त्री. लज्जावती) १ लज्जा वाला, शर्मिला।

उ०—**लज्जावंत** नरिद कहै बाई! सुणौ म्हारा लाल। —श्रीपाल रास

रू. भे.—लजावत

लज्जावणौ, लज्जावबौ—१ देखो 'लजाणौ, लजाबौ' (रू. भे.)

उ०—निज सीस नमै जळ निग्गमे, पुणी रीस वीआपरौ। लघु तूळ हुए **लज्जावियौ**, नाम सिंघ सादूल रौ। —गु. रू. बं.
२ देखो 'लाजणौ लाजबौ' (रू. भे.)

लज्जावणहार, हारौ (हारी), लज्जावणियौ—वि०।

लज्जाविओड़ौ, लज्जावियोड़ौ, लज्जाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लज्जावीजणौ, लज्जावीजबौ—कर्म वा०।

लज्जावती–वि.—लज्जाशील, शर्मीली।

लज्जावांन–वि.—लज्जा वाला, शर्मदार।

लज्जावियोड़ौ—देखो 'लजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लज्जावियोड़ी)

लज्जासील–वि.—लज्जा वाला, शर्मीला।

लज्जू–वि.—लज्जा वाला, इज्जतवाला।

लज्ज्या, लज्या—देखो 'लाज' (रू. भे.)

उ०—१ सिधि गुलिक वेग पर सक्ति पाव। धजराज मुकट खग-राज धाव। वसि लोह बदन रसि सरस वेख। **लज्ज्या** अजाद किरि महण लेख। —रा. रू.

उ०—२ इण विध 'रतनां' लाज में लवलीन होय नै वचन साथ-णियां हू कहै है, बाभी मनै झंझोडौ मत महारौ सैज **लज्ज्या** छाडण रौ दुख सहै है। —र. हमीर

लझिका–सं. स्त्री.—१ वैश्या, गनिका। (अ. भा.)
२ विपरीत लक्षणा से निर्लज्ज।

लट–सं. स्त्री. [सं. लट्वा] १ नीचे लटकता हुआ सिर के कुछ बालों का समूह, अलक, जुल्फ।

उ०—साकडै मारगियै सरमाय, घूंघटै ओळूंडी अटकाय। गई धण सरवरिये री तीर, झुकी झट काळी **लट** छिटकाय। —सांझ.
२ सिर के उलझे हुए बालो का गुच्छा।

३ रेंगने वाला एक लम्बा कीडा।

उ०—टीडी रौ मुदाम जतन चिडकोल्या चोळौ। लटां-सूट रैवास, घास- फूसा रौ झोळौ। —दस देव

वि.—१ दुर्बल काय, कृशकाय।

२ देखो 'लठ' (रू. भे.)

३ देखो 'लट्टौ' (मह रू. भे) (अ मा)

रू. भे.—लटी, लट्ट।

लटक, लटकउ—स. पु —१ लटकने की क्रिया या भाव, झुकाव।

२ शरीर के अगों की लुभावनी गति या चेष्टा।

३ बात करते या गाते समय दीखने वाले अगो की कोमल भाव-भगिमा।

अल्पा.,—लटकौ

लटकजुहार—स. स्त्री —अभिवादन, प्रणाम।

उ०—वाडै तौ पडियौ जाया गाडूलौ, खूटचा धोळा रा जोत। वीरौ तौ आयौ सैया काकडै, गोरीडा सू लटकजुहार।

—लो. गी.

लटकण—स. पु —१ लटकने की क्रिया या भाव।

२ लटकती हुई वस्तु।

३ मदिर में लटकाया या किसी पशु के गले मे बाधे जाने वाले घटे के अन्दर बीच मे लटकने वाला धातु का गुटका, लगर या लोलक।

वि वि.—मि. लाळ।

४ लुभावनी चाल।

५ नाक मे पहना जाने वाला आभूषण विशेष।

उ०—१ लोयण जिणरा लागणा, पलका बिच पळकेह। **लटकण** रा मोती लिया, ढीली नथ ढळकेह। —र. हमीर

उ०—२ तिण **लटकण** रा मोती नूं झोका दीजै है, अधरां री झाई सू मूगिया रौ रग कीजै है। जो कदंच मोती री झाई अधर धरै है, तो पिण बीडी रौ चूनौ लागौ जाण पूछबा री करै है।

—र. हमीर

उ०—३ आभा झल पट अंग क चदै चीरिया, दरियाई धुज देह धरै डग धीरिया। **लटकण** झोला लेह क बेसर वकिया, भरिया भुखण भार क लचकै लकिया। —र. हमीर

६ कान में पहना जाने वाला आभूषण जो लटकता रहता है।

७ सिंदूर पुष्पी नामक क्षुप विशेष।

रू. भे.—लटकन।

लटकणौ, लटकबौ—क्रि. अ. [स. लडन] १ किसी पदार्थ या व्यक्ति का ऐसी अवस्था में होना कि उसका एक सिरा ऊपर लगा या अटका हुआ हो तथा दूसरा अधर मे झूलता हो।

उ०—ज्यारा लटकदार लपेटा पर छोगा **लटक** रह्या है, अलबलिया आटा मे अगानैणिया रा चीत अटक रह्या है। तुररा रा तार पळकै है, पाघा रा लटपटिया पेच खवा पर **लटकै** है।

—र. हमीर

२ झुकना।

उ०—१ परम गुरू के सरणै जाऊं, करू प्रणाम सिर **लटकी**। जेठ बहू की काण न मानूं, पड़ो धूघट पर पटकी। —मीरा

उ०—२ नीची धूण करिया दोनूं जणा रथ सू हेटै उतरिया तौ वारै काना डोकरी री आवाज सुणीजी—आज दोना रा माथा **लटकियोड़ा** कीकर है। —फुलवाडी

३ किसी बात या विषय मे निर्णय या अभीष्ट सिद्धि के अभाव मे दुविधा मे पडना।

४ वचित होना।

लटकणहार, हारौ (हारी), **लटकणियौ**—वि०।

लटकिओडौ, लटकियोड़ौ, लटक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लटकीजणौ, लटकीजबौ—भाव वा०।

लटक्कणौ, लटक्कबौ—रू० भे०।

लटकदार—वि.—१ लटक युक्त, लटकपूर्ण।

उ०—ज्यारा **लटकदार** लपेटा पर छोगा लटक रह्या है, अलबलिया आटा मे अगनैणिया रा चीत अटक रह्या है। —र. हमीर

वि. वि.—देखो 'लटक'

लटकन—देखो 'लटकण' (रू भे.)

लटकाड़णौ, लटकाड़बौ—देखो 'लटकाणौ, लटकाबौ (रू. भे)

लटकाड़णहार, हारौ (हारी), **लटकाड़णियौ**—वि०।

लटकाड़िओड़ौ, **लटकाडियोडौ, लटकाड़्योड़ौ**—भू० का० कृ०।

लटकाड़ीजणौ, **लटकाडीजबौ**—कर्म वा०।

लटकाड़ियोड़ौ—देखो 'लटकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. लटकाडियोडी)

लटकाणौ, लटकाबौ—क्रि स.—१ किसी वस्तु या व्यक्ति को ऐसी स्थिति मे करना कि उसका एक छोर ऊपर किसी से लगा (टंगा) हो और अधर झूलता हो, झुलाना, टांगना।

उ०— किरचा फाक्यांरी कोथली, बीड़ी-सिगरेटां री डबी अर वेटरी, वाजारी पेटी रासभियां रै पेटां माथै **लटकायां** खोड़ में विसायत खानौ सौ विसाया फिरै है। —दसदोख

२ झुकाना।

३ किसी कार्य के पूर्ण करने मे विलम्ब कराना, इंतजार कराना।

४ वचित रखना।

लटकाणहार, हारौ (हारी), **लटकाणियौ**—वि०।

लटकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लटकाईजणौ, लटकाईजबौ – कर्म वा० ।

लटकाड़णौ, लटकाड़बौ, लटकावणौ, लटकावबौ—रू० भे० ।

लटकायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ किसी वस्तु या व्यक्ति को ऐसी स्थिति मे किया हुआ कि उसका एक छोर तो कही लगा (टंगा) हो और दूसरा नीचे की ओर अधर झूलता हो, झुलाया हुआ, टागा हुआ. २ झुकाया हुआ ३ किसी कार्य के पूर्ण करने मे देर किया हुआ. ४ वंचित रखा हुआ
(स्त्री. लटकायोडी)

लटकाळु लटकाळू, लटकाळौ, लटकालौ–वि. (स्त्री. लटकाळी, लटकाली) १ लटकता हुआ, लटकने वाला ।
उ०—वैगव बीजणिया बंधण निगताळू लट्‌टे धोतां रा खूजा **लटकाळू** । राती कानी री पोतडिया रूडी, ऊनी लोवडिया बगला में ऊडी । —ऊ का.
२ सुन्दर
उ०—१ बांह बिहू **लटकाळी** अति ओपै लूब झुबाली हो । रूडी नै रलियाली, हीणी कर चंपक डाली हो । —वि. कु.
उ०—२ भलौ वण्यौ मुखडा नउ मटकौ, आंखड़ली अणियाली । **लटकालौ** साहिब देखी नई, तौ सु लागी ताली रे —वि. कु

लटकावणौ, लटकावबौ—देखो 'लटकाणौ, लटकाबौ' (रू. भे)

लटकावणहार, हारौ (हारी), लटकावणियौ – वि० ।

लटकाविओड़ौ, लटकावियोड़ौ, लटकाव्योड़ौ— भू० का० कृ० ।

लटकावीजणौ, लटकावीजबौ—कर्म वा० ।

लटकावियोड़ौ- देखो 'लटकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लटकावियोड़ी)

लटकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कोई पदार्थ या व्यक्ति ऐसी अवस्था में हुवा हुआ कि उसका एक सिरा ऊपर लगा (टंगा) हो तथा दूसरा अधर में भूलता हो. २ झुका हुआ. ३ किसी बात या विषय में, निर्णय या अभीष्ट सिद्धि के अभाव में दुविधा में पड़ा हुआ. ४ परीक्षा में असफल हुवा हुआ. ५ वंचित हुवा हुआ ।
(स्त्री. लटकियोड़ी)

लटकीलौ–वि. (स्त्री. लटकीली) १ वह जिसकी चाल में लटक हो, नखरे वाला ।
२ सुन्दर, मनोहर ।

लटकौ–सं. पु —१ गति या चाल मे पाई जाने वाली स्वाभाविक लचक ।
२ झुकने की क्रिया या भाव, सलाम, अभिवादन ।
उ०—१ खिजमतदार दोइ च्यार पासै छै । जाहरां ईयौ दीठौ राजा ऊभौ, ताहरा आडनै **लटकौ** कियौ । —स्यांमसुंदर री वात
उ०— २ एतलै हाट रौ धणी आयौ । पेडी ने नमस्कार करी थोड़ौ **लटकौ** साधां नेई कियौ । —भि. द्र.
उ०—३ अकबर गरव न आण, हीदू सह चाकर हुवा । दीठौ कोई दीवांण, करतौ **लटका** कटहडै । —दुरसौ आढौ
क्रि. प्र.—करणौ
३ अंगों के संचालन द्वारा किया गया संकेत या अभिव्यक्ति ।
उ०—१ डोकरी घाटी रा **लटका** करनै नाई री कूंटिया काढती बोली—मानो, था लोगा री मरजी आवै ज्यूं अेक दूजा री बात मानौ । —फुलवाडी
उ०—२ जठै कर नीकळै जठै कर ही लोग हाथ जोड-जोड अर र म-रांम करै । कई राम-रांम रै सागै, काका, बाबा रौ संबोधन ही लगावै । मालाराम ही पाछौ उथलौ संबोधन लगा'र देवै । केवै राम-राम भाई । नस रै **लटकै** रौ ठाट-बाट घणौ सुवावणौ लागै । —दसदोख
४ नखरा, चोंचला ।
उ०—१ पटको दै दोढौ पलौ, अटकौ चित उळझाय । करि **लटकौ** आवै कनै, झटकौ सो वहि जाय । —र. हमीर
उ०—२ करि **लटकौ** ऊभी कनै, आ छंदगारी आय । केसर नीरै खरक नै, कहौ चर जांणै काय । —र. हमीर
५ बात चीत में पाया जाने वाला स्वरों का विशेष उतार-चढाव ।
ज्यूं– बात रौ लटकौ ई न्यारौ है ।
६ हल्की नींद, झपकी ।
उ०—१ चौकी उठाय पड़ी पिलग पर पड़ती नै **लटकौ** आयौ मेरा स्यांम, लटकौ आयौ जी लटकौ आयौ जी स्याम जगायी क्यू नी जी लटकौ आयौ । —लो. गी.
उ०—२ दासी न झेलै जंवाई म्हारौ बांदी न झेलै । बे तौ झेलै जी बाई राजकवार रौ **लटकौ** आवतौ जी । —लो. गी.
८ केलि, क्रीड़ा ।
उ० - ए यौवन ना दिन च्यार, **लटकौ** छै इण संसार, कालातर नि भलीवार । —वि. कु
९ संगीत की ध्वनि से शरीरागों पर होने वाली प्रतिक्रिया ।
१० मंत्र-तंत्र या चिकत्सा आदि के क्षेत्र में कोई ऐसी युक्ति जिससे शीघ्र अभीष्ट सिद्धि होती हो ।
११ ऐसा अस्फुट गायन जिसको सुनकर चित्त प्रसन्न होता हो ।
१२ देखो **'लटक'** (अल्पा., रू. भे.)

लटक्कणौ, लटक्कबौ—देखो 'लटकणौ, लटकबौ' (रू. भे.)
उ०—१ ससक्कै नगार बंध **लटक्कै** नाग रा सीस, आग रा अंगार तोपां भटक्कै अवाज । राखियौ खगार दूजा खाग रा पांण सूं रध्रू,

राण वाळौ वाधरा मगार जेम राज ।

—भीमसिंह चूंडावत रौ गीत

उ०—२ रज भाखौ किरणाळ, कमळ जहराळ **लटक्कै**। चोळ भाळ चापडै, कमघ रवदाळ कटक्कै । —सू. प्र.

उ०—३ **लटक्कय** सीस भटक्कय लाग, ग्रटक्कय सास भटक्कय ग्राग । भटक्कय ग्वाग ग्वटक्कय जाब, गटक्कय ग्रीवण गूद गुलाब ।

—पे. रू.

लटक्कणहार, हारौ (हारी), लटक्कणियौ—वि० ।

लटक्किग्रोड़ौ, लटक्कियोड़ौ, लटक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लटक्कीजणौ, लटक्कीजबौ—भाव वा० ।

लटक्कियोड़ौ—देखो 'लटकियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लटक्कियोड़ी)

लटणौ, लटबौ—क्रि अ.—१ दबना, झुकना ।

उ०—इता हालिया थाट ते भार ग्रागा, **लटै** सेमरा सीस कामठि लागा । छछोहा कपी घूमरा एम छूटा, फबै जाण कोटेक सामद्र फूटा । - सू प्र

२ शीथिल या क्षीण होना ।

उ०—मादूळौ किण ही समैं, **लटिरौ** लाधणियौह । तौ पिण नह खावण तकै, हूतळ पर हणियौह । —बा दा.

लटपट, लटपटाट—स स्त्री —१ खुशामदखोरी, लल्लो-चप्पो की बाते ।

उ०—दाम्र ग्ररोहड माड मत, **लटपट** करके लाय । बडी बडाई वाणिया, धन लेणौ धीजाय । —बा. दा.

३ हिलने डुलने की क्रिया

उ०—ग्रेकर विसूदरा री पूछ वाढी तौ वा निरी ताळ ग्रागणा मे **लटपट-लटपट** करती री' । —फुलवाड़ी

४ ग्राकर्षक या मनोहर (चाल) ।

उ०— ठाकर री **लटपट** चाल सू लोग उणा नै ग्राघा सूं ईज ग्रोळख लेवता ग्रर मिळता ईज कैवता—जै माताजी री ठाकरा ।

—रातवासौ

५ चलने से उत्पन्न ध्वनि या ग्रावाज ।

उ०— इतरौ सुणता इज दो एक बीकण छोरा तौ हिरण्या रै ज्यू कान ऊचा करनै पड भागा । ग्रर लारली नागी-तडग पगरण पण **लटपट**-लटपट करती 'वाडै वूटी थारा कान' । जाणैं चिडिया में ढळ पड़चौ । —ग्रमरचूंनडी

क्रि वि —शीघ्र, जल्दी ।

उ०—भटपट छोड जगत का कांमा, **लटपट** चरणां लागौ । सिर पर तीर लाधिया चावौ, तौ कर सतगुरु जीरौ सागौ ।

—ग्रनुभववाणी

लटपटाणौ, लटपटाबौ—क्रि. ग्र.—१ तडफना, छटपटाना ।

२ खुशामद करना ।

३ ग्रनुरक्त होना, लुभाना ।

लटपटाणहार, हारौ (हारी), लटपटाणियौ—वि० ।

लटपटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लटपटाईजणौ, लटपटाईजबौ—भाव वा० ।

लटपटायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ छटपटाया हुग्रा, तडफडाया हुग्रा. २ खुशामद किया हुग्रा. ३ ग्रनुरक्त हुवा हुग्रा, लुभाया हुग्रा ।

(स्त्री. लटपटायोड़ी)

लटपटियौ—देखो 'लटपटौ' (ग्रल्पा , रू भे.)

उ०—१ **लटपटिया** पेचा मे उळभिया थका । मोतिया री लडा रा पेच उघडि रह्या है । —पनां

उ०—२ तुर्रा रा तार पळकै है. पाघा रा **लटपटिया** पेच खवा पर लटकै है। —र. हमीर

उ०—३ सईया कुण छै, ग्रै लागै छै ग्रमीर । किण उळगांणी रा भवर जी । **लटपटिया** सिर पेच पाग रा, भूंह कबाण-सी ताणी रा निमांणी रा । —रसीलै राज रा गीत

लटपटौ—वि.—बेढंगा, ग्रटपटा, ग्रस्तव्यस्त ।

उ०—**लटपटा** पेच सिर कठ मोती लडा, खटपटा मिजाजी पांन खावै । पगा कंचन पहर दिखावै पटपटा, जुध बगत भटपटा भाग जावै । —उदैभाण बारहठ

२ खुशामदी ।

३ जो लेई की तरह गाढा हो ।

ग्रल्पा.,— लटपटियौ

लटवा—सं. स्त्री.—खुशामद, चाटुकारिता ।

उ०—एक करै नूई बीनणी रा कोड, दूजी करै ग्राख ग्रदीठ वूढौ भौड । पैलड़ौ **लटवा** करै-हाथ जोड़े । बीजी यूं सुजावै, माथौ फोडै । —दसदोख

लटांचट्टां—वि.—गुत्थमगुत्था ।

उ०—काळ हुकमि जिम काळ रा, किकर कहरारै । होय **लटांचट्टां** हिचै, विकटा वाकारै । —सू. प्र.

रू भे —लट्टाचट्टा ।

लटांण—सं. स्त्री.—१ सामान रखने के लिए कमरे मे छत से कुछ नीचे दीवार मे लगाया जाने वाला लम्बा पत्थर या काठ ।

लटा—स पु (ब. व.)—बाल ।

उ०—ऊमटी घटा, बादला होइ एकठा, पड़ई छटा, भाजइ भटा भीजइ **लटा** । —रा. सा. स.

लटापट—स. स्त्री.—१ बंधन की क्रिया या भाव, बंधन के ऊपर ग्राने वाला बंधन ।

वि.—दृढ, मजबूत (बंधन)

उ०—म्हारै आगण खूंटो कैर को, जै कै रेसम डोर बटाय-रसिया मैं तौ ढीली बाधू सायबौ, कस कर नणदोई जी रा हाथ-रसिया मै तौ बिच-बिच बाई जी रा हाथ-रसिया मै तौ ज्यूं ज्यूं हलावू डोर नैं, बै तो तीनूं लटापट होय-रसिया. । —लो. गी

लटापटी-स. स्त्री,—खुशामद ।

लटापुरी—२ देखो 'लटापोरी' (रू भे.)

उ०—आव जका तरवार देऊ अब, सगा मती मन माहै साक । **लटापुरी** घणी कर लीधी, पीर जळ धर हुता पाक । —गोगादेजी री गीत

लटापोट—देखो 'लोटपोट' (रू. भे.)

लटापोरी-स. स्त्री.—खुशामद, मनुहार, आग्रह ।

उ०—१ नाई **लटापोरियां** करनै घणी ई माफी मागी । पछै डोकरी रै साम्ही देखनै कह्यौ—अबै देखौ काई हौ । अदाता स्रीमुख सू फरमाय दियौ, मागणौ व्है जकौ माग लीजो । —फुलवाडी

उ०—२ नानी थोरा अर **लटापोरियां** कर करनै काई व्हैगी, पण बादळ नी तौ कलैवो करचौ, नीं रोटी खाई अर नीं रात रा व्याळू करचौ । —फुलवाड़ी

रू. भे. लटापुरी ।

लटारां-सं. पु. (ब. व.) बालों या केशों की लटी ।

उ०—परदेस में वोपार करै खुल्ली लांग री धोती पैरै । केसरिया पाघ बांधे । चौडा वाटको सो मूडौ, छीदी **लटारां** सी दाढी, मोती सा दात अर ऊजळो सभाव । —दसदोख

लटारौ-सं. पु —किसान की कृषि उपज में से निश्चित भाग या हिस्सा लेने वाला व्यक्ति

उ०—हाकम लटारा रे, विणजारा सोदारा रे । पटवारी कूंतारा रे, सैंणा भोमिया रे । —जयवांणी

लटाळी-सं. स्त्री —बालो युक्त ।

उ०—कसता विजैमंड कोदड कधा, बणावै व्रथा वैर जै जेरबधा । सटा याळ जाळी **लटाळी** सुहावै, प्रिया नागवाळी लखै दाग पावै । —व. भा

लटिग्राळ—देखो 'लटियाळ' (रू भे.)

लटिया-सं. पु. (ब. व.) सिर के उलझे हुए बालों का गुच्छा ।

उ०—रीस तौ इसी आवै है कै रांड रा **लटिया** तोड़ने नाख दू । —अमर चूनड़ी

लटिग्राळी, लटियाळ, लटियाळिय-सं. पु.—१ भैरव का एक नाम ।

उ०—लिया पत्र पेज भणौं **लटियाळ**, घणों तप तेज खमा घटियाळै । दुवै बळ चचल पाण दराज, हुवै कुरबाण कवी हिंगळाज । —मे. म.

२ पुष्प, फूल ।

३ बडी अयाल वाला (घोडा)

उ०—वडा खळ वेधत साबळ वाह, लिये **लटियाळ** तुरी कपी लाह । जुडे धज सेल पडे जवनेस, दखै रवि ताम, झोका 'मुकदेस' । —सू प्र.

स स्त्री —४ एक देवी का नाम ।

उ०—१ महमाया तुही चांमडमाय, डीढवत आरभै सू सीहाय । लटियाळ तुही लख वीरद लैण, वाचाइ घूंघी साच वैण । —रामदान लाळस

उ०—२ क्रमनार गताम वरात करी, फिर आडिय देवळ आन फरी । **लटियाळिय** जोगण साथ लियां, ककआळण रूप विरूप किया । —पा. प्र.

५ एक प्रकार की भाग ।

उ०—१ लिका किण भात री भांग सुध काका पुरणि वासिग नाग माथै री नीपनी सिंघ री गुफा माहै नीपनी, थोहर रै बीडै री, भाखर रै खुडै री, सूग्रै री पांख, परडरी आंख, रोज मारि, ग्रिध मारि, **लटिग्राळी** बापरी खाधी बैटै ना आवै । —रा. सा. स.

वि —१ जटाधारी, जटावाला ।

रू. भे.— लटिग्राळ, लटयाळिय, लरियाळ

लटियाळौ-वि.—जटाधारी, जटा वाला ।

स पु.—भैरव

लटी-स. स्त्री —१ झूठी बात, गप्प ।

२ वैश्या ।

३ साधु स्त्री ।

४ केश या डोरों आदि का उलझा हुआ लम्बाकार गुच्छा ।

उ०—काळी अगवांणी करी, गोरौ जै री गेल । घमकै कटियां घूघरा **लटियां** तेल फुलेल । जी मेहाई थांरा बाईसा री करीजै उबेल । —मे. म.

५ घोडे के गर्दन के बाल, घोडे की अयाल ।

उ०—ताहरा सिखरै बिछेरी पकड़ी, घोड़ै कन्है आयी ताहरा सिखरै **लटी** पकड़नै चढि गयौ ग्रौर बिछेरी दोडी । —उदै उगमणावत री बात

बि.—१ बलवान, जबरदस्त ।

२ देखो 'लट' (रू. भे.)

लटूमणौ, लटूंमबौ-क्रि. अ.—१ किसी वस्तु का मामूली आश्रय लेकर टिकाव करना या लटकना ।

ज्यूं—**गाडी लारै लटूमणौ** ।

२ किसी वस्तु का एक सिरा दूसरे से लगाकर अधर लटकना ।

३ स्नेह से गले में बाह डालकर लटकना या झूमना।

उ०—मासी सू कम काली भाणजी ई नी ही। वा तौ ऊभी ऊभी ही अबूझ टाबर री गळाई मासी रै गळै लटूंम उणारा हाथळ चूगण लागगी। —फुलवाडी

लटूंमणहार, हारौ (हारी), लटूंमणियौ—वि०।

लटूमिओड़ौ, लटूंमियोडौ, लटूंम्योडौ—भू० का० कृ०।

लटूमीजणौ, लटूंमीजबौ—भाव वा०।

लटूंमियोडौ-भू. का. कृ.—१ किसी वस्तु का मामूली आश्रय लेकर टिकाव किया हुआ या लटकाया हुआ २ किसी वस्तु का एक सिरा दूसरे से लगाकर अधर लटका हुआ. ३ स्नेह से गले में बाह डालकर लटका हुआ या झूमा हुआ।
(स्त्री. लटूमियोडी)

लट्ट—देखो 'लट्टू' (रू. भे.)

लट्ट -१ देखो 'लट' (रू. भे)

उ०—१ पट्टा उतारै पेट री लट्टां मारै अर चालतौ कातीसरौ धाप-धाप'र करै है। —दसदोख

उ०—२ रोटी फलका दही मिडका, रोट बाटिया घूनियौ। फोगलासू सूकी लकड्या, लट्टां कातै सूतियौ। —दसदेव

२ देखो 'लट्टौ' (मह, रू भे)

लट्टांचट्टां—देखो 'लटाचट्टा' (रू. भे)

उ०—कुर पंडव जीहा अमर, कल रक्खण कथ्था। लट्टांचट्टां लूंबिया बेदल भर बथ्था। —लूणाकरण कवियौ

लट्टू-सं. पु.—१ लकडी का गोलाकार एक खिलौना, जिसमे लगी कील पर डोरी लपेट कर उसे घुमाया जाता है।

२ मोहित, फिदा।

उ०—१ टेढा न हुजै जगी टट्टू ललचायै मत थाए लट्टू। पडित मूरख कीजै परिखा, सगला नै मत कहिजै सरखा।
—घ व. ग्रं.

उ०—२ निजर नाखी भोमी ताकी पण किसनजी कमरै रै रंग-ढंग सू ढीलौ, लट्टू हुयग्यौ। —दसदोख

क्रि प्र.—व्हैणौ, करणौ

रू. भे.—लट्ट

लट्टौ-सं. पु.—१ कुत्ता, स्वान। (डि. को.)

रू. भे.—लट्ठौ

मह —लट्, लट्ट

लट्ठ—देखो 'लठ' (रू. भे.)

उ०—१ वसून बुद्धि वैत नीज मांन पांन है जमां। घुमाय लट्ठ अठ्ठ जांम हौं फिरौ घमां घमां। —ऊ. का.

उ०—२ वाधिया नै नीचै आगणां मे सुवाय नै एक मजबूत लट्ठ उणनै सूत दियौ अर म्हू ई एक मोटी छूरी अर एक डंडौ सिरांणै ले'र ऊपर मोयग्यौ। —रातवासौ

लट्ठबाज-वि —लाठी से लडने वाला, लठैत।

रू. भे.—लठबाज, लाठीबाज।

लट्ठबाजी-स. स्त्री.—लकडी से होने वाली लडाई।

रू. भे.—लठबाजी।

लट्ठभारती-वि.—१ लकडी चलाने मे दक्ष।

२ उद्दंड, उत्पाती।

रू. भे.—लठभारती।

लट्ठमार-वि.—१ उद्दंड व्यक्ति।

२ (कथन या बात) जिसमें विनय, नम्रता एव सौजन्य का पूर्ण अभाव हो।

रू. भे —लठमार।

लट्ठी—देखो 'लाठी' (रू. भे)

उ०—पटाळा हठाळा महागात पूरा, सूरगा सगाहा सकोपा सनूरां। सलीना कन्है भैकवै प्राण साहै, लियां हाथ लट्ठी समा सेन ठाहै।
—रा. रू.

लट्ठौ-स. पु —१ लकडी का बहुत बडा, मोटा खड, शहतीर।

रू. भे.—लाठौ

२ मोटा कपडा विशेष।

उ०—मटिया आटाळौ पोतियौ, काटा छाप लट्ठा रौ धोतियौ अर जाळोर रै टुकडी री अगरखी ठाकर री बारौमास री पोसाक ही।
—रातवासौ

३ भेड़िया। (शेखावाटी)

४ देखो 'लट्टौ' (रू. भे.)

रू. भे.—लठ्ठौ।

लट्याळिय—देखो 'लटियाळ' (रू. भे)

लठ-वि.—१ हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ठ।

२ मजबूत, जबरदस्त।

३ मूर्ख, बेवकूफ।

स. पु—१ छकडा।

उ०—कमाळा लदै सब्ब त्या द्रब्ब कोडी, सकट्टा लठां भार ज्यों टांस जोड़ी। विभारभ आचभ राठौड़बाळा, महि छेलिवा ऊमडै मेघमाळा। —रा. रू.

२ भेडिया (शेखावाटी)

३ लाठी।

रू. भे.—लट, लट्ठ

लठबाज—देखो 'लट्ठबाज' (रू. भे)

लठभारती—देखो 'लट्ठभारती'

लठमार—देखो 'लट्ठमार' (रू. भे.)

उ०—मरदा कोय वाग झले मुरडौ, अस चालव 'पाल' कियौ उरडौ। ठह वात अमा फिर आय ठगै, **लठमार** प्रधानांय सीस लगै।
—पा. प्र

लठावन-वि —लट्ठ बाज, लकडी चलाने वाला।

उ०—आग झडहड़ै डूडै रमै रण आगणौं, नाग फण नमै करै रारात्र नागा। कठा लग कवादी व्यह रचना करै, **लठावन** तणा भड लड़न लागा। —कविराजा बांकीदास

लठीझल—देखो 'लाठीझल' (रू. भे.)

लठैत-स पु.—लकड़ी चलाने वाला व्यक्ति, लट्ठधारी।

लट्ठौ-सं पु. १ मकान की छत मे लगाया जाने वाला भारी लम्बा पत्थर-पाट, भारोट या काठ का शहतीर।

२ देखो 'लट्ठौ' (रू भे.)

उ०—आंगणां में सीयोड़ी बोरचा रौ तिरपाळ बिछयोड़ौ हो, छात माथै लाबी **लट्ठै** री धोती ताण्योडी ही। --दसदोख

लडंग—देखो 'लडग' (रू भे.)

लडणौ, लडबौ-क्रि. अ.—१ प्यार किया जाना, दुलार किया जाना।

उ०—१ वच्छैः सासुरा तणी इसी स्थिति जांणवी, सुसरउ उवेखइ, जेठ नीचउ देखइ, वर पुण **लडइ**, देवर नडइ, जेठांणी कुसइ, देअराणी हसइ, नणंद नखरावइ, सासू कांम करावइ।
—व स.

२ देखो 'लडणौ, लड़बौ' (रू. भे.)

लडणहार, हारौ (हारी), **लडणियौ**—वि०।

लडिओड़ौ, **लाडयोड़ौ**, **लडयोड़ौ**-- भू० का० कृ०।

लडीजणौ, लडीजबौ—भाव वा०।

लडत्थड-वि.—झूमता हुआ।

उ०—वडव्वड वीजळ धार वहंत, **लडत्थड** सकर सीस लहंत। झड़ज्झड ओझड आवध झट्ट, लडल्लड लागै लोह सुभट्ट। खडक्खड खडा खाट खडत, धडध्धड हूंता धूंह पडत। —गु. रू बं.

लडथट—लडने वालों का समुह।

उ०—धू नाचै भड धड फीफड, लोडे **लडथट** लौहि लडै। बीयै दळ वड चढ हुई हड-वड, जोवै घड तड अनड अडै।—गु. रू. ब.

लडथडणौ, लडथडबौ—देखो 'लडथडणौ, लडथड़बौ' (रू. भे.)

उ०—सिधुरां गरां साथरा सूर, पै करां थरां सधरा पूर। लौहडा लडा **लडथड़ां** लोट बेहडां धडा मरगडा बोट। —गु. रू. ब.

लडथडियोड़ौ—देखो 'लडथड़ियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लडथडियोड़ी)

लडल्लड-स. स्त्री.—शस्त्र प्रहार की ध्वनि।

उ०—वडव्वड वीजळ धार वहंत, लडत्थड संकर सीस लहंत। झडज्झड ओझड आवध झट्ट, **लडल्लड** लागै लोह सुभट्ट।
—गु रू. ब.

रू भे.—लडालड।

लडवडणौ, लडवडबौ-क्रि. अ.—लटकना।

उ०—कोट गळी वाकी नळी, पिंजर नयन विसात। लाळ पडै होठ **लडवडै**, इसौ वणायौ गात। - श्रीपाल रास

लडवडियोडौ-भू का कृ लटका हुआ।

(स्त्री. लडवडियोडी)

लडसडणौ, लडसडबौ-क्रि. अ.- झूमते हुए या मस्ती में चलना।

उ०—१ लडहियतणी **लडसडतीय**, घडतीय नाव रसाल। नेहगहिल्लय हियडुला, प्रियडुला जंपइ बाल। —मेरुनंदन

उ० -२ तदनतर लाडता **लडसडता** इसा पुण्यवत, लीला कामदेव जिसा, आरोगिवा बइठा। तदनतरु त्राट वाटा वाटी कचोला कचलोलवटी सीप सूनवटी प्रगुणी हुई। तदनतरु लडहीअं, **लडसडतीयं**, लीलावतीअं सुवरणमय करवइ बरवतीअ, खलकतइ, चूडइ, झलकतै ककणि, ढलकतइ सीथ, सीति गंधोदकि हस्तोदकु दीधा।
—व स.

लडहि—वि. [स लटभ] सुन्दर।

उ०—१ पेखवि वरु आवतु सहिय, राजल इम जपइ, लोयण धुव तु करि न देवि, वरु आवइ मंपइ। लाडिय **लडहिय** गउखि चडवि, पच्चक्खु अणंगौ, जोवइ प्रिय सव्वंगु चगु, मनि पावइ रगौ।
—जयसिंह सूरि

रू. भे,—लडही।

लडहियतण, लडहियतणि, लडहियतणी-सं स्त्री. [सं. लटभिकत्वन] सुन्दरता।

उ०—**लडहियतणि** लडसडतीय, घडतीय भाव रसाल। नेहगहिल्लिय हियडुला, प्रियडुला जंपइ बाल। —मेरुनदन

लडही—देखो 'लडहि' (रू. भे.)

उ०—तदनतरु त्राट वाटा वाटी कचोलां कचोलवटी सीप सूनवटी प्रगुणी हुई। तदनंतरु **लडहीअं**, लडसडतीयं, लीलावतीअं सुवरणमय करवइं बरवतीअं, खलकतइ चूडइ, झलकतै कंकणि, ढलकतइ हाथि, सीति गधोदकि हस्तोदकु दीधां। —व. स.

लडांलूंब—देखो 'लड़ालूब' (रू. भे.)

लडाई—देखो 'लड़ाई' (रू. भे.)

उ०—जोधा रिणमाल दूहूं दळ जूटा, पूरि **लडाइय** जोर पडी। पाळ हाड छूठा सिरखा, पडयालग हूऔ भारथ हेक घडी।
—गु. रू. बं.

लडाड़णौ, लडाड़बौ—देखो 'लडाणौ, लडाबौ' (रू. भे)

लडाडणहार, हारौ (हारी), लडाडणियौ—वि० ।

लडाड़िग्रोड़ौ, लडाड़ियोड़ौ, लडाड़चोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लडाडीजणौ, लडाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लडाड़ियोड़ौ—देखो 'लडायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री लडाडियोडी)

लडाणौ. लडाबौ—क्रि स –१ लाड-प्यार करना, दुलार करना ।

उ०—हित विण प्यारा सज्जणा, छळ करि छेतरियाह । पहिली लाड लडाई कइ, पाछइ परिहरियाह । —ढो मा.

उ०—२ फग्र जस हाथिया हातलेबौ फबै, जडलगा बंटे रग पतग जाडा । बनी साहा तणी घड़ा नवजोबनी, **लडाई** भली जग पलंग लाडा । —महाराजा राजसिंह रौ गीत

२ फुसलाना ।

३ देखो 'लडाणौ, लडाबौ' (रू. भे.)

लडाणहार, हारौ (हारी), **लडाणियौ**—वि० ।

लडायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लडाईजणौ, लडाईजबौ—कर्म वा० ।

लडाडणौ, लडाड़बौ, लडावणौ, लडावबौ—रू भे ।

लडायत, लडायतौ—वि. (स्त्री लडायती) प्यारा, दुलारा ।

लडायोड़ौ—भू का. कृ. १ प्यार किया हुआ, दुलार किया हुआ ।

२ फुसलाया हुआ ।

३ देखो 'लडायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लडायोडी)

लडालड—देखो 'लडल्लड' (रू. भे.)

लडालौ—वि. (स्त्री. लडाली) प्यारा, दुलारा ।

लडावणौ, लडावबौ—देखो 'लडाणौ, लडाबौ' (रू भे.)

उ०—१ लाडौ लाडी जाय **लडावण**, गत्यु ग्रोलग सारै जन हरिराम फिरै मन फीटी, ध्यान हरि का धारै ।

—ग्रनुभववाणी

उ०—२ म्हारा केम ग्रवम थारै काळै केसा सूं उजळा है, पण म्है थारा उजास नै नी पूगू । पछै थू म्हनै कित्ती ई **लडावै** तौ काई व्है । —फुलवाडी

लडाविया—सं स्त्री —घोड़ो की एक जाति विशेष ।

उ०—घोटक जाति, केहाडा, नीलडा, हरियाडा, सेसहा, हडाराहा कोहाणा, भरयणा, ताड, तुरगी, ऊघसीया, नीघसीया, डाटकीया डोटकिया, खेलविया, मल्हाविया, **लडाविया** पुलाविया, सरला, तरला, छोटकरणा, एकरणा । —व स.

लडावियोड़ौ—देखो 'लडायोड़ौ' (रू भे.)

देखो 'लडायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री लडायोडी)

लडियोडौ—भू का. कृ.—१ लाड या प्यार हुवा हुग्रा. २ लडा हुग्रा ।

(स्त्री. लडियोड़ी)

लडीड़—सं. पु. [ग्रनु.] १ शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।

२ प्रहार, चोट ।

उ०—१ पछै ग्रेक फेर **लडीड़** उणारी कडिया माथै ग्रावेस जरकायौ जकौ कुत्ता सूं तौ बोबाडौ ई नी व्हियौ ।

—फुलवाडी

उ०—२ भाबी तौ ढूकौ जकौ लडीड-**लडीड़** उणनै कूटतौ ई गियौ, मरिया पछै ई को ढबियौ नी । —फुलवाडी

लडीड़ौ देखो 'लडीड' (मह , रू. भे.)

क्रि प्र —चेपणौ, धरणौ, मेलणौ, लगाणौ ।

लडीयाळ—१ देखो 'लड'

उ०—जडियाल खंजर जमडंड जडै, बाधिवे बे वडियालसी । रडियाल रूप देखे रभा, न्हखै हीर लडीयाळसी । —पना

२ देखो 'लडीयाल' (रू. भे.)

लडूककार—स. पु [स.] लड्डू बनाने वाला ।

उ०—कांस्यकार मणिकार पूगीलताबूलिक मालिक सौत्रिक **लडूककार** काडुकिकार कणकार वैस्याकार चरमकार मल्लक खलक धान्य खलक वाटक वाटिका वापी पुष्करणी क्रीडातडाग सरोवर । —व. स.

रू. भे.—लडूयार

लडूयार—सं पु —देखो 'लडूककार' (रू. भे)

उ०—ग्रथ नगर, प्रासाद प्रतोली राजकुल देवकुल त्रिक चउक चच्चर राजमारगि गाधिकापण दोमिकापण कणहट्ट सूपकारहट्ट फोफलहट्ट ताबूलिकहट्ट माली **लडूयार** सोवरण्णिक माणिकहट्ट कसारा । —व. स.

लडैत—वि.—लाड-प्यार से इतराया हुग्रा ।

लडोकड़ौ—प्रिय, प्यारा ।

२ देखो 'लडोकड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लडोकडी)

लड्डु—स. पु —देखो 'लाड' (रू. भे.)

उ०—कहाँ जाया कहां जनमिया, कहा लडाया **लड्डु** । काहु जाणै कहीं खाड मे, जाय पडेगे हड्डु । —ग्रज्ञात

लड्डू—देखो 'लाड्डू' (रू. भे.)

लढ—क्रि. वि. —१ लोटपोट ।

उ०—खवां-खच चुडाळै हळका हाथासूं परूसती ग्रर गीता-भागवंत

रा पाठ करती थकी आखें वास री लुगाया नै ग्यान देती-रैती। धपा र दढ कर देती, लोकाचार सूं लढ कर देती —दसदोख

लढकणौ, लढकबौ–क्रि. अ.—देखो 'लुढकणौ, लुढकबौ' (रू. भे)

लढकणहार, हारौ (हारी), लढकणियौ—वि०।

लढकिग्रोड़ौ, लढकियोड़ौ, लढक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लढकीजणौ, लढकीजबौ—भाव वा०।

लढकाड़णौ, लढकाड़बौ—देखो 'लढकाणौ, लढकाबौ' (रू. भे.)

देखो 'लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे.)

लढकाड़ियोड़ौ—१ देखो 'लढकायोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लुढकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लढकाड़ियोडी)

लढकाणौ, लढकाबौ–क्रि. स.—१ लिपेटना।

उ०-- एक हाथ री आगळी में गगा-जमना हाळी बीटी अर दोनूं पगां रै अंगूठा में धरण दाटण वेगी काळा काठा डोरा **लढकायोड़ा** है। —दसदोख

देखो 'लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे.)

लढकाणहार, हारौ (हारी), लढकाणियौ—वि०।

लढकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लढकाईजणौ, लढकाईजबौ—कर्म वा०।

लढकाड़णौ, लढकाड़बौ, लढकावणौ, लढकावबौ—रू. भे.।

लढकायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ देखो 'लुढकायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लढकायोडी)

लढकावणौ, लढकावबौ—देखो 'लढकाणौ, लढकाबौ' (रू. भे.)

२ लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे)

लढकावियोड़ौ—देखो 'लढकायोड़ौ' (रू. भे.)

देखो 'लुढकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लढकावियोडी)

लढाक–सं. पु.—वह व्यक्ति जो छद्म वेष बनाकर किसी सामुहिक भोज में भोजन कर आवे।

(जयपुर)

लढार–सं. पु.—कायस्थ जाति में विवाह के छटे दिन वधू पक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिया जाने वाला बड़ा भोज। (मा. म.)

वि. वि.—यह भोज अनिवार्य नहीं है अतः समर्थ व्यक्ति ही दे पाता है।

लढौ–सं. पु.—१ बैलगाड़ी। (मेवात)

२ बैलगाड़ी में से धान आदि वस्तुओं को गिरने से बचाने के हेतु लगाया जाने वाला वस्त्र।

लणियार, लणिहार–वि.—देखो 'लैणियार' (रू. भे.)

उ०—कुण थारौ कुण थारौ ए, भाली राणी आयौ **लणिहार**। कुण कहै बहू जाव, कुण्यारै खिनाई जावौ बापकै। —लो. गी.

लणणौ, लणबौ—देखो 'लुणणौ, लुणबौ' (रू. भे.)

उ०—जिसउ गुरू तिसउ अभ्यास, जिसी दीख तिसी सीख, जिसउ आहार तिसउ निहार, जिसउ वावियइ तिसउ लवइ तिसउ कमा इयई, तिसउं प्रामीयइ। —व स.

लणीहार—देखो 'लैणिहार' (रू. भे)

उ०—ढोलाई ढोला भरयौ रै लाल करवाई करवा गुवाड इसडौ कलम को नहीं जी म्हारी लाडी को **लणीहार** सनेही डोला।

—लो. गी.

लत–सं. स्त्री. [अ. इल्लत] १ बुरी आदत, आदत।

उ०—१ लोगा पूछियौ—थोरी के बावै ? वौ आपरी **लत** परवांण बेड़ाई सू उत्तर दियौ—को बताऊंनी। —फुलवाडी

उ०—२ दिल ऊजळ नर ऊजळ लखि न ऊजळ सिर लेखीय। दौलत दौलत मिळि नि, लगी दौ'**लत** द्रिढ लेखीय। —र. ज. प्र.

२ देखो 'लात' (रू. भे.)

रू. भे.—'लत्त'

लतखोर, लतखोरौ–वि.—१ बुरी आदत वाला।

२ लात खाने वाला, नीच।

लता–स. स्त्री. [स.] १ कोमल व पतली शाखाओ वाला पौधा विशेष जो किसी आश्रय के द्वारा ऊपर की ओर चढ जाता है। या धरा-तल पर ही फैल जाता है, बेल।

उ०—१ लोक विदेसा सू घरै आवै, **लता** बिरछा रौ मिळण आळी। रसराज ग्रै छाडै छै आपानै, किसा हिया रा कंथ म्हारी आली। —रसीले राज रा गीत

उ०—२ स्रीहर परहर अवरनृ, मत संभारै अयाण। तरु छंडै लागी **लता**, पत्थर चै गळ जाण। —ह. र.

रू. भे.—लत, लत्तां, लया।

लताअंत–सं. पु. यौ. [स. लता+अंत] पुष्प, फूल।

(अ. मा., ह. नां. मा)

लताकर–सं. स्त्री. —नृत्य में हाथ हिलाने की एक क्रिया।

लताकस्तूरिका, लताकस्तूरि–सं. स्त्री.—दक्षिण भारत में होने वाला एक पौधा जिसका उपयोग वैद्यक में होता है।

लताग्रह, लताघर–सं. पु. यौ. [सं. लता+गृह] लताओं से मडप की तरह छाया हुआ स्थान।

लताड़–स. स्त्री.—१ लताड़नै की क्रिया या भाव।

२ गहरी डांट, फटकार।

क्रि. प्र.—दैणी, पड़णी, खाणी।

रू. भे.—लतेड़'

लताड़णौ, **लताड़बौ**–क्रि. स —१ लातों से कुचलना, रौंदना ।
२ लातो से मारना ।
३ फटकारना, डाटना ।
उ०—१ बदनामी कर' र दूजै कठै ही नहीं परणीजण देवणरौ डराव दिखाळचौ । चढतै लोहीं नै घणी लाणत सू **लताड़चौ**
—दसदोख
उ०—२ जद नवलजी आपरै जवाई री कूड़ी मदा तथा वार चढसी । आगै जाकर पुलस हाळा नै **लताड़सी**, ओळभो देसी ।
—दसदोख
४ भला बुरा कहना, शर्मिन्दा करना ।
५ हैरान करना ।
लताड़णहार, हारौ (हारी), **लताड़णियौ**—वि ।
लताड़िग्रोड़ौ, लताड़ियोड़ौ, लताड़्योड़ौ—भू. का. कृ. ।
लताड़ीजणौ, लताड़ीजबौ—कर्म वा. ।

लताड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ लातो से कुचला हुआ, रौंदा हुआ. २ लातों से मारा हुआ. ३ फटकारा हुआ, डाटा हुआ. ४ भला-बुरा कहा हुआ, शर्मिदा किया हुआ ५ हैरान किया हुआ ।
(स्त्री लताडियोडी)

लताभवन–[स लता+भवन]—लताओ के छाजन से बना गृह, लताकुंज

लतामंडप–सं. पु यौ. [सं. लता+मडप]—लताओ से आच्छादित मडप या स्थान ।

लतामंडळ–सं. पु. यौ. [स. लता+मंडल] लताओं का झुंड ।

लतामणि–स. पु. यौ. [सं लता+मणि] मूगा, प्रवाल ।

लतावेस्ट–स पु. यौ. [सं. लता+वेष्ट] १ कामशास्त्र मे वर्णित सोलह प्रकार के रतिबन्धो में से तीसरा ।
२ पुराणो के अनुसार द्वारकापुरी के पास का एक पर्वत ।
वि.—लताओं से घिरा हुआ ।

लतावेस्टण–सं पु. यौ. [सं लता+वेष्टण] एक प्रकार का आलिंगन । (कामशास्त्र)

लतासाधन–स पु. यौ. [सं. लता+साधन] एक तन्त्रोक्त साधना जिसका प्रधान अधिकरण लता अर्थात स्त्री है ।

लतिका–सं. स्त्री.—छोटी लता ।
उ०—पल्लव **लतिका** रूप डाळिया डाळा माथै । ओपै वेल अगूर, अळ्झै नाळा साथै ।
—दसदेव

लतियापण, लतियापणौ–स. पु.—गुदा मैथुन या अप्राकृतिक मैथुन करने का व्यसन ।

लतियौ–स. पु.—वह जिसे गुदा मैथुन कराने की लत्त हो । (मा. म.)

लती—देखो 'लत्ती' (रू. भे.)

लतीफौ–स. पु. [अ. लतीफ़ा] हास्य रस की कोई बात, चुटकला ।

लतेड़—देखो 'लताड़' (रू. भे.)
उ०—दीवांणजी री की दाव नी चाल्यो । लक्खू री **लतेड** सुण लचकाणा पड़ग्या ।
—फुलवाड़ी

लतेड़णौ, लतेड़बौ—देखो 'लताडणौ, लताडबौ' (रू. भे.)
लतेड़णहार, हारौ (हारी), **लतेड़णियौ**—वि. ।
लतेड़िग्रोड़ौ, लतेड़ियोड़ौ, लतेड़्योड़ौ—भू. का. कृ ।
लतेड़ीजणौ, लतेड़ीजबौ—कर्म वा. ।

लतेड़ियोड़ौ—देखो 'लताडियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. लतेडियोड़ी)

लत्त—१ देखो 'लत' (रू भे.)
उ०—गज मद चाचर घूंदतां, लग पड़ि नीला **लत्त** । समर तड़फफै सिंहली, मद भरियौ मेमत्त ।
—रेवतसिंह भाटी
२ देखो 'लत्ती' (रू. भे)
उ०—जिकै जपै हरि नांम, जियां मन सासौ भग्गै । जिकै जपै हरि नांम, जिया जम **लत्त** न लग्गै ।
—ज. खि.

लत्ता–स. स्त्री.—विवाहादि मुहूर्त्त में होने वाले दश दोषों में से एक दोप ।
उ०—१ **लत्ता** दि दोस दस लखो, अल्प निबळ सोपण अठै । बदियौ द्विजेण सब सुभ बिफळ, फ़ळ दुलह समता कठै । —वं. भा.
वि. बि —ये दश दोप निम्न है–
१ लत्ता, २ पात ३ युति ४ वेध ५ यामित्र ६ बुध पचक ७ एकार्गल ८ उपग्रह ९ दग्धातिथि १० क्रांति साम्य ।
२ देखो 'लता' (रू. भे)

लत्ती–स. स्त्री.—१ पशुओ द्वारा पैर से किया जाने वाला प्रहार. आघात ।
२ चलते या दौड़ते व्यक्ति के पैर मे इस प्रकार पांव अड़ाने की क्रिया कि वह लड़खडा कर गिर जाय ।
क्रि. प्र. मारणी, लगाणी ।
रू. भे.—लत्त'

लत्तौ–स. पु. [स. लत्तक] (ब. व. लत्ता) १ फटा पुराना कपड़ा, चिथड़ा ।
२ पहनने के वस्त्र ।
यौ. कपड़ा-लत्ता ।

लत्थबत्थ, लत्थबथ्थ—देखो 'लथबथ' (रू. भे.)
उ०—धडै लगि सार उठै रत धार, उगी फळ बिंब कि कब अपार । हुए इक सत्थ बिना खग हत्थ, मिळै **लत्थबत्थ** बिना कै मत्थ ।
—रा. रू.

लत्थापत्थि—देखो 'लथबथ' (रू. भे.)

उ०—अठयासीयउ अन्न आणि, करइ वलि सुहंगा काई। लागी **लत्थापत्थि** किस्यु थास्यइ हौ साई। —स. कु

लत्थौबत्थ, लत्थौबथ, लत्थौबथ्थ, लत्थौवत्थांण—देखो 'लथबथ' (रू भे.)

उ०—१ मत्ता जूझ **लत्थौबत्थां** धारा धौम गौम मच्चै, धीरबाज खच्चै बौम नच्चै रुद्र धाड़। धाय सल्ला होदां व्है छडाळा हूंत वीर घूमै, रायसल्ला रौदा व्है हमल्ला हल्ला राड़।

—हुकमीचंद खिडियौ

उ०—२ आंम्हौ-साम्हा आहुड़ै, **लत्थौवत्थांणं**, धाका मूकां वाजियां, गाजै गयणाण। विढतां पाच हजार लग, वीता वरसाण, माग-माग वर बोलिया मधु-कीटव दाण। —गज-उद्धार

उ०—३ वहै हाथ रावता रा आवधां छतीस वहै, कळूं रहै सारां चा वाखाण साच कत्थ। आंबेरा वळा रवताळा औ दंताळा असा, बाहरू धरा रा लडै **पडै लत्थौबत्थ**। —हाडा कछवाहा रौ गीत

उ०—४ नीर सरां मेहा धरां, सारण हुंसा सथ्थ। वेलि तरां नारी नरां, वणिया **लत्थौबथ्थ**। —पना

लथपथ-वि.—१ किसी तरल पदार्थ से भीगा हुआ या भरा हुआ।

२ मिट्टी, कीचड़ आदि से सना हुआ।

उ०—लारा सूं एक सरड़ाट करती आई अर चोधरी रा कपड़ा **लथपथ** करती चालती बणी। —रातवासौ

लथबत्थ, लथबथ-स.पु.—१ दो जीवों पशुओं या व्यक्तियों में लडाई होते समय की वह स्थिति जिससे वे एक दूसरे को कसकर दबाए या पकड़े रहते हैं।

२ पति पत्नी या, प्रिय प्रेयसी के प्रेमालिंगन की क्रिया या भाव, सुरत-प्रसंग

उ०—रे पिय सोगन राजरी, खोटो सेजां खेल। बिलकुल **लथबथां** बूरो, मोनें ढीली मेल।

—सुगुना सत्रुसाल री बात

रू. भे.—लत्थबत्थ, लत्थबथ, लत्थबथ्थ, लत्थोपत्थि, लत्थौबत्थ लत्थौबथ, लत्थौवत्थांण, लथुबत्थ, लथुबथ, लथुवथ्थ, लथौबत्थ, लथौबथ, लथौबत्थ, लुत्थबत्थ, लुथबत्थ, लुथबथ, लुथबथ्थ, लूथबथ्थ, लूथबाथ, लूथबूथ लोथबत्थ।

लथाड़णौ, लथाड़बौ—देखो 'लताडणौ, लताडबौ' (रू. भे.)

लथाड़ियोड़ौ—देखो 'लताड़ियोड़ौ' (स्त्री लथाड़ियोड़ी) (रू. भे.)

लथुबत्थ, लथुबथ—१ देखो 'लथबथ' (रू. भे.)

लथेड़णौ, लथेड़बौ—देखो 'लताड़णौ, लताड़बौ' (रू. भे.)

लथौबत्थ, लथौबथ, लथौबथ्थ—देखो 'लथबथ' (रू. भे.)

उ०—१ नजरूं का निहार पंजू का दाव। कदमूं का फुरत डोरयूं का घाव। जंड़ तेहै डोरी **लथौबथ** होय जावै। —सू. प्र.

उ०—२ कूंभाथळा लागै नरा हेमरां ढोहता कोप, हाथळां हाथियां घड़ा डोहता हटैत। हाथ बागां फौज नू रोहता **लथौबथ्थां** होय, पाड़ै असा दूजौ 'सतौ' नौहथ्था पटैत।

—महाराव राजा रायसिंह हाडा रौ गीत

लदणौ, लदबौ—क्रि. अ [स. लब्ध्] भार या वजन युक्त होना।

उ०—मिनख जमारै आय, रामजी रा गुण भूला। कहै दास सग-राम, इणी सम काई सूळा। सूळा कोई है इसा, धणी सहोला मार टाकी मोरां रै बिचे, ऊपर **लदसी** भार। ऊपर लदसी भार गधा होवौळा लूला। —सगरामदास

२ भारी वस्तुओं का वाहनों आदि पर रखा जाना।

उ०—रैबारी का सोज्या म्हारा बीर, रैण धणै री घुड़ला ना लदै। गैली धण असल गंवार, **लदिया** तो घुडला पाछा ना ढळै।

—लो. गी.

३ किसी वस्तु से परिपूरित या पूर्ण होना, आच्छादित होना।

ज्यूं—गेणां सूं लदणौ, फूला सूं लदणौ।

४ किसी व्यक्ति पर किसी भारी वस्तु का रखा जाना या बोझ, वजन के रूप में पड़ना।

५ व्यतीत होना, कालातीत होना।

उ०—पीढ्या बीतसी, सदी **लद** जासी पण लोग थारौ नावौ सदा लैता रैसी। —दसदोख

६ गमन कर जाना, चले जाना।

उ०—१ बिणजारौ माया को लोभी, साझ पड़्यां बौ **लद** जासी कोरी-कोरी टीबड़्या ढळ जासी। —लो गी.

उ०—२ बिणजारी ए हम हंस बोल तांडौ **लद** जासी।

—लो. गी.

७ अधिक भार या दायित्व से दबना।

लदणहार, हारौ (हारी), लदणियौ—वि.।

लदिओड़ौ, लदियोड़ौ, लद्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लद्दणौ, लद्दबौ, लद्धणौ, लद्धबौ,—रू. भे.।

लदपड़ौ-सं. पु.—लम्बे कानों वाला।

लदाऊ-वि.—लादने वाला।

सं. पु—लदाव, भराव।

लदाड़णौ, लदाड़बौ—देखो 'लदाणौ, लदाबौ' (रू. भे.)

लदाड़णहार, हारौ (हारी), लदाड़णियौ—वि०।

लदाड़िओड़ौ, लदाड़ियोड़ौ, लदाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लदाड़ीजणौ, लदाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लदाड़ियोड़ौ—देखो 'लदायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लदाड़ियोड़ी)

लदाणौ, लदाबौ–क्रि स [लदणौ या लादणौ क्रि. का. प्रे. रू.] १ भार या वजन से युक्त कराना ।

२ भारी वस्तुओं को वाहन आदि पर रखाना ।

३ किसी वस्तु से परिपूरित, पूर्ण या युक्त कराना, आच्छादित कराना ।

४ किसी व्यक्ति पर किसी भारी वस्तु को रखाना या बोझ के रूप मे पटकवाना ।

५ व्यतीत करवा देना ।

लदाणहार, हारौ (हारी), लदाणियौ—वि. ।

लदायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

लदाईजणौ, लदाईजबौ—कर्म वा. ।

लदाड़णौ, लदाड़बौ, लदावणौ, लदावबौ – रू भे. ।

लदायोड़ौ–भू. का कृ.—१ भार या वजन से युक्त कराया हुआ. २ भारी वस्तुओ को वाहन आदि पर रखाया हुआ. ३ किसी वस्तु से परिपूरित या पूर्ण कराया हुआ, आच्छादित कराया हुआ. ४ किसी व्यक्ति पर किसी भारी वस्तु को रखाया या वोझ के रूप मे पटकवाया हुआ. ५ व्यतीत किया हुआ, कालातीत किया हुआ । (स्त्री. लदायोडी)

लदारौ–स. पु—गुदा-द्वार ।

उ०—इतरौ नाहरी सबद सुणितममी पूछ पटकि धरती सू मूडौ लगाय उछळनै पडॅ, तिसॅ ल्हैस छोडी । तिका मामी टीकॅ लागी नै **लदारा** कानी पार उतरी । —जगदेव पवार री बात

वि —लदने वाला ।

लदाव–सं. पु.—१ लादने की क्रिया या भाव ।

२ बोझ, भार ।

उ० —१ लसै प्रताव तावदै **लदाव** को लदावणी सदैव वेरि मींच बीच मीच को सदावनी । —ऊ. का

३ छत पाटने की एक क्रिया जिसमें बिना धरन या कडी के ईंट या पत्थर की जोडाई की जाती है ।

लदावणौ–वि. (स्त्री. लदावणी)—लदाने वाला ।

उ०—लसे प्रताव तावदे लदाव को **लदावणी**, सदैव वॅरि मीच बीच मीच को सदावणी । भिरै अभित्ति भित्ति को सबुज्ज को भवावणी, बिना प्रस्वेद वित्त को कुरोर हा कमावणी । —ऊ. का.

लदावणौ, लदावबौ—देखो 'लदाणौ, लदाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सूता सम्रिया सुख भर नीद, बाहर हेलौ, भवर कुण मारियौ । औ छै गौरी रॅबारी रौ पूत, करहा **लदावण** हेलौ मारियौ । —लो. गी.

उ०—२ काती भळॅ दाती फेरी, लामू वन रा वाडतां । भाड जुगत लादा **लदावॅ**, ढिगलां टोकी काढतां । —दसदेव

उ०—३ विणजारा रै, लोभी जै मैं होती थारै साथ, गोडो देर **लदावती**, बिणजारा रै । विणजारी ए लोभण तोड़चौ चनणिये रौ रूंख तोड सती बा होय रही । —लो. गी.

लदावणहार, हारौ (हारी), लदावणियौ—वि. ।

लदाविप्रोड़ौ, लदावियोड़ौ, लदाव्योड़ौ—भू का' कृ. ।

लदावीजणौ, लदावीजबौ—कर्म वा. ।

लदावियोड़ौ—देखो 'लदायोडौ' (रू. भे.) (स्त्री. लदावियोडी)

लदियोड़ौ–भू. का. कृ—१ भार या वजन से युक्त हुवा हुआ. २ भारी वस्तुओ का वाहनो आदि पर रखा हुआ. ३ किसी वस्तु से परिपूरित, पूर्ण या युक्त हुवा हुआ. ४ किसी व्यक्ति पर भारी वस्तु से दबा हुआ ५ व्यतीत या कालातीत हुवा हुआ. ७ अधिक कार्य-भार या दायित्व से दबा हुँआ.
(स्त्री लदियोड़ी)

लद्दणौ, लद्दबौ—देखो 'लदणौ, लदबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हुऔ नगारौ दूसरौ, भेर भणकै सद्द । सब आतुर जण दळ सकळ, करण मयदा **लद्द** । —रा. रू.

उ०—२ सिलह सदूक मलीतै वड्डॅ, **लद्दॅ** ऊट चलाए गिड्डॅ । लारोलार कतारा हल्ली, काती जाण कुरज्भा चल्ली । —गु. रू. ब.

लद्दणहार, हारौ (हारी), लद्दणियौ—वि० ।

लद्दिप्रोड़ौ, लद्दियोड़ौ, लद्द्योड़ौ भू० का० कृ० ।

लद्दीजणौ, लद्दीजबौ—कर्म वा० ।

लद्दियोड़ौ—देखो 'लदियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लद्दियोडी)

लद्दू–वि.—वह पशु जिस पर माल लादा जाता है ।

उ०—ठाकर सदा दो दौ ऊट राखतौ आयौ । एक मोटौ **लद्दू** ऊट अर दूजोड़ौ कवळौ पागळ । —रातवासौ

लद्ध–वि.—१ मुग्ध, मोहित ।

उ०—१ अकबर रत्ता राग सूं, रग त्रिया रस **लद्ध** । जो उतपात प्रगट्टियौ, सो सुणियौ निस अद्ध । —रा. रू.

[स. लब्ध] - २ मिला हुआ ।

रू भे.—लिद्ध

लद्धणौ लद्धबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे)

उ०—१ या अक्खै 'जगपत्ती', छत्री उद्धार धार तीरत्थे । सो **लद्धौ** अवसाणौ, सद्धौ धीर वीर 'चतुरेस' । रा. रू.

उ०—२ **लद्धा** भोग बारगना धूरजटी माळ **लद्धा**, धापॅ चंडी स्रोण **लद्धा** भाखै धिन्नौ धिन्न । घडा भार गौम **लद्धा** बावनै आहार **लद्धा** रामतेज धाम **लद्धा** दूसरै 'रतन्न' ।

—राव सत्रसाळ रौ गीत

२ देखो 'लदणौ, लदबौ' (रू. भे.)

लद्धणहार, हारौ (हारी), **लद्धणियौ**—वि. ।

लद्धिओडौ, लद्धियोड़ौ, लद्धचोड़ौ—भू. का. कृ. ।

लद्धीजणौ लद्धोजबौ—भाव वा. ।

लद्धियोड़ौ—देखो 'लाभियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लदियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लद्धियोड़ी)

लधणौ, लधबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे.)

लध्धणौ लध्धबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बीछडतां ही सज्जणां, क्याही कहण न लध्ध । तिण वेळा कंठ रोकियउ, जांणक सिंधी खध्ध । —ढो. मा.

उ०—२ ढोला मारवणी मुई, तइ सारडी न लध्ध । दीवा-केरी वाटि जिम, खोड़ी-खोडी दध्ध । ढो. मा

लप—स. स्त्री—१ अगुलियों व अंगूठे को मिलाकर गहरी की हुई हथेली, करतलपुट, आधी अंजली, पसर ।

२ उतनी वस्तु जितनी उक्त एक सपुट में आती हो ।

उ०—१ बसु पूगलपति रोकियौ बावळां, दियै लप चावळां आस देखै । आप जद पावडा दिया ऊनावळा, सावळा करी जद राव सेखै । – खेतसी बारठ

३ किसी लचीली छड़ी या बेंत को हिलाने से उत्पन्न शब्द ।

४ बरछी तरवार आदि की चमक व गति ।

५ ध्वनि विशेष ।

मुहा.—लप-लप करणौ—बीच-बीच में बोलना ।

क्रि. वि.—१ शीघ्रता से ।

ज्यू.—व्हौ तौ लप देतीरौ उठचौ ।

उ०—१ मिरघा जांण मलपिया, **लप** चीत्तौ लाई । 'राघा' 'वाघा रिण रिहा, रिण तेग रचाई । —वी भा.

उ०—२ भटियाणी तौ जाणै इणरी ई बाट न्हाळती व्है, बोली बोली **लप** वहीर व्हैगी । —फुलवाड़ी

रू. भे.—लपक, लफ, लिप, लुप

लपक—सं. स्त्री—१ चमक, कांति ।

२ देखो 'लप' (रू. भे.)

लपकणौ, लपकबौ—क्रि.अ.—किसी वस्तु की प्राप्ति हेतु सहसा उठकर जाना, झपटना, लपकना ।

उ०—१ वौ जाट पगरखियां रै तैल चुपड़ण सारू थोबली रै गळै बैठौ ई हौ कै कुत्तौ **लपक** नै चार सोगरा उचकाय लिया । —फुलवाड़ी

उ०—२ वौ उण नै खेंच र भूंपा में लिजावणौ चावै हौ, पण रंभा एक जोर रौ झटकौ दियौ अर खट्ट करतां हाथ छुड़ाय दियौ हाजरियौ काती महीना रा कुत्ता ज्यू **लपक्यौ** पण नजीक आवता ईज रंभा उणरा मूडा पर थच्च कर नै थूक दियौ । —रातवासौ

२ शीघ्रता से जाना, आगे बढना ।

३ तेजी से आना

उ०—खिणेक लागी आखडी, चाली ठडी वाय । अरक उगण दिस ऊगियौ, **लपकी** पाछी लाय । – लू

लपकणहार, हारौ (हारी), **लपकणियौ**—वि. ।

लपकिओड़ौ, लपकियोड़ौ, लपक्योड़ौ—भू का. कृ. ।

लपकीजणौ, लपकीजबौ—भाव वा. ।

लपकाणौ, लपकाबौ – रू. भे.

लपकाड़णौ. लपकाड़बौ—देखो लपकाणौ, लपकाबौ' (रू. भे.)

लपकाड़णहार, हारौ (हारी), **लपकाड़णियौ**—वि. ।

लपकाड़ीओड़ौ, लपकाडियोड़ौ, लपकाड़चोड़ौ—भू. का. कृ. ।

लपकाडीजणौ, लपकाड़ीजबौ—कर्म वा. ।

लपकाड़ियोड़ौ—देखो 'लपकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. लपकाडियोडी)

लपकाणौ, लपकाबौ—क्रि. स.—१ खाना

रू. भे. लपकाडणौ, लपकाड़बौ, लपकावणौ, लपकावबौ

२ देखो 'लपकणौ, लपकबौ' (रू. भे)

उ०—१ झपटी नह आंख झबकाई, लेगी नह **लपकाई** नै । लख लांणत मिनकी नै लागी, उण वेळा नह आई नै । —ऊ का.

लपकाणहार, हारौ (हारी), **लपकाणियौ**—वि. ।

लपकायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

लपकाईजणौ, लपकाईजबौ—कर्म वा./भाव वा. ।

लपकावणौ, लपकावबौ—देखो 'लपकाणौ, लपकाबौ' (रू. भे.)

उ०—लपसी लपकावै तपसी तावै, आपा सींच उठदा है । चेली चोळा मन मोळा में, रोळा में रुठदा है । —ऊ. का.

लपकावणहार, हारौ (हारी), **लपकावणियौ**—वि. ।

लपकाविओड़ौ, लपकाविगोड़ौ, लपकाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लपकाईजणौ, लपकाइजबौ—कर्म, भाव वा. ।

लपकौ—सं. पु.—बीच बीच में अधिक बोलने की क्रिया, वाचालता ।

उ०—राजाजी चिड़ता थका कह्यौ, थू **लपका** मत कर । दीवाण वणियां पै'ली घणी अकल लड़ाई तौ माथा री नसा तिड जावैला । —फुलवाडी

क्रि. प्र.—करणौ

रू. भे.—लपूकौ

२ वडा ग्रास ।

लपड़—देखो 'लप्पड़' (रू. भे.)

लपड़कनौ, लपड़कन्नौ—वि. (स्त्री. लपड़कनी) —लम्बे कानो वाला ।

लपड़ौ—देखो 'लफड़ौ' (रू. भे.)

लपचप—सं. स्त्री.—१ बीच-बीच में व्यर्थ बोलने की क्रिया या भाव।

२ चचलता।

क्रि. प्र.—करणी

रू. भे.—लपझप

लपचड़ौ, लपचेड़ू, लपचेड़ौ—देखो 'लफड़ौ' (रू. भे)

उ०—१ पैली बै: बिहाल की बात नै डाढी चौखी बतावै, जिका ही पछै बी बात री माड़ी चुगली करण लाग ज्यावै। दुनिया रौ इसौ धारौ है, इसी रीत हैं। जगती रा झूठा जाळ है, पापां रा **लपचेड़ू** पपाळ है। —दसदोख

उ०—२ ब्या 'रा वेगरणी, बिचावळा, रुळपट, **लपचेड़ू** अर जार भायेला भोंदू पटावै तथा खूब खावै पीवै है। —दसदोख

लपचोळी, लपचोली—वि.—लालची, लोभी।

लपझप—क्रि. वि.—१ लालटेन या विद्युत पिंड के अपने आप बुझते समय होने वाली क्रिया।

२ देखो 'लपचप' (रू. भे.)

लपट—सं. स्त्री.—आग दहकने पर जलती हुई वायु का उठने वाला स्तूप। आग की लौ, अग्नि-शिखा।

उ०—**लपटां** भरता वासदी नै ठारै जैड़ौ सी पडन लागौ। —फुलवाडी

२ दीप्ति, कान्ति, शोभा।

उ०—अंग २ मे छिब री **लपटां** ऊपटै अछेह, पातली निराट तौ पिण लागै समर सी देह। —र. हमीर

३ प्रभाव. असर।

उ०—बात मुदौ सधिया बिगर, लागै **लपट** न लेस। डहकै न चित्त डुळावज्यौ, औ इणमें उपदेस। —र. हमीर

४ तलवार (अ. मा.)

५ वायु का झोंका।

६ गधयुक्त वायु का झोंका।

उ०—आगै देखै तौ नीबौ सिवालोत सात-बीसी सांइना री साथ सू झूलै छै। तिकै केवडा, चपेल, अरगजा री पांणी मांहै **लपटां** आवै छै। केसर रा रग सू पांणी बदळ गयौ, रग फिर गयौ छै। —वीरमदे सोनगरा री बात

७ चमक।

उ०—लछीरा चहन घण वीज वाळी **लपट**। क्रोध ममता तता मूढ तज रै कपट। —र. ज. प्र.

लपटणौ, लपटबौ—क्रि अ.—१ किसी एक चीज का दूसरी चीज के चारों तरफ इस प्रकार चिपकना, सलग्न होना कि आसानी से अलग न हो सके।

उ०—सळीयळ वाग सिरूज, बीच सरसाविया। सजै वसंत नीसांण, दळा दरसाविया। पोहपां सुगध अपार, **लपटि** तर बांम है, परिहा कै सूरपुर कैलास, मदन रति धाम है। —पना

२ स्पर्श करना, छूना।

उ०—१ कटै सिर सूर जूटै घड़ केक, उभै हुय टूक पडत अनेक। पड़ै पग हाथ धरा **लपटंत**, किळा किर राखस वाळ करंत। —सू. प्र.

उ०—२ वाइ पखरा जोरसू नीला घास धरती सूं **लपट** नै रहिआ छै। आसमान रै फेर। जितरा जिनावर चिड़ी कमेडी झाट माहि आवै छै। तितरा झपटा सूं मारिआ जावै छै। —रा. सा. स.

३ आलिंगन करना।

४ लिप्त होना।

उ०—१ अधर कळी मे बैस करि, भवरौ रह्यौ **लपटि**। जनहरीया जब जीबकौ, सासौ गयौ समटि। —अनुभववांणी

५ संलग्न होना।

उ०—असै छाया विरख सू, हरीया रही **लपटि**। जैसे माया ब्रह्म सु, कैसे जाय विछटि। —अनुभववांणी

लपटणहार, हारौ (हारी), लपटणियौ—वि०।

लपटिओड़ौ, लपटियोड़ौ, लपट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लपटीजणौ, लपटीजबौ—भाव वा०।

लिपटणौ, लिपटबौ—रू० भे०।

लपटाड़णौ, लपटाड़बौ—देखो 'लपटाणौ, लपटाबौ' (रू. भे.)

लपटाड़ियोड़ौ—देखो 'लपटायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री लपटाड़ियोड़ी)

लपटाणौ, लपटाबौ—क्रि स.—१ चिपकाना, लेप कराना।

२ किसी एक चीज का दूसरी चीज पर चारों तरफ इस प्रकार चिपकाना, लिपटाना या संलग्न करवाना कि आसानी से अलग न कर सके।

३ स्पर्श कराना, छूआना।

४ आलिंगन कराना।

लपटाणहार, हारौ (हारी), लपटाणियौ—वि०।

लपटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लपटाईजणौ, लपटाईजबौ—कर्म वा०।

लपटाड़णौ, लपटाड़बौ, लपटावणौ, लपटावबौ, लिपटाड़णौ, लिपटाड़बौ, लिपटावणौ, लिपटावबौ—रू० भे०।

लपटायोड़ौ—देखो 'लिपटायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. लपटायोड़ी)

लपटावणौ, लपटावबौ—देखो 'लपटाणौ, लपटाबौ' (रू. भे.)

लपटावणहार, हारौ (हारी), लपटावणियौ—वि.।

लपटाविओड़ौ, लपटावियोड़ौ, लपटाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लपटावीजणौ, लपटावीजबौ—कर्म वा.।

लपटावियोड़ौ—देखो 'लपटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लपटावियोडी)

लपटौ–स. पु.—१ आटे को घृत से सेक कर गुड या शक्कर और पानी के संयोग से बनाया हुआ पेय पदार्थ।

२ बाजरी के आटे को सेक कर बनाया गया तरल पेय पदार्थ।

लपणौ, लपबौ—देखो 'लपकणौ, लपकबौ' (रू. भे.)

लपणहार, हारौ (हारी), लपणियौ—वि०।

लपिग्रोड़ौ, लपियोड़ौ, लप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लपीजणौ, लपीजबौ—भाव वा०।

लपतरौ–स. पु.—मांस सहित त्वचा का टुकड़ा।

उ०—पण वा पूगी-पूगी जितरै तौ एक तरवार ठाकर रौ भैंजौ फोड'र कनपड़ा रौ लपतरौ उखेलती खांधा तक जाय पूगी।

—रातवासौ

२ देखो 'लिगतर' (रू. भे.)

लपताछिपता—छुकना, छिपना।

उ०—घर मडण भ्रात रनै गमियौ, काळजै भड ऊकळतौ क्रमियौ।
लपता छिपता सैह जांण लिया, अतरै समरू खळ ओळखिया।

—पा. प्र.

लपतोळणौ, लपतोळबौ–क्रि. अ.—लथपथ होना।

उ० —वो दौड़ण रौ मन करियौ पण पग तौ ऊठै ई नीं। धग धग लोई सूं उणरौ मूंडौ लपतोळीजगौ। —फुलवाड़ी

क्रि. स.—२ लथपथ करना।

लपतोळणहार, हारौ (हारी), लपतोळणियौ—वि.।

लपतोळिग्रोड़ौ, लपतोळियोड़ौ, लपतोळघोड़ौ—भू. का. कृ.।

लपतोळीजणौ, लपतोळीजबौ—कर्म वा./भाव वा.।

लपतोळियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ लथपथ या तरबतर किया हुआ. २ लथपथ या तरबतर हुवा हुआ।

(स्त्री. लपतोळियोड़ी)

लपत्तड़–वि.—फटा-पुराना, जीर्ण-शीर्ण।

लपन–स. पु. [सं.] १ मुंह, मुख। (ह. नां. मा.)

२ भाषण, कथन।

लपना–स. पु [सं. लपन] जीभ, जिह्वा।

उ०—जीभड़ली धण बरजी न जाय, इब धण बारी ए गोरी, थे बस राखौ ए लपना आपकी जी राज। —लो. गी.

लपर–वि.—वाचाल, बातूनी।

उ०—खीच मुफत रौ खाय, करडावण डूंकर घणी। लपर घणौ लपराय, रांड ऊचकसी राजिया। —किरपाराम

अल्पा.—लपरौ

लपरक–सं. पु.—१ सर्प आदि का मुह से जीभ बार-बार निकालने की क्रिया।

२ बार-बार बीच मे बोलने की क्रिया।

३ निरर्थक बात कहने का कार्य।

४ जीभ से चाटने से उत्पन्न ध्वनि।

लपरकौ–स. पु. (ब.व. लपरका) १ बार-बार बीच में बोलने की आदत।

२ जीभ से चाटने की क्रिया।

उ०—१ थू इण बात रौ तूमार देखणी चावै तौ रात रा सूतोडा रा काळजा माथै जीभ रा दो-तीन लपरका लेजै। —फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—लैणौ।

रू. भे.—लपळको।

लपरणौ, लपरबौ–क्रि. अ.—१ जिव्हा का बार-बार बाहर निकलना व मुंह में जाना।

२ जीभ से चाटना।

लपरणहार, हारौ (हारी), लपरणियौ—वि०।

लपरिग्रोड़ौ, लपरियोड़ौ, लपरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

लपरीजणौ, लपरीजबौ—भाव वा०।

लपराई–सं स्त्री.—१ वाचालता, लबारपना।

उ०—अदतार दता दीठा अवर, बौह करता बकवाद रै। मौकमा कमंध मोटा मिनख, लपराई नै दाद रै —अरजुणजी बारठ

२ चापलूसी।

उ०—तरै जगदेव कहै, काई ज्यादा दीठी हुवै तौ कहूं नै झूठा लपराई करणी आवै नहीं। —जगदेव पंवार री बात

लपराणौ, लपराबौ–क्रि. स.—१ बार-बार बीच में बोलना।

२ सर्प आदि का बार-बार जीभ निकालना व वापिस मुह मे डालना।

३ निरर्थक बात कहना।

उ०—खीच मुफत रौ खाय, करडावण डूंकर घणी। लपर घणौ लपराय, राड ऊचकसी राजिया। —किरपाराम

लपराणहार, हारौ (हारी), लपराणियौ—वि.।

लपरायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लपराईजणौ, लपराईजबौ—कर्म वा.।

लपरौ—देखो 'लपर'

उ०—ओछी बोली हाळै पंजाब में बड़णी पड़ियौ। बठै एक जमी जगां अर पांती-पोळी हाळै लपरै सै लाले रौ छोरौ दाय आयौ।

—दसदोख

(स्त्री. लपरी)

लपळको—देखो 'लपरकौ' (रू. भे.)

उ०—पछै कोतवाळ घणौ वाद करचौ तौ लक्खू नै वारां मूंडा सांम्ही पग करणौ ई पडचौ। कोतवाळ निसक **लपळका** लेय लेय उणरी पगथळी जीभ सू चाटण लागौ। —फुलवाडी

लपलप-सं. स्त्री.—१ बार बार बोलने की क्रिया।

२ जीभ से पेय पदार्थ पीने वाले जानवरो के मुख से उत्पन्न ध्वनि।

लपलपाट—१ लपलपाने की क्रिया या भाव।

२ किसी चमकीली वस्तु को हिलाने से उत्पन्न चमक।

३ व्यर्थ की बकवाद, बकझक।

लपसी—देखो 'लापसी' (रू भे.)

उ०—१ **लपसी** लपकावै तपसी तावै, आपा सीच उठदा है। चेली चेलां में मन मोळा में रोळा मे रूठंदा है। —ऊ. का.

लपाक-क्रि. वि.—शीघ्रता से, तुरत।

उ०—लुळि लुळि **लपाक** झोटा लिवै, ऊचा नीचा आवता। नमी नमी नाक ग्रमली निलज, जमी लगावै जावता। —ऊ का.

लपादार—१ वह वस्त्र जिसमे सुदर चमकीला लप्पा लगा हो।

उ०—१ गोरै कंचन गात पर, ग्रगिया रंग ग्रनार। लहगौ सोहै लचकतौ, लहरचौ **लपादार**। —र. हमीर

रू. भे.—लपैदार, 'लप्पेदार', लफादार।

लपालप, लपालपी-क्रि वि.—शीघ्रता से, झटपट, तेज गति से।

उ०—थोड़ी ताळ तांई सगळा मुखिया ग्राख्या मीचनै बैठा रह्या तौ वौ **लपालप** सगळा झूंपा रै लाय लगाय दी। —फुलवाडी

२ देखो 'लपलप'

उ०—सगळै पूछ्णा आवता पण दुणदुणी बजाय र टरकत। ग्यान रा ग्राग्रीटाण हुयोडा हा। पराये दुःख मे पड़नै री चेतना होती, ग्रौ कौ हीनी। खाली मूडै री **लपालपी** ही। —वरसगाठ

लपी—देखो 'लप्पौ' (ग्रल्पा. रू. भे.)

लपूकौ—देखो 'लपकौ' (रू. भे.)

लपेक-वि. [लप+एक] करीब एक पसर मे समा जावै इतना।

लपेट, लपेटण-सं. स्त्री—१ लपेटने की क्रिया या भाव।

२ लपेटने योग्य पदार्थ का एक चक्कर, फेरा या बधन।

३ वह निशान जो किसी वस्तु को लपेटते या तह करते समय उसके मोड़ पर बन जाता है।

४ ऐंठन, बल, मोड।

५ घेरा, परिधि।

६ उलझन, फंसाव, पकड, बंधन, चक्कर।

७ कुश्ती का एक पेंच।

लपेटणी-स. स्त्री.—लपेटन नामक जुलाहो की लकडी।

लपेटणौ, लपेटबौ-क्रि. स.—१ किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के चारो ग्रोर घुमाकर इस प्रकार बाधना कि उसका कुछ या पूर्ण भाग ढक जाय, परिवेष्टित करना।

उ०—म्हारौ मारूड़ौ रमै छै सिकार, सघन वन झगरा ग्रलबेलियौ हाथ बंदूक लपेटै जामगी, कमर कसी तरवार। —रसीलै राज रा गीत

२ कपडा-कागज ग्रादि मे बन्द करना, ढकना, ग्रावेष्टित करना।

उ०—ताहरा सिगळा सुणायौ। कह्यौ जी कपडै **लपेटि** नाखि द्यौ। ताहरा लपेटि नै जगल मे नाखि ग्राया। —देवजी बगडावत री बात

३ घेर कर रखना, चारो ग्रोर से घेराव करना।

उ०—गज मोत्या री दामणी, मुखडै सोभा देत। जाणै तारा पंत मिळ, राख्यौ चद **लपेट**। —ग्रज्ञात

४ बणाव, शृगार कराना।

उ०—थाका हस री टोळी, निवायै री होळी, घणौ हाट नै चीरमा **लपेटी** थकी विराजमांन होइ नै रही छै। —रा. सा. स.

५ काबू में करना, वश मे करना।

६ उलझन या झझट मे फसाना।

७ ग्राच्छादित करना, ढकना।

उ० — वरियाम सिलह पोमा विचै, भुजा 'ग्रभै' नभ भेटियौ। तदि जाण भाण ग्रीखम तणौ, काळी घटा **लपेटियौ**। —सू. प्र.

८ किसी वस्तु का लेप करना, पोतना।

उ०—मंडी महल चिणावतै, ऊपरि कळी **लपेट**। चिणत चिणावत ऊठिगै, लगी काळ की फेट। —ग्रनुभववांणी

लपेटणहार, हारौ (हारी), लपेटणियौ—वि.।

लपेटिग्रोडौ, लपेटियोड़ौ, लपेटचोड़ौ—भू. का. कृ.।

लपेटीजणौ, लपेटीजबौ—कर्म वा.।

लपेटमौं-वि.—१ जो लपेट कर बनाया गया हो।

२ जिसके ऊपर कुछ लपेटा हो।

३ लपेटने योग्य।

४ घुमावदार या चक्करदार, गूढ व्यंग्य।

लपेटियोड़ौ-भू का कृ.—१ किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के चारों ग्रोर घुमाकर इस प्रकार बाधा हुग्रा कि उसका कुछ ग्रंश या पूर्ण भाग ढक जाय. २ कपडा कागज ग्रादि मे बन्द किया हुग्रा, ढका हुग्रा, ग्रावेष्टित किया हुग्रा. ३ काबू मे किया हुग्रा, वश में किया हुग्रा. ४ चारों ग्रोर से घेराव किया हुग्रा. ५ उलझन या झंझट मे फंसाया हुग्रा. ६ किसी वस्तु का लेप किया हुग्रा. ७ ग्राच्छादित किया हुग्रा, ढका हुग्रा. ८ शृगार कराया हुग्रा.

(स्त्री. लपेटियोडी)

लपेटियौ—देखो 'लपेटौ' (रू. भे)

उ०—आगै धरती साम्हौ जोवै तौ वीरमदे ने हाथी **लपेटीया** मे छै। तिसै झरोखै बैठ हाथ पसार नै वीरमदे ने ऊचौ लीधौ।
—वीरमदे सोनगरा री बात

लपेटौ—स. पु.—१ दाम्पत्य-सूत्र बंधन।

२ सिर पर लपेटा जाने वाला कपडा, साफा, पगड़ी।

उ०—१ इसी भात बरस पाच सीखता लागा। माथै केसां रौ झूलौ रहै नै ऊपरा **लपेटौ** बाधै। वागौ, चिलकता बगतर पैरै।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

उ०—२ मत करै सोच सोढी महळ, सीस **लपेटौ** सूंपियौ। स्त्रग लोक साथ रेसां सदा, कमधज चढता यूं कियौ।
—बख्तावरजी मोतीसर

३ टोप के नीचे बांधने का कपडा।

उ०—जुध चढियौ जगमालदे, कर टोप **लपेटौ**। बगतर कूटा बीड़ीया, धक पोरस धेटौ। —वी. मा.

४ षडयन्त्र, जाल।

५ चक्कर, दाव।

उ०—पण सेठांणी पाछौ कोई जबाब दियौ नही, सायद उधीज गई ही। सेठ ई उठ्या, बत्ती बुझाई, पाळा में नाळाछोड कियौ अर रणछोडा नै **लपेटा** में लेवण री तरकीबां सोचता-सोचता सोयग्या।
—रातवासौ

मुहा. लपेटा में आवणौ=चक्कर या धोखे में आना।
लपेटा मे लैणौ=चक्कर में फंसाना।

वि.—लपेटा हुआ, बांधा हुआ।

रू. भे.—लपेटियौ

लपैवार—देखो 'लपादार' (रू. भे.)

उ०—सखि लाल चुंनरिया चमकै हरी हरी कंचुकिया तन पै, लहैगा गुल अनार तापर **लपैवार** नथनी कंटसिरी चुरियां चमकै तैसै ही नूपर चरनन झमकै। —रसीलैराज रौ गीत

लपोड़, लपोड़ौ, लपोडौ, लपोळ—वि.—मूर्ख, नासमझ।

उ०—१ धन रौ मोद आयग्यौ, मनड़ौ उघाड खायग्यौ। जाट पूजतौ आदमी, लपोडौ'र जिद चेतै आयग्यौ। —दसदोख

लपौ—देखो 'लप्पौ' (रू. भे.)

उ०—साळूड़ौ मंगाद्यौ सांगानेर रौ, अजी रंग भीना राजाजी आंगण कटारी भात अनोखी, लाग्यौ छै **लपा** चहु फेर रौ।
—रसीलै राज रौ गीत

लपौलप—क्रि. वि.—१ शीघ्रता से, जल्दी-जल्दी।

उ०—सूरज री खीझ सू डरता सगळा तारा **लपौलप** वडा होवण लागा जकौ व्हैताई गिया। —फुलवाड़ी

लप्पड़—सं. स्त्री.—हथेली से किया हुआ आघात, थप्पड, तमाचा।

रू भे.—लपड।

लप्पादार—देखो 'लपादार' (रू. भे.)

लप्पी—सं. स्त्री—१ महीनतम, रजकण या धूलि।

२ देखो 'लप्पौ' (अल्पा., रू. भे.)

लप्पेदार—देखो 'लपादार' (रू. भे)

लप्पौ—स पु.—चाँदी या सोना के तार (गोटा) की पट्टी जो कपड़े के किनारे पर लगाई जाती है।

रू. भे—लपौ।

अल्पा.,—लपी, लप्पी।

लफंगौ—वि. [फा. लफग] १ दुश्चरित्र, हीन।

२ लपट, व्यभिचारी।

३ लुच्चा, बदमाश।

उ०—बीन रै बाप री एक साथी बराती **लफंगौ** बोल्यौ—दायजौ कठै मेल्यौ है? —दसदोख

४ चोर, लुटेरा।

उ०—रहै तौ धोळौ-धोळौ दूध जांण नै भरोसौ कर लियौ। औ तौ साचांणी दूध ई निकळियौ जे कोई लफगौ व्हैतौ तौ कैंडौक माहेरौ सजतौ। —फुलवाडी

लफ—देखो 'लप' (रू. भे.)

लफड़ौ—सं. पु.—१ बंधन।

उ०—मिनख रै हीयै ओळूं रौ **लफड़ौ** नीं रैवै तौ कित्तौ सावळ। आ ओळूं तौ जाणै अस ई काढ न्हाकैला। —फुलवाडी

२ सांसारिक झंझट, प्रपंच।

उ०—बेटा धन री जड़ इणी भात हरी व्हिया करै। धन रै सिवाय मिनख रा सै **लफड़ा** बिरथा है। —फुलवाड़ी

३ भूत प्रेत, शैतान।

४ आफत, इल्लत, बला।

रू. भे.—लपड़ौ, लपचड़ौ, लपचेड़, लपचेड़ौ, लफरौ

लफलफणौ, लफलफबौ—देखो 'लपकणौ, लपकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सांड टोरड्यां टोड, कोड कर कांट किटाळी। **लफ** लफ लेत बुगाळ, सूत खेजड़ला डाळी। —दसदेव

उ०—२ तिकौ पण बाळक री तरह गोडा रै ही बळ ध्यावै छै। किनरा हैका का तिग टूट गया छै। तिकै रिगसता थका लफ **लफ** कोट रै जाय जाय कटारी लगावै छै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

लफज—देखो 'लफ्ज' (रू. भे.)

लफटंट—देखो 'लेफटीनेंट' (रू. भे.)

लफटंटगवरनर—देखो 'लेफ्टीनेंटगवरनर' (रू. भे.)

लफटंट जनरल—देखो 'लेफ्टीनेंट जनरल' (रू भे.)

लफरौ—देखो 'लफडौ' (रू. भे)

उ०—१ अै तौ अपा मिनखा रै सौ **लफरा** है, दूजा जीवा नै अैडी ऊधी बाता सूं की लेणौ देणौ नी । —फुलवाड़ी

उ०—२ दौडे छानी दूतियाँ, **लफरा** जिण रै लाख। आप तणी कर अंजसियौ, रसियौ पडदे राख । —बा. दा.

लफादार—देखो 'लपादार' (रू. भे.)

लफ्ज—सं. पु. [अ लफ्ज] १ शब्द, बोल ।

२ बात।

३ वचन।

रू. भे.—लफज, लबज, लब्ज।

लबकणौ, लबकबौ—क्रि. अ.—भक्षण करना, खाना ।

उ०—१ ऊचै मुख सू ऊट, चूट चट लूंगा **लबकै**। गलर गलर गटकाय, डोलती डागा डबकै। —दसदेव

उ०—२ बीज भबकै, मेह टबकै, हीया दबकै, पाणी भभकै, नदी उबकै बनचर **लबकै**, आभौ अबकै। —रा. सा. सं

लबकणहार, हारौ (हारी), लबकणियौ—वि.।

लबकिअोड़ौ, लबकियोड़ौ, लबक्योड़ौ—भू का. कृ ।

लबकीजणौ, लबकीजबौ—कर्म वा. ।

लबकियोड़ौ—भू का. कृ.—भक्षण किया हुआ खाया हुआ ।

(स्त्री. लबकियोड़ी)

लबकौ—सं. पु.—मोटा ग्रास, लौदा ।

उ०—दही रायतै छोक, मोकळी निमझर देवै । ललचावै सुरराज, भाज लप **लबकौ** लेवै । —दसदेव

२ आनन्द, रस ।

लबड़काणौ, लबड़काबौ—क्रि स.—१ परेशान या तंग करना ।

२ परिश्रम कराना ।

३ फटकारना, दुतकारना ।

लबड़काणहार, हारौ (हारी), लबड़काणियौ—वि. ।

लबड़कायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

लबड़काईजणौ, लबड़काईजबौ—कर्म वा.।

लबड़कावणौ, लबड़कावबौ—रू. भे. ।

लबड़कायोड़ौ—भू. का. कृ.—परेशान या तंग किया हुआ. २ परिश्रम करवाया हुआ. ३ फटकारा हुआ, दुत्कारा हुआ ।

(स्त्री. लबड़कायोडी)

लबड़कावणौ, लबड़कावबौ—देखो 'लबडकाणौ, लबड़काबौ' (रू. भे.)

लबड़कावणवहार, हारौ (हारी), लबड़कावणियौ—वि. ।

लबड़काविअोड़ौ, लबड़कावियोड़ौ, लबड़काव्योड़ौ—भू. का. कृ ।

लबड़कावीजणौ, लबड़कावीजबौ—कर्म वा. ।

लबड़णौ, लबड़बौ—क्रि. स.—फटकारना, डाटना ।

लबड़णहार, हारौ (हारी), लबड़णियौ—वि. ।

लबड़िअोड़ौ, लबड़ियोड़ौ, लबड़चोड़ौ—भू. का. कृ ।

लबड़ीजणौ, लबड़ीजबौ—कर्म वा. ।

लबड़ाक—वि.—वाचाल, बकवादी ।

उ०—समर ढिलौ कर साम नू, लस आवै **लबड़ाक** । मूंछ थका मूडत जिकै, नाक थका बिण नाक । —बा. दा.

लबड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—फटकारा हुआ, डाटा हुआ ।

(स्त्री. लबडियोडी)

लबज—देखो 'लफ्ज' (रू. भे.)

लबथब—देखो 'लबालब' (रू. भे.)

लबथबणौ, लबथबबौ—क्रि. अ.—१ पूर्ण भरा जाना, लबालब होना ।

२ डगमगाना, लडखडाना ।

उ०—आज ज सूती निसह भरी, प्रिय जगाइ आइ । विरह भूयंगम की डसी, **लबथबती** गळ लाइ । —ढो. मा.

लबथबणहार, हारौ (हारी), लबथबणियौ—वि. ।

लबथबिअोडौ, लबथबियोड़ौ, लबथब्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लबथबीजणौ, लबथबीजबौ—भाव वा. ।

लबथबियोड़ौ—भू का. कृ.—१ पूर्ण भरा हुआ, लबालब । २ डगमगाया हुआ ।

स्त्री. लबथबियोडी)

लबद—वि.—मुलायम कोमल, नम्र ।

उ०—धरती रो जित्ती बार काळजौ चीरीज वाणिया लागे उत्ती वत्ती नैपै व्है, साख फळै । उणी भात बादळ रै **लबद-लबद** व्हिया काळजा में नानी रा बोल ऊगता गिया अर सागै रा सागै फळता गिया । —फुलवाड़ी

लबधणौ, लबधबौ—क्रि. स. [स. लब्धं]—प्राप्त करना, पाना ।

उ०—१ रुचक नदी सर परवतै, मुझ, **लब्बइ** मुनि जाय । चैत्य जुहारइ सासता, आणद अग न माय । —स. कु.

उ०—२ पण अपणौ नही पालटै, धरिमी धीरज धार । लाडू हरि **लब्धइ** लह्या, तजिया ढंढण त्यार । —ध. व. ग्रं.

लबरौ—देखो 'लपर'

(स्त्री. लबरी)

लबलबी—स. स्त्री.—बंदूक, पिस्तौल, तमंचा आदि मे लगा वह खटका जिसको खीचने से बंदूक का घोड़ा गिरता है ।

रू. भे.—लवलवी ।

लबलबौ–वि,—किसी तरल पदार्थ से तरबतर।

लबांणा–सं. पु — मुसलमान भाटों की एक जात। (मा. म.)

लबाड़ी— देखो लबाळी' (रू. भे.)

लबाड—देखो 'लबाळी' (मह., रू. भे.)

उ०—निरधन उचंड तौ मसांण खभ, खाटरौ तौ ही नाग, घणूं बोलइ तौ **लबाड** बाडलौ न बोलइ तौ मूंगड। —व. स.

लबादौ–सं. पु. [फा. लबाद.] जाडों मे पहनने का रूईदार चोगा, दगला।

लबायचौ–सं. पु. [फा. लबाच॰] कुर्त्ते आदि पर पहनने का वस्त्र विशेष।

उ०—१ तो ही तद रिणमलां रै घरै इसड़ी वडावड हुती। **लबायचौ** सिआळै जैताजी रौ मेलियौ पहरता।

—राव मालदे री बात

उ०—२ बहादुरसिंघजी रै नागौरी धमाकौ खवा में रहतौ। लोहरी मूठ रातै नाळ री तलवार गळडबै रहती। अधोड़ी रौ गळडबौ रहतौ। नव पलां रौ मीथौ रहतौ। दस पला रौ **लबायचौ** रहतौ। —बां. दा. ख्यात

लबार—देखो 'लबाळी' (मह., रू. भे.)

लबारी, लबाळ, लबाल—देखो 'लबाळी' (रू. भे.)

उ०—१ हम नहि चलैं तुमारै घरन कौ, तुम हौ बहुत **लबारी**। मीरां कै प्रभू गिरधर नागर, चरन कमळ बळिहारी। — मीरा

उ०—२ न करै बहु हास्य **लबाल**, कलहौ घणूं काल। उखेलौ मती करो ए, दंभ नै कदागरो ए। —जयवांणी

उ० —३ रांड निपूतादिक एहवी, दीधी दुरासी रे गाल। भूंडी गाल कुलक्षणी, निस दिन करै **लबाल**। —जयवांणी

(स्त्री. लबारण)

लबालब–वि. [फा. लब] १ मुंह या किनारे तक भरा हुआ, छलकता हुआ।

रू. भे.—लबथब।

लबाळी–वि.—१ अधिक बातें करने वाला, वाचाल।

२ मिथ्यावादी, झूठा, गप्पी।

रू. भे. —लबाड़ी, लबारी, लबाळ, लबोळ, लबोल, लवाल, लाबाळी, लिबाळी।

मह.— लबाड, लबार।

लबूकणौ, लबूकबौ–क्रि. अ.—हरा-भरा होना, लहलहाना।

उ०—थळ मध्यइ जळ-बाहिरी, कांई **लबूकी** बूरि। मीठा-बोला घण-सहा, सज्जण मूक्या दूरि। —ढो. मा.

लबूकणहार, हारौ (हारी), लबूकणियौ—वि०।

लबूकिओड़ौ, लबूकियोड़ौ, लबूक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लबूकीजणौ, लबूकीजबौ—भाव वा०।

लबूकियोड़ौ–भू. का. कृ.—लहलहाया हुआ।

(स्त्री. लबूकियोडी)

लबूर–स. पु.—नाखूनो से नौंचने की क्रिया या भाव।

क्रि. प्र.—भरणौ।

लबूरणौ, लबूरबौ–क्रि. स.—नाखूनो से नौचना।

उ०—अैडा अन्याई राजा सूं बदळौ नी लिरीजै जित्तै औ इकळापी सुख म्हनै ठौड ठौड़ सूं **लबूरै**। —फुलवाड़ी

२ छीनना, झपटना।

उ०—थांरै की भूंडी-भली व्हैगी तौ इण लिछमी नै लोग **लबूर** लबूर खाय जावैला। —फुलवाडी

लबूरणहार, हारौ (हारी), लबूरणियौ—वि.।

लबूरिओड़ौ, लबूरियोड़ौ, लबूर्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लबूरीजणौ, लबूरीजबौ—कर्म वा.।

लबूरियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नाखूनो से नौंचा हुआ। २ छीना हुआ।

(स्त्री. लबूरियोड़ी)

लबोळ, लबोल—देखो 'लबाळी' (रू. भे.)

उ०—ऊंचौ तौ एरंड, खाटरौ तोहि नाग, घणौ भोळौ लांफुं, बहु बोलै तो **लबोळा**। घणौ जीमै तौ भूखौ थोड़ौ जीमै तौ अभोगियौ।

—रा. सा. सं.

लब्ज—देखो 'लफ्ज़' (रू. भे.)

उ०—पण कसाई री नीच जात, फेर औरंगजेबी बादसाही सो आंधा हुवा बहै। सो मुंह सूं गैर **लब्ज** बोलिया अर गाय नूं पछाडी।

—महाराजा पदमसिंह री बात

लब्ध–वि.—१ मिला हुआ, प्राप्त।

यौ.—लब्ध कांम, लब्ध-प्रतिस्ठित, लब्धवरण।

२ कमाया हुआ, उपार्जित।

३ गणित में भाग करने पर प्राप्त भागफल।

४ स्मृति के अनुसार दस प्रकार के दासों में से एक दास।

लब्धक–स. पु.—१ राजपूतों के ३६ कुलों में से एक।

उ०—राजकुली ३६, सूरयवंस, सोमवस, यादववंस, कदब, परमार इक्ष्वाक, चाहुमांन, चालुक्य, मोरी, सेलार, सेंधव, बिंदक, चापोत्कट प्रतिहार, **लब्धक**, राष्ट्रकूट, सक, करवट, कारट, पाल, चादिल, गोहिल, गुहिल पुत्रक, धान्यपाल, राजपाल, अनग, निकुंभ दधिकर, कालामुह, दापिक, हूण, हरियर, डोसमार। —व. स.

लब्धवरण–सं. पु. यौ. [सं. लब्ध+वर्ण] पंडित, ज्ञानी।

रू. भे.—लबधवरण, लवधवरण ।

लब्धि–स. स्त्री.—१ प्राप्त होने की अवस्था या भाव, प्राप्ति ।

२ लाभ, फायदा ।

३ (गणित) मे भागफल ।

४ शुभ अध्यवसाय तथा उत्कृष्ट तप, सयम के आचरण से तत्तत्कर्म का क्षय और क्षयोपशम होकर आत्मा में उत्पन्न एक विशेष शक्ति जो २८ प्रकार की मानी गई है।

उ०—गौतम गणधर गुण निलौ, लब्धि तणौ भडार। चवदै सौ बावन सहु, नमता जय जयकार। —जयवाणी

रू. भे.—लबधि

लब्धिवत–वि. [स.] जिसने लब्धि प्राप्त करली हो।

उ०—कुसल करण स्री कुसल मुणिंद, स्री जिनपदम सूरि सुखकद। **लब्धिवंत** स्री लब्धि सूरीस, स्री जिनचद नमू निस-दीस। —स. कु.

वि. वि.—देखो 'लब्धि'

लब्भणौ, लब्भबौ – देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे.)

उ०—१ आलम मोरा ओगुणा, साहिब तूझ गुणाह। बूंद-बिरक्खा रेण-कण, थाघ न **लब्भौ** त्याह। —ह. र.

उ०—२ 'अबर' आपाणी छभा, कीधौ बैसि बिचार। पोरस पार न **लब्भ** ही, उत्तर पथ अपार। —गु. रू. बं.

लब्भणहार, हारौ (हारी), **लब्भणियौ**—वि०।

लब्भिओड़ौ, लब्भियोड़ौ, लब्भ्योडौ –भू० का० कृ०।

लब्भीजणौ, लब्भीजबौ—कर्म वा०

लब्भियोडौ –देखो 'लाभियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. लब्भियोडी)

लभणौ, लभबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे)

उ०—सुणि कहै सुभड मंत्री मकळ, लडौ वडौ मौ सम **लभौ**। सुण एम वयण 'अगजीत' सुत, अजरायल बोलै 'अभौ'। —सू. प्र.

लभणहार, हारौ (हारी), **लभणियौ**—वि०।

लभिओडौ, लभियोड़ौ, लभ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लभीजणौ, लभीजबौ—कर्म वा०।

लभस–स. स्त्री.—१ घोडा बाघने की रस्सी।

२ धन-दौलत।

३ याचक।

लभियोड़ौ–भू. का. कृ.—देखो 'लाभियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लभियोड़ी)

लभौ–वि.—१ लाभ, फायदा।

२ मिला हुआ, प्राप्त।

लम्भणौ, लम्भबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मूरख मौलि न जाणियौ, आ ओडा री मत्ति। पदम न **लम्भै** पदमणी, जसमल नेहि गत्ति। —जसमा ओडणी री बात

उ०—२ पतिसाह नमौ पारभयं, सैन असंख्या **लम्भयं**। इम किया राम आरभयं, धूंधळिया धर अम्भय। —गु. रू. ब.

लम्भणहार, हारौ (हारी), **लम्भणियौ**—वि०।

लम्भिओड़ौ, लम्भियोड़ौ, लम्भ्योडौ—भू० का० कृ०।

लम्भीजणौ, लम्भीजबौ—कर्म वा०।

लम्भियोड़ौ—देखो 'लाभियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लम्भियोडी)

लमछड–सं पु.—१ भाला या बरछा।

२ साग।

३ देखो 'लामछड (रू. भे.)

वि.—अधिक लम्बा व पतला।

लमझम—देखो 'रिमझिम' (रू. भे.)

उ०—और ही झूला रा झूला **लमझम** करता फूल बाग नूं आवै है लहरिया गावै है। गहरौ गहकै है, डेडरा डहकै है। —र हमीर

लमटंगौ–वि.—लम्बी टागो वाला।

लमतड़ंग—देखो 'लबतडंग' (रू. भे.)

लमेक–क्रि. वि. [अ. लम्ह:+रा. एक] कुछ समय तक, क्षण भर।

लय–सं पु.—१ विनाश, समाप्ति।

उ०—करता अकरता निरगुण माई, जाग्रत स्वप्न सुसुप्ती ताई। इन तीनो का मन अभिमानी, उत्पति थिति **लय** मनमानी। —सुखरामजी महाराज

२ एक पदार्थ का दूसरे मे पूर्ण विलीन होना, समा जाना।

३ अनुराग या लग्न के कारण एकाग्रचित् या मग्न होना।

उ०—सभव कौ अनुभौ घरि जातै, मिटै ममता समता रस जागै। पाप संताप मिटै तब ही जब, आपसुं आपही की **लय** लागै। —ध. व. ग्रं.

४ किसी कार्य का आगे कारण में समाविष्ट होना या फिर कारण के रूप में परिणित हो जाना।

५ सृष्टि का नाश, प्रलय।

६ लोप, विनाश।

७ यमसभा में उपस्थित एक प्राचीन नरेश।

सं. स्त्री —८ सगीत एव कविता में गति सामञ्जस्य रखने वाला तत्त्व, जो कृत्तियो (कविता-पाठ, गायन नृत्यादि) मे आपेक्षिक उतार-चढाव को नियमित रखते हुए उसे कोमलता, माधुर्य एवं सौन्दर्य प्रदान करता है।

वि. वि.—कविता गीतों (गायन) आदि के स्वर-उच्चारण में जो समय लगता है वही लय है तथा जिसे नियन्त्रित एवं संयम रखने के लिए ताल का सहारा लिया जाता है।

९ गीत की धुन, गाने का स्वर।

१० सगीत में गति के विचार से गाने का ढंग या प्रकार जिसके तीन भेद कहे गये है—विलंबित, मध्य, द्रुत।

११ वार्तालाप के समय शब्दो के उतार-चढाव की दृष्टि से बोलने का ढंग या क्रिया, लहजा।

उ०—इतरौ सुणतां ईज आदतन ठाकर रौ एक हाथ चट मूछां माथै जाय पूगतौ अर जै माथै जोर देय नै ठाकर लबी लय सू बोलता जै ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ माताजी री —रातवासौ

१२ अवसर, मौका।

रू. भे.—लौ।

लयण-सं. स्त्री. [सं. लयन] १ लय होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

२ आराम, विश्राम।

३ विश्राम गृह।

४ गुफा, कन्दरा।

लयता-सं. स्त्री.—१ लय होने की क्रिया या भाव, समाप्ति, नाश।

उ०—सिव सक्ति का सब विस्तारा, ब्रह्मा कीट लग कर रे। इनमें ई उत्पति थिति अरु लयता, निज स्वरूप निरपख रे।

—सुखरामजी महाराज

लयनपुन्न-सं. पु. यौ. [सं. लयन+पुण्य] जगह या स्थानादि दान मे देने से होने वाला पुण्य। (जैन)

लयलीन-वि. यौ. [स. लय+लीन] १ किसी के प्रेम में मग्न, लीन, आशक्त।

उ०—माया-जळ-मांहि मच्छरिउ, लागि रहिउ लयलीन। गंगा-तटि मूकी गली, हूं मारिसि मन-मीन। —मा. का. प्र.

२ लगा हुआ, फंसा हुआ।

उ०—महारौ महारौ करि धन मेलवुं, लोभ वसे लय-लीन। नरक तणां घर थूं छ्ु नवनवा, इणमे मेख न मीन। —ध. व. ग्रं

३ देखो 'लवलीन' (रू. भे.)

लया—देखो 'लता' (रू. भे.) (जैन)

लयाकत-देखो 'लियाकत' (रू भे.)

लरड़—१ देखो 'लडड़' (रू. भे.)

उ०—अदाता, आप किसौ विस्वास करौला—इत्तौ ऊचौ अेलम के फगत दोय घड़ी में बेंत-बेत लांबा बाळ आय जावै। सेवां ज्यूं लरड़-लरड बधै। —फुलवाड़ी

लरड़ती—देखो 'लरड़ी'

लरड़ियौ-स. पु.—१ भेड का बच्चा।

२ देखो 'लरड़ौ' (अल्पा., रू. भे)

लरड़ी-सं. स्त्री.—१ मादा भेड़।

२ लाक्षणिक अर्थ में अधेड़ स्त्री के लिए प्रयुक्त शब्द।

मुहा.—१ लरडी बणणौ=कायर बनना, डरपोक बनना।

२ लरडी माथै ऊन कुण छोडै=गरीब का सब शोषण करते हैं।

लरड़ौ-स. पु. (स्त्री. लरडी) १ नर भेड।

उ०—व्हा व्हैगौ इणरै हाथा न्याव? अैडी न्याव निवेडण जोग अकल व्हैती तौ तडौ लियां लरड़ियां रै लारै ढरर-ढरर करतौ क्यूं रवडतौ। —फुलवाडी

२ लाक्षणिक अर्थ मे अधेड व्यक्ति के लिए प्रयुक्त शब्द।

ज्यू —मोटौ सारौ लरड़ौ व्हियौ है।

अल्पा.,—लरड़ियौ, लरडियौ।

लरज-स. पु.- सितार के छ: तारों में से पाचवा तार।

लरडियौ—देखो 'लरडौ' (अल्पा., रू. भे.)

लरडौ—देखो 'लरडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लरडी)

लराहा-सं. पु.—सोलंकी वश के क्षत्रियों की एक शाखा।

(बा दा. ख्यात)

लरियाळ—देखो 'लटियाळ' (रू. भे.)

उ०—इसै में भागेसुर मगायजै छै। सु किण भांत छै। केसर री क्यारी दोलळी, वासग-माथा री! थोहर रा बीडा री, भाखर रा खुड़ा री, भूरै मोर री, काळै पान री आबू रा विहुडा री, भमरमार, मिरघमाळ लरियाळ चिडियाळ, चोटडियाळ। —रा. सा. स.

लळ-स. स्त्री—१ उत्कठा, आशा।

लल-स. स्त्री.—१ अत्यधिक ठंडी वायु।

२ बुद्धि विचार।

३ शक्ति का अश।

४ शुभ लक्षण या गुण।

लळक-स. स्त्री.—१ लचक, मोच।

२ झुकाव।

उ०—मकोडौ कैवे मा गुड़ री भेली ल्याऊ, तेरी टागा री लळक तौ कैवै ही है। —दसदोख

ललक-स. स्त्री—१ गहरी अभिलाषा।

२ लोच, लचक, झुकाव।

३ प्रोत्साहित करने की क्रिया या भाव।

उ०—१ कलक वीरां ललक भड़ां अहकारीया, धारीया खत्रीवट घड़ै धूरै। कळाधर फाबियौ ईस वाळै कमळ, भुजा यम ढाबियौ दुरंग भूरै। —पीरदान आढौ

उ०—२ तौ आरबखा हाथी रै होदै बैठौ ललकां करै है वा कबांण कनै है। —द. दा.

४ गायन की तीखी व ऊँची ध्वनि।

उ०—१ लाग सिघवा ललक, खलक हुक बक धूजै खित। करण टूक केवियां, रूक रण रहत रूक रत। —गिरबरदांन कवियौ

उ०—२ सहनाइन लागी ललक सिंधु सुणावाया। —व. भा.

५ पक्षियो का मधुर कलरव, मीठी ध्वनि।

उ०—घुमडै काठळ आय, चढी घनघोर की। ललकां कोयल लार, किलका मोर की। —महादान मेहडू

रू. भे.—ललक्क।

लळकणौ, लळकबौ–क्रि· अ - १ झुकना, लचकना, मोड़ खाना।

उ०—सोढौ राणौ राय चपेली रौ फूल, मूमल केळू कामठी। महकण लाग्यौ चंपेली रौ फूल, लळकण लागी केळू कांमठी। —लो. गी.

२ देखो 'ललकणौ, ललकबौ' (रू. भे.)

लळकणहार, हारौ (हारी), लळकणियौ—वि०।

लळकिग्रोड़ौ, लळकियोडौ, लळक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लळकीजणौ, लळकीजबौ—भाव वा०।

ललकणौ, ललकबौ–कि· अ—१ तीक्ष्ण स्वर से गायन करना।

२ तेज व प्रखर हवा की ध्वनि होना।

उ०—ललकत जाभलिया बाजणनै लागी भूखां मरतोड़ी खलकत पड भा ी। बोरा थळ बिहूंणा तिल खळवत तरजै। बूढी चैली नै साधू ज्यौ बरजै। —ऊ का

३ गर्जना, दहाडना।

उ०—माच धमचक मचक अछक दुहुँ माभियां, तोड साकळ ललक सीह तूटा। सावळा हुला बीजूजळां साफळै, जोध रिणमा 'जैमाल' जूटा। —सेरसिह कुसलसिंह रौ गीत

४ ढीला पडना।

उ०—हियै गाडियौ हार, तुररा तूटा तार। नखां री रेख, दूज चद रै वेख। पेच ललकिया, सिरपेच ढळकिया। कंवर ज्यूं ज्यू रस री बात जपै 'रतना' रौ त्यूं त्यूं अंग कपै। —र हमीर

५ शीघ्रता से किसी की रक्षा के लिए दौडना।

उ०—हुतौ हिंदवा तणौ धरम 'सूरा' हरौ, सबळ चिंता पडी देस सारै। दुख मरुधर तणा रखै हिव देखस्या, ललकिया देव जसवंत लारै। —ध. व. ग्रं.

६ देखो 'लळकणौ, लळकबौ' (रू. भे,)

उ०—पद्‌मिनि हस्तिनी सखिनी चित्रिणी एहवी स्त्री सोल स्रंगार सारी, सुवरणमइ करवइ ढलकतइ, चुडइ खलकतइ, कंकण झलकतइ, हाथ ललकतइ, सीतल गगोदकि हस्तोदक दीधा। —व. स.

ललकणहार, हारौ, (हारी), ललकणियौ—वि.।

ललकिग्रोड़ौ, ललकियोड़ौ, ललक्योड़ौ—भू. का. कृ.।

जलकीजणौ, ललकीजबौ—भाव वा.।

ललक्कणौ, ललक्कबौ, लळक्कणौ, लळक्कबौ—रू. भे.।

ललकार–स पु—१ युद्ध मे दी जाने वाली प्रोत्साहन युक्त आवाज।

उ०—बित लीजत, साभळ अठवळा, दुरवेस चडै अस जोस दळां। हलकार भडा ललकार हुवै, चगथा मुख तेज सरेज चुवै। —रा. रू.

२ रणागण मे ऊचे स्वर से किया जाने वाला युद्ध, आव्हान, हाका।

उ०—वड रावत ऊमसिया तिण वेळा, एम सुणै भुज आंमळता। ललकार हुवौ भड आवै लासा, छोडै तेज तुरी छिळता। —गु. रू. बं.

३ कोलाहल, शब्दघोष।

उ०—सरकै के गज धकै सकत्ती, रंज धूधळी कोळाहळ रत्ती। अति बळ अखभे जूट अपारा लगर प्रबळ कळळ ललकारां। —रा. रू.

४ गायन में ऊची व तीक्ष्ण ध्वनि।

उ०—गहणा में लडाभूंब हुयोडी लुगाया री लैण लुहर री ललकार मे जिण टेम सामनै वाळी लैण नै जबाब देवणनै आगै बढती तौ उणा रै पगा रै धम्मीड़ा सू धरती धूजण लागती। —रातवासौ

५ उत्साहित करने की ध्वनि, हौसला बढाने की आवाज।

उ०—आज वा ललकार मुणीजी। पीढियां सूं दब्योड़ा अभ्यागत अेक जत्थै खमखरी खाय माथौ ताण्यौ। —फुलवाड़ी

६ वायु का प्रवाह।

उ०—भातै पहल भगाविया, लूआं ललकारां। जोड़ा कूआ आविया, धोळां दोपारां। —लू.

७ तेज आवाज, ऊंची आवाज।

उ०—कळकार वीरवाणी कजाक, हलकार वुहू बळ बाज हाक। धानक टकार भळकार धोह, ललकार मार अणपार लोह। —वि. स.

मह.,—ललकारौ

ललकारणौ, ललकारबौ—क्रि· स.—१ युद्ध झगड़े या प्रतियोगिता के लिए उच्च स्वर में आव्हान करना।

उ०—१ सत्रा दळ मुगळ सैयद सेख, बणै ग्रह बाज कबूतर वेख।

सरा अप्रमाण पठाण सहारि, लिया कर सैल नरा ललकारि ।
—मे. म.

उ०—२ तद कुंवरसी पूठै लागियौ सारै साथ नूं ललकारै छै ।
—कुंवरसी सांखला री बात

३ जोश दिलाना, उत्तेजित करना ।

उ०—बड़ी खपरिया रा तीर च्यार तौ मूठ में छै और तरकस दोय होदां में छै । राव राजपूता नूं विरदावै छै ललकारै छै, सो घोडा रा सवार हाथी सूं पावडा बीस-तीस अगल-बगल ऊभा छै ।
—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ अंबर सबर बिण संबर अकुंळावै, जळहर बळियां बिन जळियां जिय जावै । लोरां लै लूरां मोरां ललकारै, पांसू पड़ियोडा आंसू पळकारै ।
—ऊ. का

४ चुनौती देना ।

उ०—नांनी मा अर गूंगी जैड़ी अणगिण, अलेखू लुगायां रै सागै करयोड़ा अन्याव उणनै ललकारण लागा ।
—फुलवाड़ी

५ तेजी से हांकना, चलाना ।

उ०—देवर म्हांरा, थे छौ निपट नादांन जी म्हारा थे छौ निपट नादान जी, थारौ लीलड़िया ललकारौ, म्हैं बाला जी नै धोखस्यां ।
—लो. गी.

६ सतर्क करना, सावधान करना ।

उ०—म्हानै गिणजौ मूढ, अमलियां आंगणगारां, करण पर उपकार, लार थांनै ललकारां । निज कीन्हौ थे नास, कह्यौ किण रक्षा करस्यौ, बात खरी है पण, मौत विन नाहक मरस्यौ ।
—ऊ. का.

ललकारणहार, हारौ (हारी), ललकारणियौ—वि. ।
ललकारिप्रोड़ौ, ललकारियोड़ौ, ललकारयोड़ौ—भू. का. कृ. ।
ललकारीजणौ, ललकारीजबौ – कर्म वा. ।

ललकारियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ युद्ध या प्रतियोगिता के लिए उच्च स्वर से आव्हान किया हुआ. २ जोश दिलाया हुआ, उत्तेजित किया हुआ ३ चुनौती दिया हुआ ४ तेजी मे हांका या चलाया हुआ. ५ सतर्क किया हुआ, सावधान किया हुआ ।
(स्त्री. ललकारियोडी)

ललकारौ–स. पु. (ब. व. ललकारा) १ झूले को हिलाने डुलाने हेतु दिया जाने वाला धक्का ।

उ०—रांणी रैणादे हीडण बैठचा, धरती न झेलै भार, ओजी सूरजजी ललकारौ दिओ, ओ हिंडो गयौ गिगनार, ओजी वन खंड मे हिंडोळौ माडचौ, रेसम री पट डोर, ओजी ।
—लो. गी.

२ देखो 'ललकार' (मह., रू. भे.)

उ०—१ दोनूं ही साहिब म्हारी पीठ पाछै खडा रह्यौ, ललकारा करौ चाकरा रौ रग देखौ ।
—मारवाड़ रै उमरावा री वारता

उ०—२ सो भैंस रड़कती सुणै छै । नजीक गयां भरमल रौ बोल सुणियौ जो ऊभी ललकारा करै छै—'फलाणी भैंस दोहौ । फलाणी री कटी छोड दौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

लळकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ लचका हुआ, झुका हुआ, मोड खाया हुआ ।
२ देखो 'ललकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लळकियोडी)

ललकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ ऊंचा व तेज स्वर में गायन किया हुआ. २ उत्साहित किया हुआ, जोश दिलाया हुआ. ३ आक्रमण किया हुआ. ४ ललकारा हुआ. ५ शीघ्रता से किसी की रक्षा के लिए दौड़ा हुआ ।
६ देखो 'लळकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. ललकियोड़ी)

लळकौ–सं. पु.—मस्ती मे झूमने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ जै राजा इण भात लळका देता फिरै तौ वे राजा ई कांई ।
-- फुलवाडी

२ नमने या झुकने की क्रिया या भाव ।

उ०—जसरी तुल पगदै लळका ले जावै, हीरा मांणक सब हळका व्है जावै । धिनधिन दाता जग साता मग धाया, जननी जसधारी थारी जिण जाया ।
—ऊ का.

ललकौ–सं. पु.—गायन की तेज ध्वनि या लहर ।

रू. भे.—ललक्कौ ।

ललक्क—देखो 'ललक' (रू. भे.)

उ० - हुव मुख ललक्क कलक्क हली, नव लक्ख थई चख लक्ख लली । भड़ खल्ल कगल्ल बगल्ल भड, धड लल्ल पगल्ल नहल्ल धडं ।
—पा. प्र.

लळक्कणौ, लळक्कबौ—देखो 'ललकणौ, ललकबौ' (रू. भे.)

उ०—लळक्कै गजां पोगरां नाळ लोभा, गलक्कै मुखां सूरमा भाण सोभा । गुडै बैदळां आगळा तोप गाडा, जठै बाण गोळां सराजाम जाडा ।
—सू. प्र.

ललक्कणौ, ललक्कबौ—देखो 'ललकणौ, ललकबौ' (रू भे)

उ०—तुरकांण तलक्किय हिन्दु ललक्किय हूर हलक्किय हेरि वरं । कर सेल भळक्किय ढाल ढळक्किय खाळ खळक्किय स्रोन भर ।
—ला. रा.

ललक्कणहार, हारौ (हारी), ललक्कणियौ—वि० ।
ललक्किप्रोड़ौ, ललक्कियोड़ौ, ललक्क्योड़ौ— भू० का० कृ० ।
ललक्कीजणौ, ललक्कीजबौ—भाव वा० ।

लळक्कणहार, हारौ (हारी), लळक्कणियौ—वि०।
लळक्किग्रोड़ौ, लळक्कियोड़ौ, लळक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लळक्कीजणौ, लळक्कीजबौ—भाव वा०।

लळक्कियोड़ौ—देखो 'ललकियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लळक्कियोड़ी)

ललक्कियोड़ौ—देखो 'ललकियोडौ (रू. भे)
(स्त्री ललक्कियोड़ी)

ललक्कौ—देखो 'ललकौ' (रू. भे.)
उ०—लेण कत अच्छरा गैणांग माग ग्राबा लागी, पूरां सूरा बीरां सूं जमाबा लागी प्रीत। ललक्का उछट्टै भैरू चंडका रमाबा लागी, गाबा लागी जोगणी बीरांण मंत्र गीत। —सुखदान कवियौ

ललचणौ, ललचबौ—क्रि· अ.—१ लालच मे पडना, लोभ उत्पन्न होना।
उ०—हियै बसाई हरखसूं, मधुसूदन महाराज। नर जिणसू ललचै नही, सो त्रिभुग्रण सिरताज। —बां. दा.
२ किसी प्रिय वस्तु को प्राप्त करने हेतु अधीर होना, लालायित होना।
३ आशक्त या मोहित होना।
उ०—नैना लोभी रै बहुरि सकै नहिं ग्राय। रोम रोम नख सिख सब निरखत, ललच रहै ललचाय। —मीरां
ललचणहार, हारौ (हारी), ललचणियौ—वि.।
ललचिग्रोड़ौ, ललचियोड़ौ, ललच्योड़ौ—भू. का. कृ.।
ललचीजणौ, ललचीजबौ—भाव वा.।
लचणौ, लंचबौ, ललच्चणौ, ललच्चबौ—रू. भे.।

ललचाड़णौ, ललचाड़बौ—देखो 'ललचाणौ, ललचाबौ' (रू. भे.)
ललचाड़णहार, हारौ (हारी), ललचाड़णियौ—वि.।
ललचाड़िग्रोड़ौ, ललचाड़ियोड़ौ, ललचाड़्योड़ौ—भू. का. कृ।
ललचाड़ीजणौ, ललचाड़ीजबौ—भाव वा.।

ललचाड़ियोड़ौ—देखो 'ललचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. ललचाड़ियोड़ी)

ललचाणौ, ललचाबौ—क्रि. अ.—१ लालच या लोभ में पड़ना।
उ०—लोभै ललचांणा थकौ, मत लागि लपट्टा, काळ तकै सिर ऊपरै करसी चटपट्टा। ले जासी इक छिन मे ज्यू वाउ छलट्टा, राहगीर सध्या समै सौवे इकहट्टा। —ध. व. ग्रं.
२ कोई प्रिय वस्तु की प्राप्ति हेतु अधीर होना, लालायित होना।
उ०—१ नैना लोभी रै बहुरि सकै नहिं ग्राय। रोम रोम नख-सिख सब निरखत, ललच रहै ललचाय। —मीरा
उ०—२ तौ भुज पर दिली तखत, अरि क्यूं तक्कत ग्राय। फीटा पड़ घर ग्या फकत, चित जरमन ललचाय। —जैतदांन बारहठ
३ आशक्त होना, मोहित होना।
उ०—हुय नार सुहग्गा, मिळियौ मग्गा, दांणव पग्गा रच दग्गा। ललचायौ ठग्गा, नाचण लग्गा, सीस करग्गा विग्गसंतू। —भगतमाळ
४ ऐसा कार्य करना कि जिससे किसी के मनमें कोई वस्तु प्राप्त करने हेतु लोभ या लालच उत्पन्न हो।
उ०—बेग सिकदर वचन सिवाई, जवन इनायत तणौ जमाई। इणरै कौल मिळण कै ग्राया, लेखे रीत किता ललचाया। —रा. रू.
५ उमगित होना, उमंगयुक्त होना।
क्रि. स —६ अपने रंग-रूप या हाव-भाव से किसी को मोहित करना या आसक्त करना।
ललचाणहार, हारौ (हारी), ललचाणियौ—वि.।
ललचायोड़ौ—भू. का. कृ.।
ललचाईजणौ, ललचाईजबौ—कर्म वा.।
ललचाड़णौ, ललचाड़बौ, ललचावणौ, ललचावबौ, ललच्चणौ, ललच्चबौ - रू. भे.।

ललचायोड़ौ—भू का. कृ—१ लालच या लोभ में पड़ा हुआ. २ कोई प्रिय वस्तु प्राप्त करने हेतु अधीर हुवा हुआ, लालायित हुवा हुआ. ३ आशक्त हुवा हुआ, मोहित हुवा हुआ. ४ ऐसा कार्य करा हुआ कि जिससे किसी के मन मे कोई वस्तु प्राप्त करने के लिए लोभ या लालच उत्पन्न हो। ५ किसी प्रिय वस्तु की प्राप्ति के लिए अधीर या लालायित किया हुआ. ६ उमंगित हुवा हुआ. ७ अपने रंग-रूप या हाव-भाव से किसी को मोहित किया हुआ या आशक्त किया हुआ।
(स्त्री. ललचायोडी)

ललचावण, ललचावणी—सं. स्त्री.—ललचाने की क्रिया या भाव, लालायित होने की क्रिया या भाव।
उ०—खवास ग्राय कवर नै हकीकत कही। बावना चनण के बिड़ै ग्रैहे रूप मिळजे तौ सही। जठै कवर मनमें तौ ग्रा बात घणी चाही, चौड़े नटवा की सूरत दरसाइ। पाछौ जवाब दियौ ग्रमार तो म्हैं नई रैस्या, कहस्यौ तौ बावडता ग्रावस्यां। म्हाकै तौ तीज को वचन छै, जीसू पांवणा जास्या, मन में तौ ग्रा बात छै। ग्रौ मेळ तौ लाखां ही, बाता मिळाइजै। कवाही तौ सरूपण यां कि ललचावणी देखी ही चाहीजै। खवास पनां नै या हकीकत कही। सुणताइ जांण्यौ मन की हूंस मनं मे ही रही। —पनां

ललचावणौ, ललचावबौ—देखो 'ललचाणौ, ललचाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ सकळ चढावै सीस, दांन धरम जिण रौ दियौ। सौ

खिताब बगसीस, लेवण किम ललचावसी ।

—केसरीसिंह बारहठ

उ०—२ मोड़ै मुख मोडै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरण नै सीतळ सत वाळी । लुच्चा ललचावै लालच घिन लागै, लोचण जळ मोचण सोचण खिण लागै । —ऊ. का.

उ०—३ सुणै वयण अंगद कळह, सुभड़ सरसाविया, थरक जळ थाळ जिम त्रिकुट जण थाविया । चाळ बाधै धुरा दनुज ललचा-विया, अतवप अकंपन समर सज आविया । —र. रू.

ललचावणहार, हारौ (हारी), ललचावणियौ —वि. ।

ललचाविग्रोड़ौ, ललचावियोड़ौ, ललचाव्योड़ौ —भू. का. कृ. ।

ललचावीजणौ, ललचावीजबौ—भाव/कर्म वा. ।

ललचावियोड़ौ देखो 'ललचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ललचावियोड़ी)

ललचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ लालच या लोभ में पड़ा हुआ. २ कोई प्रिय वस्तु प्राप्त करने हेतु लालायित हुवा हुआ. ३ आशक्त हुवा हुआ, मोहित हुवा हुआ ।

(स्त्री. ललचियोड़ी)

ललच्चणौ, ललच्चबौ—१ देखो 'ललचणौ, ललचबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'ललचाणौ, ललचाबौ' (रू. भे.)

उ०—सीहा थाहर सीहरू, हुवा न इचरज होण । कांम 'पता' कमधज्ज रा, सुणण ललच्चै स्रोण । —किसोरदान बारहठ

ललच्चियोड़ौ देखो 'ललच्चियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'ललचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ललच्चियोड़ी)

ललणा—देखो 'ललना' (रू. भे)

उ०—ग्वाड़ बिचाळै पींपळी ललणा, ललाजी जै का छै अड़बड़ पांन, प्यारी लागी कुळबहु ललणा —लो. गी.

लळणौ, लळबौ—देखो 'लुळणौ, लुळबौ' (रू. भे.)

उ०—बका भड़ मुरधर बिचै, वळै लळै तज वंक । 'पातल' ताय तपायनै, सीधा किया सणक । —चिमनदान रतनू

उ०—२ अहप सिर लळ अचळ चळ यळ, वाज हूंकळ कळळ वळ-वळ । खळळ चळवळ सरित खळ हळ, समळ पळगळ लीध सामिळ ।

—र. ज. प्र.

लळणहार, हारौ (हारी), लळणियौ—वि. ।

लळिग्रोड़ौ, लळियोड़ौ, लळ्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लळीजणौ, लळीजबौ—भाव वा. ।

लळियोड़ौ—देखो 'लुळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लळियोड़ी)

ललत—देखो 'ललित' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ लुघ चवदह पायै ललत, वलि गुर अति वताइ । गुण साभळि रीजै गुणी, सरहा एण सुभाइ । —पि. प्र.

उ०—२ नव नव भांति पटुली नवी, पेखि भावि तै अति भोलवी । ललत गरभेसर लक्षणवत, मध माधव रमि वसत ।

—प्राचीन फागु-संग्रह

ललतमुकुट—सं. पु.—डिंगल का एक गीत जो कुंडली या छंद के समान ही दोहे के बाद त्रिभंगी जोड़कर रचा जाता है । हिंदी मे इसका दूसरा नाम त्रिभंगी भी है ।

उ०—भण दोहै पर छद त्रिभगी, सिंघविलोकण सार । ललत-मुकुट सो गीत सुलक्षण, वरणै 'मंछ' विचार । —र. रू.

रू. भे. – ललितमुकुट ।

ललता – देखो 'ललिता' (रू. भे.)

उ०—पीछोळै आई प्रगट, हीरां उच्छव हेत । बांकी द्रगनि बिलो-कतां, ललता मन हर लेत । —बगसीरांम प्रोहित री वात

ललना—सं. स्त्री. [स.] १ स्त्री, रमणी (अ. मा., ह. ना. मा.)

उ०—चग अनै मुख चंग बजावै, उडावै गुलाल । लालन जै तजी ललनां, तिण कौ कवण हयाल । —ध. व. ग्र.

२ जिव्हा ।

३ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण और दो सगण होते है ।

रू. भे.—ललणा, ललूना

ललपत—स. स्त्री —खुशामद, चाटुकारी ।

लळभख—स. पु.—मास ?

उ०—लळभख सावज लेवता, होय लत्थौ बत्तं । साजै हाथ कटा-रियां, मत वाहै खत्तं । —वी. मा.

ललयांगी—वि. —ललितांगी ।

उ०— रूप निरोपमी मेदनी, आछा कापड़ झीणइ लंक । ललयांगी घन कूवली, अहिरध बाळा निरमळ दत । —बी. दे.

ललरणौ, ललरबौ—क्रि. स.—१ लड़खड़ाते हुए बोलना ।

उ०—बहै इम सेल कढै खग बीज, खळां खग झाट करै घर खीज । उभा धड़ केयक सीस उडंत, लुटै ललरै अरि जेम लुडंत ।

—सू. प्र.

२ तुतलाना ।

रू. भे.—ललराणौ, ललराबौ, ललरावणौ, ललरावबौ

ललराणौ, ललराबौ—देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू. भे.)

ललराणहार, हारौ (हारी), ललराणियौ—वि. ।

ललरायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

ललराईजणौ, ललराईजबौ—भाव वा. ।

ललरायोड़ौ-भ. का. कृ.—१ लडखड़ाते हुए बोला हुआ. २ तुतलाया हुआ।

(स्त्री. ललरायोड़ी)

ललरावणौ, ललरावबौ—देखो 'ललरणौ ललरबौ' (रू. भे.)

उ०—कर कपै लोयण भरै, मुख ललरावै जीह। मावड़िया जुध में मिळै, पुणतापण रा दीह। —बां. दा.

ललरावणहार, हारौ (हारी), ललरावणियौ—वि. ।

ललराविप्रोड़ौ, ललरावियोड़ौ, ललराव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

ललरावीजणौ, ललरावीजबौ—कर्म वा. ।

ललरावियोड़ौ—देखो 'ललरयोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ललरावियोड़ी)

लळवळ-स. स्त्री.—मुड़ने की क्रिया।

उ०—चख ग्रारण धिखता रूप चोळ, क्रीड़ा करत मधुकर कपोळ। पोगरप लाग लळवळ ग्रनूप, राग रा रीझिया नाग रूप।

—सू प्र.

लळवळणौ, लळवळबौ—१ कोमल व लचिली वस्तु का मुडते हुए हिलना।

उ०—१ **लळवळता** पोगरा पाय खळहळता लंगर, झळहळता चख झाळ, चोळ भळहळता चाचर। घरा धूळ धकरूळ, करै फूकार कराळा, ग्रहि उखलै गेतूळ, तूळ जिम मूळ तराळा। —सू. प्र.

२ मस्ती से झूमना।

उ०—बरबरता उमरा तुरा ग्रापतां ग्रताई, **लळवळतां** सिंधूरा त्रंबट वाजता ग्रघाई। जांमगियां जागणी, बहुत लागणी बदूका, भरळकतां साबळा, चहूं कांनिया ग्रचूका। —बखतौ खिडियौ

३ लचकना।

उ०—भीगार भाति भल्ली भडिज्ज, **लळवळइ** ग्रंग लेजम्म लिज्ज। वीदड़उ चडिय हुइ खत्रीवट्ट, दोखियां सीसि देवा दबट्ट।

—रा. ज. सी.

लळवळौ, ललवलउ, ललवलौ-वि.—कोमल, सुन्दर।

उ०—१ **लळवळ** भेवै लळकता, सुथरै डील सुभाग। भारतवाळी भौम पर, नसल नागोरी रग। —नारायणसिंह सादू

उ०—२ ग्रह नव जुव्वण नेमिकुमरू जादव कुल धवलौ। काजल सांमल **ललवलउ**, सुललिय मुह कमलौ।

—प्राचीन फागुन-संग्रह

रू. भे.—लल्लवळ।

लळवळियौ-वि.—ग्रलबैला, शौकीन।

उ०—ग्राप झरोखै बैठिया, **लळवळिया** सिरदार। हाजर रहती गोरडी, सज सोळा सिणगार। जी उमराव थांरी सूरत प्यारी लागै म्हारा राज। लो गी.

ललांम-सं. पु [स. ललाम] १ घोडा।

[स. ललामम्] २ घोडे को पहनाए जाने वाला गहना या ग्राभूषण।

३ घोड़े या सिंह की गर्दन के बाल।

वि. [सं. ललाम] १ सुन्दर, रमणीय।

उ०—१ साथ करै 'सिवदत्त' रौ, धन चद्रा सुरधाम। गुण सीता सत्वर गई, लै गळबांह **ललांम**। —वं. भा.

उ०—२ हरियौ भरियौ धान, ऊतरै सदा सतोळौ। ढिगला लगै **ललांम** धोर धन देवण पोलौ। —दसदेव

२ श्रेष्ठ उत्तम।

३ प्रधान, मुख्य।

४ लाल रग का।

देखो लीलाम' (रू. भे.)

उ० – गाया-भैंस्या, साढया 'र-ऊट वोरा लेग्या ग्रर तरवार-बन्दूका **ललांम** हुयगी। —दसदोख

लला-स पु—१ एक प्रकार के फूल का पौधा।

उ०—सिव सिसदा ग्रख मदार सार **लला** जाफरा रायवेली गुलाब छब्बू केवड़ा केतकी जाय धाब —ग्रग्यात

२ देखो 'लालो' (रू. भे)

उ०—१ जांनै वाला ही **लला**, फरियाद हमारी सुणजा। छतिया फटै विरहागन झड़दा, मुखडै सै मुखड़ा मिलाजा। —रसीलै राज

ललाई-स. स्त्री.—लालिमा।

उ०—पिछली दो पहर रात मे चोरो के डर से नींद भी न ग्राई ग्रैते मे पूरब की तरफ ग्रासमान में **ललाई** दिखाई।

—दुरगादत्त बारहठ

लळाक-क्रि. वि.—१ लचक के साथ, लचकता से।

उ०—थोथी करड़ावण राखणवाळा जगी रूंख चरड़ चरड़ उथळी-जण लागा। लुळताई राखणवाळा कवळा बांटका ग्रठी-उठी **लळाक-लळाक** लुळै पण वांरी की नी विगडै। —फुलवाड़ी

ललाड़—देखो 'ललाट' (रू. भे)

मुहा.—तिलक री वेळा ललाड पाछौ करणौ=ग्रवसर खो देना।

ललाट-स. पु. [सं. ललाट] १ माथा, मस्तक, भाल।

उ०—तठै ग्रागवौ खाग हूँ छाग तोड़ै, चडी कालिका मातरै स्रोण चौडे। लगावै सबे सेस बिंदी **ललाटां**, करै फेर विस्राम पाखै कपाटा। —मे. म.

२ भाग्य, तकदीर। (डिं. को)

३ भाग्य में लिखी हुई बात।

पर्याय—भाळ, भोबरौ, अलिक, ताळौ, गोधि, नसीब, करम, भाग, तकदीर, चाचर, अळीक,

रू. भे.—नलाड, नलाळ, निला.ड, निळाडी, निलाट, निलाटी, निलाड, निळाडी, निल्लाट, ललाड, ळळाटी, लिलाड, लिलाड़ी, लिलाट, लिलार

अल्पा.—लिलाड़ी, लीलाड़ी।

यौ.—ललाट-पटळ, ललाट-पट्ट, ललाट-पट्टिका, ललाट-रेखा, ललाट-लेख।

ललट-पटळ–सं. पु. यौ. [स. ललाट+पटल]—माथे का तल, भाल।

ललाट-रेखा–सं. स्त्री. यौ. [सं. ललाट+रेखा]—भाग्य की रेखा, प्रारब्ध।

ललाटाक्षि–सं. स्त्री. [सं.] एक राक्षसी जो अशोक वन में सीता के संरक्षण हेतु नियुक्त की गई थी।

ललाटि देखो 'ललाट' (रू. भे.)

उ०—राजांन जान सगि हु'ता जु राजा, कहै सु दीध ललटि कर। दूरा नयर कि कोरण दीसै, धवळागिरि किना धवळहर। —वेळी

ललाणौ, ललाबौ—देखो 'ललावणौ, ललावबौ' (रू. भे)

ललाणहार, हारौ (हारी), ललाणियौ—वि।

ललायोड़ौ—भू का कृ.।

ललाईजणौ, ललाईजबौ—भाव वा.।

ललयोड़ौ—देखो ललावियड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. ललायोडी)

ळळावट–स. स्त्री झुकना क्रिया का भाव।

उ०—गळोवळ हेक चटा बख गूंथ, ळळावट हेक लुळै हुइ लूंथ चळव्वळ हेक हुआ अन चोळ, घारां मुहि हेक दियै घमरोळ —गु. रू. बं.

ललावणौ, ललावबौ–क्रि. स.—टिलाना, फुसलाना।

उ०—रळै रै माथै वोहरां नंदवाणा रो करज, लेवै सु वोहरौ रोज मांगण आवै। ताहरां रळौ कहै, 'आज देवा काल देवां।' इण भात वोहरां नूं रोज ललावै वोहरौ १ कहै, 'रळीया नूं काहू दबावा'। —बात रळै गढवी री

ललावणहार, हारौ (हारो), ललावणियौ—वि।

ललाविओड़ौ, ललावियोड़ौ, ललाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

ललावीजणौ, ललावीजबौ—कर्म वा.।

ललाणौ, ललाबौ—रू. भे.।

ललावियोड़ौ–भू. का. कृ.—टिलाया हुआ, फुसलाया हुआ।

(स्त्री. ललावियोडी)

ललित–स पु. [सं. ललित] १ शृंगार-रस में कामिक हाव या अंग-चेष्टा जिसमे सुकुमारता के साथ भौ, आख, हाथ, पैर आदि अग हिलाये जाते है।

२ एक विषम वर्ण वृत्त जिसके पहले चरण में सगण, जगण, सगण व लघु, दूसरे में नगण, सगण, जगण व गुरू तीसरे मे नगण, नगण, सगण और चौथे मे सगण, जगण, सगण जगण होता है।

३ सगीत मे षाडव जाति का एक राग जो भैरव राग का पुत्र कहा गया है और जिसमे निषाद स्वर नही लगता तथा धैवत और गाधार के अतिरिक्त और सब स्वर कोमल लगते है।

४ एक गौण अर्थालंकार, जिसमें कोई बात छाया के रूप मे कही जाती है।

५ एक वार्णिक छंद जिसके प्रथम आठ वर्णा पर यति और फिर १४ (मनु)+१=१५ वर्ण पर यति होती है।

६ बालक।

७ एक गधर्व जो शाप के कारण राक्षस हुआ तथा 'कामदा' एकादशी का व्रत करने से शाप मुक्त हो गया।

वि.—१ सुन्दर, कमनीय, मनोहर। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ मधुर वचन छबि चद मुख, ऊमगै उरज ऊतंग। लीलबर ढाकै ललित, सुभ कचन-गिर स्रग।

—बगसीराम प्रोहित री वात

उ०—२ ललित लजीलौ छै, सुभग सजीलौ छै मनोहर इणरी मूरत, कांमणगारी सियाबर म्हानै निरखण दै सखि! प्यारी!

—गी. रां.

२ शुभ, कल्याणप्रद।

उ०—भवसतति ना भय दुख भजण, पंचम गति दातार रे। त्रिभुवननाथ ललित, गुण तोरा, गावइ देव गंधार रे। —स. कु.

रू. भे.—ललत, ललिय।

यौ.—ललित-कळा, ललित-काता, ललित-गरभेसर, ललित-त्रिभगी, ललित-पद, ललित-लता।

ललितकांता–सं. स्त्री यौ. [सं. ललित+काता] दुर्गा, देवी।

ललितकीसबर–स. पु.—हनुमान, पवनसुत। (डि. को.)

ललितगरभेसर–स. पु. [सं. ललित गर्भेश्वर] मनोहर गर्भेश्वर।

उ०—नवनवे लीला विलास रमइ, मुह पूछि जिमि, कजि पूछि पहरइ, खडोखलि तणा पांणी लहरइ, ललितगरभेसर द्रव्य अवनिस्वर, सालिभद्रावतार' मद (न) मुद्रावतार, अस्नात तंबोल ममरइ, पच प्रकारि विसयसुख अभाणइ, उगिउ आथमिउ काइ न जाणइ जाइ। —व. स.

ललितमुकुट—देखो 'ललतमुकुट' (रू. भे.)

ललितलता–स. स्त्री.—माधवी। (अ. मा.)

ललिता–सं. स्त्री. [सं.] १ राधिका की मुख्य आठ सखियो मे से एक।

उ०—कहत ललिता वैद बुलाऊँ, आवै नंद को प्यारौ। वौ आया दुख नाहिं रहेगौ, है मोहिं पतियारौ। —मीरा

२ दक्ष कन्या सती का नामातर।

३ कृष्ण की पत्नियो मे से एक।

४ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण जगण और रगण होते है।

५ संगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

६ रमणी।

७ स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

८ कस्तूरी, मुश्क।

६ दुर्गा देवी का रूप।

रू भे·—ललता, ललित्ता।

ललिताई—स. स्त्री—सौदर्य, सुन्दर।

ललितापंचमी—सं. स्त्री. यौ. [स. ललिता+पचमी] आश्विन के शुक्ल पक्ष की पचमी, जिस दिन पार्वती की पूजा होती है।

ललितासस्ठी—स स्त्री. यौ. [स ललिता+षष्ठी] भाद्रपद कृष्ण पक्ष की षष्ठी, जिस दिन पार्वती की पूजा होती है।

ललितासप्तमी, ललितासातम—[स· ललितासप्तमी]—भाद्रपद शुक्ल पक्ष की सप्तमी।

ललितोपमा—सं. स्त्री. यौ. [स. ललित+उपमा] एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे उपमेय और उपमान के समतावाचक पदो का प्रयोग न करके ऐसे पदों का प्रयोग किया जाता है जिनमे समता, मुकाबला आदि के भाव प्रकट होते हैं।

ललित्ता—देखो 'ललिता' (रू. भे.)

उ०—वप सोळह सिणगार वनित्ता, लखण बत्तीस सजुगत ललित्ता। सोभा सारिख किरण सवित्ता, दीपै मदर राज दुहित्ता। —गु. रू. बं.

ललित्थ—स. पु. [सं.] १ एक राजा जो वायु के अनुसार इद्रसख अथवा विद्योपरिचरवसु राजा का पुत्र था।

२ कौरवों के पक्ष का एक राजा जिसने अभिमन्यू पर बाणों की वर्षा की थी!

३ एक लोक समुह जो भारतीय युद्ध मे त्रिगर्तराज सुशर्मन के साथ उपस्थित था एव कौरवों के पक्ष मे शामिल था। उन्होंने अर्जुन को मारने की प्रतिज्ञा की थी पर अन्त में अर्जुन ने इनका वध किया।

ललिय—देखो 'ललित' (रू. भे·)

ललूड़ौ—देखो 'लालौ' (अल्पा. (रू. भे.)

उ०—पांन फूल नूं जीव तूं, कोमल केलि समांन। ललूड़ौ अति लाडलौ, लालन लीला थान। —जयवाणी

ललूना—देखो 'ललना' (रू. भे)

उ०—१ बके दीनताके कितै बैंन टेरै, कबीलै परै काफरा हृत्थ मेरे। परे बित्थुरै भूमि जाके खिलूना, कहा कैद जांने हमारे ललूना। —ला. रा.

ललोचंपी—सं. स्त्री.—किसी को प्रसन्न या अनुकूल रखने हेतु कही जाने वाली चिकनी-चुपडी बात, खुशामद।

उ०—रियासत रा पागी नूं पूंभै रोवै, अरजन मोजी रा खोज कुण जोवै। पग पाछा पडै पूरी ललोचंपी राखै। —दसदोख

क्रि. प्र·—करणी, राखणी।

रू भे.—लल्लूचप्पू।

मह.—लल्लोचंपौ, लल्लौचप्पौ।

१ खुशामद।

उ०—१ भलै भलौ बुरै बुरौ, ललोपती लजौ नही। प्रभू उचार प्रेम पेख, नेम को तजौ नही। —ऊ. का.

उ०—२ जो कही री छोकरी-सहेली क्यूं दुरदुराटौ करै तो आप डेरै जाय ललोपती मुनहारा कर आवै। मन-खात कही सूं पड़ण न देवै। ऐसी स्याणी समामी सौ सारौ राहणौ राजी। —कुवरसी सांखला री वारता

उ०—३ अमौजी रावजी कन्है जातौ थौ। तितरै अभा नू कह्यौ—म्हारी लाख दुगाणी इण विध री लेहणी छै सू देता जावौ। सु अभै तौ ललोपती घणी करी। —राव मालदे री वात

ललोचंपौ, ललोचप्पौ—देखो 'ललोचंपी' (मह., रू. भे.)

ललोपती—क्रि. वि.—१ बिना पता, बेखबर।

२ देखो 'ललोचपी'

उ०—इतरै गोहिला पिण आलोच कियौ—जो राठौड़ जोरावर सिराणौ आय राजस्थांन माडियौ। जो कूं ललोपतौ कीजै तो टिग सकीजै। —नैणसी

ललौ—सं· पु.—१ ल वर्ण या अक्षर।

२ देखो 'लालौ' (रू. भे.)

रू. भे.—लल्लउ।

लल्ल—देखो 'लल' (रू. भे.)

लल्लउ—देखो 'ललौ' (रू भे.)

उ०—वायस वीजउ नांम, ते आगळि लल्लउ ठवइ। जइ तूं हुवई सुजांण, तउ तू बहिळउ मोकळै। —ढो. मा.

लल्लवळ—देखो 'ळळवळ' (रू. भे.)

उ०—१ सेन में सब्बळां, हुई हीलोहळा, जाण निच्छेजळां, पुळै पाइहळा मल्हपै मैंगळां, सूंड लल्लवळां, आगळी ऊजळा, सेत-दांतूसळा। —गु. रू बं.

लल्लू—देखो 'लालौ' (रू. भे.)

लल्लू चप्पू—देखो 'ललोचंपी' (रू. भे.)

लवंग–सं. पु. [सं.] लवग नामक वृक्ष और उसकी कलियां या फूल। (अमरत) (अ. मा.)

उ०—१ भाग त्रगुण पंकज पर मेळै, मघई पांन छगुण रस मेळै। पाव भाग धरि लवग प्रमाणै, आधै भाग अगाअंक आणै।
—सू. प्र.

उ०—२ कुण ही पल्लांण्या आसण होडा, केइ करहि चडी धइ दह दिसि दोडा। केइ मुखि माणइ तंबोळ लवंग-डोडा।
—रा. सा. स.

उ०—३ बायक लवंग मसाला बाटे, जीभ सकर मीठम जेम। सौहड़ां कज कोड़ां 'परसा' सुत, आखर तणौ रांमरस प्रेम।
—बसराम रावळ

२ पुरुष व स्त्रियों के कानों मे पहनने के आभूषण विशेष।

उ०—मरद पत्रसाख भूसण कड़ा मूंदड़ी, क्रंठ डोरो मुरति लवंग कांना। तेमड़ा समोभ्रम खुड़द गेढा तणौ, थांन जाहर थयौ राज-थांनां।
—मे. म.

२ औरतों के नाक में पहनने का आभूषण।

रू. भे.—लवंगि, लविंग, लवीग, लांग, लिवग, लिविंग, लूग, लौग।

लवंगादिचूरण–सं. पु. [सं. लवंगादिचूर्ण] वैद्यक में एक चूर्ण विशेष।

वि. वि.—लौंग कपूर, इलायची. दालचीनी, नागकेशर, जायफल खस सौठ, काला जीरा, पीपल, अगर, वंशलोचन, जटा-मांसी, नीला कमल, सफेद चंदन, तगर, नेत्रवाला और शीतल मिर्च सब सम भाग मिलाकर यह चूर्ण बनाया जाता है।

लवंगादिवटी–सं. स्त्री [सं.]१ वैद्यक में एक गोली विशेष जो खांसी रोग में सेवन की जाती है।

वि. वि.—लौंग बहेड़े की छाल और काली मिर्च १-१ तोला तथा कत्था ३ तोला मिला बबूल की छाल के क्वाथ में ६ घंटे खरल कर मटर के समान गोलियां बनाई जाती हैं।

लवंगि—देखो 'लवंग' (रू. भे.)

उ०—लाज-लज्जाळू लक्ष्मणा, लूणी लसन लवंगि। लीलावंती लुंकड़ी, लाहि लवीरी संगि।
—मा. का. प्र.

लवंड–स. पु—१ दीवाल से उतरी चूने की पपड़ी, लेवडा।

उ०—जउ पापी गरभइ आवइ, तउ मात खिहाला खावइ। कइ ठिकरि न खाइ खंड, कइं खायइ भीतं लवंड।
—ऐ. जै. का. सं.

२ देखो 'लंड' (रू. भे.)

लव–सं. स्त्री. [सं. लव.] १ भेड की ऊन।

२ भेड़ की ऊन उतारने का कार्य।

३ बहुत थोड़ी सी मात्रा, लेश मात्र।

उ०—अर कतराक मूढ भाट बिद्या रौ लव पाय नव रत्न मैं आयौ जिको बेताळभट्ट तिणनू भी भाट कहै।
—व. भा.

४ कवि। (अ. मा.)

५ पंडित। (अ. मा.)

६ काल का एक मान जो ३६ निमेष का माना जाता है। (डि. को.)

उ०—जिण झालै बळ जोर, जग आहणि जाड़ेचां। पुहवि कच्छ पंचाळ, गज्रि लीधी पटु पेचा। अधिप भीमरै अग्ग, विजय कीधा कई वारां। भड़ सात्रव घणा भेटि, किया धड़ पार कटारां। उण सिंहदेव रण अग्रणी, लै बळ साथ चउत्थ लव। गरदाय सिबिर दीधौ गरट, जामिक पण लीधौ सजव।
—वं. भा.

७ रामचन्द्र के दो पुत्रों में से कनिष्ट पुत्र का नाम।

८ लवा नामक चिड़िया।

सं. लव – ९ लवंग, लौंग।

१० सुरा गाय की पूंछ के बाल जिसकी चवर बनाई जाती है।

११ जायफल।

१२ मौका, अवसर।

[अं.] १३ प्यार, मोहब्बत।

१४ देखो 'लिव' (रू. भे.)

उ०—१ राजा कोड निनाणवै, ठेलै ठकुराई। तिण कारण जोगी हुआ, लिव सू लव लाई।
—केसोदास गाडण

उ०—२ नर हर समरता नह बीतं नाणौ, लवसूं तिकौ न लेवै। परनारी निरखै कर प्रीता, दाम हजारां देवै।
—र. रू.

वि.—१ किंचित, सूक्ष्म। (अ. मा.)

२ समान, सदृश्य।

३ अत्यन्त अल्प परिमाण।

लवकव–वि.—भयभीत।

उ०—दळ सुरितांण जांण डूंगरि दव, कंपी धरा प्रज हुइ लवकव। अह सुरितांण आवियउ अवथरि, करन तणा ऊठिय गज केसरि।
—रा. ज. सी.

लवड़ौ–सं पु.—देखो 'लंड' (रू. भे.)

२ देखो 'लघु' (अल्पा., रू. भे.)

लवण–स. पु [स. लवणं] १ नमक। (डि. को.)

उ०—जिम लवण रहित रसवती, वचन रहित सरस्वती, कंठ रहित गायन।
—रा. सा. स.

[सं. लवण:] २ मधुवन (आधुनिक मथुरा) निवासी एक राक्षस जो मधु नामक राक्षस का पुत्र था तथा जिसका शत्रुघ्न ने वध किया था।

वि. वि.—देखो लवणासुर।

३ समुद्र, सागर। (डि. नां. मा.)

४ एक नरक का नाम।

वि. [सं. लवरा] १ नमकीन, खारा।

२ लावण्ययुक्त, सुन्दर।

रू भे.—लवन, लूंरा, लूरा, लौंरा

लवणजत्र–स पु. यौ. [स. लवरा+यत्र] औषध बनाने हेतु दो बर्तनो के मुंह जोड़कर बनाया हुआ एक यंत्र विशेष जिसमे एक बर्तन मे नमक भरा होता है। (वैद्यक)

लवणत्रय–सं. पु. यौ. [स. लवरा+त्रय] सेंधव, विट, और सचल इन तीन प्रकार के नमक का समूह। (वैद्यक)

लवणधेनु–सं. स्त्री. [स. लवरा+धेनु] नमक के ढेर के रूप में निर्मित एक कल्पित गाय जिसके दान का बड़ा माहात्म्य है। (पौराणिक)

लवणभास्कर–सं. पु.—एक प्रकार का पाचक चूर्ण जो, मदाग्नि मे सेवन किया जाता है।

वि. वि.—इसके बनाने मे समुन्द्र नमक ८ तोला, काला नमक ५ तोला, काच लवरा, सेंधा नमक, धनिया, पीपल, पीपलामूल, काला जीरा, तेज-पात, नागकेसर, तालीसपत्र, अम्लबेत, सब २-२ तोला, कालीमिर्च, जीरा, सोठ, तीनो १-१ तोला अनारदाना ४ तोला, इलायची और दालचीनी आधा-आधा तोला लेकर सबको मिलाकर कूट कर बारीक चूर्ण किया जाता है।

लवणवरस–स. पु. [सं. लवरावर्ष] कुश द्वीप के अन्तर्गत एक खंड। (पौराणिक)

लवणसमंद, लवणसमुद्र–सं पु. यौ. [स. लवरा+समुद्र] पुराणानुसार सात समुन्द्रों में से खारे पानी का समुद्र।

उ०—एहवौ जबू द्वीप महागढ जेम गिरिंद। रवाई रूपै दोइ लख जोयरा **लवणसमंद**। —ध. व. ग्रं

लवणांतक–सं. पु. यौ. [सं. लवरा+अंतक] १ लवणासुर नामक दैत्य को मारने वाला, शत्रुघ्न।

२ नींबू।

लवणा–सं. स्त्री—१ दीप्ति, आभा, कान्ति।

२ देखो 'लवल्या' (रू. भे.)

लवणाई–स. स्त्री—१ लूणी नदी का एक नाम।

२ सुन्दरता, लावण्यता।

लवणाचळ–सं. पु. [सं. लवरा+अचल]—१ पहाड़ के रूप में लगाया नमक ढेर जिसका दान देने का बड़ा माहात्म्य है। (पौराणिक)

लवणाकार–सं. पु यौ. [स. लवरा+आकार]—समुद्र, सागर।

लवणालय–स. पु. यौ. [सं. लवरा+आलय] लवणासुर नामक दैत्य की बसाई गई मधुपुरी जिसे अब मथुरा कहते हैं।

लवणासुर–सं. पु. [सं] मधुराक्षस का पुत्र जो लंकापति रावण की मौसी कुभीनसी का पुत्र था।

वि. वि.—मधु राक्षस ने कठोर तपस्या करके भगवान शिव शंकर से एक शूल नामक शस्त्र प्राप्त किया था जो भगवान शिव के वरदान से लवणासुर को प्राप्त हो गया था। इस शूल के बल से इसने देव, दानव और मनुष्यो को जीत लिया था और अजेय बन गया था। प्रसिद्ध राजा मानधाता का भी वध इसने किया था। महर्षिगण इसके अत्याचार से पीड़ित होकर मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र भगवान की शरण गये। तब भगवान राम महाराज ने शत्रुघ्न को लवणासुर का वध करने के लिए भेजा। जिस समय लवणासुर के हाथ मे शकर द्वारा प्रदत्त शूल न था तब शत्रुघ्न ने इसका वध कर दिया। यह मथुरा का राजा था जिसका दूसरा नाम मधुपुरी भी है। लवणासुर का सहार कर शत्रुघ्न मथुरा का राजा बना।

लवणिम, लवणिमा–सं. स्त्री. [स. लवणिमन्] १ सुन्दरता, सौन्दर्य।

उ०—१ मनमथी ठवीय पयोहर, मोहरसाबलि तुग। **लवणिम** भरीय अंकुरीय, पूरीय रागि नितब। —प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ रूपवत गुण **लवणिमा** रे, विद्या प्रभुता सार। मदना कारण छै सहू रै, पिण मदन करै लिगार। —श्रीपाल रास

लवणेस्वर–स. पु. [स. लवणेश्वर] महादेव का एक नाम।

उ०—**लवणेस्वर** री क्रपा सूं पाच सै मांवा में अमल कियौ। पावागढ रा, सुतरामपुर रा राधरापुर रा गाव वीरपुरा दबाया। —बा. दा. ख्यात

लवणोद, लवणोदक, लवणोदधि–सं. पु. यौ. [स. लवरा+उदक, लवरा+उदधि]—१ समुद्र, सागर। (डिं. को.)

उ०—मध्य भाग **लवणोदधि** नै रह्या, जिहां लक कहवाय, सालूणी द्रव्य उपावण साथै मांनवी, त्यां सुं पूरी रे प्रीत। —वि. कु.

लवणौ–स. पु.—१ कनपटी।

उ०—अगी धनुस वात जब जारिणयै, दीजै खट डंभ क्रिया पिहिचारिणयै। दो **लवणै** दोइ पाय एक पुनि ताळवै, परिहा गुदड़ी उपरि, एक इरा विध चालवै। —ध. व. ग्रं.

२ एक प्रकार का घास।

लवणौ, लवबौ–क्रि. अ. [सं. लवनं प्रा. लव] १ पक्षियो का ध्वनि करना, बोलना।

उ०—१ बीज खवइ चातुक **लवइ**, दादुर तिमरी तेख। विरूहणीआ तनि वेदना, स्रावण सरइ विसेख। —मा. कां. प्र.

उ०—२ आखि निमांणी क्या करइ, कडवा **लवइ** निलज्ज। सउ जोइन साहिब बसइ, सो किम आवइ अज्ज। —ढो. मा.

२ गाय का रंभाना।

३ कुत्ते का भौंकना।

उ०—१ हरीया माकट सूकरा, दोउं की परि एक। गयद चले गय आपनी, कूकर लवौ अनेक। —अनुभववांणी

उ०—२ हाथी हींडत देख, कूकररिया लव-लव करै। वडपण तणौ विवेक, क्रोध न आंणै किसनिया। —किसनिया

४ मेंढक का टर्राना।

उ०—ग्रीडांमण गर जैत चीह पपीह वडां सिरदर। लवै दादुरा करै, झली बोह झंकर। —पा. प्र.

५ भेड़ की ऊन कतरना।

६ फड़कना।

उ०—१ आघेरू जईनि चीतवि, लोचन माहारू डाबि लवि। जोऊं रहि हसि टलवली, मुनरपि आव्यु पाछु वलि। —नलाख्यांन

लवणहार, हारौ (हारी), **लवणियौ**—वि।

लविओड़ौ, लवियोड़ौ, लव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लवीजणौ, लवीजबौ—भाव वा.।

लवधवरण—देखो 'लब्धवरण' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

लवधुलउ, लवधुलौ—वि. [सं. लुब्ध] १ आसक्त, लुब्ध।

उ०—कोइल कलिरवि वासइ, मंजरिया सहकार। कुसुम तणइं रसि **लवधुला**, भमर करइं झणकार। —प्राचीन फागु-संग्रह

लवन—सं. स्त्री.—छेदने की क्रिया या भाव।

उ०—रंगाणी मुझ मतिए रंगइ, समकित नी सहिनाणी। कुमति कमलिनी **लवन** कृपांणी, दुख तिल पीलण घांणी रे। —वि. कु.

२ देखो 'लवण' (रू. भे.)

लवना—देखो 'लवल्या' (रू. भे.)

लवबांन—देखो 'लोबांन' (रू. भे.)

उ०—भरी सत मत्त गयंदनि सोर, करौ फिर पीठ मदत्तिय ओर। हकी सब तोपन जुट्टि लगाय, धुनी **लवबांन** पताकनि छाय। —ला. रा.

लवरू—सं. पु.—एक पक्षी विशेष।

उ०—मन **लवरू** के पंख है, उनमनि चढै अकास। पग रह पूरै साचकै, रोप रह्या हरि दास। —दादूबांणी

लवल—सं. स्त्री.—अग्नि की ज्वाला।

उ०—कोइ जांण इम कहै, **लवल** चंदण सम लग्गै। परसै सती सरीर, वणै तद नीर वरग्गै। —रा. रू.

लवलबी—देखो 'लबलबी' (रू. भे.)

लवळी—सं. पु.—१ हरफरेवोरी नाम का वृक्ष या उसका फल।

२ एक विषमवर्ण वृत जिसके पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे चरण में क्रमशः १६, १२, ८ और २० वर्ण होते हैं।

३ एक लता विशेष।

उ०—नैरति प्रसरि निरधण गिरि नीझर, घणी भजे घण पयोधर। झोले वाइ किया तरु झंखर, **लवळी** दहन कि लू लहर। —वेलि

लवलीन—वि. [सं. लय+लीन] १ तल्लीन, तन्मय, मग्न।

उ०—१ गुफा ध्यांन **लवलीन** गिरोवर, ताळी खुलि उठिया तपेसुर। जांणै निसा अमावस जळधर, भाद्रव मैमंट घटा भयकर। —सू. प्र.

उ०—२ हथणी बरस हजार लग, खान पांन नहीं कीन। जितै कियौ गजराज जुध, हरि-चरणा **लवलीन**। —गज उद्धार

२ देखो 'लयलीन'

रू. भे.—लौलीण।

लवलेस—सं. पु. [सं. लवं+लेश] अत्यन्त अल्प परिणाम या मात्रा, किंचित्।

उ०—आवै इण भासा अमल, वयण सगाई वेस। दग्ध अगण बद दुगणारौ, लागै नह **लवलेस**। —र. रू.

लवल्या—स. स्त्री.—१ लगन, तन्मयता, एकाग्रता।

२ अभिलाषा, इच्छा।

रू. भे.—लवणा, लवना।

लवाजमौ, लवाजीवौ—स. पु. [अ. लवाजिम]—१. राजा महाराजा की सवारी के साथ शोभा बढाने हेतु रहने वाला ठाट बाट व साज सज्जा का सामान (मा. म.)

उ०—१ **लवाजमे** सू कुवर जसवंतसिंह जी नूं परणीजण मेलिया। —ठाकुर राजसिंह जी री वारता

उ०—२ थारौ घराणौ घणौ आछौ पण नखे **लवाजमौ** नहीं। अर आज **लवाजमौ** विकै छै। अबै थें खेती करौ। —पंचमार री बात

२ सामान, सामग्री।

उ०—१ जोधपुर में चाकर रा पेटिया रा टका १२ रोज १ रा पावै। बीजौ **लवाजमौ** रांणी हुवै सुं बीजा मेहलां सुं बीवड़ा में टोपावै दस्तूर छै। —नैणसी

उ०—२ स्री कवरजी नुं कंवरपदा रा गांव **लवाजमौ** दीओ गाव वीसळपुर सुं में संवत १७२४ रा ऊनाळी था दीओ नै रु. १ रोजीना माहावदी सुं कर दीयौ वागा वा **लवाजमौ** सारौ सिरकार था पावै तिण रौ जोधपुर री जमैबंधी मैं मंडियौ छै —नैणसी

रू. भे.—लाजमौ

लवार—स. पु.—१ पशु का छोटा बच्चा। (ह. नां. मा.)

उ०—१ सारी गउएँ निकस गई यमुना, लेकर संग **लवारे**। ग्वाळ-बाळ सब द्वारै ठाड़े, ठांईदार तिहारै। —मीरां

उ०—२ तन खेती में चरि चरि जावै, हे नहीं मेरे सारै रै। मिरघा एक पाच हैं हिरनें, लारि पचीस **लवारे** रे। —अनुभववांणी

अल्पा.,—लवारियौ, लवारौ, लुवार, लुवारकौ, लुवारियौ, लुवारौ
२ देखो 'लुहार' (रू. भे.)
उ०—साज लोहरा सातरा, ताळा करण तयार। किसबी सारा कामरौ, लीजै सुगड़ लवार। —रमण प्रकाश

लवारकौ—१ देखो 'लवार' (रू. भे.)
२ देखो 'लुहार' (अल्पा., रू. भे.)
(स्त्री. लवारकी)

लवारणव-सं. पु. [स. लवार्णव] ४६ क्षेत्रपालों में से ३१वां क्षेत्रपाल।

लवारखाती—देखो 'लुहारखाती' (रू. भे.)

लवारियौ, लवारौ—१ देखो 'लुहार' (अल्पा., रू. भे)
२ देखो 'लवार' (अल्पा., रू. भे.)

लवावसप्पी, लवावसरपी-स. पु.—वह जो कर्म-बन्धन को उत्पन्न करने वाले कर्मों के अनुष्ठान से दूर रहता हो। (जैन)

लविंग, लवींग—देखो 'लवंग' (रू. भे)
उ०—१ आरासनउ चूनउ, इमी खाडी। कपूर **लविंगा** इलायची खदिर-वटिका सहित बीडा कीधा, मुख वासि दीधा। —व. स.
उ०—२ लीब **लविंगह** लसणीआ, लीबोई लोबान लूखट लासा लीबरू, लगिथगि लाबां पान। —मा. का. प्र.

लवीरी—१ एक प्रकार की सब्जी।
उ०—लाज-लज्जालू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंगि। लीलावंती लुकडी, लाहि **लवीरी** सगि। —मा का. प्र.

लवेस-सं. पु.—देखो 'लिवास' (रू. भे.)
उ०—जगदेव कहायौ, गैणौ, पोसाख, घोडौ, राजा रौ लाजमौ नही नै पाळौ तौ इसे **लवेस** (लिबास) चालणी आवै नही।
—जगदेव पवार री बात
उ०—२ इयां बळै देखनै कह्यौ भाभी जे हिवै ईडौ थाहरै मुहडा आगै आणिस्या तौ थारै मुडा आगै तौ जीमस्यां ताहरां साहूकार हुआ बड़ौ **लवेस** करि थाहेरै स करि वहिल उठ त्यार करि।
—चौबोली

लवै—देखो 'लव' १२
उ०—बोल्यौ—आ बात तौ वीलिया खवास री जोडायत रै जोग ई करी। थू साची अेकर तौ वैमाता ई आय भिडै तौ **लवै** ई नी लागण दे। —फुलवाडी

लवौ-स. पु—१ पतली रस्सी (डोरी) से बधा पीतल या लोह का बना वह उपकरण जो इमारत बनाते समय दीवार मापने में काम आता है।
२ एक वृक्ष जिसकी कलम बनती है।
३ भूनने से फूला हुआ अनाज का दाना।
४ तीतर से छोटा उसी जाति का एक पक्षी विशेष।
उ०—१ दूसरौ मास न्यारौ-न्यारौ वणायजै छै। घणा मसाला दीजै छै। **लवा** रौ मांस होसनाक सुधारै छै। —रा सा. सं.
रू. भे.—लावौ

लस-स. पु. [स. लस्] १ एक वस्तु दूसरी के चिपकने का गुण, चिपचिपाहट।
स. स्त्री.—२ लम्बी लकीर।
वि.—लम्बा, पतला और सकरा।

लसकर, लसकरि-स. पु. [फा. लश्कर] १ सेना, फौज।
उ०—१ झिलम टोप सूंधौ सिर झडियौ, पटझर हू चूडामणि पडियौ। करि जय धसै नगर मझि **लसकर**, अटकै नह भिळियौ वरियावर। —सू. प्र.
उ०—२ ताहरा रामसिघ जी मुह रा भारी तिण नू कह्यौ क्यूं नही। आगै **लसकर** मांहै गया। —द. वि.
उ०—३ लाखां **लसकर** लार, धरमराज जिसडौ धणी। भारत वाळौ भार. भीमा अरजुन रै भुजां। —सरूपदास
२ बहुत से व्यक्तियों का समूह, दल।
उ०—१ लडालूंम डाळचा लमूटे, जाणै झबरक झूंटणा। ओयण मे **लसकर** लुगाया, छाणां चुगणा चूटणा। —दसदेव
उ०—२ मिठडा सा भोजन बहू बहवडदे जिमावै, आयौ पितरां रौ **लसकर** जीमग्यौ। ठडड़ा सा पाणी बहू लाडलदे पियावै, आयौ पितरां रौ लसकर पी गयौ। —लो गी.
३ फौज की साज-सज्जा का सामान।
उ०—४ सूरसिहजी साहयबा कंवरजी स्रीगजसिंघ जी नै हुकम दीयौ के पातसाह सलामत आपनै जाळौर सांचोर इनायत कीया है सू थे सारो साथ लै जाळौर जाईजौ। नै जाळौर. जायनै भगड़ौ कर जाळोर लीजौ। तरै जोधपुर सु फौज **लसकर** लेर कंवर जी स्री गजसिंघ जी नै सिरदारा में राठौड़ राजसिंघ जी खीमावत सोबायत ले'र जाळोर आया नै गाव गुदरै डेरा किया। —नैणसी
४ सेना का पड़ाव, छावनी।
५ जहाज मे कार्य करने वालों का दल।
६ भाला, बरछा।
७ लुटेरा।
उ०—१ अधिक धण झाउ उभाउ अवगाहता, **लसकरां** तसकरां पडचा लारै। धींग गच्छराज रौ ध्यान मन ध्यावतां विकट संकट सहू निकट वारै। —ध. व. ग्रं.
उ०—२ जागै जोगणी भय दुख नह व्यापै, पासे ईस पयारै। **लसकर** तसकर कोयं न लागै, चार पहोर नीसतारै।
—मालौ सांदू

रू. भे.—लसकरी, लसक्कर, लस्कर, लहसंकर, ल्हसकर
अल्पा.,—लसकरियौ, ल्हसकरियौ

लसकरियौ-सं. पु.—१ पति, खाविंद

उ०—१ जाय **लसकरिया** ने यूं कहै-थारै घर वनड़ी रौ व्यांव सौदागर महंदी राचणी। —लो. गी.

उ०—२ ऊंची तौ खींवै ढोला बीजळी, नीची तौ खींवै छै निवांण जी ढोला ओजी गोरी रा **लसकरिया** ओळूंड़ी लगायर कोठे चाल्या जी। —लो. गी

२ प्रियतम, प्रेमी।
३ लश्कर में रहने वाला, सैनिक, फौजी।
४ शौकीन।
५ देखो 'लसकर' (अल्पा. रू. भे.)

लसकरी-सं. पु.—१ सेनापति।
२ जहाज सम्बन्धी।
३ देखो 'लसकर' (रू. भे.)

उ०—सुरितांण तणा सेलार सक्ख, लखभूलई ऊपरि लूबि लक्ख। छेलियउ खेतसी खग्ग छोहि, **लसकरी** लाख ऊपरइ लोहि। —रा. ज. सी.

लसक्कर—देखो 'लसकर' (रू. भे.)

उ०—अटक पार हूंता जोरावर, आया गयद खरीदण आसुर। बिहु दूंणां सिरदार बहादर, लारां बार हजार **लसक्कर** —सू. प्र.

उ०—२ पड़ै जोध जरदेत, पडे बरहास सपक्खर। पडै बांण एक लक्ख, सीर 'जिहंगीर' **लसक्कर**। —गु. रू. ब.

उ०—३ वधियौ महवेचो 'विजौ,' सारां सूं अवसाण। खैंग **लसक्कर** खांन रा, प्रोया सेल प्रमाण। —रा. रू.

लसड़कौ-सं. पु.—१ रगड़, खरौंच।
२ धक्का, झटका।
३ लाक्षणिक अर्थ मे किसी कार्य-सिद्धि हेतु दिया जाने वाला सहारा या मदद।
क्रि. प्र.—लागणौ
४ खुशामद, चापलूसी।
क्रि. प्र. लगाणौ
रू. भे. 'लसरकौ'

लसण-सं. पु.—१ प्याज के समान छोटी व सफेद गांठ व उसका पौधा
वि. वि.—एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियें (कूंपले) प्याज के समान होती है तथा इसकी जड़ गांठ की तरह होती है। मांसाहारी वर्ग इसका अधिक सेवन करते हैं। इसकी गंध बहुत उग्र होती है, इसी कारण हिन्दुओं में प्रायः वैष्णव इसका सेवन नहीं करते। वैद्यक में यह बहुत लाभदायक कहा गया है।

उ०—१ बीहै चंदण बावनौ, या **लसण** के संग। हरीया आंनि कुवासनौ, करै वास कुभंग। —अनुभववांणी

उ०—२ गाजर मूला गिरमिरि, पिंडालू नहीं नाहि। **लसण** लसाई डूंगली, तिज परवत अवगाहि। —मा. का. प्र.

२ जन्म से शरीर पर अंकित लाल रंग का दाग या चिन्ह, लक्षण।
३ मानक का एक दोष जिसे संस्कृत में 'अशोभक' कहते हैं।
४ धूमिल रंग का एक बहुमूल्य रत्न या पत्थर।

रू. भे.—लसणि, लसन, लहण, लहसण, लहसुन, लहस्हन, ल्हसण।
अल्पा.—लसणियौ, लसणीओ, लसुणियौ।

लसणि-सं स्त्री—१ हाव-भाव।

उ०—१ आकरखण वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सरपंच। चितवणि हसणि **लसणि** तणि संकुचणि, सुंदरि द्वारि देहुरा संच। —वेलि

२ देखो 'लसण' (रू. भे.)

लसणियाहिंग-सं. स्त्री. यौ.—एक प्रकार की बनावटी हींग।

लसणियौ—देखो 'लसण' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ **लसणिया** नील झळक्क, दुजि वंस गोमेदक्क। चत्र असी जाति उचार, जिण वार लूटि जुहार। —सू. प्र.

उ०—२ प्रघळ परोजा नीलवी, मुक्ताफळ ता मांहि। लसत हसत से **लसणिया**, सोभा कही न जाय। —गजउद्धार

लसणौ—१ एक प्रकार की गाय विशेष।

उ० कपळा कवळी नै बारै पुचकारै, लाखर लाखर अै आखर मन मारै। हासी बांसीसी सूकी हिय हारै, ससणी **लसणी** लख द्वंद-सणीं सारै। —ऊ. का.

२ घर, दर।

लसणीओ देखो 'लसण' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—लींब लविंगह **लसणीआ**, लीबोई लोबांन। लूखट लासा लीबरू, लगिथगि लाबां पांन। —मा. कां. प्र.

लसणौ, लसबौ-क्रि. अ.—१ शोभित होना, शोभा देना।

उ०—१ करि सिंह बाराह रै तुंड केती, **लसै** ग्राह चक्री मुखी वाह लेती। लगा नागणी जागणी नींद लोपै, अगां दागणी लागणी भाग ओपै। —वं. भा.

२ युद्ध स्थल से भाग जाना।

उ०—१ समर ढिलोकर सांम नूं, **लस** आवै लबड़ाक। मूंछ थका मूंडत जिकै, नाक, थकां बिन नाक। —बां. दा.

उ०—२ पाड़ियौ भीम खागां पछटि, गयौ खुरम **लसि** कुरंग गति। गहतंत एम जीतौ 'गजण', पूरब धर जोधांणपति। —सू. प्र.

उ०—३ लसियौ निवाब कटिया किलम, गह नृप धरि गजगाह रौ। लसकरीखान लूटै लियौ, सोबौ औरंगसाह रौ। —सू. प्र.

३ लज्जित होना, शर्मिन्दा होना।

उ०—मूरख कथन न मांनियौ, लसियौ मूंछ लजाइ। तोनूं रव न दियौ तखत, दोनूं रखत दिखाइ। —वं. भा.

लसणहार, हारौ (हारी), लसणियौ—वि०।
लसिओड़ौ, लसियोड़ौ, लस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लसीजणौ, लसीजबौ—भाव वा०।

लसन—देखो 'लसण' (रू. भे.)

उ०—लाज-लज्जालू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंगि। लीलावती लुकडी, लाहि लरीरी सगि। —मा. कां. प्र.

लसपस—देखो 'लचपच' (रू. भे.)

उ०—ढोला था जोगी म्हा जोगी करियौ (रे) कसार, थारै (नै) जीमण नै लसपस लापसी। —लो. गी.

लसरकौ—देखो 'लसड़कौ' (रू. भे.)

लसलसाट, लसलसाहट—सं. स्त्री.—लसीला होने का भाव, चिपचिपाहट।

लसलसाणौ, लसलसाबौ—क्रि. अ.—लस से युक्त होने के कारण चिपकना, चिप-चिप करना।

लसलसाणहार, हारौ (हारी), लसलसाणियौ—वि०।
लसलसायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लसलसाईजणौ, लसलसाईजबौ—भाव वा०।

लसलसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ चिप-चिप किया हुआ।
(स्त्री. लसलसायोड़ी)

लसलसौ—वि. [अनु] लसदार, लसीला, चिपचिपा।

लसाड़णौ, लसाड़बौ—देखो 'लसाणौ, लसाबौ' (रू. भे.)

लसाड़णहार, हारौ (हारी), लसाड़णियौ—वि०।
लसाड़िओड़ौ, लसाड़ियोड़ौ, लसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लसाड़ीजणौ, लसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लसाड़ियोड़ौ—देखो 'लसायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लसाड़ियोडी)

लसाणौ, लसाबौ—क्रि. स.—१ शोभित करना।
२ पराजित करके भागने में प्रवृत्त करना।
३ शर्मिदा करना, फीका पटकना।
४ लिप्त करना।

उ०—जिहा सुद्ध आसय भूमि पटली, सोहियइ थिरवाय। तिहां ग्यान दरसन थंभ अनुभव, दिव्य भाउ लसाय। —वि. कु.

लसाणहार, हारौ (हारी), लसाणियौ—वि.।
लसायोड़ौ—भू. का. कृ.।
लसाईजणौ, लसाईजबौ—कर्म वा.।
लसाडणौ, लसाड़बौ, लसावणौ, लसावतौ—रू. भे.।

लसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शोभित किया हुआ। २ शर्मिदा किया हुआ, फीका पटका हुआ. ३ लिप्त किया हुआ।
(स्त्री. लसायोडी)

लसावणौ, लसावबौ—देखो 'लसाणौ, लसाबौ' (रू. भे.)

लसावणहार, हारौ (हारी), लसावणियौ—वि.।
लसाविओड़ौ, लसावियोड़ौ, लसाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लसावीजणौ, लसावीजबौ—कर्म वा.।

लसावियोड़ौ—भू. का. कृ.—देखो 'लसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लसावियोड़ी)

लसियोड़ौ—भू. का. कृ—१ शोभित हुवा हुआ, शोभायमान हुवा हुआ. २ पराजित होकर भागा हुआ. ३ शर्मिदा हुवा हुआ, फीका पडा हुआ।
(स्त्री. लसियोड़ी)

लसी—सं. स्त्री—१ चिपचिपाहट, चेप।
२ देखो 'लस्सी' (रू. भे)

लसीका—सं. पु. [स लसिका] १ थूक, लार।

लसीलौ—वि.—१ चिप-चिपा।
२ सुन्दर, शोभायुक्त।

लसुणियौ—देखो 'लसण' (अल्पा. रू. भे.)

लसूंबौ—स. पु.—१ लालिमा।

उ०—नासिका मे वेसर असी छवि पावै छै, जांणै मुख मे मोती लसूंबौ छिटकावै छै। मानूं फूका दे मदन जगावै छै। —पनां

लसोड़ौ—सं. पु.—१ गोल-गोल पत्तियो वाला एक वृक्ष जिसके फल बेर के समान होते हैं।
२ उक्त पेड के फल।
रू. भे.—लिसोडा, लेसुवौ, लेसूड़ौ, ल्हेसवौ।

लस्कर—देखो 'लसकर' (रू. भे.)

उ०—१ इतरो माल दरवेसा नूं नहीं दियौ चाहिजै। लस्कर बिगर सांमान नही रहै। —नी. प्र.

उ०—२ नीठ से दीध दूजांण नेक, आठमें दीह ताजीम एक। वढवा दल दिखणी तेण वार, आविया लिया लस्कर अपार। —वि. सं.

लस्सी—स. स्त्री.—छाछ, मट्ठा, दूध, दही मे पानी मिलाकर बनाया हुआ गाढा पेय पदार्थ।
रू. भे.—लसी।

लहंगौ—सं. पु.—कटि के नीचे के अंग को ढकने वाला घेरदार स्त्रियों का पहनावा जो कमर पर इजारबन्द द्वारा कस कर पहना जाता है,

लहंगा, घाघरा (डि. को.)

उ०—हरी जरी का लहंगा सोवै, फुलझड़ी की सारी । अनवट ऊपर बिछिया सोवै, नथ सोवै झलका री । —मीरा

रू. भे.—लेहगौ, लेंगौ ।

लंहरी देखो 'लहरी' (रू. भे.)

लंहरिश्रौ, लंहरीश्रौ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे.)

उ०—झळकंति कठळ गोदरी, लहंरीश्रां मोती सार । मांणिक मयरण तै सदळ सोहइं, ऊरि एकावळ हार । —रूकमणी मंगळ

लहक-स. स्त्री.—१ शोभा, सुन्दरता ।

उ०—रतन में राखड़ी वेणी वासग जड़ी, सूभरा वाहड़ी लहक लोड़ै । स्वाति नों विदलौ नासिका निरभयौ, आज आल्यंगन क्रस्न कोडै । —रूकमणी मंगळ

२ लहकने की क्रिया या भाव ।

३ ढंग या तरीका ।

४ गायन की लय ।

५ देखो 'लहको' (अल्पा., रू. भे.)

लहकणौ, लहकबौ-क्रि. अ. [सं. लसत+कृत प्रा. लहक्किअ] १ किसी हलके पदार्थ, कागज, वस्त्र आदि का हवा में फर फर शब्द करते उड़ना, फरहराना, फरफराना ।

उ०—१ सगळा नर तिरण पासै आवै, देखि धजा लहकाणी । उत्तमकुमर तिहां निज वातां, भाखी चित्त सुहांणी । —वि. कु.

उ०—२ ध्वज पताका लहकई, पुस्प परिमळ वहकई । नाचइं पात्र, राज भवनि आवइं अक्षत पात्र । —रा. सा. स.

२ लटकना, झूलना ।

उ०—फूलहरौ अति फाबतौ, फूंदै लहकै फूल । महकै परिमळ फल महा, इग्यारमी पूज अमूल । —ध. व. ग्रं.

३ हिलते हुए लटकना, लुढ़कना ।

उ०—१ नवजोवन नारी मिली, उरि लहकइं हे नवसरहार । हसगमरण मृगलोअरणी, मुहि बोलइ हे मंगलचार । —हीराणंद सूरि

उ०—२ सोल कला सुंदरि ससिवयणी' चंपकवनी बाल । काजल सामल लहकइ वेणी, चचल नयरण विसाल । —हीराणद सूरि

४ हवा का चलना, झोंके आना ।

५ मस्ती से चलना, मस्त चाल से चलना ।

उ०—लुळती लफती लहकती, अलबेलरण छिब अच्छ । बालम रसियौ बरण रह्यौ, बेली छयौ बिरच्छ । —र. हमीर

६ आग की लपटें निकलना ।

७ लंगड़ाते हुए चलना ।

८ लहलहाना ।

९ अभिलाषा करना, चाहना ।

१० कटाक्ष करना ।

११ लपलपाना, लचकना ।

लहकणहार, हारौ (हारी), लहकणियौ—वि० ।

लहकिश्रोड़ौ, लहकियोड़ौ, लहक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लहकीजणौ, लहकीजबौ—भाव वा० ।

लहकूडलणौ, लहकुडलबौ, लहक्कणौ लहक्कबौ, लहरकणौ, लहरकबौ —रू भे.

लहकडउ-सं. पु. [सं. लसत+कृत प्रा. लहक्किअ] कटाक्ष ।

लहकाड़णौ, लहकाड़बौ—देखो 'लहकाणौ, लहकाबौ' (रू. भे.)

लहकाड़ियोड़ौ—देखो 'लहकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहकाड़ियोडी)

लहकाणौ, लहकाबौ-क्रि. स. (लहकणौ का प्रे. रू.) १ झोंखे खिलाना, लहराना ।

२ लटकाना, झुलाना ।

३ हवा के झोंके देना ।

४ आग की लपटें निकालना ।

लहलहाना ।

६ अभिलाषा कराना ।

७ लंगड़ाते हुए चलना ।

लहकाणहार, हारौ (हारी) लहकाणियौ—वि० ।

लहकायोड़ौ—भू० का कृ० ।

लहकाईजणौ, लहकाईजबौ—कर्म वा०/भाव वा. ।

लहकाड़णौ, लहकाड़बौ, लहकावणौ, लहकावबौ—रू. भे. ।

लहकायोड़ौ-भू. का. कृ—१ लहराया हुआ, झोंखे खिलाया हुआ. २ लटकाया हुआ, झुलाया हुआ. ३ हवा के झोंखे दिया हुआ. ४ आग की लपटें निकाला हुआ. ५ लंगड़ाते हुए चला हुआ. ६ लहलहाया हुआ. ७ अभिलाषा कराया हुआ. ८ कटाक्ष कराया हुआ ।

(स्त्री. लहकायोड़ी)

लहकावणौ, लहकावबौ—देखो 'लहकाणौ, लहकाबौ' (रू. भे.)

उ०—तिमरी आविया, पइसारा मोटेइ मडाण कराविया, जागी ढोल झालरि संख वादित्र वजाविया । बिहुं पासै पटकूल तरण नेजा लहकाविया, पागि-पागि खेला नचाविया, तणिया तोरण बंधाविया । —रा. सा. सं.

लहकावणहार, हारौ (हारी), लहकावणियौ—वि. ।

लहकाविश्रोड़ौ, लहकावियोड़ौ, लहकाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लहकावीजणौ, लहकावीजबौ—कर्म वा. ।

लहकावियोड़ौ—देखो 'लहकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहकावियोड़ी)

लहकियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लहरा हुआ, झोखे खाया हुआ. २ लटका हुआ, झुला हुआ. ३ हवा के झोंखे मे बहा हुआ. ४ आग की लपटें निकला हुआ. ५ लगडाते हुए चला हुआ. ६ लहलहाया हुआ. ७ अभिलाषा किया हुआ, चाहा हुआ।

(स्त्री लहकियोडी)

लहकुडलणौ, लहकुडलबौ—देखो 'लहकणौ, लहकबौ' (रू. भे)

उ०—वंकुडियाली मुहडिह, भरि भुवरगु भमाडइ । लाडी लोयरग लहकुडलइ, सुर सग्गह पाडइ । —प्राचीन फागु-संग्रह

लहकुडलणहार, हारौ (हारी), लहकुडलणियौ—वि० ।

लहकुडलिओड़ौ, लहकुडलियोड़ौ, लहकुडल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लहकुडलीजणौ, लहकुडलीजबौ—भाव वा० ।

लहकुडलियोड़ौ—देखो 'लहकियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लहकुडलियोड़ी)

लहकौ-स. पु.—१ झलक, आभास ।

२ ढग, तरीका ।

रू. भे.—लहक, लै'कौ ।

लहक्कणौ, लहक्कबौ – देखो 'लहकणौ, लहकबौ' (रू भे.)

उ०—१ चचळि चडी चिहु दिसि चपइ, थर थर थाणदार उर कपइ । कमधज करि धरि लोह **लहक्कइ**, बिंवहर बुबअ बुबअ वक्कइ । —रणमल्ल छंद

उ०—२ सज्जणिया ववळाइ करि, गउखे चढी **लहक्क** । भरिया नयण कटोर ज्यउ, मुधा हुई डहक्क । —ढो मा.

उ०—३ महा अणंदहू पंछी डहक्कै गहक्कै मोर, खाट मो चहक्कै बणे इसै रूप खेल । सामीर री भूलपट्टा महक्कबै जेण समै, अच्छ धू **लहक्कै** जांणै चामीर री बेल । —र. हमीर

लहक्कियोड़ौ—देखो 'लहकियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लहक्कियोडी)

लहचाळ—देखो 'लै'चाळ' (रू. भे.)

लहजौ-सं. पु. [अ. लहज] १ बात करने या बोलने का ढग, तरीका ।

२ स्वर, आवाज, लय (गायन मे)

३ अल्प काल, क्षण ।

रू. भे.—लै'जौ

लहण-वि.—१ लेने वाला ।

उ०—१ अपणी खाटी संपति जगत कू खुलावै । लख **लहण** सवालख विद्रवण विरद बुलावै । —सू. प्र.

२ देखो 'लसण' (रू. भे.)

लहणायत-सं. पु.—देखो 'लैणायत' (रू. भे.)

लहणियौ—देखो 'लै'णौ' (अल्पा., रू. भे.)

लहणौ—देखो 'लै'णौ' (रू. भे)

उ०—१ धरमसीह कहै सात, सात दुख जाय न सहणा । दीसै घर में दलिद, लोक वलि मागै **लहणा** । —ध. व. ग्र.

उ०—२ कवडी रा **लहणा** मही, राखे हट कर रोक । पाग काख माझल लिया, लूंड वजारी लोक । —बा. दा.

लहणौ, लहबौ—देखो 'लै'णौ, लै'बौ' (रू. भे)

उ०—१ उपजै अहोनिस आप आप मे, रूखमणि क्रिसन सरख रति । कहै वेलि वर लहै कुमारी, परणि पूत सुहाग पति । —वेलि

उ०—२ आरोपित हार धगउ थयौ अतर, ऊरस्थळि कुभस्थळि आज । सु-जु मोती लहि न लहइ सोभा, रज तिणि सिर नाखइ गजराज । —वेलि

उ०—३ जिणि दीहै पाळउ पडइ, टापर पड तुरियाह । तिया दिहारी गोरडी, दिन दिन लाख **लहांह** । —ढो. मा.

उ०—४ प्रीतम-हूती वाहिरी, कवड़ी ही न **लहांह** । जब देखूं घर-आगणइ, लाखे मोल लहाइ । —ढो. मा.

उ०—५ जिण दिन ढोलउ आवयउ, तिण अगलूणी रात । मारू सुहिणउ **लहि** कह्यउ, सखिया सू परभात । —ढो. मा.

उ०—६ अर ओर भी भाई भतीजा बडा बडा रजपूतवट रा सुभाव लीधा थका रावत प्रतापसिंघ री हजूरी रहै । बडी बडी रीझां मौजा हमेसा **लहै** । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—७ नले जाण्यूं हू जीतीस सही, ए व्रसभ हारवा आव्यु अही, कही भालण: 'अभिमान' ज वहि, पणि काल तणि गति को नवि **लहि** । —नळाख्यांन

उ०—८ तइ दिख राजा तणइ साठ ताय पुत्री, साठ हजार कुंवर सिरदार । नव खंड रा भूपाल नमइ जिण, परग्रह **लहइ** तियइ कुण पार । —महादेव पारवती री वेलि

लहण्यौ—देखो 'लै'णौ' (अल्पा., रू. भे)

लहयोड़ौ—देखो 'लियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लहयोडी)

लहर-सं. स्त्री. [स. लहरि, लहरी] १ तरल पदार्थो के ऊपरि तल में हवा लगने पर उस तल से उत्पन्न होने वाली वक्राकार रेखाए, तरग, हिलोर । (डि. को.)

उ०—१ जगजीत जोधाण के दरियाव कैसे । अभैसागर वाळसमद दोऊ, मानसरोवर जैसे । अम्रित के समुद्र तैसे **लहरू** के प्रवाह छाजै । —सू. प्र

उ०—२ हसा कहै रे डेडरा, सायर **लहर** न दिट्ठ । ज्या नाळेर न चक्खिया, (त्या) काचरिया ही मिट्ठ । —अग्यात

पर्याय उमेल, उतकलिका, उरमी, बेक, भंगि, हिलोळ ।

२ पौधों के समुह पर हवा के झोंके से उत्पन्न गति या कंपन ।
ज्यूं—चौधरी गवूं में उठती लहरां देख 'र घणौ राजी व्हेतौ ।
३ सहसा मन में जागृत होने वाली इच्छा, मन की मौज ।

उ०—आलम हाथ रौ रघुनाथ अचरिज, अवध भूप असंक ।
दिल गहर दीधी सरण हित दत, लहर हेकण लक ।
—र. ज. प्र.

४ मन में उठने वाली आवेग पूर्ण प्रवृत्ति, आवेश, जोश ।

उ०—लसकरा फिरै अग घाव चढतौ लहर, आलमा दाव भवणां अलोडै । समद कछवाह तणौ बरण सुकज, 'माधहर' तणा खग झाळ मुहोडै । —राव दुरजणसाल हाडा रौ गीत

५ क्षण, पल ।

उ०—सदा प्रसन्न कव सदन सीतळ नजर सुपेखै, मनवंछत करै हेकै लहर मांय । न देखै भाव भगती दिसा 'करनला',सनातन धरम लेखै करै साय । —मा. वचनिका

६ मादक या विषाक्त पदार्थ के सेवन करने से शरीर में उत्पन्न प्रतिक्रिया, नशे की तरंग ।

उ०—विविध प्रकारे भोजन हुता, जीमता आई लहर । राय प-एसी जाणियौ, इण राणी दीधौ जहर । —जयवांणी

७ अनुराग, प्रेम ।

उ०—कहत ललिता बैद बुलाऊ, आवै नद को प्यारौ । वो आया दुख नांहि रहेगौ, है मोहि पतियारौ । वैद आयकर हात जो पकड़्यौ, रोग हैं भारौ । परम पुरुस की लहर व्यापी, डस गयौ कारौ ।
—मीरा

८ पवन का झोंका, वायु का झोंका ।

उ०—१ उत्तर आजस उत्तरइ, वाजइ लहर असाधि । संजोगणी सोहामणइ, विजोगणी अंग दाधि । —ढो. मा.

उ०—२ नैरंति प्रसरि निरधण गिरि नीझर, धणी भजै धण पयोधर । झोले वाइ किया तरु झखर, लवळी दहन कि लू लहर ।
—वेलि

९ गंध-युक्त वायु, महक ।
क्रि. प्र.—आणी
१० कृपा, महर ।

उ०—लहर कर लहर कर बिढक घर लांगड़ा, पहर कर कछोटौ निज पगांमा । डाक डमकार समकार कर डैरवां । महर कर महर कर मांमा । —गजौ खिड़ियौ

११ आनन्द, सुखभोग ।

ज्यूं—सहर री लहरा लेवणी ।

१२ सिर के वालों, वस्त्रों की रंगाई तथा खाट की बुनाई में होने वाला वक्र रेखांकन ।

उ०—अगर खेवै है, सुगंध देवै है । सूंधौ सूधीजै है, सीसियारी सीसियां ऊधीजै है । चोटी करै है, तिण आगै नायण री लोटी फिरै है । गुथबा में पड़ै है लहर, तठै कहौ कुण सकै ठहर ।
—र. हमीर

१३ महिलाओं के कान का आभूषण विशेष ।
१४ रफुट गायन की क्रिया, रागणी करने की क्रिया ।
१५ पुराणों के अनुसार निष्फलीय शख के बोलने की ध्वनि ।

उ०—तद संख लहरां दीवी, रांड तू ईयै नू क्यौ मारै ? हूं थारै आफै आयौ छुं । —बूढी ठग राजा री बात

रू. भे.—लहरांण, लहरि, लहरी, लहरीय, लहिर, लहिरी, लै'र, लैर ।

अल्पा.—लहरकौ, लहरौ

लहरकणौ, लहरकबौ—देखो 'लहकणौ, लहकबौ' (रू. भे.)

उ०—मोठ बाजरी सूं खेत लहरकै, वण-वण हरियाळी छायी । रुत आयी, रे पपइया, तेरे बोलण री रुत आयी । —लो. गी.

लहरकणहार, हारौ (हारी), **लहरकणियौ**—वि. ।
लहरकिओड़ौ, लहरकियोड़ौ, लहरक्योड़ौ—भू. का. कृ. ।
लहरकीजणौ, लहरकीजबौ—भाव वा. ।

लहरकियोड़ौ—देखो लहकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहरकियोड़ी)

लहरकौ—देखो 'लहर' (अल्पा., रू. भे.)

लहरणौ, लहरबौ—१ घनघटा युक्त हो बरसना, वर्षा होना ।

उ०—सावण तौ लहरचौ भादवौ रे, बरसै च्यारूं कूट । म्हारा मारूला सावण लहरचौ रै । —लो. गी.

२ मडराना, झूमना ।

उ०—विदिसा जग विख्यात राज री नगरी जाता, सगळा भोग विलास पावसौ प्रीत जताता । वेत्रवती जळ पीय लहरतौ घण गरजता, ज्यूं मुख भौंह विलास अधर धण पांन करंता । —मेघ

३ समुद्र में तरंगें उठना, तरंगित होना ।
४ प्रसन्न होना, हर्षित होना ।

उ०—अधरां रै रंग दीजै है, तिलक कीजै है । घूंमाळौ गाधरौ पहरीजै है, लहरियौ ओढियां जिणमें तन मन लहरीजै है ।
—र. हमीर

५ तरल पदार्थ में हवा के झोंके से हल-चल होना, लहरें उठना ।
६ किसी लचीले पदार्थ का वायु के संसर्ग से हिलना, लहलहाना ।
७ किसी का लहरों के रूप में उठना, चलना या आगे बढना ।

उ०—बाड़ा में लाय लागी जिणरी लहरावती लपटा ठाकर रै माळियै लागण ढूकी । —फुलवाडी

८ शोभित होना, फबना।
९ मादक या विषैले पदार्थ के प्रभाव मे आना।
१० अनुराग या प्रेम मे लीन होना, अनुरक्त होना।
११ मन में उमगे, इच्छाए उठना।
१२ किसी वस्तु को वायु के वेग मे उडते रहने के लिए छोड देना, तरंगित करना।
लहरणहार, हारौ (हारी), लहरणियौ—वि.।
लहरिग्रोडौ, लहरियोड़ौ, लहरयोड़ौ—भू का. कृ।
लहरीजणौ, लहरीजबौ—भाव वा.।
लहराड़णौ, लहराड़बौ, लहराणौ, लहराबौ, लहरावणौ, लहराववौ, लैराणौ, लैराबौ—रू. भे.।

लहरदार–वि. [स. लहरि+फा. दार] १ जिसकी बनावट लहरो जैसी हो।
२ जिस पर लहरो जैसी आकृति बनी हो।
रू. भे—लैरदार, लैरियादार।

लहरनिध, लहरनिधि–स. पु. यौ. [सं लहरि.+निधि] समुद्र, सागर।
उ०—दनुज आवियौ वळै हियै दोयणा, लाल मुख दसू भटकै अगन लोयणां। राम सामौ धसै दभ रिण रोपनै, लहरनिध छळै जाणै हदा लोपनै। —र. रू.

लहरबंबाळ–वि—बड़ा दातार, उदार-चित। महान उदार।
उ०—धन दे घर दे धाम दे, निबळा करै निहाल। दिल दधि मे दातार रे, लहरै लहरबबाळ। —रैवतसिंह भाटी

लहरसख–स. पु.—पुराणो के अनुसार वह शख, जो अर्थ-सिद्धि नही करता हो।
उ०—तद समुद्रजी कही, 'तौ भला, यै हीरा माणक छै, ले अर इसडौ तौ सख कोई नही।' तद कामदारै कही, महाराज एक लहरसंख छै, सो दीजै। —बूढी ठगराजा री वात

लहरांण–वि.—१ लहरो से युक्त।
उ०—रजधानी उच्छव रहसि, मणि दीपक अप्रमाण। सूधै महल मिगारिया, सोरभी लहरांण। —रा. रू.
२ देखो 'लहर' (रू. भे.)

लहराज–सं. पु.—शेष नाग?
उ०—लगै सर स्रोण जगै लहराज, सजै अंग जांण कसूबल साज। जमातिय जोघ जमातिस जांन, वजै सुर सिंधव राग विधांन। —सू. प्र.

लहराड़णौ, लहराड़बौ—१ देखो 'लहरणौ, लहरबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लहराणौ, लहराबौ' (रू. भे.)
लहराड़णहार, हारौ (हारी), लहराड़णियौ—वि०।
लहराड़िग्रोड़ौ, लहराड़ियोड़ौ, लहराड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
लहराड़ीजणौ, लहराड़ीजबौ—कर्म वा०।

लहराड़ियोड़ौ—१ देखो 'लहरायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लहरियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री. लहराड़ियोडी)

लहराणौ, लहराबौ–क्रि. स.—१ झंडा आदि का हवा मे लहराना।
२ देखो 'लहरणौ, लहरबौ' (रू. भे)
लहराणहार, हारौ (हारी), लहराणियौ—वि०।
लहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लहराइजणौ, लहराइजबौ—भाव वा० /कर्म वा.।

लहरायोड़ौ—देखो 'लहरियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लहरायोड़ी)

लहरावणौ, लहराववौ—१ देखो 'लहरणौ, लहरबौ' (रू. भे.)
उ०—बादळ रा मन मे भांत-भांत रै फूलां रा अणगिण बगीचा **लहरावण** लागा। —फुलवाडी
२ देखो 'लहराणौ, लहराबौ' (रू. भे.)
लहरावणहार, हारौ (हारी), लहरावणियौ—वि.।
लहराविग्रोड़ौ, लहरावियोडौ, लहराव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लहरावीजणौ, लहरावीजबौ—कर्म/भाव वा.।

लहरावियोड़ौ—देखो 'लहरायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. लहरावियोड़ी)

लहरि—देखो 'लहर' (रू. भे.)
उ०—१ चिहुंर जाळ से व्रज्ञ, लहरि लग्गै केवांणह। ग्रोडणि कमळणि पत्र, भ्रमर गूजै नीसाणह। —गु. रू. बं.
उ०—२ स्रीमहाराज राजेस्वर, 'अभैसाह' नरनाह प्रमेसुर। आयौ सूत मागध कविंद्र के भाय, दांन की **लहरि** समुद्र तैं सवाय। —रा. रू.
उ०—३ इम चहुवांण प्रबळ दळ ओपै, **लहरि** अजाद जांणि दधि लोपै। जाणै छपन कोडि जळ जाळा, मडि उमडै वरसण घणमाळा। —सू. प्र.
उ०—४ पीव पीव मैं रटू रात दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री। विरह-भवग मेरौ डसै कळैजौ **लहरि** हळाहळ जागी री। —मीरा
उ०—५ भवग मिळै मळयागरी, **लहरि** विसम की मेट। साध सदा मिळ करत है, राम नाम सुख भेट। —अनुभववाणी
उ०—६ निज मन बिसहर विरह विस, उर विच लागी आंनि। पेम **लहरि** पल पल उठै, हरीया निरभै जानि। —अनुभववाणी

लहरियादार–वि.—वह जिसमे लहर के समान बहुत सी टेढी-मेढी रेखाएं हों।

लहरियौ–सं. पु—१ लहर की तरह टेढी-मेढी रेखाओं का समूह।
ज्यूं—लहरिया भात बुणाई।
२ स्त्रियों के ओढने तथा पुरुषों के सिर पर बांधने का एक वस्त्र विशेष जिसमें रग-बिरगी धारियें होती हैं।

उ०—१ घरां घेर घाघरै गरक पिसचाजी गोटा । लपेदार लहरियौ इधक खुल रहा अगोटा । —र. हमीर

उ०—२ असी ए टकां को म्हारौ लहरियौ जी, कोई मोहर-मोहर गज भांत राज, लहरचौ, लेदचौ जी । —लो गी

३ राजस्थानी में एक लोक गीत ।

उ०—और ही भूलराभूल लमभम करता 'फूलबाग' मे आवै हैं, लहरिया गावै है । —र. हमीर

वि.—लहरो वाला, लहरों युक्त ।

रू. भे.—लहरिओ, लहरीओ, लहरीयौ, लहरचौ, लेरियौ, लैरियौ, लैरयौ, लैरौ ।

लहरी-वि.—१ वह जिसमें लहर हो, लहर वाला ।

उ०—लहरी दरियाव अवगा दत लाखा, कीरत सुण आयौ सौ कोस । पहडै तू रांणा पारथीयां, 'दीपा' इण कळजुग नै दोस । —ओपौ आढौ

२ समुद्र, सागर ।

उ०—खुरम समदी मच्छ जिम, लहरी लवख दळाह । चडियै पांणी सामुहौ, सुरताणी फौजाह । —गु. रू. बं.

३ दातार, दानी ।

उ०—१ छोकरी आयिनै पूछियौ । तरै एकण चाकर कह्यौ-साखि राठौड़, नींबौ सिवालोत, लाखा रौ लोडाउ, बडौ भोकाउ, सैंणां रौ सेहुरौ दुसमण रौ साल, जाता-मरतां रौ साथी, लाखां रौ लहरी । —वीरमदे सोनगरा री बात

४ आवेश या जोशवाला, जोशीला ।

५ प्रफुल्लित रहने वाला, खुश-मिजाज ।

६ देखो 'लहर' (रू. भे.)

उ०—लहरी सायर-संदिया, बूठउ-संदउ बाव । बीछुडिया सजण मिळइ, वळि किउं ताढउ ताव । —ढो. मा.

लहरीओ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे.)

लहरीय—देखो 'लहर' (रू. भे.)

लहरीयौ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे.) (रा. रा.)

लहरीरव, लहरीरवण-सं पु. [सं] समुद्र, सागर । (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ रटै भागीरथी सुणौ लहरीरवण, लाल रंग रुधिर चौ नीर 'लागौ । कळह तटि गवड है गै भडा कचरियां, भिडै पूरब तणौ साह भागौ । —अनिरुद्धसिंघ गौड़ रौ गीत

उ०—२ यांरी अणी जीमणी ओपै लहरीरवण प्रजा किर लोपै । सांम्है अणी गिणै अरि सल्लां, मारहथां जोधां रिडमल्लां । —रा. रू.

वि.—१ वह जिसमें लहरे उठती हों ।

उ०—आतसबाजी गाडियां, आराबां अनमंध । गडडै गोळी नाळिया किरि लहरीरव सिंध । —गु. रू. बं.

२ उदार, दातार ।

उ०—लाखो लहरीरव नांम खंडै नवपाट रौ रखपाळ । बह जांण महाबळ आधरव, उज्जल दीपिओ विरदाळ । —ल. पि.

लहरीस—स. पु. यौ. [स. लहरिः+ईश] १ समुद्र, सागर ।

उ०—साकिया राज राणा सकळ, अकळ, पाण छिलियौ असुर । लहरीस जाण वारी लहै, गरज निवारी सीम गुर । —रा. रू.

२ जोश या आवेश-युक्त ।

३ उमग या उत्साह वाला ।

लहरीसमंद-सं. पु. यौं.—समुद्र, सागर ।

वि — दानवीर उदार ।

उ०—सरणसाधार सदतार लहरीसमंद, करै अदतार नर मीढ केहा । रार लज धार संगार सारौ रटै, त्रुगट गढ वीखोरण हार तेहा । —गुलजी आढौ

लहरौ-स. पु.—देखो 'लघु' (रू. भे)

उ०—सिंह सिचाणी सापुरुस, अै लहुरा न कहाय । वडौ जिनांवर मारकै, छिन मे लेय उठाय । —अग्यात

२ देखो 'लहर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—रिमझिम रिमझिम मेवलौ बरसै अतै मे ही अचाणचूकौ पून रौ एक लहरौ आयौ अर बादळी उडगी । —कन्हैया लाल सेठियौ

लहरचौ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे.)

उ०—१ गोरे कंचन गात पर अगियां रग अनार । लहंगौ सोहै लचकतौ, लहरचौ लपादार । —र. हमीर

उ०—२ लहरचौ तौ लै दो गोरी का सायबा जी, कोई थांरी धण ने लहरचौ रौ चाव जी लहरचौ ले दो जी । —लो. गी.

लहल-सं. पु.—संगीत में एक प्रकार का राग जो दीपक राग का पुत्र माना जाता है ।

लहलहणौ, लहलहबौ—देखो 'लहलहाणौ, लहलहाबौ' (रू. भे.)

उ०—लहलहती नाचै लता, पवन संगीती पाय । पखा-बरदारी करै, रंभ बिचै बणराय । —बा दा.

उ०—२ करइं उल्लास, लखेस्वरी कोटिध्वज तणा आवास । आनै दइ मन, गरूड राज भवन । उपारी अखंड । ध्वजपट लहलहई प्रचंड । —रा. सा स

लहलहणहार, हारौ (हारी), लहलहणियौ—वि० ।

लहलहिओड़ौ, लहलहियोड़ौ, लहलह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लहलहीजणौ, लहलहीजबौ—भाव वा० ।

लहलहाड़णौ, लहलहाड़बौ—देखो 'लहलहाणौ, लहलहाबौ (रू. भे.)

लहलहाड़णहार, हारौ (हारी), लहलहाड़णियौ—वि० ।

लहलहाड़िओड़ौ, लहलहाड़ियोड़ौ, लहलहाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लहलहाड़ीजणौ, लहलहाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लहलहाड़ियोड़ौ—देखो 'लहलहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहलहाड़ियोड़ी)

लहलहाणौ, लहलहाबौ—क्रि. अ.— १ हवा के प्रवाह से पौधे के ऊपरी भाग का हिलना, लहराना।

२ किसी लचीली वस्तु का हवा के झोंके के साथ हिलना या उड़ना।

३ फूल-पत्तियों से हरा भरा होना, पल्लवित होना, खिलना।

४ सूखे हुए पौधे का नवीन पत्तों से हरा-भरा होना, पनपना।

५ प्रफुल्लित होना, आनन्दित होना।

६ दुबले शरीर का फिर से स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट होना।

क्रि स.—७ प्रफुल्लित करना, आनदित करना।

८ दुबले पतले शरीर को फिर से स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट करना।

लहलहाणहार, हारौ (हारी), **लहलहाणियौ**—वि।

लहलहायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लहलहाईजणौ, लहलहाईजबौ—भाव/कर्म वा.।

लहलहणौ, लहलहबौ, लहलहाड़णौ, लहलहाड़बौ, लहलहावणौ, लहलहावबौ, लंलहाणौ, लंलहाबौ—रू. भे.।

लहलहायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ हवा के झोंके से पौधे का ऊपरी भाग हिला हुआ. २ कोई लचीला पदार्थ हवा के साथ हिला या उड़ा हुआ. ३ फूल-पत्तियों से हरा-भरा हुवा हुआ, पल्लवित. ४ सूखा हुआ पौधा नवीन पत्तो से हरा-भरा हुवा हुआ, पनपा हुआ. ५ प्रफुल्लित या आनदित हुवा हुआ. ६ दुबला शरीर फिर से स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट हुवा हुआ. ७ प्रफुल्लित किया हुआ. ८ दुबले शरीर को फिर से स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट किया हुआ।

(स्त्री. लहलहायोड़ी)

लहलहावणौ, लहलहावबौ—देखो 'लहलहाणौ, लहलहाबौ' (रू. भे.)

लहलहावणहार, हारौ (**हारी**), **लहलहावणियौ**—वि.।

लहलहाविओड़ौ, लहलहावियोड़ौ, लहलहाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लहलहावीजणौ, लहलहावीजबौ—भाव/कर्म वा.।

लहलहावियोड़ौ—देखो 'लहलहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लहलहावियोड़ी)

लहलहियोड़ौ—देखो 'लहलहायोड़ौ' १ से ६ (रू. भे.)

(स्त्री. लहलहियोड़ी)

लहलह—स. स्त्री.—युद्ध मे भैरव या युद्ध देवता की आवाज।

लहवाणौ, लहवाबौ—क्रि. अ.—छोटा होना, लघु होना।

उ०—पण घोड़ौ उराकी छै। रवीयांण चद, ऐराक बीजं बड़ बीज, प्रात गाज, सापुरस बेण पैहिली तौ **लहवाय** लहवाय पीछै गरवाय गरवाय। —हाहुल हमीर री वात

लहवाणहार, हारौ (हारी), **लहवाणियौ**—वि।

लहवायोड़ौ—भू का. कृ.।

लहवाईजणौ, लहवाईजबौ—भाव वा.।

लहवायोड़ौ—भू. का. कृ—छोटा हुवा हुआ।

(स्त्री लहवायोडी)

लहसण—देखो 'लसण' (रू. भे.)

लहसणौ, लहसबौ—क्रि. अ.—प्राप्त होना, मिलना।

उ०—१ घट मै एक हक है अला,**लहसी** भाग जिन्हादा भला। ओउ सोउ जाप अजपा, घट मैं किया संप-असपा।

—अनुभववांणी

क्रि स.—लेना प्राप्त करना।

लहसणहार, हारौ (हारी), **लहसणियौ**—वि०।

लहसिओड़ौ, लहसियोड़ौ, लहस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लहसीजणौ, लहसीजबौ—भाव वा०।

लहसियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ।

२ लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ।

(स्त्री. लहसियोड़ी)

लहसुन—देखो 'लसण' (रू. भे.)

लहि—अव्य.—तक, पर्यंत।

लहिद्रयौ—स. पु—एक विशेष जाति का घोडा।

उ०—मल्हडा, हरीयड़ा, सरेखंडा, टूंककना, खेत्र खुरांसांणी। बाहडदेसना, बोरीया, **लहिद्रया**, गंगेटिया, हसजादर, उडणभ्रमर, ऊधस्या फोरणा, चपल चरण विस्तीरण सालिहोत्र प्रतिस्टा सिद्ध। —का. दे प्र.

लहिर, लहिरी—देखो 'लहर' (रू भे.)

उ०—१ तीन प्रकार रौ पवन वाजै छै। सीत, मंद, सुगध अनेक परिमळ झोला खाई **लहिर** लै छै। —र. वचनिका

उ०—२ मलयाचल मूकी करी, मारुत आवियउ जेह। वैसाखि वासिग-जिसिउ, **लहिर** लगाडइ तेह। —मा. कां. प्र.

उ०—३ ढौला हूं तुझ बाहिरी, झीलण गइय तळाइ। ऊजळ काळा नाग जिउं, **लहिरी** ले ले खाय। —ढो. मा.

लहीखोळणौ—सं. पु.—प्रसव के पाँचवे दिन स्नानादि स्वच्छता के रूप मे किया जाने वाला सस्कार।

लहुडौ—देखो 'लघु' (रू. भे)

लहु—सं. पु.—१ शीघ्र कार्य करने वाला।

२ हलका।

३ निस्सार ।

अव्य —तक, पर्यंत ।

देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—हेम वरनी हेमगिर, बाळी लहुवे वेस । कंथ विहुणी कांमणी, सांची कहि संदेस । —मा. वचनिका

लहुआ-सं. पु.—१ भाटी वंश की एक शाखा ।

२ सोलह मात्रा का मात्रिक छंद जिसके अन्त में गुरु हो ।

लहुड़ियौ, लहुड़ौ, लहुडउ, लहुडुं, लहुडौ—देखो 'लघु' (रू. भे.) (उ.र.)

उ०—१ पुत्र दोय 'गजपति' रै, सूर दातार सधीर । वडौ 'अमर' **लहुड़ौ** 'जसौ', वडै नखत नरवीर । —सू. प्र.

उ०—२ तद बायर पूछीयो, सू कहै नही । **लहुड़ी** बाहर री वारी हुती । तिका पूछै पिण कहे नही । —वात पीठवै चारण री

उ०—३ खित्रीवट जे साहस धीर, मालदेव छइ **लहुडउ** वीर । जिसी प्रीति लखमण नइ रांम, राज अनरेइ एहवी माम । —कां. दे. प्र.

उ०—४ जणां मंत्री मुसाहिबां मतौ उपाय वीरां **लहुड़िया** भाई नूं राजतिलक दीन्हूं । —सिंघासण बत्तीसी

उ०—५ पिंगळ राय कहावियो, ढोला पाछो आव । मारू **लहुडी** बहिनडी, तोहि भणी परणाव । —ढो. मा.

(स्त्री. लहुड़ी, लहुडी)

लहुवय—देखो 'लघुवय' (रू. भे.)

उ०—सिरिवत साहि सुतन्न, माता सिरिया देवी नंदणो । बइरागि **लहुवय** लिद्ध संजय, भविय जण आणंदणो । —स. कु.

लहू—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—१ गरलसहोदर ! गगनचर ! लंछनधर लहू-अद्ध । आवि म माहरइ आंगणइ, उडुप अंधारइ खद्ध । —मा. कां. प्र.

उ०—२ किवळो विच्छू कहैं, लहू लघु अंक लहावै । गिणै छंद बस गुरु कवी, लघु चार कहावै । —र. रू.

लहूअडउ, लहूडो—देखो 'लघु' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—१ नान्हउ ए स्वांमी **लहूअडउ** लघु बांधव गुणै करी छइ वडउ । भाई तमारू स्वांमी एह एहसिउ तमे म देसिउ छेह । —नळ दवदंती रास

उ०—२ वडां वतू पहिलू करइ **लहूडा** पछइ लगार । तेहनइ सीस चढावीइ, माधव किसिउ विचार । —मा. कां. प्र.

लहेरी-स. पु.—समुद्र, सागर ।

वि.—लहर वाला, लहरदार ।

उ०—अबै बिनती हेक 'हिंगोळ' वाळी, जिका ध्यान दे कांन कीजै धजाळी । **लहैरी** महैरांण भूपाळ 'लच्छो', 'अखौ' दूसरौ रीझ खीजाळ अच्छो । —मे. म.

लहैरो-सं. पु.—एक छोटा सदा-बहार पौधा, जो पंजाब, दक्षिण गुजरात और राजस्थान मे बहुत होता है ।

लहोड़ा-सं. पु.—१ शस्त्र-प्रहार ।

उ०—वीजै जी महारांणा जद जांम वगैरा भाई रै **लहोड़ा** लागा राव चंद्रसेण री बेटी जांमवंती बाई बीजाजी रै लारै वळी । —मारवाड़ री ख्यात

२ देखो 'लोह' (रू. भे.)

३ देखो 'लघु' (रू. भे.)

लह्य-सं. पु.—१ एक ऋषि, जो भुज्यु ऋषि का पिता था ।

लह्यणौ, लह्यबौ—देखो 'लैंणौ, लैंबौ' (रू. भे.)

लह्यणहार, हारौ (हारी), लह्यणियौ—वि. ।

लह्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लह्यीजणौ, लह्यीजबौ—कर्म वा.

लह्योड़ो—देखो 'लियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लह्योड़ी)

लांई-वि.—वायी, वाम ।

उ०—हो मेरी आंखि फरुकौ **लांई**, पीव मिळण कै ताई । पीव प्यारै कौ पथ निहारत, मन तन सुं भई ठाढी । —अनुभववांणी

लांक-सं. पु.—१ देखो 'लूंग' (रू. भे.)

२ देखो 'लंक' (रू. भे.)

उ०—जिसी कमल कोमल नाल तिसी बाहुलता, जिसिउ सिह तणौ **लांक** तिसिउ मध्य देस, जिसा केलि ना स्तभ तिसा बे ऊर... । —व. स.

लांकड़ी—देखो 'लांकी' (अल्पा., रू. भे.)

लांकी-सं. स्त्री.—लोमड़ी ।

रू. भे.—लूंकी, लुंकालु, लूंगती, लोका

अल्पा.—लांकडी, लुंकड़ी, लुकड़ी, लूकड़ी, लूकड़ी

वि.—कायर, डरपोक ।

लांकीमूळौ-सं. पु.—पत्र-पुष्पहीन एक प्रकार का उद्भिज जिसके अन्दर बदबू निकलती है ।

रू. भे.—लंकीमूळौ

लांकीलौ-वि. (स्त्री. लांकीली) १ सुन्दर ।

उ०—**लांकीलौ** चूड़ौ पिण घणौ रूड़ौ चमकै है, देही तिका जांणै दामण हीज दमकै है । जिण अंग जावक सूंधारी ही भार है, इण नाजकता रौ किसो पार है । —र. हमीर

२ रंगीन ।

लांकौ–स. पु. (स्त्री. लाकी) नर-लोमडी ।

रू. भे.—लुकौ

लांखणौ, लांखबौ–क्रि. स.—गिराना, डालना, फेंकना ।

उ०—१ टलवलइ जिम निरजालि माछिली, वलवलइ अति अंगि वली वली । झखइ **लांखइ** लावर आकुलउ, विरहि विह्वल वातर वाउलउ । —सालिसूरि

उ०—२ पटोलै भूमि बाहिरियइ, चीतवीया पासा पडइ, उ करता पाघरुं थाइ, लक्ष्मी बारणि **लांखइं** अनइ ऊपरवाडि पयसइ, इसिउ दिहाडउ भलउ । —व. स.

लांखणहार, हारौ (हारी), लांखणियौ—वि० ।

लांखिग्रोड़ौ, लांखियोड़ौ, लांख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लांखीजणौ, लांखीजबौ —कर्म वा० ।

लांखियोड़ौ–भू. का. कृ.—गिरायाहुआ, डाला हुआ, फेंका हुआ । (स्त्री. लाखियोडी)

लांग–स. स्त्री.—१ आवड़ देवी की एक बहिन का नाम ।

२ धोती या लगोट बाधते समय जाघो के बीच में से निकाल कर कमर मे खोसा जाने वाला लगोट या धोती का भाग ।

उ०—इत्यादिक मोथी आदति रा अळिया, थोथी थळवट रा थळिया बेथळिया । ढीली **लांगां** रा ढेरा ढळकाता, टोघड़ टुकड़ा रा खेरा खळकाता । —ऊ. का.

३ धोती की किनार ।

उ०—तठा उपरायत सिरदारां देसौता तळाव मे भूलण री हांस करै छै । लाल **लांगी** री पोतां पहरजै छै । धड़नावा बणायजै छै । —रा .सा. स.

अल्पा, लागडी'

३ देखो 'लवंग' (रू. भे.)

उ०—तिण भांग साफ मसाला मंगायजै छै । जायफळ, **लांग**, इळायची, मिरच, विरहाळी अजूं नागकेसर भमर टटी तज तमाळ-पत्र तंबोळ प्रतसंथी । —रा. सा. स

रू. भे.—लग

लांगड़–सं. पु. [सं. लांगलं] १ सूअर, वराह । (अ. मा.)

२ देखो 'लांगळ' (रू भे.)

उ०—सीहरा कळाधारी अगर 'सांवतां', बळाकारी हरा धार बूतौ । मुरड़ भाजड पड़ै खाय आंगड़ मठा, जकण **लांगड़** ऊरड़ आय जूतौ । —आउवा ठाकर हरनाथसिंह री गीत

३ देखो 'लांगौ' (मह , रू. भे.)

४ देखो 'लंगड़ौ' (मह., रू. भे.)

लांगड़असत्र–सं. पु.—सूअर, वराह । (अ. मा.)

लांगड़ी—देखो 'लाग' (अल्पा., रू. भे.)

लांगड़ौ—१ देखो 'लागौ' (अल्पा., रू. भे) (अ. मा., डिं. को.)

उ०—१ गदा ले खडौ **लांगड़ौ** अग्र गामी, भले मात हिंगोळ हिंगोळ भामी । मुणी मैं जिका आदि अन्नादि माई, अवतार ले मामड़ा धाम आई । —मे. म.

उ०—२ जागडा झड़ा सत्र वीर सर गवीजै, ताप पड़ कागड़ा लक ताई । पर गढां सांगडा दयण आयौ ऊछज, नागध्रह **लांगड़ा** वीर नाई । —बद्रीदास खिड़ियौ

उ०—३ नामी गिरदा **लांगड़ा** विना भू-डंडा चढावै न कौ । तवां राम बना न कौ उडावै त्र-ताप । निसा राका विना वेळ सांमुंद्र बढावै न कौ, पातां नेस तो विनां कौ बढावै 'प्रताप' । —कीरतसिंह खिडियौ

२ देखो 'लंगड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ भगवानदास भाराथ भल्ल, 'वगडी' तखत्त आखाडमल्ल । **लांगड़ौ** हणु जिम लियण बाथ, ओगम लागै अणभग नाथ । —गु. रू. बं.

उ०—२ जोमडी भडीस ज्याग आयौ जिऊ चडीस जायौ, राजपत्री आयौ जीऊ थडीस व्याळ रेस । ओडडी असीसतौ **लांगड़ी** कपीस आयौ, कोडंडी कसीसतौ क आयौ गुड़ाकेस । —हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—३ तै पाट 'वाघ' वगडी तखत्त, 'वाघ' सुतन भड बाकडौ । भगवांन डहै असमान भुज, हेक हणमत **लांगड़ौ** । —गु. रू बं.

लांगटियौ–स. पु.—बाजरी के आटे को पानी में मिलाकर आच पर पका कर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ ।

लांगडौ–स. पु.—चकमक पत्थर के साथ लगी हुई छोटी सूत या खीप की रस्सी, जो आग जलाने के काम आती है ।

लांगण—देखो 'लाघण' (रू. भे)

लांगदार–वि.—लाग वाली ।

उ० —एक पग में चादी री तांती भळकै अर एक कांन री ऊपरली लोळ में खरा मोत्या री मांमा-मुरकी लटकै । किनारी हाळी **लांगदार** धोती तथा पागड़ी में ताबै री मादळियौ बांधोड़ौ है । —दसदोख

लांगळ–स पु. [सं. लांगलं] १ खेत जोतने का हल । (डिं. को.)

२ एक देश का नाम ।

उ० —कीर कास्मीर द्रविड गउड जांड लाड **लांगळ** जांग ळखस पार स्व जादव नेपाल अग वंग कलिंग तलिंग, मागध'''। —व. स.

रू. भे.—लगळ, लांगड़

लांगळचकर, लागळचक्र–सं. पु [स. लांगलम्+चक्र] फलित ज्योतिष में हल के आकार का एक चक्र जिसके द्वारा भावी फसल के बारे में जाना जाता है ।

लांगळधुज, लांगळध्वज—सं. पु. यौ. [सं. लांगलं+ध्वज] बलराम, हलधर।

लांगळी—सं पु [स. लांगलिन्] १ बलराम, हलधर।

२ नारियल का पेड़।

३ सर्प, साप।

४ पुराणो में एक नदी का नाम।

५ ऋषभक नामक अष्टवर्ग की औषधि।

६ देखो 'लांगूळी' (रू. भे.)

लांगळीस—सं. पु. यौ. [सं. लांगल+ईश] १ बलराम, बलभद्र।

२ शिवलिंग।

लांगुळ, लागुल, लांगूल—सं. पु. [सं. लांगुलं] १ पूंछ, दुम।

उ०—गळइ घंट गयद तणइ, पश्चिम बंध्या पेस। लोडंता लांगुल छटा, आइसी अवनेस। —मा. कां. प्र.

२ बन्दर, वानर। (ह. नां मा.)

३ शिश्न, जिननेन्द्रीय। (डिं. को.)

[सं. लांगलं] ४ हल के आकार का एक प्रकार का शस्त्र।

उ०—चाप चक्र, नाराच, अरद्धचंद्र, असिपत्र, करपत्र, क्षुरप्र, क्षुरिका, करवाल, कुंत, सल्ल, वावल्ल, भल्ल, सत्थल, त्रिसूल, सक्ति, सर, तोमर, मुरवि, अरद्धमुरवि, परसु, पास, पट्टिस, दूस, लागुल, मुसल, मुखंढि, मुग्दर, लगुड गदा, दड, भिंडमाल, गाजीव, विस्फोटक, बज्र, तरुवारि, प्रमुख सर्ट्त्रिसद्'डायुधानि। —व. स.

५ देखो 'लंगूर' (रू. भे.)

लांगूळी—सं. पु. [सं. लांगूलिन्] १ बन्दर, वानर।

२ लगूर।

३ हनुमान, पवनसुत।

रू. भे.—लंगूल, लागळी।

लांगेरौ—सं. पु.—झड़-बेरी के पत्तों सहित कटे हुए सूखे कांटों व डंठलों का समूह या ढेर।

लांगोवर—सं. पु.—एक मारवाड़ी गीत।

लांगौ—सं. पु. [स. लांगूलिन्] १ बन्दर, वानर।

२ लंगूर।

३ हनुमान, पवनसुत।

उ०—१ लायौ जाय रोगहर **लांगौ**, पिलंग सहतौ सुण प्रबळ। देखे जाग रीछ कपि दोळा, दुसह सझोळा रांमदळ। —र. रू.

उ०—२ लंकाळ सेवग तूझ **लांगौ**, भ्रात लिछमण खळां-भांगौ। पर्ती-कुळ स्वारथी पांगौ, करण असह निकद। —र. ज. प्र.

४ भैरव।

उ०—काळा गोरा कंवर, रणतमल **लांगौ** कळवौ। मांण भद्र हनुमांत, कोइलौ नरसिंघ फळवौ। —मा. वचनिका

उ०—२ कळू में वळू तामापत्र करा दे, भरत खड सरा दे रोर भांगौ। अदत मन फिरा दे सुदत करदे अखा, लखा धन दिरादे तुरत **लांगौ**। —भैरूंजी रौ गीत

५ वीर, बहादुर।

उ०—गाय गाय भणै बग्गा टोप्ला नाखिया गौरा, बांकीपातसाही जगा बजाडे बाणास। ऊगे दीह **लांगौ** 'सिंघ' आवियौ 'दलेल' वाळौ, खागां पांण कीधा बंदीखाना नै खलास। —संकरदान सांमोर

६ देखो 'लंगडौ' (रू. भे)

उ०—करे उव राव दुसार कटार, वहै कंठि हार परी जिण वार। **लांगौ** हणमंत पराक्रम लेखि, दियै नह हार जति वप देखि। —सू. प्र.

रू. भे. लंगौ

अल्पा. लंगड़ौ, लागड़ौ

लांघड़ौ—देखो 'लंगडौ' (रू. भे.)

उ० —दूसरा जेम नह रांचियौ देख नै, अरस रौ खांचियौ थकौ आयौ। लांघड़ौ कपी ज्यूं रांम लायौ लड़ै, लड़ै जिम 'जुहारौ' भ्रात लायौ। —बुधजी आसियौ

लांघण—सं. पु. [सं. लंघनं] १ भूखा रहने की अवस्था या क्रिया।

उ०—१ 'सांखली आ मोहर आप कनै किण ही सूल वेळा कुवेळा नू कठैक छांनी राखी हुती सु आज गुढा रा लोग नूं **लांघण** पड़तौ जाण नै मोनूं दी छै। —नैणसी

उ०—२ हरिया **लांघण** साधकै, जाचै किनी न जाय। यूं लाघणियौ केहरी, मूवां पछै न खाय। —अनुभववाणी

२ उपवास या व्रत करने की क्रिया।

उ०—पछै देवी ऊपर **लांघण** पाच दस किया। देवी प्रसन्न हुई। कह्यौ.—तूठी, मांग।' —नैणसी

क्रि. प्र.—करणौ, पड़णौ, होणौ।

३ लांघने या फांदने की क्रिया या भाव।

४ घोड़े की एक प्रकार की चाल विशेष।

५ सीमा के बाहिर होने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—लंघण, लंघन, लांगण, लांघन।

लांघणिम्रो, लांघणियौ—वि. [सं. लंघनं+रा. पु. इयौ] १ जिसने कुछ भी नही खाया हो, भूखा।

उ०—१ अंगिम्रां ऊपरै फूलां रा चौसर पहरिम्रां **लांघणिम्रां** सिंघ री कटी लक धड़ै चड रहिम्रो छै। पांन सारिखौ पेट पातळौ अम्रित सी नाभी कुंडळी माहि पांणी पीता ढळकतौ दीसै छै। —रा. सा. स.

उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजान सिलांमति हमै राजांन कांम रा भूखिया, **लांघणिया** सीहं ज्यौं आपाळि नै रहिया छै। जांणे

मदन-मयद पछाड़ीजै छै । काछी जिमपुरि करि नै रहिया छै ।
—रा. सा. स.

उ०—३ हरिया लांघण साधकै, जाचै किनी न जाज । यु लांघणियौ केहरी, मूवा पछै न खाय । —अनुभववांणी

२ कूद कर या फलाग मार कर एक ओर से दूसरी ओर पंहुचने वाला ।

रू. भे.—लघणियौ, लंघाणियौ

लाघणीक-वि. ।—१ जिसने कुछ न खाया हो, भूखा ।

२ कृशोदर ।

रू. भे.—लंघणीक

लांघणौ-वि. (स्त्री. लांघणी) १ जिसने कुछ नहीं खाया हो, भूखा ।

२ लाघने वाला, उल्लघन करने वाला ।

लांघणौ, लांघबौ-क्रि. स. [स. लघनम्] १ डग भर कर, चल कर या किसी वाहन के द्वारा किसी स्थान को पार करना, दूसरे सिरे पर पहुँच जाना ।

उ०—१ जब देहळी भीतर रूखमणीजी आया । तब देहळी **लांघता** पग आघौ दीयौ । तठे जेहड़ि पग की स्रीक्रस्णजी की नजरि पड़ी । — वेलि टी·

उ०—२ थळ कतार लाघण थटै, लै जिहाज जळ अंत । भोळी ढाळी वांणणी, बेटा धूत जणंत । —बां. दा.

२ छलाग भर कर या कूद कर किसी पदार्थ, नाला, कूप आदि के ऊपर से होकर दूसरे सिरे पर पहुँच जाना ।

उ०—१ सागर तीर मिळें सपाती, कहै लक में सिंया दिखाती । जामवंत हनुमत अराधै, सागर **लांघण** री विध साधै ।
—गी. रा.

उ०—२ **लांघी** चांवल पीळौ हो खाळ, डावी देवी जीमणी (सिय) माळ । डावी महासत्ति फै करइ, डांवा सारस, स्यंघ, सियाळ ।
—बी. दे.

३ इस गति से जाना कि रास्ता शीघ्र पार करके गंतव्य स्थान पर पहुंचा जा सके ।

उ०—राजा नूं देख सो सूअर भागियौ । राजा पीछौ कियौ । बन नदी परबत **लांघतौ-लांघतौ** सूअर एक बडी गुफा मांही पैठौ ।
—सिंघासंण बत्तीसी

४ किसी खाद्य-पदार्थ के ऊपर गुजरना, जो कि अनुचित माना जाता है ।

५ सीमा के बाहिर होना या जाना ।

६ व्यतीत करना या होना ।

७ त्यागना, छोड़ना ।

लांघणहार, हारौ (हारी), **लांघणियौ**—वि. ।

लांघियोड़ौ, लांघियोड़ौ, लांघ्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लांघीजणौ, लांघीजबौ—कर्म वा. ।

लंघणौ, लघबौ—रू. भे. ।

लाघन – देखो 'लाघण' (रू. भे.)

लांघियोड़ौ–भू का. कृ.—१ डग भरकर, चलकर या किसी वाहन के द्वारा किसी स्थान को पार किया हुआ, दूसरे सिरे पर पहुँचा हुआ. २ छलांग भर कर या कूद कर किसी पदार्थ, नाला, कूप आदि के ऊपर से होकर दूसरे सिरे पर पहुंचा हुआ ३ इस गति से गया हुआ कि रास्ता शीघ्र पार करके गंतव्य स्थान पर पहुँचा हुआ. ४ किसी खाद्य पदार्थ के ऊपर से होकर गुजरा हुआ, जो कि अनुचित माना जाता है. ५ सीमा के बाहिर गया हुआ. ६ व्यतीत किया हुआ या हुवा हुआ. ७ त्याग किया हुआ, छोड़ा हुआ । (स्त्री. लाघियोड़ी)

लांघियौ—देखो 'लाघणियौ' (रू. भे.)

उ०—झांमरै पूंछ रा, भुवरियै रूं रा, चोळमै रंग रा, **लांघियै** सीह ज्यू लंकां चढिया थका, भागा गाडा ज्यू बठठाठ करता थका वेस्या ज्यूं झाला करता थका, मातै हाथी ज्यूं हुंकारा करता थका । इसा ऊट झेकजै छै । —रा. सा. सं.

लांघौ—१ 'लागौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लंगड़ौ' (रू. भे.)

लांच-सं. स्त्री.— कमी, अभाव ।

२ दोष, कलंक ।

३ घूस, रिश्वत ।

४ बाधा, कठिनाई ।

५ झुकाव ।

६ दगा, फरेब ।

उ०—क्षत्री **लांच** ग्राही हुसी, वचन कही नट जासी रे । दगा दगी घणा खेलसी, विस्वास घाती थासी रे । —जयवांणी

क्रि. वि.—७ किंचित शका ।

उ०—लाज न किम रण **लांच** लग, खग न बाही खांच । समर चढू अस पट समं, खाविंद पहरौ खांच । —रैवतसिंह भाटी

लांचण, लांचन—देखो 'लांछन' (रू. भे.)

लांची-सं. स्त्री.—विलम्ब, देरी ।

लांचौ-सं. पु—१ उत्तम श्रेणी का घास, जो बुवाई करते समय विशेष परिश्रम करने पर बैलो के लिए संग्रहित किया जाता है, या सुरक्षित रखा जाता है ।

उ०—१ खूटौ बीजण कण **लांचै** खड़ खूटौ, छपनं प्रळयागम पावन पड़ छूटौ । फीका चै:रा पड़ फीका द्रग फेरै, हाहा ऊडा दिन भूडा भय हेरै । —ऊ. का.

उ०—२ करता मांचा दे **लांचा** कूतरिया, उतरता आसाढा मूंढा

ऊतरिया । सेंणा संकट में बंकट सब राया, घांटा घुटियोड़ा घूंघट घबराया । —ऊ. का.

२ खर्च में कमी पूर्ति के लिए लिया जाने वाला कर ।

उ०—महमंद बारै लोकां नै १८ कर लागा । तै कही (प्रथम) दांण, (वीजौ) पूछी, हळगत, भोम, भेट, तलार, सूंखड़ी वधांमणी लाग, मळबौ लाग, बळ, लांचौ, घोडा-चारसा, कवारनी सूंखड़ी, पाघड़ी-बरोड़, ढोरनी चराई, बाड़ी नी लाग, कांटी वाळी लाग और काजीनी लाग । —नैणसी

वि.—(स्त्री. लाची) खराब, अशुभ ।

उ०—ताहरां पाबूजी कह्यौ जु-'म्हांनूं सुगन लाचा हुआ छै । तैसूं म्हे रातौरात घरां जावस्यां । —नैणसी

लांछण, लांछन—सं. पु. [सं. लक्षण] १ दाग, धब्बा ।

२ निन्दनीय अथवा कुकर्म करने पर चरित्र पर लगने वाला कलंक ।

रू. भे.—लचण, लंचन, लंछण, लंछन, लांचण, लाचन ।

लांजउ—सं. पु.—एक देश का नाम ।

उ०—देस सख्या; आदिइं अयोध्या नगरी, उखामडल, ग्राम क्यारि कोडि, वलवत्ता देस ३ कोडि, खुरसांण ग्राम कोडि १, गाजणउ ३२ लक्ष, कनूज ३६ लक्ष, चौड १४ लक्ष, त्रांबालू १४ लक्ष, द्रविड १२ लक्ष, विसु १ लक्ष, लांजउ १ लक्ष, वइराट १० सहस्र । —व. स.

लांजौ—देखो 'लजौ' (रू. भे.)

लांठ—सं. पु.—१ गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं का समूह ।

उ०—१ हीर चीर हेम तार घड़ी में विरांण होसी, लाखा द्रब विभौ सबै हाथी घोड़ा लांठ । गांम धांम भूठा जांणौ धंधै भूठा लागा, नरां गार रै मिरग रै पड़ी वायरा री गांठ । —ओपो आढौ

उ०—२ काचा करमां सूं रैगा गळ रीता, साचा सोनै रा बालळिया बीता । गोरां खाली हुय खालां री गाठां, लेग्यौ लूंठापण लांठां री लांठां । —ऊ. का.

२ देखो 'लांठौ' (मह. रू. भे.)

लांठाई—सं. स्त्री.—१ जबरदस्ती ।

२ सीनाजोरी, ज्यादती ।

रू. भे.—लूंठाई ।

लांठापण, लांठापणौ, लांठापौ—सं. पु.—१ जबरदस्ती, बलात् ।

उ०—काचा करमां सूं रैंगा गळ रीता । साचा सोना रा बाळ लिया बीता । गोरां खाली हुय खालां री बांठां । लेग्यौ लूंठापण लांठां री लांठां । —ऊ. का.

२ सीनाजोरी, ज्यादती ।

रू. भे.—लूंठापण, लूंठापणौ

लांठौ—वि. [सं. लुंठकः या लुंठाकः] (स्त्री. लांठी) १ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—वणावौ आप वातां वडी, साप हुवै किम सीदरौ । सनमंद थयौ लांठौ सदा, जांणां ठणकौ 'जींद' रौ । —पा. प्र.

२ शक्तिशाली, बलवान ।

उ०—१ पह चाळक धनवतपुर, लांठै लूट लियाह । कांठै नदी कबेरजा, खेमा खड़ा कियाह । —बा. दा.

उ०—२ ताहरा साह कूकियौ, उतावळौ बोलियौ-रे ! लोका देखौ, लांठौ थकौ खोसै छै । —पलक दरियाव री बात

मुहा.—लांठा रौ डोकौ ई डांग फाड़ै=सबल आश्रित निर्बल भी सबलों से कम नहीं होते ।

३ वीर, बहादुर ।

उ०—लाभसी विगत लांठा भला, नरां नाच आयौ नहै । जिहंगीर' 'खुरम' उभै दळां, उभै कोस अंतर रहै । —गु. रू. बं.

५ उत्कंठा, लालसा

उ०—आपरौ सरीर घणौ निरोगौ रै'वै, म्हारी आईज लांठी कामना । —फुलवाडी

६ दृढ़, मजबूत ।

७ जो आकार, भार एव विस्तार के अनुसार बडा हो, विशाल, भारी, विस्तृत ।

उ०—१ धूद रौ घेरौ सीना सूं लांठौ । निचलौ तंग हळकौ नै ऊपरलौ भारी । —फुलवाड़ी

उ०—२ जिण गांव री आ बात है उणरा ठाकर अेक बांणिया माथै खीभ करै तौ वै उण रा पाड़ौस मे गाव-बाभी नै लांठौ थाळी देय उण रै नांव पट्टौ कर दियौ । —फुलवाड़ी

उ०—३ संकर भगवांन भांग रौ अेक लांठौ लूंदौ गिट नै बोल्या-थारै साथै घूमणा में औ ईज तौ डर है । —फुलवाडी

उ०—४ बेकळू रेत रा लांठा धोरा में बिरखा रौ पाणी रिसै ज्यूं उण राज री रैया रै अतस में सगळा अकरम अन्याव भरै, बुड़कौ ई नीं ऊठै । —फुलवाडी

८ प्रतिष्ठित, सम्माननीय ।

उ०—लांठा लांठा मौतबिर वेळा कुबेळा दही दूध रौ मिस लेय गूजरी रै घरै आवता संकता कोनी । —फुलवाड़ी

९ जो आयु में बड़ा हो, युवा, नौजवान ।

उ०—१ भूंडण आसू ढळकावती बोली—थारी दैह रै जोखौ व्हियां कीकर इण थेह रौ आणंद थिर रै' सकै । म्हैं तौ आं चीलूंहरा नै जाय म्हारौ फरजन उतारियौ । अबै थें आंनै पाळ-पोस लांठा करौ । —फुलवाड़ी

उ०—२ म्है वानै घणा ई समझाया के अबै तौ सूवर साव साजौ सूरौ व्हैगौ है। पींडारौ व्है ज्यूं माच्योडौ है। अर भाचरिया ई भरपूर लांठा व्हैगा। —फुलवाडी

१०—दीर्घ, लम्बा।

उ०—१ सेठाणी आडौ खोल बोली—बीरा, थारी ऊमर तौ लांठी। —फुलवाडी

उ०—२ सोरौ दौरौ दस बरसा रौ तौ गुडकौ पाड सका पण तीस बरस तौ म्हानै जुग जित्ता लांठा लखावै। —फुलवाडी

११ अत्यधिक, अत्यन्त, बहुत।

उ०—१ पण इण सूं काई व्है। कंवर रै हाथा तोरण रौ जोग सजणौ, आ इज तौ सब सू लांठी खुशी री बात है। —फुलवाड़ी

उ०—२ म्हारै वास्तै इण सू लांठै हरख री बात दुनिया मे दूजी की नी व्है सकै। —फुलवाडी

उ०—३ दोनां कानला वैरी मचग्या। लोही सू लांठा रचग्या। —दसदोख

१२ महान, बड़ा, समर्थ, सक्षम।

उ०—साप पवन रै वेग आयौ नै निजर रै वेग जावतौ दीस्यौ। मारण वाळा सू तारण वाळौ लांठौ। —फुलवाडी

१३ महत्वपूर्ण।

उ०—बिना सोच्या ई तुरत जबाब दियौ—अन्नदाता, औ काम आपनै छोटौ निगै आवै! इण सूं लांठौ कांम तौ दुनिया मे ई की दूजौ नी व्है सकै। —फुलवाडी

१३ श्रेष्ठ, उत्तम, बेहत्तर।

उ०—खरचणा रै सिवाय थे कोई दूजी बात जांणौ ई हौ! हजार वार समझाय दियौ तौ ई थारै समझ मे नी आवै के इण दुनिया में कमाई करणा सूं लांठौ की पुन्न नी है अर खरचणा सू लाठौ की दूजौ पाप नी है। —फुलवाड़ी

१४ खराब, बदतर।

१५ जो सख्या, मान, मात्रा में औरों से बढ कर हो।

१६ वयस्क, बालिग।

उ०—उणरी भोळप माथै हसता थका बोल्या—इत्ता लाठा व्हैगा तौ ई थारौ मन तौ टाबर री गळाई साव भोळौ। —फुलवाडी

१७ कठिन, मुश्किल।

१८ आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, धनी।

रू भे.—लूठौ, लौंठौ

लांड—वि —१ जबरदस्त, जोरदार।

२ शक्तिशाली, बलवान।

३ देखो 'लंड' (मह, रू भे)

लांण—देखो 'लायण' (रू. भे.)

लांणत, लांणति—स. स्त्री.—१ धिक्कार, फटकार, भर्त्सना।

उ०—१ ताहरा वीसळदेजी विसनदास नू कह्यौ—'लांणत छै थांनै! सागमराव थामे धणी कीवौ। —नैणसी

उ०—२ झपटी नहीं आख झबकाई, लेगी नह लपकाई नै। लख लांणत मिनकी नै लागी, उण वेळा नह आई नै। —ऊ. का.

उ०—३ तरै देवडा कह्यौ, "ठाकुरा, आपा ही रजपूत छा, ज्या री धरती पनरह दिन हुवा ओर राठौड मारै-लूटै छै! लांणत छै थानू थे ही रजपूत कहावौ छौ? —तीडै छाडावत री वात

रू. भे.—नानत, नानती, लानत, लानती।

लांणौ—स. पु.—एक प्रकार का पौधा विशेष।

लांनत, लांनती—देखो 'लाणत' (रू. भे.)

उ० —१ पातर हूं ता प्रीत कर, आफू डळां अरोग। आखर पछ-ताया अठै, लांनत दे दे लोग। —बा. दा.

उ०—२ कहै कंथ नूं दुहु कुळ उजळी कामणी, गजां घजां फौजां लोह लागै। तीसरै तिकै नर तिका लांनत दियै, लारला वस नूं लाज लागै। —वीरस्त्री रौ गीत

लांप—स. पु —एक प्रकार का घास, जो सबसे घटिया, निकम्मा व अनुपयोगी माना जाता है।

उ०—घण घणा साचा घाय, नह फूटै पाहड निवड। जठै लांप फूस लग जाय, राड पडै जद राजिया। —किरपारांम

रू भे —लंप

अल्पा.—लापडी, लापड़ो, लापळियौ, लांपळौ

लांपड़ी, लांपड़ौ, लांपळियौ, लांपळौ—देखो 'लांप' (अल्पा., रू. भे.)

उ० खीपा पीपा फोग, मुरट बूई बरणावै। भुरट लांपड़ी लुळै, गजब वेला गरणावै। हरियौ भरियौ घान, ऊतरै सदा सतोलौ। ढिगला लगै ललाम, घोर धन देवण पोलौ। —दसदेव

लांपौ—स पु. [स. ज्वालाप] १ दाह क्रिया के समय आरंभ में जलाया जाने वाला पूला (पुआल) जिसे जलाकर चिता मे अग्नि प्रज्वलित की जाती है।

उ०—१ तद ढोलैजी काठ भेळौ कर नै आरोगी चिणाई। पछै लांपौ देण रौ हुकम कियौ। —ढो. मा.

उ०—२ अन्नण चन्नण चिता चिणाई, नारेळा मे दाग, आरबार फिर जाट लोटियै, लांपौ दियौ लगाय। —डूगजी जवारजी री छावली

क्रि. प्र —देणौ, लगाणौ

मुहा.—लापौ लागणौ=नष्ट होना।

लापौ लगाणौ=नष्ट करना।

२ शव-दाह की अग्नि.

३ अग्नि, आग।

५ निर्लज्जतापूर्ण बात, अश्लील बात।

उ०—लोक सहू लांपा लवइं, चित्त न राखि ठाहि। फागुण ना गुण स्या कहुं ? विरूग्रा वसुधा माहि। —मा. कां. प्र

वि —निर्लज।

उ०—विण अपराधइं विप्र नइ, कहू-किम काढउं आज। जांघ उघाडउ आपणीं, लांपा ! तुम्ह नहीं लाज। —मा का. प्र.

लांफु, लाफू, लाफौ–वि.—१ सीधा-सादा, सरल स्वभाव का

उ०—ऊंचौ तो एरंड, खाटरो तोहि नाग, घणौ भोळौ लांफु, बहू बोलै तो लबोळ। घणु जीमै तौ भूखौ, थोडौ जीमै तौ अभोगियौ। —सभा

२ लुच्चा, लफंगा।

लांब–सं. स्त्री.—अवधि की दृष्टि से लम्बाई।

उ०—हूं बीसद्धयौ तें वेदिठा, म्हा तु बरस बारह की लांब। कइ म्हारइ हीरा ऊगहई, नहीं तो गोरी ! तिजहूं पराण।

—बी. दे.

लांबक भूंबक–स. पु. [अनु.] गुच्छा।

उ०—१ सखी मोत्यां रा लांबक भूंबका, किस्तुरी बांदउ माळ। जाय बांदौ छतरपतियां रै, मेहळा में छतरपति मा। —लो गी.

वि.—पूर्ण शृंगार युक्त (आभूषणों से सुसज्जित)।

उ०—लांबकभूंबक लाडली, अंग टेर अपारा। जण पुळमै हाली 'जसां', सजीया सिणगारा। —मयाराम दरजी री बात

रू. भे.—लूंबकभूंबक, लूमकभूमक।

लांबड़धकै–सं. स्त्री.—नाराजगी प्रकट करने की क्रिया।

उ०—सेठ घरै आतां ई पै'ला तो बीनणी माथै अगूता खीभिया उणनै घणी ई लांबड़धकै ली। —फुलवाडी

क्रि. प्र.—लैणी।

लांबछड़—देखो 'लांमछड़' (रू. भे.)

उ०—धुणियासी धणियां धरी, भुज बल 'पाल' भड़ाह। ले लळका लाहोरणी, छूटे लांबछड़ाह। —पा. प्र.

लांबलूंब, लांबालूंब—देखो 'लूबलूंब' (रू. भे)

लांबाहाथ–सं. पु [सं लंब+हस्त] १ ऐसा हाथ जिसकी पहुंच या प्रभाव बहुत दूर तक हो।

२ वह दांव या चाल जिससे अधिकाधिक स्वार्थ सिद्धि होती हो।

रू. भे'—लंबहत, लबहथ, लंबहात, लबहाथ, लंबाहात, लंबाहाथ।

लांबी—१ देखो 'लाबीकांचळी'।

२ देखो 'लाबौ' (स्त्री.)

रू. भे.—लबी।

लांबीकांचळी, लांबीबांयांरी–स. स्त्री—विधवा स्त्रियों के पहिनने के लिए लंबी बाहों की कंचुकी।

रू. भे.—लंबीकाचळी

लांबेड़णौ, लांबेड़बौ—देखो 'लबडाणौ, लंबड़ाबौ' (रू. भे.)

लांबेड़णहार, हारौ (हारी), **लांबेड़णियौ**—वि.।

लांबेड़िग्रोड़ौ, लांबेड़ियोड़ौ, लांबेड़चोड़ौ—भू. का. कृ.।

लांबेड़ीजणौ, लांबेड़ीजबौ—कर्म वा.।

लांबेड़ियोडौ—देखो 'लंबड़ायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. लाबेड़ियोडी)

लांबेड़ौ–सं. पु.–किसी उद्दण्ड गाय, बैल, भैंस आदि के खेत में चरने देने के लिए बांधा गया लम्बा रस्सा।

वि. वि.—ऐसे पशु को पुनः शीघ्र पकडने के लिए इस प्रकार रस्सा बांधा जाता है।

मि.—ओरावौ

लांबोड़ौ—देखो 'लाबौ' (अल्पा., रू. भे)

उ०—थूं है कुण ? सब सूं लांबोड़ौ जमदूत बोल्यौ एक ऊठ वाळौ। —रातवासौ

(स्त्री. लाबोडी)

लांबौ–वि. [स. लंब] (स्त्री. लांबी) १ वह पदार्थ जिसके एक सिरे से दूसरे सिरे तक काफी अन्तर हो, लम्बा।

उ०—१ लांबा मारग दूरि घर, बिच है औघट घाट। हरि दरसन किम पाईयै, हरिया दुरलभ वाट। —अनुभववाणी

उ०—२ घणौ सोनै-रूपै में गरकाब कीवी थकी। नकसदार जांणै गोड़ियै नागण लांबी कीधी छै। —रा. सा. स.

२ वह जो ऊंचाई में काफी ऊपर उठा हुआ हो।

उ०—ओ बबोई में मजदूरी खातर आयोडौ हौ। बाधियौ छः फुट रौ लांबौ पूजतौ जवांन। —रातवासौ

३ वह जो अवकाश, काल आदि की दृष्टि से नाप या मान में अधिक हो।

उ०—पण इण सूं कांई व्है ! दूजा मिनखां रै वास्तै तौ अेक पलक सूं वेसी मौत रौ वगत नीं व्है, पण म्हारी मौत रौ वगत तौ सित्तर बरसां घणौ लांबौ-लड़ाक व्हैगौ। —फुलवाडी

मुहा.—लांबौ होणौ=१ बहुत समय तक न लौटना। २ मृत हो जाना। ३ खिसक कर चले जाना।

लाबौ करणौ=१ किसी को खिसका देना। २ इतना मारना कि वह जमीन पर बेसुध लेट जाय। ३ किसी कार्य के समापन

मे बहुत समय ले लेना। ४ विस्तार एव आयतन की दृष्टि से किसी निश्चित माप का।

ज्यू – दस गज लाबौ कपड़ौ, पाच गज लाबौ साप, बीस गज लाबी पगडी।

५ जिसका विस्तार साधारण माप से अधिक हो, दीर्घ।

ज्यूं—लाबी कथा, लाबौ खर्च।

६ वह पदार्थ जो पूरे विस्तार मे फैला हुआ हो।

उ०—आज धरा दस ऊनम्यउ, काळी धड सखराह। उवा धण देसी ओळंबा, कर कर लांबी बांह। —ढो. मा.

रू. भे — लबउ, लबू, लंबौ

अल्पा.—लबोडौ, लाबोडौ

लांबौ-तड़ग—देखो 'लबतडग' (रू. भे.)

लांम–सं. पु.—युद्ध, लडाई।

उ०—घण विरथा घण गाजणा, छित नह संकै छटाय। लांम लोटा भड़ भड़ लगा, फबै खाळ फटाय। —रैवतसिंघ भाटी

लांमछड़–स. स्त्री.—प्राचीन समय की वह बंदूक जो पलीता (आग की बत्ती) लगाने से चलती थी।

वि —वह जो बहुत अधिक लबा हो।

रू. भे.—लंबछड, लमछड, लावछड।

लांमण—देखो 'लावण' (रू. भे.)

लांमणीजणौ, लांमणीजबौ—देखो 'लावणीजणौ, लावणीजबौ (रू. भे.)

लांमणीजणहार, हारौ (हारी), **लांमणीजणियौ**—वि।

लांमणीजिओडौ, लांमणीजियोड़ौ, लांमणीज्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लांमणीजियोड़ौ—देखो 'लावणिजियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री लामणीजियोडी)

लांमौ–स. पु.—१ मंगोलिया या तिब्बत मे बौद्धों के धर्माचार्य, जो कई अंशो मे राजनैतिक नेता भी होते हैं।

२ ऊँट की तरह पागुर करने वाला घास-भक्षी एक जन्तु।

वि.—३ हल्का।

उ०—वात म बोलिसि लांमी, जा मीनति सिर नांमि, इम भणिइ रति सुणि सामी, पामीइ सुख एह नामि। —आगम माणिक्य

४ देखो 'लाबौ' (रू भे)

लांयणौ—देखो 'लाइणौ' (रू. भे.)

उ०—घर घर लागौ लांयणौ, घर घर धाह पुकार। जनहरीया घर आपणौ, रखै सो हुसीयार। —अनुभववांणी

क्रि. प्र.—लगणौ, लागणौ।

लांवण–सं. स्त्री.—१ स्त्रियों के लहंगे, पेटीकोट या घाघरे का निचला भाग या किनारा।

२ ऋतुमती स्त्रियो के पास आने या स्पर्श मे कुछ वस्तुओ या बिमारियो मे लगने वाला दोष जिससे उनमे विकार उत्पन्न हो जाता है।

ज्यूं—पापड़ा में लावण लागणी

क्रि. प्र —करणी, झडणी, झाड़णी लागणी, होणी।

रू. भे —लामण, लावण।

लांवणीजणौ, लांवणीजबौ–क्रि. अ.—१ ऋतुमती स्त्री के पास आने या स्पर्श से किसी वस्तु का विकृत हो जाना।

२ कुछ विशिष्ट बिमारियो में ऋतुमती स्त्री के निकट आने या सम्पर्क के कारण बिमारियो का उग्र रूप धारण कर लेना।

ज्यू – आखिया लावणीजणी।

लांवणीजणहार, हारौ (हारी), **लांवणीजणियौ**—वि.।

लांवणीजिओड़ौ, लांवणीजियोड़ौ, लांवणीज्योडौ—भू का. कृ।

लांमणीजणौ, लांमणीजबौ—रू. भे.।

लांवणिजियोडौ–भू. का. कृ.—१ ऋतुमती स्त्री के पास आने से या स्पर्श से विकृत हुवा हुआ. २ कुछ विशिष्ट बिमारियो मे ऋतुमती स्त्री के निकट आने या सम्पर्क से रोग का उग्र रूप धारण किया हुआ।

(स्त्री लावणीजियोडी)

लांवणौ–सं पु.—१ शादी या खुशी के अवसर पर सम्बन्धियो अथवा परिचित व्यक्तियो के यहां भेजी जाने वाली मिठाई या गुड़ आदि वस्तु।

२ देखो 'लवणौ' (रू. भे.)

लांवमुंहौ–स. पु.—एक प्रकार का अशुभ घोडा।

लांहण—देखो 'लाहण' (रू. भे.)

उ०—२५१२ माहाजना री लांहण। —नैणसी

ला—१ रक्त खून। २ रग ३ नालिका ४ स्त्री के बाल ५ रति ६ लक्ष्मी। (एका.)

अं.—७ कानून, नियम।

८ कुछ शब्दों के साथ लगने वाला प्रत्यय जो अभाव या कमी को सूचित करता है।

ज्यू – लाजवाब, लापरवाह।

९ देखो 'लाह' (रू. भे.)

लाइ—देखो 'लाय' (रू. भे.)

उ० – १ बाजै सीतळ वाय, लगै झळ लाइ री, बैरणि चमकै बीज, दास इण ताइ री। —र. हमीर

उ०—२ आगै बिरह बलाइ जिका बणी लाइ रै डोळ, तिण मेटब

नूं 'रतना' आई पावस री छोळ। सोधैथा निध अंजरा री जडी, त्यारै सागै ई निध हुई हाजर खडी। —र. हमीर

लाइक—देखो 'लायक' (रू. भे.)

उ०—१ दुरस 'किसन' लख दोइ, लहै आढ़ा जस **लाइक**। गाडरा 'केसव' गुरो, अवे पंचम लख वाइक। —सू. प्र.

उ०—२ दादू **लाइक** हम नहीं, हरि के दरसन जोग। बिन देखे मर जाँहिगे, पिव के विरह वियोग। —दादूवाणी

उ०—३ तू सरहद्दां लियै, तुंहिज सरहद्दां **लाइक**। तूँ सरहद्दा धणी, तुहिज सरहद्दां नाइक। —गु. रू. बं.

उ०—४ रूपक रख्यरा **लाइक** लख्यरा, पात्र परीखरा लख्यपती। रीति रहावरा कीति कहावरा मौज महाघरा मोट मती।—ल. पिं.

लाइकी—देखो 'लायकी' (रू. भे)

लाइणौ—सं. पु.—अग्निकांड, आग।

रू. भे.—लांयणौ, लाईणौ, लायणौ

लाइणौ, लाइबौ—क्रि. स.—स्पर्श कराना, लगाना।

उ०—१ आज सूती निसह भरि, प्रीय जगाई आइ। विरह भुयंगम की डसी, लबथबती गळ **लाइ**। —ढो. मा.

उ०—२ **लाइयां** लंगरां पेखि पट्टाभरा, डील भोळौ पडै कुंजरां डूंगरा। गज्ज ऊधोळिया रज्ज सूं गूडळा, धोममै पब दीपै फिरै धूंधळा। —गु. रू बं.

देखो 'लाणौ, लावौ' (रू. भे.)

उ०—१ ससनेही सजरा मिळचा, रयरा रही **रस लाइ**। चिहुँ पहुरे चटकउ कियउ, वैरणि गई बिहाइ। —ढो. मा.

उ०—२ दादू भांती पाये पसु पिरी, हांरों लाइ न बेर। साथ सभोई हल्लियों, पोइ पसंदो केर। —दादूबाणी

उ०—३ सकल लाणइ तूं गुण केवली, किम अम्हासि त बोलइ ते वली। इणि परिइं जगदीस्वरू ध्यादयइ, स्तवन नइं मिसि ऊलग **लाइयइ**। —जयसेखर सूरि

लाइणहार, हारौ (हारी), लाइणियौ—वि.।

लाइओड़ौ, लाइयोड़ौ,—भू. का. कृ.।

लाईजणौ, लाईजबौ—कर्म वा.।

लाइयोड़ौ—भू. का. कृ—१ स्पर्श कराया हुआ, लगाया हुआ।

२ देखो 'लायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाइयोड़ी)

लाइन—सं. स्त्री. [अं.] १ पंक्ति, कतार।

२ रेल की पटरी।

३ घरों की पंक्ति।

ज्यूं—पुलिस लाइन।

४ रेखा, लकीर।

५ प्रकृति, स्वभाव।

ज्यूं—किरा लाइन रौ आदमी है।

६ पेशा, व्यवसाय।

ज्यूं—आप किरा लाइन में हो।

रू. भे.—लेरा, लैरा, लैन।

लाइब्रेरी—सं. स्त्री. [अं.] पुस्तकालय।

लाइसेंस—सं. पु. [अं.] १ किसी कार्य करने हेतु दिया जाने वाला अनुमतिपत्र।

२ अनुमति, अनुज्ञा।

रू. भे.—लैसस

लाई—वि.—(स्त्री. लाण, लायण) १ बेचारा, गरीब।

उ०—'**लाई**' बारह महीना-सू निकमौ बैठौ, घर-मे टाबर-टोळी कर 'र ५-६ जीव खावरा वाळा। —वरसगाठ

[सं. लात] २ ग्रहण किया हुआ, अपनाया हुआ।

३ देखो 'लाही' (रू. भे.)

४ देखो 'लाय' (रू. भे.)

लाईणौ—देखो 'लाइणौ' (रू. भे.)

लाईरांड—वि—१ कमजोर, डरपोक।

२ बेचारा, असहाय।

३ बिगड़ा हुआ, बेकार।

ज्यूं—लाईरांड मामलौ कर दियौ।

४ मूर्ख।

लाउवौ—देखो 'लावौ' (रू. भे.)

लाऊड़ौ—देखो 'लासू' (रू. भे.)

लाऊझंपौ, लाऊझाऊ—सं. पु—हर समय कुछ प्राप्ति करने की लालसा, लोभ।

लाएड़ौ—देखो 'लाड़ायौ' (रू भे)

लाकड़—१ लकडी का कुंदा।

२ देखो '**लकड़ौ**' (मह., रू भे.)

उ०—१ खड खूटा जगळे, खूटिगा **लाकड़** ईंधरा। पाणी खूटा द्रहे, कूंप वापी लेखै कुरा। —गु. रू. बं.

उ०—२ हांकरणहार 'पाल' सुत हुवै, अचरज गयरा बहै अतरेख। लागवां सीस न ढोहे **लाकड़**, लाकड़ि लोहौ छोहौ लागेक।

—मानसिंह कल्याणोत कछवाहा रौ गीत

उ०—३ बळण लिया नह गोरधन काज **लाकड़** बिया, दुजड़ लागी रहो कैतीक 'देह। भड़ां ज्या छड़ाला मांहि घट भाजियौ, छडां ज्या दागियौ भड़ा अरण छेह। —गोरधनसिंह हाडा रौ गीत

लाकड़ि—देखो 'लकड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ हाकणहार पाळ सुत हूवै अचरज गयण वहै अतरेख। लागवा सीस न ढोहे लाकड, लाकड़ि लोहौ छोहौ लागेक।
—मानसिंघ कल्याणोत कछवाहा री गीत

लाकड़ियौ—१ खूबकला नामक घास या औषधि।

२ देखो 'लकडौ' (अल्पा., रू. भे.)

लाकड़ी—देखो 'लकडी' (रू. भे.)

उ०—गुण विन ठाकर ठीकरौ, गुण विन मीत गँवार। गुण विन चदण लाकड़ी, गुण विन नार कुनार। —अज्ञात

उ०—२ नँह पचाँ जाय लाकड़ी नाखै, घणा जोर सज वियां घरा। चाडी करै कचेडी चढिया, नीर ऊतरै तुरत नरा।—बां. दा.

लाकड़ौ—देखो 'लकडौ' (रू. भे.)

लाकड—देखो 'लकडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ तेल रौ कडाहौ उकळै छै। अगर रा लाकड हेठै धुखै छै। —चौबोली

उ०—२ दिन लागा गिर डुलै, पडै ऐवास प्रथी पर। तरवर लाकड होय, सूख जावै सिंधू सर। —पा. प्र.

लाकडि—देखो 'लकड़ी' (रू. भे.)

लाकडियौ—देखो 'लकड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

लाकडी—देखो 'लकड़ी' (रू. भे.)

उ०—लाबी दाढी हाथ लाकडी. वेड वाजइ जूजुवा सघाण। प्रवत्र जनोई गळइ पहर नइ, आयउ विप्र जाचण आपाण।
—महादेव पारवती री वेलि

लाकडौ—देखो 'लकडौ' (रू. भे.)

लाकिनी–स स्त्री.—मांस योगिनी, देवी का एक रूप।

लाकेट–सं. पु. [अ.] गले की जंजीर में लटकता हुआ एक स्वर्ण आभूषण।

लाको–स. पु—आबादी के पास का चिन्हित ऊचा स्थान।

लाक्षकी–सं. स्त्री. [सं] जानकीजी का एक नाम।

लाक्षणिक–स. पु.—१ लक्षण जानने वाला व्यक्ति।

२ एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राएँ होती है।

वि.—१ लक्षण सम्बन्धी।

२ लक्षणों से युक्त।

३ वह जिससे लक्षण प्रकट हो।

४ गौणार्थवाची।

५ जो शब्द की लक्षणा-शक्ति पर आधारित हो।

लाक्षा–स. स्त्री. [सं.] एक प्रकार का लाल रग, महावर।

वि. वि.—प्राचीन काल मे यह स्त्रियो के शृगार की सामग्री था। इससे वे अपने पैर के तलवे और ओष्ट रगती थी, जैसे आजकल गुलाल पैरो पर लगाती है।

लाक्षाग्रह–स. पु यौ. [स. लाक्षा+गृह] दुर्योधन द्वारा पाडवो को जलाने के निमित्त निर्मित लाख का घर।

वि. वि.—पाण्डु की मृत्यौपरात जब पाण्डव हस्तिनापुर मे रहते थे तब दुर्योधनादि कौरव उनको अनेक कष्ट देते थे और मार डालने तक की कोशिशे करते थे। प्रजा को युवराज युधिष्ठर का आदर, प्यार देख दुर्योधन के हृदय मे ईर्ष्या पैदा हुई। धृतराष्ट्र की अनुमति लेकर, जो पुत्र स्नेह से विवश थे, वारणावत में लाख, घास, वांस आदि जल्दी से आग लगने वाली चीजो से बने, ऊपर से बहुत सुन्दर और मजबूत, लाक्षागृह पुरोचन मत्री की देखरेख में बनवाया और उसमे रहने के लिए पांचो पाण्डवो को भेज दिया। इस निष्ठुर कृत्य का पता विदुर को लगा और मय नामक असुर से उसमे से निकलने हेतु रहस्य मय भू-गर्भ से एक मार्ग बनवाया और पाण्डवो को सूचना दी। जिस दिन लाक्षाग्रह में आग लगने वाली थी उस दिन एक वृद्धा अपने पाचो पुत्रो के साथ अतिथि के रूप मे वहा आकर सोये। दुर्योधन की कुटिलता का पता लगने पर भीम अपने भाईयों व माता कुन्ती को गुप्त मार्ग से ले गये और जगल मे पहुचे। लाक्षागह में वह वृद्धा और उसके पांचो पुत्र जल मरे। छ: लाशो को देखकर कौरवो ने समझ लिया कि पाण्डव कुन्ती सहित जल मरे हैं। मतान्तर से उस घर मे आग भीम ने लगायी थी और उस वृद्धा के साथ पुरोचन मंत्री भी जल मरा था। यह स्थान आज इलाहाबाद जिले में हडिया स्टेशन के पास गगातट पर है जिसका कुछ अश अब भी अवशेष है।

रू. भे.—लाखहरइ, लाखहरु, लाखहरे, लाखाग्रह, लाखाघर

लाक्षातैल, लाक्षादितैल–सं पु. [स.] वैद्यक मे एक प्रकार का तेल।

लाखंमण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—जुडै राम लाखँमणां काजि जैंता, दुवै रूप मानिक्ख ज आख दैता। पुणौ फेरि बब्भीखणौ जोडि पाणै, जोधा बंदरा यै नरां यै न जाणौ। —सू. प्र.

लाख–स स्त्री. [स लाक्षा] १ एक प्रकार का लाल पदार्थ जो कई प्रकार के वृक्षो की टहनियों पर लाख कीडों की प्राकृतिक क्रियाओ से बनता है। (डिं. को)

वि. वि.—यह औरतो के चूडियाँ बनाने के अतिरिक्त पत्थर व लोहे को जोडने व रग आदि बनाने के काम आता है।

यौ.—लाखाग्रह।

रू भे. लाखा।

२ एक पेड विशेष।

उ०—रावण रांग रताजणी, रवणी नइ रुद्राख। रुकरुदंति रायसळि, रोहड रोहिणि लाख। —मा. का. प्र.

वि.—बहुत, अत्यधिक ।

उ०—१ दरजै लाचार होय बेटी नें कैवणौ ई पड्यौ—बिना किणी रै बतायां समझणा री बात ही जकौ ई थें नीं समझ सक्या तौ पछै म्हारै लाख समझावणा सूं ई आपरी समझ में नीं आवैला । —फुलवाडी

उ०—२ जोसीडा नै लाख बधाई रे, अब घर आये स्यांम । आजि आनंद उमगि भयो है, जीव लहे सुख धांम । —मीरां

२ देखो 'लक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ लाखा एक लाख सा, जो लाख मेछ देखे। लाख जोड़ लीन्हे याते, कोड़ कूं न लेखे । —रा रू.

उ०—२ ढाल हुवै जीदै धकै, लाखां लोह लियांह । सादा रग तोनूं सदा, जूंभा जायलियांह । —पा. प्र.

लाखण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे)

लाखणउ—देखो 'लाखीणौ' (रू. भे.)

उ०—उठी ! उठी ! गोरी करि सिंगार, लाखणउ कांचवउ नवसर हार । पीहर नु चोळी नवरंगी, बावन चदन अंग सउहाई । —बी दे.

लाखपत, लाखपति, लाखपती, लाखपत्ति, लाखपत्ती—देखो 'लखपति' (रू. भे.)

उ०—उदै अरक्क ऊगहत, माळ लक्ख मडही, स्रीवत साह लाखपत्ति, कवि क्रोड दीधुही । —गु. रू ब.

लाखपसाउ, लाखपसाव—सं. पु. यौ. [सं लक्ष+प्रसाद] चारण कवियों की कृत्तियों तथा उनके द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्यों पर प्रसन्न होकर राजा, महाराजाओं द्वारा दिया जाने वाला एक लाख रुपये का पुरष्कार या भेंट ।

उ०—१ जिणि देसे सजण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ । उन्न लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाखपसाउ । —ढो. मा.

उ०—२ गांम आठ बारह गयंद, पनरह लाखपसाव । गुण पातां रीझै 'गजण', दीधा दिल दरियाव । —सू प्र.

वि वि.—प्राचीन काल में यह नकद रूप में दिया जाता था, कालान्तर में लाख पसाव के पुरष्कार में हाथी, घोड़े, वस्त्र, आभूषण आदि के अतिरिक्त कम से कम एक हजार से पांच हजार तक की वार्षिक आय की जागीर भी होती थी जो कि पुरष्कार की पूर्ति हेतु होते थे ।

रू. भे.—लाखांपसाउ, लाखांपसाव ।

लाखबरीस—देखो 'लक्षवरीस' (रू. भे.)

लाखमण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

लाखर, लाखरी—देखो 'लाखेरी' (रू. भे.)

उ०—कपळा कवळी नें बारै पुचकारै, लाखर लाखर श्रै आखर मन मारै । हासी बांसीसी सूकी हिय हारै, ससणीं लसणी लख ढूंदसणीं सारै । —ऊ का.

२ देखो 'लाखेरौ' (रू. भे.)

लाखलखीणी—सं स्त्री.—स्त्रियों के ओढने का बहुत मूल्यवान वस्त्र विशेष ।

लाखवरीस—देखो 'लक्षवरीस' (रू. भे.)

उ०—आठ यगण चोइस अखर, चवि मात्रा चाळीस । दूण भुजंगी छद दखि, लखपति लाखवरीस । —ल. पि.

लाखहरइ, लाखहरु, लाखहरै—देखो 'लाक्षाग्रह' (रू. भे)

उ०—१ राति चालइ राउ मागि, सुरगह कुणबि सउ, दियइ पुरोहितु दाउ, लाखहरइ, विसनरु ठवइ । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ साधीउ पच्छेवांणु भीमि, पुरोहितु लाखहरै, मेल्हीउ दीधु पीयाणु, केडइ आवी पुणु मिळए । —सालिभद्र सूरि

उ०—३ धिगु रि धिगु रि धिग दैवविलासु, पंचह पडव हुइ वणवासु । उतइ लाखहरु परिजळइ उतइ भीमि जु केडइ मिळीइ । —सालिभद्र सूरि

लाखांणी—सं. पु.—विवाह मंडप मे भांवरों के उपरांत दुल्हे का विवाह मडप के बाहर जाते समय ढोली द्वारा गाया जाने वाले लाखा—फूलाणी नामक लोक गीत पर दिया जाने वाला पुरष्कार ।

उ०—पच्छम रा गावा वीद चवरी सूं परणीज उतरै जद, चारणां रै रीत है, लाखौ फूलांणी गवीजै, रुपियौ गायक पावै । ऊ लाखांणी रौ रुपियौ कहावै । —बां. दा. ख्यात

वि.—लाख से सम्बन्धित ।

लाखांपसाउ, लाखांपसाव—देखो 'लाखपसाव' (रू. भे)

उ०—नौबत बजाय जीत्यौ नरिंद्र, बिरदाय बिरद बोले कविंद्र । रीझियौ दिया कमधज्ज राव, सासण गजा लाखांपसाव ।—वि. स.

लाखा—देखो 'लाख' १ (रू. भे.) (डिं. को.)

लाखाग्रह, लाखाघर—देखो 'लाक्षाग्रह' (रू. भे.)

उ०—१ किता बेर पांडव ऊपर कीध, लाखाग्रह कुंता काढे लीध । दुसासन क्रन्न गगेव 'दुजोण', खपे कुरखेत अढार अखोण । —ह. र.

उ०—२ लाखाग्रह री लाय, तैं पंडव राख्या त दिन । बडा किया बन मांय, साथ न छोड्यौ सांवरा । —रांमनाथ कवियौ

लाखारस—देखो 'लखारस' (रू. भे.)

उ०—खासो टुकडी जामसाइ मुलतांनी तपाइ सालु मुगीपटण ताखो स्रीसाफ तासतो चुनडी चोरसो लाखारस दुदामी जामावाड कवियौ । —व. स.

लाखावट—सं. पु.—बाड़मेर जिले के अन्तर्गत सिवाना नामक गाव के किले का नाम ।

उ०—जुध हुवणाव लागौ । बीजै दिन पाछिली पहर कोट लीधौ ।

आदमी लाख कांम आया । उण पै'ला तियौ रै नाम पातिसाह **लाखावट** दियौ। —सातळ सोम री बात

उ०—२ 'माल' हरौ गढ सीस मरंतै, मंजन गळिया मलोमळ।

लाखावट तुहाळौ लोई, जाणै लधियौ गंग जळ। —दूदौ आसियौ

लाखावत–सं. पु.—राठोड़ वंश की एक उप शाखा।

लाखिक—देखो 'लाखीक' (रू. भे.)

उ०—दुध्धार पटा खाडा दुवाळ, जमदूत अवाहै जम्म-दाळ। कटिया **लाखिक** लोटै केकाण, पाखरा सहित वढिया पलांण।

—गु. रू. ब.

लाखिराज–वि.—कर-मुक्त। (मा. म.)

लाखी, लाखीक–स. पु.—देखो 'लाखीकउ'

उ०—जै जया सबद विदण भणै, बयणे राजा बामहा। **लाखीक** खड़े अकबर लिया, दुरगे दक्खण सामहा। —रा. रू.

वि.—१ लाख रुपये के मूल्य का।

उ०—१ निकळै मिरड़ा लार, गँठेली सूकी साकळ। घर कोटा रै ध्येय, पड़ी लद लकड़चा वाखळ। टेका कड़ियां बांध, ढोवता घर पर आखी। फोगा हृदी फसल, गरीबा गायक **लाखी**। —दसदेव

उ०—२ देखनै राजा नै कहीयौ, घोड़ा सखरा आया राज, हजारी छै पण **लाखी** कोई नही। —हाहुल हमीर री वात

उ०—३ ज्या आगे फेरजे, बडा **लाखीक** बछेरा, ज्यां दरगह नित दियै, कोड सुख इद्रह केरा। —जगौ खिडियौ

उ०—४ **लाखीक** बरीसण लाखौजी, भूपाळ मिरेहण भाखौजी। जाडेज वडा गुण जाणैजी, प्राभ्रौ प्रिथमाद प्रमाणैजी। —ल. पिं

३ लाख की संख्या का।

उ०—साख साख मिळि भाख, लाख **लाखीक** लसक्कर। च्यारि चक्क नवखंड, हिलै फौजा गज डबर। —र. वचनिका

४ लाख रुपयो वाला, लखपति।

उ०—**लाखीक** मिळइ मांडही लोक, चउहट्ट हाट माणिक्क चौक। अंतरी गउख ऊजळा ओप, अम्मली कोट खाई अळोप।

—रा. ज. सी.

रू. भे.—लाक्खिक

५ देखो 'लखी' (१) (रू. भे.)

लाखीकउ, लाखीकौ–वि.—१ लाख रुपये के मूल्य का।

उ०—साम्हा अस साहसू, साह सभिया वण चूका। सार ओप साबळां, धूप खेइयौ बंदूका। **लाखीकां** ऊपरा चढे भड़ लक्ख सचेळै। जाण जटी चल्लिया, कुंभ सुरतटी सचेलै। —रा. रू.

२ सर्वश्रेष्ठ, अत्युत्तम।

उ०—पोतइ संखिणी पदमिणी बेउ लक्ष्मीनिधांन कळस आणइ, **लाखीकउ** दीवौ प्रज्वलइ, कोटि ध्वज लहलहइ······। —व. स.

३ लाख (लाक्षा) का।

लाखीणी–स. स्त्री.—१ नव-विवाहित दुल्हिन के चूड़े के नीचे पहिनी जाने वाली लाख की चूड़ी।

वि—२ चुड़े के नीचे लाख की चूड़ी पहिनी हुई नव-विवाहित कन्या।

लाखीणौ–वि. [स. लक्षम्] (स्त्री. लाखीणी) १ लाख रुपये के मूल्य का।

२ उत्तम गुण वाला, श्रेष्ठ।

उ०—१ लाडी **लाखीणीं** धारां धूधाती, पीवर उधा री पारा पय पाती। भाखा-खीणा भड़ एवड़ ले आता, धाया धीणा रा गोधन रा धाता। —ऊ. का.

उ०—२ सुण रे सूवा **लाखीणौ**, तू म्हारै पीवर जाय रे।

—लो. गी.

उ०—३ सारस मरतौ जोय, सारसणी मरसी सही। **लाखीणी** आ लोय, जग में रहसी 'जेठवा'। —जेठवा रा दूहा

उ०—४ करहा लब कराडिआ, बे बे अंगुल कन्न। राति ज चीन्ही वेलडी, तिण **लाखीणा** पन्न। —ढो. मा.

३ पवित्र, पावन. पाक।

उ०—१ सिधा सिधावो सिध करो, रहजौ अपणी दाय। इण **लाखीणी** जीभ सू, जावौ कह्यौ न जाय। —अज्ञात

४ बहुमूल्य, कीमती।

उ०—कडिये कटारी धरमी रे वांकड़ी सोरठडी तरवार ओ, पाय **लाखीणी** धरमी रे मोजड़ी हलते राता छे पाव ओ। —लो. गी.

५ आल्हाद, हर्ष, खुशी संबंधी, आराम संबंधी, सौखीय।

उ०—१ सुहाग री **लाखीणी** रात वीद वीदणी नै सीख री बात बताई के वा घर-घर नी बासदी लावण सारू जावै अर नीं कदैई परीडौ रीतौ राखै। —फुलवाडी

उ०—२ अैडी **लाखीणी** राता में दिन जातां काईं वार लागै। चिमन्या रै समचै दिन बीतण लागा। घणौ ई बिणज बध्यौ। घणी ई बोरगत वधी। घणौ ई मान बध्यौ। —फुलवाडी

६ दुर्लभ।

उ०—१ कवि एम समयसुंदर कहै, **लाखीणौ** अवसर लह्यौ। वासुपूज्य सरण आव्यउ वही, लाछन मिसि लागी रह्यौ। —स. कु.

७ अमूल्य।

उ०—थोडौ कुण करै भरोसौ थारौ, वीसां ई वातां लखण वुरा। लूंटै तो विन कुण **लाखीणौ** जोवन सरखौ रतन जुरा।

—ओपौ आढौ

रू. भे.—लखीणौ, लाखणउ

लाखूटौ—देखो 'लाखोटौ' (रू. भे.)

लाखेक-वि.—एक लख के लगभग।

लाखेटौ—देखो 'लाखोटौ' (रू. भे.)

लाखेर—१ देखो 'लाखेरी' (रू. भे.)

२ देखो 'लाखेरौ' (रू. भे.)

लाखेरियौ—देखो 'लाखेरौ' (अल्पा., रू. भे.)

लाखेरी-सं. स्त्री.—१ हल्का लाल रंग लिये हुए श्याम वर्ण की गाय या बकरी।

रू. भे.—लाखर, लाखरी, लाखेर

लाखेरौ-स पु. [स्त्री. लाखेरी] १ हल्का लाल रंग लिये हुए श्याम वर्ण का घोड़ा या बैल।

रू. भे.—लाखर, लाखरि

अल्पा,.—लाखेरियौ

लाखेसरी, लाखेस्वरी—देखो 'लक्षेसरी' (रू. भे.)

उ०—अनेक सत्रूकार सत धरम रा राखणहार खैराइतां रा करणहार धजबधी कोड़ीधज **लाखेसरी** दौलतिवत चौरंग लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी वहवारिया सोदागर वहरामसंद साहूकार घणा सुख चैन सूं वसै छै। —रा. सा. सं.

लाखोटौ-सं. पु.—१ तालाब के मुख्य घाट के बिल्कुल सामने (यानि विपरित दिशा में) खोदी गई मिट्टी डालने से बना हुआ ऊंचा ढेर।

उ०—पीछोला री पाखती दीवांण रा मोहल कोट सहर छै, मोहला सूं निजीक तळाव पीछोला मांहे **लाखोटा** री ठोड़ तळाव वीच रांणै अमरसिंह बादळ मोहल कराया छै। —नैणसी

२ किसी वस्तु को लाख से चिपकाने की क्रिया या ढंग।

उ०—सो इण तरै कागद लिख थैली में घात **लाखोटौ** कर प्रोहित नूं सोंपीयौ। प्रोहित वहीर हुवौ। —कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—लाखूटौ, लाखेटौ।

लाखोफूलांणी-सं. पु.—लाखाफूलांणी नामक एक यादव की प्रशंसा में गाया जाने वाला एक लोक गीत।

उ०—नाडा भरियोड़ा नैड़ा निजराता, गाडा गुड़काता पैड़ा रुड़पाता। **लाखैफूलांणी** झीणां सुर लेता, डीघा गाडीणा डब डब धुनि देता। —ऊ का.

लाखौ-सं. पु.—एक प्रकार का रग विशेष।

लाग-सं. स्त्री.—१ लगने की क्रिया या भाव।

उ०—तन जोबन दिन चार के, तुं तन पहली त्याग। नही तौ तोकुं त्यागसी, हरीया रहौ न **लाग**। —अनुभववांणी

२ अनुराग, प्रेम, मोहब्बत।

उ०—जिण भात सूरज नै धूप, इण भांत बिरह नै लाग रौ एक रूप। **लाग** री सोभा हाती चढिया जिसी, **लाग**। बिना जिके पयादां समांन जारी गिणती ही किसी। —र. हमीर

३ लगन, लौ।

उ०—दो कुळ त्याग भई बैरागण, आप मिळण की **लाग** (के काज) मीरां के प्रभु कब र मिळोगे, कुबज्या आई काई याद। —मीरा

४ इच्छा, चाह।

उ०—मिथ्या द्रस्टि देव सूं, धरियउ पूरउ राग। अरथ तणउ अनरथ कियउ, देखी नइ निज **लाग**। —वि. कु.

५ सम्बन्ध, सम्पर्क।

६ ईर्ष्या।

उ०—औ दूहौ कुंवर कहीयौ ता पाछै लोग सरब कुंवर सुं **लाग** करै। तद लोकां तौ राजा री छोटी रांणी नु भखाया नै कही जो वीरभांण ना कढावौ तौ राज थांरौ हुवै। —चौबोली

७ मौका, अनुकूल परिस्थिति।

उ०—पिरि कहूँ जु पीहरि जाइ, आज छि ए **लाग**, सुख पांमि सुंदरि, मुझ मोकलु थाइ पाग। —नळाख्यांन

८ नेग।

वि वि.—देखो नेग'

९ दक्षिणा।

उ०—गुरूजी ने गुरां कर थापिया नै कयौ, इण देस माहै मांहरी जेत होसी तौ मांहरा पुत्र पोता मांहरी साख रा होसी सो राज नै गुरु कर मांनसी नै व्याह रौ **लाग**, चवरी रौ लागभाग दीवौ, जोड़ो खीरोदक रौ, जायै परणियै गुरुजी नै देसी। —रा. व. वि.

१० शाक विशेष में दिया जाने वाला बेसन का मिश्रण या पुट।

११ लगान, भूमि-कर।

१२ किसी नशे आदि का व्यसन।

क्रि. प्र.—लागणौ

१३ एक प्रकार का नृत्य।

१४ प्रतिस्पर्धा, होड़।

वि. - योग्य, काबिल।

क्रि. वि.—लिए, वास्ते। (वं. भा.)

लागट-सं. पु.—वह ऊंट जिसके पैर और ईडर परस्पर रगड़ खाते हों। और पैर के निरन्तर रगड से होने वाला घाव।

रू. भे.—लागत

लागणियौ—देखो 'लागणौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ राज ऐ तौ मोत्यां रा दातार जवांई म्हांनै घणांई

सवावै। राज एँ तौ लागणियै नयना रा बाई रा स्याम। जवांई म्हानै प्यारा लागै हो। —लो. गी

उ०—२ आखी जगदीस्वर सांधण अभिलाखी, राखी बाधण री ईस्वर नह राखी। लोयण लागणिया तणियां लजवाळा, कोयण काजळिया रळिया रजवाळा। —ऊ. का.

(स्त्री. लागणी)

रागणौ–वि. (स्त्री. लागणी) १ मारने वाला, चोट पहुंचाने वाला।

उ०—प्रेत रा सहसी सही साबात जागणी पाड़ै, मेळा सोभागणी गाढौ भरोसौ अचूक। तोल अथागणी पावै सबदा दागणी तोप, वैरियां लागणी हीयै नागणी बंदूक। —चडजी बारहट

२ आकर्षित करने वाला, मोहित करने वाला।

उ०—चोटी वाळी चमक लोइणा लागणी, फणधर जिसड़ै फैल नवी कांइ नागणी। अळका बळ अद्भुत्त छुवती छत्तिया, उभकंती अंग अग कता जण तत्तिया। —र. हमीर

उ०—२ सोनै री आड निलाड रै ऊपर दीना। कुरजां रौ टोळौ, सहेल्या रौ हबोळौ। साथ लीना अै लागणा लोयणा। —पनां

३ लगने वाला।

४ देखो 'लागट'।

अल्पा.—लागणियौ।

रागणौ, लागबौ–क्रि. अ—१ स्पर्श होना, छूना।

उ०—१ पिण मन माहै आवटै, बळै घणौ, उणरो डील दूबळौ हूतौ जाय, तिण समै मेरारै को एक आधौ सु मिळण नु आयौ छै, तिणरै मेरो पगै लागौ। —नैणसी

उ०—२ इम वागा लागा असमाणा, कूंता धमक भाट केवाणा जमदढ खजर अम्होसम्ह जड़िया, लूथबथां जेठी जिम लड़िया। —सू. प्र.

२ चिपकना, लिपटना।

उ०—१ स्रीहर परहर अवर नूं, मत संभरै अयाण। तरु छंडै लागी लता, पत्थर चे गळ जाण। —ह र.

उ०—२ वीज न देख चहड़ियां, प्री परदेस गयाह। आपण लीय भबुक्कड़ा, गळि लागी सहराह। —ढो. मा.

उ०—३ सुपनइ प्रीतम मुझ मिळचा, हूँ लागी गळि रोइ। डरपत पलक न खोलही, मतिहि विछोहउ होइ। —ढो. मा.

३ पहुचना।

उ०—धर वहतां पुर मारता, मांडल लागा आय। दूदौ साम्है पूरियौ, लडे अमांमै आय —रा. रू

४ खर्च होना, व्यतीत होना।

उ०—१ जोधपुरौ चढियो जरां, ईखण पुर अजमेर। लागी मिळतां खान सू, एक महूरत बेर। —रा. रू.

उ०—२ घडी दोय आवतां पलक दोय जावतां, साथण्यां मे सारौ दिन लागै ए मिरगानैणी थारै बिना जिवड़ौ भर्‌यौ डोले। —लो. गी

५ नियोजित होना।

उ०—१ जोधाणै लागा रहै, भाटी हरदासोत। मिळ देवीजर मारियौ, मेछ गया लख मौत। —रा. रू.

उ०—२ गोरी ए, बाका तो परण्या परदेस बाकी तो लागी नोकरी, ओ मेरी नार बाकी तो लागी, नोकरी, ओ मेरी नार —लो. गी.

६ प्रस्फुटित होना, अकुरित होना, खिलना।

७ फल फूल युक्त होना।

ज्यू—मतीरौ लागणौ, बोर लागणा।

उ०—१ सायबा म्हारै छै बाग मे चपेलड़ी जी राज, जं कै लाग्या छै धोळा धोळा फूल, प्यारा लागौ भाभी नै देवर लाडला जी राज। —लो. गी.

उ०—२ कासी करवत सिर सहै, गळै हिमाळै देह। हरीया निज फल दूरि है, लागै फूल वनेह। —अनुभववाणी

८ अनुभव होना, अनुभूति होना।

उ०—१ देवर, म्हारी धोती धोवै ए बलाय गौरै पूंचै पर सरदी लागज्यौ जी राज। —लो. गी.

उ०—२ चपा-केरी पाखड़ी, गूथू नवसर हार। जउ गळ पहरू पीव बिन, तउ लागै अगार। —ढो. मा.

उ०—३ बिणजारा रै, लोभी, लादचौ छै मगरा जी बोझ, पेट मे भटकौ लागियौ, बिणजारा रै। —लो. गी.

उ०—४ भटकौ लागतां ई ठाकर अठी-उठी जोयौ। —फुलवाड़ी

९ प्रतीत होना।

उ०—१ लागै साद सहामणउ, नस भर कुभड़ियाह। जळ पोइ-णिए छाइयउ, कहउ त पूगळ जाह। —ढो. मा.

उ०—२ फुरियौ भादरवौ धुरियौ नह फीको, नीरद रज आगै लागै नह नीको। —ऊ. का.

१० प्रवृत होना।

उ०—'रतना' मद मै मत्त निसंक हुई थी तिण रा सकोज हू रुकण लागी, लाज रै भार आखियां भुकण लागी। —र. हमीर

११ आरम्भ होना, शुरू होना।

उ०—१ तेतले समइ-फूटेवा लागा कपाळ मंडळ, भाजेवा लागा धनुरमंडळ। जाएवा लागा सिरखड, पड़वा लागी खाडा तणी

झड़ । वाजिवा लागी सुभटनी काटकड़ी, नाचेवा लागा धड़-कबंध पाड़िवा लागा ध्वज चिंध, प्रहार जरजर कुंजर पड़ई ।

—रा. सा. सं.

उ०—२ आरंभ मैं कियौ जेणि उपायौ, गावण गुणनिधि हूं निगुण । किरि कठचीत्र पूतळी निजकरि, चीत्रारै लागी चित्रण ।

—वेळी

१२ प्रारम्भ होने के पश्चात लम्बी अवधि तक चलने वाला कार्य काल, समय ।

उ०—१ लागंते वैसाख री, बीज अरी बळबंड । राम कियौ मिळ 'केहरी', करी जिही सतखंड । —रा. रू.

उ०—२ उतरतौ आसोज अर लागतौ काती । बाजरियां सांगोपांग पाकौड़ी । बास बांस ताळ डोका अर हाथ-हाथ भर सिरटा । दाणा देखौ तौ जांणै परड़ रा डोळा । —अमरचूंनड़ी

१३ फैलना, पसरना ।

उ०—१ माया पसरी आग ज्यूं, घर घर लागी जाय । जनहरीया दाझै नहीं, मन तन हरि सु लाय । —अनुभववाणी

उ०—२ आकास ऊपरै अबीर नै गुलाल री अबरै डबरी लाग रही छै । —रा. सा. स.

१४ किसी अनिष्ठ या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध होना या उसके सम्पर्क में आना ।

उ०—भूत रौ जमारौ सारथक व्हियौ । वींदणी नै लागण री विचार आतां ई भूत नै पाछौ चेतौ व्हियौ । लाग्यां तौ आ दुख पावैला । —फुलवाड़ी

उ०—२ म्है म्हारा मन सूं साची बात कीकर लुकावतौ । इण पै'ली घणी ई लुगायां रै डील में लाग लाग वांनै घणौ ई दुख दियौ, पण म्हारा मन री ओड़ी गत तौ कदै ई नी बिगड़ी ।

—फुलवाड़ी

१५ होना ।

उ०—१ पाखती अरटांरी भींगड़ि चींग रड़ि पड़ि नै रही छै । डहा रौ खटाकौ लागिनै रहिओ छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ दारू रा दाव वीच-वीच लीजै छै । गोळिया री खाटखड़ लागनै रही छै । —रा. सा. सं.

उ०—३ आंगणि जळ तिरप उरप अलि पिअति, मारुत चक्र किरि लियत मरू । रांमसरी खुमरी लागी रट, धूया माठा चंद धरू । —वेली

१६ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत होना ।

उ०—१ माह महारस मयण सब, अति उलहइ अनंग । मो मन लागौ मारवण, देखण, पूंगळ ढ्रंग । —ढो. मा.

उ०—२ मन भी लागा तन भी लागा, ज्यों बामण गळ धागा रे मीरां के प्रभू गिरधर नागर, भाग हमारा जागा रे —मीरा

उ०—३ पंच न डोल अबोल मुख, चचळ होय न चित । जनहरिया मन थिर भया, लिव लागी नित प्रित । —अनुभववांणी

१७ जुड़ना या होना ।

उ०—हूं थनें पूछूं बालमा, प्रीत कता मण होय । लागतड़े लेखौ नही, टूटी टाक न होय । —लो. गी.

१८ अनुगमन (पिछे) होना ।

उ०—पिया गया परदेस में, नैणा टपकै नीर । ओळूं आवै पीव री, जीवड़ौ धरै न धीर । जी उमराव थांरै लैरयां लागी आवू म्हाराराज । —लो. गी.

१९ अन्तर्गत होना ।

उ०—अणहलवाड़ा पाटण नूं गांव ४५९ लागै छै तिण में तपो १ गाव ५२ सीधपुर छै । रु. २५००० पचीस हजार उपजतां री नैड़ नै पाटण तौ आगै वडी ठौड़ हुती । —नैणसी

२० पीछे पड़ना, होना ।

उ०—१ गिरै-गोचर बतावै, भोळां नै भरमावै अर गूगा नै चरावै । लुगायां नै ठगै, पीमांळा नै अंठै अर लारै लागै है । —दसदोख

२१ प्रभावित होना ।

उ०—हरीया सो दिन वार धिन, आय मिळै सत सग । अब तौ चढै न ऊतरै, लागा हरि का रंग । —अनुभववाणी

२२ अन्तिम अवस्था में होना ।

ज्यूं —सूरज आथमण लागौ, जानवर मरण लागौ ।

२३ किसी वस्तु का दूसरी पर जड़ा जाना, टांका जाना, बैठाया जाना या सटाया जाना ।

उ०—१ सू नमचा किण भांतरा छै ? वीटीवा चौगांनिया, घणौ वनात रा लपेटिया, सालू रा लपेटिया, बोयदार रा गढिया, चैत रा, कलाबूत रै काम रा, सोनैरूपै रै बळां रा, रूपै रा कुलावा लागा थका, सोनै री टूंटी, रूपै री चिलमपोस छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ सू आभरण पहरै छै । जरकसी साडी, अतलसी चरणौ, केसरी अंगिया, घणै विरांणपुरै री कोर पटै लागां थका ।

—रा. सा. सं.

२४ आश्रित होना ।

ज्यूं— ढोली हरेक जात रै लारै लागौड़ा है ।

२५ प्रज्वलित होना, जलना ।

उ०—फेर हुकम हुवै छै । महताबांरी चांदणौ हुवै । सू महिताबां पचास सब सांवठी ही लागी छै । —रा. सा. सं.

२६ आदी होना ।

ज्यू—चाय, दारू लागणौ ।
२७ किसी तल पर किसी गाढे तरल पदार्थ का लेप आदि के रूप में पोता जाना ।
ज्यूं—मेंदी लागणी, रग लागणौ, कीचड लागणौ ।
२८ अभ्यस्त होना ।
२९ किसी रूप मे सम्मिलित होना ।
ज्यू—पोथी मे परिसिस्ट लागणौ ।
३० किसी आवरण या निरोध के कारण किसी विभाग या प्रकोष्ठ का ढक जाना या छिप जाना ।
ज्यू—आडौ लागणौ, आख लागणी ।
३१ किसी चीज का ऐसे क्रम से आना कि उसका यथोचित उपयोग हो सके ।
ज्यूं—हाट लागणी ।
३२ धारदार या नुकीले पदार्थ का शरीर में गढ़ना, धंसना, चुभना ।
ज्यूं-नख लागणौ, हळबाणी लागणी, छुरी लागणी, तरवार लागणी
उ०—१ दीठी रूपाळी म्है ई घणिया, पण इसी याही ज लोइणा री अंणिया । जिण भात खतंग रा बाण लागां पछै हरै हीज प्रांण ।
—र. हमीर

उ०—२ कुंवरसी रै हाथ रौ तीर जिण रै लागै, सो घोडे रै माह पार नीसर जावै । असवार रै लागै जै मांहा पाखरा भीजै नही । सो पूठ लागा मारता जावै छै । —कुवरसी सांखला री वारता

उ०—३ बस राखौ जीभ कहै इम 'बाकौ', कडवा बोल्या अभत किसी । लोह तणी तरवार न लागै, जीभ तणी तरवार जिसी ।
—बा. दा.

३३ किसी पदार्थ का उपयोग में प्रयुक्त होने पर अपना प्रभाव दिखाना ।
ज्यूं - दवा लागणी
३४ मंडराना, छा जाना ।
उ०—सांवळि कांइ न सिरजियां, अंबर लागी रहत । वाट चलंता साल्ह प्रिय, ऊपर छांह करंत । —ढो. मा.
३५ किसी विषय मे या व्यक्ति पर किसी बात या वस्तु का आरोप या प्रयोग होना ।
ज्यू—कलंक लागणौ, धारा लागणी ।
३६ लाक्षणिक रूप में किसी मुख्यत धार्मिक क्षेत्र में कोई अनिष्ठ बात या कार्य किसी के अनिवार्य रूप से जिम्मे पडना ।
ज्यू—पाप लागणौ, दोष लागणौ, सूतक लागणौ ।
३७ जान पड़ना, मालूम होना ।
उ०—बा रै एक कानी मोटरा री लैण चाल री' धीरै धीरै । इसौ लागै जांणौ कीड़ी नगरौ जाग गयौ । —अमर चूनडी
३८ किसी काम या बात का घटित होना ।

ज्यू—गरैण लागणौ, भोग लागणौ, ढेर लागणौ ।
३९ किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता सिद्धि या स्थापना होना ।
ज्यू—होड लागणी ।
४० किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक होना ।
ज्यू—घर मे दो मण धान महीना री लागै ला ।
४१ पारिवारिक सम्बन्ध या रिश्ते के विचार से किसी के साथ किसी रूप में सम्बद्ध होना ।
ज्यू—भाई, बैन या देवर लागै ।
४२ गणित के क्षेत्र मे कोई क्रिया ठीक और पूर्ण उतरना ।
ज्यू—जोड़ लगाणी
४३ आर्थिक क्षेत्र मे अनिवार्य रूप से किसी प्रकार का दायित्व देना या निश्चित होना, हिस्से लगाना ।
ज्यू—ब्याज लागणौ, चूंगी लागणी
४४ पेड़ पोधौ के सम्बन्ध में किसी स्थान पर जमकर जीवित रहना, प्रफुल्लित होना, फूलना ।
ज्यू —गुलाब लागणौ, नीब, पिपळ, बड़लौ लागणौ
४५ घोड़े, ऊट, बैल आदि के सम्बन्ध मे किसी प्रकार के दबाव या संघर्ष के कारण घाव उत्पन्न होना, गलने या सड़ने की किसी क्रिया का आरम्भ होना ।
ज्यूं—बलद रै खाधी लागणी, घोड़ा रै पीठ लागणी
४५ किसी पदार्थ मे ऐसे किटाणु उत्पन्न होना या बाहर से आकर सम्मिलित होना जिससे उक्त वस्तु किसी प्रकार से नष्ट होती है ।
ज्यू– गवां रै खुपरयौ लागणौ, आटा में इलिया लागणी,
४६ खाद्य पदार्थों के सम्बन्ध में तेज आंच (आग) के कारण पकाये जाने वाले पदार्थ का बर्तन के पैंदे में जमना, चिपकना या सट जाना ।
ज्यू —खीच लागणौ, दूध लागणौ, रोटी लागणी
४७ आघात होना, चोट पहुँचना ।
ज्यू—सोनार रै घरै बडताई बारौत रौ भचीड़ लागौ ।
४८ किसी के साथ ऐसा व्यवहार होना कि वह उससे कुढे या चिढे ।
ज्यू—भूंडौ लागणौ ।
४९ क्रमानुसार बारी आना, नम्बर आना ।
ज्यू—कचैड़ी मे मुकदमौ लागणौ, डाकखाना मे रजिस्टरी नै पारसल लागणी ।
५० अंकित या निश्चित होना ।
ज्यू —मौ'र लागणी, आंक लागणौ
५१ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध होना ।

ज्यूं—व्हौ उण लुगाइ रै लागोडौ
५२ किसी वस्तु के शरीर से स्पर्श होने से जलन या खाज उत्पन्न होना।
ज्यू—मिरचा लागणी, कैवच लागणी।
५३ स्त्री के साथ प्रसंग, मैथुन या संभोग होना।
५४ घोडे का घोड़ी से संभोग होना।
उ०—१ चौधरी कह्यौ, सावण रै महीनै मांहै समुन्द्र रै तीर घोडा बांधीजै अर रात रौ पोहरौ दीजै। जद घोडी री पूछ महा-भाल नीसरैं तद जाणजै जळ घोडौ लागौ।
—राव रिणमल राठौड खाबड़ियै री वात
उ०—सु काछेला चारण समुद्र खेप भरण गया हुता, सु ईया एक घोड़ी लीवी लेनै समुद्र रै काठै आय उतरिया। ताहरा तेजल घोड़ौ नीसरनै घोड़ी नूं लागौ। —नैणसी
लागणहार, हारौ (हारी), लागणियौ—वि.।
लागिओड़ौ, लागियोड़ौ, लाग्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लागीजणौ, लागीजबौ—भाव वा.।
लगणौ, लगबौ, लग्गणौ, लग्गबौ—रू. भे.।

लागत—स. स्त्री.—१ व्यय, खर्च।
उ०—मेरा नै कह्यौ:—अठै उत्तम घर नहीं सो म्हैं थानै लागत दा छां अनै अठै उत्तम घर विनां रोटी पांणी री अबखाई पडै।
—भि द्र.
२ किसी वस्तु के बनाने या किसी अवसर विशेष पर खर्च की जाने वाली धन-राशि।
ज्यूं—मकान बणावण मे दस हजार रीपिया री लागत है। लडकी रा ब्याव में पांच हजार रिपिया री लागत है।
३ देखो 'लागट' (रू. भे.)

लागती—सं. स्त्री.—सम्बन्ध, रिश्ता।

लागदार—सं. पु.—१ नेग लेने वाला, नेगदार।
उ०—और ही इणौ पईसौ-टको सारा नेगियां लागदारां नूं दियौ।
—नैणसी
२ कर या टेक्स वसूल करने वाला।
३ कर या टेक्स देने वाला।

लागबाग, लागभाग—सं. पु.—१ लगान, कर, टेक्स।
२ दक्षिणा।
उ०—राणां रौ पुरोहित पालीवाळ १ नै सिवड़ पुरोहित अठी सूं और ४ ब्राह्मण जूना विद्या पात्र वेद पढै छै। लागबाग दीजै छै।
—राव रिणमल री वात
३ दस्तूर, नेग।
रू. भे.—लागवाग

लागमौ—देखो 'लाग'।
उ०—थोडी देर बाद फरीदै कयौ—माजी! तमाकू-रौ टक्कौ दिरावौ नी। "अरे राड-रा! औ फेर कायरौ लागमौ लगायौ?
—वरसगाठ

लागलपेट—स. पु—१ दुराव, छिपाव।
२ किसी बात मे अप्रत्यक्ष रूप से जुडा या लगा हुआ तत्व या भाग।
उ०—वा तौ आवै ज्यू, जका बोल उकळिया, वै ई बिना लागलपेट रै पाधरा खळकाय दिया। —फुलवाड़ी
२ कपट, छल।
उ०—घणै हरख सूं बिना लागलपेट रै बिदा किया।
—कुंवरसी साखला री वारता
३ सम्बन्ध, लगाव।

लागव—स. पु.—वैरी, शत्रु।
उ०—हाकणहार 'पाळ' सुत हुवै, अचरज गयण वहै अतरेख लागवां सीस न ढोहे लाकड, लाकड़ि लोहो छोहो लागेक।
—मानसिंघ कल्यांणोत कछवाहा रौ गीत

लागवाग—देखो 'लागबाग' (रू. भे.)
ऊ०—१ फीटन को फेट दीन्ही, मरम परम मेट दीन्ही, भूमि भूप भेट दीन्ही, ऐसौ उपकारी तं। लागवाग रेट कीन्ही, लूट काहू की न लीन्ही, भारी बुद्धि भीनी भूनी, धन्य जसधारी तूं। —ऊ का.
उ०—२ लागवाग दापै बिना, त्यासू हुवै न तान। कद इक कळह करावसी, 'जीदे' तणी जबान। —पा. प्र.

लागियोड़ौ—भू. का. कृ. (स्त्री. लागियोड़ी) १ स्पर्श हुवा हुआ, छूआ हुआ. २ चिपका हुआ, लिपटा हुआ. ३ पहुँचा हुआ. ४ खर्च हुवा हुआ, व्यतीत हुवा हुआ. ५ नियोजित हुवा हुआ. ६ प्रस्फुटित हुवा हुआ, अंकुरित हुवा हुआ. ७ अनुभव हुवा हुआ, अनुभूति हुवी हुई. ८ प्रतीत हुवा हुआ. ९ प्रवृत्त हुवा हुआ. १० आरम्भ हुवा हुआ, शुरू हुवा हुआ. ११ प्रारम्भ होने के पश्चात् लम्बी अवधि तक चला हुआ कार्यकाल, समय, फैला हुआ, पसरा हुआ. १२ किसी अनिष्ट या कष्टदायक बात का किसी से संबध हुवा हुआ या उसके सम्पर्क में आया हुआ. १३ हुवा हुआ. १४ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत्त हुवा हुआ १५ जुडा हुआ या हुवा हुआ. १६ अनुगमन हुवा हुआ, पीछा हुवा हुआ. १७ अन्तर्गत हुवा हुआ. १८ पीछे पड़ा हुआ. १९ प्रभावित हुवा हुआ. २० अन्तिम अवस्था में हुवा हुआ. २१ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु पर जडा हुआ, टाका हुआ, बैठाया हुआ या सटाया हुआ. २२ आश्रित हुवा हुआ. २३ प्रज्वलित हुवा हुआ. २४ आदी हुवा हुआ. २५ किसी तल पर किसी

गाढे तरल पदार्थ का लेप आदि के रूप में पोता हुआ. २६ अभ्यस्त हुवा हुआ. २७ किसी रूप में सम्मिलित हुवा हुआ. २८ किसी आवरण या विरोध के कारण कोई विभाग या प्रकोष्ठ ढका हुआ या छिपा हुआ. २९ किसी चीज का ऐसे क्रम से आया हुआ होना कि उसका यथोचित उपयोग हो सके. ३० धारदार या नुकीला पदार्थ शरीर मे गढा हुआ, धंसा हुआ, चुभा हुआ. ३१ किसी पदार्थ का उपयोग में प्रयुक्त हुवे होने पर अपना प्रभाव दिखाया हुआ. ३२ किसी विषय मे या व्यक्ति पर किसी बात या वस्तु का आरोप या प्रयोग हुवा हुआ. ३३ लाक्षणिक रूप में किसी मुख्यतः धार्मिक क्षेत्र में कोई अनिष्ठ बात या कार्य किसी के अनिवार्य रूप से जिम्मे पडा हुआ. ३४ किसी काम या बात का घटित हुवा हुआ. ३५ किसी प्रकार की क्रिया की पूर्णता, सिद्धी या स्थापना हुवा हुआ. ३६ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिए अपेक्षित या आवश्यक हुवा हुआ. ३७ पारिवारिक सम्बन्ध या रिश्ते के विचार से किसी के साथ किसी के रूप में किसी के साथ सम्बद्ध हुवा हुआ. ३८ गणित के क्षेत्र में कोई क्रिया ठीक और पूर्ण उतरी हुई. ३९ आर्थिक क्षेत्र में अनिवार्य रूप से किसी प्रकार का दायित्व दिया हुआ, निश्चित हुवा हुआ या हिस्से लगा हुआ. ४० पेड पौधो के सम्बन्ध में किसी स्थान पर जम कर जीवित रहा हुआ, फला हुआ, फूला हुआ. ४१ घोडे, ऊट, बैल आदि के सम्बन्ध मे किसी प्रकार के दबाव या संवर्ष के कारण घाव उत्पन्न हुवा हुआ, गलने या सडने की किसी क्रिया का आरम्भ हुवा हुआ. ४२ किसी पदार्थ मे ऐसे किटाणु उत्पन्न हुवा हुआ या बाहर से आकर सम्मिलित हुवा हुआ जिससे उक्त वस्तु खाए जाने से या किसी प्रकार से नष्ट होती है. ४३ खाद्य पदार्थो के सम्बन्ध मे तेज आंच (आग) के कारण पकाये जाने वाले पदार्थ का बर्तन के पेंदे में जमा हुवा हुआ, चिपका हुवा हुआ या सटा हुवा हुआ. ४४ आघात हुवा हुआ, चोट पहुंची हुई. ४५ किसी के साथ ऐसा व्यवहार हुवा हुआ होना कि वह उससे कुढे या चिड़े. ४६ क्रमानुसार बारी आई हुई या नम्बर आया हुआ. ४७ अकित या निश्चित हुवा हुआ. ४८ किसी वस्तु के शरीर से स्पर्श हुवा हुआ होने से जलन या खुजली उत्पन्न हुवी हुई. ४९ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध हुवा हुआ. ५० अनुसरण हुवा हुआ. ५१ किसी स्त्री के साथ प्रसंग, मैथुन या संभोग हुवा हुआ. ५२ घोड़े का घोड़ी से संभोग हुवा हुआ. ५३ मल युक्त हुवा हुआ. ५४ मालूम हुवा हुआ. ५५ मंडराया हुआ, छाया हुआ।

लागू-वि.—१ बैरी, दुश्मन।

उ०—१ 'दला' रौ दौलताबाद टल्लै दिया, वाद भाजि दिखण नाद वागौ। दीह सिवरात री भांत दीठी दळा, **लागुवां** इसौ गुर कान लागौ। —राव महेसदास राठौड़ रौ गीत

उ०—२ हाथि हुवौ सग्रांम तणी हर, थियै कळह तौ प्रकट थियौ। **लागुवां** झड़पा दियता लागै, कमधज साबळ पनग कियौ।

—नादण बारहठ

उ०—३ ऊभै कुभ न लीनै असुरा, **लागुवां** पड़ियां पछै लयी। गढ़ गागरौणि गउ-स्री ग्रहतां, गागू का ऊपरै गयी।

—कुभा खीची री गीत

२ पीछे पड़ने वाला।

उ०—१ राणौ जगमाल राव मानसिंघ रौ जमाई हुवै। सु धरती रौ लागू हुवौ। सिरोही जगमाल विजय कीधी।

—राव चंद्रसेन री बात

३ कायम, मुकर्रर।

उ०—ठीक तौ थूं उण रौ बाप है। बडौ खतरनाक छोरौ है। उण माथै तीन सौ दो पूरौ लागू व्हैग्यौ है, बचणौ मुसकल है।

—अमर चूनड़ी

४ लगने योग्य।

५ प्रयुक्त होने योग्य।

लागोड़ौ—देखो 'लागियोडौ' (रू. भे.)

उ०—१ चतुरभुजजी रै भोग **लागोड़ौ** थाळ सूरजमलजी रै भोग लागै, पछै औ थाळ ठाकुर जी रा रसोवडा दाखळ हुवै।

—बां. दा. ख्यात

उ०—२ महल रै नीसरणी **लागोड़ी** राव ऊंची खैंच लिवी। महल रा किवाड़ आडा जडिया जिण सूं राव नूं मार सकिया नही।

—बां. दा. ख्यात.

(स्त्री. लागोडी)

लाघव-स. पु. [स. लाघव] १ लघु, छोटा।

उ०—१ देवी काळिका मा नमौ भद्र काळी, देवी दूरगा **लाघव** चारिताळी। देवी दाणवा काळ सुरपाळ देवी, देवी साधकं चारणं सिध सेवी।

—देवि.

उ०—२ मुख मगळ नांम उचार सदा, तन के अघ ओघन दाधव रे। हनमत बिभीखन भान तनै, जिन कीन वडे, जन **लाघव** रे।

—र. ज. प्र.

२ कमी, अल्पता।

३ दस प्रकार के यति धर्मों के अन्तर्गत पांचवां यति धर्म।

उ०—खति मुति अज्जव मद्दव, **लाघव** पाचमो जांण। नित वखांण्या मुनिराज ने, भगवंत स्री वरधमांन। —जयवांणी

४ हल्कापन।

५ तेजी, शीघ्रता।

६ हाथ की सफाई या चालाकी।

७ संक्षिप्तता ।

८ असम्मान, अप्रतिष्ठा ।

लाड़वाड़, लाड़वाड़ियौ—देखो 'लारवाळ, लारवाळियौ' (रू. भे.)

उ०- फूलकंवर रै कांनां भणक पाड़यां विना ई वौ अठी-उठी भाई गनायता सूं ठसियौ भिड़ाय अेक अधबूढ बामणी सूं नातौ कर लियौ । नातायत बांमणी रै साथै फूलकंवर रै साईनी अेक **लाड़वाड़** छोरी आई लाडवाड री अेक आंख में छिम अर दूजोड़ी में फूलौ । —फुलवाड़ी

लाड़ायौ—स. पु. (स्त्री. लाड़ाई) १ कपड़ा, जूतादि पर मुह मार कर खाने की आदत वाला पशु ।

२ बिना आमंत्रण या मनुहार के जाकर भोजन करने वाला व्यक्ति ।

रू. भे.—लाएड़ौ, लाड़ेवौ लाड़ौ, ला'ड़ौ, लायेडौ, ल्या'ड़ौ, ।

लाड़ेवौ—देखो 'लाड़ायौ' (रू. भे.)

लाड़ौ—१ वृद्ध, बूढा ।

२ देखो 'लाड़ायौ' (रू. भे.)

लाचार—वि. [अ.] १ विवश, मजबूर ।

उ०—आंख्यां बळती ही । रंजी रै कारण जिज्या साव परवारियोड़ी ही । दरजै **लाचार** होय सेठजी नै वहीर व्हैणौ ई पड़यौ । —फुलवाड़ी

२ दीन, दुखी ।

३ असमर्थ, असहाय ।

लाचारगी, लाचारी—सं. स्त्री.—१ विवशता मजबूरी ।

उ०—बेटी! म्हारी आ भुळावण थारै वारते अणूंती मूंघी पड़ैला, आ जांणतां थकां ई म्हैं थनैं बिखा रा ऊंडा वेरा में धरकावूं, थूं म्हारी इण **लाचारी** नै समझै है के नीं । - फुलवाड़ी

२ असमर्थता ।

उ०—दोड़ा दोड़ी कर गिण गिण दुख गेरै । हाथा जोड़ी कर जिण तिण मुख हेरै । छंदागारी छिब प्यारी पुळवती, कर कर **लाचारी** हारी कुळवंती । —ऊ. का.

३ दीनावस्था ।

रू. भे.—लचारी

लाछ, लाच्छी, लाछ—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ धरम कियां सुख होय, **लाछ** लिछमी धन पावै । धरम उतिम कुळ अवतरै, जळम दाळिद नहीं आवै । —वील्हौजी

उ०—१ दसमौ वरस उतरतां ई तौ माईत पीळा हाथ करनै पराई करण री चिंता करण लागा । नीं आगणै मावती अर नीं गिगन में । छाछ अर **लाछ** मांगण री कैड़ी मेहणी । सगपण माथै सगपण आवण लागा । —फुलवाड़ी

लाछबर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.) (डिं. को.)

लाछरी—सं. पु.—वस्त्र विशेष ।

उ०—पीतांबर चादर रक्तांबर नेत्रांबर खासरी सालूर चौलहिंग नीलुहुरा जरजरी मलबारी **लाछरी** अधौतरी अमरी गंगापारी । — व. स.

लाछवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—गज ग्राह विन्है ही तारिया, रीझै खीझै **लाछवर** । अजमाल चरण वदण करै, धन तौ लीला चक्रधर । —गजउद्धार

लाछि—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ रूखी विणज्ज आकर रिण, पसू चौपदी घणी । अनेक सपदा उपाउ, **लाछि** चतुरागणी —गु. रू. ब.

उ०—२ गौरी सण कातइ, **लाछि** वस्तु सातइ, नारद हेरउ करइ, नव खडि फिरइ, धनद यक्ष भंडारउं करइं, इसिउ रांवण नरेस्वर । —व. स.

उ०—३ कहि कुण आपणां मंदिर मांहि, **लाछि** उवेखई आवती ए । तीणइं मांनीय तै सवि वात पुण, मनि ए इसुं चीतवइ ए । —हीराणद सूरि

उ०—४ गरथ पांमी गुण कीजै इम कहै गंगो, साहमी साधु सुपुत्र संतोखीजै सगौ । लाछि छै जे, **लाछि**, कहै धरम लाहल्यौ, परिहां सची राख्या सेण अपां नै स्वाद सो । —ध. व. ग्रं.

उ०—५ सरस वाना सगळ कीध सजळ थळ, प्रगट पुहवी निपट प्रेम प्रघळा । लहकती **लाछि** वळि लील लोकी लही, सुध मन करैं धरम-सीळ सगळा । — ध. व. ग्रं.

लाछिबर, लाछिवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लाछी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लाछीबर, लाछीवर -देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लाछुबाई—स. स्त्री.—चारण वशोत्पन्न एक देवी विशेष ।

लाज—सं स्त्री. [सं. लज्जा] १ अन्तकरण की वृत्ति विशेष जिससे स्वाभावत: या किसी निन्दनीय आचरण की भावना के कारण दूसरों के समक्ष वृत्तिया संकुचित हो जाती हैं मुंह से बात नहीं निकलती, चेष्टा मन्द पड़ जाती है, सिर व दृष्टि नीची हो जाती है, लज्जा, शर्म ।

उ०—१ नारायण रा नांम सूं लोक मरत जो **लाज** । बूडैला बुध बायरा, जळ बिच छोड जहाज । —हृ. र

उ०—२ तद वार अंस पुरसां तणी आय वणी जग ऊपरा । महाराज तणै छळ मारवां, धारी **लाज** मुरद्धरा । —रा. रू

२ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।

३ मर्यादा ।

उ०—१ कहियौ भीम हूँत कमधज्जै, सूर उदै आवौ दळ सज्जै । दोनू तरफ **लाज** कुळ दाखौ, रूका जोर सरीखौ राखौ । —रा. रू

उ०—२ तन मन धन सब अरपन कीनू, छाडी छै कुळ की **लाज** । दो कुळ त्याग भई बैरागण, आप मिळण की लाज [के काज] । —मीरां

४ लगाम, नेकेल, बाग ।

उ०—१ सजि कसण, करि लाज ग्रहि, चढियउ साल्हकुमार । करइ करकउ स्रवण सुणि, निद्रा जागी नार । —ढो. मा

उ०—२ धावउ धावउ हे सखी, को दांवणि को **लाज** । साहिब म्हाकउ चालियउ, जइ कउ राखइ आज । —ढो मा

२ रस्सी ।

रू. भे.—लज, लज्ज, लज्जा, लज्ज्या, लज्या, लाजा, लाजि, लाजी ।

मह.—लाजौ ।

लाजणौ, लाजबौ–क्रि अ.—लज्जित होना, शर्मिन्दा होना, संकुचित होना ।

उ०—१ बडौ बोल खाटियौ । तठा पछै रावत मेघ परणीजियौ थौ सु आयौ । बात सुणी । गाढौ **लाजियौ** । —नैणसी

उ०–२ बहु सब दइ **लाजती** न बोलइ, कहिस्यइ वळै अनेरी काय । आगणइ काइ माहरइ आयउ, जाणइ परउ रिखीसर जाइ । —महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ दीधा मणि मदिरै कातिग दीपक, सुत्री समाणियां माहि सुख । भीतर थका बाहिर इम भासै, मनि **लाजति** सुहाग मुख । —वेलि

२ सम्मान, प्रतिष्ठा, स्तर या शोभा में तुलनात्मक पतन होना । हल्का लगना, नीचा दिखना ।

उ०—१ जिस अवास की सीढियूं के ऊपर रगदार सबजू पसमीन पायदाज राजै । सो कैसौ जिसकी सोभा के देखै तै नील घन सघन के वद्दळ **लाजै** । —सू प्र.

लाजणहार, हारौ (हारी), लाजणियौ—वि० ।

लाजिओड़ौ, लाजियोड़ौ, लाज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लाजीजणौ, लाजीजबौ—भाव वा० ।

लजणौ, लजबौ, लजाणौ, लजाबौ, लजावणौ, लजावबौ, लज्जणौ, लज्जबौ, लज्जाणौ, लज्जाबौ, लज्जावणौ, लज्जावबौ—रू. भे. ।

लाजम, लाजमी—देखो 'लाजिमी' (रू. भे.)

उ०—१ ताइयां मिळ बैठोय बध तनू, मरणौ हव **लाजम** जग मनूं । परदेसिय 'वूडोय' 'जीद' परा, दुरही बित लेसिय 'देवळ' रा । —पा प्र

उ०—२ एक तौ जिकौ कांम आरंभ करै तिण रो निरवाह करणौ आपरै जुम्मै **लाजमी** जाणै । —नी. प्र

लाजमौ–स पु.—१ सभ्यता, शिष्टता ।

२ देखो 'लवाजमौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद खाफरौ राजा रै दरबार बडै **लाजमै** पोसाख सू जाय मुजरो कियौ । —राजा भोज अर खाफरै चोर री बात

उ०—२ तरै जगदेव नै कहायौ, कवरजी जान नै तयारी कीज्यौ । जगदेव केहायौ—गै'णौ, पोसाख, घोडौ, राजा रो **लाजमौ** नही नै पाळौ तौ इसै लवेस(लिबास) चालणी आवै नहीं । —जगदेव पंवार री बात

उ०—३ तरै भाला रै वीहा हुवौ सौ भाली नू आणौ आयौ । भाली पीहर आई तरै **लाजमै** सू हलाई । —कुवरसी सांखला री वारता

लाजलज्जाळू—देखो 'लजाळू' (रू. भे.)

उ०—**लाजलज्जाळू** लक्ष्मणा, लूणी लसन लवंगि । लीलावती लुंकड़ी, लाहि लवीरी संगि । —मा का प्र.

लाजवंत—देखो लजावत' (रू. भे.)

(स्त्री. लाजवती)

लाजवती, लाजवती—देखो 'लजावती' (रू. भे.)

उ०—आगळि पितमात रमंती अंगणि, कांम विराम छिपाड़ण काज । **लाजवती** अंगि एह लाज विधि, लाज करती आवै लाज । —वेलि

लाजवरद–सं पु [सं. राजवर्त्तक] १ एक कीमती पत्थर या रत्न ।

२ विलायती नील जो गधक के मेल से बनता है और बहुत बढ़िया तथा गहरा होता है ।

उ०—**लाजवरद** सील सुपेद, जधाळ जुगत व्रत । रचि अमास नवरंग, करै मधि चित्र देव क्रत । —रा. रू

लाजवरदी–वि. [फा.] लाजवरद के रंग का, हल्के नीले रंग का ।

लाजवाब–वि. [फा] १ जो उत्तर न दे सके, निरुत्तर ।

२ अनुपम, अद्वितीय, बेजोड़ ।

लाजा—देखो 'लाज' (रू. भे.)

उ०—१ ना कीज्यौ सैणा नरा, काचौ बीजौ काम । राखै **लाजा** सतरी, राजा साचौ राम । —र. ज. प्र.

उ०—२ कान सुणै कुण कवीदा काजा, लाखा वात रहै किम लाजा । पोढी नाथ धरम सत पाजा, राखी रीत रिड़मलां राजा । —भबूतसिंघजी रौ गीत

लाजामुखी–सं. स्त्री.—मुख की शर्म या लज्जा ।

वि.—लज्जित या शर्मिंदा रहने वाली ।

लाजाळू देखो 'लजाळू' (रू. भे.)

उ०—१ डौरा डिगमगता ग्राटी खुल डुळती, तिरछी फाकरिया बरछी सी तुलती । दुरबळ **लाजाळू** साळू मे दीखै, भामरण भूखाळू व्याळू बिन बीखै । —ऊ का.

उ०—२ **लाजाळू** गुल चिमन में, खग कुळि माहि बकोट । मावडिया मिनखा मही, या तीना में खोट । —बा. दा.

लाजाळूपरण, लाजाळूपणौ—देखो 'लजाळूपरण' (रू. भे.)

लाजि–देखो 'लाज' (रू. भे)

उ०—केहरी तरणा जमरांरण मचतै कंदळि, दुग्रै कर जोडियां खडी दोहां । पुकारै जवानी, नेस दिस पधारौ, **लाजि** ग्राखै, हमैं वाजि लोहां । —लिखमीदास व्यास

लाजिम, लाजिमी–वि. [ग्र.] १ उचित, मुनासिब ।

२ ग्रावश्यक, जरूरी ।

३ निर्भर ।

उ०—सैरणां मसलत पेस करजै नहीं, मैरणां ममलत नूं पेस कर दौलतमदा रौ कहियौ छै, पाछै बादसाह ऊपर **लाजिम** छै । —नी. प्र.

रू. भे.—लाजम, लाजमी ।

लाजियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ शर्म या लज्जा किया हुग्रा, लज्जित ।

२ सम्मान, प्रतिष्ठा या स्तर मे निम्न (पतन) हुवा हुग्रा ।
(स्त्री. लाजियोड़ी)

लाजी–सं. पु.—१ एक प्रदेश जिसे नल राजा ने विजय किया था ।

उ०—मलय सिंगल कोसल नर ग्रंध्य, स्त्रीपरवत द्राविड नइ वंध्य । वैरोट तापी **लाजी** धार, स्त्रीवैदरभ पाटल ग्रति सार । —नळदवदती-रास

२ देखो 'लाज' (रू. भे.)

लाजूकाजू–सं. पु.—बारात की सूचना कन्यापक्ष के घर पर देने के लिए जानेवाले, वर के बहनोई या भांराजे को कन्या पक्ष की ग्रोर से दिया जाने वाला एक नेग । (दाहिमा ब्राह्मरण)

लाजौ–देखो 'लाज' (मह., रू. भे.)

उ०—पूछै कारिज पय नमी, कहौ ग्राया किरण काजौ रे । 'लालचंद' कहै तस ग्रखीइ, जस मुख हुवै **लाजौ** रे । —पं. च. चौ.

लाट–सं. पु.—१ देश का नाम ।

उ०—**लाट** बिरद सिंधु देस सहु, केकइ ग्ररध जांरण । साढां पचवीस देस भरत में ग्रारभ प्रधान । —ग्र. स्त.

२ गुजरात के एक भाग का नाम, जहां ग्रब ग्रहमदाबाद, भडौंच ग्रादि नगर है ।

[ग्र. लॉर्ड] ३ ब्रिटिश काल में किसी प्रान्त या देश का सर्वोच्च शासक ।

उ०—ग्रलीमन सूर रौ वंस कीधौ ग्रसत, रेस टीपू विजै त्रंबट रुडिया । **लाट** जनराळ जरनेल करनैल लख, जाट रै किलै जमजाळ जुडिया । —कविराजा बाकीदास

४ बहुत सी चीजों का वह समूह या विभाग जो एक साथ रखा, बेचा या नीलाम किया जा सके ।

५ समूह, झुण्ड ।

उ०—दस हजार जोइया दुभल, लाख लोक री **लाट** ज्यां जोइया माथै जबर, 'वीरम' घाती वाट । —वी. मा.

६ लाटानुप्रास नामक ग्रलकार ।

७ एक व्यावसायिक जाति या उसका व्यक्ति ।

८ कसक ।

उ०–बापड़ौ बूढौ सूसरौ नवलजी देखतौ ही रैय ग्यौ । मोटी ग्रास लेय'र खंनै ग्रायौ ही, जकां माथै पारणी फिरग्यौ । देख्यौ—बिया रौ जंवाई ग्रापरौ ऊंट खेच परा 'र बारै चाल्यौ जावै । पारबती घर में गरळाई । नवलजी रै काळजै में **लाट** ऊपड़ी–मेरी ग्राज ग्रा हालत जीवतां ही हुयगी ? —दसदोख

९ लूटने की क्रिया ।

उ०—इतरै माहै ए तौ मररण रूप ही ज बैठा हूंता । झट पागड़ा पग दीया । इरण पागड़ै पग दीना नै धाड़वी कतार नू **लाट** लडावी छै । —तिलोकसी वरसे भाटी री बात

क्रि. प्र.—लडारणौ

१० बडा सरदार ।

[सं. लाट;] ११ पुराना कपडा, जीर्ण वस्त्र ।

वि.—१ शक्तिशाली, जबरदस्त ।

उ०—चोखौ कमायौ ग्रर खायौ, कीं रौ ही डर-भौ नी राख्यौ । दोजकी'र दरोगी वण्यां, दुनियां रै ईंरखै ग्रैरख्या'र तण्यां **लाट** हां, बांमरण-बारिणया सूं के घाट हां । —दसदोख

२ देखो 'लाठी' (मह., रू. भे.)

३ देखो 'लाठ' (रू. भे.)

लाटणी–सं. स्त्री.—खलिहान में साफ किये हुए धान को वितररण करने का एक उपकररण विशेष ।

२ खलिहान में कृषिउपज मे से जागीरदार द्वारा ग्रपना हिस्सा लेने की क्रिया या ढंग ।

लाटणौ, लाटबौ–क्रि. स. [सं. लाटनम्] १ खलिहान में से जागीरदार या शासक द्वारा कृषि उपज (ग्रनाज) का निश्चित हिस्सा लेना या

वसूल करना ।

उ०—१ कदै तौ पड़ग्यौ काळ अभागौ, गिण-गिण काढचौ दो'रौ। कदै तौ ठाकर लाटौ लाव्यौ कदै लाटग्यौ वो'रौ ।

—चेतमानखौ

उ०—२ अनत आतमा और न जाचै खळै बहुत सुख पाया। निज तत तिकौ लाटता लीयौ, लाटै लोक घपाया। —ह. पु. वा.

२ कर्जदाता द्वारा कर्ज वसूल करना ।

उ०—कदै तौ पड़गौ काळ अभागौ, गिण गिण काढ्यौ दो'रौ। कदै तौ ठाकर लाटौ लाव्यौ, कदै लाटग्यौ बो'रौ। —चेतमानखौ

लाटणहार, हारौ (हारी), **लाटणियौ**—वि० ।

लाटिग्रोड़ौ, लाटियोड़ौ, लाटचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लाटीजणौ, लाटीजबौ—कर्म वा० ।

लाटरी–सं. स्त्री [अ] राशि या वस्तु के रूप मे पुरस्कार देने की वह योजना जिसमें तन्निमित्त बिके हुए टिकिट या कूपन की सख्या की चिट डालकर विजेता का नाम निश्चित किया जाता है।

उ०—भोभर मे ठंडौ पाणी सौ पड़ग्यौ। लाटरी रै इनाम दाई कुँवर वेगी कांन खडा कर लीना। —दसदोख

क्रि. प्र.—आणी, खुलणी, खोलणी, लगाणी, लागणी ।

लाटसा'ब, लाटसाहब–सं. पु [अ. लार्ड साहिब] दिल्ली का वाइसरॉय ।

लाटानुप्रास–स पु.—एक अनुप्रास अलकार जिसमें शब्दो की पुनरुक्ति होती है, पर अन्वय करने पर वाक्यार्थ मे भेद हो जाता है।

लाटियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ खलिहान में जागीरदार या शासक द्वारा कृषि उपज (अनाज) का निश्चित हिस्सा लिया हुआ या वसूल किया हुआ। २ ऋणदाता द्वारा खलिहान मे कर्ज वसूल किया हुआ ।

लाटियौ–सं. पु.—उस चक्र की धुरी जिसके सहारे कुए से चड़स निकाला जाता है।

लाटूपाटू–वि.—१ डरपोक, कायर ।

उ०—तठा पछै घोघै मोरबी रौ बिगाड़ किथौ हुतौ, सु मोरवी वीरमगाम रा थाणा रौ साथ अजांणजक रौ घोधा माथै टूट पडियौ, माणस हजार तीन, तिण माणस ७०० मारिया, बीजा लाटूपाटू हुता सु नास गया। —नैणसी

२ कमजोर, अशक्त ।

उ०—देखौ, कै कैईरी होड तौ हुवै कोय नी, सिरदार! पिण म्हारी जाण मे तौ कैई सू लाटूपाटू को रैवां नी। —वरसगाठ

३ साधारण ।

उ०—ताहरां राजा साथ लाटूपाटू आदमी मेल राजा नूं मजल पोहचायौ और लोक सभनै उभौ रहियौ ।

— नरसिंघ राजा री बात

४ तुच्छ, नगण्य ।

लाटौ–स. पु.—१ खलिहान ।

उ०—छैवट चौधरण आय नै उणरौ बिचार तोड़चौ—आज यूं ठाडा होय नै किया बैठा हौ ? रोटी खाय नै लाटै चालण रौ विचार कोय नी काई ? —रातवासौ

२ खलिहान मे पडी अन्न-राशि ।

उ०—कदै तौ पड़ग्यौ काळ अभागौ, गिण गिण काढ्यौ दो'रौ। कदै तौ ठाकर लाटौ लाव्यौ, कदै लाटग्यौ वो'रौ। —चेतमानखौ

३ हिस्सा, बंटवारा ।

उ०—१ सूर खळा सिर साखती, हरीया आज' क काळि। लाटौ लूटै लोभीया, हकै आयौ हाळि। —अनुभववाणी

उ०—२ अगम लाटौ लीया निगम ससा नही, राज तपतेज डर नाहिं कोई। दास हरिरांम ऊ देस अदेजगर, आप कमाय अर खाय सोई। —अनुभववाणी

क्रि. प्र.—काढणौ, लाटणौ

मुहा.—लाटा ऊं ई नही धापै जका चारा ऊ कांई धापसी=अत्यन्त लोभी ।

लाठ–सं. स्त्री—१ मोटा व ऊंचा खंभा या स्तम्भ ।

२ कपास से रूई पृथक करने के चरखे का एक काष्ट का मोटा उपकरण जिसके साथ एक लोहे की छड लगी रहती है। इसमें कपास फसाने से बिनौला भूमि पर गिर जाता है और रूई पृथक हो जाती है।

३ काष्ट का एक प्रकार का मोटा व लम्बा लट्ठा जो कोल्हू की कूडी के मध्य में लगा रहता है, जिसके घूमने से तथा दबाव पड़ने से कोल्हू मे डाले हुए पदार्थ पेले जाते है।

४ रहट में बागडौ तथा डाबड़ौ से सम्बद्ध लकड़ी का एक मोटा लट्ठा जिसके घूमने से डाबडे मे लगी माल घूमती है।

वि. वि.—१ देखो 'डाबडौ'

२ देखो 'बागड़ौ'

५ लकड़ी का मोटा लट्ठा जो कच्चे मकानो की छाजन मे लम्बा लगा रहता है।

उ०—फळसा टाटा ठाट, लाठ घरकोट वणावै। ढूंढा पड़वा छान, कोड़वा ठाढ चढावै। —दसदेव

६ देखो 'लाट' (रू भे)

उ०—कठीर काटकै छूटै साकळां राटकै किना, मेळै चमू थाट कै अरेहा सत्रा मीच। केवाण झाटकै बाढ भाड़िया भूरियां केंधा, बिभाड़िया लाठ कै बूरिया घोरां बीच। —सकरदान सामोर

७ देखो 'लाठी' (रू. भे)

लाठा-सं. स्त्री.—एक जाति विशेष।

उ०—मणीयार सोनार कुंभार ठठार लोहार तलाल पटोळिया पटसुत्रीया माली तंबोली हरमेखलिया जोगी भोगी वइरागी नट विट खुट खरड **लाठा** माठा रंगाचारच""""। —व.स.

लाठी-सं. स्त्री. [स. यष्ठी, प्रा. लट्ठी] १ पतली लंबी लकडी।

मुहा.—जिण री लाठी उण री भैंस=शक्ति सर्वोपरि।

रू. भे.—लट्ठी।

मह.—लाट, लाठ।

२ सुम पर होने वाला घोड़े का रोग विशेष। (शा. हो.)

लाठीभल, लाठीभल्ल—हाथ में लाठी रखने वाला, लट्ठबाज।

रू. भे.—लठीभल।

लाठीबाज—देखो 'लट्ठबाज' (रू. भे)

लाठौ—देखो 'लट्ठौ' (रू. भे.)

उ०—तागड़ रा रस्सा ऊपर लेय चढ़िया वे ऊपर दोय **लाठां** सूं काठा बांधिया। —ठाकर जेतसी री वारता

लाड-सं. पु [सं. लाड्=थपथपाना, थपकी देना] १ बच्चों को प्रसन्न करने हेतु किया जाने वाला स्नेह पूर्ण व्यवहार, दुलार।

उ०—जीओ, घण मुठ लै पिव पालिणौ, तौ दोय जणा मतौ ए उपाइयौ जी। जी पिया, जै म्हारै जलमेगौ पूत, तौ किसड़ा लाड लडास्योजी। —लो. गी.

उ०—२ राजूखां रै ग्रेक भतीजौ ग्राठ या दस बरसां री छै। **मुहडै लाड** लगायोड़ौ, बडौ लाड कुमायो। —सूरै खीवै कांधळोत री वात

२ प्यार, प्रेम।

उ०—हित विण प्यारा सज्जणां, छळ करि छेतरियाह। पहिली **लाड लडाइ कइ**, पाछइ परहरियाह। —ढो. मा.

क्रि. प्र.—**ग्राणौ, करणौ, लगाणौ, लडाणौ**।

३ एक देश का नाम।

उ०—१ कीर कास्मीर द्रविड गउड जाड **लाड** लांगळ जांगळ खस पारस्व, जादव नेपाल ग्रग वंग कलिंग"""। व. स.

उ०—२ २७२ गाजण, ३४ कनूज, १८ लक्ष बांगू मालवउ, ६ लक्ष गौड, ६ करु, ६ डाहल, ७० सहस्र गुजराति, ६ सहस्र सोरठ, ४० जेजाहुत, २४ सहस गंगपार, २१ **लाड** देस, १४ सहस्र व्यालकुण नमियाड। —व. स.

रू. भे.—लड्ड।

लाडउ—देखो 'लाडौ' (रू. भे.)

उ०—गगाजळ ग्रधर भीलियइ भिलतउ, द्रोमति जिम वाजें दरबार। **लाडउ** नवउ किनां लाडली, बळे सुथट मिळइ सुविचार। —महादेव पारवती री वेलि

लाडकड़ौ, लाडकलौ—देखो 'लाडकौ' (ग्रल्पा., रू भे.)

(स्त्री. लाडकड़ली, लाडकड़ी, लाडकली)

लाडकवायौ-वि. (स्त्री. लाडकबाई) १ जिसका बहुत लाड या प्यार हो, प्यारा दुलारा।

रू. भे:—लाडायौ।

लाडकियौ—देखो 'लाडकौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—बांधोड़ी कमरा ग्रौ बुजीसा, नहीं खोलै, लाजै म्हारौ **लाडकियौ** मांमाळ, भोमियाजी भगडै जूजिया। —लो. गी.

लाडकी-वि. स्त्री.—प्यारी, दुलारी।

उ०—हूं लूकिड रै **लाडकी**, दिहाडी द्रिपीयांण। माहरू भमइ तुह्यारडा, पंजर पूठइ प्राण। —मा. कां. प्र.

लाडकोड-स. पु.—खुशी, हर्ष।

उ०—१ बापड़ां बैदा बेटी नै जापौ करायौ हो, दोहितै जायै रा **लाडकोड** करता हा। —दसदोख

उ०—२ बरस तीन रै ग्रांतरै वळै कवर हुवौ। तिण रौ नांम जगधवळ दीधौ। घणा **लाडकोड** कीजै छै। राजा री रीभा लीजै छै। —जगदेव पवार री बात

लाडकौ-वि. (स्त्री. लाडकी) जिसका बहुत अधिक प्यार या दुलार हो, प्यारा, दुलारा।

उ०—१ मांरै बेटी एकाएक होवण सूं घणौ **लाडकौ**। —रातवासौ

उ०—२ घर रा काम काज सूं निबड़ने उणै जेठूता जबरजी नै पकड़ लियौ। खोळा में बिठायनै लाड करण लागी—म्हारौ **लाडकौ** बेटौ, म्हारौ समभणौ बेटौ, म्हारौ नैनकियौ वीरौ, घणौ हुंसियार, घणौ फूटरौ, ग्रर बुच्चकारतां एक वाल्हौ दे दियौ। —ग्रमर चूंनड़ी

रू. भे.—लाडिकूं, लाडिकौ।

ग्रल्पा.—लाडकड़ौ, लाडकलौ, लाडकियौ।

लाडखांनी-सं. पु.—कछवाहा वंश की शेखावत शाखा के अन्तर्गत एक उप शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—जैसा सांमळाती कासळी सैं लोग ग्रायौ, ऊंनै **लाडखांनी** भायपां का भी खिनायौ। - सि. व.

लाडगहेलौ, लाडगे'लौ-वि.—(स्त्री. लाडगहेली, लाडगे'ली) वह जो अधिक लाड के कारण नटखट या उद्दंड हो गया हो।

उ०—सोल स्रंगार सज्या, बीजा कांम तिज्या, सुजाण सहेली, **लाडगहेली**, हस गतइं चालती, गजगतइ माहलती। —व. स.

लाडडौ—देखो 'लाडलौ' (रू. भे.)

उ०—हैरान हुआ हिंदू तुरक, आया लोह न आडडै। गजगाह 'भीम' गाजी' हुआै, व्याहक लाडी **लाडडै**। —गु. रू. बं.

लाडण–स. पु. [स लालन] १ सुन्दर पति।

उ०—१ **लाडण** वानि चडावीउ ए, परिणेवा तोरणि आवीउ ए लाडी हिव सिणगारीइ ए, वर पीठी देह ऊतारीइ ए।
—हीराणद सूरि

उ०—२ एक वार मोरी वीनतडी सुणि सुदर **लाडण** रे। लाडण नइ माडण नारिनइ नाहलु ए। —नळदवदंती रास

स. स्त्री. [सं. लालन, प्रा. लाडणी] २ पत्नी।

उ०—लाडीय कोटं कुसुमह माल लाडीय लोचन अति अणियाल। लाडीय नयणें काजल रेह, सहजिहि **लाडण** सोवन देह।
—सालिभद्र सूरि

वि.—लाडला, प्यारा।

उ०—बिणजारी ए क लोभण, गोद लियौ **लाडण** पूत, घर-घर बूझत वा फिरै, बिणजारी ए। —लो गी.

लाडणउ, लाडणौ–स. पु.—१ ऊट के तग के साथ लटकने वाला फूल के आकार का गुच्छा, २ औरतों के फेटिए (घाघरा) के नाड़े के साथ भी गुच्छा रहता है।

२ देखो 'लाडलौ' (रू. भे)

उ०—१ समुद्र खारउ, बाउल कटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ, जन बोलणउ, सुणह भसणउ ससउ नासणउ राणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव **लाडणउ**, सांड आडणउ, कुमित्र फाडणउ, दरजन दुस्ट, स्वजन सिस्ट, आगि ताती, धाहु राती। —व. स.

उ०—२ लाडेकोडे **लाडणौ**, लाडी परण्यौ जेह। विसमय पाम्यौ अति घणी, देखी कुंमरी तेह। —ढो. मा.

(स्त्री. लाडणी)

लाडणौ, लाडबौ–कि. स.—लाड करना, प्यार करना।

लाडबाई–स. स्त्री.—एक देवी का नाम।

लाडल–वि.—प्यारा, दुलारा।

उ०—१ भल खेलौ गनगौर सुदर गौरी, भल पूजौ गनगौर। हो जी थानै देवै **लाडल** पूत, अंतस प्यारी भल खेलौ गनगौर।
—लो. गी.

उ०—२ म्हारी **लाडली** बेटी थूं दुहाग री चिंता मत करज्यै।
—फुलवाड़ी

लाडलड़ौ—देखो 'लाडलौ' (रू. भे.)

उ०—१ अेक आवै गूगळ की वास सुगधी, कुण सुवागण, गणपत पूजियो। गणपत पूजै **लाडलड़ै** री माय सुवागण, ज्या घर विड़द ऊतावळी। —लो. गी.

उ० २ ढोली का चढ ढोलदै राणी गढ सरवरिये री पाळा जी। ज्या सुणै म्हारै बाप के, राणी **लाडलड़ो** ननसाळा जी।
—लो गी

उ०—३ घी भर दिवलौ बहू **लाडलड़ी** संजोवै, आयौ पितरां रौ लसकर च्यांनणौ। —लो गी.

(स्त्री. लाडलडेती, लाडलडी)

लाडळदे—देखो 'लाडलौ' (रू. भे)

उ०—मिठड़ा सा भोजन बहू बहवड़दै जिमावै, आयौ पितरां रौ लसकर जीमग्यौ। ठडड़ा सा पाणी बहू **लाडळदे** पियावै, आयौ पितरां रौ लसकर पी गयौ।

लाडलियौ देखो 'लाडलौ' (अल्पा., रू. भे.)

लाडलिवी–स. स्त्री.—एक प्रकार की लिपि।

लाडली–सं. स्त्री.—१ पत्नी, भार्या। (डि. को.)

उ०—राणी रतनागर तणी, आणी 'पतै' अनूप। लूणी सिरखी **लाडली**, भोगै 'जसवत' भूप। —चिमलदान रतनू

२ दुल्हिन, नव-वधु। (डिं. को.)

उ०—१ अेक आरतडै जस देई श्री बिनायक, **लाडली** री भूआ भैण नें। अेक जीभडली जस देई श्री बिनायक, लाडली री दादी माय नें। —लो. गी.

उ०—२ छठौ तौ बासौ फेरा जी बसियौ, फेरा मे बैठ्या लाडो **लाडली**। म्हारी लाडली को चीर बघज्यो, राईबर को बागो बीटळो। —लो. गी.

३ राधिका।

उ०—पुलिण रविसुता फहरावजे पीतपट, आवजे रासथळ व्रजनाथ आथ। कान कवार विहरि गळी व्रज कुंजरी, सुभ रळी कीजियै **लाडली** साथ। —बां. दा.

स्त्री. वि.—प्यारी, दुलारी।

लाडलौ–स. पु. (स्त्री लाडली) १ पति (डि. को)

२ दुल्हा। (डि. को.)

वि—प्यारा, प्रिय, दुलारा।

उ०—१ भूंडण आसू थांमती बोली—म्हारा **लाडला**, इण वात रौ सोच थें आछौ करियो। —फुलवाड़ी

उ०—२ मात कहै सुत सांभळौ, सयम दुक्कर अपार। तूं लीला रौ **लाडलौ**, सुख विलसौ संसार। —जयवाणी

उ०—३ मेवाड ढूंढाड़ जीऊ ही हाड़ौती माळवौ मोळौ, दौळा काळ चक्र सौ किणी न आवै दाय। झालै किसौ तौ विना पायाळ

जाती काळ झांपा, **लाडली** पंगुळी चांपा अगुळी लगाय ।
—सूरजमल मीसण

रू. भे.—लाडडौ, लाडणउ, लाडणौ, लाडिलउ, लाडिलौ ।

अल्पा.,—लाडेलड़ौ, लाडलियौ

मह.—लाडल, लाडेलौ ।

लाडवौ—देखो 'लाड्ड' (रू. भे.)

उ०—एकण नै तुस ढोकळा जी, पूरा पेट न थाय । एकण रै रहै **लाडवा** जी, वैठा भांणै के माय । —जयवाणी

लाडांणी—देखो 'लाडखानी'

उ०—जूटियौ ज्यूं रांम जोध चाडांणी त्रकूट ज्वाळा, घकै वज्र गिरां परा बाढांणी सधीठ । खूटिया माडांणी जाणै सांकळा मयंद खूनी, ऊठिया **लाडांणी** प्रळै काळ री अंगीठ । —सुखदांन कवियौ

लाडायौ—देखो 'लाडकवायौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाडाई)

लाडिकूं, लाडिकौ—देखो 'लाडकौ' (रू. भे.)

उ०—(सेजि) सूता कठिण लागती, हसपिंछ तलाई, डाभ पा (थरी) नि सुयि छि एह **लाडिका** भाई । —नळाख्यांन

लाडिलउ, लाडिलौ—देखो 'लाडलौ' (रू. भे.)

उ०—१ आहै सुंदर रूप मुहामणउ, सिवा देवी मात मल्हार । आहै नवयौवन भर आवियउ, **लाडिलउ** नेम कुमार । —स. कु.

उ०—२ तुम वीरा में बहनड़ी, **लाडिलौ** धणी सांभरी कौ राव । तु उड़ीसा को धणी, थारउ उलिगांणउ घरि बेगि पठाव ।
—बी. दे.

उ०—३ तिण इण परि कीघौ हास जौ, आवौ रै बाई वेस्या **लाडिली** रे लो । —वि. कु.

उ०—४ मीरां हरि की **लाडिली** जी, तुम मीरां के स्यांम । मीरां के प्रभु गिरधर नागर, दरसण द्यौ म्हारै रांम । सुरत निज नांम से लागी जी । —मीरां

उ०—५ हरिजन हरि को **लाडिलौ**, लीवलीण न दूजा लाड ।
—अनुभववांणी

(स्त्री. लाडिली)

लाडी—सं. स्त्री.—१ पत्नी, स्त्री । (डिं. को.)

उ०—१ थांरी **लाडी** सा कागद मेहलियौ, म्हांरै सैंजां रा सिण-गार घरै आवौ ओ जुंझारजी, झगड़ै किण विध जूंजिया ।
—लो. गी.

उ०—२ **लाडीजी** रा मुख रा बोलण री तरह, चलण री अनोखी देखी सा म्हैं । कांई चितवन रसराज नैणां री, उसी छै भूंहां री रेख । —रसीलैराज रा गीत

२ दुल्हिन, नव-वधु । (डिं. को.)

उ०—१ वर **लाडी** मोतियां बधाया, अति आणंद विनोद अति । मगळाचार सिवपुरी माहै, गूडी ऊछळी दैव गति ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ पुड़ करै पंखणी अपछर पूंखणौ । धार तोरण अणी बदै खग घोड़ । विकट **लाडी** बणी बीद बाकौ त्रिबक, 'मयंक' रौ परणजै बांधियौ मौड । —दुरसौ आढौ

३ राज्य के सामत व जागीरदार के घराने की सधवा के लिए आदर सूचक एव सम्बोधन सूचक शब्द ।

उ०—कुंवरजी **लाडी** जी साहिबा मुजरौ करवाइयौ छै ।
—कुंवरसी साखला री वात

४ पुत्री, बेटी ।

उ०—म्हारी **लाडी** सात भायां की भैण म्हारा पिवजी, कोई ऊभी सोवै आगणै जी । टोळा मांला हसती क्यूं ना हारचा म्हारा पीवजी, म्हारी राजकंवर क्यू हारिया जी । —लो. गी.

५ बच्चो के लिए उपयुक्त प्यार सूचक सम्बोधन । (बीकानेर)

वि.—प्यारी, दुलारी ।

उ०—प्रभणै पितु मात पूत मत पातरि, सुरनर नाग करै जसुसेव । लिखमी समी रुकमणी **लाडी**, वासुदेव सम सुत वसुदेव । —वेलि

लाडु, लाडू—सं. पु.—१ गेंद के आकार की गोलाकार मिठाई ।

उ०—१ पछै पिरीसिया खाजा जांणै देहरांना छाजा, चिहु सुणै साझा, गरमागरम ताजा । पीछै आया **लाडु**, तै किसी जात रा ?
—व. स.

उ०—२ बोदा रै आडा बहै, सोदा मिळनै संग । भूकोड़ा भंवता फिरै, **लाडू** खावै लंग । —ऊ. का.

मुहा. (क) मन रा लाड्डू खावणा=मन ही मन किसी लाभ की कल्पना करना । (ख) लाड्डू री कोर की खारी की मीठी=लाड्डू की कोनसी कोर खारी और कोनसी मीठी=सतान में से कौनसा प्रिय और कौनसा अप्रिय यानि बराबर ।

२ एक प्यार-सूचक सम्बोधन ।

उ०—लारली वेळा छुट्टी सूं रवाने व्हिया जद री बात है-पुराणौ काठौ पकड़ लियौ अर बट्ट करती कांवळी वदार नांखी । इण उपरांत ई हंसनै बोल्या—वौ रोज गावौ जिकौ चाकरी वाळौ गीत तौ एकर सुणायदौ नीं **लाडू** । आज तौ म्हूं सांचांणी चाकरी माथै वहीर व्हियौ हूं—

कालौड़ी तौ कांठळ राज ऊपड़ी, कांई मोटोड़ी छाटां रौ बरसै मेह,
भंवर भलै चढजो राज, चाकरी···

काई रैवौ तौ रांधू ए राज लापसी, काई चढौ तौ बाजरियौ खीच,
भंवर भल चढजौ राजा चाकरी···।

म्हारी आख्या में पांणी आयग्यौ ही तौ ई म्है मुळक ने कह्यौ—
गीत री छेली कड़ी तौ पूरी करता पधारौ—

एक टका री ए राज चाकरी, कांई लाख रुपियां री घर री नार,
भंवर भल चढजौ राज, चाकरी···।
—अमर चूनड़ी

रू. भे.—लड्डू, लाडवौ।
अल्पा.,—लाडूडौ।
मह.—लाडूव।

लाडूड़ौ—देखो 'लाडू' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ महला मे जाता गोरी रा सायबा, प्यारी धण पै **लाडूड़ा** कुण मारया म्हारा राज। —लो. गी

उ०—२ तीजौ मास उलरियौ ए जच्चा नीबूड़ै मन जाय। चौथौ मास उलरियौ ए जच्चा **लाडूड़ै** मन जाय ए। —लो. गी.

लाडूव—देखो 'लाडू' (मह., रू. भे.)

लाडेलड़ौ, लाडेलौ—देखो 'लाडलौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ सुणौ नणद **लाडेलड़ी**, अे रै भावज का बोल, साळां लिखौ ना साथीड़ा, हस हंस लो रै तमोळ, इण साथीड़ा रै आगै, द्यो गज मोतीड़ा रा हार। —लो. गी.

उ०—२ कंवर **लाडेलड़ै** रा बाबोजी भला छै, महंगै मुलाई ओ-राज। —लो. गी.

उ०—३ बूझत बूझत नगर पईठ्या, पोळ बतावौ **लाडेली** रै बाप की, ऊंची सी मैड़ी लाल किवाड़ी, केळ झबरकै राजीड़ा रै बारणै।
—लो. गी.

(स्त्री. लाडली, लाडिलड़ी)

लाडेसर-वि.—वह जो अधिक प्यार एव दुलार मिल जाने के कारण उद्दण्ड और नटखट हो गया हो।

उ०—बाळ धोळा हुयग्या, सगाई नी हुई। लोग लुक-लुक ठाली-भूली ठिठकारी बतावै। उलाड़ी, उभागी अर खुरड-पगी कैवै है। **लाडेसर**-बोछरडी, गतराड़ी तथा नुगरी। —दसदोख

लाडौ-सं. पु.—१ दुल्हा, बींद, वर। (डिं. को.)

उ०—१ मोटर धीरै धीरै हांक ड्राइवर बनड़ो छै नादांन क **लाडौ** छै नादान। —लो. गी.

उ०—२ मह मह सुगंध चिक्कस मळण, जीतण तप अहमइ जूई। जह मह बिबाह **लाडां** जुडण, हाडां घरधर गहमह हुई।
—वं. भा

२ पति, प्रियतम।

उ०—**लाडौ** लाडी जाय लडावण, रात्यू ओळग सारै। जन हरि-राम फिरै मन फीटी, ध्यान न हरि का धारै। —अनुभववांणी

३ मालिक, पति, स्वामी।

उ०—१ त्रूटै घाव तूंडं, भिड़ै रुंडमुड। लड़ै फौज **लाडा**, उडै लोह आडा। —सू प्र.

उ०—२ दहुंव पटां लागौ खग दानै, गोडै खळ करणां गरद। लख दळ मिल्या दळां चौ **लाडौ**, हाथी हाडौ मसत हद।
—महाराज छत्तरसिंघ रौ गीत

वि.—प्यारा, दुलारा।

उ०—बाळपणै पू ख खावती खावती धापती ई कोनी। आज पाछी हर आयगी। **लाडी** बेटी, थारी काली मासी नै थोड़ा पू ख तौ खवाड। —फुलवाड़ी

रू. भे.—लाडउ।

लाढ-सं. पु.—प्रासुक आहार से निर्वाह करने वाला।

लाणौ, लाबौ-क्रि. स.—१ कोई वस्तु अपने साथ लेकर आना।

उ०—इण भात रौ पहलड़ौ तोडै रौ धाती, सू दारू केसरिया गुलाबिया रा दाव दीजै छै, मुजरा कीजै छै। मुनहारां हुवै छै। मतवाळा हुयजै छै। उपरा उण भात रां सूळा रौ थाळ वीच में **लाया** छै। —रा सा. स.

२ प्रत्यक्ष करना, उपस्थित करना।

उ०—अहर अभोखण ढंकियउ, सो नयणें रग **लाय**। मारू पक्का अब ज्यू, झरइ ज लग्गै वाय। —ढो. मा.

३ उत्पन्न करना।

लाणहार, हारौ (हारी), लाणियौ—वि.।
लायोड़ौ—भू. का. कृ.।
लाईजणौ, लाईजबौ—कर्म वा.।
लाइणौ, लाइबौ, लावणौ, लावबौ, ल्याणौ, ल्याबौ, ल्यावणौ, ल्यावबौ—रू भे.।

लात-सं. स्त्री.—पाव, पैर।

२ पैर से किया जाने वाला आघात, प्रहार, पदाघात।

उ०—'रिणमाल' ऊठि नरसिंघ रुख, पय अहि **लात** पछाडिया। लोहाळ अठारहि पिंड लगा, पिसण अठारह पाडिया। —सू. प्र.

उ०—२ हिरण्या डागळै री छत माथै **लातै** मारचां वगी जावै, लारली वातां काळजौ बाळण नै लारै लागी आवै। —दसदोख

उ०—३ आ वात माळी कही। ताहरा माळीं नूं सातल चाबखे वायौ। **लात** सो भांज किमाड़ नै माहै वाग में पैठौ। माळी तौ पाधरौ राव सूजै कन्है पुकारू गयौ। —सातल जोधावत री वात

क्रि. प्र.—पडणी, मारणी, लगाणी, वाहणी।

मुहा.—१ लात खाणी=मार खाना, पिटना।

२ लात मारणी=(क) पशुओं का दूध दुहते समय पैर से लात मार कर दूर हट जाना।
(ख) तुच्छ समझ कर उपेक्षा या अवहेलना करना।

ज्यू—नौकरी रै लात मारणी, सपत्ति रै लात मारणी।

३ लातां रा भूत बाता सूं नीं मानणा=विनम्र व्यवहार की अपेक्षा न करना।

रू. भे.—लत।

लातर–सं. स्त्री.—फटकार।

उ०—रांमा अभिरांमा कांमातुर रोवै, हड़मल हुड़दंगी सेजा में सोवै। ललनां **लातरियां** खातरियां खारी, भडवी भगतणियां पातरियां प्यारी। —ऊ. का.

लातरणौ–वि. (स्त्री. लातरणी) १ थकने वाला, हैरान होने वाला।

२ पथ भ्रष्ट होने वाला।

३ शर्मिदा होने वाला।

४ हारने वाला।

५ फटकारने वाला।

लातरणौ, लातरबौ–क्रि. अ.—१ थकना, हैरान होना।

उ०—१ तो पिण स्वांमीजी रात्रि में बखांण बांचै जठै वाबेचा ढोलक बजावै। गावै। बखांण में विघ्न पाड़ै। जद भाया कह्यौ–महाराज! दूजी जायगां उतरौ। स्वांमीजी बोल्या–खेतसीजी नव दिक्षित है सो देखां परीखह खमवा किसायक सैंठा है। कितरायक दिना वेदो कियौ पछै वाबेछा लातर गया। —भि. द्र.

उ०—२ फेर स्वांमीजी पूछ्यौ—साधु आहार करै, सो चोखौ के खोटौ? जीवणजी बोल्यौ—साधु आहार करै, ते खोटौ कांम, त्यागै ते चोखौ कांम। दिशां आदि जातां मिळै जद स्वामीजी पूछै जीवनजी! खोटौ कांम कीधौ के करणौ है। इम बार बार पूछतां **लातरियौ**। —भि. द्र.

२ पथ-भ्रष्ट होना।

उ०—थिर नृप हिंदुस्थांन, **लातरग्या** मग लोभ-लग। माता भूमि मांन, पूजै रांण प्रतापसी। —दुरसौ आढौ

३ शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।

उ०—१ किण रो इ बेटौ मारचौ, किण री भाई मारचौ, किण री ही बाप मारचौ। सहर में भयंकार मंडचौ। नगरी नां लोक साहूकार नें निंदवा लागा तिण रै घरै जाय रोवा लागा—रै पापी थारै धन घणौ हूंतौ तौ कूवा में क्यूं नहीं न्हाख्यौ। चोर छुडायनै म्हारा मनुस्य मराया। साहूकार **लातरियौ**। सहर छोडनै दूजै गाम जाय वस्यौ। —भि. द्र.

४ हारना।

५ फटकारना।

लातरणहार, हारौ (हारी), **लातरणियौ**—वि०।

लातरिओड़ौ, लातरियोड़ौ, लातरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

लातरीजणौ, लातरीजबौ—भाव वा०।

लातरियोड़ौ–भू. का. कृ. (स्त्री. लातरियोड़ी) १ हैरान हुवा हुआ, २ पथ-भ्रष्ट हुवा हुआ. ३ शर्मिदा हुवा हुआ, लज्जित हुवा हुआ. ४ हारा हुआ. ५ फटकारा हुआ।

लातरौ–स. पु, (ब. व. लातरा) हिंदवानी या ककड़ी का सूखा छिलका।

लाद–सं. स्त्री.—१ किसी पदार्थ का वह बोझा जो पशु की पीठ पर लद कर ले जाता है।

२ ऊंट पर भूणा के बधे हुए चार बोरों का समूह या घास के पुआलो का गट्ठर।

३ चमड़े का बना बड़ा जल पात्र।

उ० बूंठां बीतोड़ा जाभरकै जाता, लावां बिसनोई ऊंटां पर लाता। ढाचा खाचा सूं कळश जळ ढारा, जोगी जाभै रा घुरता जमवारा। —ऊ. का.

४ देखो 'लीद' (रू. भे.)

अल्पा. रू. भे.—लादड़ी।

लादक–सं. स्त्री.—सवारी के उपयोगी एवं बोझा लादे जाने वाले पशु की पीठ।

उ०—उर ढाल अैसा, कूकड़ कध तैसा। आंख पांणी मोती तवा लिलाड का बेठा तवा, जळ अंजळ पीवै, कनोती लोय दीवै। मगर **लादक** अछी, छोटी पड़छी। पूठ बाथां न मावै, पूछी चबर दावै। फीचां धनख जैसी, काछ नारगी तैसी। अैसा घोड़े राव चाकरा रै हाथां में काढणा। —रा. सा. स.

वि.—लादने या सवारी के उपयुक्त।

लादड़ी—देखो 'लाद' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सिर सेळां ज्यूं सूळ अमीरां दोरी डाढी, गरीबां रै ना गडै पाव जूत्यां किन वाढी। भीठकिया भरणाय घणैरी उंबार घालै, तीजै दिन भड़काय **लादड़ी** भर लै हालै। —दसदेव

लादणभार–सं. पु.— गधा, खर। (अ. मा.)

लादणौ, लादबौ–क्रि. स.—१ किसी वाहन या पशु विशेष की पीठ को भार या वजन से युक्त करना।

उ०—१ ऊंट भया बह बोज उठाया, परदेसां कूं **लाद** पठाया। चांदी पडै कीड़ा बोह खावै, कडवा टाचै ज्यूं दुख पावै।
—ऊदोजी नैण

उ०—२ वाणियौ तौ सुय रह्यौ। सूतां भाख फाटी। तद उठीया। तणै सारां सु पेंहली रळौ उठि नै पौठीयो एकलै हीज **लादीयौ**। पछै वांणीयां ही लादीयौ। —रळै गढवै री वात

२ भारी वस्तुओं का वाहनो, पशुओं आदि पर रखना, चढाना या भरना ।

उ०—थेह पुरांणा छोडि अयांणा, बाळदि लादि सवेरियां । जम के आए पकड़ि चलाए, बारी पुगी तेरिया । —रैदास धत्तरवाळ

३ किसी वस्तु से परिपूरित या पूर्ण युक्त करना, आच्छादित करना ।

ज्यू—गैणा सू लादणौ ।

४ किसी की इच्छा के विपरीत अधिक कार्य या दायित्व से बोझिल करना ।

५ कुश्ती मे विपक्षी को अपनी पीठ पर उठा लेना ।

लादणहार, हारौ (हारी), **लादणियौ**—वि० ।

लादिओड़ौ, लादियोड़ौ, लादचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लादीजणौ, लादीजबौ—कर्म वा० ।

लादियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी वाहन या पशु विशेष की पीठ को भार या वजन से युक्त किया हुआ. २ भारी वस्तुओं का वाहनो, पशुओं आदि पर रखा हुआ, चढाया हुआ, भरा हुआ ३ किसी वस्तु से परिपूरित या पूर्ण युक्त किया, आच्छादित किया हुआ. ४ किसी इच्छा के विपरीत अधिक कार्य या दायित्व से बोझिल किया हुआ. ५ कुश्ती लड़ते समय विपक्षी को अपनी पीठ पर उठाया हुआ ।

(स्त्री. लादियोडी)

लादियौ-सं. पु —१ घोड़ा-घोड़ी के मल (लीद) त्यागने का अवयव । (मेवाड़)

२ देखो 'लादौ' (अल्पा. रू. भे.)

रू. भे.—लाद्यौ ।

लादी-सं. स्त्री.—१ चौड़ा-चौकोर पत्थर ।

२ लकड़ी, घास आदि का छोटा गट्ठर ।

उ०—दळिया रांधे दळबळिया हळबांणी । बेचण बीदणियां ईंधणियां आंणी । लादी भारी नै ओळावौ लेती, दुरबख बारी नैं बोळावौ देती । —ऊ का.

लादौ-सं. पु.—१ ऊट, गधा या सिर आदि पर विक्रयार्थ लाया जाने वाला लकडियों (ईंधन) का गट्ठर ।

उ०—१ काती भळै दांती फेरी, लासू वन रा वाडता । झाड़ जुगत लादां लदावै, ढिगला टोकी काढता । —दसदेव

उ०—२ लादौ नाखीजग्यौ । डोकरी पईसा देवण लागी । इत्तै-ई में दो लकडियां न्यारी पडी दीसी । गरज र' बोली—अे लकड़िया को नाखै नी काई ? —वरसगाठ

२ वजन, बोझ ।

३ ओस, शबनम ।

क्रि. प्र.—नाखणौ, पड़णौ, भरणौ, लदणौ, लादणौ

अल्पा.,—लादियौ

लाद्यौ—देखो 'लादियौ' (रू. भे.)

लाधणौ, लाधबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हीलाकर हिणकै ईळा हुय आधा, लीला भगवत री लीला नही लाधा । ढाळां ढाळांतर सातर ढळियोड़ा । बैठा नीरांतर आंतर बळियोडा । —ऊ. का.

उ०—२ सार तरस्सै सूरमां, सारा साहसवत । सुजड़ै लाधै साम छळ, वाधै तेज अनंत । —रा. रू.

उ०—३ पधरावि त्रिया वामै प्रभणावै, वाच परस्पर जथा विधि । लाधी वेळा मागी लाधी, निगम पाठकै नवै निधि । —वेलि

उ०—४ च्यारूं जणा अेकण सागै घोड़ा सूं हेटै कूदग्या जाणै हीरा मोत्यां री कोई अमोलक खजांनो लाधग्यौ व्है । —फुलवाड़ी

उ०—५ झींटा बखेरचां, दातां माथै अलेवण, चढाया, मांची माथै सूती उठती गुलाब री मां अंगाड़ी तोड़ती लाधी । —दसदोख

उ०—६ बंभण मिसि वंदै हेतु सु बीजौ, कही स्रवणि संभळी कथ । लिखमी आप नमै पाइ लागी, अचरिज कौ लाधै अरथ । —वेलि

लाधणहार, हारौ (हारी), **लाधणियौ**—वि० ।

लाधिओडौ, लाधियोड़ौ, लाध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लाधीजणौ, लाधीजबौ—भाव वा० ।

लाधियोड़ौ—देखो 'लाभियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाधियोडी)

लापड़—देखो 'लापड़ौ' (मह. रू. भे.)

उ०—बूटी लापड़ गीचाबर बिन बूटी, खांडी बांडी सब खावण बिन खूटी । बैड़ां ब्यायोड़ी खैड़ा मे खासै । कोमळ काछड़िया बाछड़िया बासै । —ऊ. का.

लापड़कनौ-सं. पु. (स्त्री. लापड़कनी) लबे कान वाला पशु ।

लापड़ियौ—देखो 'लापड़ौ' (अल्पा, रू. भे.)

लापड़ौ-वि. (स्त्री. लापड़ी) बड़ा और लम्बा (कान)

उ०—तठा उपरात करि नै राजांन सिलामति काबळी कूतरा. लाहोरी कूतरा, विलाती कूतरा लोळमी, लाळमी जीभ रा, वळि मे पूछ रा, लापड़ै कान रा, दाड़मी दत रा, सिघ रा हथ रा, केहरी कंध रा······। —रा. सा. सं.

स. पु —१ बड़े और लंबे कानों वाला पशु ।

२ मोट को पानी मे डुबाने के लिए उस पर बांधे हुए पत्थर के

नीचे लगा हुआ चमड़े का टुकड़ा।
अल्पा.,—लापड़ियौ
मह.,—लापड़

लापता—वि. [अ. ला.+रा. प्र. पता] १ वह जिसका पता न हो, खोया हुआ।
२ जान-बूझ कर कहीं छिपा हुआ, गायब।
उ०—जे किणी घरगोड़िया रजपूत रै सागै उण रौ ब्याव व्हियौ व्हैतौ तौ नी वा इत्ता दिन मंसा परवांणा लापतै रै पाती अर न इण भांत लापतै रह्यां पछै पाछी गाव में पग धर सकती। —फुलवाडी
३ पत्र आदि जिस पर पता न लिखा हो।

लापर—देखो 'लोफर' (रू. भे.)
उ०—सीकरि की गादी न्याय नीति राज कीनां। झूठा चोर लापर नै प्रांण दंड दीनां। —शि. वं.

लापरपण, लापरपणौ—देखो 'लोफरपणौ' (रू भे.)
उ०—आखर बावन करै अेकठा, तै कागळ लिख कीना त्यार। लापरपणौ कियौ तौ लड़सूं, चिड़सूं दियू न कोडी च्यार। —बा. दा ख्यात

लापरवा—वि. [अ. ला+फा. परवाह] १ जिसे किसी बात की चिन्ता या फिक्र न हो, निश्चिन्त।
२ असावधान।
रू. भे.—लापरवाह।

लापरवाई—सं. स्त्री. [अ. ला+फा. परवाह+रा. प्र. ई.] निश्चिन्तता, बेफिक्री।
उ०—१ भांबण रा तणियोड़ा लिलाड़ में तिरछा सळ देख नै सेठ समझग्या के निसांणौ ठांणै लागौ है। वै झट मांचा सूं ऊभा व्हिया। लापरवाई सूं बोल्या—नीं मांनै तौ बात कीं कोनी अर मांनै तौ घणौ ई है। —फुलवाड़ी
२ असावधानी।
रू. भे.—लापरवाही।

लापरवाह—देखो 'लापरवा' (रू. भे.)

लापरवाही—देखो 'लापरवाई' (रू. भे.)

लापळौ देखो 'लांप' (रू. भे)

लापसड़ी—देखो 'लापसी' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ नणदळ-बाई रे लापसड़ी रंधाय, ओ घण वारी रे हूंजा, देवरजी छिनगाळा रे घेवर छांटमा, ओ राज। —लो. गी.

लापसी, लापी, लाफसी—सं. स्त्री. [सं. लप्सिका] गेहूँ के दलिये का बनाया हुआ एक प्रकार का मीठा व्यंजन।
उ०—१ छट्ठै प्रहरै दिवस कै, हुई ज जीमणवार। मन चावळ तन लापसी, नैण ज घी की धार। —ढो. मा.
उ०—२ चंपला की डार सूवा, पींजरो बंधाऊं रे, घ्रत घेवर सोलमां, लापसी परसाऊं रे। —मीरां
उ०—३ बडार रै नातै गांव नूंत्यौ, सोनजी रात सुख री नींद सूत्यौ। लाफसी र' घी रौ धूवौ नूंतौ कर दियौ है। —दसदोख
रू. भे.—लपसी
अल्पा.,—लापसडी

लाब—देखो 'लाभ' (रू. भे.)

लाबाळी—देखो 'लबाळी' (रू. भे.)

लाभंकर—देखो 'लाभकर' (रू. भे.)
उ०—तिथ तेरस पख तरणि, वार सुभ करण चंद्र वर। एकादस ग्रह अरक, लगन कन्या लाभंकर। —रा रू.

लाभ—स. पु. [सं लभ्] १ प्राप्ति।
२ हित।
उ०—लिया नांम मुख लाभ, व्याधि दुख आधि न व्यापै। कुळ सज्जण थिर करै, अरी बडपण ऊथापै। —रा. रू.
३ सुअवसर।
उ०—'चतुर' कहै 'रामग' रौ, अहूँ भुजा बळ आभ। मरण न पायौ धार मुंह, तिकौ गमायौ लाभ। —रा. रू.
४ फल, नतीजा।
५ उपकार, भलाई।
६ व्याज का धन।
७ व्यापार में होने वाला मुनाफा।
८ आनन्द, मौज।
उ०—दुसमणां लाभ दांनां दहण, खुली न कांनां खिड़कियां। नर परम धरम बूझै नहीं, हुकौ सूझै हिड़कियां। —ऊ. का.
९ सात प्रकार के चौघड़िये में से चौथा चौघड़िया, जो शुभ माना जाता है।
१० फायदा, मुनाफा।
रू भे.—लाब, लाह, लाहु, लाहौ।

लाभकर, लाभकारक, लाभकारी—वि.—१ वह जिससे लाभ होता हो।
२ औषध आदि क्षेत्र में गुण करने वाला, फायदेमन्द।
रू. भे.—लाभकर

लाभणौ, लाभबौ—क्रि. स. [सं. लब्धं] १ प्राप्त करना, पाना, मिलना।
उ०—१ ढोला, सायधण मांणजे, झीणी पासळियांह। कइं लाभै हर पूजियां, हेमाळै गळियांह। —ढो. मा.
उ०—२ हरीया आधी लाभतां, सारी सुरित न धारि। लूखी सूखी खाय के, सांई नांव संभारि। —अनुभववांणी

उ०—३ मांग्या लाभै जव चणा, मांगी लभै जवार। माग्या साजन किम मिळै, गहली गूढ गिंवार। —अज्ञात

२ जानना, पहचानना।

३ प्राप्त होना।

४ अचानक सामना होने पर किसी विशिष्ट स्थिति मे मिलना या देखना।

क्रि. अ.—५ सूझना, उपजना।

६ लाभ होना, फायदा होना।

लाभणहार, हारौ (हारी), लाभणियौ—वि.।

लाभिओड़ौ, लाभियोड़ौ, लाभ्योड़ौ—भू. का कृ.।

लाभीजणौ, लाभीजबौ—कर्म वा./भाव वा.।

लद्धणौ, लद्धबौ, लधणौ, लधबौ, लध्धणौ, लध्धबौ, लब्भणौ, लब्भबौ, लभणौ, लभबौ, लम्भणौ, लम्भबौ, लाधणौ, लाधबौ, लाहणौ, लाहबौ—रू. भे.।

लाभस्थान-सं. पु. यौ. [स. लभ्+स्थान] जन्मकुंडली में लग्न से ग्यारहवा स्थान। (फलित ज्योतिष)

लाभांतराय-स. पु. [स.] जैन मतानुसार एक अन्तराय कर्म जिसके उदय होने से मनुष्य के लाभ में विघ्न पड़ता है।

लाभियोड़ौ-भू का. कृ (स्त्री. लाभियोड़ी) १ प्राप्त किया हुआ, पाया हुआ, मिला हुआ. २ जाना हुआ, पहचाना हुआ. ३ प्राप्त हुवा हुआ ४ अचानक सामना होने पर किसी विशिष्ट स्थिति मे मिला हुआ या देखा हुआ. ५ सूझा हुआ, उपजा हुआ ६ लाभ हुवा हुआ, फायदा हुवा हुआ।

लाय-सं. स्त्री. [स. अलात, प्रा. अलाट] १ दावानल, आग, अग्नि।

उ०—१ उण बेळा बळ अग्गळा, दळ राठौड़ दुबाह। मेघ थया सीसोदिया, लगी लाय अणथाह। —रा. रू.

उ०—२ अजा रै जगाई जका सवाई सवाई ऊठै, लाख दळां बिरौळै बुझायै न ज्वाळा लाय। कूरमां सीसोधां हाडां चहुवांणां सारा केता, घजां नेजा गजां सूधी ले गयौ धकाय। —राजाधिराज बखतसिंघ रौ गीत

क्रि. प्र.—लागणी

मुहा.—लाय लागणी=१ जलना, भस्म होना, अग्नि काड होना। २ नष्ट होना। ३ जल्दी होना। (मचना) ३ कुछ बिगाड़ या नष्ट होना।

२ लपट, ज्वाला।

३ जलने की क्रिया या भाव।

४ प्रचण्ड गर्मी।

उ०—आज पेमजी रै माथै सूं मुरळी दलाल री मांड्योड़ी मूळी हाळी मोवणी सीबी साफ हुवै, नीकळै है। जांणै आ मूळी तौ वसंत पांच्यूं री परमळ नी, उन्हाळै री लाय है। —दसदोख

उ०—२ जीवणदाता बादल्या, थां सू जीवण पाय। भल लूआं बाजौ किती, मुरधर सहसी लाय। —लू

रू. भे.—लाइ, लाई।

लायक-वि. [अ. लाइक] १ सुयोग्य।

उ०—"मोटा तौ थे करसौ जद हुसा, हणै तौ (निसासा नाख'र) रुई सूं ई हळका अ'र धूड़ सूं ई हीण हा।" "कुण कैवै है? था जिसा लायक सिरदार किता'क है?" —वरसगाठ

२ उचित, ठीक।

३ गुणवान, गुणी।

४ समर्थ।

उ०—डाढा तांभाडै केरडिया ढीकै, रोटी पाणी नै टीगरिया रीकै। चित पर घोरारव आकर बरचावै, घर घर नर नायक लायक घबरावै। —ऊ. का.

५ भला, सीधा।

स. पु —मत्री। (ना डि. को.)

रू भे.—लाइक, लायक्क

लायकी-स. स्त्री. [अ. लायक+रा. प्र. ई.] लायक होने का भाव या अवस्था, योग्यता।

उ०—आ थारी लायकी है। बाकी कणीई म्हांरै चोक दीसिया पधारौ, पछै देखौ म्हारा भाई काई कैवै है? —वरसगांठ

लायक्क—देखो 'लायक' (रू. भे)

उ०—डूंगरपुर बासवाड़ाह देस, पाटवी रांण राखीह पेस। लायक्क लूणपुर ग्रह लगाण, राय कुवर दीध छालक्क राण। —वि. स.

लायझळ-स. स्त्री. यौ. [स. अलात+ज्वाला] आग की लपट, ज्वाला।

लायण – देखो 'लाण' (रू. भे.)

उ०—लिखमी घर मे दीया संजोया। पूजन सारू चावळ कूंकूं काढिया। और तौ लायण कनै हो-ई कांई। —वरसगाठ

लायणौ—देखो 'लाइणौ' (रू. भे.)

लायपाय-स. स्त्री.—१ चिन्ता, घबराहट बेचैनी।

उ०—अेक पखवाडा ताईं गाव रा कोई समचार नी आया तौ ठाकरसा रै ई लायपाय लागी। इत्ता दिन तौ दूजै तीजै समंचारा रै साथै आदमी ई आवता पण आं पंद्रै दिनां में तौ कोई खबर ई नीं ली। —फुलवाड़ी

२ प्राप्ति की लालसा।

उ०—दुनिया रौ धन दुनियां रै पाखती ई रैवण दौ, बिरथा लायपाय में की आणी जाणी नी। —फुलवाड़ी

लायपूळौ-वि.—अति क्रोध-पूर्ण, उग्र।

लायल–वि. [अ.] स्वामिभक्त, राजभक्त ।

लायलटी–सं. स्त्री. [अं.] राजभक्ति, स्वामिभक्ति ।

लायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कोई वस्तु अपने साथ लेकर आया हुआ. २ प्रत्यक्ष किया हुआ, समक्ष उपस्थित किया हुआ. ३ उत्पन्न किया हुआ ।
(स्त्री. लायोड़ी)

ला'यौ—देखो 'ल्हासियौ' (रू. भे.)

लार–सं. पु.—एक प्रकार की लाग विशेष जो किसान से खलिहान में जागीरदार का हिस्सा ले लिए जाने के बाद ली जाती थी।
क्रि. वि. [सं. लहर] १ पीछे ।

उ०—१ लघु लघु सर कर धनक लघु, लघु वय बाळक लार । रामंति सरजू तटि रमैं, कीळा राजकुमार । —सू. प्र.

उ०—२ कंवर रै साथ 'रतना' री निजर इण भांत बहै है, भागीरथ रै लार गगधार बहै जिण भांत उपमा लहै है । बळै कितरी हेक दूर दूरबीण लगाई, सारां हीं बधती सनेह री सगाई । —र. हमीर

मुहा.—लार छूटणी=सम्बन्ध टूटना ।
२ साथ, संग । (डिं. को.)

उ०—जात पांत कुल कुटम कबीलौ, साधु ही परवार है । मीरां के प्रभु गिरधरनागर, रमस्यां साधां री लार है । —मीरां

३ लिए, कारण ।

लारड–स. पु. [अ. लार्ड] १ स्वामी, मालिक ।
२ अधिकारी, अफसर ।
३ इंगलैण्ड के जागीरदारों या रईसों को सम्राट द्वारा दी जाने वाली एक आदर-सूचक उपाधि ।

लारणौ–सं. पु.—ग्राम-युवतियों के लम्बा अधोवस्त्र पहनने पर उसके ऊपर कसने की लम्बी डोरी ।

लारलड़ौ—देखो 'लारलौ' (रू. भे.)

उ०—ज्यूं लारलड़ा वह गया, वरतमांण वह ज्याय । काळ कळत में कळ रह्या, ठीक न विसना ठाय । —अज्ञात
(स्त्री. लारलड़ी)

लारलेवार—देखो 'लारवार' (रू. भे.)

लारलौ–वि. (स्त्री. लारली) पीछे का, पिछला ।

उ०—१ देखो विगड़ी देह, डोळ बिगड़गौ देखौ । बिगड़ गई सब बात, लारलौ ले कुण लेखौ । —ऊ. का.

उ०—२ कदै ही इसौ जमांनौ हो जको लुगाई नातै ल्यांवता जद घर हाळा तो पै'लीपोत मूंडौ ही नीं देखता । थावर री रात नै चोर दाई घरा लेय'र बड़ता अर घर हाळा मिनख घर छोड'र बारै निकळ जाता । ऊंधी चाकी फिरांवता, लारली गळी ल्यांवता अर ब्याह-सावा मे अळगी राखता । —दसदोख

२ बीता हुआ, विगत ।

उ०—१ हिरण्यां डागळै री छत माथै लात मारचा वगी जावै, लारली बातां काळजौ बाळण नै लारै लागी आवै है । —दसदोख

उ०—२ कीरै सारै—माया तेरा तीन नाव, फरसियो, फरसौ अर फरसराम । लारला दिन भूलग्यौ । —दसदोख

उ०—३ अबै कीकर सळटणी आवै । कुण जाणै कुण दाव-घाव करचौ । मेड़ी तौ लारला चार बरसां सू भिळै ? इण नै नी अगेजिया तौ हवेली री लाज ई भिळ जावैला । —फुलवाडी

३ बाद वाला, बाद का ।

उ०—१ इसौ विचार राजा कनकरथ नै अेकात में ले पूछियौ—महाराज सांच कहौ, नेठ तौ सांच कह्यां तपावस होसी । लारली सरब बात कहौ । —पलक दरियाव री बात

४ बचा हुआ, अवशिष्ठ ।

उ०—आं लुगायां रै घणा नी तौ छ हांचळ तौ बणावणा हा । दो चूंघै जितै च्यांरू ई लारला चूं चूं करै । —फुलवाड़ी

५ पहले वाला, पूर्व का ।

उ०—१ लारलां खुटाई जैड़ी तौ म्है लुगायां होय नै ई नी खुटावा । —फुलवाडी

उ०—२ कहै कथ नूं दुहुं कुळ उजली कांमणी, गजां धजां फौजा लोह लागै । नीसरै तिके नर तिका लानतौ दियै । लारला वंस ने गाळ लागै । —वीर स्त्री रौ गीत

६ पूर्व जन्म का ।

उ०—१ धूळ री कमाई खावणिया अै लोग भाठा नै पूजै, मिनख नै धुरकारै, राजा नै परमेस्वर जांणै अर खुदोखुद नै लारलै करमां रौ फळ मांनै । —फुलवाड़ी

उ०—२ पण कोई आगै होय मरणा वास्तै वकारै ई तौ ! अैड़ी मौत सूं लारलौ जमारौ ई सारथक व्है । —फुलवाडी

७ नीचे का, निचला ।

उ०—चौधरी रै घरै मोटै मूंज रै मांचै माथै थाणेदार हुकमी-दीनजी होकौ डरडकाय रैया हा । लांबौ डील, बटवां बाळ, रंग तौ तवै रै लारलै पींदै नै ही लारै छोड रैयौ है । —दसदोख

८ अतिरिक्त, अलावा ।

ज्यूं—म्हारै साथै चालौ जिकी बात करौ, लारली बात जावण दो ।
अल्पा.—लारलड़ौ

लारवाळ, लारवाळियौ–सं. पु.—विधवा स्त्री का वह लड़का या लड़की जिसे वह पुर्नविवाह करने पर अपने साथ नए पति के घर ले जाती है ।

रू. भे.—लाडवाड़, लडवाडियौ, लारलेवाळ ।

लारां, लारा, लारि, लारियां, लारी, लारीयां—देखो 'लारै' (रू. भे)

उ०—१ कलह बिज ता दिन बह्यौ, **लारां** 'धूंकल' लाय । आणि मिल्यौ 'जगतेस' सूं, यम जुध करिय उपाय । —ला. रा.

उ०—२ हरीय मन हसती भया, जगत कूकरा **लारि** । हरिजन कै भावै नही, भौक रह्या भख मारि । —अनुभववाणी

उ०—३ हरिया केता वहि गया, कीया करम कै **लारि** । धिल धधै धन बीच मैं, ध्यान सधै नही धारि । —अनुभववाणी

उ०—४ वाणी लिखि गया साध बिचारौ, मुकति हुवै मन मारियां । मारण मे निति ही भखमारौ, लज मारौ कुळ **लारियां** । —ऊ. का.

उ०—५ लिया नव लाख थड सुचारण **लारियां**, खड्ग ऊभारिया खळा खावै । बीदगा विकट दुख पड़ै जिण बारिया, धावळी-धारिया तुरत धावै । —ठाकुर जुंझारसिंह मेड़तियौ

उ०—६ भोजन करणो भूल खेले, बूढा **लारी** खडभड़ै, हेठै हाळौ चालौ भणौ, रुळा रुखाळी रड़भडै । —दसदेव

उ०—७ बात विसटाळ फिरिया जिकण वारीयां, भटी कह 'दांन' 'सादुळ' छक भारीयां । धणी सुपां सरण मरण संक-धारीयां, लाज मन धरै 'जेसाण' गढ **लारीयां** । —जसजी आढौ

लारै—क्रि. वि.—पीछे ।

उ०—१ अम्ह विसटाळै आवियौ, लगि ज्या हिज **लारै** । कटक सुणि अगद कहै, पित तुझ प्रकारे । —सू प्र.

उ०—२ सूकी सुदराणी झाड़ां रै सारै,लाधी बिदरांणी बाड़ां रै **लारै** । सद व्रत करतोडी बरणास्रम सेवा, काढे मरतोड़ी रेवा तट केवा । —ऊ. का.

उ०—३ अै साच बोल जाता तौ पछै धांदौ ई कांई बात रौ हो । व्हा, व्हैगो इण रै हाथां न्याव ? अैड़ी न्याव निवेड़न जोग अकल व्हैती तौ तडौ लिया लरड़ियां रै **लारै** ढरर-ढरर करतौ क्यू रबड़तौ । —फुलवाड़ी

२ बाद मे ।

उ०—पग पाछा पडै पूरी ललौ-चम्पौ राखै । नही तो **लारै** सू लाबी पैरायचै । —दसदोख

३ मरणोपरान्त, मृत्योपरान्त ।

उ०—१ **लारै** एक लिछियै नाव रौ न्हानौ पोतौ अर बीरी विधवा मा रै'यी । —दसदोख

४ कुछ कर लेने के बाद ।

उ०—**लारै** राख्योडा कामा खातर मरती विरिया रावण ही मोकळौ पिछतावौ करतौ मरचौ । —दसदोख

५ बढ़ कर ।

उ०—सथराई अर खांमचीपणौ तौ मांसी सू **लारै** हो । —फुलवाड़ी

६ साथ मे ।

उ०—१ बांधी मूठी बापडा ले जासी की **लार** । क्रपण नै निसदिन कहै, ओ नाहर परमार । —भोपाळदान सादू

उ०—२ 'गजन' बडौ कै गेडंबर तद मुझ हुकम दियौ सुरताण । लसकर खच्चर दौ **लारै** आज अटक पर फेरू आण । —मालौ सादू

मुहा.—लारै आंणौ=पत्नी रूप होना ।
लारै लागणौ=पीछे पड़ना, आश्रित होना ।

रू. भे.—लरां, लारा, लारा, लारि, लारिया, लारी, लारीया, लारोवरि, लारोवरी, लारो, लारचा, लाहरा लाहरै, लैर, लैरां, लैरिया, लैरचां ।

लारै-लारै—क्रि. वि.—पीछे-पीछे ।

उ०—नाई रै **लारै लारै** सगळा लोग केई वेळा अंदाता री जै जै कार बोली । अंदाता रै माथै नसा रौ तौ जांणै भूत ई सवार व्हैगौ । —फुलवाड़ी

रू. भे.—लारोलार, लारोलारि

लारोलार, लारोलारि—क्रि वि.—१ एक के बाद एक, क्रमशः ।

उ०—१ सिलह संदूक सलीतै बड्डं, लदं ऊंट चलाए गिड्डं । **लारोलार** कतारा हल्ली, काती जाण कुरझा चल्ली । —गु. रू. बं.

उ०—२ हरीया जुग लोपै नही, कुळ अपने की कार । पूंछड बाध्या ऊठ ज्यूं, **लारोलारि** कतार । —अनुभववाणी

२ निरन्तर ।

३ देखो 'लारै लारै' (रू. भे.)

उ०—**लारोलार** लगावचौ जी, छेटि म राखो काय । केळवणी करचौ इसी जी, जिम बाहिर न दीखाय । —प. च. चौ.

लारोवरि, लारोवरी—देखो 'लारै' (रू. भे)

उ०—**लारोवरि** अस चित्राम कि लिखिया, निहखरता नरवरै नर । माखण चोरी न हुवै माहब, महियारी न हुवै महर । —वेलि

लारौ—सं. पु.—१ पीछे पडने या पीछा करने की क्रिया या भाव ।

२ पीछा ।

उ०—१ रोणो-ई है तौ अेक दिन भेळो-ई, मनै रोय-धोय' र **लारौ** छोडौ । —वरसगांठ

उ०—२ खासी भांय तांई **लारौ** करचौ । पण कुचमादी रौ की पतौ नी पड़चौ । —फुलवाड़ी

३ पृष्ठ भाग, पीछे का भाग ।

४ देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—जलंम सुधारौ जंम वहै लारौ छाडौ सकळ विकारा । ओ संसार चिहर की बाजी, देखौ सोचि विचारा । —ऊदौजी नैण

लारधां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—ए जी सरदार थारी घण लारधां लागी आवै मेरी जान, उमराव जी ओ रसिया । —लो. गी.

लालंखर, लालंबर-वि.—रक्तवर्ण युक्त, पूरा लाल ।

उ०—कंवर रै पलका पीक, अधरां काजळ री लीक । आळस अंग, भाल अलता रौ रंग । लालखर नैण, चळबिचळ बैण । हियै गडियौ हार, तुररा रा टूटा तार । —र. हमीर

उ०—२ बोळ करै असमर रत बोहां, लालंबर हुय पूरां लोहां । सत्र विहड खुरसांण सकाजा, मुजरौ करूं एम महाराजा । —सू. प्र.

उ०—३ लालंबर नैण अनै मुख लाल, उपै वप तेज समुद्र उकाळ । —सू. प्र.

सं. पु.—सूरज, सूर्य ।

(मि. रातंबर)

लाळ-सं. स्त्री. [सं. लाला] १ पतला तार जैसा मुह में से निकलने वाला थूक । (डि. को.)

उ०—डावी आंख थोड़ी टेडी रैवती अर डावौ होठ ढीलौ रैवण सूं हरदम लाळ पड़ती रैवती । —रातवासौ

मुहा.—लाळ टपकणी, लाळ पड़णी=मुह में पानी आना, लालायित होना ।

२ मन्दिर में लटकाया या किसी पशु के गले में बांधे जाने वाले घण्टे के अन्दर बीच में लटकने वाला धातु का गुटका, लंगर या लोलक ।

उ०—मांड पीवइ कण राळजे लाळ विहूणी बाजइ छै घट । ईसी सकति तिहां देव की, चोर नाहर नहीं देव कइ पंथ —बी. दे.

३ चौपाये पशुओं के मुंह का एक रोग विशेष ।

लाल-सं. पु.—१ पुत्र, बेटा ।

२ बालक, लड़का ।

३ श्रीकृष्ण का एक नाम ।

४ एक प्यार और वात्सल्य भरा सम्बोधन सूचक शब्द ।

उ०—१ तेल फुलेल मद बाटळा ओ भैरूं, ओर चोख्याळा नाळेर, ओ लाल । मैं छूं धरम की बैनड़ी, ओ भैरूं, तूं मेरौ समरथ भाई ओ लाल । —लो. गी.

उ०—२ मुरला लाल, थे छौ जवाई म्हारै माथै परली मैंमद ओ, मेड़तिया ओ लाल, कमधजिया ओ लाल, थे छौ जंवाई, म्हारै कांना परला कुडळ, मुरला लाल । —लो. गी.

उ०—३ या ल्यौ राजाजी थारी नोकरी जी राज, यौ ल्यौ साथीडा थारौ देस रै पपइया रै लाल । —लो. गी.

उ०—४ पहली प्रीत करौ पीतब सुं, पीछै छाडि बिकारी । जन हरिरांम करत हरिजी सुं लाल पुकार हमारी । —अनुभववांणी

५ एक प्रकार का पक्षी विशेष जो प्रायः जलाशय के पास रहता है ।

उ०—जांणै दूसरी घटा छै । दरखतां ऊपर मोर कुहक रह्या छै । सुवा केळ करै छै । तूती बोल रही छै । लाल हाक मार रह्यौ छै । —रा. सा. स.

६ ताश के पत्तों में चार रंगों में से एक रंग या उक्त रंग का पत्ता ।

७ भंगियों (हरिजनों) के गुरु ।

८ खेल में पहले जीता हुवा खिलाड़ी ।

सं. स्त्री.—९ मानिक, रत्न ।

उ०—म्हारै नवधा नथ सुहावणी, सांवलड़ौ है मोत्यां बिचली लाल । म्हारै फूल झूमका फब रह्या, सांवलड़ौ है झूमर री लूम । —मीरां

अल्पा.—लालडी

१० भूरापन लिए हुए लाल रंग की एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया ।

११ श्री करनीदेवीजी की बहिन का नाम ।

१२ बच्चों के खेल विशेष में जीती हुई बाजी का नाम ।

ज्यूं—एक लाल माथै करणी ।

[सं. लालसा] १३ इच्छा, चाह ।

उ०—रवयंवर छि तेहनु, ताहा जाय छि भूपाळ । पामवूं वसि दैवनि, आसा तणी छि लाल । —नळाख्यांन

वि.—१ रक्त वर्ण का । (डि. को.)

उ०—उड़त गुलाल लाल भयै बादळ, बरसत रंग अपार रे । घट कै सब पट खोल दियै हैं, लोकलाज सब डार रे । —मीरां

२ क्रोधयुक्त, आवेश में ।

मुहा.—लाल होणौ=क्रोध में आना, आवेश में आना ।

३ खेल में सबसे पहले जीता हुआ ।

४ प्रिय, प्यारा ।

उ०—ऊंचौ घालूं पालणौ, यौ जळ जमना कै तीर । झोटौ देसी सायबौ, म्हारी लाल नणद कौ बीर । गीगा सोज्या मेरा लाल । —लो. गी.

रू. भे.—लल्ल ।

लालकणेर, लालकनेर-सं. स्त्री.—एक पेड़ विशेष, जिसके फूल गुलाब के फूल जैसे होते हैं ।

उ०—सोरंभां केसर अगर, रहे जायफळ फूल लालकणेरां अर समी, फिर कहुं कहूं बबूळ । —गज-उद्धार

लालकबांण, लालकमांण-सं. स्त्री.—एक प्रकार का धनुष ।

उ०—१ मुछा हाथ ज फेरिया, खेचू **लालकबांण** फोजां फेरू' पतस्याह की, तो राहब मुभि जांण। —राहब-साहब री बात

उ०—२ वहिलउ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजाण। तुझ विण घण विलखी फिरइ, गुण बिन **लालकमांण** । —ढो. मा.

लालकी-स. स्त्री —जीभ, जिह्वा ।

उ०—दिल कहै न धारू देणहिक दोकड़ो लालकी अणूता करै लपका । —अग्यात

२ देखो 'लाली' (अल्पा., रू. भे.)

लालकेसियौ-स. पु —एक प्रकार का अश्लील लोकगीत ।

वि.—रसिक ।

मि.—केसियौ ।

लालड़ी—देखो 'लाल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०-बाजी बुलावै है, सनस खुलावै है । प्यारी री **लालड़ी** प्रीतम रौ हीरौ । प्यारी री चूदड़ी प्रीतम रौ चीरौ रात्यू चौपड़ रमणी भेळी, प्यारी री आम केरी प्रीतम रौ केळौ । पासौ जीतै न पासौ हारै, दोनूं बातां मतलब सारै । — र. हमीर

लालड़ौ-वि (स्त्री. लालडी) लाल रंग का ।

लालचंदन-स. पु.—मैसूर प्रान्त व अरकाट मे बहुतायत से होने वाला लाल रग का चंदन, जिसका पेड लम्बाई में छोटा होता है, रक्तचंदन ।

लालच-स. पु. [स. लालसा] १ कोई वस्तु प्राप्त करने की अत्यधिक लालसा या इच्छा, जो अनुचित या अशोभनीयता के कारण प्रकट न की जा सके, लोलुप्तापूर्ण लोभ ।

उ०—१ ज्यू ज्यू **लालच** खार जळ, सेवै दुरमत सग । 'बाका' अत त्यूं त्यूं बधै, त्रसणा तणी तरंग । —बां. दा.

उ०—२ मोड़ै मुख मोड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरणनै सीतळ सतवाळी । लुच्चा ललचावै **लालच** धिन लागै, लोचण जळ-मोचण सोचण खिण लागै । —ऊ का.

उ०—३ कापुरसा फिट कायरा, जीवण **लालच** ज्याह । अरि देखै आरांण मे, त्रण मुख माभळ त्याह । —बां. दा.

रू. भे.—लालच्च

लालचख, लालचक्ख-सं पु.(स्त्री. लालचक्खी, लालचखी) भैसा । (डि. को.)

लालचट—देखो 'लालचुट' (रू. भे.)

लालचांच-सं. पु.—तोता, सुग्गा । (डि. को.)

लालचियौ-वि.—१ लाल रग वाला ।

२ देखो 'लालची' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—**लालचिया** निरधार तिहा रे, मानि हुकम तिहां जाय मेरे । देखि दरीयौ इम कहै रे, खोदे कुण खुदाय मेरे । —प. च. चौ.

लालची-वि.—लालच करने वाला, लोभी ।

उ०—सगुरा सत सयम रहै, सन्मुख सिरजनहार । निगुरा लोभी **लालची**, भूचे विसय विकार । —दादूबाणी

अल्पा., —लालचियौ ।

लालचीणी-सं. पु.—सिर पर लाल छिटकिया व सफेद शरीर वाला एक प्रकार का कबूतर ।

लालचुट-वि.—अत्यधिक लाल ।

उ०—पकै ठूठिया ईंट, चूनो, सुरखी हुळकीफूल घुट । ठठेरा लुहारा सारा, लोह चढावै **लालचुट** । —दसदेव

रू भे. लालचट ।

लालचोळ-वि.—१ गहरा लाल ।

२ क्रोधित, आवेशयुक्त ।

लालच्च—देखो 'लालच' (रू. भे.)

उ०—बादळ देखी जब आवती, तब सुचित विसमु भयु, **लालच्च** नारि निरखु हवइ, तु मोहि सूर साहस गयौ । —प. च. चौ.

लालजटा-सं. पु.—मुर्गा ।

उ०—**लालजटा** धुनी बोलियौ, स्याळ सुणै कर सोच । कांमण सारा कदे नर को, लस्यो वदन को लोच । —पनां

लालजी-स. पु —१ किसी सम्मानित घर के युवक, राजकुमार तथा कुमार के लिए प्रयोग किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द ।

उ०—१ रावजी बाता सुण राजी हुवा । जिसै मा री वडारण आई, रावजी सु मुजरौ कर अरज कीवी—**लालजी** नुं भीतर बोलावै छै । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ जदी छोकरी गई । सो आप घोड़ा चढता था, जितरै जाय करि कह्या, '**लालजी**, बाईजी बुलाती है ।' जदी पागड़ा में से पग काढचा पीछा अरु मांही आया, आय करि सलाम करी । —राहब-साहब री बात

२ राजा के उप-पत्नी की सन्तान (पुरुष) के लिए प्रयुक्त होने या किया जाने वाला सम्मान-सूचक शब्द । (जयपुर)

३ पति के लघु भ्राता (देवर) व नणद के पुत्र (नांणदा) के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द । (चारण राजपूत)

लालटेण, लालटेन-सं. स्त्री [अं.] मिट्टी के तेल से जलने वाला वह उपकरण जिसमे तेल भरने का स्थान एव बत्ती लगी रहती है

तथा काच पारदर्शी पदार्थ का आवरण (गोला) लगा रहता है, कंडील ।

उ०—दोय जणा-अेक कईक ढळती अोस्था-रौ अर अेक मोटियार जिकै रै हाथ में **लालटेण**, बारणौ खोल र हड़बड़ावतां खाथाखाथा टुर पड़्या । —वरसगाठ

लालण—सं. पु.—१ अत्यन्त स्नेह, लाड़-प्यार ।

२ प्यारा बच्चा ।

रू. भे. लालन

लालणौ, लालबौ—क्रि. स.—१ लाड-प्यार करना ।

उ०—१ बेटी घर संमुहउ पाउ चालइ, दारिद्र वाट देखाडइ, जाउं बाली ताउं, हुई **लाली** पाली । —व. स.

उ०—२ बेटी घर सम्महौ पाउ चालइ, दरिद्र वाट दिखाड़इ । जां हुई बालि, ताउं हुइ **लालि** पाली । —रा. सा. सं.

२ देखो 'लोळणौ, लोळबौ'

लालणहार, हारौ (**हारी**), **लालणियौ**—वि. ।

लालिअोड़ौ, लालियोड़ौ, लाल्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लालीजणौ, लालीजबौ—कर्म वा. ।

लालतातौ—वि—क्रोधित, नाराज ।

उ०—इतरै समय हुवां सो यक्ष आय कन्या पास बैठो । राजा खग लेय, सांम्है यक्ष देख, **लालतातौ** हुवौ । —सिंघासण बत्तीसी

लालधजा—सं. स्त्री [सं. लालध्वजा] १ श्री करनीजी, भैरूंजी व हनुमानजी की ध्वजा ।

२ लाल रंग की पताका ।

लालन—देखो 'लालण' (रू. भे.)

उ०—पांन फूल नूं, जीव तूं कोमल केलि समांन । ललूड़ौ अति लाडलो, **लालन** लीला थांन । —जयवांणी

लालपांणी—सं. स्त्री.—शराब, मदिरा ।

लालपिलकौ—सं. पु.—सफेद दुम व सफेद डेनों वाला एक प्रकार का कबूतर ।

लालपोस—सं. पु.—हरिजन, भंगी ।

लालफूल—सं. स्त्री.—अनार, दाड़म ।

लालबंब—वि.—अत्यधिक लाल रंग का, गहरा लाल ।

लालबजार, लालबाग, लालबाजार—सं. पु.—वेश्याओं का मोहल्ला ।

उ०—सुंणी न दीठी आज अेसी संसार में, बण भगतण घण थाट कै **लालबजार** में । —महादांन मेहड़ू

लालबुझक्कड़—सं. पु.—वह जो किसी विषय में अनभिज्ञ होते हुए भी अनुमान या अटकल द्वारा समस्या का हल ढूंढता है ।

लालबुरज—स. पु.—कपड़ो की धुलाई करने पर अधिक कान्ति के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला एक प्रकार का पाउडर, नील ।

लालबेग—सं. पु.—१ परो वाला एक लाल रग का कीड़ा विशेष ।

२ मुसलमान भगी ।

३ मेहतरों (हरिजनो) के एक कल्पित पीर ।

लालबेगी—स. पु.—लालबेग का अनुयायी हरिजन ।

लालमन—सं पु.—१ श्री कृष्ण ।

२ लाल शरीर, हरे डेनै, गुलाबी चोंच व काली दुम वाला एक प्रकार का तोता ।

लालमिरच—सं. स्त्री यौ.—१ एक प्रकार का क्षुप के समान पौधा जिसके सफेद रग के फूल एवं फली के आकार के फल लगते हैं जो अपक्व अवस्था में हरे एवं पकने पर पीले होकर लाल हो जाते हैं । मिरच छोटी, बडी, देशी, देशान्तरीय अनेक प्रकार की होती है ।

२ उक्त पौधे की फली खाने में तीक्ष्ण (चरकी) एवं कटु स्वाद वाली होती है एवं जिसे सब्जी व नमकीन व्यंजनों में प्रयुक्त किया जाता है ।

लालमी—वि. [सं. लाला+रा. मी.] जिस से लारा टपकती हो, अधिक लारा युक्त ।

उ०—तठा उपरात करि नै राजान सिलामति काबली कूतरा, लाहोरी कूतरा, बिलाती कूतरा, लोलमी, **लालमी** जीभ रा, वलि-में पूंछ रा, लापड़ै कांन रा, दाडमी दत रा, सिंघ रा हथ रा, केहरी कंध रा, झांफरै रोम रा, के विना रोम रा, इण भांत रा कूतरा । —रा. स. सं.

लालमुरगा—स. पु यौ.—एक प्रकार का पौधा या उक्त पौधे के फूल मयूर शिखा, जो औषधि के काम में आता है ।

२ एक प्रकार का पहाड़ी पक्षी जिसका शिकार किया जाता है ।

लालमूली—सं. स्त्री- शलगम, शलजम ।

लालमेह—सं. पु—रक्त प्रमेह नामक पुरुषों का एक रोग विशेष ।

लालर—सं. स्त्री.—१ विधवा स्त्रियों के अोढ़ने का एक वस्त्र विशेष ।

२ व्यर्थ की बकवाद ।

लालरणौ, लालरबौ –१ देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ अै कितरा-अेक ठाकुर घरे हालिया । घोडै आया **लालरता** थका । तरै आपस में घोड़ा अोळखै नहीं । अौ कहै—थांह रौ ठाकुरे ! अौ घोड़ो है । आपस में **लालरण** लागा ।

—प्रतापमल देवड़ा री बात

उ०—२ लड़खड़ाती पड़ती **लालरती**, मेल मांग सिर संबर मरती । गी 'अभमळ' अगै पड़ गळियां, मरमट मूंक मरद्दां मिळियां । —द्वारकादास दधवाड़ियौ

उ०—३ वीरमदै छेड़्यौ किनां मुचकंद जगायौ । रिण हुवियौ

विकरोळ, दोहूं धाड़बिया दौड़ा, वहै गजर बाग्रास, धजर ऊर कूंत घमोड़ा । लोह छकै लालरै, रुधिर धकधकै वराळां, ग्रोयण ग्रत्राळा उळभि, रग कंठा वरमाळा । चाडता उरा तुरंग चपळ, बहसंता बाबाड़ता, भाडता कलम सूघा भिलम पिसरा खगा भट पाडता । —पना

उ०—४ सेला हियां दुसार, लोह वाहै लालरता । बीखरता बाबरा, भ्रगुट फाटा हौफरता । —सू प्र.

लालरणहार, हारौ (हारौ), **लालरणियौ**—वि० ।

लालरिग्रोड़ौ, लालरियोड़ौ, लालरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लालरीजणौ, लालरीजबौ—भाव वा० ।

लालरयोड़ौ—१ देखो 'ललरियोड़ौ' (रू॰ भे.)

(स्त्री. लालरियोड़ी)

लालरियौ–स पु. (व. ब लालरिया) १ खुशामद, जी हजूरी ।

उ०—१ रोयनै ग्रांख्या री भरम गमावणौ । घणा नी, दोय बीसी टका माथै चढायनै लाय दै तौ पछै देख सगळाई कैडा **लालरिया** लेवै । —फुलवाडी

उ०—२ भाड़ू दै ढाणी भालरिया भाड़ै, पांणी पालरिया पीवण पछवाडै । लोरीदै पोलछ **लालरिया** लेती, दड़खिल खोड़ा नै हालरिया देती । —ऊ का.

लालरी–स. स्त्री.—चमड़ी ।

उ०—माथउ धवलउं देह जाजरी, वाकउ वासउ भूबइं **लालरी** । घर हूंतउ नवि क्याहइ जाइ, सघला कुटुंब ऊभीठउ थाइ । —वस्तिग

लालसर–सं. पु.—लाल रग की गर्दन एव सिर वाला एक पक्षी ।

लाळसा, लालसा–सं. स्त्री. [स. लालसा] १ किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा, लिप्सा, उत्सुकता ।

उ०—जुजठळ वाळी मरजादा निभाई । बोल्यौ—म्हैं लुगायां री चाम रै मायलो सूछम जीव हू । वारी प्रीत रौ धणी हूं । बिणज ग्रर कमाई बिचै म्हनै हेत-प्रीत री **लाळसा** वत्ती है । —फुलवाडी

२ गर्भिणी स्त्री के मन मे होने वाली ग्रभिलाषा, साध ।

रू भे.—लाला ।

लालसागर–सं. पु—ग्ररब ग्रौर ग्रफिका के बीच पडने वाला भारतीय महासागर का ग्रश, जिसका पानी कुछ ललाई देता है ।

लालसाटी–सं पु.— वह पुनर्नवा जिसका पत्ता एक ग्रोर से लाल रंग का हो ।

लालसिखी–स. पु.—मुर्गा ।

लालसी–वि.—लालसा या ग्रभिलाषा करने वाला ।

लालसुरंग–वि.—गहरा लाल ।

लालां–स. स्त्री —श्री करनी देवी जी की बहिन ।

उ०—पळासरा ग्रग भखै भर पेट, भेळा उतभग सदा सिव भेट । **लालां** कर थापलि कंध लकाळ, फुला सिंघ सग भरावत फाळ । —मे म.

लाला–सं पु.—१ कायस्थो के लिए सम्मान सूचक सम्बोधन ।(मा म)

२ माहेश्वरी व ग्रग्रवाल ग्रादि महाजनो के लिए सम्मान—सूचक सम्बोधन । (गगानगर, बीकानेर)

३ स्नेह सूचक सम्बोधन ।

४ प्यारा, प्रिय ।

ब व.—५ ग्रभाव, दारिद्रता ।

उ०—बेमारी मे तौ भळैं दूध को खरच लागै । भाग ग्रायग्यौ, रोट्या री ही **लाला** पड़ग्या । —दसदोख

सं. स्त्री – ६ ध्यान, समाधि ।

७ देखो 'लालसा' (रू. भे.)

ग्रल्पा.—लालू, लालूडो ।

लालाटि–स. पु.—१ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

२ देखो 'ललाट' (रू. भे.)

लालाटिक–सं पु [स. लालाटिकः] १ सावधान ग्रनुचर ।

२ निठल्ला ।

३ एक प्रकार का ग्रालिंगन विशेष ।

वि [स लालाटिक] १ माल सम्बन्धी ।

२ भाग्य पर निर्भर रहने वाला ।

३ निरर्थक, नीच, कमीना ।

लालाभक्त–सं. पु.—एक नरक का नाम । (पौराणिक)

लालाभक्ष–सं. पु.—एक नरक विशेष जहा वे लोग भेजे जाते हैं जो भगवान को बिना भोग लगाये या ग्रतिथियों को भूखा रखकर स्वयं पेट भर भोजन कर लेते हैं । (पुराण)

लालासरव, लालासव, लालास्रव, लालास्राव–सं. स्त्री —१ मकड़ी । (डिं. को.)

२ मकड़ी का जाला ।

३ मुंह से लार गिरने की क्रिया ।

लालिमा–सं स्त्री —ललाई, सूर्खी, ग्ररुणता ।

लाळियोड़ौ—देखो 'लोळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाळियोडी)

लाळियौ–सं. पु.—१ छोटे बच्चों के वक्ष स्थल पर बाधा जाने वाला कपड़ा विशेष ।

२ ग्वार के डंठल व पत्तियाँ ।

३ देखो 'लाळौ' (ग्रल्पा. रू. भे)

उ०—सू उण ही बादळां सूं घोड़ा रा लाळिया छांटजै छै। फेर बादळा खंखोळ उणहीज तळाव रै पाणी सूं छाण भरजै छै।
—रा. सा सं.

लाळी-सं. स्त्री.—१ बाजरी व ज्वार की बालों पर दाना पड़ने से पूर्व आने वाला सफेद सा पदार्थ, फूबी।

२ भूसे का वह भाग जो अनाज निकालते समय हवा से उड़ कर दूर इकट्ठा हो जाता है।

३ देखो 'ल्याळी' (रू. भे.)

उ०—डावा लाळी जिमणी मलाळी तंदळ भरं भाण, नीरभरिं बहिढूं सबछी गाइ, सपळाणु छोडु, रासु धोरी। —व. स.

लाली-सं. स्त्री.—१ लाल होने का भाव या अवस्था, ललाई, सुर्खी।

उ०—सांवरिया म्हांनै भांग पिलाई, मेरी अंग्यियां में लाली छाई। काहै री कूंडी (राधा) काहै रा घोटा, काहै री सुवाफी बणाई।
—मीरां

उ०—२ इण अधरां रा मिठास री तौ बात कुण कहै, मूंगियां री लाली तौ यां री दलाली में बहै। आ छोटी मुफाड किसड़ीक सोहै है, औ मंदहास किणनूं न मोहै है। —र. हमीर

२ प्रतिष्ठा, इज्जत।

उ०—धन री धूड हुयगी, माया रा कोयला बणग्या। अळै वण अरजन रै पगां पूगी, लाली लेखै हुगी। —दसदोख

३ जीभ, जबान।

उ०—होटा रो सिणगार। लाली री भिकाळ। पण मन रौ तो भेद ई अगम। —फुलवाड़ी

४ रौनक, शोभा।

अल्पा.—लालकी।

लालुरणौ, लालुरबौ—देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लडै हिक लालुरता छकि लोह, पडै हिक पाइक ऊठै छोहि। आवै हिक वाहै खाग उभारि, मुखा हिक जोध कहै मारि मारि। —गु. रू. ब.

उ०—२ लालुरै हेक हेकां दिसा लोडता। काळ नां बाथ घाते जिसा कोडता। —हरि पिंगळ प्रबन्ध

उ०—२ अरस हूंत ऊतरै, एक वर अच्छर वरिया। एक पडै लोहडै, लोह छक्का लालुरिया। —गु. रू. बं.

लालुरणहार, हारौ (हारी), लालुरणियौ—वि०।
लालुरिओड़ौ, लालुरियोड़ौ, लालुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
लालुरीजणौ, लालुरीजबौ—भाव वा०।

लालुरियोड़ो—देखो 'ललरियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. लालुरियोड़ी)

लालु, लालूड़ौ—१ देखो 'लालौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ छलां छोगाळां छक्का छूटोड़ा, फिरतां फिरता रा फीफर फूटोड़ा। लालू लोका रा खाता जग खोणा, बाबा बैलां रा जाता पग जोणा। —ऊ. का.

उ०—२ लालूड़ा! हरि सूरज हरि चंद्रमा, लाला म्हारा रै हरी बिन घोर अंधार। —गी. रा.

लालूवाड़-स. स्त्री.—एक प्रकार की तलवार।

लाळौ-सं. पु.—१ घोड़े के मुँह की मोरी में नीचे की ओर लगी हुई कपड़े की पट्टी जिसका दूसरा हिस्सा तग में लगा रहता है।

उ०—रूपा रा पागड़ा। सुरंगी तग। फबती लगाम। झूलतौ लाळौ। —फुलवाड़ी

२ घोड़े के मुंह के दोनों छोर।

उ०—अरु साहिजादी मोमण तळाव उपरि आय उतरची घोड़ी का लाळा छांटचा। अरु भालां परि हाथ दीया खड़ा है।
—राहब साहब री बात

अल्पा.-लाळियौ, लाळ्यौ

लालौ-स. पु.—१ पुत्र, बेटा।

उ०—बरतै सोड़ सोडिया बेटौ, पैमद हेटौ बाप पड़ै। मूंडा हूंत न बोलै मीठौ, लालौ बूढा हूंत लड़ै। —हिंगळाजदांन कवियौ

२ लडका, शिशु।

३ बच्चों के लिए स्नेहपूर्ण सम्बोधन।

४ कायस्थ माहेश्वरी, अग्रवाल आदि जातियों के व्यक्तियों के लिए सम्मानसूचक सम्बोधन। (गगानगर, बीकानेर)

उ०—लालौ वरसां सूं मांनीजतौ आदमी, नगद पीसौ तो खनै घणौ नी पण माण मुलाकात उतरादै इलाकै में बड़ पीपळ दाई पाकी पड रैयी ही। मालमता अर जगां सेठाई रै पगां, सदा सुरंगी रैती आई ही। —दसदोख

अल्पा.,—ललूड़ौ, ललौ, लल्लू, लाल्यौ

५ ल अक्षर या वर्ण।

उ०—लघुनीति लोभ लिग लिग लहरि, लाल लीख वलि लाल्हरा। ले आइ साथि साते लला, जिका काइ कीधी जरा। —ध. व. ग्रं.

लाळचौ-देखो 'लाळौ' (अल्पा,. रू. भे.)

लाल्हरणौ, लाल्हरबौ—देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू. भे.)

उ०—तुरी करनाळ रणसींगौ बाज रह्या छै। सहनाय माहै खंभायची हुय रही छै। साथ सारौ अमलां सूं लाल्हरतौ थकौ वहै छै। —रा. सा. सं.

लाल्हरणहार, हारौ (हारी), लाल्हरणियौ—वि.।
लाल्हरिओड़ौ, लाल्हरियोड़ौ, लाल्हरयोड़ौ—भू. का. कृ.।
लाल्हरीजणौ, लाल्हरीजबौ—भाव वा.।

लाल्हरियोड़ौ— देखो 'ललरियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाल्हरियोड़ी)

लाल्हरियौ–स. पु.—एक प्रकार का पौधा विशेष जिसे ऊंठ चाव से खाते है।

लाव–स. स्त्री.—१ चमड़े या जूट का बना मोटा रस्सा, जो प्राय: कूएं से चरस खीचने के काम आता है।

उ०—'अणंदौ' कूप पैसता 'आऊ,' तूटी **लाव** तिसार। भुजंग रूप बण बीस-भुजाळी, जुड़ी बरत रै जा'र। —किसोरसिंह बारहस्पत्य

स. पु.—२ लाभ।

उ०—१ नेन न पेम न प्रीत हरि, आव न कहै सिधाव। हरिया परहरि हित विन, वा घरि **लाव** न साव। —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया प्याला पेम का, पीया भरि भरि दाव। और अमल किस काम का, लीया **लाव** न साव। —अनुभववाणी

लावक–सं. पु. [स. लावकः] एक प्रकार का पक्षी विशेष। (सभा)

वि—१ लाने वाला। २ काटने वाला।

लावकि–वि.—योग्य, लायक।

उ०—अल्पमांम निरलोम दाक्षिण्य पर दया पर मया पर क्षमा पर साचाबोली हितबोली मितबोली ऊपजावकि **लावकि** द्रावकि समयती मानयती सतीमिती अनुरक्ति सत्ती···। —व स.

लावड़ौ–स. पु.—लोमड़ी।

उ०—**लावड़ौ**, हरणइ, सिंह, सियाळ, पहुत समीहोज्यौ लोवा सीयमाळ। धन हरिणाखी ईम कहई, निहचई ओळग चालणहार। —बी. दे.

लावण–सं. पु—१ गायन विशेष।

उ०—गायण तठै करै नृत गावै, **लावण** बाणि अनेक लगावै। छक छौह जोबना छाकां, पुहपातणी वणी पौसाकां। —सू. प्र.

२ नमकीन पदार्थ।

उ०—रूप अपूरब पेखीयौ, **लावण** लाडु अरी पकवान। सेना सहित राज जीमीयौ, राई भतीजौ भोज दे बहुमांन। —बी. दे.

३ वह नमकीन पदार्थ जिससे लगाकर रोटी खाई जाय, लगावण।

वि.—१ नमकीन।

२ देखो 'लावण' (रू भे.)

उ०—घर हाळी पर भूजैं, दांत भीचै। बापडी दातां में **लावण** लिया रात-दिन पाणी पीसणौ करै। —दसदोख

लावणता—देखो 'लावण्यता' (रू. भे.)

लावणी–सं. स्त्री—१ गाने का एक प्रकार का छंद या गीत, ख्याल।

२ मतान्तर से तारक छद का एक भेद विशेष जिसमें लघु गुरु का कोई भेद नही होता।

[सं. लव] ३ खेतो मे फसल काटने की क्रिया।

उ०—खेत जाय'र कदै ही आखै नही देख्यौ जकी लुगाई, निनांण-**लावणी** री मजूरी करै, भाजी वगै। —दसदोख

लावणियौ, लावणीयौ–स. पु.—एक प्रकार के बेर विशेष।

उ०—भमरा वे फळ परहरै, निस वद लाख कठोर। की राता दीसै नही ज्यूँ **लावणीया** बोर. —अज्ञात

लावणौ–सं पु.—मागलिक अवसर या बहू के पीहर से आगमन पर कुटुम्बियो मे बाटा जाने वाला खाद्योपहार या मिष्ठान्न।

लावणौ, लावबौ—देखो 'लाणौ, लाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कड़ाछ' र जर चाळै, बाळटी, दुकडिया वगै। हाथै ही लावै, हाफै ही उठावै। —दसदोख

उ०—२ अर जे पछै ई थनै पतौ नी पडियौ तौ म्हनै किसौ मोल **लावणौ** है। —फुलवाडी

लावण, लावण्य, लावण्यता–स. पु. [स. लावण्यता] १ सुन्दरता, सलौनापन।

उ०—सीख पसा करि स्वामिनूं, सिउं करिवा अधिकार। हूं मति-हीणी मानिनी **लावण्य** नहीं लगार। —मा. का. प्र.

२ चातुर्य, सुघडता।

३ लावण का धर्म या भाव, नमकीनपन।

रू भे.—लावणह, लावणता, लावन्न, लावन्य

लावण्यवती–सं स्त्री.—१ रथंतर कल्प के राजा पुष्पवाहन की पत्नी का नाम।

२ सुन्दर अगों वाली स्त्री।

लावन्न, लावन्य – देखो 'लावण्य' (रू. भे.)

उ०—नमौ लख कद्रप कोटि **लावन्न**, नमौ हरि मारण रूप मदन्न। बदन्न उलासित नेत्र बिसाळ, मुकुट्ट किरीट अखै गळ माळ।—ह.र.

लावर–सं. पु.—क्रोध युक्त वाणी, कटु-शब्द।

उ०—टलवळइ जिम निरजळि माछिळी, वळवळइ अति अगि वळी। झखइ लांखइ **लावर** आकुळउ, विरहि विह्वल वांतर वाउळउ। —सालिसूरि

लावरी–स. पु.—कुत्ता, श्वान। (शेखावटी)

लावल्द–वि [अ.] निःसंतान।

लावल्दी–स. स्त्री.—निःसंतानावस्था।

लावांणक–सं. पु—एक प्राचीन स्थल विशेष जो मथुरा के पास है।

लावा–वि.—खराब, बुरा।

उ०—१ काळौ धवळ कहाय नह, धोळौ धवळ कहाय। जो काळौ धुर जूपणौ, **लावा** लखण न जाय। —बां. दा.

उ०—२ **लावा** लखणां रौ दस दस सुत देवै। उतम लखणा री

अेको उर लैवै। सिंधुर बर बाबर भूडण कर साधै। बामा बीजळ नै थावर गळ बांधै। —ऊ. का.

लावाळी–सं. स्त्री.—लम्बी लकड़ी का रहँट का एक उपकरण जो चक्र पर लगाकर बैलो की ओर बढाया जाता है।

लावालूत्र–सं. स्त्री — इधर उधर की बात करने की क्रिया, लबालीपन।

उ०—म करे रवि साम्हो मलमूत्र, लखण म करीजे **लावालूत्र**। पाप तजै तु सकजै पूत्र, साभाळिजे सुभ सास्त्र सूत्र। —ध. व. ग्रं.

लवारिस–सं. पु. यौ. [अ.] १ जिसका कोई उत्तराधिकारी या वारिस नही हो।

२ जिसका कोई स्वामी या मालिक न हो।

लावारिसी–वि.—जिसका कोई अधिकारी न हो।

लावौ–स. पु. [सं. लवा] १ लावा नामक पक्षी।

उ०—१ सित्तर खांन बहोतर मीरां, आइस दाखै सास अधीरां। द्रढ पण करख बाज लख दावै, देखौ **लावौ** आंख दिखावै। —रा. रू.

उ०—२ **लावां** तितर लार, हर कोई हाका करै। सिंहां तणी सिकार, रमणौ मुसकल राजिया। —किरपारांम

[सं. लाभ] २ आनन्द, मौज।

क्रि. प्र.—लेणौ।

३ लाभ।

४ बहु या पुत्री को ससुराल से लाने या ले जाने वाला व्यक्ति।

५ ज्वालामुखी पर्वतों के मुख से विस्फोट होने पर निकलने वाला राख, पत्थर और धातु आदि मिला हुआ द्रव पदार्थ।

१ बुरा शकुन।

रू. भें.—लउवौ, लाहौ।

लास–सं. स्त्री.—१ मृत शरीर, शव।

उ०—भाग सूं अचाचूंक रौ कोई पाड़ोसी कनै आयौ अर राजी री अधबळी **लास** नै उबारी। —दसदोख

२ काष्ठ-निर्मित पायेदार एक प्रकार का उपकरण जिसमें पशुओं को चरने हेतु भूसी डाली जाती है। (मेवात)

३ दल, समूह।

उ०—वड रावत ऊससिया तिण वेळा, एम सुणै भुज आंमळतां ललकार हुवौ भड आवै **लासां**, छोडै तेज तुरी छिळता। —गु. रू. बं.

३ देखो 'ल्हास' (रू. भे.)

४ देखो 'लासू' (रू. भे.)

उ०—लकड़ी थांरी रीढ, **लास** रोमावळ लै'रां। हिस्सा मठ ढमढेर, ईळ जळ ऊंडा वेरा। —दसदेव

रू. भे.—ल्हास

लासक–स. पु. [स.] (स्त्री. लासकी) १ मोर, मयूर।

२ मटका, घडा।

३ नाचने वाला।

४ एक प्रकार का रोग बिशेष जिसमें शरीर का कोई अग बराबर हिलता-डुलता न हो।

लासरियेगाळौ–सं. पु.—वह युवक जिसके मूछों के बाल न निकले हों।

लासरीक–वि. [अ.] बिना किसी सहायक के, निःसहाय।

उ० - तोहीन अदालत अल-कितीक, लिल्ला वजूद है **लासरीक**। मालुम मुलायजे करह माफ, आलिम हैं आलिगगीर आप। —ऊ. का.

लासलूसणौ–क्रि. वि.– पोंछने की क्रिया, पोंछ।

लासियौ—देखो 'ल्हासियौ' (रू. भे.)

लासू–स. पु. —फोग वृक्ष की पतली सलाख या टहनी, वृक्ष के तार।

उ०—काती भळै दांती फेरी, **लासू** वन रा वाडतां। झाड़ जुगत लादा लदावै, ढिगला टोकी काढता। —दसदेव

रू. भे.—लास

अल्पा.,—लाऊड़ो, लासूड़ौ, लाहुड़ौ, लाहूड़ौ

लासूड़ौ—देखो 'लासू' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—पाळौ पडै अथोग, झड़ै **लासूड़ा** नीचै। आरत-बुभुक्षित पसू, खोड़ में खारी बीचै। —दसदेव

लास्य–स. पु. [सं.] एक प्रकार का नृत्य विशेष जिसमें हाव-भावों व अंगविन्यासो से प्रेम की भावनाए प्रकट की जाती है।

लास्यप्रिया–सं. स्त्री.—एक देवी जिसे लास्य नामक नृत्यविनोद प्रिय है।

लाह–सं. पु. (ब. व. लाहा) १ घुड़-दौड़ में छलांग मारकर आगे निकल जाने वाला घोड़ा।

सं. स्त्री.—२ छलांग, कूद।

उ०—सो घोड़ी उछळती, **लाहां** भरती आवै छै सो जांणै आकास नूं ही ठोकरां मारती आवै छै। —सूरै खींवै कांधळोत री बात

[सं. लाक्षा] ३ लाख, चपड़ी।

४ देखो 'लाभ' (रू. भे.)

उ०—१ हर मत छाडै रे हिया, लिया चहै जो **लाह**। दिल साचै तेड़ौ दियां, नेड़ौ लिछमी नाह। —र. ज. प्र.

उ०—२ जन हरिदास हरि सुमरतां, सब घरि सदा उछाह। तब थी सो मति अब नहीं, तब तोटा अब **लाह**। —ह. पु. वां.

उ०—३ जोड़ी सरखि जांणि नै, ते परणै हे यौवन नै **लाह**। बिचि मांहै थई डोकरी, तिहां कीधौ हे गंधरव वीवाह। —वि. कु.

५ देखो 'ल्हास' (रू. भे.)

रू. भे.—ला

लाहउरी—देखो 'लाहोरी' (रू. भे.)

लाहण-स. स्त्री.—एक जाति विशेष। (नैणसी)

रू. भे.—लाहरा, लाहिरा, लाहीरा।

लाहणौ, लाहबौ—देखो 'लाभणौ, लाभबौ' (रू. भे.)

उ०—एक अमोलिक वसत का, विरळा विणजणहार। जनहरीया सो विणजसी, लाहै अंत न पार। —अनुभववाणी

लाहणहार, हारौ (हारी), लाहणियौ—वि०।

लाहिग्रोडौ, लाहियोड़ौ, लाह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लाहीजणौ, लाहीजबौ—भाव वा०।

लाहरणौ, लाहरबौ—देखो 'ललरणौ, ललरबौ' (रू. भे)

उ०—इरा भातरै चादरां में जीमरा री होस मांणजै छै। दारू सूं मतवाळा सिरदार लाहरता बोलै छै। —रा. सा. स.

लाहरणहार, हारौ (हारी), लाहरणियौ—वि०।

लाहरिग्रोड़ौ, लाहरियोड़ौ, लाहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

लाहरीजणौ, लाहरीजबौ—भाव वा०।

लाहरां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

लाहरियोड़ौ—देखो 'ललरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लाहरियोड़ी)

लाहरै—देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—तिण समें मारवणीजी पिण ढोलाजी रै लाहरै ई ज हुवा। —ढो. मा.

लाहा-सं. स्त्री.—सोलंकी क्षत्रियों की एक शाखा।

लाहानूंर-वि. [फा. लाह+अ नूर] कच्चे रेशम के चमकदार।

उ०—फरासूं नै आवासूं बीच विछायत वणाए। लाहानूंर मुसैद अजील की चौपस्मी गिलमूं की बिछायत करै। —सू. प्र.

लाहि-स. स्त्री.—१ वनस्पति विशेष।

उ०—लाज लज्जाळू लक्ष्मरा, लूणी लसन लवगि। लीलावती लुंकडी, लाहि लवीरी संगि। —मा. का. प्र.

२ देखो 'लाही' (रू. भे.)

उ०—कतास अतलस खासु कमसू भइरव, मिस्रु भइरव, रेसमी भइरव, लाहि महीमुंदीसाही मलमलसाही प्रमुख नांनाविध भातिनां, नांनाविध देस ना वस्त्र आंणी समस्त परिवार, नगरलोक पहिरावी, नामस्थापना कीधी। —व. स.

लाहिण—देखो 'लाहरा' (रू. भे.)

उ०—पुज्य पाल्हरा पुरि पहुंता सुभ दिनइ, संघ सकल उच्छाहौ जी संघ पाटरा नउ गुरु वांदी वलिउ, लाहिण करिल्यइ लाहौ जी। —ऐ. जै. का. सं.

लाहियोड़ौ—देखो 'लाभियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लाहियोड़ी)

लाहियौ—देखो 'ल्हासियौ' (रू. भे.)

लाही-सं. स्त्री. [स. लाक्षा] १ लाख, चपड़ी।

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

रू. भे—लाई, लाहि

लाहीण—देखो 'लाहण' (रू. भे)

लाहु—देखो 'लाभ' (रू. भे.)

उ०—१ सुख अपूरब भोगवइ, नळ दवदंति नारि। इच्छा पहुचाउइ मन तणी, लीह लाहु संसारि। —नळदवदती रास

उ०—२ उसण जळ मजन की कीजीइ, ताबूलन लाहु लीजीइ। एहवु सीआळु मझ सभरइ, नळजी वाहळु नवि वीसरइ। —नळदवदती रास

उ०—३ रत्नजटित तिलक चुवीस, आभरणे पूजी मूर्ति चुवीस बिहु भेदे तेणइ पूजा किद्ध, धरम प्रीछियानु लाहु लिद्ध। —नळदवदंती रास

लाहुड़ौ, लाहूड़ौ—१ देखो 'लासू' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'लघु' (रू. भे.)

लाहोरणी-सं. स्त्री.—लाहोर मे निर्मित एक प्रकार की बदूक।

उ०—धुणियासी घणियां घरी, भुज बळ पाळ भड़ांह। ले लळका लाहोरणी, छूटै लावछडा। —पा. प्र.

लाहोरी-स. पु.—१ शिकारी कुत्ता विशेष।

उ०—सौगध लीध सिकारिया, नह लाहोरी आय। थारी सेकौ एक वस, लूआं प्रांण सुकाय। —सू

२ लाहोर मे निर्मित एक प्रकार की बंदूक।

वि.—लाहोर सम्बन्धी, लाहोर का।

उ०—गुजराती कसमीरी कसूरी मारवाड़ी दखणी मिरजाई भटनेरी लाहोरी हजारमेखी घणी रंग रग री वनात मुखमल कळाबूती सोनै रूपै रा वणिया जीण हजार कीजै छै। —रा. सा. सं.

रू. भे.—लाहउरी

लाहोरीनमक-सं. पु. यौ.—सैंधा नमक।

लाहौ—देखो १ 'लाभ' (रू. भे.)

उ०—देई न दीन्ही वांटि, आदमगीरी अकलि कुं। लाहा छेवा गांठि, हरीया अैसै आप सिर। —अनुभववांणी

२ देखो 'लावौ' (रू. भे.)

लाहौल–सं. स्त्री. [अ.] घृणा एवं उपेक्षा सूचक शब्द या वाक्य ।

लिंग–सं. पु. [सं. लिंगन् ३] १ चिन्ह, निशान ।

२ न्याय-शास्त्र में वह वस्तु जिसके माध्यम से किसी प्रकार की घटना या उसके तथ्यों का अनुमान हो ।

वि. वि.—न्याय-शास्त्र में ये चार प्रकार के कहे गये हैं—

(क) संबद्ध (ख) व्यस्त (ग) सहवर्ती (घ) विपरीत

३ प्रमाण, साक्षी ।

४ मीमांसा के अनुसार लिंग निर्णय के छः लक्षण:— उपक्रम, उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, अर्थवाद उपपत्ति ।

५ शिव की एक विशेष प्रकार की मूर्ति जो पुरुष की जननेन्द्रिय के रूप मे होती है ।

उ०—लिंग कौं चढावै लाडू भाटै को लगावै भोग, भडवै पुजावै भग स्वामि सेल सोधा को । — ऊ. का.

६ सांख्य के मतानुसार वह मूल प्रकृति जिसमें सारी विकृत्तियां फिर से लीन होती हैं ।

७ जननेन्द्रिय, शिश्न । (डिं. को.)

उ०—करवाय मोल गजराजकौ, लिंग हाथ मांहै लियौ । सुख-सींग कमध करतब समै, किसौ काम आंछौ कियौ । —अग्यात

८ व्याकरण में शब्दों का वह वर्गीकरण जिससे यह ज्ञात किया जाता है कि कोई संज्ञा या सर्वनाम पुरुष जाति का वाचक है या स्त्री जाति का ।

वि. वि.– संस्कृत, फारसी, मराठी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में तीन प्रकार के लिंग होते हैं— (क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) नपुंसक लिंग । इसके अतिरिक्त हिन्दी, उर्दू आदि कई भाषाओं में दो ही प्रकार के लिंग होते हैं—स्त्री लिंग और पुलिंग ।

९ देवता की मूर्ति या प्रतिमा ।

१० वेदान्त में आत्मा का सूक्ष्म रूप ।

११ लिंगायत लोगों द्वारा किसी आवरण में आवेष्टित करके गले में लटकाई जाने वाली प्रतिमा या मूर्ति ।

लिंगटी—देखो 'लींगटी' (रू. भे.)

लिंगतियौ—देखो 'रिंगतियौ, (रू. भे.)

उ०—"ढक ढक भायला बारणौ ! क्यों माथौ लगावै है ।" "हांजी, साळा लिंगतिया खेतरपाळ है ।" —बरसगांठ

लिंगदेह–सं. स्त्री [सं.] अध्यात्म के अनुसार स्थूल शरीर के नष्ट होने पर मिलने वाला वह अन्नकोश रहित अति सूक्ष्म शरीर जिसमें ज्ञानेन्द्रियां व कर्मेन्द्रियां विद्यमान रहती हैं ।

लिंगनास–सं. पु. [सं.] नेत्र का एक रोग विशेष । —(अमरत)

लिंग पुरांण–सं स्त्री [सं.] १८ पुराणो में से एक पुराण, जिसमें शिव एवं उसके लिंग पूजा के माहात्म्य का उल्लेख है ।

लिंग पूजा–सं. स्त्री.—शिव की पिंडी की पूजा ।

लिंगसरीर—देखो 'लिंगदेह'

लिंगायत–सं. पु.—१ एक शैव सम्प्रदाय ।

२ शैव सम्प्रदाय का अनुयायी ।

लिंगूर—देखो 'लंगूर' (रू. भे.)

लिंगेंद्रिय, लिंगेंद्री–स. पु. [सं. लिंगेन्द्रिय] १ जननेन्द्रिय, शिश्न । (अमरत)

लिंगोटी–देखो 'लंगोटी' (रू भे.)

लिंघौ–स पु. –वस्त्र विशेष ।

उ०—कंचू नीलक को कीयौ, उपरि चीर उढाइ । लिंघौ लुंगी भाति को, सुंदर नें बहोत सुहाय । —व. स.

लिंडवा–स. पु.—एक नदी जो अलवर रियासत के प्रतापगढ व अजबगढ के नालों से निकल कर रेवाड़ी से आगे तक चली जाती है । (वीर विनोद)

लिंपणौ, लिंपबौ—देखो 'लींपणौ, लींपबौ' (रू. भे.)

उ०—लिंपइ ताव निकंदनी, चंदनि चंदनी देहु । निज निज नाथ संभारिय, नारिय नवलउ नेहु । —जयसेखर सूरि

लिंपणहार, हारौ (हारी), लिंपणियौ —वि० ।

लिंपिओड़ौ, लिंपियोड़ौ, लिंप्योड़ौ– भू० का० कृ० ।

लिंपीजणौ, लिंपीजबौ—कर्म वा० ।

लिंपियोड़ौ—देखो 'लींपियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिंपियोड़ी)

लि–सं. स्त्री.—१ दासी । (एका.)

२ बिछी ।

३ सखी, सहेली ।

स. पु.—४ सर्प, सांप ।

५ चूहा ।

लिअण–वि.—देखो 'लियण' (रू. भे.)

उ०—लंक लिअण अण दन दीअण, वरण धण मह महण । नद कुंअर अर निडर नर, मुममरि हुरियै लगै । —पिं. प्र.

लिए–अव्य.—व्याकरण के अन्तर्गत सम्प्रदान कारक में प्रयुक्त होने वाला शब्द, हेतु, निमित्त ।

लिकणी–सं. स्त्री.—१ कुण्डी के आकार का पत्थर का बना वह पात्र जिसमें घर के बर्त्तन साफ करके पानी व जूठन डाली जाती है और जिसे कुत्ते आदि पशु चाटते हैं ।

२ लिक लिक करने की क्रिया या भाव ।

३ कुत्ता आदि के जलपान करते समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि विशेष ।

लिकणौ, लिकबौ–क्रि. स.—१ कुत्ता, सियार आदि का जिह्वा से जलपान करना।
२ देखो 'लिखणौ, लिखबौ' (रू. भे.)
लिकणहार, हारौ (हारी), **लिकणियौ**—वि.।
लिकिग्रोड़ौ, लिकियोड़ौ, लिक्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लिकीजणौ, लिकीजबौ—भाव वा.।

लिकाणौ, लिकाबौ—१ कुत्ते, बिल्ली आदि से जूठा करवा देना।
२ देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू. भे.)
लिकाणहार, हारौ (हारी), **लिकाणियौ**—वि.।
लिकायोड़ौ—भू का. कृ.।
लिकावीजणौ, लिकावीजबौ—भाव वा.।
लिकावणौ, लिकावबौ—रू. भे.।

लिकायोड़ौ—१ कुत्ते बिल्ली आदि से जूठा करवाया हुआ।
२ देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लिकायोड़ी)

लिकावणौ, लिकावबौ—१ देखो 'लिकाणौ, लिकाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू. भे.)
लिकावणहार, हारौ (हारी), **लिकाकवणियौ**—वि.।
लिकाविग्रोड़ौ, लिकावियोड़ौ, लिकाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लिकावीजणौ, लिकावीजबौ—कर्म वा.।

लिकावियोड़ौ—१ देखो 'लिकायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री. लिकावियोड़ी)

लिकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कुत्तें, बिल्ली आदि का चाटा हुआ।
२ देखो 'लिखियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लिकियोड़ी)

लिकलिक—देखो 'लकलक' (रू. भे.)
उ०—१ राडा में बुवारिया रा लोतर ई कोनी। दो महींना सू लिकलिक करूं कै म्हारा डील में आतस घणी पांच सेर कड़कड़ खांड पाणीं मे रळाय नैं पीवूं तौ कीं ठंडक वापरै। —फुलवाड़ी
उ०—२ अेकर आं दोनूं धणियां नै राजाजी रै हवालै कर दां। पछै राजाजी जाणै अर सेठजी जाणै। आपां बीच में क्यूं लिकलिक करां। —फुलवाड़ी

लिक्खणौ, लिक्खबौ—देखो 'लिखणौ, लिखबौ' (रू. भे)
लिक्खणहार, हारौ (हारी), **लिक्खणियौ**—वि.।
लिक्खिग्रोड़ौ, लिक्खियोड़ौ, लिक्ख्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लिक्खीजणौ, लिक्खीजबौ—कर्म वा.।

लिक्खाडणौ, लिक्खाडबौ—देखो 'लिखाणौ लिखाबौ' (रू. भे.)
उ०—राजा कागळ मेळियौ, लिक्खाडै चड चोट। जिम जांणौ तिम मारलै कुंअर कणैगिर कोट। —गु. रू. ब.।
लिक्खाडणहार, हारौ (हारी), **लिक्खाडणियौ**—वि.।
लिक्खाडिग्रोड़ौ, लिक्खाडियोड़ौ, लिक्खाड्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लिक्खाडीजणौ, लिक्खाडीजबौ—कर्म वा.।

लिक्खाडियोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लिक्खाडियोड़ी)

लिक्खाणौ, लिक्खाबौ—देखो 'लिखाणौ लिखाबौ' (रू. भे.)
लिक्खाणहार, हारौ (हारी), **लिक्खाणियौ**—वि.।
लिक्खायोड़ौ—भू. का. कृ.।
लिक्खाईजणौ, लिक्खाईजबौ—कर्म वा.।

लिक्खायोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लिक्खायोड़ी)

लिक्खावणौ, लिक्खावबौ—देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू. भे.)
लिक्खावणहार, हारौ (हारी), **लिक्खावणियौ**—वि.।
लिक्खाविग्रोड़ौ, लिक्खावियोड़ौ, लिक्खाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लिक्खावीजणौ, लिक्खावीजबौ—कर्म वा.।

लिक्खावियोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लिक्खावियोड़ी)

लिक्खियोड़ौ—देखो 'लिखियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लिक्खियोडी)

लिक्ख—देखो 'लीख' (रू. भे.)

लिखण—देखो 'लिखत' (रू. भे)

लिखणौ–सं. पु.—लिखने की क्रिया या भाव।
उ०—पछै हीराजी हेमजी स्वांमी नें कह्यौ: आप लिखणौ कांइ करौ। उदैराम जी स्वामी नैं पाणी पावौ। —भि. द्र.

लिखणौ, लिखबौ–क्रि. स.—१ किसी तिक्ष्ण या नुकीली चीज से कुछ अंकित करना।
२ कलम, पेन्सिल आदि के माध्यम से कागज पर अपने विचार, सिद्धांत, लेख आदि को वर्णाक्षरो द्वारा अंकित करना, लिपिबद्ध करना।
उ०—माणस हवां त मुख चवां, म्हैं छां कूंझडियांह। प्रिउ संदेसड पाठविसु, लिखि दै पंखडियांह। —ढो. मा.
३ कूंची, ब्रुश आदि से चित्र बनाना।
उ०—लारोवरि अस चित्राम कि लिखिया, निहखरता नरवरै नर। माखण चोरी न हुवै माहव, महियारी न हुवै महर। —वेलि
४ किसी साहित्यिक कृति की रचना करना, साहित्य-सृजन करना।
ज्यूं—बात लिखणी, गीत लिखणौ

क्रि प्र. ५ किसी कारण एवं परिणाम के घटित होने पर संयोग की प्रतीति होना ।

ज्यू—भाग में लिखा होना, प्रारब्ध में होना ।

उ०—धारै मन बैठूं धोळेहर, तापै सूनां ढूंढ तठै । मोटा आखर कवण मेटवै, कुटी लिखी सो महल कठै । —ओपो आढो

लिखणहार, हारौ (हारी), लिखणियौ —वि० ।

लिखिओड़ौ, लिखियोड़ौ, लिख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लखीजणौ, लिखीजबौ —कर्म वा० ।

लखणौ, लखबौ, लिक्खणौ, लिक्खबौ, लिहणौ, लिहबौ, लीखणौ, लीखबौ—रू० भे० ।

लिखत-सं. पु.—१ लिखने की क्रिया या भाव ।

२ लिखा हुआ, लिपि बद्ध ।

३ नियम ।

उ०—जद स्वांमी जी कह्यौ थांरा नियम टोळा में इसौ लिखत है—इकीस टोळां री थांमै आवै तौ दिक्षा देइ मांहै लैणौ । —भि. द्र.

४ कानूनी रूप से प्रमाणित माना जाने वाला दस्तावेज, लिखा हुआ प्रमाण-पत्र या सनद ।

५ भाग्य का लेख ।

रू. भे.—लिखण, लीखत ।

लिखमण—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—१ चरस करत लिखमण चमर, सरस अगर सांमीर । इम सियजुत जन-मंछ उर, बसौ सदा रघुबीर । —र. रू.

उ०—२ बैद पतूसतूसू लंका वस, सो आवै धारक सुरत । जिकौ बतावै जड़ी संजीवन, तौ लिखमण ऊठै तुरत । —र. रू.

लिखमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.) (ह. नां मा.)

उ०—प्रभणौ पितमात पूत मत पातरि, सुर नर नाग करै जसु सेव । लिखमी समी रुकमणी लाडी, वासुदेव सम सुत वसुदेव । —वेलि

लिखमीनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—सरब कांम नांमै-लेखै रौ मुदार बेटै ऊपर ओर देवीदास रै ठाकुरां रै दरसण री प्रतिग्या सो सहर सूं बाहिर अधकोस देहरौ तठै स्री लिखमीनाथ जी बिराजै सो देवीदास नित दरसण करवानै जावै । —पलक दरियाव री बात

लखमीनारायण—देखो 'लक्ष्मीनारायण'

लिखमीनाह—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—ग्राह जूंण तज ग्राह, देह दिव्य पाई तुरत । निरखै लिखमी नाह, परसै पग पावन हुवौ । —गज उद्धार

लिखमीबर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—अकळ तुहिज कै कोइ अवर, बोहोनांमी बूझब्ब । लिखमीबर लेखै नहीं, समवड प्रांणी सब्ब । —ह. र.

लिखमीभरतार—देखो 'लक्ष्मीभरतार' (रू. भे.)

लिखमीवंत—देखो 'लक्ष्मीवंत' (रू. भे.)

लिखमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे) (ह. नां. मा.)

उ०—लिखमीवर आयां सुर लाधै, वेळां चढै अजोबळ बाधै नर-वर प्रथी खबर सुज पाया, चगथौ आवै राह चलाया । —रा. रू.

लिखम्मी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—लिखम्मी पग्ग धरै उर लेह, रहै सिध बुद्ध पगां तळ बेह । नमै पग छांह गोतम्म नारद्द, वंदै पग गरग कपिल्ल बेहद्द । —ह. र.

लिखवाई—देखो 'लिखाई' (रू. भे.)

लिखांतर—देखो 'लेखांतर' (रू. भे.)

लिखाई-सं. स्त्री.—१ लिखने की क्रिया या भाव ।

२ लिखने का तरीका, ढंग, लिखावट ।

३ लिखने की मजदूरी

४ चित्र अंकित करने की क्रिया या भाव ।

रू. भे. लिखवाई

लिखाड़णौ, लिखाड़बौ—देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू. भे.)

लिखाड़णहार, हारौ (हारी), लिखाड़णियौ—वि० ।

लिखाड़िओड़ौ, लिखाड़ियोड़ौ, लिखाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लिखाड़ीजणौ, लिखाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लिखाड़ियोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू.)

(स्त्री. लिखाड़ियोड़ी)

लिखाणौ, लिखाबौ-प्रे. रू. —१ किसी तीक्ष्ण या नुकीली चीज से कुछ अंकित कराना ।

२ कलम, पैंसिल आदि के माध्यम से वर्णाक्षर अंकित कराना, लिपिबद्ध कराना ।

३ कूंची, ब्रुश आदि से चित्र बनवाना ।

४ किसी साहित्यिक कृति की रचना कराना, साहित्य सृजन कराना ।

लिखाणहार, हारौ (हारी), लिखाणियौ—वि. ।

लिखायोड़ौ—भू. का. कृ. ।

लिखाईजणौ, लिखाईजबौ—कर्म वा. ।

लिक्खाड़णौ, लिक्खाड़बौ, लिखाड़णौ, लिखाड़बौ, लिखावणौ, लिखावबौ, लिहाड़णौ, लिहाड़बौ, लिहाणौ, लिहाबौ, लिहावणौ, लिहावबौ—रू. भे. ।

लिखापढ़ी-सं. स्त्री. —१ लिखने का कार्य, लिखाई ।

२ पत्र-व्यवहार, पत्राचार।
३ लिखित संधि, शर्तनामा या अनुबन्धन।
क्रि. प्र.—कराणी, व्हैणी, होणी

लिखाबट, लिखाबटि, लिखाबटी—देखो 'लिखावट' (रू. भे.)

उ०—पाती चंद्रसेणी भूप देणी धार लीनी। पातीवार तीना की लिखाबटी माड दीनी। —शि. व.

लिखायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी तीक्ष्ण या नुकीली वस्तु से अंकित कराया हुआ. २ कलम पेन्सिल आदि से वर्णाक्षर अंकित कराया हुआ. ३ कूची ब्रुश आदि से चित्र बनाया हुआ. ४ साहित्य-सृजन कराया हुआ।
(स्त्री. लिखायोडी)

लिखारौ—वि.—लिखने वाला, लेखक।

लिखावट—स. स्त्री—लेखन प्रणाली, लिखने का तरीका, ढंग।
२ किसी के हाथ से लिखे अक्षर, लिपि।
३ लिखे हुए वाक्यो का समूह, लेख।

उ०—लिखै है अेक अ्रित-सजीवणी दवा री नुसखौ, प्रांण भर दै जिसौ साबर-मतर। ई लिखावट माथै ई तौ सगळौ दारमदार है। —वरसगाठ

रू. भे.—लखावट, लिखाबट, लिखाबटि, लिखाबटी

लिखावणी—स स्त्री.—लिखाने की मजदूरी, लिखाई।

लिखावणौ, लिखावबौ—देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू भे)

उ०—पण उण में अेक मोटी खोड आ ही के नीं तौ वौ किणी आसामी सूं खातौ लिखावतौ अर नी किणी नै खातौ लिखतौ। —फुलवाडी

लिखावणहार, हारौ (हारी), लिखावणियौ—वि।
लिखाविओड़ौ, लिखावियोड़ौ, लिखाव्योड़ौ—भू का. कृ.।
लिखावीजणौ, लिखावीजबौ—कर्म वा.।

लिखावियोड़ौ—देखो 'लिखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लिखावियोडी)

लिखावत, लिखावतू—स. पु.—बादशाह एवं महाराजाओ द्वारा अपने सम्मानित व्यक्तियो के पत्र मे प्रयोग किया जाने वाला शब्द।

उ०—पछै महेसदासजी जाळौर पायी, गढपती हुवा जिणसू लिखावट आगै न रही। प्रथीराज रै मनसब घणौ हौ जिण सूं वचनात् नहीं नै लिखावतू लिखीजतौ। —बा. दा. ख्यात

लिखित—भू का. कृ.—१ लिखा हुआ, लिपि बद्ध।
२ किसी प्रमाण या सनद के रूप मे लिखा हुआ।
स. पु.—१ एक मुनि, जो जैगीष्यव्य के दो पुत्रो मे से एक था।
२ चंपकापुरी के हंसध्वज राजा का एक दुष्ट कर्मा पुरोहित।

लिखितकला—स स्त्री—७२ कलाओं मे से एक।

लिखिमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लिखमीवंत—देखो 'लक्ष्मीवत' (रू. भे.)

उ०—लिखमीवंत खेतसी तणउ, अखइराज सोनिगिरउ भण्उ। ब्राह्मण तणा कराव्या ज्याग, सवा लाख जिणि दीधा त्याग। —का. दे. प्र.

लिखू—स. स्त्री—सप्तकोशी नदी की एक सहायक नदी का नाम।

लिग—१ किंचित, थोडा।

उ०—जनहरीया नही भाजिसी, संदेसौ डिगमिग। पीव मिळै पर-मातमा, अनेसौ नहीं लिग। —अनुभववाणी

लिगतर—स. पु—फटा पुराना जूता।

उ०—थोड़ी ताळ पछै फाटोड़ा लिगतरां रा फटकारा बजावतौ अेक डोकरौ म्हारै पाखती आयनै ऊभग्यौ। —फुलवाडी

रू. भे.—लगतर, लिग्तर।
अल्पा—लपतरौ, लिगतरौ, लिग्तरौ, लीतरौ।

लिगतरौ—देखो 'लिगतर' (अल्पा. रू. भे)

लिगतौ—सं. पु. [स्त्री. लिगती] कुत्ता, श्वान।
वि.—पीछै पडने वाला पिछलग्घू।

उ०—तनै ठा कोनी, अै लिगता है साळा, इयां नै घालसां तौ बीजा चार और आय जासी, इयै वास्तै टैम-बे-टैम को हिळावा नी। —वरसगाठ

लिगदौ—स. पु. (स्त्री. लिगदी) १ दुर्बल, अशक्त।
२ गिलै चूर्ण का लौंदा।

लिगन, लिगन्न—१ देखो 'लग्न' (रू. भे.)

उ०—लिगन्ना नारेळ लेर देर सावौ नकौ लीधौ, सजाये ठीकांणा बेहू ब्याव का सामांन। हगामा होकबा राग रग रा हमेस हुवै। अठी जान वाळी सोभा बणावै आजांन। —बादरदांन दधवाड़ियौ

२ देखो 'लगन' (रू भे.)

लिगरियौ—१ देखो 'लगरचौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लिगरू' (अल्पा., रू भे.)

उ०—ताहरां ईयै कही, 'साह तौ लिगरू रावळ जी रा खांनैजाद छै सुकुनां री ईहा कही सु इहां री सोय हती पण ईहां भरीयै दरबार कही, इतरी इणां माहै चूक छै। —वरसै तिलोकसी री वात

२ एक प्रकार का बरसात मे होना वाला पौधा या घास विशेष।
अल्पा.,—लिगारियौ, लिगरचौ

लिगलिगाटिया–सं. पु.—१ बिलबिलाने की क्रिया।

उ०—माथै खरोटिया, जका में थोड़ौ सामांन' र पूर-पल्लौ मारग वैता-आदमिया नै **लिगलिगाटिया** करता कैता हा—"बाबूजी! आटौ, ग्रेकानै रौ आटौ। भूखा हां दया करौ।" —वरसगांठ

२ बक-झक।

लिगार, लिगारइ, लिगारि, लिगारी, लिगारै—देखो 'लगार' (रू. भे.)

उ०—१ 'मुकन' सुतन बळ मडअत, पडी न खड **लिगार**। 'रेणा-यर' 'रामंग' रू, सरू हुवौ गह सार। —रा. रू.

उ०—२ पाखलि करधा काठगढ खाई, नहीय **लिगारइ** माग। घोडा हाथी रहइ पाखरया, किम लहैसइ लाग। —का. दे. प्र.

उ०—३ हम सोई सत्ता सत्ता सोई हम है, ज्यूं अग्नि उरण इक सारी। सुखराम आपना आप अनता, नहिं द्वैताद्वैत **लिगारी** —सुखरांमजी महाराज

उ०—४ सु राव छोड़ करण पधारण लागा। तरै कूतरै कान फड़फड़ाया। तरै राव हेटा बैठा। **लिगारै** वळै उठीया तरै वळै कूतरै कांन फड़फड़ाया। —राव लाखै री बात

लिगीक, लिगीयर—देखो 'लगार' (रू. भे.)

लिग्तर—देखो 'लिगतर' (रू. भे.)

लिग्तरौ—देखो 'लिगतर' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—बूटी रौ नांव घोखतौ घोखतौ चोथोडौ बेटौ ई ढळग्यौ कोई आध घड़ी रै उपरांत नाड देखतौ देखतौ वेदराज डोकरिया रा माथा में आवेस **लिग्तरा** री जतराई। —फुलवाड़ी

लिड़की–सं. स्त्री.—उद्दण्ड गाय के गले या सींगों से हर समय बंधी रहने वाली रस्सी।

लिड़ाणौ, लिड़ाबौ–क्रि. स.—१ बांधना या कसना।

उ०—सो किण भांति रा बाकरा जिके कड़कती नळीरा, भाहरै साव रा, मादळिए पेट रा, माडि बोर, काचर रा बरड़णहार, घणै कूंभट नै वावली री टीसीआं रा भाड़णहार, सिखिरि रा मालणहार, फिरणीग्रं रा बैसणहार, वालखसी बाकड़ा बिसे बोकड़ा, खोरडे खीलहरी रा चारीओडा, सौ ऊंठा बिसे बोकड़ा मसकां री भांति सों **लिड़ाइ** नै घातिम्रा छै। —रा. सा. सं.

२ लंबछड़ से दग्ध करना, दागना।

लिचणी–सं. स्त्री.—१ घुटने के पीछे का भाग जहाँ से पैर मोड़ खाता या झुकता है।

लिचपिच—देखो 'लचपच' (रू. भे.)

उ०—ल्यावणवाळां नै **लिचपिच** लापसी जी, काटणवाळां नै गुदळी खीर ग्रो क वरसै वरसोदण होळी पावणी जी। —लो. गी.

लिचपिचौ—देखो 'लचपचौ' (रू. भे.)

लिचापिच्च—१ चिन्ता, उचाट।

उ०—**लिचापिच्च** लागी घड़ीताल भाजै, अहौ कोई राखै अठै अम्ह काजै। इसै संकटै जे जपै जैनराजै, सही पार पांमै तिके सुक्ख साजै। —ध. व. ग्रं.

लिच्छमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे)

लिच्छमीनाथ—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

लिच्छमीनारायण—देखो 'लक्ष्मीनारायण' (रू. भे.)

लिच्छमीनाह—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

लिच्छमीपति देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

लिच्छमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

लिच्छवी–सं. पु.—१ एक ऐतिहासिक राजवंश जिसका नैपाल, कौशल और मगध में राज्य था।

२ देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे)

लिछपचती–वि—कोमल, मुलायम।

लिछमण, लिछमन—देखो 'लक्ष्मण' (रू. भे.)

उ०—**लिछमण** बोलग्या एक बार, म्हारी सिन्या का सिरदार। —गी. रां.

लिछमी—देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—१ म्हांरै आंगण आंम, पिछोकडै मरवौ यौ घर सदा ए सुवा-वणौ। तू तो चाल **लिछमी** जै घर चालां, जै घर रळी ग्रै वधांमणा। —लो. गी.

उ०—२ मोटियार हाथां पर थुकावतौ रैतौ, सौः वास दातारी रा गुण गावतौ कैतौ—लुगाई के है, **लिछमी** है। —दसदोख

उ०—३ एक दिन **लिछमी** सेठ नै दरसण दिया। कह्यौ सात पीढिया सूं इण घर री ठायौ नीं छोडियौ। —फुलवाड़ी

लिछमीकत, लिछमीकांत—देखो 'लक्ष्मीकांत' (रू. भे.)

लिछमीनाथ, लिछमीनाह—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू. भे.)

उ०—हर मत छोडै रै हिया, लिया चहै जो लाह। दिल सांचै तेड़ौ दियां, नेड़ौ **लिछमीनाह**। —र. ज. प्र.

लिछमीपति—देखो 'लक्ष्मीपति' (रू. भे.)

उ०—मामूली मजूरी पर कांम कर' र जिण मकांन में एक मजूर रातवासौ लैणौ चावै है। उणनै घेरणां ऊभी ही **लिछमीपतियां** री टोळी ग्रर खनै ऊभी ही वांरी आपरी पुळिस। —रातवासौ

लिछमीवर, लिछमीवर—देखो 'लक्ष्मीवर' (रू. भे.)

उ०—धरणीतळ ब्याकुळ छेलौ सिर धुणियौ, सरणागत बच्छळ हेलौ नह सुणियौ। **लिछमीवर** छांनूं कांनूं लै लीनूं, दीनन बधु हुय दीनन दुख दीनूं। —ऊ. का.

उ०—२ भरै न जम नै भोग, डरै न किण सूं देखजौ। **लिछमीवर** रा लोग, मरै न जलमें मोतिया। —रायसिंह सांदू

लिछमीस—देखो 'लक्ष्मीस' (रू भे.)

उ०—**लिछमीस** राम अगभग लखौ, परमेस पाळ जन दीन पखौ। हर पाप ताप दुख-ताप हरी, तिण पाय रेण रिख नार तरी। —र. ज. प्र.

लिछम्मी—देखो 'लक्ष्मी' (रू भे.)

लिछम्मीकत, लिछम्मीकांत—देखो 'लक्ष्मीकात' (रू भे.)

उ०—ज्वाळानळ जाळण काळ-जवन्न, कियौ मुचकंद हुकम्म किसन्न। बाणासुर छेद भुजा बळवत, कीधौ बौह चीर **लिछम्मीकत**। —ह. र.

लिछम्मीनाथ, लिछम्मीनाह—देखो 'लक्ष्मीनाथ' (रू भे.)

उ०—नमौ बपु दीरघ बामन बेख, भिखंग पुरदर भांजण भेख। नमौ नरसिंघ लिछम्मीनाह, बिसभर बिट्ठल आदि बराह। —ह. र.

लिटणौ, लिटबौ—क्रि. अ. - लोट-पोट होना, लुटना।

उ०—ऊटड़ा उगाळी सारै, भोक लिटै फिर फिर चरै। इण घिटाळ घसकै घणैरा, गोळ टौळ मीगण करै। —दसदेव

लिटणहार, हारौ (हारी), लिटणियौ—वि.।

लिटिग्रोड़ौ, लिटियोड़ौ, लिट्योड़ौ—भू का. कृ.।

लिटीजणौ, लिटीजबौ भाव वा.।

लिटियोड़ौ—भू का. कृ.—१ लोटपोट हुवा हुआ, २ लुटा हुआ.

(स्त्री. लिटियोडी)

लिता—देखो 'लता' (रू भे)

उ०—कहियौ मैं के कहूँ किसूं अधौ तै कहियौ। **लिता** पान धनख रांम, छबकाळौ लहियौ। —र. ज. प्र.

लित्त—सं. पु—तुरन्त की लिपी हुई जमीन लाघकर आहार आदि लेने का दोष। (जैन)

लिद्ध—देखो 'लद्ध' (रू. भे.)

उ०—इसीय वाच गयणह पडी, तउ मइं **लिद्ध** कुमारि, सत्यवती नामि हुसिए सतण घर नारि। —सालिभद्र सूरि

लिप—स. स्त्री.—१ प्लीहा, तिल्ली।

२ देखो 'लप' (रू. भे.)

लिपटणौ, लिपटबौ—क्रि अ.—देखो 'लपटणौ, लपटबौ' (रू. भे.)

उ०—लोहा लिपट्या काठ नूं, घूम रह्या जळ माय। बडा डूबण नाहि दै, जाकी पकडी बाय। —अग्यात

लिपटणहार, हारौ (हारी), लिपटणियौ—वि०।

लिपटिग्रोड़ौ, लिपटियोड़ौ, लिपट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपटीजणौ, लिपटीजबौ—भाव वा०।

लिपटाड़णौ, लिपटाड़बौ—देखो 'लपटाणौ, लपटाबौ' (रू. भे.)

लिपटाड़णहार, हारौ (हारी), लिपटाड़णियौ—वि।

लिपटाड़िग्रोड़ौ, लिपटाड़ियोड़ौ, लिपटाड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिपटाड़ीजणौ, लिपटाड़ीजबौ—कर्म वा.।

लिपटाड़ियोड़ौ—१ देखो 'लिपटायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लिपटाड़ियोड़ी)

लिपटाणौ, लिपटाबौ—देखो 'लपटाणौ, लपटाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पल्लव फूल वसन आभूसण, इतर पराग लगायी। बेल्या मन सजधज अलबेल्या, पति तरु सू **लिपटायी**। —लो. गी.

उ०—२ हल्दी तौ पीठी म्हारै अंग लिपटाई, महदी सूं राच्या म्हारा हाथ। छपन कोड जादू जान पधारचा, दूल्हौ श्रीनदकवार। —मीरां

लिपटाणहार, हारौ (हारी), लिपटाणियौ—वि०।

लिपटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपटाईजणौ, लिपटाईजबौ—कर्म वा०।

लिपटायोड़ौ—देखो 'लपटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपटायोड़ी)

लिपटावणौ, लिपटावबौ—देखो 'लपटाणौ, लपटाबौ' (रू. भे.)

लिपटावणहार, हारौ (हारी), लिपटावणियौ—वि०।

लिपटाविग्रोड़ौ, लिपटावियोड़ौ, लिपटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपटावीजणौ, लिपटावीजबौ—कर्म वा०।

लिपटावियोड़ौ—देखो 'लपटायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपटावियोडी)

लिपटियोड़ौ—देखो 'लपटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपटियोड़ी)

लिपणौ, लिपबौ—क्रि. अ.—किसी वस्तु का किसी तरल पदार्थ से लिपना या पुतना।

उ०—सील सतोस सदा रहै सीतल, आनद रूप रहै जांह ताही। पेम प्रवाह भयै तन भीतरि, और विकार **लिपै** नही काही। —अनुभववांणी

लिपणहार, हारौ (हारी), लिपणियौ—वि।

लिपग्रोड़ौ, लिपयोड़ौ, लिप्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिपीजणौ, लिपीजबौ—भाव वा।

लिपत—देखो 'लिप्त' (रू. भे.)

उ०—पसरे तीनो लोक मे, **लिपत** नहीं धोखै। सो फल लागौ सहज मे, सुदर सब लोकै। —दादूबांणी

लिपरकौ—सं. पु. [अनु.] १ भय या चिंता के कारण विशिष्ट अगो मे स्फुरण होने की क्रिया। लिप-लिप होने की क्रिया।

उ०—ओथि कुवर जी पधारै हुंता चढिया तठै सुरताण, प्रिथीराज,

अमरो, गोपाळदास श्रे च्यारै दीठा अर मदने री गांडि फाटि अर लिपरका करणी लागी। —द. वि.

२ देखो 'लपरको' (रू. भे.)

लिपळी-सं स्त्री.—१ लार, थूक।

२ टक्कै धेले पर सभोग कराने वाली, व्यभिचारिणी।

उ०—सरती सदनामी चाहत नहीं चोरी, डरती बदनामी गावत नहि डोरी। चित भव भाडां री चरचा नहि चावै। लिपळी रांडां री अरचा नहि लावै। —ऊ. का.

लिपळौ-वि. (स्त्री. लिपळी) १ जो कभी किसी बात की ओर कभी अन्य बात की तरफ झुकने वाला, अस्थिर दिमाग वाला।

उ०—दुनियां दातारां जूझारा देवै। लिपळा लोकां नै लेखै कुण लेवै। - ऊ. का.

२ अविवेकी, मूर्ख।

३ व्यभिचारी, जार।

लिपवाड़णौ, लिपवाड़बौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लिपवाड़णहार, हारौ (हारी), लिपवाड़णियौ—वि.।

लिपवाड़िओड़ौ, लिपवाड़ियोड़ौ, लिपवाड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिपवाड़ीजणौ, लिपवाड़ीजबौ—कर्म वा.।

लिपवाड़ीयोड़ौ—देखो 'लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपवाडियोड़ी)

लिपवाणौ, लिपवाबौ-देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लिपवाणहार, हारौ (हारी), लिपवाणियौ—वि.।

लिपवायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लिपवाईजणौ, लिपवाईजबौ—कर्म वा.।

लिपवायोड़ौ—देखो 'लिपायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपवायोड़ी)

लिपवावणौ, लिपवावबौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाणौ' (रू. भे.)

लिपवावणहार, हारौ (हारी), लिपवावणियौ—वि०।

लिपवाविओड़ौ, लिपवावियोड़ौ, लिपवाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपवावीजणौ, लिपवावीजबौ—कर्म वा०।

लिपवावियोड़ौ—देखो लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपवावियोड़ी)

लिपसा-देखो 'लिप्सा' (रू. भे.)

लिपाई-स. स्त्री—१ लीपने की क्रिया या भाव।

२ उक्त कार्य का पारिश्रमिक या मजदूरी।

लिपाड़णौ, लिपाड़बौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लिपाड़णहार, हारौ (हारी), लिपाड़णियौ—वि०।

लिपाड़िओड़ौ, लिपाड़ियोड़ौ, लिपाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपाड़ीजणौ, लिपाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लिपाड़ियोड़ौ—देखो 'लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपाड़ियोड़ी)

लिपाणौ, लिपाबौ-क्रि. स. (लिपणौ क्रि. प्रे. रू.) किसी वस्तु को किसी तरल पदार्थ से लेप कराना, पुताना।

ज्यू.—चौक लिपाणौ, घर लिपाणौ।

उ०—लिपइ तावनिकदनि, चदनि देहु। निज निज नाथ संभारिय, नारिय नवलउ नेहु। —जयसूरि

लिपाणहार, हारौ (हारी), लिपाणियौ—वि०।

लिपायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपाईजणौ, लिपाईजबौ—कर्म वा०।

लिपवाड़णौ, लिपवाड़बौ, लिपवाणौ, लिपवाबौ, लिपवावणौ, लिपवावबौ, लिपाड़णौ, लिपाड़बौ, लिपावणौ, लिपावबौ—रू० भे०

लिपायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी तरल पदार्थ से लेप कराया हुआ, पुतवाया हुआ।

(स्त्री. लिपायोड़ी)

लिपावणौ, लिपावबौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ (रू. भे.)

लिपावणहार, हारौ (हारी), लिपावणियौ—वि०।

लिपाविओड़ौ, लिपावियोड़ौ, लिपाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लिपावीजणौ, लिपावीजबौ—कर्म वा०।

लिपावियोड़ौ—देखो 'लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिपावियोड़ी)

लिपि-सं. स्त्री [सं.] १ वर्णाक्षर लिखने का ढंग, लिखावट।

उ०—लिपि लापर लेख लिखावन की, दुनियां विधि देख दिखावन की, परमातम की नही पावन की, वक अलिय ब्रह्म बतावन की। —ऊ. का.

२ लेख, हस्तलेख।

लिपिभेद-सं. स्त्री.—७२ कलाओं में से एक।

उ०—दंडलक्षण, रत्नपरीक्षा, कनक परीक्षा, टंक परीक्षा वस्त्र-परीक्षा, लिपिभेद। —व. स.

लिपियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ तरल पदार्थ से लिपा हुआ, पुता हुआ।

लिपी-सं. स्त्री.--देखो 'लीपी' (रू. भे.)

लिप्त-वि. [सं.] १ पुता हुआ, लिपा हुआ. २ ढका हुआ, छिपा हुआ।

३ लगा हुआ, संलग्न।

रू. भे.—लिपत

लिप्सर-सं. स्त्री. [अनु.] १ चलते समय फटी-पुरानी जूती से उत्पन्न ध्वनि।

उ०—बापडौ लिप्तर-लिप्तर कित्ता कोस सू चलायनै आयौ, जल्दी सू सीदौ देय उणनै सीख देवौ। —फुलवाडी

२ फटी पुरानी जूती।

लिप्ता–सं. स्त्री.—समय का एक मान जो प्राय: एक मिनिट के बराबर होता है। (ज्योतिष)

लिप्सा–स स्त्री. [स.] १ किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा या अभिलाषा।

२ लालच, लोभ।

रू. भे.—लिपसा

लिप्सु–वि.—लोलुप, लालची।

लिफाफौ–सं. पु. [अ. लिफाफ:] १ कागज का बना वह थैला जिसमें पत्र अथवा अन्य सामान डाला जा सके।

उ०—कारड तौ केतौ फिरै, हर कोइ ने हकनाक। जिण री व्है जिणनै कहै, लेवै लिफाफौ राख। —अग्यात

२ लाक्षणिक अर्थ मे ऊपरी तड़क-भड़क, बाह्य आडम्बर।

लिबरल–वि. [अं.] ऊचे दिल का, असंकीर्ण।

उ०—अर इण वात माथै घर रा मिनखां मे फट पडग्यौ। दो दळ वणग्या है। एक लिबरळ अर दूजौ कजरवेटिव। —अमर चूनडी

लिबाळी—देखो 'लबाळी' (रू भे.)

लिबास–स. पु.—शरीर पर धारण करने के वस्त्र, पोशाक विशेष।

उ०—वाका लिबास तेरा सब जानी घोडा बे। पायकी पनियाइया वीछु डाक बे। —रसीले राज

रू. भे. लवेस, लिवास

लियण–वि.—लेने वाला।

उ०—१ भगवानदास भाराथ भल्ल, 'वगड़ी' तखत आखाडमल्ल। लांगुडौ हणु जिम लियण बाथ, ओगम लागै अणभग नाथ। —गु. रू. बं.

उ०—२ परभोम पचायण, घर दियण, जस लियण, कळायरौ मोर। —रा. सा. सं.

रू. भे.—लिअण

लियणौ, लियबौ—देखो 'लैणौ,लैबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ढाढी एक संदेसडउ, ढोलइ लगि लइ जाइ। कण पाकउ करसण हुअउ, भोग लियउ घरि आइ। —ढो. मा.

उ०—२ आगणि जळ तिरप उरप अलि पिम्रति, मरुत चक्र किरि लियत मरू। रामसरी खुमरी लागी रट, धूमा माठा चद घरू। —वेलि

उ०—३ ऊचा मदिर अति घणउ, आवि सुहावा कत। बीजळि लियइ झबूकड़ा, सिहरा गळि लागंत। —ढो. मा.

लियणहार, हारौ (हारी), लियणियौ—वि.।

लियणिओड़ौ, लियणियोड़ौ, लियण्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लियणीजणौ, लियणीजबौ—कर्म वा.।

लियाकत–स. स्त्री. [अ.] १ योग्यता, काबिलियत।

२ सामर्थ्य, शक्ति, उत्साह।

३ विद्वत्ता।

४ व्यवहार आदि मे शिष्टता, भद्रता, शालीनता।

रू. भे.—लयाकत, ल्याकत

लियाज—देखो 'लिहाज' (रू. भे.)

लियोड़ौ–भू का. कृ.—१ लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ. २ हाथ में पकडा हुआ, हस्तगत. ३ खरीदा हुआ. ४ अधिकार या कब्जे मे किया हुआ. ५ धारण किया हुआ ६ उधार के रूप मे प्राप्त किया हुआ. ७ वहन किया हुआ. ८ पहुचाया हुआ. ९ सेवन किया हुआ, खाया हुआ।

(स्त्री. लियोडी)

लिराड़णौ, लिराड़बौ—देखो 'लिराणौ, लिराबौ' (रू. भे.)

लिराड़णहार, हारौ (हारी), लिराड़णियौ—वि.।

लिराड़िओड़ौ लिराड़ियोड़ौ, लिराड़्योड़ौ—भू का. कृ.।

लिराड़ीजणौ लिराड़ीजबौ—कर्म वा.।

लिराड़ियोड़ौ—देखो 'लिरायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लिराडियोडी)

लिराणौ, लिराबौ–कि स.—किसी पदार्थ को लेने मे प्रवृत कराना।

२ किसी वस्तु को हस्तगत कराना।

३ कटाना, कटवाना।

उ०—तठा पछै कितरै हेक दिने राव मंडळीक रौ नाई नागही रै गांव गयौ हुतौ। तिण कना नागही बेटा री बहु पदमणी रा नख लिराया। —नैणसी

लिराणहार, हारौ (हारी), लिराणियौ—वि.।

लिरायोडौ—भू का. कृ.।

लिराड़णौ, लिराड़बौ, लिरावणौ, लिरावबौ—रू भे.।

लिरायोड़ौ–भू का. कृ—१ प्राप्त कराया हुआ. २ खरीदवाया हुआ. ३ धारण कराया हुआ. ४ अधिकार या कब्जे में कराया हुआ।

लिरावणौ, लिरावबौ—देखो 'लिराणौ, लिराबौ' (रू. भे.)

लिरावणहार, हारौ (हारी), लिरावणियौ—वि.।

लिराविओड़ौ, लिरावियोड़ौ, लिराव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिरावीजणौ, लिरावीजबौ—कर्म वा.।

लिरावियोड़ौ—देखो 'लिरायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिरावियोडी)

लिलड़ी—देखो 'लीली' (रू. भे.)

उ०—बागो सोवै पाट को ए लिलड़ी हरे हरे सूत कौ, पीळै पीळै पाट कौ, ग्रोर मखतूळ को, बादस्या नवाब म्हारौ दुलीराजा, निरखण ग्राई हो राज। —लो. गी.

लिलवट—देखो 'निलै' (रू. भे.)

उ०—भंवारे हौ भंवारौ गवरळ हे फिरै, हौ जी बैरो लिलवट आंगळ च्यार, हे गवरळ रूड़ौ हे नजारौ तीखौ हे नैणा रौ। —लो. गी.

लिलांम—देखो 'लीलांम' (रू. भे.)

उ०—जब लूं नित नांम तिलोचन बोल्यौ, भांमण भीयड़ होम भिड़ै। करवा ग्रह काज इसौ मोय ग्रागळ, मांणस कोय लिलांम मिळै। —भगतमाळ

लिलाड़—देखो 'ललाट' (रू. भे.)

उ०—१ जिण दीठां ग्रंतर न मावै खिण रौ, इण मूंढा री होड करै इसूं मूंडौ किणरौ। एक मिळै है लेखौ, लिलाड़ देखौ भावै ग्ररध चंद देखौ। —र. हमीर

उ०—२ लिलाड़ में सळ घाल्यां बींद ग्रांकड़ा रौ जोड़-तोड़ बिठाव तौ हौ कै बीदणी वेहल री चांदणी उघाड़ बारै जोयी। चिळकौ पड़ै जेड़ौ ग्राकरौ तावड़ौ। —फुलवाड़ी

लिलाड़ी—देखो 'ललाट' (ग्रल्पा., रू. भे)

उ०—सो रन में एक जवांन रूपवंत भला स्वभावां बडी लिलाड़ी भगवांन मिळियो। —नी. प्र.

लिलाट, लिलार—देखो 'ललाट' (रू. भे.)

उ०—१ मथुरा में कुब्जा कर राखी, म्हाजन की सी हाट। केसर चंदन लेपन कीन्हो, मोहन तिलक लिलाट। —मीरां

उ०—२ बस्यौ लिलाट राहु बिग्रहतै, संकर मयंक न राखि सकेहु। सरणाई 'खेता' सीसोदा, लाल केणी नहु कीयौ लेहु। —लाला हाडा रौ गीत

लिल्ला—क्रि. वि. [ग्र] ईश्वर के लिए, ईश्वर के नाम पर।

उ०—तोहीन ग्रदालत ग्रल-कितीक, लिल्ला वजूद है लासरीक। मालुम मुलायजै करहु माफ, ग्रालिम हैं ग्रालिमगीरग्राप। —ऊ. का.

लिवंग—देखो 'लवंग' (रू. भे.)

उ०—साग सीसव सरघू घणा रै, बोर कदंब नारंग नाग पुनाग रतांजणी रै, दीसता सार लिवंग। —कल्याण

लिव—सं. स्त्री—एकाग्रचित्तता से किसी बात की ग्रोर ध्यान लगाना। ध्यान-मग्न होना।

उ०—१ पेम प्रीत का पागड़ा, लिव की करूं लगांम। हरीया सासित, सुरति की, कीया निरत मुकांम। —ग्रनुभववांणी

उ०—२ संता घर ही में वइरागा, ग्रापा उलट ग्राप कूं देखै, रहे राम लिव लागा। —ग्रनुभववांणी

रू. भे.—लव।

लिवणौ, लिवबौ—देखो 'लैणौ, लैबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तूं तौ सूतौ नींद भरि, लिवै नचीतौ धंम। हरीया ग्राया जोवता, एक जुरा एक जम। —ग्रनुभववांणी

लिवणहार, हारौ (हारी), लिवणियौ—वि०।
लिविग्रोड़ौ, लिवियोड़ौ, लिव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लिवीजणौ, लिवीजबौ—कर्म वा०।

लिवाड़णौ, लिवाड़बौ—देखो 'लिवाणौ, लिवाबौ' (रू. भे.)

लिवाड़णहार, हारौ (हारी), लिवाड़णियौ—वि०।
लिवाड़िग्रोड़ौ, लिवाड़ियोड़ौ, लिवाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लिवाड़ीजणौ, लिवाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लिवाड़ियोड़ौ - देखो 'लिवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिवाड़ियोड़ी)

लिवाणौ, लिवाबौ—क्रि. स.—१ लेने का कार्य ग्रन्य से कराना।

२ हस्तगत कराना, पकड़ाना, थमाना।

३ मंगाना।

लिवाणहार, हारौ (हारी), लिवाणियौ—वि.।
लिवायोड़ौ - भू का. कृ.।
लिवाईजणौ, लिवाईजबौ—कर्म वा.।
लिवाड़णौ, लिवाड़बौ, लिवावणौ, लिवावबौ—रू. भे.।

लिवायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ लेने का कार्य ग्रन्य से कराया हुग्रा. २ हस्तगत कराया हुग्रा, पकड़ाया हुग्रा, थमाया हुग्रा. ३ मंगाया हुग्रा।

(स्त्री. लिवायोड़ी)

लिवाळ—देखो 'लेवाळ' (रू. भे.)

लिवावणौ, लिवावबौ—देखो 'लिवाणौ, लिवाबौ' (रू. भे.)

लिवावणहार, हारौ (हारी), लिवावणियौ—वि०।
लिवाविग्रोड़ौ, लिवावियोड़ौ, लिवाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लिवावीजणौ लिवावीजबौ—कर्म वा०।

लिवावियोड़ौ—देखो 'लिवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लिवावियोड़ी)

लिवास—सं. स्त्री.—१ छिपकली।

२ देखो 'लिबास' (रू. भे.)

लिवासड़ौ—देखो 'लिवास' (ग्रल्पा. रू. भे.)

लिविंग—देखो 'लवंग' (रू. भे.)

उ०—केवडीउ काथु लिविंग एलची बोदा काठी जाइफल जावित्री करपूर कस्तूरी तणइ सयोगि चुमरा पानना बीडा इम सरव परिवार नइ भोजन तंबोल दीधा । —ब. स.

लिबियोडौ – देखो 'लियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री लिबियोडी)

लिसद–स. स्त्री.—यश, कीर्ति (ग्र मा)

लिसोड़ा—देखो 'लसोडा' (रू. भे.)

लिह्–वि.—चाटने वाला।

लिहणौ —देखो 'लैणौ' (रू. भे)

उ० –जीग्ण रिणउ खाधं पांजरैं करि दीजइ, लिहणा देवा लोहडी यानी लाज न कीजइ, लेखउ करि लीजइ, राति जागीइ, दम्तरी लिखइ। —व. स.

लिहणौ, लिहबौ–क्रि. स.—१ चाटना ।

२ देखो 'लिखणौ, लिखबौ' (रू. भे.)

उ०—वनीता-पति विदेस गय, मदिर मझै ग्रइरयणीए। बाळा लिहइ भुयगो, कहि सुदरि कवण चुज्जेण। —ढो. मा.

लिहणहार, हारौ (हारी), लिहणियौ—वि.।

लिहिग्रोड़ौ, लिहियोड़ौ, लिह्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लिहीजणौ, लिहीजबौ—कर्म वा.।

लिहाड़ी–स. स्त्री.—मसाला पीसने की सिला।

लिहाज–सं पु. [अ.] १ आचार-व्यवहार में किसी के प्रति आदरवश रखा जाने वाला ध्यान, मान, मर्यादा।

उ०—लिहाज-लचका री की तौ माठ व्है। आवै जिणनै ई हुंकारौ भर दो। —फुलवाडी

२ ध्यान, खयाल।

उ०—यूं सोनार री जात छाकटी गिणीजै। वां रै धंधै में सगी मा रौ ई लिहाज कोनी राखै। —ग्रमरचूनडी

३ सकोच।

४ लज्जा, शर्म।

५ पक्षपात, तरफदारी।

उ०—दीवाण जी रै हेलौ मारचा बिना कोई पंचायती करी तौ बारै जेड़ौ भूडौ नी है। इण काम मे कोई लिहाज नी बरतैला। —फुलवाड़ी

लिहाजा—देखो 'लिहाजा' (रू. भे.)

लिहाणौ, लिहाबौ–क्रि. स.—१ चटाना।

२ देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू. भे.)

लिहाणहार, हारौ (हारी), लिहाणियौ—वि०।

लिहायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लिहाड़णौ, लिहाड़बौ, लिहावणौ, लिहावबौ—रू० भे०

लिहाफ–स. पु [ग्र] १ सर्दी में ओढने का रूईदार मोटा भारी वस्त्र, रजाई।

रू. भे.—लेहाफ

लिहायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ चटाया हुआ।

२ देखो 'लिखायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लिहायोडी)

लिहालु–स. पु.—कोयला।

उ०—कुडिनइ कारणि करि कुण, नर नीगमइ कोडि। लिहाला तणइ कारणइ कुण, ज्वालइ रे चंदन खोडकि। —नळदवदंती रास

लिहावणौ, लिहावबौ —१ देखो 'लिहाणौ, लिहाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लिखाणौ, लिखाबौ' (रू. भे)

उ०—देखि देखि नृपनदन दीसइ, एति सैन्य जिणि कीरति वरि सीड। चद्र नांमु तुझ ग्राज लिहावउं, ताहरु यश समुद्रि वहावउं। —सालिसूरि

लिहावणहार, हारौ (हारी), लिहावणियौ—वि.।

लिहाविग्रोड़ौ, लिहावियोड़ौ, लिहाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लिहावीजणौ, लिहावीजबौ—कर्म वा०।

लिहावियोड़ौ—१ देखो 'लिहायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लिखायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. लिहावियोड़ी)

लिहियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ चाटा हुआ।

२ देखो 'लिखियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लिहियोड़ी)

लींगटी–स. स्त्री.—१ रेखा, लकीर।

उ०—रिसता लोई री लींगटियां आडी ग्रंवळी कुरचोड़ी ही —फुलवाड़ी

२ पंक्ति, लाइन।

३ रीति-रिवाज, प्रथा।

रू. भे —लिंगटी, लीगठी।

लींगी—देखो 'लूगी' (रू. भे.)

लींड—देखो 'लींडौ' (मह. रू. भे.)

लींडी—देखो 'लींडौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

लींडौ–सं. पु.—१ मल-त्याग के समय बंधने वाली मल की बत्ती, विष्ठा।

अल्पा.—लींडी
महू.—लींड
२ छोटे बच्चों में एक दूसरे को चिढ़ाते समय हाथ के अंगूठे का इशारा।
क्रि. प्र.—दिखाणी, बताणी

लींण—देखो 'लीन' (रू. भे.)
उ०—झीणी माया लींण हुय, रही प्रांण सूं रचि। सिध सिन्यासी जोगना, गए मुनि जन पचि। —अनुभववांणी

लींब-सं. पु.—१ नींबू, नीब
उ०—लींब लविंगह लसणीआ, लींबोई लोबांन। लूखठ लासा लींबरू, लगियगि लांबां पांन। —मा. कां. प्र.
रू. भे.—लीब

लींबडौ-स. पु.—देखो 'नीम' (अल्पा. रू. भे.)
उ०—१ लोक परासि लींबडु, मधुरपणांनी माठि। काठि काठि कूंपलि सिरइ, परिण श्रेखरू क-काठि। —मा. कां. प्र.
उ०—२ देवी वम्मरै डूंगरै रत्न वन्नै, देवी थूंबडै लींबडै थन्न थन्नै। देवी भंगरै चाचरै छब्ब-छब्बै, देवी अबरै अंतरीखै अलंबै।। —देवि.

लींबरू-सं. पु.—वृक्ष विशेष।
उ०—१ लींब लविंगह लसणीआ, लींबोई लोबांन। लूखट लासा लींबरू, लगि थगि लांबां पांन। —मा. कां. प्र.

लींबू-सं. पु. [सं. नीम्बूक] नींबू।
उ०—लाभइ नवी तिली नइ विही, कोठी बडां तणी काचरी। आदां सूरण केलां हुआ, बीजोरां दाड़म लींबूआं। —कां. दे. प्र.

लींबोइ-सं. स्त्री.—वृक्ष विशेष।
उ०—लींब लविंगह लसणीआ लींबोइ लोबांन। लूखट लासा लींबरू, लगियगि लांबा पांन। —मा. कां. प्र.

ली-सं पु.—१ भौंरा, भ्रमर। (एका.)
२ ईश्वर।
३ मिलन, संगम।
सं. स्त्री.—४ सखी, सहेली।
५ पृथ्वी।

लीअण—१ देखो 'लियण' (रू. भे.)

लीक-सं. स्त्री.—१ लम्बा व पतला बनाया हुआ या अंकित किया हुआ चिह्न, लकीर, रेखा।
उ०—१ पइहिली ही पोतिं आंणि गलै वांधी। ताको द्रस्टांत। जैसे कपोत कहतां कंमेडा का कंठ की स्याह लीक देखीयै। —बेलि.
उ०—२ कंवर रै पलकां पीक, अधरां काजळ री लीक। आळस अंग भाल अलतारो रंग। —र. हमीर
२ सत्य वचन। (डिं. को.)
३ रास्ता, मार्ग।
उ०—लीक लीक गाडी वहै, कायर अनै कपूत। लीक तजै ऊबट वहै, सायर सिंघ सपूत।
४ पगडंडी।
५ सीमा, मर्यादा।
उ०—चुगलाळ प्रबळ भड चंचळां, लाख उभै चढि चल्लिया। मिटि जांणि लीक सातो महरण, हैक समुन्चै हल्लिया। —रा. रू.
६ प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा।
उ०—हसक पाव हमगत हसहम, प्रंशक प्रथा उदंत। बांझ नारि कुल लीक विधुसक, वाहत नपुंसक कंत। —ऊ. का.
७ प्रथा, रीति।
८ दोष, कलंक।
उ०—रांवण करता राज, लीक लंका तै लागी। जीवतैं किसनजी, द्वारका नगरी दागी। चावा रवि चंद नह, राहु आवी नै रोकै। पांडव कौरव प्रसिद्ध, सहु पड़िया दुख सोकै। —ध. व. ग्रं.
९ गिनती, गणना।
१० मटियाले रंग की चिड़िया विशेष।
११ लम्बी व सकड़ी जमीन।
१२ देखो 'लीख' (रू. भे.)
१३ देखो 'लीकी' (रू. भे.)
मुहा.—लोह री लीक=लोह की बनी रेखा, दृढ़ बात।
लीक कुटणी=पुरानी प्रथा पर चलना।
रू. भे.—लीह, ल्हीक
अल्पा. लीकटी, लीकड़ी, लीगटी

लीकटी—देखो 'लीक' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—चिड़ी कमेड़ी चील, जूजळा गोह टिटरिया। सरप संवार सरीर, लीकटी कोर लिटरिया। —दसदेव

लीकड़ियौ—१ देखो 'लीकी' (अल्पा., रू. भे.) (१)

लीकियौ-सं. पु.—१ लकड़ी पर लकीर या रेखा बनाने का औजार।
२ देखो 'लीकी' (अल्पा., रू. भे.)

लीकी-सं. स्त्री.—१ सकड़ी व लम्बी कृषि उपयोगी भूमि का मालिक।
२ संकड़ी व लम्बी कृषि उपयोगी भूमि।
उ०—भींडर रा महाराज री मां बाई राज बाई जे मोटा पली तीनै लीकी पातसाह री बीवी है। —बां. दा. ख्यात
३ देखो 'लीक' (अल्पा., रू. भे.)

लीख-सं. स्त्री [सं. लिक्षा] १ जूं का अंडा।

उ०—१ लारै बाळद री डेरौ लीनोड़ौ, दोळौ दाळदरौ घेरौ दीनोडौ। जूंवां लीखां रा जमियोड़ा जाळा, नीचा नमियोड़ा कड़ कोडा काळा —ऊ. का.

रू. भे.—लिकसा, लिक्स, लीक

लीखत—देखो 'लिखत' (रू. भे.)

लीखणौ, लीखबौ—देखो 'लिखणौ, लिखबौ' (रू. भे.)

उ०—जद स्वामीजी बोल्या; थारै बाप हुंड्या लीखी, थारै दादै हुंड्या लीखी, पाटा पाटी थेई संवेट्या कोई नही। —भि. द्र.

लीखीयौ–वि.—१ लिखा हुआ।

उ०—१ हरीया लीखीयौ भाग में, राम मता धन माल। एतौ नितप्रित संपजै, मेटै कौण मजाल। —अनुभववांणी

लीग–सं स्त्री. [अं.] दूरी का एक नाप।

लीगटी—देखो 'लींगटी' (रू. भे)

लीड़ी–स. स्त्री.—१ शरीर में दर्द के स्थान पर अग्निदग्ध लगाने की क्रिया या अग्निदग्ध से होने वाला निशान, चिन्ह, डाम।

रू. भे.—लीरड़ी।

२ रेखा, लकीर।

३ देखो 'लीरौ' (अल्पा., रू. भे.)

लीड़ौ–स. पु.—देखो 'लीड़ी (मह, रू. भे.)

लीची–स. स्त्री.—१ एक सदा-बहार पेड़ जिसका फल मीठा होता है।

२ उक्त पेड़ का फल।

लीछम्मि, लीछम्मी - देखो 'लक्ष्मी' (रू. भे.)

लीडर–स पु. [अं.] मुखिया, नेता,

लीडीकट–वि.—रेखा के समान सीधा।

उ०—डार अेकै पासै छै। अेकल अेक तरफ छै। सू अेकल किण भांतरौ छै। जैरो बारह आगळ खग लीडीकट छै। —गगेव नीबावतरौ दो-पहरौ

लीण–सं पु.—१ वर्षा ऋतु मे आकाश में आच्छादित जल रहित बादल लौर।

उ० —१ राग सामीर सारंग डाणै ग्रहै, बाइ ऊपडीया लीण जांणै वहै। —गु. रू. ब.

उ०—२ जूमगौ मुहै हुए दखणि जळा हीण। किरि बरखा रित चालिया, घणहर वूठै लीण। —गु. रू. बं.

२ उचित, योग्य।

उ०—लीण औ अलीण, भीत चीन्ह तैं लह्यो। लीण व्है अलीण, दोउ दीन तै गयौ। —ऊ. का.

३ देखो 'लीन' (रू. भे)

उ०—१ लीण हीण ज्या सौं गज लागै, ए कोई बळ सादूळै आगै। सेवै छत्रपति छोड समीसर, ओपै धजा जगत चै ऊपर। —रा. रू.

उ०—२ हंस गमणि हेजइं हीइं, राति दिवस सुख संग। राणौ लीण हुऔ तुरत, जिम चदन तरुहि भुजग। —प. च. चौ.

४ देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

लीणउ—देखो 'लीन्हौ' (रू भे.)

लीणता—देखो 'लीनता' (रू भे.)

लीतरौ—देखो 'लिगतरौ' (रू. भे.)

लीद–सं स्त्री—१ हाथी, घोड़ा, गधा आदि का मल।

उ०—१ हुंसनै कैवण लागा—सेठा जे ताकड़ी चालणा सूं ई राजी व्हौ तौ तबेला में छोटा मोटा साठ घोड़ा घोड़ी है। नित दोनूं टक वारी लीद जोख्या करो। फुलवाड़ी

मुहा.—लीद काडणी=कीसी को बुरी तरह पीटना, मारना।

रू. भे.—लाद

मह —लीदड

लीदड़—देखो 'लीद' (मह., रू. भे.)

लीध, लीधुं, लीधु, लीधू, लीधौ—देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

उ०—आंणौ सुर असुर नाग नेत्रै नहि, राखियौ जइ मंदर रई। महण मथैमूं लीध महमहण, तुम्हा किणै सीखव्या तई। —वेळि

उ०—२ जिण राणी चवदै सुत जाए, सो पित हता तेज सवाए। दक्खिण लीध जीपि खग दावैं, कपाळिया भड तिकै कहावै। —सू. प्र.

उ०—३ खुरम प्रवाणा मेलिया, लीधा राठौडेय। 'गजबंधी' आयौ खडै, चडि तीन्है घोडेय। —गु. रू. ब.

उ०—४ 'केहर' 'अचळ' कमध तण, उर पण लीधौ एम। वरण त्रिविद्धि साह घड़, मरण तणै द्रढ नेम। —रा. रू.

उ०—५ सुदरि चोरै सग्रही, सब लिया सिणगार। नक फूली लीधी नही, कहि सखि कवण विचार। —ढो. मा.

(स्त्री. लीधी)

लीधमिण–स. स्त्री. [स॰ ऋद्ध+मणि] १ मूंगा, प्रवाल। (अ. मा.)

लीधियोड़ौ—देखो 'लियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लीधियोड़ी)

लीन–वि. [सं] १ बिल्कुल मिला हुआ, समाविष्ट।

२ अनुरक्त।

उ०—१ मीरां हरि में लीन भई। सबकूं छांड मज्यौ साहिब कूं, गुरु की सरण गइ। —मीरां

उ०—२ कहा लीन सुकदेव था, कहां पीपा रेदास। दादू साचा क्यो छिपै, सकळ लोक परकास। —दादूबाणी

३ लुप्त, गायब।

उ०—जो कहा हिरण री खुरी, दीठा किणनूं सुहावै सुणतांही लागै बुरी कदंच जो कहा समंदरी सीप, तिका पिण न फाबै इणरै समीप। भेर जो मीढा छोटी सी मीन, तिका तो लाजा मरती हुई जल में लीन। —र. हमीर

४ किसी कार्य में निमग्न या तल्लीन।

उ०—१ सहज प्रमाणी सापरत, लहौ एक रस लीन। मुकता चुगही हंस मिळ, मिळ बक चुनही मीन। —र. हमीर

५ चिपटाया हुआ, सटा हुआ।

६ देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

रू. भे.—लीण।

लीनता-सं. स्त्री.—१ लीन होने की अवस्था या भाव।

रू. भे.—लीणता।

लीनोड़ौ—देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

उ०—लारै बाळद रो डेरौ लीनोड़ौ, दोळौ दाळद रो घेरौ दीनोड़ौ। जूंवा लीखा रा जमियोड़ा जाळा, नीचा नमियेड़ा कड़ कोड़ा काळा। —ऊ. का.

(स्त्री. लीनोड़ी)

लीनौ—देखो 'लीन्हौ' (रू. भे.)

उ०—मेरौ मन हरी हर लीनौ राजा रणछोड़। राजा रणछोड़ प्यार रंगीला रणछोड। —मीरा

लीन्ह, लीन्हउ, लीन्होड़ौ, लीन्हौ-भू. का. कृ. (स्त्री. लीन्होडी) १ लिया हुआ।

उ०—१ लाखा एक लाख सा जो लाख मेछ देखे। लाख जोड़ लीन्है यातै कोड़ कूं न लेखे। —रा. रू.

उ०—२ रांणाजी विस रौ प्यालो भेज्यौ, म्हैं सिर लियौ चढाय। चरणाम्रत को नाम ज लीन्हौ, पीगी प्रेम अघाय। —मीरां

उ०—३ दादू नीकी बरियां आय करि, रांम जप लीन्हा। आतम साधन सोध कर, कारज भल कीन्हा। —दादूवांणी

रू. भे.—लीण, लीणउ, लीध, लीधोड़ौ, लीधौ, लीन, लीनोड़ौ, लीनौ।

लीपणौ, लीपबौ-क्रि. स.—१ किसी तरल पदार्थ से लेप करना या पतली तह चढाना, पोतना।

उ०—१ घरि घरि कै विखै भींति। हींगुलुरी गारि सों लीपै छै। फिटक की ईंटा सों भींति चुणै छै। पाट चढीया छै सु चंदण का छै। —वेलि

उ०—२ लीप्यौ-ढोळ्यौ मोटौ आगणौ, लुगाई-टाबर फिरै-घिरै सै हंसै बोलै अर खेलै खावै। —दसदोख

२ डूबना, लुप्त होना।

उ०—पिण कुमर ते नहीं रावसी, सुख मांहे हो ग्रद्धि नहि थाय। जिम कमळ पांणी में नींपजै, नही लीपै हो ऊंचौ रहिवाय। —जयवाणी

३ लिप्त होना।

लीपणहार, हारौ (हारी), लीपणियौ—वि०।

लीपिग्रोड़ौ, लीपियोड़ौ, लीप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लीपीजणौ, लीपीजबौ—भाव वा०।

लीपाड़णौ, लीपाड़बौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लीपाणौ, लीपाबौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लीपाणहार, हारौ (हारी) लीपाणियौ—वि०।

लीपायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लीपाईजणौ, लीपाईजबौ—कर्म वा०।

लीपायोड़ौ—देखो 'लिपायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लीपायोड़ी)

लीपावणौ, लीपावबौ—देखो 'लिपाणौ, लिपाबौ' (रू. भे.)

लीपावणहार, हारौ, (हारी), लीपावणियौ—वि०।

लीपाविग्रोड़ौ, लीपावियोड़ौ, लीपाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लीपावीजणौ, लीपावीजबौ—भाव वा.।

लीपावियोड़ौ—देखो 'लिपायोडौ' रू. भे.)

(स्त्री लिपावियोड़ी)

लीपियोपूंपियौ, लीपियोचूपियौ-वि.—लिपा-पुता, साफ-सुथरा।

लीपियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लिपा हुआ. २ डूबा व छिपा हुआ. ३ लिप्त हुवा हुआ।

(स्त्री. लीपियोड़ी)

लीपी-सं. स्त्री.—१ किसी स्थान पर पानी के सूख जाने पर तले में जमी हुई पपड़ी।

२ चूने के घोल को गड्ढे में भरकर तैयार किया जाने वाला लेप।

रू. भे.—लिपी।

लीब—देखो 'लींब' (रू. भे.)

उ०—जउ तेहू मध्यस्थ कहवराइं तउ विख अनइ अम्रत तथा रत्न अनइ काच, आंबउ अनइ लीब, साप अनइ फूलमाल, अंधारउ अनइ अजआलूं एहइ तोल तेहइ सरीखइ जि थिया। —सस्टीसतक

लीयण—देखो 'लियण' (रू. भे.)

लीर-सं. पु.—१ फटा हुआ, जीर्ण।

उ०—लीर-लीर व्हियोड़ौ कूंधा वरणौ ई घाघरौ। —फुलवाड़ी

२ देखो 'लीरौ' (मह, रू. भे.)

उ०—दुःखी देख प्रभू द्रोपदी, दई चीर की लीर। दस हजार गज-बळ घट्यौ, घट्यौ, न दस गज चीर —अग्यात

लीरड़ी-सं. स्त्री.—देखो 'लीड़ी' (रू. भे.)

लीरड़ौ-स. पु —देखो 'लीड़ी' (रू. भे)

उ०—सैंती सैंती पीड ताडौ, लपेट लकडी **लीरड़ा**। तीजै दिन वन पयांन करै त्याग दुवाई चीरडा। —दसदेव

लीरी-स. स्त्री.—देखो 'लीरौ' (अल्पा., रू. भे.)

लीरौ-स. पु.—१ वस्त्र का फटा, पुराना जीर्ण-क्षीरण टुकडा, धज्जी।

उ०—१ कहै दास सगराम, हमै तो चेती बीरा। भूखा मरता मरौ, कमर मे लटकै **लीरा**। —सगराम

२ शरीर पर गर्म धातु से दागने पर बना हुआ चिन्ह, डाम।

३ ककडी, मतिरा आदि की फाक।

रू. भे.—लीड़ौ, लीर, लीरी, लीरडौ।

अल्पा.—लीड़ी, लीरडी, लीरी।

लीलंग-सं. पु.—१ हंस (ना मा.)

उ०—१ मान सरोवर के भोळै भूल अनेक (क) **लीलंग** आवै।
—सू. प्र.

उ०—२ मोताहळ कमळ चुगतौ मांभी, असमरि मुंह साजतौ अरि। पै **लीलंग** 'पचायरण' पेठौ, सेर तरणं दळ मानसरि।
—पंचायरण करमसोत रौ गीत

उ०—३ भाखित वेद चियार, माळा अपकठ धरमधर आसन। चर थिर जत्रु दयाल, **लीलंग** वाहेरणं नम। —मा. वचनिका

२ डिंगल के वेलिया सांणोर (छोटा सांणोर) छद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले मे १६ लघु २४ गुरु कुल ६४ मात्राएं होती हैं तथा इसी क्रम से शेष द्वालो मे १६ लघु व २३ गुरू कुल ६२ मात्राएं होती है।

वि.—लीला करने वाला।

रू. भे. - लीलग

लीलंगरित-सं. पु.—तोता, सुवा। (अ. मा

लीलबर-स. पु. यौ. [स. नील+अम्बर] नीला आकाश, नीलगगन।

उ०—मधुर बचन छबि चद मुख, ऊगमं उरज ऊतग। **लीलबर** ढाकै ललित, सुभ कचन-गिर स्रग। —बगसीराम प्रोहित री बात

लील—देखो 'लीला' (रू. भे)

उ०—वसै न बाडी नाँव न वासा, रहत उदास न **लील** निवासा।
—अनुभववाणी

२ आनद, मगल, परमसुख।

उ०—रिखिदत्ता रांणी रूडी परि, पाल्यु निरमल सील रे। समय-सुदर कहइ मुगति पहूती, लाधा अविचल **लील** रे। —स. कु

३ पानी पर जमने वाली काई।

४ हरियाली।

उ०—उन्हाळै दे ईल, **लील** चौमास खुलावै। सीयाळै ल्यायास आखरचा सुखी सुळावै। —दसदेव

५ शरीर पर चोट या प्रहार से उभरा हुआ नीला चिन्ह।

उ०—दीवारण जी इरण हालत मे काई जबाब देवता। ठौड-ठौड **लील** जम्योडी। मूडौ सूज्योडौ। —फुलवाडी

६ श्याम स्तनो वाली गाय।

७ रग विशेष की घोडी।

८ सारस्वत नगर के वीरवर्मन राजा का पुत्र।

लीलग—देखो 'लीलंग' (रू. भे.)

लीलगर—१ देखो 'नीलगर' (डि. को.)

उ०—१ हालो न भुवाजी बाई चालो नी भतीजी आपा **लीलगरां** कै चाला मोरी भुवा ए, नींद घरणेरी **लीलगरी** का बेटा भाई, मनै लीलौ डोरौ रंग दै ना बीरा मेरा रै, नीद घरणेरी —लो. गी.

लीलगरी - देखो 'नीलगरी'

उ०—**लीलगरी** का बेटा भाई, मनै लीलौ डोरौ रंग दैना बीरा मेरा रे, नींद घरणेरी। —लो. गी.

लीलगवाहणी-सं. स्त्री. यौ. [राज. लीलग+सं. वाहनी] हंसवाहनी, सरस्वती (ह ना. मा.)

लीलड़-सं पु.—ऊंट का एक रोग विशेष जिसमें ऊंट का मल या विष्टा पतला हो जाता है।

लीलडी-स स्त्री.—१ त्योहरा, खुशामद।

उ०—१ घरवाळा बासरण तौ पडचा कूवा में, पारकां रौ किसोक ओळभौ आयौ। धण्या नै बुलाया, मूंता हाथ जोड'र गिडगिड़ाया, **लीलडी** काढी। —दसदोख

उ०—२ भुवाळी खावतौ फिरै। घर-घर गेडा काटै। मिनखा नै रिरावै, **लीलड़ी** काढै। —दसदोख

उ०—३ ऊजळौ सुभाव, चड्ड चल्लो, गाव री बेटी परण सगळां सू गुघटौ। सूघी गऊ रा ऊपरला दात। किरगराक्ती सी बोलै, **लीलड़ी** सी काढै। —दददोख

२ गहरे बैंगनी रंग का भ्रमर से कुछ बड़ा पक्षी जो फूलों की पत्तिया व पराग खाता है।

वि. वि.—यह पक्षी ग्रीष्म ऋतु मे ही भारत में आता है और सर्दी प्रारभ होते ही उष्ण देशो में चला जाता है। मादा लीलडी वैशाख से श्रावरण तक पेडो की उच्चतम शाखा पर बय के नीड़ की तरह लटकता हुआ घौसला बना कर अडे देती है।

३ देखो 'लीली' (अल्पा , रू. भे.)

उ०—**लीलड़ी** बाधौ, भवर जी ल्हास पै जी, कोई सेल घरौ धम (अे जी अे) साळ आप पधारौ मारूजी महल में जी। —लो. गी.

लीलड़ौ-सं. पु.—१ सब्जी बनाने में प्रयुक्त होने वाला काला मोटा पापड़।
२ देखो 'नीलौ' (रू. भे.)
उ०—जिण घर घोड़ौ लीलड़ौ, ऊजळ चिंती नार। तिण घर सदा ऊजासणौ, दिवलै तेल न बाळ। —अग्यात

लीलणौ, लीलबौ-क्रि. अ.—नीला होना।
उ०—थारौ मारगियौ लीलांणौ। घरै पधारौ हो राज, म्हारा साथीड़ा रै पावस मास प्रगटियो रे, काइ धरती उगळयौ भंडार। —पाबू जी रा पवाडा

लीलणहार, हारौ (हारी), लीलणियौ – वि.।
लीलिग्रोड़ौ, लीलियोड़ौ लील्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लीलीजणौ, लीलीजबौ—भाव वा.।

लीलपत—देखो 'लीलापत' (रू. भे.)

लीलभवाळ, लीलभुग्राळ, लीलभुवाळ-सं. पु.—इन्द्र, सुरपति।
वि.—उदार, दातार।
उ०—१ पायै छंद प्रमोद रै, सोल मात्र सविसाळ। वाखांणै अठ-रह वरण, लखपति लीलभुग्राळ। —ल. पि.
उ०—२ दूजौ भारमल तणौ दीपक रीति रौ रखपाल। लाज घण विरदाळ लाखौ, भूप लीलभुवाळ। —ल. पि.
रू. भे.—लीलाभवाळ, लीलाभुग्राळ, लीलाभुवाळ

लीलरी-सं. स्त्री.—सल, झुर्री।
उ०—तेह पुरुस-जरजर हुवौ जी सिथिल पड़ी छै जी काय। लीलरी पड़ी सरीर में जी चांमड़ी हाड विराय। —जयवांणी

लीलवण—देखो 'नीलवण' (रू. भे.)

लीलविलास-सं. पु.—इन्द्र, सुरपति।
उ०—१ आगलि रही करि अरदास, जाहू आंण राउ लीलविलास। जउ साउर वडवांनल समइ, तउ कांन्हउ तुरकांनइ नमइ। —कां. दे. प्र.
२ समुद्र, सागर।
३ अष्ट वर्ण सहित १२ मात्रा का छंद विशेष।
उ०—उगणत्रीस मात्रा उचित, जगण अंति पय जास। तवा इसी विधि आंटकौ, लखपति लीलविलास। —ल पि.
४ आनन्द, मंगल।
उ०—जे विध सूं यात्रा करै, सुर नर सेवक तास। राजसमुद्र गुप्तगावता, अविचल लीलविलास। —वृ. स्तौ.
वि.—१ लीला करने वाला।
उ०—१ गायौ रसायण लीलविलास, 'नाल्ह' कहइ सब पूरज्यौ आस। रास रसायण उपजाई, गढ अजमेरां उत्तिम ठाई। —बी. दे.
२ दातार, उदार।
उ०—बिंदणां वरहास बगसै, वधारण जसवास। कुंअर देसल तणौ काईम, बडौ लीलविलास। —ल. पि.
रू. भे.—लीलाविलास

लीलांण-सं. स्त्री.—हरियाली।

लीलांम-सं. पु. [पुर्त्त. लेलम] १ वह सार्वजनिक बिक्री जिसमें अधिक कीमत बोलने वाले को वस्तु बेची जाती है। नीलाम।
२ इस प्रकार की चीज बेचने की क्रिया या भाव।
रू. भे.—नीलांम, ललाम, लिलाम

लीलांमघर-सं. पु. यौ [पुर्त्त लेलम+राज. घर] १ वह स्थान जहां पर नीलाम की जाने वाली वस्तुओं की बोली लगायी जाती है जहां वह वस्तुएं रखी जाती हैं।
रू. भे.—'नीलांमघर'।

लीलांमी-सं. स्त्री.—१ नीलाम की जाने वाली वस्तु।
२ नीलाम करने की क्रिया या भाव।
रू. भे.—नीलांमी।

लीला-सं. स्त्री. [सं.] १ आनन्द, मौज।
उ०—१ सिर, संती जिणेसर सेवत ही सुख खांण। इण भव लहै लीला पर भव पद निरवांण। —ध. व. ग्रं.
२ ऐसा कार्य जो केवल मन की उमंग से मनोरंजन के लिए किया जाय।
उ०—लखण बत्रीस संयुक्त। बाल लीला माहै राजकुआरि दुलडिया रमै छइ। —वेळि
३ भगवान द्वारा विभिन्न अवतारों में किए गये आचरण व कार्यों का प्रदर्शन या अभिनय करना।
ज्यूं—रांमलीला, क्रस्णलीला।
४ रचना, बनावट।
उ०—१ कुदरत री इण लीला सूं डरण री कांइ जरूरत। —फुलवाडी
उ०—२ हीलाकर हिणके ईला हुय आधा, लीला भगवत री लीला नहीं लाधा। —ऊ. का.
५ चरित्रगान।
उ०—चाकर रहसूं बाग लगास्यूं नित उठि दरसण पास्यूं। ब्रंदावन की कुंज गलिन में, तेरी लीला गास्यूं। —मीरां
६ नायिका का एक भाव, चेष्टा।
७ ईश्वरावतार द्वारा मनुष्योचित की जाने वाली क्रीड़ा
वि. वि.—भक्तिमार्ग के मतानुसार भगवान विभिन्न कार्य-सिद्धि हेतु या मनोरंजनार्थ अवतार धारण करके जो आचरण करते हैं उसे भगवान की लीला कहते हैं।

उ०—१ मणि अहलोक प्रभा जग मंडित, इक पतनीव्रत धरम अखडित । कारज सुरा कर किय क्रीला, लीला समद मानखी लीला ।
—सू. प्र.

८ विशेषक नामक छद का दूसरा नाम ।

९ बारह मात्राओ का एक छंद जिसके अंत में एक जगण होता है।

१० एक प्रकार का वर्णवृत जिसके प्रत्येक चरण में भगण तगण और एक गुरु होता है ।

११ चौबीस मात्राओ का छंद विशेष जिसमे ७+७+७+३ पर विराम होता है और अन्त मे सगण होता है।

१२ हरा घास ।

उ०—हीलाकर हिराकै ईला हुय आधा, लीला भगवत री लीला नही लाधा ।
—ऊ. का.

१४ निसाणी छंद का भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण दस गुरु और तीन लघु वर्ण हो ।

१५ पद्मराज की पत्नी जिसने अपनी पति की मृत्यु के पश्चात सरस्वती की कृपा से उसे पुनः जीवित किया ।

रू. भे.—लील ।

लीलाकरण–स. स्त्री.—स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक ।

लीलाड़ी—देखो 'ललाट' (अल्पा., रू. भे)

उ०—पचै 'मुंदचाड़' पर 'बादरौ' पीलाड़ी, कंवर रै लीलाड़ी माय करके । हारगा बीया सू हिलै ना हीलाडी, सीलाडी तो बिनां नही सरकै ।
—अमरदान लाळस

उ०—२ बा घण देई हे सीख, भिरगानैणी राज । थारी ए लीलाड़ी ए प्यारी की पगथळी जी म्हारा राज ।
—लो. गी.

लीलाती–स. स्त्री. [स. लीलायत] मनोरंजन, आनन्द ।

उ०—महा कलपवृक्ष उल्हस पाम्या, आव्या मांडी क्षत्रि वराह । बाल मात्र वट सपुट पौढ्या लीलाती लक्ष्मीनाह ।
—रुकमणी मगळ

लीलाधण–सं. पु. यौ. [सं. लीला+राज. घण] १ भगवान, ईश्वर, लीला के स्वामी ।

उ०—१ लीलाधण ग्रहे मानुखी लीला, जगवासग वसिया जगति । पित प्रदुमन जगदीस पितामह, पोतौ अनिरुध ऊखापति ।
—वेळि

लीलाधर–सं. पु यौ. [स. लीला+धर] १ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ जेह मगावूं ते जईं, संभाळै तू स्वामि । लीलाधर ते ल्याविसिइ, धीर म था तु थामि ।
—मा. कां. प्र

लीलापत, लीलापति–सं. पु. यौ. [सं. लीला+पति] १ लीला स्वामी, ईश्वर ।

२ इन्द्र ।

रू. भे.—लीलपत ।

लीलापुरसोत्तम–सं. पु.—श्री कृष्ण ।

लीलाबर–स पु. यौ. [स. लीला+वर] १ लीला स्वामी, ईश्वर ।

लीलाभवाळ, लीलाभुआळ, लीलाभुवाळ—देखो 'लीलभुवाळ' (रू. भे.)

उ०—खट भाख जाण तप तेज भाण । विप्र गऊ पाळ, लीलाभुआळ ।
—र. वचनिका

लीलामय–वि. [स] क्रीड़ा युक्त, लीला युक्त ।

लीलावंती—१—एक वृक्ष विशेष ।

उ०—लाज लज्जाळू लक्ष्मणा, लूगी लसन लवगि । लीलावंती, लुकडी, लाहि लवीरी संगि ।
—मा. का. प्र.

लीलावती–स. स्त्री.—१ प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की कन्या का नाम, जिसने अपने नाम पर गणित नामक पुस्तक बनायी थी ।

वि. वि —कुछ इसे भास्कराचार्य की पत्नी भी मानते हैं ।

२ एक देवी का नाम ।

३ सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी ।

४ बत्तीस मात्राओं का एक मात्रिक छद जिसमे लघु गुरु का विचार नहीं होता ।

उ०— गुरु लघु विण नियम तीस बिमत्ता, लीलावती गुरु अंत कहै । जो रघुवर गावै सब सुख पावै, निभय जिका जम ताप नहै ।
—र. ज. प्र.

लीलावर–वि.—लीला करने वाला ।

स पु.—१ विष्णु २ श्रीकृष्ण ।

लीलाविलास - 'देखो 'लीलविलास' (रू. भे.)

लीलासंध–वि.—१ क्रीड़ायुक्त, अद्भुत खेल करने वाला ।

उ०—किणे न दीठो कानवौ, सुण्यो न लीलासंध । आप बंधाणा ऊखलै, बीजा छोडण बंध ।
—नागदमण

लीलासागर–सं. पु. यौ. [सं. लीला+सागर] लीला का समुद्र, भगवान कृष्ण ।

उ०—स्रीमद्भागोत स्रवण सुनी, रसना रटत हरी । मन डूबत लीलासागर में, देही प्रीत धरी ।
—मीरां

लीलो साड़ी–स. स्त्री.—१ देव स्थान पर जाते समय दुल्हा दुल्हिन को गाया जाने वाला एक लोकगीत ।

लीलोती, लीलोतरी, लीलोत्री—१ देखो 'नीलोतरी' (रू भे.)

उ०—१ लीलोती चौबीस मांगे, गिणै न छोटौ गांवडौ । जद नीम सगळासूं पैली, थारौ ही सुभ नावडौ ।
—दसदेव

१ हरी घास ।

लीलौं–सं. पु.—१ हरा घास ।

उ०—हीलाकर हिराकै ईला हुय आधा, लीला भगवत री लीला नही लाधा ।
—ऊ. का.

२ हरा रंग।

उ०—पांन फूल नूं जीव तू, कोमल केलि समांन। ललूड़ो अति लाडलो, लालन लीला पान। —जयवाणी

३ देखो 'नीलो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ लीला किम ढीलो बहै, पथ पयाणो दूर। गोख उडीके गोरड़ी, जोबन मे भरपूर। —अग्यात

उ०—२ कै लीला के कागड़ा करड़ा हरड़ा केक। मुसकी नुकरा मेटिया इसड़ा तुरग अनेक। —पे. रू.

उ०—३ आवे कुण खड़ उपरै, दीसे किणरो डोळ। जायो लीलो जोरवर, पीळो वधियो पोळ। —मुकनदान खिड़ियो

उ०—४ गावे सखी बधावणा, मोत्यां भर भर थाळ। आंक दियो सिर ऊपरै, लीलो सुत लकाळ। —मुकनदांन खिड़िया

उ०—५ सैल करण गयो सायबो, हुय लीली असवार। कै जगळ की मिरगल्यां, म्हारो लियो छै स्यांम बिलमाय। — लो. गी.

उ०—६ आवूं लीली ऊपरा, लेवूं हाथ लगांम। —मुकनदांन खिड़ियो

उ०—७ लीली घोड़ी हांसली, अलबेलो, असवार। कड़यां कटारी, बांकड़ी, सोरठड़ी तरवार। —लो. गी.

उ०—८ उणहीज बंदूकां गिलोलां सूं मुरगाव्यांनै चोटां कीजै छै। तमासो हुयनै रह्यो छै। सिकार मुरगाबी ओकठी कर तळावसू बाहर पधारजै छै लीलीपोतां दूर कीजै छै। —गंगेव नीबावतरो दो-पहरो

(स्त्री. लीली)

लीलोचेर—देखो 'नीलोचेर'

उ०—बींदणी अपूठी होय मूंडो उघाड़ बैठगी। ऊंची जोयो। पतळी-पतळी लीलोचेर लड़ाभूम सांगरियां ई सांगरियां। —फुलवाड़ी

लीवड़ो—देखो 'नीम' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—साकर सेलडी नी स्वाद तजी नै, कडवो लीवडो घोळघो रे। चांदा सूरज नूं तेज तजीने, आगिया संगा थे प्रीत जोड़या रे। —मीरां

लीवलीण—देखो 'लयलीन' (रू. भे.)

उ०—हरिजन हरि को लाडलो लीवणीण न दूजा लाड। झूठै झामरझोर में, उळझ रहे नर अंध। —अनुभववांणी

लीह—देखो 'लीक' (रू. भे.)

उ०—१ लीह नदी छाडण लगी लागा छोळ उलार। बागा कांमण बाहरा, लागा गावण मलार। —र. हमीर

उ०—२ लीह नहीं लज्जा नहीं, नहीं रंग नहि राग। ते मांणस इम छडियै, जिम अंधारै नाग। —अग्यात

उ०—३ अणबीह तूं नरसींह ओपै, लीह संतां नकूं लोपै। ईस वात अघात हाथ, अवण रंकां आथ। —र. ज. प्र.

लीहटी—देखो 'लीकटी' (रू. भे)

उ०—पंथी हाथ सदेसड़उ, धण विललंती देह। पगसूं काढइ लीहटी, उर आंसूआ भरेह। —ढो. मा.

लीहवणो, लीहवबो—क्रि. स.—झींगुर का ध्वनि करना।

उ०—१ भीमरी भमती लीहवइ, सांवण नी चकचाळ। उहां सिर तिहा अमीयमइ, विरहणीआं मनि काळ। —मा. का. प्र.

लुंकड़ी, लुंकडी—१ एक वृक्ष विशेष।

उ०—लाज-लज्जालू लक्ष्मणा, लूंणी लसन लवंग। लीलावंती लुंकडी, लाहि लवीरी सगि। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'लाकी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—गैरै सिकार मांहि ससा लुंकड़ी सीह गोझ स्याळ रींछ अनेक हिरण आदि दे अर भेळा हुया छै। —द. वि.

लुंकारियो—देखो 'लूंकार' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बठै अधबूढी सी एक धिरांणी, लाल लुंकारियो ओढ्यां चूलै कनै बैठी कांचर छोलै है। —दसदोख

लुंकालु—वि. कृश, पतला।

उ०—स्वांन तणी जिह्वा समांन पाय तल कूरमोन्नत चरण रक्तो त्पल सद्रस नख, हंसगति, बढ्ठी रोमराइ, गंभीर नाभि मध्यदेसि चफली, ईट सद्रस कटि, लुंकालु पेट, सुवरण्ण सद्रस सरीर काति। —व. स.

लुंगाड़, लुंगाड़ो—वि.—बदमाश, धूर्त, चालाक।

लुंगी—देखो लूगी' (रू. भे.)

उ०—१ ओथि पातिसाह जी लघु-सका की। करि अर लुंगी पहिरी पहिर अर नदि माहै पधारिया। —द. वि.

उ०—२ कचू नीलक को कीयो, उपरि चीर उढाइ। लिधो लुंगी भांति को, सुदर नें बहोत सुहाय। —व. स.

लुंचन—सं स्त्री. [सं. लुंचनम्] बाल उखाड़ने या नोचने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—लोच

लुंचित—वि.—१ नोंचा हुआ।

उ०—दाड़िमी बीज बिसतरिया दीसै निउंछावरी नांखिया नग। चरणे लुंचित खग फळ चुबित, मधु मुंचंति सीचति मग। —वेलि

२ उखेड़ा हुआ। ३ काटा हुआ।

लुंचियोड़ो—भू. का. कृ.—१ उखेड़ा हुआ। २ काटा हुआ। ३ नोंचा हुआ।

(स्त्री. लुँचियोड़ी)

लुंछणौ, लुंछबौ—देखो 'लूंछणौ, लूंछबौ' (रू. भे)

उ०—खीरोदक **लुँछणडइ** करी राजा, नाखइ चिहूं दिसि फिरी तिणि रसि रंजिउ भणइ नरेस, मूंकड नाच हुआ आदेस।
—हीराणंद सूरि

लुंजी—देखो 'लूंजी' (रू. भे)

उ०—फीणा तौ बाव्या बनडा **लुंजी** रौ लचकौ इसड़ौ कलेवौ थारी माताजी करावै। —लो. गी.

लुंठक-वि.—लुटेरा।

उ०—प्रहार पडिया लग्ग मौ, **लुंठक** पड़िया लग्ग। मह पड पाणि न मागियौ, मर मर ले स्रग मग्ग। —रेवतसिंह भाटी

लुंठि, लुंठी-स. स्त्री.—१-३६ प्रकार के दडायुधों मे से एक।

उ०—१ चक्र धनुस वज्र खङ्ग कृपाणी तोमर कुंत त्रिसूल सक्ति पासु मुग्दर मसिका भल्ल भिंडमाल गुरुज **लुंठि** गदा संख परसु पटसु यस्टि। —व. स.

२ घोड़े के लोटने की क्रिया।

लुंणणौ, लुणबौ—देखो 'लुलणौ, लुलबौ' (रू. भे.)

उ०—जा वाह्यौ तांही **लुण्यौ** विण वाह्यौ न लुणाय।
—विल्होजी

लुंणणहार, हारौ (हारी), लुंणणियौ—वि.।

लुंणग्रोड़ौ, लुणियोड़ौ, लुंण्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुंणीजणौ, लुणीजबौ—कर्म वा.।

लुंणाणौ, लुंणाबौ—देखो 'लुणाणौ, लुणाबौ' (रू. भे.)

उ०—जा वाह्यौ ताही लुण्यौ विण वाह्यौ न **लुंणाय**।
—विल्होजी

लुंणाणहार, हारौ (हारी), लुंणाणियौ—वि.।

लुंणायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लुंणावीजणौ, लुंणावीजबौ—कर्म वा.।

लुंणायोड़ो-भू. का. कृ.—१ फसल कटवाई हुई।

(स्त्री. लुंणायोड़ी)

लुंणावणौ, लुंणावबौ—देखो 'लुणाणौ, लुणाबौ' (रू. भे.)

लुंणावणहार, हारौ (हारी), लुंणावणियौ—वि.।

लुणावियोड़ौ, लुंणाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुंणावीजणौ, लुंणावीजबौ—कर्म वा.।

लुंणावियोड़ौ—देखो 'लुंणायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुंणावियोड़ी)

लुंणियोड़ौ—देखो 'लुणियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री लुंणियोडी)

लुंपट—देखो 'लपट' (रू भे.)

उ०—संक्रम सुभ स्रस्टी द्रस्टी लुभ देती। **लुंपट** संपुट लरख घूंघट पट लेती। लुळ कर लकुटी ले त्रकुटी सळ लाती। भूखी बाघण जी भ्रकुटी भळकाती। ऊ. का.

लुंबक-स. पु.—१ फलित ज्योतिष के २८ योगो मे से एक योग।

लुंबभुंबाळी—१ देखो 'लूंबलूंबाळी' (रू. भे.)

लुंबणौ, लुंबबौ—देखो 'लूंबणौ, लूंबबौ' (रू. भे)

उ०—१ भरिया रंग सुरंग भाद्रवइ, **लुंबीया** ताइ अंबर लगस। अहर डसण ओपिया अनोपम, रसण जुडीया तबोळ रस।
—महादेव पारवती री वेळि

उ०—२ छिलता पहाड २ पाखती, अधर भरंता चरण धरइ। अंब तणा व्रख **लुंब** आविया, कुजर विच सारसी करइ।
—महादेव पारवती री वेळि

लुंबणहार, हारौ (हारी), लुंबणियौ—वि.।

लुंबिग्रोड़ौ, लुबियोड़ौ, लुंब्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुंबीजणौ, लुंबीजबौ—भाव वा.।

लुंबाळौ, लुबालौ-वि. (स्त्री. लुबाळी) १ आरामदायक।

उ०—कठै प्रीत साधा तणी, कठै रांण्या री हेज जी। अठै धरती सोवणी, कठै **लुंबालो** सेज जी। —जयवांणी

२ झूमा हुआ।

३ सूत या रेशम के धागो के साथ पिरोए हुए लाल व मोतियो से युक्त गुच्छा।

रू. भे.—लूंबाळौ।

लुंबनी-स. स्त्री [स] १ कपिलवस्तु के पास का एक वन जहां गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

लुंबेक-स पु.—वार व नक्षत्र सम्बन्धी बनने वाले २८ योगो मे से पन्द्रहवा योग।

लुंमणौ, लुंमबौ—देखो 'लूंबणौ, लूबबौ' (रू. भे.)

उ०—रेसमी गुलाब गेंद केवड़ा समुहैह छै। और लीलडबर तरोवर पर बेलिडिया **लुम** रहै छै। —बगसीराम प्रोहित री बात

लुंमणहार, हारौ (हारी), लुंमणियौ—वि.।

लुमिग्रोड़ौ, लुमियोड़ौ, लुंम्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुमीजणौ, लुमीजबौ—भाव वा.।

लुंमियोड़ौ—देखो 'लुंबियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लुंमियोड़ी)

लु-सं स्त्री—१ पृथ्वी। (एका.)

सं पु—२ माली ।
३ काटना ।
४ संसार ।
वि.—भक्षरण करने वाला ।

लुआब–सं. पु. [अ.] १—चिपचिपा पदार्थ ।

लुआबदार–वि. [अ + फा.] १ लेसदार, चिपचिपा ।

लुआरियौ, लुआरौ–स. पु. (स्त्री. लुआरी) १ गाय का छोटा बच्चा ।
२ देखो 'लुहार' (अल्पा., रू. भे.)

लुआळ–वि.—उष्ण ज्वाला की लपट ।
उ०—कहर बाज लोहाळ लुआळ भाटक कटक, तूटतां वराळा जोस ताथै । अरक ग्रीखम तरगौ तेज तपीयौ 'अजन' मेछ पाळागरा तरगौ माथै । —नाथौ सांदू

लुकंजन–सं. पु.—एक प्रकार का कल्पित अंजन जिसको आंखों में डालने से डालने वाले को सब कुछ दिखता है, परन्तु उसे कोई नहीं देख सकता ।

लुकंवर—१ देखो 'लकूंदर' (रू. भे.)

लुक–वि.—१ तेज प्रज्वलित ।
२ लुप्त, छिपा हुआ । (अ. मा.)

लुकड़ी—देखो 'लांकी' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ बाट काटे मंजारड़ी, सांमही छींक हरणइ कपाळ । आडी लुकड़ी आवज्यो, गोरड़ी कउ प्रीय पाछो हो वाळ । —बी. दे.

लुकट–सं. पु. [सं. लकुट] १ डंडा, लकड़ी ।
२ बांसुरी ।

लुकरणाडाई–सं. स्त्री.—बच्चों का एक देशी खेल, जिसमें एक दल दूसरे छिपे हुए दल की तलाश करता है ।

लुकणौ, लुकबौ–क्रि. अ. [स. लुक] १ किसी गुप्त स्थान में रहना या होना ।
उ०—१ वांरै विस्वास रा सगळा असवार आप आपरी ठांणी भेल्यां लुक्योड़ा बैठा हा । —फुलवाड़ी
उ०—२ करणौ फुल्यौ नीं समावै है, मन मन में घणौ राजी हुवै है । आखा काम आपरी कोटड़ी में लुक-लुक करै है । —दसदोख
२ किसी वस्तु की ओट या आड़ में आने से दिखाई न देना ।
उ०—१ इण सारू म्हारा गाघरा रै ओळै लुक जाओ नहीं तौ वैरी री कांही विसवास अठै आयनें मार नांखै । —वी. स टी.
उ०—१ रातां हव थोड़ी रही, बातां वह निसतार । सातां उठ सहेलियां, लुकी कनातां लार । —मयाराम दरजी री बात
२ अदृश्य होना, मिटना ।
उ०—१ तेल-साबरण लगावै, बंग-सलाजीत खावै, अर गोटा पीवै है तो ही बुढापौ-वैरी लुक्यौ नीं चावै । —दसदोख
उ०—२ इण विध आपरै पगां में लोगां नै माथौ निंवाता देख्या, तौ कंवर रौ लुक्योड़ौ जोस पाछौ बावड़ियौ । —फुलवाड़ी
उ०—३ दिवलौ वडौ व्हैतांई जिण भांत लुकयोड़ौ अंधारौ सागै ई प्रगट व्है जावै, उणी भांत आ सुणताई कवर रौ मूंडौ काळौ धाक पड़ग्यौ । —फुलवाड़ी
४ बंद होना, मिलना । (पलक का)
उ०—भिड़िया रत रण कुच भड़ा, दुरसहि रीभ दियेह । लुकी पलक तिण लाजहूं, हव फिर धरत हियेह । —र. हमीर

लुकणहार, हारौ (हारी), **लुकणियौ**—वि० ।
लुकिओड़ौ, लुकियोड़ौ, लुक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लुकीजणौ, लुकीजबौ—भाव वा० ।
लुक्कणौ, लुक्कबौ—रू० भे० ।

लुकथुकौ—देखो 'लुगथुगौ' (रू. भे.)

लुकमांन–सं. पु. [अ. लुक्मान] १ कुरआन में वर्णित एक प्रसिद्ध वैद्य व वैज्ञानिक ।
उ०—कीधी लुकमांन सीहतां अवाजा नाळवाळी कुहा, छोहामाळ वाळी गुंजा ऊतारै छाकोट । तसां प्रथीनाथ सोरभखी नराताळ-वाळी, चाड छाती छुटै प्रळै काळ वाळी चोट । —चुंडौ जी बारहठ
२ तोप ।
उ०—इतने लुकमांन डकार लयं, उडि धूम धरा असमांन गयं । चहुँ ओर नरुकन के दळयं, ऊलटै मनूं सिंधु हिलोर लयं । —ला. रा.
३ बंदूक ।

लुकमींचणी–सं. स्त्री.—१ बच्चों द्वारा खेला जाने वाला आँख-मिचौनी का खेल ।
उ०—१ इण सासरियै भाई रै साथै पै'ली वार अठै आई तौ म्हनै औ लखायौ के म्हैं लुकमींचणी री रमत रमूं हूं । —फुलवाड़ी
उ०—२ साथणियां री भूलरौ भाई-भतीजा नाडी री पाळ, गीत, गड्डा, डूलियां भुरणी लुकमींचणी—अै सगळा सुख छिटकाय इण धणी रौ हाथ भाल्यौ । मां रौ खोळौ छोड पराया घर री हर करी । —फुलवाड़ी
रू. भे.—लुकलुकमींचणी ।

लुकमौ–सं. पु. [अ. लुक्मः] १ ग्रास, निवाला ।
उ०—१ भगड़ां तन भुकमाह, सौख न लुकमा साभिया । तुकमां पर तुकमाह, पतसाही पावै 'पता' । —जुगतीदांन देथौ
उ०—२ ले लीधा लुकमाह, अकल सला अवसांण रा । तिण पुळ रा तुकमाह, पावै अब लग तूं 'पता' । —जुगतीदांन देथौ

लुकम्मीनाळ—देखो 'लुकमान' (२)

उ०—कड़क्कै लुकम्मीनाळां भड़क्कै गिरद काळा, सोहृ सूरा फडक्कै फीफरा साडीस। पत्राजै खडक्कै पगी धडक्कै कायरा प्राण, बड़क्कै उरेब छडा रडक्कै भू सीस। —चीमनजी

लुकलुकमींचणी—देखो 'लुकमीचणी' (रू भे)

उ०—तिण वखत इण भातरी समै है, पड़ताला पड़ती जमी नीठ खमै है। जठै बीज जिका आभानूं घमै है, किना लुकलुकमींचणी री रामत रमै है। —र. हमीर

लुकवेस-स. पु.—कुज (अ. मा.)

लुकसाज-सं. पु.—चमकाया व सिझाया हुआ विशेष प्रकार का चमड़ा।

लुकाड़णौ, लुकाड़बौ—देखो 'लुकाणौ, लुकाबौ' (रू. भे.)

लुकाड़णहार, हारौ (हारी), लुकाड़णियौ—वि०।
लुकाड़िग्रोड़ौ, लुकाड़ियोड़ौ, लुकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लुकाड़ीजणौ, लुकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लुकाड़ियोड़ौ—देखो 'लुकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुकाड़ियोड़ी)

लुकाणौ, लुकाबौ-क्रि. स.—१ किसी गुप्त स्थान में रखना।

उ०—सात ताळा जड्यां ऊंडोड़ा भंबारा में मजूस लुकायोड़ौ है। —फुलवाड़ी

२ किसी वस्तु की आड या ओट में छिपाना।

उ०—म्हारी मरजी रा खास विस्वासी असवारां नै पांच-पांच, सात-सात री टोळिया बणाय नाकै रै नाकै ठौड ठौड लुकाय नै बैठाण दूंला। —फुलवाड़ी

३ अदृश्य करना, मिटाना।

४ गुप्त रखना।

पछै मासी उणनै डोकरा डोकरी रै जीमण वाळी सगळी बात माडनै बताई। उछांट धुराधुर री बात उण सूं नीं लुकाई। —फुलवाड़ी

लुकाणहार, हारौ (हारी), लुकाणियौ—वि०।
लुकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लुकाईजणौ, लुकाईजबौ—कर्म वा०।
लकोणौ, लकोबौ, लकोवणौ, लकोवबौ, लुकाड़णौ, लुकाड़बौ, लुकावणौ, लुकावबौ—रू० भे०।

लुकायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी गुप्त स्थान मे रखा हुआ. २ किसी वस्तु की आड या ओट में छिपाया हुआ. ३ अदृश्य किया हुआ, मिटाया हुआ. ४ गुप्त रखा हुआ।

(स्त्री. लुकायोड़ी)

लुकावणौ, लुकावबौ—लुकाणौ, लुकाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मिनख री भूख आगै इत्ती लाठी दुनियां मे डाढाळ नै आपरौ जीव लुकावण री ई ठौड नी लाधी। —फुलवाड़ी

उ०—२ डोकरी कह्यौ—भला आदमिया, आ भीडवाळी बात वळै काई है। ओळियाकडा, बाता लुकावण री थारी आ काई कुबाण है? —फुलवाड़ी

उ०—३ म्है म्हारा मन सूं साची बात कीकर लुकावतौ। —फुलवाड़ी

लुकावणहार, हारौ (हारी), लुकावणियौ—वि०।
लुकाविग्रोड़ौ, लुकावियोड़ौ, लुकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लुकावीजणौ, लुकावीजबौ—कर्म वा०।

लुकावियोड़ौ—देखो 'लुकायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. लुकावियोडी)

लुकियोड़ौ-भू का. कृ.—१ किसी गुप्त स्थान में रहा हुआ. २ किसी वस्तु की आड़ या ओट में आने से दिखाई न दिया हुआ. ३ अदृश्य हुवा हुआ, मिटा हुआ.

(स्त्री. लुकियोड़ी)

लुक्कणौ, लुक्कबौ—देखो 'लुकणौ, लुकबौ' (रू. भे.)

उ०—गूदळै व्योम ढंकै गरद, रवि लुक्कै धूंआ रवण। आलम्म पयाणै एण पर, कोप तेण झल्लै कवण। —रा. रू.

उ०—२ सीहृ किसी साराहृ सरभ रव सुणै सळक्कै। एकळ की ओपमा, लडै भागै थहृ लुक्कै। —रा. रू.

लुक्कणहार, हारौ (हारी), लुक्कणियौ—वि०।
लुक्किग्रोड़ौ, लुक्कियोड़ौ, लुक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लुक्कीजणौ, लुक्कीजबौ—भाव वा०।

लुक्कियोड़ौ—देखो 'लुकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुक्कियोडी)

लुक्ख, लुक्खौ, लुख—देखो 'लूखौ' (रू. भे.)

उ०—१ आप निमित्त कढियौ बाहिर, अथवा न काढ्यौ बहार। तीजै खातै ऊबरै, पंत वलै लुख आहार। —जयवाणी

उ०—२ लुख आहारी नि कचनी गरव स्लाघावंत। अबूज पेट भरा कह्या, वलि वलि भगवत। —जयवाणी

लुखौ-वि.—देखो 'लूखौ' (रू. भे.)

उ०—१ लूण अलूंणौ घ्रत लुखौ, सील तेज पावक सरस। नव नाथ सिद्ध पूछै 'अलू', जोग स्त्रगार क वीर रस। —अल्लूनाथ जी कवियौ

लुगड़ौ—देखो 'लूगड़ौ' (रू. भे.)

लुगड़ियौ—देखो 'लूगड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

लुगडो—देखो 'लूगड़ो' (रू. भे.)

लुगथुगो—वि. (स्त्री. लुगथुगी) कान्तिहीन, शोभाहीन।

उ०—पण राजाजी रै डर री ई पार नी ही। वां री लुगथुगो मूँडो किणी री निजर सूं ई छानी नीं रह्यो। —फुलवाड़ी

२ कम पानी की या लचपची सब्जी।

रू भे.—लुकथुको।

लुगदी—सं. स्त्री.—पदार्थ विशेष को सिला पर किसी तरल पदार्थ के साथ बाट कर या पीस कर बनाया हुआ लौंदा।

मुहा.—कूट'र लुगदी करणी=बुरी तरह पीटना।

लुगदी लागणी=किसी को कटु अप्रिय वचन कहना।

मह —लुगदो।

लुगदो—सं. पु.—देखो 'लुगदी' (मह., रू. भे.)

लुगाई—सं. स्त्री.—१ स्त्री, औरत।

उ०—१ लुगाई रै रूप री अर पुरख रै प्रेम री आ इज तौ छेहली मरजादा। —फुलवाड़ी

उ०—२ गाळ लुगायां गावही, नर मुख उचत न गाळ। अमल गाळ मनावर कर, का सुभ वचन उगाळ। —बां. दा.

२ पत्नी।

उ०—पूरा सौ रिपियां री मेळ। दोनूं लोग लुगायां रै हरख री पार नीं। —फुलवाड़ी

रू. भे.—लोगाई

अल्पा.,—लुगावड़ी, लोगावड़ी

लुगावड़ी—देखो 'लुगाई' (अल्पा., रू. भे.)

लुघ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—मै कब लुघ दीरघता जांनि, का मुझि मांन वडाई ठांनि। मैं कब साझै असट जोग, मैं कब नांनां करत भोग।

—अनुभववांणी

लुघता—देखो 'लघुता' (रू. भे.)

उ०—बडा होंन कुं सब खसै, लुघता विरळा कोय। हरीया लुघता बाहिरो, रांम न परसन होय। —अनुबववांणी

लुघवी—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—मुहरि अंति लुघवी गुरभक्ति, बार चिआर विनांण। पय सोलह आखर परठि, आखि रूप इहनांण। —ल. पिं.

लुघसंधानिक—सं. पु.—१ तीर चलाने में दक्ष, कुशल।

उ०—तेहै घोडै किस्या किस्या खित्री चडीया। पंचवीस वरस ऊपहरा। पंचास वरस मांहि। लुघसंधानीक विराधिवीर। —कां. दे. प्र.

लुघु—देखो 'लघु' (रू. भे.)

लुड़णो, लुड़बो—क्रि. अ.—मुड़ना, हटना।

उ०—इण दिस 'अजन' लिया दळ आयो, सांभर वाळै कोट सभायो। वयौ मुंहमेळ प्रथम दिन कीधौ, लुड़ मुड़ गयौ कोट निठ लीधौ। —रा. रू.

लुड़कणो, लुड़कबो—देखो लुढकणो, लुढकबो' (रू. भे.)

लुड़कणहार, हारो (हारी), लुड़कणियौ—वि०।

लुड़किओड़ौ, लुड़कियोड़ौ, लुड़क्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुड़कीजणो, लुड़कीजबो—भाव वा०।

लुड़काड़णो, लुड़काड़बो—देखो 'लुढकाणो, लुढकाबो' (रू. भे.)

लुड़काणहार, हारो (हारी), लुड़काणियौ—वि०।

लुडकाड़िओड़ौ, लुड़काड़ियोड़ौ, लुड़काड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुड़काड़ीजणो, लुड़काड़ीजबो—कर्म वा०।

लुड़काड़ियोड़ौ—देखो 'लुढकायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. लुड़काड़ियोड़ी)

लुड़काणो, लुड़काबो—देखो 'लुढकाणो, लुढकाबो' (रू. भे.)

लुड़काणहार, हारो (हारी), लुड़काणियौ—वि०।

लुड़कायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लुड़काईजणो, लुड़काईजबो—कर्म वा०।

लुड़कावणो, लुड़कावबो—देखो 'लुढकाणो, लुढकाबो' (रू. भे.)

लुड़कावणहार, हारो (हारी), लुड़कावणियौ—वि०।

लुड़काविओड़ौ, लुड़कावियोड़ौ, लुड़याव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुड़कावीजणो, लुड़कावीजबो—कर्म वा०।

लुड़कावियोड़ौ—देखो 'लुढकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. लुड़काबियोड़ी)

लुड़कियोड़ो—देखो 'लुढकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुड़कियोड़ी)

लुड़की—सं. स्त्री.—दही में बनी हुई भांग।

लुड़खुड़ाणो, लुड़खुड़ाबो—देखो 'लड़खड़ाणो, लड़खड़ाबो' (रू. भे.)

लुड़खुड़ाणहार, हारो (हारी), लुड़खुड़ाणियौ—वि०।

लुड़खुड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लुड़खुड़ाईजणो, लुड़खुड़ाईजबो—भाव वा०।

लुड़खुड़ायोड़ो—देखो 'लड़खड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री लुड़खुड़ायोड़ी)

लुड़णो, लुड़बो देखो 'लुढणो, लुढबो' (रू. भे.)

लुड़णहार, हारो (हारी), लुड़णियौ—वि०।

लुड़िओड़ौ, लुड़ियोड़ौ, लुड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुडीजणौ, लुड़ीजबौ—भाव वा० ।

लुड़ाड़णौ, लुड़ाड़बौ—देखो 'लुढाणौ, लुढाबौ' (रू. भे.)

लुड़ाड़णहार, हारौ (हारी), लुड़ाड़णियौ—वि० ।

लुड़ाड़िओड़ौ, लुड़ाड़ियोड़ौ, लुड़ाड़चोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लुड़ाड़ीजणौ, लुड़ाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लुड़ाड़ियोड़ौ—देखो 'लुढायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुडाड़ियोड़ी)

लुड़ाणौ, लुड़ाबौ—देखो 'लुढाणौ, लुढाबौ' (रू. भे.)

उ०—चित गयौ चहु चालि दिस, एक पड़ी अणराय । हरीया वाडी फूल ज्युं, लेग्यौ पौण लुड़ाय —अनुभववाणी

लुड़ाणहार, हारौ (हारी), लुड़ाणियौ—वि० ।

लुड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लुड़ाईजणौ, लुड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

लुड़ायोड़ौ—देखो 'लुढायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुड़ायोड़ी)

लुड़ियोड़ौ—देखो 'लुढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लुड़ियोड़ी)

लुड़ींद-वि.—प्रिय, प्यारा ।

उ०—अट्ठ पहर अरस यें, लुड़ींदा आहीन । दादू पसै तिन्न कै, असा खबर डीन्ह । —दादूवाणी

लुचाई, लुच्चाई—सं. स्त्री.—१ धूर्तता । २ नीचता । ३ कमीनापन ।

उ०—पण एक वात कांनजी रै बडी जोर की ही, वा आ कै वांनै लुच्चाई लफगाई अर चोरी जारी सू बडी चिड ही ।

लुच्चौ-वि. [सं. लुच्] (स्त्री. लुच्ची) १ दुराचारी, कुमार्गी, लंपट ।

उ०—लुच्चा ललचावै लालच धन लागै, लोचण जळ मोचण सोचण खिण लागै । —ऊ. का

२ चोर, उचक्का ।

उ०—जिण भांत जहर सूं जहर दबै उणी ज भांत ए चोर गुंडा पुलिस सूं दबै । पुलिस जे मारकूट नीं करै तो ए लुच्चा लफगा आभै रै फांडौ कर दे । —अमर चूनड़ी

३ दुष्ट, कमीना ।

४ ढोंगी, पाखंडी, लफगा ।

लुटकणियौ-सं. पु.—किसी किसी बकरी के गर्दन के नीचे लटकने वाला अंग ।

लुटणौ, लुटबौ-क्रि. अ.—१ लुट जाना, लूटा जाना ।

उ०-उघड़ी छिब्र अदभूत, लुटी छिब्र लाज री । नोबत घुरी निहग, मदन महाराज री । —र. हमीर

२ किसी प्रिय वस्तु का हाथ से निकल जाना ।

३ चोर या डाकू द्वारा लूटा जाना ।

४ परेशान होना, बरबाद होना ।

उ०—तलबा सूं लुटता तिकै मेट करी मा-बाप । कासीदी कोसा मुजब, 'पातल' रौ परताप । —जुगतीदान देथौ

५ शयन करना ।

उ०—जद कूख मे लुटिया बेटा ई धावळा रा गुलाम व्हैगा तौ अै जैमतिया क्यू म्हारौ ध्यान राखै । —फुलवाड़ी

५ उपभोग करना, आनद लेना, रसास्वादन करना ।

उ०—२ इण भात मदन रस लुटिया, छछोहा छूटिया । गुलाब कळी बिकसी, भंवर गुंजार निकसी । —र. हमीर

६ देखो 'लोटणौ, लोटबौ' (रू. भे)

उ०—१ मा रौ आदेस सुणताई छवूं बेटा मलापता आय उण रै पगा मे लुटण लागा । —फुलवाड़ी

उ०—२ परम गुरा के सरण मे रहस्या, परणाम करा लुटकी । मीरा कै प्रभु गिरधरनागर जनम मरण सू छुटकी । —मीरा

लुटणहार, हारौ (हारी), लुटणियौ—वि० ।

लुटिओड़ौ, लुटियोड़ौ, लुटचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लुटीजणौ, लुटीजबौ—भाव वा० ।

लुट्टणौ, लुट्टबौ—रू० भे० ।

लुटाणौ, लुटाबौ-क्रि. स. (लुटणौ क्रि. का प्रे. रू.) १ किसी को ऐसी परिस्थिति मे डालना कि वह लूटा जाय ।

२ अपनी वस्तु व माल को दूसरो के समक्ष इस प्रकार डाल देना कि वह उसका अपने मनमाने ढंग से अधिकार कर सके, प्रयोग कर सके ।

३ बरबाद करना, अपव्यय करना ।

४ किसी वस्तु को सस्ती कीमत पर बेचना ।

५ दिल खोल कर दान देना, बाटना ।

उ०—रुपिया मुहर लुटाई रात, भगत हुआ सगळा परभात । निरख निरख दळ सिमरै-नाम, राधा गोविंद सीताराम । —रा. रू.

६ लुटने मे प्रवृत्त करना ।

७ बच्चे को देवता के चरणो में लुटाना ।

८ जमीन पर लोट-पोट कराना ।

लुटाणहार, हारौ (हारी), लुटाणियौ—वि० ।

लुटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लुटाईजणौ, लुटाईजबौ—कर्म वा० ।

लुटावणौ, लुटावबौ—रू० भे० ।

लुटायोड़ौ-भू का. कृ.—१ किसी को ऐसी स्थिति मे किया हुआ कि वह लुट जाय. २ अपनी वस्तु या सामान दूसरे के समक्ष इस

प्रकार रखा हुआ कि वे मनमाने ढंग से उसको प्रयोग में ले ३ अपव्यय किया हुआ, बर्बाद किया हुआ. ४ सस्ती कीमत पर औरों को अपनी वस्तु दी हुई. ५ खुले दिल से बांटा हुआ, दान दिया हुआ. ६ लोटने में प्रवृत किया हुआ. ७ छोटे बच्चों को देवताओं के समक्ष लुटाया हुआ, ८ जमीन पर लोट-पोट कराया हुआ.

(स्त्री. लुटायोड़ी)

लुटावणौ, लुटावबौ—देखो लुटाणौ, लुटाबौ' (रू. भे.)

उ०—घर घर ओघट घाट, टाट निस दीह कुटावै। दिल नहिं लेवै दाट, लाट गज हाट लुटावै। —ऊ का.

लुटावणहार, हारौ (हारी(, लुटावणियौ—वि०।

लुटाविप्रोड़ौ, लुटावियोड़ौ, लुटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुटावीजणौ, लुटावीजबौ—कर्म वा०।

लुटावियोड़ौ—देखो 'लुटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुटावियोड़ी)

लुटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ वह अवस्था या स्थिति जिसमें कोई प्रिय वस्तु हाथ से छीनी गई हो. २ चोर या डाकू द्वारा लूटा हुआ. ३ अपव्यय किया हुआ, बर्बाद किया हुआ. ४ अपनी वस्तु किसी को सस्ती कीमत पर दी हुई. ५ खुले दिल से बांटा हुआ, दान दिया हुआ।

६ देखो 'लोटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुटियोड़ी)

लुटेरौ—वि.—वह जो लूट पाट करता हो, डाकू, बागी।

लुट्टणौ, लुट्टबौ—देखो 'लुटणौ, लुटबौ' (रू. भे)

उ०—स्रोण के फुंहारै आसमांन को छुटै, लगौ धख जमीं पर लौटणा ज्यूं लुट्टै। ऐसैं किसबूंका हुन्नर करि मुजरै को आवै। कद्रै सूंनै की गुरज इनामूं में पावै। —सू. प्र.

लुट्टणहार, हारौ (हारी), लुट्टणियौ—वि.।

लुट्टिप्रोड़ौ, लुट्टियोड़ौ, लुट्टयोड़ौ—भू. का. कृ.।

लुट्टीजणौ, लुट्टीजबौ—भाव वा.।

लुट्टियोड़ौ—देखो 'लुटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुट्टियोड़ी)

लुडणौ, लुडबौ—देखो 'लुढणौ, लुढबौ' (रू. भे.)

उ०—लै मुख उडत नाग जिम **लुडियौ,** औ सिध सिंघल दीप दिस उडियौ। दीप सिंघल पदमण दरसाई, आकरखण मंत्र पढै उडाई। —सू. प्र.

लुडणहार, हारौ (हारी), लुडणियौ—वि.।

लुडिप्रोड़ौ, लुडियोड़ौ, लुडयोड़ौ—भू. का. कृ.।

लुडीजणौ लुडीजबौ—भाव वा.।

लुडियोड़ौ—देखो 'लुढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुडियोड़ी)

लुढकणौ, लुढकबौ—क्रि अ.—१ गेंद की तरह बराबर ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए नीचे गिरना।

ज्यूं—डूंगर माथै सूं भाटौ लुढकणौ।

२ गुड़क जाना।

३ मर जाना।

४ परीक्षा मे असफल होना।

लुढकणहार, हारौ (हारी), लुढकणियौ—वि.।

लुढकिप्रोड़ौ, लुढकियोड़ौ, लुढक्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुढकीजणौ, लुढकीजबौ—भाव वा.।

लढकणौ, लढकबौ, लुड़कणौ, लुड़कबौ—रू. भे.।

लुढकाड़णौ, लुढकाड़बौ—देखो 'लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे.)

लुढकाड़णहार, हारौ (हारी), लुढकाड़णियौ—वि.।

लुढकाड़िप्रोड़ौ, लुढकाड़ियोड़ौ, लुढकाड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुढकाड़ीजणौ, लुढकाड़ीजबौ—कर्म वा.।

लुढकाड़ियोड़ौ—देखो 'लुढकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुढकाड़ियोड़ी)

लुढकाणौ, लुढकाबौ—क्रि. स.—१ किसी को इस प्रकार चलाना या गति देना कि वह गेंद की भांति चक्कर खाता हुआ नीचे चला जाय।

२ गुड़काना, लुढकाना।

३ मराना।

४ परीक्षा में असफल कराना।

लुढकाणहार, हारौ (हारी), लुढकाणियौ—वि.।

लुढकायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लुढकाईजणौ, लुढकाईजबौ—कर्म वा.।

लुड़काड़णौ, लुड़काड़बौ, लुड़काणौ, लुड़काबौ, लुढकाड़णौ, लुढकाड़बौ, लुढकावणौ, लुढकावबौ—रू. भे.।

लुढकायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ इस प्रकार चलाया या गति दिया हुआ कि वह गेंद की तरह चक्कर लगाता चला गया हो. २ गुड़काया हुआ, लुढकाया हुआ. ३ परीक्षा में असफल किया हुआ।

(स्त्री. लुढकायोड़ी)

लुढकावणौ, लुढकावबौ—देखो 'लुढकाणौ, लुढकाबौ' (रू. भे.)

लुढकावणहार, हारौ (हारी), लुढकावणियौ—वि.।

लुढकाविप्रोड़ौ, लुढकावियोड़ौ, लुढकाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुढकावीजणौ, लुढकावीजबौ—कर्म वा.।

लुढकावियोड़ौ—देखो 'लुढकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुढकावियोड़ी)

लुढकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ गेंद की तरह बराबर ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए नीचे गिरा हुआ. २ गुकडका हुआ, लुढका हुआ. ३ मरा हुआ. ४ परीक्षा में असफल हुवा हुआ।
(स्त्री. लुढकियोड़ी)

लुढणौ, लुढबौ–क्रि अ.—१ लटक कर बार बार इधर उधर हिलना, झूलना।
उ०—काचल कातरिया बाजू में काठा, भुतजळ भेटै जां मेटै अघ माठां। कर मे काकणिया जसदा गळ काठी, अदभुत मोरा पर लुढतोड़ी आटी। —ऊ. का.
२ लुढकना, गिरना।
३ मस्ती में झूमना।
लुढणहार, हारौ (हारी), लुढणियौ—वि०।
लुढिओड़ौ, लुढियोड़ौ, लुढयोडौ—भू० का० कृ०।
लुढीजणौ, लुढीजबौ—भाव वा०।
लुड़णौ, लुड़बौ, लुडणौ, लुडबौ—रू० भे०।

लुढाड़णौ, लुढाड़बौ—देखो 'लुढाणौ, लुढाबौ' (रू. भे)

लुढाड़ियोड़ौ—देखो 'लुढायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लुढाडियोड़ी)

लुढाणौ, लुढाबौ–क्रि. स.—१ लटका कर बार २ इधर उधर हिलाना, झूलाना।
२ गिराना, लुढकाना।
३ मस्ती मे झूमाना।
लुढाणहार, हारौ (हारी), लुढाणियौ– वि०।
लुढायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लुढाईजणौ, लुढाईजबौ—कर्म वा०।
लुड़ाड़णौ, लुड़ाड़बौ, लुड़ाणौ, लुड़ाबौ, लुढाड़णौ, लुढाड़बौ, लुढावणौ, लुढावबौ—रू० भे०।

लुढायोड़ौ–भू. का. कृ—१ लटका कर बार २ इधर उधर हिलाया हुआ, झूलाया हुआ. २ गिराया हुआ, लुढकाया हुआ।
(स्त्री. लुढायोड़ी)

लुढावणौ, लुढावबौ—देखो 'लुढाणौ, लुढाबौ' (रू. भे.)
लुढावणहार, हारौ (हारी), लुढावणियौ—वि०।
लुढाविओड़ौ, लुढावियोड़ौ, लुढाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लुढावीजणौ, लुढावीजबौ—कर्म वा०।

लुढावियोड़ौ—देखो 'लुढायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लुढावियोड़ी)

लुढियड़ौ–भू. का. कृ.—१ गिरा हुआ, लुढका हुआ. २ लटक कर बार बार हिला हुआ, झूला हुआ. ३ झूमा हुआ।
(स्त्री. लुढियोडी)

लुणणौ, लुणबौ–क्रि. स. [स. लुञ्चनम्] १ काटना।
उ०—कल्पव्रक्ष मनोकामना पूरै, एकवार वावै, इकवीस वार **लुणै**। —रा. व. वि.
२ भेड की ऊन को कतरना, काटना।
लुणणहार, हारौ (हारी), लुणणियौ—वि.।
लुणिओड़ौ, लुणियोडौ, लुण्योड़ौ—भू. का. कृ.।
लुणीजणौ, लुणीजबौ—कर्म वा.।
लणणौ, लणबौ, लवणौ, लवबौ, लुणणौ, लुणबौ—रू. भे.।

लुणाई–स. स्त्री [सं. लुंचन] १ भेड के बाल कतरने की क्रिया या भाव।
२ वह समय (मौसम) जब भेड़ के बाल (ऊन) कतरे जायें।
३ भेड के बाल कतरने की मजदूरी।

लुणाणौ, लुणाबौ–क्रि. स.—१ कटाना।
२ भेड़ की ऊन कतराना, कटवाना।
लुणाणहार, हारौ (हारी), लुणाणियौ—वि०।
लुणायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लुईजणौ, लुईजबौ—कर्म वा०।
लुणाणौ, लुणाबौ, लुणावणौ, लुणावबौ—रू० भे०।

लुणायोड़ौ–भू का. कृ.—१ कटाया हुआ।
२ भेड़ की ऊन कतरी (काटी) हुई।
(स्त्री. लुणायोड़ी)

लुणावणौ, लुणावबौ—देखो 'लुणाणौ, लुणाबौ' (रू. भे)
लुणावणहार, हारौ (हारी), लुणावणियौ—वि.।
लुणाविओड़ौ, लुणावियोडौ, लुणाव्योडौ—भू. का. कृ.।
लुणावीजणौ, लुणावीजबौ—कर्म वा.।

लुणावणौ, लुणावबौ—देखो 'लुणायोडौ' (रू. भे.)

लुणावियोडौ—देखो 'लुणायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लुणावियोडी)

लुणियोडौ–भू. का. कृ.—१ काटा हुआ।
२ ऊन कतरी हुई (भेड)।
(स्त्री. लुणियोड़ी)

लुतफ—देखो 'लुत्फ' (रू. भे.)

लुत्त—देखो 'लुप्त' (रू. भे.)

लुत्तकेस–वि —केश लुंचन करने वाला (जैन)

लुत्थबत्थ—देखो 'लथबथ' (रू. भे.)
उ०—दळ मुसळमांन बळवान खळ, **लुत्थबत्थ** घप्पै लरत। घप्पै न युद्ध पद्धरपति, सूर वीर बकै भिरत। —ला. रा.

लुत्थि—देखो 'लोथ' (रू. भे.)

उ०—खंघै खेलह खिल्हार के भट सेल भचक्कै । खंड चटक्कै खघरी लगि **लुत्थि** लटक्कै । —व. भा.

लुत्फ-स. पु. [अ] १ आनन्द, मजा ।

२ स्वाद, रोचकता ।

रू. भे.—लुतफ

लुथबत्थ, लुथबथ, लुथब्बथ, लुथबुथ—देखो 'लथबथ' (रू. भे.)

उ०—१ पाट तग बरंग जंट भाट खागां पडै, वहै धड़ खाग पड़ीया भ्रगट रड़बड़ै । हर खड़ा बीर चोसट सहत हडहडै, **लुथबथ** हुआ उमराव खामंद लडै । —किसनौ आढौ

उ०—२ लंगरा रठट्ठां भाट नागेस नमावां लागौ, रिमां थाट अराबां धमावा लागौ रेण । लोहा **लुथबुथा** कूंपो गनीमा रमाबा लागौ भाराथा भमाबा लागौ गजा भीमसेण ।

—राठौड़ महेसदास री गीत

लुदराक, लुदराक्ख, लुदराख—देखो 'रुद्राक्ष' (रू. भे.)

लुदरी-सं. स्त्री. —१ एक आभूषण विशेष । (अ. मा.)

२ देखो 'रुद्री' (रू. भे.)

लुद्ध—वि. [सं. लुब्ध] लोभी, लालची ।

लुद्राक, लुद्राक्ख, लुद्राख—देखो 'रुद्राक्ष' (रू. भे.)

लुध्ध, लुध्धौ-वि. [सं. लुब्ध] १ लालची, लोभी ।

२ चाहने वाला, इच्छुक, अभिलाषी .

उ०—१ ऊलबै सिर हथ्थड़ा, चाहती रस-**लुध्ध** । विरह-महाघण ऊमटचउ, थाह निहाळइ मुध्ध । —ढो. मा.

उ०—२ उक्कंबी सिर हथ्थड़ा, चाहंती रस-**लुध्ध** । ऊंची चढि चारं'गि जिउं, मागि निहाळइ मुध्ध । —ढो. मा.

उ०—३ थाह निहाळइ दिन गिणइ, मारू आसा-**लुध्ध** । परदेसै धाघल घणा, विखउ न जांणइ मुध्ध । —ढो. मा.

लुप—देखो 'लप' (रू. भे.)

लुपकै छुपकै-क्रि. वि.—गुप्त रूप से, लुके-छिपे ।

उ०—**लुपकै** छूपकै घी लोगां रौ, पधरावै भरि पारियां । पाप चिकणां भव पेलेमें, खूब करैला ख्वारियां । —ऊ. का.

उ०—२ **लुपकै** छुपकै राजमें, मांडै रूळपट रोळ खावै न कोई खाणदै, डोफा देवै ढोळ । —नारायणसिंह सांदू

लुपणौ, लुपबौ—देखो 'लुकणौ, लुकबौ'

उ०—चिलकंतौ भूपाट निजर सूं **लुपतौ** जावै । पवन अबोळी उणमणी सी, सायत दरसावै । —शक्तिदांन कविया

लुपणहार, हारौ (हारी) लुपणियौ - वि० ।

लुपिओड़ौ, लुपियोड़ौ, लुप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लुपीजणौ, लुपीजबौ—भाव वा० ।

लुपत—देखो 'लुप्त' (रू. भे.)

लुपतोपमा—देखो 'लुप्तोपमा' (रू. भे.)

लुपियोड़ौ—देखो 'लुकियोड़ौ'

(स्त्री. लुपियोड़ी)

लुप्त-वि. —१ छिपा हुआ ।

२ गुप्त गोपनीय ।

३ नष्ट, भग्न ।

रू. भे.—लुत्त, लुपत

लुप्तोपमा-सं स्त्री. [सं.] उपमा अलंकार का चौथा भेद जिसमें उपमेय, उपमान धर्म और उपमावाचक में से किसी एक का लोप हो ।

रू. भे.—लुपतोपमा

लुब-सं पु.—१ चाह, इच्छा, लोभ ।

उ०—थित दाहन गेलन थेलिय की, चित चाहन चेलन चेलिय की । लुब लायन पाय पुजावन की, सुभ राय सु न्याय सुभावन की ।

—ऊ. का.

२ कानों में पहनने का स्त्रियों का आभूषण ।

उ०—लुब झुलत कांन प्रभा सुधरै दहुंधा मनु कांमहि चक्र करै ।

—सगुणा सत्रसाळ री वात

लुबकौ-सं. पु. (स्त्री. लबकी) गाय का नव जात बच्चा ।

लुबध—१ देखो 'लुब्धौ' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—जिम मधुकर नइ कमलणी, गंगा सागर वेल । **लुबधा** ढोलउ-मारुवी, कांम-कतूहळ केल । —ढो मा.

२ देखो 'लुब्धक' (रू. भे.)

लुबधक—देखो 'लुब्धक' (रू. भे.)

लुबधी, लुबधौ-वि.—लोभी, लालची, इच्छुक ।

उ०—भंवरा **लुबधी** वासका, मोह्या नाद कुरंग । इयौं दादू का मन रांम सूं, ज्यौं दीपक जोत पतंग । —दादूवाणी

उ०—२ ललना मूं **लुबधौ** थकौ, लोपि गमावै लज्जा लीक कि । जाय धन पिण जूजूओ, नीर रहै नहि फूटी नीक कि ।

—ध. व. ग्रं.

लुबांन—देखो 'लोबांन' (रू. भे.)

उ०—१ पिया समीप रूपरासि दासि आसि पासियं, भरै प्रकास स्री उदोति दीप जोति भासियं । सुगंध गंध सार एण सार मेघसार ए, सवास अंबरै **लुबांन** डंबरै निसार ए । —रा. रू.

लुबुद, लुबुध—देखो लुब्ध' (रू. भे.)

उ०—१ सर सरित निरमळ नीर सुंदर अमळ अंबर-ओपायं । किरि सुबुधि वधि सतसंग कारण, **लुबुध** होत विलोपयं । —रा. रू.

लुब्ध–वि.—१ लोभ ग्रसित, लालची।

उ०—लालचै दांम खाटण लुब्ध, दुसमन सास्त्रारा दसै। कर इता दूर धर्मसी कहै, विद्या भणिवा ने वसै। —ध. व. ग्रं.

२ मुग्ध, मोहित, आसक्त।

३ ललचाया हुआ, अभिलाषी।

रू. भे. लुब्बध, लुबुद, लुबुध।

लुब्धक–स. पु. [स. लुब्ध] बहेलिया, व्याघ्र, शिकारी।

२ उत्तरी गोलार्द्ध का एक बहुत तेजवान तारा।

रू. भे.—लुबध, लुब्बधक

लुब्धणौ, लुब्धबौ–क्रि. अ—आसक्त होना, निमग्न या तल्लीन होना।

उ०—परदारा सू पापियउ, भोगवइ कांम भोग। विसयारस लुब्धउ थकउ, न बीहइ परलोग। —स. कु.

लुब्धणहार, हारौ (हारी), लुब्धणियौ—वि.।

लुब्धिओड़ौ, लुब्धियोड़ौ, लुब्ध्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुब्धीजणौ, लुब्धीजबौ—भाव वा.।

लुब्धियोड़ौ–भू. का. कृ.—आसक्त हुवा हुआ, तल्लीन या निमग्न हुवा हुआ।

(स्त्री. लुब्धियोड़ी)

लुभाणौ, लुभाबौ–क्रि. अ.—लोभ या लालच में पड़ना।

उ०–झालौ सिहदेव तौ प्रथम अणी में ही लोह छक होय प्राणा रा पोखण में लुभायौ थकौ प्रमदा री प्राहुणौ अपूठौ खड़ियौ। —वं भा.

२ सुध-बुध भुलाना, मोह में पड़ना।

क्रि. स.—१ मोहित करना, आसक्त करना।

२ किसी के मन मे लोभ या लालच पैदा करना।

३ मोह से युक्त करना, अनुरक्त करना।

लुभाणहार, हारौ (हारी), लुभाणियौ—वि.।

लुभायोड़ौ—भू. का. कृ.।

लुभाईजणौ, लुभाईजबौ—भाव वा., कर्म वा.।

लुभावणौ, लुभावबौ, लोबाणौ, लोबाबौ, लोभाणौ, लोभाबौ–रू. भे.

लुभायोड़ौ–भू का. कृ.—१ लोभ या लालच मे पडा हुआ. २ सुध-बुध भूला हुआ. मोह मे पडा हुआ. ३ किसी के मन में लोभ या लालच उत्पन्न किया हुआ. ४ मोह से युक्त किया हुआ।

(स्त्री. लुभायोड़ी)

लुभावणौ–वि. [स्त्री. लुभावणी] १ मोहित करने वाला, लुभाने वाला, मनोहर।

उ०—नै वा अचित खबसूरत, इसी सुवावणी, इसी मनहरणी, इसी सुखदायी अर इसी लुभावणी, लागै के बात छोडौ। —फुलवाड़ी

२ सुन्दर, खूबसूरत।

लुभावणौ, लुभावबौ—देखो 'लुभाणौ, लुभाबौ' (रू. भे.)

उ०—सिल-किस्तूरी-गध समाणी घण मिरगाळै, गंग बहावणहार, हेमाळ-सीस हिमाळै। लेत विसाणी मेघ सावळौ इसौ लुभावै, भोळ नादियै कीच गुदळता सीग सुहावै। —मेघदूत

लुभावणहार, हारौ (हारी), लुभावणियौ—वि.।

लुभाविओड़ौ, लुभावियोड़ौ, लुभाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुभावीजणौ, लुभावीजबौ—कर्म वा।

लुभावियोड़ौ—देखो 'लुभायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. लुभावियोडी)

लुरड़णौ, लुरड़बौ–क्रि. स.—तोडना।

उ०—इण निमझर नै लुरड़ बुरड भेळी कर राखै, लुरड़ लाव साभाळ, साल भर सागां नाखै। दही रायतै छौंक, मोकळी निमझर देवै, ललचावै सुरराज भाज लप लबकौ लेवै। —द. दे.

लुरड़णहार, हारौ (हारी), लुरड़णियौ—वि.।

लुरड़िओड़ौ, लुरड़ियोड़ौ, लुरड़्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लुरड़ीजणौ, लुरड़ीजबौ—कर्म वा.।

लुरड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—तोड़ा हुआ।

(स्त्री. लुरड़ियोड़ी)

लरणौ, लुरबौ—देखो 'लुळणौ लुणबौ' (रू. भे)

उ०—काहे को देह धरी भजन बिन काहे को देह धरी। गरभवास की त्रास दिखाई, बाकी पीठ लुरी —मीरा

लुरणहार, हारौ (हारी), लुरणियौ—वि०।

लुरिओड़ौ, लुरियोड़ौ, लुर्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुरीजणौ, लुरीजबौ—भाव वा०।

लुरियोड़ौ—देखो 'लुळियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री लुरियोड़ी)

लुरियौ–सं. पु.—ऊंट की चाल या गति विशेष।

लुरी–सं. स्त्री.—१ लम्बे कानो वाली बकरी।

२ अत्यधिक शीतल वायु।

लुळणौ, लुळबौ–क्रि अ—१ झुकना, नीचा होना।

उ०—अठी, 'रतना' सांमी आय लटकै लुळी, तठै पूरण प्रेम री गांठ पूरण घुळी। कंवर छातीहूं भिड मिळियौ, सनेह रौ सांमंद्र पाजांहूं छिळियौ। —र. हमीर

२ लथपथ होना।

उ०—चोखां ग्रोढू चीर, लाळ मांही लुळ जावै। अतर लगाऊं अग, पाद आगै पुळ जावै। —ऊ. का.

३ कार्य सिद्धि या उद्देश्य की पूर्ति के लिए थोड़ा आगे बढ़ते हुए नीचे की ओर प्रवृत्त होना, झुकना।

उ०—१ लागू हूं पहली लुळे, पीताबर गुर पाय। भेद महारस भागवत, प्रामू जेरा पसाय। —ह. र.

उ०—२ पुन चेत ग्रासोज रा स्वेत पाखा. लुळै मात नूं जातरी लोक लाखा। बदीजै किसूं कीरती हेक बांकै, थळी री दुती दाखतौ सेंस थाकै। —मे. म.

उ०—३ भरी रूप रंग रस भरी, लुळ आवै जळ लेगा। सरवर त्या निरखरा सही, नीरज कियाक नेरा। र. हमीर

४ नम्र भाव से आचरण या व्यवहार करना, अभिमान बल आदि को छोड़ विनीत और सरल होना।

उ०—बेटी रौ बाप सूकौ लक्कड़ तथा टूंठ लुळै नहीं टूटणौ जांणै। —वसदोख

५ प्रवृत होना, उन्मुख होना।

उ०—१ कोइ आठ-दस हजार हाथ लाग्या। बस, मन री विरती खरचै खांनी लुळी। —वसदोख

उ०—२ लिछमी जी लुळताह, टुकीयक म्हां खांनी हुता। (तो) भायां नै भ्रमताह. कदैइ कर देतो 'करन' —लक्ष्मीदान बारहठ

६ मडराना, घुमड़ना।

उ०—१ सांवरा आयी सायबा, लुळ लुळ बरसै लूर। गोख उडीकै गोरड़ी, जोबन में भरपूर। —नारायणसिंह सांदू

उ०—२ घरा रा सायबा रै, ओ तौ सांवण लुळ्यां घर आय। बेटी जाट की रै, ओ तौ सांझ पड़्यां घर आय। —तेजाजी री लावणी

७ कोमलतावश इधर-उधर झुकना, सिमटना।

उ०—१ तंबोळ बिनां खाधां आहार विकार थावै, माडी मोडी कटारी री पड़दळी समावै। उतर रौ वाव वाजै वखरा नै लुळै चोवारी वाजै तौ, बीच सूं भाज जावै। —खीची गगेव नींबावत री दोपहरी

उ०—२ थोथी करड़ावरा राखरावाळा जंगी रूंख चरड़ चरड़ उथळीजरा लागा। लुळताई राखरावाळा कंवळा बांटका अठी उठी लळाक लळाक लुळै परा व्हांरौ कीं नीं बिगड़ै। —फुलवाड़ी

८ गतिशील या स्थित व्यक्ति या पदार्थ का दूसरी दिशा की ओर उन्मुख या प्रवृत्त होना, मुड़ना।

उ०—रायजादी लुळ-लुळ पाछी जोवै, जांणु म्हारी जान में भाबोसा पधारै। —लो गी.

९ प्रभाव कम होना।

उ०—इब तूं झुकज्या इब तूं लुळज्या, झिरोखै झाला दै रही ग्रे भांगड़ली। भवर रौ रस लै रही ग्रे भागड़ली। —लो. गी.

१० प्रभाव में आना, प्रभावित होना।

उ०—किसूं व्याकरण अवर भाखा अनै पराक्रत, संसक्रित तणौ क्यूं फिरै सार्ग। लाख रा ठाकरा तणा माथा लुळै, आखरा तणा गजबोह आगै। —नवलजी लाळस

११ देखो 'रळकणौ, रळकबौ'

उ०—कड़ियै ग्रो भैरव कड़ियै, लुळता केस, पावां ग्रो भैरव पावै वाज्या घूघरा। —लो. गी.

लुळणहार, हारौ (हारी), लुळणियौ—वि०।

लुळिग्रोड़ौ, लुळियोड़ौ, लुळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

लुळीजणौ, लुळीजबौ—भाव वा०।

लळणौ, लळबौ, लुरणौ, लुरबौ—रू० भे०।

लुळताई—सं. स्त्री.—१ लचीलापन, लचक, कोमलता।

उ०—थोथी करड़ावरा राखरावाळा जंगी रूंख चरड़ चरड़ उथळीजरा लागा लुळताई राखरावाळा कंवळा बांटका अठी-उठी लळाक लळाक लुळै परा व्हांरौ कीं नीं बिगड़ै। —फुलवाड़ी

२ विनम्रता, नम्रता।

उ०—अबै संगीजी थोड़ा ग्रोर नेड़ा भिड़'र लुळताई सूं बेटी री मा नै कयौ—"बीनरगी नै वरी इसी चळासी जिकौ घरा भाइ देखसी। —वरसगांठ

लुळाड़णौ, लुळाड़बौ—देखो 'लुळाणौ, लुळाबौ' (रू. भे.)

लुळाड़णहार, हारौ (हारी), लुळाड़णियौ—वि०।

लुळाड़िग्रोड़ौ, लुळाड़ियोड़ौ, लुळाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुळाड़ीजणौ, लुळाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लुळाड़ियोड़ौ—देखो 'लुळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुळाड़ियोड़ी)

लुळाणौ, लुळाबौ—क्रि स.—१ झुकाना, नीचा करना या कराना।

२ लथपथ करना या कराना।

३ कार्य सिद्ध या उद्देश्य की पूर्ति हेतु नीचे की ओर प्रवृत्त करना या झुकाना।

४ नम्र भाव से आचरण या व्यवहार कराना या अभिमान बल आदि को छोड़ाना, विनीत बनाना।

५ प्रवृत या उन्मुख करना या कराना।

६ मडराना, घुमड़ाना।

७ कोमल वस्तु या पदार्थ को इधर उधर झुकाना, मोड़ना।

उ०—जच्चा रांणी रै हळद, तेल अर गुज्जी रै आटा री पीठी कर नै आखौ डील मसळियौ। बाटां उतारी। हाडका लुळाया। —फुलवाड़ी

८ प्रभाव कम कराना ।

९ गतिशील या स्थित व्यक्ति या बात को एक तरफ से हटा कर दूसरी दिशा की तरफ उन्मुख या प्रवृत्त कराना, मुडाना ।

उ०—दीवाणजी री अकल अेड़ी बात में अणूंती भवती ही। कंडी ई बात नै लुळाय कठी नै ई पुगाय देता। —फुलवाडी

१० मोडना।

उ०—ओ तौ साव इज पतळौ। धोळौ धोळौ जाणै मादगी सू उठ्यो व्है। इणनै लुळायौ कुण ! साव इज दोलड़ो कर न्हाकियौ। —फुलवाड़ी

११ देखो 'रळकाणौ, रळकाबौ'

लुळाणहार, हारौ (हारी) लुळाणियौ—वि०।

लुळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लुळाईजणौ, लुळाईजबौ—कर्म वा०।

लुळाड़णौ, लुळाड़बौ, लुळावणौ, लुळावबौ—रू० भे०।

लुलाय-सं. पु. [स. लुलायः] भैंसा।

उ०—कर चाप अठारटकी करखै, परखा सर एलम की परखै। उडि बेध अकास हुवै डरता, छिक जाय लुलाय पखाल छता। —मे. म.

लुळायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ झुकाया हुआ. २ लथपथ किया हुआ. ३ कार्य सिद्धि या उद्देश्य की पूर्ति के लिये थोड़ा आगे बढ़ते हुए नीचे की ओर प्रवृत किया हुआ, झुकाया हुआ. ४ नम्रता से आचरण या व्यवहार किया हुआ, अभिमान बल आदि को छोडा कर विनीत व सरल किया हुआ. ५ प्रवृत किया हुआ. ६ मडराया हुआ, घुमडाया हुआ. ७ कोमल पदार्थ को इधर उधर झुकाया या मोडा हुआ. ८ गतिशील या स्थित व्यक्ति, पदार्थ या बात को दूसरी ओर उन्मुख या प्रवृत्त किया हुआ। ९ देखो 'रळकायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुळायोडी)

लुळावणौ, लुळावबौ—देखो 'लुळाणौ, लुळाबौ' (रू भे)

लुळावणहार, हारौ (हारी), **लुळावणियौ**—वि०।

लुळावियोड़ौ-भू० का० कृ०।

लुळावीजणौ, लुळावीजबौ—कर्म वा०।

लुळावियोडौ—देखो 'लुळायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुळावियोड़ी)

लुळियोड़ौ-भू. का कृ.—१ झुका हुआ. २ लथपथ हुवा हुआ. ३ कार्य सिद्धि या उद्देश्य पूर्ति हेतु आगे बढ कर थोडा नीचे झुका हुआ या प्रवृत्त हुवा हुआ. ४ नम्रता से आचरण या व्यवहार किया हुआ, विनम्र हुवा हुआ ५ प्रवृत हुवा हुआ ६ कोमलतावश इधर उधर झुका हुआ ७ मडराया या घुमडाया हुआ. ८ गतिशील या स्थित व्यक्ति, पदार्थ या बात का दूसरी तरफ उन्मुख या प्रवृत हुवा हुआ. ९ प्रभाव कम हुवा हुआ. १० प्रभाव मे आया हुआ, प्रभावित।

(स्त्री. लुळियोड़ी)

लुलूलिया, लुलूसाही-स. पु.—१ मारवाड राज्यान्तर्गत चलने वाला एक सिक्का विशेष।

वि. वि. यह जोधपुर राज्यान्तर्गत महाराजा तखतसिंह जी के समय नाजर हरकरण द्वारा चलाया गया था।

लुवणौ, लुवबौ-क्रि. स—पौंछना।

उ०—लेता यूं विसराम, सीचता कळी चमेली। बरस फुहारां बाग, बाहणी तीर सकेली। मगसी झूठण-लूब कपोळा नीर लुवंती। तिण भामणिया छाह करी जे फूल विणंती। —मेघ

लुवणहार, हारौ (हारी), लुवणियौ—वि०।

लुवियोड़ौ, लुवियोड़ौ लुव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुवीजणौ, लुवीजबौ—कर्म वा०।

लुहणौ, लुहबौ, लुणौ, लुबौ, लूअणौ, लूअबौ, लूणौ, लूबौ, लूवणौ, लूवबौ, लूहणौ, लूहबौ—रू० भे०।

लुवरड़ौ, लुवरडौ-सं. पु. (स्त्री. लुवरड़ी लुवरडी) बेटा, पुत्र।

उ०—थारी लुवरडी म्हारौ लुवरड़ौ अब तौ करौ निगोडघौ ब्याव रायजादी ये लूर छैला प्यारी ये लूर जेसलमेरी ये। —लो. गी.

लुवार—१ देखो 'लुहार' (रू. भे.)

उ०—१ साज लोहा रा सांतरा, ताळा करण तयार। किसबी सारा कांमरौ, लीजै सुघड लुवार। —रमणप्रकास

उ०—२ रूप जेम बारंगणा, रस छंदा गारीह। सारी बातां सुलखणी, लीजै लुवारीह। —रमण प्रकाश

२ देखो 'लुवारौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लुवारी)

लुवारियौ, लुवारौ-सं. पु.—१ गाय का छोटा बच्चा।

उ०—दादीसासू पोतिया जुवाई नै देखण नै तरसी अर हाथ री कापती दो आगळचा एक आख रै ऐडै छेडै देय'र रसोई री बारी सूं उलळी, जाणै सुवाडी गाय लुवारै टोघडिये पर राभी है। —दसदोख

२ देखो 'लुहार' (अल्पा., रू भे)

लुवियोड़ौ-भू का. कृ.—पोंछा हुआ।

(स्त्री. लुवियोड़ी)

लुह-सं. पु.—१ शस्त्र प्रहार।

उ०—हुवै असि तांम चढै सु दुझाळ, लुहां अवधूत दियै नंदलाल। —सू. प्र.

२ लूखा, रुक्ष।

उ०—अरस विरस अंत पंत लुह, ए चाल्या पच आहार। ए जीमी जीवै मुनि धन, मोटा अणगार। —जयवांणी

लुहण—वि.—चूसने वाला, शोषण करने वाला।

उ०—आंत्र-लुहण तूं माहरेजी, काळेजा नी कोर। तूं वच्छ आधा-लाकड़ी जी, किम हुवै कठिन कठोर —जयवाणी

लुहणौ, लुहबौ—देखो 'लुवणौ लुवबौ' (रू. भे)

उ०—प्रीथीराज माहली चाळ था बरछी लुही ऊजळी थका आयौ। —नैणसी

लुहणहार, हारौ (हारी), लुहणियौ—वि०।

लुहिग्रोड़ौ, लुहियोड़ौ, लुह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लुहीजणौ लुहीजबौ—भाव वा०।

लुहार—सं. पु. [सं. लोहा+कार, प्रा. लोहार] (स्त्री. लुहारण, लुहारी) लोहे की चीजें बनाने या काम करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

उ०—१ ससौ सास सम्हातां समरण, तन मन खुब तपावै। लोह लुहार तणी गति लागै, मारौमार मचावै। —ऊ. का.

उ०—२ हर सिर घर लाल लुहारी नीसरीजी हर भर हटवाड़ै रै मांय। घड़ल्या म्हारा अजब लुहारा दीवलौ जी। —लो. गी.

२ चौरासी चोहट्टों में से एक। (सभा)

रू. भे.—लवार, लुवार, लोहकार, लोहार

अल्पा.,—लवारियौ, लवारौ, लुवारियौ, लुवारौ

लुहारखाती—बढई जाति का वह व्यक्ति जो लोहार का पेशा भी करता हो।(मा. म.)

रू. भे.—लवारखाती

लुहास—सं. पु.—श्याम घटा के शिखर पर उठने वाले बादल जो घटा को स्पर्श करते ही उनमे पानी ही पानी हो जाता है। (शेखावाटी)

लुहियोड़ौ—देखो 'लुवियोड़ौ' (रू. भे.)

लुही—देखो 'लोही' (रू. भे.)

उ०—१ कटै पळ कमळ स्रीफल कीध, लुही घट काढ जिकौ घ्रत लीध। धुवै रणताळ सझाळ स्रोम, हका धुनि वेद करै इम होम। —सू. प्र

उ०—२ भयांनक हेक करै भाराथ, हिकां मसतक्क पड़ै पग्र हाथ। वैरी-डंड हेकां वीखरियाह, लुटै भूंइ हेक लुही भरियाह। —गु. रू ब

लूंक—देखो 'लूंग' (रू. भे.)

लूंकड़ी—देखो 'लांकी' (अल्पा., रू. भे.)

लूंकार—सं. पु—ऊन का बना मोटा वस्त्र जो ओढने के काम आता है तथा इकरंगा होता है। कशीदा नही होता।

लूंकी—देखो 'लांकी' (रू. भे.)

लूंकीसूळौ—१ देखो 'लांकी सूळौ' (रू. भे.)

लूंकौ—(स्त्री. लूंकी)—देखो 'लाकौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रगत तणौ परताप, नही पास्यौ नर देही। जगमें बीजै जनम, हुस्यौ भुंगर कनसेही। लूकौ छलड़ौ किना, बूट इजगर कन बोघी। गोगौ हुस्यौ क गोह, भेड भीला घर जोगी। —अरजुनजी बारहठ

उ०—२ लूक्या करै न लोप, वन केहर भेळा वसै। करै न सबळा कोप, रंकां ऊपर राजिया। —किरपारांम

लूंग—सं. पु.—१ शमी, बबूल वृक्ष के पत्ते जो ऊंट भेड़ व बकरियों को चराने के काम आते हैं।

उ०—१ मस्तक लीलौ लूंग, धरण री धूड़ ठरावै। खेजड़ खेवा खाय, मरु में छांन छवावै। —दसदेव

उ०—२ ऊंचै मुख सूं ऊंट, चूट चट लूंगां लवकै। गलर गलर गटकाय, डोलती डागां डबकै। —दसदेव

उ०—३ खेजड़ी रा लूंग ई इण तड़ा आगै नीं ढबै, पछै बापडा माचरी कांई जिनात। —फुलवाड़ी

२ बंदूक पर बारुद रखने का स्थान।

उ०—लखवार बूंदकांय लूंग लिया, करि अंग भालोड़ दूसोर किया। घाह साहर ऊगर घोर घलै, सत बीसांय नाहर ठौर सलै।—पा. प्र.

३ एक पक्षी विशेष।

उ०—चरज सीचांण सो लाग आतुरी, बाज बहरूं की झपट। झुही झुही लूंगूं की उलट। —सू. प्र.

रू. भे.—लूंक।

४ देखो 'लवंग' (रू. भे)

लूंगती—देखो 'लांकी' (रू भे)

लूंगाकरौ—स. पु—एक मारवाड़ी लोकगीत।

लूंगी—स. स्त्री.—१ वह वस्त्र जो कमर से बांधा जाता एवं टखनों तक लटकता है।

२ सिर पर बांधने या बिछाने के काम आने वाला वस्त्र विशेष।

उ०—करसे रे पितळ री पिलांणा, लाल लूंगी रो घासियौ। कसणा कसुमल डोर, सरब सोना रा पागड़ा। —लो. गी

३ स्त्रियों के ओढने का वस्त्र विशेष।

उ०—१ लूंगी लाज्यो जी, ओ जी म्हारा ईसरजी ओ उमराव, जटाधारी, लूंगी लाज्यौ जी। लूंगी महगी ए, ओ ए म्हारी पातलड़ी ए गणगोर गढ़ा री रांणी, लूगी महगी ए। —लो. गी.

४ एक राजस्थानी लोक गीत।

५ छोटे बच्चे का शिश्न ।

रू. भे —लूंगी, लींगी, लोंगी ।

लूंचणौ, लूचबौ—१ हड़पना ।

उ०—१ उजबक थका राजमें उभा, लाखा रो धन **लूंचै** । गहर गभीर अभनमौ 'गागौ' पाछौ जाब न पूछै । —बुधजी आसियौ

लूंचणहार, हारौ (हारी), लूंचणियौ—वि० ।

लूंचिओड़ौ, लूंचियोड़ौ, लूच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूंचीजणौ, लूचीजबौ—भाव वा० ।

लुंचणौ, लुंचबौ—रू० भे० ।

लूंचाड़णौ लूचाड़बौ—देखो 'लूचाणौ लूचाबौ' (रू. भे.)

लूंचाणौ लूंचाबौ–क्रि. स.—हड़पवाना ।

लूंचाणहार, हारौ (हारी), लूंचाणियौ—वि० ।

लूचायोड़ौ,—भू० का० कृ० ।

लूचाईजणौ, लूंचाईजबौ— कर्म वा० ।

लूंचाड़णौ, लूंचाड़बौ, लूंचावणौ, लूचावबौ - रू० भे० ।

लूंचायोड़ौ–भू का कृ.—हड़पाया हुआ ।

(स्त्री लूंचायोडी)

लूंचावणौ लूचावबौ—देखो 'लूंचाणौ, लूंचाबौ' (रू. भे.)

लूचावणहार, हारौ (हारी), लूंचावणियौ वि० ।

लूचाविओड़ौ, लूंचावियोडौ, लूचाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

लूंचावीजणौ, लूंचावीजबौ—भाव वा० ।

लूंचावियोड़ौ—देखो 'लूंचायोडौ' (रू. भे)

लूंचियोड़ौ–भू का. कृ.—हड़पा हुआ ।

(स्त्री. लूंचियोड़ी)

लूंछण–सं. स्त्री.—१ किसी वस्तु या पदार्थ को सिर के ऊपर फेर कर दान देने की क्रिया या न्यौछावर करने की क्रिया ।

२ वस्त्र विशेष ।

उ०—खीरोदक ततखेव-माहा, आप्या **लूंछण** अंग । पछइ पटुला पहिरणइ, नवहत्था नवरंग । —मा का प्र.

लूंछणौ, लूंछबौ–क्रि. स —१ न्यौछावर करना ।

उ०—रत्न-कबल सिरि **लूंछणा**, तनु लूहवा तनु-सुख । अबला. आरीसु लेई रही, जमली जोवा मुख । —मा का प्र

लूछणहार, हारौ (हारी), लूंछणियौ—वि० ।

लूंछिओड़ौ, लूंछियोड़ौ, लूंछ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूछीजणौ, लूंछीजबौ कर्म वा० ।

लुछणौ, लुंछबौ - रू० भे० ।

लूंछियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ न्यौछावर किया हुआ ।

(स्त्री. लूंछियोडी)

लूंजी–सं. स्त्री—एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष ।

रू. भे.—लुजी ।

लूंटणौ, लूंटबौ—देखो 'लूटणौ, लूटबौ (रू. भे.)

उ०—थोडो कुण करै भरोसौ थारौ, वीसा वाता लखण बुरा । **लूंटै** कुण तौ विन लाखीणौ, जोवन सरखौ रतन जुरा । —ओपौ आढौ

लूंटणहार, हारौ (हारी), लूंटणियौ—वि० ।

लूंटिओड़ौ, लूंटियोड़ौ, लूंट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूंटीजणौ, लूंटीजबौ—कर्म वा० ।

लूंटियोड़ौ—देखो 'लूटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लूटियोड़ी)

लूंठाई—देखो 'लाठाई' (रू. भे.)

लूंठापण, लूंठापणौ, लूंठापो—१ देखो 'लाठापणौ' (रू. भे)

उ०—१ काचा करमां सू रैंगा गळ रीता । साचा सोना रा बाळ-लिया बीता । गौरा खाली हुय खाला री गांठा । लेग्यो **लूंठापण** लाठा री लाठा । —ऊ. का.

लूठौ—देखो 'लाठौ' (रू. भे)

उ०—१ कद मरै कुटिळ ओ काळसू, कहै उडाऊं कागलो । लागगो लार **लूठौ** लियण, आटौ कोइक आगलो । —ऊ. का.

उ०—२ खळ दसखध उपाडण खूटा, कीरत भुज जाहर चिहूं कूंटा । लखण काज आगण गिर **लूंठा** टेक निवाह वाह किप-टूटा । —र. ज. प्र.

उ०—३ ए तो सगळी थोथी वातां है चौधरिया । असली बात तो कोई दूजी दीसै । स्यान् राजा सूं काम कढावणौ हूंला, **लूठौ** इनाम लेवण री मसा व्हैला । —अमर चूनडी

लूंड—देखो 'लूंडौ' (मह रू भे)

उ०—कवडी रा लहण मही, गखे हट कर रोक । पाग काख मांझल लिया, **लूंड** बजारी लोक । —बां. दा.

लूंडौ–(स्त्री. लुंडी)—१ मूर्ख बेवकूफ ।

२ लुच्चा, लफगा ।

उ०—१ **लूडा** मुलक रा भेळा हुइ गया । सो एक तो मुगळ इसा वेग और एक पठाण सु सेखा सो दोनूं मुलक नूं लूटै । —गोपाळदास गौड री वारता

देखो 'लौंडौ' (रू भे.)

उ०—जदी **लूंडीया** जाय हुरमां सुं मालुम करी बाई जी सायब खीज करि महल से नीचै आया अरु आतै ही बोलीया नही पोढा रहै । —राहब-साहब री वात

(स्त्री. लूंडिया)

लूण—देखो 'लवण' (रू. भे.)

उ०—भखियौ ज लूंण भूपाळ रौ, घणा रिजक सांभळ घणौ। कहि सभरीक ऊजल करा, तिकौ लूंण साभर तणौ। —सू. प्र.

लूणहरांम—वि. यौ. [स. लवण+अ. हराम] कृतघ्न, नमकहराम।

उ०—लाणत **लूणहरांम**, 'जसवंत' में कीधी जका। फुळ बिदरा रौ कांम, साबत तो मैं 'सादला'। —दळजी महड्ड

रू भे.—लूणहरांम।

लूंणहरांमी—स. स्त्री.—१ कृतघ्नता।

रू. भे.—लूणहरामी।

२ देखो 'लूणहराम' (रू. भे.)

उ०—**लूंणहरांमी** बहुत देख्या, बचन न माने तोरा। म्हैं तौ सांमधरम रे कारण अरजी करूं सवेरा।

—हरिरामजी महाराज

लूंणियोड़ौ—देखो 'लुवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लूंणियोड़ी)

लूंणी—सं. स्त्री.—१ मारवाड़ की एक नदी का नाम।

२ वनस्पति विशेष जिसके छोटे २ लाल फूल लगते है।

उ०—लाज-लजालू लक्ष्मणा, **लूंणी** लसन लवंगि। लीलावंती लुंकडी. लाहि लवीरी सगि। —मा. कां. प्र.

सं. पु.—३ मक्खन।

लूंणो, लूंबौ—देखो 'लुवणौ, लुवबौ' (रू. भे.)

लूणहार, हारौ (हारी), लूणियौ—वि०।

लूंणिओड़ौ, लूंणियोड़ौ, लूंण्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूंणीजणौ, लूंणीजबौ—कर्म वा०।

लूंथ—देखो 'लोथ' (रू भे)

उ०—गळोवळ हेक चटा-बख गूंथ, लळावट हेक लुळै हुइ **लूंथ**। चळव्वळ हेक हुआ अन चोळ, धारां महि हेक दियै घमरोळ।

—गु. रू. बं.

लूंदौ—सं. पु—किसी गाढे गीले पदार्थ का ढेले की तरह बधा हुआ गोलाकार पिंड, लौदा।

उ०—म्हनै थांरै काकौसा रौ कागद पढनै सुणाय दो वीरा! म्हूं थानै बिलांवणौ करती वखत बूजी रै छांनै मांखण रौ **लूंदौ** दूं'ला। —अमर चूंनड़ी

रू. भे.—लोदौ, लौंदौ।

लूंधियौ—सं. पु.—संध्याकाल का वह समय जब कुछ अंधेरे के कारण कोई स्पष्ट पहचाना न जा सके।

लूंब—स. स्त्री [सं. लंबुक] १ रेशम या सूत के धागों का गुंथा हुआ गुच्छा जो आभूषणों की शोभा वृद्धि के लिए लटकाया जाता है।

उ०—ऊंचणा लागी नार नवेली, माथै ऊपर मटकी। बाजूड़ै री **लूंबां** बैं'री, ईढांणी में अटकी। —चेतमांनखौ

२ ऊट घोडे आदि के चारजामो के इर्द-गिर्द लटकाया जाने वाला लाल व कोड़ियों का गुच्छा, झूमका।

उ०—कत सोभति रेसम **लूंब** करै, धुरवा किर फूलिय सझ धरै। अति उग्र तुरंगम अग वियै, क्रम सोभत आवत डोर कियै।

—रा. रू.

३ बहुत सी वस्तुओं का ऐसा समूह जो एक साथ उगा, उपजा या बना हो।

उ०—१ बेदांनै दाखां बेदांनै अनार। चिलकौचै बेह और सेवूंका विस्तार। कपूर-गरभ केळीका जूथ केळूंकी झूंब। श्रीफळ विदांम और नींबू के **लूंब**। —सू .प्र.

उ०—२ करतीयां रौ झूंबको, मोतियां री **लूंब** हीरा रौ लछौ सरग री झूंब। —मयारांम दरजी री बात

४ सावन भादों मे अविच्छिन्न व निरन्तर होने वाली छोटी छोटी बूंदों की वर्षा, इस वर्षा के बादल।

उ०—१ केहरी दीठा कळा, खळ दल करसी खेह। **लूंबां** झड़ नह लगिया, लुवां न कांनी लेह। —बां. दा.

उ०—२ अगिणत दांन निजर पह आगै। **लूंबां** किर सांवण झड लागै। —रा. रू.

उ०—३ **लूंबा** झड़ नदिया लहर, बक पंकत भर बाथ। मोरा सोर ममोलियां, सांवण लायौ साथ। —बां. दा.

५ मकान में दीपक रखने हेतु दीवार में लगाया हुआ पत्थर।

६ मकान में छज्जे के नीचे लगे पत्थर पर खोद कर बनाए हुए गोले।

७ झूले की अवरोह गति।

उ०—पवन का परवाह, गुलाब की मूठ, सिधराजकौ गोटकौ, तारे की टूट। आतस कौ भमकौ, चक्री की चाल, चपलाकौ चमकौ छाती की ढाल। सींचाणै की झड़प, हींडै की **लूंब** खगराज का बचा, खेतु में खुंब। —मयारांम दरजी री बात

लूंबड़ौ—सं. पु.—नारियल वृक्ष का फल जिसके छिलके के अन्दर गिरि रहती है।

लूंबझूंब—१ सुसज्जित, शृंगारयुक्त।

उ०—१ कलाबातु सागता जरी रा **लूंबझूंब** किया, संगीत नाचणा भाव परीरा सारीख। आकरा झालियां पाव तुरी साबतां ऊठै, अढाई खुरीरा घाव छूरी रा आरीख।

—महाराजा बळूंतसिंह रौ गीत

उ०—२ सो किण भांतरा पलांण जिके समंकरी नीपनी मोरबी पलांणी, दांमण चमकती. पिडांमारी लगांमी आरसी आलीआंरी

छालीग्रा पाखरा घातिग्रा, पलाण लगाण, जीण साकति साभ-वाभ लूंबझूंब करि नै सामण री त्रीजणी ज्यों पांडवै सिणगार पाखर घाति चोकि ग्राणि हाजर किग्रा छै।

—राजान राउत री बात-वणाव

२ ग्राच्छादित, ग्रावेष्टित।

उ०—लुळि लूंबझूंब कदब होवत, ग्रंब के चिह्न फेर। तरु डार धूजत मधुर कूजत, कोकिला तिहिं बेर।

—वि कु.

रू भे.—लूंमझूम, लूमझूम

लूंबणौ, लूंबबौ—क्रि. ग्र.—१ किसी वस्तु का एक सिरा किसी दूसरी वस्तु से लगा हुग्रा हो तथा दूसरा सिरा ग्रधर मे लटकता हो, लटकना, लटूमना।

उ०—जे करतौ हुवै चोरी जारी, उणसू ग्रति नहीं कीजै यारी। वसत न लीजै चोरी वाळी, लूंबै मत तुं निबळी डाळी।

—ध. व ग्र.

२ लिपटना, चिपटना।

उ०—बिरछा लूंबी बेलियां, फूली फली फबेह। सीतळ छाह सुहा-वणी, दणियर किरण दबेह।

—र हमीर

उ०—१ यौं करता सीख करी, तद रतना' ग्राखिया भरी। बाला लूंबी, गळै बिलूंबी। बोलणी नह ग्रायो, गळौ गहरायो।

—र हमीर

४ ग्राक्रमण करना, हमला करना।

उ०—१ हे हेली म्हारै पती घरोघर मूं वैर वसाया है दिनोदिन रोजीना दुसमण ग्राय धाड री धाड माथै लूंबै है। —वी. स. टी.

उ०—२ ग्रणभंग जोध ग्रसमान दिस, ऊनरिया ग्रसमान रा। कमधज्ज कर्णगिरि लूबिया, किरि लंका गढ वांनरा। —गु रू. बं

उ० —३ सूता पर जुद्ध मे म्हारा कत सूं दस दस वीसां ग्रादमी ग्रायनै लड़ण वासतै लूंबिया तिकानै ऊठतै ही कत भजाय दीधा।

—वी. स. टी.

५ घेरना, ग्रावेष्टित करना।

उ०—गढ लूंबी चहुंवळ मचि दमगळ, कोट वळवळ प्रळै जळ कळ। घोम झळवण गयण घू धळ, काजि पळ मुख सकति कळकळ।

—रा. रू.

उ० —२ बामै बार हाक लूबिया बैरी, बागिया फारक घार बहै। जोबन कहे 'कमा' नीसरजै, करि भ.रथ कुळग्राट कहै।

—करमसैन कल्याणोत कछवाह री गीत

उ०—३ सु ग्रठै वडौ झगडौ हुवौ। ग्रादमी ग्राठ मा'राज रै हाथै ठौड रया ग्रठै। ग्रर, माराज पण घावा पूर हुवा। सत्रसाल जी घावां पूर हुवा। दिखणी व्यारूं कांनी लूबिया है वा लोकनूं घणा सांकड़े लियौ।

—द दा.

उ०—४ दारण 'कमा' लूंबिया दोळा, 'ग्रानै' लिया दिवाळां ग्रोळा। 'ग्रानै' तणा सुहड़ रिण ग्राया, पडिया तेरह ग्रवर पुळाया।

—रा. रू.

६ लूटना,

उ०—पछै श्री रावजी री फोजा ठौड-ठौड मेवाड़ मे ग्राय लूबी। देसरो जळळ जादा दीवाणजी नूं पहुंतौ। दीवाणजी नै फिकर सबळौ हुवौ।

—नैणसी

७ झूमना, उमडना।

लूंबणहार, हारौ (हारी), लूंबणियौ—वि०।

लूबिग्रोड़ौ, लूंबियोड़ौ, लूब्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूंबीजणौ, लूबीजबौ—भाव वा०।

नूंबणौ, लुंबबौ, लुंमणौ, लुंमबौ, लूंमणौ, लूंमबौ, लूवणौ, लूवबौ, लूमणौ, लूमबौ—रू० भे०।

लूंबलूंबाळी—वि०—लूंबोवाली, जिसके लूंबे लगी हो, लूंमो से युक्त।

उ०—१ ग्रौरा रै मोचरा डोडा एलची ए, म्हारी ग्रंबाजी रै नागर बेल। ग्रौरा रै पोडण हिंगळू ढोलियौ ए, म्हारी ग्रबा जी रै लूंबलूंबाळी सेज।

—लो. गी.

लूबालूब—वि०—१ पूर्ण शृंगार से सुसज्जित, सजा हुग्रा।

रू. भे.—लाबलूब, लांबालूंब,

लूंबाळौ - देखो 'लुबाळौ' (रू. भे.)

उ०—खारा रै समदा सूं कोडा मगाया, जूनेगढ गूथाया रे, म्हारौ गोरबद लूबाळौ।

— लो. गी.

लूबियोड़ौ—भू का कृ.—१ किसी वस्तु का एक छोर किसी मे ग्रटका हुग्रा हो तथा दूसरा छोर ग्रधर में लटका हुग्रा. २ झूमा या लिपटा हुग्रा. ३ ग्रावेष्टित किया हुग्रा, घेरा हुग्रा. ४ ग्राक्रमण किया हुग्रा।

(स्त्री. लूंबियोड़ी)

लूंबौ—स. पु.—१ धन सम्पत्ति।

२ लाभ।

उ०—ग्रमळ गळै छै। तिण समीयै जखडौ जाय निकळियौ। तरै भीला दीठौ नै कह्यौ—स्रीमाता जी लूंबौ दीधौ।

—जखडा मुखड़ा भाटी री बात

लूंम—स. स्त्री.—देखो 'लूम' (रू. भे)

उ०—सांवण मास सुहावणौ, लागै झड जळ सूंम। उण दिन ही ग्रासव तणी, सौरभ नह ले सूंम।

—बां. दा.

लूंमणौ, लूमबौ—देखो 'लूंबणौ, लूंबबौ' (रू. भे.)

उ०—रेसमी, गुलाब, गेंद, केवड़ा समुहै छै। ग्रौर लीलडंबर तरोवर पर बेलिडियां लूंम रहै छै।

—बगसीराम प्रोहित री बात

लूंमणहार, हारो (हारी), लूंमणियो—वि० ।
लूंमिश्रोड़ो, लूंमियोड़ो, लूंम्योड़ो—भू० का० कृ० ।
लूंमीजणो, लूंमीजबो—भाव वा० ।

लूंमियोड़ो—देखो 'लू बियोडो' (रू. भे)
(स्त्री. लूंमियोड़ी)

लूंमभूंम—देखो 'लूंबभूंब' (रू. भे.)

लूंमी—देखो 'लूंब' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—ईढी कवडाळी माथै पर ओडी । छैली अलकावळ मुखड़ै पर छोडी। भणकै भालरियौ भूमरियां भटकै। लूंमी भींगां री खूंणी तळ लटकै । —ऊ. का.

लू—सं. पु.—१ लोप।
२ काल। ३ प्रलय। ४ छेदन। ५ गुदा। ६ रुद्र। (एका.)
सं. स्त्री.—१ ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली बहुत गरम हवा।
उ०—गियौ सियाळौ, आयो ऊनाळो। लू वाजइ छै, सीत लाजइ छै। पग दाभइ छै। तावड़ो तपीजइ छै। —सभा स्रंगार
उ०—२ सादूळा केसरीसिंह ज्वाळानळ अगनी सूं बळता थका वीभावन रा हाथिश्रांरी पेटरी छाया विसरांम करै छै। भुयंग सरप नीसरीश्रा छै। सो लू नै तावड़ै री अगनि सूं बळता थकां द्रौड़ि द्रौड़ि नैं हाथीश्रां रै सीतळ सूंडाहळा माहै पेसि पेसि रहीश्रा छै। —राजांन राउतरो वात - वणाव
उ०—३ लू बाजै धरती तपै, मास आकरो जेठ । आख्या. पावस ऊलरै, ऊभी मिंदर हेठ । —अग्यात
क्रि. प्र.—लागणी, चालणी, बाजणी ।
रू. भे.—लूश्र, लूय ।
क्रि. वि.—तक, पर्यन्त ।

लूश्र—देखो 'लू' (रू. भे.)
उ०—१ दूखण दीधै दुरजणै, ओपै कवित असल्ल । लूश्र भलक्कै लागतै, आबै स्वाद अवल्ल । —घ. व. ग्रं.

लूश्रणो, लूश्रबो—पोंछना ।
उ०—वस्त्र कसायां जटामल-भरी दुरबळ प्रभा क्रतरी । लूई आंसूं वांणी बकि, सोक प्रवाह सही नवि सकि । —नळाख्यांन

लूश्रर—देखो 'लूर' (रू. भे.)

लूकड़ो—देखो 'लाकी' (रू. भे.)

लूकमुख—सं. पु.—एक देश का नाम ।

लूकौ—सं. पु—लुच्चा, बदमाश ।
२ लफगा, चोर ।

लूखट—सं. पु.—वृक्ष विशेष ।
उ०—लीब लविंगह लसणीश्रां, लींबोई लोबांन। लूखट लासा लींब्ररू, लगिथगि लाबा पान । —मा. कां. प्र.

लूखाणो, लूखासणो, लूखाहणो—सं. पु.—१ मवेशी रखने वाले परिवार की वह स्थिति जब कोई मवेशी दूध न देता हो ।
२ परिवार विशेष की वह स्थिति जब घर में दूध देने वाला मवेशी न हो।

लूखो—वि. (स्त्री. लूखी) १ जिसमें चिकनाहट न हो, अस्निग्ध । चिकनाहट रहित ।
उ०—१ इण भात मलूकदास रै तौ मास्तरी फाचरै आई पण आई। कठै तौ वे बी० डी० ओ० रा ऐंठा-चूंठा बासण मांजनै लूखा सूखा टुकड़ा खावण अर कठै आ सायबी भोगणी । —अमर चूंनड़ी
२ पौष्टिक तत्त्व रहित भोजन या जिसमें पौष्टिक तत्त्व की कमी हो, सार रहित ।
उ०—इम जाणै पकवांन अरोगू, घापर मिलै न लूखो धांन । आदम की विध करै 'ओपला', भोळा जै रचियौ भगवांन । —ओपो आढो
३ नीरस, फीका।
उ०—१ लाग खांडारी धारहूं कांई घटै, जिणमें कटिया हुवै जिकै हीज कटै। काइ धाया अर काइ भूखा, लाग बिना सारा ही लागै लूखा । —र. हमीर
उ०—२ रहण कह्या राजनै, दुरस नह प्रभता दावै । हलण कह्या हित हांण, जिका पिण सही न जावै । मिया दिया मोकलै, वणै किम लूखा बाइक । साथ हुवां सांपरत, लोकलज रहै न लाइक । —र. हमीर
४ अप्रिय, अरुचिकर ।
उ०—माहिमां परमातम आतम नहीं मालम । वाल्ही घणा नै तज बिलखांणो बालम । भाई भाई, नै भूखो तज भागो। पग पग पुरसा नै लूखो जग लागो । —ऊ. का.
५ जिसमें नम्रता या शिष्टता का अभाव हो ।
६ जिसमें दया, स्नेह आदि मधुर प्रवृत्तियों का अभाव हो ।
७ खुरदरा।
रू. भे.—लुक्ख, लुक्खौ ।

लूगड़ी—सं. स्त्री.—१ स्त्रियों के ओढने का वस्त्र ।
उ०—भूठी खुसड़ी की खाली आंख ऊगड़ी कोन्या, फांक इसी दीस आवै लेल्यू लूगड़ी उतार । —ऊ. का.
२ देखो 'लूगड़ो' (अल्पा., रू. भे.)

लूगड़ु, लूगड़ू, लूगड़ौ, लूगड़ू, लूघड़ौ–स पु—१ ओढने का एक वस्त्र विशेष।

उ०—१ आज अपूजित देव छइ, पात्री लावित पुत्र। करि लेई कटकु। लूगड़ू कछोटी कटि सूत्र। —मा. कां प्र.

२ वस्त्र, कपड़ा।

उ०–१ वरिहाहां री गाव लूटियौ। सासू रवाय रा लूगड़ा खोसणा। सु देवराज देखता खोसणा —नैणसी

उ०–२ ताहरां बीजा ही ठाकुरा ही कहियौ-म्है पणि लूगड़ा पहिअर उठैहीज मुजरौ करिस्या। —द दा

उ०—३ न पावै राब मीठौ कदे न जीमै, न पै'रै लूघड़ा कदे नीका। डाकियौ प्रसण जम जिम हैला दियै, कसी विध आवसी नीद कीका। —ओपौ आढौ

रू. भे.—लुगड़ौ, लुगडौ

अल्पा.,– लुगडियौ, लूगडी, लूगडियौ, लूगडी

लूघा–स. पु—१ मुसलमानों की जाति विशेष।

उ०—चडे सब्बदा-वेध लूघा सिंघाण। चडे तूणमे घातिआ भूल बाण। —गु रू ब.

२ ढीला-ढाला।

उ०—धुर पेंड न हालै माथौ धूंणै, हाकु केण दिसा हेराव। दत मौने राघव तै दीनौ, पाछौ लै तौ लाखपसाव। चौडी पीठ साकडी छाती, करड़ उघड़ी लूघा कान। लाखाई बाता पाछौ लीजै, कवर न दीजै दान कुदांन। —ओपौ आढौ

लूचबांण–सं. पु.—एक प्रकार का कुत्ता।

उ०—लाहोरी ताजी लूचबांण गिलजा पहाडी। जिकारी मूडहथ मोह नाळ, हाथ भर नस, बड़ रै पान जिसा कान। —रा. सा. सं.

लूट—सं. स्त्री—१ बलपूर्वक किया जाने वाला किसी वस्तु का अपहरण, छीनने की क्रिया।

उ०—तुरक पण मांणस घणा काम आया, सु तुरक पाछा वळिया, लूट काई न की। —नैणसी

२ लूट में प्राप्त धन, असबाब।

उ०—प्रगट गाम पुर धखै अप्रबळ, मार-लियौ वहता पुर मंडळ। ओपत साथां मिळै अलेखै, लूट तणी विगती कुण लेखै।—रा. रू.

३ विशेष परिस्थितियो मे किसी की विवशता से अनुचित लाभ उठाने की क्रिया या भाव।

क्रि. प्र.—मचाणी

लूटक–वि.—लूटने वाला, लुटेरा।

लूटखसोट–सं स्त्री.—लोगों को मारपीट कर माल असबाब छीनने का व्यापार या क्रिया।

क्रि० प्र०—करणी, मचणी।

लूटड़ू–सं. पु.—लूटेरा।

उ०—दूसरा वडेरा ठाकुर कहै, 'समझ राखौ गाव तो पाच दस आपणा मारीया, उजाडीया चोकस जो उठा हीज सों पाछौ घिरतै रौ मारग जाय चांपा। कटक उहा रौ माल वित सो अभरी हुवौ छै। अर पाछै घिरतै नुं इसड़ौ दबावा लूटड़ू लोक छै सु हालतौ रहसी। —तीडै छाडावत री बात

लूटणौ, लूटबौ–क्रि स. [स लुट्] १ चलते राहगीर से बलात् किसी वस्तु को छीनना।

उ०—मिळ दळ प्रबळ राडद्रह मारै, सार असुर साचोर संघारै। मीर पचास सहर में मारै, पमंग दरक लूटै अणपारै। —रा. रू.

२ शहर, गाव, बाजार, बरात और मकान आदि मे अनधिकार रूप मे घुस कर प्रवेश कर उसमें रखा माल असबाब उठा ले जाना।

उ० —१ पडियौ हाकौ पडगना, लियौ भीमपुर लूट। रयण उगाड़ा रूखडा, काट दिया ज्या कूट। —भोपालदान सादू

उ०—२ आगमियौ कमधा असुर, लूटीजै अजमेर। किलम सफीखा कापियो, जवन थया सह जेर। —रा. रू.

उ० —३ मुहकम लगौ मेड़तै ज्या दरिायर पर पेख। आपडियौ घर लूटतां, वाहर गोहरसेख। —रा. रू.

३ बेईमानी या धोखे से किसी की वस्तु या धन को हड़पना, अधिकार में करना।

४ किसी के हाथ से पड़ी या छूटी वस्तु पर कब्जा करना।

५ रसास्वादन करना, सभोग करना।

उ०—जाम रूप लूटियौ बिलास आठूं जाम। गेस, पुंज अली नांमरो स पूतली पाखाण। भूला 'चन्द्रगाम' रौ न धामरौ बाखाण भूला, बाम रौ न भूला भूला काम रौ बखाण। —र० हमीर

६ मोहित करना, वशीभूत करना।

७ किसी दूसरे की वस्तु मनमाने ढग से उपयोग करना।

८ उचित मूल्य से अधिक कीमत पर विक्रय करके ठगना।

९ बरबाद करना, नष्ट करना, नाश करना।

लूटणहार, हारौ (हारी), लूटणियौ—वि०।

लूटिओड़ौ, लूटियोड़ौ, लूट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूटीजणौ, लूटीजबौ—कर्म वा०।

लूटमार–सं. स्त्री.—लूटने व मारने का व्यापार या क्रिया।

लूटाणौ, लूटाबौ—देखो 'लुटाणौ, लुटाबौ' (रू. भे)

लूटाणहार, हारौ (हारी), लूटाणियौ—वि०।

लूटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लूटाईजणौ लूटाईजबौ—कर्म वा०।

लूटायोड़ौ–भू० का० कृ०—देखो 'लुटायोड़ौ (रू. भे.)

लूटावणो, लूटावबो—देखो 'लुटाणो, लुटाबो' (रू. भे.)

लूटावणहार, हारौ (हारी), **लूटावणियौ**—वि० ।

लूटाविप्रोड़ौ, लूटावियोड़ौ, लूटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूटावियोड़ौ—देखो 'लुटायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लूटावियोडी)

लूटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ चलते राहगीर से बलात् किसी वस्तु को छीना हुआ. २ शहर, गांव, बाजार, बरात और मकान आदि में अनधिकार रूप से घुस कर प्रवेश कर उसमें रखा माल-असबाब उठा ले गया हुआ. ३ बेईमानी या धोखे से किसी वस्तु या धन को हड़पा हुआ, अधिकार में किया हुआ. ४ किसी के हाथ से पड़ी या छूटी वस्तु पर कब्जा किया हुआ. ५ रसास्वादन किया हुआ, संभोग किया हुआ. ६ मोहित किया हुआ, वशीभूत किया हुआ. ७ किसी वस्तु का मनमाने ढंग से उपयोग किया हुआ. ८ उचित मूल्य से अधिक कीमत पर विक्रय करके ठगा हुआ. ९ बरबाद किया हुआ, नष्ट किया हुआ, नाश किया हुआ ।

(स्त्री. लूटियोड़ी)

लूटी—सं. स्त्री.—वह बकरी जिसके कान उसके शरीर के साथ चिपके हुए हों ।

लूटेरौ—वि.—१ कूट-मार कर जबरन वस्तु छीनने वाला, लूटने वाला, लुटेरा, डाकू ।

उ०—कांन्हो साथ ले पाली ऊपर आयो । आसथांन जी नीसरिया । कांनै पाली मारी । **लूटेरू** लोग वित्त ले चालता रह्या ।
—नैणसी

२ किसी वस्तु का अनुचित मूल्य प्राप्त करने वाला ।

३ मोहित या वशीभूत करने वाला ।

लूठानई—देखो 'लांठौ' (रू. भे.)

उ०—१ सार सुलक्षण जांणि करी, सदा निरंतर सेव । **लूठानइ** तूं लेखवइ, देव करीनइ देव । —मा. कां. प्र.

लूड—वि.—१ बदमाश, शैतान ।

उ०—१ कोतिक लखे हुय विकराळ दीरघ रद किया, सालुल वणे चड सरीर खावण कज सिया । लेखे असतरी प्रभू **लूड** सारंग सर लिया, दोऊ कांन नासा दूर आछट कर दिया । —र. रू.

लूडणो, लूडबो—क्रि. अ.—१ लड़खड़ाना ।

उ०—१ कटीए कल्लरा **लूडता** लालरा भौमि होदव्भरा गज्ज नारंगरा । —सू. प्र.

उ०—२ न जांणीअ रात्रि न जांणिअ दीस, न जांणीअ पूरब न जांणीअ पस्चिम, सहू एकाकार हुई, इसिइ समय (पर) दलइ वरतमांनि राजा सन्नद्धबद्ध लोह चूर्ण हुइ सुहड़ सुहडइं सगुड़ हात्थीआ **लूडइ**, रथावली ऊथालवइ । —व० स०

लूडणहार, हारौ (हारी), **लूडणियौ**—वि० ।

लूडिप्रोड़ौ, लूडियोड़ौ, लूड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूडीजणो, लूडीजबो—भाव वा० ।

लूडाणो, लूडाबो, लूडावणो, लूडावबो—रू० भे० ।

लूडाणो, लूडाबो—देखो—'लूडणो, लूडणो' (रू. भे.)

लूडाणहार, हारौ (हारी), **लूडाणियौ**—वि० ।

लूडायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूडाईजणो, लूडाईजबो—भाव वा० ।

लूडायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ लडखड़ाया हुआ ।

(स्त्री. लूडायोडी)

लूडावणो, लूडावबो—देखो 'लूडणो, लूडबो' (रू. भे.)

लूडावणहार, हारौ (हारी), **लूडावणियौ**—वि. ।

लूडाविप्रोड़ौ, लूडावियोड़ौ, लूडाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लूडावीजणो, लूडावीजबो—भाव वा. ।

लूडावियोड़ौ—देखो 'लूडायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लूडावियोड़ी)

लूडियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ लड़खड़ाया हुआ ।

(स्त्री. लूडियोड़ी)

लूण—देखो 'लवण' (रू. भे.)

उ०—१ लागै दाधै **लूण** ज्यान व्है जीव रो । बैरी बयण न बोल पपीहा पीव रो । घणहर की व्है गाज क गाज अमागळां । सावळ बीज सळाव बगत्तर बादळा । —र. हमीर

उ०—२ बाबहिया नील-पंखिया, बाढत दइ-दइ **लूण** । प्रिउ मेरा मइ प्रीउकी, तूं प्रिउ कहइ स कूण । —ढो. मा.

मुहा. –१ लूण खावणो=किसी का अन्न खाना । किसी के आश्रय में पलना ।

२ लूण-मिरच लगाणो=किसी बात को बढ़ाचढ़ा कर तोड़ मरोड़ कर कहना ।

३ बळधा माथै लूण बुरकणो=किसी को चिढ़ाना, चुभती बात कहना ।

४ लूण उतारणो, लूण उवारणो=एक रस्म विशेष जिसमें विवाह के समय दूल्हे के पीछे बैठकर उसके ऊपर से नमक घुमाना जिससे दृष्टि-दोष आदि का असर न हो ।

लूणका—सं. स्त्री.—१ झाला क्षत्रिय वंश की एक शाखा ।

२ देखो 'लूणी'

लूणणो, लूणबो—क्रि. सं.—१ भेड़ की ऊन कतरना ।

२ फसल काटना ।

उ०—१ सातां सात कांनी व्है, मलार नै वितूण्यो । जाणि सांभठा सा व्है, किसाणां ईख **लूण्यो** । —शि. वं.

लूणणहार, हारौ (हारी), **लूणणियौ**—वि० ।
लूणिओड़ौ, लूणियोड़ौ, लूण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लूणीजणौ, लूणीजबौ—कर्म वा०

लूणपण लूणपणौ–सं. पु.—१ स्वामिभक्त होने का भाव । नमक-हलाल ।
उ०—१ लेय ढाल हथावय लोह लगै, अणियां तुल पायक पाल अगै । सज ऊभाय पैदल सांम हणौ, परधान उजाळत **लूणपणौ** ।
—पा. प्र.

लूणराव–सं. स्त्री —१ भाटी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।
उ०—१ गोपाळदेओत, हड़वा, **लूणराव**, समा, सांमेजा कंदल ।
—बा दा. ख्यात

लूणहरांम–वि.—देखो 'लूंणहराम' (रू. भे)
उ०—१ तिण पातिसाह रौ मामौ ममरेजखान तिणि एदल नू मारि अर टीकौ लियौ दिल्ली रौ । वरस एक राज कियौ । पातिसाह सेती **लूणहरांम** कियौ ।
—द. वि.

लूणहरांमी–स. स्त्री.—देखो 'लूणहरामी' (रू. भे.)
उ०—१ तरै मांन कह्यौ—अै तौ सोहै म्हारा काम आया ।" तरै तुरका कह्यौ—ये **लूणहरांमी** की तिसी सजा । —नैणसी
उ०—२ नागजी खायौ खजानै रौ मालरे, वैरी. **लूणहरांमी** हो गयौ, ओ नागजी । —लो गी.
क्रि. प्र.—करणी ।

लूणाई–स. स्त्री.—१ भेड की ऊन कतरने की क्रिया या भाव ।
२ फसल काटने का कार्य ।

लूणागर–सं. स्त्री.—१ लूनी नदी का एक नाम ।

लूणाणौ, लूणाबौ—१ भेड़ की ऊन कतराना ।
२ फसल कटवाना ।
लूणाणहार, हारौ (हारी), **लूणाणियौ**—वि० ।
लूणायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
लूणावणौ, लूणावबौ—रू० भे० ।
लूणाईजणौ, लूणाईजबौ—कर्म वा० ।

लूणायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ ऊन कतरा हुआ. २ फसल काटी हुई ।

लूणावणौ, लूणावबौ देखो—'लूणाणौ, लूणाबौ' (रू. भे.)
लूणावणहार, हारौ (हारी) **लूणावणियौ**—वि० ।
लूणावियोड़ौ, लूणाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लूणावीजणौ, लूणावीजबौ—भाव वा० ।

लूणावियोड़ौ—देखो 'लूणायोडो' (रू भे.)
(स्त्री. लूणावियोडी)

लूणि–स. पु.—१ मांस, गोश्त ।
उ०—१ कोई दीह ताई घाव में **लूणि** न आया चिगदा घण सजोरा सेवसिंघ जी धाम पाया । —शि. व.

लूणियौ–स. पु —१ एक प्रकार का घास विशेष ।
२ मक्खन ।
वि —१ नमक का बना, नमकीन ।

लूणियोड़ौ–भू का. कृ.—ऊन कतरा हुआ मेढा ।
(स्त्री. लूणियोडी)

लूणी–स स्त्री.—१ बच्चो का एक देशी खेल ।
२ लूनी नदी ।
वि. वि.—यह पुष्कर के पास से नागपहाड से निकल कर कच्छ के रन में समाने वाली मारवाड की एक प्रसिद्ध नदी है ।

लूणौ, लूबौ—देखो 'लुवणौ, लुवणौ' (रू. भे.)
लूणहार, हारौ (हारी), **लूणियौ**—वि० ।
लूणिओड़ौ, लूणियोड़ौ, लूण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लूणीजणौ, लूणीजबौ — कर्म वा० ।

लूत–सं. स्त्री. [स. लूता] १ मकडी, ऊर्णनाभ । (डिं. को.)
रू. भे —लूता, लूतार ।

लूतरौ–वि.—दीठ, निर्लज्ज ।
उ०—जाळ जीम विलाला जामै, सांडा मात सपूतरी । मरु नाव खेवैया मयिहा, ल्यावण लोचै **लूतरी** । —दसदेव

लूता, लूतार—देखो 'लूत' (रू. भे.) (अ. मा.)

लूथ–स. स्त्री.—कुंज ।
उ०—बाग अनेक बावड़ी, अद्भुत फूल अपार । कोयल मोर चकोर पिक, जपत भवर गुजार । जपत भवर गुजार, गुलाबां **जूथ** में । लता फूल लपटात, सरोवर **लूथ** में ।
—बगसीराम प्रोहित री वात

लूथबत्थ, लूथबथ, लूथबाथ, लूथबूथ—देखो 'लथबथ' (रू. भे.)
उ०— हुवे लोह हत्थ, बिन्है **लूथबत्थं** । जडै जमदाढं, करं पास काढं । —सू. प्र.
उ०—२ बैंडा जुधां गयंदां ढाल बे खेत बेढीगारौ, चाळवै ससत्रां पजा बिरुथै सचाळ । **लूथबत्थां** अगरेजां सूं सूर काळ रूपी लडै, उनागा खडग्गां सीह, विरुद्दा उजाळ । —बुधजी सिढायच
उ०—३ दोनू ओड खांपा सू, उ खाली तेथ हाथां । गोळी तीर सेलां, जराख सू **लूथबाथां** । —शि. वं.
उ०—४ सीसोद कमधा सैफळा, बहि सेल भळहळ बीजळा हुय **लूथबाथ** हकारियां, कर खंजर वाह कटारियां । —सू. प्र.

लूधड़ौ–वि. [स. लुब्ध प्रा. लुद्धा] १ आसक्त, लुब्ध ।

उ०—१ आसौ आसा लूधड़ौ, हुं मेली ईणि कंति । मधुकर मालती परिहरी, पारधि पुठि भमति । —प्रा. फा. सं.

लूमड़ौ—देखो 'लूंबड़ौ' (रू. भे.)

लूम-स. स्त्री—१ पूछ, दुम । (डि. को.)

उ०—१ सचोड़ा उरा साकड़ा आसणोटा, मंडै पीठ मचा जिसा गात मोटा । जिका गोळ पीडा उभै चाक जोड़े, तिका चामरी लूम भा लूम तोड़े । —वं. भा.

उ०—२ कसता बिजै मंड कोदंड कधा, बणावै अथा बेररै जेरबधा । सटाया लजाळी लटाळी सुहावै, प्रिया नाग वाळी लखे दाग पावै । करै हालरा कालरा नाद कठा, अथीला मणी भालरा लूम गठां । —व. भा.

२ संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सभी शुद्ध स्वर लगते है ।

३ कपड़ा बुनने का करघा ।

४ देखो 'लब' (रू. भे.)

उ०—१ एक समय जागीरदार उणारै बाग में बिगैर माळी री आग्या एक लूम दाख री लीवी । —नी. प्र.

उ०—२ म्हारै सीस को बाजूबद थिरक रह्यौ, सांवलड़ौ है बाजूबंद री लूम । —मीरां

रू. भे.—लूंम ।

लूमकभूमक—देखो 'लांबकभूंमक' (रू. भे.)

लूमभूम—देखो 'लूंबभूंब' (रू. भे.)

उ०—बणे लूमभूमां हुवा सज्ज बाजी, तुखारी खुरासांण माड़ेच ताजी । किता खेत कंबोज बाल्हीक कच्छी, उडै फाळ लै लै फिरै ढाळ अच्छी । —व. भा

लूमड़ी—देखो 'लोमड़ी' (रू. भे.)

लूमणौ, लूमबौ—देखो 'लूंबणौ, लूंबबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गहू घूमी लूमी घटा, पावस उळट्या पूर । सांवण महिने सायबा, कदे न राखूं दूर । —अज्ञात

उ०—२ नख नहिं निरखाती नाजक, नखराळी, पिय जिय प्रतपाळी जाती पथ पाळी । धूरणा नयणां चल काजळ जळ घूमै । लड़थड़ आथड़ती प्रीतम गळ लूमै । —ऊ. का.

उ०—३ बाजरी रै लूमता सिट्टा नै देख मासी रौ मन थोड़ौ घणौ डुळियौ । चालू बात रै भच मूंची देय बोली—पूंख खायां नै कैई जुग बीत्या । —फुलवाड़ी

उ०—४ पवन चक्र बाजै पिछम, गळ लूमी कर गाढ । छैल महल मत छोड़ज्यौ, आयौ मास असाढ । —अग्यात

लूमणहार, हारौ (हारी), लूमणियौ—वि० ।

लूमियोड़ौ, लूमियोड़ौ, लूम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूमीजणौ, लूमीजबौ—कर्म वा० ।

लूमाणौ, लूमाबौ—देखो 'लूंबाणौ, लूबाबौ' (रू. भे.)

लूमाणहार, हारौ (हारी), लूमाणियौ—वि० ।

लूमायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लूमीजणौ, लूमीजबौ—कर्म वा० ।

लूमावणौ, लूमावबौ—रू० भे० ।

लूमाळौ—देखो 'लूबाळौ' (रू. भे.)

उ०—पावा पचडोरी पगरखिया पैरै, सूरत सिंघण सी बन जगळ बैरै । लोई ओढणनै साड़ौ लूमाळौ, फूटर लटकतौ नाडौ फूदाळौ । —ऊ. का.

लूम्यांरीडोरी-सं. स्त्री.—१ एक राजस्थानी लोक गीत ।

उ०—बाड़ बिचाळै पीपळी, ओ लूम्यांरीडोरी जैका भिरमिरिया पान, वारी ओ लूम्यांरीडोरी । —लो. गी

लूय—देखो 'लू' (रू. भे.)

उ०—महा पिशुनउ आलउ, आव्यौ उन्हालउ लूय वाजइ कांन पापड़ि दाझइ । —रा. सा. स.

लूअर--देखो 'लूर' (रू. भे)

लूर—स स्त्री—१ राजस्थान का एक लोकगीत जो फागुन मास में स्त्रियों द्वारा चक्राकार वृत मे झूमझूम कर करतल ध्वनि के साथ नृत्य करते हुए गाया जाता है ।

उ०—होली आयी, ओ सहेल्यां, मिळ खेला लूर होळी आयी ओ कोरी कोरी ओढ्यां भीणी चूनड़ । कोरी कोरी ओढ्या दिखणी चीर होळी आयी ओ । —लो. गी.

२ गणगौर के त्यौंहार पर, गणगौर की परिक्रमा करती हुई, पातरियों द्वारा नृत्य के साथ गाया जाने वाला एक लोकगीत, जिसमें किसी विशेष पुरुष या राजा की कीर्ति का वर्णन रहता है । (बीकानेर)

३ लोक मंच पर, मारवाड़ी ख्याल करने वालों की ओर से, ख्याल की समाप्ति पर रात्रि के व्यतीत होने के समय, नृत्य के साथ गाया जाने वाला एक लोकगीत ।

४ सावण में तीज के त्यौंहार के दिन तीजणियों द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

अल्पा.,—लूरडी ।

५ देखो 'लोर' (रू. भे.)

उ०—१ है थट हूमस हाहुस होय, कटकां ग्यांन सख न कोय । लैणां चलै वळ-वळ लूर, खान पठांणां लसकर खूर । —गु. रू. बं.

उ०—२ सांवण आयौ सायबा, लुळ लुळ बरसै लूर । गोख उडीकै गोरड़ी, जोबन में भरपूर । —नारायणसिंह सांदू

रू. भे —लूअर, लूवर, लूहर ।

लूरड़ी—देखो 'लूर' (अल्पा , रू. भे)

उ०—१ अे मा, काकोजी नै कहकै मनै चूनड मंगा दे, मैं खेलण जास्यू लूरड़ी। —लो. गी.

लूलण-सं पु.—१ शिश्न, मूत्रेन्द्रिय।

लूली—देखो 'लूलौ' (पु)

लूलू-वि.—मूर्ख, बेवकूफ।

उ०—अनधन जिण घर आसरौ। भला अरोगे भोग। पइसौ हुवै न पास मे, लूलू कर दे लोग। —ऊ. का.

लूलोरा-स. पु —१ परिहार वंश की एक शाखा, जो बाद मे मुसलमान हो गई।

लूलौ-स. पु.—शिश्न, मुत्रेन्द्रिय।

अल्पा.—लूली।

वि. (स्त्री. लूली) १ जिसके हाथ-पाव कटे हुए हो।

२ जो कोई कार्य करने मे असमर्थ हो।

लूवणौ, लूवबौ—देखो 'लुवणौ, लुवबौ' (रू. भे.)

लूवणहार, हारौ (हारी), लूवणियौ—वि०।

लूविओड़ौ, लूवियोड़ौ, लूव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूवीजणौ, लूवीजबौ—भाव वा०।

लूवर—देखो 'लूर' (रू. भे.)

उ०—१ ओ जी ओ, मनै पाली रौ पोमचियौ रगा दे, मोरी माय। लूवर रमबा मैं जास्यू। —लो. गी.

लूस-स. स्त्री.—१ सार तत्त्व।

उ०—गुण को प्रवाह, रूप को निधांन, गुणवत की लूस जोबन को पेखणौ इसी उमा साखुली छै। —लाली मेवाडी की बात

लूसणौ, लूसबौ-क्रि. स.—लूटना।

उ०—१ धरचां बाद मुहडा सू भागू, गांमे घाली लाइ। गामि गांमि लूसइ लूटायत, द्रूडी धाडा धाइ। —का. दे. प्र.

उ०—२ कइ मइ कोइ मुनिवर संतापिउ, कइ उगती वेलि कापी रे। कइ मइ कहिना भडारज लूस्या, कइ लीधी वस्तु नापी रे। —नळदवदती रास

उ०—३ जिहां भंडार भरचा हुता, चोर पइट्ठा त्याहि। सरवस लूसी नीसरिउ, झाली आणउ आहि। —मा. का. प्र.

लूसणहार, हारौ (हारी), लूसणियौ—वि०।

लूसिओड़ौ, लूसियोड़ौ, लूस्योड़ौ - भू० का० कृ०।

लूसीजणौ, लूसीजबौ—कर्म वा०।

लूसाणौ, लूसाबौ-क्रि. स.—(लूसणौ क्रि. का प्रे. रू) लुटाना, लुटवाना।

उ०—सोरठ माहि सहू को नाठउ, भरचा देस लूसाई। भाजइ नगर अभग आगिलां, ओडई कोइ न थाइ। —कां. दे. प्र.

लूसाणहार, हारौ (हारी), लूसाणियौ—वि०।

लूसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लूसाईजणौ, लूसाईजबौ—कर्म वा०

लूहणौ, लूहबौ—१ बाल नौंचना, उखेडना।

उ०—आवइ आवासि आपणइ, अगि लूहंता केस। पुण्य हुई तु पामीइ, वेस्या-केरु वेस। —मा. का. प्र.

२ देखो 'लुवणौ, लुवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरा राजा ऊठि, हाथ झालि, उरौ खैचि गादी कन्है आण बैसाणियौ। कुवर री आखी राणी लूही मुहडै ऊपरि हाथ फेरै है। —पलक दरियाव री बात

उ०—२ कामण तणा कपोल रौ, प्यारो लूहै पीक। अलबेलण पिया अधर री, लूहै काजळ लीक। —र हमीर

उ०—३ ताहरा लाखैजी घोडै ऊपर पछेवडी फेरी। पछेवडी सूं घोडौ लूह्यौ। —नैणसी

लूहणहार, हारौ (हारी), लूहणियौ—वि०।

लूहिओड़ौ, लूहियोड़ौ, लूह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लूहीजणौ, लूहीजबौ—कर्म वा०।

लूहर—१ देखो 'लूर' (रू. भे.)

ऊ०—१ गहणा मे लडाभूब हुयोड़ी लुगाया री लैण लूहर री ललकार में जिण टेम सामने वाळी लैण नै जवाब देवण आगै बढती तौ उण रै पगा रा धम्मीडा सू धरती धूजण लागती। —रातवासो

उ०—२ उण दिन सूं इण चाकरी में लाखणसी री ठिकाणौ बीदासर बराबर बाधियौ अरु मीरगढ रै नबाब नू पण इण मारियौ तिण सूं लाखणसी री लूहर गाईजै है। —द. दा.

उ०—३ तरै सांवणरी तीज ऊपरां चढियौ तिको पाछिलै पोहर घडी दोय दिन थका महेवै तीज मिळी छै, तीजणियां लूहर गावै छै। —जगमाल मालावत री बात

लूहियोड़ौ—देखो 'लुवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री लूहियोडी)

लेंग-सं. पु.—१ वह पुरुष जिसके बाल-बच्चे व स्त्री आदि न हो।

उ०—बोदारे आडा बहै, सोदा मिळने सेंग। भूकोड़ा भंमता। फिरै, लाडू खावै लेंग। —ऊ. का.

ले-स. पु.—१ दान २ तार ३ पुत्र, सुत ४ राम ५ दक्ष ६ वस्तु ७ मलिन ८ ढंग, तरीका ९ मेल, मित्रता। (एका.)

अव्य.—१ तक, पर्यन्त।

लेइणौ, लेइबौ—देखो 'लैणौ, लैबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिम नामूं जूठूं जांणि ते वाणिक लेइनि वालि । तिम ध्याताए जूठा जमणी, रवि ससि नि कुंडालि । —नळाख्यांन

उ०—२ आडौ अड़ि एकाएक आपड़े, वाग्यौ एम रुखमणी वीर । अबळा लेइ धणी भुंइ आयौ, आयौ हूं पग माड अहीर । —वेलि.

लेइणहार, हारौ (हारी), **लेइणियौ**—वि० ।

लेइओड़ौ, लेइयोड़ौ, लेयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लेईजणौ, लेईजबौ—कर्म वा० ।

लेइयोड़ौ—देखो 'लियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री लेइयोड़ी)

लेई-सं. स्त्री.—१ आटा या मैदा को पानी के साथ घोलकर आग पर पका कर गाढा बनाया हुआ लसदार पदार्थ जो कागज आदि चिपकाने के काम में आता है ।

२ गाय भैंस के दूध पीने वाले बच्चे का मल, विष्टा ।

रू. भे.—लई

लेकचर-सं. पु. [अं.] १ व्याख्यान, भाषण ।

लेकचरबाजी-सं. स्त्री.—२ खूब भाषण देने या करने की क्रिया ।

क्रि. प्र.—करणी ।

लेकण—देखो 'लेखण' (रू. भे.)

उ०-लेकण कर खाग राड़ रा लहणा, सिंगवी तै लीधा सरताज । मागै जकै अजै नह मूकै, आठ गुणा देतांई आज । —बुधजी आसियौ

लेखंगी-वि.—१ लिखने वाला, लेखक ।

लेखइ-सं. पु.—१ हिसाब ।

उ०—'रतनिगु' ए 'पुनिगु' बेवि, दांणु दियंतउ नवि खिसए । मांणिक ए मोतिए दांनि, कणय कापड़ु लेखइ किसए । —ऐ. जै. का. सं.

लेख-सं. पु.—१ लिखे हुए अक्षरों का समूह ।

२ लिखावट ।

३ पत्र, चिट्ठी ।

उ०—१ लेखिणि कागल लेई-करि, लिखवा बईठी लेख । गुण गणतां गहिली थई, जांणउ रती न रेख । —मा. कां. प्र.

उ०—२ मया करनै मूकजो, कुसळ खेम ना लेख । लीलापति लख-जो वळी, समाचार सु विशेष । —ढो. मा.

४ निबन्ध, रचना ।

५ लिपिबद्ध किये हुए विचार, लिखी हुई बात ।

[सं.] ६ देव, देवता । (ह. ना. मा.)

उ०—१ श्रीरघुनाथ समथ्थ, हत्थ धारण धनु सायक । सेवक सरण सधार, लेख सेवै पद-लायक । —र. ज. प्र.

उ०—२ दामोदर तुझ दसै द्रगपाळ, किता इक पार न जांणै काळ । उमा तौ पार अगम्म अलेख, लखमी तूझ न जांणै लेख । —ह. र.

७ प्रारब्ध, भाग्य ।

उ०—१ सुभ मझि असुभ लेख विध साखै, असुभ सगुन प्रथमी सह आखै । जोतिस सगुन बिहूं विध जाणै, पोह ज्यां वरजै लेख प्रमाणै । —सू. प्र.

उ०—२ सांभळि ध्यान धरै दुज साचौ, तिणनूं वर बाळा त्रपु-राचौ । करता ध्यान सकति इम कहियौ, लेख प्रमाण सुपनि नृप लहियौ । —सू. प्र.

उ०—३ अई लेख अैसी भइ, हर हर कर जिम्र हाय । कासी दिस कलिआणमल, चलैह भसम चढाय । —कल्याणसिंघ बाढेल री बात

उ०—४ गैहणौ पोसाख नहीं तो पिण रिणधवळ सूरज आगै चंद्रमा दीसै त्यूं दीसै थौ । पिण लेख सूं जोर नहीं । —जगदेव पंवार री बात

८ लौकिक मान्यतानुसार विधाता द्वारा भाग्य में लिखा शुभाशुभ घटना-चक्र ।

उ०—१ कह्यौ न मांनत क्यूं कहूं, भूलत हौ द्रग देख । टळै नहीं तिल टाळियो, लिख्यौ विधाता लेख । —गज उद्धार

९ समाचार ।

१० प्रतिज्ञा-पत्र ।

उ०—राणै समांन वय रा विवाह रौ नरम कीधौ सुणि कुमार चूंडै वडा प्रसन्न रै प्रमांण पिता रौ संबंध करवाइ आप चित्तौड़ री गादी छोडण रौ लेख करि मारवाड़ रै अधीन कीधौ । —वं. भा.

११ परस्पर की हुई लिखापढी, लिखत ।

उ०—इण कारण जिण रै जमी होइ सोही सूरवीर ठाकुर कहावै । परन्तु जैता अबही सौं मीणां री चाल छोडि रजपूतां री राह री राह में रहण रौ लेख करि सूंपै तौ यौ संबंध करण में आवै । —वं. भा.

१२ पाप, कुकर्म ।

उ०—बिलफत करै विसेस, प्यारी गळ लाग पिया रै । हो बिरचां मति हीण, किसका लेख किया रै । रग उछरंग री रात, दुरंग जिण साथ दिखाई । ईस्वर गति अलेख, पार किणही नह पाई । —बख्तावरजी मोतीसर

रू. भे.—लेखउ, लेखब, लेखि, लैखब ।

लेखउं—देखो 'लिखौ' (रू. भे.)

उ०—१ जीरण्ण रिणउं खाधे पाजरे करी दीजइ, लिहणा देवा लोहडीयानी लाज न कीजइ, लेखउ करी लीजइ। —व. स.

उ०—२ हरिद्रा तणउ रग, पाणी तणउ तरंग, दासि तणउ हेज, आबा तणउ मउर, कलालनउ लेखउ मद्यप तणउ प्रतिपन्नउ। —व. स

लेखक—स. पु.—१ लिखने का कार्य करने वाला, वह जो लिखता हो।

२ आजीविका या मनोरजन हेतु कहानी, उपन्यास आदि लिखने वाला।

३ किसी कृति का रचयिता।

अल्पा,—लइयौ, लेहियौ

लेखण, लेखणि, लेखणी—स. स्त्री.—१ लिखने या अक्षर बनाने की वस्तु, कलम, लेखनी।

उ०—१ अर जो तूं कागज दोत लेखण लै आवै तौ तोनै लिख द्यां तद गुवाळ तीरैं कागद दोत लेखण पेटी मांहै थी सो काढै नैं राजा हजूर मेल्या। —गांम रा धणी री बात

उ०—२ मन जाणै पिऊ पं मिसरी, छाछ सोवनी मिळै न छाट। वळिया सौ पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखण रा आट। —ओपो आढौ

उ०—३ जाळी मगि चढि चढि पंथी जोवै भुवणि सुतन मन तसु मिळित। लिखि राखै कागळ नख लेखणि, मसि काजळ आसू मिळित। —वेळि.

२ लिखने की क्रिया या कला।

३ कै या वमन करने की क्रिया।

४ हिसाब करने की क्रिया।

५ खासी नामक रोग।

६ बहत्तर कलाओ मे से एक।

७ समझने या जानने की क्रिया।

रू. भे.—लेकरण, लेखरण, लेखन, लेखिणि।

लेखणौ, लेखबौ—क्रि स—१ लिखना।

उ०—१ 'अजन' तणौ लख जोस अफारौ, सोच करै जवनां दळ सारौ। पातसाह उर में भ्रम पायौ, लेखिस पुत्र 'अजीम' बुलायौ। —रा रू.

उ०—२ कागळ नही क मस नहीं, नही क लेखणहार। सदेसा ही नाविया, जीवुं किसइ आधार। —ढो. मा.

२ समझना, जानना।

उ०—१ लग मत्ता चौवीस छद मत्त लेखजै, सुज यां अधिका मत उपछंद विसेखजै। वरण मत सम नही असम पद जाणजै, बै छदा मिळ दडक मत्त बखांणजै। —र. ज. प्र.

उ०—२ जिणसूं किणही नै फरमाय हाथ देखीजै। कै तौ मारि आवा कै पकड लावां तौ रजपूत लेखीजै। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

३ सोचना, विचारना।

४ मानना, स्वीकार करना।

उ०—पेखियौ सहर जोधाण पत, सब जग धणी सपेखियौ। वप आभ परख च्यारू वरण, लाभ नयण पण लेखियौ। —रा. रू.

५ देखना।

उ०—समग्रि भार धर गुणा सवाया, ओडै कंध धमळ धळ आया। भुजै ऐम कहि भार भळायौ, लेखि प्रीत सुत हियै लगायौ। —रा रू.

६ हिसाब करना, गिनती करना।

उ०—चद्रकला ते विकला जांणी, घटत बढत नइ लेखइ। साहिब नइ तउ सदा सुरगी, वाधई कला विसेखइ। —वि. कु.

लेखणहार, हारौ (हारी), लेखणियौ—वि०।

लेखिओडौ, लेखियोड़ौ, लेख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लेखीजणौ, लेखीजबौ—कर्म वा०।

लेखवणौ, लेखवबौ—रू० भे०।

लेखन—देखो 'लेखण' (रू. भे.)

उ०—परीक्षासुद्ध रत्नजाति लीजइ, परदेसी वस्तुनां आय पूछीइ वाणुअना लेखना टीपणा सभालीइं। —व. स.

लेखप्रणाळी—सं स्त्री. यौ.—१ लिखने की शैली, ढग तरीका।

लेखरिखभ—स. पु. [सं. लेखर्षभ] १ इन्द्र, सुरपति। (ह. ना. मा.)

लेखवणौ, लेखवबौ—देखो 'लेखणौ, लेखबौ' (रू भे.)

उ०—१ 'लखौ' 'कमौ' आचागलौ, 'सूजौ' 'जैत' हराह। चीत भळावी दुरगसी, लेखवि प्रीत धराह। —रा. रू.

उ०—२ उठै हसन दळ लियां अभूता, हिलियौ महण क दक्खण हुता। औ वी समें दिवस खड़ि आयौ, लेखवतां मग मास न लायौ। —रा. रू.

उ०—३ ताणतौ माण ताकै तिकौ, ऊर्ध मुख सूं आगणौ। लेखवौ दुरस सगळै लखण, मरण सरीखौ मांगणौ। —घ. व. ग्र.

उ०—४ हमैं पीठी सिनान सारू भूखण बसतर खोलै है. तिण समैं इणरौ रूप देख नायण 'रंभा' बोलै है। जो कमलां ऊपर हीरा देखवां तौ नखा सहत यां पगा नै उपमा लेखवां। —र. हमीर

उ०—५ विण हणू लक परखण विभौ, सत्र गुणि कुण माडै समण। 'अभसाह' बिना पतिसाह अति, लेखवि ओर न लख जण। —रा. रू.

उ०—६ निलवटि कस्तूरी तिलक, म करिसि मुधि ! अयांण। सहिजिं ससिहर लेखवी, करसि राहु-विनाण। —मा. कां. प्र.

लेखवणहार, हारौ (हारी), लेखवणियौ—वि०।

लेखविओड़ौ, लेखवियोड़ौ, लेखव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लेखवीजणौ, लेलवीजबौ—कर्म वा० ।

लेखवळि-वि.—१ भाग्यवश, प्रारब्धवश ।

उ– -पडहार घणा हणि सुजस पांमि, कमधज्ज **लेखवळि** श्रयौ कामि। रच सींची महुरत इसै रेण, जिण बंधराज घर अडिग जेण। —सू. प्र.

लेखवि-सं. स्त्री.—१ पुष्प, सुमन। (ह. नां मा.)

२ लक्ष्मी।

लेखवियोड़ौ—देखो 'लेखियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. लेखवियोड़ी)

लेखसाल—१ पाठशाला ।

उ०—१ देवकुल अट्टालप्रासादभाल पोसघसाल **लेखसाल** हस्तिसाल तुरगसाल, व्यायामसाल। —व. स.
उ०—२ वररुचि मांडी **लेखसाल**, पंडित छात्रप ठावि रे। छीलर जल यू हंमलु, कारणि किउह्न आविरे।। —प्राचीन फागु-संग्रह

लेखांतर-स. पु. [सं. लेख+अन्तर] भाग्य, प्रारब्ध ।

रू. भे.—लिखातर।

लेखापाखे-वि.—१ अपार, असख्य ।

उ० -१ **लेखापाखे** लूटिया, घोड़ा ऊट दरब्ब। रौद्र प्रचार संघारिया सारे मार सरब्ब। —रा. रू.

लेखाफाड़ लेखाबही-स. स्त्री.—लेनदेन का हिसाब या लेखा रक्खी जाने वाली बही जिसमें सूद आदि जोड़ा जाता है।

लेखारिखभ-सं. पु. [सं. लेखर्षभ] १ इन्द्र, सुरपति (ह. नां. मा.)

लेखि—देखो लेख' (रू. भे.)

उ०—१ ढोला रहिसि निवारियउ, मिळिसि दई कइ **लेखि**। पूंगळ हुइस ज प्राहुणउ, दसराहा लग देखि। —ढो. मा.

लेखिणि—देखो 'लेखण' (रू. भे.)

उ०—१ **लेखिणि** कागळ लेई करि लिखवा बईठी लेख। गुण गणतां गहली थई, जाणउ रती न रेख। —मा. कां. प्र.

लेखियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लिखा हुआ. २ समझा हुआ, जाना हुआ. ३ सोचा हुआ, विचारा हुआ. ४ हिसाब लगाया या किया हुआ, गिना हुआ. ५ देखा हुआ. ६ माना हुआ, स्वीकार किया हुआ.।
(स्त्री. लेखियोड़ी)

लेखिराति, लेखिराती-स. पु. [स लेख्यराति] १ श्वान, कुत्ता।

लेखूं—देखो 'लेखौ' (रू. भे.)

उ०—सुंदर मुख सोहामणूं रे, तेह हवि किहां देखूं। एक वारि दुःख पड्यूं ए, क्रियहि नावि लेखूं। —नलाख्यान

लेखे, लेखैं-क्रि. वि.—१ हिसाब में, गिनती में।

२ निमित्त।

लेखैपासौ-सं. पु.—१ बही का वह भाग जिस ओर खर्च की जाने वाली राशि अंकित की जाती है।

लेखौ-स. पु —१ आय-व्यय का विवरण, खाता।

२ समानता, सादृश्यता।

उ०—एक मिळै है **लेखौ**. लिलाड देखौ भावैं अरधचद्र देखौ। आ उपमा सुणता ही आवै रीस, कठै नाळेर नै कठै सीस। —र. हमीर

३ व्यवहार ।

उ०—सांचापण रह्यिौ सरस, **लेखौ** समझ लियोह। आप दियौ जद आप नू, दिल म्हैं पहल दियोह। —र. हमीर
४ हिसाब, विवरण।

उ०—१ नगद खजांनै री **लेखौ** करौ सो लेखौ कियां खजांनौ घणौ दीठै तरै उजीरां अमरावा कही -इतरौ माल दरवेसां नू नहीं दियौ चाहिजै। लस्कर विगर सामांन नहीं रहै। —नी. प्र.

उ० — २ आंगण म्हारै लोटाजी तिरिया, पिछवाड़े हसती तिराया जी। भोळा सा राजन **लेखौ** भी मांगे, दमड़ी को तेल कठै गयौ जी। —लो गी.

उ०—३ देखो बिगड़ी देह, डोळ बिगड़गौ देखौ। बिगड गई सब बात, लारलौ लै कुण **लेखौ**। —ऊ. का.
५ गिनती, गणना।

उ०—तीन बरसा में वे तीन वेळा घरै आया। बीस'''बीस दिन री छुट्टी में। वा आंगळियां माथै गिणण लागी।'''एक बीसी''' दो बीसी अर तीन बीसी'''तीन बीसी दिनां रा महीना कितरा महीना व्है। भगवांन जाणै। किणनै **लेखौ** आवै। —अमरचूंनड़ी
रू. भे.—लेखउ, लेखूं।

लेड़ौ-सं. पु.—१ ऊंट का पतला विष्टा, मल।

लेचि, लेची – देखो 'लैंची' (रू. भे.)

लेजम-सं. स्त्री. [फा.] १ एक प्रकार का धनुष।

उ०—वंकि पटां फूलहथां, सोरि खिलकार कुसत्री। तस कसीस **लेजमां**, जजर गत्ती जाजत्री। ज्यांन मढ़ी बज्जर, भूर दाढ़ा चव फेरां। भौंह चढी मौसरां, होथ कढ्ढी समसेरां। इलमां कुरांण कहि कहि अली, वदै बींद हूरा वरण। हाबस्स खेल जैहीं हरख, मुसलमांन वहसै मरण। — सू. प्र.

२ धनुष चलाने का अभ्यास करने के निमित्त बनी हुई नरम और लचकदार कमान।

लेट-स स्त्री—१ लेटने की क्रिया या भाव ।

[अं.] २ देरी, विलम्ब ।

उ०—जिणदिन सू म्हूं इणरी मा नै खाधै चढायनै पुगायनै आयौ हूं, उणदिन सूं लगायनै आजदिन ताई औ नितरोज मोटर माथै जावै अर उणरै आवणरी बाट उडीकै । मोटर पाच दस मिनट लेट भलाई व्हौ पण इण रै जावण में जेज नी व्है । —अमर चूनडी

वि०—जिसे देरी हुई हो ।

लेटणौ, लेटबौ-क्रि. अ. [सं. लेटनम्] १ किसी खडी रहने वाली वस्तु या प्राणी का जमीन पर गिर पडना, या जमीन से सटना ।

उ०—कर विधान करवत ले कासी, ले व्रज रेणू लेटै । पग्यौ न दिल प्रभुरै पद पकज, भिसत न त्यातिक भेटै । —र० रू०

२ शयन करना, नीद लेना ।

३ आराम करना, सुस्ताना।

लेटणहार, हारौ (हारी), लेटणियौ—वि० ।

लेटिग्रोड़ौ, लेटियोड़ौ लेटचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लेटीजणौ, लेटीजबौ—भाव वा० ।

लेटफीस-स स्त्री, यौ [अं लेट+फी] १ निश्चित अवधि के पश्चात् किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को प्रवेश हेतु दिया जाने वाला अतिरिक्त शुल्क ।

लेटरबाक्स-सं पु. यौ [अं. लैटर+बॉक्स] १ डाकखाने का वह डिब्बा, जिसमें बाहर भेजी जाने वाली चिट्ठिया आदि डाली जाती हैं ।

लेटाड़णौ, लेटाड़बौ—देखो 'लेटाणौ लेटाबौ' (रू भे)

लेटाड़णहार, हारौ (हारी), लेटाड़णियौ—वि० ।

लेटाड़िग्रोड़ौ, लेटाड़ियोड़ौ, लेटाड़चोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लेटाड़ीजणौ, लेटाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

लेटाड़ियोड़ौ—देखो 'लेटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लेटाड़ियोड़ी)

लेटाणौ, लेटाबौ-क्रि. स. (क्रि. का. प्रे. रू) १ किसी खडी रहने वाली वस्तु या व्यक्ति को झुका कर जमीन पर गिराना, या सटाना ।

२ शयन कराना, सुलाना ।

३ आराम करने में प्रवृत्त करना ।

लेटाणहार, हारौ (हारी), लेटाणियौ—वि० ।

लेटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

लेटाईजणौ लेटाईजबौ—कर्म वा० ।

लेटाड़णौ, लेटाड़बौ, लेटाणौ, लेटाबौ, लेटावणौ, लेटावबौ ।

—रू० भे० ।

लेटायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ किसी खडी रहने वाली वस्तु या व्यक्ति को झुका कर जमीन पर गिराया हुआ, सटाया हुआ. २ शयन कराया हुआ, सुलाया हुवा. ३ आराम करने मे प्रवृत कराया हुआ ।

(स्त्री लेटायोडी)

लेटावणौ, लेटावबौ—देखो 'लेटाणौ, लेटाबौ' (रू. भे.)

लेटावणहार, हारौ (हारी), लेटावणियौ—वि० ।

लेटाविग्रोड़ौ, लेटावियोड़ौ, लेटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लेटावीजणौ, लेटावीजबौ—कर्म वा० ।

लेटावियोड़ौ—देखो लेटायोड़ौ'

(स्त्री. लेटावियोडी)

लेटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ कोई वस्तु या व्यक्ति झुक कर जमीन पर गिरा हुआ या सटा हुआ. २ सोया हुआ, सुप्त ।

(स्त्री लेटियोड़ी)

लेठौ-स पु.—कमी ।

लेड—देखो 'लेडौ' (रू. भे)

लेडकौ-स. पु.—देखो 'लेंडकौ' (रू. भे.)

लेडौ (स्त्री लेडी)—१ मूर्ख, बेवकूफ ।

२ कायर राजपूत ।

उ०—फिट 'बीका' फिट काधला, जगळधर लेडांह । 'दळपत' हुड ज्यूं पकडियौ, भाज गइ भेडाह । —अज्ञात

मह —लेड

लेण—देखो 'लाइन' (रू भे.)

लेणदार—देखो 'लैणदार' (रू. भे)

लेणरित-सं पु. १ याचक, भिखारी । (अ. मा.)

लेन-देन—देखो 'लेण देण' (रू. भे.)

लेना-स. स्त्री —१ भाटी वंश की एक शाखा।

उ०—भाटिया री खांप लिखते-जेचद, जेतुंग, बुध केलण सरूपसी, सीहड़, लेना, छीकण । —बां. दा. ख्यात

लेप-सं. पु —१ कोई गाढी एवं गीली वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु पर लगाई या पोती जाने की हो ।

२ उक्त प्रकार की वह तह जो किसी दूसरी वस्तु पर लगाई या चढाई गइ हो ।

३ उबटन

उ०—ऊगटि-काजि ऊतावलुं, कीधु करदम-यक्ष । ललना लेप करइ रही, सेवा-विसइ समक्ष । —मा. कां. प्र.

क्रि. प्र. करणौ, चढाणौ, लगाणौ

रू. भे. लेपन

लेपक—वि.—लेप करने वाला ।

लेपकरम्म—स. पु.—१ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक ।

उ०—१ अंजन, लेपन, **चित्रकरम्म**, उपलकरम, **लेपकरम्म** लोहकरम्म । —व. स.

लेपड़ौ—देखो 'लेवड़ौ' (रू. भे.)

लेपणौ, लेपबौ—क्रि. स. [लेपनम्] १ किसी गाढी व गीली वस्तु की तह चढ़ाना, पोतना, लेपना

लेपणहार, हारौ (हारी), लेपणियौ—वि० ।

लेपिओड़ौ, लेपियोड़ौ, लेप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लेपीजणौ, लेपीजबौ—कर्म वा० ।

लेपन—१ चौसठ कलाओं में से एक ।

उ०—१ अंजन, **लेपन**, चित्रकरम्म, उपलकरम, लेपकरम्म । —व. स.

२ देखो 'लेप' (रू. भे.)

उ०—अग **लेपन** लगावीजै छै । अंगे खोलीजै छै । —रा. सा. सं.

लेबल—स. पु. [अं.] १ बोतल, पुस्तक, डिब्बा आदि पर लगी हुई कागज की वह छोटी चिट जिस पर उस वस्तु का नाम व विवरण लिखा होता है ।

लेबौ—वि.—लटकता हुआ । (होठ)

उ०—लास रै खनै ऊभै पूजारी **लेबौ** होठ किया जरदा री पिचकारी छोडतां कह्यौ—सिवहरे सिवहरे घोर कळजुग आयगौ । इण गांम री पुन्याई अबै खतम व्हैगी । —अमर चूनड़ी

लेमटौ—सं. पु.—१ बाजरी के आटे का बना खाद्य पदार्थ ।

उ०—१ नै अबै थोड़ौ म्हारौ काजळ वाली डबी में मूंडौ तौ देखौ किस्यौ व्है गयौ है, लेमटा री थर छै जिसौ । —रातवासौ

लेमन—स. पु.—१ नींबू के सत का वह शरबत जो हवा के जोर से बोतल में बन्द किया गया हो ।

लेरियौ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे.)

उ०—१ ऊनाळा रा पोमचा, चौमासा रा **लेरिया** । सियाळा रा फागण्यां, छपावौ म्हारा जोड़ीरा रतन सियाळौ राजन यूं ही गियौ जी —लो० गी०

लेळ—देखो 'लेलिह' (रू. भे.)

लेलर, लेलरी—सं. स्त्री—चूने की मिट्टी की दीवार में लगने वाला एक प्रकार का रोग या किटाणु जिसके कारण दीवार टूटने व खराब होने लगती है ।

क्रि. प्र.—लागणी

लेलक—स. पु.—एक प्रकार का घास ।

लेलहांन, लेलिह लेलिहांन—सं. पु.—१ सर्प, सांप (अ. मा., ह. नां. मा.)

लेली—१ देखो 'लैली' (रू. भे.)

२ देखो 'लैला' (रू. भे.)

लेळौ—१ जिसके लार टपकती हो ।

२ भोला ।

लेव—सं. पु. [सं लेप] १ स्पर्श, असर ।

उ०—१ गाईजे नवरंग फाग ए लागए नवि पाप **लेव** । सेवक सिवपुर माग ए, मागए भवि भवि सेव । —प्राचीन फागु-संग्रह

२ देखो 'लेवड़ौ' (मह. रू. भे.)

लेवड़—देखो 'लेवड़ौ' (मह. रू. भे.)

लेवड़ौ—सं. पु. [स. लेप प्रा. लेव+रा. प्र. ड़ौ] १ कच्ची या चूने की दीवार की पपड़ी ।

रू. भे. लेपड़ौ

मह.—लेव, लेवड़

लेवणौ, लेवबौ—देखो 'लैणौ, लैबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बिरछा बेलां पर चढणौं बुधि चाही, उर में अलबेलां बेलण सुध आई । आणा **लेवणनैं** अंवूळा आया, दरसण देवणनैं मोभी मुळकाया । —ऊ. का.

उ०—२ नबी हुबोड़ा नीच, डबी भर **लेवै** डाकी । बैठ सभा रै बीच करै मगवार कजाकी । —ऊ. का.

लेवणहार, हारौ (हारी), लेवणियौ—वि. ।

लेविओड़ौ, लेवियोड़ौ, लेव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लेवीजणौ, लेवीजबौ—भाव वा. ।

लेवाड़, लेवाड़ौ, लेवाळ—वि—१ लेने वाला ।

उ०—१ दाखै दाद हिंदवाद राज रीज वनां दाखी, लाखां वातां गौरा दळां रटक्कां **लेवाड़** । चंद सूर साखी दाखी जहांन भावती चूंडा, मूंडै मूछां राखी, राखी जावती मेवाड़ । —सलूंबर रावत केसरीसिंह रौ गीत

उ०—२ खिजायौ त्रिनेण प्रळै काळ रौ रिमां धू खंगे, पांखियौ नागेंद्र फतै पाव रौ प्रभाव । **लेवाळ** अंतरौ गजां घाव रौ सुमार लागै, सेल मारु रावरौ क्रतान्त रौ सुजाव । —राजा बलूंसिंघ रौ गीत

२ खरीददार, ग्राहक

रू. भे.—लिवाळ

लेवियोड़ौ—देखो 'लियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लेवियोड़ी)

लेवी—सं स्त्री.—१ सरकार द्वारा अभावग्रस्त क्षेत्रों में अनाज भेजने हेतु या अन्य कारणवश की जाने वाली अनाज की वसूली ।

लेबौ—सं. पु.—१ ऊनी वस्त्रों को खराब कर काट देने वाला एक सूक्ष्म कीड़ा ।

उ०—१ पसू खाल की बणै पगरखी, पैर पैर सुख पावै । अरथ खाल थारी नहिं आवै, लेबौ अरथ लगावै । —ऊ. का

लेस–वि [स. लेश] १ सूक्ष्म ।

२ अत्यल्प, थोडा (डिं- को)

उ०—१ रज तम गुण को लेस न राख्यौ, सत्वगुण लयो सभागी। सत्वगुण की सप्रदाय सबही, विवेक आदि लिया सागी ।

—सुखरामजी महाराज

उ०—२ बान मुदो सधिया बिगर, लागै लपट न लेस । डहकि न चित्त डुळावज्यौ, इण मे औ आदेस । —र. हमीर

उ०—३ मन खडण की येहि उपाई, द्वैत अद्वैत उठाजी । से सरहे सो अपना आपही, लेस नही दूजाजी । —सुखरामजी महाराज

३ किंचित, तनिक।

उ०—१ न दियै दुख लेस किणी जण नामौ, केसव वेस मजूर कियौ । मंड पाव कळेस कळेस मिटावण, देस कहै छज नेस दियौ ।

—भगतमाळ

४ अणु

५ एक अलंकार विशेष जिसमे किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही भाग या अश में रोचकता आती है।

६ देखो 'लैस' (रू. भे)

लेसाळ, लेसाळा—देखो 'नेसाळ' (रू. भे.)

उ०—१ जिहा भोगी करइ रेवाड़ी, इसी विसाल वाडी । जिहा पढइ छत्र चउसाल, तिहा इसी अनेक लेसाळ । —सभा

लेसाळियौ लेसाळीयउ—देखो 'नेसाळियौ' (रू. भे.)

लेसूड़ौ, लेसूवौ—देखो 'लसोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिण ऊपर घणा बडा पीपळा बोर बकायण नींब नाळेर आबा आबली सीसू सरेस खेजड़ जाळ आसपालौ खिजूर गूंदी लेसूड़ौ केसूला खिरणी मोळसिरी । —रा. सा स.

लेस्या – स. स्त्री—१ जैन धर्मानुसार जीव की वह अवस्था जिससे कर्मों का आत्मा के साथ सम्बन्ध हो।

वि० वि०—यह छः प्रकार की होती है।

लेहगौ—देखो 'लहगौ' (रू. भे)

लेह–स. पु. [सं. लेह्य] १ भोजन, आहार (अ. मा.)

२ आनन्द, मजा।

उ०—१ हँसज्यौ कसज्यौ खेलज्यौ, लीज्यौ जीवन लेह । पलक न न्यारा पोढज्यौ, नाजक घण रा नेह ।

—बगसीराम प्रोहित री बात

३ चाटकर खाई जाने वाली वस्तु।

४ ग्रहण का एक भेद जिसमें पृथ्वी की छाया सूर्य को जीभ के समान चाटती हुई प्रतीत होती है ।

रू. भे.—लेहण

लेहण—देखो 'लेह' (रू. भे.) (डि. को.)

लेहणौ—देखो 'लैणौ' (रू. भे.)

लेहणौ, लेहबौ–क्रि. स. [स. लेह:] १ चाटना।

२ स्वाद, लेना, चखना ।

लेहणहार, हारौ (हारी), लेहणियौ—वि. ।

लेहिओड़ौ, लेहियोड़ौ, लेह्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

लेहीजणौ, लेहीजबौ—भाव वा. ।

लेहल्ल – वि.—१ पकड कर रखने वाला ।

लेहाफ—देखो 'लिहाफ' (रू. भे)

लेहाल—देखो 'नेसाल' (रू. भे)

लेहासभा–स. स्त्री—१ लेखक मण्डली

उ०—१ आस्थानसभा स्रीगरणसभा व्यवकरणसभा धरम्माधिकरण-सभा देवकरणभा पडितसभा लेहासभा भांडाकार कोस्टाकार।

—व. स.

लेहियोड़ौ–भू का कृ.—१ चाटा हुआ. २ स्वाद लिया हुआ, चखा हुआ ।

(स्त्री. लेहियोडी)

लेहियौ—देखो 'लेखय' (अल्पा. रू. भे.)

लेह्य–स. पु.—१ चाटने के लिए बना पदार्थ।

लैंगिक–स. पु. [सं.] १ वैशेषिक दर्शन के अनुसार लिंग द्वारा प्राप्त होने वाला ज्ञान, अनुमान ।

वि.—१ लिंग सम्बन्धी, लिंग का ।

२ चिन्ह सम्बन्धी ।

३ अनुमित ।

लैंगौ—देखो 'लहगौ' (रू. भे)

उ०—गोरे कंचन गात पर, अंगिया रंग अनार। लैंगौ सोहे लचकतौ, लहरचौ लफादार। —र. हमीर

लैंण—देखो 'लाइन' (रू. भे)

उ०—वे सगळाई पोत पोतारा ध्यान मे नीचा माथा कियोड़ा खाता-खाता चाल रह्या । वारै एक कानी मोटरां री लैंण चाल री धीरै-धीरै । इसौ लागै जाणै कीड़ी नगरौ जागग्यौ ।

—अमर चूंनडी

लैंप–सं पु. [अं.] १ दीपक ।

रू. भे.—लंप ।

लैंसर—सं. पु. [अ.] १ रिसाले का एक भेद, जिसके व्यक्ति भाला लिए हुए घोड़े पर सवार रहते हैं।

लै—सं. पु.—१ राम २ प्रलय ३ उमया ४ रमा, लक्ष्मी ५ करुणा दया ६ अवसर मौका (एका)
७ ध्यान, लगन।

उ०—१ दादू द्रस्टे द्रस्टि समाइले, सुरतै सुरति समाइ। समझै ससझ समाइले, लै सौं लै ले लाइ। —दादूवाणी

उ०—२ राम कहै जिस ग्यान सौं, अम्रत रस पीवै। दादू दूजा छाडि सब, लै लागी जीवै। —दादूवाणी

८ वश, अधिकार।
ज्यू—आ उणरै लै पड़ती बात है।

लैंकार—सं. स्त्री.—१ लयपूर्ण ध्वनि, मधुर ध्वनि।

उ०—१ बाळू बाबा देसडउ, जहां पांणी सेवार। ना पणिहारी झूलरउ, ना कूवइ लंकार। —ढो. मा

[सं. लय+कार] २ विनाश, संहार।

उ०—संधार मार लैंकार सेन, मिळ सार धार अंधार मेन। धड मुड खंड बे रुंड धक्क, करमाळ वहै किरि काळ चक्क। गु. रू. बं.

लैं'की - देखो 'लहको' (रू. भे.)

लैखव—देखो 'लेख' (रू. भे.)

लैचाळ—सं. पु.—१ तलहटी।

उ०—दोळौ जिण दूरगरै, वसियौ नगर विसाळ। यूं वसियौ अमरावती, मेर तणौ लैचाळ। —भोपाळदान सांदू

२ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष।

वि. वि.—इसके विषम चरणों में दस मात्राओं और आठ मात्राओं पर विश्राम होता है। सम चरणों में आठ मात्राएं रखकर रगण के बाद 'जी' शब्द लगता है।

रू. भे.—लहचाळ

लैची—सं. स्त्री.—१ चारण कुलोत्पन्न एक देवी।
उ०—सचीयाम तुं ही वांकल विसेक, लौलीयै लाल लैची तुं लेख। —रामदान लाळस

रू. भे.—लेची, लेछी।

लैजौ—देखो 'लहजौ' (रू. भे.)

लैण—सं. स्त्री.—१ तुरंत ब्याई हुई गाय।

२ मृतक के बारह दिवसोपरान्त जाति में वितरित किया जाने वाला बरतन या पात्र।

३ बेचारी

४ देखो 'लाइन' (रू. भे.)

लैण किलियर—स. पु. [अं. लेनक्लियर] रेलगाड़ी के गार्ड या ड्राईवर को आगे रास्ता साफ होने की दी जाने वाली सूचना।

लैणदार—सं. पु.—जिसका ऋण चुकाना हो।

लैणदण—सं. स्त्री.—१ लेन और देन का व्यवहार, आदान-प्रदान।

२ व्यापारिक व सामाजिक क्षेत्र मे लेन-देन का व्यवहार।

३ ब्याज पर रुपया उधार देने व लेने का व्यवहार।

रू. भे.—लेन देन, लैणौ दैणौ, लैन दैन

लैणायत, लैणायती—वि.—१ ऋण दाता, कर्ज देने वाला।

उ०—१ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति जिण भात लैणायत दीठां दैणायत घटै तिम तिणि भांति दिन दिन निसि दीठै सूरज रौ तेज घटण लागौ नै सूरज रौ तेज घटियौ राति मोटी होण लागी। —रा. सा स.

उ० —२ सुणा नाग नर देव सकोई, विमगौ दान अछूनी वात। कीवी किणी न कोई करसी, पदम जिसी लैणायत पात। —महाराज पदमसिंह रौ गीत

रू. भे.—लहणायत, लेणायत, लेणायती।

लैणार लैणियार—वि.—१ लेने वाला।

उ०—१ तकण समै कासी माहै बरस दंन माहै हेकण दंन वैसाखी पूरणमासी करवत देअै। तठै करवत रा लैणार सारा बीजा ही कोहीं हूंता ते पण आंण मिळिया। —कल्याणसिंघ वाढेल री बात

रू. भे.—लणियार, लणिहार, लणीहार।

लैणियौ—स पु.—१ लाभ, मुनाफा।

२ कर्ज ऋण।

लैणौ—सं. पु—१ ऋण, कर्जा।

२ लाभ, मुनाफा।

३ हित, भलाई।

रू. भे.—लहणौ, लिहणौ

अल्पा.,—लहणियौ, लहण्यौ

लैणौ दैणौ—देखो 'लैणदैण' (रू. भे.)

उ०—थारै नें राजा रै कांई लैणौ वैणौ रै चौधरी? थूं उणनै मतीरौ क्यूं भेट करणौ चावै। —अमर चूंनडी

लैणौ, लैबौ—क्रि स.—१ प्राप्त करना, पाना।

उ०—१ उणरै रूप रौ हाकौ चौफेर हवा में घुळग्यौ हो सोळै बरस तौ लैणा दूभर व्हैगा। मां री कूख में मायगी पण माईतां रै आंगणै नीं माई। —फुलवाड़ी

उ०—२ लोभी ठाकुर आवि घरि, कांई करइ विदेसि। दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि। —ढो. मा.

२ मोल लेना, खरीदना।

उ०—१ ईडर की घर अउलगण, हू तउ जाण न देसि। घरि बइठाही आभरण, मोल मुहगा लेसि। —ढो. मा.

उ०—२ घरि बइठा ही आविस्यइ, लाखे लिया लडग। तिणमइ लेस्या टालिमा, वांकड मुहा विडग। —ढो मा

३ किसी पदार्थ को उठाकर या व्यक्ति को चलाकर कही से लाना या पहुंचाना।

उ०—१ भरी रूप रग रस भरी, लुळ आवै जळ लैण। सरवर त्यां निरखण सही, नीरज किया क नैंण। —र. हमीर

उ०—२ मीर सिकारा नै हुकम हुवो छै। बाज, जुररा, कुही, बहरी, सिकरा लगड चिपक तुरमती साथ लीजै छै।

—खीची गंगेव नीबावत री दोपहरी

उ०—३ दूजै दिन माणस वडारण मा री छोकरी आदमी सव हेक आया भरमल नुं लेण नु। —कुंवरसी साखला री वारता

४ सेवन करना, खाना।

ज्यूं—दवा लैणी, परसाद लैणौ।

५ अधिकार या कब्जे मे करना।

ज्यूं—जमीन लैणी, गाव लैणौ।

६ पहुचना।

ज्यूं—आपा नै अठासू गाव लैणौ मुसकल ज्यू त्यू कर घर ताइ लैणौ।

७ वहन करना, उत्तरदायी बनना।

८ किसी वस्तु या व्यक्ति का उपभोग या उपयोग करना, काम में प्रवृत्त करना।

ज्यूं—बळद नी हा तौ ट्रैक्टर सूं कांम लैणौ हो। इण वगत में नोकर सू काम लैणौ कठण है।

९ अमूर्त बातो, विचारों, परामर्श आदि के सम्बन्ध में किसी रूप में प्राप्त करना।

ज्यू—सलाह लैणी, मन रौ भाव लैणौ, थाह लैणौ

विशेष:—'लैणौ' क्रिया का प्रयोग बहुत सी क्रियाओं के साथ सयोजक क्रिया के रूप में होता है जहा पर यह क्रिया उस क्रिया की पूर्ति या समाप्ति का सूचक होती है। जैसे—खा लैणौ, पी लैणौ, उठा लैणौ, सुण लैणौ आदि। कुछ अवस्थाओ व परिस्थितियो में यह इस बात का भी सूचक होता है कि कर्त्ता कोई बहुत ही कठिनता से, जैसे-तैसे अथवा भद्दे या बहुत ही साधारण रूप में कोई क्रिया पूरी करने मे समर्थ होता है। जैसे-तूटी-फूटी अग्रेजी बोल लैणौ, थोड़ी घणी संस्कृत समझ लैणी।

मुहा.-लैणौ एक नै देणा दो=कोई सम्बन्ध न होना।

लैणौ न कोइ देणौ=सम्बन्ध विच्छेद करना।

लैणा रा देणा पड़णा=जान पर आ पड़ना।

लैणहार, हारौ (हारी), लैणियौ—वि०।

लियोड़ौ—भू० का० कृ०।

लिरीजणौ, लिरीजबौ—कर्म वा०।

लहणौ, लहबौ, लह्णणौ, लह्णबौ, लियणौ, लियबौ, लिवणौ, लिवबौ, लेवणौ, लेवबौ, लेहणौ, लेहबौ—रू० भे०।

लैन—देखो 'लाइन' (रू. भे.)

लैनदैन—देखो 'लैणदेण' (रू. भे.)

उ०—हियै हठी हमीरसौ अठी अमीर अैन में। दया गभीर देखिये, धमीर लैनदैन में। —ऊ. का.

लैम-सं पु.—किंचितकाल, अल्पकाल।

लैर-क्रि. वि—१ देखो 'लारै' (रू भे.)

उ०—१ मत ना अे राणी! मसळौ मारौ, मत ना काढौ सेल जैपुर मिळी जोधपुर मिळगी, मिळगी बीकानेर दोय पगा नै जागा कोनी, भाई होग्या लैर। —डूगजी जवारजी री छावळी

उ०—२ लागौ रै था सू नेह पनाजी म्हारौ अब जोरा जोरी तौ निभावौ सावळड़ा थारी लैर म्हारौ मागौ रे।

—रसीलैराज रा गीत

उ०—३ गिरचौ काळ कूट परी भग तुच्छी, परे बित्थुरे भूमिपै नाग बिच्छी। जटी भूत प्रेत लियै लैर लग्ग्यौ, हठी वीरभद्र तमासै उमग्ग्यौ। —ला रा.

२ देखो 'लहर' (रू भे.)

उ०—१ लैर-लैर मे धमचक लागी, पांणी जाय पाळ नै लड़ियौ। काछब पूछचौ माछळी, काइ चूक पड़ी कै घाटौ पड़ियौ।

—चेतमानखौ

उ०—२ ठडी बूठोड़ा री लैर मीठा बटाउ रा गीत। भली भादरवा री रात, मिळौ मनडै रा मीत। —चेतमानखौ

उ०—३ नित भूधर सीत निवारन का, घिन जे गळ गूदर धारन का। कर ले घर लैर कमडळ की, महिमा हर लै महिमडळ की।

—ऊ. का.

रू. भे.—लैरा, लैरधा।

लैरकौ, लैरड़ौ—देखो 'लहर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ बड़ला री जाडी छीया नै पाणी रा ठाडा लैरका।

—फुलवाड़ी

लैरदार—देखो 'लहरदार' (रू. भे.)

लैरां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

उ०—कमधजिया लैरां चालां ली, मोहौ मोही वाकड़ी तरै सूं।

आय खडी छै तुरी घर आंगण, लूंबाभूंमा दावण झाला ।
—रसीलैराज रा गीत

लैराणौ, लैराबौ—१ देखो 'लहरणौ, लहरबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'लहराणौ, लहराबौ' (रू. भे.)
लैराणहार, हारौ (हारी), **लैराणियौ**—वि० ।
लैरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
लैराईजणौ, लैराईजबौ—भाव वा० ।

लैरियादार—देखो 'लहरदार' (रू. भे)

लैरियां—देखो 'लारै' (रू. भे.)

लैरियौ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे)

लैरी—देखो 'लहरी' (रू. भे.)

लै'रौ—१ देखो लहर' (अल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'लहरियौ' (रू. भे.)
उ०—१ पणिहारघा परवार, जाय सरवर जळ ल्यावण । झूलरियै झणकार, लसकरां **लैरौ** गावण । —दसदेव
उ०—२ लबालब जळ **लैरौ** भीजै, हरख वगै घर हांफती । चटकै तीर निचोय नारयां, कुड कुडती सी कांपती । —दसदेव

लैरयां—१ देखो 'लारै' (रू. भे.)
२ देखो 'लैर' (रू. भे.)

लैरयौ—देखो 'लहरियौ' (रू. भे.)

लैलहाणौ, ललहाबौ—१ देखो 'लहलहाणौ, लहलहाबौ (रू. भे.)
लैलहाणहार, हारौ, (हारी), **लैलहाणियौ**—वि० ।
लैलहायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
लैलहाईजणौ, लैलहाईजबौ—भाव वा० ।

लैलहायोड़ौ—देखो 'लहलहायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लैलहायोड़ी)

लैला-सं. स्त्री.—१ ईरान के प्रसिद्ध आशिक मजनू की प्रेमिका ।
रू. भे.—लेली, लैली ।

लैली-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का पक्षी ।
रू. भे.—लेली ।
२ देखो 'लैला' (रू. भे)

लैस-सं. पु.—१ बड़ी व लम्बी नोंक वाला एक प्रकार का बाण ।
२ भाला ।
३ कपड़ों पर लगानें का बेल-बूंटेदार फीता या बेल ।
उ०—छैल दुपट्टा ल्यो तौ दुपट्टा री **लैस** ल्यो तौ । पीळी पीळी मोहरा ल्यो तौ, पूजू गणगोर । —लो गी.
वि.—१ वर्दी व शस्त्रों से सुसज्जित ।
उ०—जमदूत ठाकरा रै बिलकुल सामनै उभा हा—सस्तर पाती सूं **लैस** मूंडा रै बुकनी दियोड़ा अर हाथा में नागी तरवारा लियोड़ा ।
—रातवासौ
२ सब प्रकार की सामग्री से सजा हुआ, पूर्णयुक्त ।
रू. भे.—लेस, ल्हैस ।

लों—देखो 'लौ' (रू. भे)
उ०—१ नभाग्नी वायु **लों** जळ धरनि आपू इन नहीं । महात्मन तेरे है अवर, नहिं मेरे इन मही । —ऊ. का.
उ०—२ गुडी **लों** उडी गिद्धनी व्योम छायौ । नहीं हूर रभा रथा पथ पायौ । भिरी पक्खरा पक्खरां भीरि पूर । हयं गज्ज गाहं भय चूरमूर । —ला. रा.

लोंक-स. स्त्री.—लचक ।

लोंगी देखो 'लूंगी' (रू. भे.)
उ०—माथै केसरीया पाग छै पैहरण लाल **लोंगी** छै । नै कहै छै, "रे रात तीतर बोलै छै । —खीवर छाडावत री बात

लोंड—देखो 'लोंडौ' (मह., रू भे.)

लोंडपण, लोंडापणौ-सं. पु—१ बच्चों जैसी हरकत, छिछोरापन ।

लोंडौ-स पु.—देखो 'लौडो' (रू. भे.)
(स्त्री. लोंडी)

लोंवौ—देखो 'लूंवौ' (रू. भे.)

लो-सं. पु.—१ मोह ।
२ प्रीति ।
३ मछली ।
४ शिला ।

लो'—देखो 'लोह' (रू. भे.)
उ०—१ ऊजळ मळ संकुळ पीठी उबटांणी, करड़ै **लो'** साथै घैरण कूटांणी । कळिया कूंळां री कादै मे कळणी, विसहर संगत सूं पीपळियां बळणी । —ऊ. का.

लोग्रड़ौ—१ देखो 'लड' (अल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'लघु' (रू. भे.)

लोग्रण—देखो 'लोचन' (रू. भे.)
उ०—१ **लोग्रण** तेह खिसि पडउ, केय पर त्रीय उल्हासी । चरण गेह तलि जाउ, जेणरिण पाछा नासी । —प. च. चौ.
उ०—२ 'कामकंदला' कही कही, धडहड मूकइ धाह । पूरि चढियां पांणि वहइ, **लोग्रण** ना परवाह । —मा. कां. प्र.

लोग्रणडौ—देखो 'लोचन' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—**लोग्रणडे** लेखूं नहीं, काधिउ पूर-प्रवाह । दीन वयणाइं बेहूं दुखी, दैवइ दीधु दाह । —मा. कां. प्र.

लोग्ररकोरट-सं. पु [ग्रं लोग्रर कोर्ट] १ नीचे की ग्रदालत ।

लोइ—देखो 'लोक' (रू. भे.)

उ०—१ पंचेन्द्रिय भव मनुस्यह तणु. ग्रारय देस उत्तम कुल गणु । साधु तणउ योग दोहिलु होइ, ग्यानद्रस्टि जोउ भविया **लोइ** ।
—नळदवदती रास

उ०—२ देस निवाणू सजळ जळ, मीठा बोला **लोइ** । मारू कामिणी दिखणि घर, हरि दीयइ तउ होइ । —ढो. मा

२ देखो 'लोई' (रू भे.)

उ०—प्रघळी पटाट पूर, गाढ दाढ गज्ज-ऊर । **लोइ** दीप मे लोचन, कागरि सारीखा कन्न । —गु. रू. ब.

लोइण—देखो 'लोचन' (रू. भे.)

उ०—१ दीठी रूपाळी म्हैई घणिया, पण इसी याही ज **लोइणां** री ग्रणियां । जिण भात खतग रा बाण,लागा पछै हरै हीज प्राण ।
—र. हमीर

उ०—२ चोटी वाळी चमक **लोईणां** लागणी, फणधर जिसडै फैल नवी काइ नागणी । ग्रलका बळ ग्रदभूत छुवती छत्तिया, ऊभकती ग्रग ग्रग कता जण तत्तिया । —र. हमीर

लोइयौ-स. पु.—१ कच्चा मतीरा । (बीकानेर)

लोई-स. स्त्री—१ ग्राटे की रोटी वेलने हेतु बनाया गोलीनुमा ग्रश ।

२ स्त्रियों के ग्रोढने का एक खास रग मे रंगा हुग्रा ऊनी वस्त्र।

उ०—१ **लोई** ग्रोढण नै साडौ लूमाळौ, फूटर लटकतौ नाडौ फूंदाळौ । पावा पचडोरी पगरखिया पैरै, सूरत सिंघण सी बन जगळ बैरै । — ऊ. का.

उ०—२ ग्रंबर घावळ ग्रागी, सिर **लोई** सोहै । —मे. म.

उ०—३ **लोई** सिर फाबत धावळ लक, चमू पर सावळ सूळ चमंक ।
—मे. म.

३ देखो 'लोवड़ी' (रू भे.)

मह.—लोवड़ ।

४ कबीर की पत्नी का नाम ।

५ प्रसव के पश्चात स्त्री या बच्चे के की जाने वाली मालिश ।

६ देखो 'लोही' (रू. भे.)

उ०—खरी नीद मे खाज, मूढ खिण बैठै मारै । नख लाबा सूं निठुर, **लोई** काढै ललकारै । —ऊ. का.

मुहा.-लोई मरणौ=कायरता ग्राना ।

लोई ठसणौ=खून जमना, ग्राश्चर्य चकित होना ।

लोई पीवणौ=रक्तपान करना, परेशान या दुखी करना कष्ट देना ।

लोई भरीजणौ=पशुग्रो से ग्रधिक परिश्रम लेने के बाद किसी बद स्थान पर बाधने से रक्त सचार का बंध हो जाना ।

रू भे.—लोइ ।

लोईभांण—देखो 'लोहीभाण' (रू. भे.)

लोईयाळ-वि.—१ रक्त से भरा हुग्रा, रक्त-पूर्ण ।

लोकंजन-स पु—एक प्रकार का कल्पित ग्रंजन जिसके लगाने से मनुष्य ग्रदृश्य हो जाता है ।

रू. भे.—लोपाजन ।

लोक-स. पु.—१ ससार, जगत ।

उ०—१ नारायण रा नाम सू, **लोक** मरत है लाज । बूडैला बुध बायरा, जळ बिच छोड जिहाज । —ह. र.

उ०—२ चैत मास री चांदणी, सरस बघी सग सोक । जांणा ग्राज खुसजाइला, लोम सरा सह **लोक** । —र. हमीर

२ समाज ।

उ०—नायण जिण मे गुण नहीं, लोक कुटब लडैह । पथ बह्या इण प्रेम रै, परबस प्राण पडैह । —र. हमीर

३ ऐसी जगह या स्थान जिसका बोध देखने से होता है ।

४ विभिन्न प्राणियो का विशिष्ट निवास स्थान ।

ज्यू—जीवलोक, मनुष्यलोक, देवलोक ग्रादि ।

५ पुराणानुसार माने गये वह स्थान जहां भगवान के भक्त मरणो-परान्त जाकर रहते हैं ।

वि. वि.—पृथ्वी, स्वर्ग, ग्रौर पाताल लोक ये तीन तीन **लोक** माने गये है, परन्तु ग्रागे चलकर विभिन्न विद्वानो के मतानुसार १४ लोक माने जाने लगे, जिनमे सात ऊर्ध्व लोक एवं सात ग्रध: लोक। भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक महर्लोक, जनर्लोक तपर्लोक ग्रौर सत्य-लोक, ये सात ऊर्ध्व लोक है । ग्रतल, वितल, सतल, रसातल, तलातल, महातल ग्रौर पाताल ये सात ग्रध:लोक है ।

६ प्रजा, जनता ।

उ०—१ तिण ऊपरै रजपूत बेसै तिको इसडी ग्राखडी पाळै, तिकौ इज बेसै नही तौ तलाक छै । गाव रौ धणी पाटवी नै छै । ग्रौर **लोक** नचत वेठौ व्यापारी नचित ।
—रामदास वेरावत री ग्राखडी री वात

उ०—२ ग्रावे मीर गाव ऊतरियौ, घूजै **लोक** तुरक ग्रत धरियौ । इसडी ताल 'पाल' हर ग्राया, दुयणां निजर कूंत दरसाया ।
—रा. रू.

उ०—३ कोटवाळ कन्है ग्रादमी गयौ, बोलाय ल्याया । कोटवाळ पत्र ढूंढियौ **लोक** भेळा हुग्रा । —खापरे चोर री वात

७ सेना, फौज ।

उ०—१ अठै जादुराय रा असवार हजार छव मारचा गया । तथा मा'राज खनैं हजार तीनक लोक रयो । —द. दा.

उ०—२ जोधाणौ 'माल' अजैगढ 'जेतौ' 'कूंप' बीकपुर राज करै । लाखा लोक चढे ज्या लारै, दिली आगरौ दहूं डरै । —जेता कूंपा रौ गीत

उ०—३ जद कुंवर चांदसिंघ सिवसिंघोत नै किसनसिंघ सादावत दोनूं पांच हजार लोक ले चढिया । —बां. दा. ख्यात

उ०—४ तद पाछा फिर खेलसी नू मारियौ जुहर हुवौ लोक घणौ कांम आयौ ।

८ परिग्रह, परिजन ।

उ०—१ राणीजी मास १।। दोढ बीकानेर रहि अर राणीजी रै टीकै री पहिरावणी लोकां नूं दे अर वळै राजाजी रा तेड़ाया ताहरां राजाजी दिसा सिधाया । —द. वि.

उ०—२ तद चहुवांणा मडळीक री घोड़ियां रा पूंछ वाढिया, अर भैंसियां रा मगर तेल सूं बाळिया । तरै ओ किसो मन में राखि अर आपरे लोकां में समचो कर अर आपरा मांमा सूं चूक कियौ । —नैणसी

उ०—३ तद इयै राजा सांम्हां आपरा परधांन मेल्हीया । कुंवर पासै आय पूछण लागा कैरौ साथ छै । तद कुवर रा लोकां कही कुंवर वीरभांन छै फलांणा रौ बेटो छै सु बापरै पासै आवै छै देसौटै गयौ हुंतौ तिको आयौ छै । —चौबोली

९ व्यक्तियों का समुह, झूण्ड, दल ।

उ०—तद तलवाड़ै थी चहुवांण पीहर गई बाहड़मेर । लोक साथै घणौ हुतौ, सु चहुवांणां रै उजाड़ रोज घणी करे । —नैणसी

१० कृषक, किसान ।

उ०—१ खेड़ौ सूनौ बसीवांन लोक को नही । गांगारड़ै रा लोक खेत खड़ै । —नैणसी

उ०—२ रा० मानसिंघ मुरारदास री बसी रा लोक खेत खड़ै । —नैणसी

उ०—३ खेत सखरा सेंवज गेहूँ चिणा हुवै । सेभौ नही काहय वासणी रा लोक बाहै । —नैणसी

११ साथ ।

उ०—पछै आप सारा लोकां सूं अरोगण पधारिया । त्यां परीसारो हुओ । सारै साथ नूं सीरो, तरकारियां, भाजी, इण भांति परीसारो हुओ । लोक जीमियो । आप ही अरोगिया । —नैणसी

१२ पति, स्वामि ।

१३ बत्तख की तरह का एक प्रकार का बड़ा पक्षी ।

१४ सात या चौदह की सख्या । * (डि. को.)

रू. भे.—लोग, लोय

अल्पा.,—लोकडौ, लोकौ, लोगड़ौ

लोकईख—स. पु. [स. लोक + ईक्ष्] ब्रह्मा (डि. नां. मा.)

लोकड़ौ—देखो 'लोक' (अल्पा., रू. भे.)

लोकचख—स. पु. यौ. [सं. लोक+चक्षु] १ सूर्य, भानु ।

लोकधारणी, लोकधारिणी—सं. स्त्री. यौ. [सं लोक+धारिणी] १ पृथ्वी, भूमि ।

लोकधुन, लोकधुनि—सं. स्त्री. यौ [सं. लोक+ध्वनि] १ अफवाह, जन रव ।

लोकनाथ—सं. पु. यौ. [सं. लोक+नाथ] १ संसार का स्वामी, ईश्वर ।

२ राजा, नृप ।

लोकनीत, लोकनीति—स स्त्री. यौ. [सं. लोक+नीति] १ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक ।

उ०—१ न्रत्यकला, राजनीति, लोकनीति, धरम्मनीति, काव्यरीति साहित्यविद्या । —व. स.

लोकप, लोकपत, लोकपता, लोकपति, लोकपती—सं. पु. [स. लोकप, लोकपति, लोकपिता] १ ब्रह्मा । (डि॰ को)

२ ईश्वर, प्रभू ।

३ नृप, राजा ।

लोकपाळ, लोकपाल—सं. पु.—१ राजा, नृप ।

उ० · इंद्र संमानि देव सपरिवार ते त्रायस्त्रिंस इसिइ नामइ । दो दुगुंदुग देव, ४ लोकपाल पद्मासिवा सुलसा अचला कालिंदी । —व. स.

२ ईश्वर, प्रभू ।

३ देखो 'दिकपाल' (रू. भे.)

लोकपितामह—सं. पु. यौ. [सं. लोक+पितामह] १ ब्रह्मा । (डि. को.)

लोकबंधु, लोकबंधू—सं. पु. यौ. [रा. लोक+बंधु] १ सूर्य, भानु । (डि. को)

उ०—सको सोखियौ हाकड़ौ नांम सिंधू । वहंतौ थको रोकियौ लोकबंधू । धकी पीवणों पाय भाई बचायौ । क्षुधाळी हुणे हेक हेरंब खायौ । —मे. म.

२ शिव, महादेव ।

लोकबळ—सं. पु. यौ. [सं लोक+बल] १ जन-शक्ति ।

लोकमाता—स. स्त्री. यौ. [सं. लोक+माता] १ जगत-जननी, लक्ष्मी ।

उ०—लोकमाता सिंधुसुता स्री लिखमी पदमा पदमालया प्रमा । अवरग्रहे अस्थिरा इंदिरा, रांमा हरिवल्लभा रमता । —वेलि.

लोकलाज—सं. स्त्री. यौ. [सं. लोक+लज्जा] १ देखो 'लोकालाज' (रू. भे.)

लोकलीक—सं. स्त्री. यौ.—१ लोक मर्यादा ।

लोकवौ—वि. लुप्त ।

उ०—सूं ऊट किए भातरा छै, थापवी तळी रा, सुपवीं नळी रा, नाळे रा गोडा रा, बीलफळ इरकी रा, हथाळियै ईडर रा, ससा सेरी बगला रा घाट बाजोट रा, बाथमें काधै रा, कसतूरिया पटा रा कोरवै कान रा, टामकसै माथै रा, **लोकवै** नाक रा तजियै होठ रा। —रा सा. स

लोकव्यवहार–स पु.—१ समाज में किया जाने वाला शिष्ट व्यवहार।

२ स्त्रियों की ६४ कलाओं मे से एक।

उ०—केसबंधन वीणानिनाद वितडावाद अकविचार **लोकव्यवहार** प्रहेलिका, स्त्री चतुः सस्टिकला। —व स.

लोकस–सं. पु.—१ एक प्रकार का वृक्ष।

उ०—भाखर में गढ मे कुवा तळाव, झरणा बावडी घणा छै। भाखर निपट सझाडौ छै। थोहर, बोर, गूंदी गागडी **लोकस** गूगळ निपट सझाड़ो छै। —बा दा. ख्यात

लोकांतर–स पु [स.] १ वह लोक जहाँ मरणोपरान्त जीव जाता है, परलोक।

लोका—देखो 'लाकी' (रू भे.)

उ०—**लोका** लह लाणति छुटकारा लेती, दीरघ कांनांसूं फिटकारा देती। —ऊ. का.

लोकाई–सं. स्त्री.—१ प्रजा, जनता, जन समूह।

उ०—लारै **लोकाईह**, सह कोळूरी सालुळी। आजो आ आईह, वीरा कमळादे वही। —पा. प्र

लोकाचार–सं. पु. यौ [स लोक+आचार] १ समाज मे सम्बन्ध बनाये रखने हेतु किया जाने वाला व्यवहार।

२ पुरुषो की ७२ कलाओ मे से एक।

उ०—**लोकाचार**, जनानुवृत्ति, फलभ्र, खड्गक्षुरिबंधन, मुद्रऽमायो। —व. स

३ वह व्यवहार जो दुनिया में सबके साथ मेलजोल बनाये रखने के लिए किया जाता है।

४ किसी की शव-यात्रा में सम्मिलित होने की क्रिया या भाव।

लोकाचारियौ–वि —१ शव-यात्रा (लोकाचार) में शामिल होने वाला।

लोकालाज—सामाजिक भय, शका।

उ०—मोक कियो मन मे, डाक चूक डेराह। लीधा **लोकालाज** हूं, फीके मन फेराह। —र. हमीर

लोकाट–सं. पु.—१ लम्बी तथा नुकीली पत्तियो वाला पौधा विशेष

लोकाधिप, लोकाधिपति, लोकाधिपती–सं. पु. [स. लोकाधिपः लोकाधिपति] १ राजा, न्रप।

२ ईश्वर, प्रभू।

रू. भे.—लोकाहिवई

लोकाध्यक्ष–सं. पु. यौ. [सं. लोक+अध्यक्ष] १ संसार का अध्यक्ष, ईश्वर।

उ०—नमो अग्राह्यारू स्रवन पुट सारू सत नमो। नमो **लोकाध्यक्षा**-भ्रत, विजय लक्ष्यापत नमो। —ऊ. का.

लोकाय–सं. पु —प्रजा, संसार के लोग।

उ०—मुख लोचन चोळ करै मयनूं अखवै यम पालक **लोकाय** नूं। —पा. प्र.

लोकायक–सं पु —जगत, ससार।

उ०– हे पंचो थे पंच कहावो छो, **लोकायक** मे पण पच परमेस्वर कहिजै छै। —पलक दरियाव री वात

लोकायत–स पु.—१ समाज।

२ भारतीय दर्शन मे एक प्राचीन भूतवादी नास्तिक सम्प्रदाय जिसे देवगुरु बृहस्पति ने दैत्यो का नाश करने के लिए चलाया था।

३ चार्वाक दर्शन जिसमे परलोक एवं परोक्षवाद का खंडन है।

४ दुर्मिल छंद का एक नाम।

लोकालोक–स. पु.—१ एक पौराणिक पर्वत का नाम।

२ ससार, जगत।

उ०—ताहरी ज्योति सकल त्रिभुवन मे, गावै सगला सत जी। केवल ग्यान करीनै देखे, **लोकालोक** अनत जी। —स्रीपाल

लोकीक—देखो 'लौकीक' (रू. भे.)

लोकेस–स. पु. [लोक+ईश] १ ब्रह्मा। (डि.को, ना. मा., ह. ना. मा.]

उ०—हिंदुवाण रौ प्राण देसाण हुगौ। वणांरौ अलंकार प्राकार ऊगौ। बुरज्जा चहुं जाण **लोकेस** बाका, प्रथी आभ रौ बीच भागै पताका। —मे. म.

२ राजा, न्रप। (अ. मा.)

३ इन्द्र।

रू. भे.—लौकेस।

लोकेसवर, लोकेस्वर–स. पु. [स. लोक+ईश्वर] ईश्वर, प्रभू।

२ राजा, न्रप।

उ०—लेखइ कुळ की लाज, लाज लोपि **लोकेसवर**। स्वामि-कथन आयी सुणए, तणी भोजाउत भाजि। —अ. वचनिका

लोकैसणा–स. स्त्री. यौ. [स. लोक+एषणा] १ ससार मे प्रतिष्ठा एवं यश की कामना।

२ स्वर्ग-सुख की कामना।

लोकोकत, लोकोकती, लोकोक्ति, लोकोक्ती–सं. स्त्री. [सं. लोक+उक्ति] १ कहावत, जनश्रुति।

उ० -- बदा कने तौ बद बसै, नेकां पासे नेक । मन तौ सारिसा मिळै, आ लोकोक्ति एक । —ऊ. का.

२ एक अलकार जिसमें लोक-प्रसिद्ध कहावत का प्रसंगवश वर्णन हो ।

लोकोत्तर-वि.—१ अलौकिक, विलक्षण ।

लोकौ—देखो 'लोक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊं, परहर संसय भय बुद्धि बर पाऊ । सबत छपनै रौ केवण सिरलोकौ, लौकिक लेयणनै साभळ-ज्यौ लोकौ । —ऊ. का.

लोग—देखो 'लोक' (रू. भे.)

उ०—१ जाडौ तौ पड़ियौ जी नणद बाई सहर में, मारचा मारचा हूटवा जी लोग, किस बिध भुगताजी नणदबाई जाड़ै नै । —लो. गी.

उ०—२ लोगां रौ बतूळियौ पगां हालियौ । दोनूं घणी गाथै बंध्योड़ा हा । सेठ ई खुर रगड़ता साथै चालता हा । —फुलवाड़ी

उ०—३ खेड़ौ सूनौ खेत जागीदारां रा लोग खड़ै । —नैणसी

(स्त्री. लुगाई)

लोगड़ौ—देखो 'लोक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—गांम में घणौ दूध घणौ घी, कोठियां कण रा में ऊन्हौ ठाडौ धांन, राजा राजनै प्रजा चैन । नी कोई दुख अर नीं कोई दुआळ । लोगड़ा प्रभू छांनां दिन काटै । — अमर चूनड़ी

लोगाई—देखो 'लुगाई' (रू. भे.)

लोड़-सं. पु.—१ बलात्कार ।

२ लूटने की क्रिया ।

लोड़णौ, लोड़बौ-क्रि. स.—१ लूटना, खोसना ।

उ०—त्यावै लोड़ि पराइयां, नहूँ दै आपणियांह । सखी अमीणा कंथ री, उरसां झूपड़ियांह । —हा. झा.

२ हड़पना, छीनना ।

उ०—धन लोड़ै तोड़ै धरम, विध विध जोड़ै वात । जड़ सनेह खोड़ै जड़ण, गिनका मोड़ै गात । —बां. दा.

३ प्राप्त करना, पाना ।

उ०—जोड़ विराजै वर तरुणि, मोड़ विराजै सीस । कव आसीसै लोड़ धन, जीवौ कोड़वरीस । —रा. रू.

४ छूना, स्पर्श करना ।

उ०—लागै आज लोड़ती लहरां, ऊमड़तै दरियाव उतंग । सूरज-तणौ हींदवा सूरज, पांणीपंथी कियौ पमंग ।

—महाराणा राजसिंह रौ गीत

५ मस्ती से झूमना ।

उ०—वड सिरहूं नाले वडवडती, विसरसि सूरति बिपरति वेस । लाडी आवै गगन लोड़ती, दौड़ाया भड़ चौदस देस ।

—रतनसिंघ राठौड़ री वेलि

लोड़णहार, हारौ (हारी), **लोड़णियौ**—वि० ।

लोड़िओड़ौ, लोड़ियोड़ौ, लोड़्योड़ौ --भू० का० कृ० ।

लोड़ीजणौ, लोड़ीजबौ —कर्म/भाव वा० ।

लोडणौ, लोडबौ, लौड़णौ, लोड़बौ —रू० भे० ।

लोड़वड़ाई-स. स्त्री. यौ.—१ छोटे बड़े की आयु का अन्तर ।

ज्यूं—इण दोना रै किती लोड़वड़ाई है ।

लोड़ाऊ-वि.—लुटाने वाला, उडाने वाला, खर्च करने वाला ।

उ०—उत्तर जाइजो दिक्खण जाइजो समद्रां जाइजो पार । मार-वणी रै नथ लाइजो मोती लाइजो चार । गाढा मारू छो जी राज लाखां रा लोड़ाऊ मारु-मारे नथ लायजो राज । —लो. गी.

रू. भे.—लोडाउ, लोडाऊ ।

लोड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लूटा हुआ, खोसा हुआ. २ हड़पा हुआ, छीना हुआ. ३ प्राप्त किया हुआ. ४ स्पर्श किया हुआ, छूआ हुआ. ५ मस्ती में झूमा हुआ ।

(स्त्री. लोड़ियोडी)

लोड़ियौ—देखो 'लघु' (अल्पा., रू. भे)

उ०--ओलग थारै लोड़ियै वीर ने भेज पना मारू । चतुर चौमासे राजन, घर बसोजी महारा राज । —लो. गी.

लोड़ौ—१ देखो 'लघु' (रू. भे.)

२ देखो 'लंड' (रू. भे)

लोच-स. स्त्री.—१ किसी वस्तु या पदार्थ का वह गुण जिससे वह दबाने अथवा मोड़ने पर दब या मुड़ जाती है एवं पुनः अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाती है । लचक, लचीलापन ।

२ कोमलता, नरमी ।

३ अभिलाषा, इच्छा ।

४ गूंधे हुए आटे का वह गुण जो लोई बनाते समय लंबी बधती है ।

२ सार, तत्व ।

लोचण—देखो 'लोचन' (रू. भे.) (डिं. को., ना. डिं. को.)

उ०—मोड़ै मुख मोड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरणनैं सीतल सतवाळी । लुच्चा ललचावै लालच बिनलागै, लोचण मोचण सोचण खिण लागै । —ऊ. का.

लोचणियौ-स. पु.—१ प्रातः काल का नाश्ता ।

उ०—उठौ म्हारा ओ ढोलाजी करौ नीं लोचणियौ, लूंग सुपारी बनड़ौ पांन रौ बिड़लौ, इसड़ा लोचणियां थांरी भोजायां करावै । -लो. गी.

२ देखो 'लोचन' (अल्पा., रू. भे.)

लोचणौ, लोचबौ—क्रि. स.—१ सोचना, विचार करना।

उ०— वहता वरस पच्यासियौ, श्रौ गुजरात अथाह। उर **लोचै** असपति हुअण, सोचै महमदसाह। —रा रू.

२ पक्षपात करना।

३ कोशिश या प्रयत्न करना।

उ०—जाळ नीम विलाला जामै, सांडा मात सपूतरी। मरु नाव खेवैया मयिहा, त्यावण **लोचै** सूतरी। —दसदेव

लोचणहार, हारौ (हारी), लोचणियौ—वि०।

लोचिश्रोड़ौ, लोचियोड़ौ, लोच्योड़ौ—भू० का कृ०।

लोचीजणौ, लोचीजबौ—कर्म वा०।

लोचन, लोचन्न—सं. स्त्री. [सं. लोचन] १ आँख, नेत्र। (ह. ना. मा.)

उ०—प्रगळौ पटाट पूर, गाढ दाढ गज्ज-ऊर। लोइ दीप में **लोचन्न** कागरि सरीखा कन्न। —गु. रू. ब.

रू. भे.—लोअण, लोइण, लोचण, लोयण, लोयणि, लोयन।

अल्पा., रू. भे.—लोअणडौ, लोचणियौ।

लोचपलोच—स. पु.—आवेष्टन करने या घेरने की क्रिया।

उ०—१ रसिया रौ तन रोगसू, सड जावे नह सोच। हेम रजत खातर हुवै, पातर **लोचपलोच**। —बा. दा.

उ०—२ गौरी मिलै गीत सह गावै, जतन रहावै जुवा जुवा। फेरू हमे किता घर फिरसी, होरू **लोचपलोच** हुवा। —ओपौ आढौ

लोचालाचौ—स. पु.—१ शीघ्रता।

उ०—भिणीयारा बारह कोस जायनै बकरो खाधौ **लोचालाचौ** घणौ ही कियौ पण उरै बाकरौ खावण न पाया। नरै री चोकियां ठाम-ठाम बैठी छै। —नैणसी

क्रि. प्र.—करणौ।

लोचियोड़ौ—भू का कृ—१ सोचा या विचारा हुआ. २ पक्ष किया हुआ. ३ कोशिश, प्रयत्न किया हुआ।

(स्त्री. लोचियोड़ी)

लोचून—सं. पु. यौ [स. लोह+चूर्ण] १ लोहे का चूर्ण।

लोट—सं. स्त्री.—१ लोटने की क्रिया या भाव।

उ०—अणिया धार अनेक आवरत, पांडे मूंठज पाण गया। खडग परवाण खेडतै खेता, थाट रवद रण **लोट** थया। —राणा खेता री गीत

क्रि. प्र. लगाणी।

२ देखो 'लोटड़ी' (मह., रू. भे.)

३ देखो 'नोट' (रू. भे.)

४ देखो 'लूट' (रू. भे.)

रू. भे.—लौट।

लोटड़ी—सं. स्त्री.—१ ग्वालों व किसानों के साथ में रखा जाने वाला मिट्टी का जल पात्र विशेष।

उ०—छोटी दीवडिया काखा तळ छालै, मोटी **लोटड़ियां** दाग्वा जळमालै। निरबळ चोरां डर बसियोडा नेड़ा, दुरबळ मोरा पर कमियोडा डेरा। —ऊ का.

मह., रू. भे —लोट।

लोटण—वि.—१ लेटने वाला।

२ एक विशेष जाति का कबूतर जो आकाश मे लुढकता हुआ उडता है। लकी कबूतर।

उ० – तिके सिर ईस लियै मुसताक, पडै छक जाणिक फूल पियाक किता घट फूट लुटै हिचकत, कबूतर **लोटण** जेम करत —सू प्र.

रू. भे.—लोटीगण।

लोटणकरवौ, लोटणकरियौ—स पु —१ प्रसिद्ध राजस्थानी लोकगीत।

उ०— कोठे भुवाऊं डोडा इलायची रे म्हारा **लोटणकरवा** कोठे भुवाऊं नागर बेल ऐ जी ओ मिरगा नैणी रा ढोला, मारुणी उडीकै घर आव। —लो. गी.

लोटणौ, लोटबौ—क्रि. अ [स. लुट] १ पेट या कमर के बल इधर-उधर लुढकना, लुटना, घुड़कना।

उ०—सामंत विछोहै अग मार, दोय जेम करै करवत्त दार। पड सीस बिना **लोटै** पठाण, फिर ज्वार सिरै ढूका कसाण। —रा. रू.

२ शयन करना, सोना (गर्भ मे)

उ०—बाबाजी रा पोता जीओ, बापूजी रा बेटा, माता जननी के ओदर **लोटिया**। —लो गी.

३ विश्राम करना।

४ चाटुकारिता, खुशामद करना।

उ०—अगर खेवै है, सुगध देवै है। सूंघौ सूंघीजै हैं, सीसिया री सीसिया ऊधीजै है। चोटी करै है, तिण आगै नायण ही **लोटी** फिरै है। गुंथबा में पडै है लहर, तठै कहो कुण सकै ठहर। —र. हमीर

लोटणहार, हारौ (हारी), लोटणियौ—वि०।

लोटिश्रोड़ौ, लोटियोड़ौ, लोट्योड़ौ भू० का० कृ०।

लोटीजणौ, लोटीजबौ—भाव वा०।

लुटणौ, लुटबौ—रू० भे०।

लोटपोट—वि.—१ विपर्यस्त, अस्त-व्यस्त।

उ०—इण भात कटारियां री घमरोळ पड़ै। **लोटपोट** हुवा तिको आलात चक्र री सी लीक बंधी न जाणजै भेळा छै क जुवा जुवा। —प्रतापसिंघ म्हौकमसिंघ री बात

२ कुलांच खाने की क्रिया।

उ०—१ सत्र लोटपोट उडि दोट सिर, घजर चोट खग धोहड़ां। नवकोट छ खड वागा निडर, लालकोट मझि लोहड़ां।

—सू. प्र.

उ०—२ बगतरे आग उडुंत बूंग, दवहरण जांण होळी दवूंग। घण भूंझा बाथां पडै घोट, लोटीगण खावै लोटपोट।

—गु. रू. बं.

३ आनंदित, अत्यधिक प्रसन्न (प्रसन्नता से उन्मत्त)

उ०—कांमणी घणी क्रिसनागर कस्तूरी अबर अंतर सांधे सूं गरकाब हुई थकी उवां राजा रा मलूकजादा रा मन राखती थकी लोटपोट हुइ रही छै। —राजांन राउतरो वात-वणाव

४ ध्वस्त, नष्ट, विनाश।

उ०—चले चंदोल चैंन में, हरोल दगती चलैं। दरार हेत द्रुग को विरार चुगती चलैं। प्रकोट चोट मार कोट लोटपोट व्है जहां। प्रवेस कोट रोक देन वध्य वप्परे कहां। —ऊ. का.

५ सुद्ध-बुद्धहीन, मस्त, बेहोश।

उ०—तिसै दूजो प्यालो चावड़ी वळै भरियौ। जांणियौ गोलौ भजे सपगां छै। दारू आयौ तो खरौ पिण लोटपोट न हुवौ।

—जगदेव पंवार री बात

रू. भे.—लटापोट, लौटपोट।

लोटमाळी-स. स्त्री.—१ कच्ची दीवार को वर्षा से बचाने के लिए उस पर लगाया हुआ घास-फूस व कांटों का छप्पर। दीवार का छाजन।

लोटाड़णौ, लोटाड़बौ-क्रि. स.—देखो 'लोटाणौ, लोटाबौ' (रू. भे.)

लोटाणौ, लोटाबौ-क्रि. स.—१ पेट या कमर के बल इधर-उधर लुढ़काना, लुटाना, भुकाना।

२ शयन कराना।

३ विश्राम कराना।

४ खुशामद कराना।

५ धराशायी कराना, गिराना।

लोटाणहार, हारौ (हारी), लोटाणियौ—वि०।

लोटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

लोटाईजणौ, लोटाईजबौ—कर्म वा०।

लोटाड़णौ, लोटाड़बौ, लोटावणौ, लोटावबौ—रू० भे०।

लोटायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ पेट या कमर के बल इधर-उधर लुढकाया हुआ. २ शयन कराया हुआ. ३ विश्राम कराया हुआ. ४ खुशामद कराया हुआ।

(स्त्री. लोटायोड़ी)

लोटावणौ, लोटावबौ—देखो 'लोटाणौ, लोटाबौ' (रू. भे.)

लोटावणहार, हारौ (हारी), लोटावणियौ—वि०।

लोटाविग्रोड़ौ, लोटावियोड़ौ, लोटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लोटावीजणौ, लोटावीजबौ—कर्म वा०।

लोटावियोड़ौ—देखो 'लोटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लोटावियोड़ी)

लोटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ पेट या कमर के बल धरातल पर लेटा हुआ, लुढका हुआ. २ शयन किया हुआ. ३ विश्राम किया हुआ. ४ धराशायी हुवा हुआ।

(स्त्री. लोटियोड़ी)

लोटियौ-सं. पु.—१ मिट्टी का बना छोटा जल-पात्र।

उ०—संज्यां पड़तां लोटियौ हाथ ले जंगळ गयौ सो सहर सूं निसर गयौ। —नांपै सांखले री वारता

२ देखो 'लोटौ' (अल्पा., रू. भे.)

लोटी-स. स्त्री.—पीतल का बना एक विशेष बनावट का जल पात्र।

रू. भे.—लोटीका

लोटीका—देखो 'लोटी' (रू भे.)

उ०—रहि रहि वेहनड़ी वचन तू रोई ले लोटीका जळ मुख धोई।

—बी. दे.

लोटीगण—देखो 'लोटण' (रू. भे.)

उ० —बगतरे आग उडुंत बूंग, दवहरण जांण होळी दवूंग। घण भूंझा बाथां पडै घोट, लोटीगण खावै लोटपोट। —गु रू. ब.

लोटौ, लोठौ-सं. पु.—१ चांदी, तांबा, पीतल आदि धातु द्वारा निर्मित जलपात्र विशेष।

उ०—१ हाथां हुकलिया लटकंता लोटा, रिणरिण रीकंता सुपने में रोटा। कोडी कोडी लै कळियोड़ा कूंगा, ढाला भूंडोड़ा ढळियोड़ा ढूंगा। —ऊ. का.

उ०—२ म्हैं उणीं कानी ज्यू पे'ली बांयां में सूं हाथ काढनै पछै उणानैं बाल्टी रै खनैं बिठाय नै लोटौ भरनै उणारै माथा मार्थ कूडण लाग्यौ। —अमरचूनड़ी

उ०—३ म्हूं उणारा हाथ-पग भिगोय नैं डरतौ-डरतौ धीरै-धीरै मैल करण लाग्यौ। कांई भरोसौ रीसां बळतौ अबकै लोठौ लेयनै माथा में नीं ठरकाय दे। —अमर चूनड़ी

उ०—४ सकर कूई तो भंवर जी मैं बणूं जी, हां जी ढोला बण ज्यासूं लोठौ-डोर प्यास लगे जद मारू जी भर पिग्रो जी।

—लो. गी.

अल्पा.,—लोटियौ।

लोडणौ, लोडबौ—१ साफ की हुई रूई की पूनियां बनाना।

२ कपास से रूई व बिनोलौ को पृथक करना।

३ पत्थर पर मसाला पीसना।

४ मस्ती से झूमना।

५ देखो 'लोडणौ, लोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ बेरका झुडये, गिगने **लोडयं**, फौज हेमज्जय भ्रिगग अमूंजय। —गु. रू. ब.

उ०—२ हाजर हिंदू वै तुरक लिये न पर भुइ **लोडि**। चीत वटा-वण हेक तूं, बीत वटावण कोडि। —गु. रू. ब.

लोडणहार, हारौ (हारी), **लोडणियौ**—वि०।

लोडिम्रोड़ौ, लोडियोड़ौ, लोड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लोडीजणौ, लोडीजबौ—भाव वा०।

लोढणौ, लोढबौ—रू० भे०।

लोडाउ, लोडाऊ-वि.—देखो 'लोडाऊ' (रू. भे)

उ०—निंबौ सेवालौत। साख राठोड। धिणलारौ धणी। लाखा रौ **लोडाउ**। रूळीयारा जोड। —वीरमदे सोनगरा री बात

लोडियोड़ौ—भू. का. कृ —१ कपास से रूई व बिनौले प्रथक किये हुए

२ मस्ती मे झूमा हुआ।

(स्त्री. लोडियोड़ी)

लोडौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—नरा मडोवर नर समद, खिति **लोडौ** खुरसाण। है केइ देस न हक्कडौ, दोइ तेहा वाखांण। —गु. रू ब

२ देखो 'लोढौ' (रू. भे.)

उ०—गोरी पीडी पर उघड़ता गोडा, लबी बीखा दे लेतोड़ी **लोडा**। सैंणा साजनिया ऊमर भर साले, घूमर देतोड़ी केता घर घाले। —ऊ. का.

लोढ-सं पु —१ समूह, झुण्ड।

उ०—मिळ आवत **लोढ** कि बोढ मही, जमनां दळ बेळ समुद्र जही। —रा. रू.

२ वजन, भार

३ तरग।

४ लोक वाहन।

५ देखो 'लोढौ' (मह, रू भे)

लोढणौ, लोढबौ—देखो 'लोडणौ, लोडबौ' (रू भे.)

लोढणहार, हारौ (हारी), लोढणियौ—वि०।

लोढिम्रोड़ौ, लोढियोड़ौ, लोढ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लोढीजणौ, लोढीजबौ—कर्म वा०।

लोढियोड़ौ—देखो 'लोडियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री लोढियोडी)

लोढियौ—१ देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—रांधां बाईजी जिनवा रा भात, थारै बीरै की पांत बैठा-यस्यां। देस्या बाई थांनै **लोढियौ** बीरौ साथ, भली ए जुगत से घर पुगायस्या। —लो. गी.

२ देखो 'लोढौ' (अल्पा., रू. भे.)

लोढी-सं. स्त्री.—१ हाथी-दात का वह खोसला एव गोलाकार ढाचा जिसको चीर कर चूड़ा बनाया जाता है।

२ देखो 'लोढौ' (अल्पा., रू. भे)

लोढौ-स. पु.—१ पत्थर का वह लम्बा व गोल टुकड़ा जिससे सिला पर कोई वस्तु रख कर पीसी जाती है।

२ मस्ती मे झूमते हुए गतिमान होने की क्रिया या भाव।

उ०—धुरवा धरणी लग **लोढा** लै धावै। जीमण जीमण नै मोडा जिम जावै। मोरां अनुमोदित लोरां लड़ लागी, नीझर नव नीरद भमना भय भागी। —ऊ. का.

रू. भे.—लोडौ

अल्पा., रू. भे.—लोढी, लोढियौ

मह. रू. भे.—लोढ

लोणी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की हरी सब्जी।

लोतर-स. पु.—शुभ लक्षण, ज्ञान।

लोतंग्राळ-स पु.—जजाल-चक्र।

उ०—जो रचना जगपत्ती, **लोतंग्राळ** भ्रमै त्रयलोक। सोई सत्य सद्रढ, रेखा सार अक रजपत्ती। —रा. रू.

लोथ-स. स्त्री.—शरीर, देह।

उ०—१ छुटै लबछड़, ताड़ तड़ तड़, बाण छुट बड़ सौक सड सड़। फूट फिफरड़ कळिज झडफड अतड उघरड **लोथ** लड़थड। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—२ कह केविया तणी कत सूं कांमणी, करडा वचन अणायर कोथ। कूरम तणी जावस्यौ कांकड, लड़थडती आवमी **लोथ**। —राजसिंघ भाखरोत री गीत

उ०—३ अर थौ आप पूरौ भरोसौ राखावौ ए दोन्यूं **लोथां**-जसी माथै पडैला, अर पछै इज कोई ठाकर कांनी हाथ आगै करेला। —अमर चूनडी

२ शव, लाश।

उ०—१ जठै माहिली बदूका छुटै छै। जको येक येक गोळी दस दस आदम्यां में फूटै छै। **लोथ** पर लोथ पडै छै। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—२ सेरखांन भर समर, कहर परखै घर कदळ। **लोथ** लोथ ऊपरा, गरा भिड़जां गज तंडळ। —रा. रू.

३ किसी गीली व गाढी वस्तु का अंश, लौंदा।

उ०—१ अगसा नेत्र, मीन जैसा चपळ। भूंह जांणै इंद्र धनख छै।

मुख पून्यू रै चंद ज्यूं, सोळहकळा सपूरण छै । पेट पींपळ रौ पान छै । पासा माखण री लोथ छै । नाभी मंडळ गुलाब रौ फूल सौ छै ।
—खीची गंगेव नींबावतरौ दो-पहरौ

उ०—२ पेट गीवां की लोथ, मिरगानैंणी राज । सूडी तौ कहिए ए रतन कचोळियां जी म्हारा राज । —लो. गी.

रू. भे.—लोथि ।

मह.,—लोथड़ौ, लोथौ ।

अल्पा.,—लोथड़ी ।

लोथड़ी—देखो 'लोथ' (अल्पा., रू. भे.)

लोथड़ौ—देखो 'लोथ' (मह., रू. भे.)

लोथबत्थां—देखो 'लथबथ' (रू. भे.)

उ०—सीह छूटौ साकळा बीछूटौ गाळा लेणौ सही, भीड़ियां कपट्टां बट्टां भाजिगौ भरम्म । बाहे साथ खाग भट्टां बिकट्टा सूं लोथबत्थां, केविया किना चा रूड़े दड़ा ज्यूं करम्म ।
—गंगाराम नागा री गीत

लोथि—देखो 'लोथ' (रू. भे.)

उ०—१ 'अमर' लोथि आविया, वीर वारण विकराळा । पाड़ि खळां जुधि पड़े, काळभाळा किरमाळा । — सू. प्र.

उ०—२ जोगणी उबक्कै पत्र हुबक्कै हुवाई जंग लोथि छक्कै धुबक्कै लटक्कै गजां लोथ । भुटक्कै अकारो सेन बैंडगारो क्रोधा भाय, जोधारौ हुचक्कै अजा रौ महाजोध । —बखतसिंघ रौ गीत

लोथौ—देखो 'लोथ' (मह., रू. भे.)

लोदंग—सं पु.—१ महादेव, शिव । (ना. डिं. को.)

लोद—१ देखो 'लोदी' (रू. भे.)

२ देखो 'लोध' (रू. भे.)

लोदरवौ—सं. पु.—१ जैसलमेर राज्य का एक प्राचीन नगर ।

रू. भे.—लौद्र ।

लोदी—सं. स्त्री.—१ मुसलमानों में पठानों की एक जाति ।

२ कपडे से बंधी हुई गठरी ।

रू. भे.—लोद, लोधी ।

लोध—सं. स्त्री. [सं. लोध्र] एक पेड़ विशेष जिसके लाल व सफेद फूल लगते हैं तथा इसकी छाल लकड़ी व फूल औषध में काम आते हैं । (डिं. को.)

उ०—लीला पोयण पांण केसड़ा कुंदम राजै । लोध-रजां भल भांमणियां रै मुखड़े साजै । चोटी कुरबक फूल सिरिसा करण सजावै । सीस कदंबा फूल गोरियां घणी लुभावै । —मेघ

रू. भे.—लोद, लोध्र

लोधा—स. स्त्री —एक राजपूत वंश ।

उ०—वरसिंघदे वाघेलौ गुजरात सौ गंगाजी री जात आयौ हुतौ, तद अठै बधवरी ठोड़ निबळा सा लोधा राजपूत रहैता, ठोड़ खाली दीठी, तरै गंगाजी रा पुलण मनोहर देखनै अठै रहण री कीवी । —नैणसी

लोधी—देखो 'लोदी' (रू. भे.)

लोधेस्वर—सं. पु. - एक तीर्थ का नाम ।

उ०—घट ही में गंगा घट ही में जमना, घट घट है अबिनासी । घट ही मे पुसकर औ लोधेस्वर लछिमन कवर बिलासी । —मीरां

लोप—स. पु.—१ क्षय, नाश ।

२ व्यतीत या गायब होने की अवस्था, लुप्त ।

उ० —सेवट अेक दिन औ खगडौ तौ व्हैणौ इज हो । अे चार वरस तौ सपनां रै उनमांन लोप व्हैगा । भला सपनां रौ कित्तीक थावस ! अर कित्तीक इणरी जड़ ऊंडी । —फुलवाडी

३ अभाव, कमी ।

४ व्याकरण के एक नियमानुसार शब्द के साधन में कोई वर्ण उड़ा या हटा दिया जाता है ।

लोपणौ, लोपबौ—क्रि स. [सं लोपन] १ उल्लंघन करना ।

उ०—बिलूब्यौ निधी नीर श्री हाथ बांमै । पुरी में सकौ सीर हलोज पामै । सजा हूं छुडायौ आई राव सेखौ । लाई पुत्र पिन्नेस रौ लोप लेखौ । —मे. म.

उ०—२ अवधरा धणी रिण सीह भजण असह, लीह सता तणी निकूं लोपै भणै किव भेव में । तई सांमाथ प्रभ बधु दीना तणा अनाथां नाथ भुज बिरद ओपै । वणै कव वेदमें । —र. ज. प्र.

२ पार करना, लांघना ।

उ० - १ डाक्या टोडा टोडड़ी, लोपी नदी बनास । आडावळौ उलांघियौ, जद छोडी घण आस । जी उमराव म्हांनै कर दुखिया, चढ चाल्या म्हारा राज । —लो. गी.

उ०—२ सुण बाल तणौ सुत, मेले मारुत लोप घसे गढ लंक में जी । पेखे मख प्रारंभ खोय अडीखंभ, कीध सांमग्री पकमें जी ।
—र. रू.

३ जब्त करना ।

उ०—सोजत था कोस ३ मूल कूण मांहि । कुंभार बांभण बसै । पहली बांभणां नुं सासण थौ, सु मोटे राजा लोपीयौ । —नैणसी

४ मिटाना, साफ करना ।

५ अन्तर्ध्यान होना ।

लोपणहार, हारौ (हारी), लोपणियौ—वि० ।

लोपिओड़ौ, लोपियोड़ौ, लोप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

लोपीजणौ, लोपीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

लोपन—१ लुप्त करने की क्रिया या भाव ।

२ नष्ट करने की क्रिया।
३ लांघने की क्रिया।
५ अवहेलना करने की क्रिया।

लोपांजन—देखो 'लोकंजन' (रू. भे.)

लोपा–स. स्त्री.—प्रयाग में एक देवी का स्थान।

उ०—लोपा मुद्रा दोय देवी प्रयागे। —बां. दा. ख्यात

लोपाड़णौ, लोपाड़बौ—देखो 'लोपाणौ, लोपाबौ' (रू. भे.)

लोपाड़णहार, हारौ (हारी), **लोपाड़णियौ**—वि०।
लोपाड़िओड़ौ, लोपाड़ियोड़ौ, लोपाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लोपाड़ीजणौ, लोपाड़ीजबौ—कर्म वा०।

लोपाड़ियोड़ौ—देखो 'लोपायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लोपाडियोडी)

लोपाणौ, लोपाबौ–क्रि. स —१ उल्लघन कराना।
२ पार करवाना, लघवाना।
उ०—मालदे नुं मुवां थोडा दिन हुवा था। सु चंद्रसेन कन्है साख साख रा सबळा रजपूत था। सु पहिला रामा री खबर आई। सु रामा नु'''नै घाटौ लोपायौ। नीठ रांमौ कुसलै गयौ।
—राव चद्रसेन री बात
३ जब्त कराना।
४ साफ करवाना, मिटवाना।
लोपाणहार, हारौ (हारी), **लोपाणियौ**—वि०।
लोपायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लोपाईजणौ, लोपाईजबौ—कर्म वा०।
लोपाड़णौ, लोपाड़बौ, लोपावणौ, लोपावबौ—रू० भे०।

लोपायोड़ौ–भू. का. कृ —१ उल्लघन कराया हुआ। २ पार कराया हुआ। ३ जब्त कराया हुआ। ४ साफ कराया हुआ मिटाया हुआ।
(स्त्री. लोपायोड़ी)

लोपामुद्रा–सं. स्त्री.—१ अगस्त्य ऋषि की पत्नी का नाम।

लोपावणौ, लोपावबौ—देखो 'लोपाणौ लोपाबौ' (रू. भे.)

लोपावणहार, हारौ (हारी), **लोपावणियौ**—वि०।
लोपाविओड़ौ, लोपावियोड़ौ, लोपाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
लोपावीजणौ, लोपावीजबौ—कर्म वा०।

लोपावियोड़ौ—देखो 'लोपायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लोपावियोडी)

लोपियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ उल्लघन किया हुआ. २ पार किया हुआ. ३ जब्त किया हुआ. ४ मराया हुआ. ५ अंतर्ध्यान हुवा हुआ।
(स्त्री. लोपियोड़ी)

लोफर–सं. पु. [अ.] १ आवारा व्यक्ति।
२ धूर्त, कपटी।
३ व्यभिचारी, लम्पट।
४ बातूनी।
रू. भे.—लापर।

लोफरपण, लोफरपणौ–स. पु.—१ आवारापन।
२ धूर्तता, कपट।
३ व्यभिचारिता, लम्पटता।
रू. भे.—लापरपण, लापरपणौ।

लोब—देखो 'लोभ' (रू भे.)

लोबांन–स. पु. [फा.] १ एक प्रकार का सुगधित गोद, जो जलाने के अतिरिक्त दवाओं मे भी काम आता है।
रू. भे —लवबान, लुबान।

लोबाणौ, लोबाबौ—देखो 'लुभाणौ, लुभाबौ' (रू. भे.)
लोबाणहार हारौ (हारी), **लोबाणियौ**—वि०।
लोबायोड़ौ—भू० का० कृ०।
लोबाईजणौ, लोबाईजबौ—कर्म वा०।

लोबायोड़ौ—देखो 'लुभायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लोबायोडी)

लोबियाकंज–स. पु—१ एक प्रकार का गहरा रग।

लोबी—देखो 'लोभी' (रू. भे.)

लोभ–स. पु.—१ लालच, लिप्सा। (डि. को.)
उ०—आसतखान मन धोखौ आयौ, लोभ बिना दुख बाग लगायौ। असुरां तरां उकत उपजाई, वातां लालच तणी वताई। —रा. रू.
२ कृपणता, कंजूसी।
३ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र, जो उसके अधरोष्ठ से उत्पन्न हुआ था।
४ इच्छा, लालसा, चाह।
उ०—दोनां रौ जिवडौ जहूर, तिसडौ ही सहूर, परसपर री सारीखी ही सोभ, नै सारीखौ ही देखण रौ लागौ लोभ। —र. हमीर
रू. भे.—लोब
५ काला श्याम। * (डि. को)

लोभणौ, लोभबौ–क्रि. स.—१ लोभ करना, लालच करना।
२ देखो 'लुभाणौ, लुभाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ दकूळ पीत लोभयं सुरुप बीज् सोभय। निखंग पीठ रज्जय, सुचाप पाणि सज्जय। —र. ज. प्र.
उ०—२ कवण अखैवड़ विगर, प्रळै सागर सिर सोभै। कवण बिनां सुखदेव, देव माया नह लोभै। —रा. रू.

लोभणहार, हारौ (हारी), लोभणियौ—वि० ।
लोभिग्रोड़ौ, लोभियोड़ौ, लोभ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
लोभीजणौ, लोभीजबौ—भाव वा० ।

लोभाऊ-वि.—देखो 'लोभी' (रू. भे.)

उ०—सवा कोड लग आगे सयणै, पात्र भगावै महापसाव । लोभाऊ दियौ लाखावत, सिंध तणौ छत्र सामां-राव ।
—जाम ऊनड़ री गीत

लोभाणौ, लोभाबौ—देखो 'लुभाणौ, लुभाबौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरा त्रिभुवणसी रौ भाई पदमसी हुतौ, तियै नूं भखायौ 'तूं त्रिभुवणसी नूं मारै तो तोनूं टीकौ देवां'। ताहरां पदमसी लोभायै थकै जाइनै त्रिभुवणसी नू पाटा मांहै सोमल नीब मांहै भेळियौ ।
—नैणसी

लोभाणहार, हारौ (हारी), लोभाणियौ—वि. ।
लोभायोड़ौ—भू का. कृ ।
लोभाईजणौ, लोभाईजबौ—कर्म वा. ।

लोभायोड़ौ—देखो 'लुभायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. लोभायोड़ी)

लोभाळ—देखो 'लोभी' (रू. भे.) (डिं. को)

लोभियौ—देखो लोभी' (अल्पा., रू. भे)

उ०—आक संसार रंजियौ घणौ आतमा, अलख न भेटियौ कदै आंबौ । थोभियै दीह घड़ियेक न थोभियौ । लोभियै पयांणौ कीयौ लांबौ ।
—ओपौ आढौ
(स्त्री. लोभणी)

लोभी-वि. [सं. लोभ+इन्] (स्त्री. लोभण) १ जिसे किसी वस्तु पाने का लोभ हो, अभिलाषी ।

उ०—१ लोभी ठाकुर आवि घरि, कांई करइ विदेसि । दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि ।
—ढो. मा.

उ० –२ थारे भाभोसा नै चायै भवरजी धन घणौ जी, हां जी ढोला ! कपड़े री लोभण थांरी माय । सेजां री लोभण उडीकै गोरड़ी जी, थारी गोरी उडावै काग । अब घर आवौ जी धाई थांरी नौकरी ।
—लोकगीत

२ अधिक लालसा वाला, लालची ।

उ०—सगुरा सत संयम रहै, सन्मुख सिरजनहार । निगुरा लोभी लालची, भूंचै विसय विकार ।
—दादूबांणी

३ कृपण, कंजूस । (डिं. को.)
४ मागने वाला, याचक (अ. मा)
५ प्रिय, प्यारा

उ०—१ लोभी अणवट ले गयौ, दाग दे गयौ देह । किसां अनाडी सूं कियौ, सखि में आज सनेह ।
—अग्यात

उ०—२ नही बोल्यौ जावै निपट, लोभी आवै लाज । नथ तुटै बिंदली पडै, इतरौ हठ क्यु आज ।
—अग्यात

रू. भे.—लोबी, लोभाऊ लोभाळ
अल्पा.—लोभियौ, लोभीड़ौ

लोभीगुण—सं. पु.— १ कवि (अ. मा.)

लोभीड़ौ - देखो 'लोभी' (अल्पा., रू. भे.)

लोम—सं. पु.—१ शरीर के छोटे-छोटे बाल, रोमावलि ।
(अ मा., ह. ना. मा)

उ०—चैत मास री चांदणी सरस बधी संग सोक । जाण आज खुसजाइला, लोम सरा सह लोक ।
- र. हमीर

लोमकरणी—सं. स्त्री.—१ हिमालय पर्वत में १७००० फुट की ऊंचाई पर पाई जाने वाली एक वनस्पति की सुगंधित जड़ । जटामासी

लोमड़ी—स स्त्री. [स. लोमशा] १ कुत्ते या गीदड़ की तरह का छोटा हिंसक जानवर, जिसकी चालाकी प्रसिद्ध है ।

रू. भे.—लूमड़ी ।

लोमधराज, लोमपद—सं. पु.—अंग देस का एक सुविख्यात राजा जिसे रोमपाद, चित्ररथ एव दशरथ आदि नामांतर प्राप्त थे ।

लोमपावपुर—स पु.—भागलपुर का प्राचीन नाम ।

लोमविलोम—स.पु.—साहित्य में एक प्रकार का शब्दालंकार, जिसको सीधा पढने से जो अर्थ निकलता है वही अर्थ उल्टा पढने से भी निकलता है ।

लोमस, लोमसरिख—स. पु. [सं. लोमश+ऋषि]पुराणानुसार एक दीर्घजीवी महर्षि जिनके शरीर पर अत्यधिक लोम (केश) होने के कारण इनका नाम लोमस पड़ा ।

उ०—संनक संनक रिख तेड़ौ, लोमस आतस अस्वारिस्त रे । सुक सनकादिक तेड़ौ, जक्ष किन्नर ने कहावोरे ।
—रुकमणि मंगळ

लोमहरसण—सं. पु. [सं लोमहर्षन] सूतकुलोत्पन्न एक मुनि जो समस्त पुराणग्रन्थों का आद्य कथनकर्त्ता माना जाता है ।

लोय—स. स्त्री. [स. लोक] १ स्त्री, पत्नी ।

उ०—'लाखौ' अधो धी अधी, अंधी 'लखें' नी लोय । सास बटाऊ पावणौ आवण होय न होय ।
—अग्यात

२ लक्ष्मी ।

उ०—लाखां आवै लोय, सपनां ज्यूं जावै सरब । हुवै भगत ज्यूं होय, मुगत परापत 'मोतिया' ।
—रायसिंह सांदू

३ लोकगीतों में प्रयुक्त सम्बोधन वाचक शब्द ।

उ०—१ दिखण दिसा सूं आई लोय, इसलासी ओ बादस्या ।
—लो. गी.

उ०—२ कुण रे खुदाया कुआ बावडी पिणियारी जीरै लोय कुण रे खुदाया समंद तळाव वाल्हा जी। —लो. गी.

४ देखो 'लोक' (रू. भे)

उ०—१ जिण तिण आगळ जोय, पडिया काज न पातरै। लागै सैणां लोय, मिसरी सरिखा 'मोतिया'। —रायसिंह सांदू

उ०—२ हर हर तणा हमीर नरेसुर, लाभ थका मूका रह लोय। एकण आस तुहाळी ऊपर, सीसोदा आवै सह कोय।

—महाराणा हम्मीरसिंघ री गीत

उ०—३ लिखियौ लाभै लोय, पर-लिखियौ लाभै नहीं। पर सिर पदमहि जोय, जेविह विहवै अप्पियौ। —नैणसी

५ देखो 'लौ' (रू. भे)

उ०—१ सारस मरता जोय, सारसणी मरसी सही। लाखीणी आ लोय, जग में रहसी जेठवा। —जेठवा

उ०—२ काया दीपक मन बाट है, चित की जगेज लोय। अतर घर के जोयले, ब्रह्म उजाळी होय। —श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—३ पेट भार हिरण्या बहै, रह्यौ न ओटौ कोय। रूआ रूआ नीसरै, लूआ धूआ लोय। —लू.

लोयण—देखो 'लोचन' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ राम न भूलौ बप्पड़ा, जे सिर छत्र प्रळोय। कर जीहा लोयण स्रवण, बियौ न आपै कोय। —ह. र.

उ०—२ मोज महण सूरत मयण, लोयण लाज अपार। 'जेहल' राज कुंवार जिम, कुण अन राजकुवार। —बा दा.

लोयणकमळ—स. पु. यौ [सं लोचन+कमल] विष्णु। (डि. को.)

लोयणधूम्र—सं. पु—देखो 'धूमलोचन'।

उ०—लोयण-धूम्र लुळाय, सुम्भ निसुम्भ सहारचा। रकत बीज आरोगि, मुंड चंडादिक मारचा। —मे. म.

लोयणि—देखो 'लोचन' (रू. भे.)

उ०—नव नव पुर परि पणिनवा, नव नव भूखण भाख। नव नव नारी नर नवा, लोयणि जोतु लाख। —मा. का. प्र.

लोयन—देखो 'लोचन' (रू. भे)

लोयांणा—देखो 'लोहाण' (रू. भे)

लोयौ—स. पु.—आटे का लौदा।

लोर—सं. पु.—१ सावन-भादो मास में अविच्छिन्न व निरन्तर छोटी छोटी बूंदों की वर्षा करने वाले बादल या उक्त बादलों से होने वाली लगातार वर्षा, झड़ी।

उ०—१ थानै थानै ए म्हारी वाड़ा री वडवेल, थांनै ए कुण सींचैगौ। सींचै सींचै, ए म्हारौ सावणिया रौ लोर भादूडै रौ झड़ झेलेगौ। —लो गी.

२ तीक्ष्ण ध्वनि, टेर, रट।

उ०—१ बाबहिया तू चोर, थारी चांच कटाविसू। राति ज दीन्ही लोर, मइ जाण्यउ प्री आवियउ। —ढो. मा.

उ०—२ बाबहिया तर-पंखिया, तइं किउं दीन्ही लोर। मइ जाण्यउ प्रिय आवियउ, ससहर चद चकोर। —ढो. मा.

३ समूह, झुण्ड।

उ०—पग्रक्खर-रोर, लसक्कर लोर। क्रमै दळ कोम, गह-मह गोम। —गु रू. बं.

४ तरंग, लहर।

५ खेत की सीमा पर प्राकृतिक रूप से पंक्तिबद्ध वृक्षों की कतार।

रू. भे.—लूर, लोर।

लोरियौ—स. पु.—१ चुम्बक का टुकड़ा जो किसी धातु के चूरे मे से लोहे के कण अलग करने के काम मे आता है।

लोरी—स. स्त्री. [स. लोल] १ बच्चो को थपकी देकर सुलाने की क्रिया या ढग।

उ०—झाड्दे ढाणी झालरिया झाडै, पांणी पालरिया पीवण पछखाडै। लोरी दे पोलछ लालरिया लेती, दड़खिल खोडा नै हालरिया देती। —ऊ का.

लोळ—स. स्त्री.—१ कान के नीचे का हिस्सा।

उ०—निज कुंभ सिभ जुग वण अनोप, उत्तग सिखर घण सिखर ओप। कर लोळ झुलत अति चपल कान, विखई मन जाणिक उकतिवांन। —रा. रू.

२ अग्नि की लपट

उ०—ग्रह झाळां गरजत, वधै लोळां वैसानर। नर पुर जन हरि नाम, उचरि समरत अगोचर। सती अंग पति संग उलसि रंग पावक अकित। रोम अस्त पळ चरम होय वपु नाड़ि सामि-हित।

—रा. रू.

३ समूह, झुड।

उ०—१ छिलै दधि छोळ, दळा वधि लोळ। पवंगा पाई, पडै खड हाइ। —गु. रू. बं.

४ पतंग में धनुषाकार लगने वाली बांस की खपची।

५ कानो मे धारण किया जाने वाला आभूषण।

६ एक अस्त्र विशेष

७ मदिर व पशुओ के गले मैं बांधे जाने वाले घटे के अदर बीचों-बीच लटकने वाला धातु का गुटका, लंगर।

वि. वि.—लगर

वि०—१ चपल, चंचल (ह. नां. मा.)

उ०—१ कटी सु छीन केहरी प्रवीन पायका नहीं, बिनीत बांनि बीनसी नवीन नायका नही। सुचैंन दैन सैंन स्वीय रैंन ये रूठै नही। अपाग लोळ गोलती इलोल में उठै नही। —ऊ. का.

अल्पा. रू. भे.—लोळकी

लोळकी—देखो 'लोळ' अल्पा. (रू. भे.)

लोल—वि.—१ परिवर्तनशील

२ क्षणिक

३ मूर्ख, बेवकूफ

उ०—राज हंस सम राजवी, बैठा करै किलोल। काग सरीखो कूबड़ौ, आवि उभौ लोल। —कीपाल

४ खेल, क्रीड़ा

उ०—सरसा सरोवर बिमल जल सें भरघा है भरपूर। लख लोल करत हिलोल हरखित हंस पक्षि पढूर। —वि. कु.

लोळणौ, लोळबौ—क्रि. स.—१ मिट्टी या कीचड़ में लथपथ करना।

उ०—वाहळै खाहळै लाज वचाई, कादै लोळण काया। कांमण वैण सांच कर कंथा, इण विध पाछा आया। —कायर रौ गीत

२ मोड़ना, झुकाना।

३ फंसना, उलझना।

ज्यूं—कांटां, भूरटां में लोळीजणौ।

४ दौड़ कर पकड़ना।

ज्यूं—गांववाळा चोरां नै तालर में आवतां लोळ लिया, कुत्तां टोगड़ी नै लोळ ली।

लोळणहार, हारौ (हारी), लोळणियौ—वि.।

लोळिओड़ौ, लोळियोड़ौ, लोळयोड़ौ—भू. का. कृ.।

लोळीजणौ, लोळीजबौ—कर्म वा.।

लाळणौ, लाळबौ—रू. भे.।

लोलणौ, लोलबौ—१ तड़फना, लुटना।

उ०—हार त्रोड़ती, वलक मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र गांजती, किंकणीकलापुच्छोडती, माथउ फोडती, वक्षःस्थल ताडती कुंतलकलाप रोलती, प्रथ्वीतल लोलती। —व. स

२ देखो 'लोळणौ लोळबौ (रू. भे.)

लोलणहार, हारौ (हारी), लोलणियौ—वि.।

लोलिओड़ौ लोलियोड़ौ लोल्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लोलीजणौ लोलीजबौ—कर्म वा.।

लोळमी—वि.—१ मुड़ने वाली

उ०—१ तठा उपरांत करिनै राजांन झिलांमति कावली कूतरा लाहोरी कूतरा, विलायती कूतरा, लोळमी लालमी जीभ रा वळिमें पूंछ रा, लापड़े कांन रा। —रा. सा. सं.

लोला—सं. स्त्री.—१ जीभ, जिव्हा। (डिं. को.)

२ राठौड़ वंश की एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)

लोळाणौ, लोळाबौ—१ मिट्टी या कीचड़ में लथपथ कराना।

२ मोड़ना, झुकाना।

३ उलझाना, फसाना।

लोळाणहार, हारौ (हारी), लोळाणियौ—वि.।

लोळायोड़ौ—भू. का. कृ।

लोळाईजणौ, लोळाईजबौ—कर्म वा.।

लोळावणौ, लोळावबौ—रू. भे.।

लोलाणौ, लोलाबौ—१ तड़फाना, लुटाना।

२ देखो 'लोळाणौ, लोळाबौ' (रू. भे.)

लोलाहणहार, हारौ (हारी), लोलाणियौ वि.।

लोलायोड़ौ—भू का. कृ.।

लोलाईजणौ, लोलाईजबौ—कर्म वा.।

लोलावणौ, लोलावबौ—रू भे.।

लोळायोड़ौ—भू का. कृ.—१ मिट्टी या कीचड़ मे लथपथ किया हुआ.

२ मोड़ा हुआ. ३ उलझाया हुआ, फसाया हुआ.

(स्त्री. लोळायोड़ी)

लोलायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ तड़फाया हुआ, लुटाया हुआ।

२ देखो 'लोळायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. लोलायोड़ी)

लोळावट—स. स्त्री—१ मुड़ने या झुकने की क्रिया।

उ०—जुध सीस पडत धडांह जोळा, वीजळ धक्क चरक्क वहे। गळिआंह लोळावट होय गळोवळ, गूथाबत्थ सुभट्ट ग्रहे। —गु. रू. ब.

लोळावणौ, लोळावबौ—देखो 'लोळाणौ, लोळाबौ' (रू. भे,)

लोळावणहार, हारौ (हारी), लोळावणियौ—वि.।

लोळाविओड़ौ, लोळावियोड़ौ, लोळाव्योड़ौ—भू का. कृ.।

लोळावीजणौ, लोळावीजबौ—कर्म वा.।

लोलावणौ, लोलावबौ—१ देखो 'लोलाणौ, लोलाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'लोळाणौ, लोळाबौ' (रू. भे.)

लोलावणहार, हारौ (हारी), लोलावणियौ—वि.।

लोलाविओड़ौ, लोलावियोड़ौ, लोलाव्योड़ौ—भू. का. कृ.।

लोलावीजणौ, लोलावीजबौ—कर्म वा.।

लोळावियोड़ौ—देखो 'लोळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लोळावियोड़ी)

लोलावियोड़ौ—देखो 'लोलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लोलावियोड़ी)

लोलासन—सं. पु.—योग के ८४ आसनों में से एक, जिसमें पावों की स्थिति पद्मासन की तरह रखकर दोनों हाथों के करतलो (हथेलियों) को जमीन पर टिका कर उनके बल शरीर को ऊंचा उठाना होता है।

लोळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ मिट्टी या कीचड़ में लथपथ किया हुआ. २ मोडा या झुकाया हुआ ३ उलझाया या फसाया हुआ।

(स्त्री. लोळियोडी)

लोलियोड़ौ—१ तडफा हुआ।

२ देखो 'लोळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री लोलियोडी)

लोली—स. स्त्री.—मस्ती में सिर हिलाने की क्रिया।

उ०—तिण मांहे बादळा भांति भांति रा निजर आवै। तिण भांति केइक तौ गाहडमल झोखा खाई रह्या छै। केइक बाका पाघडा रा लोली दे रह्या छै। केइक डाकी जमदूत।
—मा. वचनिका

लोलु—वि.—जिव्हा रस का शौकीन।

उ०—जिस्यु बहुबोलानी जीभनु लोलु, जिस्यु कागनु डोलौ। जिस्यु धजनु अंचल, तिसिउ ससार चचल वैराग्य। —व. स.

लोलुप—वि.—१ लोभी, लालची (डि. को.)

२ उत्सुक, इच्छुक

लोलौ—स. पु.—१ शिश्न, लिंग।

अल्पा. लोली।

स. स्त्री—२ भग, योनि।

वि.—१ मूर्ख, अज्ञानी।

२ भोला, सीधा-साधा।

उ०—मुग्ध लोला तेह ना रजववा आवरजवा भणी।
—सष्टि शतक

लोळौ—स. पु.—१ बाण, शर।

उ०—दुरग अचीत घेरियौ देता, पमगा आठ सहस पखरंता। वीरारस जागी गिर बागा, लोळा पुज सिखर सिर लागा।
—रा. रू.

२ बुत्ता, झासा।

३ मास पिण्ड।

लोल्या—सं. स्त्री—१ वासना, इच्छा।

उ०—नींदई झकोल्या, मुकी सभोग नी लोल्या, स्त्री भरतार डमडोल्या —रा. सा स.

लोव—देखो 'लोह' (रू. भे.)

उ०—जीण मेरी बाई ये! मतै गया छै वे घोड़ा टांरड़ा! तोडी बा लोवां री लगांम, जामण की ये जाई, खेडी रा तोडचा ये दुवकी दावणा। —लो गी

लोवड़—१ देखो 'लोई' (मह. रू भे.)

२ देखो 'लोवडी' (मह. रू. भे)

उ०—बधु बचायौ ब्याळ जहर सू, बैम जहाज तिराणी। रवि री रथ ऊगंता रोक्यौ, आडी लोवड़ आणी। —राघोदास भादौ

लोवड़ियाळ, लोवड़ियाळी—वि—लोवडी नामक ऊनी वस्त्र धारण करने वाली।

स. स्त्री—देवी।

उ०—१ पथ पीर पैंकबर लार पुळचा, महमाय सू आय आघीट मिळचा। भखिया नव पीर सताप भग्यौ, लोवड़ियाळ पगां पड रोण लग्यौ। —करणी जी रौ छंद

उ०—२ 'अभसाह' सहायति ईसरी लोवड़ियाळी लक्ख नव। रथ खेडि मिळी गिळवा रवद, रूप हद्द जै सद्द रव। —रा. रू.

रू. भे.—लोवडियाळ, लोवडियाळी, लोहड़ियाळ लोहड़ियाळी

लोवडियाळ, लोवडियाळी—देखो 'लोवडियाळ, लोवडियाळी' (रू. भे)

उ०—'बांकौ' कहै टळै दिन विखमा, धणियाणी नै धाया। लोवडियाळ ताप नह लागै, ओलै थारै आया। —बा दा.

लोवडी—स स्त्री—१ लोवड़ी नामक ऊनी वस्त्र धारण करने वाली देवी के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द।

उ०—जपियौ नांथू जांप, कव चालक कदमां रह्यौ। उण कुळ री अब आप, लाज रूखाळै लोवड़ी। —गणेशदान लाळस

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष जो ऊन का बना होता है।

उ०—१ चारणा वरण पर कृपा नित चोवडी, तोवडी नकौ मा सूल तोलै। दिपै हव सासणां अजादा दोवडी, एक इण लोवडी तणै ओलै। —खेतसी बारहठ

उ०—२ बरजती बाप रखावती ब्याह, अकन कुवारी रहती सखी। ओढण लोवड़ी काटती झाड, खेत कमाती जाट ज्यू। —बी. दे.

उ०—३ बैणव बीजणियां बधण बिगताळू, लटूं घोता रा खूजा लटकाळू। राती कानी री पोतड़ियां रूड़ी, ऊनी लोवड़ियां बगलां मे ऊड़ी। —ऊ. का.

३ देखो 'लूकार'

उ०—मूगी छम लोवड़ियां लिया, विच विच चुन्नी चीवटा। खोढ मदीना खड़ा मोहै, सकड़ सदीना मीवटा। —दसदेव

रू. भे.—लोवडी, लोहडी

लोवडो—देखो 'लोवडी' (रू. भे.)

उ०—नदरबारी पाघडी, पामडी लोवडी, वाहणवही लोवडी। पछेडी चूनडी, गजवडी बोरी आवडि हसवडि सुवरणवडि। —व. स.

लोवळवाळी—वि.—लोवड़ी नामक वस्त्र, ओढने वाली।

उ० —सबै लोवळवाळीयां, न जांणु घण काय। ऊजळदंतौ मार-
वण, पदम जड़ावै पाय। —ढो. मा

लोवांणियौ-स. पु.—मुसलमानों की एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

लोवा-सं. स्त्री.—१ लोमड़ी।

उ०—चाला चउरास्या न लावी वार, आड़ी आवज्यौ इंधणहार।
बूड मल्हा लोवा सीयमाल, चाल्यो राजा जाई भोवाल। —बी. दे.

लोसक-सं. पु.—ताना।

लो'सार—देखो 'लोहसार' (रू. भे.)

लोह-सं. पु.--१ लोहा नामक प्रसिद्ध धातु (अ. मा., ह. ना. मा.)

उ०—रांम भणे भण रांम भण, अवरां राम भणाय। जिण मुख
रांम न ऊचरै, ता मुख लाह जडाय। —ह. र.

२ शस्त्र प्रहार।

उ०—१ बब नयण विक्रम गजबोहां, लागां लडै असीचत्र लोहां।
धारण चित्त सिरदार नजर धरि, असि तोरियौ सेरखा ऊपरि।
—सू. प्र.

उ०—२ दोही तरफां लोह रा प्रभाव में कसर न राखी तथापि
पश्चिम रौ अधीस जाणि बारसुंदरी रै स्वभाव जय लक्ष्मी री
कटाक्ष तौ भोळाराव री तरफ हुवौ। —व. भा.

३ शस्त्र, हथियार।

४ तलवार।

उ०—स्रोन धार धर चलत, चलत लख पंक्ति पलच्चर। कातर
बिमुहे चलत, चलत समुहैं नर हैमर। चलत लोह उत्ताल, सूल
सरगदा परिघ्घन। चलत सोर साबत, मनहुं डंडूर बूंद घन।
—ला. रा

मुहा०—१ लोह करणौ=तलवार का प्रहार करना।
२ लोह भेळणौ=युद्ध करना।
३ लोह लैणौ=मुकाबला करना।
४ लोह मांनणौ=हार स्वीकार करना।

५ लगाम, वल्गा।

उ०—१ खित पुडि पडी भांति खुरांह, तीनां ऊरवरवं तुरांह।
तपिए ताळ ए उतंग, पीसै मुहे लोह पवंग। —गु. रू. बं.

उ०—२ पाइगाह मंडण चढण पाट, सांहणी छोड सिणगार थाट।
लाखीक तणै मुंह दीध लोह, सोवन्न जोत नग जडत सोह।
—गु. रू. बं.

वि.—अत्यधिक कठोर।

७ काला, श्याम। * (डि. को.)

रू. भे.—लोव, लोहउ, लोहड़उ, लोहड़ो, लोहडो, लौहो, लौह।
मह.—लोहड़, लोहड।

लोह अभिसार—स पु.—१ दशहरा पर किया जाने वाला तलवार का पूजन।

उ०—पावस चौमासौ आयां जक पड़ै घरै रहै जितरै चौमासौ न
आवै इतरै पैलां, सत्रुआं नै, घणी दहल पड़ै है—और भाजड री
(भाग जाण री) घरोघर में तयारी हुवै है जदकै हुवा लोह
अभिसार (दसरावै तरवार री पूजन) होवता ही। —वी. स. टी.

२ सामरिकरीति।

लोहउ—देखो 'लोह' (रू. भे.)

उ०—करहा माळवणी कहइ, संभळि बोल्य सच्च। तातउ लोहउ
ताहरइ, वयण न लागौ जच्च। —ढो. मा.

लोहकरम्म-स. पु.—पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।

उ०—उपलकरम लेपकरम्म लोहकरम्म मणिकरम्म सुवरणकरम्म
दासकरम्म। —व. स.

लोहकार-स. पु. [सं.] लुहार।

उ०—लोहकार उत्ताल मनहुं अैरन घन गज्जिय। गजर मनहुँ
घरियार, जाम पूरन प्रति बज्जिय। —ला. रा.

रू. भे.—लौहकार

लोहड़ —१ देखो 'लघु' (मह. रू. भे.)

उ०—केहरि छोटौ बहुत गुण, मोटै गयंदा मांण। लाहड़ बडाई
की करै, नरां नखत परमांण। " —हा झा.

२ देखो 'लोह' (मह., रू. भे.)

लोहड़उ- देखो 'लोह' (रू. भे)

उ०—इसउ नहीं हो ठाकुरे! इसउ कीजइ-गळइ सात सइ सालि-
ग्रांम तुळसी की माळा घातिजइ अचळेसर का आवास-थइ लोहड़उ
करता करतां गोरी-राजा का गूडरहइ जाइजइ। —अ. वचनिका

क्रि. प्र.—करणौ

लोहड़ियाळ, लोहड़ियाळी—देखो 'लोवड़ियाळ' (रू. भे.)

उ०—हिय मांभळ होळीह, अर साबत सुण उठती। झलकत झख-
झोळीह, लोहड़ियाळी पुणच लग। —पा. प्र.

लोहड़ी—देखो 'लोवड़ी' (रू. भे.)

लोहड़ौ—देखो 'लोह' (मह. रू. भे.)

उ०—१ कांन किसनावत। मोटै कुंडळ मांहि भाटियां सूं वेढ की
तद पूरै लोहड़ै पड़ियौ। —नैणसी

उ०—२ इण भांत कमंधां अगाळी, रूक वजायी रोहड़ै। वीरांण
कि आरण वावरै, ज्यां घण तसै लोहड़ै। —रा. रू.

२ देखो 'लघु'

उ०—तरै जेसौ मंडळीक री लोहड़ौ भाई, तिण सारी धरती रो
भार संभायौ। —नैणसी

लोहछक, लोहछक्क, लोहछाक–वि.—शस्त्र प्रहारों से क्षत-विक्षत, घायल।

उ०—१ झालो सिंह देवतो प्रथम अणी में ही **लोहछक** होय प्राणा रा पोखण मैं लुभायो थको प्रमदा रो पाहुणी अपूठो खड़ियो।
—वं भा.

उ०—२ तडछिया जाहि गोडिया ताण, जमदढा टेवउ ऊठे जुवाण। लागै भड लोहै **लोहछाक**, घूमति जांण पीये ऐराक।
—गु. रू. बं.

उ०—३ या सुणतांही **लोहछक** होय पडियें थकै ही मलप लेर चालुक्य राज हमीर कैमास री कांख में चंपिया आपरा स्वामी नूं झाटकियो।
—वं. भा.

लोहटिया–स. पु.—राजलोक वर्ग विशेष का नाम।

उ०—**लोहटिया** दीवटिया मसूरिया तलार तत्रपाल चामरधार बालउ अंतेउर कामतेउर।
—व स.

लोहटोप—देखो 'लोहलटोप' (रू. भे.)

लोहड—१ देखो 'लोह' (मह., रू. भे.)

उ०—करहा माळवणी कहइ, संभळि बोल्यो सब्ब। तातो **लोहड** ताहरइ, वळि लागो ना बद्ध।
—ढो. मा.

लोहडियाळ—शस्त्रों से सुसज्जित, लेस।

उ०—उडताण ग्रहे कर मूठ अडां, भड धीबाय **लोहडियाळ** भडा। भुरजाळाय जोर रखो भुजरो, घण घोडाय सीस घला गजरो।
—पा. प्र.

लोहडौ—देखो 'लोह' (रू. भे.)

उ०—अरस हूज ऊतरै एक वर अच्छर वरिया, एक पडै **लोहडै** लोहछक्का लालुरिया।
—गु. रू. ब

२ देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—मडोवर मुरधरा खेत **लोहडा** खुरसांणह। नर समद तै नाम, सहू सिर हिंदुसथांनह।
—गु. रू. ब.

लोहण—१ देखो 'लोही' (रू. भे.)

उ०—तस जत्र, जंत्री तांणिया, वरमाळ गह गिरवांणिया। घण वहण **लोहण** सघण घण, हुय गजण कण २ असरण हण।
—र. रू.

२ देखो 'लोह' (रू. भे.)

लोहणो, लोहबो–क्रि. स.—पोंछना।

उ०—तठा उपरांयत पाळा झारा चळू करण रै पगा मगायजै छै। चळू कीजे छै। कुरळा कीजै छै। हाथा **लोहण** नूं रूमाल हाजर हुवा छै।
—खीची गंगेव नींबांवत रो दो-पहरो

लोहणहार, हारो (हारी), लोहणियो—वि०।
लोहिओड़ो, लोहियोड़ो, लोह्योड़ो—भू० का० कृ०।
लोहीजणो, लोहीजबो—कर्म वा०।

लोहतचंदण—देखो 'लोहितचंदण' (रू भे.)

लोहतम–स. पु. [स. लोह+उत्तम] १ स्वर्ण, सोना। (अ. मा.)

लोहतरग–सं. स्त्री.—लोहे का बना एक बाजा जो लोह के डंडों से बजाया जाता है।

लोहतोड़ो–सं पु.—ऊंट। (ना. डिं को.)

लोहधात–स स्त्री.—तलवार। (अ. मा.)

लोहबद्ध–स पु.—हथियार विशेष।

उ०—यत्रमुक्त मुक्तामुक्त दुस्फोट तरवारि आनि तेल **लोहबद्ध** लुडि एवंविघ आयुघ विसेसि ढाचा भरियां।
—व. स.

लोहभोगळ लोहभोगल–स पु.—लोह की बनी अर्गला।

उ०—गढ गिरुउ अनइ विसमउ, जेहनउ पायउ पातालि पयठउ, महागज तणा जिसा पाग तिसा कोसीसा गरुई पोलि, निविड कमाड, **लोहभोगळ**, विजाहरी तणी पद्धति।
—व स

लोहमइअंगी–स. पु.—कवच विशेष।

उ०—असवार असवारि, पायक पायकि, भथाइतु भथाइति, सरासरि खड्गा खड्गी, गदागदि केसाकेसि, दतादंति, मुस्टामुस्टि एक अगी **लोहमइअंगी** करी।
—व. स.

लोहमराट—देखो 'लौहमराट' (रू. भे.)

उ०—विढता वीर ति वाट चाल्या राइ चाली हुवइ। कह खूंवइ कह खिलसता, लोहचा **लोहमराट**।
—अ. वचनिका

२ दृढ, मजबूत।

लोहमिपोलि–स स्त्री—लोहे की पोल या दरवाजा।

उ०—जे नगर माहइ चुरासी चुहुटा तणी उलि, बारै दरवाजै **लोहमिपोलि**।
—व. स.

लोहमीवाड़–सं. स्त्री.—अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित।

उ०—बीस लाख असवार पाखरीआ **लोहमीवाड़** किआ, बगतर, हाथल, टोप, झिलमे चिलकतां ऊपरै पूरी सिलहा किआ।
—राजान राउतरो वात-वणाव

लोहमै–वि. [स. लौहमय] लोहे का, लोह निर्मित।

उ०—पवै गिरा पगार पौळि, **लोहमै** कपाट ए। त्रिगमेर सीस जाणि, ओपियंत आट ए।
—गु. रू. बं.

लोहर–स. पु.—एक देश का नाम।

उ०—डाहला, नवलक्ष, **लोहर** नवलक्ष, लावनवलक्ष हीरालूलि।
—व. स.

लोहलंगर–सं. पु.—१ जहाज का लंगर।

वि.—दृढ, मजबूत।

लोहलटोप-सं. पु.—युद्ध के समय सिर पर धारण करने का लोहे का टोप।

उ०—लोहलटोपा बंध धूपा, कडी टूपा कस्सए। आठी अलोजा मूठ तोजा, धल्ल मोजा तस्सए। —पा. प्र.

रू. भे.—लोहटोप।

लोहलठ, लोहलाठ, लोहलाठियांणी-सं. पु.—शेर, सिंह।

(ना. डि. को)

वि.—दृढ, मजबूत।

उ०—१ लोहलाठ कड़ाबध संधी खडै आभ लागा, नागा घड़ा बध आहुड़ै निघात। काळा कुभा के खंड़ां नरिंद वाळा भड़ै किना, पड़ै पब्बै माळा इंद्रवाळा बज्रपात। —हुकमीचद खिड़िया

उ०—२ लोभी पना आंनाड़ा सग्रांमां लोहलाठीयांणी, बागां फोजां फाड़ा पोड़ां भाठीयांणी बेस। पढी संथां मेवाड़ा आरोह वीर पाटी-यांणी, पांणीपंथा काठीयांणी घाड़ा पमंगेस। —महादान महडू

उ०—३ खतंगा कराड़े भाट बागै राठरीठ खागै, जागै पाट प्रेत काळी अनाढ जुआंण। सतारा हजारां आठ लोहलाठ आयौ सर्ज, 'रासा' रा तीन सै साठ नीमजे 'आरांण'। —पहाड़खा आढौ

लोहवात-सं. पु.—१ एक प्रकार का वात रोग।

उ०—अथ रोगा, कास स्वास ज्वार भगंदर गुलमवात गल्लवात, रक्तवात भस्मवात उस्णवात अग्निवात लोहवात लूलिवात। —व. स.

लोहसंकु-सं पु. [सं. लोहशंकु] १ पुराणानुसार एक नरक का नाम।

२ लोह का कांटा।

लोहसार-सं. स्त्री.—१ तलवार। (डि. ना. मा.)

२ लोह भस्म। (वैद्यक)

रू. भे.—लौ'सार, लोहसार

लोहांण—देखो 'लोहाण' (रू. भे.)

लोहांबोह—शस्त्र प्रहार।

उ०—पंखण समर बिचार धरै पुर, चुतरंग वर पूरै कुण चाड। लोहांबोह 'लालावत' लेतौ, वळ करत्तौ वांका भर बाढ। —सांगा रौ गीत

लोहाकार—देखो 'लुहार' (रू. भे.)

उ०—लोहाकार उत्ताल मनहु अैरन धन गज्जिय। गजर मनहु घरियार, जाम पूरन प्रति बज्जिय। —ला. रा.

लोहागर-स. पु.—लोह निकालने का स्थान, लोह खान।

उ०—किंहां केरीरतरु, किंहा कल्पतरु, किंहा लोहागर किंहा वयरा-गर, किंहा गुंजाफल, किंहा मुक्ताफल, किंहा काचखंड, किंहा पाथर-खड। —व. स.

लोहागिरी-सं स्त्री.—वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा।

लोहायळ-सं पु.—नाथ-सम्प्रदाय का संन्यासी।

उ०—लोहायळ अन चोलिए सुंदर, नागायरूजण मैं नहु दासिक। मैं न मछंदर मै न जळंधर, मै हूं री गोरख तूं भरडा लख। —पा. प्र.

लोहार—देखो 'लुहार' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ आसत सगत ऊधरां आचां, जस जालम अखमाल जिसौ। लोह द्रोयण ताछै लोहलंगर, औ 'लालौ' लोहार यसौ। —लालसिंह राठौड़ रौ गीत

उ०—२ काळै सार बडे कारीगर, जींजरिया रण जुवा जुआ। पर लोहार किया सर पाधर, हालै साम्रव जेर हुआ। —तेजसी सांदू

उ०—३ राव लाखणसी पिण सांभळियौ जे सोनगिरी नैं ले गयौ। लोहारां नै बुलाया। इसौ भालो घड़ौ तिण सुं एथ बैठा निबळा नैं मारां। —वीरमदे सोनगरा री बात

(स्त्री. लोहारण)

लोहाळ-सं पु.—शस्त्र प्रहार।

उ०—'रिणमाल' ऊठि नरलिंघ रुख, पय ग्रहि लात पछाड़िया लोहाळ अठारहि पिंड लगा, पिसण अठारह पाड़िया। —सू. प्र.

लोहित-स. पु. [स] १ रणमाल। (अ. मा.)

२ महादेव का त्रशूल।

[सं. लोहितं] ३ रक्त, खून।

४ मंगलग्रह।

५ सर्प विशेष।

वि.—१ रक्त से सना हुआ।

२ लाल रंग का।

रू. भे.—लोहित्त।

लोहितक-सं. पु. [स.] १ लाल मणि।

२ मंगल ग्रह।

लोहितचंदण-सं. पु.—१ केसर। (अ. मा., नां. मा.)

२ लालचंदन।

रू. भे.—लोहतचंदण

लोहितभाळ-सं. पु.—शंकर, महादेव। (नां. मा.)

लोहितांग-स. पु. [स.] मगल ग्रह। (अ. मा.)

लोहिताक्ष-सं. पु.—एक प्रकार का रत्न।

उ०—हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगरभ पुलक अंक अंजन अरिस्ट चितामणि। —व. स.

लोहित्त—देखो 'लोहित' (रू. भे.)

उ०—हुवै घत्त **लोहित्त** मैमत्त हाला, नसारा किसा पार सूळा निवाळा। मधू-मास ग्रासोज मे रास मडै, तिहूँ लोक री डोकरी तेथि तडै। —मे. म

लोहिय—देखो 'लोही' (रू भे)

लोहियौ—स पु —लोहे की वस्तुग्रो का व्यापार करने वाला।

लोही—सं पु.—रक्त, खून।

उ०—पछै राव जिए वड हेठै बैठो थौ, सु वड **लोही** वूठौ, तोही समझै नही। —नैणसी

रू भे.—लुही, लोई, लोहू

ग्रल्पा.,—लोहीड़ौ

लोहीड़ौ—देखो 'लोही' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—घरती नैं सीचा म्है तौ **लोहीड़** री धार। इतरी कीकर मांगै ग्रौ बीघोडी सरकार। —चेतमानखां

लोहीझांण—वि.— खून से लथ-पथ, तरबतर।

रू. भे. लोईझाण

लोहू—देखो 'लोही' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

लौं—ग्रव्य.—तक, पर्यन्त।

उ०—१ कोटि वरस **लौ** राखिये, बंसा चदन पास। दादू गुण लीयै रहै, कदै न लागै बास। —दादूबांणी

उ०—२ तौ बडारण कही, ग्राज **लौं** तो ज्यूं री त्यूं छै। —नापे साखलै री वारता

रू. भे.—लो, लौ।

लौंग—देखो 'लवग' (रू. भे.)

उ०—तेजपुंज ग्रासप ग्ररोगीजै छै। प्यार नै सोस दे दे नै प्याला दीजै छै। घणा **लौंग** पान बीडा रा रस लीजै छै। —राजान राउत री वात-वणाव

लौंठो—देखो 'लाठौ' (रू. भे.)

उ०—१ 'जोगौ' किण हि न जोग, सह जोगौ कीधौ सुकव। **लौंठा** चारण लोग, तारण कुळ खत्रिया तणा। —महाराजा मांनसिंह

उ०—२ जणा कुवरसी दीठौ जे लिया तौ बणै नहीं। ग्रागै **लौंठा** मांणसा सू कजियौ छै। —कुवरसी साखला री वारता

लौंड—देखो 'लौडौ' (मह. रू. भे.)

उ०—तद वा देखनै कहियौ। गोळी री तो न देणी। इण **लौंड** री भी मजबूती देखणी। —प्रतापसिंह म्होकमसिंह री बात

लौंडापण, लौंडापणौ—१ लौंडा होने का भाव, लडकपन।

२ लौंडेबाजी के कार्य का भाव।

लौंडाबाज—देखो 'लौंडेबाज' (रू भे.)

लौंडाबाजी—देखो 'लौंडेबाजी' (रू भे.)

लौंडी—स स्त्री —दासी, सेविका।

लौंडेबाज—स. पु.—१ वह लडका या पुरुष जो लडको के साथ प्रकृति विरुद्ध ग्राचरण करता हो। (बाजारू)

२ (स्त्री) जो नवयुवको से प्रेम करती हो।

रू. भे.—लौंडाबाज।

लौंडेबाजी—स. स्त्री.—१ लौंडेबाज का कार्य।

२ लौंडेबाज होने की ग्रवस्था या भाव।

रू. भे.—लौंडाबाजी।

लौंडौ—सं. पु. [स्त्री लौंडी, लौंडिया] १ लडका, नवयुवक।

२ ग्रबोध या नासमझ बालक।

३ ऐसा लड़का जिसके साथ लोग ग्रप्राकृतिक ग्राचरण करते हो।

मह.—लौंड।

लौंण—देखो 'लवण' (रू भे.)

उ०—ज्यो जळ पैसै दूध मे, ज्यो पाणी मे **लौंण**। ऐसे ग्रातम राम सो, मन हठ साधै कौंण। —दादूबाणी

लौंव—स पु.—१ ग्रधिमास, मलमास।

लौंदौ—देखो 'लूंदौ' (रू. भे.)

लौ—स. स्त्री.—१ दीप-शिखा।

२ ज्योति।

३ ग्राग की लपट, ज्वाला।

४ इच्छा, चाह।

५ लगन, चित्तवृत्ति।

उ०—जनम जनम को साहिब मेरौ, वाही सो **लौ** लागी। ग्रपणा पिया सग हिल-मिल खेलू, ग्रधर सुधारस पागी। —मीरां

क्रि. प्र.—लागणी।

६ देखो 'लौं' (रू. भे)

७ देखो 'लय' (रू. भे.)

रू. भे.—लोइ, लोय, ल्यौ।

लौकिक, लौकीक—स. स्त्री. [स. लौकिक] १ परम्परा।

उ०—१ खतरनाक उमर री लुगाया कई वार ठाकर री मौजूदगी नै भूल जावती ग्रर **लौकिक** मरजाद नै तोड नाखती। —रातवासौ

उ०—२ पराई लुगाई ग्रर पराया मोट्यार सारू मन तालड़ा तोड़ै पण **लौकीक** री मरजाद सारू ढकणौ उघाडचा नी घकै। —फुलवाड़ी

२ समाज।

उ०—सती लुगायां रै चरित रा चाळा म्हैं घरणा घरणा दीठा डर तौ सगळौ लौकीक री व्है। —फुलवाड़ी

३ लोकवृत्तान्त, सासारिक हाल।

उ०—निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊ, परहर संसय भय बुद्धी बर पाऊं। सबत छपनै रौ केवण सिरलोकौ, लौकिक लेवण नै साभळज्यौ लोकौ। —ऊ. का.

४ व्यवहारिकपन, व्यवहार कुशलता।

वि.—१ लोक संबंधी. २ इस लोक से संबंध रखने वाला. ३ लोक व्यवहार से संबध रखने वाला, व्यवहारिक।

लौकेस—देखो 'लोकेस' (रू. भे.)

लौड़णौ, लौड़बौ - देखो 'लोड़णौ, लोड़बौ' (रू. भे.)

लौड़णहार, हारौ (हारी), लौड़णियौ—वि०।

लौड़िग्रोड़ौ, लौड़ियोड़ौ, लौड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लौड़ीजणौ, लौड़ीजबौ—कर्म वा०।

लौड़ियोड़ौ—देखो 'लोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. लौड़ियोड़ी)

लौड़ौ—१ देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—इण वास्तै म्हनै तौ तुलै है की बाभी जी साहब म्हारै पती लौड़ी सोक वसावैला अरथात जुद्ध में मारीज अपछरा वरसी हूं सत करनै जासूं जितरै लौड़ी सोक घकै मिळसी। —वी. स. टी.

(स्त्री. लौड़ी)

२ देखो 'लंड' (रू. भे.)

लौचणौ, लौचबौ—देखो 'लोचणौ, लोचबौ' (रू. भे.)

उ०—कहर म्लेच्छां सहर ढहर कंद काटिवा, लहर दरियाउ निज घरम लौचैं। हिन्दुग्रों राउ ग्राइ दिली लेसी उरै, सबल मन मांहि सुलतांण सोचैं। —ध. व. ग्रं.

लौचणहार, हारौ (हारी), लौचणियौ—वि०।

लौचिग्रोड़ौ, लौचियोड़ौ, लौच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

लौचीजणौ, लौचीजबौ—कर्म वा०।

लौट—देखो 'लोट' (रू. भे.)

लौटण—देखो 'लोटण' (रू. भे.)

उ०—स्रोण के फुंहारे ग्रासमान को छूटै, लगी धख जमीं पर लौटण ज्यूं लुट्टै। ऐसे किसबूं का हुन्नर करि मुजरै को ग्रावै, कहै सूंनै की गुरज इनांमूं मैं पावै। —सू. प्र.

लौडस्पेकर—सं पु. [ग्रं. लॉउडस्पीकर] विपुल भाष, ध्वनि विस्तारक यन्त्र।

उ०—सगळाई गांव वाळा मिळनै एक गांवसांऊ रेडियौ ग्रर लौडस्पेकर ले ग्रावौ। —ग्रमरचूनड़ी

लौडौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—'गोग्ररधन' गाढिम लोह-गड्ढ, सग्रांम-चंद समोभ्रम सनड्ढ। बाळा-पुर विढियौ बळ-प्रमांण, वड रावत लौडौ खुरासाण। —गु. रू. ब.

लौर—देखो 'लोर' (रू. भे.)

उ०—सारंग बैरी सातमां, मीठा गावै मोर। ऊवा बरसै बादळी, लूंबा-भूंबा लोर। —मयाराम दरजी री बात

लौलीण—देखो 'लवलीन' (रू. भे.)

उ०—सहज मंडळ धंमकही, वाजै ग्रनहद वींण। नोरंगी वांणी तन रतन, साध भगत लौलीण। —ग्रालम जी

लौह—देखो 'लोह' (रू. भे.)

लौहकार—देखो 'लोहकार' (रू. भे.)

लौहड़ौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

लौहचारक—स. पु.—एक भीषण नरक का नाम। (पौराणिक)

लौहमराट—सं. पु.—शस्त्र चलाने में प्रवीण, योद्धा।

उ०—१ ग्रारण कियौ उछाह, वीरातन वढ्ढियौ। मारु लौहमराट, चमू सभ चढ्ढियौ। ग्रारण मभ ग्रखड़ंत, उछडा ग्रोरिया। भिलमां बीजळ भाट, निराट निभोरिया —किसोरदांन बारहठ

उ०—२ 'माधावत' रांमसि लौहमराट, भपेटत मीर घटां खग भाट। समोभ्रम 'मांडण' दारुण सूर हठी खळ मीर वरावत हूर। —सू. प्र.

रू. भे.—'लोहमराट'

लौहसार—देखो 'लोहसार' (रू. भे.)

लौहांण—सं. पु.—एक राजपूत वंश।

उ०—भिड़िया तिकै मुंवा काइ भ्रमिया, जट लौहांण खत्री जोखमिया, जुड़ि गज खेत पड़ै बौह जिसड़ा, इकसठ समर जीपियौ इसड़ा। — सू. प्र.

लौहित—देखो 'लोहित' (रू. भे.)

लौहित्य—सं. पु.—१ ब्रह्मपुत्र नदी का नाम।

२ एक पर्वत का नाम।

३ बरमा की सीमा पर स्थित प्रदेश का प्राचीन नाम।

४ लालसागर का पुराना नाम।

लौहोडौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—कमधज्जा नाहल लसक्कर, लौहोडौ खुरसांण मंडोवर। हेरि कतार नयर दूनाडै, मांडै डांण रांण मेवाडै। —गु. रू. बं.

(स्त्री. लौहडी)

ल्याकत—देखो 'लियाकत' (रू. भे.)

ल्या'ड़ौ—देखो 'लाडायौ' (रू. भे.)

ल्याणौ, ल्याबौ—देखो 'लाणौ, लाबौ' (रू भे.)

उ०—१ ए मा **ल्याग्रौ** ल्याग्रौ पाचूं हथियार, तौ पाचू ल्याग्रौ म्हारा कापड़ा जी। धरण नै भेजागा बाप कै जी। —लो. गी.

उ०—२ नागही नू कहण लागौ, 'म्हानूं थाहरी बहू दिखावौ' तरै नागही बहू नूं सिणगार **ल्याई**। बहू रा पग धरती लागै नही। —नैणसी

उ०—३ तरै भींम सांमौ जाय पगै लागौ। आपरौ डेरौ नीबडी हुतौ, तठै साथै तेड़नै **ल्यायौ**। —नैणसी

ल्याणहार, हारौ (हारी), ल्याणियौ—वि०।

ल्यायोड़ौ—भू० का० कृ०।

ल्याईजणौ, ल्याईजबौ—कर्म वा०।

ल्यायोड़ौ—देखो 'लायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ल्यायोडी)

ल्याळ—देखो 'लाळ' (रू. भे.)

उ०—व्याह रौ नांवौ काना पडियौ, हाथ सूं काच छूट'र टुकडा हुयग्या। दलाल सामौ मूडौ ढीलौ करचौ, राफा तिड़ाई जद **ल्याळ** चाल पडी। —दसदोख

ल्याळी—स. पु.—भेडिया।

उ०—सू गाडर **ल्याळियां** आगै बच्चां नूं ले रही है, तारा नापै जी ल्यालियां नूं ताड़ दूर किया। —द. दा.

रू. भे.—लाळी।

ल्यावणौ, ल्यावबौ—देखो 'लाणौ, लाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारै गळै नै हारज **ल्याव**, म्हारा हंजामारू यांही रेवौ जी। —लो. गी.

उ०—२ माजी! थे म्हारौ मुंह दीठौ जीवतै रौ। हिवै राखाइत म्हारै कनारै **ल्यावौ**। ज्युं हुं हाथ लाऊं, ज्यू इयै नू मुगत हुवै। —नैणसी

उ०—३ **ल्यावै** लोड़ि पराइयां, नहं दे आपणियांह। सखी अमीणा कंथरी, उरसा झूंपड़ियांह। —हा. झा.

ल्यावणहार, हारौ (हारी), ल्यावणियौ—वि०।

ल्याविग्रोड़ौ, ल्यावियोड़ौ, ल्याव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

ल्यावीजणौ, ल्यावीजबौ—कर्म वा०।

ल्यावियोड़ौ—देखो 'लायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ल्यावियोड़ी)

ल्यौ—देखो 'लौ' (रू. भे.)

उ०—१ दादू मरणा मांड कर, रहै नही **ल्यौ** लाइ। कायर भाजे जीव ले, आ रण छाड जाइ। —दादूबाणी

उ०—२ दादू अहनिस सदा सरीर में, हरि चिंतन दिन जाइ। प्रेम मगन लै लीन मन, अंतर गति **ल्यौ** लाइ। —दादूबाणी

ल्रपक—सं पु [सं. लूपक] १ उनचास क्षेत्रपालो मे से ४१ वा क्षेत्रपाल।

ल्रपतकेस—स पु [स लूपतकेस] १ उनच्चास क्षेत्रपालो मे से ४२ वां क्षेत्रपाल।

ल्हसकर—१ देखो 'लसकर' (रू. भे.)

उ०—१ साम्हा **ल्हसकर** मेळि (लिह्) या, जाळंधर 'अगजीत'। खड़ आयौ ईबरांमखा, मिळण जवण स-जमीत। —रा. रू.

उ०—२ लूटीयौ **ल्हसकर** आण वासि कर छोडियौ आलिम। जीत्यौ पवाडौ धरम आडौ आवीयौ क्रत करम। —प. च. चौ.

ल्हसकरियौ—१ देखो 'लसकरियौ' (रू. भे.)

२ देखो, 'लसकर' (अल्पा, रू भे)

ल्हसण—देखो 'लसण' (रू भे.)

ल्हास—सं. स्त्री.—१ फसल की कटाई, बुवाई आदि के समय सामुहिक रूप से कार्य संलग्न व्यक्तियों को खिलाये जाने वाला भोज, भोजन।

उ०—अरि चारौ जड़ हूत ऊपाडै, साकुर धौरि हाक सर। **ल्हास** करै फौजा बड लगर, क्रोध निनाणी हमल कर। —लालसिंह राठोड़ री गीत

क्रि प्र—करणी।

२ देखो 'लास' (रू भे.)

उ०—घोड़ी म्हारी चद्रमुखी इदरलोका सै आई हो राज। आई रतनाळी हो तीजण, **ल्हास** बधाई हो राज। —लो गी.

रू. भे.—ला, लास, लाह।

ल्हासक—वि. [स. लासक] १ खिलाड़ी, क्रीड़ा प्रिय।

२ इधर उधर हिलने वाला।

ल्हासणौ, ल्हासबौ—क्रि. अ.—१ भागना, दौड़ना।

उ०—धडच कनाता धार सूं, गौ रहवास मभार। तूरमली लख **ल्हासतै** मोर झली तरवार। —रा. रू.

ल्हासियौ—वि.—'ल्हास' मे जाकर काम करने वाला।

रू. भे.—लहासियौ, लासियौ, लाहियौ, ला'यौ

ल्हीक—देखो 'लींक' (रू. भे.)

ल्हेस—देखो 'लैस' (रू. भे.)

उ०—१ तरै जगदेव जी **ल्हेस** काढि चिलै आंणि नै कह्यौ, नाहरी तूं रांड री जात छै, तूं हत्या मती चाढे, मारग सूं उठि नै डावी जीमणी टळि वैसि। —जगदेव पवार री बात

उ०—२ तिसै ल्हेस री दीधी । तिको लागी टीकै मांहैं नै मूळद्वारै नीकळी । —जगदेव पंवार री बात

ल्हेसवौ—देखो 'लसोड़ौ' (रू. भे.)

ल्होड़-सं. स्त्री. [सं. लघु] १ छोटापन, लघुता ।

२ दो पत्नियों में से छोटी ।

ल्होड़ती-वि.—छोटी वाली ।

उ०—जंवाश्रीड़ा मेरी बडोड़ी से **ल्होड़ती** परणाधूं रे क लाडो मेरी ना चलै । —लो. गी.

ल्होड़ियौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—जद हरियाली ले घर आई मनै **ल्होड़ियै** देवर देखी मोरी भूवा ए नींद घणेरी ।

ल्होड़ौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—**ल्होड़ी**-बड़ी का दोय स्याळू मंगावोजी । सायबा, नखराळा री भाणड़ली छणावौ । —लो. गी.

(स्त्री. ल्होड़ी)

ल्होड्यौ—देखो 'लघु' (रू. भे.)

उ०—बिंदली तो नणद गमाई, म्हारै **ल्होड्यौ** देवर पाई हे नणदल बिंदली ल्ये । —लो. गी.